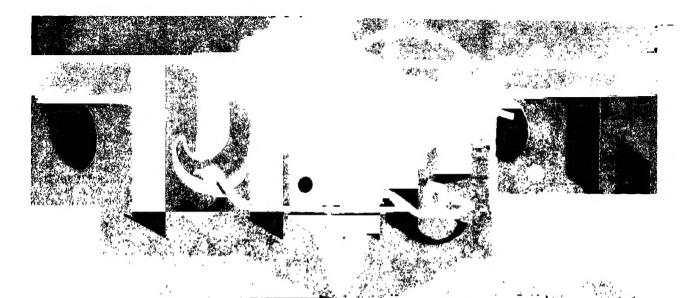
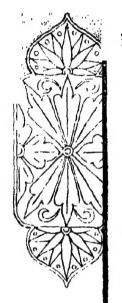


| Call No | Acc. No |  |  |  |
|---------|---------|--|--|--|
|         |         |  |  |  |
|         |         |  |  |  |
|         |         |  |  |  |
|         |         |  |  |  |
|         |         |  |  |  |
|         |         |  |  |  |
|         |         |  |  |  |
|         |         |  |  |  |
|         | Ì       |  |  |  |
|         |         |  |  |  |
|         |         |  |  |  |
|         |         |  |  |  |
|         |         |  |  |  |
|         |         |  |  |  |
|         |         |  |  |  |
| 1       | 1       |  |  |  |





# इस नम्बर के ख़ास लेख

हिन्दुस्तान : मेल मिलाप का संगम -- श्री मिरजा इम्माइल शेख मादी की "करीमा"

—पंडित सुन्द्रिकाल गांथी और लेनिन

—श्री जी. सुन्<del>दर रेड</del>्ड

मशहूर सूकी शाह अब्दुल लतीफ

—प्रोकैसर जेठमल परशुराम गुलगजानी

चीन श्रीर भारत का सांस्कृतिक मेल जोल

श्री मलिन्द

اِس نبیر کے خاص لیکھ

عندستان : ميل ملاب كا سنكم -شى مرزا اسماعيل

شایتے سعدی کی "کوسا"

-- ينتب سندر ال

كاندهى أور لهاوي

-شري جي . سندر راتي

مشهور صوفي شاة عبدالطيف

--پرونيسر جيته مل پرشورام كثراجاني

چيور أور بهارت كا سانسك تك

ميل جوال

--شرى ملفر

इमके अलावा

देस विदेस के मसलों पर हमारी राय में जरूरी सम्पादकी नोट دیس بریس کے مثلوں پر هماری رأثے میں ضروری سمهادکی نوت

**थन** नी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद (क्रि.) अंग



जनवरी 1956

### NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

#### Editorial Board

Dr. Tara Chand M.A., D. Phil. (Oxon)
Mahatma Bhagwan Din
Dr. Syed Mahmud, M.A., Ph.D., Bar-at-Law
Pandit Sundarlal
Bishambhar Nath Pande

#### Editor-in-Charge

Bishambhar Nath Pande

#### Asst. Editors

Suresh Ramabhai Mujib Rizvi

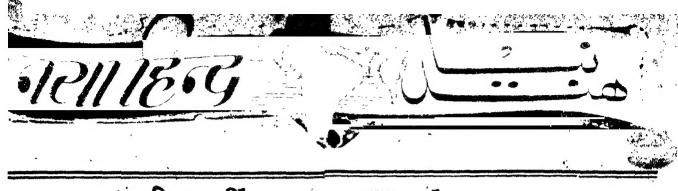
#### Annual Subscription

Inland Rs. 6/-Foreign Rs. 10/-Single Copy As. /10/- only

Can be had from -

# Manager, NAYA HIND

145. MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.



जिल्द 21 ملا नम्बर 1

जनवरी 1956 अंश

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी क्रंटिंग अध्ये अधिक १४६० व्याहाबाद अधिक १४६० व्याहाबाद

| ;  | (-)     |    |       |                                    |        |
|--|---------|----|-------|------------------------------------|--------|
| न्या फिस से  | सका कां |    | Die . | <u>ن</u> ہے۔                       | کیا کس |
| 1. दिन्दुस्तान : मेल मिलाप का संगम                 |         |    |       | هدستان : ميل ملاپ كا سنكم          | 1.     |
| —भी मिरजा इस्माइल                                  | •••     | 1  | , ••• | سشرى مرزا اساعيل                   |        |
| 2. ग्रेख़ सादी की "करीमा"                          |         |    |       | شهم سعدی کی <sup>19</sup> اریما''  | .2     |
| —पंडित सुन्दरलाल                                   | •••     | 6  | •••   | سينتت سندر ال                      |        |
| <sup>२</sup> . सि <b>स भी</b> र उनका क्रीमी सङ्गठन |         |    |       | ستم اور أن كا قومي سنكتهن          | .3     |
| —प्रोफैसर तेजासिंह                                 | •••     | 19 | •••   | پرونیسر تیجا سلک                   |        |
| 4. गां <b>धी भौर ले</b> निन                        |         | ,F |       | كالمدهى أور لينان                  | .4     |
| भी जी.सुन्दर रेड्डी                                | ***     | 30 | •••   | ـــشری جی . سنبر ریتی              |        |
| 5. मशहूर सक्री शाह अन्दुल लवीक                     |         |    |       | مشهور صونى شاة عبدألطيف            | .5     |
| -प्रोक्षेसर जेठमल परशुराम गुलराजानी                | •••     | 34 | ***   | سپرونیسر جیته مل پرشورام گاراجانی  |        |
| <sup>6</sup> बीन और भारत का सांस्कृतिक मेल जोल     |         |    |       | چین اور بهارت کا سانسکرنک میل جول  | .6     |
| —भी मलिन्द   | •••     | 37 | ***   | حسشرى ملند                         |        |
| 7. इब कितावें—                                     | •••     | 48 | ***   | كى كابين—                          | .7     |
| 8. इमारी राय-                                      | •••     | 54 | •*•   | هاری رائـ—                         | .8     |
| हिंबयारों की पूजा; वे-लगाम चाल;                    |         |    |       | هتماروں کی پوجا؛ بےلگام چال؛       |        |
| एक सतरनाक सुकाय—सुरेश रामभाई.                      |         |    |       | ایک خطوناک سرجهاؤسریص<br>رامهائی . |        |

.

.

,

#### भी मिरजा इस्माइल

हिन्दुस्तान की मुक्तलिफ क्रीमों के बीच कर्चरल (अंस्कृतिक) एकता और आपसी मोहन्वत के प्रचार का काम बहुत ही ऊँचा काम है. जिन्दगी भर मेरा रुमान हिन्दुस्तान के इसी एके की तरफ रहा है. और मुमे इस काम से दिली हमदर्दी है. मैं सममता हूँ कि ऐसा हर हिन्दु-स्तानी जो यह चाहता है कि दुनिया के मुक्कों के बीच उसके मुक्क की एक जालातर (उच्चतर) जगह हो और उसकी शान बान बढ़े इस कल्चरल एके और आपसी मोहन्वत का तरफदार और हामी होगा.

मेरे इस कहने का यह मतलब नहीं कि हिन्दुस्तान की क्रीमी और समाजी जिन्दगी में आपसी लड़ाई की कोई मुस्तकिल जगह थी. मेरा ऐसा कर्ज करना तारी जी नुक्तेन्जर से बिल्कुल रालत होगा. मेरे कहने की मन्शा यह है कि आजकल की तकली करेह हालत में जबकि आपस में कर्क पैदा करने वाले ठमान मुल्क की क्रीमी जिन्दगी की बुनियादें खोखली करने की लगातार कोशिशे कर रहे हैं, जबिक भाषाई और सूबाई नफरत ने भलाई और सममदारी के वश्मे को गँदला कर दिया है तो अपने मुल्क से मुहब्बत रखने वाले हर हिन्दुस्तानी का यह कर्ज है कि वह देश की जहरीली हवा को पाक करने और मोहब्बत के चश्मे को साफ करने की जी-तोड़ कोशिश करे.

हिन्दुस्तान में तरह तरह की जातियाँ हैं, तरह तरह की बोलियाँ हैं और तरह तरह के मजहबी एतक़ाद (विश्वास) हैं, यहाँ मुख्तिलक खान्दानों ने हुकूमतें कीं, बने और बिगड़े मगर इस सबके होते हुये भी इस देश में सदा एक बुनियादी एकता और कल्चर का एक अद्भूट सिलसिला क़ायम रहा. इस कल्चर की जड़ें जनता की आत्मा की गहराई में जमी हुई हैं. कोई आन्दोलन उन बुनियादों को नहीं हिला सकता जिन्हें सैकड़ों बरस के दौरान में सैकड़ों करोड़ आदमियों के मिले जुले डर और उम्मीदों, खुशियों और रखों, मुहब्बतों और नफ़रतों ने मजबूत किया है.

तारीख (इतिहास) पर अगर कोई एक सरसरी निगाह डाले तो एक बात उसके सामने साफ हो जायगी कि हमारा यह मुल्क हिन्दुस्तान तरह तरह की कल्बरों और तरह तरह की क्रीमों के मिलाप और जमघट की जगह रही है. रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने इसे अपनी 'महामानवेर मेला' नाम की एक सुन्दर नक्म में बड़ी खूबसूरती के साथ जाहिर किया है.

#### شرى مرزا اساعهل

هندستان کی مختلف قوموں کے بیچ کلچرل (سائسکرتک)
ایکتا اور آپسی محبت کے پرچار کا کام بہت هی اُونچا کام هے .
زندگی بهر میرا رجحان هندستان کے اِسیایکے کی طرف رها شے .
اور مجھے اِس کام سے دالی همدردی هے . میں سمجھتا هوں که ایسا هر هندستائی جو یہ چاهتا هے که دنیا کے ملکوں کے بیچ ایسا هر هندستائی جو یہ چاهتا هے که دنیا کے ملکوں کے بیچ اُس کے ملک کی ایک اعلی تر ( اُرچ تر ) جکه هو اور اس کی شان بان پڑھے اِس کلچرل ایکے اور آپسی محبت کا طرفدار اور عامی هوگا .

\* اس کہنے کا یہ مطلب نہیں کہ ھلدستان کی قومی اور سماجی زندگی میں آپسی لوائی کی کوئی مستقل جگا تھی ۔ میرا ایسا فرض کوئا تاریخی نقطہ نظر سے ہالکل غلط ہوگا ۔ میرے کھنے کی منشا یہ ہے کہ آجکل کی تکلیف دہ حالت میں جب که آپس میں فرق پیدا کرنے والے رجحان ملک کی قومی زندگی کی بنیادیں کھوکھلی کرنے کی لگاتار کوششیں کررھے ہیں 'جب که بھائی اور صوبائی نفرت نے بھائی اور سمجھداری کے چشمے کو گالی کردیا ہے تو اپنے ملک سے محبت رکھنے والے ھر هادستانی کا یہ فرض ہے کہ وہ دیھی کی زھریلی ھوا کو پاک کرنے اور محبت کے چشمے کو صاف کرنے کی جی تور کوشش کرنے اور محبت کے چشمے کو صاف کرنے کی جی تور کوشش کرنے اور محبت کے چشمے کو صاف کرنے کی جی تور کوشش کرنے ۔

هندستان میں طرح طرح کی جانیاں هیں' طرح طرح کی بولیاں هیں اور طرح طرح کے منعبی اعتقاد (رشواس) هیں' یہاں مختلف خاندانوں نے حکومتیں کیں' بنے اور بکڑے مکر اِس سب کے هوتے هوئے بھی اِس دیش میں سدا ایک بنیادی ایکنا اور دلنچر کا ایک اثرت سلسله قایم رها . اِس کلچر کی جویں جنتا کی آنما کی گہرائی میں جمی هوئی هیں . کوئی آندولن آن بنیادوں کو نہیں هلا سکتا جنهیں سیکڑوں برس کے دوران میں سیکڑوں کروز آدمیوں کے ملے جلے در اور آمیدوں' خوشیوں اور رنجوں' محبتیں اور نفرتوں نے مضبوط کیا هے .

تاریخ ( اِتهاس ) پر اگر کوئی ایک سرسری نگاه دالے تو ایک بات اُس کے سامنے صاف ہوجائیکی که همارا یہ ملک هندستان طرح طرح کی کاچورس اور طرح طرح کی دوموں کے ملاپ اور جمکھت کی جگه رهی ہے . رویندوناتو تھاکر لے اِسے اپنی 'مهامانویر میلا' نام کی ایک سلدر نظم میں بڑی خوبصورتی کے ساتو ظاهر کھا ہے .

स्वान्ध्रनाथ न हिन्दुस्तान क इस बसाम्म (विस्तृत) इनसाना समुन्दर में आयों-अनायों, द्राविड़ों-चीनियों, सकों-दूर्यों, पठानों-मुरालों को एक देह में घुलते-मिलते देखा था. जो सोग यहाँ कीज और तीरो तुष्तंग लेकर मस्त होकर जीत के गीत गाते हुये, रेगिस्तानों और पहाड़ी दरों को पारकर के आये, वे सब यहाँ रहकर हिलमिलकर एक हो गये और मुस्क की रग रग में बनके तराने एक होकर गूँजने लगे.

एक नौजवान हिन्दुस्तानी आलिम ने इन्हीं बातों को खरा दूसरे वरीके से लिखा है. वह लिखता है—"तीन हजार बरस पहले यहां आर्थ आये और अपने साथ। एक कुद्रती मजहब लाये जिसे उन्होंने वेदों की ऋचाओं में जाहिर किया, दो हजार बरस पहले यूनानी अपना फलसफाना स्टोइक मजहब लाये, सत्रह सी बरस पहले सीरियाबाले इंसाई मजहब लाये, बारह सी बरस पहले अरब लोग इंसलाम लाये और हजार बरस पहले ईरानी जरधुकी मजहब लाये और इंसाई मजहब लाये.

हिन्दुस्तान के इस मिलापगाह (मिलन केन्द्र) में कौमों और तह जीवों की लगातार मिलावट होती रही और उससे एक ऐसी करूवर पैदा हुई जो अपने किस्म की अनोखी, भरी पूरी, खूबसूरत, हर पहलू को खूनेवाली और रंगीन है लेकिन जिसमें एक गहराई है, एक पुस्तगी है और जो तमाम दुनिया के लिये एक हैरत की चीज है. बाहर से आने बाली क्रीमों और यहां की आबाद तह जीव में हर कदम पर मगड़े और मगड़ों से पैदा होनेवाली मुसीवतें लाजमी थीं, मगर हर बार ये मगड़े एकता में तब्दील हो गये. आखिर बच्चे के जन्म के बक्त मां को दर्द तो सहना ही होता है.

हिन्दुस्तान की इस क़ौमी जिन्दगी के रंग विरंगेपन से हमें न तो मायूस होने की जरूरत है और न हमें ऐसे नतीजे निकालने की जरूरत है जिनकी तारीख से ताईद (समर्थन) न हो. मुहज्जब (सम्य) जिन्दगी के लिये इस्तलाफ (विभिन्नता) एक जरूरी चीज है. लाई आक्लैएड ने एक जगह कहा था—

"एक ही हुकूमत के मातहत बहुत सी क्रीमों का रहना
यह एक इम्तहान भी है और आजादी का पक्का बीमा भी.
एक दी हुकूमत के मातहत बहुत सी क्रीमों का मिलकर
रहना यह मुहज्जब और शायस्ता जिन्दगी की एक वैसी
दी शर्त है जैसी समाजी जिन्दगी में मुख्तलिफ इनसानों का
मिलकर रहना एक जरूरी शर्त है. पिछड़ी हुई क्रीमें अगर
एक ही सियासी यूनियन में ज्यादा अक्रलमन्द क्रीमों के
साथ रहें तो लाजमी तौर पर उनकी भी तरक्की होगी. थकी
हुई और बूदी क्रीमों में नई और जवान क्रीमों के साथ से फिर
से नई जवानी आ जाती है. लेकिन यह तरक्की और नई

سعادہ میں آریوں - اثارہوں' دواروں - چینیوں' سکوں - هنیں'
یہ پٹھائوں - مغلوں کو ایک دیم میں گھلتے ماتے دیکھا تھا . جو
لوگ یہاں فوج اور تیروتعنگ ایکر مست ہوکر جیت کے گیت
گاتے ہوئے' ریکسٹائوں اور پہاڑی دررں کو پار کر وے آئے' وے
سب یہاں وہ کو هل ملکر ایک هوگئے اور ملک کی رگ رگ

ایک نوجوان هندستانی عالم نے اِنهیں باتوں کو ذرا دوسرے طریقے سے لکھا ہے ۔ وہ لکھتا ہے۔ 'نیوں ہزار برس پہلے یہاں آریم آئے اور اپنے ساتھ ایک قدرتی مذھب لائے جسے آنھوں نے ویدوں کی رچاؤں میں ظاہر کیا' دو ہزار برس پہلے یونانی اپنا فلسفانے اِسلونک مذھب لائے' سارہ سو برس پہلے سیریا والے عیسائی مذھب لائے' بارہ سو برس پہلے عرب لوگ اِسلام لائے اور ہزار برس پہلے ایرانی زرتھوستری مذھب لائے اور یہاں اِن سب مذھب کا سنکم بنا ۔''

هندستان کے اِس ملاپ گاہ ( ملن کیندر ) میں قوموں اور تہذیبوں کی اگاتار ملاوت هوتی رهی اور اِس سے ایک ایسی کلچور پیدا هوئی جو اپنے قسم کی اقوکھی، بھری پوری، خوبصورت، هر پہلو کو چھونے والی اور رنگین هے لیکن جس میں ایک گہرائی هے، ایک پختکی هے اور جو تمام دنیا کے ائے ایک حیرت کی چیز هے . باهر سے آنے والی قوموں اور یہاں کی آباد تہذیب میں هو قدم پر جھکڑے اور جھکڑوں سے پیدا هونے والی مصیبٹیں لازمی تھیں، مکر هر بار یہ جھکڑے ایکتا میں تبدیل هوگئے . آخر بچے کے جنم کے وقت ماں کو درد تو سہنا هی هوگئے . آخر بچے کے جنم کے وقت ماں کو درد تو سہنا هی هوگئے .

ھندستان کی اِس قومی زندگی کے رنگ ہرنگے پن سے همیں نه تو مایوس هونے کی ضرورت هے اور نه همیں ایسے نتیجے فکالنے کی ضرورت هے جن کی تاریخ سے تائید (سمرتهن) نه هو . مهذب ( سبهیه ) زندگی کے لئے اختلاف ( وبهنتا ) ایک ضروری چیز هے لارق آئلینڈ نے ایک جکه کہا تها —

"ایک هی حکومت کے ماتحت بہت سی قوموں کا رهنا یہ ایک امتحان بھی ہے اور آزائی کا پکا بیمہ بھی ، ایک هی حکومت کے ماتحت بہت سی قوموں کا ملکر رهنا یہ مہذب اور شائستہ زندگی کی ایک ریسی هی شرط ہے جیسی سماجی زندگی میں مختلف انسانوں کا ملکر رهنا ایک فروری شرط ہے ، پچھڑی هوئی قومیں اگر ایک هی سیاسی یوئین میں زیادہ عقلمند قوموں کے ساتہ رهیں تو لازمی طور پر اُن کی ترقی هوگی ، تهکی هوئی اور بوزهی قوموں میں نئی اور جوان قوموں کے ساتھ سے پہر سے نئی جوانی آجانی ہے ، لیکن یہ ترقی اور خوانی قوموں کے ساتھ سے پہر سے نئی جوانی آجانی ہے ، لیکن یہ ترقی اور فرموں کے ساتھ سے پہر سے نئی جوانی آجانی ہے ، لیکن یہ ترقی اور فرموں کے ساتھ سے پہر سے نئی جوانی آجانی ہے ، لیکن یہ تومیں ایک هی

سوئل کے ماتصت رہائی ہیں ، سلطانت کے کیمال میں بازے طرح کی طرح کی قومیں کے متضاد (پرسپرورودھی) گئیں کی مالوت سے آیک نیا اور بہترین گن بن جاتا ہے . اِسی خطط مانت سے اِنسانیں کا ایک گروہ درسوے گروہ سے قرت عقل اور قابلیت حاصل کرنا ہے ."

وینڈین واکی اُپلی مشہور کلاب 'ون وراڈ' میں ،امریکہ کے ہارے میں اکھنا ھے۔۔''میرے خیال سے همارے تہذیب کی اُونچائی کی وجه هماری سنیڈیں' هماری اِبجادیں یا همارے گوشه هوئے عالیشان کل کارخانے نہیں هیں باتک مختلف مذهبوں اُور مختلف قومیڈی کے هوئے هوئے بھی اِس سنجکت راج اُمریکه میں ایک دوسرے کا لتحاظ کرتے میں ایک دوسرے کا لتحاظ کرتے هوئے اور ایک دوسرے کو مدد کرتے هوئے هماری جنتا کی ایک ساتہ ملکر رهنے کی قابلیت هے ''

هدستان میں مبلوں کا راج' اُن کی برهتی اور اُن کا اُلت الرق آکلیڈ کی اُرور اکھی بات کو ثابت کرنا ہے۔ پہلی مرتبه مہریہ اور گیت سامراجیوں کے وقت پورا یا قریب قریب يررا هندستان أيك سركار كے ماتصت أيا . هم نے ديكها اسلامي حكومت ميں نئى إسلامى كليچر هندستان كے بورھے بدن ميں پھر سے جوائی لے آئی اور بہاں کی قیمی زندگی کے تمام سینوں ( انکوں ) کو اُس نے مالا مال کیا ، اُس یعجائیت اور خلط ملت کے شاندار عجیب و غریب نتیجے همیں نن تعمیر ( نرمان کل) تصویر سازی (چترکل) شاعری (کریتا) سنکهت زبان اور مذهب موں بھی آج تک دیکھنے کو ملتے 'هیں . جو بانیں تاریخ ( اِتهاس ) کے ودیارتبیوں کو اچھی طرح معلوم هیں أن كى تفسير ( وستار ) ميں مجھے يہاں جانے كى ضرورت نہیں . مغل عمارتوں کے اندر همیں اسلامی اور هندو کا کی ماوق ماف نظر آتی هے ، راجهر شجتر کلا ير هييں بہت ماف ايواني إثر دكهائي ديتا هي يه ساري مالوت خود ميل دربار کے سائے میں عوثی ۔ امیر خسرو اور کبیر جیسے مسلمان شاعروں ارر مردوس نے هندی کویتا کو اور نسیم کیست جیسے هندو شاعروں نے اُردو شاعری کو مالا مال کیا ۔ خود اُردو بولی ' جسے اً قر بھارت کے ھندو اور مسلمائوں نے مل کر اپنایا ' ھندی اور فارسی کے میل سے بنی ، مفاوں کے وقت سے بھارت کے سلکیت کے سب سے بڑے پرچارک مسلمان ھی ھوٹے ھیں جن کے بنائے ھوئے خیال اور بہجن آب بھی ھر طبقہ کے لوگس میں یسن کئے جاتے هیں۔ آب بھی خیال کے اُستادوں میں مسلمانوں کی تعداد زیادہ ہے . مذهبی دائرے میں یہی اسلم کی چهاپ هم شرى چيتليه جيسے هندر سنترل اور هندو مذهب كي چهاپ كبير اور دادو جیسے مسلمان مونی سنتوں کی سیکھ میں دیکھ سکتے ہیں ۔

सरकार के नायहर रहती हैं। सस्तानक के कहा में वरह सरक की कीमों के सुतजाद (परस्पर विरोधी) गुणों की मिलाकट से एक नवा और बेहतरीन गुण कन जाता है. इसी खिल्त मिल्त से इन्सानों का एक गिरोह दूसरे गिरोह से कुबत, असल और कावलीयत हासिल करता है."

वैराहेन विस्की अपनी मराहर किताब 'वन वर्स्ड' में अमरीका के बारे में निखता है—''मेरे स्थाल से हमारे तह्कीय की कँचाई की वजह हमारी सिनेटें, हमारी ईजादें या हमारे गढ़े हुए आलीशान कल कारखाने नहीं हैं बल्कि मुख्तिलफ मजहबों और मुख्तिलफ कौमियतों के होते हुये भी इस संयुक्त राज्य अमरीका में एक दूसरे को सममते हुये, एक दूसरे का लिहाज करते हुये और एक दूसरे को मत्द करते हुये हमारी जनता की एक साथ मिलकर रहने की कावलीयत है."

हिन्दुस्तान में मुरालों का राज, उनकी बढ़ती और उनका अन्त लार्ड भाकलैएड की ऊपर लिखी बात को साबित करता है. पहली मर्तवा मौर्य श्रीर गुप्त साम्राज्यों के बक्त पूरा या क़रीब क़रीब पूरा हिन्दुस्तान एक सरकार के मातहत आया. हमने देखा इसलामी हुकूमत में नई इसलामी कल्चर हिन्दुस्तान के बूढ़े बदन में फिर से जबानी ले आई और यहां की क़ौसी जिन्दगी के तमाम सीरों (धक्कों) को उसने मालामाल किया. उस यकजाइयत और खिल्त मिल्त के शानदार अजीवो ग्ररीव नतीजे हमें क्रने तामीर (निर्माणकला), तसवीरसाची (चित्रकला), शायरी (कविता), संगीत, जबान और मजहब में भी आज तक देखने को मिलते हैं. जो बातें तारीख (इतिहास) के विद्यार्थियों को अच्छी तरह मालुम हैं उनकी तमसीर (बिस्तार) में मुक्ते यहां जाने की जरूरत नहीं. मुराल इमारतों के अन्दर हमें इसलामी और हिन्दू कला की मिलाबट साफ नजर आती है. राजपूत चित्रकला पर हमें बहुत साफ ईरानी असर दिखाई देता है. यह सारी मिलावट ख़ुद् मुराल दरबार के साथे में हुई. अमीर ख़ुसरा और कबीर जैसे ससलमान शायरों और सफियों ने हिन्दी कविता को और नसीम, चकबस्त जैसे हिन्दू शायरों ने उद् शायरी को मालामाल किया खुद उद् बोली, जिसे उत्तर भारत के हिन्द और मुसलमानों ने मिलकर अपनाया हिन्दी और फारसी के मेल से बनी. मुगलों के बक्त से भारत के सङ्गीत के सबसे बड़े प्रचारक मुसलमान ही हुए हैं जिनके बनाये हुये खयाल, होली और अजन अब भी हर तबक्रे के लोगों में पसन्द किये जाते हैं. अब भी खयाल के उस्तादों में असलमानों की तादाद ज्यादा है. मजहबी दायरे में भी इसलाम की छाप हम श्री चैतन्य जैसे हिन्दू सन्तों और हिन्दू मजहब की छाप कथीर और दाद् नैसे मुसलमान सुफी सन्तों की सीख में देख सकते हैं.

Water &

स्फीबार के अन्दर हमें हिन्दू वेदान्त और भक्तिबाद की मिलाबट साफ नजर आती है.

उत्पर यह सरसरी नजर महज इसीलिये हाली गई कि अपने हजार बरस के लम्बे तारीक्षी दौर में हिन्दू और सुसलमानों ने साथ साथ रहने की कला अच्छी तरह सीख ली थी. इनसानी जिन्दगी में जो कुछ भी अच्छा है और जो बातें (जन्दगी में रस पैदा करती हैं उन सबको हिन्दू और मुसलमानों ने एक दूसरे के एतबार, मदद और सहार से पूरा किया और एक ऐसी मिली जुली हिन्दुस्तानी करचर की ताभीर की जिसने दोनों को मोहच्बत की एक कड़ी में बांध दिया.

मुख्तिलक जातियों को क्रीबी दिश्ते में मजबूती से बांधनेवाली चीज तो आपसी शादी ब्याह हैं लेकिन उससे उतरकर अगर तिजारत या धन्धों के जरिये मिलकर पैसा कमाया काय तब भी लोग काकी एक दूसरे के क्रीब आ जाते हैं और मजहबी, सूबाई और दूसरे फ्रक भूल जाते हैं. मिली जुली तिजारत और कामधन्धे भी एक बड़ी इद तक परायेपन और मजहबी निकाक (अनैक्य) को दूर करने में मदद देते हैं.

साथ साथ मिलकर रहने की जिस रीत को हम।रे मुखुगों ने स्थाज निकाला था और जिसे हजार बरस तक वरक्षकी दी क्या उस पुरानी रीत को हम भूल गये ? मेरा अवाय है-नहीं, हम नहीं भूले. मेल मोहब्बत का वह सोता अब भी ज्यां का त्यों है. खाली हमारे दिमाग्री फित्र ने उसकी सतह का परागन्दा कर दिया है. सात साल गाबों में, हिन्दुस्तान के दिल में, मुहच्चत की वही पुरानी श्रदेकन अब भी होती है. मौजूदा जमाने से गुजरने में कुछ विकातों का सामना लाजमी था. चीजों को अपनाना भोर पचाना हिन्दुस्तान की खासियत रही है. इस काम में भी अनिगनत गुशकिलों के बीच से गुजरना पड़ता है. आज हिन्दुस्तान को पच्छिम की साइन्सी कल्चर को भी उसी तरह अपनाना है. वह पहले पहल आजादी, बराबरी, भाईचारे श्रीर अक्रली कसीटी का खयाल लेकर यहाँ दाखिल हुई. इनसान के जाती इक्क्स (व्यक्तिगत अधिकारों) का एक मुवालरो (श्रातशयोक्ति) से भरा हुआ नारा भी उसने लगाया. सन् 1914-18 की यूरोपियन जङ्ग के बाद उसने सेल्फ डिटर्मिनेशन (बात्म निर्णय) का नारा और जोड़ लिया. मये जायालातों ने जो नशा हम पर नारी किया है आज इमारे सियासी जिस्म पर उसका असर है. जब यह नशा क्तर जायगा और इसका उतरना लाजमी है ता हिन्दुस्तान फिर इसी पुरानी झालातर मन्जिल का सकर शुरू करेगा भीर ग्रुस्क की जिन्दगी फिर भरी पूरी और खुरागवार ं हो अध्यगी.

مرقی والد کے الدر همیں علیو ویدانت اور بیکٹی واد کی ماوت مات لطر آئی ہے .

سیر آوپویة سرسری قطر محض اِسی لئے دَالی گئی که اپنے عزار ابرس کے لیب تاریخی دور میں هندو اور مسلمانوں نے ساته ساته رهنے کی کا اچھی طرح سینه لی تھی ۔ اِنسانی زندگی میں بس پیدا کرتی جو کجھ بھی اچھا ہے اور جو بائیں زندگی میں رس پیدا کرتی هیں اُن سب کو هندو اور مسلمانوں نے ایک دوسرے کے اعتبار محدد اور سہارے سے پورا کیا اور ایک ایسی ملی جای هندستانی کلحچر کی تعمیر کی جسنے دونوں کو محددت کی ایک کری میں باندھ دیا ۔

مختلف جاتیوں کو قریعی رشتے میں مظبوطی سے ہائدھنے والی چیز تو آپسی شادی بیاہ میں لیکن اُس سے اُنر کر اکر تحوارت یا دھندھوں کے ذریعے ملکر پیستہ کمایا جائے تب یعی لوگ کانی ایک دوسرے کے قریب آجاتے میں اور مذہبی موبائی اور دوسرے فرق بھول جاتے میں ملی جلی تجارت اور کام دھندھے بھی ایک بڑی حد تک پرائے پن اور مذہبی اور کام دور کرنے میں مدد دیتے میں ،

ساته ساته ملکر رهنے کی جس ریت کو همارے ہزرگوں لےکھوبے نکا تها اور جسم هزار برس تک ترقی دی کیا اُس پرانی ریت كو هم بهول كله ؟ ميرا جواب هـــنهين هم نهين بهواء . ميل محبت كا ولا سوتا أب يهى جيران كا تيون هـ ، خالى همارسے دماغی فتور نے اُس کی سطح کو پراگندہ کردیا ہے۔ سات لاکھ گاؤں میں عندستان کے دل میں محبت کی وھی پرائی دھوکن اب بھی ھوتی ہے ، موجودہ زمانے سے گذرنے میں کچه دقترس کا سامنا الزمی تها . چیزوں کو . اینانا اور پچانا هندستان کی خاصیت رهی هے . اِس کام میں بھی، انگنت مشکلوں کے بیچ سے گذرنا پرتا ہے ۔ آج هندستان کو پنچھم کی سائنسی کلمچر کو بھی اُسی طرح اینانا ھے۔ وہ پہلے پہل آزادی ابرابری بھائی چارے اور عقلی کسوئی کا خیال لیکر یہاں داخل ہوئی ، انسان کے ذانی حقوق ( ویکٹی گت ادھیکاروں ) کا ایک مبانع (اتشیرکٹی) سے بہرا ہوا نعرہ بھی اُس نے لگا یا. سن 1914-19 کی یوروپین جاگ کے بعد اُس نے سیلف دیٹرمینیشن ( آتم ترنثه ) كا نعرة أور جور ليا . نبت خيالترس لي جونشه هم ير طاری کیا ہے آبے ممارے سیاسی جسم پر اِس کا اثر ہے . جب یہ نشہ اُنر جائے کا اور اِس کا اُترنا الوسی فے تو هندستان پیر أسى اعلى ترمنزل كا سفوا شروع كويكا أور ملك كي زندكي. يور بهرف يورى أور خوشكوار هو جانيكي .

तारीक के पुराते सबका पुकार पुकार कर कह रहे हैं कि बड़ी होना है और वहीं होकर रहेगा.

टेनीसन की कुछ सतरें हैं—

تاریخ کے پرائے سبق پکار پکار کر کہتا رہے ھیں کا یہی ہوتا ہے اور یہی ہو کر رہیکا ،

لينهس كى كته سطرين هين--

Yet I doubt not through the ages one increasing purpose runs. And the thoughts of men are widened with the process of the suns.

भगर इस इनसानी समाज की तरक्की पर एक नखर बार्ले तो दिखाई देगा कि शुरू जमाने में इनकरादी (व्यक्तिगत) दौर था, फिर खानवान बने, फिर कुटुन्ब (कुल) बने, फिर क़बीले बने, तब क्रीमें बनीं और फिर सभ बने. हमें इसमें कोई शुबहा न होना चाहिये कि इस तरक्रकी के पीछे एक पुरुता कृत्रती कानून (नियम) है भीर वह कानून है मिलावट (समन्वय) का, नीचे से ऊपर जाने का, कर्द से संघ का, आसानी से पेचीदगी का और यह क़ुब्रती कानून उस वक्त तक अमल में रहेगा जब तक कुल दुनिया और कुल इन्सानों का एक समाज न बन जायगा. जो ताकत इस कानून की इस तरक्की (प्रगति) को रोकने की कोशिश करेगी वह बरबाद हो जायगी, अगर हमने अब तक यह सबक्र नहीं सीखा तो जो बड़ी लड़ाई दूसरी बार लड़ी गई वह फिजूल लड़ी गई. अगर इस जङ्ग ने कोई एक सबक्र सिखाया है तो वह यह सिखाया है कि इन्सानों के छोटे छोटे गिरोह चाहे उन्हें नेरान कहो, बाहे क्रीम कहो, अलग अलग रहकर जिन्दा नहीं रह सकते-और सारी दुनिया के एके से ही इनसान को निजात मिलेगी.

اگر هم اِنسانی سمای کی ترقی پر ایک نظر دالیں تو دنهائی دیکا که شرع زمانے میں انفرادی ( ریکٹی گت ) دور تھا يهر خاندان بنيه يهر كلمب (كل) بنيه يهر قبيلے بني اب قومیں بنیں اور پھر سنٹھ بنے ، ہمیں اِس میں کوئی شبہہ نہ هرنا چاهنئے که اِس ترقی کے پینچھے ایک یخته قدرتی قائرن ( نهم ) هے أور وه قانين هے مارت ( سنونے ) كا نيجے سے أوبر جالے کا فرد سے سنکے کا آسائی سے پیچیدگی کا اور یہ تدرتی قائرن أس وقت تک عبل میں رهیکا جب تک کل دنیا اور كل انسانوس كا ايك سماج نه بن جائيكا . جو طاقت إس قانون کی اِس ترقی ( پرگتی ) کو روکنے کی کشش کریکی وہ برباد ہو جاڻهاي، اگر همنے اب تک يه سبق نهيں سيمها تو جو يرى اوائي دوسری بار لتی گئی وہ نضول لتی گئی ، اگر اِس جنگ نے کوئی ایک سبق سکھایا ہے تو وہ یہ سکھایا ہے انسانیں کے چھوٹے جهوئه گروه چاف أنهين نيشن كهور چاف قوم كهوا الك الك ره کر زندہ نہیں رہ سکتے۔۔ اور ساری دنیاکے ایکے سے سی انسان کو فجات ملیکی .

दुस में दुसी और मुस में मुसी होने वाला साहे के समान है; दुस में भी मुसी रहने वाला सोने के समान है; दुस-मुस में बराबर रहने वाला रतन के समान है और जो मुख-दुस की भावना से भी परे है वह सच्चा रुहानी बादशाह है.

—सन्त वाणी

دکه میں دکھی اور سکھ میں سکھی ہوئے والا لوقے کے سمان ہے؛ دکھ میں بھی سکھی رعنے والا سوئے کے سمان ہے؛ دکھ سکھ میں برابر رہنے والا رتن کے سمان ہے اور جو دکھ سکھ کی بھاؤتا سے بھی پرے ہے وہ سچا روحانی بادشاہ ہے ۔

-سلتواني

#### पंदित मुन्द्रलाल

يلتت سندر لال

रोस सादी कारसी के ऊँचे से ऊँचे विद्वानों श्रीर कियों में से हैं. उनका जन्म सन् 1184 ई॰ में ईरान के शीराज शहर में हुआ था. उनका असली नाम मुशर्रिफ- उदीन था. उनके बाप का नाम मुसलेयहीन था. 'सादी' उनका तसस्त्रस यानी उपनाम था.

शक कमर में कन्होंने बरादाद में तालीम पाई. सन् 1226 से 1256 तक 30 बरस उनके देशाटन में गुजरे. वह सबे चर्था में परिवाजक थे. इस घरसे में वे बस्खु गए, राषानी गए, और पंजाब भाए, वहाँ से गुजरात पहुंचे. सब जगह बह बड़े प्रेम और श्रद्धा के साथ अलग अलग मफ्रवों के देवालयों के दर्शन करते थे, गुजरात में वह सोमनाय के मंदिर को देखने के लिए भी गए, बहुत दिनों दिस्ली रहे. वहाँ उन्होंने हिन्दुस्तानी जवान सीखी. फिर बमन, बम्भीका, मका और मदीना गए, लौटकर सीरिया बानी शाम के मशहूर शहर दमिशक में कुछ दिनों ठहरे. बुमिरक में शेख सादी बहुत मशहूर हो गए थे. वह एक बहुत बढ़े सुफी सन्त थे. चारों तरफ से लाग उनके दर्शनों को और उनका उपदेश सुनने आते. वह बोलने वाले भी बहुत ऊँचे दरजे के भीर निकर थे. कुछ दिनों बाद शहर की जिन्दगी से जबकर जेरूसलम के पास एक जंगल में चते गए और वहां एकान्त में रहने लगे. उन दिनों यूरोप के ईसाइयों और पञ्छिम एशिया के मुसलमानों में कुसेड की लड़ाइयां जारी थीं. कुछ ईसाई सिपादी रोख सादी को जंगल से पकदकर ले गए. त्रिपोली की ईसाई झावनी में बहुत दिनों तक उनसे एक मामूली मजदूर की तरह मिट्टी स्तोदने की बेगार ली जाती रही. आस्तीर में अलेपों के किसी मालदार सौदागर ने उन्हें पहचाना और बहुत सा धन देकर ईसाइयों से छुड़ाया. शेख़ सादी फिर देश देश भूमने लगे. उन्होंने सारी एशिया-कोचक और आस पास के देशों का सफ़र किया. 72 वर्ष की उमर से वह फिर अपनी जन्म मूमि शीराज में आकर रहने लगे. इसके बाद **इतका सारा समय** 'सलूक' यानी योगाभ्यास और ज्यान में गुजरता था. सन् 1291 ई० में 107 बरस की उमर में शेष सादी का शरीर खूटा.

रोख सादी की जिल्ली दरजनों किताबों में 'गुलिस्तां' कीर 'बोस्तां' सब से ज्यादा मशहूर हैं. शायद कारसी की

شیخ سعدی قارسی کے اُولیچے سے اُولیچے ودوانیں اور کویوں میں سے ھیں . اُن کا جام سن 1184 عیسوی میں ایران کے شیراز عیم میں ہوا تھا . اُن کا املی نام مشرف الدین تھا . اُن کے بات کا نام مسلم الدین تھا ، 'سعدی' اُن کا نخاص یعلی اُپ نام تھا .

شروع عمر ميس أنهوس فربنداد ميس تعليم بائي. سن 1226 سے 1256 تک 30 برس أن كے ديشائن ميں گذرے، وہ ستے ارتھوں میں پربوراجک تھے۔ اِس عرصة میں وے بلنم کئے غوني كله اور بنجاب أنهاور وهان ساكجرات بهوندي. سب جابه وہ بڑے پریم اور شردما کے ساتھ الگ الگ مذھبیں کے دیوالیوں کے درشن کرتے تھے . گجرات میں وہ سومناتھ کے مندر کو دیکھلے کے لٹے بھی گئے ، بہت دئوں دای رہے ، وهاں أنهوں نے هندستائي زبان سيكهي ، يهر يسن أنريقه مك أور مدينه گله . لوت کر سهریا یعلی شام کے مشہور شہر دمشق میں کچھ دائوں تهبرے ، دمش میں شیخ سعدی بہت مشہور هو گئے تھے ، وا ایک بہت ہے موفی سنت تھ . چاروں طرف سے لوگ آن کے درشنون دو اور أن كا أيديض سناء آتے . ولا بولنه واله بھی بہت ارتھے درجے کے اور گذر تھے ، کچھ دنوں بعد شہر کی زندگی سے آرب کو جیروسلم کے پاس ایک جنگل میں چلے گئے اور وهاں ایکانت میں رہنے اگے . ان دنس بورپ کے عیسائیوں اور یمجهم ایشیا کے مسامانیں میں کروسید کی اوائیاں جاری تهیں ، کچھ عیسائی سپاھی شرائع سعدی کو جنکل سم پکڑ کر لے کلے ، تربولی کی عیسائی چهاونی میں بہت دانوں تک اُن سے ایک معمولی مزدور کی طرح ملی کھودئے کی بدگار لی جاتی رهی . آخیر میں الهور کے کسی ماادار سوداکر نے اُنہیں پہچانا اور بہت سا دھن دیکر عیسائیوں سے چیزایا ، شیخ سعدی پھر دیھی دیش گھومنے لکے ، آنھوں نے ساری ایشیا کوچک اور آس یاس کے دیشوں کا سفر کیا ، 72 برس کی عمر سے وہ یور اپنی جنم بھوی شیراز میں آکر رہنے لکے ، اِس کے بعد اُن کا ساراً سمئي السلوك يعنى يوكا بياس أور دهيان مين گذرتا تها . سن 1291 عيسري موں 107 برس كي عمر ميں شيخ سعدي كا شرير جهونا .

شیخ سعدی کی لکھی درجنرں کتابیں میں 'گستان' آور ''پیستان' سب سے زیادہ مشہور ھیں ۔ شاید فارسی کی विनें तक और इसने बड़े पैयाने पर नहीं पढ़ाई गई जितनी 'गुलिस्ला' 'बोस्ला' कीर करीमा'. हिन्दुस्तान में भी तेरहवीं सबी से लेकर आज तक ये कितानें कारसी की कितानों में सबसे क्यादा पढ़ी जाती रही हैं. 'गुलिस्तां' का मतलब है 'गुलाब का बारा'. 'बोस्तां के माने हैं 'फलों का बारा'. यह दोनों बड़ी बड़ी कितानें हैं और दुनिया के हर मजहब और हर तरह के लोगों के लिए अच्छी से अच्छी नसीहतों से भरी हुई हैं. 'करीमा' राज्य के माने हैं 'हे द्याल हैरबर!' 'करीमा' एक छोटा सा काव्य है, और किताब के पहले राज्य 'करीमा' से उसका नाम 'करीमा' पढ़ गया,

करीमा का पूरा हिन्दी तरजुमा नीचे दिया जाता है— विस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ईस्तर के नाम से जो दयाल और इपाल है

है दयालु ईरवर ! मेरे हाल पर दया कर, मैं मोह के जाल में फंसा हुआ हूँ. सिवाय तेरे और कोई नहीं जिससे मैं करियाद करूँ. पापियों के पाप श्रमा कर सकने वाला एक तू ही है. मुक्ते बुराई के रास्ते से बचा, बुराई से बचा और भलाई का रास्ता दिखा.

मोहम्मद साहब की तारीफ़ में जब तक मेरे मुंह में जबान है, मोहम्मद की तारीफ़ करना मुक्ते पसन्द हो. वह ईश्वर का दोस्त और निवयों (Prophets) में

कँचा आसमान उसका तकिया था.

बह बर्फ़ (बिजली) के घोड़े पर सवार, दुनिया को बश में करने बाला.

इस नीली छतं वाले महल (प्रथ्वी) से पार निकल

#### अपनी जात्मा से

बढकर था.

तेरी प्रारी उन्न के चालीस बरस गुजर गये, तेरे मिजाज से अभी तक बचपन न गया. तू हमेशा लोम और मोह में फँसा रहा, एक पल के लिये भी तूने नेकी की तरफ ध्यान न दिया.

यह उन्न ठहरने वाली नहीं है, इस पर अरोसा मत कर, काल की लीला से बेखबर मत हो.

#### द्या की वारीफ में

ऐ दिल ! जिस किसी ने द्या का खान (वह कपड़ा जिस पर साना परसा जाता है) विद्या दिया, کہی ارکتابیں سلسار کے اتلے زبادہ دیشوں میں اُتنے دائیں الک اور اللہ بڑے پیدائے پر فہیں پڑھائی گئیں جائی گئستان 'اہستان' اہستان' اور کریدا؛ ہدستان میں بھی تیرھویں صدی سے لے کر آے تک یہ کتابیں نارسی کی کتابیں میں سب سے زبادہ پڑھی جاتی رھی ہیں ۔ 'گستان' کا مطلب ہے 'گلب کا باغ' ، 'بوستان' کے معنے ہیں ۔ 'گستان' کا مطلب ہے 'گلب کا باغ' ، 'بوستان' کے معنے ہیں ۔ نہیں کا باغ' یہ دوئرں بڑی بری کتابیں ہیں اور دنیا کے هر مذہب اور هر طرح کے اوگوں کے لئے اچھی سے اچھی نے اچھی نے اچھی سے اچھی سے اچھی نے دیائو ایشورا' 'کریدا' ایک چھوٹا سا کاریہ ہے' اور کتاب کے بہلے شید 'کریدا' سے اُس کا نام 'کریدا' پڑ گیا ۔

كريما كا پورا هندى ترجمة نيدي ديا جاتا هـ

بسمالله الرحمان الرحيم

#### ایشور کے نام سے جو دیالو اور کربالو ھے

ھ دیالو ایشور ! میرے حال پر دیا کر'
میں موہ کے جال میں پہنسا ہوا ہوں ۔
سوائے تیرے اور کوئی نہیں جس سے میں فریاد کووں'
پاپیوں کے پاپ چیما کر سکنے والا ایک تو ہی ہے۔
مجھے برائی کے راستے سے بچا'
برائی سے بچا اور بھائی کا راستہ دکیا ۔

#### معدد ماحب کی تعریف میں

جباً نک میرے ماہ میں زبان ہے' محمد کی تعریف کرنا مجے پسند دو ۔

وه ایشورر کا دوست اور نبیوں ( Prophets ) میں عور تھا .

أونيها أسبان أس كا تكهة تها .

وہ برق ( بجلی ) کے گھرزے پر سوار' دنیا کو وش میں کرتے والا'

اِس نیای چیت والے محل ( پرتبری ) سے یار نکل گیا ۔

#### اینی آنما سے

تیری پیاری عمر کے چالیس برس گذر گئے' ، تیرے مزاج سے ابہی تک بچہن نه گیا ، تو همیشه لوبه اور مولا میں پنسا رہا' ایک پل کے لئے بھی تونے نیکی کی طرف دھیاں نه دیا ، یه عمر تهبرنے والی نہیں ہے' اِس پر بھروسه ست کر' کال کی لیلا سے ہے خبر ست ہو ،

#### دیا کی تعریف میں

اسے دل ا جس کسی نے دیا کا خوان ( وہ کھڑا جس پر کہانا پرسا جاتا ہے ) بچھا دیا' बह द्या के संसार में नाम पा गया.

द्या तुमें जहान का सरदार बना देगी,

दया तुमें शान्सि के मैदान में विजयी कर देगी.

द्या से बढ़कर दुनिया में कोई काम नहीं,

द्या के बाखार से ज्यादा गरम कोई बाखार नहीं.

द्या मुख की पूँजी है,

द्या इस जीवन का सार है.

तू अपनी द्या से दुनिया के दिल को ताजा रख,

जहान में तेरी दया का चर्चा हो.

तू हमेशा दूसरों पर द्या करने में लगा रह,

क्योंकि जानदारों का पैदा करने वाला ईश्वर भी सब पर द्या करता है (ईश्वर का नाम 'करीम' है जिसके माने दयाला हैं).

दान देने की तारीफ़ में जो खुराफ़िस्मत है वह दानशीलता अख्तियार करता है, और दानशीलता से ही आदमी खुशफ़िस्मत होता है. अपने प्रेम और दानशीलता से दुनिया को वश में कर, प्रेम और दानशीलता की दुनिया में तू सरताज बन.

दान देना दिल बालों का काम है.

दान देना उनका पेशा है जो ईरबर के प्यारे हैं. दानशीलता आदमी की बुराइयों को इस तरह बदल देती है जिस तरह कीमिया तांबे को सोना करती है.

द्ता है। जस तरह कामिया ताब का साना करता है.
दानशीलता आदमी के सब द्दों की दवा है,
जब तक दुक्तमें हिन्मत है दानशीलता को मत छोड़,
दानशीलता से ही तू अपने कल्याण की गेंद को
बैदान में जीत के जायगा.

कंष्मुस की दुराई में

अगर आसमान कंजूस आदमी की इच्छा पूरी करने में सन जाने,

और अगर किस्मत उसकी गुलाम हो जावे, अगर उसके हाथ में कारूँ (इवेर) का खुजाना आ

ताचे,

जीर सारी दुनिया उसके क्रब्जे में आ जावे, तब भी कंजूस आदमी इस काबिल नहीं है कि तू उसका नाम ले.

चाई सारा जमाना उसकी चाकरी करने लगे. कंजूस के माल की तरफ तू कभी व्यान न दे, उसके घन चौर माल का तू कभी नाम भी मत ले. कंजूस चगर जल चौर यल में सबसे बढ़कर पूजा पाठ करे.

सब भी बसे स्वर्ग नहीं मिल सकता, यह रसूल का

कहनां है.

#### دال دینے کی تعریف میں

جو خوص قسمت هے وہ دان شیلتا اختیار کرتا هے،
اور دان شیلتا سے هی آدهی خوص قسمت هوتا هے .
اپنے پریم اور دان شیلتا سے دنیا کو وص میں کر،
دان دینا دل والس کا کلم هے .
دان دینا اُن کا پیشہ هے جو ایشور کے پیارے هیں .
دان شیلتا آدمی کی برائیوں کو اِس طرح بدل دیتی هے جس طرح کیمیا تائیے کو سونا کرتی هے .
دان شیلتا آدمی کے سب دردوں کی درا هے،
دان شیلتا آدمی کے سب دردوں کی درا هے،
جب تک تجع میں همت هے دان شیلتا کو محدان سے جهرز،
دان شیلتا سے هی تو اپنے کلیاں کی گیند کو میدان سے جیت

#### کنچوس کی برائی میں .

اگر آسیان کلنجوس آدمی کی اِچھا پوری کرنے میں لگ چارہے'

اور اگر قسمت آس کی ظم هو جارے' اگر اُس کے هاتھ میں قاروں ( کبیر ) کا خزانہ آجاوے' اور بناری دنیا اُس کے قبضے میں آجارے'

تب بھی کنجوس آدمی اِس قابل نہیں ہے که تو اُس کا نام لی'

چاھے سارا زمانہ اُس کی چاکری کرنے لکے .

کنجوس کے مال کی طرف تو کیعی دھیاں نه دیے'

أس كے دهن اور مال كا تو كبھى قام بھى ست لے .

كلممرس اكر جل أور تيل مين سب سه برمكر پوجا پاته

تب بھی اُسے سورگ نہیں مل سکتا کے رسول کا کہنا گے

जनवरी '56

جنرري 6<u>5</u>6°

# रोख बादी की "करीमा"

हंजूस जारमी जगर खूब धनवान भी हो जाबे, तब भी जपनी जिल्लत (नीचता) से बह मुफ्लिस की तरह मार खायगा.

वान देने वाले अपने धन से मीठा फल खाते हैं, कंजूस अपने चाँदी सोने का ग्रम खाते हैं.

#### दीनतां की तारीक में

पे दिल ! अगर तू दीनता अख्तियार करे, तो सारी दुनिया तेरी दोस्त हो जावे. दीनता तेरे इतवे को इस तरह बढ़ा देगी, जिस तरह सूरज की रोशनी चाँद को रोशन कर देती है.

दीनता मित्रता की कुंजी है, दीनता ही से मित्रता का कतवा ऊँचा होता है. दीनता आदमी का सिर ऊँचा करती है, दीनता सरदारों की पहचान है. आदमी बही है जो दीनता बरते, दीनता ही में सच्ची आदमीयत है.

जो जितना समम्बद्धार है वह उतना ही प्रयादा दीनता बरतता है.

जिस तरह दूरस्त की टहनी जितनी स्यादा कलों से सदी रहती है उतनी ही स्यादा जमीन से जा मिलती है.

दीनता तेरे मान को बदाने वाली है,
दीनता तुमे स्वर्ग तक पहुँचाने वाली है.
दीनता ही स्वर्ग के दरवाजे की कुंजी है,
दीनता सरदारी और रतवे का जेवर है.
जिस किसी को दूसरों पर बढ़प्पन हासिल है,
उसके लिये और भी अच्छा है कि दीनता बरते.
और जिस किसी को दीनता की आदत है,
मान और बड़ाई की उसे परवाह नहीं.
दीनता मुमे दुनिया का प्यारा बना देगी,
लाग दिल से तुमे उतना ही प्यार करेंगे जितना अपनी

तू लोगों से दीनता बरतना कभी न छोड़, किसी से तलवार की तरह गरदन अकड़ी मत रख. दीनता बड़ों को शोभा देती है, फक्कीर के लिये दीनता उसकी आदत ही है.

#### घमएड की बुराई में

पे बेटा ! तू कभी घमएड मत कर, क्योंकि घमएड एक न एक दिन तुमे सिर के बल गिरा देगा.

अकलमन्द् आदमी घमएड को पसन्द नहीं करता, जिसे होश है वह कभी घमएड नहीं करता.

### شیخ سعدی کی "کریما"

کنجوس آدمی اگر خوب دھنوان بھی مو جارے' تب بھی اپنی ذات ( نیجتا ) سے وہ مفلس کی طوح ہائیگا ۔ دان دینے والے اپنے دھن سے میٹھا پہل کہاتے ھیں' کنجوس اپنے چاندی سونے کا غم کہاتے ھیں ۔

#### نتا کی تعریف میں

اے دل ! اگر تو دینتا اختیار کرے' تو ساری دنیا تیری دوست هو جارے . دینتا تیرے رتبہ کو اِس طرح بڑھا دیگی جس طرح سورج کی روشنی چاند کو روشن کو دیتی فن دينتا مترتا كي آنجي هے، دينتا هي سے مترتا كا رتبة أديوا هوتا هے؛ ديلتا أدمى كا سر أرنتها كرتي هي دينتا سرداروں کی يہچان هے . آدمی وهی هے جو دینتا برتے ' دينتا هي ميں سچي آدميت هے. جو جتنا سمجهدار هے وہ اُنٹی هی زیادہ دینتا برتتا هے، جس طرح درخت کی ڈہنی جتنی زیادہ پہلوں سے لدی ی هے اُتلی هی زیادہ زمین سے آمالتی هے . دینتا تیرے مان کو بڑھائے والی ہے، دينتا تجه سورك تك يهونجانے والى هـ . دینتا ھی سورگ کے دروازے کی کنجی ھے، دینتا سرداری اور رتبے کا زیور هے . جس کسی کو دوسروں پر بوپن حاصل ہے، أس كے لئے أور بھى أچها هے كه دينتا برتے. أور جس کسی کو دینتا کی عادت ہے، مان اور ہوائی کی اُسے پرواہ نہیں ۔ دیاتا تجهے دئیا کا بیارا بنادیکی ' لوگ دل سے تجھے اُتنا ھی پیار کرینکے جتنا اپنی جان کو۔ تو لوگوں سے دینتا ہرتنا کبھی تے چھوڑ، کسی سے ناوار کی طرح گردن اکری مت رکھ دينتا بروں كو شوبها ديتي هے، نقیر کے لئے دینتا اس کی عادت هی هے .

#### نڌ کي برائي سي

اے بیتا ! تو کبھی گھمنڈ محاکو' کیونعہ گھمنڈ ایک نہ ایک دن تجھے سرکے بل گرادیگا ۔ عقلمند آدمی گھمنڈ کو پسند نہیں کرتا' جسے ھرص ہے وہ کبھی گھملڈ نہیں کرتا ۔ घमएड करना जाहिलों का काम है,
जिनके दिल है वह घमएड नहीं करते.
घमएड ने ही शैतान को जिलील किया,
उसे लानत के क़ैदखाने में गिरफतार कर लिया.
जिस किसी को घमएड की आदत हो जाती है,
वह अपने ही खयाल में अपने को ऊँचा समम्बता
रहता है.

घमएड बदकिस्मती की पूँजी है, घमएड बदजाती की जड़ है. जब तू यह सब जानता है तो घमएड क्यों करता है ? छागर करता है तो बुरा करता है—बुरा करता है.

#### विद्या की बड़ाई में

चादमी विद्या से ही कमाल को पहुँच सकता है, मान, बड़ाई, रुतबे चौर माल घसबाब से नहीं. बिद्या सीखने में घपने को इस तरह घुला देना चाहिये जिस तरह मोमबत्ती घपने को जल जलकर घुला देती है. क्योंकि बिना विद्या के घादमी ईश्वर को नहीं पहिचान सकता.

बुद्धिमान श्रादमी को चाहिये कि विद्या की तलाश करे.
विद्या का बाजार हमेशा गरम रहता है.
जिस किसी को ईश्वर ने सौभाग्य दिया है,
वही विद्या हासिल करने में लगता है.
विद्या हासिल करना श्रादमी का धर्म है,
विद्या के लिये सारी जमीन को छान डालना चाहिये.
जा श्रीर विद्या के पल्ले को मजबूती के साथ पकड़.
विद्या ही तुमें स्वर्ग तक पहुँचा सकती है.
श्रगर तू श्रक्रलमन्द है तो सिवाय विद्या के श्रीर कुछ मत सीख,
क्योंकि बिना विद्या के रह जाना राफलत में पढ़े रहना है.
तोरे दीन श्रीर दुनिया दोनों के लिए विद्या ही काफी है.

जाहिलों से बचने में

ऐ दिल ! अगर तू अक्षलमन्द और हाशियार है, तो जाहिलों ( अज्ञानियों ) की संगत मत कर. जाहिलों से तीर की तरह भाग, उनके साथ दूध और चीनी की तरह मिज़कर मत रह. अजगर से दास्ती करना ज्यादा अच्छा है, बजाय इसके कि कोई जाहिल तेरा दोस्त हो. अक्षलमन्द आदमी तेरी जान का दुश्मन भी हो तो अच्छा है.

तेरा सारा काम विद्या ही से सुधर सकता है.

बजाय इसके कि कोई जाहिल तेरा दोस्त हो. जाहिल की तरह दुनिया में काई जलील नहीं होता,

#### ودیا کی بزانی میں

أدمى وديا سے هى كدال كو پېونچ سكتا هے، رديا سهكهند مين أين كو اس طرح گهلا دينا چاهئد جس طرح موم ہتی اپنے کو جل جل کو گھلا دیتی ہے . کیوٹکہ بنا ودیا کے آدمی ایشور کو نمیں پہنچان سکتا . بدهیمان آدمی کو چاهنے که ردیا کی تلاش کرے۔ ودیا کا بازار همیشه گرم رهتا هے؛ جس کسی کو ایشور کے سوبھاگیہ دیا ہے، وهي وديا حاصل كرتے ميں لكتا هے . وديا حاصل كرنا أدمى كا دهرم هے، ودیا کے لئے ساری زمین کو چھان ڈالنا چاھئے۔ جا اور ودیا کے یلے کو مضبوطی کے سانھ یکو ودیا هی تجه سورگ نک بهودیچا ساتی هی اگر تو عقلمنی ہے تو سوائے وہیا کے اور کنچے مت سیکھ ؟ کیونکھ بنا ردیا کے رہ جانا غمات میں یڑے رہنا گے . تهرم دین اور دانها دوارس کے لئے ودیا هی کانی هے، تهرأ ساراً كام وديا هي سے سدهر سكتا هے .

#### جاعلی سے بچنے میں

اے دل ! اگر تو علمند اور ہوشیار هے،
تو جاعلوں ( اگیائیوں ) کی سنگت مت کو۔
جاھلوں سے تیر کی طرح بھاگ،
ان کے ساتھ دودہ اور چینی کی طرح ملکو ص وہ ۔
اجگر سے درستی کرنا زیادہ اچھا هے،
بجائے اس کے که کوئی جاعل تیرا دوست ہو !
عقلمند آدمی تیرا جان کا دشمن بھی ہو تو اچھا هے،
بجائے اس کے که کوئی جاهل تیرا درست ہو .
جاھل کی طرح دنیا میں کوئی ذایل نہیں ہوتا،

जाहिल रहने से ज्यादा नासममी का कोई काम नहीं. जाहिल सिवाय बुराई के और कुछ कर नहीं सकता, कोई बससे सिवाय बुरी बात के और कुछ नहीं सुन कता.

जाहिल बाखिर जहन्तुम (नरक) को नाता है, जाहिल का बाखीर बच्छा नहीं हो सकता. जाहिलों का सिर सूली पर रहे यही ठंक है, जाहिल जिल्ला में पड़ा रहे यही ठीक है. जाहिल से दूर रहना ही बच्छा है, यह लोक बौर परलोक दोनों उससे शर्म करते हैं.

#### इन्साफ़ की तारीफ़ में

जब कि ईश्वर ने यह काम तेरे सुपुर्द किया है, तो तू इन्साफ क्यों नहीं करता. जबकि इन्साफ ही बादशाहों का लिवास है, तू साफ करने के लिये अपने दिल को मजबूत क्यों नहीं रखता,

तेरी बादशाही देर तक कायम रहे,
आगर इन्साफ तेरी मदद करे.
नीशेरवां ने इन्साफ को अख्तियार किया,
इसीलिये उसकी नाम-कीर्त्ति अभी तक कायम है.
इन्साफ से देश को सुख मिलता है.
इन्साफ ही से लोगों की सुरादें पूरी होती हैं.
तू इन्साफ से दुनिया को आबाद रख,
जो इन्साफ चाहने वाले हैं उनके दिलों को खुश रख.
इन्साफ से बदकर दुनिया को बनाने वाला दूसरा कारीगर नहीं है.

इन्साक से बढ़कर कोई दूसरा काम नहीं है.

इससे ज्यादा तुमे और क्या चाहिये,

कि लोग तेरा नाम 'इन्साफ्यसन्द बादशाह' रखें.

श्रागर तू अपनी खुशकिस्मती चाहता है

तो दुनिया बालों के ऊपर ज़ुल्म का दरवाजा बन्द रख.

प्रजा की हिफाजत में कभी कमी न कर,
जो लोग तेरे पास फ्रियाद लेकर आवें उनके दिल की

सुराद हमेशा पूरी कर.

## .जुल्म की बुराई में

जुल्म करने वाला दुनिया को इस तरह बरबाद करता है, जिस तरह पतमाड़ की हवा हरे भरे बाग को उजाड़ देती है.

किसी हालत में भी जुस्म की इजाजत मत दे, ताकि तेरी बादशाहत का सूरज डूबने न लगे. जिस किसी ने दुनिया में जुस्म की आग लगाई, लोगों के दिलों से उसके लिये आहें निकलीं. جاهل رهنے سے زیادہ ناستجھی کا کوئی کام نہیں ۔
جاهل سوائے برائی کے اور کچھ کو نہیں سکتا'
کوئی اس سے سوائے بری بات کے اور کچھ نہیں سن سکتا ۔
جاهل آخر جہنم ( نرک ) کو جاتا ہے'
جاهل کا آخیر اچھا نہیں ہوسکتا ۔
جاهل کا سر سولی پر رہے یہی تھیک ہے'
جاهل ذات میں پڑا رہے یہی تھیک ہے ۔
جاهل ذات میں پڑا رہے یہی تھیک ہے ۔
جاهل سے دور رهنا هی اچھا ہے'

#### ے کی تعریف میں

جب که ایشور لے یہ کام تفرے سورد کھا ھے، تو تو الصاف كيس نهيل كرتا . جب که انصاف هی بادشاهوں کا لباس هے، نو اتصاف کرنے کے آئے اپنے دال کو مضبوط کھوں نہیں رکھتا تیری بادشاهی دیر تک قائم را . اگر انصاف تہری مدد کرے ، نوشيرواں نے انصاف کو اختدار کیا' أسى لله أس كا نام - كيوتى أبهى تك قائم هـ . انصاف سے ديهم كو سكه ملتا هـ . انصاف ھی سے لوگرں کی موادیں پوری ھوتی ھیں ، تہ انصاف سے دنیا کو آباد رکھی، جو انصاف چاہلے والے میں آن کے دلوں کو خوش رکھ ۔ انصاف سے برحمر دنیا کو بنانے والا دوسرا کاریکر نہیں ہے، انصاف سے يوهكو دوسرا كلم نهيں هے . اس سے ویاںہ تنجھے اور کیا چاھئے ا كه لوك تيرا نام انصاف يسدد بادشاه ركهيل . اگر تو اپنی خوش قسمتی چاهتا هے، تو دنیا والوں کے أوير ظلم كا دروازہ بند ركھ . ورجا کی حفاظت میں کبھی کسی نہ کر' جو اوگ تورے پاس فریاد لیکر آویں ان کی دال کی مراد ہے چوری کر ۔

#### کی برائی میں

ظلم کرنے والا دنیا کو اس طرح برباد کرتا ہے' جس طرح پتجھڑ کی ہوا ہرے بھرے باغ کو اُوجاڑ ہے ۔ کسی حالت میں بھی ظلم کی اُجاڑت مت دے' تاکہ تیری بادشاہت کا سورج توہنے نہ لئے ۔ جس کسی نے دنیا میں ظلم کی آگ لگائی' لوگوں کے دلوں سے اُس کے لئے اُھیں نکلیں ۔

#### नया हिन्द

जिस पर जुल्म हुआ है उसके दिल से अगर आह

तों उसकी लपट से मिट्टी और पानी में भी आग लग

जाए.

कमजोरों और लाच।रों के साथ जबरदस्ती न कर, श्राखीर में कब की तंगी से ढर. किसी सताप हुए को, दु:ख मत दे, जनता के दिल के घुएँ से वेखबर मत हो. पे नासमक ! लोगों को मत सता, पेसा न हो किर्श्वर का कोप तेरे ऊपर उतरे. कमजोरों और ग्ररीबों पर सितम मत कर, जो जुल्म करता है उसके नरक में पड़ने, में कोई संदेह नहीं.

#### सन्तोप की तारीफ़ में

ऐ दिल ! श्रगर तू सन्तोप करे, ता सुख के संसार में सरदारी करे.

अगर तू ग़रीब है तो अपनी ग़रीबी की शिकायत मत कर, सममदार आदमी के सामने धन दौलत छोटी चीजें हैं. अकलमन्द आदमी फक़ीरों से शर्म नहीं करता,

क्यों कि नबी (मोहस्मद साहब) को भी फ़क़ीरी का फ़ब्स

(गर्ब) हासिल था.

मालदार श्रादमी के लिये सोना चांदी ऊपरी सजावट की चीजें हैं,

फ़क़ीर को अपनी रारीबी से अन्दर का आराम मिलता है.

श्चगर तू मालदार नहीं है तो बेचैन मत हो, क्योंकि कोई बादशाह वीरान जगह से टैक्स नहीं लेता. हर हाल में सन्तोप करना श्रच्छा है. जो खुशिक्स्मत है वह संतोप करते हैं. श्चगर तू खुशिकस्मती चाहता है, तो सन्तोप के प्रकाश (नूर) से श्चपनी जान को रोशन कर.

#### लोभ की बुराई में

जो आदमी लोभ के जाल में फंस जाता है, बह लोभ का प्याला पीकर मस्त और बेश्वकल हो जाता है.

धन जमा करने में अपनी उम्र को मत खो, धन ठीकरी है और उम्र मोती. जो आदमी लोभ के जाल में पड़ गया, उसने अपनी जिन्दगी के खिलयान को हवा में उड़ा दिया.

मान लो कि फ़ारून का खजाना तुमे मिल जावे.

جس پر ظلم هوا هے اُس کے دل سے اگر آء نعلے، تو اُس کی اہت سے مٹی اور پانی میں بھی آگ لگ آئے ،

> کورروں اور الچاروں کے سانھ زیردستی تھ کو' آخھر میں قبر کی تلگی سے تر۔ کسی ستائے ہوئے کو دکھ ست دیے' جنتا کے دل کے دھوئیں سے پہنبر ست ھو۔ اے ناسمجھ 1 لوگوں کو ست ستا'

> ایسا نه هو که ایشور کا کوپ تیرے آرپر آترے۔ کمؤررون اور غریبوں پر ستم مت کو

جو ظلم کرتا ہے اس کے نرک میں پرنے میں کوئی سندیہ

#### سنتوش کی تعریف میں

اے دل ! اگر تو سنتوش کرے'

تو سکھ کے سلسار میں سرداری کرے .

اگر تو غریب هے تو اپنی غریبی کی شکایت مت کرا

سمجھدار آدمی کے سامنے دھن دولت چھوٹیچیزیں ھیں۔ عقلمن آدمی فقیروں سے شرم نہیں ارتا'

کیولکت نبی ( محمد صاحب ) کو بھی نقیری کا فنخر ( گرو ) حاصل تھا .

مالدار آدمی کے لئے سونا چاندی اُوپری سجاو**ت کی** چیزیں ھیں'

فقير كو أينى غريبي سے أندر كا آزام ملتا هے .

اگر تو مالدار نهيں هے تو يے چين ست عو

كيونكم كوئى بادشاة ويرأن جكم سے تيكس تهيں ايتار،

هر حال میں سنترش کرنا اچها هے'

جو خوش قسمت هين وه سنتوش كرتے هين .

اگر تو خرص فسمتی چاهتا هے،

تو سنتوش کے پرکاش ( نور ) سے اُپنی جان کو روشن کر .

#### لوبھ کی برائی میں

جو آدمی لوبھ کے جال میں پھنس جاتا ہے'
وہ لوبھ کا پیالتہ پیکر مست اور بےعقل ھوجاتا ہے۔
دھن جمع کرنے میں آپنی عمر کو ست کھو'
دھن ٹھیکری ہے اور عمر موتی ۔
جو آدمی لوبھ کے جال میں پر گیا''
اس نے اپنی زندگی کے کھلیان کو ھوا میں اُڑا دیا ۔
مان لو که قاررن کا خزانہ تجھے مل جارہے'

दुनिया भर की सुख सामगी तुमे मिल जाने, आखिर एक दिन तुमे मिट्टी में मिल जाना पढ़ेगा, बेबसों की तरह और दर्दभरे दिल के साथ. धन के पागलपन में अपने को क्यों गलाता है, गधे की तरह मेहनत का बाम क्यों घठाता है. धन के लिये तू इतना परिश्रम क्यों करता है, जबकि एक दिन तुमे अचानक चला जाना है. तूने अपना दिल दिरम (एक सिक्का) के नक्ष्श को इस

कि उसकी चाह में तू शरम से भी हाथ वो बैठा है. धन की सूरत का तू ऐसा आशिक हो गया है, कि घबराया हुआ और परेशान है.

जिसका तू शिकार करना चाहता है उसका तू खुद इस तरह शिकार हो रहा है.

कि तुमे उस दिन की भी याद नहीं आती जिस दिन सब को अपने कर्मी का फल अुगतना पड़ेगा.

उस तुच्छ आदमी का दिल कभी खुश नहीं रह सकता, जिसने दुनिया (धन) के लिये अपने दीन (धर्म) को बरबाद कर दिया.

ईश्वर की सेवा और मिक्त की तारीफ़ में सौभाग्य जिस किसी का गुलाम होता है, इसका दिल सदा ईश्वर की सेवा में लगा रहता है. ईश्वर की सेवा से दिल को फेरना नहीं चाहिये, सच्ची दौलत सेवा ही से मिलती है. सेवा से खुशकिस्मती प्राप्त होती है, सेवा के प्रकाश से दिल रोशन हो जाता है. यदि तू सेवा के लिये कमर कस ले, तो कभी नष्ट न होने वाली दौलत का दरवाजा तेरे लिये

खुल जावे.

श्रक्तलमन्द आदमी सेवा से कभी मुँह नहीं मोड़ता,
क्योंकि सेवा से बढ़कर कोई हुनर नहीं है.

भक्ति के पानी से सदा बुजू को ताजा रख (अपने को पवित्र रख).

ताकि कल तू नरक की आग से बच सके.
सच्चाई के साथ नमाज (पूजा) करता रह,
ताकि हमेशा रहने वाली दौलत तुमें मिल सके.
सेवा से भीतर की आत्मा रोशन होती है.
तू अपने पैदा करने वाले की पूजा कर,
उसकी भक्ति के महल में बैठने वाला बन.
अगर तू हक (सत्य) या ईश्वर की पूजा करना
अख्तियार कर ले.

तो दीलत की दुनिया का बादशाह हो जावे. संयम का जामा हमेशा पहिने रह, ینیا بھر کی سکھ سامگری تجھے مل جارے' اخر ایک دن تجھے متی میں مل جانا پڑیگا' پے بسوں کی طرح اور درد بھرے دل کے ساتھ . دھن کے پاگل پن میں اپنے کو کیوں گلتا ہے . گدھ کی طرح محملت کا بوجھ کیوں آٹھاتا ہے . دھن کے اگر تو اننا پریشرم کیوں کرتا ہے' دھن کے ایک دن تجھے اچانک چلا جاتا ہے . نونے اپنا دیل درم ( ایک سکھ ) کے نقص کو اس طرح دے ۔

که اس کی چاہ میں تو شرم سے بھی هاتھ دهو بیتھا ہے ۔ دهن کی صورت کا تو ایسا عاشق هوگیا ہے' اس کا استار مار ہوں ہے۔

كه كهبرايا هوا اور پريشان هے.

جس کا تو شکار کرنا چاهتا ہے۔ اس کا تو خود اس طرح ہو رہا ہے؛

که تجهے اس دن کی بھی یاد تہیں آتی جس دن سب ، ، کرموں کا پہل بھکتا پڑے گا ،

لسُ تَجَّهِ أَدْمَى كَا دَلَ كَيْهِى خَوْشَ نَهِيْنِ رَهُ سَكَمَا' جس نے دنیا ( دھن ) کے لئے اپنے دین ( دھرم ) کو کردیا .

#### کی سیوا اور بھکتی کی تعریف میں

سوبهاگيه جس کسي کا غلام هوتا هے؛

اس کا دل سدا ایشور کی سیوا میں لگا رها هے،

ایشور کے سہوا سے دل کو پھیرنا فہیں چاھیے

سچی دوات سیوا هی سے ملتی هے . سهوا سے خوش تسمتی پرایت هوتی هے، سہوا کے پرکاهل سے دال روشن هوجاتا هے . یدی تو سیوا کے لئے کمر کس لے تو کبھی نشٹ نہ ھرنے والی دولت کا دروازہ تھرے لئے عقلمند آدمي سيوا سے کبھي منھ نہيں مورتا' کیونکه سیوا سے بڑھکر کوئی ھنر نہیں ہے ۔ بھکتی کے پائی سے سدا رضو کو تازہ رکھ ( اپنے کو دروتر رکھ )' تانه کل تو نوک کی آگ سے بہم سکے . ستجائی کے ساتھ نمار ( بوجا ) کرتا رہ، تاکه همیشه رهنه والی دولت تجهه مل سکه. سيوا سے بهيتر کي اُتما روشن هوتي هے . تو اپنے بیدا کرنے والے کی پوجا کر' اس کی بھکتی کے محل میں بیٹھنے والا بن . اكر توحق ( ستيه ) يا أيشور كي يوجا كرنا أختيار كرك تو دولت کی دنیا کا بادشاہ هو جارے . سنيم كا جامة هميشة يهف ره क्योंकि स्वर्ग संयमी लोगों ही के रहने की जगह है. अपनी जान के चिराग्र को तृ तपस्या से रोशन कर, ताकि खुराकिस्मत आदिमयों की तरह तू मी खुराकिस्मत

हो. जो धार्मिक जीवन बिताता है, बह कर्मों के फल से नहीं दरता.

3000 0

#### श्रीतान ( विषय-वासना ) की बुराई में

ऐ दिल ! जिस किसी ने शैतान (विषय-वासना ) का कहना माना.

बह रात दिन गुनाह के जाल में फंसा रहा.
जिस किसी ने शैतान को अपना अगुवा बनाया,
लीटकर वह ईश्वर के रास्ते पर कैसे आ सकता है.
ऐ दिल ! तू गुनाह का इरादा कभी न कर,
ताकि सबका पालने बाला ईश्वर तुम पर रहम करे.
समम्मदार आदमी गुनाह से बचता है,
जैसे शकर पानी से, क्योंकि पानी से शकर के घुल
जाने का डर रहता है.

खुशकिस्मत आद्मी गुनाह से बचता है. क्योंकि सूरज की रोशनी भी बादल से छिप जाती है. तू अपनी विषय-वासना के पीछे मत चल, ऐसा न हां कि अचानक नरक में जा पड़े. अगर तेरा दिल पाप से नहीं किरता, तों फिरं नरक ही में तेरा ठिकाना होगा. अपने जीवन के घर को, बदकारियों और पापों की बाद से बरबाद मत कर. अगर तू पाप और बुराइयों से दूर रहेगा, तो स्वर्ग के बाग से नजदीक रहेगा.

#### प्रेम की मदिरा के बयान में

एं साक्री (गुरू) ! मुक्ते आग की सूरत वाली शराब दे, जिसमें वह मस्ती हा जिसकी दिल वाले आदमी चाह रखते हैं.

लाल शराब सोने के प्याले में, जो प्रीतम के होठों की तरह मेरी आत्मा को बल दे. जो लोग प्रेम के मतबाले हैं उनकी चाह की आग कैसी प्यारी है,

जो लोग प्रेमी हैं उनके दर्द की लज्जत कितनी अच्छी

वह शराब ला जो अमृत की तरह अमर बना देने बाली है,

जिसकी खुशबू ही से दिल राम से छूट जाता है. सुबारिक वह दिल है जिसमें प्रीतम (ईश्वर) को पाने की जालसा हो, کیونکہ سورگ سنیمی لوگوں ھی کے رھنے کی جکہ ہے . اُپنی جان کے چراغ کو تو تھسیا سے روشن کو' تاکہ خوش قسمت آدمیوں کی طرح تو بھی خوش قسمت ہو . حہ جو دھارمک جیوں باتاتا ہے' وہ کرموں کے یہل سے نہیں قرنا .

#### المطان ( وشئه وأسنا ) كي برائي ميس

أے دل ! جس کسی نے شیطان (دشئے واسنا) کا کہنا مانا وہ رأت دوں گناہ کے جال میں بھنسا رہا . جس کسی نے شیطان کو اینا اگوا بنایا ا لوے کو وہ آیشور کے راستے پر کیسے آسکتا ہے۔ اے دل ! تو گناہ کا اِرادہ کبھی نہ کر تاکه سب کا یا لئے والا ایشور تجه یر رحم کرے . سبجهدار آدمي گناه سے بچتا ہے، جیسے شکر پانی سے' کیونکہ پانی سے شکر کے گہل جانے کا تر رهنا هے. خوه تسبت آدمي گناه سے بچتا هـ، کیونکه سورے کی روشنی بھی بادل سے چھپ جاتی ہے . تو اینی وشیّے واسنا کے پیچھے ست چل، ایسا نہ هو که اچانک نرک میں جا یوے . اک تیرا دل یاپ سے نہیں پھرتا' تو يهر لرك هي مهي تيرا تهكانا هوا . ابنے جیوں کے گھر کو' بدکاریوں اور پاپوں کی ہاڑھ سے برہاد مت کو، اکر تو یاپ اور برائیوں سے دور رهیگا، تو سورک کے باغ سے تردیک رهیگا .

#### پریم کی مدرا کے بیان میں

لالسا هو'

اے ساتی! (گرو)! مجھ آگ کی صورت والیِ شراب دے'

جس میں وہ مستی ہو جس کی دل والے آدمی چاہ رنہتے ہیں .

لال شراب سونے کے پیالے میں' جو پریتم کے هوئٹھوں کی طرح میری آنما کو بل دے . جو لوگ پریم کے متوالے هیں اُن کی چاہ کی آگ کیسی

ہم لوگ پریمی هیں أن كے درد كى لذت كتنى اچهى هے وہ لوگ پریمی هيں أن كے درد كى لذت كتنى اچهى هے وہ شراب لا جو است كى طرح اس بنا دينے والى هے، حس كى خوشبو هى سے دل غم سے چهرت جاتا هے . مبارك وہ دل هے جس ميں پريتم (ايشور) كو پالے كى

# रोल् सादी की "करीमा<sup>5</sup>"

मुबारिक है वह आदमी जो उसके प्रेम में पागल है.

मुबारिक है वह दिल जिसमें प्रीतम के दर्शन की चाह है,

मुबारिक है वह दिल जिसकी मंजिल प्रीतम की गली है.

वह शराब जो प्रीतम के जीवन देने वाले होठों की

तरह है,

बहु पाक शराब जो प्रीतम के साफ साफ मुखदे की तरह है.

जो लोग दिल वाले हैं उनका यह प्रेम की शराब पीना कैसा अञ्जा है.

जो लोग दिल दे चुके हैं (यानी प्रीतम में लीन हो चुके हैं) उनकी यह मस्ती कसी अच्छी है.

#### वक्रा (वचन निवाहना) की तारीक्र में

पे दिल ! तू वफा में हमेशा पक्का रह, विना वफा के जीवन पेसा ही निकन्मा है जैसा विना सहर का सिक्का.

अगर तू बका की राह से अपनी बाग न फेरेगा, तो दुशमनों के दिल में भी दोस्त बन जायगा. अपने दिल को बका की गली से मत मोड़, नहीं तो तुमें प्रीतम (ईश्वर) के सामने शर्माना पड़ेगा! बका की गली से पाँव बाहर मत रख, क्योंकि दोस्तों का जका (वका का उलटा) शोभा नहीं देती.

दोस्तों से जुदाई करना बुरा है, मित्रों से नाता तोड़ना वफा के खिलाफ है. बेबफाई औरतों की श्रादत है, तू औरतों की यह बुरी श्रादत मत सीख.

#### ईक्वर को धन्यवाद देने (शुक्र) की बड़ाई में

जिस किसी का दिल सत्य का पहचानता है, उसे चाहिये कि ईश्वर का धन्यवाद देने से कभी अपनी जवान को बन्द न करे.

हर दम ईश्वर का धन्यवाद देता रह, जो दुनिया को पालता है उसका धन्यवाद देना तेरा फर्ज है.

धन्यवाद देने (शुक्र करने) से तेरी सुख सम्पत्ति बढ़ेगी, धन्यवाद के रास्ते से तेरी विजय होगी.

अगर तू क्रयामत के दिन तक भी ईश्वर का धन्यवाद करता रहे तो भी तेरे फूर्ज का हजारवां हिस्सा भी पूरा नहीं होता.

फिर भी शुक्र फरना बड़ी अच्छी बात है, ईश्वर का शुक्र फरना इसलाम (धर्म) का जेवर है. अगर तू ईश्वर के शुक्र से अपनी जवान बन्द न करे, तो तू वह दौलत पावे जो हमेशा रहने बाली है.

### شيع سعدى كى الأكريمالة

مہارک ہے وہ آدمی جو آس کے پریم میں پاگل ہو۔
مہارک ہے وہ دل جس میں پریتم کے درشن کی چاہ ہے،
مہارک ہے وہ دل جس کی مازل پریتم کی گلی ہے ۔
وہ شراب جو پریتم کے جیرن دینے والے ہوتیوں کی طرح ہے،
وہ پاک شراب جو پریتم کے صاف صاف مکھڑے کی طرح ہے،
جو لوگ دل والے ہیں اُن کا یہ شراب پینا کیسا اچھا ہے،
جو لوگ دل دے چکے ہیں (یعنی پریتم میں لین ہو چکے ہیں) اُن کی یہ مستی کیسی اُچھی ہے ۔

#### وفا ( وچن نباهنا ) کی تعریف مهن .

اے دل! تو رفا میں همیشه پکا رہ ا بلا رفا کے جدون ایسا هی نکما هے جیسا بنا مہر کا سکه ۔
اگر تو رفا کی راہ سے اپلی باگ ته پهیوبکا ا تر دشمنوں کے دل میں بھی دوست بن جائیکا ،
اپنے دل کو رفا کی گلی سے مت مور ا نہیں تو تجھے پریتم (ایشور) کے سامنے شرمانا پریکا ا رفا کی گلی سے پاؤں باہر سے رکھ ا کیونکم دوستوں کو جفا (وفا کا اُلقا) شوبھا نہیں دیتی ۔
دوستوں سے جدائی کرنا برا هے اُسے متروں سے نانا توزنا وفا کے خلاف ہے ،
بیوفائی عورتوں کی عادت ہے ،
بیوفائی عورتوں کی عادت ہے ،

#### ایشور کو دهنهمواد دینے (شکر) کی برائی میں

جس کسی کا دال ستیه کو پهچانتا هے، اُسے چاھلے که ایشور کو دھنیہواد دینے سے کبھی اپنی زبان کر بند نه کرے ۔

هر دم ایشور کو دهنیهواد دیتا ره'
جو دنیا کو پالتا هے اُس کو دهنیهواد دینا تیرا فرض هے .
دهنیهواد دینه (شکر کرئے ) سے تیری سکھ سمپتی برهیکی'
دهنیهواد کے راستے سے تیری وجئه هوگی .
اگر تو قیامت کے دین تک بھی ایشور کا دهنیهواد
کرنا رہے تو بھی تیرے فرض کا هزارواں حصم بھی پورا فہیں هوتا .

پہر بھی شکر کرنا بڑی اچھی بات ہے' ایشور کا شکر کرنا اِسلم ( دھرم ) کا زیور ہے ۔ اگر تو ایشور کے شکر سے اپنی زبان بند نہ کرے' تو تو وہ دولت یارے جو ہمیشہ رہنے والی ہے۔ सन्न (धीरन) के बयान में

बगर धीरज तेरे हर वक्त साथ रहे, तो तू हमेशा ठहरने वाली दौलत हासिल करे. सत्र करना पैराम्बरों का काम है, जो दीनदार (धर्मात्मा) हैं वह सत्र से मुँह नहीं मोड़ते. सत्र जिन्दगी के मकसद का दरवाजा लोलता है, क्योंकि सिवाय सत्र के उस दरवाजे की कोई और कुंजी नहीं है.

संग करना तेरे दिल की मुराद की पूरा करेगा, इसी से जो जानने वाले हैं वह तेरी मुशकिल को हल करेंगे.

सत्र करना हमारी कामनाओं के दरवाजे की कुंजी है, यह कुंजी कामना (आरजू) की सस्तनत को खोलने बाली है.

सब करना हर हाल में अच्छा है, इसमें बहुत सी भलाइयाँ छिपी हैं. सब से ही तेरा मकसद पूरा होगा, रंज और बला से तुमे छुटकारा मिलेगा. अगर तुममें दीन (धर्म) का खयाल है तो सब कर, जल्दी करना शैतानों का काम है.

सच बोलने की तारीफ़ में

पे दिल ! श्रगर तू सच्चाई को श्रास्तियार कर ले, तो दौलत तेरी दास्त और भाग्य तेरा मददगार हो जावे. बुद्धिमान को चाहिये कि सच्चाई से कभी मुँह न मोड़े, क्योंकि सच्चाई ही से नाम ऊँचा होता है सुबह की तरह श्रगर तू सच्चाई के साँस लेने लगे, तो श्रपने श्रन्द्र के श्रह्मान के श्रंधियारे से निकलकर

शान के उजियाले में च्या जावे.

त् बिना सच्चाई के कभी दम मत मार,
इष्जत दौलत से बढ़कर है.
इस दुनिया में सच बोलने से बढ़कर कोई काम नहीं,
सच्चाई वह गुलजार है जिसमें कोई कांटा नहीं.

भूठ की बुशई में

जिस किसी ने भूठ को खिलतयार किया,
बह क्रयामत के दिन किसी तरह नहीं छूट सकता.
जिस किसी की जबान को भूठ की आदत हो गई,
उसके दिल का चिरारा कभी रोशन नहीं हो सकता.
भूठ बोलना आदमी को शरमिन्दा करता है,
भूठ बोलने से आदमी का मान जाता रहता है.
आकलमन्द आदमी भूठ बोलने वाले से दूर रहता है,
कोई आव्मी भूठ बोलने वाले को गिनती में नहीं लाता.
ऐ भाई ! तू कभी किसी हालत में भूठ न बोल,
बयोंकि भूठ बोलने वाला बेइज्जत होता है और कोई

مبر ( دہورج ) کے بیان میں

اگر دهیرج تهرم هر وقت ساته رهے' و تو همیشه تهہرنے والی دولت حاصل کرے . صبر کرنا پهنمبررں کا کام هے' جو دیندار ( دهرمانما ) هیں وہ صبر سے منه نهیں مورتے .

میر زندگی کے مقصد کا دروازہ کھوالنا ہے؛ کیونعہ سوائے صبر کے اُس دروازے کی کوئی اور کنجھی

کیوٹیٹ سوائے صبر کے اُس دروازے کی کوئی اور کنجے ٹہیں ھے ۔

مبر کرنا تیرے دل کی مراد کو پورا کریاا' اِسی سے جو جائیئے والے هیں وہ تیزی مشکل کو حل کرینگے ۔ صبر کرنا هماری کامناؤں کے دروازے کی کنجی ہے' یہ کلجی کامنا (آرزو) کی سلطنت کو فولئے والی ہے ۔ صبر کرنا هر حال میں اچھا ہے' اِس میں بہت سی بھائیاں چھھی هیں ۔ صبر سے هی تھرا مقصد پورا هوگا'

رنبے اور بلا سے تجے چھٹکارا ملیکا . اگر تجھ میں دین ( دھرم ) کا خیال ہے تو صبر کر'

اگر تجھ میں دین ( دھرم ) کا حیال سے تو صبر در ۔ جلدی کرن شیطانوں کا کام ہے .

سے بولاء کی تعریف میں

اے دل اگر تو سچائی کو اختیار کر لے'
تو دولت تیری دوست اور بیاکیہ تیرا مددگار ہو جارے ،
بدھیمان کو چاہئے کی سچائی سے کبھی منہ نہ موزے'
کیوئکہ سچائی ہی سے نام آونچا ہوتا ہے ،
صبح کی طرح اگر تو سنچائی کے سانس لینے لکے'
تو اپنے اندر کے اگیان کے اندھارے سے نکل کر گیان کے اُجیالے میں آجارے ،

تو ہنا سچائی کے کھی دم ست مار' عوت دولت سے بڑھکر ہے ۔ اِس دنیا میں سچ ہولنے سے بڑھکر کوئی کام نہیں ' سچائی وہ گلزار ہے جس میں کوئی کانقا نہیں ،

جهوت کی برائی میں

جس کسی نے جہوت کو اختیار کیا'
وہ قیاست کے دن کسی طرح نہیں چبوت سکتا ،
جس کسی کی زبان کو جہوت کی عادت ہو گئی'
اُس کے دلکا چراغ کبھی روشن نہیں ہو سکتا ،
جہوٹ بولنا آدمی کو شرمند، کرتا ہے'
جہوٹ بولنا آدمی کا مان جاتا رہتا ہے'
عقلمند آدمی جہوت بولنے والے سے دور رہتا ہے'
کوئی آدمی جہوت بولنے والے کو گنتی میں نہیں لتا ،
کوئی آدمی جہوت بولنے والے کو گنتی میں نہیں لتا ،
اے بھائی ! تو کبھی کسی حالت میں جہوت نے بول'
گوئی آدم جہوٹ بولنے والے عزت ہوتا ہے اور کوئی اُس کا اُعتبار نہیں کرتا ،

जनवरी '56

(16)

ج**اررى** 5<u>6</u>°

गुड बोतने से ज्यादा बुरा कोई काम नहीं है, बे बेल ! कुठ बोलने से बादमी का बरा मिट्टी में मिल चावा है.

द्वीवर (हकुतासा = परम सत्य ) की दुनिया के बारे में इस सुनहते गुम्बद की तरफ निगाह डाल. जिसकी क्षत बिना किसी खम्भे के सीधी फैली हुई है. इस भूमने वाले आसमान के परदे को देखों, इसके अन्दर भोमवत्तियाँ जलती हुई देखी. दुनिया में कोई दरवान है और कोई वादशाह, कोई फरियादी है और कोई महसूल लेने वाला. कोई खुश है और कोई दुर्वमन्द, कोई सफल मनोरथ है और कोई लाचार. किसी के सिर पर ताज है और कोई दूसरे को टैक्स

वेता है, कोई सरदार है और कोई खाकसार. कोई बोरिये पर बैठा है और कोई तस्त पर, कोई टाट पहिने है और कोई रेशमी कपड़े. कोई मोहताज है और कोई मालदार, कोई नामुराद है और कोई कामयाव. कोई धन की खशी में है कोई ग़रीबी के दुख में, किसी को जिन्दगी हासिल है और किसी को मौत. कोई तन्दुरुस्त है और कोई कमजोर, कोई बूढ़ा है और कोई जवान. कोई पुरेय में लगा है और कोई पाप में, कोई दूसरों को दुआ दे रहा है और कोई दूसरे के साथ द्या कर रहा है.

कोई नेक काम करता है और विश्वासी (आस्तिक) है, और कोई पाप और बदकारियों के दरिया में हवा

कोई मिलनसार है, और कोई बदमिजाज. कोई सहनशील है और कोई लढ़ाका. 🥗 कोई आनन्द में है और कोई दुख में, कोई मेहनत कर रहा है और कोई आराम. कोई मान बढ़ाई की दुनिया में बढ़ा है, कोई मुसीवतों के जाल में क़ैद् है. कोई धानन्द के बारा में बैठा है. कोई राम, रंज और मेहनत में पड़ा है. किसी के पास बेहिसाब धन दौलत है. किसी को अपने वाल बच्चों के लिये रोटी का ग्रम है. कोई फुल की तरह ख़शी से खिल रहा है. किसी का दिल राम से मुरकाया हुआ है. किसी ने ईरवर की सेवा में कमर कस रखी है. किसी ने सारी चमर पाप में खत्म कर वी। कोई रात दिन धर्म पंथ हाथ में लिये हुए है. कोई शराय काने के कोने में मस्त सोया हुआ है.

جهوت بولنے سے زیادہ ہوا کوئی کام فینی ہے الم بیٹا ! جہرے بولنے سے آدمی کا بھی مٹی میں مل ماتا ہے۔

#### بشرر ( حق تهلی = پرم ستیه ) کی دنیا کے بارے میں

اِس سنہلے گمید کی طرف نگاہ ڈال جس کی چھت بنا کسی کھدیے کے سهدھی بھیلے هوئی ہے . اِس گھومنے والے آسمان کے دردے کو دیکھوا أس كے أندر موم بتياں جلتى هوئيں ديكھو . دنیا میں کوئی دریان هے اور کوئی بادشاء ا كوئم ، قريادي هے أور كوئي متعصول لينے والا . كوئى خوش في أور كوئى دردمندا كوئى سههل منورته هے أور كوئى الجار.

کسی کے سر پر تاہے ہے اور کوئی دوسرے کو ٹیکس دیتا ہے۔ کوئی سرادر ہے اور کوئی خاکسار ۔

کوئی بوریئے پر بیتھا اور کوئی تخت پر کوئی ٹات پہنے ہے اور کوئی ریشمی کوڑے ، كوأى محتاج هے أور كوئى مالدار؟ كوئى تعمران هے أور كوئى كامهاب. کوئی دھن کی خوشیمیں ہے اور کوئی غریبی کے دکھ میں

کسی کو زندگی حاصل ہے اور کسی کو موت ۔ كوئي تندرست هے اور كوئي كيزور؟ کوئی ہوڑھا ہے اور کوئی جوان .

كوئي پنهه ميں لكا هے أور كوئى پاپ ميں،

کوئی دوسروں کو دعا دے رہا ہے اور کوئی دوسرے کے ساتھ

کوئی نیک کام کرتا ہے اور وشواسی ( آستک ) ہے، اور کوئی پاپ اور بدکاریوں کے دریا میں توہا ہوا ہے۔ کوئی ملنسار ہے اور کوئی بدمزاہ، كوئى سهن شيل هے أور كوئى لواكا . کوئی آئند میں ہے اور کوئی دکھ میں ا کوئی محصنت کو رہا ھے اور کوئی آرام ، کوئی مان بزائی کی دنیا میں ہوا ہے، کرئی مصیبتوں کے جال میں قید ھے ۔ کوئی آنند کے باغ میں بیھٹا ھے كوئى غم ورنبع ارز مصيبت مين يوا هـ. کسی کے پاس بےحساب دھن دولت ہے، کسی کو اینے بال بچوں کے لئے روئی کا غم ھے . کوئی پھول کی طرح خوشی سے کھل رھا ہے، کسی کا دل غم سے مرجهایا هوا هے.

کسی نے ایشور کی سیوا میں کدر کس رکھی ہے،

کوئی شراب خالے کے کوئے میں مست سبیا ہوا گے .

کسی نے ساری عمر پاپ میں ختم کردی ! کوئی رأت دن دهرم گرفته هاته مهن لئے هوئے ہے۔

कोई शरम ( अपूरी रीत रिवाज ) के द्रवाचे पर कीन की तरह गड़ा हुआ है,

कोई खुराफ़िस्मत, विद्वान और होशियार है, कोई वदक्रिस्मत, बाझानी और शरमिन्दा है. काई बहादुर, फुरतीला और पहलवान है, कोई बुजदिल, सुस्त और डरपोक है. कोई मुन्शी, ईमानदार और दिल बाला है, कोई नाम का मुन्शी और दिल का चीर है.

द्रनिया के लोगों से बाशा रखने के ख़िलाफ़ इसके बाद तू जमाने के ऊपर भरोसा मत कर, कि न जाने कर अचानक मौत आ घेरे. अपनी बेशमार फीज के ऊपर भरोसा मत कर, कि शायद उसकी मदद तेरे किसी काम न आ सके. मुल्क और इतवे और लशकर के ऊपर भरोसा मत कर, क्योंकि तुम्मसे पहिले तेरी तरह के बहुत से हुए और तेरे बाद भी होगे.

त् किसी के साथ बुराई न कर नहीं तो तू अपने नेक

दोस्त से भी बुराई पावेगा,

बुरे बीज से कभी बाच्छा फल पैदा नहीं हो सकता. बहुत से बादशाह और बड़े बड़े सुलतान, बहुत से पहलबान मुल्कों के जीतने वाले, बढ़े बढ़े बलवान सेनाओं को तहस नहस कर देने वाले. बहुत से रोर मर्द तलबार के धनी.

बड़े बड़े खूबस्रत लोग शमशाद (एक दरस्त ) के से

बहुत से नाजनीन सूरज के से मुखड़े वाले, बहुत से नीजवान चाँद के से मुंह बाले, बहुत सी नव-बधु सजी हुई,

बहुत से यशस्वी और बहुत से कामयाब लोग, बहुत से सर्व (दरव्त) के से कृद वाले और बहुत फूलों

के से गालों बाले,

जब उन्होंने अपनी उम्र के कपड़े को फाड़ा, और मिट्टी के गिरेबान में अपना, मुंह छिपाया, सो उनकी उम्र का खलियान इस तरह इवा में उड़ा, कि फिर किसी ने उनका निशान तक न वतलाया. तू इस मौत के पड़ाब से अपना दिल न लगा, इस पड़ाब में तुमे एक भी दिल खुश न दिखाई देगा. इस लुभावनी दवा के महल से तू विल न लगा, कि इसके आसमान से बला बरसती है. ये बेटा ! इस दुनिया में कोई चीज टिकने वाली नहीं है, तू इसमें राकलत के साथ अपनी उम्र को मत गुजार. मुल्क और बादशाहत के ऊपर भरोसा मृत कर क्योंकि जब भी अचानक हुक्स आ जावेगा तुमे जान देनी दोगी.

इस न ठहरूने बाली दुनिया के ऊपर विल मत लगा, "सादी" की इसी एक बात को याद रख.

کئی فرح ( آبیری رات رواج ) کے دورازے پر کیل کی طرے کوا موا ہے،

کوئی خُرهی تسمت ودوان زور هوشیار هے . م كولي بدقسمت اكياني أور شرمندة هـ • كوئي بهادر بهرتية أور يبلوان هـ کوئی ہزدل' سست اور تربیک ھے۔

كوتى منهى أيماندار أور دل والا هـ،

کوئی نام کا منھی اور دل کا چور ھے . دانھا کے لوگوں سے آشا رکھلے کے خلاف

اِس کے بعد تو زمالے کے اُریر بھروست مت کوء که نع جالے کپ اچانک موت آگھیرے . اپنی بے شمار نوچ کے اُوپر بھروسہ مت کوا

که شاید اِسکی مدد تهریم کسی کام له آسکه .

ملک اور رتبہ اور لشکر کے اوپر بھروست مت کوء

کیونکہ تج سے پہلے تیری طارح کے بہت سے عوثے اور تیرے

ٹو کسی کے ساتھ ہرائی تھ کر نہیں تو تو اپنے نیک درست سے بھی برائی یاریگا'

برے بھی سے کبھی اچھا پھل پیدا نہیں ہو سکتا .

بہت سے بادشاہ آور ہوے ہوے سلطان

يهت سے پہلواں ملكوں كو جيتنے والے

برے پرے بلوان سیناؤں کو تحس نحس کردینے والے

بہت سے شیر مرد تلوار کے دھنی'

بڑے بڑے خوبصورت لوک شمشاد ( ایک درخت ) کے سے

بہت سے نازنین سواج کے سے مکھڑے والے ا

بہت سے نوجوان چاند کے سے منه والے

بہت سی نو بدھو سجی ھوئی'

بہت سے یشسوی اور بہت سے کامهاب لوگی'

بہت سے سرر (درخت) کے ت قد والے اور بہت سے پھولیں کے سے کالیں رائے' پھولیں کے سے کالیں رائے' چب اُنھیں نے اپنی عمر کے کپڑے کو پھاڑا'

اور ملی کے کریبان میں اپذا منه چههایا،

تو أن كي عمر كا كهليان إس طرح هوا مين أزاء

که یہر کسی لے اُن کا نشان تک نه بتایا "

تو اِس موت کے براؤ سے ایٹا دل نے لگا'

اِس پراؤ میں تجھے ایک بھی دل خرش نہ دکھائی دیگا'

رس پراو میں صبیعے بیت بھی من حوس مد ماہ ہی دیت اوس بھارتی ہوا کے محل سے تو دل نہ لگا'
دہ اِس کے آسمان سے بھ برستی ہے .
دے اِس کے آسمان سے بھ برستی ہے .
دو اِس میں غفلت کے ساتھ اپنی عمر کو مث گذار .
ملک اور بادشاہت کے آرپر بھررسے مت کر'
کیونکہ جب بھی اچانک حکم آجاریکا تجھے جان دینی

اس نه تهر نے رالی دنیا کے اُرپر دل ست لگا' ''سعدی'' کی اِسی ایک بات کو یاد راہ ۔

#### भोकैसर तेजासिंह

پروئيسر تيجا سنگه

एक बार जब योगियों ने गुरु नानक से कुछ चमत्कार करके दिखाने को कहा तो गुरू जी ने जवाब दिया कि मेरा चमत्कार तो ये मेरे उपदेश और यह मेरी सङ्गत है.\* जहाँ जहाँ गुरु नानक जाते थे वे अपने पीछे अपने शिष्यों की पक सङ्गत छोड़ आते थे जो गुरुद्वारा बनाकर गुरु के भजन गाया करते थे और नाम का जप किया करते थे. धोड़े ही समय में सारे मुल्क में सिख गुरुद्वारों का एक जाल सा बिछ गया. जूनागढ़ (काठियाबाड़), कामरूप (बासाम ), सूरत (गुजरात), कटक (उड़ीसा ), बेहार, जोहर, नानामठ (कुमायूँ) में गुरु नानक के मिशन हे केन्द्र खुल गये. खाटमएडू, ईरान की खाड़ी, काबुल, जलालाबाद और दूसरी दूर दूर की जगहों में गुरु नानक हे इपदेशों का प्रचार करने वाली सङ्गतें क्रायम हो गई. पूरत में नानक बाड़ा और कुमायूँ में नानक मठ केन्द्र प्रव तक ज्यों के त्यों कायम हैं. हालांकि यह दूसरी बात कि इन मठों के ज्यादावर लोग सिख प्रन्थों और सस विचार धारा से पूरी तरह वाकिए नहीं हैं. गुरु तेरा बहादुर या पटना के दीवान माहनसिंह के स्थापित किये हुये सिख केन्द्रों के अवशेष कोलम्बो, रामेश्वरम् , मद्रास, धत्र, कजलीबन, श्रादिलाबाद ( हैदराबाद, दकन), मेरजापुर, चटगाँव धुबरी ( आसाम ) आदि जगहों में प्रव भी बाक़ी हैं. गुरु प्रन्थ साहब की बहुत पुरानी प्रतियां मीर विविध सङ्गतों के नाम गुरु तेग्रवहादुर और गुरु गोबिन्दसिंह के दस्तस्त्रती पत्र अब भी इन केन्द्रों में प्रिष्ठत हैं. पांचवें सिख गुरु के समय के एक सिख चारक भाई गुरुदास के ग्यारहवें भजन में हमें उन ामुख सिखों की सूची मिलवी है जो उस समय काबुल, हाशमीर, सरहिन्द, थानेश्वर, दिल्ली, कतहपुर सीकरी, प्रागरा, चन्जैन, बुरहानपुर, गुजराव सुहन्द, लखनऊ, ायागराज, जीनपुर, पटना, राजमहल, ढाका आदि जगहों रहते थे. गु० गोविन्द सिंह की धर्मपत्नी माता साहिब हैद के एक दस्तख्ती पत्र में, जो अब भी बनारस के क्षेत्र गुरुद्वारे में सुरक्षित है, बनारस के शहर को गुरू हा दुर्ग कहा गया दे. सन् 1675 की लिखी दुई प्रन्थ गहिब की एक इस्तलिखित प्रति में एक सिख की दक्षिण

آپک بار جب پرگیوں نے گرونانک سے کیچھ چمتکار کر کے دکھانے کو کہا تو گرو جی نے جواب دیا که میرا چمتکار تو یہ مورد أيديش أور يه ميري سنعت ه . \* جهال جهال گرونانك جاتے تھے وے اپنے پیچے اپنے ششیوں کی ایک سنگت چھور آتے تھے جو گرو دوآرا بنا کر گرو کے بھجوں گایا کرتے تھے اور نام کا جب کیا کرتے تھے ، تہرزے ھی سے میں سارے ملک میں سکھ گرودواروں کا ایک جال سا بھی گیا . جوناگذھ ( کاٹھیاواز ) كالمروب (أسام) مورت (كجرات) كلك (أويسه) بهارا جوهرا نانک مله ( کایس ) میں گرونانک کے مشن کے کیلدر كيل كئي . كهاتمندو أبرأن كي كهاري كابل جالل آباد أور درسری دور کی جگہرں میں گرو نانک کے اُیدیشوں کا يوچار كرنے والى سنكتيں قايم هو كئيں ، صورت ميں نانك ہارا اور کیایوں میں ٹائک مٹھ کیندر آب تک جیوں کے تیوں قایم هیں . حالانکه یه درسری بات هے که اِن متهوں کے زیادہ تر لوگ سام گرنتھوں اور سام وچار دھارا سے پوری طرح واتف نہیں ھیں ، گور ترنع بہادر بقنه کے دیوان ماعن سنکھ کے اِستھاپت کیٹے ہوئے سکھ کیلدروں کے اوشیش کولمبو' 'رامیشورم' مدراس' المار كتهام بن عادل آباد (حيدرآباد دكن) مرزايور چتكاؤن المارد كتاؤن المارد كتارد كتاؤن المارد كتاؤن كتارد كتاؤن كتا دهوبى ( أسام ) آدى جگهوں ميں آپ بھی بائی هيں ، گرو گرنتھ صاحب کی بہت برائی پرتھاں اور رودھ سنکتوں کے نام گرو تینے بہادر اور گرو گروند سنکھ کے دستغطی پتر آب بھی اِن کیندروں میں سورکشت هیں ، یائنچویں سکھ گرو کے سمام کے ایک سکھ درچارک بھائی گروداس کے گیارھویں بجھوں میں ھییں اِن پرمکھ سکھوں کی سرچی ملتی ہے جو اُس سنٹہ کابل' كاشمير' سرهند' تهاليشور' دلی' فتحهرر سيكری' أگره' أوجين' برهانبورا کجرات سوهندا نکهنوا پرياک راج جونيوار يتنه راج مُعَلُ أَنْهَاكُهُ أَنْمَى جُهُونِ مِينَ رُهُتَمَ لَهِ " كُرُو كُووُلُو سَنَّتُهُ كُيَّ دهرم پتنی ماتا صلحب کرر کے ایک دستخطی یدر میں جو اب بھی بنارس کے سکھ گرودوارے میں سورکشت ھے بنارس کے شہر كُو 'گرو كا درك' كها گيا هے . سن 1675 كى لكھي هوئي گونتھ ماهب كى ايك هست كهت پرتى ميں ايك سكم كى دكشن

گروداس کا 'بیجن سنکره' 1-42. 1-42 अजन-संप्रह, 1-49.

ENRY MALE CONTRACT OF THE SECOND

यात्रा का वर्णन है, जिसका नाम है'इक्कीक्रव राहे मुकाम' क्ससे दक्षिण भारत और लड्डा में जहाँ वहाँ फैली हुई सिख सक्रवों का पता चलता है.

इर सङ्गत गुरु के द्वारा मुकर्रर एक नेता के अधीन होती थी. सन् 1588 में भाई सेवादास द्वारा लिखी हुई ग्र• मानक की एक जीवती से पता चलता है कि इन नेताओं को 'मखी' कहा जाता था चूं कि ये लोग मखी (बारपाई) पर बैठकर उपदेश दिया करते थे. भाई लस्लो उत्तर में और रोख सज्जाद दक्षिण पश्चिम पंजाब में गुइ के सपदेशों का प्रचार करते थे. अन्य प्रचारकों में गोपालदास बनारस में, मराडा बाड़ी बुशायर में, बुद्धनशाह कीरतपुर में, माही महीसर में, कलजुग जगनाथ पुरी में देवलुत लुशाई (तिब्बत ) में, सालिसराय पटना और बिहार में, राजा शिवनाथ सिंहल में और अनेक अनिगनत कार्यकर्ता हिन्दुस्तान में और हिन्दुस्तान के बाहर, जहाँ जहाँ गु॰ नानक गये थे, प्रचार कार्य में लगे हुवे थे, चूँ कि सब प्रचारक और इनके द्वारा दीक्षित सिख बराबर गुरु के दर्शनों को आया करते थे इसलिये इन सङ्गतों का सन्बन्ध केन्द्र के साथ बराबर कायम रहा.

गु॰ नानक के बाद प्रचार कार्य को अधिक सङ्गठित हम देने के लिए 22 'मणी' और 52 'पीरा' मुकरेर किये गये. किन्तु पणाब में जो परिस्थिति पैदा हो गई थी उसके कारण गुढ़ को पणाब ही में रहना पड़ता था. शुरू शुरू में सिखों के सङ्गठन की तरफ़ किसी का ध्यान ही नहीं गया और वह बराबर उन्नति करता रहा, किन्तु गु॰ अर्जुन के समय वह एक शक्तिशाली सङ्गठन बन गया% हर जिला एक 'मसन्द' ‡ के मातहत होता था یاتراً کا ورتن ہے، جس کا تام ہے 'حقیقت راد مقام' اس سے دکھن بوارت اور للکا میں جہاں تہاں پیلنی ہوئی سکا سنکتوں کا یک چلتا ہے ،

جو سلامت گرو کے دوارا مقر ایک قیتا کے ادھیں ہوتی تھی۔ سی 1588 میں بھائی سیوا داس دوارا لکھی ہوئی گرونائک کی ایک جیونی سے پته چلتا ہے کہ اِن ٹیتاؤں کو 'منجی' کہا جاتا تھا چوئکھ یہ لوگ منجی ( چاریائی ) پر بیٹھ کر آپدیش دیا گرتے تھے ، بھائی للو اُتر میں اور شیخ سجان دکشن پشچم دیا گرتے تھے ، انبه پرچارئوں میں گریال داسے بدارس میں' جہندا بازی بوشائر میں' بودھنشاہ کیوال داسے بدارس میں' جہندا بازی بوشائر میں' بودھنشاہ دیوات لوشائی ( تبت ) میں' سالس رائے پتنہ اور بہار میں' دیوات لوشائی ( تبت ) میں' سالس رائے پتنہ اور بہار میں' راجہ شوشات کاری کرتا مندستان کے باہور' جہاں جہاں گرو فائک گئے تھے' برچار کاریہ میں اور انبیک انگنت کاریہ کرتا مندستان کے باہور' جہاں جہاں گرو فائک گئے تھے' دیوارا دیکشت سے برچارک اور اُن کے دوارا دیکشت سے برچارک اور اُن کے دوارا دیکشت سے برابر گرو کے درشنوں کو آیا کرتے تھے اِس دوارا دیکشت سے برابر گرو کے درشنوں کو آیا کرتے تھے اِس

گرو نانک کے بعد پرچارکاریہ کو ادھک سنکٹیٹ روپ دینے کے لئے 22 'منجی' اور 52 'پیرا' مقرر کئے گئے ۔ کنتو پنجاب میں جو پرستیتی پیدا ہو گئی تھی اُس کے کارن گرو کو نرنتر پنجاب ھی میں رھنا پڑتا تھا ۔ شروع شروع میں 'سکیس کے سنکٹین کی طرف کسی کا دھیان ھی نہیں گیا اور وہ برابر اُننتی کرتا رھا' کنتو گرو ارجن کے سمئے وہ ایک شکتیشائی سنکٹین بی گیا ۔ ھو ضام ایک 'مسند' ‡ کے ماتحت ھوتا تھا

क्क-उस जमाने में सिख यह प्रार्थना किया करते थे—"इर शहर में सैकड़ों और हजारों सिख हों और हर मुल्क में लाखों सिख हों और दुनिया में गुरु के सिख करोड़ों बल्कि अनगिन हो जायें और हर एक जगह एक सिख गुरुद्वारा मुशोभित हो."—माई गुरदास का 'मजन संग्रह" 13-19 और 23-2.

खफ़ी खां सिखों के बारे में लिखता है—''उनके गुरु लाहीर के निकट फ़क़ीरों की तरह रहते थे. शुरू से ही सिखों ने सन्तों की देख रेख में हर क़सबे और शहर में अपनी सक्कतें और गुरुदारे बना लिये थे."

۔۔۔۔اِس زمانے میں سکھ یہ پرارتھنا کیا کرتے تھے۔۔''ھر شہر میں سیکورں اور ھزاروں سکھ ھوں اور ھر ملک میں لائھوں سکھ ھوں اور دنیا میں گرد کے سکھ کردووں بلکہ انگی ھو جائیں اور ھر جگہہ ایک سکھ کرددوارا سوشوبہت ھو ،''۔۔۔بھائی گروداس کا 'بہجی سنکرہ' 19-13 اور 23-22 ۔

خفی خاں سکھوں کے بارے میں اکھتا ہے۔۔''ان کے گرو لامور کے نکت فقیروں کی طرح رہتے تھے۔ شروع سے ہی سکھوں لے ۔'' سئٹوں کی دیکھ میں ہو قصبے اور شہر میں اپنی سکٹیں اور گرودوارے بنا لئے تھے ۔'' प्विस्ताने मजाहिब' से पता चलता है कि ये 'मसन्द', जैसा कि कहा जाता है टैक्स खगाइनेवाले नहीं

‡—'द्विस्ताने मजाहिव' से पता चलता है कि ये 'मसन्द', जैसा कि कहा जाता है टैक्स बगाइनेवाले नहीं वे बल्कि धर्म प्राचारक थे. साल में वह जा भेंट गुरु को लाकर चढ़ाते थे वह सिख चेलों की अपनी मरजी से दी हुई भेंट होती थी, असल में यह गलतक हमी इसलिये हुई कि 'भेंट' को 'बाज' (टैक्स) समम लिया गया, हालांकि उपरोक्त पुस्तक के लेखक ने 'भेंट' के लिये 'नजर' शब्द इस्तेमाल किया है.

'دیستان مناهب' سے پته چلتاهے که یه 'مسند' جیسا که کها جاتاهے ٹیکس اُٹلینے والے نہیں تھے بلکه دھرم پرچارک تھے۔ سال میں وہ جو بھینات گرد کو لاکر چڑھاتے تھے وہ سکھ چھلوں کی اپنی مرضی سے دی ھوئی بھینٹ ھونی تھی، اصل میں یه فلط نہمی اِس میں وہ جو بھینٹ کر 'باج' ( ٹیکس) سنجھ لیا گیا' حالانکہ اُپروکت پستک کے لیکپکنے بھینٹ کے لئے 'نظر' شہد استعمال کیا ہے۔ بھینٹ کو 'باج' ( ٹیکس) سنجھ لیا گیا' حالانکہ اُپروکت پستک کے لیکپکنے بھینٹ کے لئے 'نظر'

विस्तान क्रांस करने किसे में वर्ग व्यार करना दौता ना कीर वह गुरु की कोर से किसे के सिस सक्तरन के सिसे किनोबार होता था. जाल में एक मर्तवा वैशासी के दिन वह जिसे के सिसों के साथ गुरु की सेवा से उपहार सेकर हाजिर होता था और अपने प्रचार का न्योरा देता था. अपने स्वर्ण मन्दिर और गुरु प्रनथ साहब की प्रतिष्ठा के कारण अस्तसर सिसों का केन्द्र बन गया. गुरु के व्यक्तित्व को केन्द्र बनाकर सारा सक्तरन खड़ा किया गया. हालांकि एक के बाद एक कई गुरु गड़ी पर बैठे किन्तु ने सब एक ही गुरु नानक के अन्तर रूप समसे गये.

घीरे धीरे गुरू के चारों तरफ इकट्टा होने वाली मएडली को पवित्रता की दृष्टि से देखा जाने लगा. फिर धीरे धीरे तमाम अध्यात्मिक अधिकार उन्हें दे दिये गये. यह गु॰ गोविन्द सिंह के बाद हुआ जब सिखों का पन्थ के रूप में सङ्गठन शुरू हुआ और पन्थ ने गुरु की सभा अपने हाथों में ले ली. बैसे इस का आमास पहले से ही मिलता है. भाई गुरुदास ने एक बार कहा था-"एक शिष्य एक अकेला सिख है, दो सिख पवित्र मण्डली बन जाते हैं, लेकिन जहां पांच सिख होते हैं वहाँ ख़ुद परमेश्वर होता है." गु॰ रामदास ने अपने बहुत से बचनों में अपने सिखों के लिये बड़ा आदर दिखाया है. उन्होंने ऐलान किया-"जो सिख गुरू के शब्दों पर चलता है वह गुरु के साथ एकाकार हो जाता है."क्ष गु० अर्जुन हमेशा संगतों में शामिल होने के अध्यात्मिक कायदे की बात दोहराया करते थे. लोग भी इन सङ्गतों में ज्यादा से ज्यादा तादाद में जाया करते थे. उन में दोनों भावनाएं होती थीं. कुछ तो भक्ति भाव से वहां जाते थे और कुछ अरजी दरकास्त लेकर. उस जमाने का यह एक आम रिवाज था कि जो लोग ईश्वरी द्या चाहते थे संगत के सामने अपनी गुराद रखते थे आर सारी संगत उनकी मुराद के पूरा होने की प्रार्थना करती थी. +

गु० गोविन्द्सिंह पन्य का अधिकार देने से पहले मी सिखों का बड़ा आदर करते थे. वे इन शब्दों में उनका जिक्र करते थे—"उन्हींके द्वारा मुक्ते अपने अनुभव हुये. उन्हीं की मदद से मैंने दुशमनों को दबाया. उन्हीं की मेहरवानी से मुक्ते कतवा मिला वरना मेरी तरह के लाखों आदमी हैं जिन्हें कोई नहीं पूछता." हालांकि गु० गोविन्द सिंह जनता के नेता थे पर वे अपने का जनता का सेवक समझते थे. वे कहते थे—"उनकी सेवा करके मेरे दिल का खूशी होती है. मेरी आत्मा को इससे ज्यादा कोई सेवा

س کا کام اپنے ضلع میں دھرم پرچار کرتا ہوتاتھا اور وہ گرو کی آور ، ضلع کے سکھ سنگٹیں کے لئے زمعوار ہوتا تھا ، سال میں ایک تبته ویشاکھی کے دن وہ ضلع کے سکھوں کے ساتھ گرو کی سیوا بی آپہار لیکر حاضر ہوتا تھا اور اپنے پرچار کا بیورا دیٹا تھا ، سورن مندر اور گرو گرفتھ صاحب کی پرتشٹھا کے کارن امرتسو بھوں کا کیندر بنا کو سارا بھوں کا کیندر بنا کو سارا بھوں کہتا کیا ، حالات ایک کے بعد ایک کئی گرو گدی بیٹھی کنتو و سب ایک ھی گرو نانک کے انترزوپ سمجھے بیٹھی کنتو و سے سب ایک ھی گرو نانک کے انترزوپ سمجھے

دھیرے دھیرے گرو کے چاروں طرف اِنتھا ھولے والی الذلبي كو يوترتا كي درشتي سے ديكها جائے لكا ، يهر دهير۔ مهرے تمام ادهیاتمک ادمیکار آنهیں دے دیئے گئے . یہ گرو ہوند سنگھ کے بعد ہوا جب سکھوں کا پنتھ کے روپ میں سنکٹھیں روم هوا أور يفته لے گرو كى سبها اپنے هاتهوں ميں لے لى . سے اس کا آبھاس پہلے سے ھی ملتا ھے . بھائی گرو داس نے ک بار کیا تیا-"ایک ششیه ایک ائیلا سکو هئ دو سکو پرتر ندلی بن جاتے هیں' لیکن جہاں پانچ سکه هوتے هیں وهاں عود يرميشور هوتا هے ، ' کرو رام داس نے اپنے بہت سے وچنوں یں اپنے سموس کے لئے ہوا آدر دہایا ہے ، آنہوں نے اعلیٰ کیا -"جمو سکم گرو کے شہدوں پر چلتا ہے وہ گرو کے ساتھ آیکاکار و جاتا هے ، ﷺ گرو أرجن هميشة سنكتين ميں شامل هونے كے بهاتسک فائدے کی بات دومرایا کرتے تھے ، لوگ بھی ان للكتير ميں زيادہ سے زيادہ تعداد ميں جايا كرتے تھے . أن ميں وثين بهاوثانين هوتي تهين ۽ کچه تو بهکتي بهاؤ سے وهان جاتے ہے اور نچے عرضی درخراست لیکر ۔ اُس زمانے کا یہ ایک عام راج تھا کہ جو لوگ ایشوری دیا چاہتے تھے وے سلکت کے مامنے اپنی مراد رکھتے تھے اور ساری سنکت اُن کی مراد کے ورا هونے کی پرارتهنا کرتی تھی . 🕇

گرو گورند سنگ پنته کا ادھیکار دینے سے پہلے بھی سکھوں کا آدر کرتے تھے۔ وہ اِن شہدوں میں اُن کا ذکر کرتے تھے۔ اُنھیں کے دوارا مجھے اپنے انوبھو ھوئے ۔ اُنھیں کی مدد سے بس نے دشمنوں دو دبایا ، اُنھیں کی مہوبائی سے مجھے رتبت کا ورثت میری طرح کے لاکھوں آدمی ھیں جنھیں کوئی نہیں وجھتا ہ'' حالانک کرو گروند سنگھ جنتا کے نیتا تھے پر وہ اپنے کو ونتا کا سیوک سمجھتےتھے، وہ کہتےتھے۔ 'اُن کیسیوا کرکے میرے بل کو خوشی ھوتی ھے ، میری آنما کو اِس سے زیادہ کوئی سیوا

<sup>\*</sup> Supra pp 26-27.

<sup>&</sup>amp; Asa chhaut IV

<sup>†</sup> Dabistan-i-Madhahib.

नहीं आती. मेरी तमाम दीवत यहाँ तक कि नेरी आत्मा भीर मेरी वेह सब उनकी सेवा के लिये हाजिर है."

गुरु के तमाम अधिकारों के साथ खालसा सामने आये. गुरू ने सिस्तों को इजाजत दी कि वे अपने बीच से साधारण प्रबन्ध के लिये पाँच प्रतिनिधि चुनें. चुनाव के बक्त उन्होंने खब मीजूद रहने का बचन दिया. सिखों का यह सारा जमान 'सरबस खालसा' कहलाता था. इसी के नाम पर प्रार्थ नायें की जाती थीं चौर सार्वजनिक फैसले किये जाते थे. पन्ध के हित के तमाम सवालों पर सालाना जल्सों में 'अकाल तकत' में शौर किया जाता था. हर सिख इस अस्से में भाग ले सकता था. मुक्रामी सवाल मुक्रामी जस्सों में, जिन्हें सङ्गत कहा जाता था, हर जगह तय किये जाते थे. लोगों के दुराचरण पर इन्हीं सङ्गतों में विचार किया जाता था. चाहे कोई कितना ही उच्च पद वाला आइमी क्यों न हो इसे इन सङ्गतों की हुकूमत माननी पदती थी. एक मतवा अपने अनुयायियों की परीचा लेने के लिये गु॰ गोविन्द सिंह ने एक सन्त की समाधि के सामने आदर प्रकट करने के लिये अपना तीर कुका दिया. इस पर सङ्गत में गु० गोबिन्द सिंह की तलबी हुई और गुरु जी पर 125 रुपया जुर्माना हुआ. यदि कोई सिख कुछ हुराचरण करे ता उससे यह उम्मीद की जाती थी कि बह नजदीक की किसी सङ्गत में जाकर जुते रखने की जगह खड़ा होकर दोनों हाथ जोड़ कर सक्कत से अवने अपराध को स्वीकार करे. सङ्गत पाँच चुने हुये आदमियों के सामने उसका मामला रखती थी और पंच लोग बापस में सलाह करके अपना फैसला सकत के सामने रसते थे. 'गत 'सत श्री काल' के नारे के साथ प्रश्नों के कैसले पर अपनी मोहर लगा देती थी. जो कुछ सजा मिलती थी अपराधी उसे खुशी खुशी स्वीकार करता था भीर भभिमान के साथ उसे 'इनामो इकराम' कहता था. सजा से उसके मन में कोई कड्छाइट न होती थी क्योंकि सचा समस्त सङ्गत की दी हुई होती थी जिसमें कोई दुशमन नहीं बल्फि 'पाँच प्यारे' पञ्च होते थे.

सिखों के इस मुकन्मिल सङ्गठन ने ही मुराल सल्तनत का उनके खिलाफ कर दिया और उनके इसी संगठन ने उन्हें सन् 1716 और 1768 ईसवी के बीच, उन पर जो अस्याचार हुये, उनसे उन्हें बचाया. जब उनके सिर पर क्रीमतें रख दी गई थीं और लम्बे केश रखना जुर्म क़रार दिया गया था, अब शहरों में आना रौर क़ानूनी क़रार दिया गया था और जब उन्हें जत्थे बनाकर उत्तरी पंजाब के खंगलों या राजपूताने के रेगिस्तान में घूमने के लिये मजबूर होता पड़ा था उस समय की सिखों की प्रार्थना थी—

انہوں جاتی ۔ میری اسلم دولت یہاں تک که میری آتما ازر میری دیہ سب اُن کی سیرا کے لئے حاضر ہے ۔"

**36 (4)** 

الله عَلَوي كَ تَمَامُ الْفَعِيكَارُونَ كَلَ سَاتُهِ خَالَمَتُ سَامِنْهِ أَنْهُ . كُورُ فِي سهوں کو اہارت دی که وے اپنے بیچ سے سادعارن پربندھ کے لئے پائیج پرتیلدھی چلیں - چناؤ کے وقت اُنھوں لے خود مرجون رهاء کا وچن دیا. سکهرس کا یه سارا جماو اسریس خالصه کہاتا تھا ۔ اِسی کے نام ہو پرارتھنائیں کی جاتی تھیں اور ساررجاکت فیصلے کئے جاتے تھے ۔ ینٹھ کے عت کے تمام سوالیں پر سالانه جاسوں میں 'اکال تخت عنی غیر نیا جاتا تھا ، هر سکو اِس جاسے موں ہواگ لے سکتا تھا ۔ مقامی سرال مقامی جلسوں میں' جنہیں سنکت کیا جاتا تھا' ہر جکه طے کئے جاتے تھے ، لوگوں کے دراچرن پر اُنہیں سنکٹوں میں وچار كيا جاتا تها . چاهے كوئى كتنا هى أرچ بد والا أدمى كيوں نه هو أسه إن سنكتون كي حكومت مانني برتي تهي . ايك مرتبة اپنے انویائیوں کی دریکشا لینے کے لئے گرو گووند سنکھ نے ایک سلت کی سیادھی کے سامنے آدر درکت کرنے کے اٹے اپنا تیر حملا دیا ۔ اِس پر سنکت میں گرو گورند سنکو کی طابی هوئی اور گرو جی پر 125 روپیم جرمانه هوا یدی کوئی سکه کچه دراچوں کرے تو اس سے یہ اُمید کی جاتی تھی که وہ نودیک کی کسی سنگت میں جاکر جوتے رکھنے کی جگه کھڑا هوكو دونوس هاته جوركر سنكت سے اپنے ابراده كو سوئهكار كرے . سنگت یانیے چنے هوئے آدمیوں کے سامنے اُس کا معاملہ رکھتی تھی اور پنچ لوگ آپس میں صلاح کرکے اپنا فیصلہ سنکت کے سلمنے رکھتے تھے ، سنگت است شری اکال کے نعرے کے ساتھ پنچوں کے نیصلے پو اپنی مهر لگا دیتی تھی . جو کچھ سزا ملتی تھی اپرادھی اُسے خوشی خوشی سوئیکار کرتا تھا اور ابھیمان کے ساتھ اُسے 'اِنعام و اِکرام' کہتا تھا ، سزا سے اُس کے من میں کوئی کوراهٹ نه هوتی تھی کیونکه سؤا شیست سنکت کی دی هوئی هوئی ، تهی جس میں کوئی دشمن تهیں بلکه ایانی پیارے اینی هوتے تھے .

سکھوں کے اِس مکمل سلکائوں لے هی میل سلطنت کو آن کے خلاف کردیا اور اُن کے اِسیسنکٹھیں نے آنھیں سن 1716 اور 1768 عیسوی کے بیج' اُن پر جو آنیاچار ہوئے' اُن سے آئیس بچایا ، جب اُن کے سر پر قیمتیں رکھدی گئیں تھیں اُور لمبے کیص رکھنا جوم قرار دیا گیا تھا :\* جب شہروں میں آل غیر قانونی قرار دیا گیا تھا اور جب اُنھیں جاتھ بناکر آتری پنجاب کے جنگلوں یا راجھوتانے کے ریکسان میں گھومنے کے لئے پنجاب ہونا پڑا تھا اس سے کی سکھوں کی پرارتھنا تھی۔

<sup>-</sup>A Sketch of the Sikhs by Malcolm.

"कालमा के बहुवायियों की वहाँ भी ने हों, देश्वर रका

सिखों के गणतांत्रिक संगठन 'मिसल' ने चनमें एक संघ शासन का वरीका पैदा कर दिया था. हर सिख स्वतन्त्र था और 'खालसा' का सदस्य था लेकिन उनकी हैसियतें अलग अलग थीं और उनकी कावलीयत में भी कर्क था. इसलिय यह समस्कर कि उनमें से हर एक व्यक्ति नेता नहीं बन सकता उन्होंने खुशी खुशी एक संघ बनाकर और नेताओं को चुनकर उनके नेतृत्व में चलना स्वीकार किया. जिस तरह उनकी तमाम साधारण कार्रवाइयाँ 'गुडमत' से ते होती थीं उसी तरह उनके राजनैतिक फैसले भी सरदार और मिसल अकाल तरुत के सामने इकट्टा होकर किया करते थे.

स्वर्ण मन्दिर के बारों तरफ ठहरने की जगहें, जिन्हें 'बंगह' कहा जाता था, बनी हुई थीं. इन्हीं में सरदार और मिसल आकर ठहरते थे. जल्से के बक्त वे अकाल तस्त के सामने खुले मैदान में इकटा होते थे. अनुयायी अपने अपने नेताओं के पीछे बैठते थे और नेता ही उनकी ओर से बोलता था. जब भी किसी को कोई नई बात सूमती थी बह अपने सरदार से लाकर कहता था और केवल सरदार ही उनकी तरफ से बोलता था. इस तरह से कुल बारह सरदार ही उस सभा में बोलने बाले होते थे.

प्रस्तावों पर न तो व्यक्तिगत मत लिये जाते ये ऋौर न वे बहुमत से पास होते थे. वे सब एक राय से पास होते थे. न तो कभी कोई सरदार अंदंगा लगाकर कार्रवाई रोकता था और न कभी कोई ठकावट ही पैदा होती थी. इसकी वजह यह थी कि फैसले तादाद के मुदी बोक से नहीं किये जाते थे बल्कि माने हुये नेताओं की सम्मिलित राय से किये जाते थे कि जिनके सामने सदा पन्थ के जीवन मरण का प्रश्न रहता था. पंथ का 'गुरुमत' कोई रोजमरी की चीज न थी. वह तभी लिया जाता था जब किसी बाहरी हमले का खतरा हो या पंथ की धार्मिक पवित्रता किसी भीतरी ताकत से खतरे में हो. खालसा के विधान में एक बात और ऐसी थी कि जिससे कभी जिच पैदा न होने पाती थी. कोई प्रस्ताव खालसा की सभा में उस बक्त तक नहीं लाया जा सकता था जब तक उपस्थित नेता इस बात की प्रतिशा नहीं करते थे कि गुरु की शरण में वे सब एक हैं. यदि उनमें से किसी के पराने आपसी मगढ़े होते शें तो व अलग हट कर पहले उन कगड़ों को मुलकाते थे और जब ने आकर कहते थे कि अब इसारे कोई आपसी मगदे नहीं रहे और इमने सलह कर ली और अब इम सब निष्पक्ष होकर 'गुरुम्त' में भाग ले सकते हैं तब अकाल तस्त को समापति पेलान करता था कि गुरु की राह में सालसा फिर से एक हैं भीर तब उनके सामने 'गुरुमत' रखा जाता था. उसके बाद मस्ताब के शब्द पढ़े जाते थे और उस पर बहस होती थी.

الأخالصة کے الویائیوں کی جہاں بھی رے ھوں ایفور رکھا عرب ہانا

سکھرں کے گنرتائٹرک سبکٹھن 'مسل' نے اُن میں ایک سنکھ شاسی کا طریقہ پیدا کردیا تھا ۔ ھر سکھ سرتئٹر تھا اور 'خالصہ' کا سدسیہ تھا لیکن اُن کی حیثیتیں الگ الگ اہمی اُوو اُن کی قابلیت میں بھی فرق تھا ۔ اِس لئے یہ سمجہ کو آن میں سے ھر ایک ویکئی نیٹا نہیں بن سکتا اُنھوں نے خوشی خوشی ایک ساتھ باکر اور نیٹاؤں کو چان کر اُن کے شیٹرتر میں چلنا سوئیکار کیا ، جس طرح اُن کی تمام سادھارن کارروائیاں 'گرومت' سے طے ھوتی تھیں اُسی طرح اُن کے راجائیتک نیصلے بھی سردار اور مسل اکال تنفت کے سامنے اِنٹھا موکر کیا کرتے تھے ۔

سورن مندر کے چاروں طرف ٹھورنے کی جانیں جنہیں ایکک کیا جاتا تھا بنی ہوئی تھیں ۔ آنھیں میں سردار اور مسل آکو ٹھورتے تھے ۔ جاسے کے وقت وے اکال تخت کے سامنے کیا میدان میں اکالما ہوتے تھے ، انویائی آپنے نیٹاؤں کے پیچے بیٹیتے تھے اور نیٹا ھی اُن کی اُور سے بولٹا تھا ، جب بھی کسی کو کوئی نئی بات سوجھٹی تھی وہ آپنے سردار سے جاکو کہتا تھا اور کیول سردار ھی اُن کی طرف سے بولٹا تھا ، اِس طرح سے بولٹا تھا ، اِس طرح سے بولٹا تھا ، اِس

پرستاؤں پر ناء تو ویکٹی گت مت لئے جاتے تھے اور ناہ وے بہرمت سے پاس هوتے تھے ، وے سب ایک رائے سے پاس هوتے تھے۔ ثم تو کبھی کوئی سردار ارنکا الٹاکر کارروائی روکتا تھا اور نم کبھی کوئی روکاوت هی پیدا هوتی تھی ، اِس کی وجه یه تھی که نیصلے تعداد کے مردہ برجم سے نہیں کئے جاتے تھے بلک مانے ھوٹے نیتاوں کی سالت رائے سے کیے جاتے تھے که جن کے سامنے سداینتھ کے جیوں مرن کا پرشن رهنا تھا ، بنتھ کا 'گررمت' کوئی روزمرہ کی چیز نہ تھی . وہ تبھی لیا جاتا تھا جب کسی باهرمي حملے كا خطرة هو يا پنته كى دهارمك پوترتا كسى يهيترى طاقت سے خطرے میں هو . خالصه کے ودھان میں ایک بات ارر ایسی تھی که جس سے کبھی زیج پیدا نه هرنے پاتی تھی . كوئى پرستاو خااصه كى سبها مين أس ونت تك نهين اليا جاسكنا تها جب تك أيستوت نينا إس بات كي پرتكيا نهين کرتے تھے که گرو کی شرن میں وسے سب ایک هیں . یدی أن میں سے کسے کے پرانے آپسی جھکوے ہوتے تھے تو رہے الگ هد کر پہلے اُن جہاروں کو سلجھاتے تھے اور جب وسے آکر کہتے تھے کد اب مبارے کوئی آپسی جھکڑے نبیس رھے اور هم نے صلح کرنی اور اب هم سب نشهکش هوکر اگروست میں بهاگ لے سكتے هيں تب اكال تخت كا سبهايتي اعلن كرتا تها كه گرو كي راء میں خالصه پیر سے ایک بھیں اور تب اُن کے سامنے اگروست، رکھا جاتا تھا . اُس کے بعد پرستاؤ کے شبد پڑھے جاتے تهر اور اس پر بحث هوتی تهی .

وقع کے آدھیکار کی تھن جاہیں ھندستان میں اور تھیں ۔ ایک آئندیور' کیشرگتھ میں جہاں سب سے پہلے گیو گورند سناہ نے پورمی بنجاب کے لئے خالصہ کو نیابادھیکار دیگر تھے ۔ دوسری پوروی بھارت کے لئے بتانے میں جو گرر گورند سناہ کا جنم آساوان بھی تھا ۔ تیسری دکھی میں نائدیو (حدرآباد دیکی) میں جہاں گرر گروند سنام کی مرتبو ھوئی تھی ، آن تینوں جاہوں کے تخت دھارمک ادھیکاروں کے کیلدر تھی ، روزھیوں کے آجت روپ کو نشخیت کرنے تی ایفل بہاں کی جاسکتی تھی ، اگال تخت کو راجنیتک اور دھارمک دونوں کی جاسکتی تھی ، اگال تخت کے سامنے ھی ودیشی شکتیوں سے مراح کے ادھیکار حامل تھے ۔ وہ پنتھ کے نینترن کا سب سے برا کیلر تیا ، اگال تخت کے سامنے ھی ودیشی شکتیوں سے مراحت میں جب آخری گروست لیا گیا ، اِس کے بعد مہاراجہ تک رھی جب آخری گروست لیا گیا ، اِس کے بعد مہاراجہ رہیہا دی اور سکھرں اور غیر سکھرں دونوں کی صلاح سے کام کرنا رہی میں اور سکھرں اور غیر سکھرں دونوں کی صلاح سے کام کرنا شروع کیا ،

THE RESERVE OF THE PERSON OF T

ایک پرائے سکھ رواج کو اِس طرح ختم کرنے کے لئے سکھ لیکهک مهارای کو اکثر دوهی دیتے هیں ، کنتو یدی هم تهیت طرے سے سکھ دھرم کے آدرشوں کا ادھین کریں تو ھمیں پاتھ چلیگا که راجنیتک چهیتر میں اس گررست کی پرتها کا انت کرنا سکم آدرشرں کے مطابق هی هوا . سکھوں کا للکر صرف سکھوں کے لٹے نہیں ہوتا ۔ وہاں سر جاتی اور ہر قوم کے لوگ آکر بھوجن کرستتے میں ۔ امرتسر میں گرواکے بازار میں چوتھ اور پائچویں گروں کے سمے سے هندو' مسلمان' سم سبمو تجارت کی اِجازت مل گئی تھی ، گرو هر گروند نے انیک شہر آباد كله اور أيني خرج سے مندر اور مسجد بنوائيں ، مهاراج رنجيت سنتم اِنْهِيْں گروں کے چراں چنہیں پر چل رقے تھے جب اُنہوں نے کیرل سکو ادھیپتی کی حیثیت سے شاسن ارنے کے بجائے ھندوا مسلمان اور سکھ سبھی کے مہاراج کی حیثیت سے شاسن كى باكتور هانه مين لى . أيك زمانه تها جب مسلمان أيني کو ودیشی سنجھتے تھے ، اُن دنوں سکھوں میں ھی سنچی راشاریه جاگرانی تبی اور و اعلان کرتے تعید اور اج کریکا خالصه. جب رنجيت سنك تحت در بينه نو وه چاهنے نه كه هندو أور مسلمان الله كو أسى طرح ديش بهت سمجهين جس طرے سکو سمجھتے تھے اور اِس درشتی سے راجکاے میں اُنہوں نے الكي مالم أنلي هي فررزي سنجهي جتني سنهرن كي ، اِس لئے رنجیت سلم نے جہاں تک راچنیتک شامس کا سمبندھ عها اكال تخت كي حكومت أنّها دمي اور أيني منتريون سه على میں سبھی سمپردایوں کے لوگ تھے الجکاج کے بارے میں ملاح لینے لکے ۔ اِس طرح کی شدھ دنیوی یوجنا میں گروست کی جات تھی۔ یدی سابوں کے ملے سے دھارمک حکینانیں کے ذریعے زنجیت سلم حکومت کرنے کی کرشص

पम्ब के इस तरह के अधिकार की तीन जगहें हिन्दु-स्तान में भीर थीं. एक आनन्तपुर, केशरगढ़ में जहाँ सबसे पहले गु॰ गोविन्द सिंह ने पूर्वी पंजाब के लिये खालसा को न्यायाधिकार दिये थे. दूसरी पूर्वी भारत के लिये पटने में जो गु० गोबिन्द सिंह का जन्म स्थान भी.था. तीसरी दक्षिण में नान्देर (हैदराबाद दकन ) में जहाँ गु० गोविन्द सिंह की युख् हुई थी. इन तीनों जगहों के तस्त वार्मिक अधिकारों के केन्द्र थे. हादियों के डियत हाप को निरिचत करने की व्यपील यहाँ की जा सकती थी. चकाल तस्त को राजनैतिक और पार्मिक दोनों तरह के अधिकार हासिल थे. वह पंथ के नियन्त्रस का सबसे बढ़ा केन्द्र था. अकाल तस्त के सामने ही विदेशी शक्तियों से मुलहनामे तय किये जाते थे. यह स्थिति सन 1809 ईसवी, तक रही जब बाखरी गुरुमत शिया गया. इसके बाद महाराजा रखजीत सिंह ने राजनैतिक फैसलों के लिये गुरुमत की प्रथा ही उठा दी और सिखों और रीर सिकों दोनों की सलाह से काम करना ग्रुह्त किया.

प्र प्राने शिक्ष रिवाज को इस तरह सत्म करने केलिये सिक लेखक महाराज को अकसर दोष देते हैं. किन्तु यदि इस ठीक तरह से सिख धर्म के बादशों का अध्ययन करें बो इमें पता चलेगा कि राजनैतिक चेत्र में इस गुरुमत की पृथा का जन्त करना सिख आदशों के मुताबिक ही हुआ. सिखों का, सक्रर सिर्फ सिसों के लिये नहीं होता. वहाँ हर जाति और हर क्रीम के लोग चाकर भोजन कर सकते हैं. चमुतसर में गुरु के बाजार में चौथे और पांचवें गुरुओं के समय से हिन्दू, मुसलमान, सिख सब को तिजारत की इजाजत मिल गई थी. गु० हरगोविन्द ने अनेक शहर आबाद किये भौर अपने सर्व से मन्दिर और मसजिद बनवाई', महाराज रखजीत सिंह इन्हीं गुरुओं के चरण चिन्हों पर चल रहे थे जब बन्होंने केवल सिख अधिपति की हैसियत से शासन करने के बजाय हिन्दू, मुसलमान और सिख सभी के महाराज की हैसियत से शासन की बागडोर हाथ में ली. एक जमाना था जब मुसलमान अपने को विदेशी सममते थे. इन दिनों सिखों में ही सच्ची राष्ट्रीय जामित थी और वे पेतान करते ये-"राज करेगा खालसा." जब रणजीत सिंह तस्त पर बैठे तो वे बाहते थे कि हिन्दू और मुसलमान अपने को उसी तरह देश भक्त सममें जिस तरह सिख सममते वे और इस दृष्टि से राजकाज में उन्होंने उनकी सलाइ कतनी ही जरूरी समगी जितनी सिखों की. इसलिये रखजीत सिंह ने, जहां तक राजनैतिक शासन का सम्बन्ध था, अकास तस्त की हुकूमत चठा दी और अपने मन्त्रियों के जिनमें सभी सन्प्रदायों के लोग ये राजकाज के बारे में सलाह सेने लगे. इस तरह की शुद्ध दुनियवी योजना में अक्रमत की जगह न थी. यदि सिखों के मक्के से धार्मिक क्षक्रमनामों के वारिये रखाबीत सिंह हुकूमत करने की कोशिश

करते को प्राप्त अपि हिन्यू और मुसलमानों की बफावारी भी शावद करती मध्यपुत न रह पाती.

रखाति सिंह ने सिख 'मिसलों' के परों को भी तोड़ विवा. मिसल सिख शक्ति के बोधक थे. उनके नेता सदा सिख होते थे खाँद उनके फैसले हमेशा गुरुमत से होते थे. यह प्रधा उस वक्त तक खरूरी थी जब तक हिन्दू वृषे हुये बे और मुसलमान विदेशी थे. अब जबिक हिन्दू कोर मुसलमान विदेशी थे. अब जबिक हिन्दू और मुसलमानों को नागरिकता का अधिकार दे दिया गया और वे पंजाब-राष्ट्र के सन्माननीय अंग बन गये तो उनके ऊपर एक साम्प्रदायिक संघ का शासन बेमीजूँ था. उसकी जगह यदि एक ऐसी सरकार का शासन कर दिया गया जो सब की सरकार थी तो उचित ही हुआ. मिसलों के द्वारा सिलों के बेहतरीन गुनों का विकास हुआ और उस खमाने में सिख समठन की खूबियाँ उसके जरिये रोशनी में आई', पर रणजीत सिंह के समय उनकी पुरानी खूबियाँ नष्ट हो गई थीं और खुदगरजी और घरेलू मगड़ों ने उनके गणतांत्रिक पहलू को बिलकुल मजाक बना दिया था.

#### [ 2 ]

सियासी 'गुरुमत' के बन्द कर देने के बाद धर्मिक 'गुरुमत' जारी रहे, लेकिन चूँकि उनके लिये सार्वजनिक जोश रह नहीं गया था इसलिये वे अपढ़ धर्मान्धों या गुरुद्वारों के ग्रैर जिम्मेवार महन्तों के हाथों में चले गये कि जिन्होंने उसे बिस्कुल पतित बना दिया.

सिखों का प्रचार कार्य और पन्थ की ताक़त जम्हरी माबना के नष्ट हो जाने से बिलकु दब गई. सिख धर्म को फरुखसियर के राजकाल में चौतरका अत्याचारों से उतना तकसान नहीं पहुँचा जितना गणतंत्र की भावना के नष्ट हाने से पहुँचा. सिख धर्म का विकास उस समय सबसे फ्यादा हुआ जब बराबरी के दरजे के भिन्न भिन्न ज्यक्तियों ने एक होकर संगठित रूप से काम किया. वह उद्योग सबके लिये था और सबका था. यहाँ तक कि सिखों की प्रार्थना भी किसी एक व्यक्ति की नहीं बल्कि जमात की प्रार्थना है. अपनी प्रार्थना में सिख ईश्वर के अतिरिक्त दसों गुरुओं का आहान करता है और उन सब महान सिखों के कामों को याद करता है जिन्होंने पन्थ के लिये क़रवानियाँ कीं. सिखों की प्रार्थना उसके सामने सम्प्रदाय के सम्मिलित जीवन की और हर जगह की फैली हुई उसकी विविध समितियों और उनके सत्संग की जगहों की तसवीर पेश करती हैं और इस तरह वह उन लोगों के संसर्ग में आता है जिन्होंने पन्थ के पुराने और नये इतिहास को बनाया है और बना रहे हैं. कोई दूसरा शब्द ऐसा नहीं है जिसकी श्राबाष पर दूसरे फिरके पूरी तरह से इकट्टा हो सकें. कैंबालिक ईसाइयों के पास 'चर्च' शब्द है पर वह ऐसा

ئے تو اُن کے پولی عدو آور مسلمانوں کی وفاداری بھی ہاند۔ نی مصبوط نه رد یاتی ۔

رفعیت سنتھ نے سام 'مسلوں' کے پدوں کو بھی توز دیا ،
سل سام شامتی کے بودھک تھے ، اُن کے نیٹا سدا سام ہوتے تھے
بر اُن کے نیصلے ہیشتہ گرومت سے ہوئے تھے ، یہ پرتھا اُس
بہت تک ضروری تھی جب تک ہندو دیے ہوئے تھے اور مسلمان
دیشی تھے اب جباع ہندو اور مسلمانوں کو ٹاگرکٹا کا ادھیکار
سے دیا گیا اور رہے پنجاب راشتر کے سمان نیٹ اُنگ میں گئے تو
ی کے آوپر ایک سامپردایک سنام کا شاسن پرموزوں تھا ، اُس
ی جاتھ یدی ایک ایسی سرکار کا شاسن کردیا گیا جو سب
سرکار تھی تو اُچت ھی ھوا ، مسلوی کے دوارا ساموں کے
ہرین گنوں کا رکاس ھوا اور اُس زمانے میں سام سامتھیں کی
ہرین گنوں کا رکاس ھوا اور اُس زمانے میں سام سامتھیں کی
ہرین گنوں کا رکاس ھوا ، ور آئیں پہلو کو بالکل مذاتی بنا
ہریا جہازوں نے اُن کے گلزتائٹرک پہلو کو بالکل مذاتی بنا

#### [ 2 ]

سیاسی 'گروست' کے بند کردینے کے بعد دھارسک 'گروست' چاری رہے ایکن گچوٹکہ اُن کے لئے ساروجنک جوش رہ ٹیھن آیا تھا اِس لئے وے اُپڑھ دھرماندھوں یا گرودواروں کے غیر زمتوار بہنتوں کے ھاتھوں میں چلے گئے کہ جنھوں نے اُسے بالکل بتت بنا دیا ہ

سکھرں کا پرچار کاریم اور پلتھ کی طاقت جمہوری بھاوٹا کے نشست ہو جائے سے بالکل دب گئی ، سکھ دھرم کو فرخ سیئر کے راجال میں چوطرفہ اتھاجاروں سے اُتنا نقصانی نہیں یہونجا جتنا گلٹرننڈر کی بھاؤنا کے نشک ہولے سے بہونجا ، سکھ دھوم کا وکاس اُس سمئے سب سے زیادہ ہوا جب ہرابری کے درجے کے بین بھن ویکٹیوں نے ایک ھوکر سنکٹھت روب سے کام کیا ، وہ اُدیوگ سب کے ایکے تھا اور سب کا تھا ، یہاں تک کہ ساہرں کی درارتینا ہوے کسی ایک ریکٹی کی ٹیمیں يلكه جماعت كي يرارتهنا هي أيني يرارتهنا مين سكه أيشور کے اتدرات دسوں گرؤں کا آسوان کرتا ہے اور ان سب مہان سکھوں کے کاموں کو یاد کرتا ہے جنھوں نے دنتھ کے لئے قربائیاں کیں . سکھوں کی پرارتھنا اُس کے سامنے سمھردائے کے سملت جھوں ئی اور ہو جگہ کی پہیلی ہوئی اُس کی وودھ سمتیوں اور اُن کے ستسنگ کی جکہرں کی تصویر پیھی کرتی ھیں اور اِس طرح رہ اُن لوگوں کے سنسرگ میں آتا ہے جنہوں نے پنتھ کے پراٹے ارر نئے اِتہاس کو بنایا ہے اور بنا رہے ھیں ، کوئی دوسرا شبد ایسا نہوں ہے جس کی آواز پر دوسرے فرقے پوری طرح سے اکٹھا عو سکیں، کیتھالک عیسائیس کے پاس 'چرچ' شبد فے پر وہ آیسا

نہیں ہے که رأشار کے سبھی کاس، نه کیول اُس کے اِتباس بلکه اُس کے نوجی، دنیوی اور منھبی زندگی کے لئے اِستعمال کیا جا سعے ، کنتو 'خالصہ' شبد کے اندر سکیس کی سنستہائیں اور اُس کے سبھی کام آجاتے ھیں۔ جب تک سکیم میں 'خالصہ' کی بہاؤنا ھوگی رہے بڑے سے بڑا کام کر سکتے ھیں ، مہاراج رنجیت سنگ کو بھی سکیس سے کامیابی کے ساتھ کام لینے کے اللہ 'خالصہ' کے سبھی انگوں اور کوم کانتوں کو اِستعمال کونا پڑا تھا ، رانجیت سنکھ کی موت کے بعد جب کوئی ایک ویکئی پڑا تھا ، رانجیت سنکھ کی موت کے بعد جب کوئی ایک ویکئی گاسی کی باگ تور نه سنبھال سکا تو چنے ھوئے پرتیندھیں کی پنجھایتوں نے کسی طوح شاسی کی ایک روپ ویکھا تایم کی پنجھایتوں نے کسی طوح شاسی کی ایک روپ ویکھا تایم

هندستان سے باهر ملایا چین یا کناتا میں یدی آپ سکھوں کے کاموں پر نظر تالیں تو آپ کو اُن کی سنگھی پرئیتا کا ثموت ملیکا ، وہ ساماجک پرائی هیں : جب بھی دو یا تین سکھ اِکھا هونکے تر مل بیتھ کر بھجی گائینکہ ، یدی اُن کی تعداد کافی هو تو وہ فرزا گرودوارا کی بنیاد تال دینکے اور سنگت بنا کر اِکھا هونے لکینکے . اُن کی جو یہ سنگھ بھاؤنا ہے اُس کے کون جب بھی وہ ملتے هیں تو اپنے 'جتھے' یا 'دیوان' ( سنگی بنا کر پرچار کاریہ شروع کر دیتے هیں .

#### [ 3 ]

یہ ترقی کا زمانہ ہے ، اپنے پتن کے زمانے سے سکھ جو اپنے دو بھولے میں تو آج تک نہیں جاک دائے ، آج تک اُنھیں اپنے کو اور نئے سرے سے اپنی تمام سنستھاؤں کو جگانا ہے ، ویسے درانی پرمهرا كي ياد كچه باني هي . امرتسر اند يور پثنه اور تاندير کے چاروں تنختیں کا اِنہاس 'راحت عامه' اور دوسری اینهاسک پستکس میں درج هے پر جو سامکری ملتی هے وہ کانی نہیں اور سکھوں کو پرائی کلینا قایم کرنے کے لئے اپنی کلینا سے کام لینا پڑیکا ، سکھوں میں چونعہ شکشا کی بہت کمی ھے اِس لئم اُن کی کلینا کا بھی سموچت أپيوک نہيں کيا جا سکتا . سکووں کی کوئی ایسی کیندریه سنستها بھی نہیں ہے جو اُن کے دھارمک فيصلب ميں أيكتا أور بدهيمتا بيدا كر سكے . نترجه يه هے كه کچھ یے چوں سدھارک خالصہ کی اُدار بھارنا کے بالکل روریت آشچریهجنگ رواج اور انوکهی سنستهائیس قایم کو رقع هیس ، كنتر سمجهدار نيتا جادبازي كا قدم أنهائے سے اپنے كو بحوا رهے هیں اور اپنی ساری شکتی سکھوں میں ساروجنک روپ سے شکشا دیاء اور گرودواروں کا سدھار کرنے میں لگا رہے ھیں اور ایک ایسی کیندریه سنستها کی بنیاد دال رقم هیں جس کے فیصلے سب کے لئے مانیہ مونیے ، اُنہوں نے ادھیکاتھ گرودواروں پر قائوتی ادهیکار یالیا هم اور باقی گرودواروں پر بھی ادهیکار

नहीं है कि राष्ट्र के सभी कामों, न केवल उसके इतिहास विस्क उसके काजी, दुनियवी और मजहबी जिन्दगी के लिये इस्तेमाल किया जा सके. किन्तु 'खालसा' शब्द के अन्दर सिखों की सभी संस्थायें और उनके सभी काम आ जाते हैं. जब तक सिखों में 'खालसा' की मावना होगी वे बढ़े से बढ़ा काम कर सकते हैं. महाराज रण्जीत सिंह का भी सिखों से कामयाबी के साथ काम लेने के लिये 'खालसा' के सभी अंगों और कर्मकाएडों को इस्तेमाल करना पढ़ा था. रण्जीत सिंह की मीत के बाद जब कोई एक व्यक्ति शासन की बागडोर न सम्हाल सका तो चुने हुये प्रतिनिधियों की पंचायतों ने किसी तरह शासन की एक रूपरेखा कायम रखी.

हिन्दुस्तान से बाहर मलाया, चीन, या कनाडा में यदि आप सिखों के कामों पर नजर डालें तो आपको उनकी संगठन प्रियता का सुबूत मिलेगा. वे सामाजिक प्राणी हैं. जब भी दो या तीन सिख इकट्टा होंगे तो मिल बैठकर भजन गायेंगे. यदि उनकी तादाद काफी हो तो वे कौरन गुरुद्वारा की बुनियाद डाल देंगे और संगत बनाकर इकट्टा होने लगेंगे. उनकी जो यह संघ-भावना है उसके कारण जब भी वे मिलते हैं तो अपने 'जत्थे' या 'दीवान' (समिति) बनाकर प्रचार कार्य शुरू कर देते हैं.

#### [ 3 ]

यह तरक्की का जमाना है. अपने पतन के जमाने से सिख जो अपने को भूले हैं तो आज तक नहीं जाग पाये. भाज तक उन्हें अपने को और नथे सिरे से अपनी तमाम संस्थान्त्रों को जगाना है, वैसे पुरानी परम्परा की याद कुछ इस बाक़ी है. अमृतसर, आनन्दपुर, पटना और नान्देर के चारों तस्तों का इतिहास 'राहतनामा' और दूसरी ऐतिहासिक पुस्तकों में दर्ज है, पर जो सामग्री मिलती है वह काफी नहीं भीर सिखों को पुरानी कल्पना क्रायम करने के लिये अपनी फरपना से काम लेना पड़ेगा. सिखों में चूँ कि शिक्षा की बहुत कमी है इसलिये उनकी कल्पना का भी समुचित रपयोग नहीं किया जा सकता. सिखों की कोई ऐसी केन्द्रीय संस्था भी नहीं है जो उनके धार्मिक फैसलों में एकता और बुद्धिमत्ता पैदा कर सके. नतीजा यह है कि कुछ बेचैन सभारक खालसा की उदार भावना के बिलकुल विपरीत धारचर्यजनक रिवाज और अनोखी संस्थायें कायम कर रहे है. किन्तु सममदार नेता जल्दबाजी का कदम उठाने स अपने को बचा रहे हैं और अपनी सारी शक्ति सिखों में सार्वजनिक रूप से शिक्षा देने श्रीर गुरुद्वारों का सुधार करने में लगा रहे हैं और एक ऐसी केन्द्रीय संस्था की विनाद डाल रहे हैं जिसके फैसले सबके लिये मान्य होंगे. उन्होंने अधिकांश गुरुद्वारों पर क्रानूनी अधिकार पा लिया है और बाक़ी गुरुद्वारों पर भी अधिकार

San Carlot A. Carlot

करने की कोशिश कर रहे हैं. इस सब प्रवन्त के लिये कहाँने बालिश मताधिकार में हर सिख की पुरुष द्वारा चुनी हुई शिरोमिश गुरुद्वारा प्रवन्धक कमेटी बना ली है. सियों को बोट का अधिकार देकर उन्होंने एक क्रान्तिकारी क्रदम उठाया है जिससे सियों को सम्प्रदाय के हर फैसले, मन्दिरों और धार्मिक आचार विचारों तक को तय करने में हिस्सा लेने का अधिकार हासिल हो गया है. किन्तु शिरोमिश गुरुद्वारा प्रवन्धक कमेटी का दायरा अभी छोटा है और वह पन्ध की हर कार्रवाई में नेतृत्व नहीं कर सकती. सिख अभी तक यह फैसला नहीं कर सके कि उन्हें गुरुद्वारा प्रवन्धक कमेटी के अलावा पन्ध के लिये कोई और संस्था बनानी है या नहीं.

पन्थ के लिये इस तरह की संस्था बनाने का सवाल बहुत महत्वपूर्ण है. अन्तिम गुरु गोविन्द सिंह की मौत के समय पन्थ को आध्यात्मिक होमकल मिल गया था. शुरू शुरू में उन्होंने पंथ के कैसलों के लिये यूनानी तरीका अपनाया था कि जिसके अनुसार हर व्यक्ति को पंथ के फैसलों में हिस्सा लेने का अधिकार था. इस काम के लिये 'अकाल तस्त' में 'सरबत खालसा' का अधिवेशन साल में या है महीने में एक बार हुआ करताथा. जब सिखों पर अत्याचार हाने लगे तो इस तरह के अधिवेशन नामुमिकन हो गये श्रीर श्रकाल तस्त को खुद ही सार कैसले करने पड़ते थे. मिसलों के शासन के समय अकाल तस्त की कार्रवाई भारी भरकम हो गई और सत्ता की ख्वाहिश ने खुदरारज लोगों के हाथों में ताक्रत दे दी. यह कैंफियत रणजीत सिंह ने आकर दूर की. रखजीत सिंह की ख्वाहिश मुरालों की तरह ही एक सार्वभीम सत्ता स्थापित करने की थी. इसीलिये उन्होंने सब फिरक़ों की मिली जली संस्था की बात सोवी, उनके जमाने में अकाल तस्त एक बेजान चीज बनकर रह गया. रएजीत सिंह के बाद जब अप्रेजी शासन क्रायम हुआ तो सिखों के नेता इतने पज्रमुद्दी हो चुके थे कि वे निर्वाचित संस्थाओं की बात भी न सोच सकते थे. जब पश्चिमी सभ्यता का संसर्ग हुआ और पश्चिमी शिक्षा और संस्थाओं से लोगों का परिचय हुआ तो सिखों ने भी 'दीवान' बनाकर शिश्चा, सामाजिक और धार्मिक सुधार का काम अपने हाथों में ले लिया. किन्तु सिखों में घोर अशिक्षा होने के कारण यह प्रगति पूरी तरह सम्भव न हो सकी. पर सन् 1921 से 1926 तक उन पर जो गुरु के बाग आदि में भयंकर जुल्म हुये उन्होंने इस तरह उन्हें संगठित कर दिया जैसे वे पहले कभी न थे. गुरुद्वारों के प्रबन्ध के लिये उनकी शिरोमिशा प्रबन्धक कमेटी कानूनी संस्था बन गई है किन्तु जैसा मैंने ऊपर वताया है कि वह अभी तक ऐसी सर्वाधिकारी संस्था नहीं बन पाई जो सारे पंथ को अधिकार के साथ चलाये.

کرنے کی کوشش کو رہے ھیں ۔ اِس سب پربندھ کے لئے آگھوں نے بالغ متابھیکار میں ھر سکھ اِسٹری پرش دواراً چئی ھوٹی شرومنی گرودوارا پربندھک تمیٹی بنا لی ھے ۔ اِسٹریوں' کو ورت کا ادھیکار دیکر آنھوں نے ایک کرانتیکاری قدم آٹھایا ھے جس سے اِسٹریوں کو سبھردائے کے ھر نیصلے' مندروں اور دھارمک آچار رچاروں تک کو طے کرنے میں حصہ لینے کا ادھیکار حاصل ھو گیا ھے، کنتو شرومنی گرودوارا پربندھک کمیٹی کا دایرہ آبھی چھوٹا ھے اور وہ پنتھ کی ھر کارروائی میں نیٹرتو نہیں کر سکتی سکھ ابھی تک به نیصله نہیں کر سکے کہ آنھیں گرودوارا پربندھک کمیٹی کا انھیں گرودوارا پربندھک کمیٹی اور سنستھا بنائی ھے پربندھک کمیٹی کے علاوہ پنتھ کے اٹھ کوئی اور سنستھا بنائی ھے پربندھک کمیٹی کے علاوہ پنتھ کے اٹھ کوئی اور سنستھا بنائی ھے

پنتھ کے نئے اِس طرح کی سنستھا بنانے کا سوأل بہت مهتوپررن هے . انتم گرو گروند سنکھ کی موت کے سمے بنتھ کو آدهیاتیک هوم رول مل گیا تها ، شروع شروع میں أنهوں لے یلتھ کے فیصلوں کے لئے یونانی طریقہ اینایا تھا کہ جس کے انوسار هر ويكتى كو ينته كے فيصلوں ميں حصة لينے كا أدهيكار تها . اس کام کے لئے 'اکال تخت' میں 'سربت خاصہ' کا ادعیویشن سال مرفي يا .چه مهيني مين ايعبار هوا كرتا تها ، جب سمهون ير اتهاچار هونے لکے تو اِس طرح کے ادھیویشن ناممکن هو گئے اور اکال تخت کو خود ھی سارے فیصلے کرلے پڑتے تھے . مسلوں کے شلس کے سمے آکال تحت کی کارروائی بھاری بھرکم ھوگئی آ اور سسکا کی خواهش نے خودہرض لوگیں کے ھاتھوں میں طاقت دے دی ۔ یہ کیفیت رنجیت سنکھ نے آکر دور کی ، رنجیت سنک کی خواهش مغارس کی طرح هی ایک ساروبهوم ستتا استهایت درنے کی تھی . اِس لِئے اُنھرس نے سب فرقبل کی ملی جلی سنستها کی بات سوچی . اُن کے زمانے میں ادل نخت ایک بےجان چیز بن کر رہ گیا۔ رنجیت سنگھ کے بعد جب انگریزی شلسی قایم هوا تو سکھوں کے نیٹا اِتنے یومردہ هو چکے تھے که وید درواچت سنستہاؤں کی بات بھی نه سوچ سکتے تھے . جب پشچمی سبهئیتا کا سنسرگ مهوا اور پشچمی شکشا اور سنستھاؤں سے لوگیں کا پریجے ہوا تو سکھیں نے بھی 'دیوان' بنا كو شكشا ساماجك أور دهارمك سدهار كا كلم أيني هانهون مهم لے لیا ۔ کنتو سکھیں میں گھرر اشکشا ھونے کے کارن یہ پرگتی پرری طرح سمبھو نہ ہو سکی ۔ پر سن 1921 سے 1926 تک أن پر جو گرو كے باغ آدى ميں بھينكر ظلم هوئے أنھوں نے اس طرح أنهين سنكتهت كر ديا جيسے رے يہلے كبھى نه تھے . گرودواروں کے یربندھ کے لئے اُن کی شرومنی پربندھک کیتی قانونی سنستها بن گئی هے کنتو جیسا مینے اوپر بتایا هے که وہ ابھی تک ایسی سروادھیکاری سنستھا نہیں بن پانی جو سارے ینتم کو ادھیکار کے ساتم چلائے ۔

82 5 4 8 1 C

[4]

क्या सिखों को इस काम के लिये किसी अलग संस्था की जरूरत है ? इस मक्तसद को हासिल करने में इछ दितकतें हैं. सब से खास दिनकत यह है कि इसके दायरे में राजनीति का शामिल किया आय या न किया जाय. इस दिसकत को ठीक-ठीक सममने के लिये हमें सिखों के सियासी सम्बन्ध पर एक नजर डालनी हांगी. गु० गोविन्द सिंह ने शान्ति के समय सिखों पर जोर दिया या कि वे बाबर के राजकुल को उसी तरह सार्वभीम दुनियवी उत्ता स्वीकार कर लें जिस तरह उन्होंने गु० नानक की गद्दी को सार्वभीस धार्मिक सत्ता स्वीकार किया है. किन्तु सिखों के 800 वर्षों की प्रगति के इतिहास को देखने से पता चलता है कि सिखों ने इस सिद्धान्त का कभी स्वीकार नहीं किया. वे या ता शासकों के साथ युद्ध करते रहे या खुद शासन करते रहे. बार में उन्होंने (ब्राटश सरकार के मातहत काम करना शुरू किया. किन्तु फिर,भी वे कोई अपनी राजनैतिक हैसियत नहीं बना पाये. हाल में इधर पंथ में नवीन जाप्रति हुई है किन्तु उसके साथ ही साथ पुरान संघर्ष भी फिर शुरू हो गये. सिखों को यह सचाई हिम्मत के साथ स्वीकार कर लेनी चाहिये कि यांद उनका संगठन फिर पुरानी परिपाटी पर चला ता वे सरकार के साथ या रीर सिखों के साथ निश्चय ही संघर्ष में आयेंगे. इसलिये क्योंकि हर सिख पहले पंथकी तरफ बफादार होगा और दूसरों के सामन सर मुकान का अर्थ गु॰ गांवन्द सिंह के भएडे को नीचा करना होगा ! हालांकि यही चीज सिखों का शक्ति देती है और उन्हें मुसीवतां का सामना करने के लिये तैयार करती है, लेकिन उनकी यही भावना ग़ैर सिखों से उनका सममौता नहीं होने वेती. वे अपना ही बोलबाला चाहते हैं. धामिक मामली में ता यह ठाक है किन्तु राजनीति या दूसरे दुनियवी मामलों में सब के साथ मिलकर काम करना होता है. वहाँ दूसरे सम्प्रदायों का सहयाग जरूरी हो जाता है. राजनीति मं असहयोग की भावना सफल नहीं होती. वहाँ दूसरों की सुविधाओं और रायों का ख्याल रखना पड़ता है. दूसरों के साथ मुलह करने को तैयार रहना पड़ता है. पिछले कई बरस पहले सिखों ने 'गुरुमत' से यह तय किया था कि वे गुरुद्वारा बिल पर उस बक्त तक सरकार से सममौते की कोई बात न करेंगे जब तक सब सत्याप्रही केंदी पहले रिहा न कर दिवे जाँव. इसे लेकर मतभेद पैदा हो गया. सिख नेता इस प्रस्ताव को फ़िजूल सममते ये पर गुरुमत के खिलाफ जाने की उनमें हिम्मत न थी. नतीजा यह हुआ कि बहुत तकलीकें डठाने के बाद सिख नेताओं ने दूसरों की मारकत सममौते की बात शुरू की. सरकार से जो चुपके चुपके सुलह की गई ं बह गुप्त रखी गई. सुलह की शर्त नेताओं का तो मालूम थीं पर जनता को वे इसलिये नहीं बताई गई कि उनके गुर्मत

کیا سٹیوں کو اِس کام کے اپنے کسی الگ سنستھا کی ضوورت هن المن متعد كو حامل كرن مين كيم رئتين هين سب س خاص بعد عد اس كے دايرے ميں راجنيتي كر شامل کها جائم یا نه کیا جانه . اِس دقت کو تبیک تبیک سنجهای کے لئے هموں سمهوں کے سیاسی سمبندھ پر ایک نظر دالنے هوگی . گرو گووند سنتم نے شانتی کے سمے ستھوں پر زور دیا تھا که وسم باور کے راج کل کو اُسی طرح ساروبھوم دنیوی ستتا سولیکار کرلیں جس طرح اُنہوں نے گرو ثانک کی گدی کو سارو بھوم دھارمک ستتا سولیکار کیا ہے ۔ کنٹو سکھوں کے 300 ورشوں کی پرگتی کے اِتہاس کو دینھنے سے بتہ چلتا ہے کہ سکھیں نے اُس سدھائت کو کبھی سوئیکار نہیں کیا ہے یا تو شاسکوں کے ساتھ یدھ کرتے رہے یا خود شاسی کرتے رہے۔ بعد میں اُنھوں نے برتش سرکار کے ماتحت کام کرنا شروع کیا ، کنتو یہر بھی وے کوئی اپنی راجنیتک حیثیت مهين بنا يائه عال مين ادهر بنته مين ترين جاكرتي هوئی هے کنتو اُس کے ساتھ ھی سانھ پرانے سنکیرش بھی پھر شروع هوگئے ، سکھوں کو یہ سنچائی همت کے ساتھ سوئیکار کرلینی چاهیئے که یدی أن کا سکتهن پهر پرانی پریهائی پر چلا تو وے سرکار کے ساتھ یا غیر سکھوں کے سانھ نشجیئے ھی سنگھرش میں أَنْيِنْكُم ، إس لله كيونكه هر سكه يهلے يقته كى طرف وفادار عوكا اور دوسروں کے سامنے سر جھکانے کا اُرتھ گرو گورند سنکھ کے جهندے کو نیچا کرنا ہوگا! حالانکہ یہی چیز سکھرں کو شکتی ديتي هے اور أنهيں مصيبتوں كا سامنا كرنے كے لئے تيار كرتي هے، لیمی أنعی یہی بهاؤنا غیر سمهوں سے أن كا سنجهوته نہيں هونے دیتی . و اینا هی بول بالا چاهته ههن . دهارمک معاملون مهن تو یه تهیک هے کنتو راجنیتی یا دوسرے دنیوی معاملوں مهن سب کے ساتھ ملکر کام کرنا ہوتا ہے ، وہاں دوسرے سهردایوس کا سهیوگ ضروری هو جاتا هے ، راجنیتی میں اسپیرگ کی بهاؤنا سپیل نہیں ہوتی ۔ رہاں دوسووں کی سويدهاوں أور وأيوں كا خيال ركهنا يوتا هے دوسروں كے ساتھ صامر کولے کو تیار رھنا پڑتا ہے . پنچیلے کئی برس پہلے سکھرں لے اگروست سے یہ طے کیا تھا که وے گرودوارا بل پر اُس وقت تک سرکار سے سمجھورتے کی کوئی بات نہ کرینکے جب تک سب ستهاگرهی تیدی پہلے رہا تے کر دیئے جائیں . اِسے لیکر متبهد پهدا هوگيا . سكم نيتا اِس پرستاؤ كو نفول سنجهتم تعه پر گروست کے خلاف جانے کی اُن میں هست نه تھی ، نتيجه به ھوا کہ بہت تکلیفیں اُ ھالے کے بعد سکھ نیتاؤں نے درسروں کی معرفت سنجهرتيكي بات شورع كي، سركار سے جو چيك چيكے صلح کی گئی وہ کیت رہی گئی۔ صلح کیشرطیں نیتاؤں کو تو معلوم تھیں پر جنتا کو رے اِس لئے نہیں بتائی گنیں که اُن کے گروست

स्वा सामना کے وردھ ٹیکاؤں کے ملح کی تھی ، سام ٹیکاؤں میں اِنٹی کہ وہ جلکا کا کہلم کیا سامنا کرتے ،

إس دقت سے نعلنے کا آب ایک یہی طریقہ ہے کہ موجودہ هالت میں صرف دھارمک معاملوں میں گروست لیا جائے اور راجنیتک مسلوں کو صلع صفائی سے حل کیا جائے ، اِسِ فیصلے ك لئه دو ماف وجهيل هيل . أيك يد كد چن دانول بلته قايم هوا تها تب سے آب راجنیتک نظریہ بائل بدل گیا ہے ، دب خالصه أزاد ته. أوبر ايشور تها اور نهج پنته تها دونس كے بیکے میں دخل دینے والی کوئی دنیوی طاقت تھ تھی ۔ کنتو آج سوراج کا مطلب خالی سکھوں کا راج نہیں ہے بلکہ کل هندستانهون کا رأج هے جس میں هندو مسلمان عیسائی اور سکھ شامل ھیں ۔ اُس زمانے میں کسی بھی خطے پر مندوا سکھ یا مسلمان آزادی سے حکومت کرسکتے تھے' لیکن آب راشقرئیتا كا ارته بدل كيا هـ . أج بهت سه سوال ايسے هيں جو محض سکھوں کے تبیوں رہے ہلکہ سبھی سدوردایوں کے بن کثے میں ، مثال کے طور ی پنجابی بھاشا کا پرشن جس کی حفاظت کے لئے آبے هادو' مسلمان' سکھ سب کو سملت پریتن کرنا چاهئے . ایکبار ایک براهس نے شکایت کی که اُس کی بیری 'قصور کا نواب مرلے گیا ، اِس پر آکال تخت پر مسل اِکٹھا ہوئے اور اُنھوں نے اِس انھائے کا بدلے اینے اور براھملی کو واپس دنے کے لنے ایک جتھا بہیجا ۔ آج اگر کوئی ایسی بات ہو تو معاملہ یولس کے سپرد گرنا ہوگا ۔ اِس طرح کے معاملے یدی بلتھ عاتھ میں ایکا نو سرکار کے ساتھ اُس کے تررتیک سنکھری ہوتکے ۔ سکھ ٹیکاؤں کا یہ فرض ہے که رہے سکھ جنتا کو بتائیں کہ اب وماله بدل کیا ها اور راجنیتک آدرش بهی بدل گئے هیں . اِس لِلْهِ اِس پريورتي كے انوسار سام جنتا كو اپنے پنتھ كے سلكتين میں بھی پربورتن کرنے کی ضرورت ھے .

है विदय नेवाओं ने सुंबह की थी. धिल नेवाओं में इवनी दिन्मत न भी कि वे जनता का सुस्तमसुस्ता सामना करते.

इस दिशक्त से निकलने का अब एक यही तरीका है कि मीजवा हालत में चिक्र वार्मिक मामलों में गुरुमत विया जाय और राजनैविक मसलों को सलह सफाई से हल किया जाय. इस फैसले के लिये दो साफ बजहें हैं. एक यह कि जिन दिनों पन्य क्रायम हुआ था तब से अब राजनैतिक नजरिया बिलकुल बदल गया है. तब खालसा आजाद थे. ऊपर ईश्वर था और नीचे पन्थ था, दोनों के बीच में दखल देने वाली कोई दुनियवी ताकत न थी. किन्तु आज स्वराज का मतलव खाली सिखों का राज नहीं है विक कुल हिन्दुस्तानियों का राज है जिसमें हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और सिख शामिल हैं. उस जमाने में किसी भी खित्ते पर हिन्दू , सिख या मुखलमान भाषादी से हुकूमत कर सकते ये लेकिन आज राष्ट्रीयता का अर्थ बद्ल गया है. आज बहुत से सवाल ऐसे हैं जो महत्व सिखों के नहीं रहे बल्क सभी सन्प्रदायों के बन गये हैं. मिसाल के तीर पर पश्जाबी भाषा का प्रश्न जिसकी हिफाजत के लिये बाज हिन्दू , असलमान, सिख, सबको सन्मिलित प्रयत्न करना चांहिये. एक बार एक ब्रह्मण ने शिकायत की कि उसकी बीबी 'क़ुसूर का नवाब' हर ले गया. इस पर अकाल तक्त पर मिसल इकट्टा हुये और इन्होंने इस अन्याय का बदला लेने और त्राक्षणी को वापस लाने के लिये एक जत्था भेजा. बाज बगर कोई ऐसी बात हो तो मामला पुलिस के सुपुर्द करना होगा. इस तरह के मामले यदि पन्थ हाथ में लेगा वो सरकार के साथ उसके निरर्थ क संघषे होंगे. सिख नेताओं का यह फुर्ज है कि वे सिख जनता को बतायें कि अब जमाना बदल गया है और रानैतिक आदर्श भी बदल गये हैं. इसलिए इस परिवर्तन के अनुसार सिख जनता को अपने पन्थ के सङ्गठन में भी परिवर्तन करने की जरूरत है.

#### श्री जी. सुन्दर रेंड्डी

شری جی. سندر ریڈی

पुराने जमाने से मजहब और साइंस के बीच र्लीच-तान चली आ रही है. अगर धर्म और विज्ञान के बीच में यह सींचतान न होती तो आज की दुनिया जिस राक्त में हमारी आँखों के सामने है, कभी न रहती. हिन्दू धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम धर्म के इतिहास से यह साफ है कि धर्म और वैज्ञानिक विचारों का संघर्ष इनमें आज तक जारी है.

फ़ांस की क्रान्ति के बाद यूरोप के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक चेत्रों में साइंस का एक तूफान आया था. इस वैद्यानिक क्रांति ने तमाम दुनिया में वैद्यानिक दृष्टिकाण को और जगाया. इस विचारधारा का मक्तसद था कि सामाजिक, आर्थिक और रानैतिक चेत्रों में वैद्यानिक विचारधारा के विरुद्ध जो आन्दोलन हो रहा है इसे खतम किया जाय.

लिबरिलएम, डेमोकेटिक सोशिलएम, कम्यूनिएम और अनार्किएम की पैदाइश इसलिए हुई कि समाज का सारा काम तर्क की बुनियाद पर हो. समाज में जो अन्याय और अत्याचार हो रहे हैं, वे सब समाज में वैक्कानिक-विचारधारा की कमी के कारण हैं.

चठारहवीं और उन्नीसवीं सदी में वास्टेयर, डिडोरांट, रूसो, मार्क्स, एंजिस्स चौर लेनिन ने अपने जीवन का ध्येय, दुनिया के अंधेरे से अंधेरे कोने में वैज्ञानिक विचार-धारा के प्रकाश को फैलाना बना लिया था. वैज्ञानिक-विचार-धारा, के इन पैराम्बरों ने अपनी लेखिनी की शक्ति से सारे संसार में उसका प्रचार भी किया और उनके धालुपायियों की संख्या भी दिन दुगुनी और रात चौगुनी बढ़ गई.

जैसे जैसे विकान की उन्नति होती गयी वैसे वैसे वैज्ञा-निक विचार-घारा का महत्व भी बढ़ता गया. किंतु दुनिया के काने कोने में इस वैज्ञानिक विचार-धारा के विरूद्ध विद्रोह इठ सारे हुए. एक रंग, जाति, संस्कृति घौर ऐसे ही कुछ अंधविरवास जिनके अस्तित्व का कोई तार्किक आधार नहीं दुनिया में फैलते जा रहे हैं. इन्हें बनाने वाले कहते हैं कि बनका विरवास दिल की उन भावनाओं में है जो वृद्धीस पर मुनहिसर नहीं. پرائے زمائے سے مذھب اور سائنس کے بیچ کہینچ تان چئی آرھی ہے ۔ اگر دھرم اور وگیان کے بیچ میں کہینچ تان تھ ھوتی تو آج کی دنیا جس شکل میں ھماری آنکھوں کے سامنے ہے، کبھی نه رھتی ۔ هندو دھرم، عیسائی دھرم اور اسلام دھرم کے ابہاس سے یہ صاف ہے کہ دھرم اور ویکیانک وچاروں کا سنکھرھی اِن میں آج تک جاری ہے ۔

فرانس کی کرانتی کے بعد یورپ کے ساماجک، آرتھک راجلیتک اور دھازمک چھیتروں میں سائنس کا ایک طوفان آیا تھا ۔ اِس ویکائیک کرائتی نے تنام دنیا میں ویکیائیک درشتی کونٹر کو اور جگایا ۔ اِس وچار دھارا کا مقصد تھا که ساماجک، آرتھک اور راجنیتک چھیتروں میں ویکیائیک وچار دھارا کے ورودھ جو آندولن ھو رھا ہے اسے ختم کیا جارے ۔

ابرازم نیماکر تیک سوشلزم کمیونزم اور انارکزم کی پیدائھی اس لئے ہوئی که سماج کا سارا کام ترک کی بنیاد پر ہو ۔ سماج میں جو انیائے اور انیاچار ہو رہے ہیں وے سب سماج میں ویکھانک وچار داھارا کی کمی کے کارن ہیں ۔

اٹھارھویں اور آئیسویں صدی میں والیقیر قیدورانٹ روسو' مارکس' انجیلس اور لینی نے اپنے جیوں کا دھیگہ ' دنیا کے اندھیرے سے اندھیرے کونے میں ویکیانک وچار دھارا کے پرکاش کو پھیلانا بنا لیا تھا ، ویکیانک وچار دھارا کے ان پیغمبروں نے اپنی لیمھنی کی شکتی سے سارے سنسار میں اس کا پرچار بھی کیا اور اِس کے انہیائیوں کی سنکھیا دی دوگئی اور رات چوگئی ہوھ گئی

جیسے جیسے وگیاں کی اُننٹی ھوتی گئی ریسے ریسے ریکیانک وچار دھارا کا مہتو بھی ہرمتا گیا، کنتو دنیا کے کوئے کوئے میں اُس ویکیانک وچار دھارا کے ورودھ ودروھ آٹو کوڑے ھوئے ایک رنگ جاتی سلسکرتی اور ایسے ھی کچھ اندھوشواس جن کے آسٹیٹو کا کوئی تارکک آدھار نہیں دنیامیں پیپلتے جا رہے ھیں، انہیں بنانے والے کہتے ھیں کہ اِن کا وشواس دل نی اُن بھارناؤں میں ہے ودییل یو متبعصر نہیں ۔

इस वैकानिक विचारवारा के विक्य जो सिखांव हम सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में देख रहे हैं उन्हों को हम नेरानिजयम, कैपिटलिजम, फासिजम और इंपीरिय-तिजम कहते हैं. फांस और रूस की क्रांतियों ने जिस विचारवारा को दुनिया में फैलाया था, मार्क स और लेनिन ने जिन सिखांतों को फैलाने में चपने प्राणों को त्याग विया था, वन्हें नेरानिलस्ट, केपिटलिस्ट और इंपीरियलिस्ट राज्य मिटाना चाहते हैं. इनका विश्वास ऐसे सिखान्तों में हैं, जो तार्किक नजरिये से परे हैं. अपनी जाति और क्रीम की वजति और स्वाय-सिखी जिस में है, वही उनका धर्म है. अपने राज्य की उनति और अपनी जाति की उनति के लिए जो धर्म सहायता नहीं देता, उनकी नजर में वह धर्म नहीं है.

पेसे समय में सत्य और अहिंसा संदेशवाहक महात्मा बुद्ध और ईसा मसीह की तरह गांधीजी ने हमारे बीच आ हमारी ज्ञान की आँखों को खोल दिया, हमारे मस्तकों को ऊँचा किया और हमें साफ साफ बताया कि धर्म और विज्ञान का समन्यय होना चाहिए. तभी मानव जाति की भलाई होगी. नहीं तो युद्धों से हमें निजात नहीं मिलेगी.

गाँधी और लेनिन दोनों के आदर्श बहुत ऊँचे हैं. वे दोनों सामानिक असमानता और आर्थिक-असमानता दर करना चाहते हैं, और ऐसे समाज को क़ायम करना चाहते हैं जहाँ पर शेषण न हो. श्रीर जाति, रंग श्रीर धर्म के कारण मानवता के बीच में दीवारें न हों. लेकिन दोनों के रास्ते अलग अलग हैं. साधनों की अलहगदगी के कारण ही गाँधी और लेनिन कहीं उत्तरी ध्रव और दक्षिणी धव बन जाते हैं. आजकल के हमारे कम्यूनिस्टों की तरह लेनिन का भी यह विचार था कि चाहे साधन अच्छे हों था बुरे, पवित्र हों या अपवित्र, हिंसा के हों या अहिंसा के, अपने आदर्श को प्राप्त कर लेना चाहिए. लेकिन गांधी जी का यह सिद्धान्त था कि आदर्श और साधन में गहरा सम्बन्ध है, इसलिए दोनों को अलग नहीं करना वाहिए, ऊँचे श्रादशों को ऊँचे साधनों के द्वारा ही हासिल करना चाहिये. जब आदर्श हासिल करने के साधन भी पवित्र होंगे, तभी उस आदर्श का मूल्य होगा.

आर्थि क और सामाजिक समानता के लिए लेनिन ने वर्ग-संघर्ष को अपना साधन बना लिया. लेकिन गांधी जी ने वर्ग-समन्वय और सांस्कृति समन्वय को अपना मार्ग बना लिय, विश्व-शान्ति के लिए आर्थि क, राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक शेषण का अन्त दोनों का मकसद है. किन्तु लेनिन हिंसा के साधन के उपयोग से अपना ध्येय प्राप्त करना चाहते हैं तो गांधी अहिंसा के साधन के उपयोग के द्वारा. एक में रक्तपात ककरी है, दूसरे में हृद्य परिवर्तन. اِس ویکھانک وچار دھارا کے ویوودھ مھی جو سدھانہ ھم سلماجک اور راجنینک چھیتر میں دیکھ رہے ھیں اُنہیں کو ھم نیشنیئرم' کیپیٹلزم' فاسرم اور اُمپیریئرم کہتے ھیں ، ذرانس اور روس کی کرائتھوں نے جس وچار دھارا کو دنیا میں پھیانیا تھا' مارکس اور لیننی نے جن سدھائتوں کے پھیانے میں اپنے پرائوں کو تیاگ دیا تھا' اُنہیں تھنیاست' کیپٹلست اورامپیریلیست راج مثانا جاتا ہیں اور اورامپیریلیست راج مثانا جاتا ہیں ہی ہو تارکک جاتی اور قوم کی اُنٹی اور سوارتھ سدھی جس میں ہے' وھی اُن کا دھرم ہے ، اپنی جاتی اور دھرم سہایتا نہیں دیتا' اُن کی اُنٹی جاتی کی اُنٹی اور میں وہ دھرم نہیں ہے ۔

ایسے سے میں ستیہ اور اهنسا سندیش واهک مہاتما بدھ اور عیسی مسیح کی طرح کانھی جی نے همارے بیچ آ هماری گیلی کی آنکھوں کو اُونچا کیا اور گیلی کی آنکھوں کو اُونچا کیا اور همیں صاف بتایا کہ دھوم اور وگیاں کا سمنوے ھونا چاھیئے تیمی مانو جاتی کی بھائی ھوگی ، نہیں تو یدھوں سے همیں تجات نہیں حلیکی ،

گاندهی اور لین دونوں کے آدرهی بہت اُونچے هین ، وہ دونوں ساملجک اسانتا اور اُرتیک اسمانتا دور کرنا چاھتے هیں اور ایسے سماج کو قایم کرنا چاھتے هیں جہاں پر سوشئتر نا اور جاتی ' رنگ اور دھرم کے کارن مانو تا کے بیچ میں دیواریں نہ هوں ، لیکن دونوں کے راستے الگ الگ هیں ، سادهنوں کی علیدگی کے کارن هی گاندهی اور اینن کہیں اُنری معرواور دکشنی دھرہ بن جاتے هیں ، آجکل کے همارے کمیونسٹوں کی طرح لینن کا یہی یہ وچار تھا کہ چاھے سادهن اچھے هوں یا برے ' پوتر هوں یا اپوتر' هنسا کے هرں یا اهنسا کے ' اپنے آدرهی نو برایت کو لینا چاھئے ، لیکن گاندهی جی کا یہ سدھانت تھا کہ آدرهی اور ساده بی میں گہرا سمبندھ ہے اس لئے دونوں کو کہ آدرهی اور ساده بی میں گہرا سمبندھ ہے اس لئے دونوں کو الگ نہیں کرنا چاھئے ، اُوندچے آدرش کے دوامل کرنے کے دوارا هی حاصل کرنا چاھئے ، جب آدرش کے حاصل کرنے کے دوارا هی حاصل کرنا چاھئے ، جب آدرش کے حاصل کرنے کے دوارا هی حاصل کرنا چاھئے ، جب آدرش کا مولیہ ہوگا ،

آرتیک اور ساماجک سانتا کے اگر لینی نے ورگ سنکھرش کو اپنا سادھی بنا لیا۔ لیکی کائدھی جی نے ورگ - سندوئے اور سائسکرنک سمنوئے کو اپنا مارک بنا لیا۔ وشوشائتی کے لئے آرتیک، راجنیتک، دھارمک اور ساماجک شوشنو کا انت دوئوں کا مقصد ہے کنتو لینی هنسا کے سادھی کے آپیوگ سے اپنا دھیئہ پراپت کرنا چاھتے ھیں تو گاندھی اھنسا کے سادھی کے آپیوگ کے دولوا ، ایک میں رکتیات ضروری ہے، دوسرے میں ھردئے پریورتی و

गांची जी का यह विश्वास था कि रक्तपात से वा युद्ध से कोई भी समस्या नहीं इल हो सकती. लेकिन उससे भीर कई विकट समस्याएँ पैदा हो जाती हैं जिन्हें इल करना मुशकिल हो जाता है.

भगर एक युद्ध से कोई समस्या इल हो जाती तो हमारे इतिहास में इतने युद्ध क्यों होते ? इनने जानलेवा हथियारों की उत्पत्ति क्यों होती ? एटम वम और सुपर एटम वम

की उत्पत्ति में इतनी होड़ क्यों होती ?

Report All the

दुनिया के किसान और मजदूर, दीन और दुखी, दिलत और पतित जातियों ने गाँधी और लेनिन दोनों की विचारधाराओं में अपने सारे दुखों और रोषणों का अन्त देखा परन्तु बनी और उसतिशील राष्ट्रों ने लेनिन के सिद्धांतों के खि-साफ अपनी आवाज बुलंद की. मगर धनिक और उनतिशील राष्ट्रों ने भी गाँधी जी की वाणी में शान्ति और प्रगति का मागे देखा. लेनिन का प्रभाव किसी एक जाति, या' वर्ग तक दी सीमत रहा, लेकिन गांधी का प्रभाव दुनियां की तमाम जाति, तमाम वर्ग और तमाम मजहब वालों पर पदा.

केनिन के जीवन में ईश्वर के लिए कहीं स्थान नहीं है वह तो मतुष्य को सर्व शिक्तमान सिरजनहार मानते हैं. उनका मत है कि ईश्वर तो एक होता है, जिसके नाम पर जुल्म और सितम, शोषण और अन्याय किये जाते हैं. धर्म का मूल ईश्वर है और आजकल की आर्थिक और सामा-निक असमानता के पीछे धर्म काम कर रहा है. इस लिए धर्म तो अफीम के समान है, जिसके सेवन से आदमी कमजोर हो जाता है और अपनी बुद्ध और शिक्त को को देता है. किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि वह किसी भी धर्म को न मानते हों. उनका धर्म कम्यूनिजम है, जिसके हारा वह ऐसा एक समाज स्थापित करना चाहते हैं, जिसमें सारी दुनिया के लोग सुखी हों.

गांधी जी तो ईरबर को दुनिया का सिरजनहार और इसे संचालित करने बाला मानते हैं. ईरबर की अनन्त राक्ति के सामने मनुष्य को बहुत छोटा सममते हैं. ईरबर एक सागर है तो मनुष्य को उसके एक बिन्दु के समान मानते हैं. किन्तु आजकल के धर्मों को, जिनकी बुनियाद शोषण और असमानता पर है, धर्म नहीं मानते हैं. उनका विश्वास है कि सब धर्मों का मूल एक है. इसीपर अपने विश्व धर्म का वे निर्माण करते हैं.

आज एक तरफ नेशनलिखम, रेशिनलिखम, केपिटेलिखम और इम्पीरियलिखम पुरानी विचार-धारा का प्रतिनिधि कम्यूनिखम है. दोनों विचार-धाराओं में संघर्ष जारी है. एक की तरफ धर्म है और दूसरे की तरफ परिश्रम, करनेवाला को. इन दोनों विचार-धाराओं का समन्वय है गांधीवाद. इसमें सबे धर्म का समुचित स्थान है. एक आदमी दूसरे التعلق على الدي وهولس تها كه ركتهات سے يا يده سے كہلى تهى سيسيا لهيں حل هسكتى ، ليكن أس سے اور كئى وكمت سمسياتيں پيدا هو جاتى هيں جنهيں حل كرتا مشال هرجاتا ہے ،

اگر ایک یده سے کوئی سمسیا حل هرجاتی تو همارے اِتهاس میں اِتقے یدھ کھوں هوتے ؟ اِتقے جان لیوا هتیاروں کی آتیتی کیوں هوتی ؟ ایتمہم اور سوپر ایتمہم کی آتیتی میں اِتفاقی هور کیوں هوتی ؟

دلیا کے کسان اور مزدور' دین اور دکھی' دلت اور پتت جاتیوں نے کاندھی اور لیان دونہی کی وچار دھاراؤں میں اپنے سارے دکھوں اور شوشنورں کا انت دیکھا پرنتو دھنی اور اُئٹی شیل راشٹروں نے لینن کے سدھائٹوں کے خالف اپنی آواز بلند کی ، مگر دھنک اور اُئٹی شیل راشٹروں نے بھی کاندھی جی کی باتی میں شائٹی اور پرگٹی کا مارک نے بھی کاندھی جی کی باتی میں شائٹی اور پرگٹی کا مارک دیکھا ، لینن کا پربھاؤ کسی ایک جاتی' یا ورگ تک ھی سیمت رھا' لیکن کاندھی کا پربھاؤ دنیا کی تمام جاتی' تمام جاتی' تمام جاتی' تمام جاتی' تمام مذھب والوں پر ہوا۔

لیائی کے جھوں میں ایشور کے لئے کہیں استہاں نہیں ہے ..
وہ تو منوشیہ کو سرو شکٹیماں سرجی ہار مانتے ہیں ، اُن کا ست

ھے کہ ایشور تو ایک ہوتا ہے جس کے قام پر ظام اور ستم شوشنر اور انبیایہ کئے جاتے ہیں ، دھرم کا مول ایشور ہے اور المائی کی آرتیک اور ساماجک اسمائی کے پینچے دھرم کام کررہا ہے ، اس لئے دھرم تو اقیم کے سمان ہے جس کے سهوں سے آدہ ی کیزور ہوجانا ہے اور اپنی بدھی اور شکٹی کو نھو دیتا ہے ۔

اُدہ ی کیزور ہوجانا ہے اور اپنی بدھی اور شکٹی کو نھو دیتا ہے ۔

اُدہ ی کیزور ہوجانا ہے اور اپنی بدھی اور شکٹی کو نھو دیتا ہے ۔

اُدہ ی کیزور ہوجانا ہے اور اپنی بدھی اور شکٹی کو نھو دیتا ہے ۔

اُدہ ی کیزور ہوجانا ہے اور اپنی بدھی اور شکٹی کو نھو دیتا ہے ۔

اُدہ ی کیزور ہوجانا ہے اور اپنی بدھی اور شکٹی کو نھو دیتا ہے ۔

اُدہ ی کیزور ہوجانا ہے اور اپنی بدھی اور شکٹی کو نھو دیتا ہے ۔

اُدہ یک اُدہ میں اُدہ دیور کیورنزم ہے ، جس کے دوارا وہ ایک ایسا سماے استہارت کونا چاہتے ہیں ، جس میں ساری دنیا کے سماے استہارت کونا چاہتے ہیں ، جس میں ساری دنیا کے ۔

اُدگ سکھی ہوں ،

گاندهی جی تو ایشور کو دنیا کا سرجن هار اس سنجالت کرنے والا مانتے هیں ۔ ایشور کی اثنت شکتی کے سامنے منوشیه کو یہت چهوتا سنجهتے هیں ، ایشور ایک ساگر هے تو منوشیه کو اسکے ایک وقدو کے سمان مانتے هیں ، کنتو آجائے کے دھوموں کو کی بنهاد شوشنو اور اسمانتا پر ها دھوم نهیں مانتے هیں ، لی کا وشواس هے که سب دھوموں کا مول ایک هے ، اسی پر اینے وشو دھوم کا وے نرمان کرتے هیں ،

آج ایک طرف ٹیشنلیوم' ریشیلیوم' کیتیلوم اور امهیریلیوم پرائی وچاردھارا کا پرتیفدھی کیھوٹوم ہے دونوں وچاردوھاراؤں میں سنکھرش جاری ہے ۔ ایک کی طرف دھرم ہے اور دوسرے کی طرف پریشرم کرنے والا ورگ ، ان دونوں وچاردھاراؤں کا سنوے ہے گادھیواد ، اس میں سیچے دھرم کا سموچت استیان ہے ، ایک آدمی دوسرے

والمحارب والمحارب

की बेहतर नहीं समन्त सकता. वर्ष और एक दूसरे को अपने से नीना नहीं समन्त सकता. वर्ष वर्ष के लिए नहीं, विज्ञान विज्ञान के लिए नहीं, दोनों मानव समाज के कल्याया के लिए हैं. जिस विज्ञान से मानव समाज की आध्यात्मिक और जीतिक उनति नहीं होती, वह तो विज्ञान नहीं, लेकिन ऐसा एक विरुद्धेटक है, जिसके फट जाने से उसका खारमा हो जाना अस्पी है. इसलिए इन दोनों का उपयोग मानव समाज के कायदे के लिए ही होना चाहिए. यही हमें गांधी-वाद सिकाता है.

गाँची जी चौर लेनिन चाज की पीड़ित चौर दुखित मानवता के लिए दो चमर ज्योति हैं. जिन ज्योतियों के सहारे आजकल की मानवता एक शानदार जगत की कल्पना कर रही है अनके भौतिक शरीर तो चाज हमारे बीच में नहीं हैं, लेकिन उनकी अमर चात्मा चौर उन के आदशों की दिव्य-ज्योति हमारे सामने हैं. ये दिव्य-ज्योतियाँ तब तक जलती रहेंगी जब तक जमीन और आसमान है, चौर जब तक उनके बीच इनसान साँस लेले रहेंगे. کی محدات تہیں سبجھ سکتا ، دھرم اور آیک موسوسے کو اپنے سے تیجیا نہیں سبجھ سکتا ، دھرم دھرم کے اپنے نہیں وگیاں سے مائو سانے کی اللہ نہیں کو کیاں سے مائو سانے کی آدھیاتیک اور بھوتک آئندی نہیں ھوتی وا تو وگیاں نہیں الیکن ایک ایسا وسهوتک کے جس کے بہت جائے سے اس کا لیکن ایک ایسا وسهوتک کے جس کے بہت جائے سے اس کا مائو سانے کے فائدے کے فائدے کے لئے ھی ھونا چاھئے ، یہی ھمیں گادہی واد سانے کے فائدے کے لئے ھی ھونا چاھئے ، یہی ھمیں گادہی واد

گاندھی اور لینی آج کی پیرت اور دوکھت مانوتا کے لئے دو اس جدوتی ھیں ۔ جن جوتیوں کے سہارے اُجکل کی مالوتا ایک شاندار جگت کی کلینا کر رھی ھے ان کے بھرتک شریز تو آج ھمارے بیچ میں نہیں ھیں' لیکن اُنکی امر اُتما اور اُن کے آدردوں کی دیویہ جدوتی ھمارے ساملے ھے یے دیویہ جموتیاں تب تک جلتی رھیلکی جب تک زمین اور آسمان ھے' اور جب تک زمین اور آسمان ھے' اور جب تک زمین اور آسمان ھے' اور جب تک زمین اور آسمان ھے۔

700 PAGES, 32 ILLUSTRATIONS 2 COLOURED MAPS

#### "CHINA TODAY"

PRICE

BY PANDIT SUNDARLAL

Rs. 7. 8. 0

A vivid narration of the glorious and wonderful achievements of New China... A picture of China which is both convincing and authentic... the best book that has come out so far on New China in the English language ... the most objective in approach and comprehensive in treatment.

—National Herald, Lucknow.

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserved to be widely known —Leader, Allahabad.

Encelopsedic...characterized by soute observation of detail as well as by...instinctive grasp of the fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China.

—Blitz, Bombay

A mine of information which gives a picture of China as nothing else dose,...the best guide to New. China...Those who would like to understand what is happeing in New China can do not better than to study it.

—Bharat Jyoti, Bombay

The wealth of information it gives on China new and old,...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs.

—Indian Express, Madras

China Today is an elequent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of men and matter... brings to the lighty mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations for a tomorrow which is theirs.

—Vigil, Delhi.

### گراگرامرام امرام امرام امرام امرامیام امرام امرام

#### پرفیسر جیته مل پرشورام گلواجانی

هم لوگ مہاپرشوں کے دیوس مائتے هیں ۔ گرو ناتک کا دیوس مائتے هیں ، آج دیوس مائتے هیں ، آج هیں مائتے هیں ، آج هم سنده کے پرسده کوی شاہ عبدالطیف کا دیوس منا رہے هیں . کہا اِن سے همیں ورتمان سمسیاؤں کو سانتہائے کا مارک مل سکتا ہے جبکہ چاروں اُور سامپردایکٹا کی اگنی دهدهک رهی شیء شیء مسلمان ایک دوسرے کو کات کو کیا رہے تھے آ اُدهر نواکھائی میں هندؤں پر وہتی کا پہار تُوتا اور بہار میں مسلمانوں کا قتل عام هوا ۔ کیا ایسی وہتی میں اِن دیوسوں کے منائے سے کا قتل عام هوا ۔ کیا ایسی وہتی میں اِن دیوسوں کے منائے سے همیں لابه هوسکتا ہے آ اِن سب پرشنوں کا ایک هی اُتر ہے۔ داوشهتہ' کارن اُن' مہاپرشوں کی بانی میں نے کھول اپنے سمے کی بات کہی گئی ہے۔ کنتو آج کے معاملوں کا ستجھاؤ بھی اِن

هم دیکهتم هیں که پرکرتی نے سنده کو ایک وشیقی سوغات کی تھی، وہ سوغات هے ''صونی وان''، سنده کا پردیش پراچین آریه بهومی هے ، وهاں وید اور آپنشدوں کے منتروں کا آچاوں کیا گیا، وهاں پہلے عربی بهاشا آئی' پهر فارسی آئی ، آپشد پران آدس سنسکرت ساهته کا اِن دونس بهاشاؤں میں انواد هوا ، اِس پرکار پرسهر وچاروں کا آدان پردان برتها ، پهر اِس عرب' فارس اور آرپوں کی سنسکرتی کی سنگم روپی تروینی سے جو ایک آنم جیز بنی' وہ هے۔ صوفی وان' جس میں ''نا هیں هندو نا هیں مسلمان '' کی دهونی گونتجی ، یہ وہی پراچین وستو هے جو سنی مسلمان '' کی دهونی گونتجی ، یہ وہی پراچین وستو هے جو سنی شید هے ' ور سروی آور شعری اس کو حق' حسن اور خیر کہتے هیں۔ کی ترویزئی هے ، صوفی اِس کو حق' حسن اور خیر کہتے هیں۔ اور سونہ' حسن یعنی سندرتا هے ، یہی سنسار کے کلیان کا ور سونہ' حسن یعنی سندرتا هے ، یہی سنسار کے کلیان کا مراگی هارگی ہے .

ایک سے کی بات ہے، سندہ میں برسات اچھی درئی تھی،

آن بہت ہوا کشتکار بڑے پرسن ہوئے اور کہنے لئے که یه ورش

بڑے آنند سے کٹیگا اُدھر مہاجن وچار کرنے لئے که سنا

"اِس ورش آن بہت ہرنے سے اِس کا بهاو ارشیم مندا
پر جائیگا،" اِس لئے اُس پر اینا قبضہ کرلیتے ہیں ،
پر جائیگا،" اِس لئے اُس پر اینا قبضہ کرلیتے ہیں ،
پر جائیگا،" اِس لئے اُس پر اینا قبضہ کرلیتے ہیں ،
ہماہ لطیف نے دیکھا کہ جن بیجاروں نے آندھی ورشا اور کوی دھرپ کا نمک بھی وچار نے کیا، بیجے بریا، دن

🕆 प्रोफ़ैसर जेठमल परशुराम गुलराजानी

हम लोग महापुरुषों के दिवस मनाते हैं. गु० नानक का दिवस मनाते हैं, गु० गोबिन्द सिंह का दिवस मनाते हैं. आज हम सिंध के प्रसिद्ध किव शाह अब्दुल लतीफ का दिवस मना रहे हैं. क्या इनसे हमें वर्तमान समस्याओं को सुलमाने का मार्ग मिल सकता है ? जबिक चारों आर साम्प्रदायिकता की अग्नि अथक रही थी, हिन्दू-मुसलमान एक दूसरे को काट कर खा रहे थे उधर नांआखाली में हिन्दुओं पर विपत्ति का पहाड़ दूटा और विहार में मुसलमानों का कतले आम हुआ, क्या ऐसी विपत्ति में हम भारत की समन्वयासक आत्मा को बचाकर रख सके ? क्या आज इन दिवसों के मनाने से हमें लाभ हो सकता है ? इन सब प्रश्नों का एक ही उत्तर है— "अवस्य". कारण इन महापुरुषों की बाणी में न केवल अपने समय की बात कही गई है, किन्तु आज के मामलों का सुमाव भी इन से मिल जाता है.

इस देखते हैं कि प्रकृति ने सिध को एक विशेष सौरात दी थी, वह सौरात है "स्कृतिवाद". सिन्ध का प्रदेश प्राचीन आर्य-भूमि है. वहाँ वेद और उपनिषदों के मन्त्रों का उच्चारण किया गया. वहाँ पहले अरबी भाषा आई, फिर फ़ारसी आई. उपनिषद्-पुराण आदि संस्कृत साहित्य का इन दानों भाषाओं में अनुवाद हुआ. इस प्रकार परस्पर विचारों का आदान-प्रदान बढ़ा. फिर इस अरब, फ़ारस और आयों की संस्कृति की संगम रूपी त्रिवणी से जा एक उत्तम चीज बनी, वह है—स्कृतिवाद, जिसमें "निहं हिन्दू निहं ग्रुसलमान" की ध्विन गूँजी. यह वही प्रचीन वस्तु है जो सत्य है, शिव है और सुन्दर है. जिसमें आन, कम और शक्ति की त्रिपृटी है. सूकी इस का हक्ष, हुस्त और लेद करने वाला") सुर्रात और स्रंह, हुस्त यानी सुन्दरता है. यही संसार के कल्याण का मार्ग है.

एक समय की बात है, सिन्ध में बरसात श्राच्छी हुई थी, खश्च बहुत हुआ. काश्तकार बढ़े प्रसन्न हुए और कहन लगे कि यह बच्च बढ़े भानन्द से कटेगा. उत्तर महाजन बिचार करने लगे कि—"इस वर्ष अन्न बहुत होने से उसका भाव श्रवश्य मन्दा पढ़ जाएगा." इसलिये उसपर श्रपना क्रव्जा कर लेते हैं. हाह सतीफ न देखा कि जिन बेचारों ने श्रांधी, वषा और कही भप का तिनक भी बिचार न किया, बीज बाया, दिन

रात जाय कर क्सकी संभाज की, कसल तैयार होने पर काट कर रक्षा, इसका इन बेचारों को एक दाना भी न मिला जीर भाव गिर जाने के ढर से इन मूजियों ( व्यापारियों ) ने बह सब दवा कर रख झोड़ा. तब शाह को बड़ा गुस्सा जाया जीर कहा कि—

> "जिनि यहां गोलही मेरियों, था इत्थ इस्पनि। पंजनि यां पंद्रह थिया, ईटां था वर्क वरनि। द्र कारिया द्रेह मां, शाह मूजी सथि मरनि।"

अर्थात—"जिन्होंने मंहगाई के ख्याल से सब अन्न इकट्ठा किया, वे सब आज हाथ मार रहे हैं. पांच से पन्द्रह हुए, इस प्रकार जिनके बही के पन्ने खलटते रहते हैं, ऐसे अकाल को पैदा करने वाले ये सब मूजी सट्टे बाज व्यापारी) ईश्वर करें मर जांय."

शाह साहब को साम्प्रदायिकता से बड़ी चिद्र थी. हिन्दू और मुसलमानों का मन मिलन और बाह्य आहम्बर देखकर एक जगह कहते हैं कि—

"द्राा तुहिंजे दिलि में शिरकु अई शैतानु मुँह में मुसलमानु अन्दारि आजरू आहियें."

किर हिन्दुओं को कहते है-

"कूड़ों तूँ कुफ़र से काफ़रू म कोठाइ। हिन्दू इदि न आहीं जनियों तो न जुमाइ। तिहिकु तिनिहों खेलाइ, सचा जे शिरक से॥"

शाह सूफी को इन दोनों के आपस के मगड़ों को देखकर बड़ा गुस्सा आया और फटकारते हुये कहा कि-

पिकू हिन्दू त्रिया मुसलमान टियों विचु विधाऊँ वेरू अंधनि उन्धहि न लहे निति से सचु बुधाईन्दो केरू

अर्थात्—"एक हिन्दू हैं और दूसरे मुसलमान हैं. फिर जो तीसरी बात इनमें पैदा हुई वह है आपस का बैर. इस प्रकार से दोनों साम्प्रदायिकता में बिलकुल अन्धे बन गये हैं. मला जो अन्धे हैं उन्होंने कभी अंधकार का अन्त पाया है १ कभी प्रकाश देखा है १ फिर, सत्य क्या है, प्रकाश क्या है, यह इनको कौन सममा सकता है !"

सचल-सिन्धी जिसको सिरमस्त कहते हैं-वह मस्ती में आकर नाचता है और गाता है-

"मां हिन्दू मोमिनु नाम्हां, मां नोई आम्हा सोई आह्यां। मां मजह्बुगुरु न मखा, मां गुरारव मंकि पुदाग्र; अहिदों इस्क्र जो इन्हाफु, सथेई मजहब कमाई' माफु।।''

चर्थात्—"मैं न हिन्दू हूँ न मुसलमान हूँ. मैं जो कुछ हूँ मैं मजहबों को बिल्कुल नहीं मानता. मैं मुदायर (नित्य) मुशरवर ( असूत ) में रहता हूँ. यह तो इस्क का इन्साफ है رات جاگ کو اُس کی سنبهال کی فصل تیار هولے پو کاهنگو رکھا اُس کا اِن بینچاروں کو ایک دانه بھی نه ما اور بهاؤ گر جانے کے در سے اِن موجیوں ( ویاپاریس ) نے وہ سب دباکر رکھ چھوڑا ، تب شاہ کو بڑا غصہ آیا اور کیا کی۔۔۔

> "جنی یهاں گولی میریوں" تھا اِتھ اِرنی" پنجانی یاں پندرہ تھیا" عیاں تھا ورک ورنی" درا کاریا دریم ماں" شاہ وجی ستھی مرتی ہ

ارتهات ۔۔"جنهوں نے مهنگائی کے خیال سے سب آن اکتها کیا وہ سب آج هاته مار رقے هیں ۔ پانچ سے پندرہ هوئے' اِس پرکار جن کے بہی کے پننے اُلٹتے رهتے هیں' ایسے اکال کر پیدا کرتے والے یه سب موجی (ستے باز ویاپاری) ایشور کرے موجائیں ۔"

شاہ صلحب کو سامپردایکتا سے بوھ چڑھ تھی۔ ہندو اور مسلماتوں کا من ملئ اور باہیم آتمبر دیکھ کو ایک جکہہ کہتے مسلماتوں کا من

''دغا توهیلتجے دال میں شرکو اُئیی شیطانو منه میں مسلمانو انداری اُرزو آهیئیں ۔''

يهر هندوں کو کہتے هيں۔۔۔

''کورو تو کفر سے کافرو ما کوتھائے مندو هدری نه آهيں جانهوں تو نه جکرائے تيہو تنہوں کيھائے' سچا جے شرک سے ''

شاہ صونی کو اِن دونوں کے آپس کے جھاتوں کو دیکھ کر ہوا فصہ آیا اور بھٹکارتے ہوئے کہا کد—

پکو هندو بریا مسلمان ٹیوں وچو ودهاؤں ویرو اندهنی آئدیمی نه لیے نیتی کیے سچور بدهائندو کیرو

ارتھات۔ ''ایک ھندو ھیں اور دوسرے مسلمان ھیں ، پھر چو تیسری بات اِن میں پیدا ھوئی وہ ہے آپس کا بھر ، اِس پرکار سے دونوں سامپردایکتا میں بالکل اندھے بن گئے ھیں ، بھلا جو اندھے ھیں آنہوں نے کبھی اندھکار کا انت پایا ہے آ کبھی پرکاھی دیکھا ہے آ کبھی پرکاھی دیکھا ہے آ کبھی کیا ہے وہر کاش کیا ہے یہ اُن کو پرکاھی سنجھا سکتا ہے آ''

سچل سسندھی جس کو سرمست کہتے ھیں۔۔۔وہ مہستی میں آکر ناچتا ہے اور گانا ہے۔۔۔

"مان هندو مومنو نامهان مان جوئی آمهان سوئی آهیان. مان مجهبومورو نه منجا مان مشرب منجهی پودامو؛ آهیون عشق جو آمهایهو؛ ستهیئی مذهب کمانین معافو ."

ارتهات-- "میں نه هندو هیں نه مسلمان هیں . میں جو نجه هیں میں مذهبی کو بالکل نهیں مانتا . میں مدایر ( امرت)میں رهنا هیں. یه تو عشق کا انصاف هے

जिसने मेरे सब मजहबों (दोषों, मेदों ) को सुआफ कर दिया है."

गु॰ गांविन्द सिंह गुम्से में धाकर कहते हैं कि—
"हिन्दू मुसलमान बाद परुषे, इतने नाथ निराजे बच्चे॥"
गु॰ नानक के विषय में कहा जाता है कि जब वे
अमृतसर के सरोबर में दुबकी लगाकर तीन दिन के बाद
बाहर आये तब उनके मुख से यहां आवाज निकली—

"नाँह हिन्दू , नाँह मुसलमान"।

कबीर साहब जो गु० नानक से 50 वर्ष पहले हुये वे भी कहते हैं कि-

''हिन्दू पुरक कहाँ से आये, किनने हैं ये भेद बनाये।'' कबीर से एक सी वर्ष पहले सन् 1310 में काश्मीर के त्रासुक्दीन आदि सूर्फियों के घर में जन्म लेने वाली लाल माडे कहती है—

"म जान हिन्दू मुसलमान"

व्यर्थात्-"मैं हिन्दू मुसलमान नहीं जानती".

प्राचीन भारत के हृद्य की ध्वनि वेदान्त-बाग्री की भी यह ब्यावाज है—

"नाँह मनुष्य, नच देव यक्षो न त्राह्मण क्षत्रिय-वैश्य शहा ।"

अर्थात्—''मैं मनुष्य, देव या यक्ष, ब्राह्मण, श्रन्निय, वैश्य या शुद्र नहीं. मैं तो आत्म बोध रूप हैं."

इस प्रकार यह अथवेंद की बाणी, यह एकता की बाणी है जिसकी पाकिस्तान और हिन्द को एवं सम्पूर्ण संसार को आवश्यकता है. जिससे इहलोक और परलोक सुखमय बन जाता है. यही स्कियों की आवाज है, सबी सीख है और यही सा समातन धर्म है. المسلم المراس من المقالون ( دوشون المعدون ) كو معاف كر المان الم

الله المروكوريد سنم فعي مين أكر كهد هين كيس

المنتو مسلمان بعد مهن بحيه النه ناته تراله بهد ال

گرو قالک کے وشہ میں کہا جاتا ہے کہ جب وے امرتسو کے سروور میں توبیعی لگا کو نین دن کے بعد باہر آئے تب اُن کے میں سے یہی آواز نعلی۔

نا هين هندو' تا هين مسلمان .''

کبیر صاحب جو گرو نانک سے 50 ورش پہلے ہوئے وے یہی کہتے میں کا

ھلدو توک کہاں سے آئے' کن لے ھیں یہ بھید بنائے ۔''
کبھر سے ایک سو ورش پہلے سن 1310 میں کاشمیر میں 
المرالدین آدی صونفوں کے گھر میں جنم لینے والی قل مائی 
گیتی ھے۔۔۔۔

17م جان عدو مسلمان

ارتهاكسدالمين هندو مسلمان نهين جانتي ،"

پراچین بهارسکے هردئے کی دعوتی ویدانت وانی کی بھی یہ آواز ہے۔۔۔

ناه منوشید' نج دیو یکشو نه براهس چهتریه ویشیه شودرا .''

أرتهات--"میں منوشهه عنه دیو یا یکش براهمن چهتری ویدی یا شودر نهیں میں تو آنم بوده روپ هوں ."

اِس پرکار یہ اتهروید کی وائی ہے جس کیپاکستان اور هند کو آیوم سمهروں سنسار کو آوشیکتا ہے ۔ جس سے ایہ لوک اور پرلوک سکھ مئے ہیں جانا ہے ۔ یہی صوفیوں کی آواز ہے سچی سیکھ ہے اور یہی سچا سنتان دھرم ہے ۔

#### श्री मलिन्द्

दुनिया की आवादी का आधा हिस्सा इन दा विशाल देशों में रह रहा है. विश्व में सबसे अधिक आवादी इन्हीं दो देशों में है. और यहां के बासी भी प्राचीन राष्ट्र के लोग हैं जिनकी प्राचीनतम सभ्यता की कहानियाँ आज भी लोग चाब से पढ़ते हैं इन दो देशों के अलावा काई ऐसा तीसरा देश नहीं है जो इतनी बड़ी आवादी और प्राचीनता का हावा कर सके.

इन दोनों प्राचीन राष्ट्रों के लोग शुद्ध से ही शांतिप्रिय रहे हैं और सदा से एक दूसरे के साथ भित्रता का व्यवहार करते आये हैं. कभी भी एक ने दूसरे पर अधिकार जमाने की कोशिश नहीं की. हाँ, ''बिचारों एवं सिद्धान्तों का आदान-प्रदान अवश्य होता रहा है."—( डा० सनयात सेन ).

जहाँ तक बन सका दोनों राष्ट्रों ने संस्कृति और व्यवसाय का अटूट सम्बन्ध स्थापित करने का भगीरथ प्रयत्न किया है और वे सफलता के बहुत पास पहुँच चुके हैं.

4 जनवरी, सन् 1943 को पूना-स्थित 'भएडारकर रिसर्च 'स्टीट्यूट' की रजत-जयन्ती के अवसर पर, अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए सर्वपत्ली राधाकृष्णन् ने कहा या—"मध्य-एशिया का मरुभूम से होकर चीन की दीबार तक व्यापारियों के यात्रा-पथ और भारतीयों की नई आबादी का पता सर ऑरिल स्टीन ने लगाया है. ईसा से पूर्व दूसरी शताब्दी के लगभग भारत की सीमा पारकर मंगोल देशों में बुद्ध-धर्म ने विस्तार पाया. कनिष्क के शासन काल से लेकर हर्व वर्धन तक (लगभग 600 वर्षों तक) भारत एवं चीनवासियों के बीच सांस्कृतिक एकता की जड़ जमी रही. भारत आये हुए चीनी यात्रियों ने अपनी यात्रा का बहुमूल्य वृत्तान्त लिख छोड़ा है और बहुत सी बौद्ध धर्म सम्बन्धी रचनायें—जो मूलतः स्रो गई हैं—अनुवाद के रूप में आज भी चीन, जापान और तिब्बत की भाषाओं में सुरक्षित हैं." अ

जगत प्रसिद्ध बीद्ध धर्म के ही विस्तार के कारण चीन और भारत के बीच सांस्कृतिक एकता का شری مللد

دنیا کی آبادی کا آدما حصم آن در رشال دیشوں میں رہ رہا ہے، وشو میں سے زیادہ آبادی انہیں در ادھک دیشوں میں ہے اور یہاں کے واسی بھی پراچین راشتر کے لوگ میں جی کی پراچین تم سبیبتا کی کہانیاں آج بھی لوگ چاؤ سے پرمتے میں ، آن در دیشوں کے علوہ کوئی ایسا تیسرا دیش نہیں ہے جو اننی بری آبادی اور پراچینتا کا دعوی کرسکے ،

لی دونوں پراچین راشاروں کے لوک شروع سے هی شائلی پرید رہے هیں اور سدا سے ایک دوسرے کے سانہ مترتا کا ویوهار کرتے آنے میں ۔ کبھی بھی ایک نے دوسرے پر ادعیکار جمالے کی عرشش نہیں کی ، هاں ''دوچاروں ایرم حدهاناتوں کا آدان پردان اوشید هوتا رها هے''ا۔ ( ڈانار سنیات سین ) ،

جہاں تک بن سکا دونوں راشقروں نے سنسکرتی اور ویوسائے کا افرت سبندھ استہاپت کرنے کا بھکیرتھ پریتن کیا ہے اور وہ سپہلتا کے بہت پاس پہونچ چکے ہیں ،

4 جنرری سن 1943 عیسوی کو پونا استهت 'بهندار کر رسرچ انسٹی قبوت' ئی رجت جیمتی کے اوسر پر' انهیکچیا پن سے بهش دیتے ہوئے سروپلی رادی کرشدن نے کہا تھا۔ 'اسرهیه ایشیا ئی سروبهرم سے مودر چین کی دیوار تک ویاپاریوں کے یانرا پتھ اور بھارتیوں کی نئی ابادی کا پته سر اُرل اسٹین نے لگایا ہے ۔ عیسی سے پورو دوسری شتابدی نے لگ بھگ بھارت کی سیما پارکر منکول دیشوں میں بدھ دھرم نے وستار پایا ، دنشک کے شاس کال سے لیکر بقرش وردھی تک (لگ بھگ سانسکرنٹ اینکا کی جز جمیرہی ، بہارت اُنے فوئے چھٹی بانریوں سانسکرنٹ اینکا کی جز جمیرہی ، بہارت اُنے فوئے چھٹی بانریوں نے اپنی ناترا کا بہوسولیہ ورنانت لکھ چھوڑا ہے اور بہت سی بودھ دھرم سمبندھی رچنانیں جو سولتا کھو کئی ھھں۔۔۔انوواد کی روپ میں آج بھی چین' جاپان اور تبت کی بھاشاؤں میں سرنشت ھیں ۔''علا

جکت پرسدہ ہوںہ دھرم کے ھی وستار کے کارں چین اور بھارت کے بیچ سانسکرتک ایکتا کا

क्ष-प॰ बींव खांव खार० खाई० 24:4-5 अगस्त 1943 में प्रकाशित. . أو. أو. أو. أو. كانت 1943 مين پركشت الست 1943 مين پركشت

सूत्रकात हुआ. चीन में सुरक्षित ऐतिहासिक सामियों (Becords) से प्रमाणित है कि चौद्ध धर्म भारत से चीन में बहुत पहले गया था. अ जुलाई 42 की 'हिन्दुस्तान रिव्यू' में प्रोफेसर तान युन शान ने लिखा था—

سوتربات هوا ، چین میں سرکشت آیتیہاسک سامکریوں (Records) سے پرمانت ہے که بودھ دعرم بیارت سے چین میں 42° چین میں بہت پہلے گیا تیا ۔ 8 جولائی سن 42° کی معدستان رویو' میں پروئیسر تان یون شان لے لکھا نیا۔۔۔

"According to the record of Chinese history, it is Yung-Ping tenth year of Minti of the Han-Dynesty, namely 674 A. D., when Budhism formally reached China for the first time."

आगे चलकर वे पुनः लिखते हैं कि "अन्य पुस्तकों से पता चलता है कि 'चीन-राज्य' (ई० पू० 246 227) से पूर्व बीद्ध-धर्म चीन पहुँ च चुका था."

प्रोo तान युन शान का कहना है कि चीन की प्राचीन प्रसाद LEITH - TZU में एक स्थान पर कन्नयू -सियस कहता है- 'मैंने एक ऐसे साधु पुरुष के विषय में सन रखा है जो 'पण्छिम' में बिना कानून के शासन करता है. लागों का उस पर असगढ विश्वास है. उसका स्वरूप इतना विराट है कि उसकी तेजस्विता के सामने कोई नहीं टिक सकता है." हम जानते हैं कि चीनी स'त कन्त्रयूसियस (ई० पू० 561-478) गीतम बुद्ध (ई० पू० \$60-480) का समकालीन था. पुराने जमाने में 'पच्छिम' शब्द का प्रयोग चीनवासी भारत के लिए करते थे और उसे प्राय:'पारकात्य-राज्य' या 'पारकात्य-स्वर्ग' के नाम से पुकारा करते थे, जब कि स्वयं चीन देश के लिए 'मध्य-राष्ट्र' या स्वर्धा राष्ट्र ' जैसे नाम न्यवहार में चाते थे. इस प्रकार बहुत संभव है कि कंप्रयूसियस का संकेत बुद्ध और उनकी रिक्षा की कोर रहा हो. इसकी पुस्तक 'चिनलु' (Chinese Records) में लिखा है-"चन-राज्य के राजा चेंग के शासन-काल के चीथे वर्ष में पहले पहल, अठारह भौद्ध-भिक्क, शिन-ली-फान के नायकत्व में पश्चित्रम प्रांत से चीन भाये और अपने स'ग बुद्ध की मूर्तियों के अलावा षीद्ध धर्म के प्रथ भी लाये." वे संभवतः ई० पू० 268 में चीन गए थे.

चीन के दूसरे बौद्ध-धर्म-मन्यों में सामान्य उल्लेख पाये गये हैं. इन सब से इम इस नतीजे पर आ पहुंचते हैं कि चीन में बौद्ध धर्म सन् 67 से बहुत पहले पहुँचा और प्रो॰ तान-युन-शान के मताजुसार दोनों राष्ट्रों में सांस्कृतिक-एकता का सूत्रपात आज से दो हजार बरस पहले ही हो गया था.

इस विचार से अनेक लेखक सहमत हैं कि चीन में बीद धर्म का प्रचार ईसवी सन् की पहली शताब्दी के पूर्व ही हो गया था. प्रा० विनय सरकार ने भी यह सावित آگے چاکر رہے بونہ اکھتے ہیں کہ "انیہ بستکوں سے بتہ چلتا کے کہ شہیں راج ( 227-246 عیسر بورر ) سے بور ہودہ محرم چین بورنج چکا تھا ،"

ہرفیسر تان یہن شان کا کہنا ہے که چین کی پراچین پستک LEITH-TZU میں ایک استهان پر کلنیہسیس کہتا ہے۔ ومیں نے ایک ایسے سادھو پروش کے وشے میں سن رکھا ہے جو "پچھم" میں بنا قانون کے شاسی کرنا ہے ، لوگوں کا اس پر اکہنڈ وشواس ہے۔ اس کا سروپ اتنا ورات ہے کہ اس کے تیجسوتا کے سامنے کوئی نہیں تک سکتا ہے ،'' ہم جانتے ہیں که چیلی سبنت کننیرسیس ( 478-1، 5 عیسوی بدروز) گوتم بده (480-560 عيسوى وررر) كا سمكالين تها. برأنه زمانه مين "بجهم" شبد کا پریوگ چین واسی بھارت کے لئے کرتے تھے اور آسے پرایہ الشمواتية راجهة يا الشجانية سورك كي نام سم يكارا كرتے تهـ ا جب که سویم چین دیش کے لئے 'مدھیم راشتر' یا 'سوورن راشتر' جیسے نام ویوهار میں آتے تھے ۔ اس درکار بہت سبھو کے کہ كلفيرسيس كا سنعيت بده اور أن كي شكشا كي أور رها هو .. اس کی پستک 'چن لو' (Chinese Records) میں لکھا ھے۔''چن راج کے راجا چینگ کے شاسن کال کے چرتھ ورش میں پہلے پہل' آئهارہ بودہ بهکشو' شن - لی - فان کے نائمتو میں پچھم پرانت سے چین آئے اور اپنے سنگ بدھ کی مروتیوں کے عاوہ ہوں۔ دھرم کے گرنتم بھی لائے .4 رے سمبھرته عیسوی پورو 268 میں چین گئے تھے ،

چین کے دوسرے پودھ دھرم گرنتھوں میں سامانیہ آلیم پائے
سمبھوتہ گئے ھیں ، ان سب سے هم اس نتیجہ پر آ پہرنچتے
ھیں کہ چین میں بودہ دھرم سن 67 سے بہت پہلے بہونچا
اور پرونیسر تان یون شان کے متانوسار دونوں راشقروں میں
سائسکوتک آیکنا کا سوترپات آج سے دو ھزار بوس پہلے ھی
ھوگیا تھا ،

اِس وچار سے انیک لیکھک سہمت که میں که چین میں ہون ہون میں ہودھ دھرم کا پرچار عیسوی سن کی پہلی شتایدی کے پرو ھی ھو گیا تھا ، پرونیسر ویٹے سرکار نے بھی یه ثابت

کرتے کی بہری کرشھی کی ھے ۔ او جاؤگال کے پرتھم سموانگ کا سمکالوں اشرک تھا جس کے سے میں جین واسی ایک لئے دهرم ( ببده دهرم ) سے برجت بهر تھے ، أشوك جيسے انتو راشتری راجا کے سے میں بودھ دھرم کی گندھ چھن بھی جا يېونجي يه بات انيستېاسک نهين جان پرتي ه اس کے عالمہ بته چا ہے که اهان بنشی سرات (عیسری برز 140) يعجبني أيوم مدهيم أيشياً كا أيك مهابي أنويشك تها . يرونيسر سوکار کے انوسار ایدی واستو میں چین میں بھارت سے بودھ دھرہ کے پرچارک نہیں گئے تھے تو بھی اِننا ماننا ھی پڑے گا کہ اِس سمے بھارت اور چین کے بیچے بڑی سدیهاؤنا تھی اور چینی لوگ اِس سے بودہ دھرم سے پرچت تھے،

حب چین میں بودھ دھرم کا پرچار ھو گیا تب چینی بهعشو ایوم چهام گنو وشیش آدهین کے لئے بھارت آئے اور بھارت سے چین میں بردہ دھرم کے پرچار کے لئے بیکشوؤں أيوم دونوں کی ٹولی گئی اِنہاس سے پتا چلتا ہے که چھن سے فاهيان موئينسانك آتسنك (جو 675 سے 685 تك نالندا میں ودیارتھی تھا ) جیسے ودوان یاترمی بھارت آئے اور بھارت سے کشیب ماتنگ امارجورھ جو ایوم کی رتن جیسے پرسدھ الوادك چين كثم اور سنسكرت سے چينى بهاشا ميں پہلے نے لک بھگ 98 یستکس اور دوسرے لے لگ بھگ 64 یستکس كا سهل انواد كيا . فنهيان بهارت آيا اور 15 سال بعد جب وة لوٹا نب بدھ کے رنگ میں وہ پوری طرح رنگ کیا تھا ، بودھ حقرم کے گرفته تربیٹک کا برتهم اوتوان هوونیگ سانگ ایرم اتسک نے دیا تھا ، اپنے ساتھ چین کو ہووینگ سنگ 7ور یستمرں کے 20 یوتھے ( Bundles ) نے گیا تھا جس میں سے د 7 ہستموں کا انواد وہ کر پایا تھا ۔ انسٹک اپنے سنگ 400 يستنين ال كيا تها اور كل 6 ته يستكون كا هي أنوواد كو یایا ، سرهیتا کے اِنہاس میں یہ گررو پررن کاریہ سدا امر رهینکے ،

فو تسو، چی نامک یستک کے نینتالیسویں ادھیائے میں شرمنو چی، ہی، ان نے انورادک سمتی کے جن نومکھے انکوں یر روشنی دالی هے ان کا ادهین بھی ضروری هے ع

البرواسي ميں برکاشت اپنے آيک ايکھ ايداچھن چھن اور بھارت میں شری سوجیت نمار مکہر یادھیائے نے جن مشہور انورادکوں کا ذکر دیا ہے رہے یہ هیں ،

أمواله رجر-أترى بهارت كا براهمن كلين شرمنز عو 719ع میں چینی گیا بہارت اور لنکا کے شاستر پر لگ بیگ 500 مست لنهت يستكين سنكرهت كرتا رها (732-16) اور اسے چین سمرات نے 'برگیا کرش' کی بدوی دی .

करने की पूरी कोशिश की है क चात्र काल के प्रथम-सम्राट का समकालीन व्यशोक था जिसके समय में चीनवासी एक नये धर्म (बीज-धर्म) से परिचित्त भर थे. अशोक जैसे, जन्तर्राष्ट्रीय राजा के समय में बौद्ध-धर्म की गन्ध बीन भी जा पहुँची। यह बात धनैतिहासिक नहीं जान वहती है. इसके अलाबा पता चला है कि 'हान' वंशीय (सम्राट ई० पू० 140) परिचमी एवं मध्य-पशिया का एक महान अन्वेषक था. प्रो० सरकार के अनुसार 'यदि बास्तव में चीन में भारत से बौद्ध धर्म के प्रचारक नहीं गये थे तो भी इतना मानना ही पहेगा कि उस समय भारत और चीन के बीच बढ़ी सद्भावना थी और चीनी लोग उस बीद धम से परिचित थे.

कार भारत का सारकार के बार

जब चीन में बौद्ध धर्म का प्रचार हो गया तब चीनी भिक्ष एवं जात्र-गण विशेष-अध्ययन के लिए भारत आये और भारत से चीन में बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए भिक्ष थों एवं दुतों की टोली गई. इतिहास से पता चलता है कि चीन से फाहियान, हुएनस'ग, इत्सि'ग (67) से 685 तक नालन्दा में विद्यार्थी था) जैसे, विद्वान यात्री भारत आये श्रीर भारत से कश्यप मार्तग, कुमार जीवक्ष एवं गुनरत्न जैसे प्रसिद्ध अनुवादक चीन गए और संस्कृत से चीनी भाषा में पहले ने लगभग 95 पुस्तकों और दूसरे ने लगभग 64 पुस्तकों का सहल अनुवाद किया. फाहियान भारत आया और 15 साल बाद जब बह लौटा तब बुद्ध के रंग में वह पूरी तरह रंग गया था. बौद्ध धर्म के प्रनथ 'त्रिपिटिक' का प्रथम अनुवाद हुएनस'ग एवं इत्सिंग ने किया था. अपने साथ चीन को हुएनसंग 567 पुस्तकों के 520 पोथे (Bundles) ले गया था जिसमें 75 परतकों का अनुवाद वह कर पाया था। इत्सिंग अपने स'ग 400 पुस्तकें ले गया था और कुल 56 पुस्तकों का ही अनुवाद कर पाया. सभ्यता के इतिहास में ये गौरवपूर्ण काय सदा अमर रहेंगे.

फु-सु-ची नामक पुस्तक क तेंतालीसवें अध्याय में अम्या ची-पी-आन ने अनुवादक समिति के जिन नी मुख्य श्रंगों पर रोशनी डाली है उनका श्रध्ययन भी जरूरी है.%

'प्रवासी' में प्रकाशित ऋपने एक लेख 'प्राचीन चीन श्रीर भारत' में श्री सुजित कुमार मुखोपाच्याय ने जिन मश-हर अनुवादकों का जिक्र किया है वे ये हैं :--

अमोघ वज-उत्तरी भारत का बाह्य कुलीन श्रमण, जो सन् 719 ई० में चीन गया, भारत और लक्का के शास पर लगभग 500 हस्तलिखत पुस्तकें संप्रहीत करता रहा (734-46 ई0) और उसे चीन-सम्राट ने 'प्रश्लाकोष' की पदवी दी.

अ-वेखिए चाइनीज रिलिजन श्रुहिन्दू आहुज-सन् 1919 में शघाइ से प्रकाशित. ديكهائم جانيز ريليجي آبور هندو أثيز-1919ع مين شنكهائي سه يوكاشت . 6-4प्रवासी'-वि सं 1350 क्येष्ठ शंक, देखिये पुष्ठ संस्था 96-103. 'بررأشي'--بنگلا سن 1350 جيٽو انک . ديکيئے برشتو سنکهيا 103-96 .

<u>Landing and the state of the s</u>

विपिटक सहन्त' की भी खपाधि इसे मिली. इसकी सगमग 108 पुस्तकों (अनुवाद सहित) का पता चला है.

श्चान-री-काश्चो—सन् 148 में यह पार्थियन-युवराज राज-त्याग कर चीन गया. सूत्रों का चीनी आपा में श्रतुवाद

किया. इसने लगमग 55 पुस्तकें लिखी हैं.

इस्सिंग—चीनी असर्या ने 671 ई० में चीन छोड़ा-तीसेक देश-भ्रमया कर 695 ई० में देश लौटा चौर अपने सङ्ग 400 के लगभग पुस्तकें लावा चौर सन 713 ईसवी में मरा. इसने त्रिपिटक का शेष अनुवाद किया. इसकी करीब 56 अनुदित पुस्तकें मिलती हैं.

**७-लो-च्छा--स्रोतान के भिक्ष**ु ने चु शु-त्यान से मिल

कर एक सूत्र का अनुवाद किया.

डपशून्य—( 538-568 ई०) मध्य भारत में इस राजकुमार की पांचेक पुस्तकें मिलती हैं जिनमें विमल कीर्ति-निर्देश बहुत प्रसिद्ध है.

करवप मातंग -- सन् 67 में भिक्ष ओं की दोली ले चीन गया, बौद धर्म का प्रचार किया, मध्य भारत के त्राह्मण

कुल में जन्म ले, चीन के 'रवेत मठ' में मरा.

कुमार जीव—परम्परागत मंत्रियों के कुल का एक भारतीय भमगा जो सन् 383 में चीन गया और जिसने सन् 412 तक लगभग 98 पुस्तकों का अनुवाद किया. चीन में 8000 से क्यादा उसके शिष्य थे. संभवत: 415 ई० में बह मरा. लगभग 50 पुस्तकों मिलती हैं.

गीतम धर्मझान या धर्मप्रझा—बनारस के गीतम प्रझा दिन का बढ़ा लड़का जो 577 ई० में उत्तरी-चाओ राजकुमार के अधीन एक जिला का 'लाट' बनाया गया. एक

पुस्तक उसने लिखी है.

Alle Control

गौतम प्रका दिन (538-543 ई०) बनारस का

नासण्, इसकी 13 पुस्तकें मिलती हैं.

गीतम संघदेव—काबुल का श्रमण, जो सन् 382 में बीन गया. इसकी चार पुस्त हैं मिलती हैं.

गुनभद्र — नाह्मण कुलीन भारतीय श्रमण जो महायान बौद्ध-धर्म से पूर्ण-परिचित था, सन् 435 में चीन गया, सन् 443 तक अनुवाद करता रहा, 75 वर्ष की अवस्था में सन् 468 में मरा.

गुनरत्न-भारतीय श्रमण, 64 पुस्तकों का अनुवादक. चु-शु-ला-चीन में पैदा हुआ, 52 पुस्तकों का अनुवाद किया. एक भी नहीं मिलती.

दिवाकर---भारतीय असण ( 676-688 ई०), 19 पुस्तकों का प्रणेता, सभी प्राप्त हैं.

दानपाल-यह भारतीय श्रमण सन् 980 में जीन गया. जीन-सम्राट द्वारा प्रतिष्ठितः 777 पुस्तकें लिखीं. الروائك مهلت كي بهي أيانهي أسه ملي . إس كي الله بهاي 100 يمان

آنیہ شی، کاؤسس 148 میں یہ پارتہیں یو راے راے تیاک کیا گان کیا ، سرتوں کا چیلی بیاشا میں اثوراد تیا ، اِس نے لگ بیگ 55 یستمیں تھی ہیں ،

ارت سنگ چینی شرمنترنے 671ع میں چینی چهروا ، ایس آیک دیش بهرملو کو کے 695ع میں دیش لوتا اور اپنے سنگ 400 کے لگ بهگ پستمیں لیا اور 713ع میں موا ، اِس نے تری پٹک کا شیش انوواد کیا ، اِس کی قریب 56 پستمیں ملتی هیں ،

اور لور چھا۔ سخوتن کے بیکشو نے چو۔ شو۔ تیان سے مل البودت کر ایک سوترکا البوراد کیا ۔

آپ شرئیه--(568-88 ع) مدهیه بهارت میں اِس راجکمار کی پائچ ایک پستمیں ملتی هیں جن میں ومل کیرتی، تردیف بہت پرسدھ ہے ۔

کشیپ ماتنگ که سس 67 میں بهکشوؤں کی ڈولی لے چھن گیا ' بودھ شعرم کا پوچار کیا' مدھیکہ بھارت کے براھس کل میں جنم لے' چھن کے' 'شویت مٹھ' میں مرا ۔

کمار جهرسپرمپراکت منتریوں کے کل کا ایک بھارتی شرمنز جو 8838 سن میںچین گیا اور جس نے 12 4تک لگ بھگ 98 پستکوں کا انبووان کیا ، چین میں 3000 سے زیادہ اِس کے شھیہ تھے ، سمبھرتہ 415ع میں وہ مرا، لگ بھگ 50 پستکیں ملتی ھیں ،

گوتم دھرم گیاں یا دھرم پر گیا۔۔بنارس کے گوتم پرگیاروچی کا بڑا لڑکا جو 5777ع میں اُتری ۔ چاؤ راجکمار کے اُدھیں ایک ضلع کا 'دت' بنایا گیا ۔ ایک پستک اُس نے لکھی ہے ۔

گوتم پرکیاروچی-سس (543-538ع) بنارس کا براهدن'اس کی 13 پستمیں ملتی هیں .

گہتم سنگ دیو۔۔۔۔کابل کا شرمنت کو سن 382ع میں چھن گیا ۔ اس کی چار پستمیں ملتی ھیں ۔

گن بهدر-براهس کلین بهارتیه شرمنز جر مهابان برده دهر سه پررن پرچت تها سن 435ع میں چین گیا سن 468 میں انوراد کرنا رها 75 ورش کی اوستها میںسن 468 میں مرا .

ركى رتى سبهارتيم شرمنز 4 64 يستكون كا أثووادك .

چو - شو - لا چين ميں پيدا هوا ، 52 پستكوں كا انوواد كيا . ليك بهى نہيں ملتى ،

ديواكر-بهارتيه شرمنز (688-676ع) 19 پستموں كا پرنيتا سبهي پراپت هيں .

دان بالسية بهارتية شرمنر سن 980ع ميں چين گيا . چهن سراند دوارا برتشابت . 777 يستنين لنهين . वेष-आवाषर (कारमीर) का अमसा, सन् 980 में बाब गया, बीस वर्षों तक अनुवाद-कार्य करता रहा, सन् 1000 में गरा, 18 पुस्तकें लिखीं.

धर्मवेष-नालम्या विद्वार का वह अम्या ( 973-1001 हैं ) जिसे चीन-सम्राट ने 'महाधर्माचार्य' के उपनाम से

विभूषित किया. 118 प्राप्त पुस्तकों का लेखक.

धर्मकला—सन् 222 में यह भारती मिश्च चीन गया, सन् 250 में 'प्रति मोश्च' का जनुवाद किया जिसकी प्रति को गर्द है.

धर्मनन्दी—सन् १८४ में यह शमण चीन गया, पांच पुस्तकों का जनुवाद किया जिनमें दो मिलती हैं.

धर्म प्रिय—इस भारतीय अमगा ने केवल एक ही सूत्र

का अञ्चाद किया.

भर्म रक्षा-गोवर्धन या भरत के नाम से भी प्रसिद्ध, बिनय में पटु, भारतीय भमण, कश्यप-मातंग के बाद बीन गमा, मिल-जुलकर पांचेक पुस्तकों का अनुवाद किया.

वर्भ रक्षा-( 266-377 ई॰ ) 36 भाषाओं का पंडित,

भनेक पुस्तकों का लेखक जिनमें 90 मिलती हैं.

धर्म रक्षा—सन् 414 ई० में यह भारतीय अमण चीन गया, सन् 421 तक अनुवाद कार्य करता रहा, जिनमें एक दर्जन के लगभग पुस्तकें भिलती हैं. 49 वर्ष की अवस्था में मिण्या सन्देह पर मार डाला गया.

भर्म रक्षा—मगभ का यह भारतीय अमण् सन् 1004 में चीन गया और मौत तक अनुवाद कार्य करता रहा. सम्राट द्वारा प्रतिष्ठित हुआ, 96 वर्ष की अवस्था में मरा. दर्जनों पुस्तकें लिखीं.

धर्म इचि-भारतीय श्रमण, ( 501-507 ई० ), इसकी

दो पुस्तकें मिलती हैं.

वर्म विक्रम या धर्मासुर—चीनी भिक्षु 15 मित्रों के संग सन् 420 में भारत आया. इसने सन् 453 में देश लीटने के पहले एक पुस्तक का अनुवाद किया.

नरेन्द्र व्यास-भारतीय श्रमण, (557-589 ई०), 15

पुस्तकें मिलती हैं.

परमार्थ—गुनरत्न एवं कुलनाथ के नाम से भी प्रसिद्ध, इंग्जैन का यह अभए, 548 ई० में चीन गया. इसने 557-569 ई० के अन्दर 40 पुस्तकों का अनुवाद किया जिनमें 32 मिलती हैं. 71 वर्ष की उम्र में सन् 569 में वह गरा। उसके अनुवादों में अश्वघोष की द्री पुस्तकों, और आचार्थ बसुबन्धु का जीवन चरित प्रमुख हैं.

प्रभाकर मित्र-( 557-589 ई० ), केवल तीन

पुस्तकें इस भारतीय अमग्र की मिलती हैं।

प्रका—( 785-810 ई०), काबुल का अमरा।, पुस्तकें नहीं मिक्सतीं.

ديرسجالندهر (كشير) كا شرمنوك سن 980 مين المورد كين المورد كارها من 1000 مين مين مرا . 18 يستعين الهين .

دھرم دیرسٹ الندارھار کا بھ شرمنی (1001-973) جسے چین سرات نے 'مهادھرماچاریہ' کے آپ نام سے وبھرشت کیا ۔
118 برایت یستمیں کا لیکھک ۔

دھرم کلسسن 222ع میں بھارتیہ بھکھو چھن گھا' سی 250ع میں 'پرتیموکھو' کا انبوان کیا جس کی پرتی کھو گئی ھے

دهرم نندی-سن 384 میں یه شرمنز چین گیا انہا پانچ ستکس کا انوواد کیا جن میں دو ملتی هیں .

دھرم پرید۔۔اس بھارتیہ شرمنو نے کیول ایک ھی سوتر کا ۔۔۔۔۔۔۔ اس بھارتیہ شرمنو نے کیول ایک ھی سوتر کا

کھرم رکشا۔ گوہردھن یا بھرت کے نام سے بھی پرسدھ وناء میں پاو بھارتیہ شرمنز کشیپ ماتنگ کے بعد چنن گیا ا مل جلکر پانچ ایک پستمیں کا انوراد کیا ۔

دهرم ركشاً (377-266) قُو بهاشاؤس كا بندس اليك

پستموں کا لیکھک جی میں 90 ملتی هیں .

دهرم رکشاسمکده کا یه بهارتهه شرمنی سی 1004ع میں چین گیا اور موت تک انوواد کاریه کرنا رها، سمرات دوارا پرتشتیت هوا ، 96 برس کی عمر میں مرا ، درجاری پستیس لیمیں .

دهرم روچی--بهارتیه شرمنز (ع507-501) کس کی دو ستمیں ملتی هیں .

دھرم وکوم یا دھرماسہ چینی بھکشو ۔ 15 متروں کے سنگ سن 450 میں بھارت آیا ۔ اس نے سن 450ع میں دیش اوٹنے کے پہلے ایک پستک کا انہواد کیا ۔

نه بندر وياس--بهارتيه شرمان (589-557) أس كي 15 پسكين ملتى هين .

پرمارتہ ۔۔۔ گن رتن أيوم كل ناته كے نام سے بهى پرسده . اجين كا يه شرمنز سن 544ع ميں چين گيا . اس لے سن 32 . آئوراد كيا جن ميں 32 مئتى هيں . آئوراد كيا جن ميں 32 مئتى هيں . 71 برس كى عمر ميں سن 695ع ميں وہ مرأ . اس كے انوادوں ميں اشوگهرش كى دو پستكيں اور آچارج بسو بندہ كا جيرن چرت پرمكه هيں .

پربهاکر متر---(589-557ع) کیرل تینی پستکیں اُس بهارتیه شرمنز کی ملتی هیں .

پركيا---(585\_-590) كا بل # شرمنو، يستكين تهيمملتين.

प्रमिति—आरतीय शमण ( 705 ई० ), इसकी एक

पुस्तक मिलती है.

फाहियान—प्रसिद्ध चीनी मिक्षु, सन् 399 में बुद्धभद्र
के साथ साथ उसने अनेक पुस्तकें लिखीं. उसकी पुस्तकों में
केवल चार मिलती हैं. 86 वर्ष की अवस्था में वह मरा.

बोधी रुचि--उत्तरी भारत का अमया जो सन् 508 में चीन गया. अनुदित प्रयों में लगभग तीस मिलते हैं.

बोधी हिंच करयप--- नाहारण कुलीन, दक्षिण भारतीय क्रमण, पूर्व नाम धर्म हिंच था, (684-705 है), 53 मंथों का अनुवाद किया जिनमें 41 मिलते हैं. ऐसा विश्वास किया जाता है कि वह 156 वर्ष की उम्र में मरा.

बुद्ध सद्र—भारतीय श्रमण, चीनी भाषा में 15 पुस्तकों का अनुवाद किया. कुमार जीव से वह परिचित था, 91 साल की बन्न में सन् 429 में मरा.

बुद्धरांत-इस भारतीय अमण की (524-509 ई०)

9 पुस्तकें मिलती हैं.

मैत्रेय भद्र — मगध का भारतीय श्रमण, लिया-मो शासा के राजा का यह गुरु था (907-1125 ई०), 5 पुस्तकों का लेखक.

्रत्न मति-भारतीय श्रमण, (508 हैं ) दो पुस्तकों

का लेखक.

रत्न-चिन्ता—एक अमण, (698-727 ई॰) कारमीर निवासी, सात पुस्तकों का अनुवादक. सौ वर्ष जिया.

बज बोधी—जाद्यण कुलीन, दक्षिण भारतीय अमण, सन् 719 में चीन गया और वहीं 71 वर्ष की अवस्था में भरा. 11 पुस्तकों का लेखक.

बाष्य—तिब्बत का श्रमण, कुबलाई खाँ का सलाहकार इसने सन् 1269 में मंगोलियन भाषा की क्षप रेखा तैयार की.

संघ वर्मन-(506-520 ईं०) श्याम देशीय श्रमण, 9

प्रथों का अनुवादके.

सुभाकर सिंह—भारतीय श्रमण, नालान्दा बिहार से सन् 716 में चीन गया, सन् 815 में 99 वर्ष की व्यवस्था में मरा. 5 पुस्तकों का लेखक.

हुई-ची ( प्रज्ञा )—भारतीय श्रमण, चीन में पैदा हुश्रा, पिता बाह्मण थे, सन् 692 में एक पुस्तक का अनुवाद किया जो मिलती है.

क्रानगुप्त—(561—600 ई०) गांधार का श्रमण, 38 पस्तकों का लेखक, सभी मिलती हैं. 98 वर्ष की अवस्था में मरा.

ज्ञान श्री—सन् 1053 में यह भारतीय श्रमण चीन

गया. दो प्राप्त पुस्तकों का लेखक.

A Property of the Control of the Con

इनके कालांबा भारत से चीन जाने बाले कुछ लोगों का पता राधाकुष्णन के 'इंडिया ऐंड चाइना' से चलता है. खास लोगों में, संघभूमि (381 ई०), गीतम संघदेव (384 ई०) पुरुष मत और उनका शिष्य धर्माशय (397 ई०), बुद्धाशय (चीबी शताब्दी), बिमलाध्व (406 ई०), धर्मचेम (414 ई०

ت فاهیاں۔۔۔پرسدہ چینی بیکشو سن 399 میں ہدہ بیدر کے ساتھساٹھ اس نے انبک پسکیں لعیں ۔ اس کی پسکتیں میں ۔ گھل چار ملتی میں ۔ 86 برس کی ارستیا میں وہ موا ۔

ب بودھی روچی۔۔۔آئری بھارت کا شرمنز جو سن 508ع میں چین گیا، الودت گرنتھوں میں لگ بیگ تیس ملتے ھیں۔ بودھی روچی کشیہ۔۔۔براھمن کلین دکین' بھارتیہ شرمنز' پورو گام دھرم روچی تھا (705-684). 53 گرنتھوں کا انہواد کیا جن میں 41 ملتے ھیں ، ایسا وشواس کیا جاتا ہے کہ وہ 156 روس کی عمر میں موا ،

بدھ بهدر--بهارتیه شرمنو چینی بهاشا میں 15 پستوں کا انووان کیا ، کبار جهو سے وہ پرچت تها 91 سال کی عدر میں سن 429 میں موا .

. بده شانت اس بهارتیه شرمنز کی ( 539-524ع ) 9

پستکیں ملتی ہیں . متیریت بهدر-مكدہ كا بهارتيه شرمنو، لی آو شاكها كے راجا كا يه كرر تها (1125-907ع) 5 يستكوں كا ليكيك .

رتن متی بهارتیه شرمنز (508ع) دو پستمور کا لیکهک. رتن چنتاسایک شرمنز (727-693) کاشمیر تولسی، سات بستمون کا انبوادک، 100 برس سو جیا .

وجر بردهی براهس کلین دکھن بھارتیم شرمنز سن 719 میں چین گیا اور وهیں 71 برس کی اوستها میں صوا۔ 11 یستعوں کا لیکھک ،

واشپ استبت کا شرمنز الله خان کا ماحکان اس لے سن 1269ع میں منکولین بھاشا کی روپ ریکھا تھار کی .

سنکه ورمن (220-506) شیام دیشی شرمنو، 9 گرنتهوس کا انورادک .

سبهاکو سلکھ سیھارتیہ شرمتو اللہ اللہ اللہ سے سن 716م میں جینی گیا سن 815میں 99 روش کی اوستھا میں مرا ، یائیم یستکوں کا لیکھک ،

هوئی - چی (پرگیا) -- بھارتیه شرستز' چیس میں پیدا هواد پتا براهمی تها سی 692ع میں ایک پستک کا انبواد نیا جو

گیاں گیت —(561-600) گاندھار کا شرمنز، 38 پستکوں گا لیکھک سبھی ملتی ھیں ، 78 روش کی عمر میں مرا ۔ گیاں شری سس 1053 میں یه بھارتیه شرمنز چین گیا۔

دو پرایت بستارس کا لیکیک .

اں کے علوہ بھارت سے چین جانے والے کچے لوگوں کا پته وابعا کوشنی کے 'انڈیا اینڈ چائنا' سے چلتا ہے۔ خاص لوگوں میں سنگ بھونی ( 381ع )' گوتم سنگ دیو ( 384ع )' پہنیہ مت اور ان کا ششیہ دھرمائے ( 397) بدھائے ( چوتمی شاہدی )' وطائش سن ( 406ع ) دھرم چیم ( 414ع )'

बुद जीव (433 ई०), गुण-वर्ग (131 ई०), बोध वर्ग (520 ई०), विमोध सेन (541 ई०) एवं धर्मगुप्त (590 ई०) विशेष-उल्लेखनीय हैं.\*

इपर्यु क अनुवादक न केवल चीन और भारत के ही असरा या गृहस्थ थे. बिल्क गांधार, खोतान, तिब्बत, श्याम और सुदूर लड्डा तक के निवासी थे. वौद्ध-धर्म से सन्वन्ध् रखने बाते मंथों के अनुवाद के अलावा भारतीय संस्कृति के प्रथ भी अनुवादित हुए थे. अनुदित प्रन्थों में दा विशेष महत्व के हैं—(१) स्वर्ण सप्तती शास्त्र और (2) वैशेषिक इस पदार्थ शासा. पहली पुस्तक 'सांख्य-करिका' की टीका है और दूसरी कणाद के वैशेषिक दर्शन पर लिखो गई है. अ

जे. एच. कजिन्स ने एक स्थान पर लिखा है—'अशांक के समय में, चीन और भारत में, आपसी सांस्कृतिक एकता फल फूल रही थी. भारत के पुराहित और कलाकार चीन में आश्रय पाते थे. एक समय राजधानी लो-यांग में तीन हजार भारतीय यागियों के अलावा दस हजार भारतीय परिवार जीवन-यापन करते थे. ये अपने सग अजन्ता और पलीरा की चित्र-कला के आदशे ले गए थे. इन्होंने ही चीनियों का लिपि-ज्ञान कराया. बौद्ध धमें के साथ-साथ भारतीय कला एवं विद्या चीन पर ई० पू० पहली शताब्दी में ही अपना प्रभाव जमा गई.

"चीन में बौद्ध-कला से हिन्दू कला गले से गले मिली. नतीजा यह हुआ कि भारतीय शैलो बदलकर चीनी ह गयी.....".†

' बौद्ध-धम के 'सत्य' का स्वागत चीनवासियों ने खुले दिल से किया. चीन की विचारधारा के साथ जब भारत की सांस्कृतिक धारा मिल गयी, तब एक नये चीन देश का जनम हुआ जिसका अस्तित्व आज तक है. चीन पर भारतीय अध्यापकों का कसा प्रभाव पड़ा है इसका परिचय, इन शब्दों में मिलता है—-"चीन पहले बौद्ध मिशनरियों को नहीं भलसकता. अनुवाद और प्रचार के अति कठिन काम को धन्होंने बड़ी सच्चाई, ईमानदारी और सफलता के साथ किया". #

तीसरी राताब्दी मध्यकाल में (इस्प्रिंग के श्रतुसार) चीन से बीसेक सन्यासी भारत श्राये थे जिनके लिए किसी गुप्त-सम्राट' ने बोध गया के पास एक 'चीन-संघाराम' د بده جهر (423ع) كنزورم (481ع) بردهى دهرم (520ع) وموكف سين (541ع) أيوم دهرم كيت سن (590ع) وشيف أليكهنيه هين .\*

آپریوکت آئووادک نه کیول چین اور بهارت کے هی شرتمنز یا گرهستی تھے بلکہ کاندهار' خوطی' تبت' شیام اور سدور لنکا تک کے نواسی تھے ۔ بوده دهرم سے سمبندھ رکھنے والے گرنتھوں کے انوواد کے علوہ بھارتیہ سنسکرتی کے گرنتی بھی نووادت عوثیاتی انودت گرنتھوں میں دو رشیش مہتو کے هیں (1) سوری سہتی شاستر اور (2) ویشیشک دس پدارتی شاستر ، پہلی پستک 'سانکی کاریکا' کی ٹیکا ہے اور دوسری کفتراد کے ویشیشک درتان پر لکھی گئی ہے بھی

چے . ایپے کرنس نے ایک استھاں پر لکھا ھے۔ اشوک کے سمیے میں 'چین اور بھارت میں' آپسی سائسکرنک ایکتا پھل پھول رھی تھی . بھارت کے پوروھت اور ظاکار چین میں آشرے پاتے تھے ، ایک سمیے راجدھاتی لو - یانگ میں تھی ھڑار بھارتیہ پویوار جھوں یاپی کرتے تھے . یہ اپنے سنگ اجنتا اور ایلورا کی چٹرکلا کے آدرش لے کئے تھے ، اِنْہوں نے ھی چینیوں کو ایری گذان کرایا ، بودھ دھرم کے ساتھ ساتھ بھارتیہ خلا ایوم ودیا چین پر عیسی پورو پھلی کے ساتھ ساتھ بھارتیہ خلا ایوم ودیا چین پر عیسی پورو پھلی شکایدی میں ھی اپنا پربھاؤ جما کئی .

''چینی میں بودھ کا سے هندو کا گلے سے گلے ملی، تعیجه یہ هوا که بهارتیه شیلی بدل کر چینی هوگئی.....'' †

ہودہ دھرم کے ستیہ کا سواگت چین واسیوں نے کہلے دل سے کیا۔ چین کی وچار دھارا کے ساتھ جب بھارت کی سائسکرتک دھارا مل گئی تب ایک نئے چین دیش کا جنم ھوا جس کا استتو آج نک ہے ۔ چین پر بھاریہ ادھیاپکوں کا کیسا پربھاؤ پڑا ہے اس کا پریچے' ان شہدوں میں ملتا ہے۔"چین پہلے ہودھ مشنریوں کو نہیں بھول سکتا ۔ انبواد اور پرچار کے آتی نتھیں کام کو انہوں نے بڑی سچائی' ایمانداری اور سپھلتا کے ساتھ کیا ۔''!

تیسری شتابدی کے مدھیہ کال میں ( اِنسنگ کے انہسار ) چین سے بیس ایک سنیاسی بھارت آئے تھے جن کے لئے کسی 'گہت سمرات' نے بودھ گیا کے پاس ایک 'چین سنگھارام'

**क्क--एस. सी. गुहा--'इन्डो-चाइनीज कार्डिएलिटी थ** एजेज'--जे. बी. एच. यू. भाग 89 पृष्ठ 21.

ایس. سی. گوها-- اندو چاننیز کارتی اے آلیٹی تهرته ایجبز کے بی ایچ بھاک 89 درشته 21 .

<sup>†-</sup>जे. एच. कजिन्स-दी कल्चरल युनिदी औं क एशिया, खएड दो, पृष्ठ 77.

چ ایج کونس سئی کلحول یوندی آف ایشا کهند دو پرشته 77 .

<sup>‡-</sup>रीकेस्ट ( Beichelt )-रू य पेरा ट्रेडिशन इन चाइनीच बुद्धियम.

ريكايت ( Reichelt ) تررته آيند تريديش إن چائيز بده ازم .

अनवा दिया था. इनके धलावा चै-मांग (404-424 ई०), सु'ग-युन (530 ई०), बांग-हुएन-सो (634-647 ई०) धादि की भारत-यात्रा भी कम महत्वपूर्ण नहीं है. अ

शाम तौर पर बीन में बौद्ध धर्म प्रन्थों को लोग 'त्रिपिटिक' के नाम से जानते हैं जिसमें केवल 'विनय' 'धिमिधन्म' और 'सूत्र' ही हैं. 'चीनी त्रिपिटक' से ऐसा भास होता है कि बीनी भाषा में विभिन्न धर्म-मन्थ सुरक्षित हैं, अभी हाल में जापान से ताई-शाओ नामक बीनी त्रिपिटक का एक नया स'स्करण निकला है जिसमें 2184 सूत्र हैं. पहले स'स्करणों में प्र278 सूत्रों का पता चला है, पर खो जाने के कारण धव केवल 2184 सूत्र ही बच रहे हैं. इतिहास साक्षी है कि बौद्ध धर्म के विरुद्ध होने के कारण दं-एक चीनी सम्राटों ने बहुत-से मठ जला दिये थे जहाँ बहुमूल्य पुस्कें स'महीत थीं.

भारत के इन दो स्थानों, (1) चीन भवन, विश्वभारती, शांतिनिकेतन (2) मूल गंध कुटी बिहार, सारनाथ, में निम्नांकित चीनी-न्निंपटकों के संस्कर देखे जा सकते हैं— (क) सुंग शाखा का संस्करण (960-1276 ई0), जिसे हैंगन एडीशन भी कहते हैं, (ख) चिंग-शाखा का संस्करण (1644-1911 ई0) जीर (ग) संचाई संस्करण एक पूरक (Supplement) सहित. (क) में 1921, (ख) में 1666 जीर (ग) में 1916 रचनाओं का पता पूरक के साथ चलता है.

एक चीनी बौद्ध बिद्धान लु-चेंग के मुताबिक चीनी-त्रिपिटक के 16 संस्करण हुए हैं—4 सु'ग शास्त्रा में 5 युनान-शास्त्रा में, 1 मि'ग शास्त्रा में, 4 चिंग शास्त्रा में भार 2 बर्तमान प्रजातंत्र शास्त्रा में.

भारतीय-संस्कृति का प्रभाव चीनवासियों के जीवन के हर अंगों पर समान रूप से पड़ा है—यह ध्यान में रखने योग्य है. साहित्य में गद्य एवं पद्य के केत्र में, चिन-राज्य, (265-423 ई०) और थांग-राज्य (618-907 ई०) ने कमाल कर दिखाया है. आगे चलकर मिंग-शासन में (1368-1643 ई०) दार्शनिक रचनाओं का विकाश हुआ.

थान-शासन काल में शोन-वेन नामक एक बौद्ध भिक्ष ने संस्कृत में वर्णित भारतीय लिपि शास्त्र के आधार पर चीनी लिपि को सुधार कर छोटा रूप (36 वर्णों का) दिया. पर खेद की बात है कि यह वर्णमाला जन साधारण के बीच पनप न सकी. بنوا دیا آفار آن کے ماوہ جے - مانک سن 434-404ع' سرنگ یون سن 730ء وانک عورین سو سن 647-634ع آدمی کی بیارت یاتوا بھی کم مہترپورنز نہیں ہے .

علم طور پر چین میں بردہ دھرم گرنتیوں کو لوگ "تریتک، گر تام سے جاتت کیں جس میں کیول ویئے، ابھی دھم، اور سوتر ھی ھیں، اچیئی تریتک، سے آیسا بھاس، ہوتا ہے کہ چینی بھاشا میں وبھن دھرم گرنتی سورکشت ھیں، ابھی حال میں جاپان سے تاتی شاؤ نامک چینی تریتک کا ایک تیا ملسکون نکا ہے جس میں 1842 سوتر ھیں، پیلے سنسکرئیں میں 2278 سوتروں کا پتا چلا ہے، پر کھو جائے کے کان اب کیول 2278 سوترھی بچ رہے ھیں، انہاس ساکشی ہے کہ بردھ دھرم کے ورودھ ہوئے کے کان دو آیک چینی سرائی نے بہت دھرم کے ورودھ ہوئے کے کان دو آیک چینی سرائی نے بہت دھرم کے ورودھ ہوئے کے کان دو آیک چینی سرائی نے بہت میں میں ہومولیہ پستیس سنگرھیت تھیں،

بھارت کے اِن دو استہائوں' (1) چھن بھون وشو بھارتی شائتی نعیتن (2) مول گلدھ کوئی وھار' سار ناتھ میں نمائکت چینی تریٹکوں کے سلسکون دیکھے جا سکتے ھیں۔۔ ( کا ) سلگ شائها کا سلسکون ( 1971–1964ع ) جسے تریکن ایڈیشن بھی کہتے ھیں' ( نو ) چنگ شائها کا سلسکون ( (1911–1644ع ) اور ( کا ) سنٹھائی سلسکون ایک پورک (Supplement ) میں 1966 اور ( کا ) میں 1966 ور کا ) میں 1916 ور کا کے ساتھ چلتا ہے ۔

آیک چینی بودھ ودوان لوچینگ کے مطابق چینی تریتک کے استعرال موئے میں . 4 سنگ شاکیا میں 5 یونان شاکیا میں منگ شاکیا میں ورتمان پرجاننتر ماکیا میں .

بھارتیہ سنسترتیکا پربہار چین واسیوں کے جیوں کے ہو انگوں پر سمان روپ سے پڑا ہے۔ یہ دھیاں میں رکینے یوگیہ ہے ساھتیہ میں گدیہ ایوام پدیہ کے چھیٹر میں چن راجیہ ( 423-265ع) اور تھانگ راجیہ ( 907-618ع ) نے کتال کر دکیایا ہے۔ آگے چلکو لنگ شاسی منی ( 1643-1368ع ) دارشنک رچناؤں کا رکس ہوا ۔

تھاں شاسن کال میں شون وین نامک ایک بودہ بھکشو نے ساسکوت میں ورثبت بھارتیہ لیپی شاستر کے آدھار پر چھائی لیپی کو سدھار کر چھوٹا روپ ( 36 ورثوں کا ) دیا ۔ پر کھید کی بات ہے کہ یہ ورن مالا جن سادھارن کے بیچ پلنپ نہ سکی ۔

क्षणान् र्याप्त चाइना, पूछ 26-29 तथा पूछ 12-13.

راداما كرشني-اينديا ايند چاننا پرشته 29-26 اور پرشته 13-13.

सारित क्यानि स्विकता, बास्तु कता आदि पर बाज भी, कीय के पैगाड़ा आदि को देखने पर » भारतीय सार्वर साक साक दिखाई देशा है.

भारत के प्राचीन खाहित्य की जोर, जासकर संस्कृत साहित्य की जोर जबर ढालें तो सहज में ही पता चल जावगा कि हर जगह चीन के बारे में बवान भरे पड़े हैं. रामाचय जौर महाभारत में चीनवासियों का जिक है. रामा-वया का एक च्याहरण लीजिये—

> चीनानं परचीनांरच तुसारान वर्षरानि । काञ्चनै: कमलैश्चैय कान्योजानिप संवृतान् ॥

महाभारत में बीनवासियों का वर्णन बहुत बार आया है, ख्वाहरण के लिए हम 'आदि पर्व' और 'सभा पर्व' के पन्ने ज्लट सकते हैं. सभा पर्व में एक जगह हम ऐसा वर्णन पाते हैं कि अर्जुन की विजयी सेना को रोकने के हेतु भागदत्त ने लड़ाई मोल ली और इस समय इसके साथ अन्य सैनिकों के अलावा बीनी सैनिक भी थे—

स किरातैश्व चीनश्व वृतः प्रग्जेतिवोद्यभवत् ..... चद्योग पर्व में भी दुर्योधन को भागदत्त द्वारा चीनी सैनिक दिये जाने का वर्यान है:

तस्य चीनैः किरातैश्च काश्वनैरिव संवृतम्, च्योग पर्व में ही अन्य स्थल पर चीनी घोड़ों का वर्यान आया है:

वाजिनां च सहस्रायि, चीनदेशोद्भवानि च i च्सी पर्वे में—

अर्कजरच बलीहानां चीनानां धौत मूलकः। बाग्र पर्व में—

हार हूणांश्च चीनांश्च तुषारान् सैन्यवां स्तथा । भीष्म पर्व में—

तथैव रमणारचीना स्तथां च देशमात्रिकाः । कर्ण वर्ष में----

पटकता है.

सुमांनंगांश्य बगांश्य निषादान् पुराष्ट्रचीनकान्। इस प्रकार 'महाभारत' से हमें यह पता चलता है कि भारतीयों की फीज में चीनी सैनिक रहा करते थे और उनसे स्रित्रयों जैसा व्यवहार किया जाता था. वे यह में सम्भितित होने के लिए आमंत्रित भी किये जाते थे. परन्तु 'मृतुसंहिता' का सेसक अचानक वन्हें शुद्धों की में गी में से जाकर بھارت کے پراچین ساعتیہ کی اور' خاصکر سنسکرت ساعتیہ اور نظر قالیں تو سہم میں ھی پتا چل جائیگا کہ ھر چکیہ چھن کے بارے میں بھرے پڑے عیں وراماین اور بالھارت میں چین واسیوں کا ذکر ہے راماین کا ایک اُداھوں بیٹارے۔

چينانان پرچى نانشج توكهاران بربرانيى، ا

كانج له كمليشتهيو كامبوجانيي سنورتان.

مہابہارت میں چین واسیوںکا ورنی بہت بار آیا ہے۔ اُداھوں کے لئے ہم 'آدی پرو' 'اور سبھا پرو' کے پننے اُسٹ سکتے ایس ۔ سبھا پرو میں ایک جکید ہم ایسا ورنی پاتے ہیں که رجنی کی وجئی سیٹا کو روکنے کے ہیٹو بھاگدت نے لوائی بیل لی اوراس سے اُس کے ساتھ انبیا سینکوں کے علوہ چیٹی میلک بھی تھے۔

سا ئرآتىشىچ چىنشچ ورتە پرگچىتى كېردىيورى...

آدیوگ پرو میں بھی دربودھن کو دوارا چینی سینک ایئے جانے کا رونن ہے:

تسهم چهنه دراتشیچ کاسج تیرو سنورتم .

اُدیوگ پرو میں ہمی آئیہ اسٹیل پر چھٹی گھوڑوں کا ورتن ا

واجی ناں چه سېس ترانی چهن ديشوديورانی چه سي پرر مهن---

لرک جشچ بلیهانان چینانان دهوت مول کهه، انتر پرو میں--

سو پرو سی هار هونوانیشی چینانشی تشاران سینیموان استنها . هیشم یرو مهن—

تنهير رمنواشچينا استنهال چه ديش ماتريكاه .

ارن پرو میں۔۔

سرمان لنكانشج وكانشج نشادأن يندرچين كان .

اِس پرکار 'مہابھارت' سے ھمیں یہ پکا چلتا ہے کہ بھارتیوں ای فوج میں چینی سینک رہا کرتے تھے اور اُن سے چھتریوں چیسا ویوھار کیا جاتا تیا ، و سے یکیه مہی ساست ھونے کے لئے منترب بھی کئے جاتے تھے ، پرنتو 'منوسنیتا' کا لیکھک اُچانک نہیں شودروں کی شرینی میں لیکر جا پٹکتا ہے ۔

एस॰ सी॰ गुद्दा-इंडा-चाइनीज कीर्डिएलिटी व एजेज, प्रष्ट 22.

ایس. سی. گرها. اندر چائیلیز کار تھی اے لیالی تهروایجیبرز پرشام 22 .

रामायग् = सं० रस्पर गिगरीसम्म (पेरिस 1881) 55:44:14.

رأمايين سن. كيرسهر كبرت سي أو ( پيرس 1884 ) 14 :44: 45 ق

'श्राक्षित बिस्तर' में हम चीनी सपु लेखों का उल्लेख पाते हैं—

नाबी-संरोच्टीम् संगतिपिं, संगतिपिं, चीन तिर्पि, हूण तिर्पि ......चतु:वस्टि सिपीनां कतमांत्वं शिश्वविष्यिष ?

'कथा सरित् सागर' में 'चीनपिष्टम्' का वर्णन आया है जिसे सोहागिन नारी अपने ललाट पर कुंकुम-बिन्दु के रूप में लगाती हैं. हेमचन्द्र के 'अभिधान चिन्तामणि' में इसे ही 'सिन्दूरम्' भी कहा गया है :

सिन्द्रनागजं नागरशृङ्गारभूषयां चीन पिष्टम्।

आज भी भीना सिन्दूर औरतों के बीच बहुत प्रचलित है.

पाली टेक्स्ट-सोसायटी से प्रकाशित—'अदुशालिनी' में अहुकथा या धम्म संगिनी के भाष्य में हम, यासां वासेन विसा भागा चीन पिट्ट आदि का व यात पाते हैं. सुत्रनिपात में एक शब्द आया है 'चीनक' जिसका अर्थ टीका में है—एक प्रकार का यान. विष्णु पुराण में भी ज्यों का त्यों ऐसा ही प्रयोग हुआ है. अपने 'अभिधान चिन्तामणि' में हेमचन्द्र भी 'चीनक' का यान ही बताता है. हेमाद्री की 'खतुरंग चिन्तामणि' में भी वही बात है. शायद शीत काल में जारों से पाई जाने बाली 'मूंगकली' का मूल स्थान चीन ही है. चूँकि दूसरे शब्दों में 'चिनिया बादाम' हमारे बालकों का बहुत प्रिय है.

'राजनिषंट' में चीन की विभिन्न वस्तुओं का वर्णन आया है--चीन कपूर, चीन कर्फटी, चीनज, चीन वंग आदि.

चीन कर्पूर का वर्णन भाव प्रकाश में भी आया है. 'सुभुत सहिता' में 'चीन पट्ट' का विशेष उल्लेख है. 'दश कुमार चरित' में चीनी बका का भी वर्णन है—

चीनाम्बरादिना नानविधेन परिमलद्रव्यनिकरेगा मनो-भवमर्चयन्ती रेमे.

पृहत्-संहिता में चीन का नाम आया है. शक्ति सङ्गम सन्द्र में चीन का यों वर्षन आया है---

मानसेशाञ्च दक्षियो मानसेशाव्य पूर्वे चीनदेश:

 महाचीनाचार तन्त्र एवं चीनाचार प्रयोग विधि नामक को पुस्तकों तन्त्र पर लिखी गई हैं.

कालीदास के व्यसर नाटक 'राकुन्तला' में चीनांशुक का

🧦 श्रीनांश्वकामिय केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य ।

ولفت وسارًا معن هم چینی الهولیکوس کا آلیکه پاتے هیں۔۔ بوآمهی کهنروشیئم آنگ لیبن بنگ لیبن چین لیبن ، چرنگو لهین . . . چتوششقی سینیاں کتمان ترن سیکچیوس سی ؟

"کتھا سرت ساگر" میں 'چین پشتم' کا ررتن آیا ہے جسے سوھاگی ٹاری آیا ہے اللہ ہیں ا سوھاگی ٹاری آپنے للہ پر کمم بلدو کے روپ میں لگانی ہیں ا میم چندر کے 'آبھی دھان چنتامنی' میں آسے ہی 'سندورم' بھی کیا گھا ہے۔

سندورناكجي فاكر شرفكار بهوشنم چين يشقم .

آج بھی چینا سندور عورتوں کے بیچے بہت پرچلت ہے۔

پالی تکست سرسائیڈی سے پرکاشت۔ 'اارشالدی' میں البکتها

یا دھم سنگنی کے بھاشیہ میں ھم' یاساں واسین دسا بھاٹا چینی

پٹر آدسی کا ورنس پاتے ھیں ، سوترنیات میں ایک شبد آیا ہے

چینیک' جس کا ارتہ ٹیکا میں ہے۔ ایک پرکار کا یان ، وشنو

پران میں بھی جیوں کا تیوں ایساھی پریوک ھوا

ھے اپنے 'ابھی دھان چنتامنی' میں ھیم چندر بھی' چنیک'

کویان ھی بتاتا ہے ، ھیمادری کی 'چتورنگ چنتامنی' میں

کویان ھی بتاتا ہے ، ھیمادری کی 'چتورنگ چنتامنی' میں

کویان ھی بتاتا ہے ، شاید شیت کال میں زوروں سے پائی

ہوائے والی 'مونگ پھلی' کا مول استہان چین ھی ھے ، چونکہ

دوسرے شیدوں میں 'چنیا بادام' ھمارے بالکوں کو بہت دوسرے شیدوں میں 'چنیا بادام' ھمارے بالکوں کو بہت

'راج نمینٹ' میں چین کی وبھی وستروں کا ورنس آیا ہے۔ --چھی کھور' چین کرکٹی' چینج' چھن بنگ آئی .

چین کرپور کا ورثن یهاؤ پرکاش میں بھی آیا گے ، 'شوشرت سنتہا' مین 'چین پٹ' کا وشیش آلیکھ گے ، 'دش کمار چرت' میں چینی وستر کا بھی زرتن ہے۔۔۔

چینامبرادنانان بیدهین پری الدردیهنکرین منوبهو مترج انیتی ربعه .

برھت سلہتا میں چیں کا نام آیا ہے۔ شکتی سلکم تلتر - میں چھن کا یوں ورنن آیا ہے۔۔

مهاچینا چار تنتر ایوم چیناچار پریوک ودهی نامک دو پستمیں تنتر پر کمی گئی هیں .

کالیداس کے امر ناٹک 'شکنتھ' میں چینان شو<sup>ک یا</sup> ارلیکو ہے۔۔

چهنان شکامیو کلیوه پرتی واتن نیبه مانسهه .

'इसार सम्मव' में मी---

चीनांशुकै : कल्पित केतुमालम्

शैसा वर्णन आया है. 'मालविकाग्नामण' में भी चीना शुक्त राज्य का करलेख है. 'महाभारत में ऐसा वर्णन है कि चीन देश से 5000 वर्ष पहले युधिकिर के राज्य-तिलक के समय रत्नावि होतें की संख्या में वपहार-स्वरूप आये थे.

बीन और भारत दोनों राष्ट्रों के विद्वान मनीवी एवं बाहु पुरुष प्रेम जैसे अमोष अस से अचीत काल में सांस्कृतिक-एकता क्रायम कर गये.

इजारों वर्षों के बाद आज फिर दोनों राष्ट्रों को एक दूसरे की सहानुभूति मिलने लगी है. सन् 1924 में गु० देव रवीन्द्र नाथ की चीन-याणा ने सांस्कृतिक एकता की इस नई पुस्तक में एक और अनुटा अध्याय जोड़ दिया हैं. मो॰ तान युन शान ने विश्व कवि के विषय में लिखा था— ''चीन पर गुरु देव की यात्रा का जो प्रभाव पढ़ा है वह असीत में साधु स'तों का भी नहीं पढ़ा. चीनी जनता प्रायः इन्हें और महात्मा जी को आधुनिक बुद्ध मानती है."

चीन और भारत जैसे दो देशों के बीच सांस्कृतिक एकता का गठ-बन्धन मजबूत से मजबूत हो.

जो अपने अच्छे कमों के बदले में धन्यवाद, बाहबाही या किसी फल की बाह करता है वह बहुत ही अमागा है; क्योंकि वह बहुमूल्य सत्कर्मी को थोड़ी क्रीसत पर बेच डालता है.

taga ay bara <del>yan d</del>aybar barbay in ba

وأرها المنها والربط وتأنجه فستمرأ والأسهامة الهوار المتألية

--संस वार्या

كبار سيبهو مين يهي...

چينان شوكيهه كليت كتيو بهالم

جیسا ورتی آیا ہے "مالویکاگن متر" میں بھی چیلاشک شبد کا الیکھ ہے مہابھارت میں ایسا ورثن ہے کہ چین دیش سے پانچ موار ورش پہلے یودھمٹر کے راجیہ تلک کے سے رتنادی تھیروں کی ساتھیا میں اوپہار سوروپ آئے تھے ،

چین اور بھارت دونوں راشٹر کے ودوان منیشی ایوم ساتھ پررھی پریمجیے امرکھ اسٹر سے اتیت کال میں سانسکرتک قابم کرگئے۔

حواروں ورشوں کے یعد آج پھر دونوں راشاروں کو ایک دوسوے کی سہانوبھوتی ملنے لکی ہے۔ سن 1924 میں گرودیو رویلدر ثانه کی چین باترا نے سانسکرتک ایکنا کی اِس نائی پستک میں ایک اور اثرائها ادعیائے جور دیا ہے۔ پرفیسرو تان بین شان نے وشو کوی کے وشے میں لکھا تھا۔"چھن پر گرودیو کی یاترا کا جو پربھائی پرا ہے وہ انیت میں سادھو سنتوں کا بھی نہیں پڑا ، چینی جفتا پرایہ انبھی اور مہانماچی کو ادعونک بدھ مائٹی ہے''

ُون اور بھارت جیسے دو دیشوں کے پیچ سالسکرتک ایکتا کا تنے بندھی مفہوط سے مفہوط ھو .

جو اپنے اچھ کرمیں کے بدلے میں دھنیہ رادہ واہ راھی یا کسی پہل کی چاہ نرتا ہے وہ بہت ھی ابھاگا ہے؛ کیونکہ وہ بہومولیہ ست کو تھوڑی تھمت یر بیچے ڈالتا ہے ۔

حسسنت رائي

Selver and



# प्तार्निंग फ्रार दी पीपिल बाई दी पीपिल

मेसफ— धाषार्य जे. सी. कुमारप्पा, प्रकाशक—बोरा एन्ड को, 3 राजन्ड बिस्डिंग, मुंबई—2; पन्ने—15ि; दाम—तीन उपये.

आजकत हमारे देश में सरकारी हलको में द्वानिंग या बोजनाबन्दी का नाम बहुत लिया जाता है. आगामी मार्च में चालू पंच-साला-योजना खत्म होकर दूसरी हुक होने जा रही है, जिस पर इन दिनों चर्चा भी चल रही है. पर इमारे योजनाकारों और उनके हमददों को एक बात की बड़ी शिकायत जनता से हैं—कि वह योजना में सरकार को सहयोग नहीं देती. यही बजह है कि हिन्दुस्तान में योजना जिस तेजी के साथ चलती है, उससे खयादा तेजी के साथ देश में नेरोजगारी बढ़ती है.

सवाल बठता है कि इसकी वजह क्या है, क्या बात है कि हिन्दुस्तान की जनता अपनी ही सरकार का साथ नहीं देती ? इस के जबाब में हमारे शासक लोग हाथ मल कर रह जाते हैं. लेकिन इसका जबाब सख्या और साफ है. सब मानते हैं कि हिन्दुस्तान की अस्सी कीसदी आवादी देहातों में रहती है और तीन-श्रीथाई लोग खेती के सहारे किसी तरह जीते हैं. इस देहाती जनता का आमद्-रक्त का आधार-या इसकी सवारी कहिये-बैलागाडी है. इसरे राज्यों में, बैलगाड़ी हिन्दुस्तान की राष्ट्रीय सवारी है. क्षेकिन कैसे अचरज की बात है कि बैलगाड़ी में बैठ कर कोइ भी हिन्दुस्तानी अपने ही राष्ट्रपति से मिलने नहीं जा सकता ! विलायत की बनी टैक्सी या मोटर-कार में जा सकता है, लेकिन हितुस्तान की ही बनी बैलगाड़ीमें नहीं !! वैक्रगाड़ी वो दूर, वांगे तक की इजाजत नहीं है. हमारी राजधानी, नई दिल्ली की सदकों पर बैलगादी चलाने की समानियत ही है.

"बैलगाड़ी ले जाना मना है"—इसका कड़वा अनुभव आवार्ष जे० सी० इमारप्पा को हुआ, जिनकी गिनती देश के सच्चे और तपे हुए सेवकों में होती है और जिनका कींक्स इसीनी और त्याग की एक मरााल है. इमारप्पा जी

# پلانتک فار دی پیپل بائی دی پیپل

لیکیک آچاریه ج. سی. کناریها؛ پرکلشک ، ورا اینت کو 8 راوند بادنگ مسئی-2؛ پننے 155 دام نیس رویا .

آجئل همارے دیھی میں سوکاری جلتوں میں پائنگ یا بہونا بلدی کا نام بہت لیا جاتا ہے۔ آگامی مارچ میں چالو پنج ساله یوجنا ختم هو کر دوسری شروع هوئے جارهی هے جس پر اِن دنوں چرچا بھی چل رهی هے ، پر همارے یوجنا کروں اُور اُن کے همدردوں کو ایک بات کی بڑی شکایت جنتا سے ہے۔۔۔۔که وہ یوجنا میں سرکار کو سہنوگ نہیں دیتی ، یہی وجہہ هے که هندستان میں یوجنا جس تیزی کے ساته چلتی هے اُس سے زیادہ تیزی کے ساته چلتی هے اُس سے زیادہ تیزی کے ساته جیس میں یہروزگاری بڑھتی ہے ۔

سوال اُتهتا هے که اِس کی وجهة کیا هے' کیا بات هے که هندستان کی جنتا اپنی هی سرکار کا ساتھ نهیں دیتی او اِس کے جواب میں همارے شاسک اوک هاتھ مل کر را جاتے هیں ، لیکن اِس کا جواب سچا اور صاف هے ، سب مائتے هیں که هندستان کی اُسی نیصدی آبادی دیہاتوں میں وهتی هاور تهن چوتیائی لوگ کهیئی کے سہارے کسی طرح جیتے هیں ، اوس دیہاتی جنتا کا آمدونت کا آدھار—یا اِس کی سواری کی بیاری میں ' بیل گاری هندستان کی واشتریت سواری هے ، دوسرے شیدوں میں' بیل گاری هندستان کی راشتریت سواری هے ، دوسرے شیدوں میں' بیل گاری هندستان کی واشت کی بنی ایسے اچرے کی بات هے که بیل کاری میں بیٹھ کو کوئی بھی هندستانی اینے هی راشتر پتی سے ملئے نہیں جا سکتا ہے' لیکن هندستان کی هی بنی بیل گاری میں نہیں ا! مسکتا ہے' لیکن هندستان کی هی بنی بیل گاری میں نہیں ا! میل گاری میں نہیں ا! میل گاری میں نہیں ا! میل گاری چانے کی ممانیت واجدهاتی' نثی دلی کی سرکوں پر بیل گاری چلانے کی ممانیت واجدهاتی' نثی دلی کی سرکوں پر بیل گاری چلانے کی ممانیت هی هی هی ۔

"بیل لاری لیجانا منع هـ"\_اِس لا کورا انوبهو آچاریه چه . سی . کاریبار کو هوا جنعی گنتی دیش کے سچے اور تیا جنون کا جنون کا جنون توباتی اور تیاک کی ایک مشمل هـ . کاریبا جی

Market Commence of the Commence of

देश के सब से बढ़े गांधीबादी व्यर्थशासी माने जाते हैं. बहिक कहना सो यह चाहिये कि गांधीबादी व्यर्थनीति के प्रथम शासकार ही व्याप हैं. व्यर्थशास्त्र सन्दर्भी व्यापके कई प्रतिक प्रथ हैं. इस विषय पर व्यापके लेख तो पत्रों में प्राय: निकतते ही रहते हैं, बिशेषकर व्यापके व्यपने एक होटे से मासिक "माम बद्योग पत्रिका" में.

इस पुस्तक में आचार्य के चालीस लेखों का संग्रह है जो 1948 से 1953 के बीच प्रकाशित हुए थे. पुस्तक को इ: मागों में बांटा गया है— पंच साला योजना, सरकार के काम, खेती और जमीन, मजदूरी और उत्पादन, भीचोगिक नीति, और उपसंहार. लेख पुराने होते हुए भी सामाजिक और महत्वपूर्ण हैं. इस समय तो और भी जयादा, जब योजना पर देश में विचार चल रहा है. हां, जमीन सम्बन्धी बाले हिस्से से कुछ लेख निकाले जा सकते ये क्योंकि अब भारत अनाज के लिये विदेशों का मोहताज नहीं है.

आचार्य कुमारपाजी के कुछ लेख—जैसे योजना पर कुछ विचार, क्रान्ति के आसार, बैलगाई। मना है; आजादी की अर्थनीति, मेहनत करो, बेकारी—एक रोग और कम्यूनिटी प्रोजेक्ट—तो बहुत सुन्दर और स्थायी साहित्य के अंग हैं. 'मेहनत करो' बाले लेख का एक हिस्सा दिये बरोर हमसे नहीं रहा जाता. आचार्य जी कहते हैं.—

"दस प्रंद्रइ साल पहले जब ट्राबनकोर राज्य में सर सी० पी० रामास्वामी अध्यर दीवान थे, तो उन्हों ने धान कूटने की मिलें बन्द करा दी थीं और वहां के हजारों लोग हाथ से ढेकी चला चला कर रोजी कमाते थे और सारा ट्राबनकोर पुष्टिकारक चाबल खाता था. लेकिन अब जब ट्राबनकोर भारत में शामिल हुआ तो यह मिलों पर पाबन्दी हट रही है. क्या इसी को जयादा इत्यादन कहेंगे या जो है उसको भी बरबाद करना कहेंगे ? जब सरकार ऐसी नीति बरतती है तो किसे मुँह से वह लोगों से कह सकती है कि जयादा पैदा करो."

#### इसके बाद आचार्य जी कहते हैं:-

"रहन सहन का द्रजी ऊँवा उठाने के माने क्या हैं ? फर्श पर बैठने वालों को कुर्सी और मेज दे देना ? इस दृष्टि से अमरीका का रहन-सहन संसार में सबसे ऊँवा है, लेकिन क्या बहां के लोग सुखी और संसुष्ट हैं ? उन पर तीसरी लड़ाई का ढर सवार है. केवल मौतिक सम्पत्ति से सच्चा सुख और सन्तोष नहीं पैदा हो सकता है. जरूरत इस बात की है कि इन्सान की राखस्यित का द्रजी ऊँचा उठे और उसका विकास हो. यह चीज मिलों में उत्पादन करने से नहीं पैदा हो सकती. क्या دیکس کے سب سے بڑے کاندھی وادی ارتو شاستری مالے جائے ۔

میں ، بلکہ کہنا تو یہ چاہئے کی کاندھی وادی ارتو نیٹی کے پرتوم شاسترکار ھی آپ کے کئی پرسدھ گرنتو ھیں ، ارتو شاستر سبندھی آپ کے کئی پرسدھ گرنتو ھیں ، اِس رشئے پر آپ کے لیکو تو یتروں میں پرایہ نکلتے ھی رہتے ھیں وشیش کر آپ کے اپنے ایک چھوٹے سے ماسک (اگرام آدیوگ پتریکا) میں ،

اس پستک میں آچاریہ کے چالیس الهموں کا سنکرہ ہے جو 1948 سے 1953 کے بیچ پرکاشت ہوئے تھے ، پستک کو جو پہاگوں میں بائٹا گیا ہے۔ پنچ سالہ یوجنا' سرکار کے کام' کھنٹی اور زمین' مزدوری اور آتیادن' آودیوکک نیٹی' اور آپسنگهار ، لیکھ پرائے ہوئے ہوئے بھی ساماجک اور مہتو پرون ہیں ، اس سمئے تو اور بھی زیادہ' جب یوجنا پر دیک میں وچار چل رہا ہے ، ہمان ومین سمبندھی والے حصے سے کچھ لیکھ نکالے جا سکتے تھے کیونکہ اب بھارت اناج کے لئے ودیشوں کا محتاج نہیں ہے ۔

آچاریه کماریها جی کے کچھ لیکھ—جھسے یوجنا پر کچھ وچارا کوائٹی کے آثارا بیل ٹاری منع ہے آزادی کی ارته نیتی محمنت کروا ہے کاری—ایک روگ اور کمیونٹی پروجیکٹ—تو یہت سندر اور استھائی ساھتھ کے انگ ھیں ۔ 'محمنت کروا والے لیکھ کا ایک حصه دیئے بنور ھم سے نہیں رہا جاتا ۔ آچاریہ جی کہتے ھیں:—

الانس پندرہ سال پہلے جب قراونعور راجهہ میں سر سی۔ پی۔ راماسوامی اثیر دیوان تھے' تو آنہوں نے دھان کوقنے کی ملیں بند کرادی تهیں اور وھاں کے هزاروں لوگ ھاتھ سے تھیعی خلا چلا کو روزی کماتے تھے اور سارا قراونعور پشٹیکارک چاول کھاتا تھا، لیکن اب جب قراونعور بھارت میں شامل ھوا تو یہ ملوں پر پابندی ھٹ رھی ہے، کیا اِسی کو زیادہ اُتھادی کھفتے یا چو ہے۔اُس کو بھی برباد کرنا کہیں گے ؟ جب سرکار ایسی تیتی برتتی ہے تو کس منہ سے وہ لوگوں سے کہہ سکتی ہے که زیادہ پیدا کرو ،''

#### اِس کے بعد آچاریہ جی کہتے میں:-

"رمن سہن کا درجه أونجا أنهائے کے معنے کیا هیں ؟ فرش پر بیتھنے والی کو کرسی اور میز دے دینا ؟ اِس درشتی سے آمریکه کا رهن سہن سنسار میں سب سے آونجا هے ایکن کیا رهاں کے لوگ سکھی اور سنتوشٹ هیں ؟ اُن پر تیسری لڑائی کا تر سوار هے ، کیول بھوتک سمھتی سے سعیا سکھ اور سنتوش نہیں پیدا هو سکتا هے ، ضرورت اِس بات کی هے که اِنسان کی شخصیت کا درجه اُونجا آئے اور اُس کا وکاس هو ، یہ چھو ملوں میں آنیادی کرئے سے نہیں پیدا هو سکتی ، کیا ملوں میں آنیادی کرئے سے نہیں پیدا هو سکتی ، کیا

इसारी सरकार उस तरह के कार्यक्रम को बढ़ावा देती है जिससे इन्सान की शखसियत के विकास को मौका मिलें ? "बाचार्य कुमारप्या ने यह शब्द 1950 में कहे थे. मगर यह बाज भी उतने ही ताजे हैं. और अगर सरकार को योजना की सफलता की दरअसल कामना है तो इस सवाल का सही जवाब देकर उस पर अमल करना होगा.

इम इस पुस्तक के लिये प्रकाशक को वधाई देते हैं और बाहेंगे कि भारत की भाषाओं में भी इसके संस्करण निकलें, दिन्दी में तो जल्द से जल्द. अंग्रेजी जानने वाले और देश की रचना में दिलचस्पी लेने वाले हर सममदार आदमी के लिये यह किताब बहुत जरूरी और विचार प्रेरक है.

—दाद्

#### समाजवादी अर्थनीति की ओर

( अंग्रेजी और हिन्दी )

लेखक-श्री श्रीमन्तारायणः प्रकाशक-भारतीय राष्ट्रीय कांत्रेस, 7 जंतर-मंतर रोड, नई दिल्लीः पन्ने-184ः दाम-सवा रुपया.

#### समाजवादी ढंग की व्यवस्था

(अंगेजी और हिन्दी)

लेखक और प्रकाशक—बही ऊपर वाले! पर्ने—12; वाम—नहीं दिये.

जनवरी 1955 में कांग्रेस ने अपनी आवाड़ी अधिवेशन के मौक्रे पर यह प्रस्ताब पास किया कि उसका मक्रसद देश के अन्दर सोशलिस्टिक पैटर्न आक सोसाइटी ( समाज का समाजवादिक ढांचा ) कायम करना है. तबसे कांमेस की सभामों में भौर कांमेंसजनों या उनके नेताभों के व्याख्यानों या लेखों में "समाजवादिक ढांचे" की नाम-उपासना चल पदी है. जहां पहले "वैलक्षेयर स्टेट" (कल्याग्एकारी राज्य) का नाम आदर्श के तौर पर लिया जाता था, वहां उसे छोड़ कर अब समाजवादिक ढांचे की तूती बोल रही है. चाहे कोई मिनिस्टर कहीं दूध की डेयरी या बिस्कुट का कारखाना स्रोलता हो, चाहे अमरीका से आने वाले वनस्पति घी की दुकान का उद्घाटन करता हा, चाहे पढ़े-लिखे बेकार पैदा करने वाले कारखाने यानी किसी स्कूल या कालिज में की आधार शिला रखता हो, चाहे रोगियों को प्रोत्साहन देने बाले किसी अस्पताल की इमारत में एक नया बार्ड खोलता हो-चाहे कोई कुछ ही करे पर कहता यही है कि उसकी इस राय से गुरुक 'समाजवादिक ढांचे' की तरफ बढ़ रहा है. लेकिन अब नया मंत्र बोला जाता है तो उसके मुताबिक ھناری سرگر آس طوح کے کاریکوم کو بوعاوا دیتی ہے جس سے السلی کی شخصیت کے وکلس کو موقع ملے ?'' آچاریہ کارپیا لے بھی انتے ھی تاؤے بھی انتے ھی تاؤے ہیں۔ اور اگر سرکار کو یوجنا کی سپھلتا کی دراصل کامنا ہے تو ایس سوال کا محیم جواب دیکر اس پر عمل کونا ھوگا۔

هم اِس پستک کے اگه پرکاشک کو بدھائی دیتے هیں اور چانھنگے که بھارت کی بھاگاؤں میں بھی اِس کے سلسکوں نکلیں' ھندی میں تو جلد سے جلد ، انگریزی جانئے والے اور دیک کی رچنا میں دلچسیی لینے والے هر سنجودار آدمی کے لیے کتاب بہت ضروری اور وچار پریرک ہے .

سدانو

# سماج وادى ارته نيتى كى أور

( انگریزی اور هندی)

لیکهک سفری شریس نارایی؛ پرکاشک سهارتیه راشتریه کانگریس، 7 جنتر منتر روت نئی دلی؛ پننے 134 دام سوا رویه .

# سماج وادی ترهنگ کی ویوستها (انکریزی ار هندی)

لیمیک اور پرکاشک—وهی أوپر والے؛ پننے—12؛ دام — نہیں دیئے .

جنرری 1955 میں کاتکریس نے اپنی آوازی ادھیویشن کے موقع پر یه پرستاؤ پاس کیا که اُس کا مقصد دیش کے الدر سرشلستک بیترن أف سرسانتی ( سام کا سماجرادک تھائچہ ) تاہم کرنا ہے ۔ تب سے کانکریس کی شبھاؤں میں اور کانکریس جنبل یا اُن کے ریاکھیانوں یا لیکھوں میں ''ساجرادک تمانچے" کی نام ایاسنا چل پڑی ہے ۔ جہاں پہلے "دیلنیئر اِسْتُهِتْ، ( کلیانکاری راجیه ) کا نام آدرش کے طرر پر لیا جاتا تها وهال أسے چهرزكر اب ساجوادك دهانتيے كى طوطى بول رهی هے ، چاهے کوئی منستر کہیں دودہ کی ڈیڈری یا ہسکٹ کا كارنمانه كهولتا هوا چاه امريكه سے آنے والے بنسوتي كي كي دوكلي كا أدكهائي كرتا هوا جاه بره لكه يكار بهدا كرني واله كارخالے يعنى كسى إستول يا كالبے ميں كى أدهار شلا ركيتا هو چاھے روگیرں کو پروتساہن دینے والے کسی اسپتال کی عمارت میں ایک نیا وارد کهولتا هو-چاهے کوئی کچه هی کرے پر کهتا یهی هے که اُس کی اِسرائے سے ملک 'ساجوادک تھانچے' کی طرف بڑھ رہا ہے ، لیکن جب نیا ملتر ہولا جاتا ہے تو اُس کے مطابق

इन्द्र भी रक्षमा पहला है और पुराने मूह्यों और मान्यताओं को डोक्कर नये मूह्यों व मान्यताओं पर धमल करना होता है. फिर यह नया धमल गुरुक की तरह अपनी ग्रुगंथ चारों बोर फैलावा है जिससे हवा में फर्क पढ़ता है और साधारण जनता का मानस बदलता है.

खर्शी की बात है कि इस नये मंत्र का शंख कांत्रेस संगठन के प्रधान-मंत्री श्री श्रीमनारायण अपने 'एकोनासिक रिव्यू' ( या 'मार्थिक समीक्षा' ) नाम के पाश्चिक पत्र से सगातार बजा रहे हैं. यह दोनों कितावें धनके फ़टकर लेखों का संप्रद हैं. पहली पुस्तक में चौतीस लेख हैं और दसरी में तीन. क्योंकि यह लेख एक पाक्षिक के लिये अखबारी समाचारों के आधार पर लिखे गये. इसलिये उनमें अकसर बातें दृहराई हुई मिलती हैं. कहीं कहीं तो एक ही विषय पर तीन लेख हैं - जैसे 'भूदान और आर्थिक क्रान्ति', 'भूमिद यक् का अर्थशास्त्र', और 'भूमिदान का अर्थ शासा, इनकी सहज एक में पिरोया जा सकता था. इसी तरह 'भारत और चीन' पर के लेख हैं. दूसरे, फ़टकर लेख लिखते समय लेखक के सामने वह विषय ही सबसे खास मालम होता है. लेकिन किताब के अन्दर एक सिलसिला रहता है और जिस चीज पर जितना जोर दिया जाना चाहिये उतना दिया जाता है. अब इस किताब में पन्ना 71 पर (अंग्रेजी) बाद बाले लेख में कहा गया है कि सरकार को चाहिये कि बाद रोकने के लिये युद्ध के पैमाने पर कोशिश करे. साथ ही साथ, पन्ना 48 पर नेकारी के बारे में लिखा है कि वह हमारा अञ्चल नम्बर का दुश्मन है और एसका भौरन सामना कियां जाये. हमारी अरज है कि बगले संस्करण में इन लेखों को लेखक एक बार देख जाये और ठीक से इनका ताल बिठा दें.

पर जिन जिन विषयों पर श्रीमन जी ने चिन्तन किया है वह सभी महत्व के हैं, जैसे प्रामोद्योग, शिक्षा, भूमिसुधार, बाढ़, शराब-बन्दी, बेकारी, शासन-व्यवस्था, सरकारी
योजनायें, श्रदालती न्याय, श्रादि. उनके सुमावों में दुलिया
के दर्द की तरफ हिन्द है और देश-भक्ति की लगन है. क्या
ही बच्छा हो कि हमारे सार्वजनिक कार्यकर्ता और विशेष
कर कांग्रेसजन इन प्रश्नों की तरफ ईमानदारी से घ्यान दें
और उसके हल दुंउने की सच्ची कोशिश करें. उससे जहां
देश का भला होगा, वहां कार्यकर्ताओं की लोक-प्रियता
और सेवा-शिक भी बढ़ेगी. इस हिन्द से हम श्रीमन जी की
रचनाओं के व्यापक प्रचार और मनन की सिफारिश
करते हैं.

قدم بھی رکھنا پرتا ہے اور پرانے مولیوں اور مانیتاؤں کو جھوڑکر نئے مولیوں و مانیتاؤں پر عمل کرنا ہوتا ہے . پور یہ نیا عمل مشک کی طرح اپنی سوگندہ چاروں اُور پھیلانا ہے جس سے ہوا میں نرق پرتا ہے اور سادھارں جنتا کا مانس بدلتا ہے .

خبشى كي بات ه كه إس نئه منتر كا شنكه كالكريس سلکتھی کے پردھاں منتری شری شریمی ناراین اپنے 'اِکنامک ربریو' ( یا 'آرتهک سیکشا' ) نام کے یاکشک یتر سے لگاتار بحیا رہے میں . یه دونس کتابیں أن كے بهتكر ليكهبى كا سنكرة هيں. يهلي يستک مين چونتيس البه هين أور دوسري مين تين ، کیدنکہ یہ لیکو ایک یاکشک کے لئے اخباری ساچاروں کے آدھار ير لعب كثيرًا إس لئير أن مين أكثر باتين دوهرائي هرئي ملتي هیں . کہیں کہیں تو أیک هی وشئے پر تین لیکھ هیں---حيسم "بهيدان اور آرتهك كراثاتي" "بهوس دان يكيه كا ارته شاستر" الهر بهوم دان کا ارته شاسترا این کو سهیم آیک میں پرویا جاسکتا تها. اِسی طرح ابهارت اور چین پرکے لیکھ میں ، دوسرے پہٹکر لیکو لکھتے سمے لیکھک کے سامنے وہ وشئے ھی سب سے خاص معلم هوتا هے . ليكن كتاب كے أندر أيك سلسله رهتا هے أور جس جهر ير جتنا زور ديا جانا چاهئي أتنا ديا جانا هـ ، أب إس کتاب میں پننا 71 پر ( انگریزی ) المارھ والے لیکھ میں کہا گیا ھے که سرکار کو چاھٹے که باڑھ روکنے کے لئے بدھ کے بیمانے پر کشھی کرے ، ساتھ ھی ساتھ' یننا 48 پر بیکاری کے بارے میں لتها في كتم وه همارا أول تمين كا دشمين هي أور أس كا فوراً سامنا کیا جائے . هماری عرض هے که اگلے سنسکرن میں اِن لیکھوں کو لیعهک ایکبار دیع جائیں ارر ٹھیک سے اُن کا تال بٹھادیں ۔

پر جن جن رشهر پر شریمن جی نے چنتن کیا ہے وہ سبھی مہتو کے هیں جیسے کرامردبوگ شکشا بھومی سدهار المرد شراب بندی بیکاری شاس ویوستها سرکاری یوجنائیں عدالتی نیائے آدی ، اُن کے سجھاؤں میں دکھیا کے درد کی طرف درشتی ہے اور دیھی بھکتی کی لکن ہے ، کیا ھی اچھا ہو کہ همارے ساروجنک کاریه کرتا اور وشیشکو کانگریس جن اِن ورشنبی کی طرف اِیمانداری میں دھیان دیں اور اُن کے حل تھونتھنے کی سچی کوشش کریں ۔ اُس سے جہاں دیھی کا بھا ہوگا وہاں کی سچی کوشش کریں ۔ اُس سے جہاں دیھی برهیکی ، اِس کریمکرتاؤں کی لوک پرئیتا اور سیوا شکتی بھی برهیکی ، اِس درشتی سے هم شریمن جی کی رچناؤں کے ویاپک پرچار اور ملن کی سنارھی کرتے ھیں ،

-वावू ,जी-

# श्रहिंसक समाजवाद की ओर

लेखक—महात्मा गांधी; सम्पादक—श्री भारतन कुमारप्पा; हिन्दी अनुवादक—श्री राम नरायन चौधरी; प्रकाशक—नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद; पहली बार, सितन्बर 1955; पन्ने—204; दाम—दो रुपये.

महातमा गांधी के साहित्य की छान बीन कर, उसको विषयवार छंटवाकर, एक के बाद एक छच्छी पुस्तक नवजीवन प्रकाशन मन्दिर की तरफ से समाज को मिलती जा रही है. इनके सम्पादन का काम प्रसिद्ध गांधीवादी लेखक श्री भारतन कुमारप्पा कर रहे हैं. इस किताब में समाजवाद सम्बन्धी बादू के लेखों का उत्तम संग्रह है. छंग्नेजी से हिन्दी छानुवाद का काम श्री राम नरायन चौधरी ने किया है जो इस कला में माहर हैं.

इस जोरदार किताब के ग्यारह भाग हैं—ध्येय, नैतिक जाबश्यकतायें, समान वितरण, ख्योग-धन्धे, न्यूनतम मजदूरी, पूंजी धीर अम, हड़तालें, चाय के मजदूर धीर किसान, ट्रस्टी के रूप में पूंजीपति धीर जमींदार, रारीब लोग धीर—आखिरी है—सान्यवाद अंत में बापू के सरनाम सहयोगी श्री प्यारेलाल जी का एक छोटा-सा लेख भी है—'गांधी जी का सान्यवाद.' इसके बाद आठ पन्नों में किताब की सूची है जिससे वह बहुत कारामद और क्रीमती बन गई है.

श्रवंशास्त्र सम्बन्धी बापू के लेखों का यह संग्रह बहुत सामियक और सुन्दर है. अर्थ-शास्त्र के बीसियों पहलू पर बापू के विचार इसमें दिये गये हैं. समाजवादी हांचा कायम करना हो या साम्यवादी, उसके लिये निज के जीवन में बदल करने की जरूरत है. हम अपनी जगह अपने अपने पुराने ढरों पर चलते रहें और आशा यह करें कि देश का ढांचा समाजवादी हो जायेगा, तो वह बबूल बोकर आम खाने के जैसी आशा होगी.

हम इस किताब के ज्यादा से ज्यादा प्रचार, काध्ययन, चिंतन और मनन की अपील करते हैं. अर्थशास और राज-काज में दिलचरपी रखने वाले हर विद्यार्थी, शिक्षक, कार्यकर्ता. भाई या बहन के लिये ता इसे लाजभी सममा जाना चाहिये. फिर, इसके पढ़ने से मन को भी शान्ति मिलती है, दिमारा के कोनों को साफ करने में मदद मिलती है और जिन्दगी के लिये रोशनी मिलती है. आखिर में इस किताब के कर में ज्यादा कहना सूरज को दीपक दिखाने जैसा है.

# التنسف ساجوان كيأور

المكسمهاتما الدهى؛ سهادكسشرى بهارتن كداريها؛ هائي البوادكسسرى رام نراين چردهرى؛ پركاشكسنوجيون پركاشك مندر، احددآباد؛ پهلى بار، سندر 1955؛ پننے 204-دام در روباء .

مهاتما کاندهی کے ساعتیہ کی چہاں بھن کر' اُس کو رشہوار چھٹٹواکر' ایک کے بعد ایک اُچھی پستک توجیوں پرکاشن مندر کی طرف سے سماج کو ملتی جارهی ہے ، اِن کے سمیادن کا کام پرسدھ کاندهی وادبی لیکھک شری بھارتن کماریپا کررہے ھیں ، اِس کتاب میں سماجواد سمبندھی باپو کے لیکھوں کا اُتم سنکرہ ہے اِنکریزی سے هندی انبواد کا کام شری رام نراین چودھری نے کیا ہے جو اِس کا میں ماھر ھیں ،

اِس زوردار کتاب کے گیارہ بھاک میں سدھیٹے' نیتک آوشیکتائیں' سمان وترن' آدیوگ دھندھ' نیونتم مودوری' پولنجی اور شرم' هرتائیں' چائے کے مودور اور کسان' ڈرسٹی کے روپ میں پوننجی پتی اور زمیندار' غریب لوگ اور سآخری ہے سسلمیعواد ، انت میں باپو کے سرنام مہیوگی شری پیارے لل جی کا ایک چہوٹا سا لیکھ بھی ہے۔ اگاندھیجی کا سامیعوادی' اِس کے بعد آئم پننوں میں کتاب کی سوچی ہے جس سے وہ بہت کارآمد اور قیمتی بن گئی ہے ۔

ارتھ شاستر سمبندھی باپو کے لیکھوں کا یہ سنکرہ بہت سامئک اور سندر ھے، ارتھ شاستر کے بیسھوں پہلو پر باپو کے وچار اِس میں دیئے گئے ھیں ، سماے وادی تھانچہ تایم کرنا ھو یا سامیہ وادی اُس کے لئے نیج کے جیوں میں ، بدل کرنے کی ضورورت ھے ، ھم اپنی جکہ اپنے اپنے پرائے تھووں پر چلتے رھیں اور آھا یہ کریں ، تہ دیھی کا تھانچہ سماے وادی ھوجائیگا اور آھا یہ کریں ، تم دیھی کا تھانچہ سماے وادی ھوجائیگا تو وہ ببول ہوکر آم کھائے کے جیسی آشا ھوگی ،

ھم اِس کتاب کے زیادہ سے زیادہ پرچار' اُددھیں' چنتی اور منی کی اپیل کرتے ھیں ، اُرتو شاستر اور راج کاج میں دلچسپی رکھنے والے ھر ودیارتھی' شکشک' کاری کرتا' بھائی یا بہیں کے لئے تو اِسے لازمی سمجھا جانا چاھئے ، پھر' اِس کے پرھنے سے میں کو بھی شانتی ملتی ھے' دماغ کے کونیں کو صاف ولے میں مدد ملتی ھے اور زندگی کے لئے روشنی ملتی ھے ، اُخر میں اِس کتاب کے بارے میں زیادہ کہنا سورج کو دیوٹ دکھائے جیسا ھے ،

-वाद

--دادر

### कडावतों की कडानियां

क्षेत्रक महाबीर प्रसाद पोदार; प्रकाशक सन्ता साहित्व मंडल, नई विस्ली; पहली बार 1935; पन्ने -158 वाम-चो रुपये.

गोरखपुर के बारोग्य मंदिर के शी महावीर प्रसाद पोदार इसारे देश के पुराने और अनुभवी सेवकों में हैं. पर शायद जाने बाली पीढ़ियां 'हन्हें एक सिद्धस्त लेखक के रूप में याद किया करेंगी. पोशार जी कम लिखते हैं, बेकिन जो भी लिसते हैं अपने खरे, चौकस और पक्के अनुभव की बिना पर लिखते हैं. फिर भाषा भी ऐसे कमाल की होती है कि घर के अंदर दादी या नानी या सदक का रिक्शा वाला या मेहतर भी उसे समम जाये.

पोद्दार जी ने अब तक आरोग्य सम्बन्धी कई पुस्तकें लिखीं. बापू की 'बात्म कथा' का गुजराती से उल्था किया. लेकिन यह बात जाहिर कम है कि पाइार जी कहानियां भी खब लिख लेते हैं. कोई भी कहानीकार या उपन्यास लिखने बाला बनकी रोजी या जबान पर ईव्या किये बिना नहीं रह सकता.

इस किताब में पोहार जी की 115 कहानियां हैं, और हर कहानी का शीर्षक एक कहाबत है. इस तरह यह किताब कहावतों की कहानियां बन गई है. इन कहानियों से उन उन कहाबतों का रहस्य, उनकी खूबी और उनके इस्तेमाल का दंग सामने जा जाता है. हमें शुन्हा है कि जाजकल स्कूल-कालिज में पढ़ने वाले भाई बहनों को जो 'राष्ट्र भाषा' सिखाई जा रही है वह कुछ ऐसी बनावटी सी है कि उनको हमारे असली जीवन से जुदा करती जा रही है. बहुत से महाबरे और कहावतें ता यह पढ़े-लिखे सममते ही नहीं. हमने ऐसे भी शिक्षित देखे हैं जा ऐसा कहावतें तक नही सममते— बिल्ली के भाग्य से झीका दूटा ! मैंस के आगे बीन बजाना ! हनके मानसिक दारिद्रता के बारे में किसे दुख नहीं होगा.

इस्रलिये हम इस किताब का बहुत स्वागत करते हैं. क्या लेखक, क्या प्रकाशक-दोनों बधाइ के पात्र हैं. हम चाहेगे कि यह हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तों में-- उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य भारत, मध्यप्रदेश, विंध्यप्रदेश और राजस्थान में-कार्स में शामिल की जाये और हिन्दी के हर पुस्तकालय में इसे रखा जाये. साथ ही साथ प्रकाशक महोदय से बिनती करेंगे कि इसका एक सस्ता संस्करण-सस्ते से सस्ता संस्करग्र-निकाले' जिससे न केवल 'सस्ता साहित्य मंडल' का नाम सार्थक हो, बल्कि सत्साहित्य की यह देन इर शहराती के घर पहुंच जाये.

# کھاوتوں کی کھانیاں

ليكهك - مهاوير برشاد يودأر؛ يركاشك - سستا ساهتهه منتل' نثى دلى؛ يهلى بار 1955؛ ينايــــ158؛ دامـــدو ريئي .

گررکھیور کے آروگیہ مندر کے شرمی میاویر پوسان پودار همارہے دیش کے برائے اور انوبھوی سیوکس میں میں ، بر شاید آئے والی پیوههاں آنھیں ایک سرهست لیکھک کے روپ میں یادر کیا کرینگی . پودار جی کم لکھتے هیں الیکن جو بھی لکھتے هیں المنے کهرے چوکس آور یکے انوبھو کی بنا پر لکھتے ھیں . يعر بھاشا بھی ایسے نمال کی ہوتی ہے که گھر کے اندر دادمی یا نائی يا سرك كا رئشه والا يا مهتر بهي أسه سنجه جائه .

یردار جینے اب تک آروگیم سبندھی کئی پستمیں تعهیں۔ بايد كي "أَتْم كنها" كا كجوراتي سه ألتها كيا ، ليكن يه بات طاعر کم کے کہ پودار جی کہانیاں بھی خوب لکھ لیتے ہیں۔ کوئی بھی کہائے کار یا اینیاس لعبنہ والا اُن کی شیلی یا زبان پر آیرشیا کٹے بنا نہیں رہ سکتا ۔

اِس کتاب میں پردار جی کی 110 کہانیاں هیں' اور هر کہائی کا شیرشک ایک بہارت ہے ۔ اِس طرح یہ کتاب کہارترں کی کہانیاں بن گئی ہے ۔ ان کہانیوں سے ان اُن کہارتوں کا رھسینہ اُن کی خوبی اور اُن کے اِستعمال کا تھلک سامنے أَجَالًا هـ . هين شبه هـ كه أَجْكُل اسكول كالبِّح مين پوهنه واله بهائی بہنوں کو جو 'راشقر بهاشا' سکھائی جا رھی ہے وہ کچھ ایسے بنارثی سی ہے کہ اُن کو همارے اصلی جهرن سے جدا کرتی جاره هے بہت سے محاورے اور کہارتیں تو یہ پڑھ لکے سنجھتے ھی نہیں ۔ ھم نے ایسے بھی شکشت دیکھے ھیں جو ایسی کہارتیں نک نہیں سمجھتے۔۔۔بای کے بھاگیہ سے چھینکا ترثا آ بھینس کے آگے ہیں بجانا! اُن کے مانسک داردرتا کے بارے مين كسے دك نہيں هوكا .

إس نئه هم إس كتاب كا بهت سواكت كرته هيل . كيا لیکھک کیا درکاشک -- دونوں بدھائی کے پاتر ھیں ، ھم چاھینگے که یه هندی بهاشا بهاشی درانتون مین--اتردردیش بهارا مدعيه بهارت مدهيه پرديش وندهيه يرديش اور راجستهان میں۔کررس میں شامل کی جائے اور ہندی کے جر پستکالیہ ميں اِسے راہا جائے . ساتھ ھی ساتھ پرکاشک مہودیئے سے بلتی دینکے که اِس کا ایک سبتا سنسکرن سستے سے سبتا سنسکرن --نكاليس جس سے نه كيول <sup>ا</sup>سستا ساعتيه منذل<sup>4</sup> كا نام سارتیک هو' بلکه ست ساهتیه کی یه دین هو شهراتی کے گهر پهرنج جائه.



# इथियारों की पूजा

# هتیاروں کی بوجا

اخباروں میں ایک بڑی دکھد خبر آئی ہے' وہ یہ که دشہوے کے دن بھارت سرکار کے تغیلس ملستر نے هتیاروں کی باتاعدہ پہچا کی اور بہت بدھی پرروک دشہرے کا اُنسو منایا، ظاہر بات کے کہ اُس پوجن میں تغیلس منستر صاحب نے کسی بڑے پروهت کو بلاکر منتر پڑھوائے ھرنگے' هتیاروں پر تلک کیا ہوگا اور پھر اُن پندت جی کو چڑھاوا دیکر اُن کے آشیرواد لئے ھونگے ، هماری یاد میں آزاد بھارت میں شاید یہ پھلا موقع ہے جب هماری کی پوجا کسی منستر نے کی ھو ۔ یہ گھتنا ہے تو چھرتی سے' پر ھم اِسے بہت خطرناک اور تبلاکن سمجھتے ھیں ۔

ظاهر بات ہے که خاص دشہرے کے روزا کسی پلتت کی فكرائى مهى إس طرح بوجا كرنا همارے سيكولر أسليت ( دھرم ترپیمص راجیہ ) کے آدرشوں کے خلاف ہے. ڈاکٹر کیلامی ناته کاتجو نے متیار پوجا اِس دشہرے پر صرف اِسی وجه سے كى كيونكه ولا تانينس منسلار هيل ، پار سال جب ولا هوم منسلر تھے' یا اُس کے پہلے جب گررنو تھے تب تو وہ ایسا نہیں کرتے رہے مبلکے ، اور بار سال یا اِس کے پہلے جو سجن تغیدس منسلر رہے اُنہوں نے بھی اِس طرح ہوجا نہیں کی کیونکہ سرکار کی طرف سے یا ودھان کے اندر اِسطرے کا کوئی حکم یا پابندی نہیں ھے اس لئے اِس پوجا کے اندر سے سامپردایکتا کی گندھ مات مات تعلتی هے . إسى طرح اگر فائيلنس منستر ديوالي کے دین سرکاری بجٹ کے کاغذوں کو لیکر پوجا کرنے لگ جائیں ایمورکیشن منسار کسی موقع ور اینے اسلامی دهنگ سے کچھ جشن منانے لکیں عملت منستر أننے عیسائی طریقے سے کچے سارة كرين مر كوئى أين اين مدرم كي هنديا مين جو چاه پکانے لکے ۔ تب همارے آلیکوں دعوے غلط ثابت هونکے اور دنیا کے ساملے هم جُولی قرار دیئے جائینکے . یه طاهر فے که تعبی حیثیت سے مر ناکرک کو مذمی آزادی حاصل ہے . اِس حق کی هم قدر کرتے میں ، لیکن هر فاگرک کو اُس سے بھی زیادہ

अखनारों में एक बड़ी दुखद खबर आई है, वह यह कि दशहरे के दिन भारत सरकार के डिफेन्स मिनिस्टर ने हिम्मारों की वाकायदा पूजा की और बहुत विधि पूर्वक दशहरे का उत्सव मनाया. जाहिर वात है कि उस पूजन में डिफेन्स मिनिस्टर साहब ने किसी बढ़े पुरोहित को खुला कर मन्त्र पढ़वाये होंगे, हथियारों पर तिलक किया हागा और फिर उन पंडित जी को चढ़ावा देकर उनके आशीर्वाद लिये होंगे. हमारी याद में आजाद भारत में शायद यह पहला मौका है जब हथियारों की पूजा किसी मिनिस्टर ने की हो. यह घटना है तो छोटी-सी पर, हम इसे बहुत खतरनाक और तबाहकन सममते हैं.

जाहिर बात है कि खास दशहरे के रोज, किसी पंडित की निगरानी में इस तरह पूजा करना हमारे सेकुलर स्टेट (वर्म निर्वेष राज्य) के बादशों के खिलाफ है. डॉक्टर कैलारानाथ काटजू ने हथियार-पूजा इस दशहरे पर सिर्फ इसी बजह से की क्योंकि वह डिफ़ैन्स मनिस्टर हैं. पा साल जब बह होम मिनिस्टर थे, या उसके पहले जब गवनर थे वय तो वह ऐसा नहीं करते रहे होंगे। और पारसाल या इसके पहले जो सञ्जन विकैन्स मिनिस्टर रहे उन्होंने भी इस तरह पूजा नहीं की, क्योंकि सरकार की तरफ से या विधान के अन्दर इस तरह का कोई हुक्स या पावन्दी नहीं है, इसलिये इस पूजा के अन्दर से साम्प्रदायिकता की गंध साफ साफ निकलती है. इसी तरह अगर फाइनैन्स मिनिस्टर दीवाली के दिन सरकारी वजट के काराजों को लेकर पूजा करने लग जायें, एजुकेशन मिनिस्टर किसी मौक्रे पर अपने इस्लामी हांग से कुछ जरन मनाने लगें, इस्थ मिनिस्टर जपने ईसाई वरीके से कुछ समारोह करें-हर कोई अपने अपने घरम की हंडिया में जो चाहे पकाने लगे-तब इमारे अनेकों दाबे रालत सावित होंगे और दुनिया के सामने इस मूठे क्ररार दिये जायेंगे. यह जाहिर है कि निजी हैसियत से हर नागरिक की मखहबी आजादी हासिल है. उस हक की.इस कर करते हैं. लेकिन हर नागरिक को वससे भी क्यावा

वासी क

( 5% )

جاربي 26

ہوں ذمعاری اور فرق هسست دھوس کو ایک عنی نگاہ سے دیکھنا کی ایک سی عرت کرنا کسی کو چوٹ تھ پہولنچالاً عنی سرو دھرم سنباؤ . اِس طرح کے پوجن کرتے ہے ولا سمبهاؤ تشت هوتا هے اور همارے ديش كي أيكنا كي بنيادوں ير چوڪ پهرنجتي ڪي

> مگر هدیں زیادہ تعلیف تو اِس دات سے هوئی که بیسہیں صدی کے بحیلوے سال میں هندستان جیسے دیش کا دنیاس منسلو هتياروں کی پوجا کرتا ہے۔ آب دنيا ميں هر جکه آراز آل رهي هے که لوائياں اِنساني سماج کے لئے خطرہ هيں؛ هتھاروں سے کوئی ہوتے سوال ذوا بھی حل نہیں ہوتے ارد دئیا میں شافتي - امن تبهي أنيكا جب هنيارس كا أستعمال ختم هوا . چاروں طرف سے جب هتيار يهنكنے كى آواز الله هو رهى هوا همارے پردھان منتوی هتهاروں کا سهارا قه لیکو شائلی اور اس کے رأستے پر "بنچ شیل" نام سے دیش دیش سے سنجھرتے یا رافع الم کر رہے میں ایسی حالت میں منستان کے تغیلس منسلر کو هتیاروں کی یوجا کرنا کہاں تک شوبھا دیتا ہے ۔ کون ٹہیں جائتا کہ هندستان کی سرکار یا فہجس کے پاس جو هتیار هیں وے محض دکھاوے کے هیں ' تعداد اور اثر میں بہت ھلکے اور کسی بڑی نوجی طاقت کے سامنے مثابوں میں كانور موجائے والے عيل ؟ كون نهيں جانتا كه هندستان كي أج جو دنيا ميں موت هے أس كا كارن همارى فيے يا هتيار نهيں ها؟ کہی نہیں جانتا کہ پنچ شیل نام کا چرائے جائر مندستان نے سنسار ریابی اندھیرے کو چیرکر اُجالا پیلانے کا کام شروع کیا ہے؟ إس صورت مين هندستان مين هتهارون كي پهچا هونا هندستان كا "بنج شيل" كي جورن كو هي كبرد والنا هي .

> ليكن سب سے زيادة دكم هدين اِس چيز سے هوا كه متهاروس كي يوجا داكتر كيلاش ناته كالتجو جيس سنجهدار أور دور درشی بزرگ کے هاتھوں سے کی گئی ۔ همیں یاد آرها ھے کہ 1946 میں داکٹر کائجو نے اہنسا کے گہرے پرچار کے لئے والمريجي" مين ايك ليكه بهي لكها تها . اكثر أبني أسييجون میں وہ اهنسا کی شکتی اور اُس کے عمل پر زور دیتے رہے هیں۔ پر آب اچانک جب وہ هتیاروں کا پوجن کرتے هیں تو مجبوراً اِس كا يهي مطلب لكانا هوكا كه أنهين أهنسا مين أب وشوأس الهين رها وه هندستان كو ذوجي رأستم ير ليجانا چاهتم هين اور متیاروں کے می ذریعہ دیعی کے بھیتری اور یامری سوال حل کرنے کے سپنے دیکہتے میں ، جب داکتر کاتجو جیے دھرم پاہند کیتا پریمی اور اهنسا بهت کے وچار اِس طرح پلگ کھا جائیں تو کسی دوسرے پر کرن وشواس کریکا ؟

> هم رچاروں کی ساکیٹوتا یا لکیر کی فقیر پہایلہ کے قائل نہیں میں دنیا پربیرتن شیل هے اور آدمی

ादी किमोदारी और कर्ष है—सब पर्मी को एक है। विगाह वे देखना, सब की एक सी इपजत करना, किसी को चोट त पहुँकाना यानी सर्व-धर्म-समभाव. इस तरह के पूजन हरने से बह समभाव नष्ट होता है और हमारे देश की रकता की खनियादों पर चोट पहुँचती है.

महार हमें ज्यादा वकलीक तो इस बात से हुई कि शिखनी खदी के पनपनमें साल में हिन्दुस्तान जैसे देश का क्रेक्स मिनिस्टर हथियारों की पूजा करता है, आज दुनिया में हर जगह आवाज एठ रही है कि लड़ाइयां इन्सानी प्रमाज के लिये जतरा हैं. हथियारों से कोई वहे सवाल बरा भी हल नहीं होते और दुनिया में शांति-अमन वभी मायेगा जब हथियारों का इस्तेमाल खत्म होगा. चारों तरफ ने जब इथियार फेंकने की आवाज मुलन्द हो रही हो, मारे प्रधान मंत्री हथियारों का सहारा न लेकर शान्ति और पमन के रास्ते पर "पंचशील" नाम से देश-देश से उममौते या राजीनामे कर रहे हों, ऐसी हालत में हिन्दुस्तान हे डिफ़ैन्स मिनिस्टर को हथियारों की पूजा करना कहां क शोभा देता है. कौन नहीं जानता कि हिन्दुस्तान की उरकार या फ़ीजों के पास जा हथियार हैं वे महज दिखावे हे हैं, तादाद और असर में बहुत इलके और किसी बड़ी बीजी ताक्रत के सामने मिन्टों में काफूर हो जाने वाले हैं ? हौन नहीं जानता कि हिन्दुस्तान की जाज जा दुनिया में रिजात है उसका कारण हमारी भीज या हथियार नहीं हैं ? हौत नहीं जानता कि पन्चशील नाम का चिरारा जलाकर हेन्द्रस्तान ने संसार व्यापी श्रंधेरे की चीरकर उजाला कैलाने का काम शुरू किया है ? इस सूरत में हिन्दुस्तान रं हथियारों की पूजा होना हिन्दुस्तान का "प'चशील" की नडों को ही खोद डालना है.

जेकिन सबसे ज्यादा दुख हमें इस चीज से हुआ कि [थियारों की पूजा डाक्टर कैलाशनाथ काटजू जैसे सममदार भीर दूरदर्शी बुजुर्ग के हाथों से की गई. हमें याद आ रहा कि 1946 में डाक्टर काटजू ने श्राहसा के गहरे प्रचार के लेये "हरिजन" में एक लेख भी लिखा था. अकसर अपनी तीचों में वह ऋहिंसा की शक्ति और उसके अमल पर जोर रेते रहे हैं. पर अब अचानक जब वह हथियारों का पूजन हरते हैं तो मजबूरन इसका यही मतलब लगाना होगा के उन्हें ब्राइसा में अब विश्वास नहीं रहा, वह हिन्दुस्तान क्रो कौजी रास्ते पर ले जाना चाहते हैं और हथियारों के ही इरिये देश के भीतरी और बाहरी सवाल इल करने के वपने देखते हैं. जब डाक्टर काटजू जैसे धर्म-पाबन्द, गीता-ोमी, और अहिंसा-भक्त के विचार इस तरह पलटा खा जायें तो किसी दूसरे पर कौन विश्वास करेगां ?

इस विचारों की संकीर्याता या लकीर की फक़ीर पीटने के कायल नहीं हैं. दुनिया परिवर्तनशील है, और आदमी खरंडकी-प्रेमी है. इसलिये नये नये विचार समाज के सामने आते रहेंगे और इन्सान लगातार आगे बढ़ेगा. लेकिन हमारा ज्याल है कि दुनिया जिस दिशा में जिस हर तक आगे उन्नति कर चुकी है, उस दिशा में जिस हर तक आगे। हथियारों के बारे में उसने समम लिया है कि उनके इस्तेमाल से उसकी बरवादी ही होगी. यही वजह है कि जिनेवा में अमरीका, रूस, इन्गलैंड और फ़ांस की सरकारों के मुस्तिया एक साथ बैठे, मिलकर बातें कीं, एक दूसरे के नजदीक आये और अमन की तरफ दुनिया को आगे ले जाने का फैसला किया. उसके कुछ अरसे बाद जब दुनिया भर के वैज्ञानिक जिनेवा में जमा हुए तो उन्होंने इस बात पर दिल सोल कर दिवार किया कि एटम या परमाशु की शिक्त को किस तरह मनुष्य के हित में कारगर बनाया जाये. आनेवाले जमाने में हथियार और विज्ञान की बजाय अहिंसा और विज्ञान मिलकर चलने वाले हैं.

इसिलये हिन्दुस्तान के मिनिस्ट्रों, या अधिकारियों को अमाने का इशारा समम्मने में देर नहीं करनी चाहिये. जहां हजारों साल पहले हिन्दुस्तान में व्यक्तिगत अहिंसा का जन्म हुआ था, उसी हिन्दुस्तान में अब बीसवीं सदी में सामृहिक अहिंसा या सत्यामह का जन्म हुआ. उसी रास्ते पर थांडा बहुत चलकर हिन्दुस्तान ने आजादी हासिल करने की कोशिश की. इसी'रास्ते से हिन्दुस्तान अपनी आजादी साबित और सुरक्षित रख सकता है. इसिलये हिन्दुस्तान में अब हियारों की पूजा नहीं चल सकती. हिन्दुस्तान को यह इथियार हिन्द महासागर में फेंक ही देना है. साथ ही साथ प्रेम, त्याग व सेवा के मूल्य कायम करके सामृहिक अहिंसा या सत्यामह के नये-नये रूप संसार के आगे पेश करना है.

14. 11. '55

--- सुरेश रामभाई

#### बे-लगाम चाल

देश में पैदाबार बढ़ाने और जनता की बेहतरी की खातिर हमारी सरकारें—क्या केन्द्रीय और क्या प्रान्तीय—तरह तरह की योजनायें अरक के सामने ला रही हैं. इनमें जनता का लाखों करोड़ों कपया पानी की तरह खर्च होता बला जा रहा है. कोई अभी से नहीं बता सकता कि इनसे देश को कैसा और कितना फायदा पहुंचेगा. लेकिन एक बात साफ खाहिर है. वह यह कि सरकार इस खर्च पर कोई झानू नहीं रख पा रही है और बे-जगाम घोड़े की तरह सर्च जंबा धुन्य हो रहा है.

हम यह बात अपनीत रफ से नहीं कह रहे हैं. सरकारी रिफोर्ट और बयान ही इस अन्धेर की गवाही दे रही हैं. इसके अस्पारों में इनकी चर्चा भी हुई है. उनमें से चंद खास असे की तरफ अपने पाठक का प्यान हम सीचना चाहते हैं.

اِس للهُ هَلْدستان کے منسلّروں یا ادھیکاریوں کو زمانے کا اشارہ سمجھنے میں دیر نہیں کرنی چاھئے ، جہاں ھزاروں سال پہلے هندستان میں ویکتی گت اهنسا کا جنم ھوا تھا' اُسی هندستان میں اب بیسویں صدی میں ساموهک اهنسا یا ستیاگرہ کا جنم ھوا ۔ اُسی راستے پر تھوڑا بہت چاکر هندستان نے آزادی حاصل کرنے کی کوشش کی ۔ اِسی راستے سے هندستان اور سررکشت رکھ سکتا ہے ۔ اُس لئے هندستان کو یہ میں اب عتیاروں کی پوچا نہیں چل سکتی ، هندستان کو یہ هتیار هند مہاساگر میں بھیلک ھی دینا ہے ۔ ساتھ ھی ساتھ ہی ساتھ ہی ساتھ ہی ساتھ ہی ساتھ ہی دینا ہے ۔ ساتھ ہی ساتھ پریم' تیاگ و سیوا کے مولید قایم کرکے ساموهک اهنسا یا ستیاگرہ کے نئے نئے روپ سنسار کے آگے پیش کرنا ہے ۔

ــسريش راميهائي .

14.11.755

# بے لگام چال

دیش میں پیدار بڑھانے اور جنتا کی بہتری کی خاطر ھماری سوکاریں سیا کیندریہ اور کیا پرانتیہ سعر طرح کی یہجنائیں ملک کے سامنے لا رھی ھیں ۔ اِن میں جنتا کا لاکھوں کوروروں روپیہ پانی کی طرح خرچ ھوتا چلا جا رھا ھے ۔ کوئی ابھی سے نہیں بتا سکتا کہ اِن سے دیش کو کیسا اور کتنا نابدہ پہرنچیکا ، ایکن ایک بات صاف ظاھر ھے ، وہ یہ کہ سرکار اِس خرچ پر کوئی قابو نہیں رکھ پا رھی ھے اور بے لگام گھوڑے کی طوح خرچ اندھا دھند ھو رھا ھے .

هم یه بات اپنی طرف سے تہیں کہ رہے هیں ، سرکاری رپررٹیں اور بیان هی اِس اُندهیر کی گواهی دے رهی هیں ، همارے اخباروں میں اِن کی چرچا بھی هوئی هے ، اُن میں سے چلد خاص مدرں کی طرف اپنے پاٹیک کا دهیاں هم کیبلنچا جامتے هیں ،

सरवारी सर्च का हिसाब-किताब देखने वाली पालिया-वंद की तरफ से दो कमेटियां रहती हैं—पन्तिक एकाउन्ट्स मोटी चौर पेस्टीमेट्स कमेटी. इनकी रिपोर्टे पार्लियामेंट में रेश होती हैं. हाल ही में पब्लिक एकाउन्ट्स कमेटी की चौदहवीं रिपोर्ट पर पालियामेन्ट में बहस हुई. उस रिपोर्ट में यह इहा गया है कि लन्दन में भारत सरकार ने जो जीपें हरीहीं और योख्य के दीगर देशों से जो दूसरा फीजी वासान लिया, उस बारे में जाँच जरूर की जानी चाहिये. हमेटी ने कहा कि नवीं रिपोर्ट में ही इस जाँच की मांग की ाई थी. लेकिन सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया. इस रिपोर्ट ार बोलते हुए डिफेन्स मिनिस्टर ने 29 सितम्बर को गार्जियामेन्ट में कहा कि इस मामले की जाँच 1952 में एक कॅची कमेटी ने की थी. उस कमेटी के सदर प्रधान मंत्री खुद ही थे. वह कमेदी, विफेन्स मिनिस्टर ने बताया, इस तर्वाजे पर पहुंची कि कुछ टैकनिकल राल्ती की गई और हायदे का पालन जरूर नहीं हुआ था, लेकिन किसी भी गकसर विशेष का दोष नहीं था. इसलिये सरकार न इसमें कोई कार्रवाई करना चाहती है और न इसकी जाँच के क्षिये कोई कमेटी विठाना चाहती है. डिफोन्स मिनिस्टर ने वह भी कहा कि यह मामला अब सात बरस पुराना हो बुका और 'सार्वजनिक हित' की खातिर इसे अब बन्द कर रेना चाहिये.

इस तरह पिन्तक एकाउन्ट कमेटी की तजवीज को धरकार ने ठुकरा दिया. जाहिर बात है कि मामले को संगीन समस्त्रकर ही, उस कमेटी ने अपनो चौदहवीं रिपोर्ट में भी, सन् 1955 में, पुराने मामले पर जार दिया और जाँच की सिफारिश की. लेकिन उसकी राय की सरकार ने कोई कदर नहीं की और बिना किसी माकूल जवाब के उसे खारिज कर दिया. अगर इस तरह पिन्तक एकाउन्ट कमेटी के फैसलों को काराज के कचरे के सिपुर्द कर दिया जायेगा. तो फिर समक्त में नहीं आता कि उस कमेटी की आखिर करत ही क्या रह जाती है.

अब इस ऐस्टीमेट कमेटी की रिपोर्ट पर आते हैं.
इसमें दो कारखानों की हालत पर विशेष रोशनी ढाली
गई है—विजागापट्टम में चलने वाला हिन्दुस्तान शिपयार्ड
भीर वंगलोर में चलने वाली हिन्दुस्तान मशीन दूरस फैक्ट्री.
यह दोनों काम भारत सरकार ,खुद ही चला रही है.
हेन्दुस्तान शिपयार्ड को तो कुछ अरसा पहले ही एक प्राईवेट
कम्पनी से सरकार ने अपने हाथ में लिया था. उम्मीद यह
यी कि सिन्धिया स्टीम नैवीगेशन कम्पनी ( उसका पुराना
याम ) जो खार्थिक बोक बर्दाश्त नहीं कर सकती थी, उसे
अरकार संभाल लेगी. उम्मीद यह भी थी कि जहाज बनाने
याली एक फ्रांसीसी कम्पनी की मदद से विजागापट्टम में

سرکاری خریم کا حساب کتاب دیکھلے والی ہارلیانات کی طرف سے دو کمیٹیاں رہتی ہیں ۔۔۔پبلک ایکاوئٹس کمھٹی اور استينيٹس کيٽي . اِن کي ريوڙين پارليامينڪ مين پيش هرتي هيل حال هي ميل پبلک أيكاونٹس كسيتي كي چېدهېيې رياق ير يارلياملت ميل بحث هوئي . أس ريورت میں یہ کیا گیا ہے کہ لندن میں بھارت سرکار لے جو جیپس ( Jeeps ) خربدیں اور یورپ کے دیکو دیشوں سے جو دوسرا فهجي سامان لها أس بارے ميں جائيے ضرور كى جائي چاھیئے ، کمیٹی نے کہا که نویں ربوت میں ھی اِس جانبے کی مانک کی گئی تھی' لیکن سرکار نے کوئی دھیان فہیں دیا . اِس رپورٹ پر ہوائے ہوئے دنینس منسٹر نے 29 ستمبر کو پارلیامنت میں کہا کہ اِس معاملے کی جانبے 1952 میں ایک اونجی کبیٹی نے کی تھی ، اِس کبیٹی کے مدر پردھان منازی خود هی ته . وه کمیتی تنیس منستر فیتایا اس تهدی پر پہوئچی که کچه ٹیکنیکل غلطی کی گئی اور قاعدے کا باان فرور نبین هوا تها لیکن کسی بھی افسر وشیعی کا دوش نيهن تها . إس لله سركار قه اس مهن كوئي كارورائي كرنا چاهتي ھے آور ناء اِس کی جانبے کے لئے کوئی کمیٹی بتھانا چاھتی ھے۔ تغینس منستر نے یہ بھی کہا کہ یہ معاملہ آب سات برس وراثا هو چكا اور أساروجنك هت كي خاطر اين اب باند كردينا چاههای

اِس طرح پہلک ایکارنت کمیتی کی تجویز کو سرکار نے تھیرا دیا ، ظاہر بات ہے کہ معاملے کو سنکین سمجھ کر ھی' اُس کمیتی نے اپنی چودھویں رپوت میں بھی' سن 1955 میں' پرانے معاملے پر زور دیا اور جانبھ کی سفارش کی ، لیکن اُس کی رائے کی سرکار نے کوئی قدر نہیں کی اور بنا کسی معقول جواب کے اُس خارج کر دیا ، اگر اِس طرح پبلک ایکارنت کمیتی کے فیصلوں کو کافذ کے کنچرے کے سہرد کر دیا جائیگا' تو پھر سمجھ میں نہیں آتا کہ اُس کمیتی کی آخو ضرورت ھی کیا رہ جاتی ہے ۔

اب هم ایستیمیت کمیتی کی رپوت پر آتے هیں ، اُس میں دو کارخانوں کی حالت پر وشیش روشنی دالی گئی هیہ وزاگا پتم میں چلنے والا هندستان شپ یارد اور بنکلور میں چلنے والی هادستان مشین تولس نیکتری ، یہ دونوں کام بهارت سرکار خود هی چلا رهی هے ، هندستان شپ یارد کو تو کچھ عرصه پہلے هی ایک پرائویت کمہنی سے سرکار نے اپنے هاته میں لیا تها ، آمید یه تهی که سلاهیا استیم نیویکیشن کمپنی (اِس کا پراثا نام) جو آرتهک بوجھ برداشت نمیں کو سکتی تهی اُس سرکار سنبهال لیکی ، امید یه بھی تھی که سکتی تهی اُس سرکار سنبهال لیکی ، امید یه بھی تھی که شخیان بالے والی ایک نرائسیسی کمپنی کی صدت سے وزاگا پتم میں

जहाज बनने का सिलसिला क्रायम हो जायेगा और हिन्दु-स्तानी कारीगरों को ऐसी ट्रेनिंग भी उसमें मिल जायेगी कि सारा काम वह अपने आप बला ले जायें.

केकिन हवा क्रम और ही. ऐस्टीमेट कमेटी का कहता है कि कोई भी उन्मीद पूरी नहीं हुई. फ्रांसीसी कम्पनी ने जो माहिर मेजे थे वह पूरे नहीं उतरे. जहाज बनाने की रफ्तार में वेजी आने के बजाय और मंदी आ गई. यह नहीं कि सरकार के पास जहाजों की सप्लाई की मांग नहीं थी. मांग थी मगर माल ही तैयार नहीं था. इस तरह रोड्स (schedule) के मुताबिक जहाज जो नहीं बन सके, उससे कारखाने को मारी आर्थिक नुकसान डठाना पड़ा. उसकी सास को धक्का लगा सो अलग. पस्टीमेट कमेटी की राय है कि इन नुक्सानों के लिये सरकार के फ्रांसीसी सलाइकार ही जिन्मेदार हैं जिन्होंने अपने फुर्ज को ठीक से नहीं निमाया. हमें नहीं मालूम कि भारत सरकार फ्रांसीसी कम्पनी से यह घाटा बसूल कर सकेगी या नहीं, लेकिन इस तरह के एक तरके ठेके विदेशी कन्यनियों को देकर सरकार कई बार धोसा सा चुकी है और जनता का पैसा बरबाद हुआ है. सब में प्यादा तकलीफदह बात यह दुई कि हिन्दुस्तानी कारीगरों की ट्रेनिंग का काम भी किसी हद तक आगे नहीं बढ़ा. एस्टीमेटी कमेटी ने कहा है कि इस मामले पर फौरन ध्यान दिया जाना चाहिये और जल्द से जल्द इसका इलाज करना चाहिये.

बही हाल बंगलीर की मशीन दूस फ़ैक्ट्री में हुचा बताया जाता है जहां एक स्विटजरलेन्ड की कम्पनी की निगरानी में काम चल रहा था. इस फ़ैक्ट्री को सरकारी हलकों में बहुत ही बुनियादी फैक्ट्री माना जाता है. यह यक्कीन दिलाया गया है कि इसकी मदद से देश में अनेकों बोटे-बड़े कारखानों के चलने में मदद मिलेगी. लेकिन यहां भी घोटाला हुआ. न माल तैयार हुआ और न इन्तजाम ही ठीक रहा. एस्टीमेट कमेटी की रिपोर्ट यह है कि स्विज कम्पनी के साथ भारत सरकार बहुत लापरवाही और ढिलाई से पेश आई और देश का पैसा—जो बचाया जा सकता था—नाइक लुटाकर बरवाद किया गया. कमेटी ने तजवीज की है कि सरकार को चाहिये कि इस फ़ैक्ट्री की योजना की दावारा आँच कराये और नये सिरं से इसका बन्दोबस्त करें.

देश के धन की इस तबाही पर मद्रास के "हिन्दू" नाम के सरनाम अस्वार ने बहुत दुख जाहिर किया है. "हिन्दू" कोई क्रान्तिकारी या सरकार विरोधी या प्रामोधोगी अस्वायार नहीं है. उस तक का कहना है कि आजादी के कार विदेशी कुर्मों से संस्कार के सन्वन्ध का जो लेखा है جَهَارُ بَدِّتِهِ كَا سُلساء قَاتُم هو جائهكا أور هندستاتي كاريكورس كو أيسى تريننگ بيني إس مين مل جائيكي كه سارا كام وه أيني آپ چلاطي چائين .

ليكن هوا كنه أور هي . إستيميت كميتي كا كهنا في كه کوئی بھی اُمید پوری نہیں ہوئی ، فرانسیسی کنیلی نے جو ماهر بهینچے تھ وہ پورے نہیں اُترے . جہاز بنانے کی رنتار میں تیزی آنے کے بجالے اور مندی آگئی . به نہیں که سرکار کے پلس جہازوں کی سپائی کی مانگ نہیں تھی ۔ مانگ تھی مکر مال ھی تیار نہیں تھا . اِس طرح شہدرل ( Schedule ) کے مطابق جهاز جو تهين أبي سكه أس سه كارخاني كو بهاري أرتيك نقصان اُنْیَانًا پرا اُس کی ساکھ کو دھکا لگا سو انگ ۔ ایستیمیت کمیتی کی رائے ہے کہ آن نقصانوں کے لئے سرکار کے نرائسیسے ملاحکار ہی زمہ دار میں جنہوں نے اپنے فرض کو اپیک سے نہیں نبهایا ، هدیں نبهی معاوم که بهارت سرکار رانسیسی کمپنی سے یہ گھاٹا وصول کر سکیکی یا نہیں ، لیکن س طرح کے ایک طرفے ٹھیکے ودیشی کمپلیوں کو دیکر سرکار ائم الرادهوكها كها چكى هے أور جنتا كا ييسه برياد هوا هے . سب میں زیادہ تکلیف دہ بات یہ ہوئی که هندستانی کاریگروں کی ٹریننگ کا کام بھی کسی حد تک آگے نہیں بڑھا ۔ ایسٹیمیث لميلمي نے كہا هے كه اس معاملے ير فوراً دهيان ديا جانا چاعثم اور جلد سے جلد اِس کا علام کرنا چاھئے .

یہی حال بنکلور کی مشین تولس نیکڈری میں ہوا بتایا جاتا ہے جہاں ایک سرنٹزرلینڈ کی کمپنی کی نکرانی میں کام چل رہا تھا ۔ اِس نیکٹری کو سرکاری حلقرں میں بہت ہی بنیادی نیکٹری مانا جاتا ہے ۔ یہ یٹیں دلایا گیا ہے که اِس کی سد سے دیش میں انیکوں چھوٹے ہوے کارخائوں کے چلنے میں سد میکی ، لیکن یہاں بھی گھوٹالا ہوا ، نہ مال تیار ہوا اور تہانظام ہی ٹھیک رہا ۔ ایسٹیمیٹ کمیٹی کی رپورت یہ ہے که سرز کمپنی کے ساتھ بھارت سرکار بہت لاپروامی اور تھلٹی سے یش آئی اور دیش کا پیست جو بنچایا جا سکتا تھا ۔ ناحق یش آئی اور دیش کا پیست جو بنچایا جا سکتا تھا ۔ ناحق گا کو برباد کیا گیا ، کمیٹی نے تنجویز کی ہے که سرکار کو چاہئے سے اس فیکٹری کی یوچنا کی دوبارہ جانبے کرائے اور نیٹے سرے سے اس کا بندوبست کرے ۔

دیش کے دھن کی اِس تباھی پر مدارس کے ''ھندو'' ام کے سرنام اخبار نے بہت دیا طاعر کیا ہے۔ 'مندو'' کوئی کوانٹیکاری یا سرکار ورودھی یا گرامردیوگی اخبار بھی ہے۔ اُس تک کا کہنا ہے دہ آزادی کے بعد ودیشی فرموں سے سرکار کے سیندہ / کا جو لیکھا ہے

, هناري وال

वह बहुत विनाराक आर्थिक सरगरियों का लेखा है. और प्रयर देश का ज्यादा पैसा नाले में बहाना मंजूर नहीं है वो वह दुखद अच्याय जीरन खत्म होना चाहिये.

15-11-55

- —सुरेश रामभाई

ولا بہت والشک آرتیک سرگرمیوں کا لیکھا ہے۔ اور آگر دیھی کا زیادہ پیسے دالے میں بہانا منظور نہیں ہے تو یہ داعد اُدھیائے فوراً ختم ہونا چاہئے۔

---سريش رأم عالى

15. 11. 55

#### एक खतरनाक सुभाव

इमारे प्रधानमंत्री ने गत 14 नवस्वर को इस दुनिया

मं अपने सफ़र के 66 शानदार साल पूरे किये. इस मौके पर
प्रपने देशवासियों के साथ इस पंडित जवाहरलाल का
प्रादर के साथ अभिनन्दन करते हैं. अंतर्राष्ट्रीय जगत में

महोंने भारत का मस्तक अँचा उठाया है. इससे भी बद्कर
पात यह है कि आज बह दुनिया में शान्ति के सबसे बढ़े

प्रलमवरदार और मशाल हैं और देश-देश के दुखी लोग
। नकी तरफ़ बढ़े इतमीनान और उम्मीद-भरी निगाहों से
|खते हैं.

बच्चों से उनको बहुत प्रेम है. बड़े चादिमयों को
—दिलदार चादिमयों को—यह सदा होता ही है. इसलिये
।च्चों पर पंडित जी न गुस्सा करते हैं और न उनकी
त्यादितयों का बुरा मानते हैं. उनके हाथ से फल-फूल लेना
।संद करते हैं. पिछले दो बरस से उनकी सालिगरह के
ग्रीके पर बच्चों के प्रदर्शन ग्रुक् किये गये. "चाचा नेहरू"
।हकर उनकी जय मनाई गई. इस मरतवा इस प्रदर्शन ने
। तरा ज्यादा बड़ी और नुमांया शक्ल ली—क्योंकि उसमें
।रकारी हलकों की तरफ से भी काफी दिलचसी ली गई.

लेकिन एक खास बात हुई. बह यह कि प्रधानमन्त्री ही सुपुत्री ने एक जगह कहा कि अगले साल से 14 नवम्बर कि 'पब्लिक हालीडे' (सार्वजनिक छुट्टी) हो और उस देन देश में 'चिल्डरन्स डे' (बच्चों का दिन) मनाया जाये. उनके इस सुमाब के आधार पर "हिन्दुस्तान टाइम्स" के प्रसिद्ध क्लमनवीस "इन्साफ़" ने यह तजवीज पेश की है कि जहां 14 नवम्बर "चिल्डरन्स डे" के तौर पर, बहां गांधी-जयन्ती ।नी 2 अक्तूबर "पेरन्ट्स डे" (माता-पिता का दिन) के तौर र मनाया जाय!

क्या सूर्व 'टवारा है—'चिल्डरन्स हे' छलग, 'पेरन्ट्स ।' अलग. आगे चलकर कोई तिवयतवाला यह सुकाव पेरा ।र देगा कि श्रीमती इन्द्रि। गांधी की सालगिरह को 'डाटर्स ।, ( बेटियों का दिन ) या 'वाइफ्ज हे' (सघवाओं का दिन) ।नाया जाये, फिर किसी और का 'सन्स हे' (बेटों का दिन) ॥ 'इजवन्द्स हे' ( पितयों या खाविन्दों का दिन ) मनाया ।ये !

# ایک خطرناک سوجهاؤ

همارے پردھان منتری نے گت 14 نومبر کو اِس دنیا میں اپنے سفو کے 66 شاندار سال پورے کئے، اِس موقع پر اپنے دیھی واسیوں کے ساتھ ایمینندن کوتے واسیوں کے ساتھ ایمینندن کوتے هیں ، انتر راشٹریہ جکت میں انہوں نے بھارت کا مستک اونچا آٹھایا ہے ، اِس سے بھی ہڑھکو بات یہ ہے کہ آج وہ دنیا میں شائتی کے سب سے بڑے علمبردار اور مشعل هیں اور دیش دیھی کے دکھی لوگ اِن کی طرف بڑے اطمینان اور آمید بھری نگاھوں سے دیکھتے هیں ،

بچوں سے اُن کو بہت پریم ہے ، بڑے آدمیس کو دادار اسپوں کو دادار اسپوں کو بہت پریم ہے ، بڑے آدمیس کو در پندسجی ادمیس کو سے سدا ہوتا ہی ہے ، اِس لئے بچوں پر پندسجی نع ضعہ کرتے ہیں اور نه اُن کی زیادتیوں کا برا مانتے ہیں ، اُن کے ہاتھ سے پہل پہول لینا پسند کرتے ہیں ، پچہلے دو ہرس سے اُن کی سالکرہ کے موقعے پر بچوں کے پردرشن شروع کئے گئے ۔ اُس مرتبع اِس پردرشن نے ذرا زیادہ بڑی اور نمایاں شکل لی ۔ ایس مرتبع اِس میں سرکاری حلقوں کی طرف سے بھی کانی دلچسھی لی گئی ، لیکن ایک خاص بات ہوئی ، وہ یہ کہ پردھان منٹری کی سونڈری کی سونڈری نے ایک جکھ کیا تھ اگلے سال سے 14 نومبر ایک سونڈری نے ایک جکھ کیا تھ اگلے سال سے 14 نومبر ایک

سوپتری نے ایک جگه کہا که اگلے سال سے 14 نومبر ایک دیش سوپتری نے ایک جگه کہا کہ اگلے سال سے 14 نومبر ایک دیش بہلک عالیتے ' ( سروجنک چپتی ) منایا جائے ، اُن کے اُس سوجھاؤ کے آدعار پر ''هندستان تائمس'' کے پرسدھ فلم نویس ''انصاف'' نے یہ تجویز پیش کی ہے که جہاں 14 نومبر ''چلترینس تے'' کے طور پر' رھاں گاندھی جینتی یعنی 2 اکتوبر ''یہرنتس تے'' کے طور پر' رھاں گاندھی جینتی یعنی 2 اکتوبر ''یہرنتس تے'' ( ماما یتا کا دن ) کے طور پر منایا جائے !

کیا خوب باتوارہ ہے۔۔ 'چلترینس تے' الگ' 'پیریناس تے' الگ ، آگے چلکر کوئی طبیعت والا سوجھاؤ پیش کریکا که شریعتی اندرا کاندھی کی سالکرہ کو 'تائرس تے' ( بیٹیس کا دیں ) یا 'وائوز تے' ( سدھواؤں کا دیں ) منایا جائے' پھر کسی اور کا 'سنس تے' ( بیٹیں کا دیں ) یا 'ھزینتس تے' ( پتیس یا خارندوں کا دی) منایا جائے آ!

खाहिर है कि श्रीमती इन्दिरा गांधी और श्री "इन्साफ" दोनों के सुमाब बहुत खतरनाक और नामुनासिब हैं. इस तरह बच्चों और उनके मां-बाप में बंटवारा करना तो शायद कहर से कहर माक्सवादी भी पसंद नहीं कर सकता. यह वर्गीकरण विचार के बोछे पन और दिल की तंगी का नमूना है. फिर, गांधी-जयन्ती को "पेरन्टस हे" करार देना उसे एकदम निकम्मा कर देना है. गांधी जी उसे खुद ही चरखा-अयन्ती नाम दे गये हैं. धगर चरखा जयन्ती कामयाब होती है तो बच्चों को भी रोटी नसीब होगी और उनके मां-बाप भी अपने पैरों पर खड़े रह सकेंगे. और धगर चरखा जयन्ती कामयाब होती है तो बच्चों को भी रोटी नसीब होगी और उनके मां-बाप भी अपने पैरों पर खड़े रह सकेंगे. और धगर चरखा जयन्ती कामयाब होती हो सां बच्चे दाने दाने को तरसेंगे और मां-बाप गुलामों से भी बदतर हो जायेंगे. इसलिय सच्ची गांधी-जयन्ती में 'चिल्डरन्स हे' और 'पेरन्ट्स हे' दोनों समा जाते हैं.

एक बात श्वीर भी है. आज पंडित नेहरू के लिये जो भक्ति दिखाई जा रही है उसे जरा हमें सममना चाहिये. विचारने की चीज यह है कि उसमें कितनी जवाहरलाल के शित है और कितनी भारत सरकार के प्रधानमन्त्री के प्रति. हम जानते हैं कि देश के लाखों करोड़ों लोग आज जवाहरलाल जी के नाम पर नाच उठते हैं. लेकिन इससे भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि सरकारी अफ़सरों और राजनीतिक कारकुनों में सी पीछे कम से कम नच्चे ऐसे होंगे जो पंडित जी को 'प्रधान मंत्री' के नाते ही पहचानते हैं. कल अगर कोई दूसरा आदमी उस कुर्सी पर बैठ जाये तो उसी का राग गाने लगेंगे और पंडित जी को शायद पहचानें भी नहीं. उनकी भक्ति एक तरह की लागत पूंजी यानी 'इन्वेस्टमेंट' है जिससे उन्हें काफी वसूलयावी ही होती है. इसलिय उनकी भक्ति कोई माने नहीं रखती. यही हाल बहुत से अखारों का है.

दूसरे, किसी भी पदाधिकारी के जीते जी उसके जनम दिन का जाम छुट्टी कर देना शांभा भी नहीं देता. आखिर वह पदाधिकारी भी एक इन्सान है. और कीन इन्सान ऐसा है जा गुणों का ही पुतला हो और खामियों से परे हो ? इसीलिये किसी इन्सान की असली बुलन्दी उसकी जिन्दगी के दौरान में आंकना नामुमकिन है. उसकी लीला के खात्में के बाद ही उसके व्यक्तित्व का ठीक अन्दाजा लगाया जा सकता है और उसकी सही क़दर हो सकती है. पहले से ही उसके कारनामों पर मुहर लगाना जल्दबाजी और शैतानियत से खाली नहीं, उस महापुरुष के प्रति अन्याय है.

तीसरे, यह देश है हिन्दुस्तान. यहाँ बहुत-सी अच्छी बार्तों के साथ साथ बेतुकी बार्ते भी चलती हैं—जिनमें एक है अंध-भक्ति. अगर एक जवाहरजाल का जन्म-दिन छुट्टी के तौर पर मनाया जाये तब आगे फिर जिस प्रधान-मंत्री خوامر کے سوجھاؤ بہت خطرناک اور نامناسب ھیں ۔ اِس عور اِنصاف اُن مورس کے سوجھاؤ بہت خطرناک اور نامناسب ھیں ۔ اِس علی میں بنتوارہ کرنا تو شاید کرتا ہے کار مارکسوادی بھی پسند نہیں درسکتا ۔ یہ ورگیکرن وچار کے اُوچھین اور دال کی تنکی کا نمونہ ہے ۔ پھڑ کاندھی جیلتی کو 'پیرینلس قبے' قرار دینا اُسے ایکدم نکما کردینا ہے ۔ گاندھی جی اُسے خود ھی چرخه جینتی نام دے گئے ھیں ۔ گاندھی جی اُسے خود ھی چرخه جینتی نام دے گئے ھیں ۔ اگر چرخه جینتی نام دے گئے ھیں ۔ اُگر چرخه جینتی کامیاب ھوتی ہے تو بچوں کو بھی روئی نصیب ھوگی اور اُن کے ماں باپ بھی اپنے پھروں پر کھڑے رہ سکھنگے ۔ اور اگر چرخه جینتی کامیاب نہیں ھوتی تو بچے سکھنگے ۔ اور اگر چرخه جینتی کامیاب نہیں ھوتی تو بچے دائے دائے کو ترسینگے اور ماں باپ غلاموں سے بھی بدتر ھو جائیلئے ۔ اُس لئے سچی کاندھی جینتی میں 'چلترینقس قے' اور اُس لئے سچی کاندھی جینتی میں 'چلترینقس قے' اور اُس لئے سچی کاندھی جینتی میں 'چلترینقس قے' اور اُس لئے سچی کاندھی جینتی میں 'چلترینقس قے' اور اُس کے ساجاتے ھیں ۔

ایک بات اور بھی ہے۔ آج پندت نہرو کے اللہ جو بھکتی دکھائی جارہی ہے آس نوا ہمیں سمجھنا چاہئے۔ وچار نے کی چھڑ یہ ہے کہ آس میں کتنی جواہرال کے پرتی ہے اور کتنی بھارت سرکار کے پردھان منتری کے پرتی ، ہم جانتے ہیں که دیھی کے لائیوں کروڑوں لوگ آج جواہر الل جی کے نام پر ساتھ بھی اِنکار نہیں کیا جاسکتا که سرکاری افسووں اور راجنیتک کارکاوں میں سو پیچھے کم سے کم نوے ایسے ہونگے جو بندت جی کو 'پردھان منتری' کے ناتے ہی پہچائیں میں ، کل اگر کوئی دوسرا آدمی اس کرسی پر بہتھ جائے تو اُسی کا راگ گانے لکیں گے اور پندت جی کو شاید بہتھ جائے تو اُسی کا راگ گانے لکیں گے اور پندت جی کو شاید پہچائیں بھی نہیں ، اُن کی بھکتی ایک طرح کی لاگت پونجی یعنی 'انویسٹمنٹ' ہے جن سے آنہیں کانی وصولیایی ہی بھی جھرتی ہے ، اِس لئے اُن کی بھکتی کوئی معنے نہیں رکھتی ، ہوتی ہے اُنہیں کانی وصولیایی ہی ہوتی ہے ، اِس لئے اُن کی بھکتی کوئی معنے نہیں رکھتی ،

دوسرے کسی بھی پدادھیکائی کے جیتے جی اُس کے جام دی کو عام چھتی کو دینا شوبھا بھی نہیں دیتا ۔ آخر وہ آپدادهیکائی بھی ایک انسان ایسا هے جو گئیں کا ھی پتلا ھو اور خامیوں سے پرے ھو آ اِسی اللہ کسی انسان کی اصلی بلندی اُس کی زندگی کے دوران میں آنکا نامیکن ھے اُس کے دیکتو نامیکن ھے اُس کے دیکتو کا تھیک اندازہ لگایا جاسکتا ھے اور اُس کی صحیح قدر ھو سکتی ھے ، پہلے سے ھی اُس کے کارناموں پر مہر لگانا جلدازی اور شیطانیت سے خالی نہیں 'اُس مہاپرش کے پرتی انہائے

تھسرے یہ دیش ہے ہندستان ۔ یہاں بہت سی اچھی باتوں کے ساتھ ساتھ ہے تکی باتیں بھی چلتی ہیں۔۔۔جن میں ایک ہے اثرہ بہتی ۔ اگر ایک جواہر لال کا جنم دن چھٹی کے طور پر منایا جائے تب آگے بھر جس پردھاں منتری

के जम्म-दिन प्रष्टी नं की गई तो एसकी कसरते शान समसी जायेगी, और वह उससे कोई असर से या न से सेकिन इसके खुशामदी उसे चैन कहां लेने देंगे ? फिर अगर जबाहरलाल जी की सालगिरह को छुट्टी रखी जाती है वो मन-चले लोग इस बात के लिये जमीन-आसमान एक कर देंगे कि डाक्टर विधानचंद्र राय की सालगिरह पर कम से कम पश्चिम, बङ्गाल में तो छुट्टी हो, या डाक्टर ,श्रीकृष्ण सिंह की सालगिरह पर बिहार में, बाक्टर सम्पूर्णानन्द की उत्तर प्रदेश में, डाक्टर रविशंकर शुक्र की मध्यप्रदेश में, इत्यादि. यह डर'इमें इस बिना पर हो रहा है कि इमने अखबारों में इन मुख्य मंत्रियों पर गम्भीर लोगों के इस आशय के लेख देखे हैं और एक बढ़े चालु पत्र ने तो इनमें से एक पर विशेषांक ( सपलीमेंट ) तक निकाला है. एक मिनिस्टर ने अपने चीफ मिनिस्टर की वारीफ करते हुए एक बार कहा कि आजकल के जमाने को उनका (चीफ मिनिस्टर का नाम) युग कहा जायगा ! इस तरह केन्द्रीय और प्रान्तीय छुट्टियों का दौर चला तो कोई इन्तहा ही नहीं रह सकती. इस वना को रोकने के लिये कहीं आर्डिनैन्स की जरूरत न पढ़ जाय !

आखिर में कोई पूछ सकता है कि अपने पिता, पित, पुत्र या पुत्री या किसी की वर्षगांठ को राष्ट्रीय क्रिय में मनवाने की हमें लालसा ही क्यों हो ? एक से एक बड़े ऋषि मित, राजे-महाराजे, दीवान या अफसर आये और बले गये. हिन्दुस्तान में आज कौन जानता है मनु या बाशिष्ठ को, जनक या शंकराचार्य को, अशोक या अकबर को ? और उनको नहीं जानने या उनकी सालगिरह नहीं मनाने से उनकी शान में कोई बहा भी तो नहीं आता. उनकी खुशी इसमें नहीं होगी कि लोग उनका जन्म-दिन तो मनायें पर काम जो भी करें सा उनकी जिन्दगी के अमल के खिलाफ करें, बल्कि इससे होगी कि लोग उन्हें इतना भूल जार्य कि उनके उसूलों को इसम करके एकदम उन्हें आत्मसात कर लें. और इस तरह इन्सानियत की राह में एक से एक बढ़कर मन्जिल निकर होकर, इंसते खेलते और शान के साथ तय करें.

20, 11, 55

-सुरेश रामभाई

کے جنمدیں چیلی اندکی گلی تو اِس کی کسرت شانی سمجھی جائیکی ا ور ولا أس سے كوئى اثر ليے يه له ليكن أس كے خوشامدى أس چین کہاں لیٹے دینکے 9 پور<sup>4</sup> اگر جوافرائل جیکی سالکرہ کو چ**ھا**ئی بھی جاتی ہے تو منچلے لوگ اِس بات کے للے زمین آسان ایک کو دینگے که ذائلر ودھان چندر رائے کی سالکرہ پر کم سے كم يعجم بنكال مين تو چهتى هو؛ يا دَانتر شوى كرشن سنكم کی سالکوہ یو بہار میں قاداتو سمہراناتند کی آتر پردیش میں تاکٹر روی شکر شعل کی مدھیہ پردیش میں ایادی ، یہ تر همیں اِس بنا یر هو رها هے که هم نے اخباروں میں اِن معید منتویں پر گمبھیر لوگوں کے اِس آشٹے کے لیکھ دیکھے ھیں اور ایک برے چالو یتر نے تو اِن میں سے ایک پر ریشیشانک (سینیمینت) نک نکاه د ایک منستر نے اپنے چیف مسترکی تعریف كرتهوئد ايكباركياكه أجعل كرماليكو أن كا (چيف منسةر كا نلم) یگ کہا جائیگا! اِس طرح کیندریہ اور پرانتیہ چہتیں کا دور چلا تو کوئی اِنتہا هی نہیں رہ سکتی . اِس رہا کو روکنے کے اِنّے کیس آرتینینس کی ضوورت نه پوجائے ا

آخر میں کوئی پوچھ سکتا ہے کہ اپنے پتا' پتی' پتر یا پتری یا کسی کی ورش کانتھ کو راشتریہ روپ میں منوالے کی ہیں السا ھی کیوں ہو آ ایک سے ایک پڑے رشی مئی' راجے مہاراجے' دیوان یا انسر آئے اور چلے گئے ۔ ہندستان میں آج کون جانتا ہے مئو یا رششتھ کو' جنک یا شنکواچاریہ کو' اشوک یا اکبر کوآ اور آن کو نہیں جانتے یا اُن کی سالگرہ نہیں منالے سے اُن کی شان میں کوئی بتہ بھی تو نہیں آتا ۔ اُن کو خوشی اِس نہیں ہو کی میں کوئی کہ اوگ اُن کا جنمدن تو منائیں پر کام جو بھی کریں سو اُن کی زندگی کے عمل کے خالف کریں' بلکہ اِس سے ہوگی کہ لوگ آن کی اصواوں کو ہفم کر کہ لوگ آنییں انسان بول جائیں کہ اُن کے اصواوں کو ہفم کر کے ایدم آنہیں انسان سے ایک بڑھ کر منزل نتر ہو کو ہنستے کیاتے اور اِس طرح انسانیت کی راہ میں ایک سے ایک بڑھ کر منزل نتر ہو کو ہنستے کیاتے اور ایس طرح کو ہنستے کیاتے اور اُن کے ساتھ طے کریں ۔

--سریش رام بهائی

20 .11 .55

| 4           | इमारे यहां मिखन                 | वाबा कुछ आर                                  | (4)   | (887 |         | و معابي                               | بسيد كاليد. س                            |
|-------------|---------------------------------|--|-------|------|---------|---------------------------------------|--|
|             | नोटा-यह वि                      | हतार्थे सिक्ते हिन्दी से हैं,                |       | :    |         | هلدی مین هیں ا                        | ناء کعامیا                               |
|             | नाम कितान                       | लेसक   |       | बु   | ¥I<br>Λ | A . I was A                           | بر و هامرن                               |
| 1.          | . शेर-चौ-शायरी                  | श्री ष्ट्रयोध्या प्रसाद<br>गोयलीय            |       |      | 0       | كواليه                                |  |
| 2,          | शेर-धो-मुजन                     | n  | 8     |      |         | 99                                    | و و سطون                                 |
| 3.          | गहरे पानी पैठ                   | 29   |       | 8    |         | <b>33</b>                             | رے ہائی پیانہ                            |
| 4.          | इमारे बाराध्य                   | भी बनारसीदास                                 | 3     | Ų    | 0       | شری یکارسی داس                        | بارے آرادھیہ                             |
|             |                                 | चतुर्वेदी                                    | 3     | 0    | 0       | چگرویدی                               | لسمرن                                    |
| -           | र्थस्मरण                        | <u>,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,</u> | 3     | 0    | _       | رر<br>فری جگنیش جندر                  | سرن<br>مزار ورش پرانی                    |
|             | दो इजार वर्ष पुरानी<br>इहानियां | श्री जगदीशचन्द्र जैन                         | J     | U    | Ū       | <i>⊎</i>                              | ہاتھاں                                   |
|             | ज्ञान गंगा                      | भी नारायगा साद जैन                           | 6     | 0    | 0       |                                       |  |
| 8.          | पथ चिन्ह                        | भी शान्ति प्रिय द्विवेदी                     | 2     |      |         |                                       |  |
| 9.          | पंच प्रदीप                      | शान्ति एम. ए.                                | 2     | 0    | 0       | 1 "                                   |  |
|             | बाकाश के तारे घरती<br>के फूल    | श्री कन्हैयालाल मित्र<br>प्रभाकर             | 2     | 0    | 0       | هری کلههالال مهر<br>پربهاکر           | آگاھی کے تارے<br>دھرتی کے پھول           |
| [],         | युक्ति दूत                      | भी वीरेन्द्र कुमार<br>जैन एस. ए.             |       | 0    | 0       | فری ویریقدر کمار جین<br>ایم ، آے      |  |
| <b>L2</b> . | मिलन यामिनी                     | श्री बच्चन                                   | 4     | 0    | 0       | فرى يحون -                            | ملن یاملی                                |
| l3.         | रजत ररिम                        | डाक्टर रामकुमार वर्मा                        | 2     | 8    | 0       | ةاكتر رام كمار ورما                   |  |
| 4.          | मेरे बापू                       | श्री तन्मय बुखारिया                          | 2     | 8    | 0       | فرى تنب بخاريا                        |  |
| 5.          | विरव संघ की भोर                 | पंडित सुन्दरताल<br>भगवानदास केला             | 3     | 0    | 0       | بنقت سندولال بهكران<br>داس كهلا       |  |
| 16.         | भारतीय अयंशास                   | भी भगवानदास केला                             |       | 0    | 0       | شری پهکران داس کیلا،                  | يهارتهم أرته شاستر                       |
| 7.          | भारतीय शासन                     | . 39   | 3     | 0    | 0       | "                                     | بهارتیه شاسی                             |
|             | नागरिक शास्त्र                  | ÿ)   | 2     | 4    | 0       | .,<br>3)                              | ناگرک هاستر                              |
|             | साम्राज्य घोर उनका<br>पतन       | 97   | 2     | 8    | 0       | 27                                    | سامُراج اور اُن ¥<br>عن                  |
|             | भारतीय स्वाधीनता<br>अन्दोलन     | 77   | 1     | 4    | 0       | 91                                    | يهارتهم سرادههلتا                        |
|             | सर्वीदय अर्थ व्यवस्था           | "  | 1     | 8    | G       |                                       | آندولی                                   |
|             |                                 | भौर भी अखिल विनय                             | 3     | 8    | 0       | ور<br>شری بهگوان داس کها              | سرورٹ ارتھ ریوسٹھا<br>هماری آدم جاتھاں   |
| 3.          | अर्थशास्त्र शब्दावली            | भी दया शंकर दुवे,                            | 2     | 0    | 0       | اور شری اکھل رنے                      | 11                                       |
|             |                                 | एम. ए. एत. एत. बी.                           |       |      |         | شری دیا شلکر دویے<br>ا                | ارته شاستر شبدارلی                       |
|             | ,                               | श्री गजाघर प्रसाद, आ                         | नेबुद | r,   |         | ایم آلے ایل ایل بی                    |  |
|             |                                 | श्री भगवानदास केला                           | _     |      |         | قصادهر برسادا امبشت                   |  |
| 4.          | नागरिक शिका                     | श्री मगवानवास केता<br>भी दवाशंकर दुवे        | 1     | 8    | 0,      | پهکوان داس کیلا<br>شری پهکوان داس کیا | ناگرک شکما                               |
| 5.          | राश्ट्र मंडल शासन               | भी द्याशंकर दुवे                             | 1     | 8    | 0       | ديا شلكر دوي                          |  |
|             | जवानी                           | महात्मा मगवानदीन                             | 3     | 0    | 0       | دیا هلکر دویے                         | راغاتر منذل غاسن                         |
| 7.          | सारवे की हिम्मत !               | ))   | 1     | 0    | 0       | مهاتما بهكوان دين                     | جوانو                                    |
|             | सकोग सप                         | -  | 0     | 8    | 0       | 79                                    | مارئے کی هست آ                           |
|             | मेरे साथी                       | D  | 1     | 0    | 0       | 19                                    | am lista                                 |
|             |                                 | का पता                                       |       |      |         | 19                                    | میرے ساتھی<br>میرے ساتھی<br>ملیے کا پچہ— |
|             |                                 | मैनेजर '                                     | 'नया  | Ro   | đ,      | مهلهجو انها هلدا                      |  |
|             |                                 | 140, स्वीगंग, इ                              | N FET | CIT. | 3       | معبى كلي العاباه في                   | Am                                       |

### 

# सांस्कृतिक साहित्य

سانسكوتك ساهتيه

# हजरत मोहम्मद और इसलाम

लेखक—पण्डित सुन्दरलाल, मृज्य—नीन रूपया इसलाम के पैग्म्बर के सम्बन्ध में भारतीय भाषाओं में इस से मुन्दर कोई दूसरी पुस्तक नहीं

हजरत ईसा और ईसाई धर्म

लेखक-पिन्डत सुन्दग्लाल, मूल्य-डंद रूपया

महात्मा जरथुस्त्र श्रोर ईरानी संस्कृति लेखक—विश्वमभरनाथ पांड, कीमन—दं कपया

यहूदी धर्म और सामी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पाड, कीमत—दो कपया

प्राचीन मिस्र की सभ्यत। श्रीर संस्कृति लेखक—विश्वमभरनाथ पांड, कीमत—दो रुपया

मेर वाबुल और असुरिया की प्राचीन संस्कृति

लेखक-विश्वम्भग्नाथ पांड, क्रीमत-दो रुपया

प्राचीन यूनानी सभ्यता ऋार संस्कृति

लेग्वक—विश्वम्भरनाथ पांड. कीमत—दो रुपया

#### गंगा से गामती तक

( प्रगतिशील कहानी संप्रह् ) लेखक—श्री सुनीव रिजवी. कीमन—दो स्पया

आग ऋं।र आंस

( भावपूने सामाजिक कहानियाँ )

तेम्बक—डावटर अस्तर हुसेन रायपुरी, कीमत—डेंद्र रुपया

्कुरान ऋोर धार्मिक मतभेद

तंग्वक-मौलाना अबुलकलाम आजाद, क्रीमत-डेढ़ कपया

भंकार

( प्रगतिशील कवितात्रों का मंग्रह ) लेखक—रघुपति सहाय किराक़, कीमत – तीन रूपया حضوت محمد اور إملام

ليكهك - يقدت سدر الأن موايد - دبعي رويه

اسلار کے پیرماو کے سمائدہ میں جاردیہ بیاشاؤں میں اس سے سے سائدر ہوائی دوسری بسائک تھیں

حضرت عيسي اور عيسائى دهرم لينهك --بندت سدر الل مواية -- ديوة روبيه

مهاقها زر قیسقر اور ایرانی سفسکرقی لیدهد - بشرمهر نابر دندین

دیم در مامی سفسکرتی لیکیک رشومهر نابه باندین فیمت دو رویه،

پراچین مصر کی سبهیتا اور سنسکرتی لیکهک-وشومهر ناب پاندے میست-دو روپیه

سمير بابل اور أسوريا كى پر اچين منسكر قى ليكيك دروبه

پراچین برنانی سبهیتا اور سنسکرتی لیکهکسرشوسهر نانه داندے نیست در روید

گدگا سے گومتی تک

( پرگتی شیل کہانی سنوہ ) لیکیک - شری منجیب رضوی عیمت - دروبیع

أگ اور انسو

( بهاو پورن سمآجک کهانیان )

ليكيك سدادنو احتر حسين رائم پورى ميمت - دروه روييه

قرأن اور دهارمک مصبهید

ليكهك ــمولانا أبوطام أزان عيمت ــتيوه روييه

جهنكار

( پرگتی شیل جوبتان کا سنکوہ ) ایکھک رجوپتی سہائے فراق ' میدمت تیس رویعہ

मिलने का पता स्पृष्ट्यं

# हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी हैं। कलचर सोसायटी हैं।

145 متهی گنیم الهآباد अमुद्रीगंज, इलाहाबाद مانیم گنیم الهآباد

# द्विन्दी घर

هندي کور

कलचर पर हर तरह कीं कितावें मिलने का एक बड़ी केन्द्र--पाठक हिन्दीं, उद्रं, **अंग्रेजीं की अपनी मन-पसन्द किताबीं** के लिये हमें लिखें।

हमारी नई कितावें

महात्मा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी श्रीर उद् में ) लेखक—गान्धीवाद के माने जाने विद्वान : श्री मंजर श्रली सोहना सके 225, क्रीमन दो काया

> -: : :--गान्धी वाबा

( बच्चों के लिये बहुन (दलचम्य किताब ) लेखिका-कृदिनया जैदी भूमिका-पन्डित जवाहरलाल नेहरू मोटा काराज, मोटा टाइय, बहुन-मी रंगीन नसवीरें दाम दो रूपया

— : o : —

पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी किताबें

गोता और करान

275 सके. दाम ढाई रूपया

हिन्दू मुसलिम एकता

100 सके, दाम बारह आने

महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक्र

क्रीमत बारह आन

पंजाब हमें क्या सिखाता है

क्रीमत चार श्राने

बंगाल ऋौर उससे सबक्र

क़ीमत दो आने

न्दुस्तानी कलचर सोसायटी

بإنصرابها إنصراب

145 मुद्रोगंज इलाहाबाद

کلچر پر هر طرح کی کتابیں ملنے کا ایک برا کیندر\_\_یاتیک هندی اروو' انگریزی کی من پسند کتابوں کے الي هدي لكهيل.

ههاري نئي كتابيل

مهاتها کاندهی کی وصبت

(عندی اور آردو میس) لیکھک۔۔۔گافدھے واد کے مانے جاتے ودوأن: شرى منظر على سوخته مفتحے 225 نیست دو روپیه

لأندهي بابا

(بحوں کے لئے بہت داھیسپ کتاب)

ليكهكا—قدسية زيدي

بهوه کا-یندت جوانفر ال نهرو

موقًا كاءن موقًا قَانَب البهت سي رفكين مصويرين دأم دو روييه

ينذت سندرلال جي کي لکبي نتابيم

عيتا اور قران

273 صفحے كأم تمائي رويه

هندو مسام ايكتا

100 صفحے دام بارہ آنے

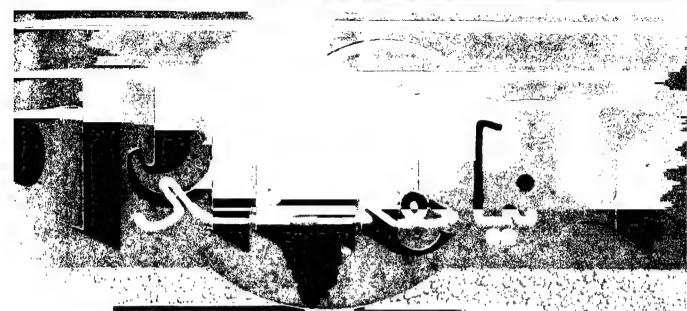
مہاتما کاندھی کے بلیدان سے سبق

پنجاب همیں کیا سکھانا ہے

ہنگال اور اُس سے سبق

هندستاني كليجر سوسائتي

145 متي كنبر أغاباد





# इस नम्बर के ख़ास लेख धर्म और राजनीति

-- डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त चीनी इलाज का तरीका और द्वाएँ --श्री लृ-चिह-चुन नातन (कहानी)

-श्री जिन्नावानी बुकेशिन्नो दहाती दवासाना (एकांकी नाटक) —श्री विद्याभूषण मिस्र एम. ए. एल-एल. बी.

भारतीय योजनावन्दी में प्रामोद्याग का महत्व --श्री सुरेश रामभाई

इसके ऋलावा

# اِس نبیر کے خاص لیکھ دھرم اور راجنیتی

-ذأكار بهوبيندر تانه دت چینی علام کا طربقه اور دوائیں -شری لوچه - چن مانن ( کہائی )

ــشى جيؤ وأنى بوكيشيو د باتی دواخانه ( ایکامی ناتک) -شبی ودیا بهوشن مصر ايم اے ايل ايل بي. بهارتية يهجا بندى مين گرلمودیوگ کا مهتو سشمى سريص رامههائي

إسكم علاوة

देस विदेस के मसलों पर हमारी राय में जरूरी सम्पादकी नोट دیس بریس کے مثلوں پر هماری رأئے میں ضروری سمهادکی توق

or otherwise a second of the s



# NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

#### Editorial Board

Dr. Tara Chand M.A., D. Phil. (Oxon)

Mahatma Bhagwan Din

Dr. Syed Mahmud, M.A., Ph.D., Bar-at-Law

Pandit Sundarla!

Bishambhar Nath Pande

### Editor-in-Charge

Bishambhar Nath Pande

#### Asst. Editors

Suresh Ramabhai Mujib Rizvi

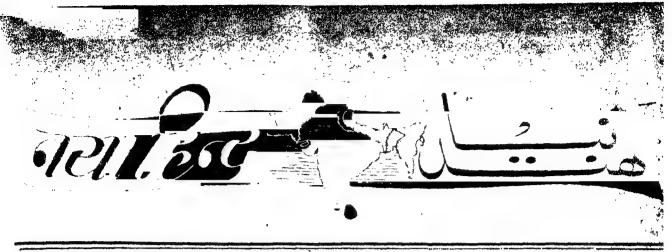
## **Annual Subscription**

Inland Rs. 6/-Foreign Rs. 10/-Single Copy As. /10/- only

Can be had from -

# Manager, NAYA HIND

145. MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.



जिल्द 21 ك

नम्बर 2



फरवरी 1956 ७११९

# जनवरी 1956 रं१९७७

| न्या        | किस से   | सफ् | منصا |      | کیا کس سے  |
|-------------|--|-----|------|------|--|
| 1,          | धर्व और राजनीति  |     | •    |      | 1. دهرم اور راجنیتی  |
| 1           | डाक्टर भूपेन्द्रनाथ द्त  | ••• | 63   | •••  | ــــــــــــــــــــــــــــــــــــــ   |
| 2,          | चीनी इलाज का तरीक़ा और दवाएँ   |     |      |      | 2. چینی علم کا طریقه اور دوائیں  |
| 1           | भी सू चिह-चुन  | ••• | 72   | •••  | حثری لو چه - چن  |
| 3.          | म्रहम्मद साहब की कुछ हदीसे   |     |      |      | 3. محد ماحب كى كچم حديثين  |
|             | अनुवादक श्री मुजीब रिजवी   | *** | 77   | •••  | -انورادک شری معهیب رضوی  |
| ~ <b>4.</b> | रूसी बञ्चे   |     |      |      | 4. روسی ہنچے   |
|             | अनुवादक श्री मुहन्मद हैदर  | ••• | 80   |      | مانورادک شری محمد حیدر   |
| 5.          | नातन (कहानी)   |     |      |      | 5. نانن ( نهانی )  |
|             | श्री जित्र्योवानी बुकेशिक्यो   | ••• | 83   | ***  | سشرى جيى وانى بوئيشيو  |
| 6.          | देहाती दवाख़ाना (एकांकी नाटक)  |     |      |      | 6. دیهاتی دواخانه (ایکامکی ناتک)   |
|             | श्री विद्यामूष्या मिस्र एम. ए. एल-एल. बी.  | ••• | 88   |      | شوی ودیا بهوشن مصر<br>ایم . اے . ایل . ایل . ہی .  |
| 7.          | मारतीय योजनाबन्दी में प्रामीधीग का महत्व   |     |      |      | 7. بهارتیه یوجنا بندی میں کرلم دیوک کا مهتر  |
|             | —श्री सुरेश रामभाई   | `   | 93   | ***  | شری سریف رامهائی ·   |
| 8.          | इमारी राय-   |     | 99   | **** | 8. هماري رائے۔۔۔   |
| ,           | पशिया की एकता के लिये हैदराबाद कुल<br>हिन्द कानफरेंस; मानव एकता के शुभ प्रयत्न,<br>बरादाद का सममौता और पाकिस्तान;<br>नए चीन में जनीन की न्यवस्था; दिल्ली की<br>तुमायश और 'नव जीवल'; ऐलोपैथी और<br>दूसरे इलाज के तरीके—सुन्दरलाल;<br>बाचार्य नरेन्द्रदेव; काजी मोहन्मद अब्दुल |     |      |      | ایشیا کی ایکتا کے لئے حیدرآباد کا کل ھند کانھند کانھرنسی؛ مانو ایکتا کے شبع پریتن؛ بنداد کا سمجھرت اور پاکستان ؛ نئے چین میں زمین کی نمایش اور نوجیوں؛ ایلوپیتھی اور دوسرے علاج کے طریقے سندر الل؛ آچاریة نویندر دیر؛ قاضی محمد عبدالنفار۔۔۔ |
| , ,         | गपकार—विश्वन्भरनाथ पांडे.  |     |      |      | وهومبهر ناته ډائدت .   |

# हाक्टर भूषेन्द्रनाथ इत्त

[ 2 ]

Γ<sub>2</sub> 7

دَاكِتُر بهرييلدر ناته دت

يهل ليك ميں الله جو مثالين دي گئي هيں أن سے هماري سنجه میں آسکتا ہے که دھرم راچنیتی کے باہر کی چیز نہیں . یرانے رسانے اور منہجیلے زسانے میں اوک معرم کو زاجنیتی کا أيك أيائه سمجهكر ويوهار مين التي ته . أسى الله وجهتا لوك ھارمی ہوئی جا تیوں کے دھرم استھان اور اُن کی دھارمک کتابیس ہرباد کردیتے تھے ۔ هاری هوئی جاندوں کے دلیں سے پرائی يادكاروس كو ممالئ كا سب سے أجها طريقه يه سنجها جاتا تها كه أن كا مذاب تبديل كرديا جائه ، عربوس دوارا جهتى هوئى مسلمان دنیا اینے پرانے اِتہاس کو بھول سی گئی ۔ اِسی طرح أیئے مذھب کو چھوڑکر بھارت کی ھندو سنتائیں کچھ تو اِینکلو إندين هوكثين أور كجه باكستاني بن كثين . إسى طرح مدهيه یا میں شیلیندر سامراجیہ کے اندر فلیھائی دویپ سموہ تھا لیعی آب فلیہائی والے اینا أتیت بهول کر یورودیہ سبهیا کے ساتھ هي أينا تعلق جرزيم هين . قسمت كي بات كه جن إسهينيون نے نلیپائلوں کو جیتا تھا اُنھوں نے اکھا ہے که "اِس اِستھاں کے لكن كا دهرم اچار ويوهار آنين لهي وغير بهارتيه تهي ." اُجمل کے امریکن ودوائوں نے اپنی کھوجوں سے یہ ثابت کیا ہے کہ ایک زمانے میں یہ جگہ بھارتیہ سبھیتا کے اثر کے اندر تھی . اس کے علاوہ مندا ناؤ (Mindanao) ثایر کے رہنے والے جو خوں کے لحاظ سے شدھ بھارت واسی ھیں ' آج بھارت کے ساتھ اینے خون کے تعلقات بھولے ہوئے میں .\*

سنسار کے سبھی مذھبوں نے شروع میں anthropological شکل میں جنم لیا ۔ اینتھرا پالاجیکل کا مطلب ہے کہ جانئییتا کے پرکش کے ساتھ ساتھ اُسسے طرح طرح کے اعتقاد اور افرشتھاں اور پرتشتھاں پیدا ہوتے ہیں۔ مثال کے طور پر اِنقو - یوروپھی زبان یولنے والے یعلی اُریء بھاشا بولنے والے پہلے ایک ساتھ رہتے تھے' سب کی ایک ھی کلچور اور ایکسے آچار وچار تھے ، اُس کے بعد وہ اپنی الگ الگ ایمیویکٹی کے لئے الگ الگ ھرکئے ، اِسی سے الگ الگ قرمیں بی گئیں اور اُن

पहले लेख में कि जो मिसालें दी गई हैं बनसे हमारी समक में जा सकता है कि घर्म राजनीति के बाहर की चीज नहीं. प्रयाने जमाने और मंमले जमाने में लोग धर्म को राजनीति का एक उपाय सममकर व्यवहार में लाते थे. इसीलिये विजेता लोग हारी हुई जातियों के धर्मस्थान और वनकी धार्मिक कितावें बरबाद करदेते थे. हारी हुई जातियों के विलों से परानी यावगारों को मिटाने का सबसे अच्छा तरीका यह सममा जाता था कि चनका मजहब तब्दील कर दिया जाय. अरबों द्वारा जीती हुई मुसलमान दुनिया अपने पुराने इतिहास को भूल सी गई. इसी तरह अपने मजहब को बोड़कर भारत की हिन्दू सन्तानें कुछ तो एंग्लो-इन्डियन होगई' और कुछ पाकिस्तानी बन गई'. इसी तरह मध्य युग में शैलेन्द्र साम्राज्य के अन्दर फिलिपाइन द्वीप समृह था लेकिन आत फिलिपाइन वाले अपना अतीत मुल कर यूरोपीय सम्यता के साथ ही अपना ताल्लुक् जोंदते हैं. किस्मत की बात कि जिन स्पेनियों ने फ़िलपाइनों को जीता था उन्हों ने लिखा है कि-"इस स्थान के लोगों का धर्म, आबार-व्यवहार, आईन, लिपि वरौर भारतीय थी." आजकत के अमरीकन विद्वानों ने अपनी सोजों से यह साबित किया है कि एक जमाने में यह जगह भारतीय सम्यता के असर के अन्दर थी. इसके अलावा मिन्डानाव (Mindanao) टापू के रहने वाले, जो खून के लिहाज से शुद्ध भारतवासी हैं, आज भारत के साथ अपने जून के ताल्लुकात भूले हुए हैं.\*

संसार के सभी मेजहबों ने शुक्त में an anthropological शक्त में जन्म लिया. एन्यापालिजिकल का मतलब है कि कातीयता के प्रकाश के साथ साथ उसमें तरह तरह के एतकाद और अनुष्ठान और प्रतिष्ठान पैदा होते हैं. मिसाल के तौर पर इन्हों-यूरोपियन ज्वान बोलने वाले यानी आर्य भाषा बोलने वाले पहले एक साथ रहते थे, सब की एक ही कल्बर और एक से आबार विचार थे, उसके बाद वह मपनी कल्वम अलग अनिक्यक्ति के लिये अलग अलग हो गवे. इसी से अलग अलग कीमें बन गई और उन

-Wigmore: Legal Panorama of the world.

<sup>-</sup>Athropological Report of the Philipine Island.

نرس کے اللہ اللہ ساندک اچار رچار ہیں گئے۔ بونالیوں کے مہاکلویہ ( هومر کے الید اور ااردیس )) پرهموسطیاری می میں یه وجار نہیں اُٹینا که هم کسی نير قيم كا مهاكاويد يوه رهه هين ، أن كا يرلوك إيك هرا بھرا میدان ہے جہاں پریتانما نواس کرتے ھیں ، رگوید کے الهجوره المنا لوك المك استهان مين نواس كرتے هيں ا أس كے لئے يہلے 'پوروجام' كا أصول قايم كيا گيا اور تب ديوجن اور بنت لوک کا . أينشد مين اِس کي نئي وبائهيا دي گئي ہے 🖈 اِسی طارح یونائی' رومن اور بھارت واسیوں کی cult of the dead (مردوں کا سنسکار ) کے ذریعے نئی داه برتها بنائي گئي جو 'urn burial' يمني ملكے ميں أستههال رکهتو ملتی میں دفن کرنے کی پرتھا کہلاتی ہے ، عومو دوارا بیان کی هرنی "پیرا کولس" (Patracolus) ارر اچیلیه' (Achilleus) شوداه اور استهی رسرجون کی برتها اور ويدك يرتها جس كا يبرأ بيان همين اليتربثه أرنيك اور <sup>7</sup>آیسته به سوترا میں ملتا هے آس میں کرنی افتر نہیں دکھائی دیتا ( اِن میں ریدک برتھا کے مقابلے میں بونانی پرتھا آدھونک رتها هے ) . ویدک پرتها اور آجال کی هذرو داه پرتها سیل بھی كتنا ذرق ير كيا هـ . إلى استهى سنجينه كا رواج أب با على أرا ديا گیا ہے . رگھونلدن کے ''شدھی تتو'' میں اُس کا برائے نام ذکر ہے ليمن لوگ أس كا مطلب تك نهين سمجيتي . گنگاجل مين استهی کا ایک تعوا چهروکر یه سمجها جانا هے که مرت آنیا کے لئے سورگ کی سیوھی تیار کردی گئی ۔

ابتدائي يگ مين مائو سموة ايک تها ليكن جيسم جيسم اِنسائی سمآج میں ترقی ہوتی گئی ریسے ریسے اُن میں آہسی فرق بھے ہوھتا گیا ، اِس لیے ویدک کال ویدک کال کے بعد کے زمانے یا موجودہ زمانے کے رواجوں کو همیں سفاتی رواج نہیں سنجها چاھئے . هر زمالے میں سبهینا کے دربورتن کے سانے ساتے هندو یا اهندوں کے مذہبی اعتقاد یا دھرم وشواس آچار ویوهار ارد الهشتهان يرتشتهان زمالي كي أيدوكنا كو دعيان مين ركوم تبدیل هوتے رهتے هیں . همارے انده وشواس کے کارن هی رگہوتلدی نے رگوید کے جعلی شلوک ہمارے سامنے رکھے ، اُس کے پیچھے آرتم نیتک کارن تھے آسی اللہ اِن جملی شلوکوں کی رچنا كى كئى. اسى كے سمرتبن كے اللہ ية جعلى شلوك بنائد كئے ، اس کے چار سو سال بعد کلکتے کے کچھ پنڈتوں اور راجا رام موھن رائے لے

क्रीमां हे चलग चलग सामाजिक चाबार विवार वन गये. मुनानियों के महाकान्य (होमर के 'ईलियड' और 'बांडेसी') पहकर हमारे मन में यह विचार नहीं उठता कि हम किसी गैर क्रीय का महाकाव्य पढ रहे हैं. उनका परलोक एक हरा भरा मैदान है जहाँ प्रे तात्मा निवास करती हैं. ऋग्नेद के 'देवजन' 'पिन्ट लोक' नामक स्थान में निवास करते हैं. इसके लिये पहले 'पूर्वजनम' का उसल कायम किया गया और तब देवजन और पिन्ट लोक का. उपनिषद में इसकी नई व्याख्या दी गई है. इसी तरह यूनानी, शेमन और भारतवासियों की cult of the dead (सरदों का संस्कार) के जरीये नई वाह प्रथा बनाई गई जो 'urn burial' यानी मटके में अस्थियाँ रखकर मिक्री में दपन करने की प्रथा कहलाती है. होमर द्वारा षयान की हुई 'पैटाकोलस' (Patracolus) और 'अविलिक' (Achilleus) शबदाह और अस्थि विसर्जन की प्रथा और वैदिक प्रथा जिसका पूरा बयान हमें 'ऐत्तरेय भारएयक' भीर 'भापस्तम्भ सूत्र' में मिलता है उसमें कोई अन्तर नहीं दिखाई देता (इनमें वैदिक प्रथा के मुकाबले में जुनानी प्रथा आधुनिक प्रथा है). वैदिक प्रथा और आजकल की हिन्दू दाह प्रथा में भी कितना फरफ़ पद्गाया है. इ अस्थि सञ्जय का रिवाज अब बिलकुल उड़ा दिया गया है. रघुनन्दन के "शुद्धि तस्व" में उसका बराय नाम जिक्र है लेकिन लोग उसका मतलब तक नहीं सभभते. गंगाजल में श्रहिथ का एक ट्रकड़ा होड़ कर यह समका जाता है कि मुनात्मा के लिये स्वर्ग की सीढी तच्यार कर दी गई.

इन्तदाई युग में मानव समृह एक था लेकिन जैसे जैसे इनसानी समाज में तरक्षकी होती गई वैसे वैसे उनमें आपसी फ्रफ़ भी बढ़ता गया. इसीलिये वैदिक काल, वैदिक काल के बाद के जमाने या मौजूदा जमाने के रिवाजों को हमें सनातन रिवाज नहीं समभाना चाहिये. हर जमाने में सभ्यता के परिवर्तन के साथ साथ हिन्दू या अहिन्दुओं के मजहबी एतक द या धर्म-विश्वास, श्राचार-व्यवहार श्रीर अतुष्ठान-प्रतिष्ठान जमाने की उपयोगिता को ध्यान में रसाकर सब्दील होते रहते हैं. हमारे अन्ध विश्वास के कारत ही रघुनन्दन ने ऋग्वेद के जाली श्लोक हमारे सामने रखे. इसके पीछे अर्थ नीतिक कारन थे इसीलिये इन जाली रलोकों की रचना की गई उसी के समर्थन के क्रिये ये जाली श्लोक बनाये गये. इसके चार सौ साल बाद कलकते के कुछ पंडितों और राजा राममोहन राय ने

<sup>+--</sup>वेस्नें यजर्वेद.

<sup>1-</sup>देखें छुन्द्योग्य उपनिषद और शंकरा चार्च की दीका.

<sup>6-</sup>देखें चरवलायन का 'प्रहय सूत्र.'

ديكهين يجبرويد .

ديكهين جهانديوكيه أينشد اور شنكراچاريه كي ثيكا . ديكهين أشوائن كا "كرهيه سرتر"،

جابیہ جاتا کے ساتھ کئے ہوئے اِس جمل کو پاوا اُلیدائی میں مجرم کا انگ نہیں ہے ، راشاریہ بھاؤنا کے اُبھاؤ میں یہ یات مسکن ہوئے کہ ہم انوشاہاں کو دھرم کا انگ مالنے کے جانیہ جانیہ کے ابھاؤ میں پروہت ورگ جانیہ جہرں کا اور رہنا ہے اِسی جاتا ہے پروہاں کے اوپر دھلیوں کے دھن کا اور رہنا ہے اِسی اور ساملجک معاملوں میں ہمدود حکومت ودیشیوں دواوا قایم ہوئی تب بہت سے طالعات رواج جیسے ستے داہ گنا ساگر میں پاروں کو جل میں پھینک دینا اور باتوں سے بھیدنا آدی واج اُلین کے ذریعے بند کئے گئے ۔ ﴿

都然的自身多点的人。 **5000 199**0 1990

دھرم اور سماج کو چلانے والا راشتر ہے۔۔یہ بات پوانے زمانے کے لوگ بہت اچھی طرح جانتے تھے ، اِسی لئے مہاجارت میں بودھشتر کو 'دھرم راج' کہدر پکارا کیا ہے ۔

عیسی کی چوتھی صدی میں واکاٹک راجاؤں کے نام کے پہلے 'نھرم مہاراجہ' کی پدوی ہم جوری ہوئی باتے ہیں ، فعین فعرماشوک کے انوشاس میں دنھائی دینا ہے کہ اُنھوں نے دھوم اور سماے کو اپنے آدیشوں کے دوارا نیفارت کیا ، اپنے الیک اُنوشاس میں اُنھوں نے انہا ہے کہ۔''اِسٹریوں کے ساماجک کموں میں بہت سی اشلیل انیں اور کداچار گھس گئے ہیں۔'' اِسی لئے اُنھوں نے اپنے ایک آدیش کے ذریعے ''سماے اور کرتبیہ'' کی بات کہی ۔\* اشوک نے بہتیرے پشوؤں اور پکشیوں کی ہیا تھ کرنے کے سلسلے میں کئی آگیائیں جاری کیں ، کوٹلیہ کے ارتب شاستر سے ہیں دیں معلوم پرتا ہے .

اسی طرح بنگال سے تائیرک کداچاروں کو دور کرنے کے لئے برھموادی بنکیشور برمن راجا کے منتری یهودیوبهٹ نے ایک نیا اسمرتی ودھاں بنایا ۔ وہ ودھاں آج بھی جاری ہے ۔ اِس لئے دگوجئی راجا ٹکشین سین نے شولپانی دوارا رچے ھوئے محسیت سوتر' جاری کئے که طرح طرح کے تائیرک کداچار دور ھوں ۔

راجا سے هی مذهب چلتا هے، يه هر زمانے کی سچائی هے. گردنماک اُس کی کاریکاری ستی هے . پشک جہاں گنوتنتر نہیں هے وهاں راج ستتا چلانے والا 'راجہ' اور اُس کی 'منتری پریشد' هوتی هے . پرائے زمانے کے هندوں کا یہی طریقہ تها . بہت زمانے سے هندوں کی کوئی حکومت نہیں رهی' اسی لئے وہ 'راشتر' شبد کے مطلب و معنے بھول گئے هیں . وے سویتها چاری حکومتوں کے ماتحت ره کر 'گنوتنتر' کا مطلب بھی بھول گئے هیں . مہابھارت کے 'شانتی پرو' میں بھیشم بھول گئے هیں . مہابھارت کے 'شانتی پرو' میں بھیشم کے یودهیشور کو 'لیراجیہ' (Anarchy)' 'گنوتنتر' کا مطلب بھی

भारतीय जनता के झाथ किये हुवे इस जाल का पड़का-अनुष्ठान वर्ष का अंग नहीं है, राष्ट्रीय भावना के अभाव में यह बात सुमकिन हुई कि हम अनुष्ठान को धर्म का अंग मानने लगे. जातीय राष्ट्र के अभाव में पुरोहित वर्ग जातीय जीवन का परिचालक बन जाता है पुरोहितों के उत्तर धनियों के धन का असर रहता है, इसीलिये हिन्दू जाति इस दुवेशा को पहुँची. जब एक जबदेश और सामाजिक मामलों में हमददे हुकूमत विदेशियों द्वारा कृष्यम हुई तब बहुत से जालिमाना रिवाज जैसे—सती दाह, गंगा-सागर में पुत्रों को जल में फेंक देना और बानों से भेदना आदि रिवाज, आईन के जरिये बन्द किये गये \$

धर्म भौर समाज को चलाने वाला राष्ट्र है—यह बात पुराने जमाने के लोग बहुत अच्छी तरह जानते थे. इसीलिये महाभारत में युधिष्ठिर को 'धर्मराज' कहकर पुकारा गया है.

ईसा की चौथी सदी में बाकाटक राजाओं के नाम के पहले 'धर्म महाराजा' की पदवी हम जुड़ी हुई पाते हैं. हमें धर्माशोक के अनुशासन में दिखाई देता है कि उन्होंने धर्म और समाज का अपने आदेशों के द्वारा नियंत्रित किया. अपने एक अनुशासन में उन्होंने लिखा है कि—''रित्रयों के सामाजिक कामों में बहुत सी अश्लील बातें और कदा-चार घुस गये हैं." इसीलिये उन्हों ने अपने एक आदेश के जारये "समाज और कर्तव्य" की बात कही.\* अशोक ने बहुतेरे पशुओं और पित्रयों की हत्या न करने के सिलसिले में कई आक्षायें जारी कीं. कौटिल्य के अर्थ शास्त्र से हमें यही मालूम पड़ता है।

इसी तरह बंगाल से तांत्रिक कदावारों को दूर करने के लिये अझावादी बंगेश्वर वर्मन राजा के मंत्री भवदेव भट्ट ने एक नया स्मृति विधान बनाया वह विधान आजभी जारी है. इसीलिये दिग्विजयी राजा लक्ष्मण सेन ने शूलपाणी द्वारा रचे हुये 'मत्स्य सूत्र' जारी किये कि तरह तरह के तांत्रिक कदावार दूर हों।

राजा से ही मजहब चलता है, यह हर जमाने की सचाई है. गवर्नमेंट उसकी कार्यकारी समिति है. बेशक जहाँ गणतन्त्र नहीं है वहाँ राज सत्ता चलाने वाला 'राजा' और उसकी 'मंत्रि परिषद' होती है. पुराने जमाने के हिन्दुओं का यही तरीका था. बहुत जमाने से हिन्दुओं की कोई हुकूमत नहीं रही, इसीलिये वे 'राष्ट्र' शब्द के मतलब व माइने मूल गये हैं. वे स्वेच्छाचारी हुकूमतों के मातहत रहकर 'गणतन्त्र' का मतलब भी मूल गये हैं. महाभारत के 'शान्तिपर्व' में भीष्म ने युधिष्ठिर को 'नैराज्य' (Anarchy), 'गणतन्त्र'

<sup>\$-</sup>Digby's Prospero us British India.

<sup>\*—</sup>इस सिलसिले में देखें 'शुक्त यजुरे द' में पुनर्विवाह की तफ्सील.

أس سلسلے میں دیکھیں اشکل یجروہد میں پاروواہ کی تنصیل .

اس طرح رأشتر كو كهوكر هم أينے بهت يرائے زمانے سے جمهوريت يعنى گلزائلر كے معنے ہي بهول بياتھ . سوجانى ایک واقتنتر کے سوروپ کو چلانے کے بھی مم ناقابل میں ، اسی لئے ہم پررھتوں اور تھاکروں کی 'جماعت' کو ھی اپنے سماے اور راشلو كا جلال وألا سمجه بيله . ليكن هم يه بهول جات هين که یعد کے تیندہ لکھنے والی کے بعد بھی راج شکتی موجود تھی۔ شعتی والی راجاؤں کا سہاراً پاکر خوشامدی لوگن کی اِسمرتیاں چلنے لگئی تھیں . سلطانوں کی حکومت کے سے جو اِسدتیاں لعمى كثين مقامى راجا لوك أن كو مانئينا ديته أنه . راج شکتی کے بنا لوک سماہ میں کوئی ویوستھا نہیں چلتی " بنگال میں ملدو شاس کال کے اوسان کے سمے جو نئی اسموتیاں چالو هوئیں اُنھیں بنگال کے کایستھ راجاؤں نے سمرتھی دیا ۔ یلتس هر پرساد شاستری نے یہی انها کے ، اسی لئے رکبو نندن کی لکھی ہوئی نئی اسموتی بنکال میں سب جانیوں اور سب استهالس ميں مانيه نهيں هے . شرى هك ( سابك ) ميں پرائی اِسمرتی اب بھی چالو ہے. رھاں بلال کی تاہا کتبت پرتھا بھی پرچلت نہوں ہے ، پرروی بنگال اور وکرمپور میں بھی رکھو للدن کی اِسدرتی جااو تہیں ہے . گوریه ویشنوں کے لئے چیتلیه دیوا سناتی گرسوامی اور گوپال بهت نے اپنے ششیوں كى عليحدة وبوستها كى عرض سے نشى إسمرتى لكهائي، يه نشى اسموتی هـــدورهی بهکتی ولاس " بنگاله سماج میں رگهو تندین دی "اشقا ولشتی تلوال کی درتیدولندی یه لئی اِسمرنی المری بیات رقس" ہے ۔ ویشنو گرؤں اور ویشنو راجائی نے اِسے هدو سماج میں چالیا . "بنگال کے زیاد "ر هندو اِسی اِسمرتی کو مان کر چلتے ھیں .

مسلم کال ملیں جو جہاں کا راجہ ہوتا تیا وہی اپنے یہاں کی اسمرتی تھار کرتا تھا ۔ اِس کے اٹھ زیادہ دور جانے کی ضوررت تہیں ۔ اس کی مثایی پشچمی بنگال میں هی مل جائینگی ۔ باتکورا ضلعے کے راجپوت بعدر جنوں نے ( کالکریس نیتا سررگیہ گروند چندر سنگھ رفیرہ) لیکھک کو ایکبار کیا تھا۔ ۔ 'دھم راجپوت هیں' مائس چھرکر همارا کیانا تبھی چیار همارا کیانا تبھی چیارک همارا کیانا تبھی جلتا' همارہ بیچ میں گرسوامی ٹھاکر چیننیہ دیو کا الفساوادی مت جانے کیسے چالو ہوگیا ہ'' الیکھک نے

(Democracy) की बुराइयाँ दिकाकर 'एक राटत्व' या 'दाजतन्त्र' की सुविधायें दिकाई' किर गणतन्त्र की कमजोरी की मिसाल के तीर पर चर्चा की. 'छव्ण-नारद-संवाद' अध्याय में गण परिवद में श्रीकृष्ण की जो दुर्रशा हुई वह उन्होंने नारद को सुनाया. 'बलभद्र अपने बल में चूर हैं, गइ (श्रीकृष्ण का छोटा भाई) अपनी कोमलता में मजबूर हैं, प्रबुक्त अपनी सुन्दरता पर मगरूर हैं और मैं लाचार हूँ, प्रकृर और उद्धव की अपनी सलग-सलग पार्टियाँ और एक हैं. ये जिसके कन्धों पर लदते हैं उसका बस सर्वनाश सममो और मुमे सबकी गालियाँ खानी पढ़ती हैं."

इस तरह राष्ट्र को खोकर इस अपने बहुत पुराने जमाने से जम्हरियत यानी गणतंत्र के माइने भी भूल बैठे. स्वजावी एक राट तन्त्र के स्वरूप को चलाने के भी हम नाकाविल हैं. इसीलिये हम प्ररोहितों और ठाकुरों की 'जमात' को ही अपने समाज और राष्ट्र का चलाने वाला समम बैठे. लेकिन इग यह भूल जाते हैं कि बाद के निवन्ध लिखने वालों के बाद भी राजशक्ति भौजूद थी. शक्तिवान राजाओं का सहारा पाकर खुशामदी लोगों की स्मृतियाँ चलने लगती थीं. युक्ततानों की हुकूमत के समय जो स्मृतियाँ लिखी गई मुकामी राजा लोग उनको मान्यता देते थे. राजशक्ति के बिना क्रीफ समाज में कोई व्यवस्था नहीं चलती. बंगाल में हिन्दू शासन , काल के अवसान के समय जो नई स्मृतियाँ वाल हुई उन्हें बंगाल के कायस्थ राजाओं ने समर्थन दिया. पंहित हरप्रसाद शास्त्री ने यही लिखा है. इसीलिये रघुनन्दन की लिखी हुई नई स्मृति बंगाल में सब जातियों और सब स्थानों में मान्य नहीं है. श्रीहट्ट (सिलहट) में पुरानी स्मृति अब भी चालू है. वहाँ बस्लाल की तथाकांथत प्रथा भी प्रचलित नहीं है. पूर्वी बंगाल और विक्रमपुर में भी रघुनन्दन की स्मृति चालू नहीं है. गौड़ीय वैष्णवों के लिये चैतन्य देव. सनातन गांखामी और गोपाल भट्ट ने अपने शिष्यों की अलहदा व्यवस्था की रारज से नई स्मृति लिखाई. यह नई स्मृति है—''हरि भक्ति विलास''. बंगाला समाज में रघुनन्दन की ''अध्दाविशति तस्त्र'' की प्रतिद्वनदी यह नई स्मृति "हरिभक्ति विलास" है. वैष्णव गुरुष्टों श्रीर वैष्णव राजाश्रों ने इसे हिन्दू समाज में चलाया. बंगाल के ज्यादातर हिन्दू इसी स्मृति को मानकर चलते हैं.

मुसलिम काल में जो जहाँ का राजा होता था वही अपने वहाँ की स्पूर्ण तैयार करता था. इसके लिये क्यादा दूर जाने की फरूरत नहीं. इसकी मिसालें पश्चमी बंगाल में ही मिल आयेंगी. बाँकुड़ा जिले के राजपूत महजनों ने (काँमेस नेता स्वर्गीय गोविन्द्चन्द्र सिंह वरीरह) लेखक का एक बार कहां था:—"इस राजपूत हैं, माँस झोड़कर हमारा खाना कहीं चलता, हमारे बीच में गोस्त्रामी ठाकुर चैतन्य देव का आहें साबादी सत जाने कैसे चाल हो गया १" लेखक ने

الی کا جوانی دیتے هوئے کیا بداوانیا لوک ویشاورالیانی کوئے کے کی خاتوں کوئے آئے اور ان کے راج میں باس کوئے کے چارپرورپ آپ کے اوپر اگویال سلم کی بیکار تیوپ نواس گوسواسی کے ملتو ششیء عولے کے بعد ان کے راج میں گوریء ویشاو دھرم کی پردھانتا ھوئی، وشاہور کو اگریت ورنداوں" کہر پکارا گیا، پشتھم سے آئے ھوئے راجپرت بنگال کے ادایہ بھاک' آئیں اور اھری بھکی والس' ودھاں کو تیول کوئے کے لئے مجہور ھوئے، وشاہور راج ونش کے پروھت تیول کوئے کے لئے مجبور ھوئے، وشاہور راج ونش کے پروھت گائولی مہائٹے لے لیکھک سے کہا تھا۔"ار اھمان اور کایستیوں کے جو آچار ھیں وھی آچار راج پریوار میں بھی پرچات کے جو آچار ھیں وھی آچار راج پریوار میں بھی پرچات بھیں۔"'یسھمن راجا تسیمن پرچا" یعلی پرجا راجشکئی کی بھیں۔"' ''یسھمن راجا تسیمن پرچا" یعلی پرجا راجشکئی کی

یہاں یہ سوال آنہایا جائیگا کہ پھر ھم ھر بات میں دھرم سے جہورے ھوئے کیوں ھیں آ یہ بھی سے ہے ۔ چانکیہ آنہوا کوٹلھہ کے ارتب شاستر کے 'یدھ پرکری' ادھیائے میں آنہور وید کی تعلاو کا آلیکی ہے ۔ اِسی اگیاں کے کارن سکندر کی سینا کے آک بہارتیں کو ھاتب کالئے پرے لیکن بہاس کے ناٹک اور شکرتیتی سار میں اِس کا آلیکی نہیں ہے ۔ آبوروید شاستر میں روگی کا آپریشن کرنے سے پہلے طرح طرح کی پرجاؤں کا ویمان ہے ۔ اپریشن کرنے سے پہلے طرح طرح کی پرجاؤں کا ویمان ہے ۔ بھیوں کے پرسوکال کے سے گھر سے بھوت بھائے کا بھی ودھان ہے ، کوبرائے سے پرچہنے پر وے اس کے لئے بردہوں کو دوھی دیتے ھیں نیکن آبوروید شاستر بودھوں دوارا ھی لکھا گیا رہوکی خرک ناگ اوری آن کی یہ اوریکیانک دشا ھوئی ، ارتب نیتی کی جب پردھانی اور اُن کی یہ اوریکیانک دشا ھوئی ، ارتب نیتی ہے ۔ یہ پستعیں پریس اور اُن کی یہ اوریکیانک دشا ھوئی ، ارتب نیتی ہے ۔ یہ شاستر میں براھمنیں کی ھی پردھانیا دکھائی دیتی ہے ۔ یہ شاستر میں براھمنیں کی ھی پردھانیا دکھائی دیتی ہے ۔ یہ شاستر میں براھمنیں کی ھی پردھانیا دکھائی دیتی ہے ۔ یہ شاستر میں براھمنیں کی می بردھانی گئیں ، اِسی لئے آنہوں سب کتابیں پروھتوں کے ذریعے لکھی گئیں ، اِسی لئے آنہوں سب کتابیں پروھتوں کے ذریعے لکھی گئیں ، اِسی لئے آنہوں سب کتابیں پروھتوں کے ذریعے لکھی گئیں ، اِسی لئے آنہوں سب کتابیں پروھتوں کے ذریعے لکھی گئیں ، اِسی لئے آنہوں سب کتابیں پروھتوں کے ذریعے لکھی گئیں ، اِسی لئے آنہوں سب کتابیں پروھتوں کے ذریعے لکھی گئیں ، اِسی لئے آنہوں میں براقی کی ۔

جب دیف میں زیادہ در لوگ بیودوف اور یے پڑھے انھے اور چب محدض پروھتوں کے دو ایک آدمیوں میں ودیا اور آلوچفا کا گیاں تھا' جب دیفی کے کوئی کوئی لوگوں کو شودو کہر ودیا سے محدوم کردیا گیا' جب شودو نو معمولی سے تصور میں۔'اُس کی جیبھ کات دو' اُس کے کان میں گرم پہلا ھوا میں۔'اُس کی جیبھ کات دو' اُس کے کان میں گرم پہلا ھوا اور اُسے چھوز دو' 'اُس کے تیٹمبوں کا مانس کات کو پھینک دو' اور اُسے چھائی میں لھیم کو جلا دو' اسان سب کا اُللیک کوئلیہ کو اُسے چھائی میں پایا جاتا ہے ۔ یہ سب پروھتوں کے وید وائیہ نہی اور اُسے ہوئے ۔ راجائی کو بھی اِن پر عمل کوانے کے لئے انہوں کو بھی اِن پر عمل کوانے کے لئے انہوں کو بھی اِن پر عمل کوانے کے لئے حکومت کے خطف شودوری کو سو حکومت کے خطف شودوری کو سو حکومت کے خطف شودوری کو سو گھائے کی تجسے ہوئے تھے تیا حکومت کے خطف شودوری کو سو آئیانے کی تجسے ہوئی راماین والیانے

हसका जवान के हुन कहा: "आप जीन नेन्यन तकाकों की चाकरी करने जाने जीर उनके राज में बास करने के फलस्वस्थ आपके उपर 'गोपालसिंह की नेगार' योप दी गई." बनतिष्णुपुर के मुह्याँ राजा चीर इम्मीर भी निवास गोस्वामी के मंत्र शिष्य होने के बाद उनके राज में गीड़ीं व वैद्याय धर्म की प्रधानता हुई. विद्युपुर को 'गुप्त वृन्दा-वन" कहकर पुकारा गया. पश्चिम से आये हुये राजपूत बंगाल के 'दाय माग' आईन और 'हरिभक्ति बिलास' विधान को कृतूल करने के लिये मजबूर हुये. विद्युपुर राजवंश के पुरोहित गाँगुली महाशय ने लेखक से कहा था— 'जाहायों और कायस्थों के जो आचार हैं वही आचार राज परिवार में भी भचलित हैं." "यस्मिन राजा तस्मिन प्रजा" यानी प्रजा राजशक्ति की पैरोकार होती है. यही ध्रव सत्य है.

यहाँ यह सबाल उठाया जायगा कि फिर हम हर बात में धर्म से जकदे हुये क्यों हैं ? यह भी सच है. चायाक्य अथवा कौटिल्य के अर्थशास्त्र के 'युद्ध प्रकरण' अध्याय में अथवेवेद की तकताब का उल्लेख है. इसी अज्ञान के कारन सिकन्दर की सेना के आगे भारतीयों को हाथ कटाने पड़े लेकिन भास के नाटक और श्रक्रनीति सार में इसका उल्लेख नहीं है. आयुर्वेद शास में रोगी का आपरेशन करने से पहले तरह तरह की पूजाओं का विधान है, बच्चों के प्रसवकाल के समय घर से भूत भगाने का भी विधान है. कविराज से पूछने पर वे इसके लिये बौद्धों को दोष देते हैं लैकिन आयुर्वेद शास बौद्धों द्वारा ही लिखा गया ( जीवक, चरक, नागार्जुन, चक्रपाखि प्रभृति ). त्राद्मखों की जब प्रधानता हुई तो उनके पुरोहितों के हाथों में ये पुस्तकें पड़ी और उनकी यह अवैज्ञानिक दशा हुई. अर्थनीति शास्त्र में ब्राह्मणों की ही प्रधानता दिखाई देती है. ये सन्न कितानें पुरोहितों के जरिये लिखी गईं. इसीलिये उन्होंने अपने गिरोह की इन कितावों में बढ़ाई की.

जब देश में क्यादातर लोग बेवकूक और बेपढ़े लिखे थे, जब महत्त पुरोहितों के दो-एक बादिमयों में विद्या और आलोबना का झान था, जब देश के कोटि-कोटि लोगों को शृद कहकर विद्या से महरूम कर दिया गया, जब शृद्ध को मामूली से कुसूर में—'उसकी जीम काट दो, 'उसके कान में गरम पिघला हुचा शीशा छोड़ दो,' 'उसके नितन्यों का मांस काटकर फेंक दो,' और 'उसे चटाई में लपेट कर जला दो'—इन सबका उस्लेख कौटिस्य के मन्थ में पाया जाता है. ये सब पुरोहितों के वेद बाक्य कहकर ऐलान हुये. राजाओं को भी इन पर अमल कराने के लिये अनुरोध किया जाता था. जब राजा और पुरोहित मिलकर जालि-माना हुकूमत करते थे तब हुकूमत के खिलाफ शृद्धों को सर उठाने की जैसे हिस्सत पढ़ सकती थी ? बास्मीकि रामायण

من العد من برانس كر يتر كي موت كي دمعواري شودر عبوك کے سز پر تھونیاکر دھرم راج رامجادر بنا بجارے اُس کا مستک الله قالته هين . إس ايك مثال سه يد بات اچى طرح سمج میں استی قد که راج شکتی اور پروهت شکتی کا سنجوک کیسا بھیھلر روپ لے سکتا ہے۔ دروهترس کی بے بنیاد باتیں منے منے سے ظاہر ہوتی ہیں ، 'دلیگ میں' مرف آدی اور انت روں ( یعلی براهمن أور شودر ) هی رهینگه ، یعلی سمای میں کیول براهس ( پروهت تفتری لوگ ) و شودر رهینکه و آس شاوک کا الليكه كهيس نهيس ملتا أيسا شرى ويديه كهتم هيس . جب کیول براهدی اور شودر یه دو هی ورن مانے گئے تب دهرم یستمین کو پڑھنے کھنے و گویشنا کرنے کا حتی پھر سرائے براھمنیں کے اور کس کا هوسکتا ہے۔ پہلسروپ دهرم گرنتهوں میں جهوئی ہاتھی پرچھیت کرکے' نگے روپ سے لکھکر اور جعل کرکے بدلنے کا کرم بنا روکے چلنے اگا۔ ویدوں میں 'بال کیلیہ سوتر' سموہ اور السوب سوترا سموہ ہے جعل سازی کرکے شامل کردیٹے گئے ، بہت پرائے زمانے سے لیکر رکھورٹنی مر اور 'اللہ هو اُپنشد' کی رچنا کے سیے تک یہ جمل سانے میں دی عیسائی پادریوں نے یعی إنهيں جملی بانوں وا ماتيكا دكّى ، بائبل كى عيسى كى كتها دوسرے روپ میںویدوں میں اسے بتایا کیا . ریوریند سوارثنو آدى الشويت دويپ ميں آينے كو براهمن كهكو اپنا پرچار كرتے تھے " لیپک نے اِن کی یہ گھرشنا خود پڑھی ہے . کیول أنيسويس فتابدي كے وديشي يندتوں نے پائيس كي تلنا كركے ان جمل سازیوں کو پڑھے لکھے بھارت واسٹوں کے سامنے رکھا . اِن پوروپیه ودوانوں نے مول پائھوں کو شدھ کیا ۔

ویدوں میں جس طرح متبیاچاری پندتوں نے جعل بتہ
کیا اُسی طرح اِسرتیوں میں بھی کیا گیا ، گیارھویں صدی
میں 'متاکشرا' پستک کے لیکھک ''پرمھنس کے اُپاسک''
مہاپرھی جیوتی وگیانیشور رگھو نندن کی طرح ھی ملزم ھیں ،
اُنھوں نے اپنے مت کا سمرتھی کرانے کے لئے ''گرتم سنکہتا'' سے
ایک سوتر اُدھرت کیا ھے۔''سب سے پرانی اِسمرتی میں یہ
لیک سوتر اُدھرت کیا ھے۔''سب سے پرانی اِسمرتی میں یہ
لیکن بھارت کے ایک پردیھی بنگال میں اِس سلسلے میں کانی شردھا نہیں کوئی کسی کی
شردھا نہیں کرتا۔ایسا سمجھا جاتا ھے 'متاکشر' کا پرتی دوندی شردھا نہیں کرتا۔ایسا سمجھا جاتا ھے 'متاکشر' کا پرتی دوندی شردھا نہیں کرتا۔ایسا سمجھا جاتا ھے 'متاکشر' کا پرتی دوندی شردھا نہیں کوئی کسی کی
شردھا نہیں کرتا۔ایسا سمجھا جاتا ھے 'متاکشر' کا پرتی دوندی شردھا نہیں کوئی کسی کی
شردھا نہیں کوئی کے ٹیکاکارشری کرشن ترکائنگار اور بعد میں سوابویں
شتایدی میں اچھوت نامک پندت نے یہ شلوک چالو کردیا
شتایدی میں اچھوت نامک پندت نے یہ شلوک چالو کردیا
تھے نہ آنہوں نے کیا۔''ٹھیک میں نہیں ھے ۔ پرانے زمانے میں
تھے نہ آنہوں نے کیا۔''ٹھیک میں نہیں ھے کنتو منو سنگیںتا کی

कें कालेज है कि प्राथमा के पुत्र की मीत की जिम्मेवारी गर संयुक्त के सिर पर थोपकर धर्मराज रामचन्द्र विना विचारे इसका मस्तक काट डालते हैं. इस एक मिसाल से यह बात जन्मी तरह समक्त में आ सकती है कि राजशक्ति और प्रोहित राक्ति का संयोग कैसा भीषण रूप ले सकता है. पुरोहितों की बे-बुनियाद बातें मुंह-मुंह से जाहिर होती हैं. 'कलियुग में सिर्फ भादि भीर अन्त वर्ण ( यानी आक्राण और शह ) ही रहेंगे.' यानी समाज में केवल बाह्मण ( पुरो-हिस तंत्री लोग ) व शुद्र रहेंगे. इस श्लोक का उल्लेख कहीं महीं मिलता ऐसा श्री वैद्य कहते हैं. जब केवल ब्राह्मगा चौर शह ये दो ही वर्ण माने गये तब धर्म पुस्तकों को पढ़ने. लिखने व गवेषणा करने का हक फिर सिवाय बाह्यणों के और किसका हो सकता है. फलस्वरूप धर्म प्रन्थों में मूठी बातें प्रश्चिप्त करके. नये रूप से लिखकर और जाल करके बदलने का क्रम बिना रुके चलने लगा. वेदों में 'बाल खल्य सूत्र' समृह और 'सर्प सूत्र' समृह ये जालसाजी करके शामिल कर दिये गये. बहुत पुराने जमाने से लेकर रमनन्दन और 'अल्लाहो उपनिषद' की रचना के समय तक यह जालसाजी चलती रही. ईसाई पादरियों ने भी इन्हीं जाली बातों को मान्यता दी. बाइबिल की ईसा की कथा इसरे रूप में वेदों में है-यह बताया गया. रेवरेंड स्वार्ट ज आदि "श्वेत द्वीप में अपने को माह्मण कहकर अपना प्रचार करते थे." लेखक ने इनकी यह घोषणा खुद पढ़ी है. केवल कन्नीसवीं शताब्दी के बिदेशी पंडितों ने पाठों की तुलना करके इन जालसाचियों को पढ़े लिखे भारतवासियों के सामने रखा. इन यूरोपीय विद्वानों ने मूल पाठों को शुद्ध किया.

बेदों में जिस तरह मिध्याचारी पंडितों ने जाल बड़ा किया इसी तरह स्मृतियों में भी किया गया. ग्यारहवीं सदी में 'मिताक्षरा' पुस्तक के लेखक "परमहंस के उपासक" महापुरुष ज्योति विज्ञानेश्वर रघुनन्दन की तरह ही मुलजिम हैं. इन्होंने अपने मत का समर्थन कराने के लिये ''गीतम संहिता" से एक सूत्र उद्घृत किया है-"सबसे पुरानी स्युति में यह लिखा है कि पैतृक सम्पत्ति में पिता पुत्र के इक बराबर होते हैं;" लेकिन भारत के एक प्रदेश बंगाल में इस सिलसिले में काफी उल्टे विचार हैं. बंगाल ऐसा देश है जहाँ कोई किसी की अदा नहीं करता-ऐसा सममा जाता े 'भिताक्षर' का प्रतिद्वन्दी 'दाय भाग' प्रनथ के टीकाकार श्री कृष्या तकलिकार और बाद में सोलहवीं शताब्दी में श्राच्युत नामक पंडित ने यह रहाक चालु कर दिया "अमूल" अशीत असली पुस्तक में नहीं है. पुराने जमाने में यह खुआ-शोरी थी बसे महामहोपध्याय के कान सुनने को तैयार महीं थे. उन्होंने कहा-- ''ठीक ही है किन्तु मन संहिता की

तिका में मेचारियों ने इस व्यवस्था का उस्तील किया है."
लेखक ने जॉब-पक्ताल करके देखा है कि मनु के वचनों का संडम करके मेचारियि ने कहा है—"धावार्यन्य उत्तम".
किन्तु किस धावार्य ने यह कहा है इसका कहीं उस्लेख नहीं है. यह एक जबदस्ती की बात है. इस तरह के कई बचन विज्ञानेश्वर ने कहे हैं जो असली पुस्तक में नहीं हैं. इस तरह बहुत से उद्मट श्लोक जो लोगों में प्रचलित थे उन्हें देद बाक्य और स्युति वाक्य कहकर चलाया गया.
आजकल के नास्तिक खोज करने वालों ने ये सब जालसाजी पकद ली है. यह नई बात नहीं है. यह वैज्ञानिक खोजों का नतीजा है. भी कानेइ ने मंजूर किया है कि गीतम संहिता का एक पूरा अध्याय बाद में जोड़ा गया.

यूरोप में भी मँमले जमाने में इसी तरह की हालत थी. आईन, विज्ञान, तर्कशास्त्र (मन्तक), दर्शन शाक्ष (फुलसफा) करीरह को भर्म के साथ नत्थी कर दिया गया था. जो लोग इसका प्रतिवाद करते थे उन्हें शैतान कहकर या तो जिन्दा जला दिया जाता था (Auto da fa) या देश निकाला दिया जाता था, जर्मन अध्यापक न्याक (Mach) ने लिखा है अठारहवीं शताब्दी के आखीर में विज्ञान धर्म विश्वास की गहराइयों से बाहर आया. अ

जब समाज में सिर्फ पुरोहित वर्ग हो तालीमयाप्ता हो तब हर जगह यही होता आया है कि पुरोहित वर्ग व्यक्ति और समाज को पूरी तरह धम के साथ जकड़ देता है. यूरोप में मध्य युग में दर्शन शास्त्र धर्म का अङ्ग था लेकिन आज ऐसा नहीं है. आज पिछ्छमी दुनिया में दर्शन (Metaphysics) और धर्म तस्त्र (Theology) अलग अलग खोज के विषय हैं. दूसरे देशों में, जैसे हिन्दुस्तान में, दर्शन शास्त्र और तर्क शास्त्र तक धर्म और रायज इसंस्कारों से जकड़े हुये हैं. विदेशी दर्शन शास्त्र (फलसफा) की गूँज ही बंगाल का 'नया न्याय शास्त्र है'.\* इसमें भी कल्पन। से गढ़ी हुई अशरीरी वस्तुओं का जैसे मूच, प्रेतरूप आदि को 'बाय वियजीव' कह कर उत्लेख किया गया है.

लेकिन आजकल जो लोग भारत में अरस्तू न्याय (Aristotelian) पढ़ते हैं, जो लोग एलोपैथी, आयुर्वेद और कविराजी शास्त्र पढ़ते हैं वे लोग भूत, भेत और आस्मा या प्राया को तर्क शास्त्र (मन्तव) या आयुर्वेद शास्त्र के अन्तर्गत शुमार नहीं करते; चिकित्सा करने के समय भूत मगाने की कोई कोशिश नहीं करते, वे लोग सेहत सुधारने के लिये स्वस्थकर वातावरण (hygiene) की व्यवस्था करते हैं.

پورپ میں بھی منجہلے زمانے میں اِسی طرح کی حالت تھی ۔ آئیں' وگیاں' ترک شاستر ( منطق )' درشن شاستر ( فلسفه ) وفیرہ کو دھرم کے ساتھ نتھی کردیا گیا تہا ، جو لوگ اِس کا پرتیواد کرتے تھے آئیس شیطان کہکر یا تو زندہ جلا دیا جاتا تھا ، جرمن جلا تیا جاتا تھا ، جرمن انجھاپک میاک (Mach) نے لیما ہے آئوارھویں شتابدی کے اُخیر میں وگیاں دھرم وشواس کی گھرائیوں سے باھر آیا ۔ گ

جب سماج میں صرف پروهت ورگ هی تعلیمیانته هو تب هر جکه یہی هرتا آیا هے که چروهت ورگ ویکٹی اور سماج کو پوری طرح دهوم کے ساتھ جکر دیتا هے . یورپ میں مدهیه ایک میں درشن شاستر دهوم کا آنگ تها لیکن آج ایسا نہیں هے . آج پحجمی دنیا میں درشن (Metaphysics) اور دهرم تتو (Theology) انگ انگ کهوج کے وشع هیں . دوسرے دیشوں' جسے هندستان میں' درشن شاستر اور ترک شاستر تک دهرم اور رائیج کوسنسکاروں سے جکرے هوئے هیں . فلستی درشن شاستر ( فلسنه ) کی گونیج هی بنگال کا 'فیا وییئے شاستر' هے .\* اُس میں بھی فلیفا سے گڑھی هوئی آشریوی وستوؤں کو جیسے بھوت' پریت روپ آدی کو 'وائے ویئے جیو' کیکو آللیکھ کیا گیا هے .

لیکن آجکل جو لوگ بهارت میں ارسطو نیائے
(Aristotelian) پڑھتے ھیں؛ جو لوگ ایلوپیتھی' آیوروید
اور کویراجی شاستر پڑھتے ھیں وہ لوگ بھوت' پریت اور آتیا
یا پران کو ترک شاستر (منتو) یا آیوروید شاستر کے انترگت
شمار نہیں کرتے' چکتس کرنے کے سمے بھوت بیگانے کی کوئی
کوشھی نہیں کرتے' وے لوگ صححت سدھارنے کے لئے سوستیکر
واناوری (hygiene) کی ویوستھا کرتے ھیں .

\*-Mach: History of Physics
-See Bhasha Parichchhed.

कर अजीर माबना वर्षोकर हमारे देश में आगई ? कर हमने कहा है कि मध्य युग में यह किस तरह सुमकिन हुआ ? इस जमाने में अंगरेजी से होड़ लेने के लिये हमारे स्वदेश में मी देशभक्तों ने देलान करना शुरू किया— "हम लोग धर्म प्राया (मजहबी) जाति हैं, हमारी सभ्यता (तहबीब) धर्म की बुनियादों पर लड़ी है. भारतवासी संसार की एक विशिष्टता प्राप्त जाति है, बनकी से सम्मूली आविष्टतें हैं, बरीरह. इस पर लेकक ने एक दूसरी जगह मुकाबीनी की है.

सच तो यह है कि इम लोग अवहबी पागल (Beligious maniac) नहीं हैं.+ हमारी सभ्यता की वामीर धर्म के कपर नहीं है; इस लोग भगवान के सिरजे हुये कोई खासुलखास (वैशिष्टय प्राप्त) जीव नहीं हैं. हम सोग दुनिया की दूसरी जातियों की तरह हाड़ मांस और रक बाले इनसान हैं. दीर्घ काल की पराधीनता से पैदा होने बाली राजनैतिक, समाजाजिक और आर्थिक ग्लानि और हुराइयों को दूर करने की इमारी स्वाधीन राष्ट्रीय सरकार विलोजान से कोशिश कर रही है. जब पेट भर खाने को मिलेगा तभी बरित्र में उत्तमता आयेगी और बुद्धि खुलेगी. इमारा स्वाधीन राष्ट्र इसके लिये तत्पर है. इस समय द्वतिया में जो तरक्की और प्रगति हो रही है उसके साथ वास मिलाने और कृदम-व-कृदम चलने के लिये और क्रीमी तरकक्षी के लिये सही वातावरण बनाने के लिये ही - इमने अपने देश में 'धर्म निरपेक्ष' राज्य (Secular State) की स्थापना की है. अपने हजारों बरस के अनुभवों के आधार पर हमने सोच विचार कर यह सही क्रबम उठाया है.

इनसान आपस में प्रेम सहित कैसे हिल मिलकर एक नूसरे के साथ जाति के रूप में रह सकते हैं—इसी का नाम सामाजिक विकास है और राष्ट्र के रूप में उनका विकास ही राजनैतिक विकास है. विविध जातियाँ एक ही देश में कैसे एक राष्ट्र का रूप लेती है, उनकी जो मिलन-पद्धति है, एक दूसरे में रल मिलकर जो एक राष्ट्र बनाने का उनका सरीका है वहीं राजनैतिक प्रतिष्ठान यानी राष्ट्र के दायरे में हर इनसान का यह इक है कि वह अपनी जिन्दगी में विकास यानी तरककी के पूरे पूरे मीके हासिल करे. और आदि को पूरी तरह तरककी का अवसर मिले इसी के लिये राष्ट्र में शासन बिभाग यानी हुकूमत की स्थापना होती है. इसीलिये राष्ट्र सबसे ऊपर और सर्व शिक्तमान होता है. किसी बात को इलहामी, ईश्वरीय व्यवस्था या वेदबाव्य समुमकर पकड़कर बैठने के कोई भायने नहीं. मीजूवा हासावों में किसी पुरानी बात को पकड़कर बैठना मुनासिब

سے تو یہ ہے کہ هم لوگ مذهبی پاکل maniac)
اوپر انہیں ہے؛ هماری سبهبتا کی تسیر دهرم کے
اوپر انہیں ہے؛ هم لوگ بهتوان کے سرچے هوئے کوئی خاص
الفاص ( ویششتیه پراپت ) جیو لہیں هیں ، هم لوگ دنیا
کی دوسری جاتیوں کی طرح هار' مائس اور رکت والے اِنسان
هیں ، دیرگه کال کی پرادهیئتا سے پیدا هوئے والی راجئیتک
ساملجک اور آرتیک گاتی اور برائیوں کو دور کرنے کی دماری
ساملجک اور آرتیک گاتی اور برائیوں کو دور کرنے کی دماری
سمانی یہیں بھر کہائے کو ملیکا تبھی چرتر میں اِنستا آئیکی اور
بسے پیمی بھر کہائے کو ملیکا تبھی چرتر میں اِنستا آئیکی اور
سمے دنیا میں جو ترقی اور پرگتی هو رهی ہے اُس کے ساته تال
ملئے اور قدم به قدم چلئے کے لئے اور قومی ترقی کے لئے محصلے
مائیوں بنائے کے لئے هی هم نے اپنے دیش میں 'دھرم نرپیکش'
وائاورن بنائے کے لئے هی هم نے اپنے دیش میں 'دھرم نرپیکش'
رائے (Secular State) کی استہاپنا کی ہے ، اپنے هزاروں
رائے روس کے انوبھروں کے آدھار پر هم نے سرچ چار کر یہ صحیح قدم
رائیوں کے انوبھروں کے آدھار پر هم نے سرچ چار کر یہ صحیح قدم
رائیوں کے انوبھروں کے آدھار پر هم نے سرچ چار کر یہ صحیح قدم

انسان آپس میں پریم سہت کیسے هل ملکر ایک دوسرے کے ساتھ جاتی کے روپ میں رہ سکتے هیں۔۔۔اِسی کا نام ساماجک وکلس ہے اور راشقر کے روپ میں اُن کا وکلس ہی راجنیٹک وکلس ہے، وودھ جاتیاں ایک می دیش میں کیسے ایک راشقو کا روپ لیٹی ہے' اُن کی جو مان پدھتی ہے' ایک دوسوے میں رل ملکر جو ایک راشقو بنانے کا اُن کا طریقہ ہے وہی راجنیٹک پرتھتیاں ہے یعنی راشقر کے طریقہ ہے وہی راجنیٹک پرتھتیاں ہے یعنی راشقر کے دایرے میں ہو اِنسان کا یہ حق ہے کہ وہ اپنی زندگی میں وکلس یعنی ترقی کے پورے پورے موقعہ حاصل کرے ، اُور میں جاتی کو پوری طرح ترقی کا آوسر ملے اِسی کے لئے راشقر میں جاتی ویوں اور سورشکتیمان ہوتا ہے۔ کسی بات کوالیامی' میں ویوستھا یا ویدواکیہ سمجھی پہر کر بیٹینے کےکوئی میانے کوالیامی' ایھوری ویوستھا یا ویدواکیہ سمجھی پہر کر بیٹینے کےکوئی میانے کوالیامی' ایھوری ویوستھا یا ویدواکیہ سمجھی پہر کر بیٹینے کےکوئی میانے کوالیامی' ایھوری ویوستھا یا ویدواکیہ سمجھی پہر کر بیٹینے کےکوئی میانے کوالیامی' ایھوری ویوستھا یا ویدواکیہ سمجھی پہر کر بیٹینے کےکوئی میانے کوالیامی' ایھوری ویوستھا یا ویدواکیہ سمجھی پہر کر بیٹینے کےکوئی میانے کیا اس

-Swami Vivekanand: Patriot Prophet, pp. 256-258.

Jan. 17 1540

नहीं है, प्रधानी क्यांस्था की देशकर प्रवृत्त वा खुराई समसाने की वहनीयत स्थाबीन राष्ट्र की डक्षति की कोशिशों के रास्ते में बढ़िंगा बाज़ने के समान है, इससे समाज के शरीर में बुरे नशीजे पैदा होते हैं.

जिस जगह राष्ट्र के बलाने बाले राष्ट्र की क़ीमी जिन्त्गी को वैज्ञानिक दृष्टि से देखते हैं वहाँ राष्ट्र बेशक तरक़क़ी करेगा और राक्रववर बनेगा. कृम की जिन्द्गी को काम-याबी के साथ तरक़की की दौड़ में आगे बढ़ाने के लिये इस बिचय में सोज और झानबीन ज़क़री है. قیمی کے پرائی ریستها کو ایشور پروٹ یا کدائی سحبهائی کی فغلوت سوادهیں راشتر کی آنتی کی کوششوں کے راستے مین اولی فالنے کے سمان کے اِس سماج کے شریر میں رہے فتیجے پیدا ہوتے ہیں .

جس جکه راشار کے چلائے والے راشار کی قومی زندگی کو ویکھائک درشائی سے دیکھتے ھیں وھاں راشار ہے شک ترقی کریا اور طاقتور بنیا ۔ قوم کی زندگی کو کامھابی کے ساتھ ترقی کی دور میں آگے بڑھائے کے لئے اِس رشائے میں کھوے اُور چھاں بھی ضوروی ہے ،



700 PAGES, 32 ILLUSTRATIONS 2 COLOURED MAPS

# "CHINA TODAY"

PRICE

BY PANDIT SUNDARLAL

Rs. 7. 8. 0

A vivid narration of the glorious and wonderful achievements of New China... A picture of China which is both convincing and authentic... the best book that has come out so far on New China is the English language ... the most objective in approach and comprehensive in treatment.

—National Herald, Lucknow.

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserves to be widely known

—Leader, Allahabad.

Encelopsedic...characterized by some observation of detail as well as by, instinctive grasp of the fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China.

—Blitz, Bombay

A mine of information which gives a picture of China as nothing else dose...the best guide to New. China...Those who would like to understand what is happeing in New China can do not better than to study it.

-Bharat Jyoti, Bombay

The wealth of information it gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs.

—Indian Express, Madras

China Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of men and matter... brings to the lighty mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations for a tomorrow which is theirs.

—Vigil, Delhi.

## भी सु चिह-चुन

(डाइरेक्टर आफ चाइनीज मेडी(सन रिसर्च अकार्मी)

[ राजकुमारी अस्तकीर ने चीन से लीट कर पुरानी चीनी वैश्वक विद्या और उसकी तरफ नई चीनी सरकार की पालिसी पर जो बयान दिया था उस पर एक नोट और एक चीनी विद्वान का लेख इससे पहले "नया हिन्द" में प्रकाशित कर चुके हैं. यहां हम इसी विषय पर एक और चीनी विद्वान का लेख प्रकाशित कर रहे हैं जो चीन के स्वास्थ्य विभाग के एक बहुत बढ़े अफसर भी हैं. इससे और भी साफ पता चलता है कि राजकुमारी का वह बयान कितना गुलत था—सुन्दर लाल.]

कई हज़ार वर्ष से चीन के लोगों की एक अपनी वैद्यक विद्या (मैडीकल साइन्स) चली जा रही है. सातवीं सदी ईसवी तक यह चीनी वैद्यक विद्या कोरिया, जापान, भारत, बरमा और ईडोनीशिया तक फैल चुकी थी. सदियों उन्नति करने के बाद जाज यह वैद्यक विद्या सारे चीन में चालू है और इसके पीछे दवाओं, और इलाज का बढ़ा लम्बा कीमती तजरवा है.

चीन के इतिहास में बहुत से मशहूर बैद्यों यानी उस षमाने के डाक्टरों और उनके कामों का बयान मिलता है. ईसा से चार पांच सौ बरस पहले, जब चीन की कई अलग अलग रियासतों में घरेलू लढ़ाइयां जारी थीं, पीएन चुएह नाम का एक बहुत मशहूर वैद्य था जिसने पहली बार नन्ज (नाड़ी) की बाल से रोग के पता लगाने का तरीका ईजाद किया. इसमें उसे बड़ी कामयाबी हुई. बहुत से रोंगों के इलाज के लिये उसने वारीक वारीक सुदयों से नसों (नव्क) की हालत भीर धनकी गति को ठीक करना (पेक्यु पंकचर) और षुढियों को गरम करके अनसे शरीर के स्नास खास जंगों की सेकना (मीनसी वशचन) इन दो तरीकों से बहुत बड़ा काम लिया. ईसा की पहली और दूसरी शताब्दी में चांग खु'ग-चिंग नाम के एक बैदा ने तरह तरह के बुखारों पर एक किसाब लिखी जिसका नाम 'शांग हानलून' है और वैद्यक के बसुबों और जरूरी वातों पर एक दूसरी किताव लिसी जिसका नाम "बिंग कुए युद्दान चिंग" है. इन दोनों किताबों में दुबारों भीर दुसरी बीमारियों के इलाज के लिये बहुत से मुखको दिये हुए हैं. आज भी चीन में इन कितानों और

### هری لو چه - چن

﴿ وَالرِّيكِيْرِ أَفْ جَانَفِيْوْ مِيدَيسِن ريسرج اللدمي )

کئی ہزار ورش سے چین کے لوگوں کی ایک اپنی ویدک ردیا ( میدیکل سائنس ) چلی آرھی ہے ، ساتویں صدی عیسوی نک یہ چینی دیا کوریا' جاپان' بھارت' برما اور انتولیشیا تک پیل چکی تھی ، صدیوں آنتی کرنے کے بعد آج یہ ویدک ودیا سارے چین میں چالو ہے اور اِس کے پینچے دواوں اور علے کا بڑا لمبا قیمتی تجورہ ہے ،

چین کے اِتہاس میں بہت سے مشہور ویدیوں یعنی اُس زمانے کے قاکلروں اور آن کے کاموں کا بیان ملتا ہے . عیسی سے چار پانچ سو برس پہلے ، جب چین کی کئی الک انگ ریاستیں میں گھریلو لوائیاں جاری تھیں' پی این چو ایم نام کا ایک بہت مشہور وید تھا جس لے پہلی بار نبض ( نازی ) ملی چال سے روگ کے یتہ لگانے کا طریقہ ایجاد کیا ، اِس میں اُسے بڑی کامھابی ھوٹی ، بہت سے روگوں کے علاج کے لئے اُس نے باریک باریک سرنیس سے نسوں ( نورز ) کی حالت اور اُن کی گئی کو ٹھیک کرنا ( ایکیویلکھور ) اور ہوتیوں کو گرم کرکے أن سے شریر کے خاص خاص انگوںکو سیکنا ( موکسی بشچن ) ان دو طریقوں سے بہت بڑا کام لیا ، عیسی کی پہلی اور درسری شتاہدی میں جانگ چرنگ - جنگ نام کے آیک رید نے طرح طرح کے بخاروں پر ایک کتاب ایمی جس کا نام الشانك هاريز لني اله اور ويديك كے اصواب اور ضروري ہاتوں ہو اُیگ دوسرو کتائے لکھی جس کا آثام ''چنگ کوئے پیجابی چنگ'' ہے، اِن دورتوں کتابوں میں بغاروں آور دوسری بیماریوں کے عالم کے لئے بہت سے نسطے دیاتے موثے عیں . آج سی چین میں اِن کتابی اور

तसकों का बहुत बड़ा मान है और उनसे रोगों का قسطوں کا بہت ہوا ماں ہے اور آن سے روکوں کا علیہ इलाज किया जावा है. उसी समय के निकट एक کیا جانا ہے۔ اُسی سے کے تعت ایک بہت ہوا زید बहत बड़ा बैंब "हुआ-ती" हुआ है जो तरह तरह के ا'ہُوا تو'' ہوا ہے جو طرح طرح کے جراحی یعلی چھر जरोडी बानी चीर-फाड़ के कामों (बैरियस सर्वजकल بھاو کے کاموں ( ریرییس سرجیکل آیریشنس ) میں بہت धापरेशन्स) में बहत होशियार बा. वह इलाज करने में ھوشیار تھا ، وہ علی کراے میں اوپر تھے سوئیس کے طریقے जपर लिखे सहयों के तरीक़े (ऐक्यू-पंकचर) और सेक के तरीक़े (मीक्सी-बशचन) को भी काम में लाता था. चीर-फाइ के ( ایکیبرینکنچر ) اور سیک کے طریقے ( سوکسی بشچن ) کو بھی लिये उसने पेसी दवाओं को ईजाद किया जिनसे रोगी को کم میں لانا تھا ، چیر بھاڑ کے ائیہ اُس نے ایسی دواؤں کو اینجاد विल्क्कल पीड़ा , बानुभव न होने पावे जिन्हें ब्याजकल کیا جس سے روگی کو بالکل پیزا أنوبهو نہ هولے پارے جامیں آجال ऐनस्येठिक्स कहते 🐔 ईसा के तीन चार सौ बरस बाद वांग انیستہیتکس کہتے ھیں ، عیسی کے تین چار سو برس بعد इा-हो नाम के एक वैद्य ने नाडी परीक्षा पर "भाई चिंग" नाम की एक बड़ी प्रमारिएक पुस्तक लिखी. शरीर के अन्दर وانگ شو - هو نام کے ایک وید لے نازی پریکشا پر وابھائی खन की गति पर और निवान यानी भीमारी का ठीक ठीक چنگ، نام کی ایک بڑی پرامانک پستک لکھی ، شریر کے पता लगाने के तरीक़े पर भी उसने कई पुस्तकें लिखी. المر خون کی گلی پر اور ندان یعنی بیاری کا ٹھیک ٹھیک हबांगफ-मी नाम के एक वैश्व ने सहयों वाले इलाज और یکم لگانے کے طریقے پر بھی اُس نے کئی پستمیں لکھیں ، सेक बाले इलाज पर 'चित्रा यी चिंग' नाम से पहली पुस्तक هوآنگ فو - می نام کے ایک وید لے سوئیس والے علیے اور سیک والے علیے پر "چیائی چنگ" نام سے پہلی پستک لیمی ۔ लिखी. को-हंग नाम के एक वैच ने पारे को शोध कर पहली बार दवा के तौर पर काम में लाए जाने के योग्य बनाया. کوھنگ آیام کے ایک وید نے پارے کو شودیعمر پہلی بار دوا کے उसकी एक किताब ''चौऊ हौऊ फांग" तुसलों की किताब है طور پر کام میں لائے جائے کے پوگیہ بنایا ، آس کی ایک کتاب जो चीन में आज भी बड़ी महत्व की किताब मानी जाती है "چوؤ هوؤ فائگ" نسخوں کی کتاب ہے جو چھن میں آج بھی और खुब काम में जाती है. दवाओं के तैयार करने के ہری مہتو کی کتاب مانی جاتی ہے اور خوب کام میں آتی ہے ۔ वरीकों पर सब से पहली किताब 'सेन नुंगपेन त्साओ' है जिसे دواوں کے تیار کرنے کے طریقیں پر سب سے پہلی کتاب اسیوں इठी सदी के शुरू के एक वैध ताओं हुंग-चिंग ने दोहरा نونگ پین تساؤا ہے جسے چھٹی صدی کے شروع کے ایک وید कर और बढ़ा किया. सन् 610 ईसवी में चाओ युकान-تاہ منگ چنگ نے درھرا کر آور ہوا کیا . سی 610 عیسوی फांग नाम के एक बैंच ने तरह तरह के रोगों के निदान और میں چاؤ ہوآن - فانگ قام کے أیک وید لے طرح طرح کے روگیں उनकी अलामतों पर 'खु पिंग युमान होड त्सुंग लु' नाम से एक किताब लिखी जो अलग अलग बीमारियों और उनके निदान (डाइगनोसिस) पर एक बहुत ही ऊँचे दरजे کے ندان اُور آن کی علامتوں پر ''چرینگ یوآن هووتسنگ لو'' نام سے ایک نتاب تاہی جو الگ انگ بھماریوں اور اُن کے की किताब है.

इसके बाद तांग राज कुल के समय से लेकर सुंग राज कुल के समय तक चीनी वैचक विद्या ने अभत-पूर्व उन्नति की. मशहूर वैद्य सुन के-भिन्नाव की पुस्तक "चीनचिंग याद्यो काग" से, जिसके मानी हैं "सनहरी दवाएँ पता चलता है कि उन दिनों जानवरों के अन्दर की चीचें, जैसे गाय या मेड़ का पिसा या जिगर, आदमी की बीमारियों के इलाज में काम में आने लगी थीं. मेंग शीन नाम के एक विद्यान ने "शिह लियाओ पैन त्साओ" नाम की एक किताब लिखी जिसमें बैचक की निगाह से सब तरह की खानों की चीजों के गुण-दोष बवान किये गये हैं. उस जमाने में चीनी पैयक विद्या ने बहुत तेजी से तरक्की की. एक्यु-पंक्चर और मौक्सी-वराचन का रिवाज खुब बदा. शरीर के अलग अलग अगों को समकने और उनका अध्ययन करने के लिये मानव शरीर को चीर कर देखा जाता था. भारूमी के शरीर भीर उसके कलग कलग कंगों के नकरी रीबार होने लगे. जादमी के पूरे कद की काँसे की

ندان ( دَائكنوسس ) پر ایک بہت هی اُونچے درجے کی کتاب ہے ،
اِس کے بعد تانگ راج کل کے سمے سے لیکر سونگ راج کل کے سمے سے لیکر سونگ راج کل کے سمے سے لیکر سونگ راج کل کے سمے تک چینی ویدک ودیا نے ابھوت پرو اُنتی کی .
مشہور وید سن زے میاؤ کی پسٹک "چنچنگ یاؤ فاگ" سے مشہور وید سن زے میاؤ کی پسٹک "چنچنگ یاؤ فاگ" سے دنوں جاتروں کے اندر کی چیزیں' جیسے گئے یا بھیز کا پتا یا جگر' آدمی کی بھیاریوں کے علاج میں کام میں آلے لکی تھیں ، میگ شین نام کے ایک ودران نے "شہ لیاؤ پین نساؤ" نام میں ویدیک کی نگاہ سے سب کی ایک کتاب لیمی جس میں ویدیک کی نگاہ سے سب طرح کی کھائوں کی چیزوں کے گن دوش بیان کئے گئے میں ،
ایک ایک کتاب لیمی جس میں ویدیک کی نگاہ سے سب طرح کی کھائوں کی چیزوں کے گن دوش بیان کئے گئے میں ،
ایک ایک ایک انہوں کو معجہنے اور اُن کا اددھیں کرنے کے لئے مانو ایک انگ ایک ایک انگوں کو جھر کر دیکھا جاتا تھا ، آدمی کے شریر اور اُس کے الگ شوری کو چھر کر دیکھا جاتا تھا ، آدمی کے شریر اور اُس کے الگ

सूर्तियाँ बनने लगीं जिन के जरिये वैश्वक के बिशार्थियों को शरीर के जान, उनके रोग जीर उन पर द्वाओं के असर समसाए जाते थे. अलग अलग रांगों के लिये तुसकों की किसार्थे उन दिनों सब से अधिक विकती थीं. औरतों और बक्तों की विशार्थों और चीर फाड़ की विशा के अपर भी खास तीर से कितावें लिखी गई. चीनी वैश्वक विशा में एक नई चीज उस समय यह हुई कि वेशक की उन्नित और वेशों की सुविधा के लिये राज के कानून में क्या क्या सुपार या तबदीलियां होनी चाहिये और वेशों के क्या क्या कानूनी कर्फ होने चाहिये इन बातों पर विचार होने लगा और किताबें लिखी जाने लगीं.

बारहवीं सदी से उन्नीसवीं सदी तक भी चीनी वैद्यक विद्या, चीनी दवाएँ और उनकी तैयारी बराबर तरक्र की करती रहीं. ली शिह-चेन ने सब तर की दवाओं के ऊपर एक बहुत बढ़ी किताब "येन त्साओं कांग मु" लिख कर पूरी की चु यु-रिशंग ने अपनी एक किताब में झूत की या लगनी बीमारियों और महामारियों के ऊपर अपने ख़ास सिखान्त दुनिया के सामने रखे. बांग चिंग-जेन ने शरीर के अन्दर के अलग अलग अंगों के बारे में पिछले कुछ ग़लत बिचारों को सुधारा. लगनी बीमारियों का इलाज, आंखों और गले की बीमारियों का इलाज और चीर फाड़ के जरिये शरीर के अंगों की कुरूपता या बेडीलपन को ठीक करना इन तीनों में चीनी बैद्यक ने ख़ास तीर से उन्नित की और इनके ज़ास अलग अलग जानकार पैदा होने लगे.

अलग अलग बीमारियों के अलग अलग क्षक्यों या अलामतों को बयान करने में पुरानी चीनी बैधक के जानकार जितनी श्रधिक तफसील यानी विस्तार में जाते हैं आजकल के यूर्वी ढंग से पढ़े हुए डाक्टर उतनी तकसील में नहीं जा सकते. इसके अलवा पुरानी चीनी व धक के नुसक्ते अधिकतर जड़ी बूटियों के हाते हैं और उनसे बाद में इस तरह की हानि या बुरा असर नहीं होता जैसा यूरपी इबाधों से हाता है. पुराने चीनी इलाज के तरीक़े में दो बातों की तरफ खास ध्यान दिया जाता है, सबसे पहले इस बात की तरफ कि रांगी के शरीर का और अलग अलग धारों के काम का जो समतोल विगड़ गया है उसे फिर सं ठीक किया जावे, और दूसरे यह कि रोगी की आम नसों (नव स सिस्टम) को फिर से दुक्तत किया जाये. नुसखा लिखने में इन दोनों बातों का पूरा ध्यान रखा जाता है. परानी चीनी बैंशक विद्या के अन्दर रोग के कीड़ों को सारना (ऐंटी बायोटिक्स) और दवाओं के जरिये मकान, अपनी बरौरा को बीमारी के असर से पाक करना (डिस-बल्केकशम) वोनों शामिल है.

میتینی بنتے لگھی جن کے ذریعے ریدیک کے ردیارتھیں کو شویر کے اگر سمجھائے مورور کے اگر سمجھائے جائے گئے الگ الگ روگیں کے لئے نسخوں کی کتابیں اُن دنوں سب سے ادہک بمتی تھیں ، عورتوں اور بحوں کی بیماریوں اور چھوپھاڑ کی ودیا کے اُوپر بھی حاص طور سے کتابیں لمعی گئیں ، چینی ویدیک ودیا میں ایک تئی چھڑ اُس سے یہ ہوئی کہ ویدیک کی اُنتی اور ویدیوں کی سویدھا کے لئے راج کے قانون میں کیا گیا سدھار یا تبدیلیاں ہوئی چاہئیں اور ویدیوں کے کیا کیا فائوئی فرض ہوئے چاہئیں اِن باتوں پر وچار ہوئے لگا اور کتابیں لمعی جانے لکیں ،

بارھویں صدی سے آنیسویں صدی تک بھی چینی ویدک ودیائے چینی دوائدں اور اُن کی تھاری برابر ترقی کرتی رھیں ، لی شہ چھن نے سب طرح کی دواؤں کے اُوپر ایک بہت برس کتاب 'فیمن تساؤ کانگ مو'' انمہتر پوری کی ، وویوشلگ نے اپنی ایک کتاب میں چھوت کی یا لکنی بدماریس اور مہاماریوں کے اُوپر اپنے خاص سدھانت دنیا کے سامنے رہے ، وانگ چینگ جین نے شریر کے اندر کے انگ انگ انگرں کے بارے میں پچھلے کچھ فلط وچاروں کو سدھارا ، لکنی بیماریوں کا عالج' آئموں اور گلے کی بیماریوں کا عالج اور چھرپھاڑ کے ذریعے شریر کے انگوں کی کورونا یا نے دولین کو تھیک کونا اِن تیندوں میں انگوں ویدیک نے خاص طور سے اُننتی کی اور اِن کے خاص چھنی ویدیک نے خاص طور سے اُننتی کی اور اِن کے خاص خالگر پیدا ھوئے لگے .

انگ آگ بیماریوں کے انگ انگ انگ انکشنوں یا علامتوں کو بھاں کرنے میں پرانی چینی ویدیک کے جانکار جتنی ادعک تفصیل یعنی وسکار میں جائے هیں آجکل کے بوربی تعلق سے پڑھ ھوئے ڈاکٹر آسنی تفصیل میں نہیں جاسکتے ، اِس کے عالوہ پرائی چینی ریدیک کے نسخے ادھمتر جڑی برتیس کے ہوتے ھیں اور آن سے بعد میں اِس طرح کی ھانی یا برا ڈر نہیں موتا جیسا یوریی دراؤں سے هوتا هے . پرانے چینی علم کے طریقے میں دو باتیں کی طرف خاص دھیاں دیا جالا ھے سب ے پہلے اِس بات کی طرف که روگی کے شوہر کا اور الک الک انگوں کے کام کا جو سمتول بکر گیا ہے اسے پھر سے تھیک کیا جاوے اور دوسرے یہ که روگی کی علم نسوں ( نروس سستم ) كو يهر سے دوست كها جائے . تستخه لكهنے ميں إن دونوں باتوں کا پیرا دھیاں رکھا جاتا ہے . پرانی چینی ریدیک ردیا کے اندر روگ کے کیروں کو مارنا ( اینٹی بایو ٹکس ) اور دواؤں کے ذریعے مکلی کروں وغیرہ کو بیماری کے اثر سے پاک کرنا ( تس م انفيكهين) دولون شامل هين .

करवरी '56

( 74 )

نرورس 56°

पराने बीनी , बें बों ने तज़रने से यह मालून कर लिया ा कि शारीर के अन्दर के रोंग के कीडों (bacteria) को गरने के लिये और खाल के कपर के कीकों को मारने के लेये दोनों कामों के लिये "हुआंग लीन '(Coptis teeta) हित ही उपयोगी दवा है और पूरा असर करती है, खुनी चिश (Amoellic dysentry) को अच्छा करने के लेये पाई तोऊ वेंग (Anemone) बहुत ही कामयाब मौषि है, मलेरिया के बुखार को ठीक करने के लिये चांग ान (Orixa japonica) बदिया दवा है, खांसी के हेथे सब से अच्छी द्वा पाई म् (Fritillaria Verticilata) है, औरतों के .खून को रोकने के लिये यी मुत्साओ Leonurus Sibricus) बहुत लाभदायक है, रात के सीने को रोकने के लिये हुआंग चि (Astragalus Reflexistipulus) बहुत अन्द्री चीज है, पेट के ीड़ों 'कदुदानों' को साफ करने के लिये कू चीन पी Melia Azedarath) लासानी है, बुखार को कम रने के लिये बाह ह (Bupleurum Chinensis) हुत काम की है और खून के दबाव यानी ब्लंड प्रेशर के ताज के लिये तू चुंग (Eucommia Ulmoides) बहुत ्रीद साबित होती है.

बहुत सी बीमारियां हैं जिन से यूरोपियन ढंग के पढ़े ए डाक्टर घबरा जाते हैं और पुरानी चीनी व धक विद्या हे जानने बाले उनका इलाज बड़ी आसानी के साथ हर लेते हैं. मिसाल के लिये अंतिक्यों की पुरानी रेयाही सूजन (Chronic gastro-intestinal nflammation) (ग्रदे की प्रानी सूजन Chronic nflammation of the kidneys) अन्दर ी खांसी (Bronchitis), गठिया के कारण जोड़ों ी सूजन (Rheumatsia Arthritis), श्रांख की ोमारी (Myositis), और नसों की बीमारी Neuritis), यह सब बीमारियां पच्छिम के इलाज के ारीक्रों से बहुत ही धीरे धीरे और बहुत ही कम अच्छी शिती हैं, लेकिन अगर पुराने चीनी सरीक्षों से इनका इलाज केया जावे तो बहुत जल्दी ठीक हा जाती हैं, खासकर जब कं द्वा के साथ साथ पुराने ढंग की सुइयों से नसों को ी ठीक कर दिया जाने (Acupuncture). यह रूखों का इलाज बहुत ही आसान, सीधा और कारामद है. क और मिसाल लीजिये, पाखाने के रास्ते से खून जाना गौर नास्र पद जाना (Haemorrhoids and ?istulae), इन का इलाज प्रराने चीनी तरीकों से हाल में ाहुत ही कामयाय सावित हुआ है. अंतिक्यों के नीचे के हेस्से की बीमारियां पुरानी दवाओं से बहुत जल्दी अञ्झी ोती हैं. इलाज का डंग भी बहुत सीघा सादा है. इसमें बहुत ا یوالے چیار ویدیوں نے تجربے سے یہ معلوم کرایا تھا کہ معرور کے الدر کے روک کے کیورں (bacteria) کو مارنے کے لئے اور کال کے آریر کے کیورں کو مارٹے کے لئے دونیں کامیں کے لئے هوانگ لين (Coptis teeta) بهت هي أيهركي دوا هـ ار پررا اتر کرتی ها خرنی پیچیس (Amoellic dysentry) کو اُجها کرنے کے نئے پائی ترؤ وینگ (Anemone) بہت ھی کلمیاب ارشدھی ہے، ملیریا کے بخار کو ٹھیک نرنے کے لئے چانگ شان (Orixa japonica) برهیا درا هے کہانسی کے لئے سب سے اچھی درا یائی مر (Fritillaria Verticillata) ھے عبرتیں کے خبن کو روکنے کے لئے بی مرتساؤ Leonurus (Sibricus بہت تبہدایک ہے، رات کے یسینے کو روکنے کے لئے هرانک جی (Astragalus Reflexistipulus) بیت اُچھی چیو هے پیت کے کیروں الودائوں کو مال کرنے کے اللہ کوچین ہی (Melia Azedarath) فٹانی ہے' بخار کو کم کرنے کے لئے چائی ہو (Bupleurum Chinensis) بہت کلم کی ہے اور خون کے دہاؤ یعلی بلدوریشر کے علام کے لئے تو چونگ (Eucommia Ulmoides) بہت مفید ثابت

بہت سی بیماریاں ھیں جن سے یوروپین ڈھنگ کے پڑھے ھوٹ قائٹر گھبرا جاتے ھیں اور پرانی چینی وہدیک ودیا کے جاتینے والم أن كا علم برى أسانى كے ساته كرليتم هيں ، مثال كے لئم التوبیر کی برائی ریاحی سرجن -Chronic gastro) (intestinal inflammation) گردے کی پرائی سرجن (Chronic inflammation of the kidneys)) اندر کی کھانسی (Bronchitis) گٹھیا کے کارن جوڑوں کی سرجوں (Rheumatsia Arthritis) أنام كي بيماري (Myositis)' اور نسون کی بیداری (Neuritis)' یه سب بیداریل بحیم کے علاج کے طریقوں سے بہت می دھیرے دهدرے اور بہت هی م اچهی هوتی هیں الیکن اکر برائے چینی طريقوں سے اِن کا علاج کیا جارے تو بہت جلدی تہیک ہو جاتی هیں خاممر جب که دوا کے ساتھ ساتھ پرانے تعدک کی سوئهرس نسرس کو بھی تھیک کردیا جارے (Acupuncture). یه سوئیوں کا علم بہت هی آسان سیدها اور کارآمد هے . ایک أور مثال لیجئے. بادانے کے راستے سے خون جانا اور ناسور یو اِن کا علی (Haemorrhoids and Fistulae) اِن کا علی پرالے چیلی طربقوں سے جال میں بہت ھی کلمیاب ثابت موا ہے . انتزیوں کے نیجے کے حصے کی بیماریاں پرائی دواؤں سے بہت جلدی اچھی ہوتی ہیں ، علیے كا تمك بهي بهت سيدها سادة هـ. إس مين بهت विकास डाक्टरी धीजारों और सामान की सकरत नहीं विकास और न रोगी के रोक के काम काज में कोई फ्रक बाता है.

क्रेकिन पुराने चीनी इलाज के तरीक्रे में कुछ कमी भी है. उसका विद्यादा जोर तजरने पर है, उसमें बाकायदा साइंसी सिद्धान्त की कमी है. अभी तक उसमें कीमियाई ह्यानबीन और परस के पक्के तरीके नहीं हैं. इसका एक सास कारण है. चीन में कोमिनटांग शासन के दिनों में इन दिनों की सरकार पुराने चीनी इलाज के तरीके को ही रीर साइंसी और पिछड़ा हुआ सममती थी और उसे हिकारत से देखती थी. पर चीन की कम्युनिस्ट पार्टी अपने देश की प्रानी कलचरी विरासत की बड़ी कर करती है. इसलिये वह परानी चीनी बैचक विद्या के अनुसार इलाज करने बालों को. जिन की संख्या लगभग तीन लाख है, देश के डाक्टरी मैदान में एक बहुत बड़ी राक्ति मानती है. कम्बनिस्ट पार्टी ने पुराने बीनी हंग के डाक्टरों और नए पश्चित्रमी द्वेग के डाक्टरों दोनों को यह हिदायत की कि वह बोनों मिलकर काम करें, एक दूसरे की मदद करें और मिलकर नई और पुरानी दवाओं आदि की लोज करें जिससे रोगों के इलाज की शक्तियां और अधिक मजबूत हों और सब भिलकर देश की और अधिक सेवा कर सकें. जुलाई सन् 1954 में नई चीनी सरकार ने सब सरकारी जन स्वारध्य महकमों को यह हिदायतें भेजीं कि पुराने चीनी इलाज के वरीक़े के साथ यही नीति बरवी जावे और इस पर पूरा पूरा अमल किया जावे. इस समय पुराने चीनी इलांज के तरीक़ के साइंसी स्तर को ऊँचा करने के लिये चौर उसमें आवश्यक सुधार करने के लिये पहला क़र्म यह कठाया गया है कि एक चीनी मेडिकल रिसर्च अकावमी सोली जा रही है. चीनी वैशक विशा की जो दसरी खोज संस्थार्थे यानी रिसर्य इंसटीट यूट हैं बन्हें बढ़ाया जा रहा है. शंबार, कैन्टन, नानकिंग और चुंगकिंग में पुराने चीनी इसान के तरीक के अस्पताल ' खोल दिये गये हैं. पेकिंग के बहुत से अस्पतालों में चीनी वैश्वक विश्वा के जानकारों को रखकर अनसे सलाहें ली जाती हैं. कुछ अस्पतालों में प्रराने होता से इलाज के कलग महकमे खाल दिये गए हैं. देश भर के सब मेडिकल कालिजों में पुरानी चीनी दवाओं और उनके क्रमाने के वरीकों में खोज की जा रही है और मेडिकल कालिजों की एडाई की पुस्तकों में चीनी वैश्वक और चीनी दवाएं बनाने के तरीके शामिल किये जा रहें हैं. पुराने चीनी इलाज की बहुत सी अधिक महत्व की किसावें फिर से शकारित की आ रही हैं और बहुत सी अभी की जायेंगी.

مرورت نیس پوتی اوزاروں اور سامان کی شرورت نیس پوتی اور کے کام کام میں کرئی فرق آتا ہے .

الماني پرائے چيني علم كے طريقہ ميں كچھ كى يبى ھ. النفي كا زيادة زور تجريه ير هـ، أس مين باقاعدة سائسي سَفَالْتُفَ كَي كَمِي هِ ، أَبِهِي نَكَ أُسَ مِينَ كَيْمِاتِي جِهانِينِينَ الرزيرة كه يك طريقه نهين هين ، إس كا أيك خاص كارن هـ. چھی میں کرمنٹانگ شاسی کے دلیں میں آن دلیں کی سرکار یوالے جیلی علم کے طریقہ کو ھی غیر سائنسی اور پنچیوا ھوا نسجهتی تھی آبر أسے حقارت سے دیکھتی تھی ، پر چین کی کمیونسٹ پارٹی اپنے دیش کی پرائی المجوری وراثت کی ہری قدر کوئی هے ، اس اله وہ پرانی چینی ویدیک ودیا کے انوسار عليم الوالم الواحن كي سنتهيا لك يهك تين اله هـ؛ دیھ کے داکتری میدان میں ایک بہت بڑی شکتی مانتی ہے، کیونسٹ یارٹی نے پرانے چینی تھنگ کے تأکثروں اور نئے یجھنے تھنگ کے قائروں دونوں کو یہ مدایت کی که وہ دولوں ملکر کام کریں' ایک دوسرے کی مدد کریں اور ملکر نئی اور پرائی دواؤں آدی کی بھوے کریں جس سے روگوں کے علبے کی شکتیاں اور آدھک مقبرط ھوں اور سب ملکر دیھی کی ارر العك سيوا كرسكين ، جوائي سن 1954 مين نئي چيني سرکار لے سب سرکاری جن سوآستهده محکموں کو یہ هدایتیں بهمجهس که پرائے چینی عالم کے طریقہ کے ساتھ یہی ٹیٹی برتی جاوے اور اس پر پورا پورا عمل کیا جارے . اِس سیم پرالے چینی علمے کے طریقہ کے سائنسی استر کو اُونچا کرنے کے لئے اُور اس میں آوشیک سرھار کرنے کے لئے پہلا قدم یہ اُٹھایا گیا ہے که ایک چینی میدیکل ریسرے اکادمی کہرلی جارهی هے ، چینی ویدیک ودیا کی جو درسری کهرج سنستهاندن یعلی ژبسرج السليليوك هين أنهين برهايا جا رها هي شنهائي كيناتي نائتنگ اور چنگ لنگ میں برائے چینی علم کے طریقہ کے اسیکال کھول دیئے گئے میں . پیکنگ کے بہت سے اسپتالوں میں چینی ویدیک ودیا کے جانکاروں کو رکھر آن سے مالحیں لی جاتی هیں ، کچھ اسپتالیں میں پرائے دھنگ سے علام کے انگ محکمے کیل دیئے گئے میں . دیش بھر کے سب میڈیکل کالجس میں پرائی چینی دوؤں اور اُن کے بنانے کے طریقوں میں کہرے کی جا رھی ہے اور میدیکل کالعوں کی پڑھائی کی ستموں میں چھنی ویدیک اور چھنی دوانیں بنالے کے طریقے شائل کئے جارہ میں ۔ پرائے چینی علے کی بہت سی ادھک مہتو کی کتابیں پھر سے پرکائبت کی جارهی هيں اور بہت سی ایمی کی جالهنگی .

(News Bulletin of the Embassy of the Peoples Republic of China, New Delhi Nov. 23, 1955.)

TAR .

ध्रदश्यद साहब ने कहा:— "पिक्रले जमाने में एक जादमी था. मीत का करिश्वा उसकी जान केने के लिये जाया. करिश्वे ने उससे पूका— 'स्या दुमने कभी नेक काम किया है?' इस आदमी ने जवाब दिया,—'मुक्ते नहीं नाक्म.' क्रिश्वे ने फिर कहा,—'साथ कर बताओ.' उस आदमी ने जवाब दिया,—'मुक्ते और कुछ नहीं याद सिवाय इसके कि मैं दुनिया में लोगों से व्यापार करवा था, मेरे गाइकों में से जो जारा खराहाल ये उन्हें मैं कूट दे देवा था कि वह अपनी सुविधां के अनुसार मेरी रक्ष अदा करें और जो तक्कीफ में होते ये उन्हें मैं विलक्कत माफ कर देवा था.' इस पर अस्लाह ने उस आदमी को जम्मत में दाखिल कर विया."

—दुषोका भीर धवु मसङ्ग् अलग्दरी, बुकारी: मुस्रतिमः

मैं ने पैरास्वर से पूछा,—"ये अल्लाह के रस्ता! मुक्ते इसलाम की एक बात येसी बता दीजिये कि फिर मुक्ते आप के बाद किसी और से कुछ पूछना न पड़े." रस्ताने कहा:— "कहो कि मुक्ते अल्लाह में विश्वास है, और फिर नेकी की राह पर चलते रहो."

-- सुकियान विन अन्दुत्ला अस्सक्रकी, सुसलिम.

एक आदमी ने आकर पूछा,—"ये अस्ताह के रसूत! इसताम की सब से अच्छी बात क्या है ?" मुहम्मद साहब ने जवाब दिया:—"यह कि मूकों को खाना खिलाओ और सब को सताम करो, जिन्हें दुम जानते हो उन्हें भी और जिन्हें दुम नहीं जानते उन्हें भी."

—इन्न अमरू विन अलआस, बुखारी: मुसलिम: नसाई.

मुहस्मद साहब ने कहा,—"हर मजहब की एक साम नेकी होती है, और इसलाम की खास नेकी इनकिसार यानी नमता है."

-- चैद बिन वलहा, मालिक.

श्रुरुमार साहब ने श्रुआज को यमन का गवरनर बनाकर भेजा. बलते वक्त श्रुहरूमद् साहब ने उससे पूका :— "अगर कोई मामला तुन्हारे सामने आयेगा तो तुम उसका कैसला कैसे करोगे ?" श्रुआज ने जबाब दिया,—"मैं क्रुरान محدد صاحب نے کہا :—"پنچیئے زمانے میں ایک آدمی تھا، موس کا فرشتہ اُس کی جان لینے کے لئے آیا ، فرشتہ اُس اُس کی جان لینے کے لئے آیا ، فرشتہ نے اُس اُس سے پہچاس" کیا تمانے کیوں کوئی نیک کام کیا ہے؟ اُس اُسی نے جواب دیا'—"سجھے آبر اُس آدمی نے جواب دیا'—"سجھے اُرر کنچھے نہیں یاد سوائے اِس کے کہ میں دایامیں لوگوں سے بھیپار کرتا تھا' مدرے گامکوں میں سے جو ڈرا خوش حال تھا اُنہیں میں جہوت دے دیتا تھا کہ وہ اپنی سویدھا کے انوسار میں جوری آدا کریں' اور جو تعلیف میں حرج تھے اُنہیں میں جانکی معانے کودیا تھا ، اِس پر اللہ نے اُس آدمی کو جات میں داخل کردیا ،"

-حديقه أور امسمودالبدري بخاري: مسلم ،

مهں نے پینمبر سے پوچھا'۔۔۔''اے اللہ کے رسول ! مجھے اسلام کی ایک بات ایسی بتا دیجئے که پهر مجھے آپ کے بعد کسی اور سے کچھ پوچھنا آنہ پڑے ،'' رسول نے کہا :۔۔''کہو که مجھے اللہ مهن وشواس ہے' اور پھر تیکی کی راہ پر چلتے رھو ۔'' سسنیلی بن عبداللہ الثقنی' مسلم .

ایک آدمی نے آکر پوچھا'۔۔''آ۔ اللہ کے رسول! اسلام کی سب سے اچھی بات کیا ہے ؟'' محمد صاحب نے جوأب دیا :۔۔''یہ که یورکوں کو کھاتا کھلاؤ اور سب کو سلام کرو' جنھیں تم جانتے ہو آنہیں بھی اور جنھیں تم فہیں جانتے اُنہیں بھی ۔''

ـــابن عمرو بن ألداص عنارى : مسلم : نساعى .

محمد ماهب نے کہا :۔۔۔''هر مذهب کی ایک خلمی نهمی هرتی هے' اور اِسلم کی خاص نهمی اِنْکسار یعنی نموتاهے'' ۔۔۔زیدبی طاحتہ' مالک ۔

محمد صاحب نے معان کو یمن کا گورٹو بذاکر بھیجا . چلتے وقت محدد صاحب نے اُس سے پوچھا : ۔۔۔ ''اگر کوئی معاملہ تمہارے ساملے آنھکا تو تم اُس کا فیصلہ کیسے کوچکی ؟'' '' معانی نے جواب دیا'۔۔۔''میں قرآن के कुराविक कैसला वहाँगा". मुहम्मद साहव ने फिर यूका:—"लेकिन जगर तुन्हें कुरान में इस तरह की कोई बार न मिले ?" इस ने जवाब दिया,—"तब में रस्ल की किसाल को सामने रककर इस के जनुसार कैसला कहाँगा." मुहम्मद साहब ने फिर पूछा:—"और जगर तुन्हें रस्ल की मिसाल में भी कोई बात न मिले ?" इस ने जवाब दिया,—"तब में खुद जपनी समम से काम बूँगा और में गुलती नहीं खाऊँगा." इस पर मुहम्मद साहब ने शाबाशी देरों हुए मुखाल की कमर ठोकी.

-- हारिस बिन धमरू, अबुदाऊद : तिरमिजी.

सुहम्मद साहब ने कहा:—"जो कोई लोगों के किसी मामले में भी उनका रक्षक या बली बनाया जाता है वह जगर किसी भी सुसलमान के लिये या किसी भी ऐसे जादमी के लिये जिसके साथ क्यादती हुई या किसी भी ऐसे जादमी के लिये जिसे उसकी मदद की जरूरत हो जपना दरवाजा बन्द कर लेता है, जल्लाह उस समय उसके लिये अपने रहम का दरवाजा बन्द कर देगा जब उसे जस्लाह की मदद की सबसे अधिक जरूरत होगी."

— अयुररामख् अल अजदी.

सुब्न्मद साहब ने एक बार कहा:—'मैं केवल एक आदमी हैं. तुम लोग अपने मगड़े मेरे सामने लाते हो. हो सकता है कि जिन दो आदमियों का मनड़ा मेरे तामने आता है उन में से एक अपनी सरफ़ की बात ज्यादा अच्छी तरह मेरे सामने रख सके, और दूसरा अपनी बात अता अच्छी तरह न रख सके, और ऐसी हालत में मैं जो अब सुन्ँ उसी के अनुसार कैसला दे दूँ, लेकिन वह फैसला गृतत हो, असल में हक दूसरे का हो. ऐसी सूरत में जिसके हक में मैं ने फैसला दिया है उसके हक में वह फैसला होजख़ की आग बन जायगा, इसलिये जो दोजख़ की आग साना बाहे खाय और जो बचना चाहे उसे चाहिये कि मेरे फैसला कर देने पर भी असली हकदार के हक में अपना दावा होड़ है."

> षम्म सलमा, बुखारी: मुसलिम: तिरमिजी: अबुदाकद: नसाई: मालिक.

मुहम्मद साहब ने लोगों को एक दिन यह किस्सा मुनाया:—"पिछले जमाने में एक आदमी था. उसने किसी दूसरे आदमी से इक जमीन ख़रीदी. जब उसने जमीन को लोग थो उसमें एक देश निकला जिसमें सोना भरा हुआ था. वह आदमी देग लेकर जमीन बेचने वाले के पास गुणा और उससे कहने सगा,—'यह सो अपना सोना, क्यों -حارث بن عمرو أبوداؤد: ترمذمي .

محمد صاحب نے کہا :۔۔''جو کرتی لوگوں کے کسی معاملے میں بھی اولی بنایا جاتا ہے وہ اگر کسی بھی مسلمانی کے لئے جس کے ساتھ ریاضی بھی ایسے آدمی کے اٹر جس کے ساتھ ریاضی بھرتی ہو یا کسی بھی ایسے آدمی کے لئے جسے اُس کی محمد کی ضرورت ہو اُپنا دروازہ بند کردیکا جب اُسے اللہ کی محد اُس کے لئے اُپنے رحم کا دروازہ بند کردیکا جب اُسے اللہ کی محد کی سب سے آدھک ضرورت ہوگی ۔''

-- أبوالشمن أل أزدى .

محمد صاحب نے ایک بار کہا :—''میں کیول ایک آرشی ھوں ، تم لوگ آینے جھکڑے میرے سامنے لاتے ھو ، ھوسکتا ہے کہ جس دو آدمیوں کا جھکڑا میرے سامنے آنا ہے آن میں سے ایک آپلی طرف کی بات زیادہ اچھی طرح میرے سامنے رکو سکے' اور دوسرا اپنی بات آنی آچھی طرح نے رکو سکے' اور ایسی حالت میں میں جو کچھ سنوں آسی کے آنوسار نیصلہ دے دوں' ایکن وہ نیصلہ غلط ھو' اصل میں حق دوسرے کا ھو۔ ایسی صورت میں جس کے حق میں میں نے نیصلہ دیا ہے آس کے حق میں میں نے نیصلہ دیا ہے اس کی جو میں میں جائیگا، اِس کم جو میں جائیگا، اِس کم جو میں اینا دورج کی آگ بن جائیگا، اِس کم جو میں اپنا دورج کی آگ جو جھٹ میں اپنا جائیگا، اِس کم حق میں اپنا دورج چھرڈ دے۔''

-أم سلمه بخارى: مسلم: ترمذى: أبوداؤد: نسام : مالك .

محدد صاحب نے لوگوں کو ایک دن یہ تصه سنایا :۔
"بعجلے زمانے میں ایک آدمی تھا۔ اُس نے کسیدوسرے آدمی سے
کچھ زمین خوریدی، جب اُس نے زمین کو کھودا تو اُس میں ایک
دینے لکا جس میں سونا بھوا ہوا تھا۔ وہ اُدمی دینے لاکو زمین بینچنے والے کے باس گیا اور اُس سے کہا۔ لگا'۔۔'یہاو اُپنا سوانا کیس

कि मैं ने सुनन्ते केंक्स कार्मान न्यीकी है, पुन्हारा सोना नहीं सरीहा? बेकने काले ने जनाव दिया,—मैंने पुन्हारे हाथ जमीन बेक की है, क्समें जो कुछ है सुन्हारा है, मैं इसे नहीं ने सकता.' इस पर वह दोनों एक तीसरे जोदमी के पास कैसने के लिये गए. इस तीसरे ने उन से पूछा,—'नया तुन्हारे कोई बच्चा है ?' उनमें से एक ने जनाव दिया,—'मेरे एक लड़की है.' इसपर फैसली करने वाले ने कहा,—'मेरे एक लड़की है.' इसपर फैसली करने वाले ने कहा,—'तब फिर इस लड़के की इस लड़की के साथ शावी करदो और यह धन उन होनों पर सक्व करो और उन्हीं को है दो."'

-इन्माम विन सुनब्बिह, बुलारी.

मुह्म्मद साहब ने कहा:—"बस्ताह दयावान है और ह्या करने वासों को प्यार करता है."

—व्यायराा, मुस्रलिम.

मुह्म्मद साहद ने कहा :—"जिसके दिल में द्या नहीं इसमें काई गुख नहीं."

—जरीर, ग्रुसलिम.

मुह्म्मद् साह्य ने कहा:— "अल्लाह् जिस किसी घर के लोगों के दिलों में द्या पैदा कर देता है, उन्हें वह अपनी बरकतें देता है, और जिन लोगों से द्या करने की तीकीक अल्लाह ले लेता है उन्हें वह अपनी बरकतों से भी महरूम कर देता है."

—आयशा, बेहकी.

एक दिन गुहम्मद सासन मसजिद में आए. उन्होंने देखा कि लोगों के दो गिरोह अलग अलग नैठे हुए हैं. मुहम्मद साहन दोनों के पास से निकले. उनमें से एक गिरोह बड़ी लगन के साथ अल्लाह को बाद कर रहा था और दूसरे गिरोह में कुछ लोग दूसरों को पढ़ा रहे थे. यह देखकर मुहम्मद साहन ने कहा:—''यह दोनों गिरोह अल्डा काम कर रहे हैं, लेकिन इनमें से एक गिरोह दूसरे गिरोह से बढ़कर है. जो गिरोह इतनी लगन के साथ अल्लाह को याद कर रहा है उन्हें अल्लाह चाहे तो अपनी वरकते दे और न चाहे तो न दे. और दूसरा गिरोह एक दूसरे के इत्म और जानकारी को बढ़ा रहा है अनपड़ों को पढ़ा रहा है. इसलिय यह लोग बढ़कर हैं. मैं भी केबल एक शिक्षक बना कर मेजा गया है."

—चन्दुस्ता विन चमरू, दारिमी. अनुवादक—भी मुजीव रिजवी که میں لے تم سے کول زمین خویدی ہے تبہاراً سوالاً الله الله الله خواب دیا اسلامی لے تبہاراً الله الله خواب دیا اسلامی لے تبہاراً الله الله میں جو کچھ ہے تبہاراً ها میں اسے نہیں لے سکتا ، اس پر وہ دونوں ایک نیسرے آدمی کے پاس نیصلے کے لئے گئے، اس تیسرے نے اُن سے پوچھا اُدمی کے پاس نیصلے کے لئے گئے، اُس تیسرے نے اُن سے پوچھا سے کیا تبہارے کوئی بچہ ہے ہی اُن میں سے ایک نے جواب دیا سے میرے ایک لوکا ہے ، درسرے نے کہا سے میرے ایک لوکی ہے ، اس پر نیصله کرنے والے نے کہا سے میرے ایک لوکی کے ساتھ شادی کردو اور یہ دھی اُن دونوں پر خوج کرہ اور اُنھیں کو دے دو ."

-همام بن منبه بضارى .

محمد صاحب نے کہا :۔۔۔''الله دیاوان کے اور دیا کرنے والی کو پیار کرتا کے ۔''

ــعائشه اسلم

۔ محمد صاحب نے کہا :۔۔ دحس کے دل میں دیا نہیں اُس میں کوئی گن نہیں۔'' اُس میں کوئی گن نہیں۔''

-جريرا مسلم ،

محمد صاحب نے کہا :۔۔۔ "الله جس کسی گهر کے لوگوں کے دلوں میں دیا پیدا کردیتا ہے، اُنہیں وہ اُپنی برکتیں دیتا ہے ، اور جن لوگوں سے دیا کرنے کی تونیق الله لے لیتا ہے اُنہیں وہ اُپنی برکتوں سے بھی محروم کردیتا ہے '''

- عائشه أور بيبقى ـ

ایک دی متحد صاحب مسجد میں آئے ۔ اُنہوں نے دیکھا کہ لوگوں کے دو گروہ الگ الگ بیٹھے ہوئے ہیں ، متحد صاحب دوئوں کے پاس سے نکلے ، اُن میں سے ایک گروہ ہوی لکن کے ساتھ اللہ کو یاں کررہا تھا اور دوسرے گروہ میں کچھ لوگ دوسروں کو پڑھا رہے تھے ، یہ دیکھکر متحد صاحب ہے کہا :۔۔"یہ دوئوں گروہ اچھا کام کو رہے ہیں' لیکن اِن میں سے ایک گروہ دوسرے گروہ سے بڑھکر ہے ، چو گروہ اُنٹی لکن کے سانھ اُنہ نہ یاں کررہا ہے آئی بی اللہ چاھے تو اپنی برکتیں دے اور دوسرا گروہ ایک دوسرے کے علم اور جانکاری کو بڑھا رہا ہے اور انہزھوں کو پڑھا رہا ہے ۔ اِس لئے یہ لوگ بڑھکر ہیں ، میں بھی کیول ایک شکشک بناکو بھیچے کیا ہوں ۔"

- عبدالله بن عبرو' داریمی . آنروادک-شری م<del>دی</del>یب رفوی . آنروادک-شری م<del>دی</del>یب رفوی . 'तास' एजेन्सी नई दिस्ती से निकतने वाले "न्यूज पेन्ड व्यूज फ़ाम दी सोवियत यूनियन" में भाई दुनाविन्सकी का एक कोटा सा सुन्दर लेख रूसी बच्चों की सब से बड़ी संस्था "किशोर लेनिनाइट्स" (Young Leninites) के बारे में क्या है.

बच्चों की इस तरह की संस्थाएं आजकल दुनिया के लगश्चग सब सभ्य देशों में भीजूद हैं. जाम तीर पर इन्हें "बंग पायोनीयर्स" कहते हैं. रूस में यह संस्था सन् 1922 में कायम हुई थी जीर बहां "बंग लेनिनाइट्स" कहलाती है.

इस समय सोवियत हस भर के अन्दर नी बरस की उमर से लेकर चौदह बरस की उमर तक के डेढ़ करोड़ से अमर लड़के और लड़कियां इस संस्था के मेम्बर हैं.

संस्था के उद्देश्य ये हैं:--

(1) लड़कों और लड़कियों में अपने देश के लिये प्रेम पैदा करना:

(2) डनमें सब देशों की जनता के लिये आदर पदा करनाः

(8) बनमें हाथों पैरों से मेहनत मजदूरी के लिये मान पैदा करना, और

(4) उनमें ज्ञान की चाह को बढ़ाना.

संस्था के सब मेम्बरों में चार गुन पैदा करने की कोशिश की जाती है:—(1) ईमानदारी, (2) शिस्त (हिस्सिपिस्न), (3) ऊंचे सिद्धान्त, चौर (4) सब के साथ भाई चारे का भाव.

नी बरस से ऊपर उमर का किसी भी स्कूल का कोई भी सड़का या लड़की जो चाहे संस्था का मेम्बर बन सकता है. हर नए मेम्बर को चपने साथियों के सामने इस ब्याशय की प्रतिहा करनी पड़ती है:—

"मैं जी लगाकर पद् लिख्ंगा, स्कूल में और स्कूत के बाहर शिस्त का अच्छी तरह पालन करूँ गा, अपने अध्यापकों और बड़ों का आदर करूँ गा, सब के साथ मिठास और नम्रता का बरताव करूँ गा, मेहनत करूँ गा दूसरों की मेहनत का आदर करूँ गा, जनता के माल और बीजों की रक्षा करूँ गा, समाज के लिये लामदायक कामों में हिस्सा लूँगा, अपने माँ बाप को और अपने बड़ों को मदद दूंगा, ईमान-दार और सच्चा रहुंगा, अपने साथियों के सदा काम सालगा, अपने से छोटे बच्चों की मदद और सकरारी कराने में बाद के साथ सालगा, अपने से छोटे बच्चों की मदद और सकरारी कराने से छोटे बच्चों की मदद और सकरारी साथ के साथ सालगा, अपने से छोटे बच्चों की मदद और सकरारी साथ के साथ सालगा, आपने से छोटे बच्चों की सदद और सकरारी साथ के साथ सालगा, आपने से लाग हुंगा, अपने करारत में सब के साथ सालगा, आपने से लाग हुंगा, अपने करारत में सब के साथ सालगा, आपने स्वागा, आपने से लाग हुंगा, कार करारत में सब के साथ सालगा, आपने साथगा, आपने साथगा

اللس ایجینسی نئی دلی سے نتانے والے التی این ویوز این ویوز فرام دنی سویت یونین میں بھائی دوبروونسکی کا ایک چہوٹا سا سندر لیکھ روسی بچوں کی سب سے بڑی سنستیا الکھرر لیاناٹلس" (Young Leninites) کے بارے میں جیها ہے .

بھوں کی اِس طرح کی سنستہائیں آجال دنیا کے لگ بھگ سب سبھتہ دیھوں میں موجود ھیں ، عام طور پر اِنھیں الیک شبک پایونیوس'' کہتے ھیں ، روس میں یہ سنستہا ہیں 1922 میں قایم ھوئی تھی اور وھاں ''ینگ لیننائٹس'' کہتے ہے ۔

اس سعم سوریت روس بھر کے اندر نو برس کی عمر سے لیکر چودہ برس کی عمر تک کے دیڑھ کروڑ سے اُوپر لڑکے اُور لوکیاں اِس سلستھا کے میدبر ھیں ،

سنستها کے اُدیشیہ یہ میں :۔۔

(1) لؤكوں أور لوكيوں ميں اپنے ديھى كے لئے پريم پيدا كونا؟

(2) أن ميں سب ديشوں كى جنتا كے لئے أدر بيدا كرنا؟

(8) أن مهل هاتهرس پنروں سے محدث مزدوری كے لئے مان پيدا كرنا اور

(4) أن مين گيان كي چاه كو بوهاڻا .

سنستها کے سب میمبروں میں چار گن پیدا کرنے کی کوشش کی جاتی ہے:—(1) ایمانداری' (2) شست (قسیلان )' (3) ارنچے سدھانت' اور (4) سب کے ساتھ بہائی چارے کا بھاؤ ،

تو برس که آوپر عدر کا کسی بھی اِسکول کا کوئی بھی اوکا اوکی جو چاہے ساستھا کا میدبر بن سکتا ہے ۔ ھر نئے میدبر کو آپنے ساتھیں کے ساملے اِس آھٹے کی پرتکیا کرئی پرتی ہے : — الامیس چی لگا کر پروس لکھونگا اِسکول میں اور اِسکول کے باعو شست کا اُچھی طرح پالن کرونگا اپنے ادھیاپکوں اور بروی کا آدر کرونگا سب کے ساتھ مٹھاس اور نموت کا اور بروی کی محملت کا آدر کرونگا محملت کرونگا درسروں کی محملت کا آدر کرونگا میں حصہ لونگا اپنے ماں باپ کو اور اپنے بروں کو ایشیایک کلموں میں حصہ لونگا آپنے ماں باپ کو اور اپنے بروں کو مدد دور خبرگیری کرونگا اور سچا رھونگا آپنے ساتھیوں کے سدا کام آوپیا کو اور اپنے بروں کی مدد اور خبرگیری کرونگا اور میں سب کے ساتھ شامل رھونگا ۔: اُپنے سے چھوٹے بچھوں کی مدد اور خبرگیری کرونگا اُپنے ساتھیوں کی مدد اور خبرگیری کرونگا اُپنے ساتھیوں کی مدد اور خبرگیری کرونگا ۔:

हर बेन्द्रर को गते में एक लाल समाल बांचना होता है जीर वक बैज लगाना होता है जिसपर एक लाल तारा बना रहता है जीर हमेशा वैयार", ये शब्द लिसे होते हैं. यही संस्था का नारा है.

इस संस्था का मेम्बर बनना हर स्कूल के हर बच्चे के जीवन में एक बहुत, बड़ी घटना समकी जाती है. यह पहली संस्था है जिसका कोई रूसी लड़का या लड़की मेम्बर बनता है. मेम्बर मिलकर खुद अपने अपने दल का नेता और अपनी छोटी बड़ी कीन्सिलों के मेम्बर खनते हैं.

संस्था की सब छोटी बड़ी बैठकों और जलसों में सब मेम्बर हर विषय पर आजादी के साथ बहसें करते हैं. खुद अपने सब मामलों का फैसला करते हैं. अपने दल और अपनी संस्था के मान का सब हर समय पूरा पूरा ख्याल रखते हैं. हर मेम्बर यह जानता है कि अगर वह कोई बुरा काम करेगा तो उसके साथी उसे बुरा कहेंगे. इस तरह समाजी ज़िम्मेबारी और जनता की राय की कदर शुरू से बच्चों के दिलों में पैदा करदी जाती है.

बैठकों और जलसों में सब मेम्बर अपने साथियों की यानी एक दूसरे की पढ़ाई लिखाई और दूसरों के साथ म्यवहार की चरचा करते हैं. कर्ज कीजिये कोई लड़का या तड़कां अपनी पढ़ाई में पीछे मालूम होती है. ऐसी सूरत में दूसरे उससे पूछते हैं—''क्या बात है ? क्या तुम्हें इन्छ हिठनाई मालूम होती है ? या तुम मुस्त हो या परवाह नहीं हरते ? किसी किशार लेमिनाइट' को मुस्त या बेपरवाह तो वहीं होना चाहिये. अगर तुम्हें कहीं कठिनाई मालूम होती है तो हम तुम्हें मदद देंगे." एक दूसरे की मदद करना संस्था हा पिछत्र नियम है. हर मेम्बर अपना कर्ज सममता है कि भपनी पढ़ाई में पिछड़े हुए साथी की मदद करे और जो खुळ हुद जानता है वह दूसरों को सिखाए.

हर बचे को संस्था का मेम्बर बनने के दिन से ही इस तह के छाटे छाटे काम सौंपे जाते हैं, जैसे मीसम, सर्दी, रमी बरौरा को ज्यान से देखना, सममना और नोट जरना, पाखाना और गुसलखाना साफ करने वाले को । साने के कमरे में परसने वाले को उसके काम में । दह देना, म्झूल की दीबार पर चिपकाए जाने वाले समा-। तर पत्र के सम्पादन में हाथ बटाना, इत्यादि, गरमियों में स संस्था के मेम्बरों के जलग अलग कैम्प लगते हैं. उन म्पों में मेम्बरों को फूलों की क्यारियां बनानी होती हैं, । लों के लिये मैदान ठीक करने पदते हैं, रसोई का सारा गम करना पदता है, वरोरा बरौरा, कभी कभी बचे मिल जर दूर दूर के सफ़र करते हैं. उन सफ़रों में उन्हें अपना । व काम खुद देखना पड़ता है. उनहें खुद अपने बटन किने होते हैं, अपने बरतन साफ करने पढ़ते हैं. अपने

هو ميمبر كو گلے ميں أيك الل رومال بالتجھا هوتا شه أور أيك بيج الثانا هوتا شه جس ور أيك الل داراً بنا رها شه أور - الهميشة تيار'' يه شبد لعے هوتے هيں . يهى سنستها كا تعزه شي

اس سنستها کا میمبر بننا هر اِسکول کے هر بنچے کے جهوں میں ایک بہت بڑی گیٹنا سنجھی جاتی ہے ۔ یہ پہلی سنستها ہے جس کا کوئی روسی اوکا یا لوکی مهمبر بنتا ہے ، مهمبر ملکو خود اپنے اپنے دل کا ٹیٹا اور اپلی چھوٹی بڑی کوئسلوں کے مهمبر چلتے ہیں ،

سنستها کی سب چہوئی بڑی بیٹهنرس اور جلسوں میں سب میسبر هر وشئے پر آزادی کے ساتھ بحثیں کرتے هیں ، خود اپنے سب معاملوں کا نیصلہ کرتے هیں ، اپنے دیل اور اپنی سنستها کے مان کا سب هر سبے پورا پورا خیال رکھتے هیں ، هر مهمبر یہ جالتا ہے کہ اگر وہ کوئی ہوا کام کریگا تو اُس کے ساتھی اُسے ہوا کہیںگے ، اِس طرح سماجی زمغواری اور جنتا کی رائے کی برا کہیںگے ، اِس طرح سماجی زمغواری اور جنتا کی رائے کی قدر شروع سے بچوں کے دارس میں پیدا کردی جاتی ہے ۔

بیتهکوں أور جلسوں میں سب میدیر آپنے ساتھیوں کی یعنی ایک دوسرے کی پڑھائی لکھائی اور دوسروں کے ساتھ ویوھار کی چوچا کرتے ھیں ، فرض کیجئے کوئی لوکا یا لوکی اپنی پڑھائی میں پیچھے معلوم ھوتی ہے ، آیسی صورت میں دوسرے آس سے پوچھتے ھیں۔ ''نیا بات ہے ؟ کیا تمہیں کچھ کٹینائی معلوم ھوتی ہے ؟ کیا تمہیں کچھ کٹینائی معلوم فوتی ہے ؟ کسی 'کشور لینائٹ کو سست یا بےبرواہ تو ٹیھیں مود دینئے ،'' ایک دوسرے کھینائی معلوم ھوتی ہے تو ھم تمھیں مدد دینئے ،'' ایک دوسرے کی مدد کرنا سنستھا کا پوتر ٹیم ہے ، ھر مهمبر اپنا فرض سمجھتا ہے کہ اپنی پڑھائی میں پچھڑے ھوئی ساتھی کی مدد کرے اور ہو کچھ خود جانتا ہے وہ دوسروں کو سکھائے ،

विद्यीने ठीक करने होते हैं, संस्था में कोई तदका या तदकी चाराम-पसन्द या भावारा नहीं रह सकता.

संस्था क लगभग सब बढ़े लड़के लड़कियां अपने से छाटे लड़कों और लड़कियों की बाजाब्दा क्लासें बनाकर या वल बनाकर उन्हें पढ़ाते हैं, छुट्टियों में या स्कूल के समय के बाद उनके लिये खेल कूद का प्रबन्ध करते हैं, उन्हें कितावें पढ़कर सुनाते हैं, कहानियां सुनाते हैं, और उन्हें स्कूल के पाठ समम्मने और याद करने में मदद देते हैं. इससे बड़े लड़कों लड़कियों का अपना लाभ भी होता है, छोटों में उनका मान बढ़ता है और उनका अपना ज्ञान मी अधिक पक्षा होता है. संस्था में एक कहावत है—'हर 'लेनिना-इट दूसरों के लिये आदश (नमूना) होता है.''

मेन्बरों की गगह जगह सभाएँ होती हैं जिन्हें वह "मैं क्या करना जानता हूँ" कहते हैं. इन सभाओं में वह बिद्वानों, साइन्सदानों, लेखकों, मिलजुल कर खेती करने बाले किसानों, कारीगरों और काव्हों मजदूरों को जुलाते हैं, जो अपना अपना काम वहां को सममाते हैं, जिससे

दबों में उत्साह श्रीर जानकारी दोनों बढ़ते है.

काम करने का शीक और काम की आदत तरह तरह से बबों में पैदा की जाती है. ग्रुक्त की क्लासों के बबे काराज और गचे के नमूने, कशीदे, खिलीने और मशीनें बनाते हैं, लकदी की चीजें बनाना कशीदे कादना, खुदाई का काम, जाली बनाना वरौरा सीखते हैं. बढ़े लड़के लड़कियां काराज या लकदी के हवाई जहाज, रेडियों और टेलीविजन बनाते हैं. बबों के अच्छे अच्छे कामों की हर साल जगह जगह बड़ी बढ़ी नुमाइशें की जाती हैं.

क्स की कम्यूनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार दोनों वां की तरफ सब से अधिक ध्यान देते हैं. हर शहर, हर क्रसवे और लगभग हर बड़े गांव में "किशोर लेनिनाइटों " हे अलग मकान हाते हैं जहां तजरबेकार अध्यापक या बड़े लोग उन्हें तरह तरह की बातें सिखाते हैं, बचों की अपनी रेलें होती हैं, अपने थियेटर होते हैं, अपने पुस्तकालय होते हैं, अपने मैदान, पार्क और खेल-घर होते हैं. गरमियों की और जाड़े की छुट्टियों में देश भर में उन के अलग अलग खेल, ट्रानोमेंट और तरह तरह के जलसे होते हैं.

सोवियत रूस भर में लाखों नर नारी बड़े प्रेम और चस्तास के साथ उन दिनों का याद करते हैं जब वह स्वयं लाल रूमाल बांधकर और लाल तारे का बैज लगाकर फिरा और काम किया करते थे.

—बानुबादक श्री मुहम्मद हैदर

مِعِيرِكُ " أَعِينَاكُ" كُركَ هُونَ هَينَ عَيْنَ السَّهَا مَيْنَ كُونِي لَوْكَا يَا لَوْكَيَ أَرْكُ وَا لَاكِي أَرْلُمْ يُسْتَعْرِ فِيا أُولُوهُ تَعِيْنِ وَهُ سَكِنَا .

مسلسها کے اگابھگ سب بڑے ارکے اوکیاں اپنے سے چھوٹی اوکی اور اوکیوں کی باضابطہ کا سیں بنا کر یا دل بنا کر آئییں ہوئے جھی جھوٹے جس کے بعد آن کے لئے بیش کود کا پربندھ کرتے ھیں' آئیں کتابیں پڑھکر سناتے ھیں' اور آئییں اسکول کے پائے سمجھنے اور یاد کرنے بی مدد دیتے ھیں' اس سے بڑے لوکیں لوکیوں کا اپنا آبھ بھی موا ہے' چھوٹوں میں آن کا ملی بڑھتا ہے اور آن کا اپنا گیاں بھی ادھک پکا ھوتا ہے۔ سنستھا میں ایک کہارت ہے۔ بھی ادھ کیاں ہوتا ہے۔ سنستھا میں ایک کہارت ہے۔ بھی ادھ کیاں ہوتا ہے۔ سنستھا میں ایک کہارت ہے۔

مهمیوروں کی جائے جائے سیهائیں هوتی هیں جلهیں وہ السین کها کرنا جائے هوں'' کہتے هیں ۔ اِن سبهاؤی میں وہ ویوائوں' سائنسدائوں' لیکہائوں' سل جل کو کہنتی کرنے والے کسانوں' کاریکروں اُور اُدرهی مزدوروں کو بالتے هیں' جو اپنا اپنا کم بمجوں کو سمجھاتے هیں' جس سے بحوں میں اُنساہ اور جائکاری دوئوں بڑھتے هیں۔

روس کی کمیونسٹ پارٹی اور سوویت سرکار دونوں بھوں کی طرف سب سے ادھک دھیاں دیتے ھیں ، ھو شہر اور معیار دیتے ھیں ، ھو شہر اقصیمار لگ بھگ ھو بڑے گؤں میں "کشورلیننٹائٹوں" کے الگ مکلی ھوتے ھیں جہاں تجربعکار ادھیاپک یا بڑے لوگ اُنھیں طرح طرح کی باتیں سکھاتے ھیں اپنے پستکالیہ ھوتے ھیں اپنے میدان میں اپنے تھیٹوے ھوتے ھیں اپنے میدان پارک اور کھیل - گور ھوتے ھیں ء گرمیوں کی اور جازے کی چھیں میں دیھی بھر میں اُن کے الگ الگ کھیل کییاں تورناہدے اور طرح طرح کے جاسے ھوتے ھیں ،

سرویت روس بهر میں اکہوں نرناری بڑے پریم أور اُلس کے ساتھ آن دائیں کو یاد کرتے ہیں جب وہ سویم الل رومال باندھکو اُور الل تاریخ کا بیج لگا کر پھڑا اُور کام کیا کرتے تھے۔

--انوادک شری محمد حیدر

**56' Pers** 

( 30 )

\*56 to

## जिन्नोबानी बुकेशिन्नो

कैसे राइर में नातन नाम का एक बहुत बड़ा क्मीदार रहता था. उसके पास बेद्युमार धन-दीलत थी. पूरव-पश्चिम के जाने-बाने वाले उसकी जमींदारी के पास से ही गुकरते थे और उसके अपार वैभव को देखकर दंग रह जाते थे. दूर-दूर के नामी कारीगरों को बुलाकर उसने अपना एक महल बनवाया था, जिसे देख-देख कर लोग दाँतों तले उँगली दवाते थे. बाहरी सुन्दरता के अलावा पेरा और आरायश के ऐसे साधनों से उसने अपने महल को सजाया था कि दूर-दूर तक उसकी मिसाल का दूसरा महल नहीं मिलता था. सेकदों नीकर-चाकर उसके यहाँ काम करते थे. हजारों रुपये महीने मेहमानों की आवमगत में खूर्च किए जाते थे. कहने का मतलब यह है कि ऐसी शान-शौकत से विरत्ने आहमी ही रह सकते हैं.

नातन के दौलत-मन्द होने के साथ-साथ उसके चरित्र में एक ऐसी विशेषता भी थीं जिससे उसे यश और हर-दल अजीजी भी हासिल हुई थी. उसके जैसे उदार आदमी दूँदने पर भी मुश्किल से ही मिलते थे. कोई भी किसी समय उसके यहाँ आजाए, खाली हाथ लौटकर नहीं जाता था. जकरतमन्दों को बड़ी उदारता से उसके यहाँ दान-दक्षिणा दी जाती थी. उनकी तक्कलीकों को दूर करने के लिए वह खब हमेशा तैयार रहता था.

इस ख्दारक्षा का नतीजा यह हुआ कि दूर-दूर तक खसकी शोहरत फैलने लगी. उसकी जमींदारी से थाड़ी दूर पर रहने बाले मिथरीडन्स मक एक नौजवान जमींदार के कानों में जब उसके नाम और काम की बढ़ाई पहुँची तो उसके मन में नातन की तरफ हसद का भाव पैदा हो गया. मिथरीडन्स भी मामूली घनी नहीं था; ठपये पैसे की उसके पास भी काफी इफ़रात थी. उसके मन में विचार आया कि नया केवल नातन को ही इतना यश मिल सकता है, मुके नहीं १ और उसने भी लाखों उपये ख़ुर्च करके नातन के जैसा ही एक महल तैयार करवा लिया. अब उसके यहाँ भी मेहमान आने लगे और उनका भरपूर स्वागत-सरकार होने लगा. जुकरतमन्दों को दान-दक्षिया भी जूब मिलने लगी. मतलब यह कि बह हर प्रकार की ख्वारता में नातन से बरावरी करने की कीरिया करने लगा. महज बरावरी करने से ही असे ससस्वी नहीं हुई, बहक उससे भी जागे

# جيوراني بركيشيو

کیتے شہر میں ناتی نام کا ایک بہت ہوا زمیندار رہا تھا۔
اس کے پاس پشمار دھن دولت تھی ، پورب پشچم کے جانے
افے والے اُس کی زمینداری کے پاس سے ھی گذرتے تھے اور اُس
کے آیار ویبھو کو دیکھکر دنگ رہ جاتے تھے ، دور دور کے نامی
اویکروں کو بلاکر اُس نے اپنا ایک محل بنوایا تھا، جسے دیکھ
بیکھکر اوک دائنوں نانے اُنکٹی دیاتے تھے ، باغری سادرتا کے
بیکھکر اوک دائنوں نانے اُنکٹی دیاتے تھے ، باغری سادرتا کے
بیکھکر اور آرایش کے ایسے سادھنوں سے اُس نے اپنے محصل
او سجایا تھا کہ دور دور نک اُس کی مثال کا دوسرا محصل
نہمی ملتا تھا ، سیکووں نوکر چاکر اُس کے بیاں کا دوسرا محصل
مغزاروں رویئے مہنانے مہمانوں کی آؤبھکت میں خرچ کیائے جاتے
نے ، نہنے کا مطلب یہ ھے کہ ایسی شان شوئت سے برانے آدمی

ثاتن کے دولتداد هونے کے ساتھ ساتھ اُس کے چوتو میں یک ایسی وہیشتا بھی تھی ہوس سے اُسے بھی اور هودادوبوں بھی حاصل هوئی تھی ، اُس کے جیسے آدار آدمی تھوئتھا پھی مشکل سے ھی ملتے تھے ، کوئی بھی کسی سے اُس کے بھی اُجائے ' خالی هاتھ لوٹکر نہیں جاتا تھا ، ضوورتبندوں کو بوی اُدارنا سے اُس کے بہاں دان دکھنا دی جاتی تھی ، اُس کے بہاں دان دکھنا دی جاتی تھی ، اُن کی تکلینوں کو دور کوئے کے لئے وہ خود همیشہ تیار رهتا تھا ،

اس آدارتا کا نتیجہ یہ ہوا کہ دور دور تک اُس کی شہرت پھیلئے لگی ، اُس کی زمینداری سے تبوری دور پر رہنے والے متبوری تنس نامک ایک نوجوان نے کانوں میں جب اُس کے دام اور کام نی برائی پہونچی تو اُس کے من میں ناتن کی بلوف حسد کا بھاڑ پیدا ہوگیا ، متبریڈنس بھی معمولی دھئی نہیں تھا' ررپٹہ پیسے کی اُس کے پاس بھی کانی آوراط تھی ، اُس کے من میں روپٹہ خرچ اُس کے مان دی گاہوں روپٹہ خرچ مل سکتا ہے' مجھے نبیں آ اور اُس نے بھی لائیوں روپٹہ خرچ کو ناتن کے جیسا ھی ایک محل تیار کروا لیا ، سوائت ستکار ہوئے لگا ، ضرورتمادوں کو دان دکھنا بھی خوب سوائت ستکار ہوئے لگا ، ضرورتمادوں کو دان دکھنا بھی خوب میان آئے لگے اور اُن کا بھرپور میان آئے لگے اور اُن کا بھرپور میان آئے لگے اور اُن کا بھرپور موائت ستکار ہوئے لگا ، ضرورتمادوں کو دان دکھنا بھی خوب میان آئے لگے اُن دکھنا بھی خوب میان آئے لگے اُن دکھنا بھی خوب میان آئے لگے ، محض برابری کرنے سے بھی آئے بھر برابری کرنے کی کوشش کرنے لگا ، محض برابری کرنے کی کوشش کرنے لگا ، محض برابری کرنے کی کوشش کرنے لگا ، محض برابری کرنے تھی آئے۔

\* in in

बहुकर सोगों पर अपना सिक्का क्रायम करन के खप्त भी बहु देखने सगा.

एक दिन ऐसा हुआ कि जब वह अपने महल के दरबार द्राल में बाबेला बैठा था तो एक बुढिया वहाँ आई और भीका माँगने लगी, उसे जो कहा चाहिए था कौरन दे दिया गया. वहाँ से हटकर वही बहिया इसरे दरवाले पर पहुँची भीर भीका माँगने लगी. वहाँ से भी उसे नो इस मिलना चाहिए था. मिल गया. इस प्रकार एक को छोड़कर दसरे पर, दूसरे से इट कर तीसरे पर पहुंचती हुई वह बुदिया बरबार हाल के बारह दरवाओं पर पहुँची और हर दरवाओ से भीख में कुछ न कुछ डासिल करती रही. मिथरीडन्स इस बुडिया को ध्यान से देख रहा था, जब वह बारहवें इरवाफो से इटकर तेरहवें पर भीस माँगने आई तो मिथरी-इन्स से कुछ कहै बिना न रहा गया. बोला- ऐ. माई! अब तो तुम तंग करने लगीं." लेकिन उसने इस नार भी इस भीका दे दी, बुदिया को मिथरीडन्स के ये लपज पसन्द महीं आये और वह वहीं बढ़बड़ाने लगी—''नातन की तो सत ही और है. बैसी उदारता है किस में ! हाँ उसके महल हे चौतीस दरवाओं पर मैं गयी, लेकिन किसी भी दरवाओ र किसी ने भी अभे भीख देते बक्त एक शब्द भी नहीं कहा. किन यहाँ तो बारहवें दरवाको पर ही मुमे रोक दिया मा." और वह फिर कभी मिथरीबन्स के दरवाजे पर भीख रिंगने नहीं चाई.

.... इस घटना से मिथरीडन्स का मन खट्टा हो गया और ह सोचने लगा कि इतने किए-करने पर भी मेरी किस्मत नातन की सी लोक-प्रियता नहीं बदी. किर कह देर बाद । इसके मन में नातन के प्रति इसद का भाव पैदा हो था भीर उसने तथ किया कि जब तक मैं नातन को इस सार से बिदा न कर दूँगा, मुक्ते मेरे परिश्रम का पुरस्कार-रा और लोक त्रियता-प्राप्त नहीं हो सकती. वह बढ़े जोश इठा और नातन को भीत के घाट उतार देने के मजबूत तरे के साथ वह उसकी जमींदारी की ओर चल पड़ा. तन के महल के पास पहुँच कर उसने अपने एक हो वियों को, जो उसके साथ आए थे, विदा कर दिया और र नातन से मिलने के लिए उसके महल की ओर बढा. ख के पास शाम के बक्त, बूढ़ा नातन बहुत साधारण गस में अकेला टहल रहा था. मिथरीडन्स ने उसे पहले ी नहीं देखा था. इसलिए उसे महल का कोई नौकर क्स कर क्सने पूछा कि नातन का महल कहाँ है ? नातन यह अ बदाते हुए कि वह खुद ही नातन है, मिथरीडन्स स्थागत किया और उससे कहा कि वह उसे, जहाँ वह ना चाहता है, क्रुशी से पहुंचा देगा. मिथरीडम्स ने उसके ा गहरी कुतकता प्रकट की और यह भी बाहा कि वह के लिए पेका इन्तकास करते. की छपा करे जिससे नातस

برطاق لوگین پر آینا سکه تایم کرنے کے سوین بھی ولا ریکھ تاہ

اَیک دور ایسا هوا که جب وه اپنے محل کے دوبار هال میں اکبلا بیٹیا تیا ہو ایک برهیا رهاں آئی اور بینک مانانے لئی ۔ اُسے جو کچے چاھئے تیا نہراً دے دیا گیا۔ وہاں سے متاکر رهی بوهها دوسرے دروازے پر پہونچی اور بھیک مانکنے لئی ۔ رهان سے بھی آسے جو کچھ مللا چاھئے تھا مل گیا ۔ اِس برکار ایک کو چھورکر دوسرے یوا دوسرے سے محاکر تیسرے پر بہانچیتی هوئی وہ برهیا دربار هال کے بارہ دروازوں پر پہولنچی ارزامر دروارم سے بھیک میں کچے له کچے حاصل کرتی رهی . مَا يُرِدُسُ أُس برهيا كو دهيان سے ديكم رها تها . جب وه باللين دروازم سے محاکر تيرهويں پر بهيک مانکلے آئی تو مَعْ اللَّهُ وَاللَّهِ عَلَيْهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّا اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّالَّةِ اللَّهِ ابنا تو تم تنگ کولے لکیں ۔" لیکن اُس نے اِس بار بھی اُسے بینک دیے دی ، بوھیا کو متہریڈلس کے یہ لفظ پسال ٹہیں آله اور وه وهيل بوبوانے لکی۔۔ "ناتن کی تو بات هی اور هے ریسی آدارتا ہے کس میں اھاں 9 اُس کے مصل کے چونٹیس درواؤوں پر میں گئی' لیکن کسی بھی دروازے پر کسی نے بھی مجور بهیک دیتے وقت ایک شبد بھی نہیں کہا ، لیکن یہاں تو بارهوین دروازے پر هی مجھے روک دیا گیا ،" اور ولا یور کبھے متھریڈنس کے دروازے پر بھیک مالکتے نہیں آئی ،

ا إس كُهتنا سے متهريةنس كا من كهتا هوگها أور وه سوچنے لكا که اِتنے کئے کرنے پر بھی میری قسامت میں نانن کی سی لوک بران المال نہیں بدی ، پہر کچھ دیر بعد هی اُس کے من میں ناتور کے برتی حسد کا بھاؤ پیدا ہوگیا اور اُس نے طے کیا کہ. جب تک میں ناتن کو اِس سنسار سابد أنه کردونا مجم ميرم پریشرم کا پورسکار---یش اور لوک پرئیتا-پرایت نهیں هوسکتی، وہ بڑے جوش میں آلها' اور ناتی کوموت کے گھات آنار دینے کے مصبوط ارادے کے ساتھ وہ اُس کی زمینداری کی اور چل پڑا۔ ناتن کے مصل کے پاس پہونچ کر اُس نے اپنے ایک دو ساتھیوں کو جو أس كے ساتھ 'آئے تھے' بدا كرديا أور خود ثاتن سے ملئے كے لئے اُس کے محل کی اور بوھا، محل کے پلس شام کے وقت، بورها ناتن بهت سادهان لبلس مين أنيلا تهل رها تها . متهریدنس نے آسے پہلے کبھی نہیں دیکھا تھا ، اِس للہ اُس محل کا کوئی ٹوکر سمجھاکر اُس نے پوچھا که ثانی کا محل کہاں ہے ؟ ناتن نے یہ نہ بتائے ہوئے که وہ خود هی ثانن هے؛ مهروقلس کا سراکت کیا اور آس سے کہا کہ وہ اس جہاں وہ جاتا چاھٹا ہے' خرشی سے پہرنموا دیگا . متبریڈنس نے اُس کے پرتی گہری کرتابیتا پرکٹ کی اور یہ بھی چاھا کہ وہ اس کے لئے آیسا انتظام کرنے کی کریا کرے جس سے ناتی

करे देश नहीं असे कीर म कराड़े बार में इस जान करे. नातन ने कोई रांका अवंदा ताब्जु अज़िंदर किए बिना अपने सरस स्वभाव से क्से बचन दे दिया कि जैसा वह बाहता है, हैसा ही इन्तज़ाम कर दिया जायगा. इसके बाद वह क्से महस्र के अन्दर से गया. महस्र में पहुँचते ही क्सने अपने नीकर-बाकरों से कह दिया कि कोई इस अजनवी को यह न बताए कि नातन कीन है.

महल के एक बढ़े शानदार कमरे में मिथरीडन्स को ठइ-राया गया और नातन ख़ुद अपने की गुप्त रख कर उसकी बेह्रमाँ तवाजी में लग गया. मिधरीडन्स के बहुत प्रसने पर इसने केवल अपना यह परिचय दिया कि वह नातन का एक बहुत पराना नौकर है और उसी की 'सेवा करते-करते वह बुढ़ा हो बला है, लेकिन नातन ने उसकी सेवाओं के बढ़ले इसे अब तक विशेष तरक्की नहीं दी. लाग-बाग भले ही नातन के गुणों का बखान करें, बेकिन उसके प्रति उसकी कोई अद्धा नहीं है. भियरीयन्स इस बात से बेहद त्रसंत्र हुआ. उसने समम् लिया कि जिस काम के लिए वह यहाँ जाया है. इसमें इस व्यक्ति से काफी सहायता मिलेगी. एक दो दिन बाद जब उन दोनों में काफी घनिष्टता हो गई तो नातन ने भी मिथरीडन्स से पूछा जाप कीन हैं जीर किस रारज से यहाँ आये हैं ? मिथरीडन्स ने उसे एतबार के लायक समक अपना पूरा परिचय देकर अपने आने का मक्कसद बता दिया और कह दिया कि इस बात को वह गुप्त रखे और यथा शक्त चसकी सहायता भी करे. नातन उसके उद्देश्य को जानकर पहले तो कक चकराया लेकिन शीम ही सम्भल कर बोला-"बेटा मिथरीडन्स, तुम एक बड़े बाप के बेटे हो और असे भाशा है कि तुम कोई ऐसा काम न करोगे जिसमें तुम्हें नीचा देखना पढ़े. नातन के प्रति तुम्हारा इसद एक सालिक • इसद है. जिस उदारता को तुमने अपना उदेश्य बनाया है इसका मैं प्रशंसक हूँ. यदि दूसरे लोग भी तुम्हारी ही तरह, ब्दारता की बदारता से होड़ बदना, ग्रुक्त दर दें तो इस दुखी दुनिया को बड़ी राहत मिलेगी. तुम बेफिक रहो, तुम्हारा भेद किसी पर जाहिर नहीं होगा. और हाँ, रही नातन को समाप्त करने की बात, सो वह तो बूढ़ा आदमी है. सुबह के वक्त यहाँ से आधा मील दूर पर एक बराबि में वह घूमने जाता है. तुम किसी दिन वहाँ खुपके से पहुँचकर मजे में उसका सात्मा कर सकते हो. लेकिन उसका करल जिस रास्ते से जान्नो उसी से मत लौटना. पूरव की न्नोर एक दुसरा सुरक्षित रास्ता है वहाँ से अपने स्थान को खिसक नाना. " मिथरीडन्स एसकी बात से बहुत प्रसन्न हुआ और उसे धन्यबाद देकर अपना प्रोप्राम बनाने में जुट गया.

दुसरे दिन तड़के नातन चठा और बिना किसी संशय के भिषरीडम्स की दी हुई सुबना के अनुसार बरीजे में الله دیکھ نہیں سکے اور نہ اُس کے بار عمیں کچھ جائی کے اللئ اللہ سرال سربیاؤ سے آتھ ۔ کوئی شنکا انہوا تمجب ظاہر کئے بنا آپنے سرل سربیاؤ سے آتھ ، وہن دے دیا کہ جیسا وہ چاھٹا ہے، ویسا ھی اِنتظام کردیا جائیکا ۔ اِس کے بعد وہ اسے محل کے آئدر اے گیا ، محل میں بہرنچھے ھی اُس نے آپنے نوکو چاکروں سے نہدیا کہ کوئی اِس اِجلی کو یہ نہ بتائے کہ ناتی کون تھ ،

معل کے ایک ہوے شاندار کیرے میں معربیڈنس کو انہرایا کھا اور ثاتن خود اپنے کو گیت رکھر آس کی مہداں توازی میں لگ، گیا ، متهریدنس کے بہت پرچھنے پر اُسنے کھول آپنا یہ يريجه ديا كه وه ثانن كا ايك بيت يراثا توكر ها أور أسى كي سنبرا کرتے کرتے وہ بورها هو چلا ها ليكن ثانن لے أس كى سیواوں کے بدلے آسے آپ تک وشیش ترتی نہیں دی ۔ لوگ ہاک بیلے ھی ناتن کے گئیں کا یکہان کریں' لیکن اُس کے پرتی أس كي كرئي شردها نهيل هي متيزيدنس أس بات سيهم رسن ہوا. اُس لے سنجھ لیا که جس کام کے لئے وہ یہاں آیا ہے، أس مهى إس ويمتى سے كانى سهائنا ملهكى . ايك در دي ہمیہ جب اُن دونوں میں کانی گیلشتنا ہوگئی تو ثاتی نے بھی متہریۃابس سے پوچھا آپ کہن آھیں اور کس غرض سے یہاں آئے میں 9 متہریڈنس نے آسہ اعتبار کے لایق سمجہ اینا ببرا بربچے دیکو اپنے آنے کا مقصد بتا دیا اور کہت دیا که اِس بات کو وہ گہت رکھے اور یتھا شکتی اُس کی سپایتا بھی کرے ، ثاتن اُس کے اُدیشیه کو جان کر پہلے تو کچھ چکرایا لیکن شیکرہ می سنبهل کو بولا--"بیتا متهریدنس تم ایک برے باپ کے بیات هو أور مجهد أشا ها كه تم كوئي أيسا كام قه كور كه جس مين تبهین نیچا دیکھنا پڑے ، ناتن کے پرتی تبھارا حسد ایک ساتوک حسد هے ، جس دارتا کو تمنے اپنا ادیشیم بنایا هے اس کا میں پرشنسک میں ، یعنی درسرے الوگ بھی تمہاری ھی طرع آدارتا کی آدارتا سے هور بدنا شرع کر دیں تو اِس دکھی دلیاً کو ہوی راحت طیکی ، تم نے ذکر ردو کمہارا بھید کسی پر طاهر نهیں هرا ، اور هاں وهي ناتن كو سمايت كرا كي كي ہاساً سورہ تو ہورہا اُدمی ہے ، مدم کے رقت یہاں سے اُدھا ۔ مهل دور يو أيك بنهج مين ولا گهرماء جاتا هے ، ثم كسى دور وهل جهام سے پہوئیے کو مزے میں اُس کا خاتم کو ساتے هو . لهكي أس كا قتل كركے، جس رأستے سے جاؤ أسى سے ست نواناً ، يرب كى أور ايك دوسرا موركشت راسته هم رهان سم أيني أستهل دو كيسك جانا ١٠٠ متهريدنس أس كي بات سے بهت يرسى هوا اور أسه دهنيتواد ديكر لينا پروكرام بنائم مهن

دوسرے دن ترکے ناتنی آٹیا اور بنا کسی سلھلے کے میں میں دی دوئی سوچنا کے آٹوسار بنیجے میں

मुंबले कहा गया. कथर नियशिक्य भी कमर से तलवार बॉब, बोड़े पर बढ़कर नियन स्थान के लिये कल दिया. वहाँ बहुंब कर कसने कुछ दूर से देखा कि जरूर कोई आदमी टहल हार है और कसे यह निश्चय हो गया कि यह नातन ही है. कसके पास पहुँच कर कसके दिल में आया कि सपाटे से तलवार का हाथ मारकर फ़ौरन इसका काम तमाम करने से पहले इसे सावधान कराँ, जरा सुनूँ तो सही कि कदारता का दम मरने वाला यह आदमी अब क्या कहता है. फलतः कसने बड़ी बढ़त वायी में नातन के सिर पर वंधी हुई पगड़ी कहालते हुए कहा—'परे, बुडूं, देख तेरा कन्त अब आ गड़ा। "

बुढ़े नातन ने केवल इतना ही कहा—''तो क्या हुआ, बह तो मेरे भाग्य में ही लिखा हुआ था." और वह जुप हो गया.

निधरीयन्स ने जब एसकी बोली सुनी और उसके बेहरे पर निगाइ बीकाई तो उसका दिल अक से रह गया—
"जिस जादमी से पहले-पहल नेरी मेंट हुई, जिसने इतनी सहदबता के साथ नेरा स्वागत-सरकार किया और जिसने मेरे रहस्य को गुप्त रक्षकर सुने अपने काम को पूरा करने के जिप सरकीय बताई, क्या यह बही आदमी नहीं है ? क्या वह स्वंय नातन नहीं है ? और मैं इसी का वथ करने यहाँ साथा हैं।"

बसके दाथ से तलवार गिर पड़ी, घोड़े की लगाम बूट गई और स्वयं अत्यन्त लिजत होकर नातन के वरणों गर आ गिरा और रोते-रोते बोला—"पिता, मुकसे बड़ा अपराथ हुआ है. मुक्ते सजा हो. तुम्हारी बढ़ारता का सवा गरिचव मुक्ते मिल गया. आज न मालूम मुक्तसे क्या अवर्थ हो जाता. ईच्यों ने मेरी आँखें बन्द करदी थीं, आज

ो खुल गयीं. सुमे समा करदो. "

नातन ने उसे बड़े प्रेम से उठाया और कहा—"बेटा, समें अमा की कोई बात नहीं. जिस काम के लिए तुम हाँ आए हो, बह नफ़रत से प्रेरित नहीं है. बह तो तुन्हारी अस्कि ईच्चा से प्रेरित है. अच्छे काम में अपने मुख़ालिफ को इराने का निरचय कोई बुरा निरचय नहीं है. तुन्हारे तम और काम की नड़ाई मैंने सुनी है. भगवान ने क्वूं अन दौलत दी है, तुम उसका सतुपयोग कर रहे हो, जूनों की तरह उसे गाइकर नहीं रख रहे. मुके इससे की प्रसन्नता होती है. अच्छे काम में दूसरों से बाजी ति अस्त जीर क्यादा से क्यादा नाम हासिल करने की लिए से बादि तुम मेरा क्रक करो तो मुके कोई हु ज नहीं गाइक

मिथरीडन्स को अपने ऊपर बड़ी ग्लानि हुई, लेकिन हात के प्रेम भरे राज्यों से बसे कुछ सिर बठाने की इन्सर हुई, बसने बड़ा—''मेरे पिता, मुक्ते आरवर्ष इस گہمت کی اللہ اللہ ماریکانس میں کو سے تنوار بالدہ گہرت پر جوہ کی گیفت البہان کے اللہ دیا۔ رھاں یہونسوں اُس لے کچ ھوں پورھیا کہ ضرور کوئی آدمی تبل رھا ھاور آسے یہ نشوش مرکا کہ یہ فاتن ھی ھے ۔ اُس کے باس پیبانچی اُس کے دل میں آیا کہ سیائے سے تنوار کا ھاتھ مار کر فررا اِس کا کام تمام کرنے سے پہلے اِسے ساودھان کررس' فرا سئرس تو سہی کی کہ آدارتا کا دم بیرنے والا یہ آدمی آب کیا کہنا ہے ۔ پہلتہ اُس نے بری اُدھھورائی میں قاتن کے سر پر بندھی ھوئی پکوی اُجالاتے اُدھور کیا ۔ "اے بتھا دیکھ تیرا البت آب آ گیا لا''

مورف فاتن له کمول إننا هی کهاست<sup>ور</sup>تر کیا هوا<sup>۱</sup> یه تو مهرس بهاگیه مهن بهی تکیا هوا تها<sup>۱۱</sup> . اور وه چپ هو گیا .

متھویڈنس نے جب اُس کی بولی سٹی اور اُس کے چہرے
پر نااہ دورائی تو اُس کا دل دھک سے رہ گیا۔۔۔''جس آدمی
سے پہل پہلی مفری بیمات ھوئی' جسنے اِتنی سپرد ٹیٹا کے
ساتھ مهرا سواگت ستکار کیا اور جسنے مدرے رھسیہ کو گیت رکھ
کر معید اپنے کام کو پورا کرنے کے لئے ترکیب یکائی' کیا یہ رھی
آدمی نہیں ہے ؟ کیا یہ سویم نائن نہیں ہے ؟ اور میں اِسی
کا بدھ کوئے یہاں آیا ھوں ؟''

أس كے هاته سے تلوار گر پڑی گهوڑے كے لگام چهوٹ گئی اور سويم أتينت لحجت هو كر قاتن كے چرنس پر آ گوا أور دوئے دوئے ہوتا ۔ مجھے سزا دو ۔ مجھے سزا دو ۔ مجھے سزا دو ۔ تماری آدارتا كا سچا پریچے مجھے مل گیا ۔ آج نه معلم مجھے سے كیا اثرته هو جاتا ، ايرشيا نے ميرى آنكيس بلد كو دبى تيس آ ہے دے كيل گئيس ، مجھے جہا كردو "'

ثانی لے آسے بڑے پریم سے آٹیا یا آور کیا۔ "بیقا اس میں چھما کی کوئی بات نہیں ، جس کام کے لئے تم یہاں آئے ہوا والا نفوت سے بریرت نہیں ہے ، وہ تو تمہاری ساتوک ایرشیا سے پریرت ہے کام میں آپنے متخالف کو ہرائے کا نشجیئے کوئی برا نشجیئے نہیں ہے ، تمہارے نام اور کام کی برائی مینے سلی ہرا نشجیئے نہیں بھی دولت دی ہے تم اُس کا سد ایبوک کو رہے ہوا کنتجوسوں کی طرح آسے کار کر نہیں رکھ رہے معجد اِس سے بری پرساتا ہوتی ہے ، اچھے کام میں درسروں سے بری برساتا ہوتی ہے ، اچھے کام میں درسروں سے بری برساتا ہوتی ہے ، اچھے کام میں درسروں سے بری مارچ آور زیادہ سے زیادہ نام حاصل کرنے کی نیت سے بدی تم میرا قتل کور تو معجد کوئی دکھ نہیں ہوگا ،"

متیریڈلس کو اپنے آریز بڑی کائی ہوئی' لیکن ناتن کے پریم بھرے شہدس سے آسے کچھ سر آٹیائے کی ہست مرتب آسےریہ اِس

ہات سے ہے کہ آئنے میرے برے بھار کو جائٹے عوثے بھی آگئی پرکار آئنے آپ کو میرے عاتمیں قتل کرنے کے لئے سوئپ دیا 👫

التی نے کہا۔۔۔"بیتا' اِس میں آھنچریہ کی کیا یات ہے۔ جو کہئی بھی میرے پاس آتا ہے' میں یتھا شکتی اُس کا مغررته پرا کرنے کی چیشٹا کرتا ہوں ۔ جب تم میرے پاس آئے تو دمیس بنا تمہاری اچھا پررا کئے میں کیسے جانے دیتا ، یدی دوسرے کی پرسنتا کے لئے منجیے اپنے پران بھی دیئے پریں تو پرحچے نہیں بقترنگا ' اور پھر میں تو بب برزها ہوا ، آسی سال سے زندگی کی گاری کھینچنا چلا آرہا ہوں ، تم میرے پران لے لو تو مجھے اِس سے چھنکارا ہی ملیکا ، جو آیا ہے وہ جائیگا ہی ، میں دو چار سال اور زندہ رہا آیا تو کھا بنتا بگرتا ہے۔ کا تو معرا ختم ہو گیا ، اب زندہ رہا آیا تو کھا بنتا بگرتا ہے۔ کا تو معرا خرم مور کیا ، اب زندہ رہا آیا تو کھا بنتا بگرتا ہے۔ کا تو معرا خرم مور گیا ، اب زندہ رہا آیا تو کھا بنتا بگرتا ہے۔ کا تو معرا خرم مور گیا ، اب زندہ رہا آیا ہو کھا بنتے پران دیکر بھی میں مجھے پرسنتا ہوگی اور سنترش رہیکا کہ اپنے پران دیکر بھی میں مجھے پرسنتا ہوگی اور سنترش رہیکا کہ اپنے پران دیکر بھی میں محبے پرسنتا ہوگی اور سنترش رہیکا کہ اپنے پران دیکر بھی میں محبے پرسنتا ہوگی اور سنترش رہیکا کہ اپنے پران دیکر بھی میں محبے پرسنتا ہوگی اور سنترش رہیکا کہ اپنے پران دیکر بھی میں خوسرے کی اِچھا پررتی کر سکا ۔"

متهریدنس احجا آور اور گلائی سے آور بھی کو گیا اور بولا۔ ''نہیں' نہیں! اب یہ نہیں ہو سکتا اور بولاہ مرایقہ آن پرائیں کو ایلے کی حموں لیلا سمایت کرنے کے بحجائے میں تو یہی چاهونگا کہ آپ یگ یگوں تک جموت رفین '''

ایس پر قاتن نے دوسرا پرستاؤ اُس کے سامنے رکھا۔۔۔۔۔میں چاہت ہوں اب تم میرے متحل میں ھی رھو اور قاتن کے قام سے پرسدھ دو جاؤ ، اگر تم چاھو گے تو میں تمہاری زمنیداری میں چلا جو گا اور اپنا قام متوریدنس رکھ لونگا' اِس سے بھی تمهاری اُچھا پوری ھو جائیگی ۔''

متهریدنس نے آنر دیا۔۔۔'نہیں یہ بھی میرے برتے کی بات نہیں ، آپ کی ادارتا کی پرمهرا کو مهں آپ کی هی طرح چالو نہیں رکھ سکونگا اور نہ آپ کے دد اور پرنشٹھا کو می فایم رکھنے کی مجھ جیسے ناچیز آدمی سے پررا نہیں ہوسکتا ، مجھے تو آپ چھما کر دیں ۔''

ناتی کے بہت کہنے سننے پر بھی جب متہریڈنس نے اُس کا پرستا و منظور نه کیا تو رہے دونوں محل اوت آئے ، متہریڈنس نے اُس نے ناتی کے ساتھ کچھ دی اور بتائے اور اُس کے انوبیوں سے المها آیا ، اب وہ سمجھ گیا تھا که سطھی اُدارتا کسے کہتے ہیں ،

बार से हैं कि कारने मेरे हुरे कियार को जानते हुए थी, किस प्रकार अपने आए को मेरे हाथों करत करने के लिए सौंपदिया १<sup>33</sup>

नातन ने कहा—'चेटा, इसमें चारचर्य की क्या बात है. जो कोई भी मेरे पास चाता है. मैं यथाशक्ति उसका मनोरव पूरा करने की चेंद्रा करता हूँ. जब तुम मेरे पास बाप तो तुन्हें विमा तुन्हारी इच्छा पूरा किए मैं कैसे जाने देता. यदि दूसरे की प्रसन्नता के लिए मुसे चपने प्राण भी देने पनें तो पीछे नहीं हहूँगा. चौर फिर मैं तो चन बूता हुआ. चरसी साल से जिन्दगी की गाड़ी खींचता था रहा हूँ. तुम मेरे प्राण लेलो तो मुसे इससे छुटकारा ही मिलेगा. जो चाया है वह जाएगा ही. मैं दो-चार साल चौर जिन्दा रहा चाया तो क्या बनता विगदता है. काम तो मेरा खत्म हा गया. अब जिन्दा रहने का काई माह नहीं है. मैं कहता हूँ तुम मेरे प्राण लेलो, इसमें तुन्हें लाभ ही होगा और मुसे प्रसन्तता होगी चौर सन्ताय रहेगा कि बपने प्राण देकर भी मैं दूसरे की इच्छा पूर्ति कर सका."

भिथरीहन्स लक्जा धीर ग्लानि से धीर भी गड़ गया धीर बोला-'नहीं, नहीं! अब यह नहीं हो सकता. इतने मूल्यबान प्राणों को लेने की हिम्मत मेरी नहीं! आप की जीवन-जीला समाप्त करने के बजाय मैं तो यही चाहूँगा कि आप युग-युगों तक जीवत रहें."

इस पर नातन ने दूसरा प्रस्ताव उसके सामने रखा— "मैं चाहता हूँ अब तुम मेरे महल में ही रहो और नातन के नाम से प्रसिद्ध हो जाओ.' अगर तुम चाहोंगे तो मैं तुम्हारी अमीदारी में चला जाऊँगा और अपना नाम मिथगिडन्स रख लूँगा, इससे भी तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाएगी."

मिथरीडन्स ने उत्तर दिया—"नहीं यह भी मेरे बूते की बात नहीं. आपकी उरारता की परम्परा को मैं आपकी ही तरह वालू नहीं रख सकूँगा और न आपके पद और प्रतिष्ठा को ही कायम रखने की मुक्तमें शक्ति है. यह काम मुक्त जैसे नावीज आदमी से पूरा नहीं हो सकता. मुक्ते तो आप अमा करहें."

नातन के बहुत कहने सुनने पर भी जब मिथरीडन्स ने उसका प्रस्ताव मंजूर न किया तो वे दानों महल लौट आए. मिथराडन्स ने नातन के साथ कुछ दिन और बिताए और उसके अनुभवों से लाभ उठाया, फिर वह अपने घर चला आया. अब बह समम गया था कि सच्ची उदारता किसे कहते हैं.

( एकांकी नाटक )

श्री विद्याम्बद्या सिश्च, एम० ए०, एल-एल० बी०

[ सुबह के बक्त गांव का सरकारी दवाखाना खुला है. कम्पाउन्हर आकर सब दरवाजे खोलता है और मेज पोंछकर शीशियां लगाता है. बाहर बरामदे में पहले से ही बहुत से रोगी आकर बैठे हैं और आपस में बातें कर रहे हैं. ]

पहला रोगी--वह रे बाह ! गांव-गांव में दवा-दारू का परक्रभ हो गया. क्या कहें भैया, पहले तो काले कोस जनकर सहर जाते थे, तब कहीं डाक्टर बाबू से भेंट होती थी.

दूसरा—हां भैया, ठीक कहते हो हमें याद है, पांच बरस हुआ हमारे नाना जी बीमार पड़े थे. बस, इसी हरख़ू के इक्के पर बैठाकर ले चले. चलते चलते संमा हो गई, पर सहर दिखाई न पड़ा. आखिर नाना जी ने इक्के पर ही सांस होड़ी. अब तो भैया सरकार की किरपा से इस गांव में भी दवाई-खाना सुल गया है.

तीसरा—यहाँ फायदा भी तो जस्दी होता है. देखो, मेरे पांच में फोड़ा हुआ था. हमने महीना भर द्वा-दारू की, बराबर पान-पत्ते बांधते रहे, लेकिन रंचो फायदा न हुआ. यहां आकर डाक्टर को दिखाया, तो वह इंसकर कहने लगा कि इसकी तुरन्त विरवा डालो नहीं तो 'बलूड-पापनी' (Blood-poison) हो जाएगा. उसके मुसांक्या कर बोलने पर तो बड़ा गुस्सा लगा, लेकिन 'बलूड-पापनी' सुनकर डर गया. अभी चार दिन से यहां आ रहे हैं, लेकिन देखो, धाव भर गया है ओर द्रद भी जाता रहा.

पहला—यहां की सफाई की बलिहारी. देखों कैसे करीने

से पट्टी बांधी है.

चौथा—मैया जुग नदल गया है. क्यों, नहीं कहोगे ? इन्हें डाक्टर समुर परमात्मा थोड़े ही हैं. अपनी सकती मर ही तो करेंगे. पांच कट जाय तो डाक्टर के पास जाओगे, पर नजर लग जाय, सिर पर भूत जा जाय तब कहां सरन मिसेबी ? तब डाक्टर क्या करेगा ?

सब-हाँ भैमा, यह बात तो सच्ची है, इसमें कोई सक

नहीं है.

्र पांचवां—जरे भैया, हम तो सहर से जाज ही जाए : है, एक बार हमें भी फोड़ा हुआ था और डास्टर को ( اِیکانکی ناتک )

شرق وديا يهوشن مصر الم . له ، ايل . ايل . بي .

آ صبع کے وقت کاوں کا سرکاری دواخاتہ کیا ہے۔ کیاولگر آکر سب دروازے کھولتا ہے اور میز پرتنچیکو شیشیل کانا تھے، باہر برآمدے میں پہلے سے ھی بہت سے روگی آکر بیٹنے ہیں اور آپس میں باتیں کر رہے میں ۔]

پہلا روگی۔۔۔۔۔واہ رہے واہ ا گؤں گؤں میں دوا دارو کا پرہندھ موگیا ۔ کیا کیس بھیا' پہلے تو کالے کوس چلکو سپر جاتے تھے' تب کہیں ڈاکٹر بابو سے بھینٹ عوتی تھی ۔

فوسرا۔۔۔ هاں بهدائ تهیک کہتے هو . همیں یاد هے، پانیج درس هوا همارے ثانا جی بیمار پڑے تھے . بس ایسی هرکھو کے بعد یہ بینا اور کے بعد یہ منافل کے بعد اور منافل کے بعد یہ ایس کھوڑی . اب تو بیا سرکار کی کریا ہے اِس کاوں میں بھی دوائی کھاتے کیل گیا ہے '

تیسرا---یهال پهائدة بهی تو جلدی هوتا هی دیکهو میرے پاؤل میں پهورا هوا تها . هم نے مهینه بهر دوا دارو کی برابر پال پتے بائدهنے ره کی لیکن رئیچو پهائدہ نے هوا . یهال آکر ڈاکٹر کو دکھایا تو وہ منسکر کہنے لگا که اِس کو ترنت چروا ڈالو نہیں تو 'بلوڈ - پاپنی' (Blood-poison) هوجانیکا . اس کے مسکها کو بولئے پر تو بڑا گست لگا لیکن 'بلوڈ - پاپنی' سنکر تو بڑا گست لگا لیکن 'بلوڈ - پاپنی' سنکر تو بڑا گست لگا لیکن دیکھو' گهاؤ بهر تو بڑا گست ارهے هیں' لیکن دیکھو' گهاؤ بهر گیا هاور دود بهی جاتا رها .

پہلا۔۔۔۔یہاں کی سپھاٹی کی بلہاری ، دیکھو کیسے کریتے سے پٹی ہائدھی ھے ۔

چوتھا ۔ بھنا جگ بدل گیا ہے ، کیوں' نہیں کہوگہ ؟ ارب قائلر سسور پرماتما تھوڑے ہی ہیں ، اپنی سکتی بھر ہی تو کریکے ، پاؤں ایک جائے تو داخر کے پاس جاؤگے' پر تجر لگ جائے' سر پر بھوت آجائے تب کہاں سرن ملیکی ؟ تب قائلر کیا ؟

سياسهان بهها' يه بات تو سچى هـ' إس مين كوئى سَانَهِينَ هِـ ه

پالتچوان۔۔۔ارہ بیبا' ہم تو سپر سے آج ہی آئے میں ایک بار ہمیں بھی پھررا ہوا تیا ارر ڈائٹر کو दिलाका का जिल्हान तथा कहें, जैसा उसने जोड़ की तथा वर्षना क्षिण और तथा किया, इस ही जानते हैं. तथ से इसने कान वक्का कि डाक्टरों के पास नहीं जाएंगे, चाहे मर जॉब.

वीया-बाइ! हुमने तो इतना हु:स सहकर यह किया. हम तो हाल ही में एक दवा लेने गए और एक ही सुराक ती है. परमेस्बर जानें उसने क्या दे दिया. दवा भीतर जाती ही नहीं और जाती भी है तो कैहो जाती है. हमने बिचारते-बिचारते यह समका कि कीन जाने, महंगी पड़ी है, बिलायत से दवा आती नहीं, इससे कहीं गो-मृत भर कर न बेचते हों, इनका क्या ठिकाना ? इसीलिये हमने भी कसम सा ली है.

पांचवां-हम तो मैया सहर के एक बाबू की द्वा करते हैं. वह होमोपारी (Homoeopathy) दवा देते हैं. सस्ती भी होती है और विचारे बाबू फीस भी थोड़ी ही लेते हैं. जो पैसा रहा उसे वह भीरे से ले लेते हैं और अगर किसी ने देख लिया तो कह देते हैं "अब तुम्हारा दवाई का दाम चुकता हो गया." हम भी उनकी बात नहीं काटते क्योंकि थोड़े ही में काम निकलता है.

चौथा—अरे! यह तो और अधिक भयानक होते हैं. इनसे तो और बचो. यह तो पानी ही देकर ंडसे द्वा कहते हैं और आजकल लायचीदांना खरीद कर सीसियों में सजा कर रखते हैं.

पांचवां—ऐसा न कहों भैया, इमको तो बढ़े कठिन रोग में फायदा हुआ है.

चौथा—किस्मत अच्छी थी. बच गए. कागद पूरा नहीं हुआ था. बिना माइ-फूँक सीखे दवा बेकार है. फिर डाक्टर लाग जन्तर-मन्तर का हाल क्या जानें ?

छठा—ं ( एक कोने से ) जन्तर-मन्तर सब ढकोसला है. बीया—हम यह नहीं कहते हैं कि डाक्टर कुछ भी नहीं जानते. अरूर जानते हैं, पर उतना ही न, अपनी सकती भर.

झठा—(कोने से) तो जब तुम डागदर बाबू से ज्यादा जानते हो, तब यहां आए क्या करने १ घर बैठते, अपना काम-काज देखते और माइ फुँक करते.

चौथा—(हाथ से सुरती मलते हुए) कीन ससुरा आया है (सुरती की फंकी लेकर पीक भरे हुए) थके आए वे, सोचा वहीं जिन भर वैठकर विसराम कर हों. आसिर सरकारी जंगह है, कोडू के बाप का इजारा है!

बटा—बद्द को, जून पूज नेटे, (श्वंद ननाकर) हुम भाष किय किय १ जैसे हुम्ही जागदर बाबू के बाप ही न ! دکیایا تھا ، پھر هم کیا کہمی جیسا اُس لے جولگت کی طوبے روبھ لیا اُور تلک کیا ہم هی جائتے هیں۔ تب سے هم تح کی کی پہرا کہ دانتے هیں۔ تب سے هم تح کی کی اُن پہرا کہ دانتے کی جائے ہیں ۔

چرتھا۔ واڈ ! تم لے تو اِنفا دکھ سپکو یہ گیا ، هم تو حال هی میں ایک دروا لینے گئے اور ایک هی کھراک ہی ہے ، پرمیسور جائیں آس لے نیا دے دیا ، درا بھیڈر جاتی هی نہیں اور جاتی بھی ہو خاتی ہے ، هم لے بچارتے بچارتے یہ سمجھا کہ کون جائے' مہنگی پڑی ہے' بالیت سے دوا آتی نہیں' اِس سے کہیں گرموت بھر کر نہ بینچتے هوں' اِس کے کہیں گرموت بھر کر نہ بینچتے هوں' اِس کا کیا تبکانہ او اِسی لِنے هم لے بھی کسم کیالی ہے ،

پانچواں۔۔۔۔ تو بھیا سہر کے آیک ہاہو کی دوا کرتے ھیں۔ وہ ھومرپاری (Homeopathy) دوا دیتے ھیں ۔ سستی بھی ھوتی ہے اور بچارے بابو پھیس بھی تهرزی ھی لیتے ھیں۔ جو پیسہ رھا آسے وہ دعورے سے لے لیتے ھیںاور اگر کسی نے دیکھ لیا تو کہ دیتے ھیں ''اب تماری دوائی کا دام چکتا ھوگیا ''' ھم بھی اُن کی بات نہیں کائیے کیونکہ تهرزے ھی میں کام نکلتا ہے ۔

چوتھا۔۔۔ارے ایت تو اور ادھک بھیانک ھیتے ھیں ، اِن سے تو اور بچو ، یہ تو پائی ھی دیکر آسے دوا کہتے ھیں اور آمکل لائتھے دانا کھریدکو سیسیوں میں سجاکر رکھتے ھیں ،

پائنچوان۔۔۔ایسا تھ کہو بھیا' هم کو تو بڑے گھن روگ میں بھائدہ هوا هے .

چوتھا۔۔کسبت اچھی تھی ۔ بچے گئے ، کاک پورا نہیں ہوا تھا ، بنا جھاز پھرنک سیکھے دوا بیکار ہے ، پھر ڈاکٹر لوگ جنٹر منٹر کا حال کیا جائیں ؟

چھٹا۔۔ (ایک کرنے سے ) جنتر سنتر سب تھارسلا ہے ۔ چرتہا۔۔۔ ہم یہ نہیں کہتے ہیں کہ ڈاکٹر کچھ بھی نہیں جانتے۔ جرور جانتے ہیں' پر اُنفا ہی نا' اُپنی سکتی بھر ۔

چھٹا۔ ( کونے سے ) تو جب تم ڈاگدر بابو سے جیادہ جائٹے مو' تب یہل آئے کیا کرنے ؟ گھر بیٹھتے' اپنا کام کاج دیکھتے اور جھار بھونک کرتے .

چوتھا۔۔۔( ھاتو سے سرتی ملقے ھوٹے ) کیں سسپرا آیا ھے ، ( سرتی کی پھنکی لیکر پیک بھرے ھوٹے ) تھکے آئے تھے' سوچا یہھں چھن بھر بھٹھکر بسرام کرلیں ، آگھر سرکاری جگھ ھے' کچھو کے باپ کا اِجارا ھے ا

چھٹا۔ یہ لو' کہوب پوچھ بیٹھ' ( ماہ بنائر ) تم آئے کس لگنے ؟ جیسے تبھیں ڈاگٹر باہو کے باپ ہو ٹا ! कंपाउंडर—(भीतर से)—अरे ! यह क्या गुल-स्थादा भवा रखा है. यह अस्पताल है या तरकारी की सट्टी ? चुपचाप बैठना हो तो बैठे रही नहीं तो बाहर जाकर कराड़ो.

सब—सरकार, इस लोग तो चुपचाप बैठे हैं. यही

मगबा कर रहे हैं.

चौथा—हां तो मैं कह रहा था कि गांव का छोटे से क्रोंटा बैद भी जानता है कि किस रोग की कीन सी दवा होती है. किसी रोग में वह दवा देता है, किसी में जन्तर-मन्तर देता है. (बच्चे को गोद में लिए एक क्षी की छोर संकेत करके) अच्छा तुम्हीं से पूछते हैं, बताओ इसे क्या हुआ है ?

स्त्री—इसके सिर में चाज चार दिन से दरद है, बुखार भी है. डाक्टर साहब ने दबाई दी थी, फिर भी फरक नहीं

मासूम हो रहा है.

चीथा — फरक कहां से माजूम होगा ? इसे तो लगी है नजर. तुम भले ही डाक्टर को दिखाओ, पर इससे कुछ अच्छा थांडे ही होगा. तुम अभी जाकर राई-नोन उतारा और ओमा से महबा ला. तुरन्त आराम न हो तो हमरा नाँव बदल दो.

(सब रोगी ध्यान पूर्वक उसकी बातें सुनते हैं)

दूसरा-भैया, हमारे कान में दो रोज से दरद बन्द नहीं हो रहा है, हम क्या करें ?

चौथा-वस तुमने कोई मेंढक मार डाला होगा.

दूसरा—नहीं भैया, जानकर तो मैंने कभी इत्या नहीं की, हां पांव के नीचे का गया हो तो मैं, नहीं जानता.

बीथा—षस यही बात है. बन तुम सैयद बाबा की मजार पर मलीदा चढ़ाबां. बगर दिया जलाते ही न बच्छा हां तो बलटे घड़े पानी भरूं. ये मूंब्रै योंही सफेद नहीं की हैं.

तीसरा—वड़ा गुन है भैया, फकीरों की सेवा के विना यह हुनर सब का नहीं मिलता. भैया, तुमने खूब नैदक पढ़ी है.

चौथा—पदी कहां ? अगर पदते तो आँख में चसमा लगाकर सख मारते रहते, यह सब कहां पाते ? अपना भी सब भूल जाते. हमने तो चट देखा और पट निदान किया. अरे बाबा, जब तुम खुद अपना हाल नहीं जानागेतब डाक्टर बिचारा क्या करेगा ? अच्छा, देखा तुम्हें अस्पताल से दवाई मिलती है न ? कम्पोटर साहब कहते हैं, "सीसी हिलाओ" और "यों पीओ" और "त्यों पीआं". उस दवाई में रहता ही क्या है ? और फिर वे पूरी दवाई देते भी ता नहीं.

तीसरा—सच है भैया ! दबाई देने में ये जरूर कंबूसी करते हैं.

نَمْهُ الْوَكْتُوبِ ( يَهِمُونَكُم ) : أَرْبَهُ ! يَدَ كَمَا عَلَ عَهَارِهُ مَجِهَا رَهَا هِ وَ مِهَا رَهَا هـ يَدُ الْمِكَالُ هُ يَا الركازي كي سلّى ؟ جيب چاپ بيلينا هو تو بيليمينوهر في قيل تو ياهر جائز جهارو .

بتاب سسرکار' هم لوگ تو چپ چاپ بیاته هیں ، یہی جهکوا کو رقع هیں ،

چوتھا۔۔۔۔ھاں تو میں کہ رہا تھا کہ گؤں کا چھوٹے سے چھوٹا ہیں بھی جانتا ہے کہ کس روگ کی کونسی دوا ہوتی ہے ۔ کسی روگ میں جنتر منتر دیتا ہے ۔ کسی میں جنتر منتر دیتا ہے ۔ ( بچے کو گود میں لئے ایک اِستری کی اُور سندیت کرکے ) اچھا تمھیں سے پوچھتے ہیں' بتاؤ اِسے کیا ہوا ہے ؟

الستروسال کے سر میں آج چار دن سے درد ہے، ہوکیار بھی ہے۔ ڈاکٹر صاحب نے دوائی دی تھی، پھر بھی پھرک نہیں مطبع ہو رہا ہے۔

چوتھا۔۔پھرک کہاں سے معلوم ھوگا ؟ اِسے تو لکی ہے تجر ، تم بیلے ھی ڈاکٹر کو دکھاؤ' پر اِس سے کچھ اُچھا تھرڑے ھی ھوگا، تم ابھی جاکر رائی نون آبارو اور اُرجھا سے جھڑوالو ، ترنت آرام نہ ھو تو عمرا ناوں بدل دو .

( سب روعی دهیان پوروک اُس کی باتیں سنتے هیں ) در سب روعی دهیان پوروک اُس کی باتیں سنتے هیں )

دوسرا۔۔۔بھیا' همارے کان میں دو روبے سدرد بند نہیں هو رها هے' هم کیا کریں ؟

چوتھا۔۔۔ تم نے کوئی میلڈھک مار ڈالا ھوگا ۔

دوسراستہیں۔ بھیا' جانگر تو مینے کبھی ھتیا۔ نہیں کی' ھاں پاوں کے ٹیچے آگیا ھو تو میں نہیں جانتا ،

تیسرا۔۔۔بواگی ہے بھیا' پھکیروں کی سھوا کے بنا یہ ہنر سب کو نہیں ملتا ، بھیا' تم نے کورب بھدک پڑھی ہے ،

چوتھا۔۔پڑھی کہاں ؟ اگر پڑھتے تو آنکھ میں چسما لگا کر جھک مارتے رھتے یہ سب کہاں پاتے ؟ اپنا بھی سب بھول جاتے ، ھم نے تو چٹ دیکھا اور پٹ سان کھا ، ارب بابا جب تم بدر اپنا حال نہیں جانو گے تب دائتر بنچارا کیا کریگا ؟ اچھا دیکھو تمھیں اسپتال سے دواہی ملتی ہے نا ؟ دمپوڈر صاحب کہتے ھیں ''سیسی ھائو'' اور ''یوں پھڑ'' اور ''نیوں پھڑ ۔'' اس دوائی میں رھنا ھی کیا ہے ؟ اور پر وے پوری دوائی دیتے اس دوائی میں رھنا ھی کیا ہے ؟ اور پر وے پوری دوائی دیتے

تیسراسیے ہے بھیا ادرائی دینے میں یہ جرور کنجوسی کرتے میں ، चीया कहीं कतापुत अरकर द्वा देनी पाहिए वहां सिरफ हो बूँच दवाई ऐंगे. अंधेर है न १ सरकार महाराज ने परजा के सुख के लिये दवाखाना खोला है, इनके बाप का ह्या जाता है ? सहरी मनई को भले ही बूँच भर दवाई दें, पर हरवाइन को उससे क्या फायदा होगा ?

कंपाइन्डर—( बाहर जाकर) देखों, तुम सब लोग एक पंगत में बैठ जाकों. डाक्टर साहब जा रहे हैं. ( सब नीजे एक पंक्ति बद्ध बैठते हें, केवल चौथा नहीं बैठता. उसे लक्ष्य करके) क्यों जी, तुम बहां क्यों खड़े हो १ इधर चलों.

चौया—क्यों चलें ? हम दवाई लेने थोड़े ही आए हैं. शके थे, खाया देखी, थकान मिटाने बैठ गए.

कंपाउन्हर--यह सराय नहीं है कि आए सुस्ताने लगे !

चौथा—( धोरे से ) बैदगी जानने वाले को क्यों बैठने दोगे ? रोटी मारी जाएगी न ? बढ़े सफेदपोस बने हैं !

( डाक्टर का आगमन, सब खड़े होकर उसे सलाम करते हैं. डाक्टर भीतर प्रवेश करके बैठता है. सिर की पीड़ा से आक्रांत रोगी भीतर जाकर शीध बाहर आता है )

चौथा-कहा, दवाई ले आए ?

रोगी—हां भैया, यही सपेद सपेद चूरन तो दिया है भौर कहा है कि इसे पानी में घोल कर रखना. (सहसा) भरे राम ! यह तो पूछा ही नहीं कि इसे पी जाना है या सिर पर मलना है.

चौथा—बाह ! घच्छी दवा कहीं यों खराब की जाती है ? इसे पी जाना.

रोगी—(सोच कर) फिर भी पूछ लेना ठीक होगा.

चौथा—कुछ अपना भी दिमाग लगाओ. बिना दिमाग लगाए न अपना भला कर सकांगे न दूसरों का. अभी परसों की बात है. मेरे चचा को गस आ गया था. अब मरे तब मरं की हालत हो गई. मैंने आब देखा न ताब. मंतर पढ़कर एक गिलास पानी जो मुंह में उड़ला ता एकदम खड़ हो कर नाचने लगे. अब उस बक्त अगर हम डाक्टर की तलास में जाते तो चाचा साहब सरग सिधार गए हाते. हम अपनी अकल पर भरोसा रखते हैं. हमने कुछ पढ़ा-लिखा नहीं पर सकल देखते ही रोग बता देते हैं.

(ंशन्य रोगी ध्यानपूर्वक उसकी बातें सुनते हैं और भपने-अपने रोग का निदान कराने के अभिन्नाय से उसके निकट पहुंचने के हेत्र परस्पर धक्का देते हैं )

एक-धक्का क्यों देते हो जी १ हम पहले आप हैं.

جرتها جہاں کلمچھل ہیر کر دوا دیئی چاھئے وہلی سَویھ دولی سَویھ دو ہوئی دیائے ، اندھور ہے تا ؟ سرفر مہارانے نے پرچا کے سمو کے لئے دوا کو ته کولا ہے اُس کے باپ کا کیا جاتا ہے ؟ سموی منٹی کو بیلے ھی ہوئی بھر دوائی دیں پر ھرواس کو اُس سے کیا بھائدہ ھوٹا ؟

کمپاونڈر۔۔( باہر آکر ) دیکھو' تم سب لېگ ایک پنگت میں بیٹھ جاتی ۔ ڈاکٹر صاحب آ رہے ہیں ۔ ( سب نیتھے ایک پنگٹی بدھ بیٹھتے ہیں' کیول چوتھا نہیں بیٹھتا ۔ آسے اکھی کر کے ) کموں جی' تم وہاں نیوں نوڑے ہو ؟ ادھر چاو .

چوتها—کیوں چلیں ؟ هم دوائی لینے تهوزے هی آئے هیں ۔ تهکے تھے' چهایا دیکھی' تهکان مقائے بیٹھ گئے ۔

كمهاوندر سيه سرائه نهيس ه كه آنه سستال لكه !

( بھیتر چلا جاتا ہے )

چوتها-- ( دائیرے سے ) بیدگی جائنے والے کو کیوں بیٹھنے دو گھ او روٹی ماری جائیکی تا 1 ہوے سپھید پوس بنے میں اِ

( ڈاکٹر کا آگس ۔ سب کھڑے ھو کر اُسے سلام کرتے ھیں ۔ ڈاکٹر بھیٹر پرویش کر کے بیٹہتا ہے ، سر کی پیڑا سے آئرانت روگی بھیٹر جا کر شیکیرہ باھر آتا ہے )

چوتھا۔۔کہو' دوانی لے آئے ؟

روگی سمان بهیا کہی سهید سهید، چون تو دیا هے اور کها هے کہ اِسے پاتی میں کھول کو رکھنا ( سهسا ) اُرے رام اِ یہ تو پوچها هی تهیں که اِسے پی جاتا هے یا سر پر ملنا هے .

چوتھا۔۔۔۔واہ 1 اچھی دوا کہیں یوں کھراب کی جاتی ہے 1 اسے پی جاتا .

روگی - ( سوچ کر ) پهر بهی پوچه لینا ثهیك عوال .

چوتھا۔۔کچچ اپنا بھی دماک نگاؤ ، بنا دسک نگانے نے اپنا پھلا کو سے گے نے دوسروں کا ، ابھی پرسوں کی بات ہے ، میرے چچھا کو گس آ گیا تھا ، آب صرح قب صرے کی حالت ہو گئی ، میں نے آؤ دیکھا نے تاؤ ، منتر پڑھ کو ایک گلس پائی جو منہ میں آدیلا تو ایکدم کھڑے ہوئو تاچنے لگے ، آب اس وکت آگر ہم ڈانٹر کی تلاہی میں جاتے تو چاچا ماھپ سرگ سدھار گئے ہوتے ، ہم اپنی اکل پر بھروسہ رکھتے ہیں ، ہم نے کتھے پڑھا لکھا نہیں پر سکل دیکھتے ہی ورگ بتا دیتے ہیں ، ہم نے

( انیہ روگی دھیاں پوروک اُس کی باتیں سنتے ھیں اور اپنے اپنے روگ کا ندان کرانے کے ابھیورایہ سے اُس کے نہ ف پیونچانے کے میٹر پرسپر دھکا دیتے ھیں )

ایک سدهکا کیوں دیتے عو جی آ هم پہلے آئے هیں .

बूसरा--- अपनी-अपनी बारी से चलो, फिर धक्का देने

الله اللي اللي با ي عدور عما ديل كي لروع

चीथा-इम चाहते क्या हो १ में डाक्टर नहीं, वैच नहीं, कोमा नहीं. यहाँ तो देखते ही कुछ कह दिया तो ठीक, नहीं वो हर गंगा !

दूसरा-नहीं भैया, तुम वहे गुनी हो. कुग करो.हमारी आंख में विलनी हुई है, इसके मारे बढ़ा दरद है. बताओ

क्या करें ?

ी मीचत ही न आवे.

चौथा-करो क्या ? यह तो सभी जानते हैं. बेर के सात पत्ते लेकर एक बेर के कांटे में बांधकर आंख से इषाणी जीर पूप में रख दो. जैसे-जेंसे पत्ते स्लेंगे वैसे बैसे बिलनी भी स्खती जाएगी.

डाक्टर-( भीतर कंपाधन्डर से ) इन देहातियों को क्या हो गया है ? तुम उनसे कुछ कह देते हां और ये कुछ और ही कर बैठते हैं. बार दिन की दबा एक बक्त में ही पीकर काली बोतल लिए चले आते हैं.

चौथा-( रोगियों से ) सुना तुम लोगों ने ? सममते पक्को. तुम्हारा द्वा पीना भी इन्हें कितना खलता है ? मैं कहता था न कि ये लोग मन से दवाई नहीं देते ?

( एक रोगी जो दवा लेकर बाहर निकलता है, बीथे की

भोर दवा बढ़ाकर कहता है)

रोगी-देखो भैया, यह मालिस करने की दवाई ठीक है न १

( बोतल पर लेबुल लगा है "बाहर लगाने के लिये". भीषा लेकुल को प्रकाश में ध्यानपूर्वक देखता और शीशी डिलावा है )

भीथा-तुम्हारे लिये यह दवाई बिल्कल ठीक है. इसे सेर भर दूध में मिलाकर गटक जाओ, अब कल दूसरा क्र्या पहन कर जाना, तब ये तुम्हें और दवा देंगे. कंपाउन्हर में तस्हें सिरफ आधी खुराक दवा दा है.

रोगी-युवाई देने में भी इनके प्राया सूखते हैं!

चौथा-मैं तो पहले ही कह चुका हूँ, जब टिकस सगाना होता है तब ये परजा को कैसा चूसते हैं और न हेने पर जाल-पीले होते हैं. और जब दबा देते हैं तब मन ही सन कद कह कर देते हैं. इसीलिये तो इनके हाथ में जस कीं है.

सब--ठीक है. बाबो, इस कंपाचन्डर को निकास बाहर करें और इसे पेसी नसीहत वें कि इसे खट्टी का दूध पांच जा जावे.

(कोलाइल-पटाचेप)

بين المن المن المرا من الار نيون ويديه نيون ارجها فيقين بيان قو ديكهتم هي كچه كهه ديا تو تهيك نهين تر هرگنگا ا

جوسراسشهين يهيا تم برم كني . هو كريا كرو . هماري أنه موں بلنی مزئی ہے اس کے مارے ہوا درد ہے بتاؤ کیا دریں ؟ چوتھا۔ کرو کیا ؟ یه تو سبھی جائٹے هیں . بیر کے سات یتے لهکر ایک بهر کے کانتے میں باندھکر آنکو سے چھوای اور دھونیا میں رکھ دو ۔ جیسے جیسے یکے سوکھینکے ویسے ویسے بلغی بھی سوکھٹی جائیگی ،

قاً كلو- ( بهيتر كمهاولتر سے ) إن ديهاتيس كو كها هو گيا ه ا تم أن سه كجه كيه ديته هو أوريه نجه أورهم كر بيتهت هيں ، چار دوں كي دوا ايك وقت ميں هي بي كر خالي بوتل لله جلم أترهين .

چوتھا۔۔ ( روگیوں سے ) ساتم لوگوں نے ا سنجھتے چلو . تبهاراً دوا يبنا بهي إنهين كتنا كبلنا هـ إ مين كبنا تها نا كه يه لوگ من سے دوائی نہیں دیاتے ؟

. ( ایک روگی جو دوا لیکر باهر تکانا هے؛ چوتھے کی أور دوا ہوما کر کہتا 🛳 🕽

روگر حسدیکھو بھیا کی مالس کرنے کی دوائی تھیک 102

( بوتل يو ايبل لكا هـ "باهر لكاني كي الم" ، جوتها ليبل كو يركاهي مين دهيان يوروك ديكهتا أور شيشي هاتا هي)

جوتها-تمهارے اللہ يه دوائي بالكل تهيك هـ . إسم سهر بهر دوده میں معکر گلک جاؤ . آب کل دوسرا کرتا پہن کر آنا تب یہ تمہیں اور دوا دینکے، کمپاونڈر نے تمہیں سری آدھی کہراک دیا دی ہے۔

روکی -- دیوائی دینے میں بھی اِن کے پران سوکھتے ہیں ا چوتهاسمیں تو پہلے ھی کہم چکا ھوں ، جب ٹکس لگانا هوتا هه تب يه يرجا كو كيسا چوسته هيل أور قه ديله ير الل يل هوڙ هين . اور جب دوا ديته هين تب من هي من کوه کوهار دیاتے هيں . اِسي لله تو اِن كے هاته ميں جس تهيں هے . سب الهدك هـ أوا إس كبيارندر كو نكال باهر كرين لور اس ایسی نمیست دین که اسم چهنی کا دوده یاد أجازم.

( كوالعل سيالكيها )

# भी सुरेश रामभाई

नये सिरमन की योजना और कटीर बंधे

काँमेस के लखनऊ के इजलास (1936) में सदर के अपने भाषण में जब पंडित जवाहरलाल नेहरू ने समाजवादी विचार प्रकट किये तो हमारे देश के व्यापारी-केत्र में एक खलबली सी मच गई. उससे यह साफ पता चलता था कि यहां के ज्यापारियों के स्वार्थ आम जनता के हित से कितने अलग हैं. सेकिन देश की गुलामी, राजनीतिक घटना-चक और फिर लड़ाई छिड़ जाने के सबब इन दोनों के बीच का भेद इब कम हो गया और द्धोनों ही, थोड़ा-बहुत मिलकर, आजादी के मक्तसद की तरफें बढ़े. लेकिन आजादी के बाद से दीनों के बीच की खाई प्यादा चौड़ी होती जा रही है. इमारे बुनकरों की दुर्दशा से साफ मालूम होता था कि हवा का दख किथर है. बल्कि कहना यह बाहिये कि उसकी स्थिति एक वैरोमीटर का काम करती थी जिससे यह बन्दाजा लग जाताथा कि चंद श्रीमानों का कितना जबरदस्त दबाब देश की दु:सी जनता पर पढ़ रहा है. फिर, जब दो महीना पहले 'कर्वे कमेटी' की रिपोर्ट के शाया होने पर पूंजीपतियों की तरफ से जो तुफान डठा उससे ता श्रंधा भी देख सकता था कि यह दबाब कितना भयानक और वेरहम है.

आजादी के बाद से पिछले आठ साल में जो हमारी आर्थिक "प्रगति" हुई है, उसका सार यही है कि एक बेहद धनी व्यापारी बर्ग पनप गया और हमारे बाजारों व घरों पर बड़ी तेजी से हावी हो गया. इस काम में उसे सरकार की काफी मदद मिली और देश में जो बिदेशी आर्थिक स्वार्थ हैं उनका तो पूरा सहारा मिला ही. हमारे प्रमुख व्यापारियों ने बिदेशियों की शिरकत से काम ग्रुक कर दिया. इस अनोसी पटना का नतीजा यह है कि आज किसी "मेड इन इन्डिया" ( मारत में बनी ) जीज को देसकर कोई यह नहीं तमीज कर सकता कि वह भारतीय पूँजी से ही बनी है या विदेशी हाथ भी उसमें है. जो भी हो, आज हमारा व्यापारी वर्ग काफी समर्थ हो गया है और वह मारत के बाजार पर ही नहीं, बिदेश के बाजारों पर भी अपना सिक्का अमाना पाइता है. यही सबब है कि अगर जरा भी वर्षा उसके केया बीं वेते का कभी उठता है तो वह आग वर्गणा हो

شرى سريص راميهائي

لله سرجن کی بوجلا اور کولیر دعده

کالکریس کے انہاؤکے اجالس (1936) میں صدر کے اپنے بھاشی میں جب پندت جوامر الل نہرو نے ساچ اودی وچار پرکٹ کئے تو همارے دیق کے ویاپاری چھیٹر میں ایک کھابلی سی میے گئی . اُس سے یہ صاف پتہ چلتا تھا کہ یہاں کے ویاپاریس کے سوارتہ عام چلتا کے هت سے کتنے الگ هیں . لیکن دیش کی نظمی' راجنیٹک گیٹنا چکر اور پھر اوائی چھڑ جانے کے سبب بات ملکز' آزادی کے بیچ کا بھد کچھ تم هوگیا اور دوئوں هی' تهوزا بہت ملکز' آزادی کے مقصد کی طوف بڑھ . لیکن آزادی کے بعد سے دوئوں کے بیچ کی کھائی زیادہ چوڑی ہوتی جارہی ہے ہمارے بنکروں کی دردشا سے صاف معلم ہوتا تھا کہ بھرومیٹر همارے بنکہ کہنا یہ چاہئے کہ اُس کی اِسٹیتی ایک بھرومیٹر کو کل کرتی تھی جس سے یہ اندازہ لگ جاتا تھا کہ چہن شویمائوں کا کتن زہردست دہاؤ دیش کی دکھی جنتا پر پڑ رہا شویمائوں کا کتنا زہردست دہاؤ دیش کی دکھی جنتا پر پڑ رہا ہوئے پر پونجی پنیوں کی طرف سے جو طونان آتھا اُس سے تو ہوئے پر پونجی پنیوں کی طرف سے جو طونان آتھا اُس سے تو ہوئے پر پونجی پنیوں کی طرف سے جو طونان آتھا اُس سے تو ہوئے پر پونجی پنیوں کی طرف سے جو طونان آتھا اُس سے تو

آزادی کے بعد سے پچھلے آتھ سال میں جو هماری آرتیک الرکتی و هماری آرتیک ویاپاری ورگ یف آس کا سار یہی ہے که ایک پرحد دهنی ویاپاری ورگ پنپ گیا اور همارے بازاروں و گوروں پر بڑی تیزی سے حاری هوگیا ، اِس کام میں اُسے سردر کی دنی مدد ملی اور دیکس میں جو ودیشی آرتیک سرارته هیں اُن کا تو پورا سپارا ملا هی ، همارے پرمکه ویاپاریوں نے ودیشیوں کی شرکعت سے کام شروع کودیا ، اِس آنوکیی گیانا کا نتیجہ یہ ہے کہ آج کسی ''میڈ اِن اِنڈیا'' ( بھارت میں بنی ) چھڑ کو مدیکھکر کوئی یہ نہیں تمیز کرمکنا نہ وہ بھارتیہ پونجی سے هی میکھکر کوئی یہ نہیں تمیز کرمکنا نہ وہ بھارتیہ پونجی سے هی میکھکر ویاپاری ورگ کانی سرته هوگیا ہے اور وہ بھارت کے بازار یو بھی ہوا آج پر هی اُنہا سکہ جمانا چاھتا ہے میں بہی سبب ہے کہ اگر ذوا بھی چرچا اُس کے چھٹر کو بانیھ دینے کا کبھی آئینا ہے تو وہ آگ بگولہ ہو

學的學院,也多些事情也可以

शोषण करता है।

अस्वारों की सबर है कि व्यापारी-वर्ग को कितनी छट दी जाये, इस पर हमारे केन्द्रीय मंत्रिमंडल तक में एकमत नहीं है. अगर खीबांगीकरण के बढ़ने से देश में वेकारी पटती होती तब तो कोई सवाल ही नहीं खड़ा होने वाला था और हर कोई उसे क्याई देता. मगर आफत यह हो रही है कि भौद्योगीकरता के साथ साथ-फिर जब पंचवर्षीय बोजना भी व्यवस्थित उक्क से चल रही हो और विदेशियों की कारगर सलाह व मदद भी मिल रही हो-बेकारी ज्यादा विकराल स्वरूप लेती जा रही है. और तो और, इमारे केन्द्रीय मिनिस्टर रोजगार दिलाने के सम्बन्ध में जो बादे करते हैं जन पर भी कायम नहीं रह पाते. पिछले दिसम्बर में पार्लि-बानेन्ट के कॉमेसी सदस्यों की एक सभा में प्रधान मंत्री ने कहा कि देश के अन्दर वेरोजगारी, विशेषकर इतने बढ़े वैसाने पर, बदारत नहीं की जा सकती और रोजगार देना एक फूर्ज ही नहीं, सामाजिक जरूरत भी है. इस बजह से सरकार द्वाय के धन्धों की तरफ भी जा रही है. लगभग तीन साल पहले उसने एक अखिल भारत खादी और प्रामोद्योग बोर्ड बनाया जिसकी योजनायें कुछ चल रही हैं, कुछ ग्रुरू होने जा रही हैं. अब यह तो भविष्य ही बतायेगा कि बड़े पयोग और खादी बार्ड कंथे से कंथे मिला कर बेकारी दूर कर सकते हैं या बढ़े उद्योगों में ही इतनी ज्यादा सकत है कि बेरोजागरी खुल कर दें या अगर हालत और भी बिगड़ जाती है तो फिर नये सिरे से विचार करना होगा.

बहुत ही आंशाबादी नजर से हम यह मान लेते हैं कि
ज्योग खूब फलते फूलते हैं, बेकारी हवा हो जाती है, खादी
बोर्ड की जरूरत नहीं रह जाती और देश में मशीनों की
अरमार लग गई. तब हमारे देश का स्वरूप क्या होगा ?
इन मशीनों के साथ-साथ हमका योरप और अमरीका की
बरह बड़े पैमाने पर कीजें रखनी होंगी और कीजी सामान
जमा करना होगा. जितना ज्यादा औद्योगीकरण, उतना
व्यादा शस्त्रीकरण, हमें केवल उत्पादन संभालने के लिये
दी सेना नहीं चाहिये, विदंशों के अपने व्यापार पर चौकीदारी करने के लिये भी सेना चाहिये. तब भारत एक प्रवल
शक्ति के रूप में प्रकट होगा—आर्थिक और कीजी दोनों
हरिट्यों से. इस तरह हम 'प्रगति' करने चले जायेंगे और

پرتا کے آپر جیائر کہا کہ کہ اگر مدارے کام میں دخل اندازی کی جائیکی تو تھار گالی میلا پریکا اور پھر سادھاری گراھت کو ھی اُس سے نقصانی پہرنجیکا ، عجیب تباشہ ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ کا جتنا زیادہ شوشی ڈاہ کرے آنکا ھی زیادہ سستا مال تیار کرتا ہے اور جتنا می زیادہ غریب کا سوشی کرتا ہے !

اخباروں کی خبر ہے که ویاپاری ورگ کو کتلی چھوے دی جائه اس پر همارم كيلوية ملترى ملذل تك مين أيك ست نہیں ہے ۔ اگر اوریوگیکرن کے بوھنے سے دیش میں بیکاری عهتنی هوتی تب تو کوئی سوال کی تهیں کھڑا ہوئے والا تھا اور هر كوئي أس يدهائي ديناً، مكر أنت يه هو رهي ف كه أوديوكيكون کے ساتھ ساتھ—پھر جب پنچ ورشقه یوجنا بھی ویوسٹھت تمنگ سے چل رهی هو اور وديشيوں کی کارگو صالح و مدد ہيں مل رهي هوسبيكاري زيادة وكوال سوروب ليتي خارهي هـ. اور تو اور عمارے کیندریہ منسٹر روزگار دلانے کے سبندھ میں جو وعدم کرتے هيں أن پر بھی قايم نہيں را باتے ، بحیا۔ دسمبر میں یارلیامیدے کے کائکریسی سدسیوں کی ایک سبها میں پردھان ملتری نے کہا که دیش کے اُندر بررزگای وشیشکر اِتنے ہوتے یہمانے یو اُ ہرداشت نہیں کی جاسکتی اور روزگار دینا ایک فرض هی نهیں ساملجک ضرورت بھی ہے ۔ اِس وجه سے سرکار ھاتھ کے دھادھوں کی طرف بھی جارھی ھے ، لگ بھگ تین سال پہلے اُس نے ایک اُکہل بھارت کادی اور گرامودیوک بورة بنايا جس كى يوجنائين كچه چل رهى هين كچه شروع هرنے جارهی هیں . اب يه تو بهرشيه هي بتائيكا كه برے أديوك أور كهادى بورة كلده سه كنده ملاكر بيكارى دور كرسكته هيل يا ہرے ادبوگیں میں هی اِتنی زیادہ سکت هے که پردوالری ختم كرديس يا اكر حالت أور بهي بكو جاتي هي تو يهر نعم سرعه سم وجار كرنا هوكان

market and the same of

हमारी शाल देंगी. हैं या जानते हैं कि यह सब हो बाना इतना जासान नहीं है. फिर भी ध्रमा भर के लिये हम इसे मान लेते हैं. यब सवाल उठता है—क्या पश्चिम के देशों जैसा हांजाना इमारे लिये सन्तोषप्रद होगा ? क्या वहीं धादर्श इमारे लिये सर्वोपिर है ? इसके साथ ही दूसरा सवाल यह पैदा होता है—इतनी अथाह सम्पत्ति के बावजूद धाज अमरीका (या रूस) इतना दु:बी क्यों है ? वहां हर बीज की इफ्रात है, फिर भी वहां के लोगों की आंखों में डर समाया हुआ है. वहां जिन्दगी बसर करने के एक से एक उत्तम साधन मौजूद हैं, फिर भी वहां के लोगों के दिलों में बोखलापन है. वहां किसी बीज की कमी नहीं, फिर भी वहां के लोगों के दिलों में बोखलापन है. वहां किसी बीज की कमी नहीं, फिर भी वहां के लोगों के दिलों में बोखलापन है. वहां किसी बीज की कमी नहीं, किर भी वहां के लोगों के दिमारों में परेशानी और घवड़ाहट है. क्या सवब है कि इतने सम्पन्त होने पर भी आज वह इतने बरवाद-इन हथियारों की तैयारी में बोये हुए हैं ?

सवाल दर अस्त गहरा है. और इस सवाल का सीधा सम्बन्ध संयोजन के मक्रसद से हैं. जो योजना-बन्दी सरकार कर रही है उसका मक्रसद क्या है ? पिछले दो महायुद्धों से और तीसरे के संकट से यह साफ है कि संयोजन की पश्चिमी पद्धति में बहुत खराबियाँ भरी पड़ी हैं, उसकी असफलता के माने यह हैं कि जिन मूल्यों के आधार पर वह रचना खड़ी है ने मूल्य राल्त हैं, जिन उसलों की वह परिस्तिश करती है ने उसल खाटे हैं. जिन सिद्धान्तों को वह निर्विवाद मानती है ने विचार दोषपूर्ण हैं, संचेप में कहें तो ने मूल्य मान्यतायें या सिद्धान्त यह हैं!

- (1) सम्पत्ति और उत्पादन के साधनों पर निजी गा सरकारी मालकियत व अधिकार.
- (2) शारीरिक अम को हीन और मानसिक अम को भेष्ठ मानकर दोनों के पुरस्कारों में जमीन-आसमान का भेद करना.
  - (3) रचा में हथियारों का उपयोग करता.
  - (4) समाज में बर्ग-भेद और बर्ग-विद्वेष की स्थापना.
- (5) जिसकी लाठी उसकी भैंस—इक्यावन के मूठे-प्रच्ये हित में बन्यास के हित की बलि बेना.

कांई ज्योतिषी नहीं, रास्ता-चलता आदमी यह बता सकता है कि जब तक भारतीय संयोजन हमारे देश का नव-निर्माण इन पाँच आधारों पर चलता रहेगा तब तक उसका भविष्य बहुत ही अंधकारमय है. और जब तक हम इस सांचे के मुताबिक अपने को ढालते रहेंगे, तब तक हम उस सांचे के मूल बनाने बालों के—पश्चिमी राष्ट्रों के— गेले रहेंगे और सारा कार्य कम उनके हाथ में होगा। मतलब पह है कि इस हमेशा "पिछड़े" हुए रहेंगे। कीजी खेत्र में इसका अर्थ यह होगा कि विपक्ष के एक भी उत्तम हथियार के आगे, जो हमारे पास नहीं हैं, हमें चारों खाने चित्त लेटना هداری شان هرگی ، هم جائتے هیں که یه سب هوجائ آلیا آسان نہیں ہے۔ پہر بھی چھن بھر کے لئے هم اِسے مان لیکے هیں۔ قب سوال آبھا ہے۔ کیا پچھم کے دیشرں جیسا هوجانا همارے لئے سنتوش پرد هوٹا ؟ کیا وهی آدرش همارے لئے سرورپری ہے؟ اِس کے ساتھ هی دوسرا سوال یه پیدا هوتا هے۔ اِتنی انهاه سمهتی کے باوجود آج آمریکه ( یا روس ) اِتنا دکھی کیوں ہے ؟ وهاں هر چیز کی آوراط ہے ، پھر یھی وهاں کے لوگوں کی آنکھوں میں تر سمایا هوا ہے ، وهاں وندگی بسر کرنے کے آیک سے ایک آم سادهن موجود هیں ' پھر بھی وهاں کے لوگوں کے دارں میں کھوکھائیں ہے ، وهاں کسی چیز کی کمی نہیں' پھر بھی وهاں کے لوگوں کے دارں میں کھوکھائیں ہے ، وهاں کسی چیز کی کمی نہیں' پھر بھی وهاں کے لوگوں کے دارہ میں کھوکھائیں ہے ، وهاں کسی چیز کی کمی نہیں' پھر بھی وهاں کے لوگوں کے دارہ میں کھوکھائیں ہے ، وهاں کسی چیز کی کمی نہیں' پھر بھی وهاں کے لوگوں کے دمانوں میں پریشانی اور کھبراهت ہے ، کیا سبب کے لوگوں کے دمانوں میں پریشانی اور کھبراهت ہے ، کیا سبب کے لوگوں کے دمانوں میں پریشانی اور کھبراهت ہے ، کیا سبب کے لوگوں کے دمانوں میں پریشانی اور کھبراهت ہے ، کیا سبب کھیں کہ اِنہ سمین هوئے چیر بھی آج وہ اِننے برباد کی هتیاروں کی

سوال درامل گهرا هے . اور اس سوال کا سهدها سدنده سنهوجن کے متصد سے هے . جو پوچنا بندی سرکار کو رهی هے اُس کا مقصد کیا هے ؟ پچپلے دو مهایدهوں سے اور تیسرے کے سندے سے یہ صاف هے که سنهوجن کی پشچسی پدهتی میں بہت خوابهاں بهری پڑی هیں . اُس کی اسپیلتا کے معنے یہ هیں که جن موابوں کی وہ پرستش کرتی هے وے اُمول غلط هیں ' جن اُصواس کی وہ پرستش کرتی هے وے اُمول کورہ ، جن سدهانتوں کو وہ انروراد مانتی هے وے اُمول درهی پرس هیں . جن سدهانتوں کو وہ انروراد مانتی هے وے وچار درهی پرس هیں وہی سدهانت یہ هیں :

- (1) سمائی اور اُتهادی کے ساتھنوں پر تجی یا سرکاری مالکیت و ادھیکار .
- (2) شاریرک شرم کو هیں اور مانسک شرم کو شریشتھ مانکر دونوں کے پورسکاروں میں زمین آسمان کا بھید ڈرنا ۔
  - (3) رکشا میں متیاروں کا آییوگ کرنا۔
- (4) سماج میں ورک بھید اور ورگ ودوئیش کی استهاپنا ،
- (5) جس کی اٹھی اُس کی بھینس۔اکیاری کے جهرائہ ستجے هت میں اُنچاس کے هت کی بلی دینا ،

کوئی جیوتشی نہیں' راستہ چلتا آدمی یہ بتا سکتا ہے کہ جب نک بھارتیہ سلموجی' همارےدیشی نوٹرمان اِن پائیج آدھاروں ہو چلتا رهیگا تب تک اُس کا بھوشهمبہت هی آندهکار مئے ہے . اور جب تک هم اِس سانتھے کے مطابق اپنے کو تعالتے رهیئے' تب تک هم اُس سانتھے کے مول بنانے وائوں کے پشچمی راشتروں کے سپنچھی رهیئے اور سارا کاریہ کرم اُن کے هاتھ میں راشتروں کے سپنچھے رهیئے اور سارا کاریہ کرم اُن کے هاتھ میں جھگا ، مطلب یہ ہے کہ هم همیشہ ''پنچھڑے'' هوئے رهیئے۔ نوجی چھیئر میں اِس کا ارتو یہ هوگا که ویکشی کے ایک بھی اُتم هتھار کے چھیئر جو همارے یاس نہیں هیں' همیں چاروں خانے چپ لیتنا

प्येया—ठीक वसी तरह जिस तरह जर्मनी के जागे कांस लेट गया या अमरीका के जागे जर्मनी व जापान लेट गये। ऐसी सूरत में हम पूछना चाहेंगे कि हमारा सारा नव-निर्माया किस तक्क्ते नजर से हो रहा है ?

समय जागया है कि इस इतिहास की रोशनी में भूत-काल पर बुद्धि पूर्वक विचार करें और जागे का साफ नक्तशा अपने सामने रखें। दूसरों की रीस करने से कोई कायदा महीं। हम यह नहीं कहते कि दूसरों से हम सीखें नहीं. नहीं, चकर खीखें-- उनकी अच्छी बातें तेने के साथ साथ उनकी बुरी बातों से भी बचें. यह कैसी दुर्वनाक बात है कि आठ साल से हमारे यहां विकास का काम चल रहा है लेकिन इस अरसे में अपने नये कारनामों का प्रतीक एक शब्द भी हम जनता को नया नहीं वे सके. कारण केवल यही है कि हमारे चिन्तन की जड़ें अभी तक हमारे देश में हैं ही नहीं. हमारे गयातंत्र का विधान भी इन्हीं परदेशी जड़ों का नमूना है. कोशिश मार-पीट कर यह है कि विदेशी पौधे को किसी तरह अपने देश में जमा दें. लेकिन बढ़ती हुई बेकारी इंके की चोट पर पेकान कर रही है कि वह विदेशी पौधा यहां की धरती में लगने से इन्कार कर रहा है. इस विदेशी ढाँचे में प्रामी-चोग के लिये कहां स्थान है ?

इसलिये हिम्मत के साथ खड़े होकर क्रान्तिकारी नषारिये से काम करने की जाकरत है. हम को अपने संयोजन का लक्ष्य स्पष्ट करना चाहिये और उसी के अनुसार अपना रास्ता बनाना चाहिये. केवल उत्पादन बढ़ाना या पूजी इकटा करना हमारा मक्रसद नहीं हो सकता कोई यह नहीं कहता कि हम रारीबी की पूजा करें या सुख के साधनों से मुंह मोड़ें. पूँजी और बहुतायत का हमेशा स्वागत है—लेकिन किस खातिर से ? सम्पत्ति एक साध्य मात्र है, साध्न नहीं. हमारे सामने साधन क्या हैं, थोड़े शब्दों में उसे इस प्रकार कह सकते हैं:

(1) सब को रोजगार की व्यवस्था यानी बेकारी का अस्तित्व ही न रहे।

(2) नई समाज रचना की स्थापना जिसकी आधार भूत में मान्यातायें न हों (जो ऊपर दी जा चुकी हैं) जिनके कारण परिचम दु:सी है।

(3) शान्तिमय और अहिंसक उपायों का प्रतिष्ठापन जिससे कि इमारे सभी भगड़े, राष्ट्रीय हों या अंतरोष्ट्रीय, बिला मार-काट के तय हो जायें।

अगर हमारे मक्सद यह हैं तब तो आमोचोग के लिये स्थान है. भारत जैसे विशाल और दीन देश में आमोचोग बेकारी दूर करने में कांमयाब हो, यह कोई छोटी बात नहीं है. लेकिन हमारा निवेदन है कि बेकारी-निवारण ही आमो-चोग का लक्ष्य नहीं है. आसोचोग एक जीवन-पद्धति का संकेत है. बह एक जिन्दगी का सरीका है, एक विचार-ज्योति का پریا الیک اس طبع جس طرح جوملی کے آگے نوالس ایک گیا یا آمریکہ کے آگے جوملی و جاپان لیک گئے ایسی میرت مہرر م پوچینا چامیاکہ که همارا سارا نونرمان کس نقطه نظر سے گورچا ہے ؟

سم آگیا ہو کہ هم اِنهاس کی روشلی میں بھوت کال پر
بدھی پوروک وچار کریں اور آگے کامان تقفه اپنے سامنے رکیں ،
یہسروں کی ریس کوئے سے کوئی فایدہ نہیں ، هم یہ نہیں کہتے
کہ دوسووں سے هم سیکھیں نہیں ، نہیں ' ضرور سیکھیں۔۔۔۔۔اُن کی
اچی بانیں لیلنے کے ساتھ سانھ اُن کی بری بانیں سے بھی
بچیں ، یہ کیسی دردنداک بات ہے کہ آئی سال سے همارے یہاں
رکیس کا کام چل رہا ہے لیکن اِس عرصے میں اپنے نئے کارفاموں
کا پرتیک آیک ہدد بھی هم جلتا کو نیا نہیں دیے سکے ، کارن
دیش میں ہیں ہے کہ۔همارے چلتی کی جریں ابھی تک همارے
دیش میں ہیں ہے کہ۔همارے چلتی کی جریں ابھی تک همارے
انہیں پردیشی جروں کا نمونہ ہے ، کوشش مار پرت کو یہ ہے
انہیں پردیشی جروں کا نمونہ ہے ، کوشش مار پرت کو یہ ہے
برهتی ہوئی بیکاری ذائے کی چوٹ پر اعلیٰ کو رہی ہے کہ وہ
برهتی پردیش کو کسی طرح آپنے دیش میں جمادیں ، لیکن
ردیشی پردیش یہاں کی دھرتی میں لکنے سے آنکار کو رہا ہے ،
اِس ودیشی ذاہنچے میں گرامیودیوگ کے لئے کہاں استھای

اِس لِنُه همت کے ساتھ کھڑے ھو کر کوائیتیکاری نظریہ سے کا کرنے کی ضرورت ہے ، همکو اپنے سنیوجین کا لکش اسیشٹ کرنا چاھئے اور اُسی کے اُنوسار اُپنا راستہ چلنا جاھئے ، کیول اُنھاں پوتھاں یا پوتجی اِکٹھا کرنا ہمارا مقصد نہیں ھو سکتا ، کئی یہ نہیں کہتا کہ هم غریبی کی پوچا کریں یا سکھ کے سادھنی سے منع موریس ، پونجی اور بہوتایت کا همیشہ سواکت ہے۔ لیکن کس خاطر سے اُسمیتی ایک سادھنی ماتر ہے' سادھیہ نہیں ، همارے سامنے سادھن کیا ھیں' تھوڑے شہدوں میں اُسے اُس دوکار دیم سامنے هیں .

(1) سب کو روزگار کی ویوستها علی بیکاری کا آستنو هی نه ا

(2) نئی سماج رچنا کی استهاپنا جس کی اُدھار بھوت وے مانیتائیں نہ ھوی ( جو اُوپر دی جا چکی ھیں ) جن کے کارن پشچیم دوکھی ہے ۔

(3) شائنی مئے اور امنسک آپایس کا پرتشتہابی جس عدد ممارے سبھی جہاڑے واشتریہ میں انترواشتریہ بلا مار کا کے طبے ہو جائیں .

اگر جمارے مقصد یہ هیں تب تو گرامودیوگ کے لئے استهاں فی بھارے مقصد یہ هیں دیش میں گرامودیوگ بیکاری در کرنے میں کلمیاب هو' یہ کوئی چھوٹی بات نیں ہے ، لیکن مارا نہیدی ہے کہ بیکاری توارن هی گرامودیوگ کا لکھی نہیں ہے ، گرامودوگ کا لکھی نہیں ہے ، گرامودوگ ایک جھون پدھتی کا سکینت ہے ، وہ ایک وجار جھوتی کا

रीयक है. वह पढ़ावे था ज्योति कोई एकियानूसी था प्रवि-

विवाशीय नहीं, परिष अत्यन्त वैद्यानिक और विवेक पूर्य है.

प्रसकी इन सकाई की जरूरत है.

प्रामोद्योग के माने गशीनों का बहिष्कार नहीं है. शामी-शोग का रहस्य है अपनी बुनियादी जरूरतों - खाना. कपड़ा चौर मकान में स्वाबलम्बन, विज्ञान की एटामिक खोजें यह कह रही हैं कि यह बुनियादी स्वाबलम्बन सो इन्सानों को मधना चाहियें. लेकिन हर आदमी इन तीनों बातों में पूरा भावलम्बी अकेले नहीं हो सकता. इसलिये वह पास-वडोस का सहयोग ले और हर गांव, या जनसंख्या की छोटी से छोटी इकाई, बुनियादन स्वावलम्बी हो. दोनों लड़ाइयों ने दिखला दिया कि दुनियादी जरूरतों में परावलम्बन खतरनाक और भातक है. खाना, कपड़ा और मकान के मामले में. छोटी से छोटी इकाइयां अपने बल पर खड़ी होनी चाहियें. बाक्री की न्यारी न्यारी आवश्यकताओं में हम परस्परावलम्बन कर सकते हैं. लेकिन यह तभी सम्भव है जब सम्पत्ति पर स्वामित्व व्यक्ति या सरकार का न होकर समाज का हो और शारीरिक श्रम व मानसिक श्रम में कोई भेद भाव न किया जाये. यानी नयी समाज रचना की दर-कार है.

त्राज विज्ञान भी नथी समाज रचना की मांग कर रहा है. जगर क्यादन के साधनों पर निजी स्वामित्व कायम रहता है, तो जैसा आज हो रहा है, क्यादक उनसे वंचित रहेगा और इन साधनों की प्राप्ति की लालसा के कारण समाज में ईच्या, देव, नकरत और खून-खराबी चलती रहेगी. हमारा विश्वास है कि अगर देश की विकास-योजना आज के स्वामित्व-सम्बन्धों पर चोट नहीं करती तो उसके द्वारा श्रीमान लोग दु:स्वी-दीन का मन चाहा शोषण करेंगे. अगर आज की समाज-रचना को क्यों का त्यों बरकरार रखा गया तो आधिक विषमता तेजी से बढ़ेगी और संहारक-प्रवृत्तियों को प्राण्वान मिलेगा. आधुनिक विज्ञान मानव को चेतावनी दे रहा है कि आज की चालू जीवन-धारा को बदल कर, बटोरने की जगह बांटने की प्रथा कायम करनी होगी, संचय के बजाये समर्पण की कृत्ति निर्माण करनी होगी और अतिहिंसा को छोडकर अहिंसा के साधन अपनाने होंगे.

जो राष्ट्र प्रगतिशील माने जाते हैं उनके लिये अपना पुराना चोला छोड़कर कायाकरूप कर लेना जरूर मुश्किल होगा. लेकिन भारत को तो इसमें कोई दुरवारी नहीं होनी चाहिये जिसकी जवानी की पंखड़ी अभी खिलना धुरू ही हो रही है. फिर, हमने अपनी आजादी भी अनोसे ढक्क से प्राप्त को है. भारत में चर्ले को मंडे के बीचोंबीच में स्थान दिया गया. यह चर्का केवल उत्पादन का साधन नहीं, जीवन के नये मूल्यों का प्रतीक है, कान्ति की नई प्रक्रिया का संकेत है. यह चर्का अतिहिंसा के सामने अहिंसा का दावेदार है. دبیک هے ، یه یده تی یا جهرتی کوئی دتیاترسی یا پرتیکر یا هیل نهیں' بلکه اتیات ریکیالک آور ریویک پورن هے آس کی کچھ مفائی کی ضرورت هے .

گرامودیوگ کے منعے مشهنوں کا بہشکار نہیں ہے ، گرامودیوگ کا رهسید ہے اپنی بلیادی ضرورتوں اور کہا اور مکلی میں ایتامک کھوچیں یہ کہہ رهی هیں که یہ بنیادی سواولمیں ، وگئیں کی ایتامک کھوچیں یہ کہہ رهی هیں که یہ بنیادی سواولمیں باتوں میں پیرا سواولمی اکوئے نہیں هو سکتا ، اِس لئے وہ پاس پروس کا مہیوگ نے اور هو گاؤں' یا جن سنکھیا کی چھوٹی سے چھرٹی اِکائی' بنیادا سواولمی هو ، دونوں اوائیوں نے دکھا دیا کہ بنیادی ضرورتوں میں پراولمین شورناک اور گھانک ہے ، کھانا' کپڑا اور مکلی کے معاملے خطرناک اور گھانک ہے ، کھانا' کپڑا اور مکلی کے معاملے باتی کی نیاری نیاری آؤشیکناؤں میں هم پرسپرلولمین کو سکتے باتی کی نیاری نیاری آؤشیکناؤں میں هم پرسپرلولمین کو سکتے باتی کی نیاری نیاری آؤشیکناؤں میں هم پرسپرلولمین کو سکتے باتی کی نیاری نیاری آؤشیکناؤں میں هم پرسپرلولمین کو سکتے باتی کی نیاری نیاری آؤشیکناؤں میں هم پرسپرلولمین کو مانسک شرم میں کوئی بھید بھاؤ نہ کیا جائے ، یعنی' نئی سماج رچنا کی میں درکار ہے ،

آج وگیان بھی ٹئی سماج رچنا کی مانگ کو رہا ہے ، اگر آتهادی کے سادھارں پر تجی سواستو قایم رہنا ہے تو جیسا آبے ہو رها هے' انهادین أن سے ونحوت رهیکا اور ان سادهنوں کی پرآیتی کی لااسا کے کارن سماج میں ایرشها دویش انفرت اور خون خُرابی چلتی رهیکی . همارا رشواس هے که اگر دیش کی وکلس یوجنا آج کے سوامتو سبندھوں پر چوٹ نہیں کرتی تو اُس کے دواراً شرّیمان لوک دوئهی دین کا من چاها شوشن کرینکے ، اگر آج کی سماج رچنا کو جهرس کا تیوں برقوار رکھا کیا تو آرتیک وشمنا تروی سے برهیکی اور سنگهارک پرورتهوں کو پران دان مليكا ، أَدهُونَك وكيان مانو كو چيتارني دري وها هُ كُه أَجٍ كي چالو جهون دعارا کو بدل کرا باترالے کی جابع بانتے کی پرتها قایم کرنی ہوگی سنچے کے بعوائے سمرین کی ورتی فرمان کرنے ھوگی اور آتی ھلسا کو چھور کر اھلسا کے سادھن اینانے ھونکے ، جو راشتر پرگتی شیل مانے جاتے هیں أن كے الله اينا يرانا چولا چهرز کر کایا کلپ کر لینا ضرور مشکل هوگا ، لیکن بهارت کی تو اِس میں کوئی دشواری نہیں ہوتی چاعثے جس کی جوانی کی پنکھری ابھی کھلٹا شروع ھی ھو رھا ہے ۔ پھر' ھولے اُپلی آزادی بھی انرکے دونگ سے برایت کی ہے ، بھارت میں جرغے کو جہندے کے بیعوں بیج میں استیان دیا گیا ۔ یہ چرخه کیول اُتھادن کا سادھن نبھن جھوں کے نئے مولیوں کا پرتیک آھے؛ کرائٹی کی نئی پرکریا کا سنمیت ھے ۔ یہ چرخه اتی منسا کے ساملے اُمنسا کا دعویدار ھے۔

इस कारण से इम भारत वालों की यह खास जिम्मेदारी भी हो जाती है कि जिस मार्ग से इम स्वतंत्र हुए, उसी मार्ग पर भागे बढते चले चलें.

इस तरह हम देखते हैं कि एक तरफ से आधुनिक विकान, दूसरी तरक से हमारी आजादी की मंजिल का चमकता हुआ उज्जवल इतिहास और तीसरी तरफ से हमारे देश की व्यर्थिक द्रिद्रता तीनों का यही इशारा है कि राष्ट्र निर्माण के लिये हमको नई शोध करनी हांगी, अपना नया मार्ग खोजना पड़ेगा, इसके माने यह हो जाते हैं कि हमको एक नये सागर पर तैरना होगा जिस पर अब तक कोई दूसरा नहीं गया है. इस नई तैराकी में आनन्द और जोखिम दोनों हैं, और अगर हम ऐसा करते हैं तो प्रामी-धोग को बेशक जगह है. लेकिन प्रामीधोग को बेरोजगारों, लाचारों का क्षणिक आधार मानना अन्याय करना है. **प्रामोद्योग नये युग के-शान्ति, विज्ञान और अ**हिंसा के युग के-नवद्त हैं. इसलिये अगर हम यह कोशिश करेंगे कि आज की पूंजी-प्रेरित, मशीन-प्रधान और शकाक, ष्माधारित समाज रचना में वामोर्गाग फले फूले तो खुद भी धोखा खायेंगे छीर प्रामोद्यांग को भी चीपट करेंगे. यही पिञ्जले सरार-अस्सी साल से देश की औद्योगिक 'प्रगति' के अन्दर होता आ रहा है. प्रामोद्योग हिंसक और युद्ध-प्रिय छत्र छाया में पनपने के बजाय मुरमाते ही चले जायेंगे.

ऊपर की बात का सार यह है कि यह बात साफ होनी चौर खुलनी चाहिये कि राष्ट्र-नव-निर्माण के हमारे **६दे**श्य क्या हैं, भारतीय संयोजन के हमारे लक्ष्य क्या हैं ? अगर इमारा आग्रह यह हो कि इम आज योरप व अमरीका जैसे 'प्रगतिशील' बन जायें, तो इम नम्रता से कहना चाहते हैं कि तब प्रामोद्योग के लिये भारत में कोई स्थान नहीं है, लेकिन अगर पश्चिम के अनुभव से कायदा डठाकर, हम अपने देश की भिट्टी के अनुकूल वैज्ञानिक बुद्धि से, नये ढङ्ग से देश का निर्माण करना चाहते हैं तो आज की चालू मान्यताओं को प्रणाम करना होगा, बर्तमान सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक ढाँचे को बुनियाद से ही बदलना पड़ेगा और नये मूल्यों, नये स्तम्भों, नई मान्यताचों को प्रतिष्ठा देकर उनके आधार पर भारत-भवन की रचना की तैयारी के लिये कमर कसना हागा. और नई समाज-रचना क़ायम करने के लिये इस क्रान्तिकारी काम में, प्रामोद्योग का वही महत्वपूर्ण स्थान होगा जो सीर-मंडल में सूर्य का है.

اِس کاروں سے عام جاڑیت والوں کی یہ خاص زمہ داری بھی عو جاتی ہے کہ جس مارک یہ آگے ۔ جاتی ہے کہ جس مارک سے عام سوئنڈر عوالہ اُ اُسی مارک پر آگے ۔ اور چلے جاتھیں ،

اِس طرب هم دیکھتے هیں که ایک طرف سے آدھائک رکیاں دوسری طرف تعہ هماری آزادی کے منزل کا جمکنا هما أجرل إنهاس أور تيسري طرف سے همارے ديھن كي أرتهك ردرنا-تینوںکا یہی آشارہ ہے که راشتر نومان کے لئے هم کو نئی یہدھ کرنی ھوگی' اینا نیا مارک کھبچنا پریکا ۔ اِس کے معنے یہ موجاتے هيں که هم کو آيک نئے ساگر در تيرنا هرکا جس ير آب نک کوئی دوسرا نہیں گیا ہے ، اس نئی تیرا کی میں آئند ار جو کیم دونوں هیں ، اور اگر هم أیسا كرتے هیں تو گراموںپوگ کو رشک جگہے ہے . لیکن گرامودیوگ کو بے روزگاروں اوارون لا چھنک آدھار ماننا انیایہ کرنا ہے ۔ گرامودیوک نٹے یک کے۔۔ شانتی و وگھان اور اہنسا کے یک کے نودوت ہیں ، اِس للہ اگر هم یه کوشش کرینکے که آج کی پرنجی پریرت مشین يردهان اور شسترأستر أدعارت سماج رچنا مين گراموديوگ پهلے بھولے تو خود بھی دھوکا کھائدی کے اور گرامودبوک کو بھی چربٹ کرینکے ، یہی پچپلے ستر اسی سال سے دیش کی أرديوكك أيركتي كاندر هوتا أرما هي كراموديوك هنسك اور یدھ یرید چھترچھایا میں پنینے کے بجانے مرجھاتے ھی چلے جائيں گے .

آوپر کی بات کا سار یہ ہے کہ بات صاف ہوئی اور کیلنی چاھئے کہ راشتر نو نرمان کہ ہمارے آدیش کیا ہیں' بھارتیہ سنیوجی کے ہمارے اکمش کیا ہیں آ اگر ہمارا آگرہ یہ ہو که هم آج یورپ و امریکہ جیسے 'پرگتی شیل' بی جائیں' تو هم نمونا سے کہنا چاہتے ہیں کہ تب گرامودیوگ کے لئے بھارت میں کوئی استھاں نہیں ہے ۔ لیکن افر پہچم کے نہیو سے فائدہ آئیا کو' ہم آپنے دیش کی متی کے آنوکول ویکیانک بدھی سے ' نئے تھنگ سے دیش کا فرمان کرنا چاہتے ہیں تو آج کی چالو مانگتاؤں کو پرنام کرنا ہوگا' ورتمان ساماجک' آرتیک اور زاجنیتک تھانچے کو بنیاد سمھی بدانا پریکا اور نئے مولیوں' نئے استمہوں' نئے مانتاؤں کو پرتشتیا دیکر اُن کے آدھار پر بھارت بھوں کی رچنا کی تیاری کے اُنے کمر کسنا ہوگا ، اور نئی سماج رچنا قایم کرتے کے لئے اِسی کرانتیکاری کام میں' گرامودیوگ کا برا مہتوہوں استھاں ہوگا جو سور منتال میں سوریہ کا ہے ۔

SECTED 166

E (\$1.00

( 198 )

56 ....



## ایھیا کی ایکتا کے لئے حیدرآباں کل ھند کانفرنس

آج سے هزاروں برس پہلے جبکہ یورپ کے بڑے سے بڑے دیھی ابھی اسبھیہ یا اردہ سبھیہ حالت میں تھے ایشیا اور افریقہ میں بڑی بڑی سبھیائیں جئم لے چکی تھیں ، اُس پراچیں زمائے میں چھی' بھارت' ایران' سمیر' بابل اور مصر بڑی بڑی سبھیاؤں کے کہوارے تھے ، امریکہ کا اُس سے کی سبھیاؤں کے کہوارے تھے ، امریکہ کا اُس سے کی سبھیاؤں کے سبھیاؤں کے نہ تھا ، اِس کے بعد یونان اور ووم کی سبھیاؤں کا سمے آیا ، یونان ایک اردھ ایشیائی دیش تھا اور یونائی سبھیا اردھ ایشیائی سبھیا اردھ ایشیائی سبھیا کے اجھے سے اچھے دئوں میں بھی آدھ سے ادھک رومی سبھیا کے اچھے سے اچھے دئوں میں بھی آدھ سے ادھک یورپ جس میں اِنگلینڈ' فرانس اور جوملی سب شامل تھے یورپ جس میں اِنگلینڈ' فرانس اور جوملی سب شامل تھے یورپ جس میں اِنگلینڈ' فرانس اور جوملی سب شامل تھے یورپ جس میں اِنگلینڈ' فرانس اور جوملی سب شامل تھے یورپ جس میں اِنگلینڈ' فرانس اور جوملی سب شامل تھے

زمانے نے پلتا کیایا ، خاصکر بھاپ اور بجلی کی ایتجاد کے ساتھ ساتھ یورپ کے دیشوں میں نئی چہل پہل شروع ہوئی ، پُورپین قرموں کی آرتهک اور راجئیتک الاسائیں بوھیں ، ایشیا اور انریقه کی هزاروں ورش پرانی سبھیتاؤں میں گروریاں آئیں ، اُن کمزوریوں میں یہاں جائے کی ضروت نہیں ہے ، ایشیا اور انریقه کے دیشوں پر یورپ والوں کے حیلے شروع ہوئے ، پہل تک که انبیک دیشوں پر یورپ والوں کا کم یا ادھک قبضه ہوگیا ، لگ بھگ دو صدی تک ایشیا اور انریقه میں یورپ والوں کا بربھوتو رہا ،

زمالے نے پھر پلٹا کہایا ، ایشیا کی بڑی بڑی قرمیں جاگیں، چین اور بھارت جیسے بڑے برے برے دیش یورپ والس کے پنچے سے آزاد ہوئے ، آزادی کی لہر اور دیشوں میں بھی پھیلی، آج ایشیا اور انریقه میں جات جات اس آزادی کی کوشھیں جاری ہیں لور ایس کے خلاف جاته جات ہی پچھم کی قرموں خاصار آمریکہ انجیات فرانس بیلجیم عالینڈ اسھیں اور پرتگال کی طرف سے

## एशिया की एकता के जिये हैदराबाद कुल हिंद कानफ़रेंस

जाज से इजारों बरस पहले जबकि योरप के बड़े से बड़े देश जभी असम्य या अर्धसभ्य हालत में थे परिया और अफरीका में बड़ी बड़ी सभ्यताएँ जन्म ले जुकी थीं. उस प्राचीन जमाने में चीन, भारत, हैरान, सुमेर, बाबुल, और मिस्र बड़ी बड़ी और ऊँची सभ्यताओं के गहवारे थे. अमरीका का उस समय की सभ्य दुनिया में कहीं नाम तक न था. इसके बाद यूनान और रोम की सभ्यताओं का समय जाया. यूनान एक अर्थ पशियायी देश था और यूनानी सभ्यता अर्थ पशियाई सभ्यता थी. रोम के उभरने के साथ साथ पहली बार एक गुद्ध योह्मपीय सभ्यता का आरम्भ हुआ. पर रोमन सभ्यता के अच्छे से अच्छे दिनों में भी आधे से अधिक योरप जिसमें इंगलेंड, फांस और जरमनी सब शामिल थे सभ्यता की निगाह से बहुत पिछड़ा हुआ प्रदेश माना जाता था.

जमाने ने पलटा खाया. खासकर भाप और विजली की ईजाद के साथ साथ योरप के देशों में नई चहल पहल गुरू हुई. योरपियन कामों की आर्थिक और राजनैतिक लालसाएँ वहीं. परिया और अकरीक़ा की हजारों वर्ष पुरानी सभ्यताओं में कमजोरियाँ आई. उन कमजोरियों में यहाँ जाने की जरूरत नहीं है. परिया और अकरीक़ा के देशों पर योरप बालों के इमले गुरू हुए. यहाँ तक कि अनेक देशों पर योरप बालों का कम या अधिक कृञ्जा हो गया. लगभग दो सदी तक एशिया और अफरीक़ा में योरप वालों का प्रमुख रहा.

जमाने ने फिर पलटा खाया. एशिया की बड़ी बड़ी क्रीमें जागीं. जीन और भारत जैसे बड़े बड़े देश योरप बालों के पंजे से आजाद हुए. आजादी की लहर और देशों में भी फैली. आज एशिया और अकरीका में जगह जगह इस आजादी की कोशिशों जारी हैं और इसके खिलाफ जगह जगह ही पण्डिम की क्रीमों खासकर अमरीका, इंगलेंड, फांस, बेलजियम, हीलेंड, स्पेन और पूर्वगाल की तरफ से प्रतिका भीर अफरीका के उनके अनेक देशों पर अपना प्रमुख असाए रसने भीर दूसरे देशों पर से अपने सोये हुए प्रमुख को फिर से क्रायम करने की कोशिशों भी जारी हैं. ठीक यह इस समय की हालत है.

ऐसी हालत में "एशिया की एकता" की आवाज या "एशिया और अफरीका के सब देशों की एकता" की आवाज घटना एक कुद्रशी बात है. खासकर जबकि "फूट शकों और शासन करों" की अपनी पुरानी जाल के अनुसार पश्किम की साम्राज्य प्रेमी क्रीमें एशिया और अफरीका की क्रीमों को एक दूसरे से लड़ाने की भरसक बालें जल रहीं हैं, एक दूसरे का साथ देने और मिलकर बादें होने में ही हम सबका और दुनिया का मला है.

इसीलिये अप्रैल सन् 1955 में दिल्ली में सब पशियायी देशों की एक कानकरेंस हुई थी. उस कानकरेंस में एक "इंडियन कमेटी कौर पशियन सौलिडेरिटी" (एशियायी एकता के लिए भारतीय कमेटी) बनी. उस कमेटी की तरफ से अक्तूबर सन् 1955 में पशियायी एकता को और मज़बूत करने के लिए दैवराबाद में एक जाल इंडिया कानकरेंस हुई. उस कानकरेंस में पूरब से लेकर पिछ्लम तक और उत्तर से लेकर दिनकान तक भारत के सब प्रांतों से बारह सौ से कपर प्रतिनिधि शामिल हुए.

देदराबाद की कानक रस एक तरह से जनता और सरकार दोनों की मिली-जुली कानकरेंस थी. देश की सब सककाली पार्टियों के लोग और इन सब पार्टियों की तरफ से चुने दूप पारिलमेन्ट और भारा सभाकों के मेन्बर, यहाँ तक कि भारा सभाकों के स्वीकर और सरकारी बजीर भी उसमें शामिल थे. उनके रियासतों के गवरनरों, चीफ मिनिस्टरों, भारत सरकार के मिनिस्टरों, और युनिवर्सिटियों के बाह्स बांसलरों ने कानफ रेंस की सफलता के लिए अपने संदेश भेजे. दिस्ली विधान सभा के लगभग सब मेन्बरों ने और उत्तर प्रदेश की भारा सभा के अस्सी से ऊपर मेन्बरों ने अपनी सहानुभूति के पत्र और तार भेजे.

कानफरेंस में जो प्रश्ताव पास हुए उनमें 'पंचशील' पर यानी सब देशों के मिलकर रहने, एक दूसरे की असन्वता और आज़दी की कदर करने और एक दूसरे के अन्दर के समसों में दसल न देने पर ज़ोर दिया गया, दुनिया से प्राधीनता और एक जाति पर दूसरी जाति के प्रमुख को मिटाने को ज़करी बताया गया, एटम वम और हाइड्रोजन वम जैसे ह्यियारों की कर्त्र बंदिश की मांग की गई. फीजी गुटबंदियों के ख़िलाक और एशिया के मामलों में बोरप और 'अमरीका वालों' की मदाख़लत के ख़िलाक आवाज़ इटाई गई, नए पीन के राष्ट्र सभा में लिए जाने की मांग को दूहराया गया, वगैरा बरीरा. यह भी ऐक्रान किया गया कि اہشیا اور اللہ کے اللہ دیشوں پر آپنا پربھوتو جسائے رکھنے اور درسرے فیشوں پو سے آپنے کھوئے ھوئے پربھوتو کو پھر سے قایم کرنے کی کوشھیں بھی جاری ھیں ۔ تبیک یہ اِس سے کی حالت ہے و

ایسی حالت میں قرایشیا کی آیکتا" کی آواز یا "ایشیا اور افزیته کے سب دیشوں کی آیکتا" کی آواز آئینا ایک قدرتی بات فی شخصکو جبکه "پهرت دالو اور شاسی کرو" کی اپنی پرائی چال کے آئوسار پنچیم کی سامواجیه پریمی قومیں ایشیا اور اوریقه کی قومیں کو ایک دوسوے سے لوالے کی بهرسک چالیں چل رهی هیں ایک دوسوے کا ساته دینے اور ملکر کوے هوئے میں هی هم سب کا اور دنیا کا بیلا ہے .

اسى لئے اپريل سن 1955 ميں دلى ميں سب ايشائی ديشوں كى ايك كانفرنس هوئى تھى ۔ أس كانفرنس ميں ايك ''إندين كميتى فار ايشين سوليذيرتى'' ( ايشيا كى ايكتا كے لئے بهارتيہ نميتى ) بنى ، أس كميتى كى طرف سے اكتوبر سن 1955 ميں يشيائى ايكتا كو اور مضبوط كرنے كے لئے حيدرآباد ميں ايك آل إنتيا كانفرنس هوئى ، أس كانفرنس ميں پورب سے ليكو پنجهم تك اور أتو سے ليكو دكھن تك بهارت كے سب پرائتوں سے بارہ سو سے أوبو پرتيندهى شامل هوئى ،

حیدرآباد کی کانفرنس آیک طوح سے جنتا اور سرکار دونوں کی ملی جلی کانفرنس تھی۔ دیش کی سب راجکاجی پارٹیوں کے لوگ اور آن سب پارٹیوں کی طرف سے چنہ ہوئے پارلیمنٹ اور دھارا سبھاؤں کے میمبو' یہاں تک که دھارا سبھاؤں کے اسپیکر اور سرکاری وزیر بھی اِس میں شامل تھے، اُن کے ریاستوں کے گورٹروں' چھف منسٹروں' بھارت سرکار کے منسٹروں اور یونیوررسٹیوں کے وائس چانسلروں نے کانفرنس کی سبھلتا کے یونیوررسٹیوں بھیجے ۔ دلی ودھان سبھا کے لگ یھگ سب میمبروں نے اور آتر پردیش کی دھارا سبھا کے آسی سے آویو میمبروں نے اپنی سہانبھوتی کے پتر اور تار بھیجے ۔

کالفرنس میں جو پرستاؤ پاس ہوئے اُن میں 'پنج شال'

پر یعلی سب دیشوں کے ماعر رہنے' ایک دوسرے کی افینتنا

اور آزادی کی قدر کرنے اور ایک دوسرے کے اندر کے معاملوں
میں دخل نہ دینے پر زور دیا گیا' دنیا سے پرادھینتا اور ایک جائی پر دوسری جاتی کے پربھوتو کو مانانے کو ضروری بتایا گیا'

ایٹم ہم اور ہائی تورجوں ہم جیسے ہاتیاروں کی قطعی ابدی ا کے مانگ کی گئی' فوجی گئیندیوں کے خاف اور ایشیا کے معاملوں میں یورپ اور امویاء والوں کی مداخلت کے خاف مماملوں میں یورپ اور امویاء والوں کی مداخلت کے خاف مراز آئیائی گئی' نئے چین کے راشار سیما میں لئے جانے کی مہالک کو درھوایا گیا' وغیرہ وغیرہ یہ بھی اعلیٰ کیا گیا کہ

( 100 )

करवरी, कह

56 wy

र्डियत करेंगे क्षेत्र व्यक्तिक क्षेत्रकारित देश में भीर विदेशों में अपने प्रकार के किए बहुत सी नापाओं में पुस्तकें और पत्र पत्रिकार निकासने केसी है.

कानकरेंस में इस बात पर भी जोर दिया गया कि
प्रशिया के स्वता स्वता देशों में तिजारत और तरह जरह
के माल का लेंन देन खड़ाया जावे, कलवर यानी संस्कृति
के मेदान में भारत की अनेक सांस्कृतिक संस्थाएँ, प्रशिया
के सलग सलग देशों की कला और साहित्य को दूसरे देशों
में पहुँचाने और फैलाने की कोशिश करें ताकि एक विशाल
और सुंदर प्रशियाई कलवर रूप ले सके और आगे के
लिये एक बसर्ड कलवर यानी जग-संस्कृति की बुनियारें पड़

समाजी मामलों में भौरतों और षयों की रक्षा और स्वरंगीरी पर खास जोर दिया गया. कहा गया कि साई स की उन्नित में भी परिया के सब देशों को अपने अपने यहाँ की कोजों और ईजादों से एक दूसरे को माला-माल करने की कोरिश करनी चाहिए. यह दिखाया गया कि दुनिया की जाजादी और दुनिया की शांति के लिए पहले पशिया की एकता सब से अधिक जाकरी है.

स्वागत समिति के अध्यक्ष उसमानिया युनिवर्सिटी के बाइस-बांसलर डा० भगवंतम ने अपने भाषण में बढ़ी सुन्दरता के साथ कहा कि इस युग की सब से बढ़ी घटना न ऐटम या हाइड्रोजन बम है, और न बह राजकाजी उथल पुषत है जिसने इस समय दुनिया को हिला रक्खा है, बल्क युग की सब से बड़ी घटना "सारे मानव समाज की बढ़ती हुई एकता" है. उन्हों ने एशिया की नई जागृति पर काफी खोर दिया. विश्व शांति के लिए भारत की कोशिशों को सराहते हुए उन्होंने बताया कि अगर एशिया की कोशी अपने अन्दर की कमजोरियों को जीतना और अपने जपर काबू रखना सीख जाएँ तो आने बाले अमाने में वह संसार को प्रेम और शांति का सबा रास्ता दिखला सकती हैं.

दूसरे बोलने वालों ने इक्ष पशियायी देशों के साथ अमरीका और इंगलेंड की कीजी गुट-वंदियों को सारी एशिया और सारी दुनिया के लिए ख़तरनाक बताते हुए लोगों को उनसे आगाह किया. इस बात पर जोर देते हुए कि जंग को दुनिया से हमेशा के लिये ख़त्म कर देना चाहिए और दुनिया की सब कीजें धीरे धीरे ख़त्म हो जानी चाहिए, सोवियत रूस की इस बात के लिए सराहना की गई कि उसने अपनी ख़ुशी से अपनी साढ़े हैं लाख कीज कम कर दी. पंचशील को पशियाई क़ौमों की एकता का आधार बताया गया. साफ साफ कहा गया कि दुनिया की जो कीम भी जहाँ भी अपनी आज़ कहा गया कि दुनिया की जो कीम भी जहाँ भी अपनी आज़ की लिए कोशिश कर गड़ी है पशिया की सब कीमें उस के साथ हैं. बांद गकी

المنافق العالى فار المانين سوادة برائي دياس مين أور وديانين مان أبد يوجاز في الله بهت مي بهاشاون مين يستدين أور يتر يعرفاني تكالم والي هـ .

الگ آلگ دیشی میں اس بات پر بھی زور دیا گیا کہ آیشیا کے الگ آلگ دیشی میں تجارت اور طرح طرح کے مال کا لھی دینی نومایا جاوے' کلچر یعلی سلسکرائی کے میدان میں بھارت کی اثبیت سائسکرتک سلسٹیائیں' آیشیا کے الگ آلگ دیشوں کی کا اور ساهیکہ کو دوسرے دیشوں میں پہرٹچائے اور پھلائے کی کرشش کریں تاکہ آیک ورات کامچاز یعلی جگ سلسکرائی کی بلیادیں پر سکیں ،

سماجی معاملوں میں عورتوں اور بحصوں کی رکھا اور خبوگیری پر خاص زور دیا گیا ، اور کہا گیا که سائلس کی آلنتی میں بھی ایشیا کے سب دیشوں کو آپنے آپنے بہاں کی کوجوں اور ایتجادوں سے آیک دو رہے کو مالا مال کولے کی کوشش کرتنی چاہئے ، یہ دکیایا گیا کہ دنیا کی ازادی اور دنیا کی ایکا سب سے ادھک ضروری ہے ، شائتی کے لئے پہلے ارشیا کی ایکتا سب سے ادھک ضروری ہے ،

سواگت سمیتی کے آدھیکھی عثمائیہ یونیورسٹی کے وائس چانسلر ڈاٹر بیکوئٹم نے اپنے بہاشی میں بڑی سندرتا کے ساتھ کہا کہ اِس یک کی سب سے بڑی گیٹنا نہ ایٹم یا ھانڈروجوں بم ھیں اور نہ وہ راجکاجی اُبیل پتیل ہے جس نے اُس جے دنیا کو ھلا رکھا ہے اُلکہ یک کی سب سے بڑی گیٹنا ''سارے مالو سماج کی بڑھٹی ھوئی ایکنا'' ہے ، اُنھوں نے ایشیا کی نئی جاگرتی پر کانی زور دیا ، وثو شانتی کے لئے بھارت کی کوشھوں کو سراھتے ھوئے اُنھوں نے بتایا کہ اگر ایشیا کی قومیں اپنے اندو کی کوشروں کو جیٹنا اور اپنے اُپر نابو رکھنا سے جائیں تو آنے والے زمانے میں وہ سنسار کو پریم اور شانتی کا سنچا راستہ دکھا

دوسرے بوانے والی نے کچھ ایشیائی دیشوں کے ساتھ امریکه اور انگلینڈ کی نوجی گٹ بندیوں کو ساری ایشیا اور ساری دنیا کے لئے خطرناک بتاتے ہوئے اوگوں کو اُن سے آگاہ کیا ، اِس بات پر زور دیتے ہوئے کہ جلگ کو دئیا سے ہمیشہ کے لئے ختم کو دییا چاہئے اور دنیا کی سب نوجیں دھورے دھورے ختم ہو جانی چاہیں' سوویت روس کی اِس بات کے لئے سراها کی گئی که اُس نے اپنی خوشی سے اپنی ساڑھ چھ لائھ نوچ کم کر دی ، پنچ شیل کو ایشیائی قوموں کی ایکٹا کا اُدھار بتایا گیا ، صاف ماف کیا گیا که دنیا کی جو قوم بھی جہاں بھی اُپنی آزادی کے لئے کوشھی کر رھی ہے ایشیا کی سی قومیں اس کے ساتھ ھیں ، باتھونگ کی سب قومیں اس کے ساتھ ھیں ، باتھونگ کی

. .

क्स कानकरेंस के कैसलों को सराहा गया जिसमें एशिया और अफरीका के उनतीस देशों की सरकायों के प्रतिनिध-कीं ने मिलकर परिया और अफरीका की एकता की व्यावाज कठाई थी. अगस्त सन् 1955 में जनीवा के अंदर सब देशों के साइसदानों की एक कानकरेंस हुई थी, जिसमें दुनिया अर के साइसदानों ने इस बात पर जार दिया था कि पेटम ं शक्ति और हाइडोजन शक्ति को इनसानों की हत्या के लिए इस्तेमाल न किया जावे बल्क दुनिया से रारीबी को मिटाने भीर द्वनिया भर की आम जनता के जीवन को अधिक खुराहाल बनाने के लिये काम में लाया जावे. दुनिया के साइसदानों के उस फैसले की तारीफ की गई. हिंदचीन में भीर फारमुसा में पिछमी क्रीमों की जबरवस्तियों की ं निन्दा की गई. जापान के फिर से पूरी तरह आजाद किए जाने पर जोर दिया गया. अरब देशों में योरपवालों की साचिशों और अफरीका में काले गोरे के भंद पर इस प्रकट · किया गया. बरीरह बरीरह.

सदर भीमती रामेरवरी नेहरू ने इस बात पर भी खोर दिया कि जनता की पूरी आजादी के लिए वहे बढ़े क्योग अंथों के साथ साथ छोटे उद्योग अंधों और घरेल दस्तकारियों को जिंदा रखना और तरक्की देना जरूरी है. बन्हों ने कहा कि क्रोमों क्रोमों के बीच की तिजारत वही होनी चाहिए जिसमें सब का भला हो, वह नहीं जिसमें वक देश दूसरे देश को चूसे या इससे बेजा फायदा इठाने की कोशिश करे.

कलचर यानी संस्कृति के सवाल पर अलग अलग कलवरों के साथ साथ एक बर्ल्ड कलवर यानी जग-संस्कृति को रूप देने पर काफी जोर दिया गया.

हैवराबाद कानफरेंस का शायद सब से सुन्दर प्रस्ताव समाजी प्रस्ताव था जिसमें औरतों और वचों के स्वास्थ की रक्षा, औरतों और मर्दों के बराबर के हक्तों, वेश्यावृत्ति के द्वनिया से मिटाए जाने और पशियाई देशों में समाजी मेल जोल को बढ़ाने पर जोर दिया गया. इस प्रस्ताव से माखम होता है कि पशियाई देशों की एकता की मांग केवले एक राजकाओ चीच ही नहीं है बल्कि सचमुच इनिया की एकता, दुनिया की खुशहाली और दुनिया की शांति में एक बहुत बड़ा हिस्सा लेने वाली है.

भारत से बाहर चीन, कोरिया और बीयतनाम जैसे देशों से जो सहातुमृति के संदेश आए थे उन्होंने कान्फरेन्स की स्पयोगिता और उसकी राक्ति को और अधिक बढ़ा दिया.

हम प्रियाई एकता की इस लहर का स्वागत करते हैं जीर कान्फरेन्स की सदर शीमती रामेश्वरी नेहर को जीर कान्फरेन्स में हिस्सा लेने वाले सब माइयों जीर वहनों को हृदय से बधाई देते हैं. 15-1-56

सुन्दर लाव

لى كالفرلس كي فيصارس كو سراها كيا جس مين أيميا أور ازید کے اُلٹیس دیکس کی سرکاروں کے پرتیندھیوں رُ سَل كُو أَيْهِهَا أَوْرِ أَفْرِيتُهُ كَى أَيْكُنَا كَى أُوْأَزُ أَنَّهَائِيّ نہی آکست سن 1955 میں جنہوا کے اندر سب سمیں کے شائدائیں کی ایک کانورٹس ہوئی تھے جس میں رنیا بھر کے سائندانوں نے اِس بات پر زور دیا تھا که ایٹم يهتر أور هاتدروجين شهتى كو أنسانون كي هتها كے لئے اِستعمال نه کیا جاوے بلکہ دنیا سے غریبی کو مقالے اور دنیا بھر کی عام جنتا کے جهوں کو آدھک خوشحال بنائے کے لئے کام میں لیا جارہ کیا کے سائلسدالس کے اُس فیصلے کی تعریف کی کئے ، هندچین میں اور نارموسا میں پیچیمی توموں کی زبردستیس کی تندا کی گئی ، جایان کے پور سے پوری طرح أزاد كين جالے ير زور ديا گيا ، عرب ديشوں ميں يورپ والوں کی سازشوں اور افزیقہ میں کالے گورے کے بھید پر دکھ پرکٹ کیا گها وقهره وقهره .

مدر شریبتی رامیشوری تهرو له اِس بات پر بھی زور دیا کہ جنتا کی پوری آزادی کے لئے بڑے بڑے آدیرگ دھندھوں کے ساته ساته چهول آديوک دهندهون اور گهريلو دستكاريون كو زنده رکہنا اور ترقی دینا ضروری ہے ، اُنہوں نے کہا که قوموں قوموں کے بیپے کی تجارت وہی ہونی چاہئے جس میں سب کا بھا ہو' وہ نہیں جس میں آیک دیمی دوسرے کو چوسے یا اُس سے بیجا عالیدا اُ اُٹھائے کی کوشش کرے .

کلچر یعنی سنسکرتی کے سوال پر انگ انگ کلچروں کے ساته ساته آیک وراد کلچر پر یعنی جگ سنسکرتی کو روپ دینے یر کافی زور دیا گها .

حيدرآباد كالنرئس كا شايد سب سے سندر يرستاؤ سماجي پرستاو تهاجس میں عورتوں اور بچوں کے سواستھ کی رکشا عورتوں ارر مردوں کے برابر کے حقوں ویشیارتی کے دنیا سے مقائے جانے اور ایشیائی دیشوں میں سماجی میل جول کے بڑھائے پرمؤور دیا گیا . اِس پرستاؤ سے معارم هوتا هے که ایشائی دیشوں کی ایمنا کی مانگ کیول ایک راجکاجی چیز هی نہیں ہے بلکه سے مع دنیا کی ایکنا دنیاکی خوشحالی اور دنیا کی شانتی میں ایک بیت ہوا حدہ لیلے والی ہے،

بهارت سے باہر چیرے کو ریا آور ریت نام جیسے دیشوں سے جر سہلنھوتی کے سلدیش آئے تھے اُنھوں نے کانفرقس کی اُپھوگٹا ارر اس کی شکتی کو اور بوعا دیا ۔

هم ایشیائی ایکنا کی اِس لہر کا سواگت کرتے ہیں اُور کانفرنس کی صدر شریبتی رامیشوری تهرو کو اور کانفرنس میں حصه لیان وآلے سب بھائیس اور بہلس کو هردئے سے بدھائی دیاتے

مستنزر ال

**15. 1. 5**6

### मानव एकता के राम प्रयत्न

दुनिया के सन नहें बढ़े धर्मों के कायम करने बाले और सब धर्मों की धार्मिक पुस्तकें इस बात पर जोर देती हैं कि इस घरती के सब आएमी एक कुनवा हैं, और इम सब को एक कुनवे की तरह ही मिल जुल कर प्रेम के साथ रहना चाहिये. इस मेल जोल को बढ़ाने का एक तरीका यह भी है कि जलग जलग देशों में जाना जाना बढ़े और जलग अलग देशों के लोग एक दूसरे की कलचर, एक दूसरे की कला, एक दूसरे के साहित्य और एक दूसरे के महापुरुषों की कदर करना सीखें.

इस उस्ला पर अमल करते हुए पिछली 25 नवन्वर को वीन के पेकिंग शहर में पिछ्छम के दो महापुरुषों की याद-गार बड़ी धूम धाम के साथ मनाई गई. इन दो महापुरुषों में से एक अमरीका का मशहूर सन्त, किव और फिलासफ़र बाल्ट व्हिटमैन था, जिसकी किताब "लीव्य आफ़ प्रास" (धास के पत्ते) दुनिया के साहित्य में ऊँची से ऊँची किताबों में गिनी जाती है. दूसरा महापुरुष स्पेन का मशहूर लेखक सरवेन्टीज था जिसका उपन्यास "डान कुइकजो" भी दुनिया के बड़े से बड़े प्रन्थों में गिना जाता है.

बास्ट व्हिटमैन की किताब "लीव्ज आफ प्रास" को अप हुए सी बरस और सरवेन्टीज की किताब "डान कुइकजो" को निकले हुए सादे तीन सी बरस हो चुके.

पेकिंग के उस जलसे में चीन की सब बड़ी से बड़ी सन्सथाओं के और जनता के तेरह सौ से ऊपर नुमाइन्दे मौजूद थे. मन्च के ऊपर बाल्ट व्हिटमैन और सरवेन्टीज दोनों की तसवीरें सजी हुई थीं. सब बोलने वालों ने मानव एकता के ऊपर ज़ार दिया और कहा कि यह दोनों महापुरुष केवल अमरीका और स्पेन के ही नहीं सारी दुनिया के महापुरुष थे. दोनों की किताबों में दुनिया भर की जनता के लिये शान्ति और सुख की लालसा प्रकट की गई है. दोनों सारी दुनिया के सब राष्ट्रों की आजादी चाहते थे. बालने बालों ने अमरीका और स्पेन की जनता और सब देशों की जनता के साथ अपना भाई चारा और प्रेम प्रकट किया. यह भी बताया गया कि इन दोनों महापुरुषों की अनेक कृतियों का अनुवाद चीनी में अप चुचा है. चीन के मशहूर नेता और कवि को मोजो ने वास्ट व्हिटमैन को "प्रशान्त महा-सागर की तरह महान्" बताया. वाल्ट व्हिटमैन जनता का कवि था. उसने जनता और खासकर मेहनत करने वाली जनता की भाषा में लिखा. इंसी तरह सरवेन्टीज ने अपने समय से उत्पर चठकर सैकड़ों बरख आगे के मानव समाज को चित्रित करने की कोशिश की.

अमरीका का एक मशहूर नीमो विद्वान आवरे पैन्के भी, जो ध्रम समय चीन का दौरा कर रहा था, उस जलसे

## مانو ایکتا کے شبھ پریتی

دانیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کے قایم کرنے والے اور سب مھرموں کی دھارمک پستمیں اِس بات پر زور دیتی ھیں که اِس دھرتی کے سب آدمی ایک کلبہ ھیں' اور هم سب کو ایک کلبہ کی طرح ھی مل جلک پریم کے ساتھ رھا چاہئے۔ اِس میل جول کو بڑھانے کا ایک طریقہ یہ بھی ہے کہ الگ الگ دیشوں کے الگ دیشوں کے لیگ دیسرے کی کلجر' ایک دوسرے کی کلجرہ ایک دوسرے کی کلجرہ کے مہاپرشوں کی قدر کرنا سیمھیں ،

اِس اُصول پر عمل کرتے هوئے پیچهای 25 نومبر کو چهن کے پیکنگ شہر میں پیچهم کے دو مہاورشوں کی یادگار ہڑی دهرم دهام کے ساته منائی گئی ، اِن دو مہاورشوں میں سے آیک امریکہ کا مشہور سنت کوی اور فلاسفر والت وهتمیں تھا جس کی کتاب 'الهور آف گراس'' (گهاس کے پتے ) دنیا کے ساھتیہ میں اُونچی سے اُونچی کتابیں میں گنی جاتی ہے ، دوسرا مہاپرش اِسهیں کا مشہور لینھک سروینٹیز تھا جس کا اُپنیاس مہاپرش اِسهیں کا مشہور لینھک سروینٹیز تھا جس کا اُپنیاس میں گنا جانا

والت وهدين كى كتاب "ليوز آف گراس" كو چهه هو أه سو برس اور سروينتيز كى كتاب "تان كوئكزو" كو تعلم هوئم ساره تين سو برس هوچكم .

یدینگ کے اُس جلسے میں چون کی سب بڑی سے بڑی سنستهاوں کے اور جنتا کے تیرہ سو سے آوپر تماندسے سوجود تھے۔ منیم کے آورہ والت وهتمین اور سروینٹز دونوں کی تصویریں سعجي هوئي تهين. سب بولنے والهن فيمانو إينكنا كے أوپر زور ديا اور کہا که یه دونوں سهاررش کهرل امریکه اور اِسههن کے هی ٹہیں ساری دنیا کے مہاہرش تھے ، دونوں کی کتابوں میں دنیا بھر کی جناا کے لئے شانتی اور سمع کی السا پرکٹ کی گئی ھے ۔ درنہں ساری دنیا کے سب راشتروں کی اُزادی چاہتے تھے ۔ ہولنے والیں نے امریکہ اور اِسپین کی جنتا اور سب دیشوں کے جنتا کے ساتھ اینا بھائی چارا اور دریم درکھ کیا ۔ یہ بھی بتایه گیا که اِن دودوں مهایرشیں کی انیک کرتیوں کا انواد چینی میں چہپ چکا ہے، چین کے مشہور نیتا اور کوی کوموجو نے والت وهتمدن کو "پرشانت مهاساگر کی طوح مهان" بتایا . والت وعتمین جنتا کا کوی تھا . أس لے جنتا أور خامكر محنت كرنے والى جنتا كى بهاشا ميں لكها ، إسى طرح سروينتيز نے اپنے سمے سے آویر آٹھکر سھکروں برس آگے کے ماتو سمانے کو چترت کرنے کی کوشش کی ۔

امریکه کا ایک مشہور قیکرو ودوان آبرے پینکے۔ بھی جو اس سے چین کا دورہ کو رہا تھا اُس جاسے में मीजूद था. उसने कहा कि बास्ट |विहटमैन के विवारों ने अमरीका से गुलामी की श्रधा को मिटाने में बहुत बड़ा हिस्सा लिया.

सरवेन्टीय के नाविल "डान कुश्कयो" का अनुवाद द्वनिया की घरसी से खपर भाषाओं में हो चुका है.

कई दूर दूर के देशों से खास खास लोगों के संदेश भी जलसे में पढ़े गए.

अमरीका के दो विद्वानों ने अमरीका से आकर इस जलसे में हिस्सा लेना चाहा था, पर अमरीकी सरकार से उन्हें पोसपोर्ट नहीं मिल सके.

चीन में दुनिया की इस कलचरी एकता को बढ़ाने के लिये एक और काम हो रहा है. पेकिंग लाइनेरी ने, जो चीन की सब से बड़ी लाइनेरी है, दुनिया के सत्तावन देशों के साथ पुस्तकों का बदलना शुरू कर दिया है. सन् 1955 के पहले में महीने के अन्दर उन्होंने पैंसठ हजार कितावें दूसरे देशों को मीं और उनके बदले में पचपन हजार कितावें दूसरे देशों की लाइनेरियों ने चीन भेजीं. इन लाइनेरियों में से बारइ अमरीका की है और ग्यारह इंगलैन्ड की. इनमें लन्दन का निटिश न्युजियम, न्युयार्क की स्टेट लाइने री, लन्दन और हारवर्ड यूनीवर्सिटियों की लाइनेरियां, फान्स की नैशनला लाइनेरी और पेरिस यूनीवर्सिटी की लाइनेरी शामिल हैं.

स्रोवियत रूस में भी इस तरह का बड़ा सुन्दर काम हो रहा है.

रूसी नेता श्री बुलगानिन ने 21 नवस्वर सन् 1955 को दिल्ली की पार्लिमेन्ट के सामने कहा था कि लगभग पाँच सी बरस हुए जब एक रूसी यात्री श्रफानासी निकी-तिन भारत आए थे. वह तीन बरस भारत में रहे और रूस लीटकर उन्होंने भारत पर अपनी यात्रा पर 'तीन समन्दर पार की यात्रा" नाम से एक बड़ी सुन्दर किताब लिखी.

सोबियत रूस की सेन्टरल रेडियो सरविसने अब अफ़ानासी निकीतिन की यात्रा पर एक सिनेमा फ़िल्म तैयार कर ली है. उस फ़िल्म के तैयार करने में कई हिन्दु-स्तानी कलाकारों से भी मदद ली गई है. यह फ़िल्म पन्द्रह दिसन्दर सन् 1955 का रूस में दिखाई जा चुकी है.

फ़िल्म सन् 1446 ईसवी में शुरू होती है. उसमें पहले उस समय के रूस के ख़ास ख़ास शहर दिखाए गए हैं. अफ़ानासी निकीतिन का अपने देश से पलना, उस जमाने का रूसी रहन सहन और रूसी गाने, वौलगा नदी के किनारें किनारें का सारा सफ़र, फिर दूसरे देशों के अन्दर से जाना, करते में तरह तरह की फठिनाइयों, अफ़ानासी निकीतिन का ईरान पहुँचना और यहां से एक छोटे से जहाज में बैठकर भारत जाना. میں موجود ہو ، اور لے کہا کہ والحد وطبقی کے وجاروں لے ارباد عد قامی کی پرتھا کو مکالے میں بہت بڑا حصہ لیا .

سرویالی کے قاول ' قان کونائزو'' کا الواد دنیا کی اسی سے اربر بیشائی میں موجکا ہے۔

کئی دور دور کے دیشوں سے خاص خاص لوگوں کے سندیش یمی جلسے موں پڑھے گئے ،

امریکت کے دو ودوالوں نے امریکت سے آکر اِس جلسے میں حصہ لینا چاہا تھا پر امریکی سرکار سے آنہیں پاسپورٹ فہیں مل سکے ہ

چین میں دانیا کی اِس کلمچری ایکتا کو بڑھائے کے لئے اور کام ھو رھا ہے، پیکنگ الابریری نے'جو چین کی سب سے بوی الابریری ہے' جو چین کی سب سے بوی الابریری ہے' دیا ہے۔ سن 1935 کے پہلے جہ مہینے کے اندر آنہوں نے پینستہ ھوار کتابیں دوسرے دیشوں کو بھیجیں اور اُن کے بدلے میں پہلاجیں مزار کتابیں دوسرے دیشوں کی الابریریس نے چین بھیجیں ، اِن الابریوں میں سے بارہ امریکہ کی ھیں اور کیارہ انگلنیڈ کی ، اِن میں اللدی کا بوقش میوزیم' نیویارک کی اِسٹیٹ الابریری اور ھارورڈ یونیورسٹیوں کی الابریریاں' اِسٹیٹ کی نیشنل الابریری اور پیرس یونیورسٹیوں کی الابریریاں' دانس کی نیشنل الابریری اور پیرس یونیورسٹی کی الابریریان شامل ھیں .

سوویت روس میں بھی اِس طرح کا ہوا سندر کام ھو ھا ھے .

روسی نیتا شری بلگائی نے 21 نومبر سن 1935 کو دلی اللہ پائیں نیتا شری بلگائی نے 21 نومبر سن 1935 کو دلی کی پارلیمیلٹ کے سامنے کہا تھا که لگ بھگ پانچ سو برس ہوئے جب ایک روسی نیس بھارت آئے تھے ، وہ نیس بوت کر آئیوں نے بھارت پر اور اپنی یاترا پر و'تھی سمندریار کی یاترا'' نام سے ایک بری سندریار کی یاترا'' نام سے ایک بری سندریار کی یاترا'' نام سے ایک بری سندریار کی باترا'' نام سے ایک بری باترا'' نام سے ایک بری باترا'' نام سے ایک بری باترا نام با

سوویت روس کی سینقرل ویڈیو سووس نے آپ آفاناسی نئیتن کی یانرآ پر آیک سنیما فلم تیار کرلی ہے ۔ اُس فلم کے تیار کرئے میں کئی ہندستانی نقکروں سے بھی مدد لی گئی ہے ، یہ فلم 15 دسمبر سن 19 کو روس میں دکھائی جا چکی ہے ۔

نغم سن 1446 میں شروع ہوتی ہے ۔ اُس میں پہلے اُس
سے کے روس کے خاص خاص شہر دکیائے گئے ہیں ۔ اُنانسی
نیکٹن کا اپنے دیھر سے چلنا' اُس زمانے کا روسی رہن سہن اور
رسی گائے' وواکا ندی کے کنارے کنارے کا سارا سفر' پھر دوسرے
دیشرں کے اندر سے جانا' راستے میں طرح طرح کی تقینائیاں'
اداناسی فکیٹن کا ایران پہرتچنا اور رہاں سے ایک چھوٹے سے
جہاز میں چیٹے کو بھارت آنا ۔

Alexander Const.

इसके बाद क्षेत्राची सदी के भारत का उसमें आधा भाका चित्र है, भारत के उस समय के अनेक नगरों और गावों का दरव दिखाया गया है, उस जामाने का भारतीय जीवन, रूसी बात्री के साथ भारत वासियों का प्रेम, भारत का गाना बजाना, यह सब चीजों उस फिल्म में बढ़ी सचाई और सुन्दरता के साथ दिखाई गई है, अनेक जगह अफानासी निकीतिन की भारत वासियों से बात चीत होती है.

बाख़ीर में "हिन्दी रूसी भाई भाई" से शा ख़तम होता

है हस में लोगों को यह फिल्म बहुत पसन्द आई.

मानव एकता को साक्षात करने और दुनिया में प्रेम बढ़ाने के इस तरह के प्रयत्न बहुत ही सराहनीय हैं. हम हनका हृदय' से स्वागत करते हैं और चाहते हैं कि ऐसे विक्त सब देशों में खूब बढ़ें!

### बग़दाद का सममोता भीर पाकिस्तान

इराक की राजधानी बरावाद में टरकी, इराक, ईरान, गिक्सान और इन्गलैंड के बीच पिछले दिनों एक कीजी सममौता हुआ है जिसका राजकाजी दुनिया में काफी होर मच चुका है. 21 नवम्बर सन् 1950 को बरादाद ही में इन पांचों देशों के जुमाइन्दों की एक बैठक हुई थी. कहा जाता है अमरीका अभी इस सममौते में शामिल नहीं है. तेकिन यूरप के अखबारों में बराबर निकलता रहा है कि ममरीका इसमें शामिल होगा, और 21 नवम्बर की बैठक में अमरीकी सरकार के जुमाइन्दे "आवजरवर्स" यानी दर्शक ही हैसियत से मौजद थे.

भगरीका के मराहूर अखबार "न्युयार्क टाइम्स" ने इस तीजी सममौते की बाबत साफ़ लिखा है कि—"यह उममौता हमारी (अमरीका की) कोशिशों का नतीजा है भीर सोवियत कस और मिस्न दोनों के खिलाफ किया गया ?" हक्षीकत यह है कि यह सममौता उसी सिलसिले की कि बीच की कड़ी है जिसकी दो सिरे की कड़ियां पच्छिम में 'नाटो' और प्रव में 'सीटो' हैं.

यह भी ध्यान देने की बात है कि जबकि टरकी, इराक़, रान और पाकिस्तान चारों परिशयाई देश हैं, जिनकी उद्धदें एक दूसरे से मिलती हैं या एक दूसरे के पास हैं, रिगलैंड और अमरीका दोनों परिशया से बाहर के देश और उससे हजारों मील की दूरी पर हैं.

दुनिया के अखबारों और राजकाजी नेताओं के बयानों रं यह बात भी साफ आ चुकी है कि इस समसीवे की मसली ग्रस्थ यूर्प के इन देशों की सन्ता को पश्चिम पशिया اُس کے بعد پندرھویں صدی کے بھارت کا اُس میں کا میں کانید اُچھا چتر ہے، بھارت کے اُس سے کے اُنیک ناکروں اور کاؤں کا درشیہ دکھایا گیا ہے ، اُس زمانے کا بھارت جمیوں' درسی یاتری کے سات بھارت واسیوں کا پریم' بھارت کا کانا بجانا' یہ سب چھڑیں اُس نام میں بڑی سچائی اور سندرتا کے سانو دکھائی گئیں ھیں ، انیک جکھه اناناسی نکیتن کی بھارت واسیوں سے بات چھت ھوئی ہے ،

آخير ميں ''هلدى روسى بهائى بهائي ' سه شوختم هوتا هے ، روس مهن لوگوں كو يه فلم بهت يسلد آئے .

مانو ایکنا کو ساکشات کرنے اور دنیا میں پریم ہوھانے کے اِس طرح کے پریتن بہت عی سراھنیہ ھیں ، ھم اِن کا ھردئے سے سواکت کرتے ھیں اور چاھتے ھیں که ایسے پریتن سب دیشوں میں خوب بوھیں ا

- سندر لال

21, 12, 55

## بغدان کا سیجهوته اور پاکستان

عراق کی اجدهائی بیداد میں ڈرکی عراق ایران پاکستان اور اِنگلینڈ کے بیچ پچیلے دنوں ایک نوجی سمجھوتہ ہوا ہے جس کا راجکاجی دنیا میں کانی شور میچ چکا ہے ۔ 21 نومبر سی 1955 کو بنداد ھی میں اِن پائنچوں دیشوں کے نمائندوں کی ایک بیٹھک ہوئی تھی ۔ کہا جاتا ہے اور بکت اُبھی اِس سمجھوئے میں شامل نہیں ہے ، لیکن یورپ کے اخباروں میں ہرام نکلکا رہا ہے کہ اور بکہ اِس میں شامل ہوگا اور 21 نومبو کی بیٹھک میں امریکی سرکار کے نمائندے ''آبورووس'' یعنی درشک کی حیثیت سے موجود تھے ،

أمريكة كے مشہور أخبار "نيويارك تائس" نے اِس نوجى سنجهورت كى بابت صاف لنها هے كهـــ"ية سنجهورت هارى ( أمريكة كى ) كوششوں كا نتيجة هے أور سوويت روس أور مصر دوئوں كے خلاف كيا هے ،" حقيقت يه هے كه يه سنجهورته أسى سلسلے كى أيك بيچ كى كرى هے جس كى دوسوے كى كرياں پنجهم ميں "نائو" اور پورب ميں اُسياد" هيں .

یہ بھی دھیاں دیلےکی بات ہےکہ جبکہ ڈرکی' عراق'ایران اور پاکستان چاروں ایشیائی دیھی ھیں' جن کی سرحدیں ایک دوسرے سے ملتی ھیں' اِلکلیلڈ لور امریکہ دونوں ایشیا سے باھر کے دیھی اور اُس سے ھزاروں میل کی دوروں پر ھیں .

دنیا کے اخباری اور راجاجی نیتاؤں کے بیانوں میں یہ بات بھی صاف آچکی کے کہ اِس سنجھوتے کی اُسا کو پنجھم ایھیا املی غرض یرپ کے اُن دیشوں کی ساتا کو پنجھم ایھیا

में फिर से पक्का करना है जिनका असर उस इलाके में हाल में कुछ कम होने लगा था. असल रारण यह है कि परिाया के इन देशों के कुद्रती खजानों, खासकर उनके कीमती तेल के कुओं, पर कब्जा रखा जाने और उस कब्जे को मजबूत किया जाने.

क़ुदरती तौर पर इसके लिये यह भी जरूरी है कि एशिया के उस, इलाक़े में आजादी की जो तहरीकें जन्म ले रही हैं उन्हें किसी तरह द्वाकर रखा जावे.

पश्चिम एशिया के जो देश बरादाद के उस सममौते के खिलाफ आवाज उठाते हैं उनके खिलाफ माली और तिआरती बायकाट की धमिकयां दी जाती हैं या उनकी सरकारों को या उनके राजकाजी नेताओं को उलट देने या उखाद फेंकने की साजिशें होने लगती हैं.

यूरप के कोई कोई अखबार साफ कह रहे हैं कि एशिया के उस हिस्से में जल्दी और खुले तौर पर दखल दिया जावे. "लन्दन टाइम्स" ने लिखा है कि—"यू. एन. ओ. की कीजें पश्छिम एशिया में भेजी जावें और वहां रखी जावें." इन्गलैन्ड के अखबार "डेली मेल" ने लिखा कि—"यह एलान हो जाना चाहिये कि इन्गलैन्ड नहर सुएक पर फिर से कड़का करेगा और कम से कम सन् 1975 तक वहां रहेगा."

दुनिया श्रभी इस चीज को भी भूली नहीं है कि केवल अरब देशों को मुसीबत में डालने और उन्हें क़ाबू में रखने के लिये ही यहूदियों को दुनिया भर के मुस्कों से ला लाकर और जमा करके फिलस्तीन में 'इसराईल' नाम का एक नया मुस्क बसाया गया था, और आज उन्हीं अरबों को बरबाद करने के लिये अरब-इसराईल मगड़े से पूरा पूरा फायदा उठाया जा रहा है, और इस मगड़े के बहाने इन मुस्कों के अन्द्रुक्ती मामलों में जबरदस्ती दखल दिया जा रहा है.

यह भी ध्यान रखने की बात है कि अरबों और यह दियों में सरहद की बाबत जो कुछ भगड़े हुए उनसे पहले अगरेज अफ़सरों के मातहत कौज ने जाकर जबरदस्ती बुरैनी के नख़िलस्तान पर क़ब्जा कर लिया था. इस नख़िल-स्तान पर क़ब्जे की भी दो ही वजह बताई जाती हैं, एक यह कि वहां भी तेल के बड़े बड़े कुएं हैं जिन पर अंगरेज क़ब्जा करना चाहते हैं और दूसरे यह कि उस हिस्से से सऊदी अरब को दबाकर रखा जा सकता है.

अरब देशों की जनता इन चीजों को खूब अच्छी तरह समम रही है. इसीलिये वहां के अलग अलग विचारों और अलग अलग पार्टियों के लोग भी बरादाद के फीजी सममौते के खिलाफ हैं. میں پھر میں کا گرفا کے بھی کا اثر اس طاقہ میں حال میں کچ کم موٹ کا آن دیشوں کے دروں کا اس عاقہ میں کے آن دیشوں کے تدریق کھوانوں خاصار ان کے قیمتی تیل کے کاؤں پر قبضہ رکیا جارے اور اس قبلے کو مضبوط کیا جارے ،

تدرتی طور پر اِس کے لئے یہ بھی ضروری ہے کہ ایشیا کے اُس علانے میں آزادی کی جو تحریکیں جنم لے رعی ھیں آئیں کسی طرح دیاکر رکھا جارے ۔

بچم ایشیا کے جو دیفی بنداد کے اُس سمجھوتے کے خلاف آواز اُٹھاتے ھیں اُن کے خلاف مالی اور تجارتی بائیکات کی دمکیاں دی جاتی ھیںیا اُن کی سرکاروں کو یا اُن کے راجکاجی نیتاؤں کو اُلے دیا۔ یا اُٹھار پھینکانے کی سازشیں ھوئے لگتی ھیں ،

دنیا آبھی اِس چیز کو بھی بھوای تبھی ہے کہ کھول عرب دیشوں کو مصیبت میں ڈاللہ اور انھیں قابو میں رکھنے کے اللہ یہی یہودیوں کو دنیا بھو کے ملکوں سے لا لاکر اور جمع کرکے نسطین میں 'اسرائیل' نام کا ایک نیا ملت بسایا گیا تھا' اور آج آنھیں عربوں کو برباد کرنے کے لئے عرب اسرائیل جھازے سے پورا پورا فاندہ اٹھایا جا رہا ہے اور اِس جھاڑے کے بہانے ان ملکوں کے اندرونی معاملوں میں زبردستی دخل دیا جا رہا ہے۔

یہ بھی دہیاں رکھنے کی بات ہے کہ عربوں اور یہودیوں میں سرحد کی بابت جو کچھ جھکڑے ہوئے آن سے پہلے انکریز انسروں کے مانحت نوچ نے جائر زبردستی بورینی کے تخلستان پر قبقہ کر لیا تھا ۔ اِس تخلستان پر قبقہ کی بھی دو ھی وجہ بتائی جاتی ھیں ایک یہ کہ وہاں بھی تیل کے بڑے بڑے کنوئیں میں جس پر انگریز قبقہ کرنا چاہتے تھیں اور دوسرے یہ کہ اس حصے سے سعودی عرب کو دہاکر رکھا جاسکتا ہے ۔

عرب دیھیں کی جنتا اِن چیزوں کو خوب اُچی طرح سبج وھی ھے اُسی لئے وھاں کے الگ انگ وچاروں اور اگ انگ پارٹیوں کے لوگ بھی بنداد کے نوجی سمجھوتے کے خات ھیں .

मिल इस सर्द की की जो गुरुवन्दी के सकत विकाक है. वहां के बड़े क्यीर जमाल अब्दुल नासिर ने हाल में कहा है:—'हमारे इस परिायाई इलाक़े के मुल्कों की रक्षा केवल हमसे सम्बन्ध रखती है. यह हमारा काम है. इस इस मामले में किसी बाहर वाले को अपना रक्षक बनाना मनजूर नहीं कर सकते. हम अपनी ही की जों की मदद से अपनी आजादी की रक्षा कर सकते हैं और करेंगे.

मिस्न के इस्टेट मिनिस्टर अनवर सआदत ने वहां के असवार "अस जमहूरिया" में लिखा है कि—"वरादाद का सममीता उन मुल्कों की जनता की मर्जी के ख़िलाक किया गया है और इसीलिये सममीता करने वाले अपने अपने यहां की जनता से डरते हैं."

एक और अखबार "अल अखबार" लिखता है कि—
"पहले 'मिडिल इंस्टर्न कमान्ड' के नाम से एक और
तजवीज की गई थी जिसका मतलब यह था कि यूरप के
मुक्तों की कौजें इस बहाने पशिया के इस हिस्से में रसी
जावें. उस समय सब अरब मुक्कों ने जोरों के साथ इसका
विरोध किया. अब जा ब दाद में सममीता हुआ है वह एक
दूसरे ढंग से उसी पुरानी तजवीज में किर से जान डालने
की कोशिश है. बरादाद का सममीता 'किसी मुक्क की रक्षा'
के लिये नहीं किया जा रहा है बिक्क पशिया के इस हिस्से
से विदेशी लोग जो कायदा उठाना चाहते हैं उसकी रक्षा
के लिये किया जा रहा है."

सीरिया के बहुत से बड़े बड़े लोगों ने जिनमें जनता के राजकाजी नेता, वहां की पालीमेंट के मेम्बर, प्रोफेसर और मजहबी रहनुमा, सब शामिल थे, हाल में एक बयान निकाला था जिसमें कहा गया है कि—"हमारे यहां की जनता बरादाद के सममौते को एक इस तरह की काजी गुट-बन्दी सममती है जिस की रारज दूसरों पर हमला करना है. यह सममौता जनीवा की इसिपरिट के जिलाफ है." सीरिया के खखवारों में भी इसी तरह के लेख निकल रहे हैं.

लबनान की सरकार ने भी बरादाद के सममौते का विरोध किया है. वहां के बढ़े बजीर रशीद केरामी ने कहा है कि उनकी सरकार तय कर चुकी है कि वह किसी ऐसे सममौते में शामिल नहीं होगी जिससे घरब दुनिया के उकड़े हो जाँय. लंबनान के घजबार "घल बेरक" ने लिखा है—'हम उनकी फीजी गुट बन्दियों में शामिल नहीं होंगे, क्योंकि हम घपनी आजादी कायम रखना चाहते हैं और अंगरेजों, तुरकों या पाकिस्तानियों को कोई इसका मीक़ा देना नहीं चाहते कि वह हमारे यहां के अन्दरूनी मामलों में कोई दखल दें. सन् 1950 में अंग्रेजों और इराक के बीच एक मुलहनामा हुआ था जिसके घानुसार अंग्रेज जबर-दस्ती इराक के इस्टी यानी बली बन बैठे थे. बरादाद के फीजी

الله مار اس طرح کی فہجی گاگ دائی کے سطاف کات اللہ ، وہاں کے بڑے وزیر جمال عبدال ناصر نے حال میں کیا ہے۔ وہیں کی رکھا کھول ہے ہستاندہ رکھتی ہے ، یہ هداراً کام ہے ، هم اِس معاملے میں کسی باعر والے کو اپنا رکشک بنانا منظور فہیں کرسکتے ، هم اینی آزادی کی رکھا کرسکتے اینی آزادی کی رکھا کرسکتے میں اور کرینکے ،"

ایک اور اخبار "ال اخبار" لکھتا ہے کہ ""پہلے "مدّل ایسٹرن کائد" کے نام سے ایک اور تجویز کی گئی تھی جس کا مطلب یہ تھا کہ یورپ کے ملکوں کی فوجیس اِس بہانے ایشیا کے اِس حصے میں رکھی جاریں ، اُس سدے سب عرب ملکوں لے زوروں کے ساتھ اِس کا ورودھ کیا ، اب جو بغداد میں سنجھوتھ ہوا ہے وہ ایک دوسرے ڈھنگ سے اُسی پرانی تجویز میں پھر سے جان ڈالنے کی کوشش ہے ، بغداد کا سنجھوتہ 'کسی ملک سے جان ڈالنے کی کوشش ہے ، بغداد کا سنجھوتہ 'کسی ملک سے ودیشی لوگ جو فایدہ اُٹھانا چاھتے ھیں اُس کی رکشا کے اُلے کیا جا رہا ہے ۔"

سهریا کے بہت سے بڑے لوگرں نے جن میں جنتا کے راجکاجی نیتا، وہاں کی پارلیمات کے میمبر' پرونیسر اور مذھبی رھنیا' سب شامل تھ' حال میں ایک بیان نکالا تھا جس میں کہا گیا ہے کہ—''ھہارے یہاں کی جنتا پنداد کے سمجھورتے کو ایک اِس طرح کی نوجی گٹ بندی 'سمجھتی ہے جس کی غرض دوسروں پر حملہ کرنا ہے ، یہ سمجھوتہ جلیوا کی اِسھرت کے خلف ہے'' سیریا کے اُخباروں میں بھی اِسی طرح کے لیکھ نکل رہے ھیں ،

لبنان کی سرکار نے بھی بنداد کے سمجھوتے کا ورودھ کیا ہے ۔ وہاں کے بڑے وزیر رشدد کیرامی نے کہا ہے کہ اُن کی سرکار طلے کو چکی ہے کہ وہ کسی ایسے سمجھوتے میں شامل تہیں ہوگی جس سے عرب دنیا کے تکڑے ہو جائیں ۔ لبنان کے اخبار البیرق'' نے اکھا ہے۔۔''ہم اُن کی فوجی گٹ بندیوں میں شامل نہیں ہونگے' کیونکہ ہم اُپنی آزادی قایم رکھنا چاہتے ہیں اہر انگریزوں' ترکوں یا پاکستانیوں کو کوئی اِس کا موقع دینا نہیں چاہتے کہ وہ ہمارے یہاں کے اندورتی معاملوں میں کوئی دیش دیں ۔ سن 1930 میں انگریزوں اور عراق کے بنج دیش دیش صحابات میں انگریزوں اور عراق کے بنج ایک صلحابات ہوا تھا جس کے انوسار انگریز وبردستی عواق کے فرجی عراق کے بنج عراق کے بنج

समगीर में जब से इंगर्सेंड शामिल हो गया है जरावाद के समगीर का मी बही मरा ताब है तो सन् 1930 के अंग्रेज-इराक्ती सुलहनाने का था. आज बरावाद के समगीरों के एक अधिक होने के नारों तकनीकी और कीजी मदद देने के बहाने इंगरीन्ड इराक में घुस रहा है. लबनान कभी भी दूसरी हुइ बरों का पुछल्ला नहीं बनेगा."

टरकी के प्रेजीखेन्ट बयार के साथ वहां के कुछ नेता नवस्थर के छुक में जार्डन गए थे. उन्होंने जार्डन की सरकार को यह सममाना चाहा कि वह भी बरावाद के सममीते में सामिल हो जावे. लेकिन अरब अख़वारों में जो कुछ निकलवा रहा है उससे मालूम होता है कि टरकी के नेताओं को वहां भी कामयाबी नहीं मिली. वहां के अखबार "अल अकरम" ने लिखा था कि टर्की के नेता जहां जहां जाते थे बहां बहाँ उनके सामने बढ़े बढ़े प्रवर्शन होते थे जिनमें इस तरह के नारे लगाए जाते थे—"टर्की-इराक्षी सममीता सतम करो." 10 नवस्बर को रायटर अख़बार एजन्सी ने बहां से कुबर दी कि जार्डन के नेता सईद अल मुफ्ती और वहाँ के बूसरे नेताओं ने यह कहा कि जार्डन सब गुट बन्दियों से अलग रहना चाहता है और इसीलिये बग़दाद के सममीते में शामिल नहीं हो सकता.

बाहिर है कि पश्चिम पशिया के देशों के बारे में 'श्रमेंन्ड और अमरीका की पालिसी दुनिया के अमन के लिये और खुद उन देशों की आजादी और बहुन्दी के लिये बहुत ही खतरनाक है. अरब मुस्क और अरब क्रीमें अपनी आजादी की कदर करती हैं और दुनिया की सब क्रीमों के साथ अमन से रहना चाहती हैं. बहु अपने इतने बड़े पड़ोसी इस के साथ भी अमन से रहना चाहती हैं. सोवियत इस की लगभग सब पशियाई जमहूरियतों की सरहर्षे इन देशों के साथ मिली हुई हैं. इसीलिये अमेज और अमरीकी उनके साथ इस तरह के सममौते करना चाहते हैं. अरब इसे खुब सममते हैं.

इमारी अपनी निगाह इस समय सबसे अधिक अपने पढ़ोसी पाकिस्तान की तरफ़ है. हम पाकिस्तान को हमेशा के लिये आजाद और , खुराहाल देखना चाहते हैं. हमें अगर दुनिया से मुह्ब्बत है—और है—तो सब से अधिक मुह्ब्बत हमें पाकिस्तान और अपने पाकिस्तानी माइयों से है. लेकिन इस मुह्ब्बत ही हे नाते हमें यह हक है और हमारा यह फूर्ज भी है कि हम जहां ख़तरा देखें वहां जिस से मुह्ब्बत है इसे आगाह कर दें. हम कम्युनिस्ट नहीं हैं. पर हमें चीन और इस हो आए हैं. हम कई-कई चक्कर यूरप के भी लगा चुके हैं. इसमें जराभी शक नहीं हो सकता कि बरादाद के सममीते में पाकिस्तान का रामित होना, और किसी के लिये इन्ह भी असर रखे या न रखे. पाकिस्तान معجوق میں جب سے انگھلق شامل ہوگیا ہے بنداد کے سنجورتے کا رھی مطلب ہے جو سن 1930 کے انگریز عرائی صلحنامیا تھا۔ آج مینوان کے سنجھوتے کے ایک فریق ہونے کے تاتے تعلیمی اور نوجی مدد دینے کے بہائے انگلینڈ عراق میں گیس رہا ہے، لبنان کبھی بھی دوسری حکومترں کا بچھلا نہیں بنیکا ۔''

قرکی کے پریزیڈیئٹ بیار کے سانا وہاں کے کچہا نیتا نرمبرکے شروع میں جارتیں گئے تھے ۔ انہوں نے جارتی کی سرکار کو یہ سبجھانا چاہا کہ وہ بھی بنداد کے سجھورتے میں شامل ہو جارہ ، لیکی عرب اخباروں میں جو کچھ نکلتا رہا ہے اس سملوم ہوتا ہے کہ ڈرکی کے نیتاؤں کو وہاں بھی کامیابی نہیں ملی وہاں کے اخبار "الاکرم" نے لکھا تھا کہ ڈرکی کے نیتا جہاں جہاں جاتے تھے وہاں وہاں اُن کے سمبھوت ہے۔ پردرشن ہوتے تھے جن میں اِس طرح کے نمرے لگا ہے جاتے تھے—"ثرکی عراقی سمجھوتہ میں اِس طرح کے نمور کو رائٹر اخبار ایجنسی نے وہاں سے خبر دی کہ جارتی سب کو رائٹر اخبار ایجنسی نے وہاں سے خبر دی کہ جارتی سب گئ بدیوں سے الگ رہنا چاہتا ہے اور اس نے دوسرے نیتاؤں نے یہ کہا کہ جارتی سب گئ بدیوں سے الگ رہنا چاہتا ہے اور اس نے بدارتی سب گئ بدیوں سے الگ رہنا چاہتا ہے اور اس نے بدارتی سب گئ بدیوں سے الگ رہنا چاہتا ہے اور اسی نئے بنداد کے سمجھوتے میں شامل ڈیوں ہو سکتا ۔

ظاهر ہے کہ پچھم آیشیا کے دیشوں کے ہارے میں آنکلیئت اور امریکہ کی پالیسی دنیا کے اس کے لئے اور خود آن دیشرں کی آزادی اور بہبودی کے لئے بہت ھی خطرناک ہے، عوب ملک اور عرب قومیں اپنی آزادی کی قدر کرتی ھیں اور دنیا کی سب قوموں کے ساتھ امن سے رھنا چاھتی ھیں، وہ اپنے آتیے بروس کی لگ بھگ سب آیشیائی جمہوریتوں کی سرحدیں این روس کی لگ بھگ سب آیشیائی جمہوریتوں کی سرحدیں این دیشوں کے ساتھ ملی ھوئی ھیں، اِسی لئے آنکریز اور آمریکی آن دیشوں کے ساتھ اِس طرح کے سمجھوتے کرنا چاھتے ھیں، عرب اِسے خوب سمجھوتے کرنا چاھتے ھیں، عرب اِسے خوب سمجھوتے کرنا چاھتے ھیں، عرب اِسے خوب سمجھوتے کرنا چاھتے ھیں، عرب اِسے خوب

هماری اپنی نگاه اِس سے سب سے ادھک اپنے پڑوسی
پاکستان کی طرف ہے ، هم پاکستان کو همیشه کے لئے آزاد اور
خوشتمال دیکھنا چاہتے هیں ، همیں اگر دنیا سے محصبت ہے
ساور ہے۔۔۔ تو سب سے ادھک محصبت همیں پاکستان اور اپنے
پاکستانی بھائیوں سے ہے ، لیکن اُس محصبت هی کے ناتے عمیں
یہ حتی ہے اور همارا یہ فرض بھی ہے کہ هم جہاں خطرہ دیکھیں
وہاں جس سے محصبت ہے آسے آگاہ کر دیں ، هم کمیونسٹ
نہیں هیں ، پر هم چین اور روس هو آئے هیں ، هم کئی
نہیں هیں ، پر هم چین اور روس هو آئے هیں ، هم کئی
نہیں هو سکتا که بغداد کے معجبوتے میں پاکستان کا شامل،
نہیں هو سکتا که بغداد کے معجبوتے میں پاکستان کا شامل،

**TOTO 165** 

( 105 )

76 ani

जीर वहां के लोगों के लिये कियो गर्य कीर विकी कानी में भी मुकीय कहीं हो सकता.

भाठ साम पहले के मिले जुले हिन्दुस्तान को जिन गुनाहों के बद्दी में डेड सी बरस से कपर रीरों की गुलामी में रहता पड़ा बनमें से एक बड़ा गुनाह यह वा कि हमारी हिन्दू, ग्रुप्रशिम और सिस यानी हिन्दुस्तानी कीजों ने रीरों के तनस्राहदार चनकर दूसरे मुल्कों में जाकर वहां के हेगनाह लोगों पर गोलियां बरसाई और रौरों को उनकी इस नापाक कोशिशों में मदद दी कि वह दूसरों को अपना गुलाम बना सकें. इस सब को इस गुनाह से या इसके इमकान से भी अब कोसों दूर रहना चाहिये. तब से अब तक दुनिया बहुत आगे बढ़ चुकी है और बढ़ती जा रही है. हमारा अपना अक्रीदा है कि यह जो कुछ हो रहा है अस्लाह की मर्जी के मुताबिक है. इन नाजुक हालात में हर मुल्क, हर क्रीम और इंदर आदमी का कर्ज है कि दुनिया के हालात को ठीक ठीक सममने की कोशिश करे और कम से कम यह कि जब कोई क्रदम डठावे तो खुद अपने हाथ पैर बचाकर डठावे.

12-12-'55

- सुन्द्रलाल

### नए चीन में जमीन की व्यवस्था

नया चीन आम तौर पर एक कम्युनिस्ट देश माना जाता है. कम्युनिष्म एक दरजे तक नए चीन का आदर्श भी है. लेकिन चीन के नेताओं के अनुसार चीन अभी कम्युनिष्म से काफी दूर है. उनका कहना है कि कम्युनिष्म यानी साम्यवाद की पहली सीढ़ी सांशलहष्म यानी समाज-वाद है और नया चीन अभी बीस या तीस वरस के बाद समाजवाद के आदर्श तक पहुँच सकेगा. उसके बाद समाज-वाद से साम्यवाद तक पहुँचने में कितना समय लगेगा यह आगे की बात है.

इस बारे में चीन की आजकल की स्थित का सासा अच्छा चित्र हमें वहां की जमीन की व्यवस्था से मिल सकता है. नए चीन में खेती की अधिकतर जमीन की मालिक न सरकार है और न समाज, और न वहां कम्यु-निस्ट दक्ष की मिलकीयत है. वहां अधिकतर जमीन के मालिक वही अलग अलग किसान हैं जो अपनी-अपनी जमीन में खेती करते हैं. विनोधा जी कहा करते हैं—"सबै भूमि ग्रेपाल की." संस्कृत की एक कहावत है:—"किसान ही जमीन का मालिक है." ग्रुहम्मद साहब की एक हदीस है:—"सारी जमीन अस्लाह की जमीन है, और सब मक्क-ज्ञ अस्लाह के बन्दे हैं: जो कोई किसी पड़ी हुई जमीन को जोतका जीर कोला है उसी का इस जमीन पर सबसे آ گور نہاں کے لوگوں کے اگے گئی طرح گور عمنی معلی بیٹی ہیں۔ معدد قنیوں عدر سکتا ۔

الله سال پہلے کے ملے جلے هند، بان کو جن گنامین کے بدلے میں دھیا پرا آن دیوہ سو برس سے آرپر غیررں کی غلامی میں رہنا پرا آن میں فید ایک برا گناہ یہ نیا کہ هداری هندو مسلم آور سکھ یعنی میں فید ایک برا گناہ یہ نیا کہ هداری هندو مسلم آور سکھ یعنی هلاستانی فرجوں نے قبروں کو جا گر رہاں کے پے گناہ اوگوں پر گوایاں برسانیں آور غیروں کو آن کی اِس تاپاک کوششوں میں مدد دہی کہ وہ دوسروں کو اینا ظلم بنا سکیں۔ هم سب کو اِس گناہ سے یا اِس کے اِمکان سے اینا ملک دنیا بہت اینا کی اور برهتی جا رہی ہے ، هدارا اُپنا عقیدہ ہے کہ یہ جو کچھ ہو رہا ہے الله کی مرضی کے مطابق ہے ، اُن قارک کیات میں هر ماک قبر اور ہر قوم اور ہر آدمی کا فرض ہے کہ دنیا کے حالت کو تھیک قبیک سنجھنے کی کوشش کرے اور کم سے کم کافت کو تھیک قبیک سنجھنے کی کوشش کرے اور کم سے کم کیات کو تھیک قبیک سنجھنے کی کوشش کرے اور کم سے کم کیات کو تھیک قبیک سنجھنے کی کوشش کرے اور کم سے کم گناہ ہے۔

---سادر لال

12. 12. 55

## نئے چین میں زمین کی ویوستھا

نیا چین عام طور پر ایک کیونسٹ دیش مانا جاتا ہے۔

نیونوم ایک درچے تک نئے چین کا آدرش بھی ہے ۔ لیکن چین کے نیتاؤں کے آنوسار چین اُبھی کیونوم سے کانی دور ہے ۔

اُن کا کہنا ہے کہ کیونوم یعنی سامیمواد کی پہلی سوتھی سوشقی سمایمواد کی پہلی سیوسی سوشقی بیس یا نیس سوشلوم یعنی سمایہواد کے آدرش تک پہرنچ سکیگا ۔ اُس کے بعد سمایہواد سے سامیمواد تک پہرنچنے میں کتنا سے لگھا یہ اگھ کے بات ہے ۔

اِس بارے میں چین کی آجکل کی اِستیتی کا خاصہ اچھا چتر همیں وهاں کی زمین کی ویوستیا سے مل سکتا ہے۔ اُٹھے چین میں کییٹی کی ادھکتر زمین کی مالک ته سرکار ہے اور نه وهاں کمیونسٹ تھنگ کی ملکیت ہے وهل ادھکتر زمین کے مالک وهی الگ الگ کسان هیں جو اپنی اپنی زمین میں کییٹی کرتے هیں ، وڈوہلجی کیا کرتے هیں ، وڈوہلجی کیا کرتے هیں ، وڈوہلجی کیا کرتے هیں ۔ "کسان هی زمین کا مالک ہے ۔" محصد صاحب کی ایک حدیث ہے : ساسکرت کی زمین ہے اور ہے اور ہوتا ہے اسب مطلبق الله کے بندے هیں : جو کوئی کسی پڑی هوئی رسی سے مطلبق الله کے بندے هیں : جو کوئی کسی پڑی هوئی رسی سے رسی مطلبق الله کے بندے هیں : جو کوئی کسی پڑی هوئی

**ज्यारी** 'हिं

( 100 )

نروي 156

बारका इस है, किसी दूसरे को इक नहीं है कि वसे वस बार्मान से निकाले." (अनुदाकर, तिरमित्री, मालिक) बाराकका के बीन की हालत लगभग इन्हीं कहावतों के बारुसार है.

क्षेकिन' नए चीन के नेता इस हालत से निकल कर थीर-थीरे. रेक भाल कर. और संभल-संभल कर, समाज-बाद की तरफ क़दम बढ़ाते जा रहे हैं. कोशिश यह हो रही है कि अलग-अलग गाँव या अलग अलग इलाकों के थोड़े थोड़े किसान मिलकर अपनी-अपनी विमीनों और खेती के अपने-अपने दूसरे साधनों को मिलाकर कोजापरेटिव की शकल में यानी एक दूसरे के सहयोग से बोती का सारा काम करें और इस तरह देश की पैदाबार को भी बढ़ावें और खद भी अधिक कमा सकें. लेकिन यह चीज किसी के लिये लाजमी नहीं है. किसी के साथ किसी तरह की जबरदस्ती नहीं. जो किसान बाहें इस तरह मिलकर काम करें और जो न चाहें अपना अलग-अलग काम करते रहें. इस तरह के को आपरेटिय या सहयोग संघ, जो इस समय चीन में काम कर रहे हैं. उन्हें चीनी सेमी-सोशलिस्ट वानी कर्ष-समाजवादी कहते हैं. इसी नवन्दर में इस तरह के कोच्यापवरेटिवों को बढाने भीर उनका प्रवन्ध ठीक करने के लिये वहां की सरकार की तरफ से कुछ नए कायदे तैयार करके देश के सामने रखे गए हैं जीर उनपर देश भर में सब से राय माँगी गई है. इन क्रायदों से चीनी नेताओं के इस बारे में विचारों और उनके काम करने के वक्त का खासा पता चलता है.

चीन के सब से बड़े दैनिक "पीपुरस डेली" (जन दैनिक) में, जिसकी श्राहक संख्या एक करोड़ से ऊपर है, इन नए क्रायदों की खास-खास बातें ख़पी हैं, जिनमें से इस हम नीचे देते हैं:—

"नए क्रायदों में सब से पहले किसानों को इस बात का पूरा भरोसा दिलाया गया है कि को आपरेटिव में शामिल हावे से उनके अपने-अपने अलग अलग हित को कोई नुक्रसान नहीं पहँचने पायेगा."

"इनमें वह बुनियादी असूल बयान किये गए हैं जिनके अनुसार अपने हाथ से मेहनत करने वाले किसान जो चाहें खुद अपनी मर्जी से मिलकर काम करना तय कर सकें और काम कर सकें."

"दो बातों को खास तौर से साफ कर दिया गया है. एक यह कि की आपरेटिव में शामिल होना किसी के लिये लाजमी नहीं है, यह पूरी तरह हर एक की अपनी इच्छा पर है, दूसरे यह कि हर को आपरेटिव में जहां पूरे को आप-रेटिव का मिलकर भला और लाभ देखा जावगा वहां हर एक मेम्बर के अलग-अलग भले और लाभ का भी उतना है स्वाल रक्ता जावेगा." ران دی کا تعلق المیداد او احق تبدی هے که آس آس رمین سے نکالے که (آبرداود ترملی مالک) آجکل کے چین کی حالت لگ بیگ آنبین کہارتیں کے آنوسار ہے .

المكن لله جهريك نيتا إسحالت سه نكلكر دهير عديد ديم بهال كو أور سلبهل سلبهل و سماج وأد كي طرف قدم بوهاتي جارهے میں . کوشف یہ مو رهی هے که الگ الگ کاؤں یا الک الگ علاوں کے تھوڑے تھوڑے کسان ملکر اُپنی اُپنی ہمینیں اور کھیتی کے اپنے اپنے دوسرے سادھنیں کو ملاکر کوآپریٹو کی شعل میں یعنی ایک دوسرے کے سہیوگ سے کیبتی کا سارا کام کریں افور اِس طوے دیھی کی پیداوار کو بھی بڑھاریں اور خود بھی ادھک کماسکیں ۔ لیکن یہ چیز کسی کے لئے الزمی نہیں ھے 🕻 کسی کے ساتھ کسی طرح کی زبردستی تہیں ، 🚓 كسان چاهيس أس طرح ملكر كام كرين أور جو ته چاهيس أينا الک الک کلم کوتے رھیں ۔ اِس طرب کے کوآپریٹو یا سھورگ سنه کو اِس سیے چین میں کلم کو رقے هیں کا اُنهیں چینی سيني سوشلسڪ يعلي اردھ سمايوادي کهتے ھيں ، اِسي تومير میں اِس طرح کے کوآپریٹوں کو بڑھانے اور اُن کا پربندھ ٹھیک کرنے کے لئے رہاں کی سرکار کی طرف سے کچے لئے قاعدے تیار کرے دیکس کے ساملے رکھے گئے ھیں اور اُن پر دیکس بھر میں سب سے رائے مانکی گئی ہے . اِن قاعدوں سے چینی نیتاؤں کے اِس بارے میں وچاروں اور اُن کے کام کرنے کے تعلک کا خاصہ بته جلتا 🛳.

ورنٹے قاعدوں میں سب سے پہلے کسانوں کو اِس بات کا پرا بھروست دلایا گیا ہے که کوآپریٹو میں شامل ہوئے سے اُن کے اپنے الگ الگ ہت کو کوئی نقصان نبھی پہونیچنے پائیگا ،

الی میں وہ بنیاسی اُصول بیان کیے گئے میں جن کے اُنوسار اپنے ماتھ سے متعلت کرنے والے کسان جو چاھیں خود اپنی مرضی سے ملکر کلم کرنا طے کرسکیں اُور کام کرسکیں ۔

"دو ہاتوں کو خاص طور سے صاف کردیا گیا ہے ، آیک یہ . ایک یہ کہ کوآپریٹر میں شامل ہونا کسی کے لئے لڑمی قبیں ہے کہ ہوں پرری طرح ہر ایک کی اپنی اِچھا پر ہے درسرے یہ کہ ہو کہ کہ ہوتا ہوں جہاں پرے توآپریٹو کا ملکر بیلا اور لیے دیکھا جائیگا وہاں ہو ایک میں کے الگ انگ بیلے اور لیے کا بھی اُنٹا ہی تعیال رکھا جائیگا .

"तरम का है कि वाँच के कान्यूर कोई मधने पैसे वा व्यक्ती पूजी या अपनी सुक के बल पर किसी इसरे की मेहनत से अपने लिये बेका फायदा न दठा सके."

'इत कावरों में सबसे अधिक ध्यान रारीव किसानों

की भवाई का रखा गया है."

"इस बात पर जोर दिया गया है कि जो कोई दूसरे को किसी को आपरेटिव में शामिल करना चाडे वह केवल सममा-त्रमा कर ऐसा कर सकता है, या वह मिसाल से इसरे को यह दिखाने कि कोआपरेटिव में शामिल होने से इसे हर तरह जाभ है, हानि नहीं है. किसी पर भी किसी तरह की जबरदस्ती का असर नहीं पड़ना चाहिये.

"जो जोग एक बार किसी कोबापरेटिव में शामिल हो जावें उन्हें इस बात का भी इक रहेगा कि वह जब बाहें अपनी जमीन और अपने खेती के साधन लेकर कोआप-

रेटिव से फिर अलग हो जावें."

"यह भी ध्यान रखा गया है कि जो किसान एक बार किसी कोच्यापरेटिव के मेम्बर होकर फिर उससे झलग हो जावें उन्हें इस अलग होने की बजह से किसी तरह का घाटा या तकसान चठाना न पढ़े. को आपरेटिव का मेम्बर बनने के बाद भी अपनी जमीन पर और अपने खेती के दसरे साधनों पर मिलकीयत का हक बराबर उसी किसान का बना रहेगा, और उसकी इन चीजों का कोई उपयोग उस को आपरेटिव के अन्दर बिना उस असल मालिक की रजामन्दी के नहीं किया जा सकेगा, ताकि जब वह चाहे वसे अलग होने में आसानी रहे, खासकर खेती के जानवरों और भीजारों के इस्तेमाल में इसका खास क्याल रखा जावेगा."

"जिन जिन की जमीनें हैं उन्हें जमीन के मालिक की हैसियत से मुनाफे का हिस्सा अलग मिलेगा और मेन्बर की हैसियद से जो वह मेहनत करेंगे उसके लिये (मजदूरी के अलावा मनाके का हिस्सा अलग मिलेगा."

"इसका भी खयाल रखा जायेगा कि को आपरेटिव की

तरक्की के लिये पूँजी बनी रहे.

7

"कांचापरेटिव का हर मेम्बर को बारेटित के काम के चलावा चपना निजी छोटा मोटा धन्धा भी कर सकेगा. ताकि रारीब किसान और बीच के दरजे के दिसान दोनों बाराबर का फायदा डठा सकें.

"मुनाके का किसना हिस्सा किसी किसान को उसकी जमीन की मिलकीयत के लिये मिले और कितना उसकी मेहनत के लिये इसका बटवारा बड़ी होशियारी के साथ किया गया है, जमीन की मिलकीयत से मजदरी की क्रीमत जियादा मानी गई है ताकि अपने हाथ से मजदूरी करने का हीसला सब में बढ़े, क्योंकि हर को आपरेटिव के मेन्बर ही कोजापरेटिव के मज़दूर हैं.

وَ الْمُولُونِ إِنَّا هَا إِلَا الْجُنِّ عَلَى الْحَرِ كُولِي أَبِي يُعْسَى يَا أَيْلَى پرتجی یا آینی سوجه کے بل پر کسی دوسرے کی متعلب سے أين الله بيجا فايدة ثه أثبا سكم

اللي قاعدون مين سب سے أدهك دهيان فريب كسافون کے بہلئے کا رکیا گیا ہے۔

"الس بات پر زور دیا گیا ہے که جو کوئی دوسرے کو کسی كوأيريتو مين شامل كرنا جاهه ولا كيول سنجها بوجهاكر أيسا كر سكتا ها يا ولامثال سے دوسرے كو يه دكيارے كه كوآورياتو ميں شامل هونے سے اُسے هر طرح لاہم هے؛ هالی تهیں هے ، کسی پر یعی کسی طرح کی زیردسٹی کا اثر تہیں پرتا چاعثے ،

الجواوف أيك باركسي كوأيريتو مين شامل هو جارين أنهين اس بات كا يبي حتى رهيكا كه ره جب چاهين أيلي ومدنی اور اپنے کھیتی کے سادھی لیکر کوآپریٹو سے پھر الگ ھو جارين .

اليم يهي دهيان ركبا كيا هے كه جو كسان ايك بار كسي کواپریٹو کے مینیو ہوکر پھر اُس سے انگ ہوجاریں اُنھیں اس الگ مولے کی وجہ سے کسی طرح کا گھاٹا یا نقصان اُٹھاٹا نہ یہے ، کوآیویٹو کا میدور بننے کے بعد بھی اپنی زمین پر اور اپنے کہتے کے دوسرے سادھاں پر ملکیت کا حق برابر اُسی کسان كا بِنَا رَهِمُا أَور أِس كَى إِن چِيزون كا كُونَى أَيْفوك أَس کوآپریٹو کے اندر بنا اُس اصل مالک کی رضامندی کے نہیں كها جاسكيكا، تاكم جب وه چاه أسم الك هوئ مين أساني رہے . خاصکر کھیتی کے جانوروں اور اوزاروں کے استعمال میں إس كا خاص خيال ركها جاويكا.

"جن جن کی زمینیں میں اُنہیں زمین کے مالک کی حیثیت سے منافع کا حصم الگ ملیکا اور میمبر کی حیثیت سے جو وہ مصلت کریں گے آس کے لئے (مزدوری کے عالوہ) مقائم كا حصه الك مليكا .

الس کا بھی خیال رکھا جائیگا که کواپریٹو کی ترقی کے ائے پولنجی بئی رہے ۔

"کوآیریتو کا هر مهمبر کوآیریتو کے کام کے علوہ اینا نجی چھوٹا موٹا دھندہ بھی کرسکدگا تاکه غریب کسان اور بھی کے درجے کے کسان درنوں برابر کا فایدہ اُٹھا سکیں .

المنائے کا کتنا حصہ کسی کسان کو اُس کی زمین کی ملیمت کے لئے ملے اور کتنا آس کی منطقت کے لئے اِس کا بقوارہ ہوی هوشداری کے ساتھ کیا گیا ہے ، زمین کی ملیکت سے مزدوري كى تيمت زيادة ماتى كلى ه تاكه ليني هاته سے مزدوري کرنے کا حرصاء سب میں برھا کورنکہ هر کواپریٹو کے مهمور هی. کو آپریٹو کے موصور طین . "साम ही जास जरूरतों और जास हालतों का भी स्थाल रका गया है. किसी किसान की सगर जमीन स्थिक है या स्थिक स्टब्सी है और उसके यहां काम करने बालों सी कमी है तो उसको जमीन के मालिक की हैसियत से मुनाफे का स्थिक हिस्सा दिया जायेगा. ऐसे ही कहीं पर जमीन कम है और सादमी स्थिक हैं. सलग सलग हालतों के सनुसार जमीन की मिलकीयत के लिये मुनाफे का हिस्सा कहीं मजदूरी से कम दिया जायेगा और कहीं मजदूरी के

"कोई बात ऐसी नहीं की जायगी जिससे किसी विद्यान की अपनी जमीन की मिलकीयत के इक में कोई फ्राफ आसके.

"मुनाके की राजसीम जमीन के घटिया या बढ़िया होने के अनुसार और असल पैदाबार के मुताबिक की जायेगी.

"आम तौर पर शुरू में खेती के कोई जानवर या कोई भौजार जिस किसान के होंगे उसी की मिलकीयत रहेंगे. बही अपने जानवरों को खिलाए पिलाएगा ताकि जानवर भी ठीक रह सकें भीर को चापरेटिव पर भी कुर्जा न लहे.

"जब कभी को आपरेटिब जानवरों को खिलाने पिलाने और ठीक तरह रखने के काबिल होगा तब असल मालिक की रज़मन्दी से जानवरों को मालिक से ख़रीद कर अपना कर लेगा.

"इस तरह हरेक की निजी मिलकीयत श्रीर सबका मिला जुला लांभ दोनों में एक ठीक ठीक समतोल बना रहेगा.

"अपनी जितनी जमीन कोई किसान को आपरेटिव को देगा इसी के अनुसार मुनाके में इसका हिस्सा सममा जावेगा.

"कुल जमीन और खेती के दूसरे साधनों को मिलाकर सब की रजामन्दी से उनका उपयोग किया जावेगा.

. "कोआपरेटिव के हर मेम्बर की कुछ न कुछ अपनी अलंग निजी जमीन भी रह सकेगी जिसे वह जिस तरह बाहे काम में लावे.

"फ़सलों के बोने में देश की और ख़ासकर उस इलाक़े की ज़करतों का ख़ास खयाल रखा जावेगा.

"पैदाबार में से पहले सरकार का हिस्सा अलग कर दिया जावेगा, और फिर खेती के खर्च और लागत के लिय पैदाबार अलग कर दी जावेगी जिसमें मजदूरी भी शामिल होगी और फिर कुछ रिजर्ब फ्रन्ड रखा जावेगा और कुछ सब मेम्बरों और उनके बाल बच्चों के आराम और आसायश के कामों में खुर्ब किया जायेगा.

"मेन्बरों को ग्रुनाके का जो कुछ हिस्सा मिलना है उस की गारन्टी की जायेगी और उसमें से कुछ हिस्सा उन्हें येशगी दे दिया जायेगा. مسالع کی خطائی فروراہن اور خاص عالایں کا بھی کھال ریا گیا ہے ۔ کسی کساں کی اگر زمین ادھک اچھی ہے اور آس کے بہاں کام کوئے والیں کی کسی ہے تو آس کو زمین کے مالک کی حجالت سے منافی کا ادھک حصہ دیا جائیگا ۔ ایسے ھی کہیں پر زمین کم ہے اور آدسی ادھک ھیں ، الگ الگ حالتیں کے افرسار زمین کی ملیکت کے لئے منافعہ کا حصہ کہیں مزدوری سے کمدیا جائیگا اور کہیں مزدوری کے برابر ،

ورکوئی یات ایسی نہیں کی جائیگی جس سے کسان کی اپنی زمین کی ملیکت کے حق میں کوئی فرق آسکے .

السائنے کی تقسیم زمین کے گیاتیا یا بڑھیا ھرنے کے انوسار اور امل پیداولر کے مطابق کی جائیکی .

''عام طور پر شروع میں گئیٹی کے کوئی جانور یا کوئی آرزار جس کسان کے عولکے آسی کی ملیکت رهیائے ، وهی آنکے جانوروں کو کھائے پلائیکا تاکہ جانور بھی ٹھیک رہ سکیں آور کوآپزیٹو پر بھی قرضہ تے لیے ،

وقیمب کبھی کوآپریٹو جانوروں کو کھلانے پلانے اور ٹھیک طرح رکھنے کے قابل ھوٹا تیب اصل سالک کی رضاسلدی سے جانوروں کے مالک سے خوید کو اپنا کو لیکا ،

''اِس طرح هر ایک کی تجی ملکیت اور سب کا ملا جلا لایا دوئیس میں ایک ٹینک ٹینک سنٹرل بنا رهیکا ،

''اپنی جتنی زمین کوئی کسان کوآپریٹو کو دیگا اُسی کے انوسار منانع میں اُس کا حصہ سمجھا جاریگا .

دوکل زمین اور کھیتی کے دوسرے سادھنوں کو ملا کو سب کی رضامندی سے آن کا آپھوگ کیا جاریکا ،

''کوآپریٹو کے هر مهمبر کی کچھ نے کچھ اپنی انگ نجی رمین رہ سکیگی جسے وہ جس طرح چاھے کام میں الرہ .

''نصلوں کے بوٹے میں دیھی کی اور خاص کر اُس عالِقہ کی فرورتیں کا خاص خیال رکیا جاریکا ،

الهداوار میں سے پہلے سرکار کا حصة الگ کر دیا جاریگا کہ کیتھی کے خرچ اور لاگت کے آئے پیداوار الگ کو دی جاریکی جس میں مودوری بھی شامل عوکی کو دیور کچھ دزدرفات رکا جاریکا اور کچھ سب میمبروں اور ان کے بال بحوں کے آدام اور آسایکی کے کاموں میں خرچ کیا جائیگا ۔

المهمبورون کو منانح کا جو کچھ حضه ماتا ها اُس کی الرفای کی جالیکی ارز اُس میں سے کنچھ حصه اُنیس پیھٹی دے دیار

مال رال

"कोबापरेकि क्षपने ने करों को इस कात में नरद देगी कि हर ने न्या सबसे घरवाओं के साथ निककर कोई न कोई आतग ऐसा निजी बन्दा भी करता रहे जिससे को आपरेटिव के काम में फरफ न पड़े. को आपरेटिव की आमदनी जितनी बढ़ती जावगी मेन्यरों के आराम और आसायश के साधनों पर उतना ही अधिक से अधिक सर्च किया जायेगा.

"इसका सास स्रयाल रसा जायेगा कि को आपरेटिव का पूरा कायदा इसके मेम्बरों को पहुँचे और कोई आदमी अपने लिये दूसरों की मेहनत से कायदा न उठा सके.

"जियादा बढ़े या अमीर किसानों को अभी फिलहाल इन को आपरेटियों में शामिल नहीं किया जायेगा."

"इस पर निगाइ रखी जायेगी कि देश में पूँजीवाद घटे और समाजवाद बढ़े

"कोझापरेटिबों के इन्तजाम में सब के यानी जनता के हित का पूरा खयाल रखा जायेगा. सारा प्रबन्ध मेन्बरों के ही हाथ में रहेगा, कोई बाहर बाला, सरकारी या ग्रैर सरकारी, उनके इन्तजाम में दख्ल नहीं दे सकेगा.

"कृषदों में इसका खास ख्याल रखा गया है कि काआपरेटिव का कोई अधिकारी अपने अधिकार को इस तरह काम में न ला सके कि जिससे मेन्यरों के यानी आम लोगों के अधिकारों में और उनकी आजादी में किसी तरह का भी कोई फुरक आ सके

"जो अधिकारी इसके खिलाफ जायेंने उनकी खास रोक शाम का इन्तजाम किया गया है, किसान को आपरेटिन का यह एक तरह से राजकाजी पहलु है."

नए चीन के किसान को आपरेटिव के इन नए कायहों से नए चीन की स्पिरिट का पता चलता है और इम और तूसरे बहुत से देश उससे बहुत कुछ सीख सकते हैं.

21, 12, 55.

—सुन्द्रलाल

## दिल्ली की नुमायश और 'नव जीवन'

दिस्ली की उस बड़ी नुमायरा में, जिसे देखने को लाखों आदमी भारत के दूर-दूर के भागों से जा रहें हैं, हमें दो बार जाने का मौका मिला. दोनों बार हमने सामने घुसते ही एक किंबी दीवार पर नागरी अध्यों में 'नव जीवन' राज्य लिखे हुए देखे. 'नव जीवन' राज्य भारत भर में प्रसिद्ध है. प्रश्तीसी की उस दीवार पर उन्हें लिखा देखकर हम यह समने कि बहां नव जीवन प्रकारान की पुस्तकें रखी होंगी. हमें इस सोचकर कि सरकार ने और उस सुवायरा के अधिकारियों ने महातमा गांधी के विवारों के बाब प्रवारक 'नवजीवन' को बहां जगह दी है

"اِس کاخاص خیال رکها جائیکا که کوآپریٹو کا پورا فایدہ اُس کے میددوں کو پہونچے اور کوئی آدمی اپنے لئے دوسووں کی مصات سے فایدہ نے آئیا سکئے۔

''زیادہ بڑے یا امیر کسائیں کو آبھی فی اُلحال اِن کوآپریائیں میں شامل نہیں کیا جائیگا ۔

الس پر نگاہ رکھی جائیگی که دیش میں پرنجی واد گھتے اور سانے واد بڑھے۔

''دوآیر آو کے انتظام میں سب کے یعنی جلتا کے محت کا پہرا خیال رکھا جائیگا ، سارا پرہندہ میمبروں کے هی هاتھ میں رهرگا' کوئی باهر والا' سرکاری یا غیر سرکاری' اُن کے انتظام میں محکل نہیں دے سکرگا ،

''فایدوں میں اِس کا خاص خیال رکھا گیا ہے که کوآپریٹو کا کوئیریٹو کا کوئی اُدھیکاری اُنے اُدھیکاری اُنے اُنھیکاری میں اور اُن خوس سے میدورں کے یعلی عام لوگوں کے ادھیکاروں میں اور اُن کی آزادی میں کسی طرح بھی کوئی فرق آسکے ،

'جو ادھیکاری اِس کے خلاف جائینگے آلی کی خاص روک تہام کا انتظام کیا گیا ہے ، کسان کوآپریٹو کا یہ ایک طرح سے راجکاجی پہلو ہے ،''

نئے چھن کے کسان کوآپریٹو کے اِن نئے قاعدرں سے نئے چین کی اِسپرت کا پتد چلتا ہے اور مم اور دوسرے بہت سے دیش اُس سے بہت کچھ سینم سکتے ھیں ،

21. 12. 55

## دلی کینمایش اور "نوجیون"

دای کی اُس بڑی تسایش میں' جسے دیکھلے کو لاگھوں اُدمی بھارت کے دور دور کے بھاگوں سے آرہے ھیں' ھمیں دو بار جائے کا موقع ملا ، دونوں بار ھم نے ساملے گھستے ھی ایک اُوتچی دیوار پر ناگری اکشروع میں 'نوجیوں' شید لئے ھوئے اُس دیکھے ، 'نوجیوں' شید بھارت بھر میں پرسدھ ہے ، پردرشلی کی اُس دیوار پر آنییں لکھا دیکھکر ھم یہ سمجھے کہ وہاں نوجیوں بورگشن کی پستکیں رکبی ھونگی ، ھمیں کچھ خوشی بھی ھوئی یہ سوچکر که سرکار نے اور اُس نمایش عوروں کے اُدھیکاریوں نے مہاتما گاندھی کے وجاروں کے خاص پرچارک 'نوجھرین' کو وہاں جگه دبی ھے

نروس 66

और इतनी अच्छी जगह दी है, दूसरी बार अब हम गए और तुमावश के उस हिस्से के पास से निकले तो इमने एक और की दीवार पर 'नव जीवन' का अंग्रेजी अनुवाद The New Life लिखा हुआ देखा. इम कुछ चकराए, क्योंकि आम तौर पर इस तरह के नामों का अमुवाद नहीं किया जाता. इसने एक दर्शक से पृद्धा तो मालूम हुआ कि नुमायश के इस भाग का 'नव जीवन' प्रकारान के साथ कोई सम्बंध ही नहीं है, हमने अन्दर जाकर ध्यान से देखा. उस घर के अन्दर बोड़े से में भारत की इस समय की पिछड़ी हुई हालत को विसाया गया है और उसके साथ सुधार का तरीका बताया गया है. सुधार के मामले में अलग-अलग राय तो हैं ही. बहां हमें कुछ चीजें ठीक मालूम हुई और कुछ नाठीक भी. सरकारी योजनात्रों का पूरा प्रचार या. सारी प्रदर्शनी का ही यह खास पहलू साफ बमकता है. भारत के बड़े से बढ़े मराहूर पूँजीपतियों के फोटो भी उस 'नव जीवन' घर में कास तौर से दिखाए गए हैं, उनकी तरफ लोगों का विशेष ज्यान आकर्षित किया गया है. जो हो, अच्छा, बुरा या मिला जुला, प्रदर्शनी का वह भाग न कोई गाँधीबादी चीज है न कोई कम्युनिस्ट चीज है, वह है शुद्ध पूँजीवादी. गाँधी जी के विचारों या नव जीवन के विचारों से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है.

बूँ तो भारत में हिन्दू गाँधी और पारसी गाँधी सब मिलाकर हजारों ही गाँधी हैं. हो सकता है इचमें से किसी वसतम नी शापुर जी गाँधी के विचार देश सुधार के बारे में गाँधी जी के विचारों के ठीक उल्टे हों. ऐसी सूरत में अगर कोई इसतम जी का अनुयायी इसतम जी के विचारों को पुस्तक के हरंप में प्रकाशित करे और पुस्तक का नाम रख दे-"गाँधी जी के विवार", और ऊपर यही नाम लिखा हो, तो कीन रोक सकता है. क्रानूनी पोजीशन क्या है, हम नहीं जानते, न हमें जानने की चिन्सा है. पर नुमायश के अधि-कारियों का 'नव जीवन' नाम को इस तरह काम में लाना वड़ी रालव बात है, जो सम्भव है इमारी तरह और बहुत सों को भी खटकी हो. अपने विचारों और अपनी योजनओं के प्रचार का और अपने काम के विज्ञापन का हर एक को इक है, पर इस तरह किसी नाम की आद सेना उस नाम के साथ अन्याय करना है और, जाने या अनजाने, जनता को घोके में डालने की कोशिश है.

नुमायरा में बहुत से देशों के अपने-अपने अलग 'नुमायरा घर' हैं. बिदेशी नुमायरा घरों में अधिकतर यात्री सब से अधिक वारीफ भीनी नुमायरा घर की करते हुए निकलते हैं. वहाँ, 'चीनी कजा' चीनी खेतों की पैदाबार, चीनी दस्तकारियों, नए चीन की औद्योगिक उन्नति और चीन की बनी हुई इन्न नई मशीनों सब का बढ़ा सुन्दर प्रदर्शन है. ار اِدِنِي الْبَهِي بَجِلْهُ مَنِي هُم تُموسِرِي بَارَ جَعَبَ هُمْ كُلُمُ ارْرَ مُعَالِحُنَ ع أس حصر كے باس سے اللے تو هم لے ايك أور كى ديوار ير الرجاين العراد The New Life العا هوا ديكها . هم كتيه خكرائم كيونك عام طور ير إس طرح کے فاسوں کا افزواد فہیں کیا جاتا ۔ ہم نے ایک درشک ے پونچا تو ساوم ہوا که تمایش کے اُس بھاک کا انوجیوں' پرکائس کے ساتھ کوئی سمیدرہ ھی نہیں ہے . ھم نے اندر جاکر دهیان سے دیکھا ، اُس کھر کے اثدر تھردے سے میں بھارت کی اِس سمے کی پیچھونی ہوئی خالت کو دکھایا گیا ہے اور اُس کے ساتھ سدھار کا طریقہ بتایا گیا ہے ۔ سدھار کے معاملہ میں الگ الك رائد تو هيں هي . وهان هدين كچه چيزين قيبك معليم هرئیں اور کچے ناٹھیک بھی ۔ سرکاری یوجناؤں کا یورا یرچار تها ، سارى يودرشلي كا هي يه خاص يهلو صاف چمكا هي . بھارت کے بچے سے بچے مشہور ہونجے یتوں کے نوٹو بھی اُس الرجهون عمر ميں خاص طور سے دنھائے گئے هيں . آن كى طرف لوگوں کا وشیش دھیاں آئوشت کیا گیا ہے۔ جو ھو' آچھا' برا یا ما جلا پردرشنی کا وہ بهاک نه کوئی کاندھی وادی چیز هے نه کوئی/ کمیونسٹ چیز هے وه هه شده یونجی وادی . کاندھی جنی کے وچاروں یا توجیوں کے وچاروں سے اُس ہ كرار سميلاه الهين هه .

یوں تو بھارت میں ھلدو گاندھی اور پارسی گاندھی سب ملکر ھواروں ھی گاندھی ھیں ، ھوسکتا ھے اِن میں سے کسی رستم جی شاپور جی گاندھی کے وچار دیش سدھار کے بارے میں گاندھی جی کو وچاروں کے تھیک اُلٹے ھوں ، ایسی مورت میں اگر کوئی رستم جی کا انوبائی رستم جی کے وچاروں کو پستک کا نام رکھدے کو پستک کے زرپ میں پرکشت کرے اور پستک کا نام رکھدے ۔"گاندھی جی کے وچار" اور اُس پر یہی نام لکھا ھو' تو کون روک سکتا ھے ، قانونی پوزیشن کیا ہے ھم نہیں جانتے' نام میں جانتے کی چنتا ھے ، پر نمائش کے ادھیکاریوں کا 'ترجیوں' نام کو اِس طرح کام میں لانا بڑی غلط بات ھے' جو سماھو ھے میاری طرح اور بہت سرں کو بھی کیڈئی ھو ، آپنے وچاروں اور اپنی کم کے وگیاپن کا ھر ایک کو حق ھے' پر اِس طرح کسی نام کی آز لینا اُس نام کے ساتھ ایپٹ کون ھر ایک کو الیپٹ کرنا ھا اور' جانے یا انتھائے' جنتا کو دھوکے میں ڈالنے اُنھا' کونا ھو اور' جانے یا انتھائے' جنتا کو دھوکے میں ڈالنے اُنھا' کونا ھو اور' جانے یا انتھائے' جنتا کو دھوکے میں ڈالنے اُنھا۔

نمایش میں بہت سے دیشوں کے اپنے اپنے الگ الگ الگ انتائی گہرا میں ادھکٹر یاتری اسٹ سے ادھک تمریف چینی نمائش گہر کی کرتے ہوئے نکلتے میں و رہاں چینی کلا چینی کیمیٹوں کی پنداوار چینی دینگاریوں نیٹے چین کی اودیوکک انتائی اور چین کی بنی جوئی کی ہوئی کیے تئی مشینوں سب کا بڑا سنیر پردرشن ہے ہ

.( 116/)

156 ansi

And place of act

हसी तुमानरा पर में भी कस की जीवांगिक और कृतकर वैमानिक उन्नति का सब पर बहुत गहरा प्रभाव पढ़ता है.

बाकी घरों में से पूर्वी जरमनी के तुमायरा घर में दो चीजें लोगों को खास वीर से पसन्द जाती हैं—एक शीशे का एक जादमी जिसके जन्दर की जंतिक्यों, फेक्के, दिल, गुर्दा, जीर एक एक नस साक दिखाई देती है और बहु सब जंग काम करते हुए भी विखाई देते हैं, और दूसरे एक बन्द जंवरा शामियाना जिसमें तारों भरी रात का समाँ और तारों और गृहों का घूमना देखने को मिलता है. अमरीकी तुमायरा घर, जिसमें ऐटम और विजली अधिक है, लोगों को एक तरहें का जादूबर मालूम होता है. भारत के तुमायश घरों में कुछ घरेलू बंघों का भी अच्छा प्रदर्शन है, पर अधिकतर सरकार की पंच वर्षों योजना और भारत के बढ़े बढ़े पुँजीपतियों और कारखानों के मालिकों का बढ़िया विज्ञापन है.

एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी की हैसियत से चीज अच्छी है. पर जहाँ तक अपने देश का सम्बन्ध है, हमने जगह जगह लोगों के मुँह से यही शब्द या इनसे मिलते जुलते शब्द सुने—"भैया, सब सरमायादारों का खेल है!" यह है जनता पर आम असर और हमें यह रालत भी नहीं साखूम हुआ.

8-12-'55

—्मुन्द्रखाल

## पेकोपेथी और दूसरे इकाज के तरीक्रे

पिछले कई लेखों में हम यह दिखा चुके है कि नए चीन की सरकार यूरप के ऐलांपैथिक इलाज से पूरा पूरा लाभ उठाने के साथ साथ अपने देश के पुराने इलाज के तरीक़े से भी कितना लाभ उठा रही है और उसे किस तरह बढ़ावा दे रही है. सरकार ने वहां एक ख़ास महकमा खोल रला है जिसका काम पुराने इलाज के तरीक़ों की साइंसी हंग से खोज करना है. अनेक शहरों में बढ़े बढ़े अस्पताल खोले गए हैं जिनमें केवल पुराने तरीक़ों से ही सब रोगों का इलाज किया जाता है. पुरानी दवाओं को नए रोगों पर आजमाया जा रहा है. अनेक रोगों में उन्हें ऐलोपिथक इलाज के मुक़ाबले में पुरानी दवाओं और पुरानी इलाज के मुक़ाबले में पुरानी दवाणं और पुराना इलाज अधिक सफल मालूम हुआ है.

हाल ,में पेकिंग के बच्चों के अस्पताल के डिपटी बाइरेक्टर डाक्टर हु चेंग-बेन ने कहा है कि बच्चों के लक्ष्ये की बीमारी में जिसे 'इनफेन्टाइल पैरेलिसिस' कहते हैं पिछले हो साल के अन्दर पुराने तरीक्षे से उनके यहां जिहत्तर कीसदी (76%) बीमार बिलक्ष्य अच्छे हो गए.

ایک التوراهاتریه پردوشای کی حیثیت سے چیز آچھی ہے ، و جہاں تک اپنے دیش کا سبادہ ہے ہم نے جات جات کہ لوگوں کے منه سے بہی شبد یا اِن سے ملتے جلتے شہد سنے والی ایل سے اسرمایتداروں کا کہیل، ہے ! '' یہ ہے جنتا پر عام آثر آور دیس چینا پر عام آثر آور دیس جینا ہیں معلوم ہوا ،

سسندر لال

8.12.55

## ایلوپیتھی اور دوسرے علاج کے طریقے

پچھلے کئی لیکھوں میں ھم به دکھا چکے ھیں که نئے چھوں لی سرکار یورپ کے ایلوپیٹیک علاج سے پورا پورا لابھ اُٹھانے کے ساتھ ساتھ اپنے دیھی کتنا لابھ اُٹھا رھی ساتھ اپنے دیھی کتنا لابھ اُٹھا رھی لیے اور اُسے کس طرح بوٹھارا دے رھی ھے ، سرکار نے رھاں ایک خابس محتمد کھول رکھا ھے جس کا کام پرائے علاج کے طریقوں کی سائنسی تھائک سے کھوج کرنا ھے ، انیک شہروں میں بڑے بڑے اسپتال کھولے گئے بھیں جن میں کیول پرائے طریقے سے ھی سب اُنھان کا علیے کیا جاتا ھے ، پرائی دواؤں کو فائے روگوں پر آزمایا ہوا ھے ، انیک روگوں بیں اُنھیں آیلوپیٹھک دواؤں اور پرانا علیے اپنوپیٹھک علیے کے مقابلے میں پرائی دوائیں اور پرانا علیے اپنوپیٹھک میں ممام ھوا ھے ،

حال میں پیکنگ کے بچوں کے اسپتال کے تیتی ذائریکٹر شوچینگ وین کے بچوں کے لقرے کی بیماری میں جسے الانتخابال پریلیسس کہتے میں پچھلے دو سال کے اندر پرائے طریقے میں آئی کے یہاں چھٹر نیصدی (%75) بیمار بالکل اچھ دو گئے.

نروس 15*6*°

जिय कंक्षों की श्रांगें विश्वक्षण यारी गई वी वह पित्र के क्षण फिरने लगे. इनमें से इन्द्र बच्चे पेसे भी वे जिनके हो हो जाल से हाथ पैर ख़्तम हो चुके वे बौर पहें जिसकी हाई खाल से दोनों टॉगें मारी जा चुकी थी इस इलाज की बदौक्षत जरा से सहारे के साथ दूर दूर तक व्याने फिरने लगा. थाने दिनों के बाद पसे इस सहारे की बी क्षरत त रह गई.

्रह्माज का यह पुराना वरीका चीन में ऐक्युपंकचर (acupuncture) कहलाता है. इसमें बारीक बारीक सुद्र्यों के बारिये बदन की नसों को किर से जगाया और जिलाया जाता है, लेकिन रोगी को किसी तरह की पीड़ा अंतुजब नहीं होती.

हमें बढ़े दुसा के साथ कहना पड़ता है कि भारत सरकार का स्वास्थ्य विभाग ऐलोपेशिक इलाज के तरीक़े पर इतना अधिक लहू है कि यहाँ के वैद्यक, यूनानी, होमिया-वैभी और नैचरोपेशी जैसे दूसरे इलाज के तरीक़ों को सरकार से जैसी मदद और जैसा बदाबा मिलना चाहिये, नहीं मिल रहा है, यहां तक कि जैसा हम पहले कह चुके हैं राजकुनारी अमृतकीर ने चीन से लौटकर पुराने चीनी इलाज के तरीक़े की तरफ नई चीनी सरकार के कल को भी रालंब बर्चान किया और सरकार अभी तक भी इलाज के दूसरे तरीक़ों को जो कुछ थोड़ी बहुत मदद दे रही है उस पर भी अफसोस जाहिर किया!

ें होता में विल्ली के अन्तर एक मोमला स्वयं राजकुमारी जी के सामने जाया. भाकरा कन्ट्रोल बोर्ड नई दिल्ली के सेकेट्री भी इरबन्स लाल बदेरा आई० एस० ई० को बन् 1945 में पालाने के साथ खून जाना ग्रुक हुआ. श्री बहेरा मालुम होता है अंगरेजी ढंग के डाक्टरों के ही शैवाई श्रे. इताज ग्ररू होगया. न जाने कितनी बार तरह तरह के इम्सहान हुए. बड़े बड़े नाम लेकर कभी एक तरह की पेचिश वैताई गई, कमी दूसरी तरह की दिल्ली के एक मशहर अस्पताल में भी इलाज के लिये भरती हो गए, अब कहा नवा कि पेक्शि के साथ बवासीर भी है. साने के लिये उन के कहा गया कि विना मान्साहार के वह जलदी अच्छे नहीं होंगे. भी बदेरा का कहना है कि उस बाहार ने भी उन्हें ब्रह्मसान ही किया. सन् 1952 में बीमारी और जोर पर थी. कहा गया कि नीचे की अंतिदयों में फोड़े हो गए हैं. एक्सरे फ़ोड़ो भी खिया गया. दिल्ली में फ़ायदा न हुचा वो बस्बई के बाक्टरों के पास पहुँचे और वहां से महास. बेनिस्तीन, स्ट्रेपटोमाईसीन, टेरामाईसीन, जीरियो-बाईसीन, कोटियोन, क्लोरो-माईस्टाइन जैसी छव

جہن بھی ہوئے گئے۔ اُن میں سے کچھ بچے ایسے بھی میں سے کچھ بچے ایسے بھی ہے جان کے دنو سال سے ہاتھ پیور خدم ہو چکے تھے اُور بنے بالکل نے جان ہو گئے تھے اُرک چلر برس کا لوکا جس کی تھائی سال سے جونوں ٹانکیں ماری جا چکی تھیں اِس علج کی بدولمت فرا سے سہارے کے ساتھ دور دور تک چلنے پورنے کا تھوڑی دولوں کے بعد آسے اِس سہارے کی بھی ضرورت نہ دولوں کے بعد آسے اِس سہارے کی بھی ضرورت نہ

علی کا یہ پرانیا طویقہ چین میں ایکیرپنچکر ( -Acu) کہا تا ہے اس میں باریک باریک سرنیس کے زیمے بدن کی السوں کو پہر سے جکایا اور جلایا جاتا ہے کا لیکن زرگی کو کسی طرح کی پنوا الوبور نہیں ہوتی .

همیں 'بڑھ۔ دکھ کے ساتھ کہنا پڑتا ہے کہ بھارت سرکار کا
سراستہمے وبھاگ آبلوپیتھک علاج کے طریقے پر آتنا آدھک لاو ہے
کا یہاں کے ویدیک' یونانی' هومهوپیتھی آور نینچروپیتھی جیسہ
دوسرے علاج کے طریقوں کو سرکار سے جیسی سدد آور جیسا
بڑھارا ملنا چاھیئے نہیں مل رہا ہے' یہاں تک که جیسا ہم پہلے
کہ چکے میں راختماری آموتکور نے چین سے لوت کر پرآنے
چینی علاج کے طریقے کی طرف نئی چینی سرکار کے رخ کو بھی
غلط بھان کیا آور سرکار آبھی تک بھی علاج کے دوسرے طریقوں
کو جو کچے تھوڑی بہت مدد دسے رہی ہے آس پر بھی آنسوس
خاھ کیا ا

حال میں دلی کے الدر ایک معامله سریم راجکداری جی کے ساملے آیا ، بھاکوا کلٹرول ہورہ نئی دلی کے سیکریڈری شری هربنس لال وديرا آئي. ايس. لي. كو جنوري سي 1945 مين پاخالے کےساتھ خون أنا شروع عوا، شرى رديرا معارم هوتا هانكريزى تمنگ کے دانٹروں کے هی شیدائی تھے ، علی شروع هو گیا ، نے جالے کتنی بار طرح طرح کے اِمتحان عوثے ، بڑے بڑے نام لیکر کبھی آیک طرح کی پینچش بتائی گئی کبھی دوسری طرح کی ، دلی کے ایک مشہور اسپاال میں بھی علیے کے ائر بہرتی مو گئے ، آب کہا گیا پیچھ کے ساتھ ہوا سر بھی ھے ، کیائے کے لئے اُن سے کیا گیا کہ بنا مانساھار کے وہ جلدی چھے نہیں مونکے ۔ شری ودیرا کا کینا ہے کہ اُس آمار نے بھی أنبين تقصان هي كيا, سن 1952 مين بيماري أور زور ير تهيء كها كها كه نيجه كي التزييل مين پيرت هو كث هين ، أيكسر نرتوسی لیا گیا ، دلی میں نایدہ نه هوا تو میمیٹی کے ڈاکٹروں كے پاس ههوانچه اور وهارت مدراس. پينسلين استيپتو مانيسين نيرا ماليسني اور يوماليسين كررايسون كورمانسالون جيسى سب

बार से काविक विपया क्षान है जार . इलाज में क्ष्मका इस हजार से काविक विपया क्षान हुआ। बजाय काव्या होने के मर्ज बहुता ही कता गया. बजान तीस पाउन्त घट गया. मद्रास से किर विस्ती लीट आए. जब किसी मिन्न ने वन्हें आयुर्वेदिक इताज कराने की सलाह थी. भी बदेरा सिवाय देलांपेथिक के जीर सब इलाजों को ढोंग सममते थे. आखिर मजबूर हाकर मार्च सन् 1953 में वन्होंने अपने को दिल्ली ही के एक जनुमधी वैश्व के हवाले कर दिया. केवल दो दिन की दवा से जनहें इतना फरक दिलाई दिया के वन्होंने इलाज जारी रहा। वैश्व ने साना वन्हें सादा विना मान्स का दिया. वजन धीरे धीरे किर पहला सा हो गया और भी बदेस बिलकुल वन्दुकस्त हो गए.

राजकुमारी जी के ही अवान में उन्हों नैया का एक और मामका आया है जिसमें यूरप के पढ़े हुए भी जी. पी. किपल टैक्सटाइल इनजीवियर की पत्नी के एक ज़क्का दिल्ली के एक अस्पताल में पैदा हुआ. एक महीने के अन्दर बच्चे को बदह ज़मी और दस्त हुए हो गए. केद महीने तक तरह तरह की प्वाइयों और इनजेक्शन दिये गए. अच्छे से अच्छे डाक्टर इलाज करने वाले थे. बच्चे की हालत नाजुक हो गई. आखिर मजबूर होकर उन्होंने दिल्ली के उन्हीं अनुभवी नैय का इलाज हुए कराया. आठ इस दिन के अन्दर बच्चा विलक्षल अच्छा हो गया. अब वह बच्चा तीन बरस का हा जुका है और अपनी तन्दुरुस्ती के लिये इनाम पा जुका है.

देश भर से इस तरह के अनिगनत रोगियों का हाल बयान किया जा सकता है. इमने यह दो केस केवल इस लिये दिये हैं कि यह दोनों दिल्ली के हैं और स्वयं राज-कुमारी जी के नोटिस में आचुके हैं. इसें इसमें करा भी संदेह नहीं कि पेलोपेथी को छोड़ कर इलाज के दूसरे तरीक़ों की तरफ भारत सरकार का कल, तजरबा, समक और दलील तीनों के खिलाफ है और देशवासियों की माली हालत, उनकी तन्दुहस्ती और विद्या की उन्नित तीनों के लिये अत्यन्त हानिकर है.

20, 12, 55

- सन्दरशाल

ر المعارى كے هى دهيان ميں انهيں ويد كا ايك اور معامله ايك هي دهيان ميں انهيں ويد كا ايك اور معامله ايك هي دون كي پڑھ هواء شرى دى. يى، كيل الميكال انجينير كى يتنى كے ايك لوكا دلى كے ايك اسهتال شووع هو كلے ، ديوه مهيلے كے اندر بچے كو بدهنسى اور دست شووع هو كلے ، ديوه مهيلے تك طرح طرح كى دوائيل اور بيجے كى حالت نازك هو كئى ، آخر مجبور هو كر انهوں نے بنجے كى حالت نازك هو كئى ، آخر مجبور هو كر انهوں نے دلى كے انهيں انوبيوى ويد كا علج شورع كرايا ، آنه دس دن كے اندر بچته بانكل اچها هو كيا ، آب وہ بچه تين بوس كا هو كيا شائما پا چكا هے ،

دیفی یور سے اِس طرح کے انگلت روگیوں کا حال بیانی کیا جا سکتا ہے ، ہم نے یہ دو کیس کیول اِس لئے دیئے ہیں که یہ دوئوں دئی کے هیں اور سویم راجکماری جی کے نوٹس میں آچکے هیں ، همیں اِس میں ڈرا بھی سندهیہ نمیں که آیاویئی کو چھوڈ کو علج کے دوسرے طریقوں کی طرف بھارت سوکار کا رہے " تجوریہ ' سمجھ اُور دلیل تیلوں کے خالف ہے اور دیھی واسیوں کی مالی حالت اُن کی تلدرستی اور ودیا کی اُنٹی تھتوں کے اُنے اُتیفت ہائیکر ہے ،

. N. J.

20, 12, 55

### बाबार्थ नरेन्द्र देव

पिस्ती 19 फरंबरी को आवार्य नरेन्द्र देव की लन्बी बीमारी के बाद इरोड (दिक्सन भारत) में अवानक मीत हैं गई. उनका राव कस्पनक लाया गया जहाँ इजारों रामगीन दोस्त अहबावों के आँसुओं के बीच उसे ठीक उसी जगह आग की लपटों के सुपुद कर दिया गया जहाँ कुछ बरस पहले भीमती सरोजिनी नायडु और डाक्टर बीरवल साहनी के पार्षिव जिस्स आग के सुपूर्व किये गये थे.

यूँ तो मीत के वक्त आवार्य जी 65 बरस के ये फिर भी धनका इस तरह अवानक चला जाना न सिर्फ उनके आसीयों, दोस्तों और प्रजा सोशालिस्ट पार्टी वालों को असरा बह्कि हिन्दुस्तान के हर सममदार नागरिक को इससे सक्त सब्मा पहुँचा. आवार्य जी की शक्सीयत में इस देशी बात थी जिसने उन्हें सबका प्रिय पात्र बना दिया था. व डम राजनीति में रहते हुये भी राजनीति के तंग नजरिये से ऊपर थे. सीधा-सादा, मधुर, प्रेम से भरा हुआ बनका व्यक्तित्व था जो हर एक को उनका प्रशंसक बना देशा था. उनकी नेकनीयती, ईमानदारी, कर्तव्य निष्ठा, सचाई और साफगोई सब पर असर डालती थी इसीलिय उनके बले जाने का देश के हर गिरोह, हर पार्टी और हर व्यक्ति को रंज है.

भारतीय करुचर, भारतीय सभ्यता और भारतीय दर्शन के ने बहुत बढ़े विद्वान थे. बीध धर्म पर उनके अंथ विद्वता, खोड़ और सरलता से भरे हुने हैं. आचार्य जी की हिन्दु-स्तान के राजनैतिक और सांस्कृतिक जीवन में एक खास जगह थी जिसे जल्द भर सकना नामुमकिन मालून होता है. हम भी अपने इस राम में देशवासियों के साथ शरीक हैं.

### क्राजी मोहम्मद भव्दुल गुफ्फार

कुल हिन्द अजुमन तरक्त की-ए-उद् के जनरल सेकेटरी काजी अब्दुल रामफार का पिछले दिसम्बर में लम्बी बीमारी के बाद अलीगढ़ में इन्तकाल हो गया काजी साहब एक खामोश, सीधे-सादे लेकिन बहुत ऊँचे दरजे के खालिम, खर् जबान के सेवक और हिन्दुस्तान की मिली जुली कस्वर के जबरदस्त हामी थे. उनमें आला दरजे की संगठन की शाफि बी और उस्तों के लिये तकलीफ बरदाश्त करने की ताकत.

वे हिन्दुस्तानी कल्पर सोसायटी की 'गवर्निंग वाही के मेन्यर और 'नया हिन्द' के इम दर्दों में थे. उनकी मौत से को जगह खाली हुई है उसे बासोनी से नहीं मरा जा सकता इस 'नया हिन्द' की तरफ से उनके खानदान के लोगों के साथ दिली हमदर्दी का इसहार करते हैं.

25. 2. 756 — विश्वन्भरताथ पांडे

### اعارت تريشان ديو

بچہلی 19 فروری کو آجاریہ تریندر دیو کی لبنی بیماری کے بعد اردی ( دکھن بھارت ) میں اجانک موت ہوگئی۔ اُن کا یہ ایکا کیا جہاں ہزاروں ضکین دوست احبابوں کے آنسوں کے بیچ آف ٹیمک آسی جکہہ آگ کی لیٹوں کے سپرد کردیا گیا جہاں کچھ برس پہلے شریستی سروجنی نائڈو اور ڈاکٹر بیربل سادی کے پارتیو جسم آگ کے سپرد کئے گئے تھے۔

یوں تو موت کے وقت آچاریہ جی 65 برس کے تھے ہور بھی ان کا اِس طرح اُچالک چھ جاتا تہ صرف اُن کے آفسوں' دستوں اور پرچا سوشاست پارٹی والوں کو اکبرا بلکہ هندستان کے هر سبتجدار تاگرک کو اِسع سے سخت صدمہ پہونچا ، آچاریہ جی کی شخصیت میں کچھ آیسی بات تھی جس نے آئیدن سب کا پریہ پاتو باا دیا تیا ، وہ اگر راجائیتی میں رہتے ہوئے بھی واجائیتی کے تلگ تطریہ سے آوپر تھے ، سندھا سادہ' مدھر' پریم سے بھرا ہوا اُن کا ویکنٹو تھا جو ہر ایک کو اُن کا ورشنسک باا دیکا تھا ، اُن کی نیک نیتی ایمانداری کرتویہ نشیا سجائی اور صاف کوئی سب پر اثر دالتی تھی اِسی لئے اُس کے چلے جانے کا دیکھی کے ہر گروہ' ہر پارٹی اور ہو ویکٹی اُن کے چلے جانے کا دیکھی کے ہر گروہ' ہر پارٹی اور ہو ویکٹی

بھارتیہ کلچوڑ بھارتیہ سبھیا اور بھارتیہ درشن کے وہ بہت ہو۔ ودوان تھے ۔ بودھ دھرم پر آن کے گرنتہ ودوتتا کھوج اور سرلتا سے بھرے ھوئے ھیں۔ آچاریہ جی کی ھندستان کے راجائیتک اور سائسکرتک جدون میں ایک خاص جگہ تھی جسے جلد بھر سکتا فاسمکن معلم ھوتا ہے ۔ ھم بھی اپنے اِس غم محم دیھی واسیوں کے ساتھ شویک ھیں ۔

## قاضي محمد عبدالغفار

کل هند انجین ترتی اُردو کے جنرل سکریاری قافی عبدالنظار کا پنچیلے دسمبر میں لبعی بیماری کے بعد، علیاتھ میں انتقال ہو گیا ، قافی صاحب ایک خام ہی سیدھ سادے لیکن بہت اُرنچے درجے کے عالم' اُردو زبان کے سیوک اور هندستان کی ملی جلی کلچر کے زبردست حامی تھے ، اُن میں عالی درجہ کی سلکالین کی شکتی تھی اور اُمولور کے لئے تکلیف برداشت کرنے کی طاقت ،

وے مندستانی کلمچر سرسائٹی کی گررنگ باتی کے میمبر اور نیامند کے میدردوں میں تھ ، اُن کی موت سے جو جگہ خالی مرنی ہے اُس کی موت سے جو جگہ خالی مرنی ہے اُس کے اُسانی سے نہیں بہرا جا سکتا ، هم 'نیامند' کی طرف سے اُن کے خاندان کے لوگوں کے ساتھ دای همدردی کا اظہار کرتے میں "

36 and

-- رشنبهر ثاته بالتس

25, 2, 56

## सांस्कृतिक साहित्य

سانسكوتك ساهتيه

### हजरत मोहम्मद श्रीर इसलाम

लेखक-पिडत सुन्दरलाल, मूल्य-नीन रुपया इसलाम के पैगम्बर के सम्बन्ध में भारतीय भाषाओं में इस से मुन्दर कोई दूसरी पुस्तक नहीं

## हजरत ईसा ऋौर ईसाई धर्म

लेखक—पन्डित सुन्दरलाल, मूल्य—डेढ़ रुपया

## महात्मा जरथुस्त्र ऋौर ईरानी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे. क़ीमत---दो रूपया

## यहूदी धर्म और सामी संस्कृति

लेखक—विश्वमभरनाथ पांडे. क्रीमत—दा रुपया

### प्राचीन मिस्र की सभ्यता और संस्कृति

लेखक-विश्वनभरनाथ पांडे. कीमत-दो रूपया

### मुमेर वाबुल ऋोर ऋसुरिया की प्राचीन संस्कृति

लेखक-विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत-दो रुपया

## प्राचीन यूनानी सभ्यता ऋ।र संस्कृति

लेखक--विश्वम्भरनाथ पांडे, क्रीमत--दो रुपया

### गंगा से गोमती तक

( प्रगतिशील कहानी संप्रह् ) क़ीमत—दा रूपया लेखक-श्री मुजीब रिजवी,

### आग और आँस

( भावपूर्न सामाजिक कहानियाँ )

लेखक—डाक्टर ऋख्तर हुसेन रायपुरी, क्रीमत—डेढ़ रुपया

### कुरान ऋोर धार्मिक मतभेद

लेखक-मीलाना श्रबुलकलाम श्राजाद, क्रीमत-डेढ़ रूपया

### भंकार

( प्रगतिशील कवितात्रों,का संप्रह ) लेखक—रघुपति सहाय फिराक़, क्रीमत—तीन रुपया

## حضوت محمد اور إسلام

ليكهك - ينذت سندر لأل مولية - نين روييه

اِسلم کے پینمر کے سمبندہ میں بھارتیہ بھاشاؤں میں اِس سے سندر کوئی دوسوی پستک نهین

## حضرت عيسي اور عيسائي دهرم ليكون ديره روبيه

## مهادما زر تهستر اور ایرانی سنسکرتی لیکهک رویه

یهودی دهرم اور ساسی سنسکرتی لیم شومهر ناته باندے نیت در رویه

## پراچین مصر کی سبهیتا اور سنسکرتی اینهک-وشرمهر نانه باندے نیست-در روپیه

## سمير 'بابل اور أسوريا كي پر اچين سنسكرتي

ليكهك -- وشومجهر ناته باندَے و دويه

## پراچین برنانی سبعیدا اور سنسکرتی لیکهک سرشومهر ناته پاندے تست در رویه

## گنگا سے گومتی تک

( پرگتی شیل کهانی سناره )

لیکھک - شری منجیب رضوی تیست - د روپیه

### أك اور انسو

( يهاودورن سمآجک کهانيال )

ليعهك - قاكتر أختر حسين رائع يورى عيس - قيره رويه

## قرآن اور نهارمک معابهین لیمهک مراتا ابرکلم آزاد نیست قیمه ورید

فيمت-تيزة زرييه

#### جهنكار

( پرگتیشیل کویتاؤں کا سنگرہ )

ليكهك ركوريتي سائه فراق فيست تين روييه

मिलने का पता ملنے کا یتھ

## हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी उर्मे अपन अपन

السالسالساليا

# हिन्दी घर

هندی گهر

कलचर पर हर तरह की कितावें मिलने का एक बड़ी केन्द्र—पाठक हिन्दीं, उदू, श्रंभेजीं की अपनी मन-पसन्द कितावों के लिये हमें लिखें।

हमारी नई किताबें

महात्मा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी और उद् कें) के कि लेखक—गान्धीबाद के मान जाने बिद्वान : श्री मंजर श्रली सास्ता सके 225, क्षीमत दो रूपया

### गान्धी बोचा

( बच्चों के लिये बहुत दिलक्षमा किताब ) लेखिका—कुद्मिया जैदी भूमिका—पन्डित जबाहरलाल नेहरू मोटा काराज, मोटा टाइप, बहुत-मी रंगीन नमवीरें दाम दो कपया

—: ०: —
पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी किनाबें
गीता ऋोर क़ुरान

275 सके, दाम ढाई रूपया

हिन्दू मुसलिम एकता 100 सके, दाम बारह श्रान

महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक्र

क़ीमत बारह आन

पंजाब हमें क्या सिखाता है कीमत चार आने बंगाल और उससे सबक्र

क्रीमत दो श्राने

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 मुट्टोगंज इलाहाबाद

المچر پر هر طوح کی کتابیں ملنے کا ایک برا کیندر۔۔پائےک هندی اگریوی کی می پسند کتابوں کے لئے همیں لکھیں.

هماري نئى كتابيس

مهاتها کاندهي کی وصيت

(عندی اور آردو میں) لیکھئے۔۔۔۔۔گاندھیواد کے مانے جانے ودوان: شوی منظر علی سوختہ صفحے 225 تیمت دو روپیه

كندهي بابا

(سچرں کے اللے بہت داچسپ کتاب) لیکھکا دسیه زیدی

بهره کاسپندت جواهر ال فهرو موتا کاند موتا تابب ببت سی رنگین بصوبریو دام دو روپیه

کے پندت سندرال جی کی لکھی تنابیس

عیمها اور قران 275 صنحه دام دسانی رویه

هندو مسام ایکتا ۱۱۵ مفحم دام باره آنے

مہاتما کاندھی کے بلیدان سے سبق

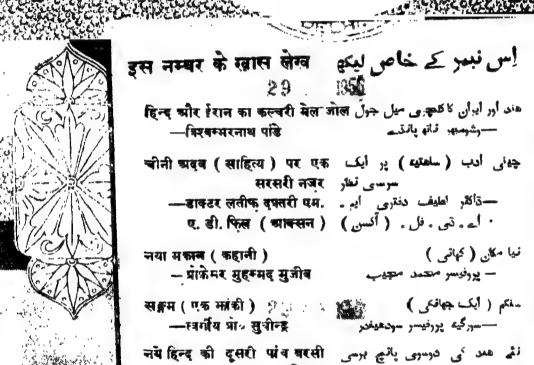
پنجاب همیں کیا سکھانا ھے

بنگال اور أس سے سبق

هندستانی کلیچر سوسائتی

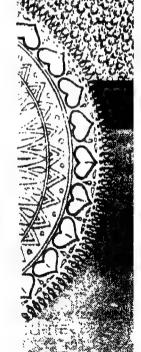
115 متھی گنج العآباد

Printed and Published by Sarach Raumbhai, at the Naya Mind Press, 145, Muthiganj, Aliahabad.



---श्री जे. सी. कुमारपा

इसके कालाका



स्तानी कलचर सासाइटी, इसाडाबाद (श्री) अंगाउँ



देस विदेस के मसलों पर हमारी राय में जहरी सम्पादकी नाट

دیس بدیس کے مثلوں پر عماری رائے میں ضروری سمیادکی نوت

योजना

رسي ۽ كماروپيا

### NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

#### Editorial Board

Dr. Tara Chand M.A., D. Phil. (Oxon)

Mahatma Bhagwan Din

Dr. Syed Mahmud, M.A., Ph.D., Bar-at-Law

Pandit Sundarlal

Bishambhar Nath Pande

#### Editor-in-Charge

Bishambhar Nath Pande

#### Asst. Editors

Suresh Ramabhai Mujib Rizvi

### Annual Subscription

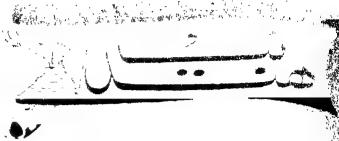
Inland Rs. 6/Foreign Rs. 10/Single Copy As. /10/- only

Can be had from -

## Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.





जिल्द 21 اجلا नम्बर "3

## मार्च 1956 हा

## मार्च 1956 <sub>€</sub>)

| क्या किस से   | सका का | يا كس سے  |
|---|--------|---|
| 1. हिन्द और ईरान का कश्चरी मेल जील  | 119    | 1. هند اور ایران تا کلچری میل جول<br>-رشومبهر ثانه باند                                     |
| 2. चीनी अदय (साहित्य) पर एक सरसरी नज़र<br>—डाक्टर लतीफद्फतरी एम. ए. डी. फिल (आक्सन)                     | •      | <ol> <li>چینی ادب (ساهتیه) پر ایک سره</li> <li>سخانتر لطیف دفتری ایم اُهـ دقی فل</li> </ol> |
| 3. नया मकान (कहानी) —प्रोकेसर मुहन्मद मुजीब   | 140    | <ol> <li>انها مکان ( کہائی )</li> <li>سپررفیسر محمد مجیب</li> </ol>                         |
| 4. ग्रुहम्मद साहब की कुछ हदीसें<br>—अनुवादक: श्री मुजीब रिज्ञवी   | 147    | 4. محمد ماهب کی کچ حدیثوں<br>انورادک: شرق مجیب رضوی   |
| <ul><li>इ. व्याद प्रेशर का मज़ें</li><li>—श्री लिकोनार्ड विलियम्स</li></ul>                             | 150    | <b>ة.</b>   |
| 6. सङ्गम (एक मांकी)<br>—स्वर्गीय प्रो॰ सुधीनद्र   | 156    | 6. سنگم ( ایک جهانکی )<br>—سورگیم پرونیسر سودهیادر  |
| 7. नये हिन्द की इसरी पांच बरसी योजना —श्री जे. सी. इमारप्पा   | 159,   | <ol> <li>7. نئے هند كى دوسرى پانچ يوسى يوجه</li> <li>—شرى چے . سى . كاربها</li> </ol>       |
| 8. हमारी राय  | 170    | 8. هماری رائے۔<br>شانتی کا بجٹ اور جلک کا بجٹ   |
| —युन्द्रत्लालः आइषन दावर के नाम<br>बुलगानिन का पत्र—युन्दरलालः इलाज<br>का देसी तरीका—मोद्दनलाल नेद्द्रः | K      | سسندر الل؛ آئزنهاور کے ا  |
| का देवा गणका नार्दनासास नार्दन  | •      | ديسي طريقهموهن ال فهرر  |

#### विश्वस्थरताथ पांडे

ईरान में भारत के राजवृत माननीय डाक्टर ताराचन्द ने भारत और ईरान के करूचरी मेल जोल पर तक्करीर करते

हये कहा था-

''हिन्दुस्तान और ईरान एशिया के पेसे दो देश हैं जिन्हें कदरत ने एक दूसरे से पास पास बसाया है, बीच के पहाड़ी के सिलसिले और फैला हुआ समन्दर कभी भी दोनों तरफ से लोगों के मेल जोल को नहीं रोक सके. इन बीच की इकावटों की वजह से दोनों तरफ से साहसी और प्रेमी लोग और भी क्यादा एक दूसरे की तरफ खिंचते रहे हैं. जब से इनसान की तारीख या इतिहास शुरू होता है उसके पहले सं आज तक लगातार काफिले के काफिले जमीन के और पानी के रास्ते पहाड़ों, जंगलों, रेगिस्तानों श्रीर समन्दर को पार करते हुए इधर से उधर और उधर से इधर आते जाते रहे हैं.

"मालूम पड़ता है कि इन दो मुल्कों के लोगों ने लगभग एक साथ एक ही बक्षत इनसानी तहजीब की उन्नति की मंजिलें तय करनी शुरू कीं. यह दोनों मुल्क अरब सागर के हो सिरों पर हैं. पश्छिम के सिरे पर क्रारूं नदी दक्किनी जागरूस में से बहती हुई और उन मैदानों में से होती हुई जहां ईरान की सबसे पहली सभ्यताओं ने जन्म लिया था, ईरान की खाड़ी में जाकर गिरती है. पूर्व में सिन्ध नदी, जिसका निकास हिमालय की बरफानी चाटियों से है, पंजाब श्रीर सिन्ध के मैदानों को सैलाब करती हुई किसी जमाने में कच्छ की खाड़ी में जाकर गिरती थी. क्रारू और सिन्ध दोनों पहाड़ी के पत्थरों और तरह तरह की उपजाऊ मिट्टी को अपने साथ ढकेलती, इमेशा अपना रास्ता बदलती और इन मुल्कों के अलग अलग हिस्सों को उपजाऊ बनाती रहीं हैं.

"अरब सागर के इन दोनों सिरों पर इनसानी तहजीब साथ-साथ शुरू हुई. दोनों जगह साथ-साथ शहर आबाद हुए, सोसी बाड़ी, पशु पालन और धात की चीजों के बनने के साथ-साथ दोनों जगह इनसान एक बहुत बढ़े दरजे तक क़ुद्रत की गुलामी से एक साथ आजाद हुआ, दौलत और विजारत, सामाजिक संस्थाएं, राज सरकार, इल्म भीर हुनर दोनों जगह फले फूले और दोनों जगह की सभ्यताओं को तरकती देने जरो. पच्छिम में तखते जमशीद (परसी पोतिस) बारा, काराज और निशायन्य, वचर में अस्तराबाह केरे बार अधीय रेएनी रक्षरों की कहाई से وشوه بهرناته بالتسه

🛁 ایوان میں بھارت کے راہدوت ماندید ، ڈاکٹر تارا چند نے بھارت اور ایران کے انچری میل جول پر تقریر کرتے ہوئے کیا

والعندسة ان أور إيران إيشيا ك أيسم دو ديش هيس جنهيس قدرت نے ایک درسرے سے پاس پاس بسایا ہے . بیچ کے پہاڑی کے سلسلے اور پھالا ہوا سمندر کبھی بھی دونوں طرف سے لوگوں کے مثل جول کو نہوں روک سکے ، ان بینے کی رکارٹوں کی وجہ سے دونوں طرف سے ساھسی اور پریمی لوگ آور بھی زیادہ ایک درسرے کی مارف کهندی رقے هیں . جب سے اِنسان کی تاريع يا اِتهاس شروع هوتا هي أس كم بهل سے أب تك لكانار قائلے کے قائلے زمین کے اور بائی کے راستہ یہ آروں جنگلوں ' ريكستانين أور سمندر كو يار كرتے عول إدهر سے أدهر أور أدهر سے انعر أت جات رفي هير.

ومعاوم برتا ہے که اِن دو ملکوں کے لوگیں نے لگ بھگ ایک ساتھ ایک می وقت اِنسانی تہذیب کی اُنتی کی منزایس طے کرئی شروع کیں ۔ یہ دوئوں ملک عرب ساگر کے دو سروں ہو ھیں ، بحیم کے سرے پر قاروں قدمی دکھتی راگروس میں سے بہتی ہوئی اور اُن میدائوں میں سے ہوتی ہوئی جہاں ایران کی سب سے بہلی سبپیتاؤں نے جنم لیا تھا' ایران کی کھاڑی میں جادر گرتی هے پورو میں سندھ ندی جس کا نکاس همالیه کی برفائی چوتیوں سے اے اینجاب اور سندھ کے میدانوں کو سیالب فرئی هرئی کسی زمانے میں کیچھ کی کھاڑی میں جاکر گرتی تھی ۔ قاروں اور سندہ دونوں بہاری کے پتھروں اور طرح طرح کی أبحال متی كو أين ساته تعكيلتی ميشه اينا راسته ہدائتی اور اِن ملکوں کے اُلگ الگ حصوں کو اُیجاؤ بناتی رهي هين ،

اعرب ساگر کے اِن دونوں سروں در اِنسانی تهذیب ساتھ رساته شروع هوئي. دونون جكه ساتهدلته شهرآباد هوئي كهيتي باري یشو یالی اور دھاتو کی چیزوں کے بننے کے ساتھ ساتھ دولوں لجکه انسان ایک بہت ہے۔ درجے تک قدرت کی علمی سے أيك ساته أزاد هوا دولت أور تجارت مناملجك سنستهائين ولي شركارا علم إير هنر دونوں جيء يالے يبول أور دونوں جاته کی سبهداوںکو ترقی دینے لئے ، دینچهر میں تخت جمهد ( پرسی پرس ) شرهی کاشان اور تهایند ٔ آتو میں استرابات الأن على من منا ماما المال عبد المال विश्व , क्रीसमं, कांचा, सोना, अवाहिरात और मिट्टी के वह अपने मिले हैं जिन से उस जमाने की इंरानी तह जीव और उसकी तरहाती की मंजिलों का पता चलता है. ठीक उसी जमाने की इस तरह की चीजों माहनजोदाड़ो, हड़ण्या और चिन्य नदी के ज्यास पास के और मुक्तामों की खुदाई में मिली हैं. दोनों तरफ की इन चीजों से साफ पता चलता है कि यह दोनों सम्यताएँ कितनी मिलती जुलती थीं."

इसके बाद दोनों देशों पर आर्य इमलावरों ने, जो बोदों पर सवार और लोहे के हथियार लिये हुये थे, धावा बोदा दिया. उन्होंने इन दोनों मुल्कों को अपने अधीन कर लिया. धीरे-धीरे पुराने बाशिन्दे और नये इमलावार दोनों की नसलें एक दूसरे से रल मिलकर एक हो गई. यही आजकल के ईरानियों और हिन्दुस्तानियों दोनों के पुरखें थे. उनकी ससल एक थी, बोली एक थी, धर्म एक था और कल्चर एक थी.

इन आर्य लोगों के ईरान में बस जाने के बाद उन पर बहां के बारों तरफ की हालतों का पूरा असर पड़ा. ईरान में सरह-सरह के भू भाग हैं—कहीं पहाड़ और कहीं रेगिस्तान, कहीं दरियाओं की घाटियां और बीच के मैदान जो आदिमयों, जानवरों और हरियाली से भरे हुए हैं, और कहीं रेतीले सफ़ाबढ मैदान, जिनमें दूर-दूर तक न कोई जानदार दिखाई पक्ता है और न कोई घास का तिनका, जहां सिवाय हवा की साय-सांय के कोई आवाज सुनाई नहीं देती. उजाले और श्रंधेरे, नेकी और बदी की शक्तियां, वहां साफ अलग अलग काम करती दिखाई देती थीं.

हिन्दुस्तान में इसके जिलाफ प्रकृति ज्यादा नरम, मीठी,
मुलायम और रहमदिल मालूम होती थी, एक दूसरे के बाद
खुलते हुए बड़े मैदान थे जिन्हें बहुत से बड़े बड़े दिया
सांचते थे छीर हर साल मौसमी बारिश जिन्हें फिर से
शादाब कर देती थी. हर साल नई बहार बहां आदमी के
दिमारा में यह ख्याल ही पैदा होने न देती थी कि प्रकृति
की फट्यांची की कहां हदें भी हैं या आवादों के मुकाबिले
में कहीं बीराना भी है.

कुदरत की इन रंगारंगियों ने ईरान और हिन्दुस्तान, दोनों मुस्कों में इनसान के जजबातों को नई उद्दानें और नई कल्पनायें दीं, जो न सिर्फ मौजूद! जिन्दगी से उन्हें निजात का इतमीनान दिलाती थीं बस्कि जन्म जन्मान्तर के लिये उन्हें उम्मीदों से भर देती थीं. इस आवागमन यानी वनासुख़ के बारे में आप ईरान के महान सूकी मौलाना जलाकुदीन कमी का कलाम सुनिये.....

> "हमची सन्त्रा वारहा रोईदाश्रम, हमत सर्वेम्ब्रुक्षद क्रावित दीवाश्रम ।

جہا پیٹی گیس اس اس اس اس کے وہ برتی ملے میں جن سے اس کی ترقی ملے میں جن سے آئی اس کی ترقی ملے کی منزلیں کا پتم چلتا ہے ۔ ٹھیک اُسی زمانے کی اِس طرح کی چیزیں مبھی جودارو ، ہوبیا اور سندھ ندی کے اُس یاس کے اور منامیں کی کودائی میں ملی میں ، دونوں طرف کی اِن چیزوں سے صاف پتم چلتا ہے که یہ دونوں سبھیتائیں کتنی ملتی جلتی تھیں ،

اِس کے بعد دونوں دیشیں پر آریہ حمله آوروں نے ' جو گہروں پر سوار اور لوقے کے هتیار لئے هوئے تھے' دھارا ہول دیا ۔ انہوں نے اِن دونوں ملکوں کو اپنے ادھیں کرلیا ، دھیرے دھیرے پرائے باشندے اور نئے حمله آور دونوں کی نسلیں ایک دوسرے سے رل ملکو ایک هوگئیں ، یہی آجکل کے ایرانیوں اور منستانیوں دونوں کے پرکھے تھے ، اُن کی نسل ایک تھی' ہولی ایک تھی' ہولی ایک تھی۔ ہولی ایک تھی۔

اِن آریم لوگرس کے اِیران میں بس جانے کے بعد اُن پر رہاں کے چاروں طرف کی حالتوں کا پورا اثر پڑا ۔ اِیران میں طرح طرح کے بهوبهاگ هیں'۔۔۔کہیں پہاڑ اور کہیں ریکستان' کہیں دریاؤں کی گھائیاں اور بیچ کے میدان جو آدمیوں' جانوروں اور هریائی سے بهرے هوئے هیں' اور کہیں ریتیلے صاحت میدان' جن میں دور دور تک نه کوئی جاندار دکھائی پرتا ہے اور نه کوئی گهائی کا تنکا' جہاں سوائے هوا کی سائیں سائیں اور نه کوئی آواز سفائی نہیں دیتی ، آجائے اور اندھیرے' نیکی اور بدی کی شکتیاں' وہان صاف الگ الگ کام اوری دکھائی دیتی تھیں ۔

هندستان میں اِس کے خلف پرکرتی زیادہ نوم' میٹھی' ملام اور رحمدل معلوم هوتی تھی' ایک درسرے کے بعد کھلتے هوئے ہوے میدان تھے جنھیں بہت سے ہوئے ہوے دریا سینچتے تھے اور هر سال موسمی بارش جنھیں پور سے شاداب کردیتی تھی، هو سال نئی بہار وهاں آدمی کے دماغ میں یہ خیال هی پهدا هوئے نہ دیتی تھی کہ پرکرتی کی نیاضی کی کہیں حدیں بھی هی آبادی کے مقابلے میں کہیں ویرانہ بھی هے .

قدرت کی اِن رنگارنگیس نے اِیران اُور هندستان' دونوں ملکوں میں اِنسان کے جذباتوں کو نئی اُڑانیں اور نئی کلپنائیں دیں' جو نہ صرف موجودہ زندگی سے اُنہیں نجات کا اِطمینان دلاتی تهیں بلکہ جنم چند تنتر کے لئے اُنہیں اُمیدوں سے بھر دیای تهیں ۔ اِس اَواکس یعنی تناسخ کے بارے میں اُپ اِیران کے مہاں صونی مولانا جلل اُلدین رومی کا نظم سند

همچو سيزة بارها روئيدة أمَّ همت من هفتان قالب ديدة أم .

बस्य प्रका हार्ग वहेवाँ सरवास । महमका देवानियो बादम शुद्स. वसके बरसम के जुमुर्चम कम शबम । इसंबर्ष दीवर बसीरम अज बरार, ता बरारम धाज मसायक बास्तो पर। बारे दीगर अज मखक पर रॉ शबस, बन्दे सन्दर बहुस शायद भाँ शवस ।"

वानी---"मैं सब्जे वानी चास की तरह बार बार पैदा हुआ हूँ, मैंने सात सी सलार जिल्म देखे हैं. मैं पहले जमादात यानी मिही, वस्वर वर्गेरा की हासत में था, इसके बाद नवासात यानी वनस्पति बना. नवातात से निकलकर मैं पद्ध योनि में आया. पद्ध योनि से निकलकर मैं बादमी बना, बादमी के बाद फ्रिश्ता बन्या बीर फ़रिश्ते के बाद जिस केंची हालत को पहुँचू गा वह इस बका गुमान से बाहर है।"

#### दोनों देशों की मज़हबी एकता

ईरान के पैराम्बरों में सबसे चमकता हुआ नाम जरतुरत का है. जरतरत की पैदायश के बक्त ईरान बहुत गिरी हुई हालत में था. अग्निपूजा ने निराकार ईश्वर की जगह ले ली थी. जरतरत की एकेश्वर की पूजा का पुराहितों ने प्रचंह विरोध किया. लेकिन उन्हें अपने मिशन पर अखंड विश्वास था. अन्त में उन्हें कामयाबी हासिल हुई. उन्होंने ईरान को कबीलों के मगड़ों से उठाकर एक विश्वात्मा, सर्व शक्तिमान षहरमण्द की उपासना का उपदेश दिया. रबीन्द्रनाथ ठाकुर के मुताबिक जरतुश्त पहले पैराम्बर थे जिन्होंने धर्म को क्रबीले के देवता के पद से ऊपर उठाकर उसे मानवता की वस्त

जरतुश्त ने ईरानी मजहब को जो नया रूप दिया वह अपने हर पहलू में साफ साफ यह बता रहा है कि ईरानी और वैदिक धर्म दोनों एक ही खानदान से हैं. ऋग्वेद में लिखा है कि "ईश्वर एक है, विद्वान लोग उसे तरह तरह से बयान करते हैं." ईरानी धर्म-पुस्तक श्रवस्ता के मुताबिक्त "श्रहरमज्द ही इस सारी दुनिया का बनाने वाला श्रीर सारी जिन्दगी का मालिक है."

तीन हजार बरसर्पहलं के ईरानी और हिन्दुस्तानी वरुण (इन्द्र), अग्नि, वायु, सोम और मित्र जैसे देवताओं की उपासना करते थे, नामों में बेशक थोड़ा बहुत फर्क हो चला था, जैसे अवस्ता में 'वरण' का नाम 'वरण' है. अवस्ता और ऋग्वेद दोनों मे वरुण को इस सारी दुनिया का बनाने वाला, क्रायम रखने वाला भीर रक्षा करने बाला बताया गया है. वही सर्वज यानी मलीम है, बड़ी समीन और भासमान का बनाने वाला है.

أو جمادي مردم و اللمي اللام وز قدان مردم به حیوان سرز دم مردس أز حيواليو آدم شدم یس چه ترسم کے ز مردم کم شوم حبلة ديكر بميرم أز بشر تا برارم از طایک بال ویر بار دیگر از ملک پررال شوم أنجه أندر رهم أيد أن شهم

یعنی۔۔۔''میں سبزے یعنی کھاس کی طرح بار بار پیدا ہوا ھوں ، میں لے سات سرستر جسم دیکھے هیں میں بہلے جمادات یعلی ملی پھر وغیرہ کی حالت میں نھا ۔ اُس کے بعد نبانات يعلى ونسهاي بنا ، نباتات سے نكلكر ميں يشويو ني ميں آيا ، پھو یونی سے نعل کو میں آدمی بنا، آدمی کے بعد فرشته بنای اور فرشتے کے بعد جس اُونچی حالت کو پہونچونگا وہ إس وقت كدان سے باعر ہے ."

#### دولوں دیشوں کی مذہبی ایکتا

ایران کے پہنمبروں میں سب سے چمکنا ہوا نام زرتشت کا ھے۔ زرتشت کی بیدایش کے رقت ایران بہت گری ہوئی حالت میں تھا۔ اگنی پوجا نے فراکار ایشور کی جگہہ لے لی تھے ، زرتشت کی ایکشور کی لا پوچا کا پروھتوں نے برچند وروں ہ كيا . ليكن أنهين أين مشن در الهند وشواس تها . انت مين أنهيس كاميابي حاصل هوئي . أنهوس لے إيران كو قبيلوں كے جهكروں سے أثباكر ايك وشوأتما' سرو شكليمان أعرمود كى أياسنا کا آیدیک دیا ، رویدراته تهاکر کے مطابق زرتشت بہلے پہنسبر تع جنہوں لے دھرم کو قبیلے کے دیوتا کے پد سے اُویر أُنَّهَاكُو أُسِي مانوتا كي وستو بتايا .

زرتشت نے اِبرائی مذهب کو جو نها روپ دیا وہ اُپنے هو يهلو مين صاف صاف يه بنا رها هے كه إيراني أور ويدك دهرم دونہن ایک هی خاندان سے هیں ، رگوید میں عها هے که "أيشهر أيك ها ودوان لوك أسم طرح طرح سم بهان كرتي هیں ، ایرانی دهرم پستک ارستا کے مطابق "اهرمزد هی اِس ساری دانیا کا بنائے والا اور سازی زندگی کا مالک کے ،"

تین ہزار برس پہلے کے اِیرانی اور ہندستانی وروئٹر ( اِنحر ) اگنی وایو سوم أور متر جیسے دیوناؤں کی ایاسنا کرتے تھے' ناموں میں بےشک تهورا بہت فرق هو چلا تها' جیسے ارستا میں 'ورونٹر' کا نام 'ورنٹر' ہے . اوستا اور رگوید دونوں میں ورونٹر کو اِس ساری دنیا کا بنانے والا قايم ركينه والا أور ركشا كرني - والا بتايا كيا هـ ، وهي سروكية يعلى علهم هـ؛ وهي زمهن أور أسمان كا بنالي وألا هـ؛

क्रिया और जल भीर यल को फैला कर उनमें प्राशियों को अधाया है, वहीं सब क्रम्स जानने वाला और सब का डाकिम है.

वेदों में इसी वरुण को 'असुर विश्व देवस' या असुर मेथा कहा गया है. श्रवस्ता में उसे 'श्रहुरमज्द' के नाम से पुकारा गया है. अवस्ता का 'अहर' वेदों का 'असुर' है. असम्बेद की शुरू की रिचाओं में 'असुर' ईश्वर के अर्थ में ही आया है. ईरानी 'मजदा' के वही मानी हैं जो संस्कृत 'मेथा' के. ऋग्वेद के गुताबिक वैदिक काल में 'देवगण' बौर 'पिरुगरा।' सभी 'मेथा' की खपासना करते थे.

'मित्र' का नाम अवस्ता में 'मिथ्' है. संस्कृत में मित्र का अर्थ सूर्य भी है, ईरानी भी सूर्य के रूप में मित्र की पूजा करते थे. बैदिक वायु ईरानी वयु, बैदिक अन्नि अवस्ता का 'आतरे' है, जो बाद में कारसी में आतरा हो गया. दोनों में अग्नि देवता की पैदाइश बादलों के अन्दर की विजली से बताई गई है. इन्द्र का नाम ज्यों का त्यों अवस्ता में मौजूद है. वेदों में इन्द्र का नाम 'बृत्रहन' है और अवस्ता में 'वृथ्हन' है. यम अवस्ता का 'यिम' है, अप्सरा हैरान में 'पेरिका' हो गई. दोनों का काम तपस्वियों को योग अष्ट करना है.

ईरानी और हिन्दुस्तानी दोनों ऐसे लोगों में से हैं जो खीवन को खुशी और उमंग के साथ देखते थे, दोनों ऊंची किन्त्रगी और नेकी के उसूलों के सच्चे खोजी थे. दोनों ने इस उस्त को पा लिया था कि सब का खुदा यानी ईश्वर एक है. दोनों यह मानते थे कि दुनिया एक ऐसे अच्छे कानून के सहारे चल रही है जो हमेशा से है और हमेशा तक रहेगाः

इसी ख्याल को ईरान के मशहूर सूकी हा क्ज़ ने किस ख्वसूरती के साथ खदा किया है-

> 'ख़रम भा रोज़ कर्ज़ी मंज़िले बीरां बेरबम् शहते अर्थ तक्षवम् वज् पए जानां वेश्वम् ब इवादारिये क ज़र्रा सिफ्रत रहस कुनम ब सबे चरमप खुरांदि दरस्यां बेरबस् फ्राश भी गोयमा अज् गुफ़्तप ख़द दिख शादम बन्दए इरक्रमी अंज हरवी जहां जाज़ादम् नेस्त बर बीडे दिवस जुज अविक्रे क्रामते बार के क्रमम इक्नें दिगर बाद बदाद उस्तादम्'

ं बानी में अबारक बहु बड़ी होगी जब मैं दुनिया की इस उजहां बाराय से विदा ही जंगा, उस दिन में रुदानी सुख की स्रोज में अपने श्रीतम को बृंद्गा.

आध्यमान के अन्तर सारों और उनकी गति को कायम ने प्रति ने कि हैं जो कि की कि की की की كيم والله والأورسي كا حاكم هر .

> ويدون ميں اِسى وروناتر كو السور وعو ديوس يا اسور مهدها كها كها ه ، اوستا مين أح المورمزد ك دام ح يكارا كيا ھے اوستا کا العور ویدوں کا السور ھے رکوید کی شروع کی رجائل میں اسر ایشور کے ارته میں هی آیا هے ، آیرانی امزدہ کے وهی معنی هیں جو سنسکرت امیدها کے ، رگوید کے مطابق ویدک کال میں 'دیوگنز' اور 'یتر گنز' سبھی 'میدھا' کی آیاسلا کرتے تھے .

> المترا كا قام أوستا مين المتهرا في سنسكرت مين متر كا أرته سورید بھی ہے؛ ایرانی بھی سورید کے روپ میں ستر کی ہوجا کرتے تھے . ریدک وایو ایرانی ریو' ریدک اگنی ارستا کا 'آنرے' هے، جو بعد میں فارسی میں آتش هوگیا ، درنوں میں اکلی دیونا کی پیدایش باداوں کے اندر کی بجلی سے بتائی گئی ہے۔ اندر كا نام جهين كا تهون اوستا مين مرجود هـ ، ويدون مين إندر كا نام (ورترهن) هـ أور أوستا مين (ورتهرددون) هـ . يم أوستا كا 'إم' ها ايسرا إيران مين 'پيريكا' هوگئي - درنون كا كام تیسییں کو ہوگ بھرشت کرنا ہے۔

> ایرانی اور هندستانی دونوں ایسے لوگوں میں سے هیں جو جیہن کو خوشی اور اُمنگ کے سانھ دیکھتے تھے' درنیں آرنچی زندگی اور تیکی کے اصواں کے سچے کھوجی تھے ، دونوں لے أِس أصول كو يا لها تها كه سب كا حدا يعنى ايشور ايك هـ. دونوں یہ مانتے تھے که دنیا ایک ایسے اچھے قانوں کے سہارے چل رهی هے جو همیشه سے هے اور همیشه تک رهیگا .

> اسی خیال کو ایران کے مشہور صونی حافظ لے کس خوبصورتی کے ساتھ ادا کیا ہے۔

> > خرم آن روز کوین منول ویران بروم راحت جال طلبم وزيدً جانان بروم به هواداریثه او زراصفت رقص کلم به لب چشمه خررشهد د خشال بروم فاهى مى كويم وأز كنتئه خود دل شادم بندلة مشقم و ازهر دو جهال أزادم نهست بر لوے دام جز أنف قامت يار چه کنم حرف دگر یاد نداد آستادم

يعلى المبارك وه گهري هوگي جب مهن دنيا كي اِس آجري سرائل سے بدا هودنا ، أس دن ميں روحاني ساء كى كورج ميں انے بریام کے ڈعرفڈھرٹکا ۔

्या के स्वाध है। वह की तरह मान्या हुना, हरू है इसामकारण पूर्व अपने प्रत्य तर पहुँच्या. में दान का बन्दा हूँ भीर दोनों जहान से भागा हूँ. मेर दिस की संस्ती पर सिवान मेरे प्रिमतम परमात्मा अविक् के सिवा कोई दूसरा अचर नहीं लिखा है. में क्या कहाँ मेरे गुक ने मुक्ते कोई दूसरा अचर सिवामा ही नहीं."

ाषा और साहित्य

हिन्द ईरानी भाषा समूह में कुछ समान खासियतें हैं सिकी बजह से हिन्द ईरानी भाषा गिरोह अन्य आर्थ था गिरोहों से एक अलहदा इस्ती रखता है. हिन्द ईरानी गिरोह में तीन बुनियादी स्वरों की जगह सिर्फ एक अकार वोनों में उदासीन स्वर की जगह इकार है. अन्तस्य , ल का हिन्द ईरानी गिरोह में अभेद मिलता है. भाषा शिषकों का विचार है कि ये दोनों अन्तस्य हिन्द ईरानी ऋ और ल हा गये हैं. पहली भे शी के कंठ्य स्पर्श हिन्द शानी गिरोह में क, ख, ग, घ, से श, शह, ज, पह, में दल गये.

प्राचीन ईरानी और वेदों की भाषा में इतना साम्य है ह थाड़ी सी तबदीली से एक दूसरे में बदल जाती है. ानगी के तौर पर अवस्ता की एक पंक्ति सुनें...

"वो यथा पुथ्म तडरुनम् इम्रोमम बन्दएंता मश्यो." व इसका संस्कृत रूपान्तर सुनें:

"वो यथा पुष्म तस्याम् सोमं वन्दैत मर्त्यः."

ईरानी की दो उप शाखायें प्राचीन काल में मिलती हैं. क 'परशि' और दूसरी 'अवस्ती', इसी भाषा का कई ताब्दी बाद बाला रूप पहलनी है. इसकी एक रौली में गमी लक्कों की भरमार है.

ईरान के साथ हिन्दुस्तान के गहरे करूचरी सम्बन्धों ते बजह से भारत की सूबाई जवानों के और खास तौर र हिन्दी के बहुत से शब्द फ़ारसी जवान में दाखिल हो ये हैं. फारसी म हिन्दी शब्दों को मिजावट महमूद राजनवी व जमान से शुरू हुई. उस जमान के कवियों और लेखकों से फिरदौसी, उन्सरी, फरखी, असदी और सनाई ने कोतवाल, नीबहार, नगन, कतारा, कटार, चन्द्रन और गानी—शब्दों का प्रयोग किया है. दूसरे ईरानी शायरों ने जो हिन्दी लक्ष्य इस्तेमाल किये हैं जरा उनकी बानगी देखिये: अगर, राबत, पायक, सेवची, मीलकी बरीरह.

फारसी जवान के सबसे पहले रूप देने वाले इंजल-गरकीसी दे, रोदकी को सुस्तान-वस-शोरा कहा जाता है.

میں عشق کا بندہ ہوں اور دوئوں جہاں سے آزاد ہوں میوے دل کی تختی پر سوائے میوے پریتم پرمانیا آنف کے سوا کوئی دوسوا اکثر نہیں لیا ،

میں کیا کروں میرے گرو نے مجھے کوٹی عوسرا انھر سہایا ہے تہیں ۔''

#### بهاغا أور ساهيته

هند ایرنی بهاشا سبوه میں کچھ سبان خامیتیں هیں جس کی وجہت سے هند اور ایرانی بهاشا گروہ انبتہ آریہ بهاشا گروہوں سے ایک علیتحدہ هستی رکھتا ہے ، هند ایرانی گروہ میں تین بنیائی سروں کی جکہت صرف ایک آبار ہے ، درنوں میں آداسین سور کی جکہت اکار ہے ، انتسته را ل کا هند ایرانی گروہ میں ایھیت ملتا ہے ، بهاشا وشیشکیوں کا وچار ہے کہ یہ دونوں انتسته هند ایرانی میں رر اور او هو گئے هیں ، پہلی شرینی کے انتسته هند ایرانی میں رر اور او هو گئے هیں ، پہلی شرینی کے کتیبه اسهرش هند یرانی گروہ میں کا کہا سے هی شت ن شاہ کا میں بدل کئے ،

پراچین ایرانی اور ویدوں کی بهاشا میں اِتلا سامیہ ہے که تهروی سی تبهدیلی سے ایک دوسرے میں بدل جاتی ہے . بالگی کے طور پر اوستا کی ایک پنکتی سنیں...

"اوس یتها پوتهرم تو روئم هومم بندایتان مشهو" آب اِس کا سنسکرت روپا نتر سلین : "ایویتها پترم تورنم سوس وندیت متریع ."

ایرانی کی دو آپ شاکهائیں پراچین کال میں ملتی هیں ۔۔۔ایک 'پرشی' اور دوسری 'اوستی'، اِسی بهاشا کا کئی شقابدی والا روپ پہلوی ہے ۔ اِس کی ایک شیلی میں سامی لفظاہی کی بهرمار ہے . .

ایران کے ساتھ ھندستان کے گھرے نلتچری سبندھوں کی وجھت سے بھارت کی صوبائی زبانوں کے اور خاص طور پر ھندی کے بہت سے شبد فارسی زبان میں داخل بھو گئے ھیں ۔ مارسی میں ھندی شبدوں کی مارت محصود غزنہی کے زمانے سے شروع ہوئی ۔ آس زمانے کے ویوں اورلیکھکوں جیسے فردوسی' عاصری' فرخی' اسدی اور ثنانی نے۔۔۔وتوال' نوبھار' لکی' کتار' کتار' چندن اور پانی۔۔۔شوتوال' نوبھار' لکی' کتار' شاعووں نے جو ھندی کے لفظ استعمال کیئے ھیں فرا ان کی شاعووں نے جو ھندی کے لفظ استعمال کیئے ھیں فرا ان کی شاعووں نے جو ھندی کے لفظ استعمال کیئے ھیں فرا ان کی

فارسی زبان کے سب سے پہلے روپ دینے والے حقول ادارہ کا جاتا ہے۔

क्यांकी शावरों में साम बाम क्योकी, जनसरी, अध्यादी, मनुषेहरी और अध्यी के हैं, उस बमाने का सबसे बढ़ा फारसी शायर फिरदौसी था, जिसने प्राचीन हैरात की शान को फिर से चमका कर अमर कर दिया.

माचीन ईरानी कल्चर की यह बेदारी महज शेरो-शायरी सक ही महदूद नहीं रही, फाराबी, इब्न सीना, अबुरेहान, अवाबेकती जैसे बढ़े बढ़े फिलासफर इसी जमाने के थे. तसम्बुफ के, फुल सबसे पहले ईरान में ही खिले. ग्रुरू के स्कियों में इबाहीम अजम, अहमद ख्जविया, अबुअली शाकीक, यहिया बिन मञ्जाज, कृजील बिन अयाज, मारूक करली, चयुल हुसेन नूरी और वायजीद विस्तामी के नाम इषज्ञत से याद किये जाते हैं.

कदियों और कर्मकांड के बन्धनों से गुक्त इन सदियों की जाजाद ज्याली की बानगी देखिये:

"विश्व वयस्य जावर कि बज्जे अकवरस्य क्रज हज़ारी कावा यक दिख बेहतरस्त !" "काबा पुनवाहे ख़बी के बाज्रस्त विश्व गुजुरगाहे जलीखे अकवरस्त !" "विया तवाफ्रे दियाँ कुन कि कावए मख्रफ़ीस्त कि भाँ प्राचीच विना करीं हैं खुदा ख़ुद साफ़्छ।" यानी-"विश्वी के विश्व की हाथ में ले. क्यों कि यही सबसे बबी हज्ज है हजारों कानों से एक दिख नदकर है."

"कावा तो आज़र के बेटे ब्लील का कायम किया हुआ है और दिश घरताह के भाने जाने की जगह है."

"ए मेरे दिल! दिलों की परिक्रमा कर, उनमें ही कावा विद्या हुआ है, यह पत्थर का कावा तो खलील का बनाया इसा है और यह दिल के अन्दर का कावा सुद सुदा का जनावा हुआ है."

#### तसञ्जूफ और वेदान्त

आइये इस तसब्बुक या वेदान्त के नये दौर पर जरा हम शीर करें. यह दौर ज्ञान की खांज का दौर था. भारत के है बैदिक दर्शनों में से आखिरी दर्शन उत्तर मीमांसा यानी बैदान्त है, वेदान्त के मुताबिक यह सारा विश्व माया से पैदा हुआ, यह सब एक घोखा है. परमात्मा यानी बहा ही असल इक्रीक्रत है. शुरू में वही वह था और अपनी ही जोत बानी बपने ही नूर से रोशन था. उसी से यह क़दरत बज़द में बाई बीर लाखीं करोड़ों रूप बने. पर है यह सब माया बाली धरेब, और असल वजूद बानी असलियत एक at t.

رار ك ماري على على نام نايعي المصري المجدي بمورد او لمن عرفين . أس رمال كاسب م برا نارسي یاعر فردیوسی افان جس نے پراچین ایران کیشان کو پہر سے چمکا

. براچین ایرانی کلچر کی یه بیداری محض شعررشاءری تک ی متعدود نهیں رهی . فارابی ابن سینا ابوریحان البیدونی جیسے بوے برے فلسار بھی اِسی زمانے کے تھے . تصوف کے پہل سب سے پہلے ایران میں ھی کہلے ، شروع کے صوفیوں میں أبراهيم اعظم الحمد خزويه أبو على شقيق يحييل بن مماذ تفيل بن ایاز معروف کرخی عبدالحسین نوری اور بایزید بسطامی کر نام عوت سے یاد کئے جاتے میں .

روزهیوں اور کرم کانت کے بندھنوں سے منت اِن صدیوں کی إلى خيالي كي بانكي ديكها:

دل بدست آور که حبے اکبرست از هزاران کعبه یک دل بهترست كعبه بنكاة خليل أذرست دا گذرگاه جلیل اکبرست! دلا طواف دلال كن كه كعبة منغفيست كه أن خليل بنا كردة أبي خدا خود ساخت یعنی ۔۔۔۔ <sup>ور</sup>کسی کے دال کو ہاتھ میں لے' کیونگه یهی سب سے بڑی هے.

> مواروں کمبوں سے ایک دل بوھکو ف ''کمبت تو آنر کے بیٹے خلیل کا قایم کیا ہوا ہے اور دل الله کے آئے جانے کی جانب ھے"

"الے میرے دل داوں کی پریکرما کر؛ أن میں هی کعبه چهپا هوا هـ، وه يتهر كا كعبه تو خليل كا بنايا هوا هـ اور يه دل كـ اندر کا کعیم خود خدا کا بنابا هوا هے ."

#### تصوف اور ويدانت

آئفہ اِس تصوف یا ویدائت کے نشہ دور پر فرا هم فررکریں۔ یه دور گیان کی کهوج کا دور تها . بهارت کے چه ویدک درشنوں میں سے آخری درشن أتر میمانسا يعنى ويدانت هے . ويدانت کے مطابق یہ سارا وشو مایا سے دیدا ہوا ۔ یہ سب ایک دھوکا ھے ، پرماتما بعلی برهم هی اصل حقیقت هے . شروع میں وهی ولا تها أور أيني هي جوت يعني أين هي نور سے روشن تها . أسي سے یہ قدرت رجود میں آئی اور لاہوں کروزوں روپ بلے ۔ پر فیہ یه سب ملیا یعلی فریب؛ اور امل وجود یعلی املیت ایک

أُس يرماننا مين ننا هو جانا هي موكش يعلي لتهات في . امن کا ایک هی راسته ها جسم یوک یعنی سارک کیتے هیں . س اوک کے راستے میں بہت سے مقام عیں ، ویدانت میں بن مقاموں کو یم' نیم' نپ' چت پرسانم' چت پرنکوم' آسن' ورقايام ورتهاهار دهدان دهارنا فروللب أور سمادهي كهتم هيل نهیں کو نصرف کی اِمثالحوں میں تہذیب آلنفر' نصفتی دل' نفس كشي؛ رياضت النقهم قلب الكرا فكرا مجاهدة أشفالا حسب دم مرافيه مكاشفه مشاهده حال ديداد اور وجد كها مهن . تصوف کهما هـ --اید هونگس کو بند کرو اینی اِنکهس کو باد کرو' اپنے کالوں کو باد درو اور تب تبھیں اپنے اقدر حق کی مورت دکھائی دیکی . ویدانت کہنا ہے۔۔جب آدمی کی سب الدريان يعلى أس كے سب حواس باهر كى تمام چهزوں سے أينے میں کھینچکر اپنے اندر کی طرف مرتے میں اور من پوری طرح النت أور نهي ما حانا ها تب أدما أين كو ديكم ياتي ها نب وہ دیکھتی ہے کہ سب کچھ وہی وہ ہے اور کچھ ہے می نہیں اس اُدمی کی آنما پرمانا یا ررح کل کے ساتھ ملعر ایک هو جاتی هے؛ تب کوئی غیر نہیں رہ جاتا ۔

جب ایرائی تصوف اور بهارتیه ویدانت هندستان کی سوزمین پر ملے تو هندو اور مسلمان دوتوں میں تلاش حق کے ائے ایک نیا جوهو، پیدا هوا . دونوں میں اِتنی صاف سمانتا یعنی مشابهت تھی که دونوں نے ایک دوسرے کو پہنچان لیا . نصوف کے دایرے میں کفر اور اِسلام کے فرق مت گئے ، اِس میل کو پرم صوفی فریدالدین عطار نے اِن بهاؤں میں ادا ایا ہے :

''کفر و اِسلم در رهت پویان وهده الشریک الگویان کفر کافر را و دین دیندار را فرهٔ ورد دل عطار را .'''

الله کی راه میں دوئوں آسی آیک الله کی راه میں دوؤ رھے الله ایک هے آس سا کوئی میں دوئوں کے وہ الله ایک هے آس سا کوئی

विश्वसान की विशास किसाबार हैं। च्या के बहुत के श्रास्त की कारणा ही जहा है. वही वह है, वही त् है, वही से कुछ है. माया में फंस कर वह कारणा व्यापन का भूल जाती है जीर फिर जागती है जीर अपने का पहचानती है. इसी का नाम तसव्युक्त है. तसव्युक्त के मुताबिक जुदा एक और सनातन है. उसका न कोई पैदा करने वाला है और न उससे कोई पैदा होता है. वह ग्रानी है यानी उसको न कोई मदद देता है और न वह किसी की मदद चाहता है. वह आगे है न पीछ है. न नीचे है न अपर, वह नजदीक से नजदीक है और दूर से दूर, फिर भी न उसकी कोई केंकियत बयान की जा सकती है और न वह क्यास में आ सकता है.

इस परमात्मा में फना हो जाना ही मोख यानी निजात है. इसका एक ही रास्ता है जिसे योग यानी सलक कहते हैं. इस योग के रास्ते में बहुत से मुक़ाम हैं. वेदान्त में इन मुक्कामों को यम, नियम, तप, चितप्रसाद्म, चित्त परिक्रम, भासन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, निर्विकल्प श्रीर समाधि कहते हैं. इन्हीं को तसब्बुक की इस्तलाहों में तहजीबुन्नकर, तसकीयएदिल, नक्ष्सकुशी, रियाजत, तनकीयए क्रल्ब, जिक्र, फिक्र, मुजहिदा, अशरााल, इन्सद्म, मुराक्रिबा, मकाशका, मुशाहेदा, हाल, दीदार और वज्द कहते हैं. तसन्वुक कहता है-अपने होटों को बन्द करो, अपनी शांखों को बन्द करो, अपने कानों का बन्द करो और तब तुम्हें अपने अन्दर हक की सूरत दिखाई देगी. वेदान्त कहता है—जब बादमी की सब इन्द्रियां यानी उसके सब हवास बाहर की तमाम चीजों से अपने में खिचकर अपने अन्दर की तरफ मुद्देत हैं और मन पूरी तरह शान्त और निश्चल हो जाता है तब आत्मा अपने को देख पाती है, तब वह देखती है कि सब कुछ वही वह है और कुछ है ही नहीं, तब भादमी की आत्मा परमात्मा या रूहेकुल के साथ मिलकर

एक हो जाती है, तब कोई रीर नहीं रह जाता.

जब ईरानी ससन्तुक और भारतीय वेदान्त हिन्दुस्तान की सरजमीन पर मिले तो हिन्दू और मुसलमान दोनों में तलाशे हक के लिये एक नया जोश पैदा हुआ। दोनों में इतनी साफ समानता यानी मुशाबेहत थी कि दोनों ने एक दूसरे को पहचान लिया. तसन्तुक के दायरे में कुफ, और इसलाम के फ़क़ मिट गये. इस मेल को परम स्की फ़रीदुरीन असार ने इन भावों में अदा किया है:

"क्ष्मो इस्लाम दर रहत पोयाँ बहुत्युकारारीक खा - गोर्था कुक काफ़िर रा व दीं दीवार रा ज़रेषु वर्षे दिख भक्तार रा।"

"क्रफ बोर इस्लाम दोनों उसी एक अस्ताह की राह में दीव रहे हैं. दोनों बहुत कह नहें हैं" कि वह अस्ताह एक है, उस का कोई कार नहीं हुन् काफिर के हुवारिक रहे और दीन दीनदार की. क्रिक्ट के दिश के लिये प्रेम क्यी गुसाब का एक वृर्श काफी है."

मुज़र्ब रक्त्र भीर प्रेम धर्म

आपस के इसी मिलाप से वह गहरी धारा वह निकली जिसे दुनिया मजहबे इरक यानी प्रेम धर्म के नाम से प्रकारती है और यह मजहबे इरक या प्रेम धर्म है क्या ? दुनिया की खाहिशों से दिल को हटाना, जो मिल गया उस पर सन्तोच करना, आदमी धादमी से मुह्ब्बत करना, परसात्मा यानी रुद्देश्वल से ली लगाना, जिन्होंने दुनिया को खंश दिया है उनका सत्संग करना, गुरु या पीर की इपजत करना, यही प्रेम धर्म का निचोड़ था.

इन प्रेम धर्मी स्फियों के सिरमीर मनस्र थे, जो यक ऐसे मुकाम पर पहुंच गए थे जहां से वे कह सके: "अनलहक यानी में ही बद्धा हूँ." इसी मुकाम पर पहुंचकर वायजीद विस्तामी ने कहा था: "मुबहानी मा आजमशानी". ईरान के मशहूर स्फियों में फ़रीदुहीन अतार, अबुतमजद सनाई और सब में बुजुर्ग और प्रेम धर्म के सरवाज मीलाना जलालुदीन रूमी बलखी थे. हिन्दु-स्तान में कवीर, नानक, दादू, तुकाराम, मुईनुदीन विश्ती, बाबा करीद, रज्जब, सरमद और दाराशिकोह ने और बाहर से आकर शम्सतवरेज ने इस प्रेम धर्म को फैलाया. इस से अस्यम्, शिवम्, मुनदरम् के वे पुतले तैयार हुए जिनको वेसकर आज भी हमारी रगों में खून तेजी से दौड़ने लगता है. इसी दिल से वे जजवे, वे विचार, वे भावनाएं पैदा हुई जिन्होंने कुछ दिनों के लिए करोड़ों हिन्दुस्तानियों के दिलों से दुई को मिटा दिया.

प्रेमियों के इस धर्म को बयान करते हुए मौलाना रूम करमाते हैं:

> "मूसिया आवाब दानों वीगरम्य आशिकाँ सोको, वरूनों दीगरम्य हिन्दियाँ रा इस्तकाहे दादाक्रम्य सिन्धियाँ रा इस्तकाहे दीगरम्य सूबदाय बस्त करदन आसदी मैं बराय प्रस्त करदन आसदी

मज़्दने इरक मज़ हुना मिरवत बुदास्त बारिकॉ रा मज़्दनो मिरवत बुदास्त

"ऐ मुखा! आदाब मानी कमं बाद के जानने वाले और होते हैं और वह प्रेमी जिनके अन्दर विरह की आय ल्गी हुई हो दूसरे होते हैं.

्ष्ट्रमने हिन्तुस्तान के रहने वालों को पूसरी तरह का कर्म कांक बता दिया है और किन्य के रहने वालों को दूसरी तरह का कर्म बोद बता दिया है. مہرا ابھی بھا گھ گھ کی حوارقت رہے کور دین دیادل کی۔ بعار کے حل کے گھ پویم روان گلب کا ایک ذرہ کانی ہے۔''

# ملعب علقيد أور يويم بمرم

آپس کے اِسی مائی سے وہ گہری دھارا بہ نکلی جسے دنیا مذھب عشق یعنی چربہ دھرم کے نام سے پکارتی ہے اور یہ مذھب عشق یعنی چربہ دھرم کے نام سے پکارتی ہے دل کو مثانا محب عشق یا پرہم دھوم ہے کیا آس پر سنتوش کرنا آدمی آدمی سے محب کرنا پرمانما یعنی روح کل سے او لگانا جنہوں نے دنیا کو نہ دیا ہے آن کا سبع سنگ کرنا گرو یا پھر کی عزت کرنا ہیں پرہم دھرم کا نجرز تھا ۔

ان پریم دهرمی صونهوں کے سرمور منصور تھ جو ایک ایسے مقام پر پہوئے گئے تھے جہاں سے وے کہ سکے۔۔۔۔ والالحق بعنی میں هی برهم هوں۔ اسی مقام پر پہوئچکر بایزید بسطامی نے کہا نہا تا اسبحانی مااعظم شائی اور سب میں بزرگ اور پریم دیورا دینی عطار ابولمزد صفاعی اور سب میں بزرگ اور پریم دیورم کے سرتاج مولانا جالل الدین رومی بانخی تھے ، هندستان میں کبھر نانک دادو تکا رام معین الدین چشتی بابا نرید رجب سومد اور دارا شکوہ نے اور باعر سے آئر شمس توریز نے رجب سومد اور دارا شکوہ نے اور باعر سے آئر شمس توریز نے اس پریم دھرم کو پھیلایا ، اِس سے ستیم شوم سندرم کے وے پنانے تیار ہوئے جن کو دیا کہ اس دور نے بھی ھماری رگوں میں خون بنانیوں سے دورتے اکتا ہے ، اِسی دل سے وے جذبی وے وچار نوی ہو اور باغرس کے دیا تعزی سے دورتے اکتا ہے ، اِسی دل سے وے جذبی وے وچار نوری کو مثانیوں کے دلوں سے دورتے کو مثان دیا ،

پریمیوں کے اِس دھرم کو بیان کرتے ھوٹے مولانا روم فرماتے میں :

الموسیا آداب دانان دیگراند عاشقان سوز درونان دیگراند الاهدیان را اِمتلاحه دیگراند سلاهیان را اِمتلاحه دیگراند از برائه وصل کردین آمدی فرانه فصل، کردین آمدی الامذهب عشق ازهنه ملحدداست عاشقان رامذهب و ملتخداست

''اے مرسی ! آداب یعنی کرم کانڈ کے جانئے والے اور ھوتے میں اور وہ پریسی، جن کے البدر بری کی آگ لکی ھوٹی ھو دوسرے ھوتے ھیں و

واهم نے هندستان کے رہانے والیں کو هوسری طرح کا کوم کائٹ یکا دیا ہے اور سندھ کے رہنے والیں کو دوسری طرح کا کوم کائٹ یکا دیا ہے۔ हुने कर के जिसके के किए सभा समान्ता. एक की दूसरे में असने के लिए कही बेका गया था. प्रेम को कर बमों के असप है. प्रेमी के लिए एक खुदा ही उसका दीन और .खुदा ही उसका दमें है. "

प्रेम के इसी धर्म ने प्रेम के देवता सरमद को लखपती ककीर बनाकर ईरान से हिन्दुस्तान की खाक छानने के ए प्रोत्खाहन दिया. प्रेम का यह निर्मीक देवता इसी दिखी सूली पर नहीं बल्कि प्रेम की बेदी पर क़ुरबान हो गया.

सूबी के तकते से प्रेम धर्मियों को दावत देते हुए सरमद कितने इतमीनान के साथ कहा था:—

"बासिको इरक बुतो बुतगरो बन्धार कीस्त कावको दैशे ससजिद इसाजा तारीकीस्त ! गर दरवाई व चमने बहदने बकरंगी वी गीर कुन बाशिको साश्को गुलोग्नार बकीस्त ! तक करदम काराहाए जुमला काज मावाए जेश नूरे इक् रा दीदाक्षम काज जेर ता बाखाए जेश ! गर तु मी प्रवाही चुनी इसशों जुदा काज जाए खुद ता बबीनी मज़हरे इक् जुम्ला सर ता पाए खेश !" "बाशिक और इरक, मूर्ति और मूर्तिकार कीन हैं ? कावा, बुतजाना और मसजिद सब जगह अंधेरा है. कावा, बुतजाना और मसजिद सब जगह अंधेरा है. कावा तु बहदत की मकरंगी के चमन में बाकर देखे तो तू पायेगा कि बाशिक और माञ्चक, फूल और कांट सब एक हैं. मैं हिंगों और कम कोड सब को तक करता हूं, में सर से पैर तक सवाई की रोशनी को देख रहा हूं,

म कादमा भार कम' काड चन का तक करता हूं, में सर से पैर तक सनाई की रोशनी को देख रहा हूँ, भगर तू भी मेरी तरह होना चाहता है तो कदियों का त्याग कर, ताकि तू भी मेरी तरह सनाई के ज़हूर को देख सके,"

### न्द-ईरानी कला

ईरान और हिन्दुस्तान के हजारों बरस के आपसी लाप का नतीजा यह निकला कि दोनों मुल्कों ने एक दूसरे कला और संस्कृति की दौलत से मालामाल किया. सबसे ले मशहूर ईरानी शहनशाह दारा के जमाने में भारत ानी कला के मेल के नमूने हमें मिलते हैं. चन्द्रगुप्त मौर्य कई ईरानी तौर तरीक़े अपने दरबार में जारी किए. ईरान असर से ही भारत में वह खरौष्ठि लिपि चली थी जो रसी की तरह दाहने से बाएं को लिखी जाती है. सम्राट गोक के बहुत से शिलालेख इसी खरोष्ठि में हैं और उनमें त से ईरानी शब्द आते हैं. पहाड़ों, चट्टानों और स्तन्मों लेखा खोड़ने का रिवाज भी सम्राट अशोक ने हारा से اللب كو دوسرے سے بھارتے كے لئے نہيں بهيجا كيا تيا ،
البريم دهم سب دهرس سے الک هے .

پریسی کے لئے ایک خدا هی اُس کا دین اور خدا هی اُس دهرم هے ."

پریم کے اِسی دھرم نے پریم کے دیوتا سرمد کو لکھیٹی سے فقیر اُنیا کو اِیران سے وہادستان کیخاک چھاننے کے لئے پروتساھی دیا ، اُنیویم کا یہ تربھیک دیوتا اِسی دلی میں سولی پر تبھی بلکہ پریم کی وہدی پر تربان ھو گیا ،

سولی کے تخیے سے پریم دھرمیوں کو دعوت دیتے ھوٹے سرصد کے کتنے اطمینان سے ساتھ کیا تھا:--

"عاشقو عشق بت و بتكور عيار كيست کعبه و دیر و مسجد همه جا تاریکیست ا گر در ائی به چاق وحدت یکرنگی بین غور کن عاشق و معشوق و گل و خاریکهست ا والرك كريد جاراهائم جمله أز ماوأئم خويهي أور حتى رأ ديدة أم أز زير تا بالأنه خويش أ كرتو مي خواهي چنين هنه شان جدا ازجائه خود تابه بيني مظهر حق جمله سرتا يائه خريش ! " الماشق أور عشق سورتي أور مورتيكار كون هـ ال كمبه بت خانه اور مسحد سب جايع اندهيرا هـ . اگر تو وحدت کی یکرنگی کے چمن میں آکر دیکھے توتويائيكا ،عاشق أور معشوق ، يهول اوركائت سب أيك هيل. رومیں روزهیوں اور کرم کا ثق سب کو ترک کرتا هوں <sup>4</sup> میں سر سے پیرنک سچائی کی روشنی کو دیکھ رہا ہوں 6 اگر تو بھی میری طرح هونا چاهنا هے تو روزهیوں کا تیاگ کر' تاکه تو بھی میری طرح سچائی کے ظہور کو دیکھ سکے ما

### هند ایرانی کلا

ایران اور هندسان کے هزاروں برس کے آپسی ملاپ کا نتیجہ یہ نکلا کہ دونوں ملکوں نے ایک دوسرے کو کلا اور سنسکرتی کی دولت سے مالا مال کیا ، سب سے پہلے مشہور ایرانی شہنشاہ دارا کے زمانے میں بھارت ایرانی کلا کے معل کے فریقے اپنے دربار میں جاری کئے ، ایران کے اثر سے هی بھارت میں وہ کھروشتی لیی چلی تھی جو فارسی کی طرح داھنے سے میں وہ کھروشتی جاتی ہے ، سمرات اشوک کے بہت سے شلا لیکھ اِسی کھروشتی میں میں میں اور اُن میں بہت سے ایرانی شدد آتے هیں ، پہاروں ' چتافوں اور استمھوں ایرانی شدد آتے هیں ، پہاروں' چتافوں اور استمھوں پر لیکھ کھردنے کا رواج بھی سموات اشوک نے مارا سے پر لیکھ کھردنے کا رواج بھی سموات اشوک نے مارا سے پر لیکھ کھردنے کا رواج بھی سموات اشوک نے مارا سے

بہارت کے اور سب سے اور اس میں سوریہ کی جو سب سے اس مرتی مرتی ملکی ہے وہ سب سے اس مرتی مرتی ملکی ہے وہ سب سے اس مرتی مرتی ملکی ہے وہ بہلی صدی عیسوی کی بنی بی اور کی بنی اور کیر سے اس کے ایشیائی جوتے سر پر ایرائی ٹوپی اور کیر سے استانی خاص الکتا ہوا دکھایا گیا ہے ۔ اس سے پہلے کسی بھی ملستانی خیوتا کا یہ لبلس نہیں پایا جاتا ۔ هندستان کی مرتبین پر صحفیوں کے بحجہ ہے ایرائی اور هندستانی بھائی بھر

مناوں کے زمالے میں اِیرائی کلاکاروں لے هندستان کی قومی الله على الله الكول كو الله كلا كم تعصف بهينت كله . إس ایرانی اور هندستانی کا کے سنکم کے شاندار نتیجے هدیں هندستان کی فن تعمیر ( قرمان ۱۲ ) تصویر سازی ( چار کا ) ساهتیه اور سنگیت میں دیکھنے کو ملتے دیں ۔ ایرانی اور بھارتیه زمان کا لے ملکر دلیا کی سب سے خوبصورت عدارت تاہمتل کو تعبیر کیا ۔ بھارتیہ عمارتیں میں سروں کے پیچ' پھولوں کے للے یول مرحو کے بھالے کالب جل کی صواحیاں سب ایران ئى دين هيں . انگررى بيل كا ديزائن بهى ايرانى هـ . راجیرت چدر کا پر همیں بہت صاف اِیرانی اثر دکھائی دیتا ه. هندی اور فارسی کے میل سے ایک نثی زبان آردو بعدا ھڑے ۔ ھندوں اور مسلمانیوں نے ملکر اِس کے ساھتیہ کو چمکایا۔ مناس کے زمانے میں ایرائی سنگیت بھی بھارت آیا ۔ دونوں سنیترں کے ملی سے نئی نئی راگ راکنیاں پیدا ہوئیں ۔ ایرانی اور بهارتیه کلاکاروں نے ملکر راگیں کی ترتیب اور استهاں مقرر کیا- بهیرون پرچ سوهنی سندهی پیلو اور بهدروی ادی راک معارمک بھجنوں کے لئے اور درباری مالکوش ملہار اور درگا رأب درباروں میں کائے جانے کے لئے طے ہوئے ۔ اکبری دربار میں نرتیء اور کلی ودیا کے انبیکوں ایرانی کلاکار تھے . بھارتیہ سپتک میں۔۔۔سا، رے کا ما یا دھا نی ھیں تو ایرائی سپتک ميں۔ يک عبو اسم چهارا پنج شهر هنت هيں. کاين ميں ایرانی سپر مادهوریه در زور دیتے تھے تو بھارتیه لے در ، دونوں کی ملابت سے بھارت کے سنگیت میں لے اور سور مادھوریہ دونوں

سنکیت کے اِس آپسی میل جول نے اِیراثی سنکیت پر بھی کئی اثر ڈالا .

### ایران کا راجکاچی سلسله

جس طرح آدھھاتیک' سائسکرتک' ساعتیک اور دارشنک چیئروں میں بڑی سے بڑی ھستیاں ایرانی آگھ میں چیئروں آسی طرح راجکلجی چیئر میں بھی اشوک' ھرف ار اکبر کی طرح ایران میں کرو' دارا اور انوشھوواں

विकार नारत की मूर्तिकार पर भी देरानी अबर सार्क विकार देता है, मारत में सूर्य की जो सब से पुरानी मूर्ति मिलती है वह पहली सदी ईस्वी की बनी हुई है. उसके शरीर पर ईरानी कुरता, चूड़ीदार पाजामा, पांव में अंच पशियाई जूते, सिर पर इरानी टोपी और कमर से इस्फ़हानी संजर लटकता हुआ दिखाया गया है. उससे पहले किसी भी दिन्दुस्तानी देवता का यह लिबास नहीं पाया जाता. दिन्दुस्तान की सरजमीन पर सदियों के विकाद ईरानी और दिन्दुस्तानी भाई फिर एक साथ प्रेम और मुहब्बत से गले मिले.

मुरालों के जमाने में ईरानी कलाकारों ने हिन्दुस्तान की क्रीमी जिन्दगी के सब अंगों को अपनी कला के तोहफे मेंट किए. इस ईरानी और हिन्दस्तानी कला के संगम के शान-दार नतीजे हमें हिन्दुस्तान की फुने तामीर (निर्माण कका ) तस्वीर साजी, (चित्र कला), साहित्य और संगीत में देखने को मिलते हैं, ईरानी और भारतीय निर्माण कला ने मिलकर दुनिया की सब से खुबसूरत इमारत ताजमहल को तामीर किया. भारतीय इमारतों में सरों के पेड़, फूलों के गमले, फल, मधु के प्याले, गुलाबजल की सुराहियां सब ईरान की देन हैं. अंगूरी बेल का किजाइन भी ईरानी है. राजपूत चित्रकला पर हमें बहुत साफ ईरानी असर दिखाई देता है. हिन्दी और कारसी के मेल से एक नई षाबान वर्ष पैदा हुई. हिन्दुओं और भुसलमानों ने मिलकर इसके साहत्य का चमकाया. मुरालों के जमाने में ईरानी संगीत भी भारत आया. दोनों संगीतों के मिलन से नई नई राग रागनियां पैदा हुई'. ईरानी और भारतीय कलाकारों ने मिलकर रागों का तरतीब और स्थान मुक्तरेर किया—भैरां. परच, सोहनी, सिन्धी, पील और भैरवी आदि राग धार्मिक भजनों के लिए श्रीर दरवारी, मालकोष, मल्हार श्रीर दुर्गा राज दूरबारों में गाए जाने के लिए तय हुए. अकबरी दूर-बार में नृत्य और गान विद्या के अनेकों ईरानी कलाकार थे. भारतीय सप्तक में-सा, रं, ग, म, प, ध, नी हैं तो ईरानी सप्तक में—यक, दो, से, चहार, पंच, शष, इफ़्त् हैं. गायन में ईरानी स्वर माधुर्य पर जोर देते थे तो भारतीय स्रय पर, दोनों की मिलाबट से भारत के संगीत में लय और स्वर माधुर्य दोनों चमक उठे.

संगीत के इस आपसी मेलजोल ने ईरानी संगीत पर भी काफ़ी असर डाला

### • ईरान का राजकाजी सिलसिला

जिस तरह आध्यात्मक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और दार्शीनक क्षेत्रों में बढ़ी से बढ़ी इस्तियों ईरानी आकाश में बक्षकी, उसी तरह राजकाजी क्षेत्र में भी अशोक, हर्ष और बक्षकर की तरह ईरान में इन्ह, दारा और अनुशीरकां नाम अपने आकर्ष राज्यक, राज्यकों दूरकेशी, न्याव कता और अस्पनिष्ठा के सिए इतिहास में हमेशा याद किये विंगे. कुद इंस्स से कः सी बरस पहले पैदा हुआ। यूनानी हे साइरस कहते हैं. उसने उदारता और प्रेम की बुनियादों । अपनी हुकूमत कायम की. वह खुद अग्नि पूजक था. । उसने जेकसलम में यहूदियों के मन्दिर और वाबुल में त्रद्क के मन्दिर किर से बनवाए. खुद जीते हुए देशों के व्य कुठ का बर्ताव इतने रहम और मोहञ्बत का होता । कि जिसकी मिसाल उससे पहले के किसी बादशाह की इनत में नहीं मिलती.

ईसा से 522 बरस पहले दारा ईरान के तस्त पर बैठा. नानी बसे डेरियस कहते हैं. वह द्याबान और रहमदिल दशाह था. राजकाज में वह बहुत होशियार था. रिमाया वह सच्चा हितचिन्तक था. उसने बड़ी बड़ी इमारतें रि नहरें बनवाई. स्वेच की नहर सब से पहले दारा ने तैयार कराई. कला का वह जबरदस्त पोषक था. उसकी हमत में सबको पूरी पूरी आजादी थी. प्रेम की वह मूर्ति था.

रतुरत का वह सच्चा अनुयायी था.

ईसा की छठी सदी, सन् 531 ई० में सासानी खानदान । मराहूर बादराह अनुशीरवां, जिसे नौशेरवां भी कहते , तकत पर बैठा. अनुशीरवां एक होशियार सिपेहसालार, इमदिल हाकिम, चतुर राजनीतिक और इन्साफ पसन्द दशाह था. यूनान और हिन्दुस्तान के बड़े बड़े आलिम एक दरवार में रहते थे. हर मजहब वालों के साथ वह ही उदारता से पेश आता था. क्लीमेंट हार्ट के मुताबिक नुशीरवां का दरबार जरतुश्ती, बौद्ध और ईसाई धर्मों का ह सुन्दर मिलाप-घर था. इस्लाम के पैरान्वर हजरत हम्मद बड़े फज़ के साथ कहा करते थे कि "मैं अदल-जन्द अनुशीरवां की शहनशाहियत के जमाने में पैदा मा हूँ".

632 ई० में ईरान पर अरबों की हुकूमत क्रायम हुई.
।यासी तौर पर ईरान की आजादी चली गई मगर इल्मी
ौर कलचरी निगाह से ईरान अपने हमलाबरों के ऊपर छा
था. ईरान के आलिमों ने इस्लाम को अपनी उदारता, अपने
लसके और प्रेम धर्म से चार चांद लगाए. साइंस, हिकमत,
गीत, अदब, धर्मशास, गिखत, व्याकरण सब में ईरानी
हान थोड़े ही दिनों में अरबों से बढ़ गए. अबुसीना,
परखेयाम, फि्रदौसी, शेख सादी, हाफ़िज, युहरावरदी,
भी और कमी जैसे महापुरुष इसी जमाने में पैदा हुए.
न् 1500 में सफ़वी खानदान के मंडे के नीचे ईरान में
पिनयों की आजाद हुकूमत कायम हुई. सन 1907 में
पन में जनतंत्र हुकूमत के मातहत एक पार्तिमेंट बनी.
न् 1921 में दकाशाह पहलवी ने ईरान में अपनी आजाद

کے تملم لیے مالوی کالس میں ہمیشتہ یاد کئے جائے والا استان البقائی کرو ساتھ البقائی کو البقائی البقائی کو ساتھ البقائی کو عیسی سے چہ سو برس پہلے پیدا عوا ۔ یونائی اُس سائوس کہتے ھیں اُس نے اُدارتا اور پریم کی بنیادوں پر اُپئی حکومت قایم کی ۔ وہ خود اگنی پوجک تیا ۔ پر اُس نے جیروسلم میں یودیوں کے مندر پور سے بنوائے ، یہودیوں کے مندر پور سے بنوائے ، خود جیتے ھوئے دیشرں کے ساتھ کوو کا برتاؤ اُتنے رحم اور محبت کو ھوتا تھا کہ جس کی مثال اُس سے پہلے کے کسی بادشاہ کی حکومت میں نہیں ملتی ،

عیسی سے 522 برس پہلے دارا ایران کے تخت پر بیتھا . پرنائی اُسے تیریس کہتے ہیں ، وہ دیاران اور رحمدل بادشاہ تھا. راجکاج میں وہ بہت ، ہرشیار تھا. رعایا کا وہ سچا ہتچنتک تھا . اُس نے بری بری عمارتیں اور نہریں بنوائیں ، سویز کی نہر سب سے پہلے دارا نے ھی تیار کرائی ، کا کا وہ زبردست پرشک تیا ، اس کی حکومت میں سب کو پوری پوری آزادی نہی ، پریم کی وہ مورتی تھا ، زرتشت کا وہ سچا انویائی تھا ،

عیسی کی چیتی صدی سی 531ع میں سامسانی خاندان کا مشہور بادشاہ انوشیرواں جسے نوشیواں بھی کہتے ھیں تخت پر بیتھا ، انوشیرواں ایک هوشیار سیمسالار وحمدل حاکم تختر راجنیتگیہ اور انصاف پسند بادشاہ تھا ، یونان اور هندستان کے برے برے عالم اُس کے دربار میں رہتے تھے ، هو مذهب والوں کے ساتھ وہ بری آدارتا سے پیش آتا تھا ، کلیمینٹ وهارت کے ساتھ وہ بری گادرتا سے پیش آتا تھا ، کلیمینٹ وهارت کے مطابق انوشیرواں کا دربار زرتشتی بودھ اور عیسائی دھرموں کا ایک سندر ملاپ گھرتھا ، اسلام کے پہنمبر حضوت متحدد برے فخر کے ساتھ کہا کرتے تھے که درمیں عدل پسند انوشیرواں کی شینشاهیت کے رمانے میں پیدا ہوا ھوں ،"

سیاسی طور پر ایران پر عربوں کی حکومت قایم ہوئی ،
سیاسی طور پر ایران کی آزادی چلی گئی مگر علمی اور کلمچری
نگاہ سے ایران اپنے حملہ آوروں کے آوپر چھا گیا ، ایران کے
عالموں نے اسلام کو اپنی آدارتا' اپنے فلسفے اور پریم دام سے چار
چاند لگائے ، سائنس' حکمت' سنگیت' ادب' دام شاستر'
گنوت' ویاکوں سب میں ایرانی ودوان تھوڑے ھی دنوں میں
عربوں سے بچھ گئے ، ابوسینا' عمرخیام' فردوسی' شیخ سعدی'
عربوں سے بچھ گئے ، ابوسینا' عمرخیام' فردوسی' شیخ سعدی'
حافظ' سہراوردی' جامی اور روھی جیسے مہاپرش اِسی زمانے میں
پیدا ہوئے ، سن 1500 میں صغوی خاندان کے جھاقدے کے نیچے
پیدا ہوئے ، سن 1500 میں صغوی خاندان کے جھاقدے کے نیچے
میں ایران میں جی آزاد حکومت قایم ہوئی ، سن 1907
میں ایران میں جی تغیر حکومت کے ماتحت ایک پارلیمینٹ

क्रमेर कावम की. रेशन के मौकूदा राहनशाह मोहन्मद बजा शाह पहलबी उन्हीं के बेटे हैं. दो करोड़ बीस लास आबादी बाला यह प्राचीन एशियाई देश अपनी 80 की अदी किसानों की आबादी को तरकक्षी के रास्ते पर आगे बढ़ा रहा है. उसके रेगिस्तानी इलाकों में तेल का बेशन्त ष्यसीरा है. हिन्दुस्तान की तरह यूरोप की साम्राज्यवादी वाक्रतों ने बसे हैरान और परेशान कर रखा है. लेकिन हजारों वर्ष की शानदार जिन्दगी के क्रीमती तज़रबे उसके पास हैं, जिनकी रोशनी में वह अपने लिए सही और मुना-खिब रास्ता निकाल रहा है, और जरूर निकालेगा. ईरान भौर हिन्दस्तान दोनों को अपनी क़दीम महब्बत श्रीर दास्ती को फिर से मजबूत और ताजा, करना है. शाह ईरान की वामद के मौक्रे पर ईरान के मशहूर आलिम और आजकल हिन्दुस्तान में ईरान के राजदत हिज एक्सेलैन्सी डाक्टर अली असरार हिकमत के पैरााम का एक जुज़ हम आपके सामने पेश कर रहे हैं--

"पिछली सिदयों में अगरचे हिन्दुस्तान में ईरानी कला और साहित्य की आवाज़ बदिक्रस्मती से खामोश होकर किसी दरजे याद से बाहर हो गई थी, ख़ुदा का शुक्र है कि हिन्दुस्तान के अगुवाओं की कोशिशों से उसमें फिर से एक जान दिखाई दे रही है. हिन्दुस्तान आज फिर से एक आज़ाद और ताक्रतवर देश है. गुलामी की जंजीरों को तोड़ कर बह फिर से अपनी पुरानी परम्पराओं, अपने प्राचीन ऐस्वर्य और अपनी पुरानी मित्रता को नए सिरे से हासिल करने की कोशिश कर रहा है."

ईरान के माननीय राजदूत डाक्टर अली असगर हिकमत के इस बयान से हम पूरी तरह सहमत हैं. शहन-शाह ईरान की इस मुल्क में मेत्री-यात्रा का हम दिल से स्वागत करते हैं. हम उस दिन के इन्सज़ार में हैं जब हमारी पुरानी दोस्ता गहरी, मजबूत और ताज़ा होगी और भारत और ईरान की मुहन्बत के तराने ईरान की 19 हज़ार कीट ऊंची देमाबन्द की चोटियों और हिमालय के गगन-चुम्बी शिखरों पर गुजेंगे और उसकी ध्वनि, प्रतिध्वनि सारी हिनया को सुनाई देगी.88

موست المحل کے بھاتے معلی ، دو کورو بیس لاتھ آبادی والا یہ براچیں انھاں کے بھاتے معلی ، دو کورو بیس لاتھ آبادی والا یہ براچیں انھاں کے دیشی اپنی 80 فیصدی کسانوں کی آبادی کو ترقی کے راستان کی دیست نی عانوں میں تیل گائے آئمت زخیرہ ہے ، هندستان کی طرح یورپ کی سامراجوائی طاقتوں نے اسے حیران اور پریشان کر رکھا ہے ، لیکن مزاروں ورفی کی شانشار زندگی کےقیمتی تجربے اُس کے پاس مزاروں ورفی کی شانشار زندگی کےقیمتی تجربے اُس کے پاس ایک رشانی میں وہ اپنے لئے صحیح اور مناسب راست نکل رہا ہے اور ضرور قابلیگا ، ایران اور هندستان دونوں کو اپنی قبیم صحیح اور تازہ کرنا ہے ، اپنی قبیم صحیح اور دوستی کو پھر سے مضبوط اور تازہ کرنا ہے ، اپنی قبیم صحیح اور دوستی کو پھر سے مضبوط اور تازہ کرنا ہے ، اپنی قبیم میں ایران کے مرقع پر ایران کے مشہور عالم اور آجکل هندستان میں ایران کے راج دوت ہو ایکساینسی ڈاکٹر علی اسغر حدیث کے پیغام کا ایک جز ہم آپ کے سامنے پھش کر رہے حدیث کے پیغام کا ایک جز ہم آپ کے سامنے پھش کر رہے

"پچھھلی مدیوں میں اگرچہ هندستان میں ایرانی کا اور سافتیہ فی آواز بدقسمتی سے خاصوش ہو کر کسی درجہ یاد سے باہر ہوگئی تھی" خدا کا شکر ہے کہ هندستان کے اگراؤں کی کوششوں سے اُس میں پھر سے ایک جان دہائی دے رہی ہے . هندستان آج پھر سے ایک آزاد اور طاقتور دیش ہے ۔ ظامی کی زنجیورں کو تور کر وہ پھر سے اپنی پرائی پرمہراؤں" اپنے پراچین ایشوریہ اور اپنی پرائی مترتا کو نئے سرے سے حاصل کرلے کی ایشوریہ اور اپنی پرائی مترتا کو نئے سرے سے حاصل کرلے کی نشوس کر رہا ہے ،"

ایران کے ماننیہ راے دوت قائقر علی اسعر حکمت کے اِس بیان سے هم پوری طرح سہمت هیں ، شهنشاہ ایران کی اِس ملک میں میتری یانرا کا هم دال سے سواکت کرتے هیں ، هِم اُس دن کے انتظار میں هیں جب هماری برانی دوستی گہری' مقبوط اور تازہ هوگی اور بھارت اور اِیران کی محبت کے ترائے اِیران کی 5 مخبوط اور قار نیٹ اُونچی دیمابند کی چوٹیس اور هماایہ کے گئی چوٹیس شموروں پر گونجینگے اور اُس نی دعونی' پرنی دھوتی ساری دنیا کو سنائی دیگی ۔ گا

क्षराहनशाह ईरान और मलका सोरइया की मैत्री-यात्रा के मौक्ने पर 15 फ़रबरी को दिस्ती और काशमीर रेडियो स्टेशनों से प्रसादित.

<sup>(</sup> बात इरिडवा रेडिया नई दिस्ती के सीजन्य से )

المجاهدات المران اور ملکه ثریه کی میتری-یاترا کے مرقع پر 15 نروری کو دلی اور کاشمیر ریڈیو اِسٹیشئوں سے پرسارت .

# चीनी अवष (साहित्य) पर एक सरसरी नजर

چهنی آنب (ساهنینه) پر آیک سرسری نظر

डाक्टर लतीफ दुम्तरी एम० ए०, डी० फ़िल० (आक्सन)

قاكلر لطيف دفاري ايم . أم . أنبي ، فل . ( أكسن ) /

पिछले 15 बरस से एशियाई मुल्कों के लोग चीन की सियासी (राजनैतिक) उथल-प्रथल को हमद्दी के साथ देखते रहे हैं. चीनी चाजादी की जङ्ग के साथ हम पूरववालों ने हमेशा से एक अपनापा महस्रस किया है, सन् 1857 में चीन की टीएटजिन की सुलह, हिन्दुस्तान की इनक्रलाबी बराबात और ईरान में नेहेबन्द की साजिशें साम्राज्वादी जंजीर की मुख्तलिफ कड़ियाँ थीं जिससे समुचे एशिया को ग़लामी के बन्धनों में बाँध लिया गया. ये तीनों ही मुल्क हजारों बरस पुरानी तहजीब के दावेदार हैं. तीनों ने ही हजारों बरस तक एक दूसरे के साथ कल्चर ज लेन-देन किया है. इस लेख में मैं चीनी करचर, चीनी अद्ब (साहित्य), बीनी जनता और बीनी इस्म के भएडार पर एक बसीख (बिस्तुत) नजर डालना चाहुंगा. एशियायी होने के नाते मेरा यह एतकाद (विश्वास) है कि हिन्दुस्तान, चीन और ईरान की एकता एशियायी करूचरों की वह त्रिवेनी है कि जिसकी धारा में न सिर्के एशिया को बल्कि मुलसी हुई दुनिया को राहत मिलेगी. आज दुनिया की कल्चरल (सांस्कृतिक) बागडोर पच्छिम के खुद-गरज साम्राजी देशों के हाथों में चली गई है पर हमें यह न भूलना चाहिये कि हजारों बरस तक हिन्दुस्तान, चीन और ईरान दुनिया के अरबों खरबों श्रादमियों को रास्ता दिखाते रहे हैं, कि जो रास्ता एटम बम का नहीं बल्कि आत्मा को शान्ति देनेवाला रूहानी रास्ता था. चोन के साथ आज हमें टूटी हुई कल्चरल कड़ी को फिर से जोड़ना है और उसकी तहजीब की वसअतश्रामेज शक्ल (विराट रूप) के दश न करने हैं.

### चीनी बोली और लिखावट

एशियाई खबानों में चीनी उस गिरोह की खबान है कि जिसका हर हरू एक अलग माने रखता है और एक ही मटके में बोला जाता है. चीनी खबान दो साफ अलग अलग हिस्सों में बँटी हुई है. बोलने की अलग, लिखने की अलग. चीनी बोली कोई अपने आप अलग पूरी बोली नहीं है बिक कई खुबों की बोलियों की मिलाबट है, हालांकि इन सभी बोलियों का निकास एक ही सोते से हुआ है.

بخیلے 15 برس سے آیشہائے ملکوں کے لوگ جھوں کی سیاسی ا راجلیتک ) اُنیل یتهل کو همدردی کے ساتھ دیکھتے رہے میں۔ چھلی آزادی کی جنگ کے ساتھ ہم پیرب والیں نے ہمیشہ سے ایک اینایا محسرس کیا ہے . سن 1857 میں چین کی المُعللون كي صلح مندستان كي أِنقلابي بغاوت أور إيدان مين المعوثد كي سازشين سامراجوادي وتجير كي كاف كريال تهين جس سمرجے ایشیا کو غلامی کے بندھنوں, میں باندھ لیا گیا ، یه تینوں هی منک هزاروں بوس برانی تهذیب کے همویدار هیں . تینوں نے عی هزاروں برس تک ایک دوسرے کے ساتھ کلنچورل لیبن دین کیا ہے . اِس لیکھ میں میں چینی کلمچورا چینی ادب (ساهتیه) چینی جنتا اور چینی علم کے بهندار بر ایک وسیم ( وسترت ) نظر دالنا چاهونگا . ایشیائی ھونے کے ناتے میرا یہ اعتقاد ( وشواس ) هے که هندستان چین اُورُ آِیراَن کی آیکٹا آیشیاٹی کلُچروں کی وہ تروینی ہے کہ جس کی دھارا میں نہ صرف آیشیا کو بلکہ جھلسی ھوٹی دنیا کو راحت ملیکی . آب دلیا کی کلچرل (سانسکرتک) باگترر یمجہم کے خودفرض سامراجی دیشوں کے عالیوں میں چلی کئے ہے پر همیں یہ نہ بھرلنا چاھئے کہ ہزاروں برس تک عندستان چین اور ایران دنیا کے اربوں نہربوں آدسیوں کو راسته دانهاتے راف هوں دم جو راسته ایٹمام کا نہیں بلکه أتما كو شانتی دینے وال روحائی راسته تها . چین کے ساتھ آبے همیں ڈوٹی هوئی کلمچول کڑی کو یھر سے جورنا سے اور اس کی قہذیب کی وسعت آمیز شکل ( ورات روپ ) کے درشوں کرنے

### چیلی بوای اور لنهاوت

ایشیائی زبانوں میں چینی اُس گروہ کی زبان ہے که جس کا هر حروف ایک ایک معنے رکھتا ہے اور ایک هی جھٹکے میں ہولا جانا ہے ۔ چینی زبان دو صاف الگ الگ حصوں میں بنتی هوئی ہے۔۔ بولنے کی الگ کھنے کی الگ ، چینی بولی دہنی ایڈ آپ انگ پوری بولی تبییں ہے بلکہ کئی صوبوں کی بولیوں کی مالوث ہے حالاتک اُن سبھی بولیوں کا نکاس ایک هی سوتے سے هوا ہے .

برلی جائی ہوں کے چرسی صورے میں ایک عالا بولی ہوئی ہوئی۔ برلتے جائی کے چرسی صورے میں لوگ عالا بولی برلتے جائی جائی ہوئی الرحیدا 'فهچاؤ' اور 'فناکھو' بولیاں بولئے والے لوگ ملتے ہیں ، اور زبان اور میں 80 فیصدی چینی 'ستدارن' زبان بولتے ہیں ، مندارن کی دو خاصیتیں ہیں۔ (1) یہ کہ 15 ویں صدی سے مندارن کی دو خاصیتیں ہیں۔ (1) یہ کہ 15 ویں صدی سے یہ چینی راجدھائی کی زبان رہی ہے اور (2) سرکاری خط و کتابت میں یہ زبان استعمال کی جاتی رہی ہے .

اپنے چرافرین کے لحاظ سے کینتی زبان بہت اہم ہے ، لیکن سرکاری زبان رہنے کی وجہ سے ملڈارن نے پحد ترقی کرلی ہے ، سرکاری نے بات غیر کرنے لایق ہے که کینتیزبان اُس بہت شروع کی پایا آدم کے زمانے کی چینی زبان سے تعلی ہے کہ جس نے موجودہ زبان میں پہلے ہر خیال کو ظاہر کرنے کے لئے الگ الگ جینی زبان میں پہلے ہر خیال کو ظاہر کرنے کے لئے الگ الگ الگ حروف تھے ، کننیوسیس کے زمانے میں یه کوشش کی گئی که حووث ( لیس ) کی ایک چہوئے دایرے میں حدباندی کی جائے ، اُسی زمانے میں کابی زبان کے بیاج ہوئے گئے ، لیکن جائے ، اُسی زمانے میں کہاری ہوا ، اِس کوشش سے ایک آیسی بھاری بھرکم لکھارت نعلی کہ جس میں رچے گئے دھرم گرفتھ پوتھ کے پوتھ بین گئے ، مگر پھر بھی چینی ادب گرفتھ پوتھ کی ترقی میں کفنیوسیس کے زمانے کی یه کوشھی ( ساھنیہ ) کی ترقی میں کفنیوسیس کے زمانے کی یه کوشھی ( ساھنیہ ) کی ترقی میں کفنیوسیس کے زمانے کی یه کوشھی ( ساھنیہ ) کی ترقی میں کفنیوسیس کے زمانے کی یه کوشھی ( ساھنیہ ) کی ترقی میں کفنیوسیس کے زمانے کی یه کوشھی ( ساھنیہ ) کی ترقی میں کفنیوسیس کے زمانے کی یه کوشھی ( ساھنیہ ) کی ترقی میں کفنیوسیس کے زمانے کی یه کوشھی ( ساھنیہ ) کی ترقی میں کفنیوسیس کے زمانے کی یه کوشھی ۔

لکھاوت کی اِس ترقی کے بعد اُرو چین میں چھپاٹی کے لئے لکتری کے چھاپوں کی اِبتجاد کے بعد ادب ( ساھتھہ ) باستکاورہ ھوگیا' اُس میں ایک پھیلاؤ اُور چستی آگئی مگر اُس کے ساتھ ھی ساتھ دھرم گرنتھوں کی طرف ارگوں کی عزت ( شردھا ) اِس قدر برائی که ساھتیه اور معمولی بول چال کی زبان میں کوئی واسطه ھی نہیں رہ گیا ۔

### اسب (ردن مالا)

چھنی لکھارت ہاوجود آپنے نہے تلے نشانوں اور لگانار سدھار کے آیک تصویری لکھارت ھی کہی جاسکتی ھے ۔ کسی حروف کے تھیک معلے تبھی بتائے جاسکتے ھیں جب آسے بعد کے حروف کے ساتھ جورکر پڑھا جائے ، ودیشھوں کو یہ ایک بڑی دقت کی بات معلوم ھوتی ھے کہ بہت سے حروفوں کی بالکل یکساں آوازیں ھیں پر اُن کے مطلب علیصدہ ھیں ، اس طرح کے لفظوں کی تعداد پچاس ھزار ھے اور تلفظ ( اُچان ) میں فرق آنا ھے ، موقے طور پر چھلی ھی اُن کے مطلب میں فرق آنا ھے ، موقے طور پر چھلی حروفوں کو ھم پانچ حصوں میں بائمت سکتے ھیں۔۔۔(1) خھالوں کو طاعر کرنے والے (3) خوالوں کو طاعر کرنے والے (3) جاسے

विश्वास बीम में स्वासक्त के सूबे में किस्टमी बोसी मिली बारी है. इसके पढ़ोसी सूबे में सोग 'इका' बोली क्रांबार हैं. जैसे जैसे इस इचर की तरफ बढ़ते हैं इसें क्रांबाय', 'कुवाओ' जीर 'निक्तपो' बोलियाँ बोलनेवाले लोग निक्त हैं. जीर प्रयादा उत्तर में 80 फीसदी चीनी अस्टारिन' जवान बोलते हैं. मरहारिन की दो खासियतें हैं—(1) यह कि 16 बीं सदी से यह चीनी राजधानी की बंबान रही है जीर (2) सरकारी खता किताबत में यह बंबान इस्तेमाल की जाती रही है.

अपने प्ररानेपन के लिहाज से कैएटनी जवान बहत अइस है. लेकिन सरकारी जबान रहने की वजह से मएडा-दिन ने बेहद तरक्की कर ली है. यह बात सौर करने लायक है कि कैएटनी जबान उस बहुत शुरू की, बाबा आइम के क्रमाने की, चीनी जबान से निकली है कि जिसने मीजूदा कमाने की बोलचाल की चौर लिखी जानेवाली चीनी की अन्म विया. चीनी जवान में पहले हर खयाल को जाहिर करने 🕏 किये अलग अलग हरूक थे. कन्कू यूसिअस के जमाने में बह कोशिश की गई कि लिखावट (लिपि) की एक छोटे दायरे में हदवनदी की जाय. उसी जमाने में किताबी जवान के बीज बोये गये. लेकिन इससे असल मक्तसद पूरा नहीं क्रमा. इस कोशिश से एक ऐसी भारी भरकम लिखाबट निकती कि जिसमें रचे गये धर्म प्रन्थ पोथे के पोथे बन गये. सगर फिर भी चीनी चदद (साहित्य) की तरक्की में कम्म्यसियस के जमाने की यह कोशिश बढ़े काम की सावित हुई.

लिखावट की इस तरक्षकी के बाद और जीन में छपाई के जिये जकड़ी के छापों की ईजाद के बाद खदब (साहित्य) बासुहाविरा हो गया, उसमें एक फैलाब और जुस्ती था गई बगर उसके साथ ही साथ धर्म मन्थों की तरफ लोगों की इस्बद (भद्धा) इस क़दर बढ़ी कि साहित्य और मामूली कोलजाल की जवान में कोई बास्ता ही नहीं रह गया.

## अखिफ्र-वे (वर्ण माला)

चीनी लिखावट वावजूद अपने नपे तुले निशानों और सगातार सुधार के एक तसवीरी लिखावट ही कही जा सकती है, किसी इरूफ के ठीक मायने तभी बताये जा सकते हैं जब उसे बाद के इरूफ के साथ जोड़कर पढ़ा जाय. सिदेशियों को यह एक बड़ी दिशकत की बात मालूम होती है कि बहुत से इरूफों की विलक्षल यकसां आवाओं हैं पर बनके मतलब अलहदा हैं. इस तरह के लफ्जों की तादाद पचास इकार है और तलफ्जुज (उच्चारण) में ही उनके मतलब में फुरक आता है. मोटे तौर पर चीनी इरूफों को साहत में बाद सकते हैं—(1) खयाजों को चाहिर संत बाते, (2) आवाओं को चाहिर करने बाते, (3) जिनसे

शुर सकार बारिन ही, (4) वसवीय बाजे इसक, (5) येसे इसके जो बसी शुनियारा के दूसरे तक्यों से बातन हों.

क्रीय 25 परस पहले इन हजारों चीनी हरूकों के जंगल को हटाकर चनकी जगह धुनियों के हिसाब की नपी तुली वर्गा माला जारी करने की जोरदार कोशिश शुरू हुई, मगर वह इस वजह से कामयाब न हो सकी क्योंकि चीनी लक्षों की आवाज की बिना पर जो हरूफ़ बनाये जाते उनकी तादाद बजाय कम होने के चीर भी बेशुमार हो जाती. चीन के फैले हुये हर हिस्से के निशान इन हरूकों में शामिल हैं जिनकी बजह से उन हिस्सों में आपसी एका है. यही वजह है कि जापानियों ने भी चीनी लिखावट छोड़कर रोमन लिखावट को नहीं अपनाया.

### चीनी अदब (साहित्य)

जीर दूसरे प्रची जद्द (स्राहित्य) की तरह चीन के अपने साहित्य की भी कोई तारीख़ (इतिहास) नहीं है. लेकिन अदबी तारीख़ जीर तनक़ीद (आलोचना) को होड़कर चीनी साहित्य ने हर जानिव (दिशा) तरक़क़ी की है. चीनी साहित्य,को हम झे हिस्सों में बांट सकते हैं. मसलन शायरी (किता) जिसमें रिव्यू (समालोचना) फ़लसफ़ा (दर्शन) और मजहबी चीजें शामिल हैं, इतिहास जिसमें हर तरह का इतिहास सरकारी और रीर सरकारी, सबाने उमरी (आत्म कथा) और भूगोल शामिल हैं, आर्ट (कला) और साइन्स (विज्ञान) तथा जवान का इल्म (भाषा शास्त्र) जिसमें इनसाइक्लापीडिया (विश्वकोष) और लुरात (शब्द संमह) आदि शामिल हैं. अब हमें इस पर एक सरसरी निगाह डालकर यह देखना है कि चीनी आलिम और साहित्यकों ने इस मैदान में किस दरजे तरक़क़ी की.

### शायरी (कविता)

दूसरी पुरानी जवानों की तरह चीनी साहित्य में भी गीत और गानों का लजना भरा पढ़ा है. यह एक बड़ी अजीवा रारीब बात है कि चीनी तहजीब हजारों बरस पुरानी होने पर भी चीनी जवान में कोई गीतों का पाया (महाकाच्य) नहीं हैं. फिर भी छोटे छाटे गीतों के अलावा लम्बी लम्बी नज्में (कवितायें) भी, जिन्हें हम मसनवी (खएड काच्य) कह सकते हैं, चीनी जवान में मिलती हैं- कुद्रती नजारों की तसवीर खींचनेवाली बहुत सी नज्में चीनी काच्य में मिलती हैं जिनमें मुसकान और आंसू दोनों की छवि विखाई देती है. चीनी अदब की यह एक खास बात है कि सेक्स से ताल्खुक रखनेवाली शायरी में भी उसमें कहीं महापन देखने तक को न मिलेगा. एक दूसरी जास बात बह है कि मजहबी शायरी चीनी जवान में विलक्कत नहीं है. बेतुकी शायरी (अनुकान्य कविता) भी चीनी जवान में नहीं मिलती. छन्वों

کیے اسٹی طافر ہو' (4) تصریرین والے عربات (5) آلینے فروقت ہور اسی دھولی دھارا کے دوسرے العابی سے آلک ہیں ۔

الربب 25 برس پہلے اِن هزارس چینی حرونیں کے جاگل اُو کی جائل کی جائل کی جائل کی جائل کی اور مالا کی نہی تلی ویں مالا چائل کرنے کی زوردار کوشش شروع هرئی مگر وہ اُس وجہ سے اُن جو اُس کی آواز کی بنا پر جو مرزف بنائے جاتے اُن کی تعداد بجانے کا هوئے کے اُور بھی اِشعال هو جاتی ، چینی کے پہیلے هیئے هو حصے کے نشانی اِن مورفی میں شامل هیں اور جس کی وجہ سے اُن حصوں میں میں اور جس کی وجہ سے اُن حصوں میں اُسی اِنکا ہے ، یہی وجہ ہے کہ جاپانہوں نے بھی چینی لاہاوت کو نہیں اپنایا ۔

# وَمِنْي أَدِب ( سَامِتِيه )

اور دوسرے پوربی ادب (ساھتھہ) کی طرح چھن کے آپنے
ساھتھہ کی بھی کوئی تاریخ ( اِتہاس) نہیں ہے ، لیکن ادبی
غریخ اور تنقید ( آلوچنا) کو چھورکر چھنی ساھتھہ لے ھر
چانب ( دشا) اورقی کی ہے ، چینی ساھتیہ کو ھم چھ حصوں
بیں ہائٹ سکتے ھیں ، مثلاً شاعری ( کوپتا ) جس میں
پوبو ( سالوچنا ) فلسفۃ ( درشن ) اور مذھبی چھزیں شامل
میں اِتہاس جس میں ھر طرح کا اِنہاس سرکاری اور غفر
سرکاری سوائمے عمری ( آتم کتیا ) اور بھوگول شامل ھیں اُرت میں اِلسایکلوپیڈیا ( وشو کوش ) اور ایفتا شاستر ) جس
میں اِلسایکلوپیڈیا ( وشو کوش ) اور ایفت ( شبد سنکرہ )
آدی شامل ھیں ، آب ھیس اِس پر ایک سرکاری نگاہ ڈائکر
پھ دیکھنا ہے کہ چینی عالم اور ساھتیکوں نے اِس میدان میں
کس درجے ترقی کی ،

### شاعری ( کویتا )

क्रांबर्ग को तोएकर जो सायदी सिक्ती जाती थी वह ठीक वहीं समग्री जाती थी.

जिस जमाने में शायरी ने जन्म लिया और तरक्की करके बालिया (श्रीड़) हुई वह जमाना सन् 1800 ई० पू० से बेकर 600 ई० पूर्व का है. कठवीं और पांचवीं सदी के करीय कनम्यूसियस ने (551 है पूर-479 है पूर) अपने चमाने तक के क़रीब 3000 गीत इकट्टा किये जिन्हें शिह-चिक कहा जाता था और उनमें से छांटकर 311 गीतों का एक सुन्दर मजमुक्ता (संमह) तैयार किया. लेकिन शायरी की असली तरक्की आठवीं सदी ईसवी से शुरू हुई. इस क्याने के दो सब में मशहूर शायर लि-ताइ-पो (705 ई०-762 ई०) और त-कु (712 ई०-770 ई०) सममे जाते हैं. लि-काइ मो को लोग उसकी बहुत आला शायरी की वजह से और एसके राज से निकाले जाने के सबब से 'जलावतन क्रिश्ता' (निर्वासित स्वर्गदूत) कहते थे. इन दोनों शायरों से क्तरकर पो-चु-इ (772-849 ई०) सममा जाता है. सरकारी इक्रम से इसकी बहुत सी नक्में पत्थरों (शिला लेखों) पर खतारी गई.

सुद्ध हुकूमत में राजाओं का बादाबा पाकर शायरी ने बहुत ज्यादा तरक्की की. यह जमाना 960 ईसवी से शुरू होकर करीब 300 बरस रहा. यह सही है कि इस जमाने की शायरी हर रंग और हर हुन की है मगर किर भी इस बक्षत शायरी के जो कड़े कायदे कानून बन गये थे उनकी बजह से उसमें जिहत मसन्दी (मौलिकता) की कमी दिखाई देती है.

ं कृद्रदानों के लिहाज से मुझ-तुझ-पो सबमें क्यादा पसन्तीदा (लोकप्रिय) चीनी किंद हुआ है. वह जितना चमकता हुआ किंद था ज्वना ही दिलफ्रेंब (आकर्षक) अजम्न-निगार (निबन्ध-लेखक) था. मंगोल और माञ्चू बाद्शाहों के जमाने से इनक्रलाबी दौर के पहले तक कोई बास खूबी बाले (प्रतिमा सम्पन्न) शायर नहीं हुये हालांकि माञ्चू बादशाहों में कांग-हि और चिएन-लुझ औसत द्रजे के शायर थे. हां, बेशक इस जमाने में शायरी काफी मिक्रदार के लिखी गई.

### अफ्रसाने (उपन्यास)

राइस्तगी चीनी साहित्य की खासियत है. मगर जहां तक अफ़सानों (उपन्यासों) का तास्तुक है उनमें इस गुण की बिल्ड्रिल कमी है. अफ़सानों में चरेलू जिन्दगी का सच्चा खाका को होता है जिनमें नफ़रत और नफ़सी मुह्ज्बत (बास्क्रिक) अपनी मंगी शक्त में दर्ज (चित्रित) मिलती हैं. बाबबुद चीनी अदब की कदामत (प्राचीनता) के उसमें अक्टबानों ( उपन्यासों ) का जिला जाना देरहतीं कही से ے تامیر ہوتی ہو۔ کاری کالی خالی کی رہ ایک لیفن سے خال کی

حین محالے میں شاعری نے جام لیا اور ترقی کرکے بالغ ﴿ يِرِورِهِ ﴾ \*هَوْلُي وَ وَمَانَتُ سَنِ 1800 أَي . يُو . سَ لَيْدُو 600 لی۔ ہو - تک کا ہے . چھٹریں اور پائٹھریں صدی کے قریب كلئيرسيس لے ( 551 اي - يو-479 اي - يو - ) اينے زمالے نک کے قریب 3000 گیت اکتہا کئے جنہیں شہ چن کہا جاتا نها أور إن مين سع جهانت كو 311 گيترن كا أيك سندر مجموعة ( سنگوة ) قهار كها ، الهكن شاعرى كي أصلى ترقى أتهوين صدى عیسوی سے شروع هوئی . اِس زمانے کے دو سب میں مشہور شاعر آبي - تائي يو ( 762 ع - 705 ع - ) أور تو - فو ( 770 ع - 712 ع - ) سنجه جاتے هير ، لي - تائي - يو کر ارک اُس کی بہت عالی شاعری کی وجه سے اور اُس کے را سے نکالے جانے کے سبب سے اجالوطن فرشاعا ( فرواست سررگ درس ) کہتے تھے ، اِن درقوں شاعروں سے اُتر کر ہو -جر - ای 849-772 ای - سنجها جاتا هے ، سرکاری حکم سے إس كي بهت سي نظمين يتهدرن ( شا ليكهرن ) پر أتاري گئیں ،

سوئگ حکومت میں راجاؤں کا برتھارا پاکر شاعری نے بہت زیادہ توقی کی . یہ زمانہ 960 عیسوی سے شروع ہوکر تہرب 300 بوسی رھا . یہ صحدیم ہے کہ ایس زمانے کی شاعری ہر رنگ اور ہر تھنگ کی ہے سکر پھر بھی اِس و تت شاعری کے جو کرے قاعدے قانوں بن گئے تھے اُن کی وجہ سے اُس میں جدت پسلامی ( مواہلا) کی کئی دکھائی دیھائی دیھی ہے ۔

تدردالوں کے لحاظ سے سوئگ - تونگ - یو سب میں زیادہ یسندیدہ ( لوک پریء ) چینی کوی ہوا ہے ۔ وہ جتنا چمکتا ہوا کوئی تیا اُتنا ہی دلفریب ( آکرشک ) مضمون نگار ( نبندھ - لیکھک ) تیا ۔ منکول آور مانچو بادشاہوں کے زمائے سے اِنقلبی دور کے پہلے تک کوئی خاص خوبی والے ( پرتبها سین ) شاعر نہیں ہوئے حالات مانچو بادشاہوں میں کنگ - ھی آور چئیں - لونگ اوسط درچے کے شاعر تھے ، ھاں پشک اِس زمانے میں شاعری کائی مقدار میں لکھی گئی ،

### أنسانے ( أينياس )

क्ष होता है. 17 की खदी में अफसाना नवीसी अपनी बाटी पर पहुँची जब 'हुक-लोम मेरू' और 'लियाको चल' केरे सराहर अफसाने लिखे गये. इनमें से पहले उपन्यास के विस्तिवाले का पता नहीं चलता मगर वह कला के लिहाज ने अच्छा लिखा गया है. प्रेम और पडयन्त्र, दीलत और गरबब, सादगी और कमीनेपन आदि मुख्यलिफ कैफियतों ही इतनी खुबसूरती के साथ कहानी में मलक दिखाई गई है कि पढ़कर लेखक की कलम खूमने की तबियत होती है. क्यन्यास में क्ररीय 400 पात्र हैं जिनके चरित्र को वड़ी स्वस्रती के साथ पेश किया गया है. उपन्यास में जगह जगह सतही गंबइयत (प्रामीखता) जरूर दिखाई देती है पर भाजकल के उपन्यासों में जो एक जानलेवा सुमाव (घातक ब्यंजना) होता है वह उनमें न मिलेगा. 'लिकाको चल' का लेख ह पु सुन लिक है जिसने उसे सन् 1679 ई॰ में लिखा. साहित्यिक लाग इसे साहित्यिक स्टाइल के लिये एक अक्रली बीज (बिचार कृति) सममते हैं. इसमें देहाती पात्रों की षरेलु जिन्दगी का सुन्दर और सही (वास्तविक) खाका है.

चीन में उपन्यासों के साथ साथ ही नाटकों का लिखा जाना भी शुरू हुआ. नाटकों का दौर मंगोलों का वर्फ ('260-1368 ई०) सममा जाता है हालांकि मामूली रूप में नाटक पुराने अदब (प्राचीन साहित्य ) में भी मिलते हैं. एक बात यह कही जाती है कि चीनी साहित्य में मंगोल बादशाहों ने नाटकों का रिवाज डाला और इसलिये चीनी नाटकों की मध्य एशियाई बुनियाद है. लेकिन इस वक्त चीनी जनता नाटकों को बेहद पसन्द करती है. शायद दुनिया में चीनी जनता के बराबर दूसरी जनता नाटकों को इतना पसन्द नहीं करती. मंगोलों के जमाने के लिखे हुये करीब 100 नाटकों का एक मजमुआ सन् 1615 ई० में शाया हुआ था. एक दूसरा बढ़ा (शहत) संग्रह सन् 1845 में निकला जिसमें नाटकों को तरतीबवार (बर्गीकरण्) करके उन्हें शाय किया गया.

### वारीख़ (इतिहास)

नाटक

कदीम (प्राचीन) जमाने के लिखे हुये चीनी इतिहासों में सबमें खास कन्मयूसिक्स का लिखा हुआ इतिहास है. वह पौराणिक राजा याओ (1357 ई० पू०-2205 ई० पू०) से कुरू होता है. यह बात काबिले गोर है कि उस वक्त भी चीन में लोग सिर्फ एक अल्लाह (एकेश्वरवाद) का मानते वे. याओ के बाठ बरस बाद इमारत बनाने वाला राजा यु हुआ जिसने जावदेस्त बाद आने के कारण राज भर में हजारों मील के दायरे में जो पाना भर गया था उसे बड़ी परकी से बाइर निकाला. पिक्समी लेखक इस किस्से को बाइरिक के Deluge (अलय) की कहानी से मिलाते हैं.

هريغ عرداه. 17 رس مدى مين أنسانه تويسي أيكي چوتی پر پېرنچی جب اهين لومين ارر الياؤ چل" جهيد مشهور أنسانے لکھے گئے ، إن میں سے يہلے أينياس کے اکہلے والے کا پتد نہیں چاتا مکو وہ کا کے احتاظ سے اچھا الله الله الله م يريم أور شوينتر والت اور غربت سادكي أور گمھنے ہن آدی مختلف کیفیتوں کی اِنٹی خوبصورتی کے ساتھ کیائی میں جیلک دکھائی گئی ہے که پڑھکر لیکیک کی قلم چومنے کی طبیعت ہوتی ہے . اینیاس میں فریب 400 یاتر میں جن کے چرتر کو ہڑی خوصررتی کے ساتھ پیش کیا گیا ہے۔ أينهاس مين جكه جكه سطحى كنوئيت ( كرامينتا ) ضرور دکھائی دیتی ہے پر اجال کے اپنیاس میں جو ایک جان لیوا سجهاو ( گهاتک وینجنا ) هونا هے وہ آن میں تع ملیکا . الهاو چل کا لیمیک پڑ سن لن ہے جس نے آسے سن 1679ع میں لعها ، ساعتیک اوک اسے ساعتیک اِستائل کے لئے ایک عقلی چيز ( وچار کرتي ) سنجهتم هين . اِس مين ديهاتي پاترن کی گھریلو زندگی کا سندر اور صحیم ( واستوک ) خاکه هے .

#### ناتك

چین میں اُپنیاسوں کے ساتھ ساتھ ھی ناٹئیں کا اکھا جا نا بھی شہوع ھوا، تاٹئیں کا دور منکواپی کا وقت (1368–1260ع) سمجھا جات ہے حالائکہ معمولی روپ میں ناٹک پرائے ادب (پراچین ساھتیہ) میں بھی ملتے ھیں ، ایک بات یہ کھی جاتی ہے کہ چینی ساھتیہ میں منکول بانشاعوں نے ناٹئوں کا رواج ڈالا اور اِس لئے چینی ناٹئوں کی مدھیہ ایشیائی بنیاد ہے ، لیکن اِس وقت چینی ، جنتا ناٹئوں کو بے حد پسند کرتی ہے . شائد دنیا میں چینی ، جنتا ناٹئوں کو بے حد پسند کرتی کو اِتنا پسند نہیں کرتی ، منکولوں کے زمانے کے لکھے ھوئے قریب کو اِتنا پسند نہیں کرتی ، منکولوں کے زمانے کے لکھے ھوئے قریب کو اِتنا پسند نہیں کرتی ، منکولوں کے زمانے کے لکھے ھوئے قریب ایک دوسرا بڑا ( ورهت ) سنگرہ سن 1845 میں شائع ھوا تھا میں ناٹئوں کو ترتیب وار ( ورگیکوں ) کر کے اُنھیں شائع میں ناٹئوں کو ترتیب وار ( ورگیکوں ) کر کے اُنھیں شائع

### تاريخ ( إنهاس )

व्याने उमरी (जीवनी)

दसरी जबानों से मिलती जुलती जीवनियां चीनी में भी विकी गई हैं. सरकारी और रौर सरकारी लोगों ने जीवनियों शर बड़े बड़े पांथे लिखे हैं. चीनी जीवनियों में पैदायरा की तारीख और सन का अकसर जिक्र नहीं होता. मीत की तारीख से पैदायश का वक्त निकालना पहता है. चीनी कीवनियों की सासियत यह है कि इसमें अपने बुजुर्गी चौर सरकारी जिन्दगी का मुकरिसल बयान होता है.

ब्रुगराफ्रिया (भूगोल)

जुराराफिया पर चीनी में बहुत सी कितावें हैं लेकिन बाहरी सुरकों का बयान बहुत कम पाया जाता है. 16वीं सदी में पहली बार जुराराफ़िया पर नीनी में ऐसी किताब तिसी गई जिसमें दुनिया के मुल्कों की सरहदों का बयान है. सन् 1745 में भूगोल पर एक बहुत बड़ी किताब लिसी गई जिसमें फैलाब (विस्तार) के साथ दुनिया का बयान मिलता है. इसके बाद सन् 1794 में एक दूसरी किताब लिखी गई जिसमें मौसम, समुद्री रास्ते, जाबोहवा वरौरा का जिक है.

#### यात्रा वतान्त

मुल्की हैसियत से चीनी हमेशा से यात्रा के शौकीन रहे हैं. इस क्रीमी खाहिश को सबमें ज्यादा बढ़ावा उस वक्त मिला जब कुछ बौद्ध भिक्खुओं के मन में अपना मजहबी बतन देखने की उमंग उठी. इस उमंग को पूरा करने की रारज से सन् 399 ई० में फाहियान गांबी के रेगिस्तान को पार करता, मध्य एशिया के सुनसान वियाबान से गुजरता, हिन्दुकुश पहाड़ को लांघता हुआ हिन्दुस्तान के खास खास शहरों में ठहरता, एक दो बरस लहा में रुककर चीन के लिये रबाना हुआ और बहुत सी किताबें, तसकीरें और मूर्तियां लिये हुये सन् 414 हैं में जहाजी रास्ते से चीन बापस पहुँचा.

हिन्दुस्तानियों के नुक्तते नजर से हुएनत्सांग की यात्रा कहीं ज्यादा पुरश्रसर थी. वह चीन से सन् 629 ई० में रवाना हुआ और 15 बरस के बाद सन 645 ई॰ में चीन बापस पहुँचा. अपने साथ वह यहाँ से 700 बौद्ध प्रन्थ, मूर्तियां, तसवारें और यादगारें ले गया वापस पहुँचकर वह चन तमाम बौद्ध प्रंथों का चीनी में तर्जु मा करने में लग गया धीर धपनी दिलचस्प यात्रा को उसन 'पच्छिमी मुल्कों का ब्रुवान' के नाम से शाये (प्रकाशित) किया.

शबदौतिक अर्थशास

ैसम् 700 ई० पूर्व में **वि राज्य के बजीरे आजम कुमान** पु'रा का व्यान देश के इक्तसादी ( वार्षिक ) सवातों की

دوسرون زیالیس فه ملتی جلتی جهرتهان چینی میں بھی لتھے گئے گئیں ، سرکاری اور غیر سرکاری لوگوں نے جیوتھوں پر ہے بچہ برتھ کھ میں ۔ چینی جیرتیس میں پیدایش کی تاریم اور سی ا اکثر ذکر نہیں ہوتا . موت کی تاریخ سے پیدایس ع رتت تكالنا پرتا ه ، چيني جيونيوں كي خاصيت يه ه كه أس ميں أينے يؤركوں أور سوكاري وندكى كا مفصل بهان هوتا هے ، جغرافية ( يهوكول )

جنرانیة پر چینی میں بہت سی کتابیں میں لیکن باهری ملكين كا بيان بهت كم يايا جاتا هـ. 16 وين صدى مين یہلی بار چنرانیہ پر چینی میں آیسی کتاب اکھی گئی جس میں دنیا کے ملکوں کی سرحدوں کا بیان ہے . سن 1745 میں يوكول يرايك بهت بتولى كتاب لكهى كئى جس ميں يهيلاؤ (رستار) کے ساتھ دنیا کا بیان ملتا ہے اِس کے بعد سن 1794 میں ایک درسری کتاب لکھی گئی جس میں موسم' سندری رأستے' أبوهوا وغيرة كا ذكر هـ .

### ياترا ورتاثت

ملکی حیثیت سے چینی همیشه سے یاترا کے شرقین راف هیری اس قومی خواهش کو سب میں زیادہ بردناوا أس وبت ملا جب کنچھ بردھ بھیروں کے من میں آپنا مذھبی وطن دیکھنے کی اُمنگ اُٹھی ۔ اُس اُمنگ کو پیرا کرنے کی غرض سے سن 9ل3ع میں فاھیان گوہی کے ریاستان کو پار کرتا<sup>،</sup> مدمیه ایشیا کے سلسلی بھایاں سے گئرتا' مندوکش بہار کو لانکھتا ہوا هندستان کے خاص حاص شہروں میں تھپرتا ایک دو برس لکا میں رک کو چین کے لئے روانہ ہوا اور بہت سی کتابیں عصوبرین ارر مررتیاں لئے هوئے سن 414ع سیں جہازی راستے سے چھن وايس يهونيها .

هندستانیوں کے نقطه نظر سے هوئین تسانگ کی یاترا لهیں زیادہ پر اثر تھی ، وہ چھی میں سی 629ع میں روانع ھوا اور 16 برس کے بعد سن د64ع میں چین واپس پہولنچا۔ النے ساتے وہ یہاں سے 700 ہودہ کرنتھ، مورتیاں، تصویریں اور باداریں لے گیا ، واپس پہرنتیکر وہ آن تمام بودھ گرنتیوں کا چینی میں ترجم کرنے میں لک گیا اور اپنی دانچسپ یانرا کو أس في بينهمي ملكوركا بيان كي نام سے شائع ( پركشت ) كيا .

رلجنيتك ارتع شاستر

سی 700 لی۔ یو میں چی راجعہ کے وزیر اعظم کوان چرنک کا معیان دیمی کے اختصادی ( اُرتیک ) سوالی کی करने प्रकार करने स्वास्त की कियानों के इचाले करने की बात की जीर में दिस्से क्यापारियों जीर काम बन्धे बालों के. इसकी इस अवनिति की पुल्तनी इस बात में भी कि एक खालिसे लेकिंदर मुस्क के सामने इमेशा गरीबी का मसला (समस्ता) रहता है जबकि एक कारखानेदार मुस्क को सिक लड़ाई के बक्त में ही गरले की कमी हो सकती है. फिर भी वह इस बात के खिलाफ था कि खेतिहर मुस्कों में बाहर से बने माल के बाने पर किसी किस्म की बन्दिश लगाई जाय. उसकी इस दरियादिली की वंजह यह थी कि उसे अपने देश के बने माल की उन्दगी पर पूरा यक्कीन था.

बौधी सदी ईसा पूर्व के चाजीर में मेन्सियस नामक एक मशहूर चीनी फ़िलासफ़र हुआ है. उसने हक़्की तिजारत पर टैक्स लगाने की सलाह दी. लेकिन इससे उसकी मुराद कुछ राज की आमदनी बढ़ाना नहीं था बल्कि लोगों की काहिली हटाकर उनकी नैतिक और आर्थिक हालत को मुधारना था.

प्राने जमाने के चीनी दार्शनिकों में लाखोत्जे का नाम सबसे पहले बाता है. वह गृलिबन इठवीं सदी ईसा पूर्व में हमा है. उसकी कहावतों और उपदेशों का एक बड़ा संप्रह कर दिया शया है मगर यह कहा जाता है और सालियन सही कहा जाता है कि उसमें यहां वहां काफी बीजें बाद में जांद दी गईं. अमल (कर्म) उसके फुलसके की बुनियाद थी और वह इस बात का भी प्रचार करता था कि अगर कोई तम्हारे साथ बुराई करे तो तुम उसका जवाब भलाई से दो. मेन्सिश्रस के बाद जो अनगिनत चीनी दार्शनिक हुये उनमें कन्त्रयुसिश्रस (कुरु फू त्ये) का नाम सबसे खास है. उसका लिखा हुआ 'ल राज्य का इतिहास' ही उसे इतिहासकार की हैसियत से असर बना देने के लिये काफी था. लेकिन कन्त्रयुसिश्चस इतिहासकार के मुकाबले में एक धर्मो । देशक की है सियत से ज्यादा मशहर है. अपने शिष्यों को दिये हुए उसके सुन्दर उपदेश और उसकी निजी जिन्दगी के वाक्रयात कन्मयूसिश्चस के धर्म की चार किताबों में से एक में दर्ज हैं. कन्ययुसिक्स के उसलों के मुताबिक हर इनसान बुनियादी तौर पर अच्छा होता है और उसके चारों तरफ की हालत उसमें बुराई पैदा कर देती है. अपने उपदेशों के मुताबिक वह विश्वासी के मुकाबले एक नास्तिक क्यादा लगता है. उसका उपदेश था-इस दुनिया के या बहिश्त के लालच में नेक चलन न बनो बहिक इसलिये अच्छी चाल-पलन रक्षां कि वह खुद अपने आप में एक इनाम है. वह फहता का कि मां-बाप की खिदमत और पढ़ोसी के दुलों को पैटाना इनेसान की सबसे बड़ी खुबी है.

سرائی استروں آور کنافیس کے حوالے کوئے کی یامت کی آبو جہ حصے ویاپاریس اور کام دھندھے وائیس کے اس کی آبس گری ہی اس کی آبس آرت تنبی کی پختکی آبس بات میں نہی کہ ایک خالص کیدتہر ملک کے ساساہ همیشہ غریبی کا مسئلہ (سسید) رمتا ہے جبکہ آبک کارخانے دار ملک کو صوف اوائی کے وقت میں ہی ظے گئی کیے ہو سکتی ہے ، پہر بھی وہ آبس بات کے خلف تبا که کھیتھر ملکوں میں باہر سے بنے مال کے آنے پر کسی قسم کی بندھی اگائی جائے ، اُس کی آبس دریا دلی کی وجہہ یہ تھی بندھی اگائی جائے ، اُس کی آبس دریا دلی کی وجہہ یہ تھی

چرتبی مدی عیسی پورو کے آخیر میں مینسیس نامک ایک مشہور چینی فلاسنو ہوا ہے۔ اسنے حقوقی تجارت پر قیمس لگائے کی صلاح دسی ، لیکن اِس سے اُس کی مراد کچھ راج کی اُمدئی ہوھانا نہیں تھا بلکھ لوگوں کی کلفلی ھٹا کر اُن کی فیکک اور آرتیک حالت کو سدھارنا تھا .

پرائے زمانے کے چیلی دارشنکوں میں الؤنزے کا نام سب سے پہلے آتا ہے ، وہ غالباً چھٹویں صدی عیسی پورو میں ہوا ہے ، اً کی کہاوتوں اور آپدیشوں کا ایک ہوا سنکرہ کر دیا گیا ہے معر يه كها جانا هـ اور غالباً محيم كها جاتا هـ كه أس مين یہاں رھاں کانی چیزیں بعد میں جور دی گئیں ، عمل ( کرم ) أس ك فلسف كي بذراد تهي أور وه أس بات كا بهي پرچار كرتا تها که اگر درئی تمهارے ساتھ برائی درے تو تم اُس کا جواب بھائی سے ور مینسیس کے بعد جو انگنت چیئی دارشنک موٹے اُن میں كنيرسيس ( كن فوتزے ) كا نام سب سے خاص هے . أس كا لكها هوا الوراجية كا إنهاس على أف إنهاسكار كي حيثيت سے أمر بنا دیلے کے لئے کانی تھا ۔ لیکن کنیفرسیس اِنہاسکار کے مقابلہ میں ایک دھرموہدیشک کی حیثیت سے زیادہ مشہور ہے ، اپنے همیوں کو دیئے ہوئے اُس کے سندر آیدیش اور اُس کی تجی وُندگی کے واقعات کلفیوسیس کے دھرم کی چار کتابوں میں سے ایک میں درج هیں ، کنفیوسیس کے اصوابی کے مطابق هو انسان بنیادی طور پر اچھا ھوتا ہے آور اُس کے چاروں طرف کی حالت أس میں برائی پیدا كر دیتی هے . اپنے أيديشس كے مطابق وہ وشواسی کے مقابلہ ایک ناستک زیادہ لکتا ہے ۔ اُس کا اُیدیش تھا۔ اِس دنیا کے یا بہشت کے لاچے میں نیک چلی نه بنو بلكه إس لئه أچهى چال چلن ركه و كه وقضود آيني آپ ميل أيك إنعام ه . وه كبنا تها كه مال-بات ني خدمت أور يورسي کے دکھوں کو بتانا اِنسان کی سب جم بری خوبی ہے ۔

भीमी साहित्य में वैद्यकशास्त्र के ऊपर बहुत सी कितार्वे हुन तमाम किताबों का मजमुखा ( संग्रह ) 'सून बेन' के काम से स 2598-2698 ई० पू० के बीच में किया गया. बीनी में नंब्बाजी (नाबी परीक्षा), व सफ्रा, सौदा, बलराम (बात, पिता, कफ) भादि गुर्गो, मुख्तलिफ तरह के बुखारों ( क्यरों ) और दिल की हरकत ( हृदयगांत ) पर बहुत सी परतकें हैं. चीनी आयुर्वेद शास्त्र 'येटीरियामेडिका' इतना पराना है कि लोग उसे तारीख से भी प्राना (प्राग ऐति-दासिक काल का ) मानते हैं. 26 वर्षी की लगातार अनथक मेहनत के बाद उसका मौजूरा एडीशन स 1578 ई० में विन-रसाद्यो' के नाम से प्रकाशित हुन्या. यह एक काबिले गौर बात है कि चीनी पेन त्सान्त्रा में असल (मौलिक) द्वाएं 865 हैं और इनमें एक एक द्वा साल के 365 दिनों म से इक एक दिन के साथ मन्सूब (सम्बन्धित) है. इनमें 120 विचादि ( संखिया, कुचला आदि जहरीली द्वाएं ) हैं, 120 स्वर्णादि (सोना, चाँदी, तांबा, मोती, मूंगा, आदि की भस्म) भौर 12) काष्टादि (जदी बृटियाँ) हैं.

खेती

हालांकि राजनैतिक अर्थ शास के उस्लों पर चीन में इसरत ईसा की पैदायश से सिद्यों पहले चर्चा हाती थी पर सेती के ऊपर चीनी साहित्य में कोई मुस्तनद (प्रामाणिक) किताब 1200 ई॰ से पहले नहीं निकली. सन् 1400 ई॰ में चैन कु ने पहली बार खेती, जानवरों का पालन और रेशम के कांचों के ऊपर एक बड़ी सी किताब लिखी. पर खेती पर वैक्रानिक और स्टैन्डर्ड किताब भिक्खु-सम्राट हु इ. आक चि (1562-1634) ने लिखवाई. इस प्रस्तक का नाम मुक-चेक-चुआन-शु है और यह के हिस्सों में बंटी हुई है.

### चित्रकला

बहुत शुरू खमाने से ही चीनी चित्रकता के नमूने मिलते हैं. खुराख़ती (शोभनलेखन) की भी चित्रकता के साथ ही साथ तरक्षकी हुई. चित्रकता पर जो किताबें हैं उनमें खुराख़त पर भी अध्याय हैं. सन् 1119 और 1126 ई० के बाच चीनी सम्राट ने चित्रकता के ऊपर एक 'हुआन हो हुआ पु' नामक प्रंथ तिसवाया. इसके मुस फ ( तेखक ) के नाम का पता नहीं चलता लेकिन इसमें 236 चीनी चित्रकारों का जिक है और उनके 6000 चित्रों का इसमें संग्रह है.

### विश्वकोष

्रिनी साहित्य की चीतरका तरक्की ने यह जरूरी कर किया कि हवाले ( वस्त्रेस ) की कितावें चीर इनसाइक्लो-पीडिया (विश्वकोष) की रचना की जाय- 'ताइ पिक यु लान'

چینے تنافیت میں ویدیک شاہر کے اوپر بہت سے کابیں ھیں ، لی تمام کالیں کا معجموعه ( سنکرہ ) اس شین کے نام سے سُن 2598-2698 أي. يو كے بيبے ميں كيا كيا . چيني میں نبائمی ( تازی پریکشا ) و صفراً سوداً الله ( بات ایت نف ) آدی گلوں مختلف طرح کے بخاروں ( جوروں ) اور دل ئی حرکت ( هردائه کلی ) پر بهت سی پستیس میں . چهلی أبرريد شاستر الميتيريا ميديكا إننا يراف هے كا لوك أعد تاريخ سے ھی برانا ( براک ایتهاسک کال کا ) مانتہ ھیں . 26 ررشوں ان الانار انتهک محنت کے بعد آس کا موجودہ ایڈیشن سن 1576ع میں 'بھی تساؤ' کے نام سے برکشت عوا ، یہ ایک اہل غیر بات فے که چینی دیرے تساؤ میں اصل (مولک: دوائیں 365 هيلي أور إن ميلي آيك آيك دوا سال كے 365 دنوں ابن سے ایک ایک دن کے ساتھ منسوب ( سبندھت ) ہے . ن مين 120 وشادي ( سنهيا كجل أدي زهريلي دوانين ) این' 120 سورن آدی ( سوئا کاندی ٔ تائیا ' موتی مونگا دی کی بہسم ) اور (12 کاشٹادی ( جوی بوٹیاں ) میں .

ہیتی

حالاتک راجنیتک ارته شاستر کے آمراس پر چین میں حضرت عیسی کی پیداش سے صدیوں پہلے چرچا ہوتی تھی پر چینی ساہنیہ میں کوئی مسئند (پرامانک) نتاب 1200ع سے پہلے نہیں ٹالی سن 1200ع میں چین فو لے بالی بار کھیتی بر ویکیانک اور اسٹینڈرڈ بنٹ بڑی سی کتاب لکھی ۔ پر کھیتی پر ویکیانک اور اسٹینڈرڈ تاب بھاتو سمرات ہوئوآن چی ( 1564–1562 ) نے لکھوائی ۔ سی پستک کا نام نون-چین-چوآن شو ہے اور یہ چھ حصوں بنٹی ہوئی ہے ۔

#### X,

بہت شروع زمانے سے ھی چینی چترکا کے نمونے ملتے ھیں ، عشخطی (شوبھن لیکھن) کی بھی چترکا کے ساتھ ھی ساتھ رقی ھوئی ، چترکا پر جو کتابیں ھیں اُن میں خوشخط پر بی اُنتھائے ھیں ، سن 1119 اور 1126ع کے بیچ چینی سرات نے چٹرکا کے آرپر ایک 'ھوآن ھو ھواپو' نامک گرنتھ بھوایا ، اُس کے مصلف (لیکھک) کے نام کا پتہ نہیں چلتا بھی اِس میں کے دیا چینی چترکاروں کا ذکر ہے اور اُن کے بھی اِس میں ساکرہ ہے ،

### شر کیش

چینی سامتیه کی چوطرنه ترقی نے یه ضووری کردیا ه حوالی ( اُللیکه ) کی کتابیں اور انسائکلوپیڈیا وعوکوس ) کی رچنا کی جائے، تائی پس یو لان क्र इसी स्वयं का किरमकोष है (हाज़िक महता करी) जीर वह 1000 के में सिका गया. करीय पार सी परस के बाद एक पूछा दिश्यकोप 'यु आन को ता तिएन' सन 1408 ई० में शादी हुकम से (लखा गया. इसमें कन्यपृक्षियत है क्येरों, शंतहास, दर्शन और आम साहित्य पर कुत्तिसत (विस्तृत) हवाले मिलते हैं. तीसरा चड़ा विश्व-क्य 'तु शि चि चाक' सम्राट काक हि ने तैयार कराया पर इसके वारिस (क्याधिकारी) सम्राट युक चेक (1723-1736 ई०) ने क्ये शाया (प्रकाशित) किया. इसमें हर तरह के इस्मी हवाले देने की कोशिश की गई है, जैसे—तारा मन्डल, प्रथ्वी, मनुष्य, कला, विश्वान, फ्लसफा (दर्शन), सियासत (राजनीत ) वरीरा.

### एक सरसरी नज़र

बीनी साहित्य पर एक सरसरी नजर डालने से ही बार बातें खास तीर पर दिखाई देंगी (1) उसकी क़दामत (प्राचीनता), (2) इउतलाफ़ (वि.मजता), (3) मुस्तनद होना (प्रामाणिकता) और (4) ऊँचे उसूल (उच्च सिद्धांत-वादिता). बीन में साहित्य की हजारों बरस के दौर में जो लगातार तरक़की हुई है, मुख्तलिफ़ विषयों पर जिस वैज्ञानिक तरीक़े से कितावें लिखी गई हैं, ऐतिहासिक बाक़यात को जिस सही सही तरीक़े से बयान किया गया है और हर तरह के साहित्य को महेपन से जिस तरह बचाया गया है—ये सब ऐसी बातें हैं जिनकी मिसाल दूसरे देशों की अदबी तरीख़ (साहित्यक इतिहास) में नहीं मिलती.

इस लेख को ख्रस्म करते हुये एक जरूरी बात यह कहनी है कि चीनी बिद्धानों और दार्शनिकों ने जो इतनी जबदेस्त तरक्क़ी की बसकी एक बहुत बड़ी वजह यह है कि सन् 105 ई॰ में ही चीनी लोगों को काराज बनाना आ गया था और इसवीं सदी में छापे की कला से भी चीन बाले बाक्रिफ हो गये थे और यह वह जमाना था जब यूरापीय तहजीब अधेरे में रार्क्र पड़ी हुई थी. 

### أيك سرسرى تظر

چھنی سامتیہ پر ایک سرسری نظر ڈالنے سے ھی چار ہائیں خاص طور پر دکھائی دینگی (1) اُس کی قدامت ( پراچینٹا) (2) اختلف ( وبھنٹا ) (3) مستنی ھونا ( پراسانکٹا ) اور (4) اُرتیجے اُمول ( اُرج سیمانٹوادیٹا ) ، چین میں سامتیہ کی ھوائرں پرس کے دور میں جو لگانار ترقی ھوئی ہے، مختلف وشھیں پر جس ویکیائک طریقے سے کتابیں لکھی گئی ھیں اُیکیاسک واقعات کو جس صحیح صحیح طریقے سے بیان کیا گیا ہے اُور ھو طرح کے سامتیہ کو بھدے بی حصیح طریقے سے بیان کیا گیا ہے اور ھو طرح کے سامتیہ کو بھدے بی مثال دوسرے دیشوں کی سے، سے، ایسی ہاتیں ھیں جنگی مثال دوسرے دیشوں کی اُدھی تاریخ ( سامتیک اِنہاس ) میں تبھی مائی ،

اس لیکھ کو ختم کرتے ہوئے آیک ضروری بات یہ کہنی ہے کہ چینی ورانوں اور دارشنکوں نے جو اِتنی زبردست ترقی کی آس کی ایک بہت بڑی وجہہ یہ ہے نه سی 100ء میں ھی چینی لوگوں کو کافل بنانا آگیا تھا اور دسویں صدی میں چھالے کی کا سے بھی چین والے واقف ہو گئے تھے اور یہ وہ زمانہ تھا جب بہریہ تہذیب اندھیرے میں فرق پڑی ہوئی تھی ۔

### प्रोफेसर मुहम्मद मुजीब

इन्यान को सुदा उसी वक्षत बाद आता है जब उस पर कोई आफ्त नाज़िल होती है. समृब्का ताम्झलेंद र के पीर उसे कई बरस है समस्ता रहे थे, सेकिन उसने अपनी ज़िन्दगी का बक्त बदसने का इस्ंदा उसी बद्धत किया जब ससकी जवान सबकी और इस बरस का सक्का एक ही हफ़्ते के अन्दर इन्तकास कर गये और उसे अपनी सादी में सफ़ेद बास नज़र आने समे.

'नई किन्द्रगी, नया सकान !'—उसने कपने दिल में सीचा— 'निस वर में सात पुस्तों से ऐयाशी हो रही हो, वहां एक करलाह कोका कैसे वसर कर सकता है. यहां रहा तो मैं दिज-अर में अपने नेक इरादे सब भूस नाऊँगा.'

पुराने मकान में उसने रात गुज़ारना भी पसन्द न किया. फ़ौरन एक कोठी किराये पर ली और ख़ानदानी पर अपनी आख़िरी तथायफ़ मिला को बख़्श दिया. निजया को भी अब अपनी स्रत शक्स पर इतंना भरोसा नहीं रहा था, वह ख़शी से इस पर राज़ी हो गई और संस्थी को जात से कोब दिया. अयूवकां का नया मकान बनने ख़ना, उसके दिसा पर दोज़स्त का स्त्रीफ़ झाया था; मंगर बन नमाज़ पबते-पहते डांगें बक बातीं, तो थी बहुताने के लिये वह अपने नयें ककाम को देखने बसा जाता. मकान बनते और बढ़ते देखकर उसे माख़म होता कि बैसे ससकी दुआएँ सुन्त हो रही हैं और उसके कम्यों से गुनाहों का बोम इसका होता जाता है. मकान और उसकी सहानी ज़िन्दगी में एक रिस्ता-सा पैदा हो गमा, जिस पर उसे अक्सर ताराज्यत होता था; सेकन वह उसे कभी समझ न सका.

महान का बनवाना उसने अपने मुख्तार मुमिर मियां के सुपुर्द किया और वह रोज़ बाकर उससे कहता या कि जितनी जल्दी मुम-किया हो सकान तैयार करा दो.

'सुसिइ मियां! ६पये का विश्वकृत कृमाल व करो, जितने मज़दूर मिर्शे उस पर ताना दो. ज़करत हो तो कृत्रं खेने पर तैनार हूँ, जैरा इरावा साव शीयी-सादी ज़िन्दगी वसर करने का है, जितना भी कृत्रं हो, सब स्वदा हो जावगा. मुसिइ मियां, तुम फुर्ती से काम कार्यों, मज़दूर बहुत से सम्म दो. मैं नवे मकान की तरस में मरा

हर साम को अयुगयां और दुनिइ मिनां ने वही बवास र अक्षय हुता सरते है. انسان کو خدا آسی وقت یاد آتا ہے جب آس پر کوئی آنت قازل هوتی ہے ، ایوب خان تعلقدار کے پور آسے کئی ورس سے سنجها رہے تھے لیکن آس نے اپنی زندگی کا ڈھنگ بدلنے کا ارائه آسی وقت کیا جب آس کی جوان لوکی اور دس ورس کا بوکا آیک ھی ھنتے کے زندر انتقال کرگئے اور آسے اپنی دارھی میں سنید بال نظر آئے لئے .

انٹی زندگی' نیا مکان ا'ب۔اُس نے اپنے دل میں سوچا ۔ جس گھر میں سات پشتوں سے عیاشی ہو رہی ہو' وہاں ایک الله والا کیسے بسر کرسکتا ہے ۔ یہاں رہا تو میں دن بھر میں اپنے نیک ارادے سب بھول جاؤنگا ۔'

پرائے مکان میں اُس نے رات گذارنا بھی پسند نه کیا ، فررا ایک کوئی کوایه پر لی اور خاندانی گهر اپنی آخری طوائف نجیا کو بھی آب اپنی صورت شکل پر اِننا بہرسه نهیں رہا تھا ، وہ خوشی سے اِس پر راضی هوگئی آور مجھنی کو جال سے چھوڑ دیا ، آیرب خاں کا نیا مکان بننے لگا' اُس کے دل پر دورنے کا خوف چھایا تھا' مگر جب نیا نیا مکان کو دیکھنے گانگیں تھک جاتھی' تو جی بھلانے کے لئے وہ آینے نئے مکان کو دیکھنے چلا جاتا ، مکان بنتے اور بڑھتے دیکھکر آور اس کے کندھوں سے گناھوں کا بوجھ ھلکا ھوتا جاتا ہے ، مکان اور اس کے کندھوں سے گناھوں کا بوجھ ھلکا ھوتا جاتا ہے ، مکان اور اس کی دوحانی زندگی میں ایک رشته سا پیدا ھوگھا' اور اس کی روحانی زندگی میں ایک رشته سا پیدا ھوگھا' اور اس پر آسے اکٹر تعجب ہوتا تھا؛ نیکن وہ آسے کبھی سمجھ نے

مکلی کا بنوانا اُسنے اپنے مختار مومد میاں کے سیرد کیا اور وہ روز جاکر اُس سے کہتا تیا کہ جتنی جادی ممکن ہو مکلی تیار کرادو .

امرمی میاں لا روپٹے کا بالکل خیال نه کرو' جتنے مزدور ملیں اُس پر لگادو ، ضرورت هو تو قرض لینے پر تیار هوں ، میرا اِرانه اب سیدهی سادی زندگی بسر کرنے کا هے' جتنا بھی قرض هو' سب ادا هو جائیگا ، مومد میاں' تم پھرتی سے کام کراؤ' مزدور بہت سے لگا دو ، میں قائے مکان کی قرص میں سرا جاتا هیں ۔'

هر شام کو ایوب خان آور مومد میان میں وهی سوأل و جیاب ها کرتے تھے . 418 BLA

पूज्र वर .... क्या रोज में ।' न्धीर श्रीवारी की सीप-पीत ?

मुसिह मिस्रो, कृत कादी करवाहए. धाप ती हर रोख वही बह रोज का किस्सा धनाते हैं.

'बी हो, हुणूर !..... अब तो कुछ देर नहीं होगी.'

यह समाज प अवाद सुब्तार की कीठरी के बामने हुआ करते . सर्वाचा रोग वेशमी में एक सकरी से एक काम हैंट के दुक्ते ातोको ही केशिश करता भीर फिर इधर-उधर देखकर मोटर की फ बढा बाहा.

एक दिन वस अयुवकां देव भारत के लिये आवा तो सकतार ने II-- 'हज़र अप नवादगंज की नई कोठी तैयार हो गई, वहां के म् मिरिनवों और मज़रूरों को मैंने रख शिवा है, मिरनी अच्छे हैं र अब काम भी अकला होया.'

'शक्का !'

दोनों मकान का चक्कर लगाने लगे. कल चौर बाज का फर्क हतार बढ़ा-बढ़ा के बता रहा था.

'हुजूर ! यह नये मिस्त्री हैं.'

मिल्त्री उठे भीर भुक्षकर बक्षाम किया.

'हुज़र का मिज़ाब तो बच्हा है...?'--एक मिस्त्री ने पूछा.

अयुरखां ने उसका कुछ जवाब नहीं दिया. उसकी नजुर और जिबह दूसरी तरफ थी......मिरित्रयों के पास एक जवान लहकी ही थी. उसने बजाय आदाब बजा जाने के अयुवसां की तरफ र से देखा और उसके मुँह पर कुछ मुस्कराइट-सी मा गई, अयुर का बदन कॉप गया, चेहरा लाल हो गया.

'हुजूर ! मिस्त्री शिकायत करते हैं कि यह चूना कुराव है, मेरे यात में किसी ठीकेदार से मुश्रामता करना बाहिये."

Sei l'

अयुवस्ताँ मुस्तार की वातों के बवाब में सिर्फ हूँ-हाँ करता रहा, जन को भी यह अच्छी तरह न देख सका, जिस तरफ वह देखता, । खरकी की शोख आँखें उसकी नज़र का मुकाविला करतीं और ाडे कान में डही से आवाज आती-- हज़र का मिन्छ तो

मयुषकां पर मुका खेता, शगरने उसे माह्म वा कि वह हिंदी और मिस्त्री सब अपने काम में मरागृत हैं. उसका दिता क रहा था, तबीयत पर कानू विसंकुल नहीं रहा. शराब पीने के दिख्याचान की शिकायत वैदे भी हो गई थी, इस नवे वाकिये ने कैफ़िन्स बसके दिस में पैदा की बी, यह एक ब्रांबी की ज़िस्त्रों [ तिमके की तरह हथर-छंपर सम्बद सा रहा था.

बेड्रिय इन कुवासात और अजुनात की अमुख्यित क्या वी १ प्राची औं अर्थना व्यक्तित हो उद्यासा हरन स्वेर त्रज्ञानों हे المان المراجعة والمان المان المان

الور دیواروں کی لیب بوت 19

المنامد ميان فرا جلدي كروائيه . آپ تو هر روز وهي وأعرد روز كا تصه سناتے هيوں .

المي هال حضور ال....اب تو کچه دير نهين هوگي .

یه سوال و جواب مطار کی کوتوری کے سامنے هوا کرتے تھے۔ المب خان روز ہے صبری میں آیک لکڑی سے آیک خاص آینہ کے اکرے کو ترزلے کی کوشھی کرتا اور بھر اُدھر اُدھر دیا موثر كي طرف جا جاتا .

ایک دن جب ایرب خان دیک بھال کے لئے آیا تو مختار کیا۔۔ حضور آپ نواب گنبے کی نئی کوٹھی تیار ہوگئی . وهاں کے چند مستریوں أور مؤدوروں دو میں لے رکھ لیا گے۔ أستري اچه مهن اور آب كام يهي اچها موكا .

الجاا

دوٹُوں مُکُلن کا چکر لگانے لکے کل اور آبے کا فرق مختار بوها بوهاکے بتا رها تھا ۔

حضور ! يه نثي مسترى هين .٤

مسترى أثه اور جهككر سلم كيا .

الحضور کا مؤالے تو اچھا ہے..... ایک مساری لے

ایب خار نے اُس کا کچھ جواب نہیں دیا ، اُس کی المطر اور توجه دوسری طرف تھی....مستریوں کے یاس ایک جوان لوکی کھڑی تھی ۔ اُس نے بجائے آداب بجا لانے کے اُمِرْبُ خَالَ اَی طَرف فور سے دیکھا اور اُس کے سنھ پر کچھ مسکراهٹ سی آگئی ، ایوب خال کا بدن کاتپ گیا' چھڑہ الل

احضر ! مسترى شكايت كرتے هيں كه يه چونا خرأب هـ ا مهرے خیال میں کسی تهیکیدار سے معاملہ کرنا چاہئے .

ایرب خال مضار کی باتوں کے جواب میں صرف عوں -هان کرتا رها مکان کو بھی وہ اچھی طرح ته دیکھ سکا . جس طرف ولا دیکھتا اُس لوکی کی شوع آنکھیں آس کی نظر کا مقابلة كرتيں اور أس كے كان ميں نہيں سے أواز آتى ـــ بجفور کا موالے تو انجها ہے ؟ ؟

أيِّب خان سر جهكا لينا الرجه أعد معلوم تها كه ولا لوكي اور مستوی سب اپنے کام میں معنول هیں، اُس کا دل دھوک رها تها طبیعت یر تابو بالکل نهیں رها . شراب یعلم سے آسے أَخْتَلْجِ كِي شَكَايِت ريسِ بني هوكڻي تهي' اِس نَيْدِ وأَنْمَ لِهِ جِو کینیت اس کے دل میں پیدا کی تھی' وہ ایک آندھی تھی جس میں وہ تلکے کی طرح اردمر آدھر چکر کھا رہا تھا ۔

لَيْمِي إِن خيالت أرر جديات كي أمليت كيا تعي إ اليب خال كلي مرتبع علقق جرديًا توا . جين أبر جرياس كي किया के यह व्यव समझता और पहचानता था, क्या दरी सेतान में एक नया कर सेकर उस पर हमसा किया था १ नहीं, यह दरक नहीं था, यहां न हुएन था, य तसन. घर पहुँचते-पहुँचते अयुव्यां की सिस्प्रिया बड़ीन हो गया था कि वह आशिक नहीं हुआ है; मगर किर यह प्रशाहत कैसी १ यह आशारी क्यों ?

बर पहुँचते ही अयुवका ने दो रक्षात नमान परी. चरा की आद में वह सभी इतना न हवा था जितना इस नमान में, और यह अवीव वात थी कि इरहम उस नीजवान मज़दूरिनी की शोस आंखें उसे ताकती रही, उसका दिल जदकता रहा, तबीयत कुछ परेशान रही, बोकिन भ्वादत में कोई एक न भामा, सूदा स्कृत न हुआ, वस्त्री के बीच-बीच में वह सुशी की आहें मरता भाता था, उसकी आंखों में आंस् आ रहे के, उस मरीज़ की तरह को किसी लम्बी नीसारी से अच्छा होकर अपनी आफ़ियत की सुशी मना रहा हो.

'सबीव बात है... अजीव बात है... '---इंसके सिवा अयूवज़ां के मुँह से कब न निकता.

समेरे जब सोकर उठा तो अपने-आपको उसने एक विसक्त सुसरा आवमी पाया, नह सावा लिवास जिसे वह रोज़ा, नमाज़ और वज़ीफ़ें की ज़ंबीरों की कड़ी और अपने लिये एक सज़ा सममता था, वसे बहुत पसन्द आया, नीकर जब नाइता लाया तो उससे वह बहुत प्यार से बोला, इस तरह कि नीकर जबरा गया; क्योंकि नह एक सुना चेहरा और सुनं आंखें देखने का आदी था, दो-नार लोग मिलाने आये, नह भी खुरा हुए और यह राम बापस लेकर गये कि तासुक्तेरार साहब बाकर्स अस्लाह बाले हो गये हैं, अयुवसां जब सकान देखने गया, तो उसने बजाय सुक्तार के साथ घूमने के मज़दूरों से बातें हों, विलक्त इस तरह गोया वह खुद मज़दूर है, खुक बुदहा मिला, विसे उसने पहले कभी नहीं देखा था, वसे उस दिन बहुत पसन्द आया, यहां तक कि वह उसके पास बैठ गया और वितक्तकारी से बातें करने लगा.

'अई क्या तुम बाज से काम कर रहे हो ?'

'बादी दज्र, इस तो बहुत दिनन से दियां इन.'—मिसी ने सवाब दिया, 'इज्रूर गरीव आदमिन का कीन देखत है, बहकी का नशरावत हैं !'—मिस्त्री ने मुसकरा कर कहा.

दा माई, ठीक कहते हो.'— अयूवका वजाय हय ताने पर काराज होने के और क्रा हुआ, उसके दिल में स्वाहिश पैदा हुई कि अपने और मिजी के दरमियान को फासला है वह कम हो जाय, जो क्षाप है वह निर आय, पहले अगर वह इसकी कोशिश करता तो सम्बंधी बनका काम न देती. आज उसे बब साफ दिकाई दे हहा था.

'हा नाई, ठीक कहते हो.'—उसने ठण्डी सांस भरकर कहा— भूति कहा कोई एक 'यहाने से काम कर रहे हो और शुक्ते वह मी-कही सामान कि तुम हो भी वा नहीं...सेकिन कव बीरे-बीरे मेरी असीमत कहक रही है. कव शुक्ते मासान हुआ कि हमारे रस्ता ने कही कहाना है कि सामानी के किसे कमार में कामा उतना ही सुरिक्क اندار کو را المحد سنطور اور پیسالتا تیا . کیا اِسی شیمان نے ایک نیا روپ افتار اُسی پر حمله کیا تیا ؟ نہیں یہ عشق نہیں ہیا ۔ پہر بہرنچتے بہرنچتے ایس خال کو بائکل یقین موگیا تیا که را عاشق نہیں موا ها: یہ بیر یہ گهراها کی بیر یہ گهراها کیسی ؟ یہ لیاری کیس ؟

گور چہولکھتے ھی آبوب خال نے دو رکعت نماز پرھی ،

منا کی یاد میں وہ کھی اِنلا نہ قوبا تھا جتاا اِس نماز میں

ار یہ عجیب بات تھی که هردم اُس نوجواں مزدورتی کی

ہم آنکیں آس تاکتی رهیں' اُس کا دل دھرکتا رھا' طبیعت

کچھ پریھاں رھی ؛ لیکن عبادت میں کوئی فرق نہ آیا' خدا

منا نہ ہوا' وضیفے کے بیج بیج میں وہ خوشی کی آعیں بھرتا

جاتا تھا' اُس کی آنکھوں میں آنسو آرھے تھے' اُس مریض کی

طرح جو کسی لمبی بیماری سے آچھا ھوکر اُپٹی عافیت کی

غیشے میا رھا ھو ،

ابرب خار کے منہ سے دچھ لت نکلا۔ ابرب خار کے منہ سے دچھ لت نکلا۔

سویرے جب سوکر آئیا تو اپنے آپ کو اُس نے ایک بالکل دوسرا آدمی پایا' وہ سادہ لبلس جسے وہ روزہ تماز اور وظایفہ کی زنجیروں کی کوی اور اپنے لئے ایک سؤا سمجھتا تھا' اُسے بہت پسند آیا ، نوکر جب تاثیتہ لایا تو اُس سے وہ بہت پھار سے ہوا' اس طرح که نوکر گیبرا گیا؛ کیونکہ وہ ایک سونها چہرہ اور سرخ آنکھیں دیکھنے کا عادمی تھا ، دو چار لوگ مانے آئے' وہ بھی خوش ہوئے اور یہ رائے واپس لیکر گئے که تعلقددار صاحب واتمی الله والے ہوگئے ہیں ، ایوب خاں جب مکان دیکھنے گیا' نو اس نے بجھائے مختار کے سامہ گھومنے کے مزدوروں سے بائیں نو اس نے بھیویں' بالکل اِس طرح کویا وہ خود مزدور ہے ، ایک بتھا جھیویں' بالکل اِس طرح کویا وہ خود مزدور ہے ، ایک بتھا مستری' جسے اُس نے پہلے کبھی تہیں دیکھا تھا' اُسے اُس دن بہت پسند آیا' بہاں نک که وہ اُس کے پاس بیتھ گیا اور بہت پسند آیا' بہاں نک که وہ اُس کے پاس بیتھ گیا اور بہت پسند آیا' بہاں نک که وہ اُس کے پاس بیتھ گیا اور بہت پسند آیا' بہاں نک که وہ اُس کے پاس بیتھ گیا اور بہت پسند آیا' بہاں نک که وہ اُس کے پاس بیتھ گیا اور بہت پانیں کرنے لگا ،

'بھٹی کیا تم آے سے کلم کررہے ہو ؟' 'نامیں معجر' ہم تو بہت دنی سے میاں ہی:۔۔۔ستری

نے جواب دنا ، انعجور گریب آدمن کا کون دیکھت ہے ، وهکی کا نجورات هیں 9 استمستری نے مسکرا کر کہا ،

'ماں بھائی' ٹھیک کہتے ہو؛۔۔ایوب خاں بحیائے اِس طعنه پر ناراض ہونے کے اور خوش ہوا ۔ آس کے دل میں خواہش پیدا ہوئی که اپنے اور مستری کے درمیان جو ناصله ہے وہ کم ہو جائے' جو فیوار ہے وہ گر جائے ۔ پہلے اگر وہ اُس کی کوشش کرتا تو اُس کی سبجے کام نه دیتی ، آج اُسے سب صاف دکھائی دے رہا تھا ۔

'هل نهائی' تهیک کہتے هوا۔۔۔اُس نے تباتی سائس ہور کر کیا۔۔۔'تم یہاں کوئی ایک مہینے سے کام کو رہے هو اُور معید یہ بھی لیمیں معلوم کہ تم هو بھی یا تہیں۔۔۔۔۔لیکن آب دهیو۔ دعیرے میزی طبیعت بدل رہی ہے۔ آب مجید معلوم هوا کہ هنارے رسول نے اُنے ترکیا ہے کہ آمیووں کے لگہ نہادے میں جال آتنا هی مشکل है जितना की अपने कार्यों के लियाना की अपने अपनी बड़ी हुए तर्द पुंचारी, कार्या क्षण दिन हुए जब मेरे हो बचने एक ही हुएते के सम्बद्ध पर गर्वे, तब बुक्त क्षणका आया कि खुवा जी एक बीच है, कीर को खुदा को भूत जाता है, उसका नुसासाय ही सुक्रमान हैं."

'हां हबूर ! जब सारी दुनिया खुराई की है, तो खुदाब की भूते हे दुनिया कैसे मिसे !'----मिस्त्री ने इतमीनाव से कहा.

'हां और कहते हो ...... इसकिये मैंने इरादा कर किया है कि सपना पुराना मकान, जहां में व्यवस्थिं की तरह रहता था, होड़ द्या, सीर इस नये मकान में बैठकर व्यवने , खुदा की इवादत हहाँगा.'

मिस्री कुछ कहना चाहता था सगर ठक गया, ध्रम्बक्षां ने क्षित-हिला जारी रक्का---'में अब यहां विल्कुल ग्रीबों की ज़िन्दगी बसर इसँगा....ग्रीबों के साथ रहुँगा...सबका दोस्त, सबका माई...'

अयूवकों कुछ देर तक कामोरा क्या सोचता रहा. दिस की बात हवान पर इतनी आसानी से नहीं खाती. मिछी ने एक उंदी सांध की बीर काम ग्रुक कर दिया; तेकिन दोनों की यह माखूम हो गया कि हनमें दोस्ती हो गई है, और दोनों इससे बहुत खरा हुए, अयूवकां मैं अब किसी किस्म की मिसक बाकी नहीं रही.

घूमते चूमते वह उस जगह पर भी पहुँचा जहाँ वह नीजवान मन्त्रनी काम कर रही थी, जिसकी आँकों और मुसकराइट ने प्रयूवकों में यह नया जोश पैदा कर दिया था. लवको ने अयुवकों र सिर्फ़ एक सरसरी नज़र बाली और अपने काम में लगी रही; हेकिन अयुवकों को यह नज़र भी चहुत प्यारी नाख्य हुई. वह रसों की मुहुव्चत, इमददीं, दिली दोस्ती से मरी थी, उसने एक्ट्रम ने ज़ाहिर वर दिया, जो महीनों की दोस्ती में नहीं बताया जा सकता और फिर ज़बान में वह कुनते अया कहाँ जो निगाहों में हुआ करती है. कम-से-कम अयुवकों इसे यों ही समम्मा, उसने यह नहीं सोचा के मज़दूरनी उसकी राज़दार क्यों बनने सगी, ऐसी बात आज उसके देमाग़ में समा ही नहीं सकती थी. आज वह सक्या माई. सब का ऐस्त या, उसे एक तरह से आशा थी कि हर मई और औरत उससे प्रानी मुहुक्वत का इज़हार करेगी, और इसमें उसे निराशा नहीं ही.

मिल्ली उससे नेतक्तलुकी से वालें करने सागे और हर रोज उनसे ति करने में अध्यान को नया जानन्य जाता जा; हर रोज वह त्ये जज़बात विक में समेट कर चर बाएस जाता, जैसे लोग कोई भैमती चीज़ बगुल में दबांकर से जाते हैं और इस दीसत को अपने हरा के सामने पेटा करता. इवादत उसके लिए एक मुलाकात-सी हो हर, जिसकी वह विक्रचल्य और पुरक्तक बनाने के लिए हर बिन रे हैंसी हैंसता और जये ऑस्ट्र रोता. मिल्लियों से बातचीत करते ए उसे स्मेशा मेहिन-कोई ऐसी बात सुनाई बेती को उसे स्वाई और एकत से की हर्त सामन होती. इस अवाज अज़दूरणी की आंकों ما المنافئة المسلم في فاق ما قطالاً من في في المرافئة المسلم المسلم المرافئة المسلم ا

آبوب خان کچھ دیر تک خاموش کھڑا سرچٹا رہا ۔ دل کی بات زبان پر اِنٹی آسانی سے نہیں آئی ، مستری نے ایک ٹھاتھی سائنس لی اور کام شروع کردیا؛ لیکن دونوں کو یہ معلوم ہوگیا که اُن میں دوستی هوگئی ہے' اور دونوں اِس سے بہت خوش هوئے ، ایوب خان میں اب کسی قسم کی جھجیک

بافی ٹہیں رھی ،

گهرمته گهرمته وه آسجکه پر بهی پهرنتها جهال وه نوحوان مودورنیکام کردهی تهی جس کی آدکهی اور مسکراهت قے ایوب خال میں یه قیا جوهی پیدا کردیا تها ، لڑکی نے ایوب خال پر وف ایک سوسوی نظر قالی اور اپنے کام میں لکی رهی ایکن ایوب خال کو یه نظر بهی بهت پیاری معلم هوئی ، وه بوسول کی محت شمیددی دلی دوستی سه بهری تهی اُس نے ایک دم میں ظاهر کردیا جو مهندان کی دوستی میں نهیں بایا جاسکتا اور پهر زبان میں رة قوت ادا کہای خو تگاهی میں هوا کونی هے ، کم سے کم آیوب خال اِسے ییں هی سمجها اس نے یه نهیں سوچا که مزدورنی اُس نی رازدار کهی بانی اُس نی نهیں سکتی اس نے یه نهیں سوچا که مزدورنی اُس نی رازدار کهی بانی ایک نویست تها ، آسے ایک طرح سے آشا تهی که هو مود اور عورت اُس سے اپنی محبت طرح سے آشا تهی که هو مود اور عورت اُس سے اپنی محبت کا اظهار کریکی اور اِس میں اُس غراشا نهیں هوئی ،

مستری اُس سے بے تکلفی سے باتیں کرنے لئے آور هر روز اُن سے باتیں کرنے لئے آور هر روز اُن سے باتیں کر نے اثانہ آتا تھا؛ هر روز وہ نئے جذبات دل میں سمیت کر گور واپس جاتا؛ جیسے لیگ کوئی تیمکی چیز بنل میں دبا کر لے جاتے هیں اور اِس دولت کو اُنے خدا کے سامنے پرهی کرتا، عبادت اُس کے لئے ایک مافات سی هو گئی؛ جسکو و دلجسپ اور پرلطف بنانے کے لئے هر دن نئے هنسی هستا نئے آنسو روما، مستریبی سے بات جیمت کرتے هوئے اُنہ همیشت کرئی ناکوئی آیسی بایت سنائی دیک جو اُسے سجائی آور همیدت سے بهری هوئی معلوم هوئی، اِس جواری مردورئی کی آنایش محدیث سے بهری هوئی معلوم هوئی، اور جواری مردورئی کی آنایش

**# 16** 

148

'56 gh

हैं जबनात का एक ऐसा खुजाना था कि अधुनवाँ के दिश में इर किया एक मया हैगामा पैदा होता और उसे सुकून उसी बक्नत होता जब वह इवाइत में अपने खुदा को सारा हाता सुना देता.

एक रोज़ जब मकान तैयार हो चुका वा और मिली अन्दर दीवारों पर चूना लगा रहे ये तो बुद्दे मिली ने, जो अयुवर्ज़ों से विसाकृत आज़ादी से शुप्ततगू करता था, सुक्कराकर कहां—'कहो खाह्य, वियाह कब होश्हें ?

ं 'कर्यू' १'

'इस कहा कि पाँच कमरे हैं, उनमाँ कीव रहिहै, आप ती दिन-रात नमाज पदत है.'

अयू बढ़ों मुस्कराया और कुछ जवाब न दिया, उसकी बीवी का देहान्त कोई पांच साल पहले हो कुका था; लेकिन उस ज़माने में बहु ऐवाशी में ऐसा फँसा हुआ था कि उसे दूसरी शादी का ख्याल कभी नहीं आया, और न कोई ऐसा बाप मिला को उसे बेटी देने पर राज़ी बा. मिंस्त्री के सवाल को उस बढ़त तो बढ़ टाल गया, मगर दिल में यह बात उहर गई, कमरों का आख़िरी मर्तवा गरत खगाते हुए उसने खोषा—'कहता तो दरअसल ठीक है, मकान खाली-खाली सा रहेगा और फिर दूसरी शादी में गुनाह क्या है ? ऐयाशी तो मैंने को इ दी है...पहली बीवी को मैंने जो तकलीफ दी है, उसके बदले एक दूसरी औरत को अगर ख़रा कर सकूँ, तो...'

उसे एडबारगी उस जवान मज़दूरनी का ख्याल चा गया. श्रायुवस्ताँ से अन नह इस कदर हिला गई भी कि दोनों में खुन नातें इचा करती थीं लेकिन उसकी पहली निगाइ का जो असर पदा था इंसे बड़ कभी नहीं भूला, और दिल में उस मामूली मज़श्रनी की बहुत इएजत करता रहा, आज शादी की फिक्र ने उसके ताल्लकात का रंग बहल दिया, उसने अपने-आपको बहुत गक्कीन दिलाने की कोशिश की कि ऐसा नहीं है; लेकिन उसके पैर उसे वेबक्तियार उसी कमरे की तरफ ले बले जहाँ वह मजदरनी काम कर रही थी, नवे इराहों के साथ, ताज़ा दीदार का शीक पैदा हुआ और अयुक्खों की भाँखें यह देखना चाहती थीं कि मजदूरनी भागर उसकी बीवी हुई ती कैसी माख्य होगी ! कमरे में पहुँच कर उसने मिस्त्रियों से बातें श्रुक कर दीं, क्रम अपनी धनराइट पर करने के लिए, क्रम इस डर से कि कहीं किसी को खयाल न हो जाय कि वह मजदूरनी के लिये आया है; लेकिन इन तरकी वों ने ज्यादा देर तक काम नहीं दिया धीर चन्द अमलों के बाद वह खामोश हो गमा. उसकी बांसों के सामने एक नये सकान और नई जिन्त्गी की तसबीर थी, कभी बह देखता कि खुद इवादत में मधागूल है और उसकी बोबी बोडी-बोडी केर माद उसके कमरे में एक नज़र बाल जाती है और अध्वयस्ताँ महादूरनी की तरफ देखकर सोचता कि यह नज़र कैसी होगी ? कभी असे दोनों साने पर बैडे दिसाई देते, वह सुस्तत्विक सीजें उसके हमें ने वेश करती होती और अयुक्तों उस मज़दूरनी की तरक क्रिया कि यह तथाकी केवी होगी । कभी तसम्मूल यह मन्त्रर पेश करता कि दोनों साम के बक्त संदर्भ की इनते हुए देन रहे हैं. उसका

میں جنگ کے آیک آیسا خوات تھا کد ایوب خال کے دل میں حروق آیک آیا مقامه پیدا هوتا اور آس سکوں آسی بت مسمولاً جنب وہ عبادیت میں اپنے خدا کو سارا حال سنا دیتا ۔
ایک ووز جنب مکان تیار هوچکا تھا اور مستری اندر دیواروں پر چونا الا رقم تھا تو بدھ مستری نے جو ایوب خال سے بالمل اولی سے گانگار کرنا تھا مسکرا کر کہا۔۔۔ کہو صاحب بیاہ کب منبعہ اللہ کو کہا۔۔۔ کہو صاحب بیاہ کب

عم کها که پائیم کسرے هیں؛ اُر، سال کون رئیهے؛ آپ تو دن رات نبایم پڑھسے هیں ،'

أيوب خان مسعرايا أور كچه جواب نه ديا أس كي بيوي ا دیبانت کرئی پانچ سال پہلے هو چکا تها؛ لیکن اُس زمانے میں وہ عیاشی میں آیسا پینسا ہوا تھا کہ آسے دوسری شادی کا خَيَالَ كَبِهِي نَهِينِ أَيَا اور نَمْ كُونِي أَيِسَا بَاتِ مَلَّا جُو أَسَّ بَيِثِي دیلے یو راضی تھا ، مستوی کے سوال کو اُس وقت تو تال گیا معر دل میں یا بات تہر گئی ، کمرے کا آخری صرفه گشت لكار هائم أس في سوچا- كا تو درامل تهيك ها مكان خالي خال سا رهیکا اور بهر دوسری شادی میں گلاه کیا ه ؟ عیاشی نو مینے چهور دی ہے۔۔۔پہلی ایبوی کو مینے جو تکلیف دی ہے' أس كے بدال ایک دوسری عورت كو اگر خوص كرسكوں' تو...' أسم ایکهارکی اس جوان مزدورنی کا خیال آگیا ، ایوب خال سے اب وہ اس قدر عل کئی تھی که دونوں میں خوب ہاتیں ہوا کرتی تھیں ٹیکن اُس کی پہلی نگاہ کا جو اثر پڑا تھا أسم ولا كبهى فيهيل بهولاً أور دل مين أس معمولي مؤدورتي کی بہت عرب کرنا رہا ۔ آج شادی کی فکر لے اُس کے تعلقات کا رنگ بدل دیا اُس نے اپنے آپ کو بہت یقین دانے کی کشھی کی که ایسا نہیں ہے؛ لیکن اُس کے پیر اُسے نے اُختیار اُسی کرے کی طرف لے چلے جہاں وہ مزدورنی کام کررھی تھی ، نگ ارادرس کے ساتو تازہ دیدار کا شرق پیدا ہوا اور ایب خاس کی أنكهين ية ديكهنا چلنكي تهين كه مزدررني أكر أس كي جيمي ھرٹی تو کیسی معلیم ہوگی 🖁 کمرے میں پہرٹیم کر آس 🚣 مستریوں سے باتیں شروع کر دیں' کچھ اپنی گھراھٹ دور کرنے کے لئے' کچھ اِس قر سے کہ کہیں کسی کو حیال نہ سو جائے که وہ مزدورنی کے لئے آیا ہے؛ لیکن اور ترکیبوں نے زیادہ دیر تک کم نہیں دیا اور چند جملوں کے بعد وہ خاموش ہو گیا ۔ اُس کی آنموں کے سامنے ایک نئے مکان اور نئی زندگی کی تصویر تھی. کبھی وہ دیکھٹا که خود عبادس میں مشغول کے اور اِس کی ہوری تہروی تہروں دیر بعد آس کے کمرے میں ایک نظر ڈال جاتی ہے اور ایوب خان مزدورتی کی طرف دیکھ کر سوچا که به نظر کیسی هوگی ؟ کیهی آسه دونس کالے پر بیات دکائی دید و مختلف چیویں اس کے سامنے پیش کرتی ہوتی اور ابوب خان الس مهمورنی کی طرف دیکها که یه تواقع کسی هوگی 9 گھی۔ تنظیل یہ منظر پیش کرتا کہ دونوں شام کے وقید سیوں کو قوبلہ هونہ دیاہ رام عیل اُس کا

unten et und gene ge de demin gen fant i matter हे गहरी, देखका शीकाका, देखकी सहस्तत बरी नियाहें। वर के मजाने और जिल्लामी के सरा करने के लिए इससे न्यादा किन कोज की जाहरता थी ? फिर देश से बढ़ कहानी सगाव, गरीबों से er etell. faum auf mu fen uset gi enere fau at. अन सबके कारम रखने की और कीन-सी तरकीय हो सकती थी ? प्रायवार्त का जी बाहने लगा कि किसी तरह वह कृद-फांदकर बापनी मीजूदा झांखत से उप जिन्दगी तक पहुँच जान जिसकी एक क्रतक शभी उसे नज़र आई थी. अपनी उम्मीदें पूरी कर और दिख ही बेचैनी दूर करें: सेकिन अब यह पर पहुँचा और साने के बाद बाराम करके नमाज पढ़ना चाहा, तो उसे एक बाजीब सुस्ती-सी महस्त्य हुई. जहां बह शीक से जाता था वहाँ भाग माल्यम होता था कि कोई जबरदस्ती लिये जा रहा है, बमाज तो उसने किसी तरह से खत्म कर ली, मगर उसे इस तन्दीली पर हैरत हुई.

'बाखिर समें हो क्या गया ह...क्या अब भी अपने खुदा से मूँड फेर हूँ गा'-उसने अपने आपसे चनराकर पूछा. सगर वसे कडी से जनाब न मिला और आखिरकार आजिज आकर वह वजीके को छोदकाद अपने पर्लंग पर लेट गया. वाकिया यह वा कि वह अपनी शादी की सोच में था, और उसी जवान मजदरनी की आंके'. जिन्होंने उसकी स्वादत ऐसी रसीली कर दी थी, आज उने अपनी तरफ नुका रही थी. अयुवर्कों ने ऐयाशी से तोवा की बी, उस तरह की महत्वत से नहीं की थी जो मई और औरत तो मियां बीबी बनाती है और उनको खरा रखती है, लेकिन फिर खंदा और उसके एक दीनदार बन्दे के दश्मियान में यह पर्दा कैसे पढ़ गया, यह बेगानी क्यों कर हो गई, अयुवस्त उस वक्त अपनी आइन्दा जिन्दगी की तसवीर बनाने में ऐसा मरागृता था कि उसने इस सवात पर ज़्यादा गौर करने से भवता चाहा, सगर यह अन्देशा उसके दिल में काँटे की तरह जुभने खगा कि शायद वह जिन्दगी जिसका, वह अब इरादा कर रहा था, .खुदा को पसन्द नहीं. जब सिर्फ उसके खयाल ने इवादत से जी इटा दिया तो न जाने अस्तियत कहां पहेंचायेगी.

नतीजा यह हुआ कि अयुवलाँ की तबीयत में भूँ मालाइट-सी पैदा हो गई, उसकी खयाली तस्वीरे' सब धुवाँ बनकर उद गई और उसके दिमाग में इस मसले पर बहस किन गई कि उसे मज़दूरनी से शादी करनी बाहिए या नहीं, उसकी अपनी राव तो शादी के मुमाफिक थी, लेकिन फिर उसने सोवा कि और लोग क्या कहेंगे ? रिस्तेदारों मीर बज़ीज़ों की ज़बान से खुदा बनाये, वह तो बेशुनाहों को भी रोज स्ली पर चढ़ाते हैं, ऐसी हरकत पर तो बृह उसकी घित्रयां उदा, हेंगे, नाम मिट्टी में मिला हेंगे, रिश्नेहार तो खैर हरा ने इसीलिए पैदा किसे हैं, उनकी खोबिए, सलाइरनी से निकाह होने की सबर सुनकर कौन चुप रहेगा ! गली-गली लोग हुँसी छवा-की, मोर यह बीकर चाकर, नहीं जोत हो इस बक्कत सीक्ष्यदा कोर **117 (56** ( 146 )

موسول کے طرف دیامکا کد یہ خام الی کسی مولی ا مودوران کے عادلي أس كا يهرلا بن أس كي محبت يوري تكاهين إ كهر ك ار زندگی کے خرص کرنے کے لئے اِس سے زیادہ کس چھڑ کی فرورت تهی ؟ پهر ديم سه وه روحالي لگاؤا غريبون سه وه فَيُسِّتُن حِس كَا أَسَ لَهُ كَجِهِ دَنِي يَهِلَمُ هَي إِنَّوَارَ كِيا لَهَا أَن سَب کے قابم رکھنے کی اور کون سی ترکیب هو سکتی تھی ؟ أيوب بھاں کا جی چامنے لگا که کسی طرح سے وہ کون پھائد کر اینی موجودہ حالت سے آس زندگی تک بہونیے جائے جس کی ایک جیاک ایس اس زندگی تک بہونیے جائے جس کی ایک جیاک ایس اس کو اور دل جیاک ایس اس کو اس کا ایس کی بے چیلی دور ارم! لیکن جب وہ گھر پھرنچا اور کیائے کے بعد آوام کو کے نماز یوهنا چاها تو اُسے ایک عجیب سستی سی مجسوس موای ، جہاں وہ شرق سے جاتا تھا وھاں آج معاوم هرتا تها که کوئی زوردستی لئے جا رہا ہے . نماز تو اُس نے کسی طرے سے ختم کر لی مکر آسے اِس تبدیلی پر حیرت هوئی ،

الخر مجم هو کیا گیا ؟ ... کیا اب بھی اپنے خدا سے ماہ پھور لنظائداس نے اپنے آپ سے گھرا کر پوچھا مکر اُسے کہیں سے جواب له ملا اور آخركار عاجز أكر ولا رظيف كو جهوز جهاز أين یلنگ در لیم گیا ، واقعه یه تها که وه اینی شادی کی سوچ پلکت پر لیک اور آسی جوان مؤدورنی کی آنکھیں' جنھوں نے آس کی عبادت ایسی رسیلی کر دی تھی' آج آس اپنی طرف بلا رمی تھیں ۔ ایوب خاں نے عیاشوں سے توبع کی تھی' آس طرح کی مصبت سنهیں کی تھی جو مردد اور عورت کو میاں اور بیوی بنائی ہے اور اُن کو خرش رکھتی ہے؛ لیکن پھر خدا اور اُس کے ایک دیندار بادے کے درمیاں میں یہ پودہ کیسے پڑ گیا یہ بیکائی كيونكر هو كثي اليوب خال أس وقت الني أثناه زندكي كي تصویر بنانے میں ایسا مشنول تھا کہ اُس نے اِس سوال یو زیادہ غیر کرائے سے بھینا چاھا معر یہ اندیشہ اُس کے دل میں کانتے کی طرح چھنے لکا که شاید وہ زندگی جس کا آب وہ آزادہ کر رہا تیا خدا کریسند نہیں، جب صرف اُس کے خیال نے عبادرت عم جي هڏا ديا تو نه جالے اصليت کياں پېونچائيكى .

لتيجه يه هوا كه ابوب خال كي طبيعت وين جهنجاهت سی پیدا هو گئی . اُس کی خیالی تصویریں سب دھواں بن ور آر کثیں اور اُس کے دماغ میں اِس مسالم پر بحث چھڑ کئی که اُسے مزدررنی سے شادی کرنی چاهئے یا نہیں . اُس کی اپنی رائے تو شادی کے موابق تھی' لیکن پھر اُس نے سوچا کہ ارر اوگ کیا کہینکے ؟ رشته داروں اور عزیزوں کی زبان سے خدا بحیالے' وہ تو یے گنامیں کو بھی روز سولی پر چڑھاتے میں' آیسی حرکت یر تو ره اس کی معجیل اوا دینکے نام مای مين ملادينكم. رشتمدار تو خير خدا له إسى لله يهدا کٹیے عیں اُن کو چھرزیٹے مزدورنی سے نکاے دولے کی سیم سی کر کون چپ رهیکا ؟ گلی گلی لوگ هلسی أراننيك أور يم توكر جاكر بهي لوك جو إسودت جونزده أور

er, comment of the second

क्रीकार मासून होते हैं, यह भी खुन हात विकार्वेने, मन्द्रनी अभिया में सब से बदसरत धीरत बन बायेगी और बह खद सबसे क्यादा बेवक्कर भावनी, और क्या कोई इन्छ। लिये लोगों की राय बद्दलक्षा फिरेगा ? अयुवकों के खबातात का देर तक बढ़ी रंग रहा, श्रीर जब नाकर ने चाय लाने में देर की तो उसे विसाडल यक्तीन हो गया कि सादी का नतीजा बरा होगा.

धारी शाम और आधी शत तक अयुवकों की तबीयत परेशान रही. कभी सम्मीद नई ज़िन्दगी को उसके सामने दिलक्षा शक्लों में पैश करती, कभी लोग उसकी हिमालत पर हैंसते हुये नज़र आते. यह भी मुमकिन न था कि वह इबावत में संलग्न होकर इन सब क्काबों को भूस जाय, क्योंकि इस पर उसका जी किसी तरह से राजी बहीं होता था. बाखिरकार नींद ने बाकर बहुस मुस्तबी कर दी. इसरे दिन सबेरे अब नये महान की देखने के लिए जाने का मक्त आया, तो अयुवर्खों का अजीव हाल या.

'पहले तो नई ज़िन्दगी के तरीक़े को तय कर लेना चाहिए'--डबने सोचा--'यह महान नगैरा तो सब मजाक है, वहाँ होई जाहर क्या करे.' मगर नई जिन्दगी का मसला तैयार नहां हो सकता था, इपिलिए वह दिल बहलान के लिए बला गया,

महान के अन्दर मिक्रियों में बड़े ज़ोर-शोर से बहस हो रही थी, अयुक्कों को देखते ही बुढ़दे मिस्त्री ने उसकी तरफ मुक्कांतन श्रीकर कहा-"श्रीर स्निये मिया साहेद ! वह सन्दर्शिया भाग गई. बेद दिन की मजुरा छोड़कर चली गहे ...."

'कीन, सुन्दादया कीन १'

भागुरकों की इस जबन मज़श्री का नाम सी माछन था, बैकिन बह यह खबर धनकर ऐना घबराया कि उसकी समझ में भीर कोई सवास न प्राया.

'बरे बड़ी साहेब, बाकी बस बगुला जैसी बाँखियाँ रहिन, बाप

ती बाढा जानत है.'

'क्यों ! कैसे भाग गई ?'

'इम का जानी साहेब, ई मंगल ती कहत है कि उर आसिक होय गई रहे, इनहिन सं पृक्षी.'

मिस्त्री मंगल ने इसभीनान से कहा--'साहेब, जब से बह हियां बाई रहे यू मिह् वही जिहके साथ बली ूगई है, उसे रोज कहत रहे कि हमारे पास कानपुर मां मकान है, हमारे बाब हवां भाग वली, इस मज्रो करवे तम रोटी पकामी. वह सारी का जाने, न माम न बाप जिह्ने सत्ताह है, कानपुर का नाम यन के बाके साथ भाग गई,'

'से किन आखिर मज़दूरी क्यों को व गई १'

र्मगता ने कुछ नाराज्होकर कहा-- 'अव यू साहब हम का बानी !' बहुदा मिस्त्री बोल उठा-- 'सार कह विहिस होहहै कि कानपुर की गाड़ी आजे जात है फिर कवहूँ न मिलिहै !'

श्रयुवर्खों का सिर चक्कर खाने लगा. मुँह पर बीमारों की सी सुरुद्वराहर आगई, वगैर और इन्ह कह-सुन वह पर के बाहर भिक्ष भाग भीर मोटर में जाकर बैठ गया.

'भई, घर बहा,'--उसने इ।६वर से कहा-- 'ब्रा घूमते-कामते

शोहर पाटक से बाहर विकल गर्ना और अव्यक्त ने पांचे किर कर नवे नकान पर बच्चर भी न जाती.

مابعدار معلم الوق العل 4 أهي خوب وانسب وكالينكي مودوراني فالها ينهن سيد مه يدمورت عورت بن جاتهكي اور وه خود عليه الله وأوادة بموافق أنحى أور كما كرثي ولدا للهاركين کے رائے اللہ اللہ اللہ اللہ خان کے خیالت کا دیر تک یہے رنگ رہا آور جب نوکر نے چاہے النے میں دیر کی تو اُسے باعل بتين هو گيا ه شادي كا نتيجه برا هوكا .

ساری شام اور آدهی رات تک ایرب خال کی طبیعت بربھان رھی ، کبھی اُمھد نئی زندگی کو اُس کے سامنے داریا شکلوں میں پیش کرتی کبھی لوگ اِس کی حمانت یو هنستے هرئه نظر آتے ، یہ بھی ممکن ته تها که وہ عبادت میں سالکن ه کر اِن سب جهکروں کو بھول جائے" کیونکھ اِس یو اُس کا ہی کسی طرح سے رافی نہیں ہوتا تھا۔ آخرکا نیند نے آئو بعث ملکوی کر دی . دوسرے دن سویرے جب مکل کو دیکینے ك لئي جالي كا وقت أيا تو ايوب خال كا عجيب حال تها .

ایبلے تو نئی زندگی کے طریقہ کو طے کر لینا چاھیئے اسے آس نے سرچا۔ ایم مکان رفیرہ تو سب مذاق ہے وهاں کوئی جائر ئیا کرے اُ مکر فقی زندگی کا مسئلہ تیار نہیں مو سکتا تھا اِسُ لَیْ وَ دِل بِهِ فِل مِ لَیْ چِلا کِیا ،

مکان کے اندر مستوبوں میں بڑے زور شور سے بحث مو رھی تھی ۔ ایوپ خان کو دیکھنے ھی بدھے مستری نے اُس کی طرف مخاطب مو در نهاد اور ساهد مهان صاحب ! وه سندريا 

ايرب حال دو اس جوان مزدورني كا نام تو معلوم تها ليكن ولا يه خبر سن کر ایسا گهبرایا ته اس نی سمجه میں اور کوئی سوال نه آیا، ارم وهی صاحب جاکی آس بک جیسی انکهیال رهن ، أب نو وانا جادت هين ، أ

الیوں 1 کیسے بھائے گئی 9 ا الم کا جانی صاحب: ای سائل تو کہت ھیں که او آسک

ھوئی گئی رہے ، اِن من سے پرچھو ،' مساری ممکل نے اطمیدان سے کہا۔'صاحب' جب سےروہ هیاں آئی رہے یو منہو رهی جاکے سانھ چلی گئی ہے اورسے رربے کہت رہے که همارے یاس کانیور ماں • کان ہے، همارے ساتھ هواں ایاک چلوا هم مجوری کرنے مم روٹی یکایو۔ وہ ساری کا جائے ' تا مال نه باب جهه صمالے کانپور کا فامس کے واکسانہ بھاگ گئی۔ اليكن أحر وزدوري نيون جهورا كثي لا

منكل نيكتي ثاراض هوكر كها-- اب يو صاحب هم كا جائي إ بتها مسترمي بيل أثها .... اسار كهه دييس هوتي هے كه كانهور كى الري أجه جات في يهر البهر أنه مليهم إ

یوب حال کا سر چکر تھانے کا ، منہ پر بیماروں کی سی مستراءف آکنی، بغیر اور نجی کیے سنے وہ کور کے یامر مکل آیا اور موثر میں جا در بیٹھ کیا ،

اینی گرو چلو ۔۔۔اس نے ذایور سے دہا۔۔ ذرا گوستے

موتر پھائٹسے کے باطر فائل کئی اور ایرب حال نے پنجھے پھر نک مکان پر تظار بھی لند دائی ۔

# मुक्तिय साहब की कुछ हदीसे

# محدد صاحب کی کھی مدیثیں

मुह्म्मद साहब ने कहा:—"बो बादमी (दीन को) ठीक क सममता है वह हजारों इवादत (पूजा) करने बालों के काबते में रीतान के खियादा मुशांकल से कानू में आता

--- इन्न अम्बास, विरमिजी: इन्न मानह.

मुह्म्मद साह्य ने कहा:—"ऐसी विधा जिससे किसी सरे को कायदा न पहुँच उस ख्राने की तरह है जिस में से इ भी अस्लाह की राह में अस न किया जाये."

- अबु हुरैरा, अहमदः दारीमी.

मुहन्मद साहब ने कहा:—'बुरे से बुरे, लोग बह हैं जो हान हाते हुए भो बुराई करते हैं, भार इसमें संबंह नहीं ।च्छे से भच्छे आदभा बह हैं जो ।बहान हाते हुए दूसरों । भलाइ करते हैं."

-- ग्रह्बस (वन हकीम, दारीमी,

मुहम्मद साहब ने कहा। — "सब मुच क्रयामत के दिन रजे क लिहाज से अस्ता का नजरों में सबसे बुरे आदमी ह हांगे जा बिद्धान हैं और जिन्होंन अपनी बिया से लाम ही उठाया."

अबुद्रदा, दारीमी.

मुद्रम्मद साहब ने कहा:—''जो कोई इसलिये ज्ञान सिल करता है कि उसस विद्वाना पर अपनी धाक जमावे रीर सीधे सादे लागों का नुकसान पहुँचावे और लागों अध्यान अपना तरफ खाचे, अल्लाह उस अहन्तुम की आग ! डालेगा.''

-काब बिन मालिक, विरमिजी; इब्न डमर, इन्न माजह.

मुहम्भद साहब ने कहा:—''जिस किसी जादमी से हान की काई बात पूछी जाने और बह उसे जान बूमकर रूसरों से क्षिपाने, क्रयामत क दिन उसक मुँह में आग का तगाम दी जायगी."

—शबु हुरैरा, शबु दाकदः तिरमिजीः शहमदः; अनस्,इन्न माजदः معدد ماهب نے کہا :۔"جو آدمی ( دبن کو ) ٹیبک ٹیمکت سمجینا ہے وہ مزاروں عبادت ( پوجا ) کرنے والوں کے مقابلے میں شیطان کے زیادہ مشکل سے قبو میں اتا ہے ۔"

--ابن عباس ، ترمذي : إبن ملجه .

محدد صاحب لے کہا: -- "أيسى وديا جس سے کسى موسو کو فايدہ نه پهوئنچے أس حوالے کی طرح ہے جس ميں سے کنے سے کنے ہوں سے کنچ به کیا جارے ."

-- ابو عربره احمد : داریمی .

محمد صاحب نے کہا :۔۔ اہرے سے ہوے لوگ وہ ھیں جو ودوان ہوتے ہوئے بھی ہوائی کرتے ھیں اور اِس میں سلامی بہت اچھے آدمی وہ ھیں جو ودوان ہوتے ہوئے دوسروں کی بھانی کرتے ھیں ۔''

-احوص بن حميم عاريمي .

محمد صاحب نے کہا:۔۔۔۔۔۔۔ مجہ قیامت کے دن درجه کے لحظ سے اللہ کی نظروں میں سب سے درے آدمی وہ هونگے جو ودول هیں اور جنہوں نے اپنی ودیا سے لابو نہیں آٹھایا ۔''ا

—ايودردة¹ داريمي .

محدد صاحب نے کیا :--- اللہ اللہ اللہ کیاں حاصل کوئی ایسیاس لئے گیاں حاصل کوئا ہے دہ اُس سے ودوانوں پر اپنی دساک جماوے اور سیدھے سادے لوگوں کا دھیاں اپنی طرف نہیںجے ' اللہ اسے جہم دی اگ میں دائیگا ۔''

- كعب بن مالك " تردذي ؛ ابن عمر ابن ماجه .

محمد صاحب نے کہا :۔۔''جس کسی آدمی سے گیاں کی کُوئی بات پوچھی جارے اور وہ اسے جان بوجھکر دوسروں سے چھھورے' قیمت کے دن اُس کے منہ میں آک کی نگام دی۔ جمعیکی۔''

سايو هريره ابودارد: ترملي : احمد انس ابن ملجه .

क्षान्यव साहब वे कहा:- 'साम प्रच प्रन्हारे तिये सब अध्या भीष साने की यह है जो तुमने अपनी मेहनत से

-बायशा, बबुदाडदः नसाई: इब्न मनाह.

मुहम्मद साहव ने कहा :-- "सारी जमीन अल्लाह की वमीन है और सब मक्तलुक बल्लाह की मललुक है: जो कोई किसीं परती जमीन को जोत बोकर उपबाठ बनाता है इसी का इस जमीन पर सब से अधिक इक है.

-सरवा, अयुदाउदः

महम्मद साहब ने कहा:-- 'को आदमी अपने हाथ की अषाद्री से कमाया हुआ खाना स्नाता है उस से बद्कर साना आज तक किसी ने नहीं पाया.'

—मिक्रदाम, बुखारी-

सहरमद साहब ने कहा :-- जो कोई किसी पड़ी हुई अमीन का जात बाकर उस से पैदा करता है वही उस जमीन का मालिक है, उसे उस जमीन से निकालने का किसी को इक्र हासिल नहीं है."

-- डरवह बिन जुबैर, अयुदाऊद: तिरमिजी: मालिक.

मुह्न्मद साहब ने कहा कि:- "जो कोई किसी ऐसी श्रमीन को जातता है और उसका आवाद करता है जिसे इस प्रमीन का मालिक न जोत सकता है और न आबाद कर सकता है बाल्क उसे ऐसी ही खाड़ देता है, वह खमीन इसी जोतने वाली की हो जायगी."

--समुरह बिन जन्दव, मालिक.

मुहम्मद साहब ने कहा :-- "जो कोई किसी ऐसी जमीन को जातता है या आवाद करता है जो किसी की मिलकायत नहीं है, उस जमीन की मिलकीयत का उसे हा सब से जियादा इक हागा."

भायशा, बुखारी.

मुहम्मद साहव ने कहा :-- "जो कोई अन्याय से किसी की एक बालिश्त जमीन भी छीन लेता है, क्रयामत के दिन क्सके गले में एक तीक होगा जिसका बांक सात जमीनों के क्षेम के बराबर होगा."

-- अनुसलमा विन अवदुर्रहमान, बुखारी: मुसलिम.

हाइनाइ साइव ने कहां :-- "दूसरों को दान देने वाला अं के कि के का कार्या -: पे रे -- कार्य

الواج للأب لأساد الله علا الله في والله جوال له أبلي محدث عد الدار هرا"

معاشقه ابرداود: نسائی: ابن ماجه.

محمد مامن لے کہا :-"ساری زمین الله کی زمین ف ر سب مطارق ألله كي مطارق هـ : جو لوثي كسي برتي بین کو جیس بوکر ایجاو بنانا کے اسی کا اُس زمین پر سب ، انعكب شي رهي ا

- عروه ابرداؤد .

مجيد مانصب نے کہا : ۔۔ جو آدمی اپنے مانھ کی مزدوری ہ کیایا ہوا کھانا کہ اس سے یومکو کھانا آبے تک کسی تھے۔ بين كهايا ء"

--مقدام بضاري .

مصد ماجب نے کہا:۔۔ ''جو کوئی کسی پڑی ہوئی زمین موت ہو کو اُس سے پیدا کرتا ہے وھی اُس زمین کا مالک ہے؛ سُ أَسُ زِمِينَ سَ نَكَالَلُهِ كَا كُسَى كُو حَقَّ حَامَلَ تَهِينِ هَ \* إِنَّا

خسعروم بن زبير ابوداؤد: ترسنى : مالك .

معمد صاهب لے کہا کہ:۔۔ "جو کوئی کسی ایسی زمین کو ر جرقة) ها أور أس كو آبان كرنا ها جسم أس زمين كا مالك ء جوت سكتاً هـ أور أنه آباد كر سكتا هـ بلكم أهـ أيسى هي چهور دیتا هے؛ وہ زمین آسی جوتنے والے کی هوجائیگی ۔''

ــسمورة بن جندب مالك.

متحمد صاحب نے کہا:۔۔"جو کوئی کسی آیسی زمھن کو جرتنا هے يا آياد كرنا هے جو كسى كى ملكيت نہيں هے أس زمین کے ملکیت کا اُسے می سب سے زیادہ حق مرکا ،"

-عائشه بخاري .

محمد صاحب لے کہا:۔۔۔''جو کوئی انھائے سے کسی کی ایک ہالشت زمین بھی چھین نیتا ہے؛ قیاست کے دن اُس کے کلے میں ایک ظرق مرکا جس کا برجہ سات رمینیں کے بوجہ کے برابر هوگا گ

-ابه سلم بن عبدالرحمان بخارى: مسلم .

े देश के निकार के निकार के करीन होता के करीन होता के निकार के करीन होता

है लागों के प्रकार के बाद होता है, और दो बंब की बाग से हर रहता है और कंजूस भावती अस्ताह से दूर रहता है, अन्तत से बूर बहुता है, लागों के दिलों से दूर रहता है और होजल की आग के पास रहता है, अल्ला हवादत यानी पूजा करने वाल कब्स आदमी के मुकाबले में जाहिल दान दैने बाले आवमी की जियादा प्यार करता है."

- अबु हुरैरा, विरमियो

महत्त्राद साहब ने कहा:—"उस अस्ताह की क्रसम जिसके हाथों में मेरी जान है ! तुम लोग हरगिय जन्नत में बाखिल नहीं होगे जब तक कि तुम ईमान वाले न होगे, और हम हरिगज ईमान बासे न होंगे जब तक कि तुम एक दूसरे को प्यार न करोगे."

- अबु हुरैरा, मुसलिमः अबु दाऊदः तिरमिजी.

मुहम्मद साहब ने कहा:- "क्या मैं तुन्हें एक ऐसी नीय बताक जिसे करने से तुम एक दूसरे से प्यार करने लगो ? वह बीज यह है कि एक दूसरे को सलाम किया करो."

—अबु हुरैरा, मुसलिम.

' मुहम्मद साहब ने कहा :-- "बल्लाह कहता है कि जो लोग मेरे (अल्लाह के) लिये एक दूसरे से प्यार करते हैं, क्रयामत के दिन चन्हें नूर के तख्त बैठने के लिये मिलेंगे यहां तक कि पैगम्बर और शहीद भी उन से रश्क (ईब्यी) करंगे."

—मुत्राज बिन जबल, तिरमिजी.

मुहम्मद साहब ने कहा—''अल्लाह के बन्दों में कक्ष ऐसे लोग हैं जो न पैगुन्बर हैं और न शहीद, लेकिन क्रयामत के दिन अल्लाह जो उन्हें जगह देगा उसे देखकर पैगम्बर भीर राहीद भी उनसे रश्क करेंगे. यह वह लोग होंगे जो दूसरों से प्यार करते हैं, केवल अपने रिश्तेदारों से ही नहीं बल्कि सब से. ऐसे लोग अल्लाह से रहम की उन्मीद करते हैं. अल्लाह. की क्रसम ! उनके चेहरे नूर से चयकेंगे और वह खुद अस्लाह के नूर में दिखाई देंगे, जबकि और लोग दर्गे, अन्हें कोई दर न होगा और जबकि और लोग दुखी होंगे, उन्हें कोई दुख न होगा."

- उमर बिन अलखिताब, अबु दाऊद.

الله اللهن ك باس مبنا هـ الر دورم كي الساه دور رماه. الله المامي الله عد دور هذا في جانب عد دور وهذا في ارگین کے داس سے دور رہنا ہے اور دوزے کی آگ کے پاس رہنا الله عبادت يعلى يوجا كرلي وألي كنجوس أدمى كي مِلْأَنْكُ مِن جامل دان دينه واله أدمى كو زيادة يهار كولا هـ الله

---أيو هريرة ترمذي .

منجمد ماهب نے کہا اسس"اً من الله کی تسم جس کے هالهون مين ميري جان ها تم لوگ هركز جامت مين داخل قِهِين هوگه جب نک ده تم اينان واله قع هوگ لور تم هوگو أيدان واله نه هوكه جب تك، كه تم ايك دوسر عد كو يبار قه کرو کے ،"

- أيوهزيره مسلم: أيوداكد: تومقيي ه

معمد ماحب نے کہا:۔۔''کیا میں تمہیں آیک آیسی چھڑ ہتاؤں جسے کانے سے تم ایک دوسرے سے پیار کرنے لکو ؟ وہ چهو يه ه كه أيك دوسريه كوسلام ايا كرو ٥٠٠

-- أبو عريوة مسلم .

معدد ماحب نے کہا:۔۔۔"آلک کہتا ہے کہ جو لوگ مھرے ( الله كے ) لئے ايك درسرے سے بيار كرتے هيں قياست كے دي المهين أور كے تخت بيٹيئے كے لئے ملينكے يہاں تك كه پينمبو أور شهدد بهى أن سے رشك ( ايرشيا ) كوينكم ."

-معاذبي جبل ترمذي ،

محدد ماحب نے کہا:۔۔ "ألله كے بتدوں میں كچھ أسے لوگ ہوں جو نہ پرہمبر ہوئی اور نہ شہیدا لیکن قیامت کے عن الله جو أنهين جامه ديكا أحديكم كر يينمبر اور شهيد بهي أن سے رشک كرينكي ، يه وه لوگ هونكي جو دوسروں سے ييار کرتے ۱۵۰۰ کول اپنے رشته داروں سے می نہیں بلکم سب سے ، ابسے لوگ اللہ سے رحم کی اُمین کرتے میں، الله کی قدم 1 اُن کے چہرے دور سے جمعینکے اور وہ خود الله کے تہر وين دکائي دينکي جب که اور الوگ قرينگي آنهين کوئي قر نه هوا اور جب كه اور لوك دكهي هوتكي أنهين كوفي دهاته

--عدرين الخطاب أبد داؤه .

سالواًدك : شرى مييسي رفين و

#### भी लिफोनार्ड विलियम्स

महात्मा गांधी दुनिया के वन बड़े से बड़े लोगों में से बे को बहुत समम बूमकर अपनी ताक़त को खर्च करते बे. इस पर भी वनका खून का दबाब बढ़ जाता था. कालों आदिमयों के दिल में यह जानने की रच्छा होगी कि 'काड प्रेशर' या खून का दबाव क्या होता है ? यह क्यों बढ़ जाता है ? और इसे किस तरह काबू में किया जा सकता है ? ये सब बातें श्री लिखोनार्ड तिलियम्स के इस क्षेत्र में अच्छी तरह सममाई गई हैं.

**\$ \$ \$** 

ब्लड प्रेशर या खून के दबाव की शिकायत आजकल एक फ़ैशन सी हो गई है. यह फ़ैशन खास तौर से इन लोगों में है जो अपनी तनदुरुस्ती के बारे में बहुत सोचा विचारा करते हैं और लोगों से कहते रहते हैं. किसी बीमारी के फ़ैशन में शुमार होने से पहिले यह जरूरी है कि वह किसी हद तक भेद की जीज हो. पढ़े लिखे लोगों में ऐसे आदमी इस मिलेंगे जो इस बात को ख़ुशी से मान लें कि वे किसी मामूली बीमारी के शिकार हैं. आप सुनते सुनते थक जांयगे कि किसी मोटर दुर्घटना में उन्होंने किस तरह तकलीकें सहीं धीर डाक्टर ने उनसे क्या क्या कहा मगर वह अपने दांत के दर्द जैसे मामुलो दु:ब की बात भी न करेंगे और न अपने पेट के दर्द के बारे में कुछ कहेंगे चाहे वे उससे कितने ही वेचैन क्यों न हों. किसी एक्सीडेन्ट या दुर्घटना के बारे में इमेशा क्रम न कह भेद या नयापन रहता ही है लेकिन दांत या पैंट के दर्द की बजह और उसकी हालत का सबको पना है. बारिया की बीमारी अब फैरान में नहीं शामिल की जाती क्वोंकि यह नहीं कहा जा सकता कि हमारे वे पुरसे जो ्रेसुन साते पीते ये और खुव वच्चे पैदा करते थे, गठिया के की बार होते थे. वही आदमी जिन्हें पहले अपनी गठिया का मार्थ होता या अब आपसे बढ़े गर्व से कहेंगे कि 'मुके केंद्राद हैं?, वह जतनी ही सच्चाई और जोर के साब का भी कर सकते हैं कि 'मेरी नादियों में खुन बलता है' क्योंकि इसमें से बिना एक के दूसरी हो ही नहीं सकती और करी विनायी के नियं यह जरूरी है कि उन्हें ये दोनों बार्स हो, स्वाह प्रेशन को हर एक को होता है. ब्लड में शर मा क्या के बचाव के जायने हैं खून का का नाहियों की

### شربى لهوثارة ولهبس

مہاتما کالدھی دلیا کے آن برے سے برے لوگوں میں سے تھے جو بہت سمجھ بوجیکر آپنی طاقت کو خرچ کرتے تھے ۔ اِس پر اُن کا خوس کا دہاؤ ہوہ جاتا تھا ، لاکھوں آدمیوں کے دل میں یہ جاتنے کی اِچھا ہوگی که 'بلت پریھر' یا خوں کا دہاؤ کیا ہوتا ہے آور اِسے کس طرح تاہو میں کیا جاسکتا ہے آ یہ کیوں بڑھ جاتا ہے آ اور اِسے کس طرح تاہو میں کیا جاسکتا ہے آ یہ یہ سب باتیں شری لیونارڈ وایسس کے اِس

\$ \$ \$ \$ \$

بلتپریشر یا خون کے داؤ کی شکابت آجکل ایک نیشن سی هوکئی هے . یه نیشن خاص طور سے أن لوگوں میں هے جو اپنی تندرستی کے بارے میں بہت سوچا وچارا کرتے هیں اور لوگون سے کہتے رہانے ہیں ۔ کسی بیماری کے نیشن میں شمار عولے سے پہلے یہ ضروبی ہے کہ وہ کسی حد تک بھدد کی چیز هو . يره لكه لوكن مين أيس أنمى كم ملينك جو أس بات کو خوشی سے مان لیں که وه کسی معمولی بیمازی کے شکار عیں آپ سنتے سنتے تھک جائینگے که کسی موثر درگیڈنا میں أنهوں نے کس طوح تعلیدیں سہیں اور ڈاکٹر نے اُن سے کیا کیا کہا مار وہ اپنے دانمت کے درد جیسے معمولی دکھ کی بات بھی نہ کینکہ اور نہ اپنے یہٹ کے درد کے بارے میں سچے کہبنکہ چاہے رے اُس سے کتنے ھی برچین کیوں تہ ھوں ۔ کسی ایکسیڈیڈٹ با درگیٹنا کے بارے میں همیشه کچه نه کچه بهید یا نیابی رهنا ھی ہے لیمن دانس یا بیت کے دردر کی رجم اور اس کی حالت كا سب كو يته هـ . گلهيا كي بيماري أب نيشن ميں نہیں شامل کی جائی کیرنک یہ نہیں کہا جاسکتا که همارے وے براء جو غرب كاتے بيتے تھ اور خوب بھے بيدا كرتے تھ كليا ك بسار هوتي تهي ، وهي أدمى جايين دِبْلِ أَبِنَي كَلَهِيا كا كَيْمَانَ هرنا تها أب آب سے بہتے گرو سے کہینکے که "مجھے بلڈ پریشر کے وہ اُنٹی می سنجائی اور زور کے ساتھ یہ ہیں کے سکتے میں که الميزي للهيس مين خرن جلتا هاء كيونكه إن مين سه بنا أيكسه کے دوسری ہو هی نبیس سعتی اور اُن کی زندگی کے لئے یہ ضروری ه که انهیں چه دولیں جوزیں میں ، بلت پریشر تو مر ایک کو مبتاهم بلد يويهريا غين كردباو كرسل مين عبن كا أن تازين لي

فیولوں پر دیاؤ ڈالنا جی میں سے بعولوں کی سیارے شہر کی سیارے شہر میں چکر لگانا ہے ۔ یہ شریر کا ایک ایسا کام ہے جس میں کوئی بھید کی یا انوکی بات نہیں ہے ۔ بھید کی بات اگر ہو بھی دو تب ہوسکتی ہے جب ہم اُس دیاؤ کے گئٹے بڑھنے اور اُس کے کارنوں کی جانبے کرنے لکیں ،

### بلت يريشر كا ثابنا

بلتے بریشر کے ٹھیک ٹھیک ٹاپنے کے طریقے ابھی حال ھی میں ابجاد ہوئے ہیں ، اس کے پہلے ڈائٹر لوگ کلٹی کے اُوپر کی فاوی میں خبن کے چال کی جانبے ککے اس کے دباؤ کا یکہ لگایا کرتے تھے اور معمولی طور در جب وہ مریقوں کی ٹیش ویکھتے تھے تو یہ بات بھی اُن کے دھیاں میں رھٹی تھی ، پر آهمي کي اُنگليال چاهے کتنی هي انازک اور تجربه کار کورل نه هوں یہ تو معلوم کوسکتی هیں که خون کسی طرح دور رها ہے معر اِس چیز کو تبیک تبیک نہیں ماپ سکتیں که بدن کی سملم کے ایک خاص حصے یو خون کا کتنا دہاؤ ھا اِس للّہ ایسے ینتر ایجاد کئے گئے جن سے خون کا بالکل محیم دباؤ نكلا جاسكي . اب سب مائت هين كه خون كي كسي يبي ثاري کے ماپ الگ الگ آدمیوں اور الک الگ پرستھتھوں میں بدائم رہتی ہے کسی کی نازی موتی ہوتی ہے اور کسی کی بتلی۔ أس لله يه ينتر هميشه استعمال كله جاتے هيں ، سركلفورت ليت کا یہ کہنا تبیک ہے کہ جس (Sir Clifford Allbutt) طوح بنا تبرمامیڈر کے آدمی کے بدن کی گرمی پر بحث کرنا یے معلے ہے اُسی طرح بنا ینتر کے بلد پریشر کے بارے میں بات جيت كرنا ركار هـ .

#### يبلا تجربه

بلت پریشر کو ٹھیک ٹھیک ٹاپنے کے سب سے پہلے تجربے کسی سائنس والے ڈانٹر نے کسی سائنس کے کمرے میں ٹھیں کئے تھے' بلکہ ایک اینکلیکن پادری نے یہ تجربہ سب سے پہلے گوں کے ایک کھیت میں کیا تھا ، آب آگے کی بات سنکر ھمارے آن بھائیوں کو صدمہ ھوگا جو زندہ جانوررں پر کسی طرح کی چیر پھاڑ کے خلاف ھیں' لیکن بات سے ہے . ریرینڈ اسٹیفن چیر پھاڑ کے خلاف ھیں' لیکن بات سے ہے . ریرینڈ اسٹیفن ھیلس تی . تی .' وگار آف سینٹ میری' ئیڈنگٹن (Rev. Stephen Heles, D. D. Vicar of St. گھوڑی پر نیچے نکھا تجربہ کیا۔۔۔

گہرزی کو اُس کی کدر زمین سے مالکو اُلٹا پھاٹک سے بائدہ دیا گیا اور پھر ایک ندیے شیشے کی قلی کو اُس کی بائیں پیر کی خون کی نازی میں گھسیر دیا گیا ، فوراً نلی میں خون 8 نیٹ 2 اِفج کی اُرلنجائی تک چوہ گیا اُور جب تک خون جم نہیں گیا تب تک برابر

हिवारों पर क्यान कावाना जिनमें से होकर क्या कार शरीर में बक्कर समाता है. यह शरीर का यक वेसा काम है जिसमें कोई मेद की वा अनोकी बात नहीं है. मेद की बात अगर हो भी वो तब हो सकती है जब इम उस दबाब के पटने बहुने और उसके कारयों की जाँच करने तमें.

### ब्लंड प्रेशर का नापना

ब्लड प्रेशर के ठीक ठीक नापने के तरीक़े बभी हाल ही में बंबाद हुए हैं. इसके पहले बाक्टर लोग कलाई के कपर की नाड़ी में खुन के चाल की जांच करके उसके द्वाव का पता लगाया करते ये और मामूली तौर पर जब बह मरीजों की नक्य देखते थे तो यह बात भी उनके ध्यान में रहती थी. पर आदमी की अंगुलियां चाहे कितनी ही नाजुक और तजरवेकार क्यों न हों यह तो मालून कर सकती हैं कि खन किस तरह दौड़ रहा है मगर इस चीज को ठीक ठीक नहीं माप सकतीं कि बदन की सतह के एक खास हिस्से पर खून का कितना दवाव है, इसलिए ऐसे यनत्र ईजाद किए गए जिनसे खून का बिल्कुल सही द्वाव निकाला जा सके. अब सब मानते हैं कि खून की किसी भी नाड़ी की माप अलग अलग आदमियों और अलग अलग परिस्थितियों में बदलती रहती है. किसी की नाड़ी माटी होती है और किसी की पतली. इसीलिए ये यनत्र हमेशा इस्तेमाल किए जाते हैं. सर क्लिफोड आलवट (Sir Clifford Allbutt) का यह कहना ठीक है कि जिस तरह बिना थर्मामीटर के आदमी के बदन की गरमी पर बहस करना बेमायने है उसी तरह बिना यन्त्र के ब्लाड प्रेशर के बारे में बात चीत करना वेकार है.

### पहला तजरबा

ब्लड प्रेशर को ठीक ठीक नापने के सबसे पहिले तजरने किसी साइन्सनाले या डाक्टर ने किसी साइन्स के कमरे में नहीं किये थे, बल्कि एक एग्लिकन पादरी ने यह तजरना सबसे पहले गांव के एक खेत में किया था. अब आगे की बात सुनकर हमारे उन भाइयों को सदमा होगा जो जिन्दा जाननरों पर किसी तरह की चीर फाड़ के खिलाफ़ हैं, लेकिन बात सच है. रेवरेएड स्टेफेन हेल्स डी० डी०, विकार आफ़ सेन्ट मेरी, टेडिइन्टन (Rev. Stphen Heles, D. D., Vicar of St. Mary, Teddington) ने एक घोड़ी पर नीचे लिखा तजरना किया—

बाड़ी को उसकी कमर जमीन से मिलाकर उस्टा फाटक ये बाँच दिया गया और फिर एक लम्बे शीशे की नली को उसकी बाई पैर की खून की नाड़ी में घुसेड़ दिया गया. फ़ीरन नली में खून 8 फीट 3 इश्व की ऊँबाई तक बढ़ गया और अब सक सान जस नहीं गया तब तक बराबर बास के चलने और दिन की घड़कन के साथ साथ नती में कमर चढ़ता और उतरता रहा. जाहिर है कि जितनी ऊँचाई तक ख़ून नती में ऊपर चढ़ा था वही उस जानवर के ख़ून का दबाब था.

ब्लाड प्रेशर बढने के कुछ सबब

तब से अब तक बहुत तरक्षकी हो चुकी है और अब हमारे पास ऐसे यन्त्र हैं जिनकी मदद से हम किसी भी आदमी का ब्लंड पेशर बिलकल ठीक ठीक बता सकते हैं भाहे वह आदमी किसी भी हालत में क्यों न हो. शायद सबसे दिलचरपी की बात जो लोगों के ब्लह प्रेशर नापने के दौरान में मालूम हुई है वह यह है कि किसी भी तरह का करा सा भी जोश ब्लंड प्रेशर को बढ़ा देता है. यह बात ध्यान देने के क़ाबिल हैं. क्योंकि अगर किसी भी जल्दी से पबदानेवाले आदमी का खन का दशव मालम किया जा रहा हो तो आप देखेंगे कि उस आदमी का ब्लंड प्रेशर महत्त उसके इस ख्याल से बढ जायगा कि 'मेरा ब्लंड प्रेशर नापा जा रहा है' स्वीर यन्त्र में उसका ब्लंड प्रेशर जो बढ जायगा वह उसके असली ब्लड प्रेशर से कहीं ज्यादा होगा. सर क्रिफोर्ड श्रालबट एक मरीज का किस्सा बतलाते 🖥 जिसका ब्लंड प्रेशर मामली से बहुत ही क्यादा निकला क्योंकि वह आदमी ब्लड प्रेशर नापनेवाले यन्त्र को विजली की बैटरी समक बैठा था और उसे यह डर हो गया था कि 'समें एक जोर का धक्का लगने वाला है'. उसे सममा दिया गया कि डर रालत है और जब उसकी समक्र में पक्की तौर से भा गया कि वह बिजली की बैटरी नहीं है तब उसका ब्लड प्रेशर लिया गया श्रीर सामूली निकला. श्राम तौर पर ब्लाड प्रेशर के थोड़े से बढ़ जाने पर आदमी को बहुत ही अच्छा मालम होने लगता है. खाना खाने के बाद मामुली तौर पर ब्लंड प्रेशर बढ़ता है और इसलिए भरे पेट आद्मी के दिमारा में जो मस्ती श्रीर खशी होती है उसकी एक वजह में शर का बढ़ना भी है. श्राँख, नाक, कान किसी भी इन्द्रिय के जोरा में आने से भी प्रे शर बढ़ता है. जोर की बदबू या ख़राबू से खुन का द्वाव बढ़ जायगा. इसी तरह रीरमामूली नजारे, चाहें अच्छे हों या बुरं, प्रेशर को बढ़ा देंगे. कहा जाता है कि सदक पर किसी भी दुर्घटना को देखने के लिए आदमी ओ इकट्टा हां जाते हैं वह लोगो की एक कमजोरी या बीसारी है. एक दर्जे तक यह बात ठीक हो सकती है लेकिन प्यादातर लोगों के बारे में होता यह है कि कोई ग़ैर मामूली बाद देखने से, खासकर जब वह डरावनी भी हो, लोगों का क्रांड प्रेशर बढ जाता है. उसे रोमांच कहते हैं और रोमांच बाम तौर पर लोगों को अच्छा लगता है, जिसके लिए लाग इसेशा इसक रहते हैं. इसीलए क्यादातर लोग किसी भी हर्पटना का देखने के लिए बढ़े शीक से जमा हो जाते हैं. س کے حالت آور دل کی دھوکن کے ساتھ ساتھ للی میں رہے ہوئے کہ جتنی آرنجائی تک رہے ہوئے کہ جتنی آرنجائی تک بے نائی میں آریر چوھا تیا وہی اُس جانور کے خون کا بیا ۔

پریشر یوهانے کے کتب سبب

نے سے آپ تک بہت ترقی ہوچکی ہے اور آپ سارے ر ایسے یکٹر میں جن کی مدد سے مرکسی بھی آدمی کا بريشر بالكل تهيك تهيك بنا سكتي هين چاهره أدمى ر بھی حالت میں کیرں نہ ھو ۔ شاید سب سے دلچس<sub>ا</sub>ی بات جو لوگوں کے بلڈ پریشر ٹاپنے کے دوران میں معلق ے ہے وہ یہ ہے کہ کسی بھی طرح کا ذراً سا بھی جوش ربھر کو بڑھا دیتا ہے ۔ یہ بات دھیاں دینے کے تابل ہے ۔ ہے۔ ہم اگر کسی بھی جلدی سے گھبرائے والے آدمی کا خون کا معلم کیا جا رہا ہو تو آپ دیکھینکے کہ اُس آدمی کا بریشر محض أس كے إس خيال سے بوھ جائيگا كه الميرا بريشه ثايا جا رها هئ أور ينتر مين أس كا بلد يريشر جو جائيكا وہ اس كے اصلى بلق يريشر سے كہيں زيادہ هوكا . يفهرة ألبت أيك مريض كا نصه بتلاتے هيں جس كا بلذ يريشر لى سے بہت هى زيادة نكلا كيونكة وَة أَدمى بِلدَ يريشر واله يلتر كو بعجلي كي بيتري سمنجم بيتها نها أور أس يه در با تها كه المجهد أيك زور كا دهكا لكنه والا هد ، أسه سمجها گیا که در غلط هے اور جب اُس کی سمجھ میں یکی طور آگیا در وہ بجلی کی بیٹری نہیں شے نب اس کا بلد پریشر ایا اور معمولی نکلا ، عام طور پر بلت پریشر کے تھوڑے سے بڑھ ، پر أَنمى كو يهت هي أجها معلم هوني لكتا هي ، كهانا كهائي بعد معمولی طور پر بلت پریشر بوهنا کے اور اس لئے بھرے ، آدمی کے دماغ میں جو مستی اور خوشی ہوتی ہے اُس ایک وجه پریشر کا برهنا بھی ہے ، آنکو، ناک، کان کسی اِندرید کے جرش میں آنے سے بھی دریشر بڑھتا ہے ، زور کی یا خرشبو سے خربی کا دہاؤ ہڑھ جائیگا . اِسی طرح غیر لى تظارع چاه اچه هرس يا برع يريشر كو برها ديلك. جاتا ہے که سوک پر کسی بھی درگیٹنا کو دیکینے کے لئے آدمی اِنتها هوجاتے میں وہ لوگس کی ایک کمؤوری یا بیداری هے۔ ، درجے تک یہ بات تیک مرسکتی هے لیکن زیادة در لوگوں ہارہے میں ہوتا یہ 🕰 کہ کوٹی غیر معمولی بات دیکھتے سے عر جب وه قراوني بهي هو الوكون كا بلد پريشر بود جاتا هـ. رومانی کہتے میں اور رومانی عام طور پر لوگوں کو اچھا لکتا جس کے لئے لوگ میھم انسک رمتے میں، اِس للہ زیادہ تر السيهن بركالتناكو ديعينك لله برحشوق صجمع وجالمهن विषये वाह्य के उन्हें किया किया किया वाह्य वाह्य वाह्य विषये हैं। जो कुशी हमको सहस्त होती है बसकी भाम तीर से वही बनक होती है. जब कोई दुनिया के सुकों को तुच्छ सममनेवाका आदमी कहता है कि आये से क्यादा मजा सुत में नहीं है बल्कि सुक्त के इन्तजार करने में है तो वह साइन्स की निगाह से सच्ची बात कहता है. इस बात को अब सब जानते हैं कि किसी भी आनेवाली खुशी का सिर्फ क्याल करने से आदमी के खून का द्वाव बढ़ जाता है. इसके रोंगटे सके होने लगते हैं. असली सुख के साथ बुराई भी हो सकती है लेकिन सिर्फ इन्तजार के साथ काई बुराई नहीं हाती. सिर्फ थोड़ी सी खुशी होती है.

रांगटे खड़े होना

रों। दे खड़े होना बिलकल एक जिस्मानी चीज है. रोंगटे संडे होने की बजह ब्लंड प्रेशर बढ़ता इतना नहीं है जितना कि वे बातें हैं जिनकी बजह से ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है. बात यह है कि खून की नलियें पतली हो जाती हैं. कोई भी चीज अगर किसी जोर के साथ किसी नली में होकर वह रही हो तो नली जितनी पतली हो जावेगी बहाव का जोर उतना ही बढ बावेगा. नसों में यह ताक़त होती है कि वे ख़न की नितयों की मोटाई को जितना चाहै कम या ज्यादा करे दें और जब कभी ब्लंड प्रेशर को बढ़ाने की जरूरत होती है तो वे नलियें श्राम तौर पर सिकुड़ जाती हैं. श्रमल में नलियों के सिकुड़ जाने से ही रॉगटे खड़े हो जाते हैं. इसीलिए जब नल से ठंढे पानी की घार बदन पर पड़ती है तो रोंगटें खड़े हो जाते हैं क्यों कि सारे बंदन की खून की नलियाँ एकदम सिकुड़ जाती हैं. यही वजह है कि किसी भी जोश के बक्त बदन सकेद पड़ जाता है. सिर्फ हर ही की वजह से बदन पीला नहीं पड़ जाता वरिक कोई भी चीज जो बलड प्रेशर को एकदम तेज़ी से बढ़ा दे, बदन को पीला कर देगी. आवार्षे सुनने से ब्लंड प्रेशर बढ़ जाता है, यह अब सब जानते हैं. यकायक आवाजों का होना, तेज आवाजें ये सब ब्लंड प्रेशर बढ़ा देती हैं. जैसा इम ऊपर बता चुंके हैं ये चीजें डर पैदा करती हैं स्पीर कुछ न कुछ करने की रमक दिल में पैदा कर देती हैं. इससे आदमी या तो लड़ने के लिए तैयार हो जाता है या भागने लगता है.

फ़ीजी गानों के असर से कुछ न कुछ करने की' इच्छा होती ही है. सिपाही जो थक जाते हैं और जिनके पैर स्ज जाते हैं वह फीजी बैएड के बजते ही फिर से ताजे हो जाते हैं. अच्छी किता का भी किसी हद तक यही असर होता है. किवता के बारे में मैध्यू अर्नाल्ड (Methe Arnold) का कहना है कि अच्छी किता में जब साफ और जीती जागती बातें होती हैं तो पढ़ने बाले के रॉगटे खरे हो जाते हैं.

### رونکٹے کھڑے ہوتا

رولكتم كهرم هونا بالعل أيك جسماني جبر هم رونكلم گہتے هولے کی وجهء بلذ يويشر برتهنا اِننا تهيں هے جتنا که وے ہاتیں میں جن کی وجہء سے بلت پریشر یوھ جانا تھ ، بات یہ 🕭 که خبن کی تلیئیں پتلی هو جاتی هیں ، کوئن بھی چیز اگر کسی زور کے ساتھ کسی نلی میں هو کر بند رهی هو تو نلی جعلى يتلى هو جاويكي بهاؤ كا زور أتنا هي بوه جاويكا . نسون میں یہ طاقت ہوتی ہے کہ وہ خُون کی تلیوں کی مودیری کو **حتنا** چاهے کم یا زیادہ کر دیں اور جب کبھی بلت پریشر کو جوهائے کی ضرورت هوتی هے تو رہے نلیئیں عام طور پر سکور جاتی هیں ، امل میں نایوں کے مکور جائے سے هی رونکٹے کہرے هو جاتے هيں . اِس لئے جب نل سے تهندے پانی کی دھار بدن ور ہوتی ہے تو رونکاتے کہتے ہو جاتے ہیں کیونکہ سارے بدن کی خون دی نلیاں ایکدم سکر جاتی هیں . یہی وجہہ هے که کسی یعی جوش کے وقت بدن سفید ہر جاتا ہے ، صرف تر ھی کی زجهه سے بدن پیلا نہیں ہر جانا بلکه کوئی بھی چیز جو یریشر کو ایکدم توزی سے بچھا دے ابدن دو دیال کو دیکی ، آرزیں سننے سے بلد بریشر بڑھ جاتا ہے' یہ آب سب جانتے میں . یکا یک آوازوں کا مونا' تیز آوازیں یہ سب اہلڈپریشر اوھا دیٹی ھیں ۔ جیساً هم آویر بتا چکے هیں یه چاؤیں قر پیدا کرتی هیں اور کنچھ تھ نیچھ کرنے کی رمک دال میں پید! کردیتی هیں ایس سے آرمے یا تو لونے کے لئے تیار هو جانا نے یا بہاگار لکا نے .

نجی کانوں کے اثر سے 'کچھ نہ کچی کرنے کی' اِچا ھوتی ہی ہے ، سپاھی جو تیک جاتے ھیں اور جن کے پیر سوج جاتے ھیں وہ فوجی بیند کے بجتے ھی پھر سے تازے ھو جاتے ھیں ، اُچی کویتا کا بھی کسی حد تک یہی اثر ھوتا ہے ، کویتا کے ہارے میں میتھیر آزنالڈ ( Mathew Arnold ) کا کہنا ہے کہ اُچی کویتا میں جب صاف آور چیتی جاگتی ہاتیں ھوتی میں تو پوھنے والے کے رونکٹے کوتے ھیں ،

UST

जो लोग यह कहते हैं कि 'हमें ब्लड प्रेशर है, उनका असली मतलब यह होता है कि उनका ब्लंड प्रेशर मामूली से स्थादा है, यह सचमुच अच्छी बीज नहीं है, काई पत्तली चीज नालयों में हांकर बह रही हो और उन नालयों पर बेजा दुवाब डाल रही हो ता नली के टूट जाने या फट जाने का हर रहता है और अगर नली की दीवार में कहीं पर कोई कमजोर जगह हो तो वहीं पर फटने का टर रहता है. आदमी की नाड़ियों में ऐसी एक कमजोर जगह है और हुर्भाग्य से बह जगह दिमारा में है. ऊँचे ब्लंड प्रेशरवाले बादभी के किसी भी जगह से खुन गिरना शुरू हो सकता है, लेकिन सब से प्यादा डर दिमारा सं खून फूट निकलने का हाता है. दिमारा से खून फूट निकलने के पहले एक दो दमो शायद आदमी की नाक से रेवन गिरे. इसलए जरा से भी जाश से किसी अधेद आदमी की नाक से याद सून गिरना शुरू हो जाय तो उस आदमी को डाक्टर से सलाह लेनी चाहिये. इससे कोई इनकार नहीं कर सकता कि दिमारा से खून फूट निकलना ख्तरनाक हो सकता है. भाम तौर से इसे लक्षवे का दौरा कहते हैं. अवेजी में इसे स्टोक यानी एकाएक घोट भी कहते हैं क्योंकि ये बातें एकाएक होती हैं, बिल्कुल जैसे किसी छिपे हुए आदभी ने पीखे से जोर का घूँसा मारकर गिरा दिया हो. अगर मरीज बच जाबे ता इसका असर बाद में हमेशा यह होता है कि एक तरफ के बदन के हिस्से में लक्षवा मार जाता है और यह भी मुमकिन है कि आदमी का बालना बिल्कुल बन्द हो जाय. यह सब चीजें आदमी को बेहद कमजोर बना देती हैं और मरीज़ को ज्यादा दिन तक नहीं चलने देती. रोगी की नाड़ियां ऐसी कमजोर हो जाती है कि वह दिमारा के खून फूट निकलन को बरदाश्त नहीं कर पातीं भौर भाइमी की जिन्दगी को बहुत जल्द खतम कर देती है. इस तरह आदमी बहुत सी तकलीकों से बच जाता 🐍 याद रखना चाहिये कि ब्लंड प्रेशर का ऊँचा जाना रीतान का एक बहाना है. यह पहले ही बताया जा चुका है कि जब ब्लड प्रेशर कुछ ऊँचा जाता है तो तन्दुरुस्ती अच्छी लगती है 'और कुछ न कुछ करने या सोचने' को जी चाहता है. इसलिए ऊँचे ब्लंड प्रेशर बाला आदमी ज़रूरत से ज्यादा खुश मालूम होता है और यह मुमकिन है कि कोई भी ऐसी ऊपरी हालत न पैदा हो या व दिखाई दे जिससे उसे अपने खतर का पता आसानी हो लग आहे. यह एक भीर जबरदस्त बजह है कि हर साल हमें अपने जिस्म की अच्छी तरह जाँच करा कर उसे दुरुख रक्षमा बाहिये. इस चीज के लिए मैं बराबर जार देशा का रहा हैं. जहां तक नाहियों का ताल्लक है कभी कभी

بهر لرف يه لين هيل كه اهديل بالتيريمر ها أن كا أملي مطب عمد الله عد أن كا بلدوريشر معمولي سه زياده ه. يه ہے سے اچھی چھڑ ٹھیں ہے ۔ کوئی پتلی چیز تلیس میں ہو کر آی رهی هو أور أن تلیوں پر بیجا دباؤ ذال رهیمو تو ثلی کے رت جانے یا پہٹ جانے کا تر رها ہے اور اگر نلی کی دیوار میں نهیں برکوئی کنوور جانبه هو تو رهیں پر پیٹنے اور رها ہے، آدمی کی نازیوں میں ایسی ایک کنزور جانبہ ہاور دریهاکیہ ساوہ جانبہ ساغ میں ہے . اونجے بلدپریشر والے آدمی کے کسی بھی جائے، ے خین گرفا شروع هو سکتا هے لهکن سب سے زیادہ تر دماغ سے خوں بہرے تکلنے کا هوتا ہے ۔ دماغ سے خوں بھوت تکلیے کے پہلے ایک دو دامه شاید آدمی کی ناک سے حون گرے . اِس لئے زرا سے بھی جرش سے کسی ادعیر آدمی کی ناک سے یدی خرن گرفا شروع هو جاتم تو أس آدمي كو دَاكثر سے صلاح ليني جاهیئے . اِس سے کوئی اِنکار نہیں کو سکتا که معاغ سے خون بهرك لكلنا خطرناك هو سكتا هي عام طور سے أسے لقوے كا دورة کہتے ھیں ، انگربزی مرس اِسے اِستروک یعنی یکایک چوت بھی ئېته میں کیونکه یم باتیں یکایک هوتی میں<sup>،</sup> بالعل جیسے کسی چھرے عوثے آدمی نے پیجھے سے زور کا گھرنست مار کو گرا دیا هو . اگر مریض بچ جارے تو اِس کا اثر بعد میں همیشه یه هوتا ہے کہ ایک طرف کے بدن کے حصے میں لقرہ مار جاتا ہے اور یہ ہے ممکن ہے کہ اُدمی کا برلنا بالکل بند هو جائے ، یہ سپ چیزیں آدمی کو بے حد کمزور بنا دیتی هیں اور سریض کو زیادہ دن تک نہیں چانے دیتیں، روگی کی نازیاں ایسی فنزور هوتی میں کا وہ دماغ سے خوبی یہوٹ نمائے کو برداشت نہیں کرپاتیں ارر أدمى كى زندگى كو بهت جند ختم در ديتى هيں . اِس طرح أدمى بهت سى تالياول سے بچ جاتا ھے. ياد وكهنا چاهيك ك بلديريشو كا أونيها جانا شيطان كا ايك بهانا ه. يه يهلي هي بتايا جا ڇکا هه نه جب بلڌين شر کنڍه أولنچا جانا هه تو تدرستي أچهي لکتي هے اور اکتها ته کتها کرنے يا سوچنے کو جي چاهٽا هي. اِس لئي اُونجي بلڌيريشر والا اُدمي ضرورت سے . زياده خوش معلوم هونا في أور يه ممكن هے كه كوئي بھي أيسي أربري حالت له يدا هو يا نه دكاني درم جس سے اس اينے خطرے کا پتھ آسانی سے لگ جارہ ، یہ ایک اور زبردست رجه، هے که هر سال هميں اپنے جسم ئی اچھی طرح جانب کرا کر آھ درست رفينا چاهيتے ، اِس چيز کے اللہ ميں ارابر زور دینا آرها میں، جہاں تک تاریس کا تعلق ک کیے نہی

त्राने जिस्स की जन्मी वर्ष जान करा हैना बहुद नृहरी
तीर श्राविक्रम है बहुदावन वापने शर्मों की जान कराने
हे ऐसे बहुद से लोग है जो अपने वृद्धि के डाक्टर के
तिस बहुद कम लोग ऐसे मिलेंगे जो डाक्टर से अपने
ज्ञस्म की अच्छी तरह जॉन कराके उसे दुक्त रखने की
तिशा करते हों. पनास बरस के खून वन्दुक्त आदमी
हे लिए, जिसे इस बात का बमगढ़ है कि वह जिन्द्गा में
हमी भी इतना अच्छा नहीं रहा, इसका बहुद बढ़ा हर है
क कहीं बहु इस रोग के नजवंक न हो.

गैसत ब्लंब प्रेशर

जिस यन्त्र से ब्लंड प्रेशर मालूम किया जाता है इसे काइगनोमैनोमीदर (Sphygnomanometer) कदते ि जो लोग इस यत्र से अच्छी तरह वाक्रिक हैं वे इसे नोमीटर (Manometer) भी कहते हैं. लाखों आदमियों हा ब्लंड प्रेशर इस यंत्र से पढ़ा गया है. इससे यह बात गालम हो गई है कि आदमी का औसत ब्लंड में शर क्या ोना बाहिए, यहाँ पर औसत दबाव का मतलब ठीक यानी निद्रक्त आदमी का ब्लड प्रेशर नहीं है. जपर जा तजरबे ाताए गए हैं उनसे पता चलता है कि किसी तनदुदस्त बीस रस के जवान आदमा का ब्लंड प्रेशर खाम तौर पर 1:0 मेलीमी । र होता है. इस तरह की हालत में यह आंकड़ा प्रीसत **ब्लंड प्रेशर और मुनासिब ब्लंड प्रेशर दोनों ब**ताता है. वजरबे से मालुम हुआ है कि जैसे उमर बदती जाती है ोसे ही वैसे ब्लंड प्रेशर आभ तौर पर इस तरह बढ़ता है कि मगर इस किसी आदमी की उमर में 100 जाड़ दें ता उसका ज़ड में शर मालम हो जायगा. अगर मैंनो-भाटर में देखें ो यही ब्ल प्रेशर उसमें भी निक्लेगा. इसके मुताबिक 10 बरस की उसर में ब्लंड प्रेशर 140 होगा और 60 दरस की समर में 160 होगा. हाल के डाक्टर इस बात से तहमत नहीं हैं कि उमर के साथ साथ जो ब्लंड प्रेशर गराबर बढ़ता जाता है वह मुनासिब ब्लंड प्रेशर हाता है. इनका ख्याल है कि जैसे जैसे नाड़ियां पुरानी होती जाती है वैसे वैसे वह कमजार भी हाती जाती है. इसालए यह मुमकिन नहीं है कि उनकी दीवानों पर बराबर द्वाव बढ़ता ही नला जावे श्रीर वह उसे वरदाश्त करती रहें. इससे यह नतीजा निकलता है कि इस बराबर बढ़ते रहनेवाले ब्लड भेरार की कोई हद होनी चा/हये. फिलहाल इस इद को 150 के करीब रक्खा गया है. अगर 150 से क्यादा किसी का ब्लंड मेरार हाता उसे बहुत ज्यादा तनदुक्त नहीं सममना चाहिये. उसका ब्लंड प्रशेर कम करने की काशश फरना चाहिये और हर हालत में इसे बढ़ने नहीं देना चाहिये.

الله جسم کی المحی طرح جالے کوا لینا فروری اور قاید جالے کے ، ایسے بہت سے الی جائے کوالے کے ، ایسے بہت سے الیک ہیں جائے کوالے کے ، ایسے بہت سے الیک ہیں جائے کی ایس سال بور میں کم سے کم ایک بار فرور جاتے ہیں لیکن بہت سے کم لوگ آیسے ملیائے جو ڈائٹر سے اپنے جسم کی اچمی طرح جائے کوا کے آسے درست رکھانے کی کوشش کرتے ہیں ، پنچاس برس کے خوب تندرست آدمی کے لئے ' جسے اِس بات کا کیمنڈ ہے کہ وہ زندگی میں گرمی بھی اِتنا اچھا نہیں رہا اُس کا بہت بڑا در ہے کہ کہیں وہ اِس روگ کے نودیک نے ہو ۔

### أرسط بلق پريشر

جس ينتر سے بلتيريشر معلوم كيا جاتا ھے أسے أسفائكلومهنو ميار ( Sphygnomanometer ) کېته میں . جو لوگ أبس ينتر سے اچھی طرح رانف ھیں وے اِسے مينوميار ( Manometer ) بھی کہتے ھیں . لاکبر اُدمیس کا بلت پريشر إس ينتر سے پڑھا گيا ھے . اِس سے يه بات معلوم هو گئى ه که آدمی کا آؤسط بلد پریشر کیا هونا چاهئے ، یہاں پر أوسط وباو كا مطلب تهيك يعلى تندرست أدمى كا بلدوريش فهين لله ، أربر جو تجري بتانه كثه هين أن سه يته جلتا الله كه كسي قندرست بیس برس کے جوان اُدمی کا بلذیریشر عام طرر پر 120 ملى ميلار هونا هي. إس طرحكي حالت مين يه أنكوه أوسط بلقبويشر أور مناسب بلديويشر دونون بئانا هى ، تجري س معلوم ھا ھے کہ جیسے عمر بوھتی جاتی ھے ویسے ھی ویسے بلدیریشر علم طور پر اِس طرح برهنا که نه اگر کسی اُدمی کی عمر میں 100 جورد دين تو أس كا بلديريشر معلوم هو جائيگا . اگر هم مينيميٿر ميں ديکهيں تو يہے بلديريشر اِس ميں بھے نکليگا ، إس کے مطابق 40 ہرس کی عمر میں بلدیریشر 140 هوگا اور 60 ہوس کی عمر میں 160 ھیا ، حال کے ڈائٹر اِس بات سے سببت تبهن ههن که عمر کے ساته ساته جو بلذیریشر برابر بوهتا جاتا هے وہ مناسب بلديريشر هرنا هے . أن كا خيال هے كه جيسے جیسے ٹاویاں پرانی ہوتی جاتی ہیں ویسے ویسے وہ کمؤور بھی هوتي جابي هين إس بئے يه سمن نبهن هے كه أن كي دیواروں پر برابر دبار برمنا هی چلا جارے اور رہ اے برداشت كرتي رهين . إس سے يه نترجه نكلتا هے كه إس برابر برهتے رهني والے بلذپريشر كى كوئى حد هونى چاهئے . فى الحال إس حد كو 150 كي قريب ربها كيا هـ . اكر 100 = زيادة لسي كا بلنيريشر هو تو أع بهت زيادة نلدرست نهيل سنجهنا چاهيئه . أس كا يلق يريشر كم كرني كي كوشف كرني چاميات أور عو حالت میں اُسے بوملے نہیں دینا چامیلے۔

سأكم

### स्वर्गी य प्रो० सुधीन्द्र

# [स्थान-रामानन्द स्वामी का मठ, काशी]

(भक्त कबीर, धन्ना जाट, रैदास चमार, वैष्ण्य बर्माणार्थ भगवान् रामानन्द के दोनों और बैठे हैं. एक और सादी पोशाक पहने गागरोन गढ़ के राजा भी हैं. करतास और मंजीरों के बीच कीर्तन हो रहा है )

विसर गई सब तात पराई जब से साधू संगत पाई! ना कोई बैरी ना बेगाना सकल संग हमरी बन आई! सब में रम रहिया प्रभु एके देखि देखि मनुष्णा मुसकाई! कीर्तन बन्द हो जाता है।

रामानन्द:—कितने आनन्द का मौक्रा है आज ! गुरु राषवानन्द के मठ को झोड़ते समय जो इरादा लेकर चला बा, बसे आज पूर्ण होते हुए देख रहा हूँ. द्रविड़ देश की इमारी, बह भक्तिन आज उत्तरापथ की रानी हो गई है, क्यों कवीर ?

कबीर—शंकर का अद्वैतवाद्—'ब्रह्म सत्ययं जगन्मिण्या' नाम का मायाबाद आज आपकी भक्ति की गङ्गा में डूब गया है, गुरुदेव !

> हमरा भरमु गवा भक भागा ! जब राम नाम चित लागा !

रामानन्द—भगवान् रामानुजाचार्य की आसा भगवद् भक्ति की इस गङ्गा को बहते देखकर कितनी तुम हो रही होगी कवीर ! गुरु राधवानन्द के आशीर्वाद से ही दिसर का सन्देश मैं घर घर में पहुंचा सका हैं; क्यों रैदास ?

दैदास:—गुरुदेव, मैं तो जब देखता हूँ कि सारा देश आज मगवान के प्रेमानन्द में मग्न हो रहा है तो सारे हु:ख इन्द्र को भूल जाता हूँ. भगवन ! राज मंदिरों से लेकर भास-कृस की कुटियों तक आपने भक्ति का गीत गुँजा दिया है. घटक से लेकर कटक तक आज ईश्वर के नाम का असर

रामानन्द:—राम ! राम !! राम ! राम !! सबै भूमि है राम की तामें घटक कहा ? आके सब मैं घटक है सोई घटक रहा ? سورگهه درونیسر سودهیندر

[السنهان ــراماناد سوامي كا منه كاشي]

( بہت کیور دھنا جات ریداس چار ویشنو دھرماچاریہ ہماں رامانند کے دونوں اور بیتے ھیں۔ ایک اور شاھی پوشاک بنے کاکروںگتھ کے راجہ بھی ھیں ، کرتال اور منجھروں کے یہ کیرتی ھو رھا ھے )،

كيرتن

ہسر گئی سب تات پرائی جب سے ساتھو سنکت پائی ! نا کوئی بھری نا بیکانا سکل سنگ ھمری بی آئی ! سب میں رم رھیا پربھو آیکے دیکھ دیکھ منوآ مسکائی ! [کیرتن بند ھو جاتا ہے ]

رامائند ۔ کتنے آنند کا مرقع ہے آج اِ گرو راگھرائند کے متم او چھرڑتے سیئے جو اِرادہ لیکر چلا تھا اُسے آج پیرا ہوتے ہوئے ایکھ رہا ہیں ۔ دروت دیش کی کماری کے بھکتی آج اُترا پتھ کی اِنی ہوگئی ہے کیوں کبیر ﴿

کبیر:۔۔۔شلکر کا آدریتواں۔۔۔'ہرھم ستیم جگلمتھیا' ٹام کا مایاراد آج آپ ئی بھکتی کی گنگا میں ذرب گیا ہے' گرو دیو ا

> همرا بهرمو كوا بهؤ بهاكا ! جب رأم نام چت لاكا !

وامائندسیهکوان رامانوجاچاریه کی آتما بهکود بهکتی کی اِس گنگا کو بهتے دیکهکر کتنی تریت هو رهی هرگی کبیر! گرو راگهوانند کے آشهرواد سے هی 'رام' کا سندیش میں گهر گهر میں پہونچا سکا هوں' کیوں ریداس ؟ '

ریداس۔۔۔گرودیو' میں تو جب دیکھتا ھوں کہ سارا دیھی آج بھکواں کے پریمائند میں مکن ھو رھا شے تو سارے دکو دوئد کو بھول جاتا ھوں ، بھکوں آ راج مندروں سے لیکو گیاس پھوس کی کٹھوں تک آینے بھکتی کا گیت کوئنجا دیا ہے ۔ اقک سے لیکو کٹک تک آج ایھور کے نام کا اثر پھیل گیا ہے ۔

والمالة فليسبوام 1 وأم ! وأم 1 وأم !!

سیے بہومی ہے رام کی تا میں آلک کیا ؟ جاکے میں میں آلک ہے سوئی آلک رہا !!]

**474 '5**5

156

36 \_J

हवीर वन्त है असु ! तभी तो गागरीन गढ़ के राजा प्रतापसिंह आज वस राम-नाम के राज्य में अपने राज को मिलाने के लिए यहाँ आये हैं, इससे बढ़कर भगवान, आपकी विजय और क्या होगी ?

रैदास-महाराजः! राजा प्रतापसिंह को भी-चरखों की क्षेत्र चीर 'राम' नाम का मंत्र दीजिए.

राजा प्रतापसिंह—(स्वामी रामानन्द के चरणों में प्रणाम कर) यह तुच्छ सेवक भगवान् रामानन्द के चरणों में अपना राज शुक्रुट रसकर प्रणाम करता है. राज सिंहासन में बह परमानन्द कहां जो आज रामानन्द के चरणों में है ? (स्वामी रामानन्द आशीर्वाद का हाथ देते हैं)

रैदास-तुम धन्य हो राजा प्रतापसिंह !

प्रतापसिंह—अब राजा नहीं हूँ भगत ! अब तो मैं रामानन्द महाराज के द्रवार में एक चाकर हूँ.

रामानंद-इस द्रवार में राम को छोद श्रीर कोई राजा नहीं. आज से तुम पीपा भगत हुए राजा प्रताप !

पीपा—महाराज! मेरे साथ आया हुआ एक युवक सेना भी, श्री चरखों का स्पश पाना चाहता है. परन्तु वह तो नाई है महाराज! यदि कृदमों को न खूसके तो दूर से ही दर्शन की भीक दें. बाहर ही ठहरा है.

रैदास—रामानन्द भगवान के यहाँ कोई छोटा बड़ा नहीं है पीपा भगत! यहाँ तो प्रताप राजा भी पीपा भगत बनकर सेना भगत के साथ बैठकर भगवान के प्रेम का पान कर सकता है.

कबीर—देखते हो (धन्ना भगत की ओर इशारा करके), वे धन्ना भगत जाट हैं.

धन्ना—हाँ पीपा भगत !

कबीर—धीर जानते हो मैं कीन हूँ ?

तनना बुनना तच्या कबीर

राम नाम लिखि लिया सरीर

जाति जुलाहा, मिं को धीर

हरवि हरिष गुन रमै कबीर

रैदास—धीर पीपा भगत! जानते हो मैं कीन हूँ १ मैं वह हूँ जिखकी छाया तक से तिलकधारियों को छूत लग जाती है.

> जाति भी भोड़ी करम भी भोड़ा भोड़ा कसब इमारा। भीषे से प्रशु कॅंच कियो है

گیراسسومٹید ہے ہربیو آ تبھی تو گائروںگٹھ کے وابعد پروٹائی ساتھ آج آس رام نام کے راجید میں اپنے راج کو ملانے کے اگیر یہاں آئے میں ایس سے برهار بیاری آپ کی وجائے اور کیا موالی ا

ویداس—مهاراج 1 راجه پرتاب سنام کو شری چرتوں کی سنوا اور ارام انام کا منتر دیجائے ۔

راجت پرتاب سنه—(سوامیرامانند کے چرفوں میں پرتام کر)
یہ تجھ سیرک بھکواں رامانند کے چرنوں میں اپنا راج مکت
رکھو پرنام کرتا ہے ، راج سنکیاسی میں وہ پرمانند کیاں جو آج
رامانند کے چرنوں میں ہے 9

( سوامی رامانند آشهرواد کا هاته دیتے هیں )

ريداسستم دهنيه هو راجه پرتاپ سنگه ا

ہرتاب سناہ۔۔اب راجہ نہیں ہوں بہات! اب تو میں راماند مہاراج کے دربار میں ایک چاکر ہوں ،

واماند ساس دربار میں رام کو چهور اور کوئی راجه نیهی. آبے سے تم پیها بهکت هوئے راجه پرناپ ا

پیپا—مہاراج ! مورے سانھ آیا ہوا ایک یورک سیفا بھی شری چرنوں کا اشہرش پانا چاہتا ہے ، پرنتو وہ تو نائی ہے مہاراج ! یدی چرنوں کو نه چھوسکہ تو دور سے ہی درشن کی بیک دیں ، باہر ہی تھرا ہے ،

ریداس—رامانند بهکران کے یہاں کوئی چھوٹا ہڑا نہیں ہے پیپا بھکت ا یہاں تو پرتاپ راجہ بھی پیپابھکت بن کر سینا بھکت کے ساتھ بیٹھ کر بھکران کے پریم کا پان کر سکتا ہے ۔

کیبرسی یکھتے هو ( دهنا ایکت کی اُور اِشارة کر کے .)' وے دهنا ایکت جات هیں .

دهنا--هان بنیا بهات ا

کبیرساور جائتے هو سیں کون هوں ؟ تننا بننا تجها کبیر رأم تام لکھ لیا سریر جاتے جوالما متی کو دهیر

هرشی هرشی گن رمے کبدر

ریداس---اور پیپا بهت! جانتے هوں میں کوں هوں ؟، میں وہ هوں جس کی چهایا تک سے تلک:هاریوں کو چهوت لگ جاتی ہے .

جاتی ہیں اُرچی کرم بھی اُرچیا اُرچیا کسپ ھارا ، ٹیچے سے پربیو اُرتی کیو ہے کیت ریداس جارا ،

क्रबार-पमंदे के दुक्दों को राम नाम के बागों से अन्य व्यापिक है है। है अर्थ के अर्थ के अर्थ बोक्कर जिस्स पर पहनने लायक हो बनावे हो तुम दैवास ! ं धन्ता—सगबान रामानन्द के क्दमों का असूत पीकर तो अपवित्र भी पवित्र बन जाता है पीपा भगत !

रामानन्द-इन सबने सब इहा पीपा ! राम का दर-बार सो सबके लिये सला है.

जाति पांति पद्धै नहिं कोई। हरि को भजे सो हरि का होई।

आज तो धन्ना चाहे जाट हों तो भी सगत हैं, सेना नाई हों तो भी भगत हैं, कबीर मुमलमान हों तो भी भगत हैं, रैदास बमार हों तो भी भगत हैं और पीपा राजपुत्र हैं वो भी भगत हैं. यहाँ सब एक हैं. रामानन्द का यही सन्देश है भगवान रामानुज ने ओ नहीं किया वह मैं आज कर रहा हूँ. मेरा यह सन्देश तुम सब पर्धघर पहुँचा दो. हिंदू और मुसलमान कबीर के शब्दों में दो आँसे हैं -दो आँसे मगवान का रूप तो अलग-अलग नहीं देख मकतीं और हिन्दुओं ! यह ऊँच-नीच का भेद यदि राम का नाम भी न मिटा सके तो फिर बद्द नहीं मिटेगा ! मुसलमानों के .खुदा के दरबार में भी तो सब एक हैं और राम और खुदा तो एक ही हैं. नाम के मेद के पीछे लड़-लड़ कर मनते हैं. कवीर, तुम गाओ तो अपना वह पद-सन्तो, देखत जग चौराना !

(कबीर पद गाते हैं)

सन्तो देखत जग बौराना। साँच कही तो मारन धावै, भूटे जग पतियाना। हिन्दु कर मोहि राम प्यारा, तुरुक कर रहमाना । आपस में दोड लिर लिर मूर्य, मरम न काहू जाना। कहत कबीर सुनो हो सन्तो, ई सब भरम मुलाना। केतिक कहाँ कहा नहिं मानै, आपुहि आप समाना। جسم ير يهلك التي تو بنات هو تم ريداس ا

معلا میکوان رامالالد کے قدمین کا امرت پیکر تو اپوتر سی بينر بن جاتا في ينها بيات إ

راما ناد ان سب نے سے کہا پنہا! رأم کا دربار تو سب ک لئے کھ فے .

> جاتي ياقتي پوچه نهيں کوئي . هرمی کو بهنچے سو اهرمی کا هوٹی ۔

آبر تو دهنا چاھ جات هو تو يعي يهكت هيں؛ سينانائي هن تو يعي بهات هين <sup>6</sup> کيور مسلمان هين تو يعي بهات هين آ ریداس چمار هوں تو بھی بھکت هیں اور پیھا راہے پار هیں تو يني بهات هين ، يهان سب ايك هين ، راماً نند كا يهي سندیش ہے ، بهکوان رامانیج لے جو تہدں کیا وہ میں آج کو رها هور ، ميراً يه سلديش تم سب کهر کهر يهونجوا دو . هندو ارر مسلمان کبیر کے شیدوں میں دو آنعیس هیں۔۔۔دو آنکھیں بيكران كا روب تو الك الك نهين ديم مكتين اور هندؤ! يه أُوليم نييها يهد يدى وأم كا نام بهى قد ما سك تو يهر وا نهيل مٹیکا ! مسلمانوں کے خدا کے دربار میں بھی تو سب ایک ھیں اور رام اور خدا تو ایک ھی ھیں . قام کے بھید کے پیمچے لو لو كر مرت هيل . كبيرا تم كاو تو أينا وه يد سنتوا ديكوت جك برارانا !

( کبیر ید کاتے میں )

سنتو ديكم چگ بورانا .

سانیم کہو تو مارن دھارے' جھوٹے جگ بتیانا ۔ هندو که موثبی رأم پیارا ترک که رحماتا . آپس میں دوؤ لری لری موئے ۔ مرم ته کلعو جاتا۔ کیت کبیر سنو هو سنتو<sup>ا</sup> اِی سب بهرم بهرانا . كيتك كيون كها فهين ماني آيوهي آپ ساتا .

( يٽائشيپ )

(पटाचेप)

### श्री जे. सी. इमारप्पा

दूसरी पांच बरसी योजना का मसीदा देश के सामने है, उसके मतलब को पूरी तरह समक्रने के लिये उसे ध्यान से पढ़ने की फ़रूरत है.

हमारा देश पक रारीय खेतहर देश है इसक्रिये हम यह हमीद कर रहे ये कि इस योजना में सबसे क्यादा ख्याल किसानों की जरूरतों और उनकी भलाई का किया गया होगा. बाक्री सब बातों को इसी लिहाज से देखा गया होगा कि उनसे किसानों की तरक्षकी में मदद मिले. यदि ऐसा किया जाता तभी हम इसे अपने देश की योजना कह सकते बे. लेकिन इस देखते हैं कि इसके खिलाफ यह सारा मसीदा बड़े बड़े पँजी पवियों और बड़े बड़े कल कारखाने वालों की बरूरतों से ही रैगा पड़ा है. देश के बाक़ी लोगों की जरूरतों का भी वहाँ तक ही खयाल रखा गया है जहाँ तक कि वह इस पूँजीबादी ज्यवस्था को फलने-फूलने में मदद दे सकें. इस तरह के मसीदे को हम एक 'तरकीब' या 'तद्वीर' कह सकते हैं, देश की योजना नहीं कह सकते. इस सारे मसीदे में इसी बात की तदबीरें की गई हैं कि किस तरह देश का ष्रधिक से ष्रधिक माल बाहर के देशों में बेचा जा सके, गहर के देशों से अधिक से अधिक धन मिल सके जिससे रेश के कारखानों के मालिकों की जरूरतें पूरी हों और केस तरह देश में श्राधिक बढ़े से बढ़े कारखाने खुल RÉ.

कम्यूनिटी प्रोजेक्ट्स यानी सहकार योजनाओं, कम्यूनेटी देवलपमेंट यानी सहकार उन्नित या नैशनल एक्शग्रान यानी क्रौमी फैलाब के रूप में जो कुछ थोड़ा बहुत
ग्रा किया गया है वह सब दिल बहलाने की बीख है. बच्चा
जब दूध माँगता है तो रबर की खुसनी उसके मुंह में दे दी
जाती है. बच्चा उसे चूसता रहता है लेकिन उससे बच्चे
जा पेट नहीं भरता, हमारा देश चिछा चिछा कर यह माँग रहा
कि हमारे देहातों का फिर से संगठन किया जाबे. इस
गांग के जवाब में कुछ थाड़े से खुने हुये इलाकों में यह
गांग के जवाब में कुछ थाड़े से खुने हुये इलाकों में यह
गांग के जवाब में कुछ थाड़े से खुने हुये इलाकों में यह
गांग के जवाब में कुछ थाड़े से खुने हुये इलाकों में यह
गांग के जवाब में कुछ थाड़े से खुने हुये इलाकों में यह
गांग के जवाब में कुछ थाड़े से खुने हुये इलाकों में यह
गांग को खुनियादी तीर पर खेती के काम के साथ
भीर खेती-किसानी के दूसरे ख्यांग-धन्यों के साथ इस सरह
गोंदना कराई कि जिससे गांव कालों की साथ इस सरह

شری جے . سی . کماریها

دوسری پائیے درسی یوجنا کا مسودہ دیش کے ساملے ہے ، اُس کے مطلب کو پوری طرح سمجھنے کے لئے آسے دھیاں سے پوھلے کی ضوررت ہے ۔

همارا ديهي ايک غريب تهيتير ديهي هه اس لئے هم يه أميد كو رقع ته كم إس يوجنا مينسب سے زيادة خيال كسانون کی شرورتوں اور اُن کی بھائے K کیا گیا ہوگا ۔ باقی سب باتوں كو إسى المحاظ سے ديكها كيا هولا كه أن سے كسائوں كى ترقى میں مدد ملے ، یدی آیسا کیا جاتا تھی هم اِسے اپنے دیھی کی بوجنا كم سكتے تھے . ليكن هم ديكھتے هيں كه إس كے خالف يه سلرا مسودة بوء بوء پولجى يتيس أور بوء بوء كل كارخالي والیں کی ضرورتیں سے عی رنگا ہوا ھے . دیش کے باتی لوگیں کی شرورتیں کا بھی وہاں تک ہی خیال رکھا گیا ہے جہاں تک که وه ایس پوتجی وادی وبوستها کو پهلنے پهوللے میں سدد دیم سکیں اِس طرح کے مسودے کو ہم ایک اورکیب یا اوربیرہ کو سکتے میں اوروں که پوچنا نہیں کو سکتے اِسسارے مسودے میں اِسی بات کی تدبیریں کی گئی میں که کس طرح دیم لا ارمک سے ارمک مال بامر کے دیشیں میں بیچا جاسمے ہامر کے دیشیں سے ادمک سے ادمک دھی مل سکے جس سے ویعی کے کارخانی کے مااعوں کی ضرورتیں یوری ہوں اور کس طرے دیک میں اُدھک ہوے سے ہوے کارخالے کیل سکیں .

کمیونٹی پروجیکٹس یعلی سپکار یوجنائی' کمیونٹی قومی قدولہدیات یعلی سپکار آننٹی یا ٹیشنل آیکسٹینشن یعلی قومی پیٹائو کے روپ میں جو کچھ تهروا بہت پیش کیا گیا ہے وہ سب چوسلی آس کے منه میں دے دی جاتی ہے۔ بچہ آسے چوستا رہتا ہے لیکن آس سے بچے کا پیت نہیں بهرتا، همارا دیش چا چائر یه مانگ وها ہے کہ همارے دیہاتوں کا پهر سے سنگنهاں کیا جارے، اِس مانگ کے جواب میں کچھ تهروے سے چلے ہوئے عاتوں میں یہ مہنکی "کلیانکاری" بوجنائیں پیش کی جاتی هیں جن سے کرئی آچھا تیبجہ نہیں نکل سکتا، اِس طرح کی یوجنائوں کو بنیادی "طور پر کھیٹی کے کام کے ساتھ اور طرح کی یوجنائی کے دوسرے آدیوگ دھندیں کے ساتھ اِس طرح کی بوجنائی کہ جیس سے گاوں بوالیں کی بھین بھیا کرنے کیا

हैं। शाक बड़े. हमारे इस मसीदे में यह नहीं किया गया. देश को जरूरत इस बात की है कि देहात की तरकती का एक जाल चारों तरफ पूर दिया जावे जिसमें गाँव के अच्छी सरह सीखे हुये काम करने बाले हों और उनकी मदद के लिये एक पूरे अधिकार वाली सरकारी कमेटी हो जिसके कपर एक योजना मंत्री हो. आजकल की ये योजनायें केवल राजकाजी योजनायें हैं. इनकी रारज राजकाजी प्रोपोगेंदा है. इनमें गाँव की भलाई के लिये जो कुछ किया जा रहा है बह केवल आँसू पोंछने बाली बीज है. जनता का धीरफ और जनता का सब धीरे धीरे इससे टूट सकता है.

इस पहले भी कई बार कह चुके हैं कि हमारे देश का, बड़ी बड़ी निवयों के बहाब के हिसाब से, फिर से बटवारा होना चाहिये और उन निवयों से ऐसी नहरें निकलनी चाहियें जो हिमालय के बरफानी पानी को सूखे हुये खेतों में से जे जाती हुई कन्या कुमारी तक पहुँचा दें. जरूरत इस बात की है कि किसी भी पार्टी गवर्नमेएट या उनके मदद-गारों और नेताओं के मुकाबले में किसानों की माली खरूरतों का कहीं अधिक ख्याल रखा जावे. राजकाञ हमारे लिये अब एक दूसरे दरजे की चीज होनी चाहिये. पहला दरजा हमें जनता की माली जरूरतों को देना चाहिये. हमें अपने मंत्रि मंडलों को भी इसी तरह नये सिरे से बदलना चाहिये जिससे आम जनता की माली हालत को हम समक बूक के साथ उत्तर ले जा सकें और सारे राष्ट्र का नये सिरे से संगठन कर सकें.

हम अब भी आशा करते हैं कि इस दूसरी पाँच बरसी योजना पर जो बहसें होंगी उनमें इन बातों का खयाल किया जायगा और इस मसौदे को इस तरह बदल दिया जायगा कि जिससे आम जनता की जरूरतों और उनकी सरककी पर पूरा पूरा ध्यान दिया जा सके.

नई योजना के इस मसीदे में जिले को काम की इकाई माना गया है. पहली बात तो यह कि इकाई बहुत छोटी होनी चाहिये थी. एक काम करने वाला एक गाँव को या आस पास के थाड़े से गाँवों को ज्यादा अच्छी तरह सम्हाल सकता है. थाड़े से इलाक़े में वह सबको समम सकता है और सबसे मेल जोल रख सकता है. गाँव वालों के भले के लिये यह जकरी है. इसमें बहुत से सीखे हुये जाम-सेवकों की जकरत होगी. पर यदि हमें भारत की करोड़-हा अनता को कपर उठाना है तो यह करना ही होगा.

इस योजना में यह मान लिया गया है कि अगर बने बड़े क्योंगों और बड़े बने कारलानों को बहाया जाने तो मूमि पर बानी खेती के ऊपर जो करोड़ों भावमियों का बीम पनता है वह कम हा जायगा. इसके खिलाक हम बनक पीड़ियों का तजुरना वह है कि इस तरह के बने बनोगों के कमने से लाखां ओटे यन्त्रे करने बाबे केरोजगार وعلی وقت سالیہ اس سیودے میں یہ نہیں کیا گیا۔ دیکی خورون اللہ کی گئے کہ دیات کی ترقی کا ایک جال اللہ علی طرح اللہ کی خود دیا جارے میں گؤں کے اچھی طرح بعد سولی کلے ایک والے موں اور اُن کی مدد کے لئے ایک بندی ہو جس کے اُرپر ایک یوجنا بندی ہو جس کے اُرپر ایک یوجنا بندی ہو ۔ اُرکا کی یہ یوجنائیں کیول راجکاجی یوجنائیں بن اِن کی غرض راجکاجی پروپیکیلڈا گے ۔ اِن میں گؤں کی بیٹی کے لئے جو کچھ کیا جا رہا گے وہ کیول آنسو پوچھنے والی بیز ہے ۔ بہتا کا دھیرے اور جنتا کا صدر دھیرے دھیرے اِس بیٹا ہے ۔

هم پہلے ہیں کئی ہار کہ چکے هیں که همارے دیش کا' ہوی اور ندیوں کے بہاؤ کے حساب سے' پھر سے بقرارہ هوتا چاھئے اور ندیوں سے ایسی نہریں نکلنی چاھئیں جو همالیہ کے برنائی الی کو سوکے هوئے کھئوں میں سے اے جاتی هوئی کنیا کماری کی پہرتچادیں ، ضرورت اِسے بات کی ہے کہ کسی بھی پارٹی برنیائی یا اُن کے محدگاری اور نیتاؤں کے مقابلے میں کسائوں ی مالی ضرورتوں کا کہیں اُدھک خیال رکھا جارے ، راجکاج مارے لئے آب ایک دوسرے درچے کی چیز هوئی چاھئے ، پہلا برجہ همیں جنتا کی مالی ضرورتوں کو دینا چاھئے ، همیں اپنے برجہ همیں جنتا کی مالی ضرورتوں کو دینا چاھئے ، همیں اپنے برجہ عمیں جاتا کی مالی ضرورتوں کو دینا چاھئے ، همیں اپنے باوی اس جنتا کی مالی خالت کو هم سمتھ بوجھ کے ساتھ آوپر لے ہاسکیں اور سارے راشڈر کا نئے سرے سے سنتھ بوجھ کے ساتھ آوپر لے ہاسکیں اور سارے راشڈر کا نئے سرے سے سنتھ بوجھ کے ساتھ آوپر لے

هم آب یهی آشا کرتے هیں که آس دوسری پانچ برسی وجنا پر بحثیں هونگی آور آن میں آسانی کا خیال کیا جائیگا پر اِس مسودے کو اِس طرح بدل دیا جائیگا که جس سے عام منتا کی ضرورتوں اور آن. کی ترقی پر پورا پورا دهیاں دیا ملکے ،

نئی یہجنا کے اِس مسودے میں ضلع کو کام کی اِکائی مانا گیا اور بہلی بات تو یہ ہے کہ یہ اکثی بہت چہوئی ہونی چاہئے تھی، 
یک کام کرنے والا ایک گاؤں کو یا آس پاس کے تھوڑے سے گاؤں او زبادہ اچھی طرح سنبھال سکتا ہے ، تھوڑے سے علاقے میں وہ 
سب کو سنتجھ سکتا ہے اور سب سے میل جول رکھ سکتا ہے ، 
اور والوں کے بیلے کے لئے یہ ضروری ہے ، اِس میں بہت سے 
یکھے ہوئے گوام سنوکوں کی ضرورت ہوگی ، پر یدی ہمیں 
الات کی درورہا جنتا کو اور اُٹھانا ہے تو یہ درنا ہی ہوگا ،

اِس بینجفا میں یہ مان لیا گیا ہے کہ اگر بڑے بڑے آدبوگی ار بڑے بڑے کارخانی کو بڑھایا جارے تو بہومی پر یمنی کھنٹی کے آرپر جو کروچی آدمین کا برجھ پڑتا ہے وہ کم هو جائیگا ، س کے کانس هم سب کا بیزمین کا تجربہ یہ ہے کہ اِس طرح کے اِندائین کے بیند کی جہزئے دھادہ کرتے والے بہورگا

जाते हैं आता है कार्य किया है जो कर वह है कि गाँव हाटे-हाट बन्ने बहाये जायें और उन्हें तरज़की दी जाय. हातीहे में और उत्पान इस बात को मान लिया गया है पर हातीहे के बनाने बातें इस उत्तल पर अमल करने के लिये हातिये तैयार नहीं हैं कि इससे आये दिन की ज़रूरत की बीजों को पैदा करने वाले बड़े बड़े कारखाने के रूप में बात सकेंगे और बड़े पूँजी पितयों का काम कम हो प्रावगा.

इम अपने देश की समस्याओं को धीर बढ़ाकर या इनसे भाग कर बन्हें इल नहीं कर सकते. इमें देश से किशी मिटानी है बो इमें गाँव के घन्धों और गाँव के कारी-गरों को बढ़े पूँजी पतियों और बढ़े बढ़े कारखानों की घातक होड़ से बचाना ही होगा.

इस योजना में यह मान लिया गया है कि आये दिन ही जरूरत की बीजों को पैदा करने के लिये बढ़ी बड़ी पूँजी तगाकर जो फारखाने खोले जायेंगे उनसे जो बहुत सा माल पैदा होगा उस माल से लोगों के रहन सहन का दंग और ऊँचा हो जायगा. रहन सहन का ढक्क जनता का तब ऊँचा होता है जब वह मज़दूर या वह कारीगर जो मेहनत मजद्री करता है ज्यादा माल खरीद सके. बड़ी पूँजी वाले कारसाने से धन का फैलाब बन्द हो जाता है और वह पूँजी बनकर थोड़े से हाथों में जमा हो जाता है. इससे करोड़ों जनता के रहन सहत का उक्क और नीचे जाता है. कपड़ा, तेल, चमड़े का सामान, शक्कर बरौरह ऐसी चीलों हैं जिनकी पैदाबार में ज्यादा से ज्यादा आदमियों को काम मिलना चाहिये और जिनसे पैदा हुआ धन क्यादा से प्यादा लोगों दक फैल जाना चाहिये. हम अपने धन्धों को इस तरह चलावें तो कारखाने के माल की हमें जरूरत ही नहीं रहेगी, न कारखानों में पूँजी लगाने की जरूरत रहेगी श्रीर जनता का रहन सहन का ढङ्क श्रपने श्राप ऊँचा चला जायगा. सबके पास पैसा हांगा और सब उससे अपने सुल का सामान खुरीद सकेंगे.

इस योजना में उन पूँजी पितयों को मदद देने के लिये जो अपने निजी कारखाने चला रहे हैं या चलाना चाहते हैं 60 करोड़ रूपया रखा गया है. इसके मुकाबले में गाँव के घन्यों को मदद देने के लिये, जिनका तास्तुक करोड़ों जनता से है, सिर्फ 200 करोड़ रखा गया है, यानी उसके आपे से भी कम. सगभग तीन-चीथाई में कुछ हजार पूँजी पित और एक चौथाई में करोड़ों छोटे घन्ये वाले. इससे आहर है कि अजीरों और सरीकों, पैसे वालों और नादारों के बीय की बाई और करती बती जायगी. وہ جات ہے۔ میں اساس اور انہیں کو گائی کے چھوٹے دی جات ہے۔ اس اور انہیں ترقی دی جات ہے جھوٹے دی جات ہے۔ اس اور انہیں ترقی دی جات ہے بہ مسودے میں ہی اور انہیں اور انہیں کے بنائے والے اِس اور ا را میں اور اُنہیں کے بنائے والے اِس اور اور عمل کرنے کے لئے اِس لئے تیار نہیں میں کہ اِس سے اُنے دن کی ضرورت کی چیزوں کو پیدا کرنے والے برے برے کارخانے کے روپ میں نہ چل سکینکہ اور برے پولیجی پتیوں کا کام کم ہرجائیگا .

ھم آپنے دیکس کی سمسیاؤں کو آور ہوھاکر یا آن سے بھاگ کو آئی سے بھاگ کو آئیوں حل ٹیمیں کرسکتے ۔ ھمیں دیکس سے بیکاری مثانی کے تو ہوتے پوتنجی عموں اور ہوتے ہوتجی پہلیاں اور ہوتے ہوتے کارخانوں کی گھانگ ھوڑا۔

ا إس يوجلا ميل يه مان ليا گيا هه كه آثم دن كي فزورت کی چیزوں کو بیدا کرتے کے لئے بھی بڑی پولجی لگاکر جو كارخالي كهولي جائهتكي أن سے جو بہت سامال بيدا هوا أس مال سے لوگوں کے رہن سہن کا تھنگ اور اُونجا ہوبجائیگا . رهن سرن کا دهنگ جنتا کا تب اُونیجا هوتا هے جب وہ مؤدور یا وہ کاریکر جو محنت مزدوری کرتا ہے زیادہ مال خوید سکے ، برس يولنجي وأله كارخالے سے دھن كا يهيلاؤ بند همچاتا ہے أور وہ يونجي بن كر تهروب سے هاتين مين جمع هوجاتا هے . اِس سے کروروں جنتا کے رهن سهن کا تھنگ اور نیجے جاتا ہے . کیران تهل عمره كا سامان شكر وغيره أيسى چيزين هين جنكي ويداوار ميں زيادہ سے زيادہ آدميوں کو کام ملنا چاھئے اور جن سے يهدا هوا دهن زيادة سے زيادة لوگوں تک يهيل جانا چاهئے . هم النے دھندھوں کو اِس طرح چلاویں تو کارخانے کے مال کی ھمیں ضرورت هي نهيں رهيكي أنه كارخانس ميں پونجي لكانے كي ضرورت رهیکی اور جنتا کا رش سهن کا تعنگ اینے آپ اُرنجا چا جائرگا . سب کے یاس یہسہ هرا اور سب اس سے اپنے سکھ کا ساملی خرید سکهنگه .

اس یوجنا میں اِن پونجی پتیں کو مدد دینے کے لئے جو اپنے تنجی کردو کے لئے جو اپنے تنجی کارخانے چا رہے میں یا چاتا چاعتے میں 560 کردو رہیء رہا گیا ہے ۔ اِس کے مقابلے میں گاؤں کے دھندھوں کو مدد دینے کے لئے جی کا تعاق کردور بختا سے ہے، صرف 200 کردو رکیا گیا ہے، یعنی اُس کے ادھے سے بھی کم ۔ لگ بھگ تھی چرتیائی میں کچھ ھزار پونجی پتی اُدر ایک چوتیائی میں فرووں اور خوروں چھوٹے دھندھ والے ۔ اِس سے طاهو ہے که امیروں اور خومتی غربیوں ، پیسے والی اور خومتی خربیوں ، پیسے والی اور خومتی خربیوں ، پیسے والی اور خومتی خوبیاں ، پیسے والی اور خومتی جائیگی ،

इस बोजना में इस बात की सबसे क्यादा बिन्ता विकाई गई है कि हमारे देश से बहुत सा माल दूसरे देशों को भेजा जावे. इस तरह के व्यापार से क्यादातर फायदा पँजी पतियों भीर बढ़े कारखाने वालों को ही होता है. उन्हीं की अपने कारखानों की जरूरत का माल और अपने ऐश भाराम का माल बिदेशों से खरीवने के लिये विदेशी सिक्कों की जरूरत होती है. इस तरह के व्यापार से किसी देश में अपने पैरों पर खड़े होने की ताकत नहीं आ सकती. दुनिया में शान्ति तभी कायम हो सकती है हो सकती है भीर करोड़ों जनता तभी खराहाल हो सकती है जब हर देश कम से कम अपनी आये दिन की जरूरतों की चीचें जुद बनावे और इस मामले में अपने पैरों पर खड़ा हो. हम अपने देश से अधिकतर कब्चा माल बाहर भेजते हैं. अगर हमें अपने यहाँ से बेरोजगारी दूर करनी है तो हमें इस तरह के सब कच्चे माल को अपने यहाँ रोककर खुद उससे अपनी जरूरत की चीजें तैयार करनी चाहियें. जब तक हम कच्चा माल बाहर भेजते रहेंगे और बनी हुई भीजें बाहर से मँगाते रहेंगे तब तक देश में बेरोजगारी बनी रहेगी और बढ़ती रहेगी. इस ससय तो हमारी यह हालत है कि विदेशों में बनी बीजों और विदेशी पूँजी से बनी बीजों से हमारे बाजार भरे हुए हैं. "लक्स" जैसे विदेशी साबन इसारे दूर-दूर के गाँव गाँव तक पहुँच गये हैं. क्या इंगलि-स्तान के किसी गाँव में हिन्दुस्तान का बना साबुन आपकी 'मिल सकता है ? अगर इस यह चाहते हैं कि अपने गांव के जीवन को फिर से ऊंचा ले जायें, उसे स्वावलम्बी बनायें भीर अपने पैरों पर खड़ा होने का मीक्ना दें ता हमें हिम्मत से काम लेना होगा. देश की जनता का दूसरे देशों के सिक्कों की पक्ररत नहीं है. उनकी गादी मेहनत की पेदाबार का इमें इस तरह का उपयोग नहीं करना चाहिये कि जिससे पूँजी पतियों को विदेशी माल खरीदने के लिये विदेशी ं सक्के मिल सकें.

वेवी

यह ठीक है कि खेती हमारे यहां श्रद्वारह कीसदी बढ़ गई है. लेकिन यह पैदाबार उन चीजों की बढ़ी है जिन्हें बिदेशों में बेचकर धन कमाया जा सकता है. नाज या उन बीजों की पैदाबार जिनसे पेट भरा जा सकता है बढ़ी नहीं बिह्क कीर घटी है. यह हम उलटी तरफ जा रहे हैं. हमारे गांवों में लोगों को शक्ति बनाए रखने के लिये जैसा चाहिये मोजन नहीं मिलता. बहुतेरे लगभग भूखे रहते हैं. ऐसी स्रत में हमें नाज की पैदाबार पर सारा जार देना चाहिये. हमें बहु महीं होने देना चाहिये कि हमारे साने के लिये नाज

إس يوجها مهن إس بات كي سب سه زياده جنتا دكاكي ور م ك المارية ديش سه بهت سا مال دوسرت ديشون كو بهدا حامد واس طرح کے ویابار سے زیادہ تر قایدہ یوتعم يتهين اور يزم كارخالم والين كوهي هرتا هي أنهين كو ايني كارخالي كي فرورت كا مال اور أين عيش أرام كا مال وديشين ہے غرید نے کے لئے ودیشی سکیں کی ضرورت ہوتی ہے . اِس طرے کے ویآبار سے کسی دیکی میں اپنے پھروں پر کھڑے عوالے کی مائت تهين أسكتي . دليا مين شانتي تبهي قايم هو سكتي هـ. اور کرورس جفتا تبهی خوشحال هو سکتی هے جب هر دیش کم سے کم اپلی آئے دن کی ضرورتوں کی چیزیں خود بنارے اور إس معاملے مهں اپنے پهروں پر فهزا هو . هم اپنے دیش سے ادھکار کچا مال باهر بهیجتے هیں ۔ اگر همیں اپنے یہاں سے پے روزگاری دور كولى هے تو هميں اِس طرح كے سب كتيے مال كو أينے يہاں رک کو خود اُس سے اپنی ضرورت کی چیزیں تیار کرنی اُ چُاهِیش، جب تک هم نحوا مال باهر بهیجتے رهینگاور بنی هوئی چیزیں باھر سے منگاتے رھینگے تب نک دیش میں بےروزگاری بنی رهیکی . أس سنه تو هداری به حالت ها كه ودبشوس مهن بنی چیزوں اور ودیشی پولنجی سے بنی چیزوں سے همارے بازار بیرے هوئے هیں، "لس" جیسےودیشی صابن ممارے دور دور کے اوں اور تک یہنچ کئے میں ، کیا اِنگلستان کے نسی او میں هندستان كا بنا صابن آل دوسل سكتا هے ؟ أكر هم به چاهتے هيں كه اپنے گلوں کے جدوں کو پھر سے اوسچا لے جائیں اُسے سواؤلمبی بنائیں ارر اپنے پیروں پر کہڑا ھونے کا سردم دیں تو ھمیں ھمت سے کام لینا مولا ، دیعی کی جنتا کو دوسرے دیشوں کے سکوں کی فرورت نہیں ہے ، ان کی گارهی محنت کی پیدارار کا همیں إس طرح كا أَيْهُوك تهين كرنا چاعيدُ عد جس سه يونجي يتهون کو ردیشی مال خریدنے کے لیے ودیشی سکے مل سکیں .

فبيتى

یہ تبیک ہے کہ کہیتی همارے یہاں اتبارہ فیصدی بڑھ گئی ہے، لیکن یہ پیداوار اُن چیزوں کی بڑھی ہے جابیس ودیشوں میں بیچ کر دھن کمایا جا سکتا ہے، ناچ یا اُن چیزوں کی پیداوار جن سے پیٹ بیرا جا سکتا ہے برھی نہیں بلکہ اور گیتی ہے یہ مم اُنٹی طرف جا رہے ہیں ، همارے گاں میں لوگوں کر شکتی بنائے رکینے کے لئے جیسا چاھیئے بهوجن نہیں ملتا یہ بہتورے لگ بھٹ بھوج رہتے میں ، ایسی صوت میں بہتورے لگ بھٹ بھوٹ میں ناچ کی پیداوار پر سارا زور دینا چاھیئے ۔ همیں به نہیں طرف کی اُنٹی جابیا کہ ناہے ناچ کی بیداوار پر سارا زور دینا چاھیئے ۔ همیں به نہیں طرف کی اُنٹی ناچ کی بیداوار پر سارا زور دینا چاھیئے ۔ همیں به نہیں طرف کی اُنٹی ناچ کی اُنٹی ناچ کی اُنٹی ناچ کی بیداوار پر سارا زور دینا چاھیئے ۔ کانٹی ناچ کی اُنٹی ناچ کی اُنٹی ناچ کی بیداوار پر سارا زور دینا چاھیئے ۔ کی اُنٹی ناچ کی اُنٹی ناچ کی بیداوار پر سارا زور دینا چاھیئے ۔ کی بیداوار پر سارا زور دینا چاھیئے ۔ کی انٹی ناچ

बाहर के जाते. इसरे देशा के बाब इस तरह की विज्ञारत विसर्गे कापक सहता मान हम बाहर शेजें और करका कीमती आहा बनसे सारी हैं देश को और क्यादा सरीय कर केती हमें नाज की पैदाबार बढानी घाडिये. हमारे देश के बन्दर की विजारत का ढंग भी इसी तरह का बिगका हुआ है, गांव बाले खेती की पैदाबार जैसे घान, तिलहन, रूई धीर वमडा शहरों को भेजते हैं चौर तैयार माल जैसे मिल के इटे चावल, मिल का तेल, मिल का स्त, मिल के कपड़े, जूते वरीरह शहरों से ख़रीदते हैं. अगर गांव वालों की माली हालव को सधारना है तो इस बहाब को रोकना

बगर हम बाबपाशी के ब्रोटे ब्रोटे बरियों को ठीक रखने की तरफ ध्यान दें तो आवपाशी की जमीन की पैदा-बार बासानी से बौगुनी हो सकती है. बीसों बरस से हमने गांव के तालावों की तरफ ध्यान नहीं दिया. उनमें से बहुत सों में मिट्टी ऊपर तक भर गई हैं. अस्सर में तो बारिश हो जाने पर भी सुशकिल से एक क्रुट पानी टिकवा है, देश में जगह जगह बढ़े बढ़े तालाब मीजूद हैं, पर उनमें एक फ़सल के लायक भी पानी नहीं रहता. अगर इस उनकी मिड़ी निकलवा कर उन्हें चार पांच .फूट गहरा करा दें, तो बहु मिट्टी खेतों में सुन्दर खाद का काम दे सकती है. वालाबों में दो दो और तीन तीन क सल के लायक पानी रह सकता है, और आवपाशी की खेती आज से दुगती हो सकती है. हम गांव वालों के सामने इस तरह का प्रामाम रखें तो वह हर तरह मदद देने का तैयार हैं. मिट्टा निकालने के लिये हम बुलडांवरों से काम के सकते हैं. खेतों की आवपाशी के लिये, नहरों में पानी पहुँचाने के बास्ते हम विजली के प्रयों से भी काम ने सकते हैं.

#### बाढ की रोक याम

तालाबों की मिट्टी , निकाल देने से इस एक दरजे तक निहयों की बाढ़ों और उन बाढ़ों से अच्छी निट्टी के कगारों के वह जाने को भी रोक सकेंगे. निद्यों का बहुत सा कालत पानी, जो अब हजारों जानें लेता हुआ और गांव के गांव बरबाद करता हुआ समन्दर में जा गिरता है, तब गहरे वालाबों में भर जायगा और गांव बालों के काम घायेगा.

हर जगह यह भी कोशिश होनी चाहिये कि गांव का सब गन्दा पानी ऐसे गड्डों में पहुँच जाय जहां उससे अच्छी कम्पोस्ट साद हैयार हो सके. इससे भी धरती की पेदाबार बहुती, बीर हमें अधिक नाज और हमारे जान-परों को श्राधिक चारा मिल सकेगा.

सोबी में समक्त से काम क्षेत्रे का यह मदलब है कि इस र्य प्राप्त की तरफ ज्यान में कि किस मोजन से फितनी

الواف المد عودرت ديدري عام إس طرح الراهارت بعن الله الله الله على الم ياهو بهيجين أور أن الها الهام مال أن الله گریندن ادیمی کو اور زیادہ غریب کر دیکی ہے ۔ ہمیں تاہے کی یڈیڈوٹر پرھائی جاھیئے، ھیلرے دیش کے آندر کی تجارت کا ' بَيْنِكُ يَمِي إِسَى طَرِحٍ كَا يَكُوا هُوا هِ . كَاوُن وَالْمَ كَلِيتِي كَي المعاوار جيس دهان تلهن روئي اور چمرا شهرون كو بهدجيت سوف مل کے کورے جوتے رفورہ شہروں سے خوردیتے ہیں ، اگر اور وابی کے مالی حالت کو سدھارتا کہ تو اِس بہاؤ کو روکنا ھوگا۔

آگو هم آبیاشی کے چھوٹے چھوٹے فریموں کو ٹھیک رکھنے کی طرف دهیاں دیں تو آبیاشی کی زمین کی پیداوار آسانی سے چوگلی هو سکتی هے ، بیسیوں برس سے هم لے کاوں کے تالابوں لی طرف دھیاں نہیں دیا ، آن میں سے بہت سوں میں متی أرير تك يهر كثي هـ ، اكثر مين تو بارش هول ير بهي سعكل س أيك نحك بائي كتا هـ ، ديش مين جكيه جكيه برّ بري اللها موجود هیں پر اُن میں ایک نصل کے الیق بھی پائی ليين رهنا ، اگر هم أن كي ملى نكلوا كر أنهين چار باني فث گیرا کر دیں ' تو وہ ملی نبیتوں میں سادر فیاد کا کام دسے سکتی ها تالیس میںدو دو آور تین تین نصل کے لایتی پائی رہ سکتا ہا أرز أبهاشي كي فهيتي أج سے دوكني هو سعتي هے ، هم فوں والوں کے سامنے اس طرح کا پروگرام وقهوں تو وہ هر طرح مدے دیا۔ کو نهار هیں ، ملی فکا لم کے لئے هم بل فرزروں سے ام لے ساتے هاں . کھیے کی آبیاشی کے لٹے نہروں میں پائی پہوتچانے کے واسطے ھے ہتھلی کے پمہوں سے بھی کام لیے سکتے تعین ۔

#### پاورہ کی روک تھام

تالیں کی مای نکال دینے سے مم ایک درجہ تک ندیوں کی بارھوں اور آن بارھوں سے اچھی مٹی اور مٹی کے کاروں کے به جانے کو بھی روک سکینگے ، قدیوں کا بہت سے فالتو یائی ، جو أبير هزارول جانيس لينا هوا أور كاول كے كاول برباد كرتا هوا سمندر مين جا كرتا هـ أنب كهرم تالبيل مهل بهر جائيكا أور كازل واليل کے کام انبکا .

هر جگهه یه یهی کوشفی هولی چاهیان که کاون کا سب گاندا پائی ایسے گذھوں میں پہرنچ جائے جہاں اُس سے اچھی کیوست. کهان تیار هو سکے ۔ اِس سے بھی دھرتی کی پیداوار ہومیکی اور مدیں ادمک تاہے اور مدارے جاتوروں کو ادھک . Keen for life

. عُهاتي مين سنجو به كلم لهل كارية رمطلب في كه هم إس ، ياتُ كي طُرف دهيان دين كه كس يوبهن هه كتابي

هماری یوجنا ایسی هوئی چاهیئے که جس سے کییٹی کی پرداوار اِننے فیصدی یا آننے فیصدی ٹیمین کلک اِننے گلا یا آننے گلا ہوتھ سکے اِس کے ساتھ ساتھ همیں کھیٹی سے سمبندہ رکھنے والے آدیوگ دھندھوں اور گلوں کی دستکاریوں کو بھی برتھانا چاهیئے جس سے زبردستی کی پرکاری سٹے اور سب کو کام اور پرزار مل سکے ۔

#### ستي

آجکل کسالوں کو آپنی محملت کے پورے پورے دام وصول نہیں ہوتے ۔ آس کے پیداوار کی قیمتوں کو گھٹانا پڑھانا ردیشی مندیوں اور ودیشی ویاپاریوں کے ہاتھ میں ہے ۔ یہ نہیں رہنا چاھئے ۔ اپنی پیداوار کی قیمتیں طے کرئے میں خود کساں کی آواز سب سے زوردار رہنی چاھیئے ، قیمت کا بہت ہوا بھاک جکل بیج کے لوگ کہا جاتے ہیں ، اِن دلالوں کا ایک لمبا مالت بن گیا ہے ، یہ سلسلہ گھٹنا چاھئے ، قیمت کا اُدھیکانھی بھاگ کسان اور مؤدور کو ملنا چاھئے ،

#### نم روزگر

ٹئی پوجنا میں پڑھ لکھ ہے روزگاروں کے لئے کچھ ٹئے کام گڑھ گئے ھیں ، پر وہ کام آیسے ھیں جن سے دیھی کی پیدوار یا دیش کا دھی ٹہیں بڑھتا خرچ ھی خرچ بڑھتا ہے ، بیروزگاری دور کرنے کے لئے ممارے نئے کام آیسے مونے چاھیئی جن سے پیداوار ور دھی بڑھے ،

اگر هم اِن طریقوں سے کام کریں تو همیں دوسرے دیشوں کے سامنے مدد کے لئے هاتو پسارنے کی ضرورت نہیں گے ، اگر هم اپنی چادر دیکھ کو پاؤں پساریں' فقدل خرچی نے کریں' اپنی ضوروت کا ادھکتر سامان خود پیدا کریں' تو جن آتو سو کروز رہنے کے باہر سے لینے کی ضرورت اِس یوجنا میں بتائی گئی گئی آن کی همیں باہر سے لینے کی هرگز ضوروت نے پرے ، اگو کے اُن کی همیں باہر سے لینے کی هرگز ضوروت نے پرے ، اگو هم اپنی پیداوار اور اپنے بیاں کی کھیت دونوں کو دھیان سے ٹھیک رکیں اور جتنا ہمی رکیں اور جتنا ہمی

कि कि सामी है सीर कि नस हरह की क्ससे पैना कि किन्से होन्छ तरह का भोजन जैसा बाहिये सनका मिल कुट, जगह जगह की मिट्टी और वानी की खलग जलग साईन्सी परका के लिये भी धभी हमारे वास साधन नहीं है कह हो जाय तब ही हम ठीक खाद सन जगह पहुंचा सन्दे हैं, देवल बनाबदी कीमियाई खादें सन जगह पहुंचा केना, जैसा कि सरकारी योजना के मसीदे में कहा गया है, बिता जगह जनह की मिट्टी और पानी की कीमियाई परख के, और उलटा घातक होगा. इसके लिये विशाम गन्दिर की

हुमारी बोजना ऐसी होनी चाहिये कि जिससे खेती की पैदाबार इतने कीसदी या चतने कीसदी नहीं, बल्क इतने गुना वा चतने गुना बढ़ सके. इसके साथ साथ हमें बीती से सम्बन्ध रखने बाजे च्यांग धन्धों और गांव की इंस्तकारियों को भी बढ़ाया चाहिये जिससे जबरदस्ती की बैकारी सिढे और सबको काम और रोजगार मिल

कीमते

आजकल किसान को अपनी मेहनत के पूरे पूरे दाम ससूत नहीं होते. उसके पैकावार की कीमतों को घटाना बंदाना विदेशी मंडियों और विदेशी ज्यापारियों के हाथ में है. यह नहीं रहना चाहिये. अपनी पैदाबार की कीमतें तथ करने में , खुद फिसान की आवाज सबसे जोरदार रहनी आहिये. कीमत का बहुत बढ़ा भाग आजकल बीच के लोग का जाते हैं. इन दलालों का एक लम्बा सिलसिला बन शंका है. यह सिलसिला घटना चाहिये. कीमत का अधिकांश माग किसान और मजदूर को मिलना चाहिये.

वर रोज्रगार

नई योजना में पदे लिखे बेरोजगारों के लिये कुछ नए काम गढ़े गय हैं. पर बह काम ऐसे हैं जिनसे देश की देशबार या देश का धन नहीं बढ़ता, खर्च ही खर्च बढ़ता है. बेरोजगारी दूर करने के लिये हमारे नए काम बेसे होने बाह्निं जिनसे पैदाबार और धन बढ़े.

बायर हम इन तरीकों से काम करें तो हमें दूसरे देशों के सामने मदद के लिये हाथ पसारने की जरूरत नहीं है. जगह हम अपनी चादर देखकर पांच पसारें, फंजूल खर्ची न करें, अपनी जरूरत का अधिकतर सामान खुद पैदा करें के जिल खाठ सी करोड़ रुपये के बाहर से लेने की जरूरत के बोजना में बताई गई है उनकी हमें बाहर से लेने की कर्मी कहारत न पड़े. अगर हम अपनी पैदाबार और अपने वहां की खपद दोनों को ज्यान से ठीक रखें, और

हें बाहिये का अब दर्म देश ही से निम सकता है, इसके Mart कार हम बाहर की सदद के सहारे रहेंगे और देश हे अन्दर चींकों की सपत को सममदारी के माथ काबू में क्षां रहेंगे वो इस देश में जहां लोगों के रहन सहन का हंग अब भी मामूली आदमी की जरूरतों से कहीं गिरा हमा है हम महनाई और बढ़ा देंने और पैसे के बात बेहब बटा वें गै.

शराय बन्दी

शराष पन्दी के साथ साथ हमें खासकर ताड़ी तैयार करने बालों को काम देने का भी पूरा प्रवन्ध कर देना बाहिये. इसके लिये इमें अपना गुढ़ और बीनी ताक के रस से तैयार करनी चाहिये, ताब से हमें अपनी जरूरत का परा गुड़ और पूरी चीनी भिल सकती है. गन्ना बाने में भी हम खेती के साधनों का रालत उपयोग करते हैं. शक्कर या बीनी अधिकतर हवा और पानी से बनती है, जमीन से साई पैदा होती है. इसिलये गन्ने की जमीन को हमें दूसरी कसर्ने पैदा करने के काम में लाना चाहिये. जो लोग गरने की जीनी की मिलों से लाखों रुपये कमाते हैं वह इसके लिये ख़ुशी से राजी न होंगे कि हम उसी जमीन का उपयोग श्रीक समकदारी के साथ दूसरे कामों के लिये करें, चीनी की मिलों की पैक्षवार पर अगर इस इद बांध दें कि वह इतने से ज्यादा चीनी पैदा न कर सकें तो उससे भी हमारी समस्या इल न होगी.

शराब बन्दी अगर इस सममदारी के साथ करें तो उस से हमें बबट में घाटा नहीं होना चाहिये. बिंद् ही सैलानियों या सास सरकारी मुलाजिमों बरौरा के लिये छूट की शकल में भी कोई कमजारी हमारे शराब बन्दी के प्रोपाम में नहीं होनी चाहिये. शराब सब किसी के लिये कानून बन्द होनी चाहिये और उसके साथ समाज में हर तरह की शराब के पीने को बुरा सममा जाना चाहिये, चाहे कोई कम पिये और चाहे अधिक. डरते मिमकते शराब बन्दी करने से हमारी कठिनाइयां बढ़ जायंगी, जैसा कि आजकल कहीं कहीं देखने में भा रहा है.

#### विदेशी सिक्के

विदेशी सिक्कों के लोभ में ही इस देश में विदेशियों की जातिरवारी जरूरत से क्यादा करते हैं. अंग्रेजी मुहाबरा है कि सैरात घर से शुरू होनी चाहिये. मैं कहता हूँ कि कातिर-वारी भी वर से शहर होनी बाहिये. हम जो बिदेशियों की स्तिरदारी करते हैं उसकी जब में हमारा विदेशी सिक्कों का लोग है, और विदेशी खिक्के हमें केवल मिल मालिकों की पक्रत का सामान स्रीदने के लिये चाहियें. इनारे वर्षेट्र के बैसे विनेसा बर्रेश, इकारी देत की वरिया

و الله الرا مم باهر كي مدد كي سياري رهناك أور العر جيورں کی کہت کو سنجداری کے ساتھ والله سين كا دهنگ اب يهي مسولي أدمي كي فروردس م الله الله الله عم مهناتي اور بوعا ديناك اور يوس كه دام دين الله الله

عراب بلدى

ت الزاب بندی کے ساتھ ساتھ هميں خاص تارف تيار کرلے والس کر على فيان كا بهي بررا بربلده كردينا جاعثه ، إس كا لله هدين الله او اور چینی دار کے رس سے تیار کرنی چاہئے. تار سے هنین ایکی مرورت کا پیرا کو اور پیری چیکی مل معلی فد . گا ہوتے میں بھی هم کیلی کے سادھنیں کا فلط آپیوگ کرتے فَهُنَّ مَا مُن الْمُعَرِّ مِن المُعَكِّر مِوا أور يالي سے بنتي هـ ومين سے كوركي بيها هوتي هـ . إس لله كله كي زمين كو همين دوسري نصلهن ييدا كرني كے كام ميں لانا چاعلى . جو لوگ كله كى چیلی کی مارں سے انہوں روہائم کماتے میں وہ اِس کے لئے لانتها مع راضي ته موناي كه هم أسى زمين كا أيدوك ادعك سنجهداری کے سانع درسرے کاموں کے لئے کریں ، چینی کی ملیں کی پیداوار پر اگر هم حد بانده دین که وہ اِننے سے زیادہ چهلی پیدا نه کرسیس در اس سے بھی هماری سیسیا حل نه

ھراپ بندی اکر هم سنجیداری کے ساتھ کریں تو اُس سے همين بنوك مين كهانا لبين هونا چاهئم ، وديشي سهانيون يا خاص سرکاری مازموں وغیرہ کے لئے چھوٹ کی شکل میں بھی کرتے کیزوری ممارے شراب بندی کے پروگرام میں تبھی طوقی چاہلئے ، شواب سب کسی کے لئے قانوناً بلد عونی چانگہ اور أس كے ساتھ سمانے ميں هر طبح كى شراب كے يدنے كو برأ سبعها جاتا جادئم على كوئى كم يبئه اور چاھ ادمك . قرت جهجهكتي شرأب بندى كرني سے هماري كلينائياں بوء جائيتكي جيسا که اُچکل کهيں کهيں ديکھنے ميں آرها في ،

۔ وقیقی سکوں کے لوہ میں کی مم دیش میں وقیقیوں الله خاطره ارس خرورت سے زیادہ کرتے میں ، انکریزی معاورہ خاجارداؤی بھی گھر سے شروع ہولی چاملے، عم جو معمور کی خاطرداری کرتے میں آس کی بور میں معارا دوهی سکون کا لود ها اور ودیمی سکے همیں کیول مل اليوس عي حوورت كا سامان تخرون كا لله جاملين . الطيانة الالوامع الكوا توعيس سايدا والهواء عداوى رعل أكى يوفقها 

कार्कियां, हमारे सीयं श्यान कर इसकिये सजाकर रके जाते हैं कि विदेशी यांजी अधिक आवें. वह बात कोई बुरी बात नहीं भी, अगर हम पहले अपने लागों को काकी आराम यहुँचा सके हाते. पर यहाँ तीसरे दरजे में सफ्र करना आसाम की लिंक जाइन जैसी बहुत सी जगहों में ऐसा ही हैं जीसा जानवरों का ट्रकों में जद कर जाना. ऐसी स्रत में हमें 'एवर कंडीशान्क' गावियों की जकरत नहीं है. हमारे देश के यांत्रियों को माम्ली इन्सानों का सा आराम भी नहीं मिलता. हम बन बातों पर अपने साधन क्यों जाया करें जिलसे विदेशी यांजी यहां अधिक खिनें ? अएर हम विदेशी आत्रियों को वह सब आराम पहुंचाना चाहेंगे, जो वन्हें आपने अपने देशों में हासिल हैं. तो हमें विदेशों से ऐश आराम के सामान मंगाने पढ़ेंगे, और विदेशी यांजी भी हमारे यहाँ के अस्ली रहन सहन को ठीक ठीक न समक बारेंगे.

इसें बगर गाँव की जिन्दगी को बदाना है तो गाँव के बाजारों में धाधकतर गाँव की खेती की पैदाबार और गाँव के क्योग धन्दों की बनी चीजें ही बिकनी चाहिया इसके जिये जरूरी है कि गांव की जरूरत की चीजें अधिकतर गाँव के कारीगर ही तैयार करें और मिलों के कस माल का, जो गाँव में सस्ता विककर गाँव के धन्दों को धरबाद कर सकता है, गाँव में जाना चन्द कर दिया जावे. बिदेशी साँडों और विदेशी मुर्रों का गाँव में पहुँचाना कह देर के लिये लाभदायक हो सकता है, पर यह गाँव बालों की समस्याओं और कठिनाइयों का टिकाऊ हल नहीं है, टिकाऊ हल यह है कि हम साइन्सी खोजें करके और कजरबे करके ख़ुद अपने यहां की नसलों को बदावें और

सुबारें . मिलों की बनी जितनी चीजें गाँव के धन्दों से टक्कर क्षेती हैं भीर उन्हें नुक्तसान पहुँचाती हैं वह केवल तब ही तक गांव में जानी चाहियें जब तक कि गांव के उसी सरह के धन्दों में फिर से जान न पढ़ जावे. उसके कार किसी पूंजीपति को कारखाना खोलकर गांत्र के इस तरह के धन्दों को मिटाने का मौका नहीं दिया जाना चाहिये. सरकारी योजना का मसौदा तैयार करने क्षकों मे जो अपनी नीति बताई है वह इमारी इस बात के कालाफ है, उनकी नीवि है—"आजकल के ढंग की एक रेखी आर्थिक व्यवस्था क्रायम करना जिसमें बहुत सी पंजी क्रिसंड सरह की चीज तैयार की जा सकें." इस तरह की कि से ही सामाजवाद पैदा होता है, इससे सामाजवादी होना ( सोशक्षिस्ड पैडर्न ) तैयार नहीं हो सकता. हम में से हो सोस 'सर्वेदय' के उस्त के अनुसार मानव समाज का क कार्डियात्मक हांचा और आदमी आदमी की करावरी

همیں اگر گوں کی زندگی کو بوعانا ہے تو گؤں کے بازاروں میں ادھکتر گؤں کی کھیتی کی پیداوار اور گؤں کے آدیوگ دھندوں کی بنی چیزیں ھی بکنی چاھئیں . اِس کے ایک فروری ہے کہ گؤں کی فرورت کی چیزیں ادھکتر گؤں کے کتھے مال سے گؤں کے کاریگر ھی تیار کریں اور ملوں کے اُس مال کا چو گؤں میں سستا بک و گؤں کے دھندوں کو برباد کرسکتا ہے گؤں میں سستا بک و گؤں کے دھندوں کو برباد کرسکتا ہے گؤں میں چیزنچانا کچھ دیر کے لئے ابید دایک ھوسکتا مرفوں کا گؤں میں پیرنچانا کچھ دیر کے لئے ابید دایک ھوسکتا ہے، پر یہ گؤں والوں کی سسیاؤں اور کتھنائیوں کا تکاؤ حل نہیں ہے کہ ھم سائنسی کھوجیں کرکے اور سدھاریں ، تجربے کرکے خود اپنے یہاں کی نسلیں کو بوتھاریں اور سدھاریں ،

ماہر کی بنی جتنی چیزیں گؤں کے دھندوں سے تمر لیتی 
ھیں اور آنہیں نقصان پہونچاتی ھیں وہ کیبل تب ھی تک
گؤں میں جانی چاہئیں جب تک کہ گؤں کے آسی طرح کے
دھندوں میں پہر سے جان نے پر جارے ، اُس کے بعد کسی
پرنجی پتی کو آپنا کارخانہ کہواکر گؤں کے اِس طرح کے دھندوں
کو مثالے کا موقع نہیں دیا جانا چاہئے ، سرکاری پرجنا کا مسودہ
تیار کرنے والوں نے جو اپنی نیتی ہے۔"آچکل کے دھندی اِس بات
کے خلف ہے ، اُن کی نیتی ہے۔"آچکل کے دھنگ کی ایک
ایسی آرتیک ویستھا قایم کونا جس میں بہت سی پونجی سے
طرح طرح کی چیزیں تیار کی جاسکیں ،" اِس طرح کی تھتی
طرح طرح کی چیزیں تیار کی جاسکیں ،" اِس طرح کی تھتی
سے ھی سامراہواں پیدا ھونا ھے اِس سے ساچوادی دھائیجہ
( سرشلسک پہاڑی) تیار نہیں ھوسکٹ ، ھم میں سے جو
لرگ آنیورودی کے آمول کے آنومار مانو ممانے کا

का प्रमाण क्यार प्रथम प्रस्ते हैं कह कियो कह ही ऐसी कहा बोजना का साथ नहीं है सकते.

हम स्वराम्य के जिन असूलों का, और जिस अहिंसा और सवाई का दम भरते हैं उसके साथ भी इस योजना की यह नीति मेल नहीं खाती. इम दुनिया भर में शान्ति बाहते हैं तो अपने देश में इमें उसी आधार पर आर्थिक रचना करनी चाहिये. इमें अपने आदशों को ठीक ठीक तय करना चाहिये और उनके अनुसार ठीक ठीक सोचना और अमल करना चाहिये.

जो माज इमारे देश में पैदा हो वह एक खास अच्छी क्रिस्म का हो (स्टेन्डर्डाइजेशन ), माल के दर्जे भी तय हों (मेडिंग), वह सब ठीक है. पर इनके साथ इश्तहारवाजी पर सरकार की योक थाम जरूरी है, खासकर खाने पीने की वीजों और दवाबों के साथ इश्तहारों पर मुनासिव सरकारी महकमों की पूरी रोक थाम होनी चाहिये.

इमें अपनी बिदेशी तिजारत की भी ज्यान के साथ हान बीन करनी चाहिये. कबे लोहे, कबे मैंगेनीज, कबे बाक्साइट जैसी चीकों का देश से बाहर भेजना हमें बिल्कुल बन्द कर देना चाहिये. इस तरह के कबे मालों का ठीक ठीक उपयोग करके हम उन बड़े बढ़े धन्दों को खूब बढ़ा सकते हैं जो सरकार की तरफ से चलाए जावें 'जिन्हें पिनक सेक्टर' कहते हैं. हम अभी चाहे इसके लिये तच्यार न हो पर हमें इसे निगाह में रखना और जल्दी से जल्दी करना चाहिये. जैसा भी कोयला हमारे पास है उसे हमें अपने काम के लिये देश के अन्दर रखना चाहिये, ताकि मक से कम हमें बाहर से कोयला न मंगाना पड़े और बाहर से कोयला आना बन्द हो जाय. शुरू शुरू में इससे कुछ असुविधा हो सकती है. पर हम साइन्सी खोज से पूरा काम लें तो अपने ही कोयले से काफ़ी 'कैलरी' पैदा कर सकते हैं.

#### याने बाने के साधन

आने जाने और माल को लाने ले जाने के लिये हमें पानी के रास्ते बढ़ाने की तरफ अधिक ध्यान देना चाहिये. इसर, दक्षिन, पूरव और पिच्छम चारों तरफ जाने वाली नहतें का एक ऐसा जाल हमें पूर देना चाहिये जो देश के सब गांवों को एक दूसरे के साथ जोड़ दे. इससे आव-पाशी और पैदावार मी बढ़ेंगी. आने जाने का यह साधन बहुत सस्ता पड़ता है, और जब खेतों में काम नहीं रहता तो इससे झाशों को काम और रोजगार मिल जाता है.

#### मकान

इर कारकान के सकत्यों के रहने के क्रिये मकान पनावे और सकान देने की जिल्लेबाये कारकाने के सांसिकों الأستاني قبل كركا جامل هين ره كسى طرح هي أيمن يونها الأرجال أميلن ديم سكل .

م پئی شیل کے جن آمراس کا اور جس لفنسا اور سیافنسا اور سیائی کا در بهرتے دیں اُس کے ساتھ بھی اِس یوجفا کی یہ آئی میل نہیں کہاتی ۔ هم دنیا بهر میں شانتی چاعتے هیں تو اُنے دیش میں همیں اُسی آدھار پر آرتیک رچفا کرتی چاہئے اور چاہئے اور آئی کے افرسار تبیک تو آدرشوں کو تبیک ٹھیگ طے کرتا چاہئے اور آئی کے افرسار تبیک تو آدرشوں کو تبیک ٹھیگ کرتا چاہئے ۔

جو مال همارے دیھی میں پیدا هو وہ ایک خاص اچھی قسم کا هو ( اِستینڈرڈائیزیشن) مال کے درجے بھی طے هوں ( گریڈنگ ) یہ سب تبیک هے ، پر اِن کے ساتھ اشتہارہازی پو بھی سرکار کی روک تھام فروری هے خاصکر کھائے پھنے کی چھنووں اور دواؤں کے سب اشتہاروں پر مناسب سرکاری محکموں کی پوری روک تھام هوئی چاھئے ،

همیں اپنی ودیشی تجارت کی بھی دھیاں کے ساتھ بھاں ابھی کرنی چاطئے ، کچے لوھ کچے مینگینیو کچے باکسائٹ جیسی چیزرں کا دبھی سے باہر بھیجنا ھمیں بالتل بند کر دینا چاھئے ، اُس طرح کے کچے ماارس کا ٹھیک ٹھیک آپھرگے کر کے ہم اُن بڑے بڑے دھندرں کہ خوب بڑھا سکتے ھیں جو سرکار کی طرف سے چائے جاویں جمیس 'پبلک سیکٹر' کہتے ھیں ، ھم آبھی چاھے اِس کے لئے تیار نہ ھوں پر ھمیں اِسے نگاہ میں رکھنا اُبھی چاھے اِس کے لئے تیار نہ ھوں پر ھمیں اِسے نگاہ میں رکھنا اُبھی چاھے اِس کے لئے دیھی کے آندر رکھنا چاھئے' تاکہ کم اُسے ھمیں اپنے کام کے لئے دیھی کے آندر رکھنا چاھئے' تاکہ کم سے اسے میں اپنے کام کے لئے دیھی اور باھر سے کوئلے آنا بید ھو جائے ، شروع شروع میں اِس سے کچھ آسویدھا ھو سکتی بید ھو جائے ، شروع شروع میں اِس سے کچھ آسویدھا ھو سکتی گئے دیوں کوئلے سے گئی دیوری کے بیدا کر سکتے ھیں .

#### آنے خانے کے سادھن

آنے جانے اور مال کو لانے لہ جانے کے لئے همیں پائی کے راسیّہ بڑھانے کی طرف ادمک دھیاں دینا چاھئے ۔ آئر کی دکھی پرپ اور پنچہم چاروں طرف جانے والی تهروں کا ایک ایسا جال همیں پور دینا چاھئے جو دیش کے سب کلوں کو ایک دوسرے کے ساتھ جرز دیے ۔ اِس سے آبیائی اور پیداوار بھی بڑھینگی ، آئے نجانے کا یہ سادھن بہت سستا بڑتا ہے ' اور جب کھیتیں میں کام نہیں رہنا تو اِس سے لانھوں کو کام اور ورزگر مل جاتا ہے ۔

#### مكل

هو کارخانے کے مودوروں کے رہنے کے لئے سکالی، بنانے اور مکلی دینے کی زمتواری کارخانے کے میانیس कर होनी पाहिये, पाइ मालिक सरकार हो बीर पाई कोई पूँजीपित हों. मजदूरों बीर उनके बाल क्यों की तन्दुदस्ती, उनकी तालीम धीर उनकी बहबूदी का सब कार्च उसी उद्योग या उसी कारखाने पर पढ़ना चाहिये. जा मजदूर किसी कारखाने में काम करता है उसे पूरा हक है कि उसकी धीर उसके बाल बचां की जहरतों धीर उनकी हिकाजत का उस से काम लेने बाले पूरा पूरा प्रबन्ध करें.

#### तालीम

चौदह साल की उमर तक बुनियादी तालीम की जिम्मेबारी सरकार को अपने ऊपर लेनी चाहिये. यूनिव- किंटी की तालीम के लिये भी सब को सब सुविधाएं सरकार से मिलनी चाहियें. अलग अलग पेशों की तालीम और तकनीकी इंग की तालीम का प्रवन्ध लोगों को सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा या निजी इंग से करना चाहिये.

#### भोजन

खेती के काम को इस तरह बढ़ाना चाहिये कि उससे गांद बालों को जितना चाहिये उतना. उचित और शक्ति देने वाला भोजन मिल सके. गांव के लोगों में जिस कमी. कमजोरी और अयोग्यता की इम शिकायत करते हैं उस श्रम का एक बहुत बढ़ा कारण यह होता है कि बचपन में उन्हें ठीक तरह का श्रीर पेट भर भोजन नहीं मिल पाता. इसी से वह इमेशा के लिये कमजोर रह जाते हैं. इसलिये दूष, प्रंडे, फल, सब्जी, मछली जैसी चीजें जितनी हम अधिक पैदा करें उस पर सब से पहला हक गांव के बच्चों का होना चाहिये, उसके बाद यह चीजें शहर के बच्चों को मिलनी चाहियें. शहरों की जरूरत के लिये द्ध मामूलीं सौर पर गांव से नहीं आना चाहिये. गांव का द्ध गांव के बच्चों के लिये रहना चाहिये. और शहरों के लिये शहर बालों के धन से अलग गोशालाएं और डेयरियां होनी चाहियें जहां से शहर वालों को दूध मिले. इससे गांव के वच्चों का दूध उनसे छिनकर शहर नहीं आवेगा. भाम तौर पर गांव के लोगों की रारीकी उन्हें मजबूर कर देती है कि वह अपने बचों की जरूरत का दूध टकों के बदले में शहर वालों के हाथ लाकर बेच डालें. उनकी यह रारीबी दूर होनी चाहिये.

#### संगठन और व्यवस्था

करबे कमेटी ने यह सुमाया था कि गांव के उद्योग बन्दों को बढ़ाने के लिये एक अलग मिनिस्ट्री होनी आहिये को इसी काम को देखे. हमारे लाखों गांव और करोड़ों गांववालों की माली हालत को बेहतर बनाने के लिये बह बड़े महत्त्व का और जरूरी सुमाब था. अपनी هوری دولت کو مالک سرکار هو آور چاہے کوئی وولتھی مورمونوروں آور آن کے بال بھوں کی تندرستی آن کی رساور آن کی بہبردس کا سب خرج آسی آدیوگ یا آسی الے پو ایولا چاہئے میں کام کرتا سے پورا حق ہے کہ آس کی اور آس کے بال بھوں کی تیں اور آن کی حفاظت کا آس سے کام لینے والے پورا پورا مرکن ،

چودہ سال کی عمر تک بنیادی تعلیم کی زمعواری سرکار کو اُوپورلیٹی چاہئے۔ یونیورسٹی کی تعلیم کے لئے بھی سب کو سویدھائیں سرکار سے ملنی چاھیٹس ۔ الگ الگ پیشرں تعلیم اور تعلیکی ڈھنگ کی تعلیم کا چرہندھ لوگوں کو جنگ ساستھاؤں دوارا یا تجی ڈھنگ سے کرنا چاھئے ۔

کھیٹی کے کلم کو اِس طرح بوھاٹا چاھٹے کہ اُس سے گاؤں ے کو جتنا چاهئے اُتنا' اُچت اور شعتی دینے والا بھوجن مل ، کاؤں کے لوگوں میں جس کمی<sup>،</sup> کمزوری اور ایوگیٹا کی شکایت کرتے مدیں آس سب کا ایک بہت ہوا کارن یہ ہوتا کہ بھین میں آنیوں تھوک طرح کا اور پیٹ بھر بھوجن ي مل ياتا . أسي سے وہ هميشة كے لئے كمزور رہ جائے هيں . الله درده الديد بهل سبزي مجهلي جيسي چيزين ی هم ادهک پیدا کریں اس پر سب سے پہلا حق کاوں کے ں کا مونا چامئے' اُس کے بعد یہ چیزیں شہر کے بچوں کو۔ ، چاھئیں ، شہروں کی ضرورت کے لئے دردھ معبولی طور پر سے نہیں آنا چاعثہ . کازں کا دودھ گاؤں کے بچوں کے لئے چاھئے اور شہروں کے لئے شہروالیں کے دھن سے الگ گرشالائیں تیریاں هونی چاهیئی جہاں سے شہر والوں کو دودہ ملے۔ سے گاوں کے بیچوں کا دودہ أن سے جهن كر شهر تبهيں أويكا، طور پر گؤی کے لوگوں کی غریبی اُنھیں معجبور کو دیتی ہے رہ اپنے بھوں کی ضرورت کا دودھ ٹکیں کے بدلے میں شہر ے کے هانه لائر بیبے قالیں . اُن کی یه غریبی دور هوئی

#### ای اور ویوستها

کررے کمیٹی نے یہ سجھایا تھا کہ گاؤں کے آدیرک دھندوں رہانے کام رہائے کے لئے ایک آلک منسٹری عونی چاھٹے جو اِسی کام بیکھیے معارے قانوں گاؤں اور کروروں گاؤں والوں کی مالی سکھاؤے کے لیے بیکھی میٹو کا اور ضروری سجھاؤے ایکی بیکھی کی میٹو کے اور ضروری سجھاؤے ایکی کھیدٹائیں میٹو کے اپنی ضوروی کام کی جارف ہے۔

विश्वासी कि कि सामित के साम सम्मार नाम (क्यानिटी कि सामित्य) और राष्ट्रीय फैलाव नहा समार्टेनरान) के सप में, विदेशी एजेन्टों की महत् के सहारे इक अवृती और ककती दकती काशिशों हेश के सामने रखी जा रही हैं. इस तरह की काशिशों अधिकतर ज़ास खास चुने हुए इलाक़ों या केन्द्रों में की जा रही हैं. इन कोशिशों और योजनाओं से समय की बहरत पूरी नहीं हो सकती. एक तो सीखे हुए काम करने बालों की कमी है और दूसरे धन की भी बेहद कमी रहती है. इस काम में अगर खेती को और खेती से और गांव से सम्बन्ध रखने बाले सब उद्योग धन्दों को बढ़ाने और तरक्की देने का पूरा पूरा खयाल रखा जावे और इतने बढ़े काम के लिये काफ़ी धन लगाया जाय और काम करने वालों को ठीक ठीक अधिकार मिले हुए हों तो इक्ष ठीक काम हो सकता है.

एक योजना मिनिस्टी हमारे यहां मौजूद है. उसकें साथ एक अलग डिपटी मिनिस्टर होना चाहिये जो सब पहलुओं को ज्यान में रखकर इस काम को पूरा करे. उस डिपटी मिनिस्टर को पूरा अधिकार होना चाहिये कि जिन जिन सरकारी महकमों का इस काम से वास्ता पढ़ता है उन सब के इस तरह के कामों को मिलाकर ठीक तरह चला सके. समाज सेवकों का उस तरह का काम जैसा सरकारी मसीदे में बताया गया है केवल ऊपर से लीपा पोती और घोला है. इमें करना यह है कि गांव वालों की माली हालत को पूरी तरह मजबूत बना दें. यह काम अधिसले समाज सेवक नहीं कर सकते. यह पूरी जिन्मेवारी का काम है. सरकार को अपना पूरा जोर इस काम में लगाना चाडिये.

سعاری کی هے اب آخیو میں آخو سیاؤ کو سیاؤ کو سیاؤ کو سیاؤ کو سیاؤ کو سیاؤ کی سیائ آئیسائینشن ) اور راشائریہ پیباؤ ( فیشال آئیسائینشن ) کے روپ میں وریشی ایجنیاؤں کی مدد کے سیارے کچے انھوری اور رکتی رکتی کوششیں دیش کے سامنے رکھی جا رھی ہیں ایس طاح کی کوششیں انھکتر خاص خاص چنے ھوئے عقوں یا کیندروں میں کی جا رھی ھیں وران کوششوں اور یوجناؤں سے سے کی فرورت پوری فہیں ھو اسکتی وایک تو سیکھی ہوئے کام کرنے والی کی کمی ہے اور درسرے دھی کی بھی پیشد کمی رهتی ہے اور درسرے دھی کی بھی پیشد کمی رهتی ہے والی کی کمی ہے اور درسرے دھی کی بھی فوٹ سے سیندھ رکینے والی سے آدیوگ دھندوں کو برحانے اور فینے ترقی کا پیرا پرا پرا خیال رکھا جارے اور ایتے بڑے کام کے لئے فینے درقی کا پیرا پرا پرا خیال رکھا جارے اور ایتے بڑے کام کے لئے فینے درقی کا پیرا پرا پرا خیال رکھا جارے اور ایتے بڑے کام کے لئے فینے درقی کا پرا پرا پرا کی کی اوران کو تھیک تابیک ادعیکار گئی۔دھن لگایا جائے اور کام کرنے والی کو تھیک تابیک ادعیکار گئی۔دھن لگایا جائے اور کام کرنے والی کو تھیک تابیک ادعیکار گئی۔دھن لگایا جائے اور کام کرنے والی کو تھیک تابیک ادعیکار گئی۔دھن لگایا جائے اور کام کرنے والی کو تھیک تابیک ادعیکار

ایک یوجنا منستری همارے یہاں موجود هے اُس کے ساتھ ایک الگ تراتی منستر هونا چاعثے جو سب پہلرؤں کو دهیاں میں رکھ کر اِس کام کو پررا کرے ایس تراتی منستر کو پررا ادهیکار هونا چاهئے که جن جن سرکاری محکموں کا اِس کام سے واسطه پرتا هے اُن سب کے اِس طرح کے گلموں کو ملا کر ٹھیک طرح چلا سکے اسماج سیوکوں کا اِس طرح کا کام جیسا سرکاری مسودے میں بتایا گیا هے کیول اُرپر سے امیا پرتی اور دهوکا هے مسودے میں بتایا گیا هے کیول اُرپر سے امیا پرتی اور دهوکا هے همیں کرنایت هے که گاؤں وائوں کی مالی حالت کو پوری طرح مضبوط بنا دیوں ، یہ کام اُدھ سکے ساج سیوک نہیں کر سکتے ، یہ پرری زمتواری کا کام هے ، سرکار کو اپنا پورا زور اِس کام سیں لگانا چاھئے ،



## شانتی کا بجت اور جنگ کا بجت

اِس سم دنیا میں دو طرح کی کوششیں ساتھ ساتھ چل رھی ھیں ، ایک طرف کچھ لوگ دنیا کو جنگ سے بچانے ایک دوسرے پر وشواس بڑھانے اور دنیا کے سادھنوں کو کروڑوں جنتا کی بھٹٹی کے کاموں میں لگانے کی کوششوں میں ھیں ، دوسری طرف کچھ لوگ بار بار اوروں کو جنگ کی دھنکی دینے اوٹھواس اور نفرتوں کو بڑھانے اور جنگ کی تیاریوں میں اورس نوریوں خرچ کرنے میں لگے ھیں، سوویت روس میں اور امریکھ میں سن 7نا۔ 19ن6 کے جو نئے سالانے بجت تیار ھرئے ھیں میں سن 7نا۔ 19ن6 کے جو نئے سالانے بجت تیار ھرئے ھیں کی سے یہ بات اچھی طرح چیک آئیٹی ہے کہ کون کس کیشی میں ہے ،

سروبت روس میں جو نئے سال کا بجٹ بنا فے أسم أس دیش میں <sup>ود</sup> قالتی ہے تعلیری بجٹ'' کہا جارِها ہے اور بہت سے دوسرے دیشیں کے لوگ بھی آسے ایسا ھی سمجھتے ھیں ۔ بجث میں اگلے سال کا کل خرچ 56,960 کررو روبل رکھا گیا ہ . ایک روبل موٹ طور پر ایک رویٹے کے برابر ہوتا ہے . اِش کل رقم میں سے 10,250 کررز رزبل یمنی کل بحجے کا اتبارہ نیصدی سے کچے کم فہے اور ھالیاروں پر خرچ ھوگا ۔ پچیلے سال روس میں فوج کے اوپر جو خرچ ہوا تھا اکلے سال اُس سے 1,000 كرور روبل كم خرج كيا جائيكا . بجت كي باقى رقم اسے تعمیری کاموں میں خرچ کی جائیکی جن سے جنتا کا سم اور أن كي خوشحالي برق . اس مين لوكين كي سماجي ارر للمجرى ضرورتس كا خاص خيال ركها كيا هم. كهيتي كي ترقي پر مال کو لائے لیجائے کی ادھک سرویدہ ڈی پر' اُدیرگ دھندوں پڑا نئے مکانیں پر اور روشنی کے ادعک پربندھ پر 0ن7,72 اروز خربے کیا جاویگا ۔ اِس کے علوہ 10,970 کروڑ نئی آرتیک بوجنائی میں لگایا جاویگا . تعلیم پر استنس کے تحوریوں پر سناليس كالين أخوارس كسرت كورس جلنا كي للدرستي ك درسوره كليور أور يوره أور لفعت لوكين كى يعلقلون يو سل س 16,150 كرو غري مرة.

#### शान्ति का बजट भीर जंग का बजट

इस समय दुनिया में दो तरह की कोंशिशों साथ साथ जल रही हैं, एक तरफ बुख लोग दुनिया को जंग से बचाने, एक दूसरे पर विश्वास बढ़ाने और दुनिया के साधनों को करोड़ों जनता की मलाई के कामों में लगाने की कोशिशों में हैं, दूसरी तरफ बुख लोग बार बार औरों को जंग की धमकी देने, अविश्वास और नफरतों को बढ़ाने और जंग की तैयारियों में खरवों खर्च करने में लगे हैं, सोबियत रूस में और खमरीका में सन् 1956—57 के जो नए सालाना बजट तैयार हुए हैं उन से यह बात खब्खी तरह बमक उठती है कि कीन किस काशिश में है.

सोबियत कस में जो नए साल का बजट बना है इसे इस देश में "शान्तिमय तामीरी बजट" कहा जा रहा है और बहुत से दूसरे देशों के लोग भी उसे ऐसा ही सममते हैं. बजट में अगले साल का कुल खर्च 56,960 करोड़ रुबुल रखा गया है. एक रुबुल मोटे तीर पर एक इपये के बराबर होता है. इस कल रक्तम में से 10,250 करोड़ रुयुल यानी कुल बजट का अठारह कीसदी से कुछ कम फीज और हथियारों पर खचे होगा. पिछले साल इस्स में कीज के ऊपर जो खर्च हुआ या अगले साल उस से 1,000 करांद रुबुल कम खूर्च किया जायगा. बजट की बाक़ी रक्तम ऐसे तामीरी कामों में खुर्च की जायगी जिन से जनता का सुख और उनकी खुराहाली बढ़े इसमें लोंगों की समाजी और कलचरी जरूरतों का खास स्याल रखा गया है. खेती की तरक्की पर माल को लाने े बोजाने की अधिक सुविधाओं पर, उद्योग धन्दों पर, नए मकानों पर और रोशनी के अधिक प्रबन्ध पर 23,730 करोड़ खर्च किया ।जावेगा. इसके अलावा 10,9/0 करोड़ नई आर्थिक योजनाओं में लगाया जावेगा. तालीम बर साइस के तजरवों पर, पुस्तकालयों, कितावों, अखवारों, असरतवरों, जनता की तन्दुक्ती के दूसरे कामों और और अशक सीगों की पेनरानों पर साल में 16,180 क्षेत्र सच होता.

वन अवस्थित के सुकारते में जाती जात है। की वार्षिक केनति पर 2,000 करोड़ कीर शिक्षा और इसपर के बामों पर 1,490 करोड़ अधिक सूर्व किया आहे-गा. कीज के सूर्व से जो 1,000 करोड़ स्वतः वचाया गया है यह सब जनता के मते के इन्हां कामों में सूर्व होगा.

की जा क्यें को घटाने और ताबीरी कामों के खुर्च को बढ़ाने से सावियत रूस का कख साक दिखाई देता है, विद्वाल को मुकाबले में सावियत रूस ने अपनी कीज में भी 6,40,000 आदमी कम कर दिये हैं. यह सब मानव शिक उस और से इटाकर तामीरी कामों में लगा दी गई है. इससे पहले अपने देश से बाहर रूस का केवल एक कीजी अड़ा था और वह किनलैन्ड के पास पोर्क कलाउद नाम का जल सेना का अड़ा था. सावियत रूस ने अब अपना सब कारवार वहां से उठा लिया और वह जगह किनलैन्ड को वापिस दे दी.

दूसरी तरफ अब इस 1956-57 के अमरीकी बजट पर एक सरसरी नजर डालें. मे जीडेन्ट आइजनहावर ने अमरीकी कांमेंस के सामने अपने इस बजट को जुद "ठंडी जंग और इथियारों की दौड़ का बजट" कहा है. दुनिया के दूसरे लोग भी इस बजट का इसी तरह देखते हैं. इल साल का ख़बे 6,590 कराड़ डालर रखा गया है. एक डालर बराबर लगभग चार ठपये के है. इसमें से 4,240 करोड़ यानी इल बजट के चौंसठ फीसदी से इड़ जियादा हथियारों और फीज पर ख़बे किया जावेगा. की जी ख़बे कम करने के बजाय पिछले साल के मुकाबले में 100 करोड़ डालर बढ़ा दिया गया हैं.

प्रेजीडेन्ट आइजानहावर ने अपने भाषणा में कहा है कि अगले साल अमरीकी फीज की तादाद बढ़ाई जायनी और पेटम बम और हाइड़ोजिन बम जैसे हिश्यारों की तैयारी पर और ज्यादा रक्षम खने की जायगी. अमरीकी फीज में फिलाहाल 24,000 आदमी बढ़ाए जांयगे जिससे अमरीकी फीज की संख्या 28,38,000 तक पहुँच जायगी. 630 करोड़ डालर इस तरह के नए हवाई जहाजों के बनावे पर खार्च किये जावेंगे जो आजकल के हवाई जहाजों के बनावे पर खार्च किये जावेंगे जो आजकल के हवाई जहाजों के सकावले में अधिक भारी भारी बम लेकर चल सकें. 430 करोड़ डालर दिक्लन कोरिया, पाकिस्तान और टरकी जैसे देशों और ज्यांग काई रोक जैसे लागों को हथियारों की सब्द बेने पर खार्च किये जावेंगे. यह रक्षम भी पिछले सब्द बेने पर खार्च किये जावेंगे. यह रक्षम भी पिछले सब्द की इसी तरह की रक्षम से 10 करोड़ डालर आध्रक है.

इस काट से अमरीकी सरकार की नीवत और उसकी निरेटी जीवि का बाक पता चलता है. हविकारों और कीज سے گاہ 1908 کے معالے میں آگے سال دیاتی کی آرافیکہ اور 2000 کے آرافیکہ آئی ہے۔ اور 2000 کے آرافیکہ آئی ہے۔ اور 2000 کے اور 200

قوچی خرچ کو گھالئے اور تعدیری کا بن کے خرچ کو بڑھائے میں موریت روس کا رم صاف دکھائی دیتا ہے ۔ پنچیلے سال کے مطابق میں سرویت روس نے اپنی نوج میں بھی 6,40,000 آور سے مقاار آئیمی کم کردیئے میں ، یہ سب ماتو شکتی اُس اُور سے مقاار تعدیری کاموں میں اگادی گئی ہے ۔ اِس سے پہلے اپنے دیھی سے بھر روس کا کیول ایک نوجی آڈا تھا اور وہ فائینڈ کے پاس پورک کاون نام کا جل سینا کا اُڈا تھا ، سوویت روس نے آپ پیل این اور وہ جکہ فائینڈ کے راپس ہونے ،

درسری طرف آب هم 57 - 1956 کے آمریکی بھی پر ایک سرسری نظر قالیں۔ پریوندینٹ آئوں عاور نے آمریکی کھٹریس کے سامنے آپنے اِس بجٹ کو خود ''ٹینڈی جنگ اور کھٹیاروں کی درو کا بجٹ' دیا ہے۔ دنیا کے درسرے اوگ بھی اِس بجٹ کو اِس مال کا خرچ 6,590 کورڈ قالو رہا گیا ہے۔ ایک قالو بوابو لگ بھگ چار وریئے کے ہے۔ اِس میں سے 4,240 نروز یمنی کل بجب کے چونسٹو کے ہونسٹو بھی خرچ کیا جاویگا ۔

انوجی خرچ کم کرنے کے بجائے بچھلے سال کے مقابلے میں 100 لورڈ قالو بڑھا دیا گیا ہے .

پربوزیدیات آئزن هارر نے اپنے بھاش میں کیا ہے کہ آگئے اس امریکی فوج کی تعداد بڑھائی جائیکی اور ایتم ہم اور بالذروجی ہم جیسے ھتیاروں کی تیاری پر اور زیادہ رقم خرج کی ہائیکی ۔ امریکی فوج میں دی الحال 24000 آدمی بڑھائے ہائیکی جس سے امریکی فوج کی سنکییا (2400,000 تک ہوائی جہازوں نے بینانے پر خرج کیئے جاریکے جو آجکل کے ہوائی جہازوں نے بینانے پر خرج کیئے جاریکے جو آجکل کے ہوائی جہازوں نے قائے میں ادھک بھاری بھاری بھاری ہم لیکر چل سکیں ۔ 400 کروز الو دکھی کوریا پاکستان اور ڈرئی جیسے دیشوں اور چھانگ نے شک جیسے دیشوں کی رقم سے 10 نے آبار لیمک بھی پیچھلے سال دی اِسی طرح کی رقم سے 10 نے آبار لیمک بھی بحقیلے سال دی اِسی طرح کی رقم سے 10 نے آبار لیمک بھی ۔

ایس بجت در امریکی سرکار کی نیت اور اس کی بھی نیتی کا صاف باته جانا ہے . هایاروں اور اسے

171

76 \_

ر إس برا حد حديد بيرا برق ل ال أبل عارف تبايم الليور بدره كے بخرج كا كالے كال على أور دوسرى طرف أمريكى جلكا ير وعسرو كا يوجه بوعة ديا كوا هم لوكس كي تلدرستي عام تعليم أور أن ساملهك كامون ير خلكا عام جنتا سے خاص سمبلدھ ف كل بهت کا چار نیصفی سے کم خرچ کیا جائیگا. کسانس کو جو طرح طرح ،کی مدی اِس سال دی جانی تھی اُس میں 25 کروڑ قالر كم كرديث كله هيل . شخصى إنكم ثبكس 160 كرور والو بوها دیا گیا ہے۔ اِنکم ٹیکس کی کل آمدنی آب رهاں سال میں 3,500 كورز دالو هوگى .

. دونوں دیشوں کے بجمعہ کی یہ کچھ موتی موتی باتیں ھیں ۔ اِن سے ظاہر ہے کہ جہاں تک دنیا کے اس کا سمبندھ هے دونیں دیشرں کی نکاهیں دو طرف هیں . روس جہاں تک ہن بڑے دنیا کو جنگ سے بچانا چاھٹا ہے' دونوں دیشوں کے بيبج شائتي چاهتا هے اور اپنے بہاں كى عام جنتا كو أدهك سكى ارر ادهک خوشحال بلالے میں اپنی ساری شکتی خرچ کرنا چاهٹا ھے ، درسری طرف امریعہ کی آجال کی سرکار اپنی فوجی شکتی کو ادهک سادهک برها کرادوسرے دیشوں میں ترز پھرز کر کے کچھ کو دھی اور ھتیاروں کا لائچ دیکر اور کچھ کو جنگ کی دھمکی دیمرا اور اگر ضرورت پڑے اور موقع مل سکے تو ایک کو دوسرے سے اوا کر اپنے اثر اور اپنی دھاک کو بڑھاتا چاھتی ہے ، پہلا راسته دنیا بهر کے لئے اس اور سلامتی کا راسته هے دوسوا راسته دنیا کے الے جنگ اور بربادی کا راسته کے ،

ـــادر لال

## آئزن ھاور کے نام بلگانی کا پتر

23 جنوری سن 1956 کو سوویت روس کے پردھان منتری بلگائن کے امریکہ کے پریزیڈنٹ آئزن ھاور کو ایک خط لکھا جس میں اِنہوں نے امریکھ کے دریزیڈنٹ کو سجھھایا که کم سے کم بیس پرس کے لئے امریکہ اور روس کی سرکاروں میں دوستی أور مل كے كلم كرنے كا سمجهوته هوجائے تاكه ايك دوسرے پر وعُواس يبدأ هو آگے كو ميل ملاپ كى راهيں كيلس أور وشرشائتی کی ٹیویں پانی هوسکیں ،

ا اس سلدر اور لمبع پتر میں پردھان منتری بلگانی فے دکیایا ہے که دنیا کے اس کو تاہم رکھنے کی سب سے بڑی وسمواری اس جمع المريكة اور روس ير هه . اور اكر يه دوتون أيس منهن اس سے پھلے کا فیصلہ کرلیں تو ساری دنیا جاگ کے خطرے سا TOWN OF THE PARTY OF

क्षा को हर अर्थ को पूरा करते के लिये एक तरक केबीस, कलचर बरीरा के सार्च कम किये गए हैं और दूसरी बरफ अमरीकी जनता पर टैक्सों का बोम बढ़ा दिया गया 🐍 क्षोगों की वन्द्रवस्ती, भाग तालीम और वन सामाजिक कामीं पर जिनका जाम जनता से खास सम्बन्ध है इल बजद का चार कीसदी से कम खर्च किया जायगा. किसानों को जो तरह तरह की मदद इस साल दी जाती थी उसमें 25 करोड़ डालर कम कर दिये गए हैं. शखसी इनकम टैन्स 150 करोड़ डालर बढ़ा दिया गया है. इनकम टेक्स की क्रम श्रामवनी अब वहां साल में 3,500 करोड़ डालर होगी.

् दोनों देशों के बजट की यह कुछ मोटी मोटी बातें हैं. इनसे चाहिर है कि जहां तक दुनिया के अमन का सम्बन्ध है दोनों देशों की निगाहें दो तरफ हैं. इस जहां तक बन पदे दुनिया को जंग से बचाना चाहता है, देशों देशों के बीच शान्ति चाहता है और अपने यहां की आम जनता को अधिक सुली और अधिक खुराहाल बनाने में अपनी सारी शांक खर्च करना चाहता है. दूसरी तरफ अमरीका की बाजकल की सरकार अपनी फौजी शक्ति को अधिक से अधिक बढ़ाकर, दूसरे देशों में तोड़ कोड़ करके. क्रक को धन और हथियारों का लालच देकर और कुछ को जंग की धमकी देकर, और अगर जरूरत पढ़े और मीक्षा मिल सके तो एक का दूसरे से लड़ाकर अपने असर और अपनी माक को बढ़ाना चाहती है. पहला रास्ता दुनिया भर के किये अमन और सलामती का राखा है. दूसरा रास्ता डॉनया के लिये जंग और बरबादी का रास्ता है.

सन्दरलाज

## आइजनहावर के नाम बुजगानिन का पत्र

28 जनवरी सन् 1956 को सोवियत रूस के प्रधान ंसंत्री बुलगानिन ने अमरीका के त्रेजीडेन्ट आइजनहावर को एक सत लिखा जिसमें उन्होंने अमरीका के प्रेजीहेन्ट को सकाया कि कम से कम बीस बरस के लिये अमरीका और इस की सरकारों में दोस्ती और मिलके काम करने का सममीता हो जाय ताकि एक दूसरे पर विश्वास पैदा हो. कारी को मेल मिलाप की राहें खुलें और विश्व शान्ति की तीवें वक्की हो सकें.

इस सम्बर और लम्बे पत्र में प्रधान मंत्री बुलगानिन ने विकाया है कि दुनिया के अमन को क्रायम रखने की सब के बड़ी जिम्मेबारी इस समय अमरीका और रूस पर है. और सगर यह दोनों आपस में अमन से रहने का जैसला हर में ही सारी दुरिया जंग के सतरे से एक सकती है.

हन्द्रिक के हैं कि क्या पहिला भी समरीका और क्या मितकर काम कर चुके हैं. बेड़े ही धव भी अगर वह एक इसरे को समय जेने की कोशिश करें और एक दूसरे की बाबादी की इक्कत करें तो दुनिया जंग के खतरे से बच सकती है.

उन्होंने विसाया है कि अमरीका और रूस में कोई बास करड़ा नहीं है, न कहीं दोनों की सरहरें भिसती हैं और न किसी इसाके को अमरीका अपना और रूस अपना कहता है

इस ख़त में श्री खुलनानिन ने प्रेषीडेन्ट आइषनहावर हो उनके जनीवा के यह शब्द याद दिलाए हैं:—''अमरीका हे लोग, सोवियत रूस के लोगों के साथ दोस्ती करना बाहते हैं. दोनों देशों के लोगों में कोई क़ुदरती करक नहीं है, न किसी इलाके का मगड़ा है, न कोई तिजारती लाग बाट है. पिछले इतिहास में हमारे देशों के लोग हमेसा एक हसरे के साथ अमन से रहे हैं."

भी बुलगानिन ने याद दिलाया है कि पिछले दोनों महायुद्धों में धमरीका धीर रूप एक दूसरे के साथी रहे हैं धीर मिलकर जरमनी से लड़े हैं. उन जंगों में धमरीका के नीजवानों धीर रूप के नीजवानों का खून दुनिया की धाजादी की रक्षा के लिये एक ही मैदानों में साथ साथ वहा है.

डन्होंने इस बात पर दुख प्रगट किया है कि दूसरी जंग के बाद दोनों देशों में खामखाह तनाव पैदा हो गया जिस से दोनों को जुकसान है और सारी दुनिया का अमन ख़तरे में है.

उन्होंने यह भी दिखलाया है कि अमरीका और रूस में अलग अलग तरह की राजकाजी, माली और समाजी व्यवस्था होने के कारण कोई वजह नहीं कि दोनों मिलकर प्रेम से न रह सकें और आपस में इस तरह के तिजारती और कलबरी सम्बन्ध न रख सकें जिन से दानों को लाम हो.

उन्होंने स्वीकार किया है कि ह्थियार बन्दी के सवाल पर, जरमनी के सवाल पर और पूर्वी परिशया के सवालों पर दोनों देशों की रायों में फरफ़ भी है. पर यदि एक बार अमरीका और रूस में सुलह से रहने का सममीवा हो जाय वो सब सवालों के हल की राहें खुल सकती हैं. अगर इन दोनों में इस तरह का सममीवा न हुआ तो दोनों के लिये और दुनिया के लिये खुलरा भी जबरवस्त है. भी बुलगातिन ने यहां पर पेटम बम और हाइडाजिन बम से दुनिया की जो खुतरा है उसे द्रशासा है और लिखा है। के आज हर देश का बहु कुर्ज है कि अमन की वाकरों को सजबूत النہوں کے قبا کے کہ اِس سے پہلے بھی انٹریکٹ اور روس ملکو کرچانے میں ، ریسے می اب بھی اگر وہ آیک دوسرے کو معبے لینے کی کہشمی کریں اور آیک دوسرے کی آزادی کی بعد کریں تو دنیا جنگ کے خطرے سے بچے سسکتی ہے ،

انہوں نے دکھایا ہے کہ امریکہ اور روس میں کیٹی شاص بھتوا نہیں ہے تہ کہیں دونوں کی سرحدیں ملتی ہیں اور نہ سی طلقے کو امریکہ اپنا اور روس اپنا کہتا ہے۔

اس خط میں شرق بلکائی نے پریویڈنٹ آئوں ھارد کو کی جلیوا کے یہ شرد یاد دلائے میں ہسالامریکہ کے لوگ نوریٹ روس کے لوگرس کے ساتھ دوستی کرنا چاہتے ہیں ، بوئیں دیھوں کے لوگرں میں کرنی قدرتی فرق نہیں ہے کہ سی طاقے کا جبکوا ہے نہ کوئی تحیارتی دگ ڈاٹ ہے ، پچیلے لیاس میں همارے دونوں دیشوں کے لوگ همیشہ ایک دوسرے لیاس میں همارے دونوں دیشوں کے لوگ همیشہ ایک دوسرے لیاتہ آمن سے رہے ہیں ۔"

شرمی بلکائی نے یاد دلایا ہے تم پچپلے دونوں مہایدھوں میں امریکہ اور روس ایک دوسرے کے ساتھی رہے میں اور ملکو ہوسنی سے لڑے میں امریکہ کے ٹوجوائوں ور روس کے ٹوجوائوں کا خون دنیا کی آزادی کی رکھا کے لئے ایک بھی میدائوں میں ساتھ ساتھ بہا ہے .

انہوں نے اِس بات پر دکھ پرگٹ کیا ہے کہ دوسری جنگ کے بعد دونوں دیشوں میں خواہ سخواہ تناؤ پیدا ہوگیا جس سے دونوں کو تقصان ہے اور ساری دنیا کا اُس خطرے میں ہے۔

آنہیں نے یہ بھی دکھالیا ہے کہ آمریکہ اور روس میں آلگ الگ طرح طرح کی راجکاچی' مالی آور سماجی ویوستھا ہوئے کے کارن کوٹی وجہ نہیں که دونوں ملکو پریم سے تم رہ سکیں اور آپس میں اِس طرح کے تجارتی اور کلتچری سمبندھ نے رہ سکیں جن سے دونوں کو لابھ ہو۔

آنہوں نے سوئیکار کیا ہے کہ متھار بندی کےسوال پر' جرمنی کے سوال پر اور پورسی ایشیا کے سوالی پر دونوں دیشوں کی رایوں میں درق بھی ہے ۔ پر یدی ایک یار امویک اور روس میں ملم سے رمانے کا سمجھوته ہو جائے تو سب سوالوں کے حل کی رامیں دیلستی میں اگر این دونوں میں اِس طرح کا سمجھوته نے ہوا تو جونوں کے نئے اور دنیا کے نئے خطرہ بھی زبردہ سے گئے ۔ شری بلکانی نے یہاں پر ایتم بم اور ماتدروجوں بم سے دنیا کو جو خطرہ ہے اس مرتبایا ہے اور دیا ہے کہ آج دیدی دیدی کے اس دیدی کی طاقتیں کو مشہوط ہو دیدی کا یہ نوش ہے کہ اُس دیدی کی طاقتیں کو مشہوط

के बसकों के बतुसार समह से और आपसी बात बीत से डी किया जाने.

उन्होंने इस खत में दिखाया है कि हथियारों की दौड़ में दोनों का कितना नुक्रसान है और इस दौड़ को बन्द कर बेने से बोनों देशों की जनता का कितना काम है. जो वकादस्त राकि इस समय लड़ाई की तैयारियों में सर्व हो बरी है बसे फिर हुनिया की जनता की ख़ुशहाली के बढ़ाने में सर्च किया जा सकता है.

भी बुलगानिन ने जिला है कि अमरीका और रूस में बोसी का सममौता इस समय दुनिया की सब से बड़ी बसरत है, और यह बराबरी, एक दूसरे की आजादी की इक्बत और एक दूसरे के अन्द्रती मामलों में दखल न देने के उसुकों पर और इस बात पर ही हो सकता है कि जितने अन्तर्राष्ट्रीय मगदे रह गए हैं उन्हें जंग से तय करने की कोरिशा न करके संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर के चतुसार मुलह से ही तय किया जावे.

भी बुलगानिन ने लिखा है कि दोनों देशों में माली, विजारती, कलवरी और साइंसी लेन देन भी बढ़ना चाहिये किया से बोनों को लाभ हो.

श्री बुलगानिन ने इस पत्र के साथ एक आरजी मुलह-सामे का मसीदा भेजा है जिसमें इसी बात पर जोर दिया गया है कि बराबरी और दोनों के फायदे के उसूल पर दोनों मेंकलपरी और तिजारती मेल जोल बदाया जावे और कम से कम बीस बरस के लिये दोनों यह तय कर लें कि एक इसरे से ज़बेंगे नहीं और जो भी आपसी मगढ़े रह गए हैं बह सलह और बात बीत से ही तय करेंगे.

इसमें सन्देह नहीं कि प्रधान मंत्री बुलगानिन का पत्र भ्रन्दर और साफ है. पर शायद अमरीका के जो पूँजीपि अरबों और सरबों सालाना हथियारों की तैयारी से कमा रहे हैं, या जिनके बढ़े बढ़े कारखाने दूसरे देशों के कच्चे साल और दूर दूर की मन्डियों के सहारे ही चल रहे हैं, इनके गसे से दुनिया के भले की यह बात आसानी से नहीं कतर रही है. फिर भी हमें विश्वास है कि अगरीका की जनता और अमरीका के शासक अंग के खतरों को अच्छी क्टा समस्र रहे हैं. किसी देश की जनता जंग नहीं चाहती. बुद्धें विश्वास है कि थाड़ी बहुत देर भने ही क्षेत्रे, अमरीका की, इस को और सारी दुनिया को जंग को इमेशा के लिये शक्तिया से सतम कर देने का पत्रका कैसला करना ही Tivil.

कर और बारच के क्षत्र मार्की का कैसला संयुक्त राष्ट्र संय ع أمولون في الوسال فلنع عد أور أيسى بات جدع مد هي يا جارك .

> أنيوں نے اِس خط میں دکیایا ہے کہ متیاروں کی دور میں ورنبن کا کتنا فتصان کے اور اِس دور کو باد کر دیئے سے دوئوں ييش كي جنتا كا كتنا الله هـ . جو زبردست شكتي أس سي نوائی کی تعامیر میں خرج هو رهی هے أسه يمر دنيا كى جلتا ى خرفحالي كے برهائے ميں خرچ كيا جا سكتا ھے.

> شہم بالثانین نے لکھا ہے کہ اُمریکہ اُور روس میں دوستی کا سبجهرته إس سم دنها كي سب مه برى ضرورت هـ؛ أور يه برابری ایک دوسرے کی آزادی کی عزت اور ایک دوسرے کے اندرونی معاملیں میں دخل نه دینے کے اُصولیں یو اور اِس باس پر هي هو ساتا ها كه جاني اندر أشاريه جهارت ره كان میں اُنہیں جنگ سے طے کرنے کی کوشش ثه کر کے سلیکت راشتر سنکے کے چارٹر کے انوسار صلح سے ھی بلے کیا جارے ،

> شرق بلگائن نے لکھا ہے که دونیں دیشوں میں مالی ً تجارتی کلتجری أور سائلسی لین دین بھی بوهنا چاهلہ جس سے دولوں کو لایہ اھو ۔

شری بلگائی نے اس پتر کے ساتھ ایک عارضی صلحنامہ کا مسودة بهنجا هم جس مين إسىبات پر زور دياگيا هم كه برأبري اور دوئیں کے فایدے کے اُصول پر دونیں میں کلمچوں اور تجارتی میل جول بوهایا جارے اور کم سے کم بیس برس کے لله دونوں یہ طے کو لیس که ایک دوسرے سے لوینگے نہیں اور جو بھی آپسی جھکوے رہ گئے ھیں وہ ملع اور بات چیت ہے۔ هي طر کريائے .

اِس میں سندیہ نہیں که پردهای منتری بلگانی کا پتر ملدر اور صاف ہے ، در شاہد امریک کے جو پونجی پتی آریوں اور کوربوں ساقت متیاروں کی تیاری سے کیا رقے میں یا جن کے ہے ہوے کارشائے دوسرے دیشیں کے کیے مال اور دور دور کی منتیس کے سہارے هی چل رہے هیں' اُن کے کلے سے دنیا کے بیلے كى يه بات أسانى سے فہيں أثررهي هے . پهر يعي هميں وشواس ھے که اسریعہ کی جفتا اور اسریعہ کے شاسک جنگ کے خطروں كو أچهى طرح سمجه ره هيس . كسى ديش كى جندا جنگ نبدن بهامتی ، همیں رشواس فے که تبروی بہت دیر بطے هی اکو امروات کو و اور ساری دانیا کو جنگ کو هموده کے الد دلها الله خالم كو ديل كا يكا نصله كرانا هي هرا.

वक वन

गाई सुन्दरकाल जी !

आपका पर्सराज राजकुमारी असुतकीर के देहती बाले व्याक्यान पर पढ़ने में आया. यह तो मानना ही पढ़ेगा कि हर सिसटम में कुछ न कुछ अच्छाइयां हैं. मगर किसी मिनिस्टर से यह आशा नहीं की जा सकती कि हरेक की हर समय अच्छाइयां ही दिखाया

यों तो मैं अपना ही एक केस बताता हूँ. मैं कोई 12 साल का या जब युक्ते लमवैगो और बुखार आया. कई महीने यह दुर्व और बुखार चला. रोज सिविल सरजन ओजायन और कई देसी डाक्टर आते ये और उस सस्ते जमाने में बाइस रुपये रोज कीस उन्हें दी जाती थी. कोई कायदा न हुआ. हमारे घर के एक मित्र ने मेरी माता से कहा कि सदारा मियाँ जर्राह के पास कोई दवा है जो कायदा करेगी. मेरे चाचा की आज्ञा लेकर जर्राह को बुलाया गया. उसने कहा 6 दिन में अच्छा हो जावेगा. उसे इजाजत मिलने पर उसने अपती मैली थैली से दवा निकास कर मेरी जांच पर मली. बाकई सातवें दिन न बुखार था, न दुर्व. उसे 10) इनाम देकर रुखसत किया गया और वह .खुरा होगया.

मिनिस्टरों को कहां इतनी फ़ुरसत कि इन छुटमय्यों की करामात को देखें और उसका बखान करें. यही क्या कम है कि बनपर रोक न लगाई जावे.

--मोहन लाल नेहरू.

ایک یعر

اللي سنور الل جي ا

آپ کا اعتراض راجکماری امرت کور کے دھلی والے وہاکھواں ر پڑھانے میں آیا ، یہ تو ماندا ھی پڑیکا کہ ھر سستم میں چھ نے کچھ اچھائیاں ھیں ، مگر کسی منستر سے یہ آشا نہیں یہ جاسکتی کہ ھر ایک کی ھر سے اچھائیاں ھی دکھایا کرنے ،

یوں تو میں اپنا ھی ایک کیس باتا ھوں ، میں کوئی رہ سال کا تھا جب مجھے لنبیکو اور بخار آیا ، کئی مہینے یہ رد اور بخار چلا ، روز سول سرجن آوبراین اور کئی دیسی کھر آتے تھے اور اس سستے زمانے میں بائیس روپعہ روز فیس میں فیجاتی تھی ، کوئی فائدہ نہ ہوا ، ھمارے گھر کے ایک نو نے میری ماتا سے کہا که سدارا میاں جراح کے پاس کوئی را ہے جو فائدہ کریکی ، میرے چاچا کی آگیا لیکر جراح کو با گیا ، اُس نے کہا چھ دن میں اچھا ہوجاویکا ، اُسے اِجازت اِجازت کے پر اُس نے کہا چھ دن میں اچھا ہوجاویکا ، اُسے اِجازت میلی تھیلی سے درا نکال کر میری جانکھ میلی ، واقعی ساتویں دین نے بخار تھا تہ درد ، آسے دس میں ، واقعی ساتویں دین نے بخار تھا تہ درد ، آسے دس میں اور وہ خوش ہوگیا ،

۔ منسٹروں کو کہاں اِتنی نرصت که اِن چھٹ بھٹیوں کی اُمات کو دیکھیں اور اُس کا بکھان کریں ، یہی کیا کم ہے که اِی پر روگ نہ لگائی جارہے ،

**......وهن لأل ثيرو** .

| The same of the sa | A STATE OF THE STA | ile i | (a, V) |         |   |  |
|--|--|-------|--------|---------|---|--|
| गीरा-पा कि   | काक्ष हिन्दा वे है.  | . "   | W 186  | 37      | ه ملی مور میں ،                                     |  |
| नाम कितान  | संसक   |       | कृति   |         | طيديا   | U PP   |
| 1. शेर-बो-शायरी  | भी भयोभ्या प्रसाद<br>गोयलीय  | 8     | 0      | 0       | شری آیودهها پرماد<br>گوئلیه                         | 1. شير و فالري   |
| 2. शेर-को-सुखन   | <b>?</b>   | 8     | 0      | 0       | . 25  | 2. فغر وستقن   |
| 3. गहरे पानी पैठ   | *9   | 2     | 8      | 0       | 91  | 3. گهری پاتی پهته  |
| 4. इमारे जाराज्य   | श्री वनारसीदास<br>चतुर्वेदी  | 3     | 0      | 0       | شری بلارسی داس<br>چگرویدی                           | 4. هماري آرادهيه   |
| <b>5. संस्मरण</b>  | 91   | 3     | 0      | 0       | 99  | 5- سلسمرن  |
| 8. दो इकार वर्ष पुरानी<br>कहानियां   | श्री जगदीशचन्द्र जैन   | 3     | 0      | 0       | غري جگديش جلدر                                      | 8. هو هؤار ورهی عرائی<br>کهالهان   |
| 7. ज्ञान गंगा  | भी नारायया साद जैन   | 6     | 0      | 0       | هري تارائي پرساد جهن                                | 7. کیاں کلم  |
| 8, यथ चिन्ह  | भी शान्ति प्रिय दिवेदी   | 2     | 0      | 0       |   | 8. 44 44   |
| <b>. वंच</b> प्रदीप  | शान्ति एम. ए.  | 2     | 0      | 0       | هانتی ایم . آلے                                     | 9. پلے پردیب   |
| 10. बाकाश के तारे घरती<br>के कृत   | भी कन्हैयालाल सिश्र<br>प्रभाकर   | 2     | 0      | 0       | هری کلهیالال مهر<br>هربها تر                        | 10. آکامی کے تاریے<br>دعرتی کے پہول  |
| 11. युक्ति दूत   | भी बीरेन्द्र कुमार<br>जैन एम. ए.   |       | 0      | 0       | شری ویرنیندر کمار جهن<br>ایم ، آنه                  | 11. مكفى درت   |
| 12. मिलन यामिनी  | श्री बच्चन   | 4     | 0      | 0       | هری بندن  | 12. ملق ياملى  |
| 13. रजत रिम  | डाक्टर रामकुमार वर्मा  | 2     | 8      | 0       | قائعر وام كمار ورما                                 | 13. رجت رفيني  |
| 14. जेरे बापू  | श्री तन्मय बुखारिया  | 2     | 8      | 0       | شري تلب يشاريا                                      | 14. مهرے باہو  |
| 15. विश्व संघ की जोर   | पंडित सुन्दरलाल<br>भगवानदास केला   | 3     | 0      | 0       | پندس سندر لال بهکران<br>داس کها                     | 15. وشو سفکه کی اور  |
| 16, भारतीय जयशास   | भी भगवानदास केला   |       | 0      | 0       | هری بهکوان داس کیلا                                 | 16. بهارتیه ارته شاستر   |
| 17. भारतीय शासन  | <b>39</b>  | 3     | _      | 0       | "   | 17. بهارتیه شاسن   |
| 18. जागरिक शास्त्र   | <b>i</b> n   | 2     |        | 0       | <b>39</b>   | 18. ناگرک هاستر  |
| 19. साम्राज्य चौर वनका   | 29   | 2     |        |         | 99  | 19. سامُواج اور أن كا  |
| 20, भारतीय स्वाचीनता<br>अन्दोक्षन  | <b>39</b>  | 1     | 4      | 0       | ,,  | 20. بهارتیم سرادهیاعا  |
| 21. सर्वीव्य अर्थ व्यवस्था   | <b>))</b>  | 1     | 8      | Û       | ^   | آندولی   |
| 22. इमारी आविम आतियां  | चौर भी अखिल विनय   | 3     | 8      | 0       | ور<br>شرق بهگوان داس کها                            | 21. سروردے ارتع ویوسٹھا<br>22. مماری آدم جاتھاں  |
| ,23. अर्थशास्त्र राज्यावसी   | भी वया शंकर दुने,  | 2     | Ō      | 0       | اور شری اکہل رہے<br>عبر دیا شاک شرد                 | Us. 4 m ta at on   |
|  | एम. ए. एतः एतः बी.   |       |        |         | ايم . ايد. ايل ايل ، بي .                           | 23, ارته هاستار شبدارلی  |
|  | श्री गजाघर शसाद, जा  | म्बु  | z,     |         | ایم ، عد، ایل ایل ایل<br>گنجادهر پرساد، امهشت       |  |
|  | श्री मगवानदास केला   |       |        |         | بهکوان داس کهلا                                     |  |
| 24. नागरिक शिका  | श्री भगवानदास केता<br>भी दयाशंकर दुवे  | 1     | _      | 0       | بهموری دادل داس کیلا<br>دیا شدی دویه                | المحمد عود عمد المحمد المح<br>المحمد المحمد  |
| 25, रार्ट्र मंडल शासन  | भी दयाशंकर दुवे  | 1     | _      | _       | منا هلک شدند  |  |
| 26, जबानी  | महात्मा मगवानदीन   |       |        | _       | مر الما ممكوان فعم                                  | 25. راهغر منقل هاسی  |
| 27. मार्ने की हिन्सत !   | 22   | 1     |        |         | -   | 26. چوانو<br>27. يا دار همچيا  |
| 28. ससोग सम  |  | 0     |        | 0       |   | 27_ مارنے کی همت ا   |
| १९. मेरे खानी  |  | 1     | 0      | 0       | 77  | 28. ملونا س <b>ي</b><br>29. مدر سافم   |
| The state of the s | ने का पता  | 4     | _      | ورين    | 77  | 22. مهرب سانچی<br>ملی کا پات   |
|  |  |       |        |         | ale to smale  | Start Start market by  |
| The state of the s | 145, मुहीरांज,   |       | _      | (C) (C) | マンステ、 <b>14.1.1 14.1 14.1 14.1 14.1 14.1 14.1 1</b> | The same of the sa |

## सांस्कृतिक साहित्य

سانسكوتك ساهتيه

### हजरत मोहम्मद श्रीर इसलाम

लेखक-पण्डित सुन्दरलाल, मूल्य-नीन रुपया ्यलाम के पैगुम्बर के सम्बन्ध में भारतीय भाषात्रों में इस से सुन्दर कोई दूसरी पुस्तक नही

हजरत ईसा और ईसाई धर्म

लेखक-पन्डित सुन्दरलाल, मूल्य-डेइ रुपया

महात्मा जरथुस्त्र ऋौर ईरानी संस्कृति लावक-विश्वम्भरनाथ पांड, क्रीमन-दो रुपया

यहदी धर्म और सामी संस्कृति

लेखक-विश्वमनरनाथ पाँडे, क्षीमत-दो करया

विन मिस्र की सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वमभरनाथ पांडे, कीमत—दो काया

मिर वाबुल और असुरियाकी प्राचीन संस्कृति

लेखक-विश्वमभरनाथ पांडे, क्रीमत-दो रुपया

प्राचीन यूनानी सभ्यता आर संस्कृति

लेग्वक-विश्वम्भरनाथ पाँड, क्रीमत-दे। रुपया

गंगा से गोमती तक

( प्रगतिशील कहानी संप्रह )

लेखक-शी मुजीब रिजवी, क्रीमत-दा रूपया

आग और आंस्

( भावपूने सामाजिक कहानियाँ )

लेखक - डाक्टर श्रस्तर हुसेन रायपुरी, क्रीमत - डेढ़ मपया

कुरान श्रीर धार्मिक मतभेद

लेखक—मौलाना श्रबुलकलाम श्राजाद, क्रीमत—डंढ रूपया

भंकार

( प्रगतिशील कवितात्रों का संप्रह ) ंखक—रघुपति सहाय फिराक़, कीमत – तीन रुपया حضوت محدل اور إدلام

مولياء سدين روبيه ایکهک—پندت سندر لال ٔ

إسلام کے پیعمار کے سمبندہ میں بھاردیہ بھاناؤں میں اِس سے سندر دوني دوسري يستك نهيق

حضرت عیسی اور عبسائی دهرم ليكهك - ينذت سندر ال أن موليد قيره روبيه

مهادما زر تهستر اور ایرانی سنسکرتی اینهک مهادما و اندینه اینهک مهارونانه واندی ا

یهودی دهوم اور ساسی سنسکوتی لیکوک رشومهور نابد باندے سیست دو رویه

پراچین مصر کی سبهیتا اور سنسکرتی ایکهک وشومهر ناب پاندے نیست دو روپه

سمير ٔ بابل اور اسوريا كي پر اچين - نسكرتي

ليكيك --وشومبهر تابه ياندے ، فيمت-دو روديم

پراچین برنانی سبیتا اور سنسکرتی لهکهک سوشومنهر نابه باندے میت دورویته

گنگا سے گومتی تک

( پرگتی شیل نهانی سنتره )

ليكبك - شرى مجيب رضوى عيمت - ق رويه

اگ اود انسو

( بهاوپورن سمآجک کهانیال )

ليكهك-دائثر أختر حسين رائم يوري عيدت - ديره رويهم

قرآن اور دهارمک معابهید

ليكيك مولانا أبرهم آزاد عيمت قيرة روييه

جهنكار

( پرگتیشیل فهیناؤں کا سنکرہ )

ليکهك -رابوپتي سائے فراق تيمت - قيم روپيم

मिलने का पता ملنے کا یته

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी उर्मा अक्री उर्मा अंग्रे

145 मुद्रीगंज, इलाहाबाद منهى كنبج الهآباد 145

بالشراب

# हिन्दी घर

कलचर पर हर तरह कीं कितावें मिलने का एक बड़ी केन्द्र—पाठक हिन्दीं, उर्दू, अंग्रेजीं की अपनी मन-पसन्द कितावों के लिये हमें लिखें।

## हमारी नई कितावें

महात्मा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी श्रीर उदृ में ) लेखक---गान्धीबाद के माने जाने बिद्वान : श्री मंजर श्रली सोस्ता सके 225, क्रीमन दो रुपया

#### —: ०:— गान्धी बाबा

( बच्चों के लिये बहुत दिलचम्य किताब ) लेखिका—कुद्मिया जैदी भूमिका—पन्डित जवाह्रग्लाल नेहरू मोटा काराज, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसवीरें दाम दो कपया

> — : ० : — पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी किनाबें

गीता और क़ुरान

275 सके, दाम ढाई रुपया

हिन्दू मुसलिम एकता

100 सफ़े, दाम बारह आन

महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक

क्रीमत बारह् आन

पंजाब हमें क्या सिखाता है

क़ीमत चार आने

बंगाल ऋौर उससे सबक्र

क़ीमत दो आन

## हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 मुट्ठोगंज इलाहाबाद

هندی گهر

کلچر پر ہر طرح کی کتابیں ملنے کا ایک بترا کیندر۔۔پاٹھک ھندی' اُرںو' انگریزی کی من پسند کتابوں کے لئے ہمیں لکھیں.

هاری نئی کتابیس

مهاتها کاندهی کی وصیت

(عندی اور آردو میں) لیکھئے۔۔گائدیقی وال کے مانے جانے ودوان: شری منظر علی سوخته صنحے 22: فیمت دو روپیه ۔۔:ہ:۔۔۔

كندهي بابا

(ببچرں کے اللہ بہت دابچسپ کتاب)
لیکھکا قدسیہ زیدی
بھومکا پیدت جوانفر الل نہوو
موتا کافذ موتا تائپ بہت سی رنگیں تصویریں
دام دو رویہ

پندت سندرال جي کي لکبي نتابي

عينا اور قران

97.5 صفحے دام دیانی رویدہ

هندو مسلم أيكتا 100 مفص دام باره آنے

مہاتما کاندھی کے بلیدان سے سبق

بنجاب همیں کیا سکھانا ھے

بنگال اور أس سے سبق

هندستانی کلچر سوسائتی

115 متیں گنج اعادی

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at Ric Naya Hind Press, 145, Mathiganj, Allahabad.

## इस नम्बर के खाम लेख क्या लिंक ड भूगं ली

इजरत मुहम्मद और उन हा पैग़ाम

-- विश्वम्भरनाथ पांडे

धेम और ज्याह

—श्री चक्रवर्सी राजगोपाल।चार्य هراوي و المجروري راجيم المجروري والمجروبي والمجروبي والمجروبي المجروبي المجروبي

जिन्दगी और हक्रीक्रत

-श्री गुरुबचन सिंह

फ़ुटकर विचोर

--महारमा भगवानदीन

नीलम का हार (कहानी)

-- विश्वमभरनाथ पांडे

حضرت محمد اور أن كا پهغام

--وشومبهر ثاته يانده

يريم أور بياة

زندگی اور حقیقت

سشری گریچوں سلکم

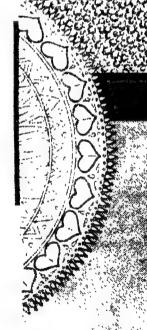
يهتمر رجار

سمهاتما بهکوان دبن

نیام کا هار ( کہائی )

ـــوشومهم ثانه بالتد

इसके श्रालावा देस विदेस के मसलों पर हमारी राव में जरूरी सम्पादकी नोट دیس بدیس کے مثابی پر هماری رائے میں ضروری سمیادکی نوق



कि कलचर सासाइटी, इंताहाबाद (ﷺ) अंधि



#### NAYA HIND

Monthly Journal of the Mindustani Culture Society

#### Editorial Board

Dr. Tara Chand M.A., D. Phil. (Oxon)

Mahatma Bhagwan Din

Dr. Syed Mahmud, M.A., Ph.D., Bar-at-Law

Pandit Sundarlal

Bishambhar Nath Pande

#### Editor-in-Charge

Bishambhar Nath Pande

#### Asst. Editors

Suresh Ramabhai Mujib Rizvi

#### **Annual Subscription**

Inland Rs. 6/Foreign Rs. 10/Single Copy As. /10/- only

Can be had from -

# Manager, NAYA HIND

145. MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.

# Pellis G

जिल्द 21 علد नम्बर 4



अप्रैल 1956 । । ।

हिन्दुत्तानी कलचर सोसायटी ज्यान प्रकृष ज्याना कलचर सोसायटी अध्यान प्रकृष ज्याना विकास स्थान क्षेत्र का प्रकृष

## भन्नेच 1956 । ।

| 4   | ग किस से                             |     | सक  | منحة             | <u>م</u>   | کیا ک |
|-----|--------------------------------------|-----|-----|------------------|--|-------|
| 1.  | हज़रत शहस्मद और उनका पैज़ाम          |     |     |                  | حضرت محمد اور أن كا بينام  | .1    |
|     | —विश्वम्भरनाथ पांढे                  | ••• | 177 | •••              | وشومهر ثاته يائد   |       |
| 2,  | अञ्चेरूनी                            |     |     |                  | البهروقي   | .2    |
|     | डाक्टर यदुनाथ धरकार                  | ••• | 185 |                  | ــــــــــــــــــــــــــــــــــــــ   |       |
| 3,  | भारतीय संस्कृति                      |     |     | •                | بهارتيه سنسكرتي  | .3    |
|     | —श्री कृष्ण्यद्त्त वाजपेई, एम० ए०    |     |     | •••              | ـــشری کرشن دت باجهیگی <sup>،</sup> ایم . اــه .   |       |
| 4.  | मंभले ज़माने का भारत                 |     | *   |                  | ماجهلے زمانے کا بھارت  | .4    |
|     | —श्री गोपाल पुरोहित, पम॰ प॰          | ••• | 189 | •••              | شری گربال بروهت <sup>،</sup> ایم . اــ .   |       |
| 5.  | प्रेम भीर व्याह                      |     |     |                  | پريم اور بياه<br>پريم اور بياه   | .6    |
|     | —श्री चक्रवर्सी राजगोपालाचार्य       | ••• | 196 | ***              | برا را در الماريالية المارية ا |       |
| 6.  | ज़िन्दगी और इक्रीकृत                 |     |     |                  | زندگی اور حقیقت  | .6    |
|     | —श्री गुरुवचन सिंह                   | ••• | 200 | •••              | شری گربچی سلام   |       |
| 7.  | <b>ग</b> य्या                        |     |     |                  |  | .7    |
|     | माई मदन गोपाल जी                     |     | 204 | ana <sub>r</sub> | ۔۔۔بہائی مدن گرپال جی  |       |
| 8.  | मगवान दुद्ध भीर उनके उद्देख          | *** | 207 | •••              | بیکولن بدھ اور اُن کے اُصول  | -8    |
|     | ग्रहम्मद साहब की क्रम हदीसे          |     |     |                  | مصدر ماحب کی کچھ حدیثیں  | .9    |
|     | —शतुवाद्कः भी मुजीव रिजवी            | ••• | 212 |                  | الوادک ۽ شرق مجھپ رفارق  | •     |
| .0. | इटकर विचार                           |     |     | •••              | عامر وجار  | .10   |
|     | —महास्मा भगवानवीन                    |     | 916 |                  | حسمهاتما يهكوان ديون   | •     |
| 1.  | नीवम का द्वार (कदानी)                |     |     |                  | نیلم کا مار ( کہائی)   | .11   |
|     | —विश्वस्थरनाथ पाँडे                  | ••• | 217 | ***              | رشومهر نانه يانده  |       |
|     | इमारी राय-                           | ••• | 226 | 404              | هماری رائی   | .12   |
|     | वसरीकी सभ्यता, राष्ट्र मात्रा किस ओर | ?   |     | -4-              | أمريكي سبهيكاؤ رأشار بهاشا كس  | -     |
|     | —सुन्दरमान                           | •   |     |                  | أور المسائد ال   |       |

#### विशवन्मरनाथ पंडि

इसामान के पैधानार इचरत सहरनाइ की गिनती हुनिया की ग्रहान में महान कारमाओं में की जाती है, वे एक ग्रामुकी ग्रहींन घर में पैदा हुए वे कीर अपनी जीत से पहले समूचे कारन के बादराह थे. बरसों की तपस्था, शब्दे लक्षे रोजों कीए एकान्त सेवन के बाद घरव की इस प्रमान की गिरी हुई हालत में ईरवर ने कन्हें उनके देश और तमाम दुनिया की मलाई का रास्ता दिखाया. अपने घर्म का प्रचार छुक करने के बक्त वह 40 बरस के थे और 68 बरस की उनर में वे इस दुनिया से कुथ कर गये.

मुहन्मद साहब के उपदेशों ने घरवों के घन्दर से बहुत सी बुराइयों का, जैसे शराबखारी, जुआ, स्दखारी, लड़ांकयों को मार बालना वरीरह जढ़ से मिटा दिया. सैकड़ों और इक्कारों घलग-घलग देवी देवताओं के पूजने वालों को घपने उन घलग-घलग देवी देवताओं का छोड़कर, एक निराकार ईरवर, एक घल्लाह की पूजा करना सिखा दिया. एक दूसरे के दुश्मन हजारों क्रवीलों को एक धागे में बांधकर उन सबकी एक क्रीम बना दी. सारी क्रीम के चलन और रहन-सहन को पाक और ऊँचा कर दिया. उनमें इस्म और मान की चाइ पैदा कर दी. घरब के उन सब दुकड़ों को जो घलग-घलग विदेशी ताक्रतों के मातहत थे घाजाद करके सारे देश पर एक खुद मुस्तार घरब हुकूमत क्रायम करदी. और यह सब काम 23 बरस के भीतर पूरा हो गया.

मुहन्मद साहब के मरने के सी बरस के अन्तर-अन्दर अरब का यह नया मजहब जीन की दीवार से लेकर अटलांटिक महासागर तक, एशिया, अफरीका और यूरोप, तीनों में कैल गया. तमाम पिछ्डम एशिया, उत्तर अफरीका और आमे युरोप पर अरबों की हुकूमत कायम हो गई. तरह-तरह के हस्म और हुनर में उन दिनों के अरब पश्चिमी दुनिया की समसे बड़ी चढ़ी कीम माने जाने लगे. आज दुनिया में तीस करोड़ से ज्यादा आदमी इसजाम धर्म के मानने बाते हैं और दुनिया का कोई मुक्क देसा नहीं है जहां इस म हाल महान क्यार सुहन्मद की जिन्दगी और इसलाम से अपनी निजी जिन्दगी के लिये धर्म का रास्ता और इन्सान कारों का संबंध में सीमारे हों

पण सम्बद्ध है जाने सामाहरों में भी रोजाई से और भागवाओं का कर्मा हुए अस्मिन्यों कि में श्री ही हर समाहण والمستهر لماته بالبدء

معدد ماهب کے آپدیشن کے عربوں کے اثدر سے بہت ورائیوں کو جیسے شراب خبری جوآ سود خبری لوکیوں کے اثار کو جیسے شراب خبری جوآ سود خبری لوکیوں اور مواروں الگ دیوی دیوتاؤں کے پیچنے والوں کو اپنے ان الک الگ دیوی کوتاؤں کو چیوز کو ایک نراکار ایشور ایک الله کی پرچا کوتا دیا ، ایک درسوے کے دشمن هواروں قبیلوں کو ایک خوا میں بائدھ کو ان سب کی ایک قیم بنادی ، سازی قرم کو ایک خوابن لور رہن سپن کو پاک اور اونتجا کو دیا ، اُن میں علم کے ایک بیدا کو دی ، عرب کے ان سب تکووں کو چو کو ایک ایک دیا ہوا کہ دی ، عرب کے ان سب تکووں کو چو کی ایک دیدہ شاری کو جو گیا ،

نے الی مسلول مقصب کے ماقتے والے هیں جات میں الیہ الیہ الیہ کہ الیہ کے ماقتے والے هیں جات میں الیہ الیہ کے اللہ کے لئے کہ الیہ کے اللہ کا الیہ خاص اوردی کو هی الیہ کا الیہ خاص طریقہ کی الملیت سمجھتا تھا جیسے آپاسا کا ایک خاص طریقہ میں یہ ریت رواج هر مذہب کے منبے والوں میں الگ تھے ایس لئے هر مذہب والا وشواس کرنا تھا ته دوسرے بوالوں کے پاس مذہبی سچائی نہیں ہے هر مذہب کے دوسرے مذہب یہ یہی نہیں تھا ته وہ سچا ہے یہ یہی بھا ته دوسرے مذہب نہیں کے کراهی کی طرف لیجاتے میں ، نتیجہ یہ تھا که اور ایشور کے نام پر هر مذہب دوسرے مذہب الور ایشور کے نام پر هر مذہب دوسرے مذہب والوں سے اور ایشور کے نام پر هر مذہب دوسرے مذہب والوں سے اور ایشور کے نام پر هر مذہب دوسرے مذہب والوں سے اور ایشور کے نام پر هر مذہب دوسرے مذہب والوں سے دوتا تھا اور ان کا خوں بہانا تک جانز سمجھتا تھا ۔

''اسہ پینمبر 1 هم نے هر گروہ کے لئے آپاستا کی آیک خاص ے طے کر دی ہے' جس پر وہ عمل کرتا ہے ، اِس لئے ی کو چاہئےتہ اِس کے بارےمیں جھکڑا تم کریں، اُسے پینمبر 1 یکوں کواپنے آالمہ کی طرف بالؤ''، ( سو، 22' الف، 66 )

جب اسلام کے پینمر نے بیت المقدس (جیروسلم) کے کمبید کی طوف منه کو کے نماز پڑھائی شروع کی تو یہ بات برس اور عیسائیوں کو اکھری کیونکہ رہ اُن باھری اور اُوپری پر ھی مذھب کا دار مدار سمجھتے تھے اور اِنھیں کو سے جھوت کی کسوئی مائے نہے، لوگوں نے اعتباض کیا اور اُنھیں میں اپنی پوچا کی دشا ٹیوں بدل دبی آ فرآن کے بقر میں اِسی جواب دیا گیا ہے۔"پورب اور پچھم دونوں کے ھیں اِسی جدھر بھی تم مرو اُدھر ھی اللہ کا منه کے ھیں اِسی لئے جدھر بھی تم مرو اُدھر ھی اللہ کا منه بی نظام سے دیتھا ۔ اِسلام کہتا ہے نہ اِس طرح کی باتوں کو بی نظام کیا ۔ اِسلام کہتا ہے نہ اِس طرح کی باتوں کو المحبوب ہی اور جبوت کی اور نہ اور نہ اِن کا دھرم کے بنادی اصوابی ہے اور جبوت کی کسوئی ہے اور نہ اِن کا دھرم کے بنادی اصوابی ہے درآن میں دیتا ہے۔

''هر گروہ کے لئے کرئی نہ کرئی دشا ہے جس کی اُور اُپاسانا سمے وہ اُپنا منه کر لیتا ہے' اِس لئے اِسے طبل نہ دیکر نیکی اِنْ میں اُپک دوسرے سے آگے بڑھلے کی کوشش کرد ، چاہے اس جانیہ بھی ہو' اُللہ تمہیں دوندہ لیکا ، بیشک اللہ کی الاحت سے کرئی چیز باہر نہیں ہے ۔ ( سو ، 24 الف

मान बाता समनता वा क ख्याई सिर्फ मेरे ही हिस्से प्रे ही है और जो मेरे मखहर के मानने बाते हैं जन्त में ब्रिस इन्हों के लिये जगह है, दूसरे मज़हब बातों के लिये नहीं. इर मज़हब करारी कर्मकाएकों और रीत रिवाजों को ही धर्म की असिवायत सममता था, जैसे ख्यासना का एक खास तरह का खान-पान और एक खास तरह का लियास. ये रीत-रिवाज हर मज़हब के मानने वालों में खलग-खलग थे. इसलिये हर मज़हब के मानने वालों में खलग-खलग थे. इसलिये हर मज़हब बाला विश्वास करता था कि दूसरे मज़हब वालों के बास मज़हबी सचाई नहीं है, हर मज़हब का दावा यही नहीं बा कि वह सच्चा है, यह भी था कि दूसरे मज़हब इनसानों को इसराही की तरफ़ ले जाते हैं. नतीजा यह था कि धर्म और देश्वर के नाम पर हर मज़हब दूसरे मज़हब वालों से नफ़्रत करता था जीर उनका लून बहाना तक जायज सममता था.

इसलाम ने उस जमाने की इस मजहबी गिरोह बन्दी के सिलाफ लोहा लिया. उसने नए सिरे से इस उसूल का पेरा किया कि न सिक इसलाम में बल्कि दुनिया के सब मजहबों

में सचाई मौजूद है. क़ुरान में एक सूरा है-

'पे. पैराम्बर ! इसने हर गिरोह के लिये उपासना की पक सास विधि तय कर दी है, जिस पर वह असल करता है. इस्र कियो लोगों को चाहिये कि इसके बारे में मगड़ा न करें. पे पैराम्बर ! तुम लोगों को अपने अल्लाह की तरफ बुलाओ" (सू० 22, आ० 66).

जब इसलाम के पैराम्बरों ने बैतुल मुक्तइस (जेरुसेलम) के बदले काबे की तरफ मुँह करके नमाज पढ़ानी शुरू की तो वह बात पहुदियों और ईसाइयों को अखरी, क्योंकि वे इन बाहरी और ऊपरी बातों पर ही, मज़हब का दारमदार समकते थे और इन्हीं को सच और मूठ की कसीटी मानते थे. लांगों ने पतराज़ किया और पूछा कि आपने अपनी पूजा की दिशा क्यों बदल दी ? कुरान के सूरे बक्तर में इसका खबाब दिया गया है—"पूरव और पिटमझ दोनों अल्लाह के हैं. इसलिये जिधर भी तुम मुझे उधर ही अल्लाह का मुँह है" (2-115). महम्मद साहब ने इस मामले को बिलकुल दूसरी नज़र से देला। इसलाम कहता है कि इस तरह की बातों को इतनी अहमीयत ही क्यों देते हो ? यह न तो सच और मूट की ही कसीटी है और न इनका धर्म के बुनियादी उसलों से ही कोई ताल्लुक है. कुरान में लिखा है—

"हर गिरोह के लिये कोई न कोई दिशा है जिसकी और उपासना करते समय वह अपना मुँह कर लेता है, अबिकीय इसे तुल न देकर नेकी की राह में एक दूसरे से कांगे बढ़ने की कोशिश करो. चाहे तुम जिस जगह भी हो, अबिका बुक्ट दू हैं दू हैं गा. बेराक अस्लाह की साकत से कोई की बाहर नहीं है." (सुठ 2 जाठ 148)

#### TO SEE THE THE WITE

'धार के कि इसमें नहीं है कि तुमने अपने सुंह (नमाज के कि ) पूरव की तरफ कर लिये या पिछल की तरफ अमें यह है कि आदमी अल्लाह को माने, आख़रत बानी करमों के फल को माने, फरिश्तों को माने, सब मज़हबी किताबों और सब निवयों या रस्लों को माने, अल्लाह के प्रेम के नाते यानी उसके नाम पर अपने माल और दौलत में से अपने नातेदारों को, ज़रूरतभन्दों को, यतीमों को, रास्ते चलतों को और मांगने वालों को दान दे और गुलामों को आज़ाद कराने में अपनी दौलत खर्च करे. अल्लाह से दुआ मांगता रहे, ज़कात (अपने कुल मान का कम से कम 40 वां हिस्सा हर साल अल्लाह के नाम पर ग्रारीबों को खरात) देता रहे, जब कभी किसी से बादा करे तो उसे पूरा करे, और मुसीबतों में, तकलीक में, और सख्ती के दिनों में सब करे — जो लोग ऐसा करते हैं वे ही सच्चे हैं और वे ही मुत्तकी यानी परहेज़गार हैं.'' (सू० 2 आ। 177).

घमा की इस गिरोहचन्दी का नतीजा यह हुआ कि परमात्मा के पूजा घर तक अलग-अलग हो गये. सब धमों के मानने बाले एक ही परमात्मा का दम भरते हैं, फिर भी यह नहीं हो सकता कि एक धमें के मानने बाले दूसरे धमें बालों के पूजा घरों में जाकर अपने ढक्क से परमात्मा का नाम ले सकें. कभी कभी लाग धमें के नाम पर दूसरों के पूजा घरों को कभी लाग धमें के नाम पर दूसरों के पूजा घरों का बरबाद तक कर देते हैं. क़ुरान कहता है इससे बदकर बेइन्साकी इनसान और क्या कर सकता है कि खुदा के बन्दों को उसकी इबादत से राके, केवल इसलिये कि वे किसी दूसरे मजहब में शामिल हैं, क्या मजहबों में फर्क़ से ईश्वर में भी फक्के हो गया ! क़ुरान में लिखा है—

'खससे बद्कर अन्यायी और कौन हो सकता है जो अल्लाह के पूजा घरों में किसी को अल्लाह की इबादत और उसका गुनगान करने से रोके, या उन पूजा घरो को बरबाद करने की कोशिश करें! जो लोग ऐसे ज़ुल्म और प्यादती करते हैं वे इस क़ांबल नहीं हैं कि अल्लाह के पूजा घरों में पैर भी रखें, सिवा इसके कि डरते हुए जायें. ऐसे आदिमयों को इस दुनिया में बदनामी और दूसरी दुनिया में ज़बर्दस्त अज़ब भो ना पड़ेगा." (सूठ 2 आठ 114).

कुरान परमात्मा के बनाए इस नियम का ऐलान करता है कि—"जिस किसी ने भी अपने कमों से बुराई कमाई उसका फल बुरा है और जिस किसी ने भी भलाई कमाई उसका फल अच्छा है." जिस तरह जहर खाने वाला मर जाता है बाहे बह किसी भी मज़हब का क्यों न हो और दूध पीने वाला तन्दुकृत हाता है वाहे वह किसा भी म बहब या जाति का क्यों न हो, कुरान कहता है कि ईश्वरी धर्म की जह यही है कि सब इनसान आपस में माई-भाई है और

#### لين مروسون اكر جل كو كها هـــــ

یعوم یا نیکی اِس میں نہیں ہے کہ نم نے اپنے منو ( نماز کی بیدی ) بورب کی طرف کو لئے یا پہچم کی طرف ، دھرم یہ کی آدمی اللہ کو مائے' آخرت یعنی کرموں کے پیش کو مائے' کو مائے' اللہ کے بریم کے ناتے یعنی اُس کے نام پر اپنے مال اُور بولت میں سے اپنے تاتے یعنی اُس کے نام پر اپنے مال اُور بولت میں سے اپنے تاتے دارمی کو' یقیموں کو' ضرورت مندوں کو' مولت میں اپنی دوات خرج کرے ، اللہ سے دعا مائکتا رہے' ذکانا کو این میں اپنی دوات خرج کرے ، اللہ سے دعا مائکتا رہے' ذکانا کو غربوں کو خیرات ) دیتا رہے' جب کیمی کسی سے وعدہ کر ، پر غربوں کو خیرات ) دیتا رہے' جب کیمی کسی سے وعدہ کر ، پر غربوں میں میں اور مصیبتوں میں' تکایف میں' اور سختی کے دنوں میں میں میں وے ھی سچے کے دنوں میں میں میں دے ھی سچے ھیں اور وہ ھی متقی یعنی پرھیزگا ھیں ( سو کا الف 177) ۔

دھرموں کی اِس گروہ ہلدی کا تتیجہ یہ ہوا کہ پرماتما کے پونا گہرتک الگ الگ ہو گئے سب دھرموں کے ماننے والے ایک ہی پرماتما کا در دھرتے ہیں' پھ بھی یہ نہیں ہو سکتا کہ ایک بعوم کے ماننے والے درسرے دھرم والوں کے پوجا گھروں میں جاکر اپنے تھنگ سے پرماتماکا نام لے سکیں، کبھی کبھی لوگ دھرم کے نام پر درسروں کے پوجا گھروں کو برباد نککر دیتے مھی، قرآن کہتا ہے اِس سے برحمتر نے انصافی انسان اور کیا کو سکتا ہے کہ خواکے ہندوں کو اس کی عبادت سے روکے' کیول اِس لئے کہ وے کسی درسرے منہوں میں فرق سے ایشور میں منہوں میں فرق سے ایشور میں بھی ترق ہو گیا ا فرآن میں لکھا ہے۔۔

قرآن پرمانما کے بنائے اِس نیم کا اعلان کرنا ہے کی۔۔۔''جس کسی نے بھی اپنے کرموں سے برائی کمائے اُس کا پھل برا ہے اور جس دسی نے ببی بھلائی کمائی اُس کا پھل اچھا ہے '' جس طے زهر کبانے والا مر جاتا ہے چاہے وہ کسی بہی مذہب کا کیوں نہ ہو اور دودھ پینے والاندومت ہوتا ہے چاہے وہ کسی بھی مذمب یا جاتی کا کیوں نہ ہو آوران نہا ہے کہ ایشوری دھوم کی جو بھی ہے تھ سب اِنسان آپس میں بھائی بھائی ہیں اور

🚧 एक 🐔 भुरा के जितने भी रस्त दुनिया में आए सबने बी बालीम दी कि तुम सब बनियादी तीर पर एक ही क्षा और एक ही जाति हो और तम सबका पालनहार भी क ही है, इसलिये मुनासिब है कि सब उसी एक परबरियार की उपासना करें और एक घराने के भाई बन्दों की तरह मिल जुलकर रहें. करान ने बताया कि ईश्वरी बर्स इसिलये था कि इनसानों के आपसी कराई और मेद-आब दूर हों, इसलिये न था कि खुद मुखालफ्त और लड़ाई का सक्ब बन जाय, इसलिये इससे बढ़कर गुमराही और क्या हो सकती है कि जो चीज भेदों को दूर करने आई हो बड़ी भेदों की जद बना ली जाय !

इसलाम के मुताबिक्र ईश्वर का धर्म इसलिये नहीं है कि थक इनासन दूसरे इनसान से नफरत करे बल्कि इसलिये है कि हर इनसान दूसरे इनसान से मुहब्बत करे और सब एक ही परवरदिगार की इवादत के धागे में बंधकर एक हो जायें, जब सब का पालनहार एक है, सबका मक्सद एक उसी की इबाइत है, हर इनसान को अच्छे और बुरे कामों ही का बद्दा मिलना है तो फिर अल्लाह और मजहब के नाम पर मे भेद-भाव और खबाइयां क्यों हैं ?

इसलाम ने बार-बार इस बात पर जोर दिया है कि सब मज़हब सच्चे हैं क्योंकि बुनियादी मजहब एक है और वह है अजहने इनसानियत यानी प्रेम धर्म, पर इनसानों ने अपनी गुमराही से अलग-अलग टोलियां बना ली हैं. इस शुमराही से लोग हट जार्य तो सब मजहबी भगदे खुद-बक्द मिट जाँच. हर गिराह देख लेगा कि उसका रास्ता भी बही है जो दूसरे गिरोह वालों का है. मुहम्मद साहब के मुताबिक यही 'अल-इसलाम' है.

मोटे तौर पर मुहम्मद साहब की तालीम का निचोड यह है....

(1) "अस्लाह एक है" उसकी कोई शकल सुरत नहीं 🖏 ''बह सब दुनियाओं का मालिक" और ''सब को उनके कामों का फल देने वाला" है. इस एक अल्लाह के सिवा किसी दूसरे की पूजा नहीं करनी चाहिये.

ं (2) सब आदमी उसी एक ईश्वर के बन्दे और आपस में भाई-भाई हैं. आदमियों में सबसे बढकर इक्जत के क्रांबिल यह है जो बुराई से बचे और नेकी के कामों में सवा रहे.

 (3) दुनिया के सब बढ़े-बड़े धर्मों का निकास उसी एक अस्ताह से है, इन सब मजहबों के क्रायम करने वालों को एक तरह हो उसी अल्लाह से रोशनी मिली है, इसलिये ये सब धर्म सबे हैं और जह में ''सब धर्म एक हैं. ''

🥒 (4) बालग-अलग मजहबों में अपने-अपने जमाने. सरक और हालव के फरक से रीति-रिवाज और पूजा बन्दगी ب الإسلامي والله التي يعلق في وسول دلمها مون أل سي ريبي فللهم دورة أمسب بلوادي طرير أيك هر يلتو ر ایکیا بھی سیالی هو اور تم سب کا پالی هار بھی ایک ھی یا اِس للی منافست ها که سب اُسی ایک بروردال کی اُیاسنا ایں اور ایک ، گورائے کے بھائی بلدوں کی طوح مل جل کو میں اللہ توان لے بتایا که ایشوری دعرم اِس لئے تھا که اِنسانوں ير آيسي جهكوم أور بهدد بهاؤ دور هون الس لله نه تها له خود منالفت أور لوائي كا سبب بن جائه إس لئه إس سه بوهكر مراهی اور کیا هو سکتی هے که جو چیز بهیدوں کو دور کرتے آئے و وهي بهندون کي جو بنا لي جائد!

اسالم کے مطابق ایشور کا دھرم اِس لئے نہیں ہے کہ ایک نسان دوسرے انسان سے تغرب کرے بلکہ اِس للے ہے کہ عر نسان دوسرے اِنسان سے متحبت کرے اور سب ایک ہے روردگار کی عبادت کے دھاگے میں بندھکر ایک ھو جائیں۔ عب سب كا يانن هار أيك هئ سب كا مقصد أيك أسى كي بادت ها هر اِنسان کو اچه اور برے کاموں کا می بدله سلنا له تو پهر الله اور مذهب سے تام بر يه بهيد بهاؤ اور لوائهان كيور ين ا

اِسلام فے ہار ہار اِس بات پر زور دیا ہے که سب ساھب نجے هیں کیونکہ بنیادی مذهبایک ہے اور وہ ہے مذہب نسانیت یعنی بریم دهرم؛ یر اِنسانوس نے اُپنی گسراهی سے الگ لک تولیاں بنا لی هیں ، اِس گراهی سے لوک هڪ جائيں و سب مذهبی جهکوے خود بخود مت جائیں ، هر گروة دیکھ یکا که اُس کا راسته بهی وهی هے جو دوسرے گروہ والوں کا هے ۔ معدد صاحب کے مطابق یہی الاسلام سے .

مول طور ہر محمد صاحب کی تعلیم کا نجور یہ ہے۔۔

- (1) "الله أيك هـ" اس كي كوثي شعل صورت نهيس هـ وہ سب دنیاؤں کا مالک، اور داسب کو اُس کے کامیں کا ھل دینے والا<sup>ء</sup> ھے، اُس ایک اللہ کے سوا کسی دوسرے<sup>ہ</sup> کی وجا نہیں کرنی چاھیئے۔
- (2) سب أدم أسى ايك إيشور كے بندے اور أيس اس بھائی بھائی میں ، آدمیوں میں سب سے برمار عوت کے ابل وہ ہے جو ہرائی سے بجے اور نیکی کے کامیں میں لگا
- (3) دنیا کے سب بڑے بڑے دھرمیں کا نکاس اُسی ایک لله سے ہے؛ اِن سب مذهبين کے قايم کرتے والوں کو ايک طرح الى أسى ألله عد روشتى ملى هـ؛ إس لله يه سب دهوم ستهـ هيں اور ج<del>ور</del> ميں ''سڀ دھرم ايک ھيں .''
- (4) الك الک منعين مين أين أيني زماني طك . ور حالت کے فرق ہے ریتروایے اور پوسیا بلدگی

بطورات میں دی ہے بنیادی آمران میں درق فیوں معاور کی بیدائی اور الفادی کی بیدائی اور الفادی اللہ منعموں کے ان باغادی استران کے عامل کے بعدائی آریری ریسترواجوں اور پوجا کے طویقوں کو زیادہ العم بینجہالے اکتے میں م

(5) کسی بھی قوم یا ملک میں جب اوگ منھب کے باؤلی میں کوئی نے باؤلی اور میں کوئی نے کوئی رسول یا پہنمبر بھنج کو اُس کے ذریعے اُن میں ''سچے دین کو پھر سے قایم'' کرتا ہے اور لوگوں کو ٹھیک راہ پر لاتا ہے ۔ اِس طرح کے پہنمبر سب قوموں' سب زمانوں اور سب ملکوں میں ہوتے رہے دیں ۔

(6) الک الک مذھبوں کے قایم کرنے والوں یعنی الگ الگ ملکوں یا قوموں کے پیغمبروں میں فرق کرنا یعنی اُن میں سے کسی کو ماندا اور کسی کو نے ماندا گناہ ہے ۔ قرآن اِس لے ماندے یا فرق کرنے کو <sup>ور</sup>کفو<sup>3)</sup> کہتا ہے ۔

(7) اسلام اپنے سے پہلے کی سب الہاس یعنی ایشوری کتابوں کی تصدیق کرتا ہے یعنی انہیں سچا ٹھہراتا ہے اور مجمد صاحب اپنے سے پہلے کے "سب پینمبروں کی مہر" یعنی آن سب کی تصدیق کرتے والے میں ،

اپنی پوری زندگی بہر محمد صحب نے اپنے کو ایک معمولی اِنسان سے زیادہ کچھ نہیں کہا ۔ ذوان میں لکھا ہے۔۔۔

"اوک دہتے هیں که هم أس وقت تک تمهاری بات هرگز نهیں سانینکے جب تک تم همارے لئے زمین سے پانی کا ایک چشمه پهورکر ته نکال دو یا کیتجبروں اور انگوروں کا ایک ایسا باغ نه کهرا کردو جس کے بیچ سے اپنے آپ پهوت کو دریا به رقے هوں یا اپنے زور سے آسمان کے ٹکڑے ٹکڑے ٹکڑے کرکے همارے اوپر نه گرا دو یا الله اور فرشتوں کو همارے سامنے لائر نه کهرا کودو یا اپنے لئے ایک سونے کا مکان نه کهرا کرلو یا آسمان میں کو میں اپنے لئے ایک سونے کا مکان نه کهرا کرلو یا آسمان میں بہتری ہوت کو یاد کرو میں سوانے ایک ایسی کتاب نه لے آؤ جسے هم پرتے بوط کو یاد کرو میں سوانے ایک انسان اور رسول کے اور کچے رب کو یاد کرو میں سوانے ایک انسان اور رسول کے اور کچے نہیں هوں ۔" ( سو . الف . 93-17,90) .

محمد صاحب کی تحمی زندگی سادگی اور نتیری کی زندگی تھی ، آخیر تک اُن کا رهن سہن خد درجے کا سادہ

है हरीओं से क्षेत्रक हैं। काती है कि लोग अपने अपने समदे की कार का है। जाती है कि लोग अपने अपने सक्दों के दन कुमिनाई। बेल्लों से हर जाते हैं और नेकी और महाई के समों के क्लाब उपरी रीति रिवाओं और पता के सरीकों को क्याबा चहुम सममने लगते हैं.

(5) किसी भी क्रीम या मुस्क में जब लोग मजहब के बुतियादी उसलों से हट जाने हैं तो अल्लाह उनमें कोई न कोई रस्ल या पैग्रम्बर भेजकर उसके अरिये उनमें "सबे दीन का फिर से क्रायम" करता है और लोगों को ठीक राह पर लाता है. इस तरह के पैग्रम्बर सब क्रीमों, सब अमानों और सब मुस्कों में होते रहें हैं.

(6) जलग जलग मजहबों के क्रायम करने वालों यानी जलग-अलग मुल्कों या क्रीमों के पैरान्वरों में फरक करना यानी उनमें से किसी को मानना और किसी को न मानना गुनाह है. क़ुरान इस न मानने या करक करने को "कुफ़" कहता है.

(7) इसलाम अपने से पहले की सब इलहामी यानी ईरवरी किताबों की तसदीक करता है यानी उन्हें सच्चा ठहराता है और मुह्म्मद साहब अपने से पहले के 'सब पैराम्बरों की मुह्र् यानी उन सब की तसदीक करने वाले हैं.

अपनी पूरी जिन्दगी भर मुहम्मद साहव ने अपने को एक मामूली उनसान से ज्यादा कुछ नहीं कहा. क़ुरान में लिखा है—

"लांग कहते हैं कि हम उस वक्तृ तक तुम्हारी बात हरिराज नहीं मानेंगे जब तक तुम हमारे लिए जमीन से पानी का एक चश्मा फोड़ कर न निकाल दो, या खजूरों और अंगूरों का एक ऐसा बारा न खड़ा कर दो जिसके बीच से अपने आप फूट कर दरिया वह रहे हों, या अपने जोर से आसमान के टुकड़े-दुकड़े करके हमारे ऊपर न गिरा दो, या अल्लाह और फरिश्तों का हमारे सामने लाकर न खड़ा कर दो, या अपने लिये एक सोने का मकान न खड़ा कर लो, या आसमान में न चढ़ जाओ और वहां से एक ऐसी किताब न ले आओ जिसे हम पढ़ सकें. इस सब के जवाब में इनसे कह दो कि मेरे रज्ब का याद करो, में सिवाय एक इनसान और रसूल के और कुछ नहीं हूँ." (सू० आ० 17,90-98)

"में सिफ तुम्हारी ही तरह एक आदमी हूँ, हां अल्लाह ने मुक्ते यह झान दिया कि तुम सब का एक ही अल्लाह है. इसलिये जा काई अपने रव्य से मिलने की आस लगाए है उसे चाहिये कि नेक काम करें और सिवाय एक रव्य के दूसरे किसी की पूजा न करें," (सू० 18, आ० 110)

सहस्यद साहब की निजी जिन्दगी कौर कक्षीरी की जिन्दगीकी, साक्षीर तक उनका रहत-सहन हुद दरजे का साहा لر معطی اور ای کی این دی این اور ای کی ایر ایر این کی این این کی این کی این مین میطیعت میده این کی ایر مین چوایا که جاتا کیا این کی این مانه سی جهاز و دیا این مانه سی این این مانه سی این مین در این مانه سی این کی چیال کانامه می می در این مانه سی این کی برای در این مانه سی این کی چیال کانامه می در این مانه سی این کی برای در این در این

چہرٹے ہوے سب کے ساتھ اُن کا ہرتاؤ سدا ایکسا ھرتا تھا ، ہچرں سے اُنھیں خاص محبت تھی ۔ ہیماروں کو دیکھا۔ جاتے تھے اُس کے ساتھ جاتے تھے ۔ اُن کا جھوئی نہ اُٹھکر کچھ دور اُس کے ساتھ جاتے تھے ۔ اُن کا جھوئی لیکھک سر ولیم میور لکھتا ہے۔

امحمد صاحب کی خاص عادت تھی چھوٹے آدمیوں کے سانھ ہوی محبت اور عزت کا درتائ کرنا جیکنر چلنا سب پر دیا کرنا نسی کے کہے یا نئے کا برا نہ ساننا اپنے آرپر تابو رئنا اور دل برا اور هانے کیلا رکینا ، یہ محمد صاحب کے سبھائ کی خاص بانیں تھیں حو هر وقت چمکتی رهتی تھیں اور جن کی وجہ سے آس پاس کے سب لوگ اُن سے پریم کرتے ہیں ہیں۔

#### محمد صاحب کی زندگی پر کارلائل نے لیا ہے۔۔

''رہ ہورکرتی کی بڑی گود سے نکلا ہوا زندگی کا ایک زبردست دھکتا ہوا اسکارا تھا جو دنھا کے بنانے والے کے حکم سے دنیا کو روشن کرنے اور دنیا کو جگانے کے لئے آیا تھا ۔''

محسد صاحب کے آپدیشوں نے نه صرف پچھڑے ہوئے عربوں میں ایک نئی روح پھونکی بلکھ سیکڑوں برس م تک یوپ کو بھی علم اور تہذیب کی روشنی سے جگ مگ رکھا ۔ اسلم نے نلسفے چیوتھی گنوت ویدیک پر یوناسی اور رومی لیکھکوں کی کتابوں کے توجمہ کرکے آنھیں بربادی سے بچیایا اور آن کو پھیلیا ۔ کارتروا پنداد تیرو اور صدل کی یونیورسٹیوں میں اسلامی کلچو نے ترقی پائی ، جہاں جہاں اسلم گیا آس نے وہاں کے علم و ہنو پر اپنا اثر تالا ، منجہلے زمانے کے یورپ کے ملکوں پر جو اگیاں کا اندھیرا چھایا ہوا تھا آس اندھیرے کے ملکوں پر جو اگیاں کا اندھیرا چھایا ہوا تھا آس اندھیرے کو اس نے دور کیا اور اندھ وشواس کی جگه عقل کو بیلے برے کی کسوٹی بنائے پر زور دیا ،

#### مشهور فرأتسهسي إتهاسكار كوبارى لتهتا هــــ

المنتجل زمالے میں اِسلم کا اِتہاس خود کلتھور اور تہائیت کا اِتہاس تیا۔ یورپ عربیں کا احسانسان

महिन्दा था. क्या क्या तिन तिन दन्हें और क्या करते हो जाते थे. सिर्फ क्या कर की क्या पानी पर उन्हें महीनों बीध जाते थे ब्योर उनके कर में चुक्दा न जलता था. वे अपने घर में चकसर अपने क्या से फाड़ देते थे. अपने हाथों अपनी बकरियों को दुहते थे. अपने हाथ से अपने कपहों में पैबन्द लगाते थे. अपने हाथ से अपनी चप्पल गांठते थे. खुद अपने ऊँट का खरहरा करते थे. खुद अपने ऊँट का खरहरा करते थे. खुद अपने उँट का खरहरा करते थे. खुद अपने उँट का खरहरा

होहे पड़े सब के साथ उनका बरताव सदा एकसा होता था. बच्चों से उन्हें जास पुह्ज्बत थी. बीमारों को बेसने जाते थे, मुसलिस या गैर मुसलिम किसी का भी जनाजा (धरथी) जा रहा हो ता उठकर कुछ दूर उसके साथ जाते थे. उनका जीवनी लेखक सर विलियम म्यूर जिस्तता है—

"मुह्म्मद् साह्य की खास चादत थी छोटे चादिमयों के साथ बड़ी मुह्ब्बत और इष्यत का बरताव करना, कुक कर बलना, सब पर दया करना, किसी के कहे या किये का बुरा न मानना. अपने अपर काबू रखना और दिल बड़ा और हाथ खुला रखना. ये मुहम्मद साह्य के स्वभाव की खास बातें थीं जो हर बक्षत चमकती रहती थीं और जिनकी बजह से चास-पास के सब लांग उनसे प्रेम करने लगते के?

अहम्भद साहब की ज़िन्दगी पर कारलाइल ने लिखा

"वह प्रकृति की बड़ी गोद से निकला हुआ जिन्दगी का एक जबरदस्त दहकता हुआ अङ्गारा था जो दुनिया के बनाने बाले के हुकुम से दुनिया को रोशन करने और दुनिया को जगाने के लिये आया था."

मुहम्मद साहव के उपदेशों ने न सिर्क विछ दे हुए अरबों यक नई रह फूँ की बिल्क सैकड़ों बरस तक यूरोप को सी इस्म और तह जीव की रोशनी से जगमग रखा. इसलाम ने फलसके, क्योतिष, गणित, वैद्यक पर यूनानी और रामी के फलसके, क्योतिष, गणित, वैद्यक पर यूनानी और रामी के कां की किताबों के तरजुमे करके उन्हें बरबादी से बचाया और उनका फैलाया, कारडोत्रा, बरादाद, कैरा और सेबील की युनिवरसिटियों में इसलामी कलचर ने तरक्की पाई. जहां जहां इसलाम गया उसने वहां के इस्मा हुनर पर अपना ससर डाला. ममले जमाने कं यूरोप के मुल्कों पर जां सकान का अधेरा छाया हुआ था उस अधेरे का उसने इर किया और अन्ध विश्वास की जगह अक्रल को मले इर की कसीटी बनाने पर जोर दिया.

मराहुर फरांसीसी इतिहासकार गुयार्ड लिखता है— "संसते जमाने में इसलाम का इतिहास ख़ुद कलचर सीर तहुजीव का इतिहास था. यूराप धरबों का पहसानमन्द है कि अपनि जुनानी साहक और फासक का सापरवाही के बीदे दारों से निकास कर रोशनी में रखा और तोहक के तीर पर क्से यूरोप को भेंट किया. उसी का नतीजा था कि यूरोप में झान और विझान की नई लहर पैदा हुई जिसने बेकन को जन्म दिया. ईसा की सातवीं सदी में जबकि पुरानी दुनिया मौत के जबबे में कैंसी हुई तहप रही थी अरबों ने इसमें इस्म और कलचर का नया खून डाला और इसे जिन्दा किया. इन्होंने अरस्तू, अफ्लातून, इक़तेदस और आर्किमीडीज को मूली हुई याद की खन्दक से बाहर निकाला और उनकी रचनाओं के अरबी तरजुमे यूरोप को मेंट किये.

"यह बात बिला शुनहा कही जा सकती है कि तेरहवीं सदी के बीच तक पच्छिमी दुनिया का अपनी तहजीब की जिस तरक्की का नाज है वह तरक्की इसलाम के जरिये से हुई."

एच० जी० वेल्स ने इसलाम की कामयाबी का जिकर करते हुए लिखा है—

"एक नई निगाह और नए जोश के साथ मुसलिम अरबों ने ज्ञान विज्ञान की वह सिलसिलें बार तरक्की जारी की जिसे यूनानियों ने शुरू करके छोड़ दिया था. अगर यूनानी वैज्ञानिक खोजों का जन्म देने वाली मां थे ता अरब उन्हें दूध पिलाकर पालने वाली धाय मां. आजकल की दुनिया ने जो रोशनी और ताक्कत पुराने जमाने से पाई है वह रोमियों के जरिये नहीं बल्कि श्ररबों के जरिये."

एक दूसरा इतिहासकार बेकमैन लिखता है-

"मुहम्मद के अनुयाहयों ने दुनिया के भले के लिये जो बहुत सी काम की खोजें की और ज्ञान विज्ञान को तरक्की दी उसके लिये इम यूराप के रहने वाले उनके एहसानमन्द हैं, इसमें दो राय नहीं हो सकतीं कि इमलाम की राशनी पच्छिमी दुनिया के लिये एक बहुत बड़ी बरकत साबित हुई जिसके लिये हमें मुहम्मद और इसलाम दोनों का मशकूर हाना चाहिये.'%

इस तरह मुहम्मद साहब की जिन्दगी और उनके उपदेशों से न केवल अरबों की ही काया पलट हो गई, बल्कि यूरोप और दुनिया के लिये भी इसलाम झान-विझान की एक चमकती हुड़े मशाल साबित हुआ. आजकल की यूरोप की तहजीब बहुत दरजे तक इसलाम की ही देन है.

इचारत मुहम्भद ने करोड़ों इन्सानों की जिन्दगी को बदल दिया और उन्हें सकान के अँधेरे से निकाल कर ज्ञान الله المن في المناس اور فلسف كو الرواهي المنطوب كو الرواهي المنطوب كو الرواهي في المنطوب كو الرواهي في المنطوب كو الرواهي كو الله كل أسى كا المليحة تها كه يورب مين لايان أور وأدان كي الرواهي كو يهذا هوئي جسن بيان كو جام ديا، عيسول كي سالوس مين مين جبيد براني دنيا موت كي جبزے مين يهنسي ويلي توبي رهي تهي عربين لے أس مين علم أور كلحور كا نيا خون قالا أور أس زنده كيا ، أنهون لے أوسطو العامان الليدس أور كليميديو كو يهولي هوئي ياد كي خلاق سے باهر تكالا أور أول كي حوالي خوني ياد كي خلاق سے باهر تكالا أور أول كي دوبان كي حوالي عوبي توجمه يورب كو يهيدت كيا أي كي رچناؤن كے عوبي توجمه يورب كو يهيدت كيا . "\*

الیم بات بلا شبه کہی جاسکتی ہے که تیرهویں صدی کے نیچ تک پیچسی دنیا تو اپنی تہذیب کی جس توقی کا تاز ہے وہ توقی اسلام کے ذبیعے سے هوئی ."†

َ ۔ اُبِنِے ، بھی ، ویلس نے اِسلام کی کاسیابی کا ذکر کرتے ہوئے۔ انہا شـــــ

وایک لئی نگاہ اور نئے جوش کے ساتھ مسلم عربوں نے گیاں وگیاں کی وہ سلسلہوار ترقی جاری کی جسے یونانیوں نے شورج کوکے چھوڑ دیا تھا۔ اگر یونانی ویکیانک کھوجوں کو جنم دینے الی ماں تھے تو عرب آنھیں دودھ پلائر پالنے والی دھائے۔ الی ما کی دنیا نے جو روشنی اور طاقت پرانے زمانے سے بیاں ۔ آجال کی دنیا نے جو روشنی اور طاقت پرانے زمانے سے پائی ھے وہ رومیوں کے ذریعے شہیں بلکہ عربوں کے ذریعے "

أيك دوسرا إتهاسكار بهكمين لكهتا هي

محبد کے انویائیوں نے دنیا کے بہلے کے لئے جو بہت سی کام کی کہجیں کیں اور گیاں وگیاں کو ترفی دی اُس کے لئے مم یورپ کے رہنے والے اُن کے احسانماد ہیں اِس میں بو رائے نہیں ہوسکتیں که اِسلام کی روشنی پچھمی دنیا کے لئے اُلک بہت بوی برکت نابت ہوئی جس کے لئے ہمیں محمد اُور اِسلام درنوں کا مشکور ہونا چاہئے ۔ 88

اِس طرح متعدد صاهب کی زندگی اور اُن کے اُپدیشوں سے نہ کیول عوہوں کی ھی کایابات ھوگئی ' بلکھ یورپ اور دانیا کے لئے بھی اِسلام گیاں وگیاں کی ایک چمکتی ھوئی مشمل نابت ھوا ، آجکل کی یورپ کی تہذیب بہت درجے تک اِسلام کی دین ہے ،

حضرت محمد نے کرروں انسانوں کی زندگی کو بدل دیا اور آنیس اگیان کے اندھیرے سے نکال کر گیان

<sup>\*</sup> Stanislas Guyard : Encyclopaedie des Sciences Religieuses, Paris 1888.

<sup>†</sup> W. E. Hocking: the Spirit of World Politics, pp. 458-59.

History of Inventions by Beckman.

क रेक्सनी में ला खड़ा किया. इसलाम घर्म के बुनियादी उसली के इसलाम का मजह के इनकानियत बानी मानव धर्म का इस दिया. इसमें शुबहा नहीं कि सर्व धर्म सम् भाव, यानी सब मजह को एक चादर की निगाह से देखो—इस उसल का गुहुम्भद साहब चौर इसलाम ने बड़े जोरदार तरी के से प्रवार किया. . इरान में एक जगह नहीं बल्कि जगह-जगह मजह है कि इसलाम अपने जन्म के सी वरस के अन्दर चीन से लेकर स्पेन तक फैल गया और घसने थोड़े वक्त के अन्दर सैंकड़ों बड़े से बड़े स्कियों, फ्क़ीरों, फिलासफ्रों, कैशनिकों, इतिहास लेखकों, खाजियों और विद्वानों को जन्म दिया जिनके एहसानों के बाम से दुनिया दवी हुई है. نی روضی استهاد بیتی طرح دورم کا روت دیا، اس میں ادع تبایل استانی استهاد تبایل استانی استانی استانی ادار کی نگاہ سے دورم کا روت دیا، اس میں ادار کی نگاہ سے درودار اسلم نے بڑے زردار طربتہ سے پرچار کیا ، قرآن میں ایک جکہ نہیں بلکہ جکہ جکہ مذہبی آزادی کا نعوہ بلند کیاگیا ہے ، یہی وجہ ہک اسلم لیے جام کے سو برس کے اندر چین سے ایکر اسپین تک پیدل کیا اور اس نے تبررے وقت کے اندر سیکڑوں بڑے سے بڑے مونیں' نقیروں' فلسٹوں' ویکھائکوں' انہاس لیکھکوں' کوچھوں اور ودوائیں کو جنم دیا جن کے احسانیں کے بوجہ سے دنیا اور ودوائیں کو جنم دیا جن کے احسانیں کے بوجہ سے دنیا دیے ہوئی ہے ،

700 PAGES, 82 ILLUSTRATIONS 2 COLOURED MAPS

#### "CHINA TODAY"

PRICE

BY PANDIT SU DARLAL

Rs. 7. 8. 0

a vivid narration of the glorious and wounderful achievements of New China... A picture of China which is both convincing and authentic... the best book that has come out so far on New China in the English language ... the most objective in approach and comprehensive in treatment.

—National Herald, Lucknow.

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserves to be wide y known —Leader, Allahabed.

Encolopsedic...characterized by sente observation of detail as well as by..instinctive grasp of the fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China.

— Blitz, Bombay

A mine of information which gives a picture of China as nothing else dose...the best guide to New. China...Those who would like to understand what is happeing in New China can do not better than to study it.

—Bharat Jyoti, Bombay

The wealth of information it gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs.

—Indian Express, Madras

China Today is an eloquent tribute to his (Paudit Sundarlal's) shrawd understanding of men and matter...

tribuga to the lighty mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations

Tributations to the lighty mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations

Wight Dubbi.

प्रमेश १६६

364

TO ...

#### बाक्टर यद्यनाय सरकार

داكار يدو نائو سركار

जाज बहुमुद जैसा महान निजेता भी जपनी क्रज में गहरी होंद्र में स्हा है. उसकी अजीग्रश्शान राजधानी, जो किसी समय अञ्चानी खली हाओं की राजधानी, बरावाद से टक्कर होती थी. बाज महज एक मामुजी सा सुवाई शहर रह गया है. महमूद के दरबार के चालिमों में समार ह रा मशहर बिद्वान फिरदौसी और अलबेहरनी थे, जिनकी बजह से आज भी महमूद का नाम इतिहास में रौरान है, फिरदौसी महान कवि या और अलबेह्नी मणहर इतिहासकार. साइंसवां और फिलासफ्र, कहा जाता है कि अलवेशनी का नाम सनकर उसका समकालीन महान विद्वान इन्न सीना उसकी हों से सर गया था.

यह बात अकसर देखी गई है कि बहुत कम लोग एक ही बक्क में साइंसदां और फिलासफर हुये हैं. इन्हीं गिने चुने डब लागों में चलबेहानी की भी गिनती है. मारत में मलबेहनी की यादगार मनाने का मबब यह है कि चमने भारत पर 'तहकी कल-दिन्द' नामक मराहर ग्रथ लिखा है. इस प्रेथ में ईसा से 1000 बरन बाद वाले भारत का वर्धान है. इस पुस्तक को लिखकर अलबेह्ननी ने संसार के सामने उस समय के भारत की करूवर, इतिहास, भूगोल, सामाजिक दराा, फुलसफा और इल्म का बसीम और बास्तविक चित्र पेरा किया है. यह पुस्तक सातवीं सदी बाले भारत तथा भक्षर कालीन भारत को मिलाने में कड़ी का काम करती है सासबी राताब्दी में प्रसिद्ध चीनी वात्रियों ने भारत की सैर की भी क्वीर चन्होंने इस समय की भारत की हालत तथा श्तिहास का बर्गान किया है. उसके बाद 'तहर्क क त-हिन्द' के भलाबा कोई दूसरी पुस्तक नहीं जिससे हमें भारत के इतिहास का पता चलं. अकबर के समय में स॰ 1590 में 'माईने-अकवरी' लिखी गई, इस तरह सातवीं सदी से ग्यारहर्वी सदी तक के भारत का असली पता संसार का भलवेखनी की पुस्तक से ही मिलता है.

#### मलबेहानी की जिन्दगी और काम

अलबेरुती का पूरा नाम अबु रैहान सहस्मद था. उसका जन्म \$62 हिंकी या सित्र १६ 973 ई० में स्तीब नामक र्यान पर हुआ था. यह स्थान मध्य प्रशिवा में बुराल सागर क कनार है. पवहत्तर वर्ष का उस में 13 सितम्बर सन् 1048 का अज़बेहता का भार हुई, ज़रू अज़ज़बेहती के

الي محود جيسا مهان وجيتا بهي أيني قدر مين كيس المعد موں سو رہا ہے ۔ اِس کی عظام الشان رابعدہالی جو کسی سُبني مُنِلسي خليفاؤن کي راجوهاڻيءُ بنداد سے تکو ليتي تھ آلے معطن ایک معبولی سا صوبائی شہا رہ گیا ہے ، محبود کے التربار ك عالمول مهل سلسار كرمشهور ودوان فردوسي أور ألبه وثي الله على الله الله الله على محمود كا قام إتهاس مين روشن ه ، فردوسي مهان كوى تها أور البهروتي سشهور إتهاسكارا سأتنسدان أور فلسفور كها جانا ها كه المهروشي كا تام سنكر أس كا سمكاليين مهاي ودول أبن سينا أس كي هور سه در كيا تها .

ایه بات اکثر دیمی گئی ہے کہ بہت کم لیگ ایک هی وقامت مين سائلسدان أور فلسفر هوئل هين ، إنهان كلم چلم عهم لوگوں میں الهورونی کی بھی گنای ہے . بھارت میں الهورونی کی عاد الله مالل لا سبب يه هد كه أس تي بهارت ير "تحد ق البلد" المك مشهور كرنته لها هي إس كرنته مين عيسي سے 000 . ہوس بعد والے بھارت کا ورثنی ہے، اِس پستک کو لکھ ک البهروثی فے ساسار کے ساملے اُس سائے کے بھارت کی کاچور اِتہاس بدوگال سام اجک دشا ا فلسانه اور علم کا بسیم آور راستیک چتر پیش كها هم يه يستك ساتوين صدى وألم بهارت تتها أثير كالين بها عد کو ملالے میں کوی کا کام کرتی ہے ۔ ساتویں شتابدی میں برسدھ چیٹی باتریس لے بھارت کی سور کی تھی اور اُنھیں نے اُس سٹے کی بھارت کی حالت تھا اِتہاس کا ورثن کیا ہے ، اُس کے بعد المحقوق الهذا کے علوہ کوئی درسری بستک نہیں جس سے همیں بہارت کے اتباس کا یاہ چلے ، انبر کے سمہ میں (1590 مين "آئين اکبري" لکهي کئي ، اِس طبح سابيس صدي سے گیارہویں صدی تک کے ہمد کا اصلی بته سنسار کو البیرونی کی يستنب هـ هي ملتا هـ .

#### البيروني کي زندگي اور کام

البهروئي كا پورا نام اببريحان محمد تها . أس كا جام 362 هجري يا ستمبر 973م مين خهو تامك استهان پر هوا تها. به استهان مدهیه آیشیا مین بوال ساگر کے کنارے ہے ، پنجیتر روش کی عمر میں 13 ستمبر سن 1018 کو البدروتی کی مرت ہوئی ۔ جب البدروتی کے

the same of the same of क्या हो चलके सलवान ने अलबेरूनी को नहमूद के पास अपना देलवी बनाकर जेजा. महमूद के साथ-साथ अल बेह्मनी भी भारत आया. संहम्द की भारत विजय से पत्नाव का दरवाजा ससलमानों के लिये खुल गया था. पञान ही बारतीय आर्थी का पहला निवास स्थान था. अलवेरूनी वशाब में कई वर्षी तक रहा और वहां के पंडितों से संस्कृत, हिन्दू द्रीन्शास, विज्ञान और धर्म शिक्षा की तालीम ली. इसमें भारतीयों को अरबी पस्तकों के जरिये प्राचीन यूनानी विश्वान तथा दर्शनशास्त्र की शिक्षा दी. अलबेहनी खुद बुनानी भाषा नहीं जानता था पर सीरिया और स्पन के शकाओं के समय में यूनानी पुस्तकों के घरवी भाषा में जो अञ्चल हुए वे उनके जरिये उसने प्राचीन यूनानी विज्ञान क्षया दर्शनशास्त्र का ज्ञान प्राप्त किया था. धरवी भाषा में किसी गई अपनी पुस्तक 'तहक्रीकल-हिन्द' में उसने भारतीय धर्म, दर्शनशास, भाषा, काल विज्ञान, खगाल, ज्योतिष, रीति-रिवाज, क्रानून और फलित ज्योतिष आदि का परा बूरा और ठीक बयान किया है. यह पुस्तक 1030 ई० के करीय लिखी गई थी. इस पुस्तक का अनुवाद डा० सचायु ने अंग्रेजी भाषा में सन् 1888 में किया है. अलबेहनी जब 421 हिजरी, (1030 ई०) में लौटकर ग्रजनी गया तो उसने 'क्रानूने-मसूदी' नामक पुस्तक लिखी जो एक प्रकार की मीगोलिक तथा खगोल ज्योतिष सम्बन्धी इनसाइक्लोपीहिया है. इस पुस्तक का हवाला बाद के लेखकों और सासकर अबुल फ़िदा ने दिया है. अबुल फ़िदा प्रसिद्ध भूगोल तथा ज्योतिय शास्त्री था.

अलबेरूनी को साईस के दायरे में जितना अधिक ज्ञान हासित या उसका पता इसकी उसकी लिखी गई प्रतकों से मिलता है. विज्ञान सन्बन्धी पुरतकों में 'किताबुल-सैसान', 'किताबुल-जवाहर' भीर 'अलतहफीम' हैं; 'सैदान' में इलाज में प्रयोग होने वाली भौविषयों का बयान है. किताबुल-अबाहर' में मिए भीर हीरे जवाहिरात आदि का वैझानिक वर्धीन और 'अलतहफीम' में फलित ज्यातिष का बसीच चिक है. 'अलतहफीम' का अंग्रेजी तरजुमा राइट ( Wright ) ने 1934 में किया है. इन प्रंथों के अलावा इसने अपने आत्मवरित्र पर एक पुस्तक लिखी है और रेकागियत तथा ज्योतिष पर कई छोटी-छोटी कीमती पुस्तकें जिली हैं. उसकी सबसे मराहर प्रतक 'असरल-बाक्री' है जिसका तरजुमा डा० साचाय ने 1879 ई० में किया है और बसका नाम ''बेरिटजेज चाफ दि पास्ट" या ''क्रोनोलाजी काक वि पेनरोयट नेरान्स" है. इस पुस्तक में परिाया, अक्षीका और यूरोप के देशों का साक और पूरा भौगोलिक स्था देशिहासिक वर्यान है.

المال في الفرواني أو معتبد كي ياس أبنا المعين بنا كر بينجا حدول كي الله علم الهوراني بن يعارك أي عصرد كي بهارت بجار ے منجانیکا فیواوہ مسلمانوں کے لئے کل کیا توا منجابھی بھارتیہ أيبري لا يهلا توالس استهان تها. ألبدرولي يلجاب مين كثي ورشور تك رہا اور رہاں کے پلتتیں سے سلسعرت عندو درشن شاستر وگیاں ل، دهرم شکھا نی تعلیم ئی ۔ اُس فے بھارتھوں کو عربی مستمون کے ذریعے پراچین بہنائی وگیاں تنہا درشن عاستر کی شکشا دى . البيرولي خود يولاني بهاشا نهيل جانتا تها ير سيريا اور اسیس کے راجاؤں کے سے میں یونائی ہستیوں کے عربی بہاشا میں جو اثواد ہواء تھے اُن کے ذریعے اُس نے پراچھن ہونائی كيل تتها درهن شاستر كا كيان يرأيت كيا تها . عربي بهاشا مهن لهي گئي اپني يستک تحييق الهند؛ مين أس نے بهارتيه دهرم؛ درشن شاستر' بهاشا' کال وگهان'کهکول' جهونش' ریتی روأیے' قانین اور پهنت جیوتش آدی کا پیرا یورا اور قبیک بیان کیا ہے . یہ پستک 1030ع کے قریب لکھی گئی تھی . اِس پستک کا ادراد ڈائٹر سچایو نے انگریزی بھاشا میں سن 1888 میں نيا هـ ، البيروني جب 421 هجري ( 1030ع ) ميں لوثار غونی گیا تو اُس نے افائوں مسمودی انامک پستک اکھی جو ایک پرکارکی بهوگولک تنها کهکول جیوتش سمبندهی أنسایلکوپهدیا ھے اِس یستک کا حوالہ بعد کے لیکھکوں اور خاصکر ابوالغدا نے دیا ھے ، ابدالفدا برسدھ بہرگول تتھا جیوتش شاستری تھا ،

البیروتی کو سائنس کے دایرے میں جننا ادھک گیان حاصل تھا آس کا یکہ ھمکو اُس کی لکھے گئی ھستکوں سے منتا ہے۔ وگیان سہندھی پستکوں میں 'کتابالسیسان 'کتابالتجواھر' اور القیلیم ھیں ۔ 'سیدان' میں علجے میں پریوگ ھونے والی ارشدھیوں کا بیان ہے' 'کتابالتجواھر' میں منتبی اور ھیرے جواھرات آدی کا ویکیائک ورئی اور التہنیم میں پیلت جیوتش کا وسیع ذکر ہے ، والتہنیم' کا ادکریزی ترجمہ رائٹ Wright ) نے بر ایک پستک لکھی ہے اور ریکھائونٹرت تھا جیوتش پر کئی پر ایک پستک لکھی ہے اور ریکھائونٹرت تھا جیوتش پر کئی جہوئی جھوٹی قیمتی پستکیں لکھی ھیں ، اُس کی سب سے جہوئی جھوٹی قیمتی پستکیں لکھی ھیں ، اُس کی سب سے مشہور پستک '(ٹرالباتی' ہے جس کا ترجمہ قائٹر ساجایو نے مشہور پستک '(ٹرالباتی' ہے جس کا ترجمہ قائٹر ساجایو نے میں ایشیان نام ''ویسٹیجیوز آف دی پاست'' میں ایشیا' ہے اور ایس ایشیا' افریقہ اور پورٹی کے دیشوں کا صاف اور پورا بیوگولک میں ایشیا' افریقہ اور پورٹی کے دیشوں کا صاف اور پورا بیوگولک نیا ایتیشک ورٹین ہے ۔

the area were the first ?- फर्क अवके दाय से कसी बाहर नहीं रहती और उसकी आहें कभी भी पुस्तक के बाहर नहीं होती और इसका स्वाम इमेशा अध्ययन की मोर लगा रहता है." वेहकी नामक राजनी का इतिहास कार लिखता है-"अबू रैहान ( असबेरूनी ) तुलना से परे था, बह अदब, पन तथा इस्म में अपने समय के सभी लोगों से बहुकर था, वह वडा सच्चा था. वह जो क्रब्र भी जिखता या चसे कसीटी पर कसकर लिखता था, एक सक्षेत्र को जी की यही सक्वीनिशानी है." उन्नीसबीं सदी का एक बांग्रेज समालाचक लिखता है- "अबुरैहान ही केवल ऐसा भरव लेखक है जिसने ऐतिहासिक जानवीन की असली भावना से पूर्व की क्रश्मी करवर की खांज की है. अलबेहानी की सादगी, इस्म तथा श्राचरण का पता इस बात से भली भांति चलता है कि जब इसने सुस्तान मसूद को उसकी जीवनी 'क्रानूने-मसूदी' लिलकर भेंट की तो मसूद ने हाथी के बोक भर चांदी की सिक्के उसे इनाम में दिये पर अलचेहनी ने उसे शाही खजाने में वापस कर दिया.

'तहकी क़ुत-हिन्द' के अन्त में अलबेरूनी ने लिखा है-"मैंने अरबा में दो संस्कृत की पुश्तकों का नरजुमा किया है, इनमें से एक का नाम 'सांख्य' है जिसमें संसार की मौजूरा सभी चीजों की पैदायश और गुणों का वर्णन है और दूसरी पस्तक 'पातजलि' है जिसमें जिस्म से रूह किस प्रकार मुक्ति पाती है इसका जिक है."

'तहकीकृल-हिन्द' में अलबेखनी ने उत्तर परिचमी पंजाब, काबुल और उत्तरी भारत के उन मुख्तलिक राज-घरानों का बयान किया है जिनसे महमूद को ताल्लुक हुआ. उसने सुस्तान महमूद के हमले की ठीक तिथि दी है और सामनाथ के मन्दिर के असली स्थान का वर्णन किया है. उसने उस कथा का भी वर्णन किया है जिसके मुताबिक सोम-नाथका मन्दिर बना, उसके बाद हिन्दु ओं की उस समय की दार्शनिक परम्परान्नी तथा रीत-रिवाजी, धार्मिक विश्वासी, श्राचार-विवारों तथा अमली रीतियों का वर्णन किया है जैसी कि वे 1030 में थीं, पुस्तक में जो भौगोलिक बयान है वह बढ़े काम का है. हमें अलबेहती के विरये इस तकलीकदह कहानी का पता चलता है कि किस तरह हजारों हिन्दू महमूद द्वारा गुलाम बनाकर भारत से जबरन ले जाये गये श्रीर फिर बह कितने वर्षों 'के बाद किस दशा में भारत लौटे और फिर किस सरह पंचगव्य से उनकी श्रांद हुई और वे फिर हिन्दू धर्म में दाखिल हुथे.

मत्रकेती चीर मनुत्रफ्रज्ञत

भक्तमेरुनी के क़रीब 600 वर्ष बाद अबुकपल की लिखी 'आईमें चक्वरी' नामक पुस्तक में हिन्दू खोतिय, इतिहास

العرش الب - بالمران للها علم في الله ي ها من الكور الما و المال المالي الكون الكون المالي المالي المالي المالي المالي المالي المالي المالي المُبْكِينَ كِي بادر فيس مرتب ابر أس لا دعيان منيعه أَدَدُونَيَ و أبر اللارمنا هـ " ببهقي نانك غوني كا إنهاسكار لهمنا هست البه يعدني ( البه ولي ) نولنا = يرحم تها ولا أدب فن تلها علم من ان سم کے سبھی لرگوں سے بوء کو تھا ، وہ بوا سمچا تھا . و کی کی انہا ہو کہ انہا ہو کہ انہا ہو کی کہ انہا ہا ۔ ایک منع کورجی کی یسی سجی تشانی هی او آلیسویں صدی کا ایک التعوية سمالوچك الهما هـ البريدان هي كهول أيسا عرب ﴿ لَيْعَبُّكُ فِي حِس فِي أَيتَهَاسِكَ جِهَانِ بِدِن أَي أَعَلَى بِهَاوُنَا سَهُ وَرَرُو کی قدیمی کاهور کی کہرہے کی ہے، البورونی کی سادگی؛ علم نتھا أَلْهِرِنْ لَا يَلِمُ إِسْ بِاللَّهِ سَ بِهِالِي بِهِاللَّقِي خِلْنَا هِ كَهُ جِبِ أُسْ لَهُ سلطان مسعود کو اُس کے جیوتی افاتون مسعودی کاکیکر بھیلات کی تر مسمود لے هانهی کے بوجھ بھر چاندی کے سکے آسے انعام میں دیگے پر البدرونی نے اسے شاعی حوالے میں واپس کر دیا ۔

التحقیق الهند ؛ کے انت میں البیرونی نے انہا ہے۔ "میں لله عربي مين دو سنسكرت كي يستكس لا نرجمه كها هـ؛ أن میں سے ایک کا نام اسانہیں ہے جس میں سنسار کی موجودہ سبھی چیزوں کی پیدایش اور گنوں کا ورثن ہے اور دوسری یسٹک 'پاتلجای' ہے جس موں جسم سے روح کس پرکار معتى ہاتى ہے اِس كا ذكر ہے ."

التعقيق الهندا مين البيروني في أنرمي بشجمي ينجابا کابل اور اُدری بہارت کے اُن مختلف، راج گھرانوں کا بیان دیا ا بدن سے محمود در بعاق ہوا ، أس نے ساطاً ، محمود كے حلے کی ٹیبک تاہی دی کے اور ۔ومنانع کے مندر کے اصلی استهان کا ورنین کیا ہے . اُس نے اُس نتها کا بھی ورنی کیا ہے بھس کے مطابق سومذتھ کا مادر بنا ، اُس کے بعد هندوں کی أس سم كي دارشفك يرمهراي تنها ريترواجون دهارمك وشواسوں أچار وچاروں نتها عملی ريابوں كا ورنس كيا هے جيسى که وی 1030 موں تھیں ۔ یسنک میں جو بھوگولک بیان سے وا بوے کام کا ہے . همیں البيروني کے ذريعے اِس تكليف دة بهائي كا يته جلتا في الد الس طرح ، وأربل عليو محمود دوارا علم بفاکر بھارت سے جبراً لیے جائے کئے اور بھر وہ کتابے ورشوں کے بعد کس دشا میں بہارت ارثے اور پھر کس طرح بندچکریہ سے اُن کی شدهی هوانی اور رب پیر هندو دعوم میں داخل هوئے ،

#### البهرونى اور ابوالغفل

البيرولي کے فریب 600 وزھی بعد ابوالنقل کی لعنی ألين ادري نامك يستك مين هدو جيوته أيهلس क्षा है। विद्यान, देखि विवाद, आवार विदार शीर क्षेत्रपराओं का पंडिताना बनाम इने पदने के मित्रता है। अनुस्कालत की अपनी पुस्तक आहेंने अकबरी के लिखने में अबाह अकबर की पूरी मदद हासिल थी जबकि अलवेरूनी के अपनी मंत्री से महत्व अपने कृते पर 'तहक्रीकृत अवव' किसा था.

क्रमंत्र जोरेट, जो 'बाईने-बक्बरी' का होशियार

वर्षु माकार माना जाता है, लिखता है—

"मुक्ते इसका पूरा पेतकाद है कि अबुल फ्जल 'आईने-अवस्थी' के लिये अलबेरूनी का रिग्री है. अलबेरूनी का कारमयन वांडित्यपूर्ण था. इसने इर स्थान पर अपने पाठों बैं संस्कृत की उन पुस्तकों का हवाला विया है जहां से वह किये गये हैं. चू कि वह अरबी भाषा में अनुवादित यूनानी आहिरय से भी भली मांति वाकिक था इसलिये वह युनानी और संस्कृत दोनों में भली प्रकार तुलना कर सकता था कीर ठीक नतीजे पर पहुँच सकता था. अबुल फजल इसके वरिक्रताफ था. अलबेरूनी ने जो कुछ लिखा है वह अध्ययन पाकित्य और वैज्ञानिक तर्क वितर्क के आधार पर लिखा है अर अबुल फजल ने या तो सीधे किसी पुस्तक का अनुवाद किया है या सुनकर कोई बात बिना सर्क पर कसे हुए ही किया डाली है. अबुल फ्यल संस्कृत या यूनानी भाषा दो में किसी को भी नहीं जानता था. डब्लू कुक ने लिखा है कि अलबेहनी के चतुर दिमारा ने इस बात का पता क्रमाने में इस समय भी कामयाबी हासिल की थी कि भौगौ-किंक रूप से अलग होने के कारण भारतीयों में अपने धर्म. राष्ट्रीयता तथा रीति-रिवाजों के तरफ अधिक विश्वास 🧱 हो गया है. उसने इस बात को उसी समय भांप लिया था कि 'हिन्दुओं का विश्वास है कि उनके देश से बहुकर दूसरा देश नहीं, उनके राष्ट्र की भांति काई दूसरा हाइ नहीं और उनके विज्ञान जैसा कोई दूसरा विज्ञान नहीं." असमेरूनी के स्वास्त्रिक आख़री फ़ैसला

बहुत बड़ा जालिम जीर पंडित होते हुए भी अलबेरूनी व इस्लाम में नई रूह नहीं फूँकी और अलमांमू के समय की कुर्बास्की सन्प्रदाय की भांति बुद्धिवाद का प्रवार नहीं किया. विद्यासमा में कभी भी बुद्धिवाद (Rationalism) व इसलाम में कभी भी बुद्धिवाद (Rationalism) व इसलाम में कभी भी बुद्धिवाद (Rationalism) व इसलाम में कभी भी विद्यात के बाहर फेंक दिया. व इसलाम को सन्ति केवल ज्यांतियी, इतिहास-कार, गांख्यक जीर आदूगर की ही बनी रही जो कि अपनी प्रकार से मिष्ट की घटनाओं की सनाई बताता रहा. स्थान महमूद उसकी अजीवो सरीव ताक्रव से परेशान की खीर इसे मार डाल्यन वाहता था.

क्षा भी हो जलवेरली सुले दिमारा का साक्षमी आदमी मा इस सम्बन्ध में इसलाय के इतिहास में इसका कोई السجه اس كا يبرأ أعتقاد في كم أبوالفقل النين أكبري ع الله البيروني كا رقي هـ ، البيروقي كا المعين باندتيه بون تها . أس في هر استهان ير ايني بالهون مين منسكرت كي أن يستكين كا حواله ديا هے جہاں سے وہ لئے گئے هيں . چونكه وہ عربي بهاشا مين أتوادت يوثاني ساهتيه سه بهي بهلي بهالت وأنف تها إس ليُّه وه بوذائي اور ساسكرت دونون مين يهلي يركار تولفا كرسكتا تها أور تهيك تترجي ير يهوني سكتا تها . أبرالخل اس كے برخاف تها . البيروني نے جو كچے انها هـ وہ اددھیں اندتیہ اور ویکیانک ترک وترک کے آدھار ہو لها هے يہ أَبُوالْ فَلَ فِي يَا تُو سَيده كسى السَّك كا أنواد كيا ہے یا سلکر کوئی بات بنا ترک پر کسے ہوئے ہی لکھ ڈالی ہے . أبرالغفل سنسكرت يا يوثائي بهاشا دو مين سے كسى كو بھى نہیں جانفا تھا ، ڈیلر کررک نے اٹھا تھے که البیرونی کے چترر دماغ لے اِس بات کا بته لگانے میں اُس سے بھی کامھابی حاصل کی تھی که بھرگولک روپ سے الگ ھونے کے کارن بھارتیوں میں اپنے دھوم' راشارئیتا تھا ریترولجوں کے طرف ادھک وشواس آئین ہوگیا ہے، اس نے اِس بات کو اسی سے بھائپ لیا تھا کہ 'مندؤں کا وشواس کے کہ اُن کے دیفس ص برهکو دوسرا دیھی فیفن اُن کے راشتر کی بھانت کوئی دوسرا زاشار نبہیں اور ان کے وگیاں جیسا کوئی دوسرا وگھان

#### البهرولي کے متعلق آخری نیصله

بہت بڑا عالم اور پنت ہوتے ہوئے بھی البوروئی نے اِسلام میں نئی دوح نہیں پہرنکی ارر الماموں کے سب کی موزلی سب دئی دوح نہیں پہرنکی ارر الماموں کے سب کی موزلی سب دئی اِسلام میں کبھی بھی بدھیوات او (Rationalism) پہرنچا تو علماؤں نے اُسے کہرکی کے باعر پہینک دیا ، اِسی طرح البھروئی کی گنتی کھرل جھوتشی اِنہاسکار گلونکھ، اور جادوگر کی ھی بلکی رھی جو که اپنی گنونا سے بھرشیہ کی گہناؤں کی سبچائی بنگارہا ، سلمان محصود اُس کی عجیب و غریب طاقت سے پہرسی تھا اور المحصود اُس کی عجیب و غریب طاقت سے پہرسی تھا اور المحصود اُس کی عجیب و غریب طاقت سے پہرسی تھا اور المحصود اُس کی عجیب و غریب طاقت ہے پہرسی تھا اور المحصود اُس کی عجیب و غریب طاقت ہے پہرسیانی تھا اور اُس

کھیں ہو البیروتی کیا دماغ کا ماف کو آپسی تھا ۔ اِس مشہدہ میں اسلم کے انہاس میں اُس کا کوئی

اللی استان کے اس کے ایک اور اپنا معاومی کے اور اور یہ کا اس کے مواکد والی اور اور یہ کا اس کے مواکد المیورونی کے جس دلی یعامی کے آجھوں المیات کے ساتھ کام کیا ہے اس کی دوسوی مثال کام کیا ہے۔

#### भारतीय संस्कृति

#### بهارتيه سنسكرتي

श्री कृष्णदुत्त बाजपेयी, एम० ए०

हमें यहां भारतीय संस्कृति (हिन्दुस्तानी कल्चर) के बारें

कें कुछ विचार करना है. भारतीय संस्कृति में रहानियत

को माद्दी पहलू के मुक्ताबले में स्थादा भहमीयत दी गई है.

यदि हम भपने विशाल प्राचीन साहित्य को देखें तो मालूम

होगा कि हमारे यहां आत्मझात का स्थान बहुत उंचा रहा

है. 'आत्मनं विजानीहि' (आत्म को खास तौर मे जानो)—

है. 'आत्मनं बिजानीहि' (आत्म को खास तौर मे जाना)— यही मारतीय रिवियों का असली पैरााम था. लेकिन इसके साथ हो जिस्मानी और मानसिक तरक्षकी की ओर से भी हम बेबहरा नहीं रहे. रूडानी तरक्षकी के साथ जिस्मानी और मानसिक तरक्षकी हमारी संस्कृति का मक्रसद रहा है. कमें निष्ट्रय, मन और बुद्धि की लोक कल्याग्रकारी व्यवस्था पर हमारी संकृति की इमारत खड़ी हुई. सत्य, बाईसा,

पर हमारी संकृति की इमारत खड़ी हुई. सत्य, कहिंसा, त्याग और सेवा - ये इस इमारत के चार बड़े खम्भे रहे हैं, जिन्होंने युग-युगों तक उसे मजबूती और स्थायित दिया

भीर उसे नष्ट होने से बचाया है.

भारतीय संस्कृति का मक्तमद संकृतिन न होकर व्यापक रहा है. भारत के प्राचीन इतिहास को उठाकर देखिये. हवारों वर्ष के सम्बे काल में कितनी ही अन्दरूनी और बाहरी विचार घाराओं को लेकर भारतीय संस्कृति ने उन्हें पना लिया. विचारों की इतनी घाडादी और कहां मिलेगी १ हमारे घर्म, दरान, कला, साहित्य सभी में इस आजादी की हमायश मिलेगी. हठवर्मी को हमारे यहां अच्छी बात नहीं माना गता है. गीता में भी कृत्या चर्जुन को झान-विद्यान को उपदेश देने के बाद भी बससे कहते हैं कि 'हे चर्जुन !मैंने तुमे गहरा से गहरा साम का मर्म बताया इस पर तु विचार कर और شری کرشن دت باجهیئی ایم . اے .

همیں یہاں بھارتیہ سلسکوتی ( هندستانی کلنچر ) کے بارے مد کنچہ وجار لرفا ہے ۔ بھارتیہ سلسکوتی میں روحائیت کو مدی گئی ہے ۔ یدی هم اپنے وشال پراچین ساهتیہ کو دیکھیں تو معلوم هوگا کہ همارے بہاں آئم گیان کا استہان بہت اُرتیجا رہا ہے ۔ 'آئسلن وجائیہی ( آئم کو خاص طور سے جائو ) سیھی بھارتیہ رشیس کا اصلی پینام تھا ۔ لیکن اُس کے ساتھ هی جسمائی اور مائسک فرقی کی اور سے بھی هم بےبہرہ نہیں رہے ۔ روحائی ترقی کے ساتھ جسمائی اور مائسک ترقی هماری سنسکوتی کا مقصد رہا ہے کرمیلدریہ من اور بدهی کی لوک کلیانکاری ویوستھا پر هماری سلسکرتی کی عمارت کھڑی ہوئی ۔ ستیہ اُھنسا تھاگ اُرر سلسکتی کی عمارت کھڑی ہوئی ۔ ستیہ اُھنسا تھاگ اُرر سیوا ہیں عمارت کے چار بڑے کہیے رہے ہیں نے اور اُسے نشف سیوا ہو یہ بچھایا ہے ۔

بھارتیہ سلسہ تی کا مقصد سلکوچت نہ ھوکر وہایک رھا ہے۔
بھارت کے ہواچین اِنہاس کو آلهاکر دینھئے۔ ھؤاروں ورش کے لبیے کال
میں کتنی ھی آندرونی اور باھری وچار بھاراؤں کو لیکہ بھارتیہ
سلسکوتی نے آنھیں پنچا لیا ، وچاروں کی آنلی آزادی اور
کہاں ملیکی ؟ ھمارے دھرم' درشن' کلا' سلمتیہ سبھی میں
اِس آرادی کی نمائش ملیکی ، حت دھرمی کو ھمارے بہاں
اُجھی بات نہیں مانا گیا ہے ، گیکا میں شری کرشن ارجن کو
گیاں وگیان کا آپدیش دینے کے بعد بھی آس سے کہتے ھیں کہ
گیاں وگیان کا آپدیش دینے کے بعد بھی آس سے کہتے ھیں کہ
پر نر وچر کر اور وچار کرنے کے بعد تعجے جو ٹھیک جان پڑے
پر نر وچر کر اور وچار کرنے کے بعد تعجے جو ٹھیک جان پڑے

166

ىل 256 ا

विशादी की इस वाकानी के कारण है। इसार बहु महि, स्मृति, वहुवरान, बीस एवं जैन दर्शन, लोकायक, महित, विशिष्टाहैत, शुद्धाहैत, हैताहैत चादि कितने ही दर्शनों भीर मत मतांतरों की रचना हुई. चाधुनिक काल में भी अनेक महास्माचों भीर विद्वानों ने विचारों के अपने अपने नवरिये पेश किये हैं. लेकिन जीवन-दर्शन के इन मुख्यलिफ नजरियों के हाते हुए तथा इस विशाल देश में आबहुता की विविधता के कारण बाहरी रूप में अन्तर हाते हुए भी इमारी संस्कृति की भारमा एक रही है. कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक तथा सीराष्ट से लेकर असम तक सारा देश एक ही करूवर से जिन्दगी का रस लेता रहा है, विविधता में एकता की यह मावना भारत की विशे-चता है.

इतिहास से पता चलता है कि एक दीर्घकाल तक संसार के अन्य देशवासियों ने भी इससे लाभ उठाया. बहुत प्राचीन समय में भारत ने मिस्न, चर्सारिया चौर बेबी-लोन से तिजारती और करूवरी मेल जोल कायम किये. मीर्य सम्राट अशांक ने असीरिया, मिस्न, मेसीडोनिया, रपीरस, तामपर्णी, सुवर्णभूमि मादि मनेक देशों को मपनी 'धर्म-विजय' का संदेश भेजा. ई० पूर्व दूसरी शनाब्दी के बन्त से मध्य एशिया में भारतीय नवाबादियों की ग्रह्मात इर्ड. भीरे-भीरे वहां कोन्छद, खातन, करमद, मह्रक, कृबी, अग्निदेश आदि राज्यों में भारती धर्म, कला, भाषा और साहित्य का विकास हुआ. इनमें से कूवी और स्रोतन (इस्तन) भारतीय संस्कृति के प्रधान केन्द्र हुए. लातन के राजाओं के नाम विजयसंभव, विजयवीर, विजयजय, विजय षर्मं भादि मिलते हैं. वहां का 'गोमित बिहार' बौद्ध शिक्षा का बहुत बड़ा केन्द्र था. चौथी शताब्दी के अन्त में जब चीनी यात्री फाहियान वहां गया तब महायान मतावलम्बी 8,000 बौद्ध भिन् इस विहार में रहते थे, तथा वहां धर्म बात्राएं वहे समारोह के साथ बलती थीं.

हैसा की पहली है सिद्यों में दक्षिण-पूर्वी एशिया में कई भारतीय बस्तियों की स्थापना हुई. हिन्द चीन के एक बढ़े भाग का नाम 'धुवर्ण भूमि' तथा हिन्दिशिया के द्वीपों का नाम 'धुवर्ण द्वीप' प्रसिद्ध हुआ. वहां जिन भारतीय राज्यों की स्थापना हुई उनके नाम कम्युज चपा. काठार पांडुरंग, बी बिजय, मालब, दशार्ण, गंवार आदि मिलते हैं. इसी तरह अनेक नगरां के नाम अयोध्या, दैशाली, मथुग, बी बेज तक्षशिला, हसावती, कुपुमनगर, रामावती, धान्यवती, द्वाद्यती, विक्रमपुर आदि मिलते हैं. धुवर्णभूमि तथा धुवर्ण होय में मारतीय रहन सहन रोति रिवाज, लिपि, भाषा और किसा का प्रचार हुआ। बहां के आदिम निवासियों के साथ बारतीयों ने जिस प्रेम स्थीर सहिष्णाता का वर्षाव किया

بالدر الم الله المراق المراق

إنهاس سے بتد چاہ ہے که أیک دیرگ کال تک سنسار کے اند دیھی واسیوں لے بھی اِس سے لابھ اُٹھایا ، بہت پراچین سے میں بھارت کے مصر اسیریا اور بیبلیوں سے تعجارتی اور کلنچری میل جول قایم کئے ، مرزیہ سمرات اشوک نے اسھریا<sup>6</sup> مصر عيسيدونيا أيدرس تامريرني سورن بهومي أدى أنيك دبشان کو اینی ادهرم وجائه کا سندرهی بهیجا ، عیسری بورو درسری شتاردم کے افت سے مدھیہ ایشیا میں بھارتیہ نوآبادیوں كي شروعات هولي . دهورت دهورت وهان كوكود؛ ختن؛ كلند؛ بهروك كوچئ آئني ديش آدي راجيس مين بهارتيه دهرم للا بهاشا اور ساهتیم کا وکاس هوا ، اِن میں سے کوچی اور ختن (کستن ) بھارتیہ سلسکرتی کے بردھان کیندر ھوئے ، خان کے راجاؤں کے قام وجیئے سمبھو' وجیّہ ویر' وجیّہ جے' وجئے دھرم آدی ملتے ھیں ۔ وھاں کا حکرمتی وھارہ بودھ شکشا کا بہت ہوا کیندر نہا . چوتھی شناہدی کے انت میں جب چبنی یاتری فاهیان وهان گیا تب مهابان مثاولسی 000ولا بردة بهكشه أس وهار مين رهام تها تها رهال دهرم ياترانهن رے سماروہ کے ساتھ چلکی تھیں ،

عیسول کی پہلی چھ صدیرں میں دکشن پرہی ایشیا میں نئی بھارتیم ہستایوں نی استهاپنا ھئی، ھند چین کے ایک ہزے بھاگ کا نام اسروں بھرمی' نتھا ھندیشیا کے دبھوں کا نام اسرو دبھی اسروں بھرمی' نتھا ھندیشیا کے دبھوں کا نام استهاپا ھوئی اور کے نام کا میم چمھا' کوئیار پائڈورنگ' شوی مئی مالب' دشارن' گندھار آدی ملتے ھیں، اِسی طرح الایک نشروں کے نام ایودھیا' ویشانی' متھرا' شوی چھٹر الایک نشروں کے نام ایودھیا' ویشانی' متھرا' شوی چھٹر آدی منتے ھیں، درارتی' و دبھور آدی منتے ھیں درارتی' و دبھور ادبھوں نتھا میں دیپ میں بھارتی رہیس بھرتی تیا میں دیپ میں بھارتی ادبھوں نے جس پریم اور سیستانا کا برخار ھوا، وھاں کے آدم نامیوں کے ساتھ بھارتی کے جس پریم اور سیستانا کا برخار کیا

ह अवस्ता का अवस्ता के देश के तुरा तर है। तर जीर इससे किया विष्कार आरंध के अन्तर की जाने लगी. के हप्रसिद्ध आरंधित संस्कृति के तो केन्द्र वसे ही, खाथ ही हसके व्यर्थि आरंध कोचीन, जापान, कोरिया चादि हैगों के आय भी अपने सांस्कृतिक सन्वन्धों को मचावृत बनाने में सक्द मिली.

भारतीय संस्कृति का इन दूर दूर के देशों में प्रचार करने का श्रेय इसार पुरक्षों को है. वैरोचन, काश्यप, मातंग, बार्यकाल, धर्मकाल, घर्मरक्ष, धर्मश्रिय, कुमारजीव, गुण-वर्मा, बोविश्वर्म, गुण्भद्र शांतरक्षित, पथ संभव, जिनमित्र, त्रीपंकर भी झान चादि कितने ही विद्वानों ने सफ्र की तक्तीकों की परवाह न कर संसार के छनेक भागों में भारतीय संस्कृति का सन्देश फैलाबा. मुस्तलिफ देशों के साथ हमारे पूर्वजों ने संस्कृति, राजनैतिक चौर आर्थिक सम्बन्ध कायम कर उन्हें मख बूती प्रदान करने के लिये जिस उदारता चौर वरदाश्त का परिचय दिया वह मानव इतिहास की एक शानदार कहानी है.

प्राचीन भारत में जब तक जिन्दगी की तरफ वसीस नजरिया रहा, जब तक बसुधैव कुटुम्बकम्' की उदार भावना यहां के लोगों में रही तब तक हम संसार में ऊँचे उठे रहे. हमने झान विझान के विविध चेत्रों में स्नेक देशों के साथ स्मादान प्रदान करने में संकोच नहीं किया. कल्याएकारी भावना से हम स्रपने सगाध झान और स्नुभव को उदारता के साथ दूसरों में बांटते रहे, साथ ही दूसरों की उपयोगी बातों को प्रह्मा करने में भी हमने संकोच नहीं किया. स्मार्थ भट्ट, बराहमिहर स्मादि विद्वानों ने स्माय के इस स्थापक दृष्टिकोगा की सोर इशारा किया है. और बराहमिहर ने लिखा है कि झान की कुछ दिशाओं में म्लेच्छ कहे जाने वाल यवन स्थात यूनानी लोगों की सन्छी गित है, वे लोग रिवियों के तुल्य ही पूज्य हैं—

"म्तेच्छ हि यवनास्तेषु सम्यक शास्त्रमिद' स्थितम् । रिषिवसेपि पूजन्ते... ( इत्स'हिता 2, 4)."

विदेशियों की तरफ इससे अधिक इच्जल का भाव और क्या हो सकता है. बद्दिस्मती से इस विचारधारा को हम आगे बहुत समय तक क्षायम नहीं रख सके. जब आपसी कृट, इसवन्दी, कुद्दारजी और राक्षर की बढ़ती होने लगी तब इस देश के पतन का दरवाजा खुल गया. जनता की तंग खयाती से नये विचारों के आदान प्रदान की परम्परा भी खंभ हो गयी. न्याइहवीं सदी में जब अलवेकनी भारत आया तो उसने दिन्हुओं में ये बुराइयों देखीं. एसने लिखा है कि ये तोग अपने को सामाजिक और धार्मिक दायरे में बहुत केंचा समस्त है और व्यन्ते आगो बाकी सभी लोगों को देहीर

ی رفک موں ہیں جو ہوئے۔ سلسکولی کے رفک موں ہیں جو ہو ہوں ہوں جو ہو گئی اور مائی جانے ہوئے گئی اور مائی جانے ہو گ وہ آپلوریش ہارتیہ سلسکولی کے اور کیلدر بنے جی ساتھ جی گئے گئیمہ بھارت کہچیں جاپان کوریا آدمی دیشوں کے ساتھ ہائے میں مدد ملی ۔

بھارتھ سلسکوتی کا اِن دور دور کے دیشوں میں پرچار اُلیے کا شرئے همارے پرکبوں کو ہے ، ویروچن کشیپ ماتنگ اُلیے کا شرئے همارے پرکبوں کو ہے ، ویروچن کشیپ ماتنگ آرینی کی دھوم رکھی دھوم پریت کتارجیو کی ورما بودھی دھوم آلی کتنے هی ودوائوں نے سفو کی تکلیفوں کی پرواہ قد کر مبلسلز کے انیک بھاگوں میں بھارتیه سنسکرتی کا سندیش ایسائی سندیش نے ساتھ همارے پوروجیں نے سائسکرتک اور آرتهک سمبلدھ قایم کر آنھیں مضبوطی پردان گرانے کے لئے جس آدارتا اور برداشت کا پریچے دیا وہ مائو آئیاس کی ایک شاندار کہائی ہے۔

پراچیس بھارت میں جب تک زندگی کی طرف رسیم فظاریم رھا جب تک 'بسودیدیونگیبکم' کی آدار بھاوتا یہاں کے اوگیں میں رھی تب تک میں سفسار میں اُرنچے آئیے رہے ۔

ہم نے گیان رگیان کے رودھ چھٹروں میں اُنیک دیشرں کے ساتے آدان پردان کرنے میں سنکوچ نہیں کیا ، کلیانکاری بھاؤنا سے ھم اپنے آگادھ گیان اور اُنوبھو کو اُدارتا کے ساتے دوسروں میں اُنیوگی باترں کو گرھن میں بائٹتے رہے ساتے ھی دوسروں کی اُنیوگی باترں کو گرھن کرنے میں بھی ھم نے ساکوچ نہیں کیا ، آریہ بھت' براہ مہر اُنے ودوانوں نے اپنے سمے کے اِس ویاپک درشتی کرن کی اُور اُنیا ودوانوں نے اپنے سمے کے اِس ویاپک درشتی کرن کی اُور اُنیا ودوانوں نے اپنے سمے کے اِس ویاپک درشتی کرن کی اُور اُنیا ودوانوں نے اُنے سمے کے اِس ویاپک درشتی کرن کی اُور اُنیان ودوانوں نے اپنے سمے کے اِس ویاپک درشتی کرن کی اُنیا ہے ، براہمور نے لکھا ہے کہ گیان کی کچھ دشاؤں اُنیات یونافی لوگوں نی اُنچی میں صلیحی میں ملیحی کے جانے والے یون اُرتبات یونافی لوگوں نی اُنچی میں ساتھ

"مليجه هي يوناستيشو سيك شاسترمدن اِستهتم. وهيوتنهي يوجهنتي..... برهنساهتا 14-2)."

# HER SINTEN AND

سياوية كالزياسية

# Marin Tille, we we

## البر أول مرجعة أديات

इतिहासकारों ने, विसकी नकल बाद में इमारे बनेक मार-तीय इतिहासकारों ने की, अपनी-अपनी पुस्तकों में बस युग की जगीं, मार-काट, बाइरी इमलों तथा अशांति के ही बिन्न जींचे और इस हंग से सींचे जिससे आहिर होता था कि मानों वस काल में यही दिनचर्या रही हो. उन्होंने राजनीतिक इमल-पुष्त के जीवन के बाहर जाकर इस जमाने के समाज की बोर मांका ही न था. इमें यही बताया गया है कि भारत गुहन्मद गांगी या महसूद गंजनी ने कितने इसले किये और कितनी धन सन्यत्ति ने यहां से जुटकर अपने देश को ले गर्वे.

इतिहासकारों ने कभी हमें यह साक साफ, नहीं बताया कि महमूद राजनी की सेना के साथ असबेरूनी नामक एक विद्वान् भी आया था, जिसने भारत आकर संस्कृत, भारतीय दर्शन तथा मारतीय झान का गहरा अध्ययन किया था और जिसने हिन्दुओं और मुसलमानों के कलसकों के मेलजोल को विसाया था.

उस काल की हालत की लोज करने बाले विद्यार्थियों को जो सचाइयाँ हाथ लगेंगी उन्हे विश्वास हो जाएगा कि इरकाल मध्ययुगी भारत में हमारी जो सभ्यता रही है, विदेशियों के सम्पर्क में आकर हमने उन्हें अपनी सभ्यता के जो उपहार दिये हैं और उनसे जो कुछ लिया है, वह हमारे लिए वहे अभिमान की बात है. खुद महम्द राजनी ने पंजाब में अपना जो सिक्का चलाया था, उसमें संस्कृत के हरूफ खुदे थे, और अस्लाह के लिए 'अञ्च्यक', रस्ल के लिये 'अवतार' और हिजरत के लिये 'जिनायस' लफ्जों का इस्तेमाल किया गया है, जो शुद्ध संस्कृत हैं. महम्मद गोरी के सिक्कों में लक्ष्मी की मूर्ति अद्भित थी. 'श्री' शब्द की भवा नाय: सभी मुखलमान बादशाहों के काल में थी, जैसे —'श्री मुल्तान अलाडहीन, श्री मुस्तान शेररतह खीरा. उनकी सभी मित्रकों में कमल का फूल अंकित रहता था.

इस कमाने;के मुसलमानों ने एक नेशन के इसूल को भी भपनाचा था. खुव वाबर ने अपनी 'तुष्क वाबरी' में लिखा है कि ''इम हिन्दुस्तानी हैं केवल हिन्दुस्तानी.''

सम्बद्धान में राजनीतिक हार जीत जरूर हुई, लेकिन कभी सांस्कृतिक हार नहीं हुई. यह नात तो विल्कुल गलत भी, जैसा कि इतिहासकारों ने हमारे दिभाग में बरबस ठूँमने की कोशिश की कि, वस समय पूरा मारत मुसलमानों के सिकार में था. सचाई यह है कि पूरे मारत में किसी भी वमाने में मुस्लिम शासन नहीं रहा. वस समय भी 50 मितशक से अधिक भारत हिन्तुओं की हुकूमत में था. वहां स्वलमानों का कोई अधिकार न था और इसका सबब यह मा कि हमास सांस्कृतिक प्रतम नहीं हुआ था. हमारी संस्कृति वस भी हमें प्रस्तान के वहीं थी. [تهاسکاروں نے کی اینی اپنی بستوں میں میارے اُٹیک مہاتھہ اِنہا ہواتھہ اُنہا کی جائیں اُنہا کی جائیں اُنہا کی جائیں میں اُس یک کی جائیں مار کات بادری حماوں تھا اُشانٹی کے جی چٹر کھانچے اُور اِس تحاک سے کہانچے جس سے ظاہر ہوتا تھا کہ مائو اُس کال میں یہی دنچریا رحی ہو۔ اُنہوں نے راجانہ لک اُنہا یہاں کے جیوں کے بادر جائز اُس زمانے کے سماج کی اُور جھانکا جی نہ تھا ، کے بادر جائز اُس نمایا کیا ہے کہ بہارت میں محدد غوری یا محدد خوری یا م

ا انہاسکاروں نے کبھی ہمیں یہ صاف ماف نہیں بتایا که محصود فرنی کی سینا کے ساتھ البیروئی نامک ایک ودول بھی آیا تھا جس نے بھارتیہ درشی تھا بھارتیہ گیاں کا گہرا اددھیں کیا تھا اور جس نے ہندوں اور مسلمانیس کے السفیس کے میل جول کو داھایا تھا ۔

اِس کال کی حاات کی کھوج کونے والے ودیارتھھوں کو جو سچاتھاں عالم الکینگی آئھیں وشواس ھو جائیگا کہ دراصل صحیعہ کی بھارت میں ھاری جو سبیبئتا رھی ھے، ودیشیوں کے سبپرک میں آکر ھم نے آئییں اپنی سبپئیتا کے جو آپہار دیئے ھیں اور اُن سے جو کحیے لیا ھے، وہ عمارے لئے بڑے ابھیمان کی بات ھے۔ خود محصود غزنی نے پنجاب میں اپنا جو سکتہ چلایا تھا، اُس میں ساسکرت کے دروف کھدے تھے اور الله کے ائے 'آویکت' رسول کے لئے 'آونار' اور عجری کے لئے 'جنایت' لفظوں کا اِستعمال کیا گیا ھے، جو شدھ سنسکرت ھیں ، محصد غوری کے سکوں میں کیا ھے، جو شدھ سنسکرت ھیں ، محصد غوری کے سکوں میں لکشمی کی مورتی انتحت تھی ، تشری' شدد کی پوتھا پرایت سبپی سلمان بانشاھوں کے کال میں تھی' جیسے۔ ھوی سلمان عادادین' شری سلمان شہریات رھان وغیرہ ، اُن کی سبپی سلمان عادادین' شری سلمان شہرشاہ' وغیرہ ، اُن کی سبپی

اُس زمانے کے مسلمانوں نے نیشن کے اُصول کو بھی اپنایا تھا ، خود ناہر نے اپنی 'تزک باہری' میں لکھا ہے که 'جم هندستانی هیں کیول هنستانی ،''

مدهده یک میں راجنیتک هار جیت ضرور هوئی لیکن البی سائکونک هار نهیں هوئی یه جات تو بالکل غاط تھی جیسا که اِنهاسکاروں تے همارے دماغ میں بریس ٹھوسلے کی کوشش کی که اُس سے پورا بہارت مسلمانوں کے اُدھیکار میں تھا ، سنچائی یه هے که پورے بہارت میں کسی بھی زمانے میں مسلم شاموں نهیں رها ، اُس سماے بھی 50 پرتیشت سے اُدھک بہارت هندوں کی حکومت میں تھا ، وهاں مسلمانوں کا کوئی اُدھیکار نہ تھا اُور اِس کا سیمی یہ تھا که همارا سائسکونک پتی نہیں ہوا تھا ، هماری مشکوتی تی بھی همیں پریونا ہے۔ پتی نہیں ہوا تھا ، هماری مشکوتی تی بھی همیں پریونا ہے۔ پتی نہیں ہوا تھا ، هماری مشکوتی تی بھی همیں پریونا ہے۔

हां, महाराजा हर्ष के बाद से धर्म की बाहरी तक्क-मक्क बढ़ने लगी थी और अन्दरूती अक्रीदों की ज़र्दें कमजोर पढ़ने लगी थीं. भारतीय संस्कृति की जो बारा युग-युग से चली जा रही थीं, उसमें इतनी शक्ति थी कि रूकावटों के होते हुए भी उसके मूल सिद्धान्तों पर असर नहीं पढ़ा. इस गिराबट के काल में अपनी संस्कृति को फिर मजबूत करने के लिए भारत ने शहराबार्य को पैदा किया, जिन्होंने दिग्बजयी बनकर सारे भारत में हिन्दू धर्म, हिन्दू-सिद्धान्त और हिन्दू संस्कृति का बंका पीटा. उन्होंने बुद्धत्व और हिन्दुत्व को नथा जीवन प्रदान किया. किन्तु इतनी महान् आत्मा का विवरता भी हमारे विदेशी इतिहास-कारों ने न दिया।

रांकर के बाद बेदांत का युग लगमग समाप्त हो गया और सन्यासियों के एक बेकार वर्ग ने समाज में जन्म लिया। इतिहास की इसी एण्डमूमि में भारत में ग्रुसलमानों का जागमन हुजा. इस समय हो संस्कृतियों का जामना-सामना हुजा. दोनों में जादान-प्रदान हुजा. इस्लाम जीर दिन्दू धर्म में मेल की बातें नजर आई', जिनके परियाम स्वरूप रामानन्द, कबीर, चैतन्य और नानक आदि सन्तों के सम्प्रदायों का जन्म हुजा. उन्होंने बाहरी आडंबरों की अपेक्षा करके आंतरिक भद्रा, एकेश्वरबाद, निराकारवाद, मानव में समता तथा मानव-प्रतिष्ठा पर जार दिया.

एक कोर तो हिन्दुकों में सहिब्यु प्रवृत्तियाँ वल रही थीं, तो दूसरी चोर वही प्रवृत्तियां मुसलमानों में भी थीं. मुसलमानों का असहिष्णु वर्ग हिन्दुओं को इस्लाम धर्म में दीक्षित करने, मन्दिर तोड़ने और हिन्दुओं पर अत्याचार करने का पश्चपाती था, जिसका प्रतिनिधि था-शीरक्रजेब, ता इन्हीं के दूसरे बर्ग में सूकी, इलाही, तिनसुक्षिप, विश्ती भौतिया बादि थे, जो सहिष्णु थे और संकुषित मनावृति से दूर थे. भारत में सुक्रियों ने वेदान्त के आधार पर अपना मत चलाया. इस वर्ग का प्रतिनिधि था- दाराशिकाह, जिसने संस्कृत का अध्ययन करके उपनिषदों का ारसी में अनुवाद किया था. दुर्भाग्य से औरक्क जे व की विजय हुई और असहिष्णुओं को सुलकर अस्वाचार करने का भवसर मिल गर्यो. इस प्रकार तत्कालीन भारत में हिन्यू भीर इस्लाम दोनों ही धर्मों में दो बिरोधी प्रवृत्तियों ने अन्म लिया था. हिन्दू संस्कृति में ही यह श्रमता थी कि उसने इन विरोधी प्रवृत्तियों का समन्वय किया और यह समन्वय हमें साहित्य, कला-कौशल, ज्योतिष, विकान, बास्तुकला, मन्दिरों, मस्जिदों आदि सभी में रखगोवर दांता है. रसकात, जानजाना चादि गुसलमान कवियों ने कृष्ण तथा उनकी लीला के सम्बन्ध में काट्य लिखे, बङ्गाल में

ایک اور تو هندوں میں سهیھیں پرو رتیاں' چل رهی تین تو درسری اور یهی پرورتیان مسلمانین میں بھی تبین ، سلمانوں کا اسپیشوں ورگ هندؤں کو اعلم دهرم میں فیکشت کرنے مندر تورنے اور هندوں پر انهاچار کرنے کا پکشهائی توا۔ کوس کا پرتیندهی تها-اورنکزیب تو اُنهیں کے دوسرے ورگ میں مرفى الهول تسركيين چشتى أوليا أدى ته جو سيشرن تھ اور سائلوجت منہورتی سے دور تھ ، بھارت میں صوفیوں لے ویدائت کے آدھار پر اینا سع چایا . اِس روک کا پرتندھی تھا -داراشعره جس نے سنسورت کا اددعون کر کے آینشدس کا نارسی میں انواد کیا تھا، دربھاگھہ سے اورنگ زیب کی وجئے ہوئی ارر آسیدهتیں کو کھل کو انهاچار کرنے کا اوسر مل کیا ، اِس بركار تتكالين بهارت مهى علدو أور إسلم دولون هي دهرمون میں در ورودھی پرورتیوں نے جام لیا تیا ، هندو سنسکرتی میں ھی یہ شیئا تھی کد اُس لے اِن ورودھی پرورتیوں کا سمتوئے کیا ارر يه سياوت هدين ساهتيه كالرهل جهرتش وكيان واستوكا مندروں، نسخیدون آدمی سبھی میں درشاکوچو ہوتا ہے۔ رسمانی خانشاناں آدمی مسلمان کویوں نے کوشن تایا اُن کی لیکا کے سنبادہ میں کاربه اکی ، بنگال میں

7.58

वृद्धसमानों के संरक्ष्य में महाभारत का कारकी में जातु-बाद हुया, जरकों ने मारतीय गरिवत शास्त्र जीर क्योतिय विद्यान का जातुवाद जपनी माया में किया जीर जानेक व्राप्त वादराहों ने रामायख जीर महाभारत का जातुवाद कारकी में कराया. वस काल में मुखलमान अपनी रचनायों का प्रारम्भ गयोरा-सरस्वती से करते है.

बास्तुकाल में भी दोनों सम्प्रदायों की विशेषताएँ पाई जाती थीं. यहां की इमारतें कारस की भांति न थीं. मुसलमा-नों द्वारा बनाई गई इमारतों में हिन्दू तत्वों का मिनल रहता था. ताज के गुम्बद पर खाज भी पंचरत और कमल रेखे जा सकते हैं, परन्तु यह मुसलमानी छाप दक्षिण भारत के मन्दिरों में नहीं पाई जाती, क्योंकि देश का यह भाग किसी भी समय मुसलमानों के सांस्कृतिक असर में महीं खाया,

भारतीय संगीत में जय, स्वर, ध्वनि, सूत्य आदि पर इस्लामी संगीत का प्रभाव पड़ा. धर्म के खेत्र में अकबर ने 'दीन इलाही' का प्रचार किया, जिसका छदेश्य हिन्दू और इस्लाम धर्मी का समन्वय था. 'सत्यपीर' नामक एक वेसे ईरवर तक की करूपना की गई जिसे हिन्दू और मसल-मान दोनों दी मानें. युसलमान शासक हिन्दू पर्वों में माग नेते थे, वो हिन्दू युसलमानी स्पोहार में जहांगीर और सिराखरीला की होली तो प्रसिद्ध थी ही, कैशन और पोशाक में भी दोनों धर्मों का एक दूसरे पर प्रभाव पड़ा. शेरवानी, अवकन, पैजामे, कोट, घोती सभी के लिए एक सी पोशाकें वन गईं. हिन्दू और मुसलमान दोनों को ही क्योग, व्यवसाय, व्यापार तथा पदार्थी के निर्माण के सम्बन्ध में एक-दूसरे से बहुत इक्ष हासिल हुआ. बाबर तो अपने साथ बारुव्छाना भी लाया था, जिसका प्रयोग भाज भी इम करते था रहे हैं. भीष/घर्यों के क्षेत्र में यूनानी और आयुर्वेदिक दवाइयों का समन्वय हुआ, इस मकार जब दो संस्कृतियों का एक दूसरे से साम्रात्कार हुआ. रोनों ही प्रष्ट हर्ड.

مسلماتیں کے سترکشن میں مہابھارت کا فارسی میں آتواد ہوا؛ عربی نے بھارتیہ گئرت شاسٹر اور جھوتھی رگیان کا انواد آبنی بھاشا میں کیا اور انبیک منل بادشاہوں نے راماین اور مہابھارت کا اتواد فارسی میں کرایا ۔ اُس کال میں مسلمان آبنی رچالاں کا دراومیو گلیش سرموتی سے کرتے تھے ۔

واستو کلا میں بھی دونوں ممپردایوں کی وشیشتائیں ہائی جاتی تھیں ، یہاں کی عمارتیں فارس کی بیانت نہ تھیں ، مسلمانوں دوارا بنائی گئی عمارتوں میں ہندو تتوں کا مشروں رہتا تھا ، تاج کے گبد پر آج بھی پنچ رتن اور کمل دھکھ جا سکتے ھیں' پرنٹو یہ مسلمانی چھاپ دکشن بیارت کے مغدوں میں نہیں پائی جاتی' کیونکہ دیش کا یہ بھاگ کسی بھی سم مسلمانوں کے سانسترتک اثر میں نہیں آیا ،

بهارتید سنکیت میں لے' سور' دھوئی' نرائعہ آدی پر اِسلامی ستكيت كا يربهاؤ برا ، دهرم كے چهيتر ميں اكبر لے دين إليها كا يرچار كيا؛ جس كا أديس هندو أور إسلم .دهومون كا سمنوله تها ، استیم یهرا نامک ایک آیسے ایشور ایک کی کاهنا کی گئی جيسے هندو اور مسلمان دولوں هي ماليس ، مسلمان شاسک هندو پردون میں بهاگ لیکے تھے تو هندو مسلماتی تیوهاروں میں ، جہائکیر اور سرایےالدوله کی هولی تو پرسده تهی هی ، نیشن او پرشاک میں بھی دوئوں دھرموں كا أيك دوسرت ير يربياز يوا ، شهرواني المكن يهجاب كوته دھرتی سبھی کے لیے ایک سی پرشاکیں بن گئیں ، ھندو اور مسلمان دوقرں کو یہی ادیوگ، ویوسایم، ویاپار تنها یدارتھوں کے قرمان کے سمبندھ میں ایک دوسرے سے بہت کتھ حاصل عوا . بابر تو اپنے سانھ بارودخانہ بھی دیا تھا' جس کا پوہوگ آہے۔ بھی هم کرتے آرہے هیں ، اوشد عیس کے جمعتر سیں یونانی آور . آیرر ویدک دوائهن کا سنوئے هوا ، اِس پرکار جب دو سنسكرتيون كا أيك توسرت سه سائشاتكار هوا المونون هي يشك هرئيں ،

## شرى چكرورتى راجكروالاچارية

ایک تو گفتها سر' اور بچے بہتے بال سفید ! آپ پریم کے بارے میں کیا جائے۔ میں ؟ براہ مہربائی کسی دوسرے بائے میں کیا جائے۔ میں اپنے اُن پرائے تجربوں کو بنانا چامئے میں ؟ بس کیجئے مہاراج ! پنچیس سال پہلے کی وہ باتیں آب کب تک یاد رحینکی ؟ اُن دئوں آپنے پریم کا کیا مؤہ چکھا ہوا ؟ وہ دیں تو دقیاتوسی کے تھے ، هم راوگ آپ سے کیا سیکھ سکتے میں ؟ اِس قسم کے سوالوں کی جھڑی ' اِس قسم کے سوالوں کی جھڑی خاصکر شہری یوک یوتیوں کی هنسی میرے کانوں میں بار بار بار نوتی رہتی ہے۔

درسرے کے میں کی ہاتوں کو میرے کانوں تک کھینیے لانے والا ایک ینتو میرے پاس فے . اِس سے فایدہ تو کم عیرا نقصان هی زیادہ ہوتا ہے ، اِسی سے مجھے دوسروں کی طرح ویاکھیاں دینا یا ایم لعما تبین آتا تو بھی مدراس کے 'آلندونائی' نامک مذاته رسالے میں أدع وشئے يو أيك مضمون لتهنے كا مينے إرادة کیا ۔ یوپی کا راستہ بہت کٹھن ہے ، یھر بھی نوجوانوں کے بھاد اور پریم کے بارے میں دو دو باتیں کر لینے کا مہرا وچار ہے۔ تبع ليكر هي كاري مين چره سكتا هن ، يهير مين گهس اير لو بھر کر ٹکٹ لینا میری طاقت کے باعر کی بلت ہے ۔ پھر بھی کس جکہے کے اپنے کہن سی کاری پکولی ہے؛ کاری میں سوار ہو لینے کے بعد کس طرح کا برناؤ کرنا چاهیئے' وغیرہ بانوں پر کھیے فرور کہم سکتا ہوں ۔ اچھی طرح غور کریں تو ھبھی یه سانتا يويًا كه هماريم ديش مين سجا يريم يبدأ هي نهين هونے ياتا؛ کیونکہ اُس نئے زمانے میں روز کے اُیس کے برتاؤ میں بھی استرمی اور یہیں دل کھول کو ملتے جلتے نہیں ، من کی تسلی کے لئے بیلے هی کوئی کچھ کہے؛ در یہ هے کهری سنچائی . یه سوال هي درسرا هے كه يه اچها هے يا برا ؟ درسرى بات يه هے كه همارے سمانے میں سب لڑکیوں کے لگے بھالا تو الزم هی هے؛ يعلی مسشادی ایک ضروری فرض مان لها گها هم . اگر هم اِس کے سانھ يريم كى تهداكا ديس يا إسے يويم كىكسوڤى يو كسهن أتو بهاة نامیکن هو جائیگا، لوکی کے ماں باپ اسے لچھی طوح محسوس کر سکتے هوں . تيسري بات يه هے؛ جو که سب ديشوں اور ساجوں پر لاکو ھوتی ھے' پرہم دونوں طرف سے اُنھن ھولے والا ایک دلی جذبه هے ایک پرش ایک استری سے پریم کو سکتا ہے؛ لیکن اُس اِسِۃری کے من میں اُسی طرح

#### श्री बह्रवर्ती राजगोपालाचार्य

'एक तो गंजा सिर और बचे खुचे बाल सके द ! आप मेम के बारे में क्या जानते हैं ? बराह मेहरवानी किसी दूसरें विषय पर अपने ख्याल जाहिर कीजिए. आप अपने उन पुराने तजहवों को बतलाना चाहते हैं ? बस कीजिए महा-राज ! पचीस साल पहले की बे बातें अब कब तक याद रहेंगी ? उन दिनों आपने में स का क्या मजा चला होगा ? वे दिन तो दिक्त यानूसी के थे. हम लोग आप से क्या सीख सकते हैं ?' इस किस्म के सवालों की मड़ी, ख़ासकर राहरी बुवक-युवातयों की हँसी मेरे कानों में बार-बार पढ़ती रहती है.

इसरों के मन की बातों का मेरे कानों तक खींच लाने वाला एक यन्त्र मेरे पास है. इससे फायदा तो कम. मेरा नुक्रसान ही ज्यादा होता है. इसीसे मुफे दूसरों की तरह व्याख्यान देना या लेख लिखना नहीं चाता. तो भी मदास के 'झानन्द-विकटन' नामक मजाकिया रिसाले में उक्त विषय पर एक मजमून लिखने का मैंने इरादा किया. प्रेम का रास्ता बहुत कठिन है. फिर भी नौजवानों के ब्याह और प्रेम के बारे में दो-दो बातें कर लेने का मेरा विचार है. टिकट लेकर ही गाड़ी में चढ़ सकता हूँ. भीड़ में घुस और लड़-भिड़कर टिकट लेना मेरी ताकृत के बाहर की बात है. फिर भी किस जगह के लिए कौन-सी गाड़ी पकड़नी है, गाड़ी में सबार हो लेने के बाद किस तरह का कर्ताव करना चाहिए, वरौरह वातों पर कुछ जरूर कह सकता हूँ. अच्छी तरह ग़ीर करें तो हमें यह मानना पदेगा कि हमारे देश में सच्चा श्रेम पैदा ही नहीं होने पाता, क्योंकि इस नये जमाने में रोज के आप के बर्ताव में भी की और पुरुष दिल खोलकर मिलते-जुलते नहीं. मन की तसल्ली के लिए भले ही कोई कुछ कहे: पर यह है खरी सचाई. यह सवाल ही दूसरा है कि यह अच्छा है या बुरा? दूसरी बात यह है कि हमारे-समाज में सब लड़कियों के लिए ज्याह तो लाजिम ही है, यानी-शादी एक जरूरी कर्ष मान लिया गया है, अगर हम इसके साथ में म की क़ैद लगा दें या इसे में म की कसौटी पर कसें, तो ब्याह नामुमकिन हो जायगा. लक्की के मां-वाप इसे अच्छी तरह महसूस कर सकते हैं. तीसरी बात यह है, जोकि सब देशों और समाजों पर लागू होती है, प्रेम दोनों तरफ से उत्पन्न होनेवाला एक दिली जजबा है. एक पुरुष एक की से प्रेम कर सकता है, लेकिन उस स्त्री के मन में उसी तरह

वस बादमी के लिए में में नहीं होता. जगर एक पुरुष का बी ने मेंग विश् करनेवाला रूप, शुख और कोई दूसर जरिया शिसा किया ही तो इस पामल कुनिया में बहुत से लोग वस पुरुष या स्त्री को जाहने क्षांगेंगे. इसके लिए क्यां किया जाव है कामदेव स्त्री-पुरुषों की जलग-जलग जोड़ियाँ बना-बनाकर उन पर अपने फूलों के बाया से प्रहार नहीं करता. जार सब लीग 'में में विवाह' ही करना बाहें, तो नतीजा जापस की मलह, व्यर्थ का ताड़ाई-मनड़ा होगा, इस हाथ न लगेगा और बहुतों को विवाह के बिना जीवन गुजारना पढ़ेगा. इसलिए यह साफ मालूम होता है कि में म की शर्त निम नहीं सकती.

इसका मतलब वह हरगिज नहीं है कि प्रेम एक सपना है, या वह जिल्ल्गी में कभी सच हो ही नहीं सकता. इसमें तिक भी शक नहीं कि प्रेम स्थयं एक राज्य की शक्ति है. कभी-कभी दोनों (स्त्री और पुरुष) प्रेम का अनुभव करते हैं. बाह में स्थाह भी हो जाताहै, हम कभी-कभी विजली को तो देखते हैं, वह एक ऐसी खबर्दस्त शक्ति है, जिसका सोहा तो सभी मानते हैं. बेखने में विजली के नजारे कितने दिलकश होते हैं! किर भी यह कोई घटल नियम नहीं है कि विजली के वमकने पर वर्षा हो. विजली कुद्रती है. जगर पैदा हुई तो देखने में बड़ी ही सुम्दर है; लेकिन चाहे विजली चमके या न चमके, मेच मिलकर पानी तो बरसा ही देंगे. वर्षा से जीवन है.

विवाहित स्त्री-पुरुषों को चाहिये कि वे एक व्यर की इफज़त करें, जापस में प्रेम बदायें, सहयोग और दोस्ती से जपनी जिन्दगी विताना सीखें. 'इसमें प्रेम की कमी है; यह तो माँ बाप की रची हुई शादी है, यह तो बेमजा खाना है; इस तरह के विचारों में दूव जाने या बिन्ता प्रस्त होने की जरूरत नहीं.' दूसरे देशों की कितनी ही प्रेम-कहानियां हम पढ़ते हैं, सिनेमा देखते हैं, बस, यही जीवन है, इसी में सच्चा मुख जिन्दगी का समाया हुआ है., ऐसी बेकार करपना में पड़कर निराश होने की भी जरूरत नहीं है. अपने देश में भी स्त्री-पुरुष मिलकर ऊँचा और मुन्दर जीवन बिता सकते हैं.

पे मौजवान! तुन्हारे गीने आई हुई स्त्री है, तुमने कमी इस पर विचार किया? कमसिनी में अपना मायका छोड़कर एक शुक्रती कैसे साइस और कैसी असमता के साथ एक भजनवी नवे परिवार में आकर मिल जाती है. किस पर भारा। बांबकर किसके बत ५र इतना खाइस, इतनी छुड़ी भीर इतना आनन्द महसूस करती है? हर एक विचारावन नीजवान गहराई के साथ सोचेगा, तो उसे ताज्जुब होगा. ऐसी दिखान और ऐसी अजबूती आज तक किसी पुरुष ने कार्या है वा बहुता सकता है? कम क्या की दुरुष ने الله الماس كے اللہ يوبم تهدن هذا ، الله ايك پوهن يا إشاری له يوبم بندا كرنے والا روئيا كن أور كوئى دوسرا درومه خاصل كيا هو توا إس پاكل دفيا ميں بہت سے لوگ أس پوهن يا إساری كو جهدن اس كے اللہ كيا كيا جائے الا كاممهو اساری پوشوں كى الك الك جوزياں بنا بنا كر أن پر أيت چهالون كے بان سے پرهار نهيں كرنا ، أكر سب لوگ تهريم ووالا هى كرنا ، جاهيں تو نتيجہ آپس كا كليه ويرنه كا لوائى جهكوا هوالا كچه هاتم ند لكيكا أور بهوتيں كو ووالا كے بنا جنوں گزارتا بويكا ، إس هاتم ند لكيكا أور بهوتيں كو ووالا كے بنا جنوں گزارتا بويكا ، إس هاتم بند مات مبلم هوتا هو كه يوبم كى شرط قبع قبين سكتى .

اِس کا مطاب یہ ھوکو۔ قبیس ہے کہ پریم آیک سینا ہے ۔ یا رہ زندگی میں کبھی سے ھو ھی قبیں سکتا ، اِس میں تلک بھی شک تبین شکتی ہے ، کبھی بھی شک تبین کہ شکتی ہے ، کبھی کبھی درنس ( اِستری آرر پرهی ) پریم کا آتوبیو کرتے ھیں ، بعد میں وراہ بھی ھو جاتا ہے ، هم کبھی کبھی بجلی کو تو دیکھتے ھیں ، وہ آیک آیسی زبودست شکتی ہے جس کا لبھا تو سبھی مائٹے ھیں ، دیکھتے میں بجلی کے نظارے کیئے داعش هوتے ہیں اُر پور وہا ہو ، بجلی قدرتی ہے ، آگر پندا ھوئی تو دیکھتے میں بور ورشا ھو ، بجلی قدرتی ہے ، آگر پندا ھوئی تو دیکھتے میں بوری ھی سندر ہے؛ لیکن چاھ بجھی چیکے یا ته بچسکے اُس مؤلی مور ورسا ھی دیلگی ، ورشا سے جھوں ہے .

وواهت إستری پرشی کو چاههای که وی آیک دوسری کی عود کی درین آیس میں پریم پرهائیں سینوگ اور درستی سے آپائی زادگی بتانا سینویں ، 'اِس میں پریم کی کی ہے یہ تو میں باپ کی رچی ہوئی شادی ہے یہ تو اپر مزہ کیاتا ہا اُس طرح وچارں میں درجا جانے یا چنکا گرست ہونے کی فوررت نہیں ، درسرے دیشیں کی کتلی ہی پریم کیاتیاں می پرهتے ہیں' سلیما دینیتے ہیں' بس' یہی جدوں ہے' اِسی میں پرها سیا دینیتے ہیں' ایسی پراز کلینا میں پر کو نراش ہونے کی بھی ضوررت نہیں ہے ۔ آپنے دیشی میں بھی نراش ہونے کی بھی ضوررت نہیں ہے ۔ آپنے دیشی میں بھی نراش ہونے کی بھی ضورت نہیں ہے ۔ آپنے دیشی میں بھی اِستوی پرش ماکر آرنچا اور سادر جھوں یتا سکتے ہیں ،

اے نہجوان اِ تبارے گوئے آئی ہوئی اِسلامی ہے، تم نے کبھی اِس پر وچار کیا ؟ کسٹی میں اپنا مایکا چہور کر ایک پرتی کیسے سامس اور کیسی پرسٹنا کے ساتھ ایک اُجٹی نئے پریوٹر میں آئر مل جاتی ہے کس پرکار آشا باتھ کو گس کے بال پر اِنکا سامس اِ اِنٹی خوشی اور اِنگا آئند محسوس کرتی ہے ؟ مر ایک وچاروان نوجوان گہوائی کے ساتھ سوچیگا تو اُس مصوطی آے تک کسی اِم اِنٹی ہے بھی ہے یا بلا سکتا ہو ایسی مصوطی آے تک کسی پریش نے بھی ہے یا بلا سکتا ہے ؟ کم عمر کی ذاہی کے اُس

اس اور آتم شکلی کو پہنچائیہ پر ھی ھر توجواں آپلی آجی اس کے سابق اپنے فرض کو محسوس کو سکتا ہے اس کے اس بعد رکا آت اپنے جسمائی سکھ بھوگ کے لئے ما طوا الیک پلزا کھی ٹیھیں سمجھیکا ، وہ آت اپنے لئے سامل آئوکے بہت اپنے سٹیمدھن کے روپ میں آپیجائیا ، وہ آپئی پتلی کے ساتھ ایک سچے متر کے سمان آدر' وشواس اور شریعا بھاؤ سے برتاؤ کیا ، وہ سن مالی کھی تے کریگا ، وہ اپنے تئیس مالک اپلی لیتر کی جوتی کبھی تے سمجھیکا ،

جسائی بھوگ ماتر کو رواہ کا مقصد فہدن سمجھنا چاھیئے ؟

پر لوگ اِسے بھلا دیتے عیں . دمہتین کو شریر میں اُنہی ہوئے

والی تدرتی اُمنکی کی اُن کا پرسھر کے سنیہ بچھانے کا

کا سادھی سمجھ کر رکشا کرئی چاھئے . وہ بریم کو بچھا کر ایکنا

کر پکا کرتے والی ایک مضبوط اور تدرتی شکتی ہے . اِسے کبھی

نہ بھرلنا چاھئے که وہ لوگوں کا ایک اینوگی اور پوتر سادھن

ف نہ نہ کہ جیبن کا سکھ ، اِس طرح کا دھوکا کیائے سے سارا جھون

نہ جہ جاتا ہے وہ دیمئے ہی جانا ہے .

آ سے سیکووں بوس پہلے همارے دکشن بھارت کے ایک مہاکوی اور سنت پرش الاربواور کے پتنی کو جھین ساتھنی کے نام سے پکارا تھا ، دمیتھیں کو آس سنت مہاکیی کی وائی کا مرم سمجھکر اپنے جھین میں آسے تھاللے کی کیشش کرنی چاھئے ، پتی اور پتنی کو آپس میں سنیہ بھاؤ بڑھائے کی کشش کرنی چاھئے ، جھین کی هر آیک بات پر آپس میں میں فرورت نہیں کے کہ گور کی دیکھ ریکھ اِستری کے بالوارے کی بھی فرورت نہیں ہے کہ گھر کی دیکھ ریکھ اِستری کے ذریعہ ہو اور بات میں ہوسکتا ہے ۔ دوئوں کی بدھی اور سادھن سے یہ بہت میل ہوسکتا ہے ۔ دوئوں کی بدھی اور شادی ہو اور کا الحدی میں بدل جائیگی ، آجکل کے رسانے میں بہت اور کا احدی میں جھین اور کا حدیث میں جھین اور کا حدیث میں اس جھین شام کی تعلیم حاصل کرتے استوں سے دایدہ میں اس جھین شام کی تعلیم حاصل کرتے ہیں آس سے کہیں پر حکیل اس جھین شام کی تعلیم حاصل کرتے ہیں آس سے کہیں پر حدیث اس جھین شام کی تعلیم حاصل کرتے ہیں آس سے کہیں پر حدیث اس جھین شام کی تعلیم حاصل کرتے ہیں آس سے کہیں پر حدیث اس جھین شام کی تعلیم حاصل کرتے ہیں آس سے کہیں پر حدیث اس جھین شام کی تعلیم حاصل کرتے ہیں آس سے کہیں پر حدیث اس جھین شام کی تعلیم حاصل کرتے ہیں آس سے کہیں پر حدیث اس جھین شام کی تعلیم حاصل کرتے ہیں آس سے کہیں پر حدیث اس میں اس جھین شام کی تعلیم حدیث اس حدیث اس میں اس حدیث اس

ت تو پریم مرض ہے اور تد بیاہ اُس کی دوا ، پریم کے اُوں مرفی ہے بین پتی پتنی بننا کہیں بہتر ہے ، 'ہم دوتوں مکر پریم اور مہیوک بیاہ ہی بہت ہیں چائینگہ اُس طرح کا نشوے کو پریم کے آویک کے بنا جی بہت مسولی طور سے ملے ہوئے دو ویکئی بھی اُسی طرح اُپنا جیوں بتا سعولی طور سے میں نے ابھی اُوپر کہا ہے کہ پریم کو مرض اور وراہ کو اُس کی دوا سعوبنا بھول ہے گیونکھ ایسا سمجھ لیا جائے تو دوا کے میں سیری سے جیسے بنیا ہوائے جاتا ہے ٹیک اُسی پرکار وواہ مونے پر پریم کو بھی بایس ہوجاتا پریکا ۔ تب تو جور اور دوا کا مونے پر پریم کو بھی بایس ہوجاتا پریکا ۔ تب تو جور اور دوا کا بیک ٹیمی جربے ہوجاتیا، یہ بالکر ناما ہے۔ پریم تاب تبھی

साइस और आत्मराफि को पहचानने पर ही हर नीजवान धापनी उस सहचरी के तरफ धापने फर्क को महस्स कर सकता है. इसके बाद वह उसे धापने जिस्मानी मुख-मोग के लिए मिला हुआ 'एक वन्त्र' कभी नहीं समकेगा. वह उसे धापने लिए हासिल धानोले, बहुत कर स्नेह-धन के रूप में पहचानेगा. वह धापनी पत्नी के साथ एक सच्चे मित्र के समान धादर, विश्वास धीर अद्धा भाव से वर्ताव करेगा. वह मनमानी कभी न करेगा. वह धापने तई मालिक, धापनी स्त्री को धापना गुलाम या पैर की भूती कभी न समकेगा.

जिस्मानी भोग-मात्र को विवाह का मक्तसद नहीं सममना चाहिए, पर लोग इसे भुला देते हैं. दुस्पतियों को शरीर में उत्पन्न होनेबाला कुद्रती उमंगों की, उनका परस्पर के स्नेह बढ़ाने का साधन सममक्द रक्षा करनी चाहिए. वह प्रेम को बढ़ाकर एकता को पक्का करनेवाली एक मजबूत और कुद्रती शक्ति है. इसे कभी न भूलना चाहिए कि वह सोगों का एक उपयोगी और पवित्र साधन है, न कि जीवन का सुन्न. इस चरह का थोसा साने से सारा जीवन नष्ट

हो आतः है, वह दु:समय वन जाता है.

आज से सैकड़ों बरस पहले हमारे दक्षिण भारत के एक महाकि और संत पुरुष 'तिरुवस्तुवर' ने पत्नी को जीवन सीगती के नाम से पुकारा था. वन्यतियों को उस संत महाकि की बाखी का मम स्वयम कर अपने जीवन में उसे हालने की कोशिश करनी चाहिए. पित और पत्नी को आपस में सनेहमाब बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए. जीवन की हर-एक बात पर आपस में सलाह करके फिर फैसला करना चाहिए. इस तरह के बटबारे की भी जकरत नहीं है कि घर की वेस-रेस स्त्री के जारिये हो और बाहर का सारा व्यवहार पुरुष करे. अभ्यास और साधन से यह बहुत सहल हो सखता है. वोनों की बुद्धि, भावना और शाकि बदकर प्रम और आनन्द में बदल जायगी. आनकल के जमाने में स्कूलों और काले जों में हम जिस किस्म की वालीम हासिल करते हैं, उससे कहीं बदकर हमें इस जीवन-शिक्षा से फ़ायदा होगा.

म तो प्रेम मर्ज है और न ब्याह उसकी द्वा. प्रेम के चर्च होने के बाद पित-पत्नी बनना कहीं बेहदर है. 'हम दोनों मिलकर प्रेम और सहयोग भाव से घर गिरस्थी बलावेंगे, इस तरह का निरंचय कर प्रेम के आवेग के बिना ही बहुत मासूजी तौर से मिले हुए दो व्यक्ति भी उसी तरह अपना जीवन बिता सकते हैं. मैंने अभी कपर कहा है कि प्रेम को मर्ज और विवाह को उसकी दवा सममता मूल है, क्यों कि पेसा समक लिया जाय, तो दवा के सेवन से जैसे बुजार भाग जाता है, ठीक उसी प्रकार विवाह होने पर प्रेम का भी गायब हो जाना पढ़ेगा. तब तो अबर और दवा का ठीक-ठीक जवा-कार्च हो जावगा. यह विलक्ष्य गत्वत है, प्रेम ताप नहीं

है, वह पूर्वों में समाई हुई सुगन्ति के सामान एक टिकाक हुरती ताकत है. कभी कभी वह आप-से-आप उमद पढ़ती है, नहीं तो हम उसे विजली (Electricity) की तरह पैदा भी कर सकते हैं, उसे बढ़ा भी सकते हैं. प्रेम भी ईश्वर का सहप है. उसका दर्शन किसी भी मन्दिर में कर सकते हैं, तेकिन यह रात जहार किसी भी मन्दिर में कर सकते हैं, तेकिन यह रात जहार विश्वास होता है, वहीं (उस मन्दिर में) दिवर का निवास है. तुम्हारे किए बनाया हुआ प्रेम परमेश्वर का पवित्र मन्दिर है—सुन्हारी 'जीवन-संगिनी.' जत रक्षकर उपस्था करोगे तो प्रेम-पराशक्ति को उस मन्दिर में पाओगे, नहीं तो मन्दिर में पत्थर को ही देखोगे. यह परथर का कुस्र नहीं, तुम्हारा ही कुस्र है.

प्रेम का पहला राजस्या कोई बढ़ी बार नहीं है. अनुभव हिया हवा सारा त्रेम सहया त्रेम नहीं है. जीव-मात्र व्यपने बन्तकोष के सारे तेज को प्रेस के रूप में व्यक्त करेगा. क्सी हमी इस यह भी देखते हैं कि विवेक के द्वारा असत्य की हर कर सच्चे प्रेम को पहचानता है : फिर भी होनों प्रेम-गत्रों में समान प्रेम उत्पन्न नहीं होता. जीवन तो वहीं टिक सकता है जहां दोनों तरफ से स्वाभाविक और विना किसी बोर-जबर्वस्ती दिखाये प्रेम उत्पन्न हो. ऐसा पुरुव-पर्व का प्रयोग तो किसी अरुके नसीववाले को ही मिलता है. हेकिन एक बात है, स्वाभाविक सिंचाई न होने पर इस प्रमीन को बिना जोते और बोये ही नहीं छोड़ देते. इसां क्षोदकर या खुदा से मिन्नत कर खेती, को करते ही हैं. ।स तरह की खेती में मीठे स्वादिष्ट कन्द्रमूल और फल ाया सुगन्धित सुबसूरत फूल तो पा सकते हैं ; लेकिन शर्त यह हो कि जातस्य को दूर कर मन तगा कर खेती करें. विषे प्रेम का अनुभव करना जरा टेव्ही स्वीर है, जब पेसा मनुभव हो। हो उसके समान प्रेम-पान और भी सुरिकत : बौर वैसा प्रेम मिल भी गया तो उसकी रक्षा करना बौर मी मुरिकल है, इसलिये युवकों का यही धर्म है कि चलुभव केये हुए प्रेम की रक्षा करना, गुप्त, रौबी तथा व्यापक ोम-धन को व्यक्त कर उसे बढ़ाकर पत्नी को जीवन-संगिनी नाने की कोशिश करना. इसके लिए ईश्वर की महान् हपा चाहिए और इसारी भी सेइनत.

प्रेम का व्यर्थ है—'मर मिटना.' इसमें तो हमारा व्यहं-गव' मिट जाना चाहिए. 'काइल इन्ह्रेल शादल' वह वर्गीय मुझाहायय भारती (तिमल के एक बढ़े राष्ट्रीय कवि) म गीत है. हिन्दी में भी इसी से मिलता जुलता एक मजन गित है—'जा घट प्रेम न संचरें, सो घट जान मसान.' गित गीत का भाव है, 'जिसमें मर मिटने की साथ नहीं— ह प्रेम भी क्या ?' यही सक्चा मृल मन्त्र है.

यह सम्म बैठना कि विवाह से हमारा कर्तव्य पूरा हो

ها ولا يهولوس ميس سائى هوئى سوگلده في سناى ايك تكاو قدرتى طاقت هـ كبيى كبيى ولا آپ عد آپ امر پرتى هـ نبيى توه آپ عد آپ امر پرتى هـ نبيى توهم ولا آپ امر پرتى هـ نبيى توهم ولا ايك بحث ولائى الله بهدا يى دسكتے هيں. پريم يعى ايكي طروب هـ آس كا دوشن كسى يعى مندر ميں كوسكتے هيں ايكي لائون يه عاونا اور شردها يهاؤ فرور هو ، جهالى وشواس هوتا هـ وهيں ( اُس سندر ميں ) ايكيور كا تواس هـ تديارے لئے بنايا هوا پريم پرميكور كا پوتر مندر هـ نواس الله كردگ تو پريم پراهكتى كو آس مندر ميں پاؤكئ تهين تو مندر ميں پاؤكئ تيهن تو مندر ميں پاوكئ تيهن تو مندر ميں پاور كو

يريم كا يهلا تعهوبه كرني بري بات نهيس هـ. أنوبهو كيا هوأ سارا پدیم سچا پریم تهیں کے بہرمائر اپنے لی کوش کے سارے تھے کو پریم کے روپ میں ویکٹ کویکا ، کبھی کبھی ہم یہ بھی دیکھتے میں که ویویک کے دوارا استیه کو دور کر سچے پریم کو تبين هوتا . جيون تو وهين لک سکتا ها جهان دونون طرف سه سوابهاوک اور بنا کسی زور زبریستی دکهائه بریم آتهی هو . ایسا یلید بزوکا سنبوک توکسی اچهے نصیب والے کو هی ملکا ھے الیکی آیک بات ہے ، سوابھاوک ستجائی ته هول پر هم زائين كو بلا جوتے اور ہوئے ھى نہيں چھرو ديكے . كواں كھودكر یا خدا سه منت کو کیٹی تو درتے هی هیں . اُس طرح کی کهیتی میں بھی میٹھ سوادشم کندمول اور پیل تھا سوگندھت خوبصورت يهول تو ياسكته هين الهكن شرط يه دو كه أليسه كو دور کو من الگاکر کهیتی کریں . سنچے پریم کا انوبھو کرنا ڈرا قیوهی کهور هے؛ جب ایسا انوبہو هو؛ تو اس کے سنان پریم یان اور بھی مشکل ہے؛ اور ویسا پرہم سل نبی گیا تو اُس کی رکھا كونا أور يهي مشكل هـ . إس لله يوكون كا يهي دهوم هكه أتوبهو کئے حولے بریم کی رکشا کرانا گہت' فیمی تایا ویابکت پریم دھوں کو ویکت کر اُسے بوها در یکنی کو جهون سلکنی بنانے کی کوشش کرٹا ۔ اِس کے لئے ایشور کی مہان کریا چاہئے اور هماری بھی

ر يه سبجه بياتينا كه وواه سه هبارا كرتزيه يورا هو

बाता है—पक आरी भूल है. विवाह के बाद ही हमारे सामने कुछ देत्र है. जीवन एक मैदाने जंग है. इस भिक्ता में मन की पवित्रता की कई कड़ी-से-कड़ी परीक्षाएं हमारे आगे उपस्थित होंगी. राह में, रेलमाड़ी में, यार दोस्तों के यहां, दावय में, किसी न किसी मीके पर में म के अधिक सायक कप-रंग, गुरा-आकर्षण आदि हमें दिलाई देंगे. अपनी विवाहित स्त्री को नाचीण सावित करने वाले कई स्नातमत हमारे दिल में सहज ही में उठेंगे. अर्जुन की सब्द वनसे सदकर कहें अपने काबू में करना चाहिये. आहे में म-विवाह हो, जाहे साअरण विवाह, सं ाम वो वाद को ही हुक होता है. उसमें जब पाये विना, फ्तह हाकिल किने करीर, सुना नहीं.

सन तो यह है कि सब जीवासमा एक हैं. इसमें पुढ़प एक अंस है, दूसरा अंश स्त्री है. दोनों मिलकर घड़ितमाब के सामन के लिए उमद पड़ते हैं. यही में म की समार्थ विजयिनी शक्ति है; लेकिन उसे सीमा के मीतर ही रखना बाहिए. सीमा को लांचने से सब जलकर खाक हो जायपा. हम इतनी आँच सह नहीं सकते. अलग-अलग अँगीठी और दीपक ही जीवन है; इसलिए हम अपना-अपना पूल्हा और दीपक जलाकर उसी की रक्षा कर सुल-शान्ति

से जीवन नितायें.

سے ، تو یہ ہے کہ سب جیواتیا ایک میں ، اُس میں پرش ایک انھی ہا دوسرا انھی استوں ہے ، دونوں ماہر ادوبت بهای کے سادیدی کے لئے اُمر پرتے ہیں ، یہی پردم کی پہارتہ وجیئی شہری ہے لیکن اُسے سیما کے بھیتر جی رکھا اُنی آنے سیما کو لائمینے سے سب جل کر خاک ہوجائیا ، هم اُنی آنے سیم تبین سکتے ، الگ انگ آنکیتی اور دیبک جی جبوں ہا اُس لئے هم اُنِهُ اُنِهَا چوانا اور دیبک جاکر اُسی کی جبوں ہا اُنی در دیبک جاکر اُسی کی جاری ہا کہ سکتے سے جیوں بتائیں ،

# जिन्दगी और हक्रीकत

زندگی اور حقیقت

## श्री गुरुवचन सिंह

हुग हुग करती हुई क्रमन्दर के डमक की धुम कीय बाजार में लोगों को अपनी ओर सींच लेती है. बाजार के आबारा लड़के जब इस धुन को सुनते हैं तो तमाशा देखने के लिये कलन्दर की ओर लपकते हैं. शायद बन्दरों का तमाशा. देखने में उन्हें बड़ा मजा मिलता है. अमूमन बड़ी एस के लोग भी बन्दरों का तमाशा बड़ी दिलपसी से देखा करते हैं. तमाशे की जगह सबका ठट्ट लगा रहता है, बच्चे बहां क्रलम्दर के बारों ओर बेरा डाल कर बैठ जाते हैं. तालियां पीटते और हँसते हैं. वे लोग, ओ बच्चों के पीछे जमघट बांचे खड़े रहते हैं, उन डोटे बंच्चों का कीत्हल देखकर सुश होते हैं. वे लोग देखते हैं कि यह बच्चे और बम्बर सभी तो तमाशा है.

# شری گریسی سلک

قوگ قوگ کرتی ہوئی قلندر کے قدرو کی دھن بھی بازار میں لوگوں کو لینی اور کھینے لیتی ہے ، بازار کے آوارہ لاکے جب اِس دھن کو سنتے ہیں تو تباشه دیکھنے کے لئے لندر کی آور لیکتے میں ، شاید بندروں کا تباشه دیکھنے میں آئیس ہوا ، وہ ملکا ہے ، عموماً پڑی عدر کے لوگ ہیں بندروں کا تباشه کی جکہ سب نباشه بڑی دلنچسیں سے دیکھا کرتے میں ، تباشه کی جکہ سب کا نہتم کا رہنا ہے ، بنچے وہاں قلندر کے چاروں آور کھوا قال کو بیتے جاروں آور کھوا قال کو بیتے ہوں ، تباشہ میں ، وحد لوگ جو بیتوں کے پینچے جدکیت باندھ کوتے رہنے میں اُن چھوا کے بیتوں کا کوتومل دیکھر خوش موتے میں ، وحد لوگ دیکھنے میں کہ یہ بنچے آور بندر سبھی تو تباشہ ہیں ، وحد لوگ دیکھنے میں کہ یہ بنچے آور بندر سبھی تو تباشہ ہے ،

دنیا تو هدیشه سه تماشه دیکهنی کی عادی هد دنیا تماشه هی دنیا کے لوگ تماشهبین هیں وسد کهی خود تماشه بنتی هیں اور کهیل بهی هیں اور کهیل بهی دیکهنی وسد بهت کم اپنے آپ کو دیکهنی اور سمجهنی کی کوشش کرتے هیں انسان کی اپنی کمزوریوں نے آس خودفرض اور مغرور بنا دیا هے اس کی شان اس کی شخصیت اس کی اماک اس کی شخصیت اس کی مخود نه هوکر کیول نجی وچار هوگئی هیں ، یه ماتو کا بزری نهیں ویؤیک نهیں غوور ها خودفرضی هے ، اس کی یہی خودفرضی دهرتی کو بهشت خودفرضی هے ، اس کی یہی خودفرضی دهرتی کو بهشت نهیں بننے دیتی . دنیا تماشه دیکهنی ها یه بهی تو بنتیا

آس دن قلندر کا تماشه دیکھنے کے لئے میں بھی بازار میں' بہیت کے بہیے جاکو کھڑا ہوگیا، قلدر قامرو بعجا رہا تھا ارر منه سے کیچے برل بھی رہا تھا، تماشہ دیکھنے کے لئے بهبر کی دلنچسپی بره رهی تهی و قلدر تمرو بنجاتا ھوا معجمع کے پاس سے عوکر ایک چکر لگاتا ہوا ہوا۔ "ابچو ایک قدم پیچه هٹ جاؤ" ساملے کورے بچوں کو هدایت دیمر وہ اپنے جهولے کے تزدیک آیا۔۔ "بچو بیاہ جاؤا سب بیتم جاؤ " کجم دیر تک بهین کو اور زیادہ اِکٹها کرنے کے لله قدرو بجانا رها . كجه رئه رئائه بول يهي بولتا رها . أِنَّهُ میں کچھ اور تماهی ہیں آکورے هواله ، اس نے کہا۔"بحور" ذرا زور سے تالی بجاؤ '' بجے خرشی سے تالیاں پیٹنے لکے . نريمن أسه تسلى نهيل هوشي أور إنهيل بوهاوا ديته هوثه بولا-الجو بحجة زور سے تالی تبویں بعجائیکا اُس کے عاتم میں پھوڑا هوجائيكا ." إس ير سب بجيه زور سے تاليال ييثنه لكه. لرگوں کی اور زیادہ دلنچسھی بڑھی و قلندر نے ہندوں کی رسى تهامى . أن مين ايك درتها أور دوسرى مادة . مادة كي ساته ایک چهوتا بنچه تها جو اس کی پیته پر سوار دکهائی دیتا تها. لیکن جیس هی بندریا قلندر کے اشارے سے ایک لکڑی بهائد کو ظاہریاں دکھائے لگی، بجے اُس کی پیٹھ پر سے اُترکر ایک اور هدکر بیته گیا . دو پهروں کے سوارے اکروں بیٹھے ديكهكر بحج كهلكهاكر هنس ديئه . وه ثنها سا جهو متجيب قرى هرای نگاعوں سے أن بنچوں كى أور ديكهتا رها .

المندر نے دولہ ارر دولہن کی کہائی شروع کی ، دولہا داہن کو بیاہ کر الیا پھر اُن کی گھریٹو زندگی شروع ہوئی ، داہن کو بیاہ کر الیا پھر اُن کی گھریٹو زندگی شروع ہوئی ، سمع دکھ کا جیرن جس میں خوشی اُرر غم کی مالوت تھی ، رہتے اُرر کہائی پھر ایک دوسرے کو مناتے تھے ، دین بیتتے ہیں اُرر کہائی ختم ہونے کو آتی ہے ، زندگی کی کہائی بہت لمبی ختم ہونے کو آتی ہے ، زندگی کی کہائی بہت لمبی ہوائی

हुनिया तो इमेशा से तमाशा देखने की आही है, दुनिया तमारा है. दुनिया के लोग तमाशाबीन हैं. वे कभी सुद तमाशा बनते हैं और कभी तमाशाबीन; वे सुद खिलाड़ी हैं और खेल भी. लेकिन वे बहुत कम अपने आपको देखते, और समक्षने की कोशिश करते हैं. इनसान की अपनी कमजोशियों ने उसे सुद्रारण और मरारूर बना दिया है. उसकी शान इसकी शख्सीयत, उसकी उम ग, उसके विचार सबके विचार व हाकर, केवल निजी विचार हो गये हैं. यह मानव का वड़पन नहीं, विवेक नहीं, गुरूर है, सुद्रारणी है. उसकी यही ख़ुद्रारणी अरती को बहिश्त नहीं बनने देती. दुनिया तमाशा देखती है, यह भी तो बतलाना मुशकिल है.

एस दिन कलन्दर का तमाशा देखने के लिए मैं भी बाजार में, भीड़ के बीच जाकर खड़ा हो गया. कलन्दर इसह कत रहा था और मुँह से कुछ बोल भी रहा था. तमारा देखने के लिए भीड़ की दिलचस्पी बढ़ रही थीं. इलन्दर इमक बजाता हुआ मजमे के पास से होकर एक चक्कर लगता हुआ बोला-"बच्चो एक क़दम पीछे हट जान्यो" सामने खढ़े बच्चों को हिदायत देकर वह अपने मोले के नजदीक आया-" बच्चो बैठ लाओ. सब बैठ जाओ." कक देर तक भीड को और ज्यादा इकट्रा करने के लिये हमक बनाता रहा. कुछ रट-रटाए बोल भी बोलता रहा. इतने में कुछ और तमाशबीन आ खड़े हुए. उसने कहा - "बच्चो जरा जोर से ताली बजाओ." बच्चे खुशी से बालियां पीटने लगे. लेकिन उसे तसल्ली नहीं हुई. और उन्हें बढ़ावा देते हुए बोला.—''जो बच्चा जोर से ताली नहीं बजाएगा, उसके हाथ में फोड़ा हो जायगा." इस पर सब बच्चे जोर से वालियां पीटने लगे. लोगों की और ज्यादा दलचम्पी बदी. क्रलन्दर ने बन्दरों की रस्सी थामी. उनमें एक नर था और दूसरी मादा. मादा के साथ एक छोटा बच्चा था जो उसकी पीठ पर सवार दिखाई देता था. लेकिन ज्योंही षंदरिया कलन्दर के इशारे से एक लकड़ी फांद कर कलावा-षियां दिखाने लगी, बच्चा उसकी पीठ पर से उतर कर एक और इट कर बैठ गया. दो पैरों के सहारे उसे अकड़ वैठे देखकर वच्चे खिलखिला कर हँस दिये. वह नन्हा सा जीव अजीव हरी हुई निगाहों से छन बच्चों की और देखता रहा.

कलन्दर, ने दुस्हे और दुस्हन, की कहानी शुरू की. दुस्हा दुस्हन को व्याह कर लाया, फिर उनकी घरेलू जिन्दगी शुरू हुई. सुख दुख का जीवन, ,जिसमें लुशी और राम की मिलावट थी. वे कभी वः ते और विगदते थे. कभी एक-दूसरे से कठतें और फिर एक दूसरे का मनाते थे. दिन धीतते हैं और कहानी खत्म होने को आती है. जिन्दगी की कहानी बहुत सन्वो है और कोटी भी, बन्दर कई वर्ष के बाद जवानी RECEIVED A CONTRACTOR

٠, ۴

के दिन विताकर चुढ़ा हो जाता है. चूंकि यह जिन्द्गी विकास है, चूढ़ा बन्दर अपनी आयु भोग कर इस संसार से कठ जाता है. उसका शब भिट्टी में दक्षना दिया जाता है. चूढ़ी बन्दरिया पित के शोक में पागज हो उठती है और वह उसके सिरहाने बैठकर विलाप करती है.

वमाराबीन तमाशा देख रहे थे. वे मरे हुए बन्दर के शब को देख रहे थे और साथ ही रोती हुई बन्द्रिया को भी, जो अपनी दोनों द्येलियां गालों पर रक्खे रोने की नक्कल उतार रही थी. तमाशबीन देख-देख कर हँस रहे थे—"बाह क्या मजे का तमाशा है. किसने संघाये हुए बन्दर हैं."

चक्सात बन्दरिया का बच्चा किसी अनजाने हर के सबब बीख़ बठा—"यक ! यक !" बंदरिया रोने की नक्कल बतारती बतारती एकाएक चौंक बठी, बहु रोना मूल गई. बसने ममता भरी निगाहों से हरे हुये बच्चे की आर देखा. बच्चा फिर बीख बठा—"यक ! यक !" वह ब्याइल हो बठी और बन्दर से हट बसकी ओर लपकी. बच्चा बच्च कर बसकी झाती से चिमट गया. बन्दरिया. बसे सीने से लगाए कलन्दर की मोली के पीक सिमट कर बैठ गई.

कलन्दर की कहानी और कहने की रारच अधूरी ही रह गई. बन्दर की मीत के बाद बह संसार की निस्सारता पर इस रोशनी डालता. शायद वह रोती कल ाती बद्रिया की चुप कराता हुआ कहता—''नेटी जाने दे, अब मत रो! यह ससार निस्सार है! दुनिया में एक आता और एक जाता है! संसार एक सराय फानी है, जहां लाग कुछ दिन ठहर कर फिर अपनी-अपनी राह लगते हैं. जहान में रहकर पेट की फिक करनी पड़ती है बेटी! पेट का धन्धा तो हमेशा ही साथ लगा रहता है. पेट में अज पड़े तो आदमी जिन्दा रहता है. जब मीत आती है तो सारी चिंताएँ चली जाती हैं. फिर बता सो भला हमने यह तमाशा किस लिए किया…!!" वह अपना पेट थपथपाती हुई दिसाती—''पेट के लिए।"

"हां बेडी! पेट की भूख बहुत बुरी होती है. तेरा तमाशा देखने बाले तुमे पैसा, दा पैसा, इक्जी, दुखनी जिससे जो कुछ बन पड़ेगा, जरूर देंगे." फिर कलन्दर अपनी चादर धरती पर फैला देता ताकि लोग उस पर पैसे फेंकते. खुदा आपकी जाल-भौलाद का भला करे " खुदा आपकी हर सुराद पूरी करें "" कहता हुआ बन्दरिया की रस्सी हीशी कर देता. बह लोगों तक जाती और हाथ फैला कर पैसे मांगती. जरूर कुछ न कुछ मिलता. कुछ पैसे पा जाने पर कलन्दर खुश हो जाता. इस प्रकार इस तमाशे का धन्त होता.

जेकिन इस तमाशे के अन्त से पहले ही बंदरिया ने अपना खेल कथा कर दिया था. वह अपने मुर्का क्वा ع دی بتاکر بردها هو جاتا هے ، چوتکه یه زندگی پرکار هه ، بردها بندر اپنی آیو بهرگ کو اسسنسار سه آنه جانا هم آسکا شو متی میں دنتا دیا جاتا هے ، بردهی بندریا پتی کے شوک میں پاکل می آئیتی هے آور وہ آس کے سرھائے بیتیکر والپ کرتی تھ ،

تماهی بینی تماشد دیکھ رقع تھے ، وہ موسے ہوئے بلدر کے شو کو دیکھ رقے اور ساتھ ھی روتی ہوئی بلدریا کو بھی احدو آپائی روتی ہتھی اور ساتھ کا تماش بھی دیکھ دیکھکر ہلس رقع تھے۔ "واہ کیا مزدے کا تماشتہ ہے کتنے سدھائے ہوئے بلدر ھیں "

اکسمات بادریا کا بحجہ کسی اُنجالے دُو کے سبب چیخ اُنہا۔ ''یک ! یک !' بندریا روئے کی نقل اُتارنی اُتارتی یکایک چوٹک اُنہی' وہ روثا بھول گئی ۔ اُس نے سمتا یوی نگامیں سے دُرے ہوئے بجے کی اُور دیکھا ، بججہ پھر چیخ اُنہا۔ ''یک ! یک !' وہ بیائل ہو اُنھی اور بندر سے ہت اُس کی اور لھکی ، بجہ اُچک کر اُس کی چھاتی سے چیت گیا ، اُسے سینے سے لگائے فلندر کی جھولی کے پر بجھ سبت کر بیٹھ گئی ،

قلفور کی کہائی اور کہتے کی فرض ادھوری ھی وہ گئی ہ الدر کی موت کے بعد وہ سنسار کی نسارتا پر کچھ ووشنی دالتا ، شاید وہ روتی کلہتی بندریا کو چپ کوانا ہوا کہتا میں الاہتی جائے دے اب مت رو ا یہ سنسار نسار ہے ! دنیا میں آیک انا اور ایک جاتا ہے ! سنسار ایک سرائے فائی ہے جہاں اوک کچھ دی تبہر کر پھر اپنی اپنی راہ لگتے ھیں ، جہاں میں رہ کر پیٹ کی فکر کوئی پڑتی ہیں ایل راہ لگتے ھیں ، جہاں میں رہ کر پیٹ کی فکر کوئی پڑتی ہیں میں آن پڑے کو آدمی زائدة میں وہ ایک رہندا ہے ہیں میں اس پڑے کو آدمی زائدة میں میں اس پڑے کو آدمی زائدة میں دو ایک بیٹ میں اس بیا ہے دیا ہے دیا ہیں دو ایک بیٹ کی ایک ایک دو ایکا بیٹ بیٹ میں بیا ہے کیا ایک دو ایکا بیٹ نہیں ہیں دو ایکا بیٹ کیا ہے۔

"هان بیتی پیت کی بهرک بہت بری هرتی فی تیوا تماشه دیکھنے والے نتیم پیست درپیست اولی درنی جسسے جو تماشه دیکھنے والے نتیم پیست درپیست النی چادر دهرتی پر بھیلادیتا نائه لوگ اس پر پیسے بھیلکتے و "خدا آپ کی آل اولاد کا بھا کرد ... خدا آپ کی آل اولاد کا بھا کرد ... خدا آپ کی سال پروی کرد ... "کہنا هوا بندیاکی سی تماشلی کو دینا وہ لوگوں تک جاتی اور هاته پیھا کو پیست مانگئی فرور کچھ نه کچھ ملتا . کچھ پیست یا جالے پر تادو خوش هو جاتا واس پرکار آس تماشه کا انست هرتا .

لیکن اِس تدائمے کے آنت سے پہلے ھی بادریا نے ایٹا قبال خام کر دیا تیا ، وہ آپنے مودہ باٹی کے सिरहाने बैठने के बजाय अपने सहसे बच्चे को झाठी से लगाये क़लन्दर की फोली के पीछे सिमटी बैठी थीं. असली मनवा बनावटी मोह और शोक पर झा गई थी. क़लन्दर ने एक बार (उसकी रस्सी खींची. बह और भी सिमट कर गठरी के ओट हो गई.

कलन्दर ने पुचकारा—"बा बेटी था ! डर गई क्या ? बभी तमाशा खत्म नहीं हुआ !"

लेकिन बन्दिश्या सहसी निनाहों से चारों खोर देखती हुई, मठरी की खोट छिपती गई. कलन्दर ने उसकी गर्दन से बँधी रस्सी को एक दो मटके दिये खीर ऊँची बावाज में बंजा—''बच्चो जोर से ताली सो बजाओं।''

तालियां यजीं तमाशबीनों ने दिलचस्पी जाहिर की. किन्तु तमाशा आगे न बद सका. कलन्दर इस बार बन्दरिया की डपट कर बोला—"सुन्दरी!"

श्रीर सुन्दरी, ''बह दीन श्रीर मूक जीव. श्राँखों में बिनती के भाव लिए उसकी श्रोर देखती रह गई. जैसे उसकी श्रांखों कह रही थीं—''मालिक, कुछ देर के लिए माकी बाहती हूँ. कुछ समय के लिये मुक्त से यह तमाशा नहीं हो पायेगा। मालिक मुक्ते माक कर दो!''

लेकिन मालिक कब इस बात को सममता १ उसे अपनी घोर स्नींचते हुए उसने तड़ाक से झड़ी उसकी पीठ पर मारी ! वह बेचारी चोट से विलमिला उठी और उचक कर दूसरी और चली गई। कलन्दर ने फिर इपट कर कहा-": सुन्दरी !" फिर एक और छड़ी सनसनाती हुई उसकी पीठ पर पड़ी. सुन्दरी फिर उचक कर मोली के पीछे अपने पहले स्थान पर आ बैठी. कलन्दर ग़ुरसे में आकर उसे बुरी तरह पीटने लगा ! लोग बसका पिटना और कलन्दर का पागलपन देखकर बहुत साश हुए। बच्चों ने तालियां बजाई और जवानों ने क्रहक़हे लगाए और सब आपस में मनोरखक बातें करने लगे. भीत की बनावंटी नींद सोया हुआ बन्दर चौंक कर उठ बैठा. वह बेचारा सहमा-सहमा सा एक और हट कर बैठ गया. फ़लन्दर सुन्द्री को पीटे जा रहा था. वह बेचारी मार खा-खा कर उन्नल रही थी श्रीर बन्दर इसरत से भरा हुआ अपनी जीवन-संगिनी को बेबस निगाहों से देख रहा था !

सहसा मैं गम्भीर हो गया और इतिहास के बनेकों खमारा पन्ने मेरे दिमारा में धूम गये. इस तमारो के बीछे मानव युग के क़दीम जमाने का इतिहास छिपा था। जब मानव उन्नित करके बानर से आदम बना था, अंगलों में रहता था पशुओं और हिंसक जीवों के बीच में. तब उसके बीर पशुओं के जीवन में काई अन्तर न था. धीरे धीरे उसमें बुद्धि और ज्ञान बढ़ा उसने नई शक्ति हासिल की. उसमें अद्धा और मेन की सावना जागी. इसने जलन, नकरत और दुरमनी सीखी.

سرهائے بیٹھنے کے بجائے اپنے سہمے بچھے کو چھاتی کے لگانے قلادر کی جھولی کے بعجھے سائی بیٹھی تھی ، املی سنا بناوٹی موہ آور شوف پر چھا کئی تھی ، قلادر نے ایک بار آس کی رسی کھنچے ، وہ اور بھی سمٹ کر گھاری کے آوٹ ہو گئی ،

تلنبر نے پچکارا۔۔"آ بیٹی 11 کر کئی کیا ؟ ابھی تماشہ ختم نہیں مرا!"

ایکن بندیا مہمی نگاہوں سے چاروں آور دیایتی ہوئی گھوی کی اور چیھتی گئی ہی گردن سے بندھی وسی کی اور چیھتی دیائے اور آونچی آواز میں بولا۔"بچو زور سے تالی تو بجواؤ ! "

تالیاں بجیں تباش بینہی نے دانچسپی ظاہر کی کنتو تماشه آگے تم بڑھ سکا قاندر اِس بار بندریا کو ڈپٹ کر **برا۔۔۔** استدری !''

اور سندری ، . . و دین اور موک جهوا آنکون مهن باتی کے بهاؤ اپنے آس کی اور دیکھتی رہ گئی ، جیسے آس کی آنکهیں کہت رهی تهیں اور دیکھتی هوں ، کچھ رهی تهیں سائی چاهتی هوں ، کچھ سائے کے لئے مجھے سے یہ تماشہ نہیں هو پائیکا ! مالک مجھے معانی کر دو ! ''

لیکن مانک کپ اِس بات کو سمجهتا آ آس آپنی اُرر کههنچتے هوئے اُس نے تراق سے چهڑی اُس کی پیٹھ پر ماری آ وہ بیجاری چوت سے تلما آئیی ارر اُچک کو دوسری اُور چهڑی ملسناتی هوئی اُس کی پیٹھ پر پڑی، مندری پر آپیک اور چهڑی ملسناتی هوئی اُس کی پیٹھ پر پڑی، سندری پھڑ چک کو جهولی کے پہنچھ اُنے پہلے اُسٹھان پر اَ بیٹھی، قلندر غصہ میں آکر اُس بری طرح پیٹنے لگا آ لوگ اُس کا پٹنا اور قلندر کا پاگھن دیکھ کو بہت خرش هوئے، بحوس نے تالیاں بھائیں کو پاگھن دیکھ کو بہت خرش هوئے، بحوس نے تالیاں بھائیں کو پاگھن دیکھ کو بہت کی بناوتی نند سویا هوا بندر چونک کو آٹھ بیٹیا، وہ بیجارا سہما سہما سا ایک آور هے کو بیٹھ گیا، قلندر سندری کو بیٹھ گیا، قلندر دیس تھی اُور بندر حسرت سے بھرا ہوا اپنی جیون سنگنی کو رہی تھی اُور بندر حسرت سے بھرا ہوا اپنی جیون سنگنی کو رہی تھی اُور بندر حسرت سے بھرا ہوا اپنی جیون سنگنی کو رہی تھی اُور بندر حسرت سے بھرا ہوا اپنی جیون سنگنی کو رہی تھی اُور بندر حسرت سے بھرا ہوا اپنی جیون سنگنی کو رہی تھا اِ

سپسا میں گمبیدر ہو گیا اور اِتہاس کے انیکوں خموش پنتے میرے دماغ میں گہم گئے اِس تماثی کے پیچے مائو انہی کو کے یک کے قدیم زمانے کا اِتہاس چبپا تیا ، جب مائو اُنہی کو کے بائو سے آدم بنا تیا جنگلوں میں رہنا تیا پشوں اور هنسک جنوں کے بیچ میں ، تب اُس کے اور پشوں کے جنوں میں کوئی اُنہ ناء تیا ، دھورے دھورے اُس میں بدھی اور گیاں بوھا ، اُس نے نئی شکتی حاصل کی آس میں شودھا اور پریم بورانا جاگی ، اُس نے جنن میکھی ،

क्समें खुदरारकी, लालच धीर गुहर पैदा हुआ। फिर उसके कुत और क्रवीले बने और क्रवीलों के सरदार बने. फिर क्रवीलों के आपसी युद्ध शुरू हुए. एक विजेता होता और दूसरा दास, एक मालिक धीर दूसरा नीकर. एक की जबान पर हुक्म होता, दूसरे की जबान पर करियाद. एक की तलवार होती और दूसरे की गर्दन. समाज में कई प्रकार के भेद हो गए. उन्हीं भेदों को लेकर मानव समाज गिरता गया और क्या यह बन्दर का तमाशा मानव जीवन की एक लन्बी कहानी नहीं है!

अब भी ममता से भरी उस बेबस बन्द्रिया पर मदारी की छड़ी तड़ासड़ पड़ रही थी. उसका शरीर ढीला पड़ रहा था लेकिन उसकी आंखों की इसरत अपने पूरे बल के साथ अपनी गोंद के उस बच्चे को डककर इस तेजी के साथ फैल रही थी मानों धरती और आकाश को अपनी ममता से डक लेगी! ئی میں خودخرفی کلیے اور غرور پذدا ہوا ۔ پھر آس کے کل اور تبیلے بچے اور قبیلوں کے سردار بلے ۔ پھر قبیلوں کے آپسی یدھ بروز ہوئے ، ایک وجیتا ہوتا اور دوسرا داس ایک مالک اور دوسرا نوکر ، ایک کی زبان پر حکم ہوتا دوسرے کی زبان پر خرم ہوتا دوسرے کی زبان بر زباد ایک کی تلوار ہوتی اور دوسرے کی گردن ، سماج برناد کئی پرکار کے بھود ہو گئے آنھیں بھیدوں کو لیکر ماتو سماج کہا گیا اور کھا یہ بندر کا تماشہ ماتو جھوں کی آیک لمبی نہیں ہے ا

اب بہی ممتا سے بھری اُس پربس بندریا پر مداری کی چہری توانو پر رہا تھا لیکن چہری توانو پر رہا تھا لیکن اُل کی آئیموں کی حسرت آئنے پورے بل کے ساتھ اپنی کود کے اُس بچے کو دَعَک کر اِس تاؤی کے ساتھ پیشل رہی تھی مائو رہرتی اور آگاهی کو اُپنی ممتا سے دَعَک لیکی ا

बरया

بيا

## भाई मदनगोपाल जी

बच्चे का घोंसला क़द्रत का एक ऐसा अचम्भा है जिसकी वजह से बच्चे के नाम से तो सब बाकिफ हैं. पर बच्चे को पहचानते कम हैं. देखा सबने होगा लेकिन चूँ कि उसकी शकल बहुत कुछ घरों की चिड़िया की सी होती है श्रीर हमारे देसी माई श्रीर खासकर शहरों में रहने वाले चिड़िया, दरहतों श्रीर क़दरत की मामूली चीजों की तरफ कम ध्यान देते हैं, इसलिये हम उसे देखकर भी अनदेखा कर देते हैं. बच्चे की शकल नर श्रीर मादीन दोनों की बहुत कुछ घरों की मादीन चिड़िया से मिलती है. बदन की बनापट श्रीर कद बिलकुल चिड़िया जैसा, परों की रंगत भी बहुत कुछ चिडिया की सी. सिर्फ सर पर और कमर पर पीले रत क कुछ धन्त्रे होते हैं. जबानी का नशा जिस कत में चढ़ता है यानी श्रंडे देने की रुत में यह पीले निशान जरा श्रीर शोख डोकर केसरी रंग के होजाते हैं. बच्या सारे हिन्दुस्तान में पाया जाता है. धने जंगल और धनी श्राबादी से उसे नफ्रत है. शहरों भीर गावों के आसपास खेती बादी के नखदीक, जहां

## يهائى سدنگوپال جى

بئے کا گھرنسلا تدرت کا ایک ایسا اچلبھا ہے جس کی رجم

سے بئے کے نام سے نو سب رانف ھیں پر بئے کو پہنچانتے کہ
ھیں، دیکھا سب نے ہرگا لیکن چرنکہ اُس کی شکل بہت کچھ
گرروں کی چڑیا کی سی ہرتی ہے اور ھمارے دیسی بھائی اور
خاص کو شہروں میں رہاء والے چڑیوں' درخترں اور قدرت کی
ممولی چیزوں کی طرف کم دھیان دیاتے ھیں، اُس لئے ہم اُسے
دیکھ کو بھی اندیکھا کو دیتے ھیں، بئے کی شکل نو اور مادین
دیکھ کو بھی اندیکھا کو دیتے ھیں، بئے کی شکل نو اور مادین
کی بناوے اور قد بالکل چڑیا جیسا' پروں کی رنگت بھی بہت کچھ
دینے کی سی، صوف مو پر اور کمو پر پیلے رنگ کے کچھ دھیے
جڑیا کی سی، صوف مو پر اور کمو پر پیلے رنگ کے کچھ دھیے
مزیا کی سی، عوانی کا نشم جس رت میں چڑھٹا ہے یعنے انڈے
دینے کی رت میں یہ پیلے نشان ذرا اور شوخ ہو کو کیسری
رنگ کے ھو جاتے ھیں، بیا سارے ھندستان میں پایا جاتا ہے،
رنگ کے ھو جاتے ھیں، بیا سارے ھندستان میں پایا جاتا ہے،
رنگ کے کو جنگل اور گینی آبادی سے آسے نذرت ہے، شہروں
اور گؤی گیا آبادی سے آسے نذرت ہے، شہروں

पानी की कमी न हो, कैंचे कैंचे दरकतों की टहनियों से वह अपने घोसले वहाँ लटकाता है जहां विस्ली, सांप बरोरा की पहुंच न हो. घोंसले के आस पास बैठने की गुँजाइश न होने की बजह से किसी परिन्दे का भी डर नहीं रहता. घोंसला हवा में इस तरह लटकता है कि न कोई उसपर लपक सके, न उसमें ठोंगें मार सके. उच्ने उड़ते घोंसले में घुस सका तो घुस जाओ वरना बाहर मुँह ताकते रहा. अन्दर जाने और बाहर निकलने के रास्ते भी इतने तंग कि बच्चे जैसा छोटा जानवर ही उसमें दाखिल हो सकता है.

बंगरेजी में उसे बीवरबर्ड (Weaver-bird) यानी जुलाहा कहते हैं. जो उसके घोंसले को देखता है वह उसकी कारीगरी की दाद दिये बग्नेर नहीं रह सकता. और जिस किसी ने इन घोंसलों की बनाबट को परखा है वह उसकी कारीगरी के अलावा उसकी मेहनत की भी तारीफ करता है. सिद्यों से लोग इसका घोंसला देखकर हैरान होते आए हैं. पर मिस्टर सालिम अली शायद पहला आदभी था जिसने क्यों के रहन सहन को अच्छी तरह परखा और जांचा और जिसने उनके अजीव रस्मो रिवाब का पता लगाया. इसके बाद तो बहुत सों ने इस तरफ ध्यान दिया और सालिम अली की मालूमात को दुरुस्त पाया. उनकी मालूमात से पता लगता है कि दुनिया में विकास क्या क्या निराले हंग अखितयार करता है.

बच्यों की तीन चार फ़िस्में हैं जो आपस में मिलती जुलती नहीं हैं. इन फ़िस्मों में फ़रफ़ सिर्फ परों के रंग का होता है और वह भी बहुत नहीं, एक में सियाही जियादा, एक में कहीं कहीं मूरापन , जियादा, अमूमन तो ये फ़िस्में दूर दूर अलग अलग मुस्कों में रहती हैं, लेकिन कभी कभी दरस्तों के एक ही मुंड में दो फ़िस्म के बच्चे भी बसेरा करते हैं. लेकिन ऐसी हालत में भी किसी एक दरस्त पर जितने घोंसले होंगे वह एक ही जात के होंगे चाहे दूसरी जात के घोंसले दूसरे पास के दरस्त पर ही क्यों नहों. बच्चे दस दस बारह बारह के गिरोहों में रहते हैं. लेकिन इनमें यह एक अजीब निराली रसम है कि नर बच्चों की पार्टी अलहदा और मादीन बच्चों की टोली जुदा.

घर किस जगह बनाए जायं, उस जगह को पसन्द करने के लिये शुरु में सिर्फ नर बच्ये आते हैं. चूं कि घोंसले लम्बी लम्बी घासों के सूतों से बुने जाते हैं इसलिये हमेशा ऐसी जगह पसन्द की जाती है । जसके आस पास यह लम्बी घासें मौजूद हों. और चूं कि इन्हें की दे मकी दों के खलावा अनाज और बीज वरीरह खाने का भी शीक़ है इसलिये आस पास खेती बादी का होना भी मामूली बात है. सरकड़े सनकड़दें, जबार, मकई, मूंजी, केल बरारा के लम्बे लम्बे पत्तों में सं एक एक हो हो फुड़ लम्बे पत्तों रेशे ये चोंच से

انگریزی میں اِسے ریور پرت ( Weaver-bird ) یعنی جلاھا کہتے ہیں، جو اِس کے گہونسلے کو دیکھا ہے وہ اِس کی کاریگری لی داد کی، دیئے بغیر نہیں رہ سکتا ، اُرر جس کسی نے اِن گھونسلیں کی بناوت کو پرتھا ہے وہ اِس کے گاریگری کے علاق اس کی محتنت کی بھی تعریف کرتا ہے ، صدیوں سے لوگ اِس کا گھونسلا دیکھ کر حیوان ہوتے آتے ہیں ، پر مستر سالم علی شاید پہلا آدمی تھا جس نے بھوں کے رہن سبن کو اُچی طرح پرکھا اور جانحیا اور جس نے اُن کے عجیب رسم و رواج کا پتک گایا ، اُس کے بعد تو بہت سوں نے اُس طرف دھیاں دیا اور سالم علی کی معلومات سے پتک سالم علی کی معلومات سے پتک

بھوں کی تین چار قسیں ھیں جو آپس میں ملتی جاتی نہیں ھیں ء اِن قسوں میں اوق صرف پروں کرنگ کا ھوتا ہے اور وہ بھی بہت نہیں ایک میں سیاھی زبادہ ایک میں کیس کہیں کہیں بھراأپن زبادہ عموعاً تو یہ قسمیں دور الگ ملکوں میں رہتی ھیں ۔ ایکن کبھی کبھی درختوں کے ایک ھی جہنذ میں دو قسم کے بئے بھی بسیرا کرتے ھیں ۔ لیکن ایسی حالت میں بھی کسی ایک درخت پر جاتے گہونسلے لیکن ایسی حالت میں بھی کسی ایک درخت پر جاتے گہونسلے عوشرے باس کے درخت پر ھی کیس نہ ھوں ، بئے گہونسلے دوسرے پاس کے درخت پر ھی کیس نہ ھوں ، بئے دس دس بارہ بارہ نے گروہوں میں رہتے ھیں ، لیکن اِن میں میں دس بارہ بارہ نے گروہوں میں رہتے ھیں ، لیکن اِن میں میہ ایک علیصدہ اور میں بھر کی پارٹی علیصدہ اور میں بھری کی بارٹی علیصدہ اور میں بھری بھری کی بارٹی علیصدہ اور

گیر کس جگه، بنائی جائیں اُس جگه کو پسند کوئے کے لئے شروع میں صوف نر بئے آتے هیں ، چونکه گھرنسلے لمبی لمبی گهاسوں کے سوترں سے بنے جاتے هیں اِس لئے همیشه ایسی موجود هوں ، اور چونکه انهیں کیڑے مکروں کے علوہ اناج اور بیج وغیرہ کوائے کا بھی شرق ہے اس لئے اُس پاس کیمٹی باتی کا هونا بھی معمولی بات ہے ، موننگے میں ککڑے جوارا مین مونجی کیا کیا وغیرہ کے لمبید لمبین باترں میں سکئی مونجی کیا کیا وغیرہ کے لمبید لمبین باترں میں سے ایک دو دو نص لمبید یائے رہیں کیا چونجے سے

बीरते हैं और फिर चोंच से ही उन्हें बुनकर और उनमें गिरह डालकर वह अपने घोंसले बनाते हैं. ग्रह में हरेक बच्या अपने अपने घोंसले के लिये एक अलग मजबूत शाख् चुनता है. फिर घास की रस्सियां सी बनाकर उस शाख पर इस तरह कस कर लपेटता है कि हिलने, न पाये. फिर उन रिसयों में और रिसयां जोड़ कर एक लम्बा मूता बनाता है और फिर उस मूजे की रिस्सियों के धानों में श्रीर धाने जोंद कर एक तोम्बरी की शकल का घर बुनता है. उसके बीच के हिस्से में वह झंडों के लिये और अपने रहने सहने के लिये एक अलग खाना बनाता है जिसकी वजह से यह हरमियानी हिस्सा भारी भरकम हो जाता है. तोम्बरी के होनों तरफ वह आने जाने के रास्ते रखता है, ताकि उड़ते उद्दे अगर चाहे तो नीचे से घुसकर ऊपर से सीधा निकल जाय. घोंसला काफी यानी नी-दस इन्च लम्बा और पांच-छै इंच मोटा होता है. इस बयान से यह तो साफ है कि कारी-गरी के अलावा बहुत मेहनत और ताक्रत चाहिये. कई दिनों की मुतवातिर मेहनत से एक घोंसला बनता है. कोई बच्या इसरे बच्यों को घोंसला बनाने में मदद नहीं देता.

जब ये घोंसले करीब करीब बन चुकते हैं तो, ख़बर नहीं, मादीन बच्यों को किस तरह, इसकी खबर पहुंच जाती है. बहर हाल उनकी एक पार्टी की पार्टी बहां आन कृदती है. नर बय्ये उन्हें देखकर खुश होते हैं और उन्हें ख़श करने के बिये गाते नाचते भी हैं. लेकिन मादीनें उनके गाने नाचने को शायद देखती भी नहीं. वह ता घाँसले देखती हैं. कौन सा अच्छा और खुब तय्यार है. नरतो घोंसले छोड़ कर अलग शास्त्रों पर बैठ कर गाते हैं और मादीनें एक एक घोंसले का अन्दर और बाहर से खुब अच्छी तरह देखती हैं और अपने अपने क्षिये एक घोंसली चुनती हैं. नर आपस में नहीं लड़ते और न मादीनों की लड़ाई में शरीक हाते हैं. अच्छे घोंसले के लिये मादीनों में कभी कभी लढ़ाई हो जाती है, घोंसला उसका जा दूसरी को हरादें. जो भोंसला काकी अच्छा न बना हा उसे कोई मादीन नहीं पसन्द करती. यही वजह है कि कुछ घोंसले बिन बसे ही रह जाते हैं, जब वह अपना अपना घोंसला चुन लेती हैं तब बह अपने अपने घोंसला बनाने वाले नर का बुलातीं हैं-आओ, अब इस तुम मिलकर इसमें रहें. जिन के घोंसले किसी को पसन्द नहीं आए वे नर विन ब्याहे ही रह जाते हैं. जोड़ी चुने जाने के बाद रहने के कमरे की सजावट वरौरा का काम मादीन के सपुर्द श्रीर बाहर के हिस्से की सफाई का काम नर का. थोड़े दिन तो ये जोड़े मिजकर ख़शी खशी गुजारते हैं. लेकिन जहां मादीनें अंडों से फूर्ली और नर बहां से गायब. बंडों को सेने और बच्चों की चुगाने का काम सिर्फ मादीनें करती हैं.

جيرتے هيں اور يعر چونجے هي أنهيں من كو اور ان مي كرة ذاكو ر اند كونسل بال هين. شررع مين هر أيك بيا أيد أيد كونسل ع لئے آیکت الگ مضبوط شاع چنتا ہے۔ پور گھاس کی رسیال سی بناكر لس شاع ير أس عارج كس كر اهيتتا ه كه هلنے نم يائے . ار یور اس جھولے کی رسیوں کے دھاگیں میں اور دعاگے جورور ایک ترمبری کی شکل کا گهر بلتا هے . أس كے بیچ كے حصه میں وہ اندوں کے لئے اور اپنے رہنے سینے کے لئے ایک الگ خانہ بناتا هے جس کی وجه سے یه درمیاتی حصه بهاری بهرکم هو جاتا ہے. تومبری کے دونوں طرف وہ آنے ا جانے کے راستہ ربها ها تاکه اُرتے اُرتے اگر چاھ تو ٹیجے سے گھس کر اربر سے سيدعا أكل جائه . كهونسط كافي يعنى قو دس إنيج لمبا أور ہانچ چھ اِنچ موقا ہوتا ہے . اس بیان سے یہ تو مان ہے که کاریکری کے علوہ بہت محنت اور طاقت چاھئے ، کئی دنس کی متراتر متعانت عبد أيك كهولسلا بنتا ها ، كوئى بيا درسر عبين ک گیرنسلا بنائے میں مدد نہیں دیتا ،

جب يه گهرنسلے قريب قريب بن چکتے هيں توا خبر نهيں ا مادين بيون كو كس طرح اِس كي خبر يهوئيم جاتي هـ . بہر حال ان کی ایک پارٹی کی پارٹی وہاں آن کودتی ہے ، نربئے اُنہیں دیکھ کر خوص ہوتے میں اور انہیں خوص کرتے کے لله کاتے ناچیے بھی ھیں ، لیکن مادینیں أن كے کانے ناچنے كو شائد دیکھتی بھی نہیں. ولاتو گھونسلے دیکھتی ھیں . کونسا أچیا ارر خوب تیار هے ، در دو گھونسلے چھورکر الگ شاخوں پر بیٹھمر گاتے ھیں اور مادینیں ایک ایک گھونسلے کو اندر آور باھر سے خرب اچھی طرح دیکھتی ھیں اور اپنے اپنے لئے ایک گھوٹسد چنتی هیں ، در آپس میں تہیں لڑتے اور نه مادینس کی لوائی میں شریک هوتے هیں . اچھے گھونسلے کے لئے مادینوں میں کبھی کبھی لوائی هوجاتی هے؛ اگھونسلا أس كا جو دوسری كو هرا ديم . جو گهرنسلا كاني اچها ته بنا هو اسه كوئي ماديين نہیں پسند کرتی ۔ یہی وجه فے ته کچه گورنسلے بن بسے هي ره جاتے هيں . جب وه أينا أينا كهرنسلا چن ليلي هيں نب ولا أين الني كهونسال بنائي وأله نركو بالتي هيل--أو اب هم تم ملار اس میں رهیں ، جن کے گهرنسلے کسی کو پسند نہیں اله رم نر بن بياه هي رة جاتے هيں ، جرزا چنے جانے كے بعد رہام کے کمرے کی سجارت رغیرہ کا کام مادین کے سهرد اور باهر کے حصه، کی صفائی کا کام نر کا . تهورے دن تو یه جوزے ملکر خرشی خرشی گذارتے هیں لیکن جہاں مادینیں انترس پهرلس اور نو وهال سه غائب . اندرس کو سینم اور بحوس کو چکانے کا کام صرف مادیایں کرتی میں ،

समेख १६६

( 206 )

أيريل 56

شر رھاں سے کیسک کو کچھ دور کوئی اور مناسب رھلے کی جگہ تھوندھتے ھیں ارر رھاں گھونسلے بناتے ھیں ۔ جب گھونسلے بنا چکتے ھیں تر وھاں ایک اور نئی تولی مادنیوں کی کھیں سے آجاتی ھی ۔ پھر اسی طرح گھونسلے ارر جوزے مادینیں چنتی ھیں اور اسی طرح تھوزے دنوں کے بعد نیر وھاں سے پھر آز جاتے ھیں . جس سال بارش اچھی پڑے آس سال آندے دینے کی موسم آپریل سے ترمیور تک کھنچ جاتا ھے، آیسے سال کاریکر بئے ایک سال میں تین تین گھونسلے بنائر ایک سال میں آپی دوسرے کے بعد تین تین گھونسلے بنائر ایک سال میں ایک دوسرے کے بعد تین تین بیاہ کرلیتے ھیں ، جو جلدی اچھا میں مالی شیس مالی شیس مرتبی ، جو جلدی اچھا اور اسی لئے ان کے آواد ھی تین جین ھین ، جو جلدی اچھا اور اسی لئے ان کے آواد ھی تین سے میں ، جو جلدی ا

नर वहां से लिखक कर कुछ दूर कोई और मुनासिव रहने की जगह दूँदते हैं और वहां घोंसले बनाते हैं. इब घोंसले बना चुकते हैं तो वहां एक और नई टोली मादीनों की कहीं से आजाती है. फिर इसी तरह घोंसले और जोड़े मादीनें चुनती हैं और इसी तरह थोड़े दिनों के बाद नर वहां से फिर छड़ जाते हैं. जिस साक बारिश अच्छी वहें उस साल अंडे देने की मौसम अप्रैल से नवस्वर तक लिंब जाता है. ऐसे साल कारीगर बच्चे एक माल में ठीन तीन घोंसले बनाकर एक साल में एक दूसरे के बाद तीन तीन ब्याह कर लेते हैं. जो जल्दी अच्छा मकान नहीं बना सकते या नहीं जानते वह चुंबारे ही रह जाते हैं, और इस्रिलेये इनके जीलाव ही नहीं होती.

# भगवान बुद्ध श्रीर उनके उस्ब

# بھگواں بدھ اور ان کے أصول

#### बन्म-काल

जैन तीर्थक्कर महाबीर स्वामी के ही समय में परन्तु उनसे कुछ बाद—ई० पू० छठवीं शताब्दी में बौद्ध धर्म का प्रवर्तन करने वाले भगवान गीतम बुद्ध हुए. इनके समय तक प्राचीन वेद धर्म छानेक परिवर्तन (फेरफार—उथल-पुथल) देख चुका था. एक ओर जन समाज में किसी-किसी जगह ज्ञान, भक्ति और वैराग्य के उपदेश का खखीरा था, तो उसी के साथ दूसरी आर प्रजा के बहुत बड़े भाग में कर्म-काएड का घना जाल बिछा हुआ था और किन, भक्त, ज्ञानी और साधुओं का स्थान टीकाकारों, वादियों, कर्मकान्डयों और तपस्वियों ने ले लिया था. ऐसे समय में धर्म-परित्राण के महानियम के अनुसार श्री गीतम बुद्ध का अवतार हुआ।

बुद्ध—बोध प्राप्त, जागृत, ज्ञानी. इस संसार में सब भक्षानी जनों को सोया सममना और ज्ञानी को ही जागता सममना. इसलिए गीतम कुल में उत्पन्न महापुरुष 'सिद्धार्थ' को बुद्ध कहते हैं. जिस तरह ब्रह्मण धर्म में विष्णु के चीबीस अवतार माने जाते हैं चौर जिस तरह जैन धर्म में चीबीस वीर्थ हर माने जाते हैं, उसी प्रकार बौद्ध धर्म में भी सब मिलाकर चीबीस बुद्ध हुए—ऐसा कहा जाता है. परन्तु इन सब में ऐतिहासिक प्रमाण से जिनकी इस्ती सिद्ध हो चुकी है, वे बुद्ध है० पू० छटी शताब्दी में हुए और वे गीतम बुद्ध ही हैं.

# جمكال

جیس تیرتبلکر مہاویر سوامی کے هی سمئے میں پرتتو آن سے کچے بعد ع ، پو ، چہتویں شتابدی میں بودھ دھرم کا چرورتن کرنے والے بھکوان گوتم بدھ ھوئے اُن کے سمئے تک پراچیس وید دھرم انیک پریورتن (پھیوپھار۔۔۔آئیل پتھل) دیکھ چکا تھا ، ایک اُور جس سماج میں کسی جگا گھان بھکتی اُور ویراگیم کے اُبدیش کا ذخھرہ تھا تو اُسی کے ساتھ دوسری اُور پرجا کے بہت بڑے بھاگ میں کرم کانڈ کا گھنا جال بھچا ھوا پرجا کے بہت بڑے بھاگ میں اور سادھوں کا استھان ٹیکاکاروں وادیوں کرمکانڈیوں اور تہسویوں نے لے لیا تھا ، ایسے سمئے میں دھرم پریتران کے مہائےم کے الوسار شری گوتمہدھ کا اُوتار ھوا ،

بده المساوره پراپت عائرت کیائی اس سنسار میں اسی اگیائی جنوں کو سریا سمجھنا اور گیائی کو هی جاگتا سمجھنا اس لئے گوتم کل میں آتھن مہاپرهی 'سدهارته' کو بده کیتے هیں ، جس طرح براهمی دهرم میں وشئو کے چوبیس آوتار مانے جاتے هیں اور جس طرح جین دهرم میں چوبیس تیرتھتکر مانے جاتے هیں' اُسی پرکار برده دهرم میں بھی سب ملکر چوبیس بده هوئے اُسی کیا جاتا ہے ، پرنتو اُن سب میں ایتہاسک پرمان سے جن کی هستی سده هوچکی ہے' رب بده عی دور جہائی شتابدی میں ہوئے اور وجہ گوتم بده هی

س.

बीद्ध धर्म का जो सहाम'त्र है, उसमें भी तीन विषय बताये गए हैं. वह इस प्रकार हैं—

- (1) बुद्धं शरणं गच्छामि—मैं बुद्ध की शरण जाता हूँ.
- (2) धन्म शरकं गच्छ मि—मैं धर्म की शरण जाता हूँ.
- (3) संघं शरणं गच्छामि—में संघ की शरण जाता हूँ. इस 'रतनत्रय' में बीद्ध धर्म के अनुयायियों द्वारा जो कुछ जानने योग्य है, वह सब बतला दिया गया है.

# बौद्ध धर्म के ग्रंथ

बौद धर्म के बहुत-से मंघ पाली भाषा में हैं और बहुत-से संस्कृत में हैं. इसमें पाली भाषा के मंध बहुत प्राचीन हैं. बाद में बौद धर्म तिब्बत, चीन, जापान बरौरा देशों में फैला. इसलिए इस देश की भाषा में भी इस देश के पाली और संस्कृत मंथों का तर्जुमा हुआ है. इस तरह जलग अलग भाषा की पस्तकों से हमें बौद धर्म के बारे में जान-कारी होती है.

बौद्ध धर्म का सब से प्राचीन प्रंथ—जो पाली भाषा में है— त्रिपिटक नाम से प्रसिद्ध है. पिटक का अर्थ है पेटी, पिटारा, टोकरी. एक ने दूसरे को दी, दूसरे ने तीसरे को दी, इस तरह परम्परा से दी जाती गई धर्म की टोकरियां, अर्थात् तत्सम्बन्ध प्रंथों का समूह-वर्ग हुआ पिटक. पिटक के तीन वर्ग हैं, इसलिए तीनों मिलाकर त्रिपिटक कहलाते हैं. इन तीन के नाम निम्नलिखित (हस्बजैल) हैं—

- (1) विनय पिटक.
- (2) सूत्रा पिटक.
- (3) अभिधर्म पिटक.

बिनय पिटक में खासकर भिक्ष जो को (साधुजों को) कैसे चलना चाहिए, इस के बारे में अनेक संवादों और कथाओं द्वारा उपरेश किया गया है. सूत्र पिटक में बीद धर्म के तत्वज्ञान के उसूनों का इसीतरह से परन्तु अधिक सरस रीति से उपदेश किया गया है. और अभिधर्म पिटक में इन सिद्धान्तों का अधिक वारीकी से और ज्यौरेवार (तफसील से) विचार किया गया है.

इसके जलावा सद्धमं पुराहरीक, ललित विस्तर, मुखावती-च्यूह बरीरा धानेक संस्कृत प्रथों को भी बहुत-से बीद-धर्मी मानते हैं.

सूत्र पिटक में से बौद्ध धर्म का साररूप से 'धन्म (धर्म -) पद' नाम का एक प्रंथ रचा गया है और गौतम बुद्ध के पूर्व और अवतारों (बोधिसत्त्र) की कथाओं का एक 'जातक-माला नाम का प्रंथ है. इसमें सरल हंग से बौद्ध धर्म के तल ज्ञान और नीति का अञ्झा वर्णन हैं. بردھ دھرم کا جو مہامنٹر ھے اُس میں بھی تین رھائے بتائے گئے ھیں ، وہ اِس پرکار ھیں۔۔۔

- 1) بدهن شرنن گنهامي سمين بده کي شرن جاناهين.
- (2) دهمن شرتن كيهامي سمين دهرم كي شرن جاتا هون.
- (3) سلکین شرانی کچهامی میںسلم کیشرن جاتا هیں۔

اِس 'رتن ترئے' میں بودھ دھرم کے انویائیوں دوارا جو کچے جانئے بوگھ ہے' رہ سب بلا دیا گیا ہے۔

## ہودھ دھرم کے گرتھے ،

بودہ دھرم کے بہت سے گرنتو پالی بھاشا میں ھیں اور بہت سے سلسکرت میں ھیں ۔ اُس میں پالی بھاشا کے گرنتو بہت سے سلسکرت میں بعد میں بودھ دھرم تبت چین جاپاں رغید دیھرں میں پھلا ، اِس لئے اُس دیھی کی بھاشا میں بھی اِس دیھی کے بالی اور سنسکرت گرنتھوں کا ترجمت ھوا ھے، اِس طرح الگ الگ بھاشا کی پستیں سے ھمیں بودہ دھرم کے بارے میں جانکاری ھوتی ھے ،

بردھ دھرم کا سب سے پراچین گرنٹھ—جو پالی بھاشا میں فیستراہٹک نام سے پرسدھ ھے ۔ پٹک کا اُرتھ ھے پیٹی پٹارا' نوکری ۔ ایک نے دوسرے کو دی ' دوسرے نے تیسرے کو دی اُس طرح پرمھرا سے دی جاتی گئیں دھرم کی ٹوکریاں' اُرتھاس بست سمیندھ گرنٹھوں کا سموہ ورگ ھوا پٹک ۔ پٹک کے تیں بیت رک ھیں' اِس لئے تیٹوں مائٹر تربیٹک کہاتے عیں ، اِن تین کرنام نمیں بھوٹ (حسب ذیل) ھیں۔

- (1) والله يالك .
- (2) سرتر پٹک .
- (3) أبهده رم يثك .

وٹئے پتک میں خاصکو بھکشوں کو (سانھوں کو) کیسے چلفا چاھئے ' اِس کے ہارے میں اُتیک سموادوں اور کتھاؤں دوارا اُپدیش کیا گیا ہے ۔ سونرپتک میں بودہ دھرم کے تت وگیاں کے اُمولوں کا اِسی طرح سے پرنتو ادھک سرس رہتی سے اُپدیش کیا گیا ہے ۔ 'اور ابھدھرم پتک میں اِن سدمانتوں کا ادھک باریکی سے اور بھوریوار ( تفصیل سے ) وجار کیا گیا ہے ۔

اِس کے علوہ سدھرم پوئڈریک، للت وستر، سکھارتی ویوہ دغرمی مانتے ھوں د

سوتر یقک میں سے بودھ دھرم کا سارروپ سے 'دھم (دھرم۔)

بد نام ایک گونتے رچا گیا ہے اور گوتمبدھ کے پورو اور آوتاروں

( بودھستو ) کی کتباؤں کا ایک 'جاتک سالا نام کا گرنتے ہے ۔

اِس میں سرل تھنگ سے بودھ دھرم کے تتوگیاں اور لیتی کا
اچا رزنی ہے ۔

## मीतम यह का जीवन-परित्र

गंगा के क्यर प्रदेश में हिमालय की दक्षिण तलहटी में इपिलवस्त नाम का गांव था. खटवीं राताब्दी ई० प० में ग्रद्धोदन उसका राजा था. कपिलवस्तु के पास के एक गाँव हे राजा की दो लदकियों से इसका व्याह हुआ था जिसमें मे एक का नाम महामाया और दूसरी का नाम महाप्रजापति था. दोनों के बढ़े अर्से तक कोई सन्तान नहीं हुई. 45 वर्ष की वस में बड़ी बहन महामाया को गर्भ रहा और प्रस्ति हा समय पास जाने पर वे पीहर जाने को निकलीं. वहाँ रास्ते में एक नदी के किनारे लुम्बिनी नाम के बन में इनके पत्र हुआ. इस पुत्र के जन्म से माता-पिता की इच्छा पूरी हुई, इसलिए इनका नाम सिद्धार्थ रखा गया, इसके गात्र (इत ) का नाम मौतम था, इसलिए ये गौतम नाम से भी प्रसिद्ध हैं और ये शाक्य नाम की क्षत्रिय-जाति में शिरोमणि (सरताज ) निकले, इसलिए शाक्य सिंह भी कहलाते हैं. दिन बीतने पर इन्होंने बोध पाया - अर्थात् जागे, ज्ञानी हए, इसलिए इन्हें बुद्ध' कहा जाता है. इनके जन्म के बाद थाड़े ही समय में इनकी माता की मृत्यु हो गई और सिद्धार्थ अपनी सौतेली माता -मौसी-महाप्रजापित के पास पले. बढ़े होने पर गौतमबुद्ध का यशोधरा नाम की एक छंत्रिय राज-कन्या के साथ ब्याह हुआ. उससे इनके राहुल नाम का एक पुत्र हुआ. तब से 29 वर्ष की उन्न तक इनका कुछ हाल प्राप्त नहीं है. परन्तु इम सहज अनुमान कर सकते हैं के इस समय जवानी के अनेक सुख भोगे गए होंगे.

परन्तु गौतम बुद्ध की आत्मा संस्कारी थी, इन्द्रियों के मुलों में लिप्त रहे, ऐसी न थी. इसी दमियान, ऐसा कहा जाता है कि एक समय ये रथ में बैठकर बाहर चूमने निकले, वहां इन्होंने।एक बूदे मनुष्य को जिसकी कमर मुक गई थी, आँखों में कीचड़ भरा था, मुँह से लार बहती थी, चलते ठोकर लगती थी इत्यादि अनेक बुदापे के दुखों से पीड़ित देखा. दसरे प्रसंग पर एक रोगी को जिसके हाथ-पाँव में रक्तपीत हो गया था, मुँह पर मक्खियाँ मिनभिना रही थीं और पेट जलोदर से फूल गया था, रास्ते में पड़ा देखा. फिर दूसरी बार एक सुदी रास्ते में जाता और उसके पीछे लोगों को हाय-हाय करते रोते जाते देखा. राजकुमार को ऐसा दृश्य पहले कभी नजर नहीं पड़ा था इसलिए उनको बड़ा वाञ्जुब हुआ. जब इनके सारयी ने इनको सममाया कि ये वातें-जरा (बुढ़ापा), तकलीक और मीत-तो संसार में बिलकुल साधारख है' तब इनके मन में तीज वैराग्य हो श्राया, परन्त क्या करना चाहिए यह नहीं स्कता था.

एक बार ये बूमने निकले थे. वहाँ कीसत लोगों से मुस्तिलिक शेस का एक आव्मी वेसा-उसकी वेसकर रन्होंने सारबी से पृक्षा-यह कीन है ? तब सारबी ने कहा

گنگا کے اُتربردیش میں سالیہ کی دکشن تلہتی میں کیا ، د نام کا گاور تیا. چهترین شتایدی ع . یو . سین شدودهن اُس کا راجا تھا ۔ کیل ہستو کے پاس کے ایک گاؤں کے راجا کی رہ الحکیم سے اُس کا بیاہ ہوا تھا' جس میں سے ایک کا نام مهامایا اور دوسری کا نام مهاپرجایتی تها . دونوں کے برت عربے تک کوئی سلتان نہیں ہوئی ' 45 ورش کی عمر میں ہری یہی مہامایا کو گریھ رہا اور پرسوتی کا سنگ پاس آلے پر وے یہر جالے کو تعلیں . وہاں راستے میں ایک ندی کے کنارے لیبنی نام کے بن میں اِن کے پتر ہوا ، اِس پتر کے چنم سے ماتا یہ کی اِچھا دوری ہوئی اِس للے اِس کا تام سدھارتھ رکھا کھا۔ اِن کے کوتر (کل) کا قام کوتم تھا اِس لئے يه گرتم نام سے بھي پرسده هيں' أور يه شاكيه نام كي چهترية جاتی میں شرومنی ( سرناج ) نکلی اس لئے شاکیہ سنکے بھی كراتي هيل . دن بيتنے پر آنهوں نے بردھ يايا--ارتبات چاكي كياني هوئيا إس لله إنهين ابدها كها جاتا الله ، إن كه جام كه ہمں نہروے ھی سمٹھ میں اِن کی مانا کی مرتبو ھوگٹی اُور سدهارته اینی سوتیلی ماتا-مرسی-مهاپرجایتی کے پاس پلے، ہوے مرنے پر گرام بدھ کا یشودھرا فام کی ایک چھٹریے رائے کنیا کے ساتھ بیاہ عوا اُس سے اِن کے راحل نام کا این، یتر عوا ، تب سے 29 ورش کی عدر تک ان کا کچے حال پرایت نہیں هے ، پرنتو هم سهبج انومان كرسكتے هيں كه اِس سَبُّه جوانى کے انیک سم بھوگے کئے ہوتا .

رائع گوتم بدھ کی آتما سنسکاری تھی؛ افتدیوں کے سکھوں مين أبت رها ايسي نه تبي . إسى درميان ايسا كها جانا هـ که آیک سمانے به رتم میں بیٹھار باعر گهومنے ذالے وهاں اِنهوں نے ایک برزھے ملشیہ کو جس کی کمر جھک گئی تھی' آنہوں مرن کیدو بیرا تھا منہ سے الر بہتی تھی چلتے ٹھرکر المتی تھی اتیادی انیک بزهایے کے دکھن سے بیوت دیکھا . دوسرے یرسنگ پر ایک روگی کو جس کے ہاتھ پاؤں میں رکت یہت هوگیا تها منه پر منهیاں بهنبهنا رعی تهیں اور پینصحاوور سے يهول كيا بها راستم مين يوا ديكها . يهر درسرميار أيك سردة راستے میں جانا اور اس کے پینچھے لوگیں کو ھائے ھائے کرتے روثے جاتے دیمیا ، راہرا کو ایسا درشیه پہلے کبھی نظر نہیں پڑا تھا اِس للہ ان کو بڑا تعجب ہوا . جب اِن کے سارتھی نے ان كو سمجهايا قد يه باتين سمجرا ( برهايا ) تكليف أور موت - تو سنسار میں بالکل سادعاری هیں قب اِن کے من میں قیرر ويراكيم هو آيا پرنتو لها كرنا چاهيئم يه نههن سوچها تها .

ایک بار یه گهرمنے نالے تھے. وہاں اُرسط لوگیں سے صفائف بهرس کا ایک آدمی دیکھا ، اُس کو دیکھ کو اُنھوں نے سارتھی سے پوچھاسسیہ کہن ہے 🖣 نب سارتھی نے گیاست

( 209

**)**.

यह सन्यासी है.-सन्यासी कीन होता है १-संसार को दु:सरूप देखकर जो इसको छोड़ देता है. गीतम ने बह सुनकर संसार छोड़कर चला जाने और इन दुखों: से छुट-कारा पाने का तरीका दूँ ह निकालने का निश्चय किया. रोजाना के रिवाज के मुताबिक गाना-वजाना हो जाने के बाद कुमार आरामगाह में गये, मगर नींद नहीं आई. रानी षशोधरा और राजकुमार राहुल सोते थे. उनके पास गये. बालक को बुलाकर मिलने का मन हुआ, परन्तु रानी का एक हाथ बालक के ऊपर रखा था. उसकी इटाकर बालक को लिया जाय तो रानी जाग उठे और रानी जाग उठे तो फिर वह अपने प्रिय पति को संसार छोड़ने दे तो ठीक, न छाड़ने दे तो फिर क्या होगा ? ऐसी अनेक मुश्कितें इनके मन में चाने लगीं, तथा इसको इसी तरह छोड़ जाऊँ या न जाऊँ इत्यादि अनेक विचार तथा इरादे होने लगे. आखिर-कार इसी तरह अनगिन्ती जीवों की भलाई करने के लिए सिद्धार्थं इनको उसी तरह छोड़कर, महल छोड़कर, एक सफेद घोड़े पर सवार होकर चले गये. यह महान घटना बौद्ध धर्म शास्त्रों में 'महाभिनिष्कमण' के नाम से प्रसिद्ध है.

गौतम रात-ही-रात घोड़े पर बहुत दूर चले गये. एक नदी के किनारे बांबे से उतरे, तलवार निकाली और उससे अपने सुन्दर बाल काटे और अपनी पोशाक उतारकर साईस को दे दी और उसको कपिलवस्तु की और रवाना किया. खुद साधु के भेस में आगे बढ़े. कुछ समय पास के जाजबन (आंबाबाड़ी, अमराई) में रह कर, मगध की राजधानी राजगृह की ओर गये. वहाँ विन्ति-(विन्दु) सार नाम का राजा राज करता था. राजा ने इनकी इज्जत की और इनसे बाचार्य-पद लेने को कहा, परन्तु वैसा न करते हुए उन्होंने षाहार (भाराह) कालाम और उदहक रामपुत्र नाम के दो माहारा विद्वानों के पास तत्वज्ञान का अभ्यास शरू किया. परन्तु उनके सिद्धान्त सिद्धार्थ को सन्तोष-जनक (तसल्ली दिने वाले) नहीं लगे, इसिक्वए उनको झोड्कर ये आगे चले. कितनी ही जगह पुजारियों को यह में जानवर की करवानी करते देखा. यह इनकी द्यालु आत्मा को बिलकुल विपरीत ही लगा. गया पहुँचकर पास के बन में कींखिन्य वरारा पाँच चेलों के सामने इन्होंने जोरहार तप किया. हा वर्ष कठिन तपस्या करने से बदन काठ की तरह सख गया भीर कमजोरी बढ़ गई. एक बार फल्गु (नैरंजना) नदी में नहाने गये तो बहाँ इनको पानी में से निकलना सुश्कल हो गया. आखिर किनारे पर के पेड की डाल पश्डकर खड़े हर और आश्रम की ओर मुद्दे, परन्तु चल नहीं सके. रास्ते में बेसुष होकर गिर पड़े.

एक गोप-कन्या (नन्द बाला) पास से जा रही थी. इसने इनको दूध पिलाया, खड़ा किया बीर ब्यक्स पहुँ बाबा. إن سلهاس هد سستهاس كون هوتا ها السستسار كو دام روب ديكم روب ديكم روب ويكم المراس كو جهولا ديكا هم كوتم في يه سن كوستسار جهوركر چاجافي اوران دامور هم جهاكاراً بافيكا طويقه تعونده الخالفي كا تشتهي كيا . وران كر رواج كه مطابق كالنا بعجانا هو جانے كے بعد كار آرام كاه ميں ثئے مكو نهد نبه الله والى يشوده والور واج كار ولها موقع بها كو ملفي كا من هوا يونتو والى كا ايك ها هوا كو رائى جاك ألس كو ها كو بالك كو الا كو ملفي كا من هوا يونتو الله كا ور والى كا ايك ها و والى يونتو الله كا ور والى جائه أور والى جاك ألها و والى يونه الله كو سنسار جهور في دستو بهو كا الله الله الله كا كو سنسار جهور في دستو بهو كيا هوگالا اللها اللها

کوتم رات هی رات گهورت پر بهت دور چلے گئے ، ایک نری کے مدرے کھوڑے سے اُدرے کلوار فکالی اور اُس سے اپنے خدر بال کائے اور اپنی پوشاک أتار کر سائیس کو دیدی اور اُس کر کہل وستو کی اور روانہ کیا . خود سادھو کے بھیس میں آگے رہے ، کھے سمے یاس کے آمرون ( آمباواری المرائی ) میں رہ كرا مكده كي واجدهائي واجكره كي أور كله ، وهال يمني (بلدو) سار نام یا راجا راب کرتا تھا ، راجا نے ان کی عزت کی اور ان سے آجاری یو لینے کو کہا ۔ یونتو ویسا ناء کرتے ہوئے اُنہوں لے أَذَارِ ( آراتُ ) کالم اور اُودورک رام یار قام کے دو براهین ردرانس کے پاس اتت وگیاں کا ابھیاس شروع کیا ، پرنتو آن کے سیھانت سیھارتو کو سنتوش جنک ( تسلی دینے والے ) نہیں لکے اس لئے آن کو چھور کر یہ آگے چلے ، کتنی ھی جکہہ بجاریس کو یکید میں جانبر کی قربانی کرتے دیکھا ، یہ أن كي دوالو أتما كو بالكل ويريت هي لكا . كيا يهونچكر پاس کے بن میں کوئڈٹیٹ رفیرہ ہائیج چھلوں کے مامنے آنہوں نے زوردار نب کیا ، جم ورهی کلهن تیسها کرنے سے بدن کاغ کی طریع سوکھ گیا اور کمؤوری بڑھ گئی ، ایک بار پھاکو ( نیرنیها) ندی میں نہائے گئے تو رحال آن کو پانی میں سے نکالنا معمل مو گیا ، آخر کنارے پر کے پیر کی ڈالی پہر کر الراع مول أو آشرم كي أور مقرع برنتو چل نهين سك ، ولسته میں ہے سدھ ھو کر گر آڑے ،

ایک گہپ کنیا ( تند بالا ) پلس سے جا رھی تھی ۔ اُس نے اِن کو دودھ پلایا' کپڑا کیا اور آشرم پھرت<del>ے</del>ایا ، विना देह-काट सहन करने पर भी धंसार के दु:स का विदान (कारस) और उससे छुटकारा पाने का मागे इनको व मिला. अत्यन्त भोग-विलास से जिस प्रकार सत्य की बाति नहीं होती, उसी प्रकार अत्यन्त है(-कट सहने से बी नहीं होती. आखिर मध्यम प्रतिपदा' (बीच के मार्ग) की खूबी इनको समम पदी. अब से शरीर का निर्वाह करने हे लिए काकी रिजा जैने बने और एक रात गया के पास वेद के नीचे ज्यानस्थ (इवादत में मशसूल) होकर बैठ गए. बन सक जिस सत्य को दुँड निकालने के लिए इन्होंने हेतर मेहनत की थी उसका इनके दिल में प्रकाश चमक इतको उम्र 35 वर्ष की थी.

'में जगा परन्तु जब जगत् को जगाऊँ तब ही मेरा जागना सक्वा है'—इस प्रकार विचार कर वे उठे और कारी की तरफ गये. बहां के पांच चेले कीं हिन्य बरौरा इनकी नजर पढ़े. उन्होंने निरचय किया था कि इस तपो- भ्रष्ट साधु का आतिष्य-सत्कार (मेहमानवाची) नहीं करेंगे, परन्तु जब बुद्ध भगवान् के पास खाये तब इनके तेज (जलाल) से वे ऐसे प्रभावित (मुतास्सिर) हुए कि सामने से उठकर सत्कार किये बिना उनसे नहीं रहा गया. बुद्ध भगवान् ने इनको 'चार आर्य सत्य' जो सत्य उस व्यान की रात के प्रहर-प्रहर में इनको झात हुए थे, का उपदेश किया और तब से बुद्ध भगवान के धर्मचक-प्रवर्तन का आरम्भ हुआ।

वे और उनके पांच शिष्य (चेले) मिलकर हु: मह न्त (साधू) हुए। पास के गांचों में से बहुत-से लोग इनका उपदेश युनने आने लगे। इनके शिष्यों की तादाद बढ़ती गई. बशो-परा और राहुल को भी, जिनको सोता छोड़कर सिद्धार्थ गये ये, सच्चे माने में जगाया. वे भिक्षु और भिक्षु ग्री के संघ में दाखिल हुए.

इसके बाद, पैंतालीस वर्ष भगवान् बुद्ध ने धर्मचक का अवर्तन किया. इसमें ध्यनेक ब्राह्मणों को सच्चा ब्रह्माण्ल किसमें है यह बताया और अपने संघ में दाखिल किया. शतना ही नहीं, परन्तु हुउजाम, काड् लगानेवाले और गणिका वरीरा हरेक जाति के आदिमधों को संघ में दाखिल किया. इनमें से बारह शिष्य बड़े उपदेशक हुए.

ऐसे शान्त, नियमित और परोपकारी जीवन के पैंता-तीस वर्ष विताकर अस्सी वर्ष की उम्र में बुद्ध मगवान् ने निर्वास पाया.

अपने खबसान-काल में इन्होंने शिष्यों को जो उपदेश दिया दे बह इनके गांभीय (संजीदगी) विनय और उदारता को शोभा देवी है.

"धानन्द (शिश्य का नाम) रोना नहीं, शोक नहीं करना. भानन्द ! क्या मैंने दुससे नहीं कहा कि वस्तु-मात्र का إتنا ديهة كشك سهن كرنے يو بهى سلسار كے دكھ كا تدائى (كارن) أور أس سه چهتكارا يائے كا مارك إن كو ته ملا . انهات بهوگ ولاس سه جهتكارا يائے كا مارك إن كو ته ملا . انهات بهوگ ولاس سه جس پركار سكية كى پراپتى نهيں هوتى . أخر ترحهم پرتى پدائا د يهج كا مارك ) كى خوبى إن كو سمجه پرتى . أب سه شوير كا فرواء كرنے كے لئے كئى غذا لينے لئے اور ايك رات كيا كے پاس بيت كو ترتق تك اور ايك رات كيا كے پاس أب تك جس ستية كو ترتق تك نكالنے نے لئے أنهوں لے يكل ميں بركھى چمك أنها . محملت كى تهى أبان كے دل ميں يركھى چمك أنها . أنهوں نے كيان پايا و ح جاكے بدھ هوئے . اِس سنتے أن كى عمر 35 روش كى تهى ه

امیں جگا پرنتو جب جگت کو جگاؤں تب هی میرا جاگنا سبت ها میرا جاگنا سبت ها اسلس پرکار وچار کو رہے آئے اور کلشی کی طرف گئے ، وہاں وکے پانچ چیلے کوندئیت وفیرہ آن کی قطر پڑے ، انہوں نے نشجے کیا تیا که اِس تهوبهوشت سادهو کا آنتیب سنگاز (مہاں نوازی) نہیں کوینگ پرنتو جب بدھ بهگوئی کے پانس آئے تب اُن کے تیج (جائل) سه وے ایسے پریپارت رستائر ) موئے که سامنے سے آئیکو سنگار کئے بنا اُن سے نہیں وہا گیا ، یدھ بهگوئی نے اِن کو 'چار آریه ستیه' جو ستیه اُس دھیان کی رات بہر بہر میں اُن کو گیات ہوئے تھ' کا دھیم کیا اور تب سے بدھ بهگوئی کے دھیم چکر ہرورتی کا آرمیم ہوا ۔

و۔ اور اُن کے پاتے ششیہ (چیلے) ملکر چے ارهنت (سادهو)

هوئے ۔ پاس کے گؤں میں بہت سے لوگ اِن کا اُپدیش سننے

اُنے لکے ۔ اِن کےششیوںکی تعداد بڑھٹی گئی ۔ یشودھوا اُور راهل

کو بھی جن کو سوتا چھوڑ کو سدھارتھ گئے تھے' سنچے معنے میں
جگایا ۔ وے بیکشوں اُور بیکشوئی کے سنتے میں داخل ہوئے ۔

اُس کے بعد' 45 ورش بھکوان بدھ نے دھرم چکو کا پرورتن کیا ۔ اُس میں انیک براهمنوں کو سچا براهمنو کس میں ہے یہ بتایا اُور اپنے سنکے میں داخل کیا۔ اِتناهی نہیں' پرنٹو حجام' جہارو لگانے والے اور گئٹریکا وغرہ ھر ایک جاتی کے آدمیوں کو شنکے میں داخل کیا ۔ اُن میں سے بارہ ششیہ برے آپدیشک ھرئے ،

ایسے شائت اور پروپکاری جھوں کے پینتالیس ورش بنا کر آسی ورش کی عمر میں بدھ بھکواں نے تروان پایا .

اپنے آرسان کال میں اِنہرں نے ششیبرں کوجو اُپدیش دیا ہے وہ اُن کے کلیھیریہ (سنجیدگی)' ونئے ارز اُردارتا کو شوبھا دیکا ہے۔ ''آنند ( ششیم کا فام) 1 رونا نہیں' شوک نہیں کرنا ۔ آنند 1 کیا مینے تم سے فہیں کیا کہ وسٹو ماتر کا स्वामाव ही है कि इसको वह चाहे जितनी प्रिय क्यों न हो, परन्तु आकि र में इसे उसको छोड़कर जाना ही पहला है. भानन्द ! जो कुछ जन्मा है, हुआ है, वह नारा पाये बिना कैसे रह सकता है ?

"आनन्द! मैंने तुम को कुछ भी गुप्त रखे बिना धर्म का उपदेश किया है. तथागत (बुढ़) ने कभी भी धर्म को मुट्ठी में धाँनकर नहीं रखा. संघ मुम्न पर अवलंबित है, ऐसा उसने कभी नहीं माना. उसके बाद इसको क्या स्वना देने को रह जाती है ? धर्म को अपना दीप समम्म कर जलना, धर्म की शरण पकड़े रहना. अपनी जाति को छाड़ कर किसी दूसरे पर इस विषय में आधार नहीं रखना. जा इस प्रकार चलेगा वह महापरिनिर्वाण—उत्तम निर्वाणा। बस्था परयेगा."

"मेरे जाने के बाद धर्म और संघ को मेरी जगह मानना" ऐसा उपदेश देकर तथा शिष्यों को परस्पर कैसा बर्ताव करना चाहिए, इसके सम्बन्ध में शिक्षा देकर अपनी अन्तिम समाधि में उन्होंने प्रवेश किया और महापरिनिर्वाण पाया. ربیاو ھی گا کہ ھم کو وہ چاگھ جنٹی پرید کیرں تھ ھو' پرتتو خر میں ھمیں اِس کو چھوڑ کر جاتا ھی پُوتا گا ۔ آئند ! جو جہ جنما گا ھوا گا وہ ٹاھی پاٹے بنا کیسے رہ سکتا گا ؟

"آرند ! مہنے تم کو کمچھ بھی گہت رکھے بنا دعوم کا اُپدیش یا ھے تھا گت ( بدھ ) نے کبھی بھی دعوم کو مقبی میں باندھ و نہیں رکھا سنکھ محجھ پر اولمیت ہے ایسا اُس نے کبھی نہیں بانا ، اُس کے بعد اِس کو کیا سوچتا دینے کو را جاتی ہے ؟ ایمر اپنا دیپ سمجھکر چلنا دھوم کی شرن پکڑے رھنا ، اُپنی ہاتی کو چھوڑ کو کسی دوسرے پر اس رشتے میں آدھار تہیں بنا ، جو اِس ہرکار چلیکا وہ مہا پرینزواں۔ اُتم تروانا وستھا اُبکا ،"

سمورے جائے کے بعد دھرم أور سنكھ كو مورفى جكھ ماتنا'' اسا أيديھى ديكر تنها شھيوں كو پرسپر كيسا برتاؤ كرنا چاھيئے' س كے سبلدھ ميں شكشا ديكر أينى أنتم سمادھى ميں أنهوں لے پرويھى كيا أور مها پريئروأن يايا .

# मुहम्भद साहब की कुछ हदीसें

# محدد صاحب کی کچھ حدیثیں

सुभाज बिन जबल का बयान है कि :—"सुहम्मद् साहब ने जब सुके यमन का गवरनर बनाकर मेजा तो तुम से कहा:—'खबरदार! ऐश (विलास) की जिन्दगी बसर न करता क्योंकि अल्लाह के सच्चे बन्दे कभी ऐश की जिन्दगी बसर नहीं करतें."

-- मुखाज बिन जबल, खइमद.

मुहम्मद साहब ने कहा कि:—"जो आदमी किसी भी मूट बालने वाले का आदर करता है वह ऐसा करके इसलाम की इमारत को ढाने में मदद देता है."

-- इवराहीम, बेहकी.

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"वह आदमी मूटा नहीं है जो दो आदमियों में मुलह कराता है और इस معان بن جبل کا بھان فے کہ:۔ "بمحمد ماحب نے جب مجمد معنی بین کا گورنر بنا کر بھیجا تو مجھ سے کہا:۔ 'خبردار أ عيش ( راس ) کی زندگی بسر نے کرنا کیونکہ أللہ کے سچے بادے کبھی عیش کی زندگی بسر نہیں کرتے ! "

حمانهن جبل احد .

محصد صاحب کہا کہ:۔۔ ''جو آدمی کسی بھی جھوٹ برائے والے کا آدر کرتا ہے وہ ایسا کر کے اِسلام کی عمارت کو تھائے میں صدد دیکا ہے '''

--ابراهم' بهنقی -

معدد ملحب نے کہا کہ :۔۔ "وہ آدمی جبراً تہاں ہے جو اس ملح کراتا ہے اور اس

हे तिये वनसे अच्छी अच्छी वार्ते कहता है, और वनमें क्र अच्छी बार्वे अपनी वरक से भी जोड़ देता है."

- उम्मे इतस्म, बुखारी : मुसलिय : अनुवादद : तिरमिषी.

मैंने प्रका:-"ऐ अस्ताह के रस्त ! आइमी को सब से अच्छी बीच क्या दी गई है ?" पैराम्बर ने जवाब दियाः -"इसरों के साथ जच्छा बरताब करना."

-- उसामह, बेहकी; बराबी.

मुहम्मद साहब ने कहा :- "तुम में से किसी को यह नहीं चाहिये कि अगर कोई दूसरा बैठा हुआ हो तो अपने बैठने के लिये उसे सादा कर दो; बल्कि सब को जगह दो, तो अल्लाइ तुम्हें जगह देगा."

—इन्न चमर, बुखारी : ग्रुसलिम : अबुदाऊद : तिरमिकी.

मुहस्मद साहब ने कहा कि :- "जब कभी कहीं पर तीन आदमी हों तो डनमें से दो को यह नहीं चाहिये कि वह तीसरे से इटकर दोनों अलग आपस में बार्ते करने लगें, क्योंकि इससे मुमकिन है कि उस तीसरे को बुरा लगे."

-रूब्न डमर, बुखारी मुसलिमः अबुवाडदः मालिक.

मुहन्मद साहब ने कहा :-- "खबरदार ! इमी रास्ते के ऊपर न बैठो !" कोगों ने जबाब दिया—"क्षेकिन इम वहां बैठकर व्यापार की बातें करते हैं." पैराम्बर ने फिर कहा :- "तो जिस तरह बातें करनी चाहियं उस तरह करो." लोगों ने पूछा कि—"बातें किस तरह करनी चाहियें ?" मुहम्मद साहब ने जबाब दिया :-- 'श्रपनी निगाहें नीचे बमीन की तरफ रखो, किसी का भी दिल न दुखाओ, जो कोई आता जाता तुन्हें सलाम करे उसके जवाब में उसे सलाम करो, लोगों को अच्छी बातें करने के लिये कहो, पुरी बातों से रोको, दुखियों का दुख दूर करो, और जो राह से मटक गए हों उन्हें ठीक रास्ता बता दो.

- अनुसर्देद, बुखारी: मुसलिम: अनुदाऊद.

महम्मद साहब ने कहा कि :- "सबमुच शादी कर नेने से आदमी की निगाहें नीची रहती हैं और वह बद-यलनी से बचा रहता है; और जो कोई शादी न कर सके इसे चाहिये कि रोजे रखें, क्योंकि सचगुच रोजे रखने से उसके लिये अपने ऊपर काबूरसना आसान होगा."

- अब्दुल्लाह् विना मसकद, बुखारी : मुसलिम.

کے لئے اُن سے اچی اچی باتیں کہنا ہے' اور اُن میں کچے اجهى باتين ايني طرف سه بهي جور ديتا هـ ."

-- أم كلثهم بخارى: مسلم: أبهداؤد: ترمذى .

مینے بوجھا:-- "اے اللہ کے رسول! آنھی کو سب سے اچھی چيز ايا دي گئي ه 9" پينببر نے جواب ديا: - "دوسروں كر ساته أحما يرتال كانا ."

--أسامة بييتي ؛ بغوس

مصد صلحب نے کہا:۔۔۔ "تم میں سے کسی کو یہ نہی چاہئے که اگر کوئی دوسرا بیتھا هوا هو تو اپنے بیتنہ کے لئے آسے گہڑا کردموا بلكه سب د چكيه دوا تو الله تبهي چكيه ديگا ."

-اين عمر بخارى: مسلم: أبوداؤد: ترمذى .

معدد ماهب نے کیا کا:-- ''جب کھی کیوں پر تین آدمی هیں تو أن میں سے دو كو يه نبين چاهنم كه وہ تيسر۔ سے مت کر درنیں الگ آپس میں باتیں کرنے لکیں کیونکہ اِس سے ممکن ہے نہ آس تیسوے کو برا لکے ."

سابن عمر بخارى: مسلم: أبوداؤد: مالك .

محمد صاحب نے کہا:۔ "خبردار 1) کبھی راستے کے آوپر نه بیٹھو ! <sup>۱۱</sup> لوگوں نے جواب دیا۔۔۔۔۔۔ ایکی هم رهاں بیٹھ کو وبادار کی بلنیں کرتے ہیں ۔'' یعدمبر نے پھر کیا ہے وانو جس طرے ہاتیں کرنی چاہئیں اُس طرح کرو ، " لوکوں تے پوچھا که - "باتیں کس طرے درنی چاھٹیں ؟ " مصد صاحب نے جراب میں اُسے سام کرو' لوگوں کو اُچھی ہاتھں کرنے کے لئے کہو' ہری باترس سے روکو' دکھیں کا دکھ دور کرو' اور جو راہ سے بھاک کئے میں آنہیں تبیک راستہ بنا دو "

- ابو سعيد ؛ بنخارى : مسلم: ابرداؤه .

مصد ملدب ل کہ :۔۔ 'سے مے شادی کراینے سے آدمی کی نگاهیں نیمچی رهتی هیں اور وہ بدچلنی صربحا رهتا هے اور جو كوئى شادى له كرسك أسه چاهله كه روزه ركه كهونكه سے می روزے رکھاے سے اُس کے لئے اپنے اُرپر فاہو رکھنا اُسلی

-عبدألله بن مسعوداً بخارى : مسلم .

मुह्म्मद्रसाह्य ने कहा कि :—"किसी बौरत से शादी पार खूबियों की वजह से की जाती है : या तो उसकी दौलत की बजह से, या उसकी नसल की वजह से, या उसकी खूबस्रती की वजह से, और या उसकी दीनदारी की वजह से. तुम्हें पाहिये, कि तुम दीनदार बौरतों को पसन्द करो. और अगर तुम इन पारों में से किसी और खूबी की वजह से शाही करोगे तो अपने हाथों को गन्दगी में सान लोगे!"

- अबुदुरैरा, बुखारी: मुसलिम: अबुदाऊद: नसाई.

गुहरूमद साहब ने कहा कि:—"सचमुच क्रयामत के दिन सिवाय उन सीदागरों के जो अल्लाह से डरते हैं, इ नेकी करते हैं और सच बोलते है बाक्षी सीदागर गुनहगारों में बादे किये जाएंगे."

--रिफाइ बिन राफी, तिरमिजी.

युहम्मद साहब ने कहा कि:—"किसी भी मान का बेचने बाला और ख़रीदंने वाला जब तक आमने सामने हों तब तक उन्हें सीदा करने या न करने की आजादी है. बेकिन अगर बेचने वाला और ख़रीदने वाला दोनों 'सच बोलें, और अपने माल की असल इक्षीक़त बता दें, तो उनके व्यापार में बरकत होगी; और अगर वह फूट बोलें और माल की बुराई या उसकी अच्छाई को छुपाएं तो यह हो सकता है कि वह नका कमालें पर अस्लाह की बरकत उस व्यापार से मिट जाती है."

-इश्रीम बिन निजाम, बुखारी: मुसलिम: अबुदाऊद: तिरमिजी: नसाई.

लड़ाई के इन्न कैरी पैरान्यर के सामने आए. उनमें एक भीरत थी जिसका बच्चा उससे कहीं भटक गया था. उसकी जाती से दूब टपक रहा था और वह बेचैनी के साथ बबे को इबर उबर दूँ इती फिर रही थी. जब उसे बच्चा मिल गया तो उसने उसे उठाकर ज्ञाती से चिपटा लिया और उसे दूब पिलाना छुरू कर दिया. इस पर पैरान्यर ने हम कोगों से कहा:—"तुम क्या सोचते हो ? क्या यह औरत कमी अपने बच्चे को आग में फेंकेगी ?" हमने जवाब दिया:—"नहीं, अगर इसमें शक्ति है तो कभी नहीं फेंकेगी." इस पर पैरान्यर ने कहा :—"जितनी इस औरत को अपने बच्चे पर देश है, उससे कहीं अधिक दया अल्लाह को अपने बच्चें पर है."

-- उमर बिन अलख्ताव, बुख्री: मुसलिम.

محمد صلحب نے کہا کہ ہے۔'کسی عورت سے شادی جار خوبھرں کی وجہ سے کی جاتی ہے: یا تو اُس کی دولت کی رجہ شے' یا اُس کی نسل کی وجہ سے' یا اُس کی خوبصورتی کی وجہ سے' اور یا اُس کی دینداری کی وجہ سے ، تمہیں چاہئے کہ تم دیندار عورتوں کو پسند کرو ۔ اور اگر تم اِن وچاروں میں سے کسی اور خوبی کی وجہ سے شادی کروگے تو اپنے ھاتھوں کو گفدگی میں سان لوگے ۔''

-سابرهريوء بخارى: مسلم: ابرداؤد: لسائي.

معدد صاحب نے کہا کہ:--"سے سے قیامت کے دی سوائے اُن سوداگروں کے جو اُللہ سے ذرقے میں' نیکی کرتے میں اور سیے بولانے میں باقی سوداگر گنہگاروں میں کوڑے کئے جائینکے ۔''

- رفاعه بن رفليم ا تومدى .

محمد صاحب نے کہا که :---''کسی بھی مال کا بیجتموالا اور خوید: نے والا جب تک آمنی سامنے هوں تب نک آنہیں سودا کرنے یا نه کرنے کی آزادی هے . لیکن اگر بیچنموالا اور خویدنے والا دونوں سے بولیں' اور اپنے مال کی امل حقیقت بتادیں' تو آن کے ویاپار میں برکت هوگی .' اور اگر وہ جبوت بولیں اور مال کی بوائی یا اُس کی اچھائی کو جبیائیں تو یہ موسکتا هے که وہ نفع کمالیں پر الله کی برکت اُس ویاپار سے محسکتا ہے که وہ نفع کمالیں پر الله کی برکت اُس ویاپار سے محس جاتی ہے ۔''

سمحكهم بن قطام عضارى : مسلم : أهردأؤد : ترمذى : نساعى .

اوائی کے کچھ قیدی پیسبر کے سامنے آئے ۔ اُن میں ایک عورت تھی جس کا بچہ اُس سے کہیں بھٹک گیا تھا ۔ اُس کی چھاتی سے دوردہ ٹھک رہا تھا اور وہ بینچینی کے ساتھ بچے کو اِدھر آدھر تھوئتھتی پھر رہی تھی ۔ جب اُس بیچہ مل کیا تو اُسنے اُسے اُٹھاکر چھاتی سے چپٹ لیا اور اُسدودہ پانا شروع کردیا۔ اِس پر پہنسبر نے ہم لوگرں سے کہا :—"تم کیا سوچتے ہو ؟ کیا یہ عورت کھی اپنے بچے کو آگ میں پھینکیکی ؟ " ہم نے جواب دیا: —"نہیں اگر اِس میں شکتی ہے نو کھی نہیں پھینکیکی " ما نے جواب دیا: سے نہیں اگر اِس میں شکتی ہے نو کھی نہیں پھینکیکی " ہم نے جواب اِس پر پہنسبر نے کہا :—جتنی اِس عورت کو اپنے بیچے پر دیا اِس ہی دیا اللہ کو اپنے بندوں پر ہے ۔"

-عمرين الختاب بخارى: مسلم .

प्रमेश '56

( 200 )

NIR L. L

أبك بار هم ينمير كے ساتھ سفر ميں جا رہے تھے . كچھ لوگ همارے یاس سے گذرہ ، بنمبر نے اُن سے پوچھا: - " تم لوگ کين هو 9" أنهين لے جواب ديا: -- "هم مسلمان هين ." ہمیں یہ ایک عبرت اینا کیانا بنانے کے لئے آگ جلا رہی تھی ۔ اُس کا بیٹا اُس کے پاس پھر رہا تیا ۔ جب آگ کی لیٹیں أَلْهِنَ لَكِينِ تَو السِ نَي أَنِي بِيلِي كُو دور هِنَا دِياً. يَهُ دِيْكُهُ كُر يَعْمُور أس كے پاس كئے . أس نے يهنمبر سے يوچهايٰــــكيا تم هي الله کے رسول هو ؟ " يغنيور نے جواب ديا: -- "هان" . اُس عورت نے یہر کہا:۔۔۔ "میرے ماں باپ آپ یر قربان ہو 1 کیا اللہ سب ديا كرف والول سے برھ كو ديا كرف والا تهيں هے ا ا يهندبر لے جرأب ديا: سائمان؛ هم" أس عررت نے يور يوجها: ساتها ألته النے بندیوں یو اُس سے زیادہ دیا نہیں کرنا جنتی مان اُپنے بجے بركرتي هـ 9 " بينمبر نے جواب صا:--"هان كرتا هـ " أس عورت نے بھر کیا:۔۔۔ "سیم مبم کوئی ماں اپنے بھے کو کبھی آگ میں نہیں پھینکیکی ،'' اِس پر پینمبر نے اُپنا سر نہجا کو لیا اور ردنے لکے . پھر اُنھوں نے اپنا سر اُدیر آٹھا کو اُس سے کھا:--27سم مع الله أبد كسى بندم كو سُوا أنهان دينا سوائد أن ك جو گهداد کرتے هيں " دوسروں کے ساته فساد کرتے هيں جو الله کے خلف بناوت کرتے میں' آور جو یہ کہتے سے اِنکار کرتے میں که سوائے ایک الله کے کوئی دوسرا الله فهیں هے "

سعبدالله بن عبو ابن ماجه .

محمد صاحب نے کیا کہ:۔۔۔ دنیا آس رحمان ( الله ) کا ایک جز ( انگ ) ہے . اِس لئے جو کوئی دیا کریگا وہ الله کے تزديك بهرنسهيلا أور جو كوئى أين كو ديا سه كات ديكا الله اليه النه سه كات دياً "

ــابن عدر ٔ ایرداؤد: ترمنی ،

معدد صاهب نے کیا: -- "رہ رحمان ( الله ) أن ير رحم كرنا هے جو دوسروں پر رحم كرتے هيں ، تم أن پر ديا ( رحم ) كرو جو زمين ير رهته هيل تو أسال پر رهنه وألا ألله تم پر ديا ". K.S

سساين عمرو بين ألعاص ابوداؤد: ترمذهي.

محدد صاحب نے کیا کہ:۔۔" الله أن پر دیا نہیں كرتا جو ادمیس پر دیا نہیں کرتے ۔" --جریر بی عبدالله ' بنعاری: مسلم ۔

--انوانك: شرى متجهب رضوى .

एक बार हम पैरान्वर के साथ सफर में जा रहे बे. कहा लांग हमारे पास से गुजरे. पैराम्बर ने उनसे पूछा :-- "तुम लोग कीन हो ?" उन्होने जबाब दिया:- "इस मुसलमान हैं." वहीं पर एक औरत अपना साना बनाने के लिये आग जला रही थी. इसका बेटा इसके पास फिर रहा था. जब आग की लपटें करने लगीं तो बसने बापने बेटे को दर:इदा विया. यह देखकर पैरान्यर इसके पास गये. इसने पैराम्बर से पूछा: - "क्या द्रम ही अस्लाह के रसल हो ?" पैरान्बर ने जबाब दिया :- "हां." इस भीरत ने फिर कहा :- "मेरे मां वाप आप पर कुर्वान हों। क्या अल्लाह सब दया करने वालों से बदकर द्या करने बाला नहीं है ?" पैराम्बर ने जबाब दिया :-- "हां. है." इस औरत ने फिर पूछा :- "क्या जल्लाह अपने बन्दों पर उससे क्यादा द्या नहीं करता जितनी मां अपने बच्चे पर करती है ?" पैग्रन्बर ने जवाब दिया :-- "हां, करता है." इस औरत ने फिर कहा :- "स्वसूच कोई मां अपने बक्षे को कभी आग में नहीं फेंबेगी." इस पर पैग्रम्बर ने बपना सर नीचा कर लिया और रोने लगे. फिर उन्होंने अपना सर ऊपर उठाकर उससे कहा :- "सचम्च अस्ताह अपने किसी बन्दे को सजा नहीं देता सिवाय उनके जो घमंड करते हैं, दूसरों के साथ फिसाद करते हैं, जो अस्लाह के खिलाफ बरााबत करते हैं, और जो यह कहने से इनकार करते हैं कि सिवाय एक अल्लाह के कोई दूसरा चल्लाह नहीं है."

—अब्दुल्लाह बिन उमर, इब्नमाजह.

महम्मद साहब ने फहा कि:-"दया उस रहमान (अस्ताह) का एक जुज (अंग) है. इसलिये जो काई दया करेगा वह अल्लाह के नजदीक पहुंचेगा. और जो कोई अपने को द्या से काट देगा अल्लाह उसे अपने से काट देगा." -- इन्न अमर, अनुदाऊद : तिरमिजी.

महम्मद साहब ने कहा :-- "वह रहमान ( अल्लाह ) इन पर रहम करता है जो दूसरों पर रहम करते हैं. तुम इन पर बचा ( रहम ) करो जो जमीन पर रहते हैं तो आसमान पर रहने वाला अल्लाह तुम पर देशा करेगा."

--इन्न असर विन अल्यास, अबुदाउद : तिरमित्री.

महम्मद् साहब ने कहा कि :- "अल्लाह उन पर द्या नहीं करता जो धादमियों पर दया नहीं करते."

-जरीर बिन चार्दुस्लाह, बुखारी : मुसलिम.

—-धनुवादक : भी ग्रजीब रिजबी.

साधु करें नहिं चाकरी, पंडित करें न काज, जाित्तर हैं यह किस लिये, संसद, सेठ, समाज.

कटी बेशक कटी पर, एक ही लंका की नारी की, भगाई जब गई सीता, वो कितनों की कटी, बोलो ?

मुरा और कन्स के बैरी, निहायत बीतरागी थे! मुरारि यह थे, यह ही हैं, परस लीजे, समक लीजे.

ये जिनको करल करते हैं, उन्हीं को पूज लेते हैं, ये राजाराम भजते हैं, मिटाकर देश के राजे.

नहीं तो हिन्द है, वहीं तो हिन्दी हैं, अहिन्सा जिनका पेशा है, 'गदाधर' देवता जिनके.

सुमे रग्नवत है तारीकी से बेहद, बह मेरी चान्दनी की बाल्दा है.

न हों ग्रुशकिलें तब तो जीना हो ग्रुशकिल, यही जान है मेरी जासानियों की.

पड़ी पड़ी थी पड़ी हाथ में, घड़ी वे घड़ी हरदम दास, घड़ी घड़ी का अब मैं मालिक. घड़ी हर घड़ी पड़ी खतास.

न पूछो सुक्त से मैं क्या हूँ, यह पूछा क्या नहीं हूँ मैं, महीं हूँ सब मैं जगह गर मैं, बताओं फिर कहीं हूँ मैं?

भंगी नगर-पिता बन बैठे, माडू सेठ लगाते हैं, बामन कमा रहे पैलाने, मेहतर ज्याह कराते हैं, हम जिन्हों समकातेथे, वह आज हमें समकाते हैं, गाँची की जाँची का फल है, वह खुरा यह पक्षताते हैं.

—महासंग भगवासदीत.

سادھو کریں ٹہیں چاکری' پلانٹ کریں تھ کاج' ' آخر عیں یہ کس لائے' سنس' سیٹو' ساج۔

کئی بیشک کئی پر' ایک هی للکا کی فاری کی' بھائی جب گئی سیتا کو کننس کی کئی' بولو؟

مرراً اور کلس کے بھری، نہایت بیتراکی تھے ا، سراریء تھی یدھی ہیں ورکہ لیجے، سنجے لیجے۔

یہ جی کو قتل کرتے ہیں ' آنہیں کو پرچ لیتے ہیں' یہ راجا رام بہجتے ہیں' مقادر دیھی کے راچے ۔

وھی تو ھنں ہے' وہ ھی تو ھندی ھیں' اھنسا جن کا پیشہ ہے' گدادھر' دیوتا جن کے۔

> مجھے رغبت ہے تاریکی سے پہند<sup>ہ</sup> وہ مہری چالدی کی والدہ ہے .

نعموں مشعلیں تب تو جیناعو مشعل ' یہی جان ہے میری آسائیوں کی ۔

کبڑی گھڑی تھی گھڑی ھاتھ میں' گھڑی ہے گھڑی ھردم داس' گبڑی گھڑی کا آب میں مالک' گھڑی ھر گھڑی پڑی آداس،

> بیتکی نکر پتا بن بیتی جہارہ سیاہ لگاتے میں ' باس کیا رہے پیضائے' مہتر بیاد کرائے میں' هم جن کو سنجہاتے تی کو آج همیں سنجہاتے میں گلدهی کی آندهی کا پہلے'و تخرص باہچہالے میں۔

سمهاتما بهكوأن دين .

#### विश्वमभरनाथ पांडे

وشومبهر ناته بالند

कई महीने हुये जब मैंने नया हिन्द के पाठकों से मतका मुमताणमहल और नरिगस के फूलों की घटना का जिक किया था. उन सदाबहार नरिगस के फूलों को देख कर मेरे दिल में यह यक्तीन पुक्ता होता जाता था कि किसी ने जन्मत के चमन से ही यह फूल तांदे होंगे. जहां यह चमन होगा वहां न मीसम का कोई स्वसर होगा. न खिलाँ का और न नमीत का, नहीं तो यह फूल इस तरह हमेशा खिले हुये कैसे अपनी मादक खुराबू फैलाते रहते ?

भीमती जी को छोदकर मैंने किसी और से इन फ़्क़ों की वर्षा न की थी. मेरे नजदीक ये फूल एक वेशकीमत खजाने की तरह थे. शायद कृष्या भगवान को कौस्तुभ मिएयों क्री माला से भी इतनी सुदृब्दत न होगी जितनी सुमे इन फूलों से है. उनके खिले हुये पाटल देखकर मेरा दिल उमगों से भर जाता . किसी दिन यह फूल मुरमा जायँगे, इस खदशे से ही मेरे मन में एक तक्प पैदा हो जाती. लोग कह सकते हैं कि मेरा दिमारा फिर गया था और शायद लोगों का नजरिया भी ठीक हो, लेकिन अगर किसी ने पूनम की क्षिता रात में ताजमहल के उस बारा में वह अवन्मे से भरा हुआ नजारा देखा होता, वह मदहोश बना देने वाला संगीत सुना होता, चुँचुरुओं की मंकार पर, दिल को बेचैन कर देने बाले नाच पर अपने पंजों से ताल दी होती, अमुना के उस पार संगमरमर के मेहराव से ज़ुड़ा हुआ दूसरा ताजमहल देखा होता, तो मुक्ते यक्नीन है कि हर ऐसे शख्स का दिमारा सी फीसदी फिर गया होता तब यह नरिगस के फूल उस पर कमोबेश इतना ही असर जरूर दालते.

मुमे वे फूल जी-जान से प्यारे थे. इतने दिन बीत मुके थे और मुमे जरा भी डनके अन्दर मुरमाने के निशान नहीं दिखाई दिये. यह सही है कि मैं डन्हें हमेशा बाजे पानी में रखता, लेकिन अगर वे बाक़ई जन्नत के बारा से तोड़े गये थे तब यह फिक्क बेकार थी, वे बिना पानी दिये ही तराताजा रहते. लेकिन हम लोग, इस फना होनेवाली दुनिया के रनसान सतरे और डर की बुनियादों पर ही अपनी जिन्दगों का महत चठाते हैं. फूल न मुरमायेंगे इसकी मुमे कमीद तो थी। पर बाकीन न था. کثی مہینے ہوئے جب میں نے نیا ہند کے پاٹھیں سے ملک ممتاز محل اور نرگس کے پہولیں کی گھٹنا کا ذکر کیا تھا ۔ اُن سداہیار نرگس کے پہرلیں کو دیکھیر میرے دل میں یہ یقون پختہ ہوتا جاتا تھا کہ کسی نے جلت کے چس سے سی یہ پہرل توزے ہوئکے ، جہاں یہ چس ہوگا وہاں نہ موسم کا کوئی اثر ہوگا نہ خواں کا اور تہ موت کا تہیں تو یہ پھول اِس طرح ہمیشہ کیلے دوئے کیسے اپنی مادک خوشبو پھیلاتے رہتے ؟

شریمتی جی کو چہررکو میں نے کسی اور سے ان عوارں کی چرچا ته کی تھی . میرے تودیک یه پهول ایک بیش قیمت خزانے کی طرح تھے، شاید کرشن بھکوان کو کوسٹونھ ملهب کی مالا سے بھی اُزنی محبت نا عولی جننی مجھ اِن پھواوں سے ہے، اُن کے تیلے عوث پاٹل دیکھکر میوا دل اُستکوں سے بهر جانا هے ، کسی دن يه پهرل مرجها جائينگ اِس خدشه سے هي ميرے من ميں ايک ترب پيدا هوجاتي هے . لوگ كو سكتے ھیں کے میرا دماغ پور گیا تھا اور شاید لوگوں کا نظریہ بھی ٹھیک ہوا لیکن اگر کسی لے بوئم کی روپہلی رأت میں تاب محل کے اُس باغ میں وہ اچاہد سے بہرا ہوا نظارہ دیکھا هوتا وه مدهوش بنا دینے والا سلکیت سنا هوتا گهرنگیروں کی جهنکار پر' دل کو بے چین کردینہ والے ناج پر اپنے بلجوں سے تال دی ہوتی جمنا کے اس بار سنگ مرمر کے محراب سے جوا هوا دوسرا ناج مندل ديكها هوتا كو مجهد يقين هد كه هر أيسد شخص کا دماغ سو فیصدی پور گیا هوتا . تب یه نرکس کے يهرل أس ير أسم كم و بيض إتنا هي أثر ضرور دالتم .

مجھے وے پہول جی جان سے پیارے تھے ، اناء دن بھت چکے نیے اور مجھے ذرا بھی اُن کے اندر مرجھانے کے نشان نہیں دکھائی دیئے یہ صحیح شے کہ میں اُنہیں ہمیشہ تازہ پانی میں رئیتا' لیکن اگر وے راتمئی جانت کے باغ سے توزے گئے تھے تب یہ کر بیکار تھی' وہ بنا پانی دیئے ہی تورتازہ رہتے ، لیکن ہم لوگ' اس دنا ہونے والی دنیا کے اِنسان' خطرے اور تر کی بنیادوں پر ھی اپنی زندگی کا محل آباتے میں ، پھول نہ مرجھائینکے اِس کی مجھے آمید تو تھی' پر یقین نہ تھا ،

फिर यकायक मुझे जागरा छोडकर मेबाड जाना पड़ा. जिस दिन में उदयपुर में था इस दिन भी पुनम की रात थी. ताजमहल की उस पूनम की रात के बाद, कि जैसी रात शायद लाख-लाख बरस में सिर्फ एक बार आती है, ठीक एक महीना शेत चुका था. मैं चितौड़ की फुतह मीनार के सामने खड़ा था. कितनी ही सदियों से बाजादी की यह अनोखी यादगार पहाड़ी की चोटी पर गुरूर से सिर ऊँचा किये खड़ी हुई है. शिशोदिया खान्दान के कितने ही रानाओं को उसने देखा है और फितना की ही कीर्ति की कहानी उसने सुनी है. इसके पथरीले दिल में ऐसी-ऐसी नाजक और खुबसूरत नवयौवना राजपूत महिलाओं की प्रेम कहानी जड़ी हुई है जिन्होंने सोहाग रात के सबेरे ही ताजा प्रेम की जाती पर पैर रखकर अपने साजन के माथे पर विलक लगाडर मैदाने जंग के लिये रवाना किया था. लाखों-लाखों कंठों की जय-ध्वनि के बीच उसने मारू गीत सुने, लाखों सैनिकों ने उसके सामने सिर मुकाकर क्रसम खाई, मैदाने जंग से कभी जिन्दा न लौटने की. तपे हुये सोने सी, चमकते हुये हीरे सी, सुनहले चम्पे सी नाजुक, सुकुमार पुरवधुकों को इसने जीहर की लपटों में जलते हुये देखा है, फर ज्माना बदला, कैफियत बदली, दिन, बदले और उसी फतह मीनार ने सांगा और प्रताप की श्रीलाद रानाओं को किरंगियों के बूट पहने क़द्भीं पर गिड़गिराते हुये सिर सुकाते देखा है. मैं हैरत में भरा हुआ जाने कितनी देर तक अपनी उम'गों के किनारों पर ड्वता-उतराता रहा और धीरे घीरे बांदनी फीकी पढती गई.

पढने बाले शायद मेरे तफसीली इस बयान से गालिबन जब गये होंगे और पाठक के धीरज की भी एक हद होती है. लेकिन मैं एक ऐसे वाक्रये पर रोशनी हाल रहा हूँ जो मेरी आँखों के सामने गुजरा है और हरक बहरक सब है. में समभता है रसकिन ने ही तो यह कहा है कि-"इन्सान इस दुनिया में जो सबसे बड़ा काम करता है वह है किसी चीज को देखना, फिर उसे इस तरह बयान करना जिसे सुनकर दूसरों के सामने उस बाक्रये की ठीक तसवीर उतर आये. एक शहस सोचता है और सैकड़ों लोग उस शहस के ख्याल को दोहराते हैं. एक आदमी सही नजरिये से किसी चीज को देखता है और हजारों आदमी उस पर ग्रीर करते हैं." रसकिन इससे भी आगे बढ़कर कह सकता था कि हजारों आदमी देखते हैं लेकिन बिरले ही अपनी देली हुई घटना को सही लक्ष्यों में इजहार कर सकते हैं. रसिकन में कहा है---"साफ-साफ देखकर उसे सही लावजों में बयान कर सकना ही 'शायरी', 'पेशीनगांई' और 'मजहब' है." करंखों जाविमयों के लिये अपनी आंखों की वही कामत है जो किसी जानवर की बांखों की हाती है-नहत्व अक

بر یکایک مجھے آگرہ چورزکر میواز آتا پڑا ، جس دن میں اُردید یہر میں تھا اُس دین بھی پرنم کی رات تھی۔ ا معل کی اُس پرٹم کی رات کے بعد که جیسی رات شاید ج الله برس میں مرف ایکبار آتی هے آج ٹھیک ایک مهیند سے چکا تھا ۔ میں چٹور کی نتم مینار کے ساملے کورا تھا ۔ کنے هی مدیس سے آزادی کی یہ اثوکمی یادگر پہاری کی چوٹی پر فوور سے سر اُولنچا کانے کھڑی ھوٹی ھے۔ ششودیا خالدان کے علیے می راثاؤں کو اُس نے دیکھا ھے اور کتنوں می ا کیرتی کی کہائی اُس نے سلی ہے ۔ اُس کے پتھریا دل میں ایسی ایسی نازک اور خوبصورت نویوونا راجھوت مہاوں کی پریم کہانی جوی ہوئی ہے جانہوں نے سپاگ رات کے سویرے ھی تازہ پریم کی چھاتی پر پھر رکھکر اپنے ساجن کے ماتھے پر تلک لگاک میدان خِنگ کے لئے روائد کیا تھا۔ لاکھوں لاکھوں انتہں کی جے دعونی کے بیچ اُس نے ماروگیت سنے، لاکوں استیار کی جات کے سامنے سرجھاکو قسم کھائی میدان جنگ ے کبھے زندہ نے لوٹنے کی، تھے ہوئے سونے سی چمکتے ہوئے مھوے س ا سنہلے چہیے سی تازک سکمار پرودھوؤں کو اُس نے جوھر ال ليترس ميں جلتے هوئے ديكها هم ، يهر ومائد بدلا كينيت بدلی' دن بدلے اور اُسی فقع مینار نے سانکا اور پرتاپ کی آولاد راناؤں کو فرنگیوں کے ہوت پہنے قدمیں پر گرگزاتے ہوئے سر جهاتے دیکھا . میں حیرت میں بھرا هوا جائے کتنی دیر تک اپنی امنکس کے کناروں پر توبتا اُترانا رہا اور دھورے دعورے چاندانى يەيكى يۇتى كئى .

وزهلی والے شاید میرے اِس تفصیلی بیان سے غالباً اُوب گئے مونکے اور پائیک کے دھیرے کی بھی ایک حد ھوتی ہے لیکن میں ایک ایسے وافعی پر روشنی قال رہا ہوں جو میری آنکھوں ك مامني كذرا في اور حرف بحرف سي في . مين سنجهدا هون رسكن نے هي تو يه كها ه كهـــــ النسان اِس دنيا مين جو سب سے ہوا کام کرتا ہے وہ ہے کسی چیز دو دیکھنا ، پور اُسے اِس طرح بیان کرنا جسے سلکر دوسروں کے سامنے اُس واقعے کی ئين تصوير أتر آئه. ايك شخص سوچنا هے اور سيكورن لرک اس شغص کے خیال کو دھراتے میں۔ ایک آدمی صحیح نظریه سے کسی جیز کو دیکھا ہے اور هزاروں آدمی اُس پر غور ارتے میں " رسمی اِس سے بھی آگے بوعمر کو سمتا تیا که هواروں أدى ديكيت هيل ليكن برله هي أيني ديكهي هوئي كهندا دو متعیم لفظوں میں اِطهار کرسکتے عیں . رسکن نے کیا ہے۔۔ "مات ماف ديكيكر أس محيم لنظون مين بيان كرسكفا هي هاعري الهيشينكولي أور أدفهب هيا الروزوں آدمیوں کے لئے اپنی اُسکھوں کی وعی قیمت ھے جو کسی جادور کی آلکھوں کی دوئی ہے۔معض یورک

بعجائے میں مدد دیاہ والی ، اِن کے علوہ ہواروں اِنسان اُسے دیاہ جو دیکھے ہیں دیاہی ہوئی چیؤ کو سحجھتے بھی ہیں ایکن لفظیں میں آسے بیان نہیں کوسکتے ، اپنے ہی خیال کو الفاظ کا جامع نہیں پہنا سکتے اور زندگی میں نئی نئی چیؤوں کو دیاہئے کے آنھیں جو نایاب موتعے ملتے ہیں اُس کی خوشی وے کسی اور کے ساتھ نہیں موتعے ملتے ہیں اُس کی خوشی وے کسی اور کے ساتھ نہیں ایسے شخص جنہوں نے دنیا کے بہدد داچسپ نظارے دیاہے عیں کئی ایتہاسک سماروہیں پر موجود رائے عیں اور اپنے زمانے کے بڑے سے بڑے لوگوں سے سلے ہیں اُپنی بات چیت میں اِس تعجربے سے کڑی نایدہ نہیں آنہا پاتے ، اگر اُن سے اُن میں اِس اُنہ بہوں پر موال کیجٹے تو اُن کے جو ب نہایت پہنے اور نیوس ہوتے ہیں ، صرف توری سے لوگ ایسے ہوتے ہیں اور دوسروں کو بھی اپنی ہی آنہیں سے جو سویم دیکھتے ہیں اور دوسروں کو بھی اپنی ہی آنہیں سے دیکھنے کی اُن وہ دیکھتے ہیں اور دوسروں کو بھی اپنی ہی آنہیں سے دیکھنے کیں .

چاور سے اُدسے پور لوقائے ہوئے راستے بیر میں اِنہیں وچاروں میں کہویا رہا ، جب واپس اپنے ٹیہرنے کی جاء پہرتھا اُس سئے پورب کی رائی اُوشا تھالوں میں کمام بھرکر بابھر رہی تھیں ، جھیل کے پاس اِکا دوکا بابولے یوگ کا اُس لگا ، کھڑے تھیں ، چالفتی ہوئی کلیاں چاندئی کے ٹپ ٹپ آئسوں پر نائمی پروا نائم ہوا تھا ایک آدھ مہارائی کمر کسے پربھا کا سنگار ابھی پورا نائم ہوا تھا ایک آدھ مہارائی کمر کسے پربھائی بابور رہی تھی ، میں نے جمھائی لیتے ہوئے کمرے کا دروازہ بابور رہی تھی ، میں نے جمھائی لیتے ہوئے اس طرح دردازہ کھوا تھیا ہونے شرن میں آئے ہوئے انکوائی لیتے ہوئے اِس طرح دردازہ کھوا بہائی ہائے شرن میں آئے ہوئے شکرو کو آتم سمرین کرتے دیکھار وجئی بادوہ اطمینان کے ساتھ دھنگ کی کمان آنار رہا ہو و

کمرے میں گیستے ہوئے جس چیز پر سب سے پہلے میزی نگاہ پڑی وہ چاندی کا نقاشی کیا ہوا خالی گلدان ایا ، میرے ساتھ ساتھ ساتھ شدیمتی جی بھی چونکیں۔۔''ھیں آ نوگس کے بھول کہاں گئے ہ' گلدان میں صرف پانی بچی رہا تھا' کمرے کا کوئے کرنے چھان مارا، رات کو جب شریمتی جی دروازہ بند کرکے سوئی تبیہ تو آخری بار اُن پھوارں کی آنھوں نے سکندھ لی تھی، دروازہ ' کیزکیاں' جہلملی اور جنگلے سب بند تھے ، کمرے کی بزر سب جیوں کی تیوں قرینے سے رکھی تھیں ، شریمتی ہی کے پرس میں ھیرے اور پکھراج کی تیوں انکوٹھیاں اور سو جی کے پرس میں ھیرے اور پکھراج کی تیوں انکوٹھیاں اور سو کے سات نوٹ جھوں کے تیوں رکھے بھے ، مینے سب نوٹو خاروں کو دیکیا نیا بیکن کسی نے آنھیں چھوا نے در پونوپ سکلے کانی ، سب نے بھواوں کو دیکیا نیا بیکن کسی نے آنھیں چھوا نے بھی تاریعیے پر پھونچ سکلے نے اُن دیا ایکن میں کسی نیستے پر پھونچ سکلے کے لئے آزاد بھا' لیکن میں کسی نیستے پر پھونچ سکلے کے لئے آزاد بھا' لیکن میں کسی نیستے پر پھونچ سکلے کے لئے آزاد بھا' لیکن میں کسی نیستے پر پھونچ سکلے کے لئے آزاد بھا' لیکن میں کسی نیستے پر پھونچ نیسی

बुकाने में मदद देने बाली. इनके अलावा हजारों इन्सान ऐसे हैं जो देखते हैं. देखी हुई बीज को समकते भी हैं लेकिन लक्ष्मों में उसे बयान नहीं कर सकते. अपने ही ब्याज को जल ताज का जामा नहीं परना सकते और जिन्दगी में नई-नई बीजों को देखने के उन्हें जो नायाब मौके भिलते हैं उसकी . खुशी वे किसी और के साथ नहीं बटा सकते. मैंने अक्सर इस बात पर हैरत जाहिर की है कि ऐसे शक्स जिन्होंने दुनिया के बेहद दिलवस्य नजारे देखे हैं, कई ऐसिहासिक समाराहों पर मौजूद रहे हैं और अपने जमाने के बड़े से बड़े लोगों से मिले हैं, अपनी बातबीत में इस तजुर के से बड़े लोगों से मिले हैं, अपनी बातबीत में इस तजुर के साथ नीरस होते हैं. सिर्फ थोड़े से लोग ऐसे हाते हैं जो स्वयं देखते हैं और इसरों का भी अपनी ही आँखों से देखने का मौका देते हैं.

चितौद से उदयपुर लौटते हुये रास्ते भर मैं इन्हीं विचारों में खाया रहा. जब बापस अपने ठहरने की जगह पहुंचा उस समय पूरब की रानी ऊषा थालों में कुमकुम भर कर बिलेर रही थीं. भील के पास इक्का-दुक्का बगुले योग का आतन लगाये खड़े थे. चटलती हुई कलियां चांदनी के टपटप आंधुओं पर जुकताचीनी कर रही थीं. सूरज की पटरानी प्रभा का सिंगार अभी पूरा न हुआ था, एक आध मेहतरानी कमर कसे प्रभाती गाते हुये, इन्सान के सम्पर्क में आई हुई सक्कों का पाप बटोर रही थीं. मैंने जम्हाई लेते हुये कमरे का दरवाजा थपथपाया. श्रीमती जा ने अंगड़ाई लेते हुये इस तरह दरवाजा खोला माना रास्या में आये हुये राञ्च को आत्म-समर्पण करते देखकर विजयी यादा इतमीनान के साथ धनुष की कमान उतार रहा हा.

कमरे में घुसते हुये जिस बीज पर सबसे पहले मेरी
निगाह पढ़ी बह बांदी का नक्कारी किया हुआ खाली
गुलदान था. साथ-साथ श्रीमती जी भी बौंका—" हैं!
नरिगस के फूल कहां गये?" गुलदान में सिर्फ पानी बब
रहा था, कमरे का कोना-कोना झान मारा. रात को जब
श्रीमती जी दरवाजा बन्द करके सोइ थीं वा खाखिरी बार
उन फूलों की उन्होंने सुगन्ध जी थी. दरवाजे, खिइकियां,
किलामली और जंगले सब बन्द थे. कमरे की बाकी बीज
सर ब्यों की स्यों करीने से रखी थां. श्रीमती जी के पसे में
हीरे और पुखराज की तीन अंग्रुंठयाँ और सी-सी के सात
नाट ब्यों के त्यों रखे थे. मैंन सब नीकर-वाकरों को
बुलाकर पूझा, हरेक से सवाल किये गये और जिरह की
गइ. सबन फूलों को देखा था लाकन किसी न उन्हें छुआ
न था. कस्पना स मैं किसी भी नतीजे पर पहुँच सकन के
लिये आखाद थां, लेकिन मैं किसी नतीजे पर पहुँच सकन की

घटना की कोई सिलसिलेबार कदी होती है, तब न मैं किसी नतीजे पर पहुंचता ? लेकिन इसके बाद जो घटना घटी वह इससे इतना प्यादा मिलती-जुलती है कि शायद उसकी रोशनी में इन फूलों के गुम होने के सिलसिले में कोई राय कायम की जा सके.

#### 2 ]

राजपूताने से बन्बई पहुँचकर क़रीब एक हफ़्ता हमें जहाज का इन्तजार करना पड़ा. इस बार मैं अपनी श्रीमती जी को नील नदी के किनारे बने हुये मिस्न के अजीपुरशान पिरेमिड दिखाना चाहता था. 22 फरवरी का हम लोग काहिरा पहुँचे. प्राचीन मिस्न की उस महान सभ्यता को हमने उसी शान के साथ खड़े पाया.

मिस्न के पहले फिरकान मेनी के जमाने में यानी हजरत हैंसा से 34 सी बरस पहले और बाज से 53 सदी पहले हमें दरया नील के कुबीं जबार में हजारों बरस पुराने बढ़े-बढ़े र हरों के खंडहर मिलते हैं. मेनी के जमाने में मिस्न की सरसन्जवादी सेतों और दरक्तों से ढकी हुई थी। समुद्र से सी मील ऊपर नील सात बड़ी-बड़ी धाराओं में बंटकर बहती थी. इन सातों धाराओं में किश्तयों पर मुसाफिरों और न्यापारियों की भीड़ लगी रहती थी. समुन्दर के दोनों किनारे ऐशियाई मुहकों के साथ तिजारत करन वाले जहाजों से भरे रहते थे.

मेनी के जमाने से मिस्र के बादशाह अपने को 'पेरोये' कहते लगे. मेनी पहला 'पेरोये' था. 'पेरोये' का अर्थ है 'सूर्यवंशी'. यह लगज 'प्राह' से निकला है जो सूर्य का एक नाम है. इसी से बिगड़कर बाद में 'क्राओह और फिरआन' लग्ज बने.

क्राहिरा पहुँचकर क़रीब एक सप्ताह हम लोगों ने पिरोमि देखने में लगाये. बाद में इस पिरोमि को ही लोग पिरोमिड कहने लगे. ये पिरोमिड सूर्य देवता 'रे' (रबि) का एक प्रतीक समस्त्री जाती थीं और हर पिरोमि के सबसे ऊपर सूर्य का निशान बना हाता था.

मेरी बीवी ने जब से गाइड-बुक पढ़ी, छन्हें मलका हेत-शेप-सूत की समाधि देखने की ही छुन थी. मिस्र की यह मशहूर शहंशाह इजरत ईसा से 1493 बरस पहले मिस्र के तख्त पर बैठी. पहले पेराये युथमोसे की यह बेटी थी. मिस्र के बढ़े से बढ़े बादशाहों में उसकी गिनती थी. धन-दौलत. झान-विज्ञान, इस्तकारी, कला-कौशल, तिजारत, अमन-आमान, तहजीब और तमदुन सब के विचार से हेप-शेप-सूत का जमाना मिस्र के इतिहास में बड़ा अहम सममा जाता है. 21 बरस तक उसने राज्य किया. वह मरदाने लिवास में रहतीं थी और बजाय 'मलका' के 'शहंशाह'

ہڑنا کی کوئی سلسلے وأر کوی هوئی هے' تب نه میں کسی نہیں ہے۔ نہ بہ نه میں کسی نہیں ہے ہوئی ہے۔ نہ میں اس نہیں ہے ہوئی ہے۔ اس کے بہور جو گہٹنا گہٹی وہ اِس سے اِننا زیادہ ملتی جلتی هے که شاید اُس کی روشنی میں اِن بہاں کے گم هوئے کے سلسلے میں کوئی وأثہ تایم کی جا سکے ،

## [ 2 ]

راجہوتائے سے بمبئی پہونچکر قریب ایک هفته همیں جہاز انظار کرتا ہوا ، اِس بار میں اپنی شریمتی جی کو نیل ندی کے کنارے بنے ہوئے مصر کے عظیم الشان پریمت دکیاتا چاهتا تھا ، کے کنارے بنے ہوئے مصر کی عظیم لیتے ، پراچین مصر کی اُس مہان سبیٹیٹا کو هم لے اُسی شان کے ساتھ کیڑے پایا ،

مصر کے پہلے فرعوں مہلی کے ومائے میں یعلی حضوت عیسی سے 34 سو ہرسے 34 صدی پہلے هیں دریائے نیل کے قریب جوار میں ہواروں برس پرائے ہرے ہرے شہروں کے کہنزر ملتے هیں ، میلی کے زمائے میں مصر کی سوسبز وادی کھیلوں اور درختوں میلی ہوئی تھی۔ مدر سے سو میل آوپر نیل سات ہری بری دھاراؤں میں بات کر بہتی تھی ۔ اور ویاپاریوں تھی ناز اور ویاپاریوں کی بھیڑ لکی رهتی تھی ، سندر کے دونوں کنارے ایشیائی ملکوں کے ساتھ تجارت کرنے والے جہازوں سے بورے رهتے تھے .

مینی کے زمالے سے مصور کے بادشاہ آپنے کو 'پیروٹے' کہنے لکے ۔ مینی پہلا پیروٹے تھا ۔ 'پیروٹے' کا اُرٹھ ہے 'سوریہ ونشی' ۔ یہ لفظ 'پراہ' سے نکلا ہے جو سوریہ کا آیک نام ہے ۔ اِسی سے بکر کو بعد میں 'فراعوہ اور فرعوں' لفظ بنے ۔

قاهرة پہونچ كر قربب أيك سيتاة هم لوگوں نے پريمى ديكھال لگائے ، بند ميں اِس پريمى كو هى لوگ پريمذ كہنے لكے ، يہ پريمت سوريه ديوتا 'رے' ( روى ) كا أيك پرتيك سمتھى جاتى تھى اور هو پريمى كے سب سے اُوپر سوريه كا نشان بنا هوتا تها ،

 इहताना पसंद करती थी. सब सरकारी काराओं भीर रेतानों में उसके लिये पुल्लिंग सर्वनाम ही इस्तेमाल किये जाते थे.

मिलियों में दत्सकथा थी कि हेत-रोप-सूत के जन्म से पहले देवताओं की एक सभा हुई. कामन यानी सूर्य देवता हस सभा के सदर ने. समा में सत्य के देवता 'योय' ने आमन को मशिवरा दिया कि इन्सान की भलाई के लिये आप मिला के पेरोये थुथमोसे पहले का रूप घरकर थुथमोसे की महारानी के पास जावें और उससे एक सुन्दर कन्या को जन्म दें. इस तरह सूर्य भगवान और थुथमोसे की महारानी के संयोग से हेत-रोप-सूत पैदा हुई. हेत का मतलब है बड़ा. हेत-रोप-सूत का मतलब है बड़ा.

कहते हैं मिस्री इतिहास में इससे पहले किसी पेरोये के दरबार की बह शान-शीकत न थी जो हैत-शेप-सूत के दरबार की थी. सन् 1472 ईसा से पहले 58 बरस की बायु में हेत-शेप-सूत की मीत हुई. मरने के बाद सूर्य देवी के नाम से उसकी पूजा होने लगा.

#### [ 3 ]

चस दिन वसन्त ऋतु की पूर्णिमा थी. नील नदी की साड़ी में प्रकृति गोटा टॉकने में मसहरूक थी. रेगिस्तान का वर्ग-कर्रा चांद के उपहले सरोवर में नहाकर निस्तर चठा था. इथयोपिया के लोबान के जंगलों से दिक्सनी हवा मिस्र को गुद्गुदाते हुये लीबिया का क्रूने के लिये सरपट दौड़ रही थी. इमारी मोटर रेगिस्तान की छाती चीरती हुई देत-राप-सूत 'की समाधि की जार चली. क्ररीब दस बजे रात का इम लोग समाधि के सामने जाकर खड़े हुये. दिन की तेज मिस्री गर्मी श्रीमती जी बर्दाश्त न कर सकती थीं, इसीलिये तेज टाचों की राशनी में ही समाधि देखने का फैसला किया गया था.

इसने समाधि देखी. उसका बयान असम्भव है, अगर यूनानियों की बनाई हुई समस्त इमारतों को एक जगह एक-त्रित कर दिया जाने तो भी ने इस समाधि की बराबरी नहीं कर सकती. यह समाधि क्या थी पूरा एक तिलिस्म थी. इसमें संगमरमर जदे हुये 12 बड़े-बड़े चौक थे. इसके 6 चौक उत्तर की ओर खुलते हैं और 6 दक्षिण की ओर. ठीक एक तूसरे के सामने विशालकाय द्वार थे. पूरी इमारत चारों ओर से एक बड़ी प्राचीर से चिरी हुई थी. आधी इमारत चमीन के भीतर और आधी खमीन के ऊपर. कुल कमरों की संख्या तीन इचार थी. इस में 1500 खमीन के नीचे और 1500 खमीनके ऊपर. کہالاً پسلد کرتے تھی ۔ سب سرکاری کافذوں اور اعالی میں اُس کے لئے پولنگ سرونام هی اُستعمال کئے جاتے تھے ۔

مصریوں میں داست کہتا تھی کہ ھیت، شیپ سوریہ دیوتا کے جام سے پہلے دیوتاؤں کی ایک سبها هوئی۔ آمن یعلی سوریہ دیوتا آس مصریح بیات اس سبها کے دیوتا 'تہوت' لے آمن کو مشورہ دیا کہ انسان کی بھائی کے لئے آپ مصریح بیروئے تہتمو سے پہلے کاروپ دھر کو تہتیمو سے کی مہارائی کے پاس جاریں اور آس سے ایک سندر کلیا کو جام دن ۔ اِس طاح سوریہ بھاران اور تہتموسے کی مہارائی کے سیوٹ سے ھیت۔ شیپ سوت پیدا ہوئی ۔ ھیت کا مطلب شے یوا ۔ هیت۔ شیپ سوت پیدا ہوئی ۔ هیت خاندان والوں میں سب سے ہوا ۔ '

کہتے ہیں مصری اِنہاس میں اِس سے پہلے کسی پھروے کے دیار کی وہ شان شوئت نہ تھی جو ہیت، شیپ، سوت کے دربار کی تھی ، سن 1472 عیسی سے پہلے گا اور کی آیو میں ہیت۔ شیپ، سوت کی موت ہرئی ، مرنے کے بعد سوریه دیوں کے نام سے اُس کی پوچا ہوئے گئی ،

## [ 8 ]

اس دن وسنت رت کی پورنیما تھی ، نیل ندی کی ساری میں پرکرتی گوتا ٹانکنے میں مصروف تھی ، ریگستان کا فرہ دُرہ چاند کے روپہلے سرورر میں دُبا کر تھر اُٹھا تھا ، اِتھوریها کے لوبانی کے جنگلوں سے دکھنی ہوا مصر نو گدگداتے ہوئے لیبھا کو چھولے کے لئے سریم دور رهی تھی ، هداری موثر ریگستان کی چھاتی چھرتی ہوئی ہیت - شیپ سوت کی سمادهی کی اور چلی ، قریب دس بجھے رات کو ہم ارک سمادهی کے ساملے جاکر اُبڑے ہوئے ، دن کی تیز مصری گرمی شریمتی جی پرداشت نہ کر سکتے تھیں اِس لئے تیز تارچوں کی روشلی میں هی سمادهی دیکھنے کا فیصلہ کیا گیا تھا ،

هم لے سادهی دیکھی ، اُس کا بیان اسبھو ہے ، اگر یونانیوں کی بنائی هوئی سست عارتوں کو ایک جگہ ایکٹرت کو دیا جارے تر بھی وے اِس سادهی کی ہرابوی ٹیھن کر سکتیں' ، یہ سادهی کیا تھی پورا ایک طاسم تھی ، اِس میں سنگ مرمر جڑے ہوئے 12 ہڑے بڑے چرک تھے اِس کے 6 چوک اُرزی اور کہنتے ھیں اور 6 دکھن کی اور ٹھیک ایک دوسرے کے سامنے رشالگایہ دوار نے ، پوری عارت چاروں اور سے ایک بڑی پراچیر سے گھری ہوئی تے ہیں، اُدھی عارت زمین کے اُرپر ، کل کوروں کی سنکھیا تھی ہزار ہے ایس میں زمین کے اُرپر ، کل کوروں کی سنکھیا تھی ہزار ہے ، اِس میں زمین کے اُرپر ، کل کوروں کی سنکھیا تھی ہزار ہے ، اِس میں اِس کے اُرپر ، کل کوروں کی سنکھیا تھی ہزار ہے ، اِس میں اِس کے اُرپر ، کل کوروں کی سنکھیا تھی ہزار ہے ، اِس میں اِس کے اُرپر ، کل کوروں کی سنکھیا تھی ہزار ہے ، اِس میں اِس کی اُرپر ، کل کوروں کی سنکھیا تھی ہزار ہے ، اِس میں اِس کی اُرپر ، کل کوروں کی سنکھیا تھی ہزار ہے ، اِس میں اِس کی اُرپر ، کل کوروں کی سنکھیا تھی ہزار ہے ، اِس میں اِس کی کوروں کی سنکھیا تھی ہزار ہے ، اِس میں کی کوروں کوروں کی کو

में और मेरी श्रीमती जी इस श्रीमकाय, सीन और मुनसान समाधि में भपनी टार्चों की रीशनी फैलाते हुये चुसे. इस लोग बीकों से निकलकर कमरों में गये और कमरों से निकलकर पटे हुये पक्के रास्तों से होकर सहनों पर सड़ी हुई इसों पर, फिर नये-नये कमरों में, और फिर इनसे निकलकर नये-नये चौकों में. इसे और दीवारें सब पत्थर की थीं. दीवारों का काना-काना मुन्दर चित्रकारी से भरा हुआ था. हर चौक के चारों ओर संगमरमर की बनी हुई गैलरों थी जिसमें बहुत वारीक नक्काशी का काम था.

सबसे अचम्मे की बात यह दिखाई दी कि इन समस्त कमरों और चीकों की छतें एक एक साबित पत्थर की ही काटकर बनाई गई थीं. बीच में काई कड़ी या राहतीर नहीं थी. यह इतनी बड़ी और भारी इमारत इतनी ठांस बनाई गई थी कि युगों के बीत जाने के बाद भी उस पर कोई नाशकर प्रभाव नहीं पढ़ सका. कमरों के दरवाजे इतने आश्चर्य-जनक ढंग से बनाये गये थे कि खोलते ही बादल की गरज के समान एक जारदार आवाज अन्दर गूँजने लगती थी. इमारत में पत्थर के पचासों जीने बने हुये थे. नीचे के कमरों में पहुँचकर बिलकुल यह मालूम होता था कि अब और कोई रास्ता नहीं है. तीन चार घंटे समाधि में घूमने किरने के बाद श्रीमती जी नीचे की मंजिल में एक दीवार के सहारे बैठ गई. उसके बाद जो घटना हुई उससे हमारे आश्चर्य का ठिकाना न रहा.

जिस दीवा के सहारे वे वैठीं वह ठोस पत्थर की थी और करीब 1500 मन भारी होगी. श्रीमती जी को उसके सहारें बैठे अभी दो मिनट भी न हुआ होगा कि वह पूरी दीबार उन्हें सरकती हुई मालूम हुई. वे चीख मार कर कृद कर अलग जा खड़ी हुई. मुक्ते भी पहले भय और बाद में कीत्हल हुआ, उस दीबार पर मैंने अपना पूरा बजन फें का. ऐसा लगा यह किसी कील पर रखी हुई थी. दीवार का एक पल्ला भी छे सरकने लगा और साफ उतरती हुई सीढ़ियों का एक सिलसिला नजर श्राया. हमें ऐसा लगा मानो सदियों के किये हुये मेद का द्वार हमारे लिये खुल गया. समाधि की गाइड बुक में नीचे की मंजिल से किसी कमरे में कहीं रास्ता जाता है, इस का जिक्र हमने नहीं पढ़ा था. मेरे दिल में एक आश्चर्यजनक कौतूहल चठा कि बीसों बरस से संसार के प्रातत्ववेसा सम्राज्ञी की जिस असली कृत्र का पता लगा रहे थे-स्या यही उसका द्वार है ? मेरी श्रीमती जी सहमी हुई खड़ी थीं. टार्च के प्रकाश में मैंने देखा उनके कपोलों पर पसीनें की बूँदें उभर आई थीं. मैंने प्यार से मुक्कर उन्हें अपने ओठों से मिटा डाला.

टार्च की रोशनी को आगे करके इस दोनों सहसे और शंकित सीदियों से नीचे उत्तर, चक्करदार सीदियों का कहीं

سب سے اچنبھے کی بات یہ دہائی دبی کہ اِن سمست کررں اور چوکوں کی چہنیں ایک ایک ٹابت پنہر کی ھی کائمر بنائی گئی تھیں ، بیچ میں کوئی کری یا شہندر ٹییں تھی، به اِنٹی بڑی اور بهاری عمارت اِنٹی ٹھرس بنائی گئی تھی که یکوں کے بیت جانے کے بعد بھی اُسھر کنچت کوئی ناشکر پربہاؤ تہدں بر اُنٹے گئے تھے کہ نہوائے ھی بادل کی گرچ کے سمان ایک زردار اُزاز اندر گوجنے لکتی تھی ، عمارت میں پنہر کے پچاسوں زیئے بنے ھوئے نیے ، نیچے کے کرراں میں پہونچ کر باکل یہ معلیم ہوتا تھا کہ اب اور کوئی راستہ نہیں ہے، تھی چار گھنتے سمانھی میں گھومنے پہرنے کے بعد شریعتی جی نیچےکی منزل میں ایک دیوار کے سہارے بیٹھ گئیں ، اِس کے بعد جو گھٹنا ھوئی اُس سے دیوار کے سہارے بیٹھ گئیں ، اِس کے بعد جو گھٹنا ھوئی اُس سے ممارے آشچریہ کا ٹیکائی نہ رہا ،

جس ديوار کے سہارے وے بيابيس وہ الوس پاہر کی تھی ارر قریب 1600 من بھاری ہوگی . شریبتی جی کو اُس کے سبارے بیالے ابھی دو منت بھی نه هوا هبا که ولا پوری کی يېرى ديوار انهيى سركتى هوئى معلوم هوئى . و ه چيخ ماركر كودكر الك جاكيوى هولين . مجه بهي يبله به أور بعد شين كوتوهل هوا . أس ديوار ير مين في اينا پورا وزن يهينكا . ایسا لگا یه کسی کیل پر رکهی هوئی تهی . دیوار کا آیک یله بینچه سرکنے لگا اور صاف آثرتی هوئی سیزهیوں کا ایک سلسله نظر آیا ، همیں ایسا لگا مانو صدیوں کے چھھ هوگ بھید کا دوار همارے لئے کہل گھا ، سمادھی کی گارڈ یک میں نہجے کی منزل سے کسی کمرے میں کہیں راسته جاتا ہے اِس کا ذکر هم نے نہیں پرھا تھا میرے دل میں ایک آشچریہ جلک كوتوهل أتها كه بهسول برس سے پراتتو رينا سدراكي كي جس املی قبر کا بات اگا رقم تھے۔کیا یہی اس کا درار ہے ؟ میری شریمتی جی سہمی ہوئی کھڑی تھیں ، ٹارچ کے پرکیش میں میں نے دیکھا که اُن کے کھولوں پر پسینے کی بوندیں اُبھر آئی تبين . ميں لے پهار سے جبك كر ألبين اپنے هرنتين سے مثا ڈاد . تاریج کی روشلی کو آگ کرکے هم دولیں سیس أور شنکس سیوهیوں سے نیچے أتر . چاردار سنزهیوں کا کہنی

इत्त ही न दिखाई देता था. लगमग 400 सीदियां तै करने हे बाद हम लाग समाधी की असली समाधि के पास पहुँचे. समाधि का कमरा 22 फ़ुट लम्बा और 8 फ़ुट चौड़ा एक क्षीमती सुन्दर पीले रंग के पत्थर को अन्दर से खोखला करके बनावा गया था. इसकी दीवार दो फ़ुट मोटी थीं और पूरे पत्थर का बजन 110 टन यानी करीब तीन हजार मन होगा. इत उसी तरह से तीन पत्थर के दुकड़ों की बनी हुई बी. इस समाधि के ऊपर इस तिलिहम की पूरी इमारत सदी हुई बी.

इस पीले कमरे के बीच में हेत-शेप-सूत की ममी रखी थी. सारा शरीर पट्टियों से कसा हुआ था, सिर्फ मुंह खुला हुआ था, करीब 3500 बरस से सूर्य भगवान की यह बेटी इस अँघेरी समाधि में पड़ी हुई थी. 58 वर्ष की उम्र में हेत-शेप-सूत ने प्राया त्यागे थे लेकिन चेहरे को देखकर ऐसा लगता था कि वह 30 बरस से ज्यादा की नहीं है. पूरे ं कुड का क़द, छरहरा बदन, बड़ी-बड़ी ऑसें, गाल चेहरा; उभरी हुई ठोड़ी, एठी हुई गाल की हड़ी, नीचे का खोठ गाल और जरा मोटा, नाक पतली और लम्बी, मालूम होता था मल्का प्रभी अभी सोई थी. धन्य थे मिस्र के व ममी बनाने वाले कि चेहरे पर इन 3500 बरसों ने जरा-सी शिकन तक नहीं पैदा की. हमारा मस्तक बादर और श्रदा से इस महान मल्का के क़दमों पर मुक गया.

सारा कमरा जेवरों श्रीर जवाहरात से लक्षदक हो रहा था. सोना, सूर्य कान्त, अक्रीक्र, नीलम, कीरोजा, लाजवर्द जैसे जवाहरातों की बहुत सी मालाएं हेत-शेप-सूत की मभी पर पड़ी थीं. सोने का एक तोड़ा रखा था, जिसमें सोने ही के बने घों में और तारे लटक रहे थे. तितली की राकल का बनत या खरदोखी के काम का सोने का एक लटकन था. साने के कड़े थे, जिनमें सरकने वाले कब्जे या कांट लगे थे. फूल प्तियों समेत टहनियों का एक गुच्छा था, जिसमें रत्ते सोने के वे घीर फूल और कलियाँ जवाहरों की थीं. सोने के बारीक तारों का बुना हुआ एक बहुत सुन्दर जालीदार युक्ट या, जिसके बीच बीच में छाटे छाटे फूल थे. हर फूल हे बीच में एक लाल था और उसकी पंखिंद्यां नीलम की थीं. एक और वारीक काम का मुकुट रखा था जो सोना, लाजबर्द, सूर्यकान्त धीर नीलम का बना हुआ था धीर जिसमें बड़ी सुन्दर फ ल-पित्यां कटी हुई थीं. कांसे का एक संजर पड़ा था, जिसेमें जवाहरात जड़ी सोने की मूठ थी. हैरत में दूबे हुवे हम लोग बड़ी देर तक एस कमरे के वेशक्सत जवाहरों को देखते रहे.

टार्च की बैटरी फीकी पढ़ने लगी तो यकायक हमें ख्याल हुआ कि रात बहुत बीत चुंकी होगी. हम दानों ने एक दूसरे को देखा, कमरे को देखा और फिर मल्का की भोर देखा. انست علی ته دکھائی دیتا تھا۔ لگ بھگ 400 سیرھھاں ملے کرلے کے بعد مر کوگ سمراگی کی اصلی سیادھی کے پاس پھوٹنچے ، سمادعی کا کمرہ 22 فٹ لیبا اور 8 فٹ چیزا ایک تیمتی سفور پیلے رنگ کے پتھر کو افدر سے کھوکھا کرکے بنایا گیا تھا ، اُس کی دیواریں دو قت موثی تھیں اور پیرے پتھر کا وزن 110 تین یعنی تربیب تین هزار من هوگا ، چھت اُسی طرح سے تھی پتھر کے گئروں کی بنی هوئی تھی ، اِس سمادھی کے اُرپر اِس طلسم کی پوری عمارت کھری ہوئی تھی ، اِس سمادھی کے اُرپر اِس طلسم کی پوری عمارت کھری ہوئی تھی ،

اِس پیلے کورے کے بیچ میں ھیت - شیپ - سوت کی مبی راہی تھی ۔ سارا شویر پالیوں سے کسا ہوا تھا' صرف ملے کا 58 ورض ہوا تھا ، قریب 3500 برس سے سوریہ بھاواں کی یہ بیائی اِس انتھیری سادھی میں پڑی ہوئی تھی ، کی عبر میں ھیت - شیپ - سوت نے پران تیاگے تھے لیکن چہرے کو دیکھار ایسا لگتا تھا کہ وہ 30 برس سے زیادہ کی نہیں ہے، پورے کو دیکھار ایسا لگتا تھا کہ وہ 30 برس سے زیادہ کی نہیں ہے، پورے کو رش کا قد' چہرھرہ بدن' بڑی بڑی آنہیں' گول چہرہ' اُبھری سوئی قبرتی' اُنھی ہوئی کال کی عاتمی ' نیجے کا ھونت کول اور نیرا موٹا ناک پالی اور نمین معلوم ھونا تھا ملک ابھی اُبھی اور نیرا موٹا ناک پالی اور نمین معلوم ھونا تھا ملک ابھی اُبھی موٹی تھی۔ دراسی شکن نک نہیں پھدا کی ۔ ھمارا مستک آدر اور شودھا سے اِس مہان ملک کے ندموں پر جھک

سارا کمرہ زبوروں اور جواهوات سے لی بق هورها تھا . سونا؟ سورية كائت عقيق الهلم فيروزه الجورد جيسے جواهراتوں دي بہت سے مالانیں طیت - شیپ - سوت کی ممی پر پڑی تھیں ، سونے کا ایک ترزا رکھا تھا ، جس میں سولے کے ھی بلے گھو، کھ اور تارے لقک رہے نہے ، تفلی کی شکل کا بنت یا زردوزی کے کلم کا سوفے کا أیک المکن نہا ، سوفے کے فرے تھے" جون مين سركن واله فبضم يا كاتنه لكم تهم يهول يتهون سدیت ثرنیس کا ایک گنچها نها جس میں پتے سوئے کے تھے اور یہوال اور کلیاں جوالدروں کی تہیں ، سوئے کے باریک تاروں کا بنا میں ایک بہت سندر جالیدار سکٹ تھا جس کے بیج بیج میں جھوٹے چھوٹے بھول تھے ، هر بھول کے بیچے میں آیک نعل تها آور أس كي ينكهريان نيلم كي نهين . أيك أور باريك كلم كا مكت ركها تها جو سودًا؛ الجورد؛ سوريه كانت أور ديام كا ينا هوا تها اور جس میں بڑی سندر پھول یتیاں کلی هوئی تھیں ، كانسم كا أيت خنجر يرا تها جس مين جواهرات جرى سولم کے موقع تھی . حدوت میں دورے ہوئے ہم لوگ بڑی دیر تک أس كوريم كے بيص قيدت جواهراتوں كو دياہتے رہے .

تاریج کی بیٹری پہیکی پڑنے لکی تو یکایک همیں خیال ہوا که رات بہت بیت چکی هوگی ، هم دونوں نے ایک دوسرے کو دیکھا کسے کو دیکھا اور پھر ملکھ کی اُور دیکھا ، बी मर कर फिर एक बार इसने कमरे की सारी बीजों को निहारा. गर्व से इमारी झाती फूल रही थी कि संसार के लिये इमने कितनी महान खोज की है. चलने से पहले मैंने नीलम के खूबस्रत झोटे दानों का एक बेराक्रीमत सुन्दर हार डठाकर शीमती जी के गले में डाल दिया. उनके झोंठों पर एक हस्की मुसकान दौड़ गई.

[ 4 ]

काहिरा पहुँचकर मैंने मिस्री बजीरे आजम को अपनी इस खोज की इंचला दी. मिन्नी सरकार के पुराचल विमाग के डाइरेक्टर सुक से मिलने आये. तमाम मिली अखबारों में मेरी इस खोज की धूम मच गई. लेकिन यह सारी खुशी बन्दराजा निकली. मेरी श्रीमती जी यकायक बीमार पढ़ गई. धनकी बीमारी भजीबो ग़रीब ढङ्ग की थी. एक दिन रात को इन्होंने खोफ़नाक सपना देखा कि एक काली सी डराबनी झाया, अपने सूखे हुये हाथ उनकी गर्दन मसोसने के लिये बढ़ा रही है. बाद में यह सपना रोज की चीज बन गया. हर रात वह झाया-मूर्ति आती और मेरी बीबी का गला मसोसने की कोशिश करती. वे बीखकर बेहोश हो जाती. पहली रात में यह खपना एक ही बार आता था. फिर एक ही रात में यह झाया-मूर्ति कई-कई बार आने लगी. फिर धीरे-धीरे यह कुछ साक सी हाने लगी. इसके कीके मुखड़े से यह जाहिर होता था कि वह इयनीय भाव से हाथ पसारे हुये कुछ मिन्नत कर रही है. लेकिन बीरे-बीरे उसके बेहरे की कैफियत बदलने लगी. उसके बेहरे पर गुस्सा और फिर बाद में बदले के भाव जागने लगे.

महीना भर हम काहिरा में पढ़े रहे. अच्छे से अच्छे हाक्टर और हकीम का इलाज कराया गया लेकिन सब बेस्व निकला. भ्व-प्रेत और जिन्नात खतारने बाले आये, मगर कोई फायदा न हुआ. मरज बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की ! मैं परेशान होकर रोज अपनी बीबी के पीले पढ़े हुवे मुल मन्डल को देखा करता. मेरे दिल की कैफियत अजीव थी. मेरी छाटी सी जिम्दगी के सारे दुख-सुखों में छन्होंने हिस्सा बंदाया था, लेकिन अपना यह दुख वे अकेले मेल रही थीं. डाक्टरों की सलाह से काहिरा छोड़ हम इसकन्दरिया आये. लेकिन इसकन्दरिया में तो छनकी तकलीफ और बढ़ गई. अब डन्हें वह छाया-मूर्ति दिन में भी सलाती. कमरे में हम सब बैठे होते, मगर हमारी नज़रें उसे न देख पातीं. सिर्फ श्रीमती जी ही बसे देख पातीं और बीख मार कर मेरी गांद में सपना सर छिपाकर रोने लगतीं. इसकन्द्रिया में भी जी लगा, वहाँ से हम तोबठक आये.

समुन्दर के किनारे एक होटल में हमने कमरा लिया। बारों बार शान्ति थी, सिर्फ लहरों की खपछप कभी ध्यान भग कर देती थी, कई दिनों से पत्नी की पतकें भी न मापकी بی بهرکر پھر ایک بار هم نے کس کی ساری چیزوں کو نہاراً، گرو۔
عہ مداری چھاتی پھرال بھی تھی که سنسار کے لئے هم نے کتنی مہاں
نہج کی ھی، چلنے سے پہلے میں نے نیام کے خوبصورت چھوٹے
دائیں کا ایک بیش قیمت سندر هار آنیاکر شریمتی جی کے
کے میں ذال دیا ۔ اُن کے هونتھوں پر ایک هاکی مسکل دور کے
کہ میں ذال دیا ۔ اُن کے هونتھوں پر ایک هاکی مسکل دور کئے

[ 4 ]

قاهوا یہونے کو مینے مصری رزیرعاظم کو آپنی اِس کھرے کی رائع دیں ، مصری سرکار کے پرائع رہھاگ کے تائیریکٹر مجھ سے منے آئے ، تمام مصری اخباروں میں معری اِس کھرے کی دھوم میں گئی ، لیکن یہ ساری خوشی چندروزہ نکلی ، میری شریمتی جی یکایک بیمار پر گئیں ، اُن کی بیماری عجیب و غریب تھنگ کی تھی ، ایک دین رات کو آنھوں نے خرفناک سیلا دیکا کہ مسرمنے کے لئے بڑھا رھی ہے ، بعد میں یہ سینا روز کی چیز بن کیا ، ھر رات رہ جہایا ، ورتی آئی اور میری بیوی کا گا مسرسنے کی کوشش کرتی ، وے چیخ کر بھبوش ھو جائیں ، پہلی رات میں یہ سینا ایک ھی بار آنے بی اور میری بیوی کا گا مسرسنے میں یہ سینا ایک ھی بار آنے بی بہر دھیرے دھیرے یہ کیے میں یہ رات میں یہ کہایا مورتی گئی کئی بار آنے بی بہر ایک علی رات میں یہ کہایا مورتی گئی کئی بار آنے بی بید دھیرے دھیرے دھیرے یہ کیے بان کہ رہ دینیہ بیاؤ سے ھاتے پسارے ھوانے کچھ منت کر رھی ہے . کہ رہ دینیہ بیاؤ سے ھاتے پسارے ھوانے کیے منت کر رھی ہے . اُس کے چہرے کی کینیت بدائے لئی ۔ اُس کے چہرے کی کینیت بدائے لئی . اُس کے چہرے کی کینیت بدائے لئی . اُس کے چہرے کی کینیت بدائے لئی . اُس کے چہرے کی کینیت بدائے کی ہائے جاگئے . اُس کے جہرے کی کینیت بدائے کی ہائے جاگئے .

مہینظ بہر ہم قاعرہ میں پڑے رہے ۔ اچھے سے اچھے دَائقر اور حکام کا علاج کرایا گیا' لیکن ہے سون نکلا ، بہوت' پریت اور جنات اُتانے والے آئے' مکر کوئی قایدہ نے ہوا ، مرض بڑھتا گیا جدوں جنوں دوا کی ! میں پریشان ہوکر روز اُپنی بنوی کے پیلے : رَج مؤلے منہ مندل کو دیکھا کرتا ، میرے دلکی کیفیت عجیب تھی ، میری چھوتی سی زندگی کے سارے دکھ سکھوں میں اُنھوں نے حصے بنتایا تیا' لیکن اُپنا یہ دکھ وے اُکیلے جھیل رہی تھیں ، قائرہ کی صلاح سے قلعرہ چھور ہم استندریہ آئے ، لیکن استندیه میں تو اُن کی تکلیف اور بڑھ گئی ، اب اُنھیں وہ چھیا مورتی دن میں بھی سکاتی ، کموے میں ہم سب بیتھے ہوئے' مکرهماری نظریں اُست دیکھ پاتھی، صرف شریعتی جی ہی آسے دیکھ پاتھی ، نظریں اُست دیکھ پاتھی، صرف شریعتی جی ہی آسے دیکھ پاتھی ، اور چیخ مار کر مہری گودمیں آپنا سر چبھا کو روئے نکتھیں ، استندریہ میں بھی جی ٹھ لگا ، وہاں سے ہم طوہروک آئے .

سندر کے کنارے ایک هوتل میں هم نے کوہ لیا ، چاروں اور شائتی تھی ، صرف لہروں کی چیپ چھپ کبھی دھیاں بینگ کو دیتی تھی۔ کٹی دئیں سے پتنی کی پاکیس بھی کے جیپی

मीं, इन्हें जीवन से खब कोई हम्मोद न रही थी. हवा में गरमी थी. अस्त होता हुआ सूरज लहरों से टकराकर हमरे भर में सोने के कन विखेर रहा था. वे बेहद थकी हुई हीं. मैंने देखा नींद ने उनकी उनींदी पलकों में अपनी एक मादक पट भर दी है. घोरे घोरे अंधकार गहरा होता गया.

बोड़ी देर तक उन्हें जरूर गहरी नींद आई होगी. फिर सपने की परियें चन्हें अपने देश में चड़ा ले गई, लेकिन हापने में बन्हें फिर वही छाया-मूरत विसाई पड़ी. उसकी शाँसों में विनय की भीस थी. वहें ही दयनीय भाव से वह किसी चीज की याचना कर रही थी. फिर यकायक वहकाया-मृत्त फूट-फूट कर रोने लगी. श्रीमधी जी उसकी तकलीफ़ को समक्त रही थीं; लेकिन वे यह किसी तरह समक न सकी कि आलिर वह क्या चाहती है. फिर चकायक उस आया-मृरत ने अपने आंसू पोंछ डाले. बदले की भावना में भरी हुई वह शीमती जी पर दूट पड़ी. उसने अपनी भूरे रंग की सुबी पतली चंगुलियां उनके गले में कस दीं. सूनी भाव से बहु अपने 'जों का फ'दा सख्त करती गई. श्रीमती जी का दम घटने लगा और वे चीख कर चठ बैठीं. उनका सारा शरीर पसीने से तर था. वे बाँधी से हिलते हुवे दरकत की तरह जोर से कॉप रही थीं.

अपने हाथों से उन्होंने अपना गला टटोला और समर्मी कि ने सपना देख रही थीं. फिर वे यकायक चौंक पड़ीं. मल्का हेत-शेष-स्त की समाधि का वह नीलम का सुन्दर हार उनके गले में न था. उस द्वार को उन्होंने उस दिन से एक लम्हे के लिये भी गले से न उतारा था. अभी घन्टे भर पहले तक

उनके गले में बह हार पड़ा हुआ था.

श्रीमती जी के गले से जिस दिन वह नीलम का हार तायब हुआ, उसी दिन वह झाया-मूरत भी ग्रायब हो गई श्रीर फिर आज तक वह नहीं दिखाई दी. थांदे ही दिनों में तांबरक की समुद्री हवा ने श्रीमती को पूरी तरह तंदुरुस्त भीर स्वस्थ कर दिया.

भभी इस घटना को इफ़्ता भर भी न हुआ था कि परसों मुक्ते मिस्र के वजीरे खारजा सिरीपाशा का एक स्नत मिला. मैंने काहिरा में मस्का की समाधि का उन्हें रास्ता बताया था. मिस्न का पुरासत्व विभाग वहां जाने की तैयारी कर रहाया कि अचानक उसे खबर मिली कि रेत के एक भयंकर त्फान में वह विशालकाय इमारत इतनी बुरी तरह दफन हो गई है कि इंजीनियरों का कहना है कि उसे अब बीस हजार मजदूर तीन बरस में साफ कर सकेंगे.

تهين ۽ اُنهين جيبن سے اب کوئي اُميد ته رهي تهي ۽ هوا میں گرمی تھی، آمت ہوتا ہوا سورے لہروں سے ٹھوا کر کمرم بھر موں سولے کے کن بچھر رما تھا، وسے بےحد تهمی هوئی تهیں . مینے دیمها که نیند نے آن کے اُنیندی بلکس مين ايني ايک مادک يك يهر دي ه . دهير عديد اندهكار

تهری دیر تک نهیں ضرور گہری نیند آئی هوگی ، پهر سپنے کی پرنیں اُنہیں اپنے دیھی میں آوا اے گایں . لیکی سپنے میں اُنھیں پیر وھی جہایا مورت دکھائی بڑی ، اُس کی اُنکھوں وين والمنتركي بهيك تهي بريد هي دينينه بهاي صوا چهزاكسيكي یاچنا کر رهی تھی ، پهر یکا یک وه چهایا مورت بهوت بهوت کر روئے اکی ۔ شریبتی جی اُس کی تعلیف کو سبجہ رہی تھی۔ لیکن رہے یہ کسی طرح سمجھ نے سکیں کد آخر وہ چاعتی کھا ہے ۔ اپنے آلسو پونجھ قالے اور ہے ؟ پھر یکا یک اس چھایا مہرت نے اپنے آلسو پونجھ قالے اور یدلے کی بھاؤنا میں بھری ہرئی شریمتی جی پر ٹوٹ پڑی ، اس نے اپنی بھورے رنگ کی سوکھی بالی اُنائیاں اُن کے گلے میں کس دیں . خرنی بہاؤ سے وہ اپنے پنجوں کا بھندا سخت كرنى كئى ، قاريماى جى كا دم كيتني لكا اور وساكر چاخ كر ألو بيليان . أن كا ساراً شرير پيسنه سے تو تها . وسم أندهي سے هلته هوئه درخت كيطرح زور سه كاتب رهي تهين ،

اینے ماتوں سے اُنہوں نے اپنا کا تقولا اورسمجھوں که وسے شمجوریں که رسے سپنا دیکھ رهی تهیں، پهر وسے یکا یک چونک پریں، ملکه هیست شیب سوس کی سمایھی کا وہ نیلم کا سندر ہار اُن کے کلے میں نہ تھا ، اُس اور کو آنھیں کے اُس دی سے ایک لمحے کے لئے بھی گلے سے ند اُتاوا تھا ، ابھی کھنٹے بھو پہلے تک اُن کے گلے میں وہ هاریوا هوا تها .

شریمتی جی کے گلے سے جس دی وہ نیام کا هار غایب هوا آسی دن سے وہ چھایا مورت بھی غایب هوگئی اور پھر آج نک وہ نہیں دکھائی دی ، تھوڑے ھی دنوں میں طویروک کی سندری ھوا نے شریعی جی کو پیری طرح تادرست اور سوستھ کر دیا ۔

إيبى إس تُهتّنا كو هفته بهر يبي نه هوأ تها كه يرسون مجهم مصر کے وزیر خوانت سرری باشا کا ایک خط ملا، میلی قاهرة مان ملته كى سادهى تك پېرنجے كا رأسته أنهار بتايا تها ، مصر كا يرزانتو وبهاك وهان جالي كي تیارہ کر رہا تھا کہ اچانک أسے خبر ملی که ریت کے ایک بهیندر طوذای میں وہ وشالکایہ عمارت اتنی بری طرح دفق هو کئی ہے کہ آبجیلورں کے کہنا ہے کہ اب اسے بیس موار مودو تیں ہرس میں ماف کر مکھنگے ۔



# अमरीकी सभ्यता

امريكي سبهيتا

सभ्यता और कल्बर किसे कहते हैं और सभ्यता में कीन देश आगे. और कीन पीछे है इन बातों पर अलग अलग देशों और अलग अलग लोगों में सरह तरह के विचार मीजूद हैं. कुछ लोग अमरीका को आज की दुनिया का सब से अधिक सभ्य और उन्नत देश कहते हैं. अमरीका के अधिकतर हाकिम और नेता भी बार बार इस तरह के विचार प्रगट करते रहते हैं और दूसरे खासकर एशियाई देशों को 'पिछड़े हुए देश' कहकर उनकी चरचा करते हैं. हमारे देश के अन्दर भी इस तरह के काफी लोग मीजूद हैं जो अमरीका को सचमुच आजकता की इनसानी सभ्यता का अगुवा मानते हैं.

सवाल यह है कि सभ्यता या तरक्की है क्या चीज ? धन दौलत, ऐश आराम के बढ़े से बढ़े सामान, बढ़े बढ़े कल कारखानों और करलेखाम के बड़े से बड़े हथियारों से हटकर अगर कोई चीज आजकल सभ्यता की सबसे बड़ी पहचान मानी जाती है तो वह इनसानी बराबरी, आजादी और सच्ची लोकशाही है. इस कसीटी पर अगर हम आज के अभरीका को कसकर देखें तो वह खरा नहीं उतर सकता. यूरप के कुछ गोरे लोगों ने अभी कुछ सदियाँ ही हुई श्रमरीका को जाकर बसाया था, उन श्रक्त के दिनों में श्रमरीका को वह 'हिन्दुस्तान' सममते थे. वहाँ के पुराने षाशिन्दों को वह उनके रंग के कारण 'रेड इन्डियन्स' यानी 'लाल (इन्द्रस्तानी' कहा करते थे. जिस जुल्म और बेदरदी के साथ इन नए गोरे अमरीकिओं ने वहां के 'लाल हिन्दु-स्तानियों' का जानवरों की तरह शिकार किया और उनकी क़ीम की क़ीम को मिटा खाला, उसकी कहानी मानव इतिहास की एक दर्दनाक कहानी है.

## अमरीका के नीत्रों

श्रमरीका की दक्षितन की रियासतों में काली नीमो जाति के लोग रहते हैं. यह लाग कम या क्यादा सारे अमरीका में फैंबे दूर हैं. इस समय अमरीका में नीमो जाति سبهینا اور کلچر کیسے کہتے میں اور سبهینا میں کون دیکی اگر اور کون پہنچے ہے اِن باتوں پر الگ الگ دیشوں اور الگ الگ لوگوں میں طرح طرح کے وچار موجود میں . کنچے لوگ امریکہ کو آج کی دنیا کا سب سے ادھک سبهید اور آنت دیک کہتے میں . امریکہ کے ادھکٹر حالم اور نیتا بھی بار بار اِس طرح کے وچار برگف کرتے رہتے میں اور دوسرے خاصکو ایشیائی دیشوں کو 'پچھوڑے موئے دیش' کہکر اُن کی چرچہ کرتے میں میسارے دیش کے اندر بھی اِس طرح کے کانی لوگ موجود میں جو امریکہ کو سے میچ آجکل کی انسانی سبهیتا کا اگوا مانتے

سوال یہ ہے کہ سبھیتا یا ترقی ہے کیا چھڑ ؟ دھن دولت اور عیمی آرام کے بڑے سے بڑے سامان 'بڑے بڑے کل کارخانیں ' اور قتل عام کے بڑے سے بڑے متھیاروں سے ھٹ کو اگر کوئی چھڑ آجنک سبھیتا کی سب سے بوی چہتچان مائی جاتی ہے تو وُلا انسانی برابری ' آزادی اور سبچی لوک شاھی ہے . اِس کسوئی پر اگر ھم آج کے امریکہ کو کس کر دیکھیں تو وہ کھرا نہیں اُتر سکتا . یورپ کے کچھ گورے لوگوں نے ابھی کچھ صدیاں ھی ھوئیں امریکہ کو جاکو ہسایا تھا ۔ اُن شروع کے دنوں میں امریکہ کو وہ 'فلدستان ' سمجھتے تھے . وھاں کے پرانے باشندوں کو وہ اُن کے ونگ کے کارن 'ریت اِنتیاس' یعنی 'قل ھندستانی' کو وہ اُن کے ونگ کے کارن 'ریت اِنتیاس' یعنی 'قل ھندستانی' مانو امریکیوں نے ۔وہاں کے پرانے باشندوں امریکیوں نے ۔وہاں کے 'قل ھندستانی' عبانی کی طرح اُریکیوں نے ۔وہاں کے 'قل ھندستانیوں' کا جانوروں کی طرح اُنہاس کی ایک دیوناک کہانی ہا دانو

# امریکه کے فیکرو .

امریکہ کی دکھن کی ریاستوں میں کالی نیکرو جاتی کے لوگ رہتے ہیں ، یہ لوگ کم یا زیادہ سارے امریک میں پھلے ہوئے میں ، اِس سے سے امعریکہ میں نگورہ جاتی के लोगों की तादाद तीन करोड़ से उत्तर है. काले तीमो के वाब गोरे अमरीकियों का ज्योहार हुए से मानव इतिहास की एक लज्जा जमक घटना रही है. इन नीमो लोगों में आज लाकों ऊँकी से ऊँकी तालीम पाय हुए हैं. इनमें बैरिस्टर हैं, प्रोकेसर हैं, लेखक हैं, कि हैं, कलावन्त हैं. सौदागर हैं और घारा समाओं के मेन्यर भी हैं. अमरीका की कुछ रियासतों में उनके साथ थोड़ा बहुत बराबरी का बरताव भी होता है. इम उन अनेक बहादुर, नेक और मानव प्रेमी अमरीकियों की दिल से कृद्र करते हैं जिन्होंने नीमो लोगों के साथ इस बराबरी के ज्योहार के लिये समय समय पर कोशिशों की. पर आज भी अधिकतर अमरीका के अन्दर गोरे अमरीकियों का नीमो लोगों के साथ बरताव हद दर्जे बुरा है.

इस बीसवीं सदी तक और अभी हाल तक हजारों ही नीमों जाति के लागों को उनके गारे अमरीकी पड़ीसियों ने छोटी छोटी बातों पर लटकाकर जिन्दा जला डाला और इस तरह की इत्या करने बालों से कोई कानूनी पूछ ताछ नहीं की गई. अमरीका में इस तरह के जला डालने को "लिंबिंग" कहते हैं. इस तरह की और इस से मिलती जुलती दूसरी दर्वनाक घटनाएं अमरीका से आए दिन सुनने में आती रहती हैं.

## नीग्रो पादरी रेवरेन्ड किंग और श्रहिंसात्मक सहयोग

अभी पिछले दिनों अमरीका की अलावामा रियासत के अन्दर एक होनहार नीओ लड़की के यूनिवर्सिटी में भरती होने की इच्छा प्रगट करने पर और इस डर से कि कहीं वह भरती न कर ली जावे वहां के हजारों गोरे अमरीकी विद्यार्थियों ने को जो उपद्रव किये और सारे देश के अन्दर जो जो तुफान मचे, जिनसे उस नीओ लड़की की जान के लाले तक पढ़ गए, उनकी कहानी दुनिया भर के अख़वारों में अप चुकी है.

इसी अमरीकी रियासत के मांटगुमरी शहर में आज तक गोरे अमरीकियों के बैठने के लिये बसें अलग और काले नीमां के लिये बसें अलग हैं. एक नीमां ईसाई पादरी रेवरेन्ड मार्टिन लूथर किंग ने अपनी क्रीम के लागों से कहा कि वह अपना मान रखने के लिये उन अलग बसों में बैठने से इनकार करें. पादरी किंग ने, जिन की उमर केवल सत्ताइस साल की है, अपने एक व्याख्यान में कहा है— "मैंने आहिंसात्मक असहयोग का यह तरीका हिन्दुस्तान के गेटुवें रंग के आदमी गांधी से सीखा है. इस तरह के अहिंसात्मक असहयोग से ब्रिटिश साम्राज को घुटने टेक हेने पड़े थे. मान्टगुमरी में हमने साबित कर दिया है कि कि यह तरीका अमरीका में भी काम दे सकता है. इम जुसम के साथ सहयोग करने से इनकार करते हैं. हमने کے اوگوں کی تعداد تھی گرور سے آوپو ہے۔ کام تبیکری کے ساتھ گررہ امریکدوں کا ربوهار شروع سے مائو اِنہاس کی آیک لھا جنک گہتنا رہی ہے۔ اِن نیکرو لوگوں میں آج لائھوں اُرنچی سے اُرنچی تعلیم پائے ہوئے ہیں۔ اُن میں بیرستر ہیں' پروفیسر ہیں' لیکھک میں' کوی ہیں' کاونت میں' سوداگر میں اور دھارا سبھاؤں کے سبو بھی میں ، امریکہ کی کچھ ریاستوں میں اُن کے ساتھ تھوڑا بہت برابوی کا برناؤ بھی ہوتا ہے ، ہم اُن انیک بہادر' نیک اور مائو پریمی امریکیوں کی دل سے قدم کرتے میں جنہوں نے نیکرو لوگوں کے ساتھ اِس برابوی کے ویوھار کے لئے سمے سے پر کوششیں کیں ۔ پر آج بھی ادھکٹر امریکہ کے اندر کورے امریکیوں کا نیکرو لوگوں کے ساتھ اِس برابوی کے ویوھار اندر کورے امریکیوں کا نیکرو لوگوں کے ساتھ اِس برابوی کے ویوھار اندر کورے امریکیوں کا نیکرو لوگوں کے ساتھ اِس برابوی کے ویوھار

اِس بیسریں صدی تک اور ایمی حال تک؛ هزاروں هی نیکرو جاتی کے لوگوں کو اُن کے گورے اُمریکی پترسیوں نے چھوٹی چھوٹی باتوں پر لگا کو زندہ جلا ڈالا اور اِس طرح کی هتیا کرنے والوں سے کوئی قانونی پوچھ تاچے نہیں کی گئی ، امریک میں اِس طرح کے جلا ڈالنے کو ''انی چاگ'' کہتے هیں ، اِس طرح کی اُور اِس سے ملتی جلتی دوسری دودناک گیتنائیں امریک سے آئے دیں سنے میں آئی رهتی هیں ،

#### نیکرو یادری ریورین کنگ اور آهنسانیک سهیوگ .

ابھی بچیلےدنس امریکہ کی الاہاما ریاست کے اندر ایک ھونہار نیکارو لوکی کے یونہورستی میں بھرتی ھونے کی اِچھا پرگت کرنے پر اور اِس ترسے کہ کہیں وہ بھرتی نہ کوئی جارے وہاں کی فزادرں گورے امریکی ودیارتھیوں نے جو جو اُپدرو کئے اور ساے دیفن کے اندر جو جو طوفان مچے جن سے اُس نیکرو لوکی گی جان کے لااے تک پر گئے اُن کی کہانی دنیا بھر کے اخباروں میں چہپ چکی ہے ۔

أسی أمریكی ریاست كے مائلگمری شهر میں أے تك گورے امریكیس علی بیلینے كے لئے بیس الگ اور كائے تیكرو كے لئے ہسیں الگ اور كائے تیكرو كے لئے ہسیں الگ معیں ، ایک ٹیكرو عیسائی پادبی رپورینڈ مارئی لوتھ كنگ نے اپنی قوم كے لوگوں سے كہا كہ وہ اپنا ماں ركھنے كے لئے أن الگ بسوں میں بیٹھنے سے انكار كریں ، پادبی كنگ میاكیاں نے جن كی عدر كیول ستائیس سال كی ہے اپنے ایک میاكیاں میں كہا ہے —"میں نے آهنسانیک آسهیوگ كا یہ طریقہ میں كہا ہے طریقہ طوح كے اهنسانیک اسهیوگ كا یہ طریقہ طوح كے اهنسانیک اسهیوگ سے برڈی سامراج كو گھتنے ٹیک دینے ہوئے دیا ہے دیا ہے كا یہ مائیگری میں هم نے ثابت كر دیا ہے دیا ہے كہ یہ طریقہ امریکہ میں بھی كام دے سكتا ہے ، هم ظام كے ساتھ سهیوگ كرتے هیں ، هم نے ساتھ سهیوگ كرتے هیں ، هم نے

समक लिया है कि बादमी का असती संदेश उसकी आत्मा है, रंग नहीं. नीमो लोगों में नई खुद्दारी जाग गई है." जिस तरह हमारे असहयोग आन्दोलन के शुक्ष के दिनों में भारत में तिलक स्वराज फुन्ड जमा हुआ था उसी तरह आज इस नीमो पादरी के अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन के लिये अमरीका भर में जगह जगह लाखों डालर जमा हो रहे हैं. दूसरी तरफ पादरी किंग को इस शान्तिमय असहयोग के प्रचार के लिये एक साल कैंद्र की सजा दी जा चुकी है, अपील दायर है. पादरी किंग जमानत पर छुटे हुए हैं. नीमो अहिंसात्मक असहयोग जारी है. मालूम होता है कि यह आन्दोलन सारे अमरीका को और वहां की सारी काली और गोरी इनसानी क्रीम को अपने घेरे के अन्दर लिये बरीर नहीं रहेगा.

## इसरे देशों में अमरीकी दख़कन्दाज़ी

आज दुनिया में जहां जहां भी आदमी आदमी में फरफ किया जा रहा है, जहां जहां भी काले और गारे में भेद बरता जा रहा है, जहां जहां भी अभी तक एक देश पर दूसरे देश की हकूमत है और जहां भी देशों के अन्दर बरेलू मगड़े हैं, लगभग सब जगह अमरीका के शासकों का हिस्सा इन सब चीओं में साफ दिखाई देता है.

दिस्तन अफ्रीका की गोरी सरकार आज तक वहां के गोरे आगंतुकों और पुराने काले वाशिन्यों के बीच जिलाक इनसानियत मेद माब कायम रखने पर दटी हुई है. इस अन्याय में वहां की सरकार की कीसबसे बड़ी मददनार अमरीकी सरकार है.

किलिप्पाइन टापुओं पर सन् 1946 ई० तक अमरीका का पूरा पूरा राज था. पचास बरस से वहां आजादी की तहरीकें चल रही थीं. बड़ी कोशिशों के बाद 1946 में धमरीका की सरकार ने फ़िलिप्पाइन टापुत्रों को एक तरह की "आजादी" दी, अभी इस साल फिलिप्पाइन कांग्रेस के अन्दर वहां के सरकारी और रौर सरकारी दोनों तरह के नेताओं ने एक आवाज से यह कहा है कि अमरीकी सरकार ने आब तक अपने दस बरस पहले के वादों को पूरा नहीं किया. अमरीका सन् 1946 ई० के सुतहनामे की शरतों के साफ खिलाफ जा रहा है, अमरीका का बना हुआ ऐशपरस्ती का सामान जबरदस्ती फिलिप्पाइन लोगों के ऊपर थोपा जा हा है. फिलिप्पाइन लोगों को अपने माल को जहाँ चाहे बेचने और जिस देश से बाहे तिजारत करने तक की भाषादी नहीं है. अमरीका अपने लड़ाई के उन इथियारों तक को जाबरदस्ती फिलिप्पाइन बालों के सर मंद रहा है जो अब पुराने और निकम्मे हो चुके हैं. रारीव भीर असहाय फिलिप्पाइन व'लों को उसने अपने माली और विजारत लपेटों में कस रखा है.

سجم لیا ہے کہ آدمی کا اصلی سندیمی اُس کی آتما ہے' رنگ نہیں ، نیکرو لوگوں میں نئی خوداری جاگ گئی ہے ۔'' جس طرح ہمارہ اسببوگ آندوان کے شروع کے دنوں میں بیارت میں تلک سرواج فلڈ جمع ہوا تیا اسی طرح آج اِس نیکو پادری کے اہنسانیک اسببوگ آندوان کے لئے امریکہ بھر میں جکہ جکہ الکہوں ڈالو جمع ہو رہے ہیں ، دوسری طرف پادری کنگ کو اِس شائتی می اسببوگ کے پرچار کے لئے ایک سال نید کی سوا دی جا چکی ہے' اپیل دائو ہے ، پادری کنگ خمانت پر چہائے ہوئے ہیں ، نیکرو اعتسانیک امریکوگ جاری خمانت پر چہائے ہوئے ہیں ، نیکرو اعتسانیک امریکوگ جاری ساری کالی اور گوری انسانی قوم کو اپنے کیورے کے الدر لئے بنور ساری کالی اور گوری انسانی قوم کو اپنے کیورے کے الدر لئے بنور نہیں رہے گا ،

## دوسرے دیشوں میں امریکی دخل اندازی .

آج دنیا میں جہاں جہاں بھی آدمی میں فرق کیا جا رہا ہے' جہاں جہاں بھی کالے اور گورے میں بھدد برتا جا رہا ہے' جہاں جہاں بھی ابھی تک ایک دیش پر دوسرے دیش کی حکومت ہے اور جہاں بھی دیشوں کے اندر گھریاو جھکڑے میں' لگ بھگ سب جکہ امریکہ کے شاسکوں کا حصہ اِن سب چھڑوں میں صاف دکھائی دیتا ہے۔

دکیں افریقہ کی گوری سرکار آج تک وہاں کے گورے آگفتگوں اور پرآنے کالے باشلدوں کے بیچ خطف انسانیت بھید بھاؤ قائم تئی ہوئی رکھتے پر ہے ۔ اِس انیائے میں وہاں کی سرکار کی سب سے بچی مدیگر امریکی سرکار ہے ۔

نلپائن ٹاہرؤں پر 1946ع تک امریکہ کا پررا پررا راج تھا"۔
پچاس ہرس سے رھاں آزادی کی تحدیدیں چل رھی تھیں ۔
ہری کوشھرں کے بعد 1946ع میں امریکہ کی سرکار لے فلپائن تاہرؤں کو ایک طرح کی ''آزادی'' دی ، ابھی اِس سال ناہائن کانگریس کے اقدر وھاں کے سرکاری اور غیر سرکاری دونوں طرح کے ٹیتاؤں نے ایک آراز سے یہ کہا ہے کہ امریکی سرکار نے آئے تک اپنے دس ہرس پہلے کے وعدوں کو پورا نہیں کیا ، امریکہ سرن 1940ع کے ملحظامے نی شرطیں کے صاف خلاف جا رھا ہے' امریکہ کا بنا ھوا عیش پرستی کا سامان زبردستی فلپائن لوگی کے آریر تھریا جا رہا ہے' ناہائی لوگیں کو اپنے مال کو جہاں چاہے نہیں ہے اور جس دیس سے چاہے تعجارت کرنے تک کی آزادی نہیں ہے ، امریکہ اپنے ارائی کے آن ھتھیاروں تک کو زبردستی ناہائن والیں کے سر ملتھ رہا ہے جواب پرانے اور تکیہ ہو چکے عیں ، غریب اور اسہائے فلپائن والیں کو آمن نے اپنے مالی اور عیں ، غریب اور اسہائے فلپائن والیں کو آمن نے اپنے مالی اور عیں ، غریب اور اسہائے فلپائن والیں کو آمن نے اپنے مالی اور عیں کسی رکھا ہے .

र्डोबाइना में दिखान बीतनाम के धन उपद्ववियों को अमरीका बराबर शह दे रहा है जो वहां जनीवा के समक्षीते पर अमल होने देना और उस देश के लोगों को एकता और प्रेम के साथ रहने देना नहीं चाहते.

भारत के अन्दर गोजा अभी तक विदेशी पुर्तगालियों के इन्जे में है और पुर्तगालियों को भी सब से अधिक राह अमरीका की है.

कारम्सा में अमरीकी कीजें बराबर हेरा डाले हुए हैं, बीर किसी तरह नए चीन की सरकार और ख्यांग काई शेक की सरकार में सुलह का मौक्रा देने को तैयार नहीं.

दिक्सन कोरिया की कठपुराली सरकार को असरीका की शह और मदद बराबर जारी है.

जापाम में अमरीका के कीजी अड्डे उसी तरह कायम हैं. अमरीका बाहता है कि दुनिया के दूसरे देश जापान का बना हुआ माल खरीदें, उस जापान का जो अमरीकियों के कब्जे में हैं. पर जापान और जापानियों को अपने पड़ीसी चीन और चीनियों के साथ तिजारत करने की आजादी नहीं है.

दाल में अमरीका के मशहूर हाकिम खलेस साह्य ने
पशिया के कुछ देशों का दौरा किया था. वह पाकिस्तान भी
गए थे और दिस्ली आए थे. दक्खिन बीतनाम, फारमूसा
और दक्खिन कोरिया में उन्हें अपने खास प्रेमी साथी
मिले. नया चीन उन्हें कहीं नक्षशे पर दिखाई भी नहीं दिया.
अमरीका वापिस पहुँचकर उन्होंने अपनी यात्रा की जो
रिपोर्ट अपनी सरकार को दी है यह दुनिया के अखबारों
में छप चुकी है. उसे पढ़कर किसी भी पशिया वासी या
किसी भी न्याय प्रेमी आदमी के दिल में भी ढलेस या उनकी
सरकार के प्रति प्रेम या आदर पैदा नहीं हो सकता और न
सभ्यता या कलचर की निगाह से अमरीका कोई ऊँचा
देश दिखाई दे सकता है.

#### अमरीका में विचारों की आज़ादी पर रोक

खुद अमरीका के अन्दर विचारों की आजादी का यह हाल है कि कोई आदमी खासकर कोई स्कूल टीचर या सरकारी नौकर वहां खुले तौर पर कम्युनिस्ट विचारों की कितावें नहीं रख सकता. यूरप के दौरे में अनेक ही ऐसी घटनाएं हमें सुनने को मिली जिनसे मालूम होता है कि अमरीका की खुफ़िया पुलिस सन लोगों का, जिन पर कम्यु-निस्ट विचार रखने का संदेह होता है, किस सुरी वरह पीझा करती है और सन्दें किस तरह सताती है. हाल में इंगलैन्ड के मशहूर फ़िलासफ़र भी बरद्रन्ड रसल ने ''मेनचेस्टर गारजियन" के अन्दर एक लेख में बताया है कि अमरीका की खुफ़बा पुलिस किस तरह के ''जुस्म" करती है. सन्होंने اُفتُو چائدًا میں دکھن ویت تام کے آن آیدرویوں کو اس یکھ بزابر شبہ دے رہا ہے جو رہاں جلیوا کے سمجھوتے پر عمل ہوئے فیلا اور اُس دیھی کے لوگرں کو ایکٹا اور پریم کے ساتھ رہتے دینا تهیں چاہتے .

بھارت کے اثدر گروا ایھی تک ردیشی پرتگالیس کے تبغے میں ہے اور پرتگالیس کو بھی سب سے اُدھک شہم امریکم کی ہے ۔

فارموسی میں امریکی فرجیں برابر تیرہ تالے ہوئے ہیں اور کسی طرح نئے چین کی سرکار اور چیانگ کائی شیک کی سرکار میں صلح کا موقع دینے کو تیار نہیں .

دکھن کوریا کی کھھٹلی سرکار کو آمریکہ کی شہ آور صدہ ہوآپر جارمی ہے ۔

جاپان میں امریکہ کے نوجی آئے اُسی طرح قایم هیں .
امریکہ چاہتا ہے کہ دنیا کے دوسرے دیش جاپان کا بنا ہوا
سل حریدیں اُس جاپان کا جو امریکیس کے دیشے میں ہے .
پر جاپان اور جاپانیوں تو اپنے پڑوسی چین اور چینیس نے سانے نتجارت کرنے کی اُزادی نہیں ہے .

حال میں امریکہ کے مشہور حاکم تایس صاحب نے ایشیا کے کچھ دیشوں کا دورہ کیا تھا ۔ وہ پاکستان بھی گئے تھا اور دائی دائی بھی آئے تھے ، دکھن ویت نام وارسوسی اور دکھن کویا میں ابنے خاص پریمی ساتھی سلے ، نیا چین انہیں کہیں نقشہ پر دکھائی بھی نہیں دیا ، امریکہ واپس پہونچکو آنہوں نے اپنی باترا کی جو رپورٹ اپنی سرکار کو دی ھے وہ دنیا کے احباروں میں چہپ چکی ھے ، آے پڑعکر کسی بھی ایشیا واسی یا کسی بھی نیائے پریمی آدمی کے دیا میں شری نیسیا واسی یا کسی بھی نیائے پریمی آدمی کے دیا میں شری ذایس یا اُن کی سرکار کے پرتی پریم یا ادر پیدا نہیں عوسکتا اور نئم سبھیتا یا ظحور کی نگاہ سے امریکہ کوئی آونچا دیھی اور نئم سبھیتا یا ظحور کی نگاہ سے امریکہ کوئی آونچا دیھی دیائی دے سکتا ہے .

## مریکه میں وچاروں کی آزادی پر روک

خود امریکه کے اندر وچاروں کی آؤادی کا یہ حال ہے که کونی آدمی خاصر کوئی اِسکول ٹیچر یا سرکاری ٹوکر وہاں آبلے طور پر کیھونسٹ وچاروں کی کتابیں ٹیھی رکھ سکتا ، یورپ کے دورے میں انیک ھی ایسی گھٹائیں ھییں سلنے ملیں جن سے معلوم ہوتا ہے کہ امریکہ کی خفیہ پولیس آن لوگوں کا 'جن پر نمیونسٹ وچلر رکھنے کا سندیہہ ہوتا ہے' کس بری طرح پیچھا کرتی ہے اور آنہیں کس طرح سکاتی ہے ، حال میں اِنکلینڈ کے مشہور فلسفر شری برٹرنڈرسل نے حال میں اِنکلینڈ کے مشہور فلسفر شری برٹرنڈرسل نے 'مینجھسٹر ٹارجھن'' کے آندر ایک لیکھ میں بتایا ہے کہ آموں نے خوالم'' کرتی ہے آنہوں نے

कहा है कि वहां की यह पुलिख पहले किसी ऐसे आदमी को प्रताय करती है जिसके ख़िलाक कोई जुर्म आसानी से खाबित किया जा सकता हो. (कर उसे माफी का बादा देकर बससे इस तरह की मूटी शहादतें तैयार कराती है जिन से दूसरे लोग जिन्हें पुलिस फांसना चाहती है आसानी से फंस सकें और (फर इस तरह बेगुनाहों का फांसा जाता है.

इस एक पहले लेख में कह चुके हैं कि एक प्रतिष्ठित अमरीकी पाद्री ने इमें बताया था कि अपरीका में किसी ईसाई धर्म प्रचारक को तब तक किसी दूसरे देश में जाकर धर्म प्रचार करने के लिये पासपोर्ट नहीं दिया जाता जब तक वह लिखकर यह बादा न करे कि वह जिस देश में लायगा वहाँ अमरीकी सरकार की राजकाजी पालिसी को कामयाब होने में मदद देगा.

#### 'प्रमरीकी जनता की ज़िम्मेवारी

हमें यह सब लिखते हुए किसी तरह की खशी नहीं हो रही है, भारत की सरकार और भारत की जनता दानों द्वानया के सब देशों और सब लागों के साथ प्रेम और मित्रता से रहना चाहते हैं. अमरीकी क्रीम के अनेक गुर्खों के लिये इमारे दिल में आदर है. अमरीका ने बड़ बड़े महापुरुष पैदा किये जिनमें से अनेक की यादगारें, आज भी कम्यानस्ट चीन और कम्युनिस्ट रूस में मनाई जाती हैं. ममराकी महात्मा थारों की पुस्तक 'ब् युटी आफ सिवल हिसभावी डियन्स' का तरजुमा करके खुद महात्मा गाँधी ने भारत में प्रकाशित , किया था। बार्ल्टाबरमैन, थारी चौर शैबराहम लिंकन जैसे महापुरुषों को हम दुनिया भर के भहापुरुष मानते हैं. पर आज की दुनिया जिस इनसानी गराबरी, आजादी और एकता की तरफ बढ़ रही है अमरीकी सरकार की इरकतें उसमें सहायक नहीं, जबरदस्त ककावट हैं. अमरीका के इस तरह से दोशों को हम अमरीकी जनता के दोष नहीं, अमरीकी सरकार ही के दोष मानते हैं, पर अभरीकी जनता को अभी अपने कामों से यह साबित करना है कि वह अपनी सरकार की इन ग़लत हरकतों से सहमत नहीं है. जब तक अमरीकी जनता यह साबित नहीं करती तब तक उन सब देशों के लोगों का, जो दुनिया से काले गोरे आदि के भेदों का मिटाना चाहते हैं, सब की बराबरी और सब की आजादी के हक में हैं, और जो इनसानी क्रीम की एकता का साक्षात करना चाहते हैं, यह फर्ज है कि वह मिलकर मानव सभ्यता भीर मानव कलचर की रक्ता के लिये खड़े हों.

इस तरह की ककावटों के हाते हुए भी दुनिया बराबर आगे को बढ़ रही है. दुनिया की साम्राज प्रेभी क्रीमें धीरे धीरे अपनी चालों में नाकाम होती जा रही हैं. प्रिया और अफरीक़ा के सब देश यह अच्छी तरह महसूस करते پا ہے که وہلی کی ہوائی پہلے کسی آبسی کو تلاقی کوتی ہے ہیں کے خلف کوئی جرم آسائی سے ثابت کیا جاسکتا ہو . پر آس سمبولی کا وعدہ صداکر آس سے اِس طرح کی جہوئی مہایتیں تیار کرائی ہے جن سے دوسرے لوگ جنیوں پولیس بہاندیا چاہتی ہے آسائی سے پہنس سکیں اور پھر اِس طرح رگنا ہیں کو پھانسا جاتا ہے .

مم ایک بہلے لیک میں کہ چکے هیں که ایک پرتشاعت امریکی پادری نے همیں بتایا تھا که امریکی میں کسی عیسائی دھرم پرچارک کو ثب تک کسی درسرے دیش میں جاکر دھرم پرچار کرنے کے لئے پاسپرت نہیں دیا جانا جب تک وہ لیکٹر یہ وعدہ نہ کرے کہ وہ جس دیش میں جائے گا وہاں امریکی سرکار کی راج کاجی پالسی کو کامیاب ہوئے میں مدد دیا گا۔

## امریکی جنتا کی ذمهواری

همين يه سب لکهتے هوئے کسی طرح کی خوشی تهيں هو رهی هے . بهارت کی سرکار اور بهارت کی جنتا دونوں دنیا کے سب دیشوں اور سب لوگوں کے ساتھ پریم اور مترتا سے رمنا چاعتے میں . امریکی قرم کے آنیک گنوں کے لئے ممارے دل مير ، أدر عه . امريكه نے برے برے مهاپرش پيدا كئے جن ميں سے آنیک کی یادگاریں آج بھی کمیونسٹ چین اور کمیونسٹ روس میں منائی جانی ھیں . امریکی مہاتما تھورو کی بستک 'تیوٹی آف سول تس أوبيتينس' كا توجمه كركے خود مهادما كاندهم في بهارت مين يركشت ديا نها ، وألت وت ميون نہورو اور ابراھم لعکن جیسے مہادرشوں کو ھم دنیا بھر کے مهاپرش مائتے عیں ، پر آج کی دنیا جس اِنسانی برابری آزادی اور ایکٹا کی طرف بڑھ رھی ہے اسریکی سرکار کی حركتين أس مين سيايك نهين وبردست ركاوت هين، أمريكه کے اِس طرح کے دوشوں کو هم اُمریکی جنتا کے دوش نہیں ا امریکی سرکار ھی کے دوش مانتے ھیں ۔ ور امریکی جنتا کو ابھی آینے کاموں سے یہ ثابت کرتا ہے که وہ آپنی سرکار کی اِن اط حرکتوں سے سہمت نہوں ہے . جب تک امریکی جنتا یہ ابت نہیں کرتی تب نک ان سب دیشوں کے لوکن کا جو دنیا سے کالے گورے آدمی کے بھیدوں کو مثانا چاعتے عیں' سب کی ہراہری اور سب کی آزادی کے حق میں ھیں' اور جو إنساني فوم كي إيكتا كو ساكشات كرنا جاهتے هدر، يه فرض هے که وہ ملکو مانو سبھیتا اور مانو کلنچر کی رکشا کے لئے کارت هون،

اِس طرح کی رکاوٹوں کے ہوتے ہوئے بھی دنیا ہزاہر آگہ کو ہڑھ رھی ہے ۔ دنیا کی سامراج پریسی قرمیں چھیرے دھیرے اپنی چالوں میں ناکام ہوتی جارہی ہیں ۔ اِیشیا اور انریته کے سب دیھی یه آچھی طرح محسوس کرتے ाहें हैं कि किस के साथ रहने में उनकी हानि है और हम के साथ चलने में उनका और दुनिया का मला और धारे परिया और अफ़रीका के सब देशों और किस्तान जैसे अपने पड़ौसी देश में भी हमें इसके आसार ग़र्फ़ दिखाई दे रहे हैं. अमरीका जैसे पूँजीवादी और ग़ज़ाजवादी देशों की नीति हमें अब—''जब तक निभे व तक" की सी दिखाई देती है. हम मानते हैं कि अब की वह इसर उधर साजिशें करके और कम समम लोगों को उनके देशों के खिलाफ फोड़कर दुनिया के लिये बोड़ी बहुत मुसीबतें खड़ी कर सकते हैं. पर वह इतिहास ह प्रवाह और मानव सभ्यता के धारे को नहीं बदल सकते.

प्रस्ती इलाब-फ्रीब और इथियारों का ख़ातमा

इस खतरे का असली और टिकाऊ इलाज एक ही है और वह है हथियार बन्दी, यानी दुनिया भर की फीजों का और जैंग के इथियारों का धीरे धीरे कम करना और आखीर में विलकुल खत्म कर देना. दुनिया के सब देशों के विवारकों की निगाहें इस तरफ लगी हुई हैं. ऐसा मालूम होता है कि अमरीका के शासक थीरे धीरे इस जरूरत को महसूस करते जा रहे हैं. जंग का दुनिया से हमेशा के लिये लात्मा होना ही चाहिये. हजरत ईसा के शब्दों में हमें अपनी तलवारों को तोड़कर उनके हल बना लेने चाहियें. एक दूसरे पर अविरवास और पुराने स्वार्थ इस रास्ते में इकावट हैं. पर यह इकावटें भी घारे घीरे मिटती जा रही हैं. इस मिटने में इस समय दो चीजें सब से अधिक मदद देती मासूम होती हैं. एक यह कि अमरीका के शासक भी श्रव इस बात का अपने दिलों में समक्तने लगे हैं कि हर तरह की कौजों और कौजी हथियारों में सोवियत रूस इस समय अमरीका से बढ़ा हुआ है. दूसरे यह कि हथियारों के खत्म हो जाने पर भी देशों देशों में जो मतभेद और छोटे बड़े मगड़े रहेंगे उनको इल करने का तरीक़ा क्या हो. हमें इस बात का अभिमान और ख़शी है कि अमरीका की नीमो जाति ने इस बारे में महत्मा गाँधी के अहिसात्मक असहयोग के हिथयार की अपनाया है. किसी से बैर न इंा, दिल में किसी का बुरा न हो, बुराई से नफ़रत करते हुए भी बुरे से प्रेम श्रीर इमदर्दी हो, अन्याय के साथ किसी तरह का सहयोग न हो, ख़ुद अपनी जान पर खेलकर भी अन्याय को सिटाने का रद संकल्प हो, इस तरह के फिक़रे नीमो पाद्री किंग के व्याख्यानों में भरे पड़े हैं. अभी तक दुनिया के बहुत से विचारकों को यह चीजें हवाई और रीर अमली भले ही दिखाई दें, दुनिया के आगे के मगड़ों और अन्यायों को सतम करने का यही एक तरीका है. तरीका फैलता जा रहा है चीर फैलिगा.

بھارہ ھیں که کس کے ساتھ رہانے میں آن کی ہاتھ ہے اور کس کے ساتھ چائے میں آن کا اور دنیا کا بھا ہے . دھورے دھورے کے ساتھ چائے میں آن کا اور دنیا کا بھا ہے . دھورے دھورے گراستان جیسے اپنے پروسی دبھی میں اس کے آثار صاف دکھائی دے رہ قبل ، امریکہ جیسے پونجی وادی اور سامولے وادی دیھوں کی تعین ، امریکہ جیسے پونجی وادی اور سامولے وادی دیھوں کی سی دکھائی تیتی ہیں اب سے نک کی سی دکھائی دیتی دیتی ہو ادھو سازشیں دیتی ہو ادھو ادھو سازشیں کو کے اور کم سمجھ لوگیں کو آن کے دیھوں کے خلف پھروکو دنیا کے لئے تھوڑی بہت مصینتیں کھری کوسکتے ھیں ، پر وہ اِتہاس کے اور اور مانو سبھیتا کے دھارے کو نہیں بدل سکتے .

## اصلی علی اور هتیاروں کا خاتمہ

اِس خطرے کا اُملی اور لکاؤ علی ایک هی هے اور وہ ہے الله الدون المالي تالها بهر كي فوجون كا أور جلك كے متياروں کا دهیرے دهورے کم کرانا اور آخور میں بالکل ختم کردینا ۔ دنھا کے سب دیشوں کے وچارکوں کی تکاهیں اِس طرف لگی ہوئتی ہیں . ایسا معلوم ہوتا ہے که امریکھ کے شاسک بھی دهیرے دهه اے اِس ضرورت کو محسوس کرتے جارہے هیں ۔ جَلُك كَا دِنْهَا سے هميشه كے اللہ خاتمه هونا هي چاهئي . حضرت عیسی کے شادوں میں ہمیں اپنی تلواروں کو توزکر آن کے مل بنالینے چادئیں ، ایک دوسرے پر آوشواس اور بوالے سوارتھ اُس رأستے میں رکارے میں ، پر یہ رکارئیں بھی دھیہے دھیرے متتى جارعى هين . إس متنه مين إس سم دو چيزين سب سے آرھک مدد دیتی معلوم عوتی ھیں ۔ ایک یہ که امریکه کے شاسک بھی اب اِس بات کو اپنے دنوں میں سمجھنے لئے هیں که هر طرح کی فوجوں آور فوجی هنیاروں میں سوریت روس آس سنے امریکہ سے بڑھا عوا ہے . دوسرے یہ که هتیاروں کے ختم هو جانے در بھی دیشوں دیشوں میں جو متبھید اور جھوٹے ہوتے جوكرت رهينكم أن كو حل درني كا طريقه كيا هو . همهن إس پات کا آبھیمان اور حوشی ہے که امریکه کی ٹیکرو جاتی نے اس بارے میں مہانما کاندھی کے اهنسانمک آسهیوگ کے هتیار کو ایکایا ہے . کسی سے بیر تبتہ ہوا دل میں کسی کا برا تہ ہوا ہرائی سے تفرت کرتے ہوئے بھی برے سے پریم اور همدردی ہو؟ آنهائے کے ساتھ کسی طرح کا سہبرگ تھ ہوا خوں اپنی جان پر کھیل کر بھی آنیائے کو مثانے کا درزہ سنکلپ ہو' اِس طرح کے فقرے نیکرو دادری کنگ کے ویاکھانوں میں بھرے پڑے میں . ابھی تک دنیا کے بہت سے رچارکوں کو یہ چھڑیں ھوائی اور فیر عملی بہلے هی دکیائی دیں دنیا کے آگے کے جمحوں اور أنبايون كُو ختم درني كا يهي أيك طريقه هي. طريقه بمنالتا جا رها هے اور يهيلے ا

## أزاد بهارت مهل قوج لهدل رهني چاهند

## भाजाद भारत में फ्रीज नहीं रहनी चाहिये

विनोवा जी ने हाल में विलक्क सच और ठीक कहा
है कि भारत जगर जपनी सारी फीजों को एक दम जतम
करदे और जपने हथियारों को तोड़कर फेंक दे या हलों
और इंसियों में वदल डाले तो दुनिया के सामने इस मामले
में एक बहुत बड़ा जादर्श पेश कर सकता है. हमें याद है
महारमा गाँधी कहा करते ये कि—आजाद भारत में कोई
फीज नहीं रहनी चाहिये. पर अभी तो शायद भारत के
शासक और जनता दोनों में से किसी में भी यह हिन्मत
नहीं है. हममें अभी जात्मविश्वास की कमी है. भारत इस
मामले में चाहे दूसरों के सामने किसी दिन मिसाल क्रायम
करें या दूसरों के पीछे चले, जाना हमें इसी ओर है.

80-3-756.

--सुन्द्रज्ञाक

## राष्ट्र भाषा किस भोर?

महामना पंडित मदनमोहन मालवी के पाते, स्वर्गीय पंडित कृष्णकान्त मालवी के सुपुत्र, पंडित पद्मकान्त मालवी के सुपुत्र, पंडित पद्मकान्त मालवी ने अपना एक अपा हुआ वक्तत्र्य राष्ट्र भाषा हिन्दी के ऊपर हमारे पास भेजा है. हिन्दी साहित्य की चरचा करते हुए उन्होंने लिखा है कि—"हिन्दी साहित्य के एक विशेष वल की संकीर्णता (तंग नजीरी) और दलकन्दी के कारण हिन्दी के कितने ही अमदूत (पेराबा) और निर्माता (मेमार) आज तक प्रकाश में नहीं आ पाए हैं. और इस कारण हिन्दी साहित्य के अधिकांश आजकल के इतिहास भी न केवल ज्यापक और पूरे ही नहीं है बल्कि एकांकी यानी यक-तरफा भी हैं."

इसकी बजह पंडित पद्मकान्त जी ने यह बताई है—
"हिन्दी आन्दोलन के शुरू जमाने से ही साहित्यकारों के
दो दल रहे हैं, एक दल वह था जो अपने को शुद्ध साहित्यक
कहता रहा है, और अंगरेज सरकार का छुपा पात्र था.
केवल इसी दल के लोग पढ़ने की पुस्तकों का जुनाव करने
वाली सरकारी कमेटियों में लिये जाते थे और स्कूल कालिजों
के पढ़ाई के मजमूनों को तय करते थे. इस दल के ज़रिये
दूसरे गिरोह के साहित्यकों और साहित्यकारों की तरफ से
जिन्हें राष्ट्रीय दल के लोग कहना ठीक होगा, वेपरवाही
बरती गई और उन्हें पीछे छोन दिया गया. आज इस वात
की बड़ी जरूरत है कि उस राष्ट्रीय दल के लोगों की
रचनाओं पर प्रकाश डाला जाय."

जारी बलकर पंडित पर्मकान्त जी ने लिखा है कि— 'आहित्य के इन दोनों दलों में खास फरक राष्ट्रभाषा का रूप बना हो इस सवाल पर था. एक दल हिन्दी को संस्कृत भरी करने का तरफदार था और इसरा दक्ष भाषा को رنوبال بھی نے حال میں بااعل سے اور تیک کیا ہے که بہارت اگر آپنی ساری فوچیں کو ایک م ختم کودے اور آپنی بیاری کو قبوتر پھنک دے یا هلیں اور هنسیوں میں بدل بیار و دنیا کے سامنے اِس معاملے میں ایک بہت ہوا آدرش یقی کوسکتا ہے همیں یاد ہے مہاتما گاندھی کیا کرتے تھے کہ آزاد بھارت میں کوئی فوج نہیں رهنی چاہئے ، پر اُبھی تو باید بھارت کے شاسک اور جنتا دونیں میں سے کسی میں بیارت اِس معاملےمیں چاہے دوسورں کے سامنےکسی دی میں ابارت اِس معاملےمیں چاہے دوسورں کے سامنےکسی دی مثال قائم بیارت اِس معاملےمیں چاہے دوسورں کے سامنےکسی دی مثال قائم بیارت اِس معاملےمیں چاہے دوسورں کے سامنےکسی دی اور ہے ،

. 30 . 3 . 36

## راشتر بهاشا کس اوز ?

مہامنا پنت مدی موھی ما وی کے پرتے کی سورگیہ پنتت کھی کانت مالوی کے سوپٹر پنتت پدم کانت مالوی نے اپنا ایک چھپا ھوا وکٹویہ راشٹر بیاشا ھندی کے اُوپر ھمارے پاس بیستا ھے ، ھندی ساھٹیہ کی چرچا کرتے ھوئے اُنھوں نے لکھا ھے کسالاھندی ساھٹیہ کے ایک رشیش دل کی سنکنیرتا ( تنگ نظری ) اور دل بندی کے کارن ھندی کے کٹنے ھی اگردوت ( پیشوا ) اور درماتا ( معمار ) آج تک پرکاش میں نہیں آچکل ( پیشوا ) اور اِس کارن ھندی ساھٹیہ کے ادھیکائھی آچکل کے اِنجاس بھی نے کیول ویاپک اور پورے ھی نہیں ھیں بلکہ اِنجاس بھی نے کیول ویاپک اور پورے ھی نہیں ھیں بلکہ اِنجاب کیاتھی علی ہیں ھیں ،"

اِس کی وجه پنتت پدم کانت نے یه بنائی ہے۔ "هندی اَندولن کے شروع زمانے سے هی ساهنیه کاروں کے دو دل رہے هیں؛ ایک دل وہ تھا جو اپنے کو شده ساهنیک کہنا رها ہے اور انگریز سرکار کا کریا پاتر تھا، کھول اِسی دل کے لوگ پڑھنے کی یستکوں کا چناؤ کرنے والی سرکاری کمیٹیوں میں اُنے جاتے تھا اور اِسکول کا چناؤ کرنے والی سرکاری کمیٹیوں میں اُنے جاتے تھا اور اِسکول کریمہ دوسرے گروہ کے ساهینیکوں اور ساهنیکاروں کی طرف سے ذریعہ دوسرے گروہ کے ساهینیکوں اور ساهنیکاروں کی طرف سے خبیوں راشتریه دل کے لوگ کہنا تھیک هوگا پیورواهی ہوتی خبیوں اور آنہیں پہنچے جہور دیا گیا ، آج اِس بات کی ہری ضرورت ہے کہ اُس راشتریه دل کے لوگوں کی رچناؤں پر پرکاهی ذرال جائے ۔"

آگے چلکر پنڈت پدم کانت جی نے اکھا ہے کہ۔۔ ''ساھتیت کے اِن دوترں دارس میں خاص فرق راشٹر بھاشا کا روپ کیا ہو اِس سوال پر تھا ، ایک دل ھندی کو سنسکرت بھری کرنے کا طرفدار تھا اور دوسوا دل بھاشا کو

آسان کو آسے بہل جائے کی جائٹا کے انتحاد اللہ کے پہھی صین نوا ، پہلے دل کے لوگوں کو ردیشی سرکلر کا سہارا حابل تھا کیونکہ وہ ایک ایسی بھاشا کا پہٹھاتی تھا بچو ھندو اور مسلماتوں کے بدیج کی کائی کو چوڑی کرنے والی تھی ، یہ دل ہوسرے دل کا ورودھی تھا ، اِس لئے اُس سے کی سرکار پر اپنے اثر اور اپنے بڑھ حوائے ساتھیں میں وہ راشتویہ وچار کے لوگوں کو بوری طرح دیا دیا۔ عیس سمرتو ھو گیا " یہ نکب بڑے ماہ کی بات کے طرح دیا دیا۔ مشوری الیس نے بھی راشتریہ ساتھیں اور شکشک سویم اُسی ایکائمی واتاورں کی آویے میں ، شکھا اور شکشک سویم اُسی ایکائمی واتاورں کی آویے میں ، شکھا اور شکشک سویم آسی ایکائمی واتاورں کی آویے میں ، شکھا ساجتھائی رخان کے دون ہے کہ وہ ھلدی ساجتھائی رخان کے دون ہے کہ وہ ھلدی ساجتھائی رخان کے دون ہے کہ وہ ھلدی ساجتھائی کرنے سیس کو مدھارنے اور ساجتھائی کرنے سیس مدد دیے ،"

پنت پدرگانت جی نے یہ بھی انجا کے کہ۔ ''کھیر کیمشن کے سامنے ایک سہال یہ بھی فیادہ عماری واشٹریہ بھاشا کا روپ کیا ھو ؟ آشکریزی سرکار کے زمانے میں جو نیکی چائی گئی تھی آسے آج کی بدای ھوئی حالت میں واشٹریہ سرکار کو بدل دینا جاھئے' یدی یہ ھیکیا جائے کہ پہلے والی نیتی اراشٹریہ تھی ، بھارت کی ایکٹا کے لئے ھلدی کو سلسکرت نصف بنانے کی آرشیکتا کے بورم جال کا آج پوری طرح پودہ فاض ھو چکا تھ ۔'' اِس سیلدھ میں یہ رشیعی روپ سے معینی میں رکینے کی بات ہے کہ سلسرت کے بڑے سے بڑے پنتی جیسے مہامہوبادھیا چند شو کمار شاسٹری ھادی کو سنسٹورت تشاہ بنائے کے وردھی

پندت پدم کانت جی نے همیں یه بھی یاد دالیا که سورگیه مہامنا پندمت مدن مودن جی مالوں ملی جلی بامتعاورہ بول چال کی بھامنا کے پکھی میں تھ اور 'آشچریه' جیسے تنسم شبدرس کی جگہہ 'آلچرچ' جیسے تدبیر شبدرس کے استعمال کے حتی میں تھے ،

پندے پدم کانت جی کے اِن وجاروں میں سچائی' تازگی اور رواداری صاف جیلکتی ہے۔

प्रासान कर करें काल काल की आवा के निकट लाने के यह में या, पहले दल के लोगों को विदेशी सरकार का सहारा हासिल या, पहले दल के लोगों को विदेशी सरकार का सहारा हासिल या, क्योंकि वह एक ऐसी आवा का प्रश्नपादी वा जो हिन्दू और मुसलमानों के बीच की खाई को चौदी करने वाली थी। यह दल दूसरे दल का विरोधी था. इसलिये वस समय की सरकार पर अपने असर और अपने बढ़े हुए साधनों में वह राष्ट्रीय विचार के लोगों का पूरी वरह दबा देने में समर्थ हो गया. यह एक बढ़े हुल की बात है कि हमारे विश्व विद्यालयों ने भी राष्ट्रीय साहित्यकारों की सरक से वैसी ही बेठली अक्तियार की. कारन साफ है, आज के प्राफ़ीसर और शिक्षक स्वयं क्सी एकांगी वातावरन की उपज हैं. शिक्षा संस्थाओं के अलावा राष्ट्रीय सरकार का भी कर्ज है कि वह हिन्दी साहित्यकारों की रचनाओं और साहित्य के इतिहास को सम्बारने और ठीक करने में मदद है."

पं॰ क्यूमकान्त जी ने यह भी लिखा है कि—"खेर कमी-शन के सामने एक सवाल यह भी है कि हमारी राष्ट्रीय भाषा का क्षत क्या , हो ? बंगरेफी सरकार के जमाने में जो नीति चलाई गई थी छसे ब्याजकी बदली हुई हालत में राष्ट्रीय सरकार की बदल देना चाहिये, यदि यह देखा जाय कि पहले बाली नीति बराष्ट्रीय थी. भारत की एकता के लिये हिन्दी को संस्कृत निष्ट बनाने की ब्यावश्यकता के अमजाल का ब्याज पूरी तरह परदा काश हो चुका है. इस संबन्ध में यह विशेष रूप से ब्यान में रखने की बात है कि संस्कृत के बढ़े से बढ़े पंडित, जैसे महामहोप। ब्याय पं० शिबकुमार शास्त्री हिन्दी को संस्कृत निष्ट बनाने के विशेषी थे."

पं० पद्मकान्त जी ने हमें यह भी याद दिलाया कि स्वर्गीय महामना पं० मदनमोहन जी मालवी मिली जुली वामहाबदा बोल चाल की माषा के पक्ष में ये और 'बाखर्य जैसे ततसम शन्दों की जगह 'बाबरज' जैसे तक्कृव शब्दों के इस्तेमाल के हक्ष में थे.

पं० पद्मकान्त जी के इन विचारों में सचाई, ताजगी भीर रवादारी साफ मजकती है.

| समारे चहां मिस                                     | ने वासी कुछ भीर                        | a   | ai            |     | ulit l amt  |   |
|--|--|-----|---------------|-----|---|---|
|  | कतावें सिक हिन्दी में हैं.             |     |               | •   | ا فيها اور فعايين   | ہارے بہاں ملئےوالی<br>مارے تعابیں مرت ما                          |
| नाम किताब  | लेखक                                   |     | 4             | ाम  | ليكيك   | نام کعاب  |
| 1. शेर-मो-शायरी                                    | भी अयोध्या प्रसाद<br>गोयलीय            |     | _ `           | -   | هری ایردهها پرساف ()<br>گرگلیه  | عمر و عامري   |
| 2. शेर-घो-सुस्रन                                   |  |     | 3 (           | 0 ( | )   |   |
| 3. गहरे पानी पैठ                                   | **                                     | 2   | 8             | 3 ( | ) "   | . غمر و <del>سفن</del> ی<br>د د د د د د د د د د د د د د د د د د د |
| 4. हमारे शाराध्य                                   | नी ननारसीदास                           | 3   | 3 (           | ) ( | ری<br>ری یقارسی دانس 💎 (  | کہرے ہائی ہمائی<br>مدارے آرادھیہ ک                                |
|  | चतुर्वेदी                              |     |               |     | بهگرویدس  | , man, 2, man   |
| <b>5. संस्मरण</b>                                  | 21                                     | 3   | -             | ) ( | "   | • سلسمرن  |
| <ol> <li>दो इजार वब पुरानी<br/>कहानियां</li> </ol> | भी जगदीशयन्द्र जैन                     | 3   | 0             | 0   | ري جگنيش چلتر   | . دو هوار ورهی پرانی ک  |
| 7. ज्ञान गंगा                                      | भी नारायण साद जैव                      | 7 6 | 0             | 0   | 44 to 10 to | کهانها <i>ن</i>   |
| 8. पथ चिन्ह  | भी शान्ति प्रिय दिवेदी                 |     | 0             | _   |   |   |
| 9. पंच प्रदीप                                      | शान्ति एम. ए.                          |     | 0             |     |   |   |
| lo. बाकाश के तारे <b>घरती</b>                      | भी कन्हैयालाख मिश्र                    |     |               | 0   | [-  |   |
| के फूल<br>1. सुक्ति दूत                            | प्रभाकर।                               | 3   |               |     | هربهانو   | دھرتی کے پھول   |
|  | श्री वीरेन्द्र कुमार<br>जैन एम. ए.     |     | 0             | 0   | يرى ويريندر كمار جهن  | 1. مكتى درس   |
| 2. मिलन यामिनी                                     | भी बच्चन                               | 4   | 0             | 0   | م ، اے  | di .  |
| 3. रजत रिम   | बाक्टर रामकुमार वर्मा                  |     | 8             |     | اری پ <del>دوا</del> ی  |   |
| 4. मेरे बापू                                       | श्री तन्मय बुखारिया                    | 2   |               |     | افتر رام کمار ورسا  |   |
| 5. विश्व संघ की भीर                                | पंडित सुन्दरतात<br>भगवानदास केला       | 3   | _             | 0   | ہری تقی بھاریا<br>فقت صفدر قال' بھکران  | 11. مهرعه باوو<br>11. وشو سفاته کی آور اه                         |
| 6. भारतीय अथंशास                                   | भी भगवानदास केला                       |     | ^             | _   | داس کید   |   |
| 7. भारतीय शासन                                     | ना नगमान्त्रस्य कवा                    |     | 0             | 0   | نری پهکوان داس کید  | )]. يهارتهم ارته شاستر ا  |
| 3. नागरिक शास्त्र                                  | 37                                     | 3   | 0             | 0   | 79  | 11. بهارتیه شامن  |
| . साम्राज्य और उनका                                | <b>3</b> 9                             | 2 2 | <b>4</b><br>8 | 0   | . 39  | 16. ناگرک هاستر   |
| पतन  | 29                                     | 2   | U             | U   | <b>17</b>   | 12, سامراج اور أن لا  |
| . भारतीय स्वाधीनता                                 | 99                                     | 1   | 4             | 0   |   | عی  |
| <b>भ</b> न्दोलन                                    |  |     |               | ^   | <b>91</b>   | 20. بهارتهه سرادههاندا  |
| . सर्वीदय अर्थ व्यवस्था                            | 99                                     | 1   | 8             | 6   |   | آندولي  |
| . इमारी चादिम जातियां                              | भी भगवानदास केला<br>भौर भी भखिल विनय   | 3   | 8             | 0   | ور<br>شري بهگواڻ داس کهلا   | 21. سروودے ارتب ربوستہا<br>22. مماری آدم جاتباں                   |
| . अर्थशास्त्र शब्दावती                             | भी दया शंकर दुवे,                      | 2   | 0             | 0   | اور شری اکهل وغم  |   |
|  | एस. ए. एक. एक. बी.                     |     |               |     | غري ديا شلكر دوي  | 23. ارته غاسکر غبدارلی  |
|  | श्री गजाघर शसाद, जा                    | EVE | •             | ·   | ایم ، ایم ایل ایل - بی ،  |   |
|  | श्री भगवानदास केला                     | 3-  | '>            |     | لجادهر يرسادا أميشك   |   |
| . नागरिक शिका                                      | श्री भगवानदास केवा<br>भी द्याशंकर दुवे | 1   | 8             | 0 , | پهگوان دا <i>س</i> کیلا<br>هری پهگوان داس که  |   |
| . राख्ट मंडल शासन                                  | भी दयाशंकर दुवे                        | 4   | •             | •   | ھری بہموال عامل عا<br>دیا گفکر دویے   | 24. نگرک هکما   |
| . जवानी  | महात्मा मगवानदीन                       | 1   | 8             | 0   | دیا علکر دوی  | and the sal of  |
| . मारने की हिम्मत !                                |  | 3   | 0             | 0   | مهاتما بهكران دين   | 25. رافتر منقل غاسي<br>06. يا                                     |
| . सत्तोग स्व                                       | p                                      |     | 0             | 0   | •   | 26. جوانو   |
| . मेरे साथी  |  |     | 8             | 0   | 79  | 27ء مارنے کی هم <b>ت!</b> .                                       |
| 0. 1   | 7)                                     | 1   | 0             | 0   | . 39  | 28۔ مارنا سے<br>29۔ مورے ساتھی<br>ملیے کا پتدے                    |
| ्राप्त । स्थान <b>स्थित</b>                        | का पता-                                |     | _             |     | 99  | ولالله موريه سالهي ما الله  |

# सांस्कृतिक साहित्य

سانسكوتك ساهتيه

## हजरत मोहम्मद श्रीर इसलाम

लेखक-पिडत सुन्दरलाल, मृत्य-तीन रुपया ्सलाम के पैग्म्बर के सम्बन्ध में भारतीय भाषाश्चों में इस से सुन्दर कोई दूसरी पुस्तक नहीं

# हजरत ईसा और ईसाई धर्म

लेखक-पन्डित सुन्दरलाल, मूल्य-डेढ़ रूपया

# महात्मा जरथुस्त्र और ईरानी संस्कृति

लेखक-विश्वम्भरनाथ पांडे, क्रीमत-दो रुपया

## यहदी धर्म श्रीर सामी संस्कृति

लेखक—विश्वमभरनाथ पांडे. कीमत—दो रूपया

## प्राचीन मिस्र की सभ्यता और संस्कृति

लेखक--विश्वमभरनाथ पांडे, कीमत--दा रुपया

# सुमेर वाबुल श्रोर श्रसुरिया की प्राचीन संस्कृति

लेखक-विश्वमभरताथ पांडे, क्रीमत-दो रुपया

# प्राचीन यूनानी सभ्यता ऋँ र संस्कृति

लेखक-विश्वमभरनाथ पांडे, क्रीमत-दो रुपया

## गंगा से गोमती तक

( प्रगतिशील कहानी संप्रह् )

क़ीमत-दो रुपया लेखक-श्री मुजीब रिजवी,

## आग और आँस

( भावपूर्न सामाजिक कहानियाँ )

लेखक—डाक्टर श्रस्तर हुसेन रायपुरी, क्रीमत—डेढ़ रुपया

## .कुरान ऋोर धार्मिक मतभेद

. लेखक—भौलाना ऋबुलकलाम ऋाजाद, क्रीमत—डेढ़ कपया

#### भंकार

( प्रगतिशील कवितात्रों का संप्रह )

लेखक-रघुपति सहाय फिराक़, कीमत-तीन रुपया

मिलने का पता

# ملنے کا یته

# हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी उर्मा अल्ला अंपन्यां है

145 मुट्टीगंज, इलाहाबाद متبى كنج العآباد 145

# حضوت محمد اور إعلام

ليكهك - يندَت سندر الله مولية - تين روييه

اِسلام کے پینمدر کے سمبندہ میں بھارتیہ بھاشاؤں میں اِس سے سندر کوئی دوسری پستک نہیں

# حضرت عيسي اور عيسائي دهرم ليهك بندت سندر الل مولية ديره ربيه

مهاتها زر تهستر اور ایرانی سنسکرتی ليكهك وشوميهر ناته والذع أ تيست در رويه

# یهودی دهرم اور ساری سنسکوتی اینک رشومبور ناته باندے' نیست دو رویه

پراچین مصر کی سبهیتا اور سنسکرتی ایکهک—رشوره بر نانه پاندے' تیست—دور روپیه

# سهير ٔ بابل اور أسوريا كي پر اچين سنسكرتي

ليكهك--رشومبهر ثاته باندع تيمت-دو رويبه

# پراچین بونانی سبعیدا اور سنسکرتی ایکهک-رشومبهرنانه باندے تیت-دوروبه

## گنگا سے گومتی تک

( پرگتی شیل کهانی سناره )

ليكهك - شرى مجيب رضوى

# أگ اود انسو

( بهاوپورن سمآجک کهانیال )

لهكهك - دانتر اختر حسين رائه پورى؛ قيمت - وروه رويه

## قران اور دیارمک مت بهید

ليكهك - مولاناً أَدِرَكُلُم أَزَادٍ \*

## حهنكار

( پرگتیشیل کوبتائِں کا سنکرہ )

لهکهک -رگهوپتی سائے فراق ، قیمت - تین روپیه

# ।हेन्द्री घर

هندی گهر

कलचर पर हर तरह कीं कितावें मिलने का एक बड़ी केन्द्र—पाठक हिन्दीं, उर्दू, अंग्रेजीं की अपनी मन-पसन्द कितावीं के लिये हमें लिखें।

हमारी नई किताबें

महात्मा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी श्रीर उदू में ) लंखक—गान्धीबाद के माने जाने बिडान : श्री मंजर श्रक्ति सोस्ता मंज 225, क्रीमन दो रूपया

> —ः∘ः— गान्धी वावा

( बच्चों के लिये बहुत दिलचम्य किताब ) लेखिका—कुद्सिया जैदी भूमिका—पन्डित जवाहरलाल नेहरू मोटा काराज, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसवीरें दाम दो रूपया

—: : : —
पंडिन सुन्दरलाल जी की लिखी कितावें
गीता स्रोर क्रुरान

275 सके, दाम ढाई रूपया

हिन्दू मुसलिम एकता

100 सफे, दाम बारह आन

महातमा गान्धी के बलिदान से सबक

क्रीमन बारह आन

पंजाब हमें क्या सिखाता है

क्रीमत चार आने

बंगाल ऋौर उससे सबक्र

क्रीमत दो आने

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 मुट्टोगंज इलाहाबाद

کلچر پر هر طرح کی کتابیں ملنے ایک بڑا کیندر۔۔پاٹھک هندی اردو' انگریزی کی من پسند کتابوں کے لئے همیں لکھیں.

هاری نئی کتابیس

مهاتما کاندهی کی وصیت (هندی اور آردو میں)

لیکھک ۔۔ گلرهی وال کے مالے جالے ودوان: شری منظر علی سوخته صفحہ علی سوخته صفحہ علی سوختہ دو روید

كاندهى بابا

(بحوں کے لئے بہت داحیسپ کتاب) لیکھکا۔۔۔قدسیم زیدی بھومکا۔۔۔پنڈت جوالفر آل نہرو موٹا کافذ' موٹا ٹائپ' بہت سی رنگیں تصویریں

دام دو روپيه --:٥:-

پندت سندرال جي کي لکھي کتابيس

كيتا اور قران

275 منطع دلم تفاني رويه

هندو مسلم ایکتا

100 صفحہ دام بارہ آنے

مہاتما کاندھی کے بلیدان سے سبق

بنجاب همیں کیا سکھانا ھے

بنگال آور اُسُ سے سبق

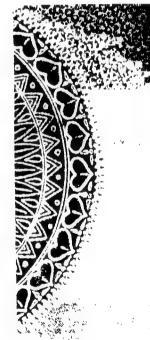
هندستاني كلجر سوسائتي

145 متم كنب الدآواد

# نہا دھہ ن



e en en en fille fattide



## NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

#### Editorial Board

Dr. Tara Chand M.A., D. Phil. (Oxon)

Mahatma Bhagwan Din

Dr. Syed Mahmud, M.A., Ph.D., Bar-at-Law

Pandit Sundarlal

Bishambhar Nath Pande

#### Editor-in-Charge

Bishambhar Nath Pande

#### Asst. Editors

Suresh Ramabhai Mujib Rizvi

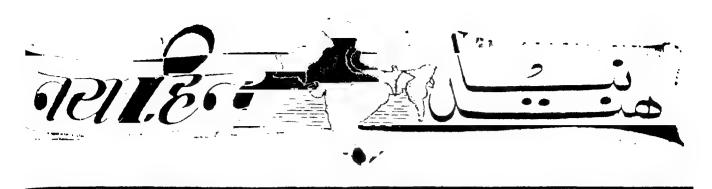
#### **Annual Subscription**

Inland Rs. 6/Foreign Rs. 10/Single Copy As. /10/- only

Can be had from -

# Manager, NAYA HIND

145. MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.



نبير नम्बर 5 جلد जिल्द 21

# मई 1956 ं

हिन्दुस्तिना कलचर सोसायटी अंधिक अध्नित अधिक १४६० अधिक १४६ अधिक १४६ अधिक १४६ अधिक १४६४ अधिक १४६४ अधिक १४६ अधिक १४६ अधिक १४६ अधिक १४६ अधि

# मई 1956 कौ

| क्या किस से                                  | सफ          | T coins | کیا کس سے                              |
|--|-------------|---------|--|
| 1. बौद्ध धर्म और इस <b>खा</b> म              |             |         | 1. ا بوده دهرم أور إسلام               |
| —श्री मौलवी ज़िया उदीन साहब                  | . 233       | •••     | المستشرق مولوق فهاألدين صلحب           |
| 3. चीन में बौद्ध धर्म                        |             |         | 2. چهن ميں بوده دهرم                   |
| प्रोफैसर तान-युन-शान                         | . 239       |         | پرونهسر قان - بن - شان                 |
| 3. यूनानी विचार भारा और <b>बौद प</b> र्म     |             |         | 3. یونانی وچار دهارا اور برده دهرم     |
| —श्री टी० विमलानन्द एम० ए०                   | <b>2</b> 53 | •••     | شرى تى . ومقادنا ايم . اـ .            |
| 4. हिन्दुस्तान की करचर पर बौद्ध मज़हब की खा  | प           | هاپ     | 4. هندستان کی کلمچر پر بوده ۱ دهب کی چ |
| —आचार्य धर्मानन्द कोसन्दी                    | 256         | •••     | —آچاریه دهرمانند کوسمبی                |
| 5. ग्रहम्मद साहब के कुछ उपदेश                |             |         | 5, محمد ماحب کے کچھ اُپدیش             |
| अनुवादकः श्री मुजीव रिजवी                    | 269         | ***     | ـــانروادک : شری مجیب رضوی             |
| 6. ब्रात्मा विद्या (इस्मे रूहानी)—न्याप बीती |             |         | 6. آتم ردیا ( روحانی )—آپبیتی          |
| डाक्टर भगवानदास                              | 272         | ***     | قاکاتر بهکوان دا <i>س</i>              |
| 7. चीन में इखाज का पुराना तरीका              |             |         | 7. چين ميں علج کا پرانا طريقه          |
| —पन्डित सुन्द्रलाल                           | 278         | ***     | <b>س</b> پلتت سلور ال                  |
| 8. इमारी राय-                                | 282         |         | 8. ھماری رائے۔۔                        |
| महास्मा बुद्ध की याद मेंविश्वन्भरनाथ पां     | 3           |         | مهاتما بده کی یاد میںوشومبهر قانه پائڈ |

## भी बीधवी चित्रावरीत समूच

विश्व संकारी में असतिय विद्वानों ने दिन्द कितायों का अरबी कारबी में तर हुना किया हुछ से बहुत पहले और जिस समाने में कि इसरे ग्रुटकों के सुसलिम यात्री हिन्द्रस्थाय आकृर यहाँ से इस अरक की जानकारी हाचिल करके अपने अपने अरकों को खीट अपने भी पहले ईरानी श्रद्ध के वारिये और ईरान के क्षक दूर दूर के हिस्सों में नीय वर्ग के वर्ष अर्थ असर के जरिये मुसलमानों को हिन्द्रस्तान के मक्द्रवी क्यालों की काफी मलक मिल खुकी थी. यह मुसलमान बीटों की 'समनिया' 28 कहा करते थे. 'बुद' वा 'बुत' सक्या, जो बुद का विगदा हुआ रूप है, काकी पहले गिरते गिरते 'मुर्ति' के मायनों में इस्तेमाल होने लगा था. इसके और क्रम्स मायने रह ही नहीं गये थे. यह लोग 'मुखासफ' को बौद मजहब का बानी सममते थे. बुजासक 'बोधिसत्व' का बिगड़ा हुआ रूप है. मुसलमानों के बलक, ट्रांस काक्सियाना, खराखान, तुर्किस्तान, ईरान कौर एक दरजी वक इराक फतह करने से पहले इन सब मुल्कों में बीद्ध धर्म फैल चुका था. इन मुल्कों के लोगों के मुसल-मान होजाने के बाद भी वहां के बीद प्रशहितों ने फीरन अपना प्रचार बन्द नहीं कर दिया. उनके बैराग्य, तप और योग के तरीक्रे और उनका मजहबी नजरिया यह सब चीजें बराबर पहले ही की तरह नये मुसलमानों में अपना काम करती रहीं और अपना असर हालती रहीं. 'तसवीह' यानी 'माला' और इसी तरह की और बहुत सी चीचें मुसलमानों का बैदों से बिरसे में मिलीं, इस्मे मारतत वानी 'अध्यात्म' में स्किसें का 'कना' का चस्त बौद्धों के 'निर्वाख' से लिया गया है. खिक्कों के सवाबिक 'सालिक' बानी 'बोगी' फना फ़िल्लाहू बाही (ईस्वर में बीन' होजाने से पहले जिन भुकामाल वा जवारों में से होकर गुजरता है वे सन बीद पा कब से कब बिन्त्रस्तानी हैं.

मार्थ भीर हुमारा के ईशनियों में यह एक जबवंता रेवाल के कि ने कर बार फिर अपने पुराने बीख क्यालायाँ भीर बीच विद्यार्थों को अपनाते रहते थे. शानव और सब पों के प्रकारित के उस हुन्हों ने के बीद वर्म सब से स्थान के कि बीच का कह कर कर कर कर कर नर राजी

## شرى مولوق فياألدين ماهب

پس زمالے میں سلم وبواتیں لے علدو کتابیں کا عربی المن مين ترجع كيا أس سه بهت يها اور جس زسال مين الموسود ماكون كي مسلم ياتري هلدستان أكر يهال سالس الکیا کی جانکاری حاصل کرکے اپنے اپنے ماکوں کو لوٹے آئی سے عی بیلے ایرائی ادب کے ذریعے اور ایران کے کچھ دور دور کے حصیں سیں بردھ دھرم کے بچے ایچے آثر کے ذریعے مسلمالیں کو هندستان کے منصبی خیالیں کی کانی جہلک مل چکی تھی . ية مسلماتين بودهون كو "سمائيه الله يكها كرتے تھے ، "بده ال المعناء لفظا جو بدھ کا بکوا ہوا روپ ھے کانی پہلے گرتے گرتے إَنْ وَلِي اللهِ عَلَى مِنْ إِعْلَمِمَالَ عَوْلَ لِكَا تِهَا . أَسَ كَمْ أُور كَجِهِ معلم ودهی تبین کلم تهے . یه لوک ویوامغی کو بوده مذهب كا بالى سمتجيته تهه ، يزامف ديودهستوك كا يكوا هوا روب هـ . مسلماتوں کے بلع اوائس آکسیبانا خولسان ترکستان ایران ﴿ إِنْ اللهِ عَرَاقَ فَاتِعَ كُولَ عَمْ إِلَا عَمْ عَرَاقَ فَاتِعَ كُولَ عِنْ يَهِلُمُ إِنْ سَبِ مَلْكِينَ مِين پوتھ دیدرم پیل چکا تھا۔ اِن ملکس کے لوگس کے مسلمان هوجائے کے بعد بھی وهاں کے بودھ پروهتیں کے فوراً اینا پرچار باد تہوں گرفها ، ان کے امراکیت تب اور یوک کے طریقے اور اُن کا مذاہی فظاریہ یہ سب چیزیں برابر پہلے ھی کی طرح نٹے مسلمانوں مهن أبنا كام كرتي رهين أور أينا أثر قالتي رهين . السيدم أَيْعَلَى المالا أور أَسْي طارح كي أور بهت سي چيزين مسلماتين كو بهده سه ورثه میں علیں ، اعلم معرفت علی ادهیاتم عیں سَوْقِينِ كَا اللَّهُ كَا أُصَولَ بِودهون كَمْ البُورُانُ سَمَ لَيَاكِيا هَمْ صَوْقِينِ وي مطابع لساك ، يعني ليوكي ففاقي الله يعني إيشور مين لين هرچانے سے پہلے جن "مقاسات یا چکروں میں هوکر گذرا فے وے اسب بوده یا کم سے کم هادستائی هیں .

بائم اور بخارا کے ایرانیوں میں یہ ایک وبودست رواج تھا کہ وے بار بار پھر آپنے پرانے بودھ خالائوں اور بودھ درواجوں کو آپائے رہتے تھے۔ شاید اور سب دیشوں کے مقابلے میں اور ماکوں میں ہی بودھ دھوم سب سے زیادہ دیر تک بنا رہا۔ آبو نصر احمد بی نوشخی

(सन् 948 हैं) कामी "कारीसनुसारा" में विस्तता है कि—ं "कुमारा के लोग बार बार मुसलमान कर लिये जाते थे. बे इसलाम कृत्रुल कर लेते थे और हर बार क्योंही कि अरव वनके सुरुष से बले जाते ये फिर इसलाम छोड़कर अपने पुराने संबद्ध में चले आते थे. इखारा के पुराने इतिहास का जिक करते हुए वह जिखता है-"साल में दो मर्तवा यहाँ बाजार लगा करता था जिसमें मुर्तियां विका करती थीं. एक एक दिन में पचास पचास हजार दिरहम की मुर्तिया विक जाती यी ... बुखारा के लोग पहले बुत परस्त (मुर्ति पूजक) रह खुके ये और साल में दो बार मूर्तियों की करोक्त उनके देश का एक मुस्तक्रिल रिवाज हो गया था. अस्ती अरबी सारीख के मुसक्षिफ मोहम्मद बिन जाफर ने अपनी किताब में लिखा है कि यह बाजार उसके बक्त तक बराबर लगता रहा. 🛨 इन सब बातों को देखते हुए हम बंद नतीजा निकाले बरीर नहीं रह सकते, और यह नतीजा बहुत रास्त नहीं हो सकता, कि वहाँ के लोगों के इसलाम धर्म कुबूल कर लेने के बाद भी किसी न किसी ज्यादा आरीक बीज का, यानी बौद्ध धर्म के किसी न किसी ज्यादा असली और जबर्दस्त उसूल का असर उनके दिलों और विमासों पर अपना काम करता रहा होगा. अञ्बासी खली-काओं के प्रमाने में बरमिकयों ने को कुछ कारनामे दिख-लाए उन से यह बात बिना किसी शक और ग्रुवहे के पूरी तरह साबित होती है.

बरमकी शुरू में बलख़ ही के रहने बाले थे. सन् 652 ईसवी में खलीका उसमान के जमाने में मुसलमानों ने बलाख़ को फतह किया। वहाँ के बौद्ध मन्दिर 'नद विहार' का खास परोहित 'बरमक' कहलाता था. बरमक संस्कृत क्षप्रज् 'परमुख' से बना है. बरमक को क़ैद करके खलीफा के पास भेज दिया गया. मालूम होता है वहाँ पर वह मुसल-मान हा गया क्योंकि लिखा है कि वहाँ से बलख बापस आने पर इसने फिर अपना पुराना धर्म अस्त्यार कर लिया. शिकिन फिर भी वहाँ के लोगों ने उसे अब अछ्त समग्ता. बन्होंने उसे पुरोहिताई के उतवे से हटाकर उसके लड़के को इसकी जगह मुक्तरेर कर दिया. इसे ही वह अपना धर्म गुरु मामने सगे. इसके बाद बौद तुर्क राजा निजाक तुरखान ने खिकिया साविश करके बरमक और उसके दस बेटों को अर्वा डावा. इसपर वरमक की बीवी अपने सब से छोटे बेटे को साथ क्षेत्रर जान बचा कर कारामीर बली गई. बरमक के बेटे, ह्योटे बरमक का काशमीर में बैद्यक, ज्योतिष भौर दुसरी भारती विद्याओं की तालीम दी गई. इस भीजनान बरमक को भासिर में बलख बापस पुलाया गया

- 6 & CO | W May All M (2013 -) الرغارا کے لوالی باور بول سطمان کرائے جاتے تھے۔ يه إسلم قبول الواقات أور عر بار جدولهي كه عرب أن ع منك الله ولي أله الله يعو إسلم جهوركو أيد يول مدهب مين مد جاتے تھے بھ بھارا کے برائے انہاس کا ذکر کرتے مرتے وہ من هسد السال مين هو مرتبه يهان بازار لكا كرتا تها جس میں میرتهاں بکا کرتی تھیں۔ ایک ایک دن میں بچاس بچاس موار درهم کی مورتیاں یک جاتی تییں...بخارا کے ارک بیلے معیرست ( مرتی پوچک ) را چکے تھے اور سال میں دو بار مزرتیوں کی نروشت اُن کے دیش کا ایک مستقل ررابے موکیا تھا یا اصلی عربی تاریخ کے مصلف محصد بن جمغر نے آینی کتاب میں لکھا ہے کہ یہ بازار اُس کے وقت تک برابر لکتا رہا 📜 أن سب باتوں كو ديكھتے هوئے هم يه تتيجه فكالے بنير نهين رة سكتما أوريه نتيجه ببت غلط نهين هوسكتا كه وهاں کے لوگوں کے اِسلام دھرم قبول کولیلے کے بعد بھی کسی نے کسی زیادہ باریک چیو کا یعنی بردھ دھرم کے کسی تے کسی زیادہ اصلی اور زبردست اصول کا اثر اُن کے دالوں اور دمانوں یر اینا کام کرنا رہا ہوگا . عباسی خلیفاؤں کے زمانے میں برمکیوں نے جو کچے کارنامے دیالئے أن سے يه بات بنا کسے شک أور شبھ کے یوری طوے ثابت ہوتی ہے۔

ہرمئی شروع میں بلنے عی کے رملے والے تھے۔ سن 652 عیسوں میں خلینہ عثمان کے زمانے میں مسلمانوں نے بلغم کو فام کیا ، وهاں کے بودھ مندر انہوهارا کا خاص پروهت ابرمکا كهاتنا تها ، برمك سنسكرت لفظ أيرمكها سه بنا هـ ، برمك کو تید کر کے خلیات کے پاس بہیم دیا گیا ، سطوم ہوتا ہے وہان ير ولا مسلمان موكيا كيونك المهاهة كه وهان علي وأيس ألي يو أس نے پھر اپنا پراٹا دھرم أختيار كرليا، ليكن پھر بھى رھاں كے لوكين له أسه اب أجهرت سنجها ، أنهين في أسه يررهنائي ك رنبه سے متاکر اُس کے لوکے کو اُس کی جاته مقرر کردیا . اُسے ھی وہ اینا دھوم گرو مانٹے لکے ۔ اُس کے بعد بودھ ترک راجا نذاق ترخلن نے خدیہ سازھی کرکے برمک اور اس کے دس ہیٹس کو مروا ۃالا ، اس پر برمک کی ہیری اپنے سب سے چبرانے بیٹے کو ساتھ لیکر جان بحاکر کشمیر چلی گئی . برمک کے بھالے جھوالے برمکبا کو کاشمیر میں ویدکا جهرتمی اور دوسری بهارتی رحیاؤں کی تعلیم دی گئی ۔ اس توجوانی برمک کو آخر میں بلنم واپس باتیا گیا

Tarikh-e-Bukhara, Ed. O. Shefer, Paris, 1892, p. 18. L—Ibid. pp. 18-19.

ور الله الوقاة على الرامت المار الوقاة كا أو ا خالها هارون رهيد لا وزيرأعظم ابن خاف اس يوهه ومن خاندان سے تھا ۔ ابن اندیم کھتا ہے که اعربین حکومت کے زمانے میں یحیق ابن خاد ہومکی هی المنعض تها جس نے هندستان کے ساتھ بہت گہرا تعلق قایم رکھا . اُس نے بری محدبت اور عزت کے ساتھ هندستان سے هندو ویدیوں اور ودوانوں کو بالیا .۔ معلوم هوتا هے که برمکیوں میں یہ ایک رواج چلا آنا تھا که وس هندستان میں تعلیم یالے کے لئے اپنے یہاں سے طالب علم بهیجا کرتے تھے ، اِسی رواج کے مطابق اُنھوں نے اب مسلمان ہوجائے کے بعد بڑے بڑے ودوانوں کو بھارے کے مذہبیں کے بارے میں چربی چربی جانگاری حاصل کیئے کے لئے اِس ملک میں بھیجا اور هندو پنتترس اور ویدیوں ک خلیفت کے دربار میں بلوایا ،

مسلماتیں میں خاصر عباسی خلیفاؤں کے زمانے میں کانی دوراندیکی ودولن ایسے تھے جی پر کم یا زیادہ بودھ دھوم کا براتراست ادر ہوا ۔ ایران کے ماکی مسلمان ہوجالے کے بعد بعي عامطير ير أيني عقيدين كي لحاظ سے آدھ بودھ تھے . أبن مقلحه (سن 760ع) جس لے اکلیله و دمنه کا بہلوی سے عربي مين ترجيه كيا أور جو برا هوكر مسلمان هوگيا، آزاد خیال ماگیوں اور مسلمائیوں کی بہت اچھی مثال تھا ۔ این مقنصه لامتا هے که اکلیله و دمنه کی امای کتاب هندستان کی اللهي هراني تهي . سن 579-331ع کے قریب برزریاة اِس کتاب کو مندستان سے لایا اور ایران میں اس نے اُس کا بہلوی میں ترجمه کیا . ابن متنحه لے اِس کا ترجمه پهلوی سے عربی میں کیا ۔ اپنی اِس کتاب کے دیباثجہ میں ابن مقنصه في جو كجه لكها هم أس ميں صاف بودھ دھوم كا اثر دكهائي حيثا هي مثلًا ولا لعنا هي كه-

الرار میں نے تجربہ کیا ہے کہ جس رقت سالک (یوگی) سادهی ( عبادت ) میں مشہول ہوتا ہے اس وقت ایک قسم کی روحانی خرشی اُس پر طاری هوجانے ہے ، اُس وقت وہ رنكر هوتا في مطمئن هوتا في خواههات سے يرم هوتا في خود ير أعتبار ركهنا هـ؛ أس كسى بات كي نكر نهيل هوتي، وه درنها كو جهور جكا هرنا هـ؛ الله سه دور هونا هـ؛ ياك هونا هـ؛ أسه کسی بات کا راہے نہیں ہوسکتا وہ حسد اور جلن سے اوپر أَلْهِنَا هِ اللهِ مصبت مع بهرا هونا هي..... ثنه ولا كسى كو كوئى نقصان هيونجاتا هے أور نه أسے كوئى نقصأى يهونجا 

m. . Agille für Auf de adjudich fen कार रखे किय समाधि काम्यान से था. इस्न पानेदीम कारा है कि अवसी ही इस्तात के जमाने में बहिया का साविष् ब्रम्बं ही वह शक्स वा विसने हिन्दुस्तान दे शाव बहुत महर्य वास्तुक क्रायम रक्सा. इसने बड़ी बोहमत और इक्सर के साथ हिन्दुस्तान से हिन्दु वैशों बीर विद्वार्थी को मुलाया. ! मालूम होता है कि बरम-कियों में यह एक रियान जला आता था कि वे हिन्दुस्तान में वालीस बाते के लिये अपने यहाँ से तालिवहरूम भेजा इत्ते थे, इसी रिवाज के मुताबिक उन्होंने अब मसलमान होताने के बाद बढ़े बढ़े विद्वानों को भारत के मजहबों के बारे में पूरी पूरी जानकारी हासिल करने के लिये इस मल्क में भेजा और हिन्द पंडितों और वैद्यों को खलीका के हरवार में बुलवाया.

मसलमानों में खासकर अब्बासी ख्लीकाओं के जमाने में काफी दूरअन्देश विद्वान ऐसे ये जिन पर कम वा ज्यादा बौद्ध वर्म का बराह रास्त बासर पड़ा. ईरान के मागी मुसल-मान हो जाने के बाद भी आम तौर पर अपने अक्रीदों के लिहाज से आधे बीद थे. इन्न मुक्रफ्रह (सन् 760 ई०) जिसने 'क्वैजा ब दमना' का पहलवी से अरबी में तर्जमा किया और जो बड़ा होकर मुसलमान हो गया, आजाद ज्याल मागियों और मुसलमानों की बहुत अच्छी मिसाल था. इन्त मक्कफ़ह लिखता है कि 'कलैला व दुमना' की शसली किताब हिन्दुस्तान की लिखी हुई थी. सन् 531-579 हैं के करीब बरज्याह इस किताब को हिन्दुस्तान से नाया और ईरान में उसने उसका पहलवी में तर्जमा किया इन्त मक्कफ़क्त ने इसका तर्जुमा पहलबी से अरबी में किया. अपनी इस किताब के दीवाचे में इब्न मुक्तप्रकृत ने जो कुछ लिखा है उसमें साफ बीद धर्म का असर दिखाई देता है. मसलन वह लिखता है कि-

"बीर मैंने तजुर्वा किया है कि जिस वक्त सालिक (योगी) समाधि (इबादत) में मराराल होता है उस बक्त एक क्रिस्म की रुद्धानी कशी उस पर तारी हो जाती है. उस बक्त वह बेकिक होता है, अुतमईन होता है, स्वहिशात से पर होता है, ख़ुब पर पेतबार रखता है. उसे किसी बात की फ़िक नहीं होती, यह दुनिया का छोड़ चुका होता है, लालच से दूर होता है, पाक होता है, आजाद होता है, उसे किसी बात का रंज नहीं हो सकता, वह इसद और जनन से ऊपर कता है, वह पाक मोहन्वत से भरा होता है, ... न वह किसी को कोई कुकसान पहुंचाता है और न उसे कोई सुक्रसान पहुचा सकता है..."

<sup>\*-</sup>Kitabul Buldan, P. 324; Arab aur Hind ke Tallukat, pp. 117-18.

<sup>1—</sup>Fibrist, p. 345.

विक्रियान के यह राज्य हैं। को एक स्वाप दिसाई क्षिक का हरन महत्त्वक ने उसके कवाब की ताचीर की है, बानी इसका मदलय समग्राचा है. इस साबीर से ही उसके बहुम से मरे चौर बेक क्यालात की बहुत अब्द्री जानकारी सिंसती है. वह लिसता है—

"तुम्हें जानना चाहिय कि कपड़े की जो चादर तुम्हें क्याब में विकार्ड दी भी वह असली ईश्वरी धर्म है और वे बार बादमी जो उसे चारों कोनों से खींच रहे थे उस धर्म को क्याबम रखने के लिये मेजे गये हैं." जिन चार मजहबों का क्याबम रखने के लिये मेजे गये हैं." जिन चार मजहबों का क्याबम रखने के लिक किया है वे मागी यानी जरशुस्त्री कर्म, यहूदी धर्म, ईसाई धर्म, और इसलाम हैं. "इस तरह बह लोग अपने मजहब के क्याबम करने की कोशिश करते हैं और एक दूसरे से दूर अपनी अपनी तरफ के कोने आजग अलग खींचते हैं. इस तरह मजहब के नाम पर यह इक दूसरे के दुश्मन बन जाते हैं." क्ष

मराहुर अधा शायर अबुल अला मञ्जारी (973 ई० से 1058 ई० तक) पका बौद्ध बल्कि जैन था. जर्मन विद्वान बान क्रेमर ने उसकी बाबत लिखा है कि वह माजी, हाल और मुस्तक्रविल तीनों जमाने के बढ़े से बढ़े नेक आलिमों में से था और उसका जबर्दस्त रौर मामूली दिमारा उस बक्त बहुत सी ऐसी बातों को दुर्गनया के सामने रख चुका था जो ्माम तौर पर भाजकल की फर्जी नई रोहानी की उपज सममी जाती हैं. ∮ मधारी यह नहीं मानता था कि सुदें किसी दिन कर्नों से निकल कर खड़े हो जायेंगे. बच्चे पैदा इरने के काम को आदमी के लिये वह गुनाह मानता था. क्रमा यानी अपनी अलग खुदी को मिटा देने की बह इन्सा-नी जिन्दगी की असली मंजिल मानता था. वह जिन्दगी भर वैर शादी ग्रुवा रहा. वह यह नहीं मानता था कि मजहब "इंश्वर से किसी बाहरी इलहाम के जरिये हासिल होता है बल्कि इसे आद्मी के अपने अन्दर की उपज मानता था. बह जिसता है-

"हत्तीक ठोकरें खा रहे हैं, ईसाई सब भटके हुए हैं, बहुदी चकर में हैं, मागी रालत रास्ते पर बढ़े जा रहे हैं, हम भिटने बाले चादमियों में दो ही खास तरह के आदमी हैं, एक समसदार बदमारा और दूसरे मजहली बेबकूक"\*

मधारी ने एक नषम में लिखा है-

"कोई चीच रहने वाली नहीं है. हर चीच मिटने वाली इसलाम भी मिटने वाला है. इचरत मुसा चाए. उन्होंने जर्मने मजहर का उपवेश विंचा और चल बसे, उसके बाद التبیعی جالفا جاهگ که کیرے کی جو چادر تمہیں خواب میں دکھائی دی تھی وہ املی آیشوری داور هے آور وے چار آسی جو آسی آیشوری داور هے آور وے چار آسی جو آسی داور کوئوں سے کہیئیے رہے تھے آس داور کا این مقتصہ لے فائو کیا ہے وہ ماگی یعلی زرتھوستری داور ایہودی داوگ اپنے داوگ اپنے مقام کوئے کی کوشش کوتے ہیں اور ایک دوسرے سے دور اپلی اپنی طرف کے کوئے آلگ آلگ کینجہتے ہیں ، اس طرح مذہب کے نام ہو یہ ایک دوسرے کے دشمن بن جاتے طرح سلمی گھینے کے دشمن بن جاتے طرح سلمی گھینے کے دشمن بن جاتے طرح سلمی گھینے گھیں ۔ آس

مشہور احدا شاعر ابوانعلی معاری . 377ع سے 8 10ع تک ) پکا بودھ بلتہ جین تھا ، جرمن ودوان وان دریمر نے آس کی بابت لکھا ہے کہ وہ ماضی طال اور استقبل تینوں زمانے کے بڑے سے بڑے نیک عالموں میں سے تھا اور آس کا زبردست غیر معمولی دماغ آسوقت بہت سے ایسی باتوں دو دایا کے ساملے رقع چکا تھا جو عام طور پر آج کل کی فرض نئی روشنی کی آبج سنتھی جاتی تھیں ، (﴿وَ) معاری یہ نہیں مانتا تھا کہ موسے کسی دون قبروں سے نکل کر کبڑے تھو جائلیکہ ، بچے پیدا کرنے کے کام کو آدمی کے لئے وہ گناہ مانتا تھا ، فنا یعنی بیدا کرنے کے کام کو آدمی کے لئے وہ گناہ مانتا تھا ، فنا یعنی منزل بینی الگ خودس کے مثاری ہے کو وہ آنسانی زئدگی کی اصلی منزل بینی الگ خودس کے مثاری یا بھری الهام کے ذریعے حاصل ہوتا تھا کہ مذہب ایشور سے کسی باعربی آبیم مانتا تھا ، وہ لیمانی المانی آبیم مانتا تھا ، وہ لیمانی

"مایف آبوری کها رهه هیں" عیسائی سب باتک هوئه هیں" یہوئی سب باتک هوئه هیں" یہوئی یک بر بڑھ جا رهے هیں هم مائل والے آدمیوں میں دو هی خاص طرح کے آدمی هیں" آیک سمجهدار بدمعاش اور دوسرے مذهبی بیرتوف (ه) معلی کے ایک نظیر میں لکھا ہے۔۔

Mus-Noeldeke, quoted in the appendix III. "The Iranian Influence on Muslim Literature, pp. 105-133.

5-Nicholson-"A Literary History of the Arabs," p. 316.

•-Ibid. pp. 316.

"वानी के जानवरों को खाकर अपना भोंडापन मत जाहिर करो, जानवरों को मारकर वन्हें अपना खाना मत बनाओ. अंडे मत खाओ...हिंसा यब से बढ़ा गुनाह है...इन सब गुनाहों से मैंने अपने हाथ थो डाले हैं...ओह ! कारा कि बान पकने से पहती मैंने इन बीजों को समम लिया होता......\*

जिस तरह के फिक्करे ऊपर नक्तल किये गये हैं उनसे बान क्रेमर की राय है कि बौद्ध धर्म का प्रसर साक साक जाहिर होता है + मधारी अपने हाथ से रंगा हुआ जन का कपंडा और लकड़ी की खड़ाऊँ पहनता था. निकलसन का ज्याल है कि यह उसने हिन्दुस्तान के जैनों से सीखा होगा. बेंकिन जैनियों से उसके मिलने का मुमकिन होना कम मार्लमं होतां है. 1 क्याल होता है कि मधारी चीर उस जैसे आजाद ज्यात लोगों के रहन सहन और स्यालाव की डसकें बक्त के लोग बुराई ही करते रहे होंगे. लेकिन सचारी की बह हालत नहीं थी. मधारी मधारा शहर का रहने वाला था. सन् 1047 ई० के क़रीब नासिर खुसरी मुझारा गया, बंह लिखता है कि अनुल अला मधारी अधा उसी शहर में रहता है. वह शहर के लोगों में सरदार और माल-दार है. इस राहर के रहने वाले उसे अपना गुरु समम्बद उसकी इंप्लाव करते हैं. वह फुक़ीर की तरह रहता है और जन के कपड़े पहनता है. कोई उससे धन माँगे तो वह कभी किसी को इन्कार नहीं करता...शाम (सीरिया) पच्छिमन्त्रीर इराक्त के विद्वान सब शायरी और साहित्य में उसे अपने से बढ़कर मानते हैं.

सातेह बिन अन्दुत कुदद् स जो सन् 783 ई० में स्ती पर बहाया गया, अनुत अताहिया (829 ई०) जरीर-रून-इक्स, हन्माद अलरह, यूनान-विन-हारून, अती-बिन-स्तीत और बरशोर इन सब पर कम या क्यादा, हिन्दुस्तान के मकहब का असर पढ़ा और इन तोगों ने मुक्तिक विकार बाराकों की बुनिवाद डालीं- अनुत अताहिया ने "پالی کے جانوروں کو کیا کر اپنا بھرتدایی ست طاهر کرو . جانوروں کو مار کر اُنیس اپنا کیانا ست بناؤ . اُنقیہ ست کیاو... هنسا سب سے بڑا گناہ ہے...ان سب گناھیں سے میٹے اپنے ہاتے دھو ڈائے ھیں ۔ اُوھ ا کاش که بال یکنے سیلے میٹے این جھڑوں کو سمجھ لیا ھوتا.....ناہ

جس طرح کے نقرے أوپر نقل كئے گئے ميں أن سے وأن كريس كي رأي في كه برده دهرم كا أثر ماف ماف ظاهر هونا هي. الله معارض الينے هاتم سے رفاع هوا أون كا كهرا اور لكوى كى المُواور ببنتا تها ، نعلس كا خيال هه كه يه أس له هادستان ك بمنيس سے سيمها عولاً . له كن جهنيس سے أس كے ملنه كا ميكن عولًا كم معلوم هرتا هـ ، وي خيال هوتا هـ كه معارى أور أس جیسے آزاد خیال لوگوں کے رهن سين اور خيالات کی اُس کے وقع کے لوگ آبرائی هی کوتے رہے هونگے ، لیکن معارف کی یہ ھائے تہیں تھی ، معاری معارہ شہر کا رہنے والا تھا ، سن 1047ء کے قریب ناصر خسرو معارہ کیا ۔ وہ لکھتا ہے کہ ابوالعليل معاري أندها أسي شهر مين رهتا هے ، وہ شهر كے لوكين میں سردار لور مالدار ہے، اِس شہر کے رہنے والے آسے اپنا گرو سنجه کر اُس کی عزت کرتے میں ، وہ نتیر کی طرح رمتا ہے ور اُون کے کھڑے پہلتا ہے، کوئی اُس سے دون مانکے تو وہ کبھی اسے کو اِنکار فہیں کرتا . شام ( سهریا ) بحیم اور عراق کے عبران سب شاعری اور ساهتیه میں أے اپنے سے برعكر مانك

مالع بن عبدالقدرس جو سن 783ع میں سولی پر وجومایا گیا عبدل عطاحیہ ( 829ع ) جریر ابن حضم' حماد الچرد' یونان بن هارون' علی بن خلیل اور بھار اون سب پر کم ایریدہ هندستان کے مذہب کا اثر پڑا اور ان لوگوں نے مضالف جار دھاراؤں کی بنیاد قالیں ، عبدل عطاحیہ نے

<sup>\*</sup> Islamic Civilization, Vol. II pp. 244-46.

Encyclopaedia of Religion and Ethics vol-II pp. 100-01.

<sup>3-</sup>Siyahat Namah-i-Nasir Khusro (Persia), pp. 26-27.

विकार के जानर हुन जानामां में सन से के जादमी की बेंबाना जाहते ही तो जब बादशाह को हेंबों को कज़ीरों में से कपने पहल कर रहता है. जादमियों में यही सन से जादा पाठ है. " यह समय पुराने कर के एक पेसे उँचे मैंबार की वादगार कीर इसकी गूँज हैं जिसे लोग बहुत दिनों से मूल जुके थे. \* कवि आवान ने अपने जमाने के इब बास खास स्की मुसलमानों का जिक किया है. इन लोगों के अदबी स्थालात से ऐसा मालूम होता है कि वे हैतवादी थे और उन पर मानी के स्थालात का असर था. के किम जाहज़ ने जिस तरह इन लोगों के स्थालात की बसान किया है इससे मालूम होता है कि इन लोगों के स्थालात मानी के इसलों के मुक़ाविले में बीद वर्म से स्थावह मिलते थे.—

"क़लन्दरी यानी परिमाजकता का वह यह मतलव लेते में कि उनमें से कोई दो रात एक घर में न रहे. इनमें जो साग क़लन्दर हैं वह हमेशा दो-दो करके चलते हैं और चार क़ायदों को मानते हैं—फ़क़ीरी, पाकीखगी, सच्चाई और रारीवी."!

खपने उस्त को जाहिर करने के लिये इन स्कियों ने की किस्सा बयान किया वह साफ साफ बीद किस्सा है. वे कहते हैं कि इनमें से दो फकीर एक बार इतने पीटे गये कि करीब करीब बेजान हो गये. बात यह थी कि उन पर कुछ ब्राहिरात की चोरी का राक किया गया था. इन जवाहिरातों को उनकी आँखों के सामने एक छुतरमुर्ग निगल गया था. इन पर राक किया गया. उहोंने उस परिन्दे के साथ द्या करना, जिससे बसे तकलीफ पहुंचाई जाने, यानी उसे करल किया आने, ठीक नहीं सममा और खुद मार खाकर अपनी कान खतरे में डाली.

واقلندسی یعنی پریوراجمانا کا وہ یہ مطلب لیکے تھے که اِن میں سے کوئی دو رأت ایک گھر میں تم رہے اِن میں جو لوگ قللو هیں وہ همیشه دو دو کر کےچلتے هیں اُور چار قاعدوں کو مائتے هیں۔ اُنٹے هیں۔ اُنٹے هیں۔ اُنٹے میں۔ اُنٹے میں

اپنے آسول کو ظاہر کرنے کے لئے اِن صونیوں نے جو قصہ بیان کیا رہ صاف صاف بودھ قصہ ہے ۔ رہے کہتے ھیں کہ اِن میں سے دو فقیر ایک بار آتنے بیٹے گئے کہ قریب قریب بےجان ھوگئے بات یہ تھی کہ اُن پر کچھ جواھرات کی چوری کا شک کیا گیا تھا ۔ اِن جواھراتوں کو اِن کی آنہوں کے اِساملہ ایک شترموغ نکل گیا تھا ۔ اُن پر شک کیا گیا ۔ آنہوں نے اِس پرندے کے ساتھ دفا کونا جس سے آسے تعلیف پہونچائی جارے یعنی آسے قتل کیا جارے اُنہی جان خطرے میں قالی ۔

Goldziher, Transaction of the Ninth Congress of the Orientalists, Vol. II p. 114

<sup>1-</sup>Encyclopaedia of Religion and Ethics, Vol II p. 189.

#### त्रोकैसर तान-युन-शान

وروفيسر تان - ين - شاي

दी इचार बरसों से स्वादा हुए जब बीद वर्म ने भारत में बन्म विवा था और क़रीब हो हजार बरस हुए जब बीद वर्म खंदी वार बीन में पहुंचा था. बीद वर्म के चीन पहुंचने की क्षेक वारीक बता सकना बहुत मुश्किल है. किर मी बीनी दबारीक के बयानात के मुताबिक बीद धर्म पहली बार हान राज घराने के मिनि-ती राजा के राज के जमाने के दखें साल में यानी सन् 67 ई० में चीन पहुँचा. लेकिन दूसरी किवाबों की बिना पर पेसा मालूम होता है कि बीद धर्म बिन राज घराने के भी पहले यानी सन् 246-207 ई० पेस्तर बीन पहुँच चुका था. मिसाल के तौर पर पुराने बीनी प्रंथ लेह-स्तु में मुन्दर्जा जैल बयान बाता है—

"कनम्यू सिमस ने कहा है 'मैंने पिछ्झम के एक संत की वर्षा सुनी है, जिसने बरीर हुकूमत के बन्दोबस्त कायम किया है, जिसने बरीर उपदेशों के लोगों का ऐतबार हासिल किया और बरीर प्रचार के लोगों को सच्चा अमल सिखाया. वह सन्त इतना बड़ा और शानदार था कि लक्ष्यों के सहारे उसकी तारीक नहीं की जा सकती."

अहाँ तक मैं जानता हूँ कनप्रयूचिश्रस बुद्ध के जमाने में ही मौजूद थे और पश्चिम से उनका मतलब बेशक भारत से या. चीन में यह प्रराना रिवाज है कि वहां भारत को "पश्चिमी राज" या "मग्ररिबी बहिरत" और चीन को "बस्ती राज" या "शनदार मुल्क" कहा जाता था. जब कनम्यू सिद्यस ने पश्चिमी राज के एक सन्त की वारीफ़ की तो इसमें कोई शक नहीं कि इससे उनकी मुराद युद्ध, उनकी वालीम और भारती फुलसके से थी. एक दूसरी चीनी किवान "पुरातन विवरमा ( बयानात माजी )" नाम की है. उसमें एक जगह यह जिक्र भारा है कि विन सूबे में चेंग राजा के चौबे साल में पष्टिमी राज के 18 भिछा बौद्ध प्रथ और दुद की मूर्ति लेकर वहाँ पहली बार आये. उन भिक्षु ओं के नेता सिह्-सी-कांग थे. चिन राज के चेंग सम्राट के चौथे साल में मानी सन् 268 ई० पेरतर का यह बाक्रेया है. उस वक्ष बसाम चीन चेंग राजा के कन्त्रे में था. इसी तरह के बहुत से बचानात अलग अलग किताबों में भरे पड़े हैं, इन प्रव का यहां बचान कर सकना नामुमकिन है. सवाज उठवा दे कि अब हुन सुद भारत में अपनी नवहनी वालीम का

یہ هزار برسوں سے زیادہ عولے جب بیدہ دهرم نے مهارت نے جام لیا تھا اور قریب دو عزار برس هوئے جب بودہ دهرم کے چین بہوئتچا تھا ، بودہ دهرم کے چین بہوئتچا تھا ، بودہ دهرم کے چین بہوئتچا تھا ، نید سنکل ہے ، یہر بھی چیائی ریخ کے بھائات کے مطابق بودہ دهرم بہلی بار هان رأج گورائے سن - تی راجا کے راج کے زمائے کے دسویں سال میں یعلی ہے 67 میں چین پہونتچا ، لیکن دوسری کتابوں کی بنا پر یا معلوم ہوتا ہے کہ بودہ دهرم چن راج گورائے کے بھی پہلے یا میں بہونچ چکا تھا ، لی سن 207-246 عیسی پیشتر چین بہونچ چکا تھا ، لی سن 207 ہورائے چیلی کرنتھ لیپنسو میں مددرجہ ذیل لے گارہ ہے۔۔۔

''کفنیسیس نے کہا ہے 'میں نے بچھم کے ایک سات کی رہا سنی ہے' جس نے بغیر حکومت کے بغدوہست قایم کیا ہے' میں نے بغیر میں نے بغیر میں نے بغیر آپدیشوں کے لوگوں کا اعتبار حاصل کیا اور بغیر چار کے لوگوں کو سچا عمل سکھایا ۔ وہ سات اِتلا ہڑا اور نیار تیا کہ لقطوں کے سپارے اُس کی تعریف نہیں کی سکتی ۔''

جہاں تک میں جانا ہوں کنفوردیس بدھ کے زمانے میں ر مهجود ته اور بحیم سے آن کا مطلب بیشک بیارت سے تھا۔ بی میں یه پراثا رواج هے که رهاں بهارت کو "پچهمی راج" وامیری بهشت" اور چین کو "رسطی راج" یا "شاندار کے ان کہا جاتا تھا ، جب کننیوسیس نے پیچھی راج کے ایک امت کی تعریف کی تو اِس میں کوئی شک تبییں که اِس سے ر کی سراد بده اُن کی تعلیم اور بهارتی فلسفه سے تھی . ك دوسرى چينى كتاب "پراتي رورن ( بيانات ماضي )" م كي هـ . أس مين ايك جكه يه ذكر أنا هـ كه چين موبه نی چینگ راجا کے چرتے سال میں پنچینی راہے کے 18 نشو بوده گرفته اور بده کی مروتی لهکر رهان پهلی بار آئه . راج کے ایک اس میں اس کے انگ تھے ۔ جن راج کے لنک سمران کے چوتھ سال میں یعنی سن 368ع بیگار کا واقعه هے . اُس وقت تعلم چهن چينگ رابعا کے قبلي مهن ا. اسی طرح کے بہت سے بیانات الگ انگ کتابوں میں يم يوم هين . أن سب كا يبلن يبان ترسكنا تاسكن هـ . وأل أثبتا هاكه جب يده خود بهارت مين أيني مذهبي تعليم كا

ن سنا هيا ابر علي إلى الرائد كـ 300 سال بيله برده دهر، رتبها 👟 🗨 بيده ندرم کے جس پيونجونے کا بيلي ديتي ، چینی قراریع میں اُس کے پیلے بردہ دھرے کا بن ذكر تبين ماتا . شايد هان راج كبرائه كا من - عي راجا یا چیلی راچا تیا جس نے چینی راجدہائی میں پہلی بصفهت راها كے بوده دهوم كا إستقبال كيا . حالتك أس كے ہ چینے میں بردہ دھرم پہرنے چکا تیا پر بھی کسی چینی ما لے آھے قبول نہیں کیا تھا ۔ اِس لئے سرکاری چینی تواریخ ں اِس سے پہلے بودھ دھوم کا کوئی سرکاری بیان فہیں ملتا ۔ کیئی ایسا بیان یعی کیا گیا هوا تو یعی قدیمی رفتار کو ته ہرنے والے تواریعے کے مصنفیں نے آس نامناسب سمجھا ہوتا اور ي مين تواريخي بيانات سے أسا نكال ديا هوكا . كچم لوگوں كا نا کے که چینی تواریخ کے علاوہ اور جن کتابوں میں بودھ دھرم بیاں آتا ہے وہ اعتبار کے قابل نہیں میں ۔ لیکن مجھے ایسا لم هوتا ها كه چاها هم أن ير پوري طرح سا أعتبار نه كرين؛ ان کنچه حصول تک تو همیں اُن کو سیم ماننا هی پریکا . 🖈 کے دوران زندگی میں بھارتی اور چینی فلسفوں لے کانی نی کولی تھی ، بدھ اور کلفیوسیس دونوں آءای گرو ایک ھی ت مين آيك "پچهم" مين آور دوسوا "پورب" مين اينا چار کورھے تھے ، دولوں سورے اور چندرما کی طرح ساری سائی قوم کو روشن کورھے تھے ۔ یہ بھی سمکن ھے کہ دوئوں کو ك درسوي كا حال معلوم هو . أس زمالي مين سمكن ه نين فلسفين كا أدر بدل هوتا هوا . بده بعى أيف يرجار كي سلے میں اکثر ''وپرپ میں بردھیں کے ملک'' کا ذکر گیا تے تھے ، اِس سے اُن کا مطالب سوائے چین کے کسی دوسرے ک سے نہوں ھوسکتا ؛ لوعن یہ تواریشی کھرے کی چھڑ کے اور ار پوری کهم موئے باریکیس جانا بیکار ہے۔

स्वार कर रहे थे. इस क्या है ही बीच ने बनके बारे में अंबा होगा चीर हान राज बराने के 300 सात पहले बीट वर्म बीम में बहुंच चुका था, क्षेकिन चीनी तवादीस दान साम पराने के बक्त से ही बौद्ध वर्ग के बीन पहुँचने का ब्रह्मन देवी है. बीजी दबारीस में बसके पहले बीद क्षम का कहीं जिक्र नहीं मिलता. शायद हान राज घराने का बिन-ति राजा ही पहला चीनी राजा था जिसने चीनी राजवानी में पहली बार बहै सियत राजा के बौद धर्म का इसकाल किया. हालांकि उसके पहले चीन में बौद्ध धर्म क्षीय पुका था किर भी किसी चीनी राजा ने उसे कुबूल नहीं किया था, इसिनये सरकारी चीनी 'तवारीख में इस से पहेंते बौद वर्म का कोई सरकारी बयान नहीं मिलता. अगर कोई ऐसा बयान भी किया गया होगा तो भी क़दीनी रफतार का म क्रोइने बाले ववारीख के मुसन्निकों ने उसे नामुनासिब बसमा होगा भीर बाद में तबारीखी बयानात से उसे मिकास दिया होगा. कब लोगों का कहना है कि चीनी तवारीस के अलावा और जिन कितावों में बीद धर्म का बचान भाता है वह ऐतवार के क़ाबिल नहीं हैं. लेकिन मुफे मेसा मालूम होता है कि चाहे हम उन पर पूरी तरह से पेतबार न करें, लेकिन कुछ हिस्सों तक तो इमें उनको सच आनना ही पढ़ेगा. बुद्ध के दौराने जिन्दगी में भारती और बीनी फलसकों ने काकी तरककी कर ली थी. बुद्ध और क्रवस्यूसिक्स दोनों काता गुरु एक ही बक्त में एक "पश्चिम" में और दूसरा "पूरव" में अपना प्रचार कर रहे के. दोनों सूरज और चन्द्रमां की तरह सारी इन्सानी क्रीम को रौशन कर रहे थे. यह भी ग्रमिकन है कि दोनों को एक इसदे का दाल मालुम हो. उस जमाने में सुमकिन है दोनों कतसकों का अदल बदल होता होगा. बुद्ध भी अपने प्रचार के सितासित में धनसर "पूरव में बौद्धों के मुल्क" का किया करते थे. इससे धनका मतलब सिवास चीन के किसी दूसरे मुल्क से नहीं हो सकता; लेकिन यह तवारी ली सोज की भीज है भीर वरीर पूरी सोज हुए वारीकियों में जाना वेकार है.

वहाँ पर यह बताना नामुनासिव न होगा कि राहनराह हाल-मिन-ति वे बीद धर्म का अपने राज में कैसा इरतक-बात किया. बसकी भी एक अजीव कहानी है. "हान-का-बेक-बुकान" (हान राज घराने के वक्षत बीद धर्म की कुकारिक ) नामक कियाब में लिखा है कि राहमराह हान-किन-दि ने अपनी हुक्सज के तीसरे साल में बानी 60 है। में राह को एक बार वह स्वाब देखा कि 16 कुट कैंबा एक सुनाहका हैन, जिसके कर में रोशनी अमकती है, राज सहस्र है कनर कर सहा है। राजा ने इस क्राजीब स्वाब का क्षे नको जात है। बार क्ष्मांकर कार्त रक्षका अस्त्रक इता. सक्ष्म रक्षांकर के रूप बा-वि का. स्थान शहनशाह से करा कि इस्र कार्या की गर वाबीर है कि तिएन-यु वानी बारत में बुद का अमार प्रचा है. सम्राट ने कीरन सिपहसालार सार-विव कार दीवान बाल-सान को एक दस्ते के साथ, बीद धर्म का इस्ताल्याल करने के लिये त्येन-पु यानी भारत सेवा. स्वार्ड-विन अपने वस्ते के साथ सन 65 ई० में बोतान प्राप्ता. वहाँ क्रिस्मत से अनानक उनकी कारयप मार्तम और ग्रोमरख से अलाकात हो गई. यह दोनों भारती संत बीद मंथों और बुद की मृतियाँ लेकर "पूर्व देश" की तरफ जा रहे वे. त्याई-विन मय अपने दस्ते के वन लोगों के वाश बायस चीन सीट जाया. यह सोग चीनी राजधानी हो-बङ्ग शहर में शहनशाह मिन-ति के दसवें साल में पहुँचे. वूँ कि बीद संब और बुद की मूर्तियाँ सकेद रंग के वोड़ों पर ताबी हुई भी इसिवाये शहनशाह ने उनके लिये एक बास मन्दिर बनवाकर उसका नाम 'पे-मा-स्जु'' यानी सफेद कोड़ों का मन्दिर रक्खा. इन बीद्ध प्रंथों और मूर्तियों हो उसी मन्दिर में रक्का गया. चीन का सब से पहला बौद्ध मन्दिर यही है और अब भी दस्त चीन में होतान नामी सुबे के लो-यंग शहर के बाहर यह मन्दिर अजीव गानो शौकत के साथ खड़ा है. इससे आसानी से अन्दाजा किया जा सकता है कि शाही देख भाल में बीद धर्म का इस बक्त चीन में कितना बढ़ा इस्तकवाल हुआ होगा ? बीनी जनता में हान-मिन-ति शहनशाह के बीद धर्म के स्तिकवाल की यह कहानी दो हजार साल से मं हर है. ास कहानी से यह नतीजा निकल सकता है कि हान-मिन-ति हे राज के जमाने के बहुत पहले से भारती और चीनी कलसकों का आपसी लेन देन होता रहा होगा और बौद वम का चीनी जनता में प्रचार होगा. अगर यह नहीं था तो राष्ट्रनशाह कैसे अचानक ऐसा स्वाब देख सकता था ? बजीर कैसे उसे मुद्ध का नाम बता सकता था १ शहनशाह कैसे अपने सिपहसालार और दीवान को बौद धर्म की लोज करने के लिये भेज सकता था ? और यह कैसे समिकन था कि मार्तग और गोभरख रास्ते में उनको चीन आते हुए मिल जाते ? यह सारे बजहात इतने साफ हैं कि इनके लिये किसी व्यक्तिस की जरूरत नहीं.

काश्यप मार्तन थीर गोमरख सकेद घोड़ों के मन्दिर में रहकर बीद्ध धर्म का मचार करते रहे. साम ही साथ उन्होंने वर्ष बीद्ध पंथों का चीनी खबान में तकु मा किया. उनके बहु मा किये हुए पंथों में सब में साझ "42 अध्यायों (बाबों) आका मर्म पंच है. यह धर्म मन्य चीनी स्वभाव के विस्तुत कुनाविक है और तब से केवर अब तक चीनी जनक केवल कुनाविक है और तब से केवर अब तक चीनी

و الديدان في بات سائر أن ف إلى المكتب ويها. عِينَ يهارت مين يده كا أرتار هوا هـ سموات له قوراً ينهد مالر تسائي م بن اور ديران والك - تسون كو أيك دستم کے ساتھ بودھ دھرم کا اِستقبال کرنے کے لئے تعین - چو یعلی بهارت بهنجا . تسائى - ين أين دست كي شانه سن 65ع مين ختن بهونجا . وهال قست سه اچانک أن كى كشيب ماتنگ اور کونهرن سے مقات هرگئي . يه دونوں بهارتي سات بودة گرنگھوں آور بدھ کی سورتیاں لیکر ''پورٹی دیھی'' کی طرف جارہ تھے ، تسائی ، بن مئہ اپنے دستے کے ان لوگوں کے ساتھ وأيس جهن لوك آيا . يه لوك چيني راجدهاني لو- ينگ ھہر میں شہنشاہ من - تی کے رأب کے دسویں سال مھں میزادی ، چولته بوده گولته اور بده کی مورتیاں سفید رنگ کے گوروں یار لدی هوئی تهیں اِس لئے شہنشاہ نے اُن کے نئے ایک خاص مادر بنواكر أس كا قام " ي - ما - سبتو" بعلى سنيد گیرووں کا مندر رکھا ۔ آن بہدھ گرنتھیں اور مورتیوں کو اُسی مندر سیں رکیا گیا ، جین کا سب سے بہلا ہودہ مندر ہے ، ہے آور آب بھی وسط چین میں ہوتان قامی صوبے کے لو - ینگ شہر کے باہر یہ مدر عجیب شان و شوکت کے ساتھ کوڑا ہے . اِس سے أساتي سے اندازہ كيا جاسكتا هے كه شاهي ديكم بهال مين بوده دهرم كا أس وقت جهن مين كتنا برأ إستتبال هوا هوا ﴾ چيني جلتا ميں هان - من - تي شهنشاه کے بوده دهرم کے استقبال کی یہ کہائی دو ہزار سال سے مشہور ہے . اِس کہانی سے یہ نتیجہ نکل سکتا ہے کہ هان - من - تی کے رأب کے ومائے کے بہت پہلے سے بھارتی اور چینی فلسفوں کا آیسی لین دين هوتا رها هوكا أور بوده دهرم كا چيني جنكا مين يرچار هوكا. اگر یه نههن تها تو شینهاه کیسے اچانک ایسا خواب دیکھ سكتا تها ؟ وزير كيسم أسم بده كا نام بتا سكتا تها ؟ شهنشاه كيسم النے سپمسالار اور دیوان دو بودھ دھرم کی کھوبے کرنے کے لئے بعدم سكتا تها ؟ أور يه كيسم مدى تها كه ماتنگ أور گرمهرن رأستم میں أن دو چین آتے هوئے مل جاتے ؟ یه سارے وجوهات إتني اصاف عیں که اور کے اللہ کسی دلیل کی ضرورت شہوں ۔

کاشیپ ماتنگ اور گوبھری سفید گھوڑوں کے مقدر میں رھکو بودھ دھرم کا پرچار کرتے رہے ۔ ساتھ ھی ساتھ آنھوں نے کئی پودھ گونتھوں کا چینی زبان میں ترجمت کیا ۔ اُن کے ترجمت کئے ہوئے گرفتھوں میں سب میں خاص 421 ادھیاؤں ( بابوں ) والا دھرم گرفتھ ہے ۔ " یہ دھرم گرفتھ جینی سوبھاؤ کے بالکل مطابق ہے اُور تب سے لیکو اُب تک سوبھاؤ کے بالکل مطابق ہے اُور تب سے لیکو اُب تک چینی جنتا برابر اُس کا مطالعہ کرتی ہے ۔ لیکو آب تک چینی جنتا برابر اُس کا مطالعہ کرتی ہے ۔ لیکو آب

ريب يا كريس ليدر إله بالت كلي برده كتابين ك خيال اس مول فاقل که کله مین اس خیال جو مارویایاک تعربه المحجولي جلتا كے مطابق تھ. پرالے جيني دھرم كنتين كي ساته إس كرته لا يورا معل تها . يراك چيني كرته هيس المالة بنا كي يهاي النهار يستكين الرو "الو - تجوا الديه "22 الحدول والا كرنته" أيك هي طرح كي تعاييس سے بورے هيں اگر اِس بودھ كرتھ ميں سے "بدھ نے كہا" "ھے يهموونه جيس الناه تكال دنه جائين تو يوهاء واله مشكل سه آس بوده دعوم کا کوئی گرفته سنجهیںگ . سنکلی کے علوہ ماننگ اور گوبھرن کے اور دوسوے قرجمے بھی کئے تھے کہ جلکا اُس وَلَات کوئی یاء تہیں چلکا اُس کے دسوں سال بعد دارتهیا کے شہزادے انشکا شہنشاد ھان- ھوان- تی ( 148ع ) كر رقت ميں چين أئه . أنشكاؤ كے بعد هي شك مان كے مشهور بهكو لوكركش بهى چين پهونتھے ، إن دونرن ہودہ سنتیں نے جو بودہ دھرم کے اچھے جافکار تھے اور بہت ہتے عالم تھے' چھی میں بودھ دھرم کا پرچار کیا أور بودھ گرنتھوں کا چینی زبان میں ترجمه کرنے کا کم شروع کیا ، انشکاؤ نے ''لہنگ'' میں 20 سال سے زیادہ بودھ دھرم کی کتابوں کا چینی زبان میں ترجمہ کیا . اِن انسول گرنتیوں کے پڑھنے کے بعد چینیس نے بودھ ادب کی گہرائی اور دھرم کی اصلیت کو تھیک ثبیک سمجهنا شروع کیا . آس کے بعد بھارت سے کئی بردھ سنت اور عالم چین آئے اور آنیوں نے چین میں بودہ دھرم کا پرچار کیا . آن میں زیادہ مشہور یہ هیں۔۔بده بهدر دهرم رکفی، کیار چیو، بودهی دهرم سوبها در وجربودهی اور اموگه . ان بودھ سنتیں اور عالموں کے کاموں اور آن کی کامیابی کا اِس جهرانه سے مقدون میں دکھا سکنا قامنکن ف

کئی ہوتے ہوں یہ یہ راستے کی سیکورں مصیبتیں آٹھا کو بیارت سے چین پہولیج رہے تھے۔ آنہیں دیکھ دیکھ کو چینی بہارت جائے تی زبردست خواہمل پیدا ہوئی ، سنو کی نمام مصیبتوں کا سامنا کرنے کی آبی میں ہمنت آئی ، ایسے چیلی بیکھو جو بیارت پہونچے آبی میں سب میں خاص سی راج گررائے کے رقع کا چینی بوجھ سیاج ناهیاں ہے ، ناهیاں 5 ریں صدی عیسوی کے شروع میں وسط ایکھا ہوتے ہوئے بیارت پہونچا ، دسیوں رجواوی میں کیا کو وہ بودھ گرنٹیوں کا خواند لیکر چینی رابس پیھانچا ۔ آ ویں صدی کے اتانک راج گرائے کے رابس پیھانچا ۔ آ ویں صدی کے اتانک راج گرائے کے رابس بیھانچا ۔ آ ویں صدی کے اتانک راج گرائے کے رابس بیھانچا ۔ آ ویں صدی کے اتانک راج گرائے کے رابس بیھانچا ۔ آ ویں صدی کے اتانک راج گرائے کے رابس بیھانچا ہوئے دیارت میں سائک کے ایک راب گرائے کے رابس بیھانچا ہوئے دیارت میں کیا کرائے کے ایک دیسانگ کیا گرائے کے ایک دیسانگ کیا گرائے کی ایک دیسانگ کے آلا

कावा सनासिक संगा कि यह 443 बाध्याओं वासा पर्य संब" एक तरह का तिचां है. यह समें प्रथ किसी एक किताय का वाज मा नहीं है बरिक कई बौद कितावों के क्याल उसमें शामिल किये गये हैं: ऐसे क्याल जो मनी-वैश्वानिक नजरिये से चीनी जनता के मुताबिक थे. पुराने चीनी यस प्रची के साथ इस प्रच का पूरा मेल था. पुराने चीबी शन्य जैसे "साता पिता की भक्ति", "चार पुस्तकें" भीर 'बाको-रज्ञ' भीर यह ''42 भश्यायों वाला प्रथ'' पक ही तरह की वासीमों से भरे हैं. बगर इस बीद मंथ में से "बुद्ध ने कहा," "हे भिक्खुओ" जैसे अल्फाज निकाल दिये जायें तो पदने बाले मुश्किल से उसे बौद्ध धर्म का े कोई अंथ समर्मेंगे. संकलन के जलावा मातंग और गोभरण े ने और इसरे वर्ज में भी किये थे कि जिनका इस बक्त कोई पता नहीं बलता. इसके दक्षियों साल बाद पार्थिया के शहकादे इन्करााची शहिनशाह हान-हचान-ति (148 ई०) के बक्त में चीन आये. इन्कशाओं के बाद ही शक हिन्द के महाहर मिक्खु लोकरक्ष भी चीन पहुँचे, इन दोनों बीड सम्तों ने, जो बीद धर्म के अच्छे जानकार ये और बहुत बढ़े आतिम थे, चीन में बौद्ध धर्म का प्रचार किया और बौद्ध अयों का बीनी जवान में तर्जुमा करने का काम शुरू किया. अन्त्रशास्त्रों वे "लो-यंग" में 20 साल से क्यादा बीद धर्म की किताबों का चीनी जवान में तर्जु मा किया. इन अनमोल अंथों के पढ़ने के बाद चीनियों ने बौद्ध छादव की गहराई भीर धर्म की असलियत को ठीक ठीक समझना शुरू किया. उसके बाद भारत से कई बीद सन्त और बालिम चीन ्याचे और उन्होंने चीन में बौद्ध धर्म का प्रचार किया. डनमें प्यादा मराहूर यह हैं—बुद्ध भद्र, धर्म रख्न, कुमार जीव, बोधी धर्म, सुभाकर, वजबोधी और अमोघ इन बौद्ध सन्तों और आलियों के कामों और उनकी कामयाबी का इस छोटे से मजमून में दिखला सकना नामुमकिन है.

कई बड़े बौद्ध भिक्खु रास्ते की सैकड़ों मुसीवतें उठाकर मास्य से चीन पहुँच रहे थे. उन्हें देख देखकर चीनी मिक्खुकों में बौद्ध धर्म की जनमभूमि भारत जाने की खबदेख स्वाहिश पैदा हुई. सफर की तमाम मुसीवतों का सामना करने की उनमें हिन्मत आई. ऐसे चीनी मिक्खु को आरत पहुँचे उनमें सबमें खास खिन राज घराने के काल का चीनी बौद्ध सैवाह फाहियान है. फाहियान 5वीं सबी के छुक में बस्त ऐशिया होते हुए भारत पहुँचा. श्रीवां रजवाड़ों में 15 साल बिताकर वह बौद्ध अंथों का खुजाता खेकर चीन वापस पहुँचा. 7वीं सदी के 'तांग' राजधारने के बक्क में एक दूसरा चीनी मिक्खु है न-स्वांग बक्त पश्चिम होते हुए आरत पहुँचा. हो न-स्वांग ने 17 वर्ष स्वीवाह में सैक्क्ट प्रांत पहुँचा. हो न-स्वांग ने 17 वर्ष सीना होते हुए आरत पहुँचा हो न-स्वांग के बक्क में एक दूसरा चीनी मिक्सु है न-स्वांग वहां सीनाइ में सैक्ट्र राजधानियों का सकर किया और

بي رابس بيرنجا . مرايي سانگ کے عو اي على للى چىلى بوكون كوانك للك يو كو بالدري راسع سے بھارت کے لئے روات ہوا اور بوجہ عموم قريب 400 كتابيس ليكر چين رأيس أيا . إن جء چيني مجرون کے قد مرف بردھ دھرم کے گرفتیوں کا بھی سلسکرت سے بیتی امیں ترجمہ کیا بلکہ اپنے سفر کے بارے میں السول نابيس لعيس ، فاهيان كي كتاب "تو- كواؤ- چي" يعني "لبوده لكين كا بيان "هونهن- تسانگ كي كتاب "سي- يو- چي" يعلي دکھنے سمندر کے پیدام" یہ تین دہایت مشہور کتابیں عیں ، وده دعرم بهارتی فلسفه أور بهارتهی جدتا کا اِن مدن کافی يارر ملكا في كتابيل له صرف بودهه ساهتيه كي رتن هيل بلكه ی سے بہارت کی پرائی تہذیب اور بہارت کی پرائی تاریخ کی نى جانكارى ملتى هـ. إس لئه إن كا دنيا كى كئى زانون مون وبجمت هوا کے اور دنیا کے نامور عالموں لے ان کی کیلے دل سے اويف كى هـ .

، دونس ملعیں کے مشہور سنتیں کے اُن سفروں سے تم صرف ھارتی دھوم گرہنے ھی چین پہولنچے بلکه بھارتی تہذیب بھی چینی یېونچی . بوده درشن کاجو چینی ترجمه هوا هے اُس ی کوئی برابری نہیں موسکتی . هن راج گورانے سے یہ آن ا کھرالے تک یعلی 1000 ہرس میں 190 ترجمه کاروں کے اُم اُتے میں جنہوں نے 1440 کتابوں کا جن کی 5566 وأدين هين ترجمه كها أوريه ترجمه أبهى ذاسه برقرأر هين . به تو هوئی مانے جانے نرجمه کاروں کی بات ، بہت سے ترجمه کار یسے عربے میں جن کا کوئی نام تک نہیں جانتا اور جن کے وجمع کلے هوئے گرنتین کی تعداد تک نہیں معلوم ، ایسے اوجمه کاروں کی اور اُن کے ترجمه کئے هوئے گرنهتوں کی تعداد المتعی بے شمار ہوگی ، سرکاری ترجمه کا کام بڑے فاعدے کے بانه كها جاما تها . خود شهنشاه إن نرجمول كي جانب يتال ارج تھے ، دوجمعکار بہت عالم أور بودھ أدب ميں تجوربعكار هوتے نے یه لوگ آیک ساتھ بیٹھکر ترجمه کا کام کرتے تھے اور ایک عوسور سے صلح أور مشورہ بھی کرتے جاتے تھے . هر ایک لفظا ھڑ آیک آواز آور ھو ایک معنی کو کاغل پو لتھنے کے پہلے کامی بعث کی جاتی تھی . سوئی' تانگ اور سونگ رام گھرانے کے وقت مين ترجمه كا أيك خاص محكمة هي قايم تها--جس کے لو الگ الگ حصے تھے ، کچھ لوگ جملوں کا توجمہ فرتے تهير كجه تلفظ كي جائيم يونال كرتے تھے أور كتھ معنوں يو بحصف كرت تهي كجه زبان كر بهتر بنات تهي كجه فلطيان درست كرت تھے اور کتھے لوگ کئے ہوڑے ترجمہ کو دوہراتے تھے پہنیاں تک ترجمه کا سروکار ہے ترجمه کاروں کے لئے بوت قاعدم بلے ہونے تھے ، تالک راج گزالے کے وقت میں قریقید

तारीक की है. दोनों मुल्कों के मशहूर संतों के इन सक्रों से न सिर्फ भारतीय धर्म शंथ ही चीन पहुँचे बल्कि भारती तहजीब भी चीन पहुंची. बौद्ध दर्शन का जो चीनी तर्जु मा हुआ है इसकी कोई बराबरी नहीं हो सकती. हान राजघराने से यु-बान राजवराने तक यानी 1000 बरस में 190 तर्ज मा-कारों के नाम आते हैं जिन्होंने 1440 किताबों का, जिनकी 5586 जिल्हें हैं, तर्जु मा किया और यह तर्जु में भभी तक बरकरार हैं. यह तो हुई माने जाने तर्जु माकारों की बात. बहुत से तर्जुं माकार ऐसे हुए हैं जिनका (कोई नाम तक नहीं जानता और जिनके तजु में किये हुए मंथों की तादाद तक नहीं मालूम, ऐसे तर्जु माकारों की और उनके तर्जु मा किये हुए मंथों की तादाद वाकई बेग्रुमार होगी. सरकारी तज्भे का काम बढ़े कायदें के साथ किया जाता था. खुद राहनशाह इन तर्जुं मों की जाँच पढ़ताल करते थे. वर्ज माकार बहुत आलिम और बौद्ध अदब में वजरुबेकार हाते थे, यह स्रोग एक साथ बैठकर वर्जु में का काम करते जाते के हर एक संवक्त, हर एक बाबाज, भीर हर एक जाते थे और एक दूसरे से सलाह और मराविरा भी करते मानी को काराज पर लिखने के पहले काफी बहस की जाती थी. सुर्वनांग और सुंग राजधराने के बक्त में तज़ में का रक साम महकमा ही कायम था-जिसके नी अलग अलग हिस्से बे. कह लोग जुमलों का तर्जुमा करते थे, कह रलप्युचा की जांच पक्ताल करते ये और कुछ मानों पर वहस करते थे, कुछ जनान को बेहतर बनाते थे, कुछ रास्तियां इंस्त करते से और क्रम लोग किये हुए तकु में को दोहराते ये. जहाँ अब सुब में का सरीकार है तुल माकारों के लिये को बाली को हुए के जान राजधरात के बहुए में वर्ज मे

ने वाहर के चीर कुछ कुछ करते हैं। करते में 6 कर्मन वे. इस जमान में भाजकत है से सहते और जल्दवाची में किने हुए तुन्ने भी भे बद्दे कितने बेहतर तरीके से तुन् भा होता था. चीनी बीक शिक्सुओं ने तर्जु मा के वालावा अनियादी प्रथी की भी वसनीफ की, बन्होंने बौद अदब को एक सिलसिले में किया, बौद धर्म के बादबी उसलों का श्वतांका करके उन पर तकाचीनी की और इस तरह बीद यम को तरकती की बाखिरी हद तक पहुँचाया. सैकड़ो सालों में तैयार किये हुए इन तमाम बौद्ध प्रन्थों को एक जमह जमा किया गया और उन्हें "सान-स्सांग" यानी "त्रिपिटक" में तकसीम किया गया. यह त्रिपिटक—(1) सूत्र विपिटक, (2) विनय पिटक और (8) अभिधर्म पिटक कहलाते हैं. इन तीनों को मिलाकर ''ता-सांग-चिंग" मानी "बीद्ध धर्म का बढ़ा प्रत्य" कहा जाता है. इन प्रंथों के अलाका चीनियों के जरिये लिखे हुए बौद्ध धर्म की कितावों की तादाद करीब करीब 10 हजार सममी जाती है. प्राने अशरह के रीव क्रीब तमाम खास बौद्ध प्रन्थों का चीनी जवान में उर्जु मा किया गया. जो प्रन्थ आज भारत में लापता हों गये हैं, वे बीन में चीनी जबान के तजु में की शकल में भाज भी बरकरार हैं. जगर कोई शख्स बीध धर्म का पूरा मुताला करना बाहे तो उसके लिये इन चीनी प्रन्थों का मदना बहुत जरूरी है. यह कोई बढ़वोल नहीं है, बल्कि एक असलियत है. बाज चीनी ही सिर्फ एक ऐसी जवान है जिसके जरिये बौद्ध धर्म का पूरा पूरा मुताला किया जा सकता है.

हान राजघराने के जमाने में पहले पहल बौद्ध धर्म बाम्ये से चीन पहुँचा. उसके बाद से मुख्तलिफ परानों के चीनी शहनशाह भीद धर्म में शख्सी दिलयस्पी लेते रहे, उसके फैलाव को तरककी देते और हिफाजत करते रहे. जगह जगह मन्दिर बनवाए गये. पागोदा खड़े किये गये. इबादत के सरखंजाम किये गर्मे. भिक्ख और भिक्खनियों के रहने का बन्दोबस्त किया. गया. शाही खर्च से बने हुए सारे गुल्क में बड़े बड़े मन्दिर, कैंचे केंचे पागोदा और शानदार विहार अब तक खड़े हैं. बीनी नजम की एक सतर है—ऊँची और सबसरत पहाडी बांटियाँ बौद्धों ने कब्जे में कर रक्खी हैं, इसका मतलब यह है कि चीम में मशहूर और खूबसूरत पहादियों पर बीद अन्दर, पागोदा और भिक्खें संघ छाए पहे हैं. मुख्यलिक वमानों में मुख्यलिक शहनशाहीं की मदद के बिना बीज धर्म को इसनी कामयाबी, कैसे मिल सकती बी ? किर भी कुछ संग दिसारा के चीनी राहनशाह हुए हैं जिन्होंने बीट धर्म का मक्त्रथ नहीं समका और उसे उक्तसान वहेंबाने की कोशिश की. मसलन श्रमाकी चीन में 'बे' ار جلماؤی سور کا حیل ترجیوں کے بدل کانی بير طريق ك ترجيد فيا كا. جيني برجه عامل ل ترجمه کے علاقہ بالمادی گردتیں کی بھی تصلیف کی . آنہوں نے بردھ ادفیہ کو اُنگ سلسہ میں دیا ، بردھ دھرم کے ادبی المواول كا معااله كو كه أن يرفكته چيني كين اور ايس طرح بده دهرم کو ترکی کی آخری حد تک پیرنجایا . ۱۹۲۰رس سالیں میں تیار کٹے ہوئے اِن تمام بودھ گرنتوں کو ایک جگہہ جمع كها كيا أور أفهون السابي- السادكي» يعنى "الربيلك" مهن نقسهم کیا گیا . یه تربیقک-(1) سوتررقک (2) ریٹے یلک اور (8) ایسدهرم باتک کیاتے هیں ، اِن تینوں کو الا کر انا- تسانگ- چنگ" يعني " بوده دهرم کا بر اکرنته" کها جاتا ھے . اُن گرفتھوں کے علوہ چینیوں کے ذریعے لکھ ھوٹے ہوں دھرم کے کتابیں کی تعداد قریب قریب 10 هزار سنجھی جانی ہے . پرائے بھارت کے قریب قریب تمام خاص ہودھ گرنٹھوں کا چینی زبان مهن توجمه کیا گیا ، جو گرنته أج بهارت میں البته هو گئے میں وسے چین میں چینی زبان کے ترجمہ کی شکل میں آنے بھی ہرقرار میں ، اگر کوئی شخص بردھ دھرم کا پیرا سطالمہ كُرِّنَا چَاهَ تُو أُس كَ لَيْهُ إِن چِينَى كُونَتِهِنَ كَا يَرَّعُنَا بِهِتَ فَرَرِي هِ ، بِهَ كُونَى يَرِّبُولَ فَهِينِ هِ الْكَهُ أَيْكَ أَصَلِيتَ هِ . آبے چینی هی صرف ایک ایسی زبان هے جس کے ذریعہ بودھ دهرم کا يورا مطالعه کيا جا سکتا هـ .

هاں راج گهرائے کے زمالے میں پہلے پہل بودہ دھرم ظابطه سے چینی پہونچا . اِس کے بعد سے مشالف کورانوں کے چینی شہنشاہ ہودہ دھرم میں شخصی دلچسپی لیٹے رہے' اُس کے پیٹائی کو ترقی دیتے اور اُس کی حفاظت کرتے رہے ، جکہہ جگہہ مند بنوائد کئر . یاکودا کور م کئر کئر ، عبادت کے سوانحام کئر گئے ، بھکھوں غیر بھکھوٹیوں کے رہنے کا بندوبست کیا گیا ، شاھی خرر سے بلے فوٹے سارے ملک میں بڑے بڑے مدر اُرنسجے ارتجے باکردا اور شاندار وہار آب تک کورے میں ، چینی نظم کی ایک سطر هدار آونجی اور خوبصورت بهاری چوالیال بردھوں لے قبقتے میں کر رکھی ھیں اس کا مطاب یہ ہے که چین میں مھہور اور خوبصورت پہاڑیوں پر بودھ مندر' یاگردا أور بهكهو سناكي جهائد يور عيس مختلف زمانس موس مختلف شینشاهون کی مدن کے بنا بودھ دعوم کو اِتنی کامیابی کیسے مل سنتی کی او بھی کھی تلک دماغ کے چینی شیلھاہ دول هون جايون لي بوده دهرم كا معالب اليس سنجها أور أعم نتصلي پيونهاي كي وتهمس كي ، مثلًا شمالي جين مين "ويم

ر کار کا کسیانی دارد بهران با سی 400 کارور بیرور بیرور والله الله به کو بوده ماهوران کو دانفاری وادگی بسر کران کے المجمور كيا . دوسرت شمالي چني كا اجوا راج گوالد ك الملقاة وو، تي نے سن 574ع ميں بودھ وهاروں کو خلا کرا بينه دهرم كو فير قانولى قرأر ديا . أس كے بعد سن 848م میں قالک رائے گھرالے کے شہاشاہ ووہ تسلک لے بودھ مندووں أيو مهرتيس كو ترز پهرز دالا . چيني مين عام طور پر به الايني ورهٔ سراتی کا برده دهرم پر تا جائز گناه ا کیکر یاد، کیا جاتا أس سه برده دهرم كو كرئي بهاري نقصان نهيں پهونچا ، اِس کے بریکافت چیلی بردھ دھرم کی تاریخ میں دو معرکے کے والعات عولي عين . ايك يه كه چين مين ايك مرتبه ايك "سرات بهاو" اور دوسوی مرتبه ایک "بهایو سرات" هوای هیں . دکون راج گهرانے کے شہنشاہ لیانگ، ورد تی نے تین مرتبه ائے شاهی تاہے کو چھوڑ کو ''نونگ تسائی'' مندر میں بھکھوڑں كا ليلس فيها إس لله أله سيرات يهجو كها جاتا هي أس كي بادار كے كهنگ در فالعناك شهر ميں أب تك ملتے هيں۔ ومن آلے گورائے کی بنیان قالنے والا قائی۔ نسو وهوانگ خیاو ا محدر کا ایک بهمهر تها . أس فے طالم منکول راجا کو چین سے کیدیو کر سارے چین کے شہنشاہ کا رتبہ حاصل کیا اور اِس طرح چینی تواریع میں ایک سنبرا منحه جور دیا ، اِس للے قائی تسو 'قبیکیو شیلشاد'' کیلاتا ہے ، اِس کے علوہ اُور دوسرے عالم اور پاک بہمو ہوئے میں جنہوں نے شہنشاہ کے مذہبی کاموں مھل مدد دی ہے اور کامیائی کے ساتھ سماج میں انوشاسن قایم رکھا ه. ایسے بهاول کی تعداد اِنلی زیادہ ها یه أن کی شخصی چرچا كر سكة يهال قاملكن في .

قسن راج گہرائے کے شروع زمانے کے تمام شہنشاهیں کا بودہ دھرم پر اعتبار تھا ، دیش طاقتر تھا اور چاروں طرف اطمینان تھا ، اِس زمانے میں بودہ دھرم کی برابر ترفی ھوتی گئی ساتھ مانسچو حکومت کے آخر زمانے میں چینی راج کے ساتھ بودہ دھرم بھی تنزلی کے غار میں گر گیا ، اِسی وقت پررہی تہذیب نے دور پررب میں طرفائی قدم بڑھایا اُور تقیعچے کی شکل میں چینی دماغوں میں عجیب و غریب کیفیت بھیا ھوتی شروع ہوئی ، خاص مہذب لوگوں نے اُمید کی که شورعات ہوتی ، پرائے تھنگ کی تعلیمی سنستھاوں کو حتم کرکے بورپی تمونی کے نیئے سکول تایم کئے گئے ، عالموں کو سائلسی تمونی کے نیئے سکول تایم کئے گئے ، عالموں کو سائلسی کیاں کے نیئے سکول تایم کئے گئے ، عالموں کو سائلسی اُس کی مھینوں اُور کیاں نئے پڑھ لکھے لوگوں کو شہنچم کی مھینوں اُور کیا نئے پڑھ لکھے لوگوں کو شہنچم کی مھینوں اُور کیا تھونکوں نے چکلچوندھ کردیا اُور وہے منہ کھول کر آس کی

श्रामध्य । अपने क्षेत्र के स्ट्री क 'ब्' राजकरात के शहनशाह 'दु-वि' ने अन् 574 ई॰ वें बीट बिसार की जलनकर, बीट बम को तैर क्रान्नी करार विया, क्याके कार पान् 845 ई० में तांग राजपराने के शहनशाह कुरसुंग ने बीद मन्त्रियें जीर मूर्तियों को तोड़ कोड़ काला, जीन में जाम तीर पर यह 'तीन 'तु' सम्राटों का बीब बंग पर "नाजायच गुनाह" कह कर बाद किया जाता है. बेबिन इस तरह की शाही बाकत सिर्फ चन्द रोजा रही और उससे बीद धर्म को कोई मारी तकसान नहीं पहुँचा, प्रसके बरिख्लाफ चीनी बौद्ध धर्म की तारी अ में हो मारके के बाक्रेकात हुए हैं. एक यह कि चीन में एक मर्तवा एक "स् ।द मिनसु" और दूसरी मर्तवा एक "भिक्क सम्राठ" हुए हैं. दक्किन राजगराने के शहनशाह लियांप-ब-ति ने तीन मर्तना अपने शाही ताज को छोड़कर "तुंग-वसाई" मन्दिर में मिक्खुओं का विवास पहना. इसिबये बसे सम्राट भिक्स कहा जाता है. वसकी यादगार के खंडहर नानकिंग शहरें में अब तक मिलते हैं. 'मिन' राजपराने की जुनियाद डालने वाला ताई-त्यु 'द्वां-चिकाको मन्दिर का एक भिक्स था. उसने जालिम मंगोल राजा को थीन से सदेह कर सारे थीन के राहनशाह का दतवा हासित किया और इस तरह चीनी तवारील में एक सुनहरा सफ़ा जोड़ दिया. इसीलिये ताई-स्यु "मिक्स शहनशाह" कहलाता है, इसके अलावा और दूसरे आलिंग और पाक भिक्ख ,हुए हैं जिन्होंने शहनशाहों के मजहबी कामों में मदद दी और कामयाबी के साथ समाज में अंतुशासन कारम रक्का है. ऐसे मिक्खुओं की तादाद इतनी ज्यादा है कि उनकी शस्सी चर्चा कर सकता यहाँ नासुमकिन है.

सिन राजधराने के शुरू जमाने के तमाम शहनशाहों का बीद धर्म पर पेतबार था. देश ताकतवर था और चारों तरफ इसमीनान था. इस जमाने में बीद धर्म की बराबर तराकति होती गई लेकिन मांचु हुकूमत के आखिर जमाने में भीनी राज के साथ साथ बीद धर्म भी तनुरजली के गार में गिर गया. इसी वक्त यूरपी तहचीव ने दूर पूरव में तृकानी क्रवम बहाया और नतीजे की शकल में जीनी दिमारों में अजीवा ग्रीव कैकियत पैदा होनी शुरू हुई. खासे मोहप्रिक्ष लोगों ने उन्मीद की कि परिष्ठम के मेल में याकर शुरूक के अन्दर नई जिन्दगी की शुरूआत होगी. प्राने हंग की तालीमी संस्थाओं को सतम करके यूरपी तम्में के में स्था कावमा किये गये. आलिमों को साइसी शान के तालीमी संस्थाओं को सतम करके यूरपी तम्में के में स्था कावम किये गये. आलिमों को साइसी शान के तालीमों को परिक्रम की सरीनों और मीतिक-वाद के लिये बाहा से साइसी को मीतिक-वाद के साइसी कर दिया और में सुंह खोलकर उसकी

विश्व में क्षा कर करने दिलों में परिवर्धी फलाने के साथ के परिवर्ध के साथ के परिवर्ध की सरफ उनमें इंड्यर पैदा की और इंड्यर ने पैदा की मान करने का क्यांत. तमाम पुरुष में मोंचाल सा का गया. पुरानी तालीम और क्यांत, पुरानी राजनीति और साथी रवैया और दुराने सामाजिक रीत रिवाजों की जहें कि साथ और इसार प्यार पुराने प्रस्क की पुरानी शानदार सहित्यों के बर्ग होती हुई दिखाई देने लगी. स्थालात के इस कीफानक त्फानी समन्दर में बीद धर्म पहली मर्तवा समुख्युकों की गहराई में दिखाई देने लगी. चूँकि इसके वीद एक इसना लम्या इतिहास था और वह लोगों के दिलों वर इसनी गहरी जह जमा चुका था और उसके अन्दर क्षांत्रीस मुमकिनात थीं, इसलिये यह लाजमी था कि वह श्रीका पाकर फिर हरा भरा होगा.

चीनी डेमोक्रेसी (प्रजातन्त्र) के शुरू के सालों में न तो बानित क्रायम होने पाई और न अमन. बौद्ध धर्म खामोश क्षेत्रर नेक भीके का उन्तजार करता रहा और उसे फिर हरकती का मौका मिला. इस करामकरा के जमाने में चीन में जो सांस्कृतिक इन्क्रलाव शुरू हुए उनमें सब में पहला "4 मई सन् 1919 का इन्क्रलाव" था. यह तालिवहस्मों के बारिके हारू किया गया था. इसे वे "नया तह जीवी इन्क्रलाव" करते थे. लेकिन इसके कामिल खाली ख्यालात से भरे हुए के वे सिर्फ "कादे द्वप चिलाफ" की तरह थे. न वनके अन्दर कोई असली ज्ञान था और न कोई नेक असल. इसलिये क्रमके सफ्जों में न तो कोई जोर था और न उनसे कभी कोई अकहा नतीजा निकला. कैफियत यह हुई कि वे कभी शोई अच्छाई तो न कर पाए पर बुराई ज़रूर कर गये. मुल्क है देखा गक्षक काला मचा कि किसी की समम में ही न बाता या कि वह किसे माने और क्या करे. नये तहजीवी न्यासाध के प्रचारकों के जिये अध्यात्म और धर्म की बढ़ाई क्साफ सकाना टेढ़ी सीर था; इसलिये इन लोगों ने वर्म पर ि इसका करना शुरू किया. बीद धर्म के जानिव इन लोगों है स्थास न सो इष्फात के ये और न दोस्ती के. 15 साल क्यों जब नानकिंग में पहली दुका राष्ट्री दुल की कामयानी बाद केन्द्री हुकुमत कायम हुई तब पण्डिम की अन्धी का का क्याल लोगों के दिलों से ग्रायब हुआ और कामायत से भरे इन्क्रलावों में सुधार हुए, बाव इस वक् होती सरकार के मातहत भमें की हिफाजत की हाती है कीर कर्दे मदद दी जाती है. सास सीर ह औद क्ये में नई जान पड़ी है. बहुत से विकास इस वर देवबार है. सरकारी बजीरी इसके में बाह्य होती की बीद्र धर्म से बेहद मोहन्यत है.

فرات کی دولان داری دار کی دولان کی دول

چینی قیموکریسی ( پرجاننر ) کے شروع کے سالوں میں اے تو شالتی قایم هونے پائی اور تم اس ۔ بُوده دعوم خاموش هوکر نیک موقع کا انتظار کرتا رها اور آے پھر ترقی کا موقع ملا ، اِس کشمکس کے زمانے میں چین میں جو سانسمرنک اِنقلاب شروع هوئے آبی میں سب میں پہلا "4 مئی سی 1919ع کا وے ''نیا تہذیعی انقلاب'' کہتے تھے ، لیکن اِس کے عامل خالی خيالات سے بهرے هو يُه تھے . وله صرف "كارهے هوئے غلف" كى طرح تھے ، ثم اُن کے اندر کوئی اصلی گیان تھا اور نم کوئی نیک عملی ایسی لئے آن کے لفظار میں تھ تو کوئی زور تھا اور قه أن سے كيني كُوئي أجها تتيجه نكل اليفيت يه هوئي كه ولم کیمی کوئی لچھائی تو نه کرپائے پر برائی ضرور کرگئے۔ ملک میں ایسا گوہو جہالا محما که کسی کی سنجم میں هے ته آتا تها که ولا کسے مالے اور کیا کرے. نیٹہ تہذیبی اِنتلاب کے پرچارکس کے لیے اُدھیاتم اور دھرم کی برائی سمجھ سکنا ٹیرھی کھیر تھا؛ اِس لئے اِن لوگوں نے دھرم پر ھی حمله کرنا شروع کیا . بودھ دھرم کے جانب اِن اوگوں کے خمال نه تو عزت کے تھے اور له درسائی کے ، 15 سال پہلے جب نانکلک میں پہلی عقدہ راشاری دل کی کامیابی کے بعد کیندری منکوست قایم ہوئی تب یجم کی افیعی نقل کا خیال لوگس کے داوں سے غایب ہوا ارر بالكين سے تهرب التحين ميں سدهار هوئے . اب اِس وقت جيئي سُرُكُو كِ مَالِعَتْ دَمْرُمُ كَيْ جَالَطْ عَا كَيْ جَالَيْ هُ أُورُ أَلْهِيْنِ مدد میں جاتی ہے خاص طور پر بودھ دھرم میں نئی جاتی ہوی هے ، بہت میں لوگوں کو اس پر اعتبار ہے ، سرکاری وزیری عالق مين بينها لللي لولي لو بينه نامر ته يحد استجمالي

त्र क्षेत्र का कि स्वास्त के स्वास के स्वा

इस समय बीद इन्क्रलाय और चीनी बीद वर्ग को इम हो दिस्सी में दक्तसीम कर सकते हैं—(1) बीद वर्ग और (2) बीद सलीम. जहाँ तक बीद वर्ग का ताल्लुक है गुएक

में असे से वस वल थे-

1. यु-रोह-साम (अभिधर्म कोष दल),

2. वेड शिह-सम्ब (संयुक्त दल),

8. ल-सङ्ग (बनय दल),

4. का-सिमाझ-सुङ्ग (यागचार दल),

5. सान-तुन-सुङ्ग (माध्यमिक दल),

6. डा-येन-सुङ्ग (अवतामसक दल),

7. तिएन-वाई सुद्ध (सडमें पुरव्हरीक महा परिनिर्वाण इत).

8. चेन-येन-समुद्ध (मंत्र दल),

9. सिक्क-तु-सुक्त (अमिताम दल) और

10. शान-सुङ्ग (ध्यान दल).

इन दुसों जमाझतों में हर एक बौद्धधर्म का मंडा फहरा-ना सिक्क अपना ही निजी हक सममता था और दूसरे जमासत की बुराई करता था. यह सही है कि आपसी लाग ढांट से वे फ़ायदा बठा सकते थे. लेकिन यह भी सही है कि वे एक हूसरे के बारे में रालत प्रचार करते थे भीर बीद दुनिया में निफाक फैलाते थे. खुराकिस्मती से इन मुख्तलिफ गिराही में भीरे भीरे इसफाक कायम हा गया है और अब कोई लास साई इन के दरमियान दिखाई नहीं देती. बौद धर्म बुनि-यादी हंग से एक है. उसे दुकड़ों में तक्रसीम करना गलत है. मुल्ड में बीद नेता आज जार शार के साथ एकता का इन्क्रलांव चला रहे हैं. उन्हाने मुख्तलिक स्वों में बौद्ध जमाबतें क्रायम की हैं भीर सारे चान के बीदां के लिये शंबाई से "बीनी बीद केन्द्री संव" क्रायम किया है. सभी जमाझवों ने इसके भावहत काम करने का पक्का इरादा किया है. इस तरह की जमाञ्चल की बेहद करूरत थी जो एक तक्क वर्ग में अन्दलनी एकता पैदा करे और दूसरी वरफ बाहरी सवालों को इल करे. लेकिन केन्द्री संघ में इल्के इस्के के बन्दे नजर मा रहे हैं—एक तेज रफ्तार जमामत चीर क्यों पुरानी देश रिवाजों वाली जवाबत. वेष रक्तार नमाना की को सुवारों की मांग करती है कीर प्रसनी को सही बनायन पूर्ण स्थानों के कायन न्यान

المستقد المست

اس سے بودہ اِنقاب اور چینی بودہ دھرم کو هم دو سیس میں تقسیم کرسکتے هیں۔۔۔(1) بودہ دھرم اور (2) بودہ تعلیم ، جہاں تک بودہ دھرم کا تعلق ہے ملک میں فرص کا تعلیم دل تھے۔۔۔۔

لله جو - شهر - تسونک ( ایمی دهرم کوهی دل )؛

24 جينگ - شي - تسونگ ( سنيکت دل )

( ونئه دل ) الو - تسونک ( ونئه دل )

الله سان - لون - تسونگ ( مادهیمک دل )

🕬 مراً - نين - تسونگ ( اوتامسک دل )٠

7. تلین - تانی - تسونگ (سدهرم پرنتریک مهاپرینروان ها م

🖑 کاء چين - يئين - تسونگ ( منتو دل )٠

اور . السنگ - بو - نسونگ ( ایهیتام دل ) اور .

10 . شان - تسرنگ ( دهیان دل ) .

أن دسون جناعتون مين هر ايك يوده دهرم كا جهلدا يهُ وَاللَّهُ مَا اللَّهُ هِي لَتِي حَق سنجهمًا بها أور دوسوء چماعت کی برائی کرتا تھا ۔ یہ صحیتے ہے که آیسی وک ذائث سے رہے فایدہ أثهاسكتے تھے . ليكن يه بھى صحيح هے دء وے آنک دوسرے کے بارے میں غاط پرچار کرتے تھے اور بودھ دلیا میں نماق پہلاتے تھے . خوص نسمتی سے اِن مخلف کردھیں فهي دهدرم دهدم إنفاق قايم هوكيا ها أور أب دئي خاص المائي ان کے درمیان دکھائی نہیں دیتی ، بودھ دھرم بنیادی تمنگ سے ایک ہے . اس تعروں میں تقدیم درنا علما ہے . مُنْكُبُ مِن يودنه لَيمًا أَج زور شور في سابه أيمنا و إنقاب جلا رُفُ عين ، أمون في مندتاف صوبون مين بوده جماعتين قايم الله اور سارے چین کے بودھوں کے لئے شنکھائی میں المهاني بوده كيندري سنكو" قايم كيا في ، سبعي جماعتون في اس کے ماتحت کام کرنے کا پکا ارادہ کیا ہے . اِس طرح کی يتناعب كي يدد فرررت تهي جو أيك طرف دهرم مين قبرولى إيكنا پيدا كرے اور دوسرى طرف ياهرى سوانس كو ال کرے ، لیکن کیندری سنگ میں هلکے هلکے دو دل بنتے تطور أرضعين -- ايك تيز رفتار جمعت اور دوسرس يراني ريسترواجوان إلى جماعت تيز رفتار جماعت تئينك سبهاروس كيمانك وتي ود يراتى ريحوراجون والى جماعت يرك رواجون كالمها كالم

हों। का पुरसार कहार्य का जान रिवास था. बीद पर्न के किये पूर्व की जीन स्थितियां कीर की ह पर-क्ष की कुछ क्ष की क्ष कमिवियाँ में सब से खबर्दरत समिति क्षीत और अमिति", काक्टर ताई-इहु ने नानकिङ्ग में अधिक की हुनिवाद डासी थी और चीन के नराहर कार्य और कोगों ने इस समिति का साम दिया था. इस समिति के सेम्बर कोज के काम के साथ साथ जनता क्षाक्याम (स्पीप) देते थे. पीपिक शहर वे हान-ते-स्विक विशेष बाबम की हुई "सास-रिह" नाबी बौद्ध समिति किया केम्बरों में कई गराहर मालिम हैं जीर किन्होंने कार्य की को अवर्वस्त किवार्वे द्वापी हैं. बीद संस्थाओं कि सम में अच्छी संस्था मानकिंग में चीनी बौद्ध बाशिज है. इसके आपम करने वाले भी ऊन्याझ-विज्ञ-तु हैं जो बौद्ध की है अपने जालिस हैं. बहुत से मशहूर लोग बनके जेले **कि अधिक की उरक से एक माहकारी असाबार सुपता जा.** आदिश की सरफ से बौद पर्न के बहुत से पुराने मन्यां को काल गया इसके बाद हु-वे में "तु-बाह्न " नाबी बीट की कीर अ-कीन में भी साई-सा के चरिये मिन-नान नामी कि सामा आयम की गई. इन दानों संस्थाओं से बड़े कावित बाह आशिय विक्या निकते हैं जो तमाय हरू में बौद वर्ग कि अधार करते हैं. शंबाई से बु-बाक नामी बीख संब बीख वाक्षीयना का एक व्यवधार जापता है. इनके व्यक्षावा का जानकिया, टिक्किन और दूसरे बढ़े बढ़े राहरों में की बाब बुबिस्ट गैसोसियरान" नामी संस्था क्रायम की गई. स्य इसरी संस्था "वर्स्ड वृद्धिस्ट इन्सटीटम्रान" के कायम कार की की राश की गई थी.

अंश्राहर क्याने हे बीनी बीड वर्ग के प्रचारकों में को कास सकत है. निक्कुमों में तार्ग-दस सब में बाता है, इनके अस्त्राहर हम-इन्यांग, भिन्नु इम-र्ग, मिन्नु इ-मान-पुत्त है आहे कराहर हैं भिन्नु बातियों में बाल पि-लिन, है के निक्राचा, पिर-यु-म, रिाइ-किकोल-स्तार्ग, सिर-युन-स्त्राहरी नहुन कास नाम है जा सब अस्त्राहर कीड भिन्नु की कहा कामों की मतार्ग के सामने सामनी सारा स्त्राहर काम है सब की मतार्ग को नकत में स्वावन कर का सह की कामों की मतार्ग को स्वावन कर का सह की कामों की नकरों के स्वावन करने कि स्त्राहर की हम की सामने का स्वावन करने का स्त्राहर की कि सम्बन्ध की विकास स्वावन की सामने की सम्बन्ध की विकास स्वावन काम की सम्बन्ध की विकास स्वावन की सम्बन्ध की विकास

بعد و لانعک میں اس سنی کی معلم دال ہی من لا جال الله الله الله الله الله الله ر کو تھا۔ اِس سنوٹی کے میدور فونے کے کام کے ساتو جاتو تا میں پاکھانی ( اُسپنے ) دیائے تھے۔ پیونگ شہر مض . . و - سال ع دومه قام كي مري اصلي - عوا للي م المالي على المالين مون كلى معيد ر میں اور جس لے بردہ دعوم کی کئی زاردست کایفن ایی هان د بوده ساسال میں سب میں اچی سلسا عنگ جيئو جيني بوقه کالي هد اس ك قايم كرنے وال شوى ۔ بالک جانگ - رو هیں جو بودہ دهرم کے اچھ عالم ں ، بہت اس مشہور لوگ آن کے چیلے هدں ، کالم کی طرف آیک مشعورتی المبار جهیتا تها. کالی کی طرف کے بودہ دھرم بہت سے برالے گرفتیں کو جوایا گیا ۔ اِس کے بعد ہو " ہے ن (اورچانگ افادی بوده ساته اور تولین میں شری تائی -و كي قريعة من - قال قامي بوده سنستها قايم كي كلي . إن نون سنستهای به بوء قابل اور عالم بههو نعلے هيں جو تمام ک میں بردہ بعرم کا پرچار کرتے میں ، شکائی سے وو -الك الذي برده سلم برده ألوجنا كا أيك أخبار جهايتا ه. ر كر حاول شاعاتي الاعتك اليناوين أور دوسرت بزت بزت الرول مهن الأنبي عوم بدهست ايسوسليهن" قامي سلستها م كى كالى فى أيك دوسرى ساستها "وراد بدهسيف مایانوش ال کے قایم کرنے کی کوشش کی گئی تھی ،

 रखते हैं. बीद कर्मकान्डों को मानते हैं और कभी कभी

हद बौद्ध मिक्ख बन जाते हैं.

चीनी बौद्ध धर्म का एक धनोखा पहलू है जिसे लामा धर्म कहा जाता है. इसका प्रचार तिब्बत और मङ्गोलिया में ज्यादा है. लामा धर्म की पैदायशी जगह तिब्बत है. ब्रस्तियत में यह बौद्ध धर्म की एक शाख है. चीनी जबान में इसे ''चेन-पियेन-स्मुक्त" या ''मन्त्र धर्म'' कहा जाता है. इस पर तिब्बती रीत रिवाज की गहरी छाप है. तिब्बत ही दुनिया का एक ऐसा इमबार हिस्सा है जो चारों तरक से बरकीली पहाड़ियों से घिरा हुआ है. तिब्बत आम तौर पर और क़ुद्रती नजरिये से खुद ही ताज्जुबखेज श्रीर पुरइसरार है, तिब्बतियों का अपना ऐतेबार श्रीर पुराना धम भी राज से भरा है श्रीर इसीलिये तिब्बतवालों को बौद्ध धर्म की यह मंतर जमाधन बेहद अच्छी लगी. असल में इस मंतर जमाधत के अन्दर एक गहरा राज द्विपा हुआ है. यह तिब्बत वालों के भेद भरे मिजाज के मुताबिक पड़ता है. पुराना तिब्बती धर्म और मंतर जमाञ्चत आपस में इतने मिल जुल गये कि उन्होंने बौद्ध धमें की एक नई शकल लामा धर्म की बुनियाद डाली. सातवीं सदी ईस्त्री में तांग राजघराने के गुरू के जमाने में पहली बार बौद्ध धर्म तिब्बत पहुँचा. उस वक्त तिब्बत चीन के मातहत खिराज देने बाला एक अलग राज था. तिब्बत के राजा "सुङ्ग-स्तान" ने तांग राजघराने की शहजादी ''वेन-चेक्क'' के साथ शादी की. बाद में इस तिब्बती राजा ने नैपाल की शहजादी "पेलिस्यू" के साथ शादी की, यह दोनों शहजादियां बीख धर्म की सच्ची पैरोकार थीं. इन दोनों रानियों से तिब्बत राज इतना मुतास्सिर हुआ कि उन्होंने भी बौद्ध धर्म ऋबूल कर लिया. दोनों रानियाँ अपने मैके से बौद्ध धम के प्रचार के लिये कई बौद्ध मंथ और बौद्ध मूर्तियां अपने साथ लाई थीं. इस तरह यह दोनों रानियां तिन्वत में बौद्ध धर्म की पहली प्रचारक समभी जाती हैं. अब भी तिब्बत की राज-धानी ल्हासा में "ता-चावु" यानी "महान मन्दिर" नामी एक आलीशान मन्दिर खड़ा हुआ है, जिसे चीनी शहजादी वेन-चेंग ने बनवाया था और जिसमें श्रव तक उसकी एक सुनहली मूर्ति मीजूद है. तिब्बत में यही सब से पुराना मन्दिर समम्ता जाता है और लोग इसे निहायत पाक सममते हैं, हर साल नौरोज के दिन तमाम तिज्बती भिक्ख शार्थना और पूजा के लिये इस मन्दिर में जमा होते हैं. एक दूसरा मन्दिर नैपाली शहजादी पेलिस्बू का बनवाया हुआ है, जो "स्यामो-चाम्रो" यानी "हिना मन्दिर" कहलाता है. इस मन्दिर में नैपाली शहजादी की एक सुनहली मूर्ति अब तक मौजूद है. तिब्बती बढ़े इज्जत के साथ इस मन्दिर को देखते हैं. जमाने की रफ्तार के साथ साथ भारत. नैपाल رکیتے میں' بودھ کرم کانڈوں کو ماثاتے میں اور کیمی گیمی خود بردھ بھکھو بی جاتے میں ۔

چینی بود دهرم کا ایک آنوکها پهلو هـ جسے لاما دهرم کها جانا هے اِس کا پرچار نبت اور منکولیا میں زیادہ هے الما دهرم کی پیدانشی جگهه تبت هے . اصلیت میں یه بوده دهرم کی ایک شام هے ، چینی زبان میں ''چین- پٹین- تسونگ'' یا "منتر دهرم" کها جانا هے اِس پر تبتی ریت رواج کی گہری چھاپ ہے و تبت ھی دنیا کا ایک ایسا ھموار حصہ ہے جو چاروں طرف سے برنیلی پہاڑیوں سے گھرا ہوا ہے . تبت عام طور پر اور قدرتی انظریت سے خود هی تعجب خیز اور پراسرار ھے۔ تبتیوں کا اینا اعتبار اور پرانا دھرم بھی راز سے بھرا ھے اور اِس الله تبت وأاول كو بوده دهرم كي يه منتر جماعت يحد اچہی نامی اصل میں اِس منتر جمانت کے اندر ایک گہرا راز چیدا هوا هے یه تبت والوں کے بهدد بھرے مزاج کے مطابق برتا هے ، پرانا تبتی دهرم أور منتر جماعت آیس میں أتنے مل جل گٹے کہ اُنہرں نے بودہ دھرم کی ایک نئی شکل لاما دھرم کی بنیاد ڈالی ساتویں صدی عیسوی میں تانگ رأج گورائے کے شروع کے زمالے میں پہلی بار بودھ دھرم نبت پہوندیا ۔ اس وقت تبت جان کے مانتحت خواج دیا والا ایک الگ رائے تھا . تبت کے راجا ''سونگ۔ تسان'' نے نانگ راج گھرائے کی شہوانی "وین چینگ" کے ساتھ شادی کی ، بعد میں اِس تبتی راجا نے نبہال کی شہزادی ''پیلسبو'' کے ساتھ شادی کی . یه دنوں شهرادیاں بودھ دهرمکی سنچی پدروکار تهبی ، اِن دونوں رانیوں سے تبت راہ اِننا متاثر هوا که اُنھوں نے بھی مودھ دھرم قبول کو لیا . دورو رائیاں اپنے میکے سے بوٹ دعوم کے پرچار کے لئے کئی بردھ گرئتم اور بردھ مورتیاں اپنے سا ، لائی تهیں ، اِس طرح یه دنرں رائیاں تبت میں بردھ دعرم کی پہلی پرچارک سمجھی جانی ہیں ۔ آپ بھی نبت کی رَلْجَدَهَانُي لَهَاسًا مِينَ "ناء چارو" يعنى "مهان مندر-" نامي ايك عالیشان مند کبرا مواهی جسے چینی شهزادی وین- چینگ لے ہنوایا نہا اور جس میں اب تک آس کی ایک سنہلی مورتی موجود هے . تبت میں یہی سب سے پرانا مندر سجها جاتا هے اور اوک أسے نهايت پاک سمجهتے هيں . هر سال نو ووز کے دن تمام نبتی بھکھو برارتھنا اور بوجا کے لئے اِس مادر میں جمع هوتے هیں . ایک دوسوا مندر نیپالی شہزادی بیلسبو كا بنوايا هوا هئ جو "سياء- چاؤ" يعنى "هذا مدر" كهلاتا هم. اِس مندر میں نیھالی شہزادی کی آیک سنہلی ، ورتی اب نک موجود ہے. تبتی ہڑے عزت کے ساتھ اِس ملدر کو دیکھتے ھیں . زمانہ کی رفتار کے ساتھ ساتھ بھارت شہرال

8

But the second of the second of the second of

ار جیں کے کئی مشہور بھکھو نہت پہنچے اور اُن کے پرچار سے تبت یں بودھ دھومترقی کی آخری منزل پر پہونچا ۔ اُس وقت تک بت میں کوئی اعهاوت کا طریقت ایجاد نہیں ہوا تھا . بودھ یورم گرنتھوں کے ترجیم کو لکھلے کے لئے سلسکرت کے 30 حروف ، ایمر ایک تبتی اکهارت بنائی گئی . تبتی پالی اور چیلی ران میں تبتی بردھ درشی کا خزانہ بھرا پڑا ہے۔ چین میں یوان ا مرائے کے وقت میں منکولیں نے حملہ کر کے ایشیا اور ر ایک ہوے حصم کو اپنے ماتحت کر لیا . اُنہوں نے بت کو بھی اپنے راج میں شامل کر لیا . اِن منکول یوآن بنشاهوں نے تبتی ہودھ دھرم کو اپنا راج دھرم بنا لیا ، بہت ے تبتی بھکھوؤں نے یوآن شہنشاہوں کے ذریعہ عزت حصل کی بر أن سے أنهيں راج بهر كے "راج كرد" كا أونحا رتبه ملا . 15 یں صدی میں چین میں من راج گہرائے کے وقت میں تبتی ودھ دھرم میں زبردست ھیر پھر ھوٹے ، تبتی بودھ دھرم کے س سدهارک کا فام "تسوفگ کاؤ" تها . اِس تبتی سدمارک ر عیسائی دھرم کے سدھارک <sup>19</sup>مارٹی لوتھر<sup>46</sup> کے سدھاروں <sup>1</sup>یں ہت کچھ برابری بائی جاتی ہے . تبتی بھکھوؤں کے کام اور اُن ے عادتیں اِس وقت تک آیسی مو نئی تھیں که اُن سے بودھ ارم کی بری بداری هونے لگی تهی . تسونگ کاؤ کو اِس سے ہراً دلی صدمت یہوننچا اور اُس نے سدھار کرنے کی تھائی ۔ اِس ن بعد تبتی بوده دهرم دراص بهت کچه سدهر گیا اور فریب ربب ایک نیا دهرم هی بن گیا، بهلے تبتی بوده بكهر سرخ كيره يهدي تهاور أس لله وه الل الما كهالت ته. دهار کے بعد وے پھلا کوڑا پہنتے لکے اور اِس الله لیلے لاماء بلانے لکے . أب تبت ميں لال لاما دكھائي ديتے هيں ليكن أن ی مداد نہیں کے برابر ھے ، تسونگ کاؤ کی موت کے بعد تعتی دعار کا کام اُس کے وصیت فامے کے مطابق اُس کے دو چیاوں ے آپسی میل جول کے ساتھ چلفا شررع ھوا۔ اُس کے یه دو چیلے الى لاما أور المسور للما تهي إسودت تك 13 دلائي لاما أور پنسن لاما گدی پر بیٹھ چکے هیں ۔ 13 ویں دانی لاما کی وت کے نئی سال بعد تک، مرحوم دلائی لاما کی روح کسی رسوے میں تم دکھائی دی . سالوں کی کھرے کے بعد آخر میں ک از کے کے اندر وے نشان دکھا دیئے جس سے یہ معلوم ہوا ، مرحوم دلائی لما کی روح اسی از کے کے اندر پوشیدہ فے . اسن لاما کئی سال هوئے چھی میں بودھ دھرم کی منتر جماعت ا پرچار کرنے آئے تھے اور اُن کا چیتی بودھیں نے کافی اِستقبال رر عزت کی تھی۔

ہودہ دھرم نے چین کو جس طرح مثاثر کیا ہے اُسے یان کر سکنا نامیکی ہے۔ ھان اور تانگ راہے گھرائے

और बीन के कई मशहूर भिक्ख तिब्बत पहुँचे और उनके प्रचार से तिब्बत में बीद्ध धर्म तरक्षकी की आखिरी मंजिल पर पहुँचा. उस बक्तत तक तिञ्चत में कोई लिखावट का तरीका ईजाद नहीं हुआ था. बौद्ध धर्म मंथों के तर्जुं मे को लिखने के लिये संस्कृत के 30 हरूक को लेकर एक तिन्वती लिखाबट बनाई गई. तिब्बती, पाली और चीनी जवान में तिब्बती बौद्ध दर्शन का श्रजाना भरा पड़ा है. चीन में युत्रान राजघराने के बक्त में मंगोलों ने हमला करके एशिया श्रीर यूरप के एक बड़े हिस्से को अपने सातहत कर लिया. छन्होंने तिब्बत को भी श्रापने राज में शामिल कर लिया. इन मङ्गाल युद्यान शहनशाहों ने तिब्बती बौद्ध धर्म का अपना राजधर्म बना लिया. बहुत से तिब्बती भिक्खुओं ने युत्रान शहनशाहों के जरिये इज्जत हासिल की श्रीर उनसे उन्हें राज भर के राजगुरू का ऊँचा रुतवा मिला. 15वीं सदी में चीन में मिन राजघराने के वक्तत में तिब्बती बौद्ध धर्म में जबर्दस्त हेर फेर हुए. तिब्बती बौद्ध धर्म के इस सुधारक का नाम "त्सुङ्ग-काद्यो" था. इस तिव्यती सुधारक और ईसाई धर्म के सुधारक ''मार्टिन लूथर" के सुधारों में बहुत कुछ बराबरी पाई जाती है. तिब्बती भिक्खु औं के काम और उनकी आदर्ते इस बक्त तक ऐसी हो गई थीं कि उनसे बौद्ध धर्म की बड़ी बद्नामी होने लगी थी. रसुंग-कात्रो को इससे गहरा दिली सदमा पहुँचा श्रीर इसने सुधार करने की ठानी. इसके बाद तिब्बती बौद्ध धर्म दरअसल बहुत कुछ सुधर गया और क्रीब क्रीब एक नया धर्म ही बन गया. पहले तिन्वती बौद्ध भिक्खु सुर्ख कपड़े पहनते थे श्रीर इसीलिये वे 'लाल लामा' कहलाते थे. सुधार के बाद वे पीला कपड़ा पहनने लगे और इसीलिये 'पीले लामा' कहलाने लगे. श्रव भी तिब्बत में लाल लामा दिखाई देते हैं, लेकिन उनकी तादाद नहीं के बराबर है. त्सुङ्ग-काश्रो की मौत के बाद तिव्वती सुधार का काम उसके वसीश्रतनामें के मुताबिक उसके दो चेलों के आपसी मेल जोल के साथ चलना शुरू हुआ, उसके यह दो चेले 'दलाई लामा' श्रीर 'पन्सन लामा' थे. इस वक्तृ तक 13 दलाई लामा श्रीर 8 पन्सन लामा गद्दी पर बैठ चुके हैं. 13वें दलाई लामा की मौत के कई साल बाद तक, मरहूम दलाई लामा की रूह किसी दूसरे में न दिखाई दी. सालों की खोज के बाद आखिर में एक लड़के के अन्दर वे निशान दिखाई दिये जिस से यह मालूम हुआ कि मरहूम दलाई लामा की रुद्द इसी लड़के के अन्दर पाशीदा है. पन्सन लामा कई साल हुए चीन में बौद्ध धर्म की मंतर जमाश्रत का प्रचार करने आये थे और उनका चीनी बौद्धों ने काकी इस्तक्षाल और इक्ज्त की थी.

बीद्ध धर्म ने चीन को जिस तरह मुतास्सिर किया है इसे बयान कर सकना नामुमकिन है. हान और तांग राजघराने

है वक्त से चीन के स्थालात, तालीम, अद्ब, कारीगरी, जवान, रस्मी रिवाज, गौरो खीज और रोज्मरी की हर जरूरत की बातों पर बीच धर्म ने अपना असर डाला है. जिन्दगी का कोई ऐसा पहलू नहीं जो बीद धर्म के असर से श्रद्धता बचा हो, भाजकल की चीनी तहत्तीव ज्यादातर बौद्ध तहुँ जीब है। आअकल की चीनी जिन्द्गी ज्यादातर बौद्ध जिन्दगी है. चीनी प्रजातन्त्र के सभापति से लेकर मामूली जनता तक एक भी ऐसा आदमी नहीं है जो भगवान बद्ध के नाम से नामाशना हो या जो 'नमो भ्रमिताभ्य बुद्धाय: "मनत्र का तलफ्कुल न करता हो, चारों तरफ चीनी जवानों से यह मनत्र सुनाइ पड़ता है. इसी से ऋंदाजा किया जा सकता है कि चीन में बौद्ध धर्म का कितना जबर्दस्त असर पड़ा. मौजूदा बौद्ध धर्म को जा ने के लिये 3 जबानों का आसरा लेना पढ़ेगा-पात्ती, चीनी और तिब्बती. चूं कि वीनी और तिब्बती दोनों चीनी ही हैं, इसीलिये बौद्ध धर्म का दो-तिहाई ज्ञान चीनी जवान में ही मौजूद है. चीन ने बौद्ध धर्म के लगातार प्रचार, उसकी तरक्षकी श्रीर उसके फैलाव के लिये जबदंस्त कोशिश की है. लेकिन अफसोस का मुकाम है कि चीनी बौद्धों ने न तो मुल्क दर मुल्क प्रचार ही किया और न संस्कृत और दूसरी जवानों के पढ़ने की ही कोशिश की. इसका नतीजा यह हुआ कि चीनी बौद्ध श्रालिम सिर्फ़ अपनी माद्री जवान में ही बौद्ध धर्म का प्रचार कर सकते थे. दूसरी बात यह कि बहुत कम बिदेशी ऐसे हैं जो चीनी जबान, जानते हों या जिन्हें चीनी जबान का इतना ज्ञान है कि वे चीनी बौद्ध अदब का मुताला कर सकें. चीन में बौद्ध धर्म का जितना वसी खजाना भरा पड़ा है उसका दुनिया को अन्दाजा तक नहीं है, जापान में चीन से ही बौद्ध धम गया और जापान में ही चीनी जबान में बौद्ध धर्म की किताबें हैं. जापानी बौद्धों की कोशिश दर असल तारीक के काबिल है कि उन्होंने संस्कृत और दूसरी विदेशी ज्वानों का मश्तरका मताला किया. वे जानते हैं कि बौद्ध धर्म का मुल्क दर मुल्क प्रचार किस तरह करना चाहिये. विदेशी ज्वान में लिखे हुए उनके प्रन्थ कुछ कम नहीं हैं. दुनिया के आलिम यह नहीं जानते कि जापानी बौद्ध धर्म असल में चीनी बौद्ध धर्म है. चीनी बौद्ध के लिये यह बड़े अफ्सोस की बात है की चीनी बौद धर्म तारीकी में छिपा पड़ा है. इधर हाल में चीनी बौद्धों के अन्दर कुछ नई जान पड़ने के आसार दिखाई दे रहे हैं और कई चीनी नौजवान विदेशी ज्बान सीखने की कोशिश कर रहे हैं. साथ ही साथ विदेशी लोग अब कुछ कुछ चीनी जबान का महत्व सममने लगे हैं श्रीर चीनी बौद्ध धर्म का खजाना लोगों का ख्याल अपनी तरफ़ सीच रहा है. सन् 1933 ई० में अप्रेज बौद्ध भिक्ख चाओ-कोआङ्ग की देख भाज में दस यूरपी भिक्ख और

کے وقت سے چین کے خیالات علیم ادب کاریکوی زبان اسم و رواج فور و خرض أور روز مرهكي هر ضرورت كي ياتون پر بوده دهرم في اپنا اثر ذالا هے ، زندگی کا کوئی سا پہلو نہیں جو ہودہ دعرم کے اثر سے اچہونا بعدا ہو ، آجکل کی چینی تہذیب زیادہ تر ہودہ تہذیب ہے۔ آجال کی چینی زندگی زیادہ تر ہودہ زندگی هے چینی پرجانئتر کے سبھا پتی سے لیھر معمولی جنتا تک ایک بھی ایسا آدمی نہیں ہے جو بھکوان بدھ کے نام ص نا أشنا هو يا جو "نمو أمية بهيم بدهايم" منتر كا نلفظ نه كرتا هو . چاروں طرف چیئی زبانوں سے یہ منتو سنائی پرتا ہے . اسی سے اندازہ کیا جا سکتا ہے که چین میں بودھ دھرم کا کتنا ہرست اثر پڑا، مہجودہ بودھ ھھرم کو جاتنے کے لئے 3 ہائیں کا آسرا لینا ہویگا ۔ پالی چینی اور تبتی ، چونکه جیای اور تبتی دونس چینی هی هیں' اِس لئے بودھ هرم کا دو تہائی گیاں چینی زبان میں هی موجود فے . نین نے بردھ دھرم کے اگانار پرچار اُس کی ترقی او اُس ، پهيلاؤ کے لئے زبردست کوشش کی هے . ليكن أنسوس كا مقام ، که چینی بودهوں نے نه تو ملک در ملک پرچار هی کیا اور سنسادت أور دوسري زبانوں کے بوعنے کی هی کوشش کی، اِس نتيجه يه هوا كه چيني بوده عام صرف اپني مادري زبان س هی بوده دهیم کا پرچار کر شکتے تھے ، درسری بات یه که ت کم ودیشی ایسے هدی جو چینی زبان جانتے هوں یا جنهیں نے زبان کا اِبنا گیاں ہے کہ وے چینی بودھ ادب کا مطالعہ کو س . چين ميں برده دهرم كا جتنا رسيع خزانه بهرا يرا هـ ، کا دنیا کو اندازہ نک نہیں ہے . جایاں میں چین سے هی ه دهرم گیا اور جایان میں چینی زبان میں هی بوده دهرم كتابين هين . جارائي بودهس كي كوشه دراصل تعرف ناہل ہے کہ اُنہوں نے سنسکرت اور دوسری ودیشی زبانوں کا رکه مطالعه کیا . وے جانتے هیں که بوده دهرم کا ملک در ، برچار کس طوے کرنا چاھئے، ودیشی زبان میں لکھے أن كے گرنته كجي كم نہيں هيں . دنيا كے عالم يع نہيں ہ ته جاپانی بودھ دھرم امل میں چینی بودھ دھرم ہے . بودھ کے لئے یہ ہوے انسوس کی بات کے کہ چیلی بودھ تاريعي ميں چيها يوا هے ، أدهر حال ميں چيني بودهوں در کچھ نئی جان برنے کے آثار دکھائی دے رہے میں اور کئی نوجوان ودیشی زبان سینهنے کی کوشش کر رہے میں ، ام سانه ردیشی آوگ آب کنچه کنچه چینی زبان کا مهتو نے ایے میں اور چینی بودھ دھرم کا خزانہ لوگیں کا خیال عرف كهيني رها هي سن 1938ع مين أنكريز بودة جائد کوانگ کی دیکھ بھال میں مس یورپی بھی ارد

भिक्खुनियाँ चीनी बौद्ध धर्म की दीक्षा लेने के लिये चीन आये. आजकल के चीनी बौद्ध धर्म की तवारीख में यह एक जबदस्त बाक्षेत्रा है.

एक सवाल यहाँ पर यह उठता है कि चीन में बौद्ध धर्म इतना ज्यादा जोर श्रीर श्रसर कैसे पैदा कर सकता है श्रीर चीन बौद्ध धर्म को इतनी तरक्क़ी और बढ़ावा कैसे दे सकता है ? इसका जवाब हमें चीनी जनता की राजकाजी तहजीव के अन्दर 'ढ़ ढ़ना होगा, चीनी तहजीव सुनहरे रास्ते के उसूलों को ऋषूल करती है. वह एकता के ख्याल से भरी हुई है और तमाम दुनियावी कामों में अहिंसा उसका बुनियादी उसल है. चीनी तहजीब के अन्दर भेद भाव और अलहदगी का ख्याल नहीं है. चीनी सन्तों ने हमेशा से चीन की एक महासागर से उपमा देकर चीनियों के रहन सहन श्रीर दिल को बड़ा श्रीर वसीश्र बताने की तालीम दी है. इसीलिये दुनिया की हर एक तहजीब के जानिब चीनी इन्जत और स्वागत का भाव रखते हैं. एक चीनी धर्म प्रन्थ में लिखा है "दुनिया की तमाम बड़ी से बड़ी तालीमें एक सी हैं. उनमें कोई भेद भाव और लड़ाई नहीं है. वे बरौर एक दूसरे का तुकसान पहुँचाये साथ साथ चल सकती हैं." इसलिये बीन में दुनिया के तमाम धर्म एक साथ रह सकते हैं और वहाँ कोई मजहबी लड़ाई मगड़ा नहीं होता, जबकि मजहबी लड़ाई भगड़ों ने दूसरे मुस्कों की तवारीख को खून आलुदा कर रखा है. बुद्ध और कनअयूसिश्रंस की तालीमें बुनियादी ढंग से एक हैं और भारत और चीन की तहजीब बहुत दूर तक एक दूसरे से मिलती जलती हैं और इसलिये बौद्ध वर्म चीन में इतनी तरक्की कर सका.

आज दुनिया के विचारक धीरे धीरे बौद्ध धर्म की बड़ाई को सममते जा रहे हैं. यूरप और अमरीका के आलिम बौद्ध धर्म के मुताले में जी जान से लगे हैं. ऐसे लागों की तादाद बढ़ती ही जाती है. इस मौजूरा जिन्दगी की नापायदारी से सभी वाकिष्म हो रहे हैं. दुनिया की बेहतरी का रास्ता अब उन्हें बौद्ध धर्म की बड़ाहे, उसकी तालीम, उसके नेक आमाल और उसके नेक रहन सहन में दिखाई देता है. उसे देखते हुए बौद्धों का यह लाजिमी फूर्ज है कि वे बौद्ध धर्म के विदेशी प्रचार के लिये कोई कोशिश बाकी न रक्खें. आज दुनिया के बौद्धों का एक बेहतरीन कर्ज है कि वे माह्यत और आपसी मेल जोल के साथ बौद्ध धर्म के जिरेंगे दुनिया के बौद्ध इस सुनहरे मौके को हाथ से खो जायें. क्या दुनिया के बौद्ध इस सुनहरे मौके को हाथ से खो जाने देंगे ?

بہبرنیاں چیلی بردھ دھرم کی دیکشا لیٹے کے لئے چین آنے آجکل کے چیلی بودھ دھرم کی تواریخ میں یہ ایک زبردست واقعہ ہے .

ایک سوال یہاں پر یہ اُنہتا ہے که چین میں بردھ دعرم اننا زیادہ زور اور اثر کیسے پیدا کر سکتا کے اور چین بودھ دھرم کر اتنی ترقی اور برمارا کیسے دیے سکتا ہے ؟ اِس کا جواب عمیں چینی جنتا کی راجکاجی تہذیب کے اندر تھونتھنا ھوگا ، چینی تہذیب سلہرے راستے کے اُصولیں کو قبول کرتی ہے . وہ ایمنا کے خیال سے بھری ہوئی ہے اور تمام دنیاوی کامیں میں ادنسا أس كا بنيادي أصول هے، چيني ترذيب كے اندر بهيد بهاؤ ار علیصدگی کا خیال نہیں ہے ۔ چینی سنتوں نے همیشه سے چین کی ایک مہاساگر سے آیما دیکر چینیوں کے رہن سہن اور دل کو ہوا اور وسیع بنائے کی تعلیم دی ھے ، اِس لئے دنیا کی شر ایک تذہب کے جانب چینی عزت اور سواگت کے بھاؤ رکھتے هين . ايک چيني دهرم گرنته مين لها هے "دنيا کي تمام ہری سے ہری تعلیمیں ایک سی هیں . أن میں كرئى بهید بهاؤ اور لوائم نهیں هے . وسے بغیر ایک دوسرے کو تقصان بہوتنچائے ساته ساته چل سمتی عیں ، '' اِس لئے چین میں دنیا کے تمام دعوم ایکسانه ره سکتے بعیل اور وهال کوئی مذهبی لزائی جهکزا نہیں مرتا عبکه مذهبی لوائی جهکروں نے دوسرے ملکوں کی توارینم کو خون آلودہ کر رکھا ہے، بدھ اور کلفوسیس کی تعلیمیں بنیادی ذھنگ سے ایک ھیں اور بھارت اور چدن کی تہذیب بہت دور تک ایک دوسرے سے ملتی جلتی ھیں اور اسی لئے برده دهرم چین میں اِتنی ترقی کر سکا .

آج دنیا کے وچارک دھیرے دھیرے ہودہ دھرم کی بڑائی کو سمجھتے جا رہے ھیں ، یورپ اور امریکہ کے عالم ہودہ دھرا کے مطابعہ میں جی جان سے لکے ھیں ، ایسے لوئوں کی تعداد برھتی ھی جانی ھے ، اِس موجودہ زندگی کی ناپائداری سے بھی واقف ھو رہے ھیں ، دنیا کی بہتری کا راستہ اب انہیں بودھ دھرم کی بڑائی' اُس کی تعلیم' اُس کے نیک اعمال اور اِس کے نیک رھی سہی میں دکیائی دیتا ھے ، اِسے دیکھاے ھوئے بودھرں کا یک لائی کوئی کوشش باتی تنہ رکھیں ، آج دنیا کے بودھوں پرچار کے لئے کوئی کوشش باتی تنہ رکھیں ، آج دنیا کے بودھوں کو ساتھ بودھ دھرم کے زریعے دنیا کے دو بدانے کی قهوس کے ساتھ بودھ دھرم کے زریعے دنیا کے دو بدانے کی قهوس کوشش میں اگ جائیں ، کیا دنیا کے بودھ اِس سنہ رے موقع کو ہاتھ سے کھو جائے دیدگی ؟

## 

श्री टी० विमलानन्द एम० ए०

شرى تى . وسلاند أيم . أه .

बहुत से इतिहासकारों की यह राय रही है कि जब तक सिकन्दर अपनी बहादुर भीज के साथ व्यास नदी के किनारे पर नहीं पहुँचा तब तक भारत पच्छिमी दुनिया के लिये एक राज था. भारत श्रीर यूनान के दरमियान ताल्लुक कायम करने का महत्त्व सिकन्दर को हीं दिया जाता है. यूरप के बड़े आलिमों के मुताबिक सिकन्द्र के हमले के बाद ही मरारबी मुल्कों के रहने वालों की नजर भारती तहजीब पर पड़ी. इसमें शक नहीं कि पच्छिमी तहजीब का यह पहला बदम भारती जनता को अपने मज्हब और तहजीब को बबीद करने वाला एक अछत की शकल में दिखाई दिया होगा. भारती तहजीब को इस आफत से बचाने के लिये चन्द्रगुप्त सामने आये. चन्द्रगुप्त ने सेलकस पर ज बद् स्त इमला किया. चन्द्र गुप्त की इस फतह का भारत पर गहरा असर पड़ा. इसके नतीजे की शकल में भारत शुमाल मरारिव में अपनी क़ुद्रती इद तक पहुंच गया. इसी बक्त मगध राज की बुनियाद पड़ी श्रीर कई सदियों तक भारत दुश्मनों के हमलों से महक्त रहा. इस बयान में कुछ जोर नहीं कि सिकन्दर के इमले के नतीजे की शकल में भारतीयों ने पच्छिमी सियासी जमाअतों की नक्कल की. श्रव तक यह बात साबित नहीं हुई है कि किस किस बारे में भारती हुकूमती रवैये पर यूनान का श्रसर पड़ा, जब तक इस बात का सबूत नहीं मिलता तब तक पश्छिमी दुनिया की जानिब भारत के क्रजदार होने की बात अन्दाजिया रहेगी. मौर्य राजाच्यों ने पढ़ोसी यूनानियों के साथ नेक बरताव किया हागा. यह भारती हुकूमत करने वाले इतने बहादुर थे और इनका राज इतना फैला हुआ था कि इनके हमअसर विदेशियों को इनसे सियासी रिश्ता क्रायम करने में कख का ख्याल होता होगा. दर असल सिकन्दर के हमले का श्रसर श्रमाल मरारिब तक महदूद रहा.

हरोदस नामा यूनानी इतिहासकार—जिसका जन्म इं० पू० 484 में हुआ था—के मुताबिक भारत के बाशिन्दें मिस्र के रहने वालों की तरह गारे थे. उनकी पोशाक सादी थी और वे तीर कमान लेकर बहादुरी के साथ यूनानियों से लड़ते थे. यह बासबूत बात है कि भारती कीजों ने सालिमस में जंग की थी. वह जंग तवारीख़ में अपनी कास

بہت سے اِتہاسکاروں کی یہ رائے رہی ہے کہ جب تک ستندر اپنی بہادر فوج کے ساتھ ویاس قدی کے کفارے پر نہیں یہونچا تب تک ہارت پچھی دلیا کے لئے ایک راز تھا۔ بھارت اور یونان کے درمیان تعلق قایم کرنے کا مہتو سکندر کو ھی دیا جاتا ہے ۔ یورپ کے بڑے عالموں کے مطابق سکندر کے حمله کے بعد ھی ممرھی ملکوں کے رھنے والوں کی نظر بھارتی تہذیب ير يرى . اِس ميں شک نہيں که پنچسی تہذيب کا يه پہلا قدم بھارتی جنتا کو اپنے مذہب اور تہذیب کو بربان کونے والا أیک اچهوت کی شکل میں دکھائی دیا هوکا ، بھارتی تہذیب کو اِس أنت سے بحالے كے لئے چندر كيت سامنے آئے . چندر كيت لے سهلوکس ور زبردست حمله کیا ، چندر گهت کی اِس فتم کا بھارت پر گہرا اثر پڑا ۔ اِس کے نتیجے کی شکل میں بھارت شمال منرب میں اپنی قدرتی هد تک پہرٹیج گیا۔ اِسی وقت مکدھ راہے کی بنیاں پڑی اور کئی صدیرں نک بھارت دشمنوں کے حماری سے محدوظ رہا ، اس بیان میں کچھ زور نہیں که سعندر کے حملے کے فتیجے کی شکل میں بھارتیوں نے بچھمی سیاسی جماعتوں کی نقل کی ، أب نک يه بات نابت نهيل ھوئی ھے که کس کس بارے میں بھارتی حکومتی رویہ پر یونان كا أثر يوا . جب تك أس بات كا ثبوت نهين ملتا تب تك یجھمی دنیا کی جانب بہارت کے قرضدار ہونے کی بات اندازیہ رهیکی ، موریم راجاؤں نے یزوسی یونانیوں کے ساتھ ٹیک ہوتاؤ کیا هوگا . یہ بھارتی حکومت کرنے والے اِتنے بھادر نھے اور اِن کا راج اُتنا پھیلا ھوا تیا که اِن کے همعصر ودیشیوں کو اِن سے سیاسی رشته قایم کرنے میں فخر کا خیال هرتا هوگا . دراصل سعندر کے حمله کا اُدر شمال مغرب نک محدود رها .

ھرودت نامی یونانی اِتہاسکار۔۔۔جس کا جنم ع ء پ ء 484 میں ھوا تھا۔۔۔ کے مطابق بھارت کے باشندے مصر کے رہنے والوں کی طرح گررے تھے۔ اُن کی پرشاک سادی تھی اُرر و۔ تھے۔ تیر کمان لیکر بہادری کے ساتھ یونائیوں سے لڑتے تھے۔ یہ بائبوت بات ہے کہ بھارتی نوجوں نے سالیمس میں جنگ کی تھی۔ وہ جنگ تواریخ میں اُپنی خاص جنگ کی تھی۔ وہ جنگ تواریخ میں اُپنی خاص

جند رکیتی ہے . بہارتی اُس لوائی میں مصری اور کے ساتھ تھے۔ اس سے یہ پوری طرح ثابت ہوتا ہے که سکندر کے حملے سے پہلے بنائیس کو بھارت اور بھارتوں کے بارے میں جانکاری تھی۔ اُس بت مصر رأب بحدرة روم (بهومدهية ساكر) سه سنده ندى تك يهيلا هوأ تها . همهن يه ديكهنا چاهئے كه بهارتي خيالات كا أثر برنائی ادب پر کس طرح پرا ، برنانیوں کی دلچسپی صرف جنعی متعندوں تک می صحدود نہیں تھی بلعہ اُنھوں لے اور بہت سی صلعایی کاریکریوں کی بنیاد ڈالی ، دنیاوی بندیب اور ادب کو آن کی دین زبردست هی و عوت اور تمجب کے ساتھ مصر کی تہذیب کی جانب دیکہتے تھے . آنہیں نے مصر والوں سے آواکوں ( دو ہارۃ یددا ھونا ) کا اُصول ببہل کیا . مصر والم اِس أصول کے لئم بھارتی فہذیب کے قرضدار تھے، کچھ باتوں میں بدتھا کور کا دھرم بودھ اور جین دھرم سے ہراہوں کا درجہ رکھتا ہے ۔ اُس کے اصواوں کے گہرے پہلوؤں کو جانئے سے یہ معلوم ہرنا ہے کہ پیتھا گور کو آپذشدوں کی جانکاری انہی ، ایونائی وچارک ناسی أبنی كتاب میں كلس المهتا هــــ الس میں کوئی شک نہیں که پتہاگور کو جو که بهکول بدھ اللہ کا ہمتصار ھا؟ مصر کے ذریعے پورپ کے ملکوں کی جانگاری تھی ۔ یه یاد رکهنے کی بات ہے که جب که بهتهاگور آیونیا مهن رهتا نها اُس وقت ایشیا کے یونائی ایرانی راج کے بنیاد ڈالنے والے كرو كے التحت تھے ،" "ابہارت كى دين" نامى ابنى كتاب من رالنسن نے کچھ بھارتی اور بونائی پندتوں کے درمیان ایک مذهبي بعدث مباحث كا بهان ديا هـ. رألنس كے عي الفاظ مهريه بيان أس طرح هـــ"ايوسديس ايني همصر ليمهيك هرمونيس آرستو کسمس کے بتائے ایک تحریر کا بھان دیتا ہے . اِس تحریر کے مطابق کچھ بھارتی پندتوں نے ایتینس جائر سقراط سے مذهبي بحث مواحثه كيا تها . أن يندتون في سقراط سے إس كي مذاب کی غرض پوچھی . جواب میں سقراط نے کہا که اِنسانی زندگی کے پوشے کی کہوج ھے؛ جس پر ایک پنڈت نے هنسکو کہا۔ ورجب نک ایشرر کا علم نہوں تب نک انسانیت کا علم اکس طرح هو سکتا هے 🖁 🖰 اِسی بات درنکته چینی کرتے هوئے وہ عالم بتاتا ہے۔ اگر مم ایر سیبیس کے اِس بیان پر اعتبار کریں تو همیں چاہئے که اِن دوقوں ملکوں کے رشتے کے بارے میں اپنی پرانی رایس کو دوهرائیس ."

اِسكندرية كے كلمينت نے، جو عيسى سے دو صديوں بعد هوا نها، لها هے كه پوده دعوم يهارتى أدبوں ميں اپنى خاص جامه ركبتا هے أس نے بار بار اِس بات كو بهى تحوير كيا هے كه اِسكيندرية ميں بوده دهوم رأئج هار يونانى لوگ اينے ادب كے لئے بودهوں كے قرضدار

जगह रखती है. भारती उस लड़ाई में मिस्री फीज के साथ थे. इससे यह पूरी तरह साबित होता है कि सिकन्दर के इमले से पहले यूनानियों को भारत और भारतियों के बारे में जानकारी थी. उस बक्त मिस्र राज बहेरा रूम (भूमध्य सागर) से सिन्ध नहीं तक फैला हुआ था. हमें यह देखना चाहिये कि भारती ख्यालात का असर युनानी अद्ब पर किस तरह पड़ा. यूनानियों की दिलचस्पी सिर्फ जंगी हथकन्डों तक ही महदूद नहीं थी, बल्कि उन्होंने और बहुत सी सनअती कारीगरियों की बुनियाद डाली. दुनियाबी तहजीब और अदब को उनकी देन जबद स्त है. व इज्जत चौर ताज्जब के साथ मिस्र की तहजीब की जानिब देखते थे, छन्होंने भिस्न बालों से आवागवन (दोबारा पैदा होना) का उसल कबल किया, मिस्र वाले इस उसल के लिये भारती तहचीब के कर्जादार थे. कुछ बातों में पेथागोर का धर्म बीद और जैन धर्म से बराबरी का दर्जा रखता है. उसके इसलों के गहरे पहलुओं को जानने से यह मालूम होता है के पेथागोर को उपनिषदों की जानकारी जुरूर थी. 'युनानी वेचारक' नामी धपनी किताब में कास लिखता है- "इसमें होई शक नहीं कि पेथागोर को, जोकि भगवान बुद्ध का मधसर था. मिस्र के जरिये पूरव के मुल्कों की जानकारी शे. यह याद रखने की बात है कि जबकि पेथागोर आयोनिया ाँ रहता था, उस वक्कत पशिया के यूनानी ईरानी राज के ानियाद डालने वाले कुरु के मातहत थे." "भारत की देन" ामी अपनी किताब में रालिन्सन ने कुछ भारती और युनानी हितों के दरमियान एक मजहबी बहस मुबाहिसे का बयान |या है. रालिन्सन के ही अल्काज में यह बयान इस तरह - "इब्सेबियस अपने हमअसर लेखक हरमानियस गस्टोंक्समस के बताए एक तहरीर का बयान देता है. इस हरीर के मुताबिक कुछ भारती पंडितों ने एथेंस जाकर करात से मजहबी बहस मुबाहिसा किया था. उन पंडितों सकरात से उसके मजहब की गरज पूछी. जवाब में करात ने कहा कि इन्सानी जिन्दगी के पेशे की खोज है. ास पर एक पंडित ने हँसकर कहा-"जब तक ईश्वर का स्म नहीं तब तक इन्सानियत का इस्म किस तरह हो कता है ?' इस बात पर नुक्ताचीनी करते हुए वह आलिम ज्ञाता है- "अगर हम इव्सेबियस के इस बयान पर खार करें तो हमें चाहिये कि इन दोनों मुल्कों के रिश्ते बारे में अपनी पुरानी रायों को दोहरायें."

इसकन्दरिया के क्लेमेन्ट ने, जो ईसा से दो सिंद्यों द हुआ था, लिखा है कि बौद्ध धर्म भारती अदबों में पनी खास जगह रखता है. उसने बार बार इस बात को बहरीर किया है कि इसकन्दरिया में बौद्ध धर्म राइज है र युनानी लोग अपने अदब के लिये बौद्धों के क्रर्जदार

# कुनावी विचार घारा और वी**उ** घर्म

हे. जागे वे जिसते हैं कि इस के पैराकार जानागनन (तनामुख) में पेतवार करते हैं जीर मिड्स जैसे मक्तवरों की एजा करते हैं जिनमें उनके देवता (भगवान बुद्ध) की हिंदुयां एकन हैं. बीद लोग अपनी भक्ती की वजह से अपने गुरु को देवता की शकक में देखते हैं.

इस तहरीर से दुनिया के इस हिस्से में बौद्ध पेशवाओं के कामों के उत्पर बढ़ी रोशनी पड़ती है. उसी वक्त दूसरे बौद्ध राजा कनिष्क का नमूद हुआ. उसके राज की इद रोमन राज से पांच सी मील तक थीं. रोमनों से कनिष्क का मेल जोल था. इसकन्दरिया नास्टिक मजहब के फैलाब के लिये वसीष मैदान बना. मुल्क मुल्क से आये तिजारत करने वाले वहाँ पर मिलते थे. वहीं पर टालेमी ने दुनिया के मशहर कुतुबखाने को कायम किया था. ईसाई मजहब के फैलने की वजह से पथेंस तालीमी केन्द्र नहीं रहा. नतीजे की शकल में इसकन्दरिया को तरक्की की चोटी पर पहुंचने का मक़दूर हासिल हुआ. बहुत हद तक नास्टिक मजहब श्राजकल की थियारकी से मिलता जुलता है. नास्टिक मजहब का बयान देते हुए लिखा है कि वह यूनानी लिबास में एक पुराना मजहब है. नास्टिक मजहब का निचोड़ है-"दुख और डर" यह भगवान बुद्ध के चार आर्थ सत्यों का हिस्सा सा ही मालूम होता है.

यूनान और आस पास के मुल्कों में बौद्ध धर्म की बदाने के काम के ऊपर आशोक के पत्थरों पर की लिखी हुई तहरीरें बहुत रोरानी डालती हैं. इनके आलावा यूनानी राजा मिलिन्द ने भिक्षु नागसेन से बौद्ध धर्म का संजीदगी के साथ मुताला किया था. يولالني وجار دهارأ أور بوده دهرم

تھے۔ آگے وے لکھتے ھیں که بدھ کے پیروکار آواگوں ( تلاسع ) میں اعتبار کرتے ھیں آور مڈس جیسے مقبروں کی پوجا کرتے ھیں جن میں آن کے دیوتا ( بھکوان بدھ ) نی ھڈیاں دفنی ھیں۔ بودھ لوگ اپنی بھکتی کی رجھے سے اپنے گرو کو دیوتا کی شکل میں دیکھتے ھیں ۔

اِس تحریر سے دنیا کے اُس حصہ میں بودھ پشہواؤں کے کاموں کے اُرپر بڑی روشلی پرتی ہے ۔ اُسی وقت دوسرے بودھ راجا کنشک کا نمون عوا ۔ اُس کے راج کی حد رومن راج سے باتھجسو میل تک تھی ۔ ررماوں سے کنشک کا میل جول تھا ۔ اُسکندریہ ناسٹک مذھب کے پھیلاؤ کے لئے وسیع میدان بنا ، ملک ملک سے آئے تجارت کوئے والے وہاں پر ملتے تھے ۔ وہیں پر قالیمی نے دنیا کے مشہور کتب خانہ کو قایم کیا تھا ، عیسائی مذھب کے پھیلنے کی وجبہ سے ایٹینس تعلیمی کیندر نہیں رہا ، نتیجے کی شکل میں اسکندریہ کو ترقی کی چوئی پر پہونچنے کا مقدور حاصل ہوا ، بہت حد تک ناسٹک مذھب کا بھان دیتے ہوئی تھیاسنی سے ملتا جلتا ہے ، ناسٹک مذھب کا بھان دیتے ہوئی لیما نہیں ایک پرانا مذھب ہے ، نا ہتک مذھب کا نہوں کے چار میں ایک پرانا مذھب ہے ، نا ہتک مذھب کا نہوں کا حصہ سا ھی معلوم ہوتا ہے .

یونان اور آس پاس کے ملکوں میں بودہ دھرم کو برھانے کے کم کے آوپر اشوک کے پتھروں پر کی لکھی ھوئی تتحریریں بہت ورشنی ذالتی ھیں اون کے علاوہ یونائی راجا سلند نے بھکشو ناگسیں سے بودہ دھرم کا سنجیدگی کے ساتھ مطالعہ کیا تھا ۔

## हिन्दुस्तान की कल्वर पर बौद्ध मजहब की छाप

# هندستان کی کلچر پر بوں م مذهب کی چهاپ

श्राचाये धर्मानन्द कोसम्बी

آچاریه دهمرمانند کو سمبی

#### اهنسا دهرم کا څريعه

महिंसा धर्म का ज़रिया

इन्द्र के मातहत आर्य लोगों ने सप्त सिंधु (सिंधु और पंजाब का) मुल्क फतह किया और इस मुल्क में यह करने की किलासकी को बहुत बढ़ावा दिया. उस वक्त वस्ती हिन्दुस्तान में कुर्वानी के जरिये यह करने का रिवाज नहीं था. इन्द्र ने उस मुल्क पर इमला किया और उसे देवकी के बेटे कृष्ण ने पीछे हटा दिया. यह बात खास रिगवेद में आती है. इन्द्र के हमले में सर्क मुल्क जीवने की बात नहीं थी, इसमें किलासकी का कगड़ा भी था. यह याग की फिलासकी कृष्ण पसंद करते तो शायद यह हमला न होता.

कृष्ण को घोर आंगिरस रिषि ने रूहानी इबादत की तालीम दी. इस परिस्तिश की उत्तरत इबादत, खेरात, नेक अफुआल, अहिंसा और रास्तगोई थी. (अथ यसपोदान मार्जव हिंसा सत्यबन्नमिति ता अस्य दक्षिण: छान्दोग्य उपनिषद 8-17-46). जैन मजहबी नामा निगारों का कहना है कि कृष्ण के गुरु तीथंकर नेमिनाथ और घोर आंगिरस दोनों एक ही रास्त के नाम थे. कुछ भी हो इससे एक बात साबित होती है कि बस्ती हिन्दुस्तान पर बेदों का असर पढ़ने के पहले एक तरह का अहिंसा धर्म राइज था और इसके सब से बड़े पैरोकार देशकी के बेटे कृष्ण थे.

जैनों के अस्तानांग सूत्र में (सफा 26) यह बात आती है कि भारत और परवत मुक्कों में पहला और त्राखिरी छोड़कर बाक़ी 22 तीर्थंकर चातुरयाम धर्म का उपवेश इस तरह देते हैं—सब जानदारों की कुर्बानी को छोड़ना, उसी तरह भूठ का छोड़ना, सब आदत्तादान (चोरी वरीरा) का छोड़ना, सब बहिषी आदानों (परिप्रहों) का छोड़ना, यह फ्जीं कहानी हो सकती है; पर छान्दोग्य उपनिषद में घार अंगिरस की जो नसीहत है, उससे और हमेशा से चली आई हुई इस कहानी से मुकाबला करके देखा जाय तो यह बात साफ़ हो जाती है कि कृष्ण के बक्त में वस्ती हिन्दुस्तान में अहिंसा का मतलब लोग जानते थे.

मिन्समिनकाय के (बारहवें) महासिहनाद सुत्त में बुद्ध के बोधित्वावस्था (क्रव्ल पैदाइरा) में चार तरह की इबादत का अमल करने का बयान मिलता है. इबादत के चार तरीक्षे यानी तपस्विता, रुज्ञता, जगुप्सा और प्रविविक्तता اندر کے ماتحت آرہ لوگوں نے سپت سندھو (سندھ ارر پلجاب کا ) ملک نتم کیا اور اس ملک میں یکیہ کرنے کی دلسنی کو بہت بوھاوا دیا ، اُس وقت وسطی هندستان میں دربانی کے ذریعہ یکھہ کرنے کا رواج نہیں تھا ، اِندر نے اِس ملک پر حمله کیا اور اُسے دیو کی کے بیٹے کرشن نے پیچھے ہتا دیا ، بہ بات خاص رگوید میں آتی ہے ، اِندر کے حملے میں صرف ملک جیکنے کی بات نہیں تھی اِس میں فلسفی کا جبکزا بھی تھا ، یکھالگ کی فلسفی کرشن پسند کرتے تو شاید بی حمله نه ہوتا ،

کرشن کو گهورآنگهرس رشی نے روحانی عبادت کی تعلیم دی. اس بوسات کی آجرت عبادت خیرات نیک افعال دی. اس بوسات گوئی تهی . ( آته ایتتویی دانمارجومهنسا ستیه وجن متی تا آسیه دکشنه: چهاندوگیه آینشد 6-4-17-3). جین مذهبی نامه نگاری کا کهنا هے که کرشن کے گرو تیرتینکو نیمیدته اور گهورانگهرس دنوں ایک هی شخص کے نام تهے. نجه بهی هو اِس سے ایک بات تابت هوتی هے که وسطی عندستین پر ویدوں کا اثر پرنے کے بہلے ایک طرح کا اهنسا دهرم رائم تها اور اِس کے سب سے برتے پهروکار دیوکی کے بہلے رائم تها اور اِس کے سب سے برتے پهروکار دیوکی کے بہلے رائم تها اور اِس کے سب سے برتے پهروکار دیوکی کے بہلے بہری تھے.

جینہں کے استانانگ سوتر میں (صفحہ 266) یہ بات اتی فی کہ بھارت اور ایروت ملکوں میں پہلا اور آخری چھرت کو باقی میرتھنکر چاتوریام دھم کا آپدیش اِس طرح دیتے ھیں۔ سب جانداروں کی قربائی کا چھرتا اُسی طرحجھوت کا چھرتا سب ادتنادان ( چوری وغیرہ) کا چھرتا سب بھردھا آدانوں ( پریکرھوں ) کا چھوتا ، به فرضی کہائی ھو سکتی ہے پہرد و پریکرھوں ) کا چھوتا ، به فرضی کہائی ھو سکتی ہے پہر انگیرس کی جو نصیحت ہے اُس جانر ہیں گھر انگیرس کی جو نصیحت ہے اُس سے اور همیشہ سے چلی آئی ھوئی اِس کہائی سے مقابلہ کر کے دیکھا جائے تو یہ بات صاف ھو جاتی ہے کہ کرشن کے وقت میں وسطی ھادستان میں اهنسا کا مطلب لوگ جانتے تھے .

منجهی منکایه کے (بارهوں) مہاسیهنان سوت میں بدھ کے بودھستارستها (قبل پیدائش) میں چار طرح کی عبادت کا بیان ملتا ہے عبادت کے جار طریقے یعنی تیسویتا ورکشیتا جارپسا اور پرویوکتا

#### هندستان کی کلمچر پر بوده مذهب کی چهاپ

ھیں ۔ ننگ رھنا عتیلیوں کے آرپر ھی بیھک مانگ کو کھانا بال ترز کے نکالنا کانٹوں کی اوات پرلیٹنا وغیرہ اِسطرے کی جسمانی تکلیف برداشت کونے کو تیسویٹا کہتے تھے ۔ کئی سال کی دھول ویسی ھی بدن پر پڑی رھنے دینا اور اُس کو کوئی نہ نکانے اِس کو روئشٹا کہتے تھے ، اِس روئشٹا کی زیادتی کی مثال پورائوں میں بھی پائی جاتی ھے ، رشی لوگوں کے جسم پر دیمک کا گھر بننا اور صرف اُن کی آنکھیں باہر دکھائی دینے کے بیائات آتے ھیں ، پائی کی بوئد تک پر بھی رجم کرتا اِس کو جوگریسا کہتے تھے ۔جو گوگریسا یعنی هنسا (ھتیا) سے نفرت ،

ان ہاتوں یہ جانا جاسکتا ہے کہ اہنسا یا دیا کو عبادت کا ایک طریقہ مانتے تھے ۔ اِن طریقوں پر عمل کرنے والے بدھ کے پہلے موجود تھے ۔ اُن لوگوں میں کرشن کے گرو گھور آنگیوس —جینوں کے کہنے کے مطابق—کا ہونا ممکن ہے ۔ پر اُن کے پاس گروہ نہیں تھے اور جماعتی تعنگ سے وہ اہنسا کا پرچار نہیں توجہ سے کرو دیش میں یکیہ یاگ کی اُھمیت برق تھی اور اہنسا کے خیالات بریاد ہو گئے ،

زیادہ تر مفربی عالموں کی یہ رائے ہکت جینوں کے 23 ویں تھرتھنکو باشرو ناریخی شخص تھے ، اُن کی زندگی میں بھی کالھاک ہاتیں ہیں ہی ہ کار پہلے تقرتھنکروں کی زندگی میں جو ہاتیں ہیں اُن سے بہت کم ہوں ، اِس سب میں خاص تاریخی بات یہ ہے کہ چوبیسویں تقرتھنکو وردهمان کے 178 سال پہلے ہاشوو تیرتھنکو کی مکتی ( موت ) ہوئی ،

وردهمان یا مہاریر تیرتھنکر بدھ کے همعصر تھے' یہ بات مشہور ہے ۔ بدھ کا جنم وردهمان کے جنم کے کم سے کم 15 سال بعد هوا هوگا . اِس کا مطلب یہ ہوا کہ بدھ کا جنم اور پاشرو تھرتھنکر کی مکتی اِن دونوں میں 193 سال کا فرق تھا ، مرنے کے پہلے قریب قریب قریب 50 سال تو یاشرو تیرتھنکو آپدیش دیتے رہے ہوئکے . اِس طرح بدھ کے جنم کے قریب 248 سال پہلے پاشرو منی نے آپدیش دینے کا کام شورع کیا ، نیکرنتھ شرمنوں کی جماعت (سلک) بھی آنھیں نے قایم کی هوگی ،

چریکشت راجا کے راج کے زمانے سے کور دیک میں ویدک نائستی کی شررعات ہوئی ، اُس کے بعد جنہیجئے گدی پر آیا اور اُس نے کرو دیکسمیں مہایکہ کو کے ویدک دھوم کا جھندا پہوایا۔ اِسی وقت کاشی دیکس میں پاشرو تیرتھنکو ایک نئی فلسفی کی بنیاد دال رہے تھے ، پاشرو کی پیدائش بارانسی شہر میں اشوسین نامی راجا کی واما نامی رائی سے سعوئی ایسی کہائی جھن گرنتھوں میں آئی ہے ، اسوقت حاکم زمینداروں کو راجا کہتے تھے ، ایسے ایک راجا کو یہ بیتا ہونا کوئی نامیکن بات نہیں ہے ، پاشرو کی نئی فلسفی کاشی راج میں

हैं, नंगे रहना, हयेलियों के ऊपर ही भील मांग कर लाना, बाल तोड़ के निकालना, कांटों की खाट पर लेटना बरौरा इस तरह की जिस्मानी तकलीफ बरदाशत करने को तपस्विता कहते थे. कई साल की घूल वैसी ही बदन पर पढ़ी रहने देना और उसको कोई न निकाले उसको रुखता कहते थे. इस रुखता की ज्यादती की मिसाल पुराणों में भी पाई जाती है, रिषी लोगों के जिस्म पर दीमक का घर बनना और सिर्फ उनकी आंखें बाहर दिखाई देने के बयानात आते हैं. पानी की बद तक पर भी रहम करना, इसको जोगुप्सा कहते थे.—जोगुप्सा यानी हिंसा (हत्या) से नफरत.

इन बातों से यह जाना जा सकता है कि अहिसा या दया को इबादत का एक तरीक़ा मानते थे. इन तरीक़ों पर अमल करने बाले बुद्ध के पहले मौजूद थे. उन लोगों में कृष्ण के गुरु घोर आंगिरस—जैनों के कहने के मुताबिक़— का होना मुमकिन है. पर उनके पास गिरोह नहीं थे और जमाश्रती ढंग से बह अहिंसा का प्रचार नहीं करते थे. इसी वजह से कुरु देश में यहायाग की अहिंसयत बढ़ गई और अहिंसा के उयालात बरबाद हो गये.

ज्यादातर मरारिबी च्यालिमों की यह राय है कि जैनों के 2 में तीर्थंकर पार्श्व तारीखी शख्स थे. उनकी जिन्दगी में भी काल्पनिक बातें हैं ही, मगर पहले तीर्थंकरों की जिन्दगी में जो बातें हैं, उनसे बहुत कम हैं. इस सब में खास तारीखी बात यह है कि चौबीसवें तीर्थंकर वर्धमान के 178 साल पहले पार्श्व तीर्थंकर की मुक्ति (मौत) हुई.

वर्धमान या महावीर तीर्थंकर बुद्ध के हमझसर थे, यह शत मराहूर है. बुद्ध का जन्म वर्धमान के जन्म के कम से कम 15 साल बाद हुआ होगा. इसका मतलब यह हुआ कि बुद्ध का जन्म और पार्श्व तीर्थंकर की मुक्ति इन हानों में 193 साल का फ़र्क़ था. मरने के पहले करीब करीब 50 साल तो पार्श्व तीर्थंकर उपदेश देते रहे होंगे. इस तरह बुद्ध के जन्म के करीब 243 साल पहले पार्श्व मुनि ने उपदेश देने का काम शुरू किया. निमन्थ अमनों की जमाश्रत (संघ) भी उनहीं ने कायम की होगी.

परीक्षित राजा के राज के जमाने से कुरु देश में वैदिक फ़िलासकी की शुरूआत हुई. उसके बाद जनमेजय गड़ी पर आया और उसने कुरु देश में महायझ करके वैदिक वर्म का मंडा फहराया. इसी वक्त काशी देश में पार्श्व तीर्थंकर एक नई फ़िलासफी की खुनियाद डाल रहे थे. प्रश्व की पैदाइश वाराणसी शहर में—अवश्सेन नामी राजा की वामा नामी रानी से—हुई, ऐसी कहानी जैन प्रन्थों में आई है. उस वक्त हाकिम जमींदारों को राजा कहते थे. ऐसे एक राजा को यह बेटा होना कोई नामुमिकन शत नहीं है. पार्थ की नई फिलासफी काशी राज में

अच्छी तरह टिकी होगी; क्योंकि बुद्ध को भी अपने पहले चेलों को खोजने के लिये बाराग्यसी जाना पड़ा. पार्श्व का धर्म यानी पहले कही हुई आहिंसा, सच्चाई, अस्तेय और अपरिश्रह इन चार उसूलों का था. इतने पुराने जमाने में अहिंसा को इतनी जबर्दस्त शकल देने की यह पहली ही मिसाल है.

सिनाई पहाड़ पर मूसा को ईश्वर ने जो दस फरमान सुनाये, उनमें कुर्वानी मत करो, इसका भी फरमान था. पर उन अहकामों को सुनकर मूसा और उसके शागिर्द पैलिस्टाइन में घुसे और वहाँ खून की निदयाँ बहाई ! कितने लोगों को फ़तल किया और कितनी नीजवान औरतों को पकड़ कर आपस में तक़सीम कर लिया, इन बातों को अहिंसा कहना हो तो फिर हिंसा किसे कहा जाय ? मतलब यह है कि पाश्व के पहले दुनिया में सच्ची अहिंसा से भरा हुआ धर्म या असलियत थी ही नहीं.

पार्श्व मुनि ने एक और भी बात की. उन्होंने अहिंसा को सच्चाई, अस्तेय, और अपरिम्मह इन तीनों उस्तों के साथ जकड़ दिया. इस बजह से पहले जो अहिंसा रिषि मुनियों के ब्यौहार तक ही थी और जनता के बरताब में जिसकी कोई जगह नथी, वह अब इन उस्तों की वजह से सामाजिक या व्यौहार वाली चीज हो गई.

पाश्वे मुनि ने तीसरी बात यह की कि श्रपने नये धर्म के प्रचार के लिये संघ बनाया. बौद्ध दर्शन से हमें इस बात का पता लगता है कि बुद्ध के वक्त जो जमाश्रतें मौजूद थीं उन सब में जैन साधू श्रौर साधू श्रौरतों की जमाश्रत सब से बढ़ी थी.

उत्पर के बयान से मालूम होगा कि रिषि मुनियों की तपस्या की शकल वाली ऋहिंसा से पार्श्व मुनि की दुनियावी भलाई की ऋहिंसा का जन्म हुआ.

## बुद्ध की मुख़्तसिर सवानेह उस्री (जीवनी)

बुद्ध के बारे में बहुत सी जानकारी आजकल आम लोगों को हासिल हैं, फिर भी ज्यादातर बुद्ध जीवनी "बुद्ध चरित कान्य" और "ललित वस्तर" इन दो मन्थों के सहारे लिखे जाने की वजह से ऐसी जबानी कहानियों से, जैसे बुद्ध एक बढ़े राजा का बेटा था बगैरा, बिलकुल फूर्जी नहीं हैं. इसलिये यहाँ पाली मन्थों की बिना पर मुख्तसिर में बुद्ध जीवनी दे देना मुनासिब जान पड़ता है.

कीसल देश के उत्तर में शाक्य क्षत्रियों का एक छोटा सा प्रजातन्त्र (डेमोक्रेटिक) राज था. उस वक्त इस तरह के वीन चार राज थे. इन प्रजातन्त्र राज्यों में हुकूमत बराबर चलने वाली चीज नहीं थी. गाँव गाँव के जमींदार होते थे जो राजा कहलाते थे. वे एक जगह पर जमा होकर अपना اجبی طرح تعی هوگی ؛ کیونکه بده کو بھی اپنے پہلے چیلوں کو کھوجلے

کے لئے وارانسی جاتا ہوا ، پاشرو کا دھرم یعنی پہلے کہی ھوٹی
اینے اسکی اسٹیم اور اپریگرہ اِن چار اُصراوں کا تھا، اِتنے

ہرانے زمالے میں اُھنسا کو اِتنی زبردست شکل دینے کی یہ

ہای ھی مثال ہے ۔

ثناعی پہار پر مرسی کو خدا نے جو دس فرمان ستائے'
اِن میں قربانی مت کرہ' اِس کا بھی فرمان تھا ، پر اُن احکام
کو سن کو موسی اُور اُس کے شاگرد پیلستایں میں گھسے اور
رہاں خون کی تدیاں بہائیں آ کتفے لوگوں کو قتل کیا اور کتنی
نوجران عورتوں کو پکو کر آپس میں تقسیم کو لیا' اِن بانہ
کو اهنسا کہنا ہو تو پھر ہنسا کسے کہا جائے ؟ مطلب یہ ہے که
پشرو کے پہلے دنیا میں سچی انتسا سے بھرا ہوا دھرم یا اصلیت
بھی ہی تھیں ،

پاشرو منی نے ایک اور بھی بات کی ۔ آنھوں نے اھنسا کو سچائی' اسٹیئه اور اپریکرہ ان تینوں اصولوں کے ساتھ جہتر دیا ، اس وجہہ سے پہلے جو اھنسا رشی منیوں کے یموهارنک ھی تھی' اور جملا کے برتاؤ میں ۔جس کی کوئی جگہہ نہ تھی' وہ اب ان اصولوں کی وجہہ سے ساماجک یا بدوهار والی چیز ھو گئی ،

پاشرو ملی نے تھسری بات یہ کی که اپنے نئے دھرم کے پرچار نے لئے سلام بنایا ، بردھ درشی سے ھمیں اِس بات کا پتھ لکتا ہے د بدھ نے وقت جھ جماعتیں موجرد تھیں' اُن سب مهںجیں سادمو اور سادھو عورتیں کی جماعت سب سے بڑی تھی ۔

اُرپر کے بھان سے معلوم ہوگا کہ رشی مقیوں کی تھسیا کی شال والی اعتسا سے ہاشرومنی کی دانیاوی بھالئی کی اعتسا کا جنم ہوآ .

### بده کی مختصر سوانع عمری ( جیونی )

بدھ کے بارے میں بہت سی جانکا ی آجکل عام لوگوں کو داس ھیں' پھر بھی زیادہ تر بدھ جیوئی ''بدھ چرت کاریہ'' ارر ''اللت وستر'' اُن دو گرنتوں کے سہارے پر لکھے جائے کی و دہ سے ایسی زبائی کہانیوں سے' جیسے بدھ ایک بڑے راجا کا بیٹا تھا وغیرہ' بالکل فرضی نہیں ھیں ، اُس لئے یہاں پائی گرنتھوں کی بنا پر منعتصر میںبدھ جیوئی دے دینا مناسب جان پڑتا ھے۔

کوسل دیھ کے آتر میں شاکیہ چھٹریوں کا ایک چھوٹا سا
پرجانفتر ( تیموکریٹک ) راج تھا ۔ اُس وقت اِس طرح کے
تیں چار راج تھے ، اِن پرجانفتر راجھوں میں حکومت ہرابر
چلنہ والی چیز نہیں تھی ، گاؤں گاؤں کے زمیندار ہوتے تھے
جو راجا کہلاتے تھے ، وے ایک جکھ پر جمع ہوکر اپنا

मई '56

( 268 )

مئى 66'

एक हाकिम चुनते ये जो महाराज कहलाता था. वह किसी
मुक्तरेर वक्त के लिये नहीं चुना जाता था. जब तक उसे सब
राजाओं की राय (बोट) हासिल रहती थी तब तक वह
हाकिम का काम करता था, बनों दूसरा अफ़सर चुना जाता
था. कोई बढ़ा काम आ पड़ने पर सारे राज संच की राय
ली जाया करती थी, दूसरे काम यह अफ़सर और सिपहसालार वरोरा किया करते थे.

बुद्ध की पैदाइश के पहिले ही कपिलबस्तु के शाक्यों की आजादी मिट चली थी. उन्हें एक तरह का 'हामरूल' हासिल था; मगर किसी को फांसी देने या जिलाबतन करने का उन्हें हक नहीं रह गया था. उसके लिये कोसल महाराज की इजाजत लेनी पड़ती थी. मगध देश के पहले खंग राजाओं की भी यही कैंकियत थी, उनकी मिली जुली हुकूमत मगध देश में ही कायम हो गई थी. काशी देश की भी खाजादी छिनकर उसकी मिलाबट कौसल देश में हो गई थी. पावा और कुशीनारा के महलों के दो और वैशाली के बिजयों का एक, इस तरह तीन प्रजातन्त्र राज अब तक खाजाद रह गये थे. कौसल खीर मगध देशों में मिली जुली हुकूमत का रवैया मजबूत होता जा रहा था.

ऐसे बक्त में कपिलबस्तु से चौद्द पद्रह मील की दूरी पर शुद्धोधन राजा ( जमींदार ) की माया देवी नाम की रानी के पेट से गौतम का ( बुद्ध का ) जन्म हुआ. बुद्ध चरित काव्य और ललितविस्तर में इसे स्वार्थ सिद्धि और सिद्धार्थ नाम दिया गया है, लेकिन वे पुराने पाली प्रंथों में कहीं नहीं मिलते. सब जगहों पर उन्हें गातम ही कहा गया है और वही उनका असली नाम रहा होगा.

गौतम की पैदाइश के बाद सातवें दिन माया देवी राही मुल्के इन्स हुई और उनके पालने पासने का सारा बोम (माया देवी की छोटी बहन) उनकी मौसी महाप्रजापती गोतमी पर पड़ा. गोतमी भी छुढोधन की खी थी, ऐसा जिक्र पाली में मिलता है. लेकिन इसके साथ छुढोधन की शादी गोतम के जन्म के पहले हुई या बाद में, इसका कोई पता नहीं. लेकिन इतना तो सच है कि गोतम की परवरिश महाप्रजापती ने बड़ी रहम-दिली और होशियारी से की. ऐसा मालूल होता है कि इसी सं बहुत सी आजकल की जबानों में 'माँ मरे पर मौसी जीवे' की कहावत राइज हुई. लेकिन खास माँ के मरने की बात जब नौजवान गातम ने सममी होगी तब उनके ऊपर छुछ न कुछ बैराग्य की परझाई जरूर पड़ी होगी. इस बजह से या पहले जन्म के ऐमाल से, जो भी हो, गोतम का रुख नौजवानी में ही धर्म की तरफ हुआ.

उस जमाने में कौशल देश में, जिसमें शाक्य देश का भी मिलान था, आढार कालाम और उद्रक रामपुत्र यह दो निहायस मशहर योगाचार्य थे. उनमें से पहला योग के सात ایک حاکم چاتہ تھے جو مہاراج کہ لاتا تھا، وہ کسی مقور وقت کے لئے نہیں چناجاتا تھا ۔ جب تک آسے سب راجاؤں کی رائے (روت) حاصل رهتی تهی تب تک وہ حاکم کا کلم کرتا تھا ورثہ دوسرا انسز چنا جانا تھا ، کوئی ہڑا گلم آرڈ نے پر سارے راج سنگھ کی رائے لی جایا کرتے تھے ، دوسرے کام یہ انسر اور سیمسالار وغیرہ کیا کرتے تھے .

بدھ کی پیدائھ کے بہلے ھی کہل رستو کے شاکھوں کی آزادی مت چلی تھی۔ آنھیں ایک طرح کا 'قوم رول' حاصل تھا؛ مگر کسی کو پھائسی دینے یا جلا رطن کوئے کا آنھیں حق نہیں رہ گیا تھا۔ اُس کے لئے کوسل مہاراج کی اِجازت لینی پرتی تھی مگدھ دیھ کے پہلے انگ راجاؤں کی بھی یہی کیفیت تھی ۔ اُن کی ملی جلی حکومت مکدھ دیھی میں ھی قایم ھوگئی تھی ۔ کلشی دیش کی بھی آزادی چھن کو اُس کی مالوت کوسل دیھی میں ھرگئی تھی ۔ پاوا اور کوشی نارا کے ملوں کے کوسل دیش میں اور میدھ دیشوں میں جانئو وہی تارہ کو ملوں کے رجیوں کا ایک' اِس طرح تین پر جانئو راج اب تک آزاد رہ گئے تھے ۔ کوسل اور مکدھ دیشوں میں ملی جلی حکومت کا رویہ مفروط ھوتا جارہا تھا ۔

ایسے وقت میں کھلوستو سے چودہ پندرہ میل کی دوری پر شدودہ بن راجا ( زمیندار ) کی مایا دیوی نام کی رانی کے پیت سے کوتم کا ( بدھ کا ) جنم ہوا ، بدھ چرت کاویۃ اور للت وستر میں آسے سوارتہ سدھی اور سدھارتہ نام دیا گیا ہے لیکن وسے پرانے پالی گرنتہوں میں کہیں نہیں ملتے ، سب جگہوں پر آنہیں گوتم ہی کہا گیا ہے اور وہی اُن کا اصلی نام رہا ہوگا ۔

گوتم کی پیدائش کے بعد ساتریں دن مایا دیوی راهی ملک عدم هوایی اور اُن کے پالنے پوسنے کا سازا بوجھ ( سایا دیوی کی چھوٹی بہن ) اُن کی موسی مہاپرجاپتی گونمی پر پڑا ، گوتمی بھی شدهودهن کی استری تھی' ایسا ذئر پالی میں مانا ہے ، لیکن اِس کے بانھ شدهودهن کی شادی گرتم کے جمّم کے پہلے هوائی یا بعد میں' اِس کا کوئی پته نہیں ، لیکن اِننا تو سیچ ہے نہ کوتم کی پرورش مہا پرجاپتی نے بڑی رحمدلی اُور هوشیاری سے کی ، ایسا معلوم ہوتا ہے کہ اِسی سے بہت سی هوشیاری سے کی ، ایسا معلوم ہوتا ہے کہ اِسی سے بہت سی اَجکل کی زبانوں میں 'ماں مرے پر موسی جھوے' کی تھارت وائیم رائیج هوئی ، لیکن خاص ماں کے مرئے کی بات جب نوجوان گوتم نے سمجھی شوگی تب اُن کے آرپر کچھ نہ کچھ ویراگیه گوتم نے سمجھی شوگی ، اِس وجھ سے یا پہلے جنم کے اعمال سے' جو بھی ہو' گوتم کا رخ نوجوانی میں ھی دھرم اعمال سے' جو بھی ھو' گوتم کا رخ نوجوانی میں ھی دھرم ا

اُس زمانے میں کوسل دیش میں' جس میں شاکیہ دیش کا بھی میلاں تھا' آذار کالام اور آدرک رام پتر یہ دو نہایت مشہر یرکاچاریہ تھے۔ اُن میں سے پہلا یوگ کے سات

दर्जी' का उपदेश देता था और दूसरा आठ दर्जे का. आडार कालाम का एक आश्रम कपिलवस्तु शहर के पास था. षः। जाकर गातम योगाभ्यास करने लगे और उन्होंने योग के पहले दर्जे (प्रथम ध्यान) की मश्क की.

शुद्धोधन राजा श्रीर दूसरे शाक्य राजे खुद खेत में जाकर खेती का काम करते थे श्रीर नौकर चाकरों से भी काम कराते थे. इसी तरह गौतम भी खुद खेती करते श्रीर करवाते थे. मगर उनमें एक खूबी यह थी कि वह खेत पर कुर्सत के वक्त एक जामुन के पेड़ के नीचे बैठकर ऊपर कहे हुए प्रथम ध्यान की मश्क करते थे. जातकश्चह कथा में इसके बारे में श्रजीब बाश्यसर जिक्त मौजूद हैं.

श्रव यह सवाल श्राया कि गौतम ने 21 साल की उम्र में घर क्यों छोड़ा १ लिलत विस्तर वरोरा मंथों में इसके जो बजूहात दिये गये हैं, बन्हें सिर्फ कोरी कल्पनाए नहीं समक्षना चाहिये. 29 साल के अपने हाथ से खेती करने वाले श्रादमी ने बुड़ा, बीमार श्रीर मुद्दां न देखा हो, यह मुम्किन नहीं हैं, बुढ़ापा, मुसीबत श्रीर मौत के ख्यालात गौतम के दिल में जहर श्राते होंगे. लेकिन मकान से किनाराकशी के लिये यह वजहें काकी नहीं थीं.

शाक्यों के पड़ांसी श्रीर (रश्तेदार कोलिये राजे थे. वे भी कौसल राज के मातहत हुए थे. लेकिन फिर भी शाक्यों श्रीर कोलियों में रोहिनी नदी के पानी के बारे में बार बार जंग हुआ करती थीं. इसका नतीजा यह होता था कि दोनों को ही खेती के लिए काफी पानी नहीं मिलता था श्रीर श्रापस में लड़ने से बहुत नुक्रसान होने के श्रलावा कौसल राज का इन छोटे राज्यों के अन्द्रह्ती बन्दोबस्त में दखल देने का बार बार मौका मिलता था. इसलिये यह भगड़ा गौतम को बुरा लगना क द्रती था. षाखिर में किसी मौके पर कालियों के खिलाफ हथियार षठाने से गौतम ने साफ इन्कार कर दिया. इससे एक मुश्किल मामला खड़ा हो गया. इसका नतीजा यह होने वाला था कि शुद्धांधन के सारे खान्दान को शाक्य देश से जिलावतन किया जाता. इस मुसीबत से छटकारा पाने के लिये एक ही रास्ता था कि गौतम परित्राजक (साधु) हो जाते श्रीर उन्होंने उसी रास्ते का मंजूर किया. इथियार उठाना क्षत्रियों का धर्म है, यह कहकर उनके दोस्तों और पहितों ने जरूर कोशिश की होगी. लेकिन अर्जुन की तरह गौतम का यह जरा सा वैराग्य का जाश न था. इसलिये खद भगवान भी गोतम को हथियार उठाने के लिये मजबूर नहीं कर सकते थे.

शाक्य और कोलियों की तरह छोटे छोटे प्रजातन्त्र राजे आपस में लड़कर कमजार हा गये थे और उनमें से तीन को छोड़कर बाक्षी राजों की आजादी छिन गई थी. درجوں کا آپدیھی دیتا تھا اور دوسرا آٹھ درجے کا، آڈار کا لام کا ایک آثرم کلھاؤستو شہر کے پاس تھا ، وہاں جاکر گرتم ہوگا بھیاس کرنے آگے لور آنھوں نے ہوگ کے پہلے درجے ( پرتھم دھیاں ) کی ستق کی •

شدھودھی راجا اور اور دوسرے شاکیہ راچے خود کھیت میں جاکر کھیٹی کا کام فرتے تھے اور نبوکر چاکروں سے بھی کام کواتے تھے ، سی طرح گوتم بھی خود کھیٹی کرتے اور کروائے تھے ، سکر اُن بیں ایک خوبی یہ تھی کہ وہ کھیت پر فرصت کے وقت ایک جاس کے پھڑ کے نبیجے بیٹیکر اُوپر کھے ھوٹے پرتیم دھیاں کی مشق کرتے تھے ، جاتک آئھ کتیا میں اِس کے بارے میں عجیب مشق کرتے تھے ، جاتک آئھ کتیا میں اِس کے بارے میں عجیب

آب یہ سوال آیا کہ گوتم نے 29 سال کی عمر میں گور ایس کے جو ایس چھوڑا آ الت وستر وغیرہ گرنتھوں میں اِس کے جو جو جوہات دائے گئے ھیں' انھیں صرف کوری کلیفائیں نہیں سمجھنا چاہئے ۔ 29 سال کے آپنے ھاتھ سے کھیتی کرنے والے آدمی نے تھا' بیمار اور مودہ نہ دیکھا ھو' یہ ممکن نہیں ہے ۔ بوھاپا' صیبت اور موت کے خیالات گوتم کے دال میں ضرور آتے ھونکے' یمیں مکان سے کا اولائشی کے لئے یہ وجھیں کانی نہیں تھیں ۔

شاکیوں کے پڑوسی اور رشتددار کولیٹے راچے تھے ، وسے بھی نوسل راج کے ماتحت هوئے تھے۔ ليكن پهر بھى شاكيوں اور كولهوں یں روھنی ندی کے پائی کے باے میں بار بار جنگ ہوا کرتی ھیں . اِس کا نتیجہ یہ هوتا تھا که دونوں کو هی کھیتی کے لئے اسی یائی نہیں ملتا تھا اور آیس میں ارتے سے بہت نقصان اولے کے علاوہ کوسل رأج کو اِن چہویّے راجیوں کے احدورتی بدوست میں دخل دینے کا بار بار موقع ملتا تھا ، اس لئے یہ جهارًا گوتم کو برأ لگنا قدرتی تها ۔ آجر میں کسی موتثم پر اولهس کے خلاف متھار اُنھانے سے گوتم نے صاف افکار کردیا ، اِس سے ایک مشکل معامله دورا هوگیا . اِس کا نتیجه یه هونے والا یا کے شدودھوں کے سارے خاندان کو شاکیہ دیش سے جالرطان نوا جانا ۔ اِس مصیبت کے چہتکارا یائے کے لئے ایک عی راسته بھا کہ گوتم پرپوراجک (سادھو) ھو جاتے اور آنھوں نے آسی راستہ کو منظور کیا ۔ هتیار اُنهانا چهتریوں کا دهرم هے علم کہکر اُن کے دوستیں اور ہنڈتوں نے ضرور کوشھی کی ھوئی ، لیکن آرجن كى طرح كونم كا يه ذراسا ويراكيه كا جوهل نه تها . اس الح خود بیکوان بھی گوتم کو ہتیار اُٹھانے کے نگے مجبور نہیں فرسكت تهي

شائیہ اور کولیوں کی طرح چہوٹے چھوٹے پرجاننتر راجے اَپس میں لڑ کر کنزور ہوکئے تھے اور ان میں سے تین کو چھر کر باقی راجوں کی آزادی چھن گٹی تھی ۔ हांग राजों को जीतकर मगध महाराजा ने अपने मुक्क में शामिल कर लिया था. काशी राजाओं, शाक्यों और कोलियों को जीतकर कीसल महाराज ने अपने मासहत कर लिया था. फिर भी क्षत्री के कर्ज के नाम पर आपस में लड़ते रहना कितनी बुरी बात थी! और वह गीतम को पसन्द नहीं हुआ, इसमें ताज्जुब ही क्या.

गोतम से रारमीले, नर्म दिल और अजीज लड़के को साधू होने के लिए इजाजत देना मामूली बात नहीं थी. इसके बारे में महाप्रजापती गोतमी और शुद्धाधन राजा को कितना रंज हुआ, इसका थोड़ा सा बयान मज्मिमनिकाय के अरिपरियेसनसुत्त में आया है. खान्दान के बचाने के लिए दूसरा कोई रास्ता न होने से उन्होंने राते राते गोतम का इजाजत दी और गोतम आडार कालाम के आश्रम में चले गये. 'सिर्फ खान्दान का बचाना ही गोतम की मंशा होती तो बह सात साल तक जबर्दस्त इबादत की मश्क करके अन्दरूनी रोशनी का रास्ता नहीं खोजते. साधुओं की फिलासफी में आदमी आदमी के मगड़ों के मिटाने का कोई रास्ता जरूर मिलेगा, यह उनका यक्रीन था. मकान छोड़ने के अपर बयान किये हुए वजूहात को ख्याल में रखने से गातम की कक्रीराना जिन्दगी के सारे कामों पर रोशनी पड़ती है.

आडार कालाम के ध्यान मार्ग से दुख दुई मिटाने का सवाल इल नहीं हो सकता था, इसलिय उसको छांडकर उद्गर रामपुत्र का सहारा लिया. यांग का एक श्रीर दुर्जी हासिल करने से भी कुछ कायदा दिखाई न दिया, इसलिये **बद्रक रामपुत्र को छोड़कर गातम राजगृह का चले गये.** उस जमान में बड़े बड़े अमन संघ के नता इस शहर के श्रास पास बार बार श्राया जाया करते थे. उन नेताओं का पर्म उपदेश सुनकर कुछ रास्ता निकालना गांतम की रारज होनी चाहियेथी. वे सब नेता कई तरह के आत्मवाद (कहानी ताल्लुक़) बताते थे. कई एक नता आत्मा (कह) का अमर और दूसरे फ़ना होने वाली चीज मानते थे. इस तरह श्रात्मा के बारे में इन लागों में किसी तरह की एक राय नहीं थी. लेकिन वैद्यक हिन्सा के जानिब नकरत और किस तरह की इबादत करनी चाहिये, इसमें क़रीब क़रीब सभी एक राय थे. इस हालत में गातम ने यह साचा कि इबादत के बरौर रूहानी खुशी हासिल न होगी और दुख दर्द मिटाने का रास्ता नहीं मिलेगा. इसलिये राजगृह की स्रोह कर वे उठवेला (बाजकल की गया) की तरफ गये ब्योर वहाँ क़रीब 7 साल तक इबादत की. इनके इस वक्त के कोई कोई तजरने त्रिपिटिक में मीजूद हैं. इन समीं को यहाँ तफसीलवार जिक्र करने से श्रीर मजमून बढ़ने के डर से यहाँ बयान नहीं किया जा रहा है.

आखिरकार गौतम इस कैसले पर आये कि अमन

نگ راجوں کو جیت کر مکدھ مہاراجہ نے اپنے ملک میں شامل ر لیا تھا ۔ کاشی راجاؤں' شاکیوں اور کولیوں کو جیت کو کوسل ہاراج نے اپنے ساتھت کر لیا تھا ۔ پھر بھی چھاری کے فرض کے ام پر آپس میں ارتے رہنا تتنی بری بات تھی ! اور وہ گوتم کو سند نہیں ہوا' اِس میں تعجب ھی کیا ۔

گونم سے شرمیلے' درم دال اور عزیز اترکے کو سادھو ھولے کے اُلے اُلے الجازت دینا معمولی بات نہیں تھی ۔ اِلی کے بارہ میں بایرجاپتی گرتمی اور شدہودھی راجا دو کتنا رئیج ھوا' س کا تھوڑا سا بیاں منجھی منهکایہ کے اُریہ پریئے سی سوت میں یا ھے ۔ خاندان کے بچانے کےائے دوسرا کوئی راستہ نہیں ھوئے سے نھوں نے روتے روتے روتے گوتم کو اُجازت دی اور گوتم آدارکالم کےاشرم میں پلے گئے ، صرف خاندان بچانا ھی گوتم کی منشا ھوتی تو وہ سات مال تک زبردست عبادت کی مشتی کو کے اندورونی روشنی کا استہ نہیں آدمی آدمی کے اُلی راستہ ضوور مایکا' یہ اُن کا یقین تھا ۔ چھکڑوں کے مثانے کا کوئی راستہ ضوور مایکا' یہ اُن کا یقین تھا ۔ چھکڑوں کے مثانے کا کوئی راستہ ضوور مایکا' یہ اُن کا یقین تھا ۔ کہنے سے گوتم کی فقیرانہ زندگی کے سارے کاموں پر روشنی کہنے سے گوتم کی فقیرانہ زندگی کے سارے کاموں پر روشنی

آقار کاللم کے دھیاں مارگ سے دکھ درد مثانے کا سوال حل مهیں هو سکتا تها اِس لله اُس کو چهور کر اُدرک رام یکر کا سہاراً لیا ، برگ کا ایک اور درجہ حاصل کرنے سے بھی کچھ عایده دکهائی نه دیا ایس نئے ادرک رام پتر کو چهور کر گوتم إركرة) كو چلے كئه . أس رمالے ميں برے برے شرمن سنكه كے کے نینا اِس شہر کے اُس باس بار بار آیا جایا کرتے تھے ۔ اُن نیکاوں کا دھرم آیدیھی سنکر کنچھ راستہ نکانیا گوتم کی غرض ہوئی چاہئے تھی ، وے سب نینا دئی طرح کے أتمواد (ررحانی نعاق ) بتاتے نہے . دئی ایک نیتنا أسا ( روح ) کو مر اور دوسرے منا عولے والی چیز مانتے تھے. اِس طرح أتما كے ارے میں ان لوگوں میں کسی طرح کی ایک رائے فہیں تھے ۔ یکن ویدک هنسا کے جانب نفرت اور نس طرح کی عبادت ارنی چاملے اس میں قریب قریب سبھی ایک رائے تھے ، اس حالت میں گوتم لے یہ سوچا کہ عبادت کے بغیر روحائی خوشی ھاصل نے ھوگی اور دکھ درد متابے کا راسته نہیں ملیکا ، اِس الله راجارة كو چهرز كر وے أررويلا ( آجال كى كيا ) كى طرف للم أور رهال قريب 7 سال تک عبادت کی . أن كم أس وقت کے کوئی کوئی تجربے تربیتک میں موجود ھیں ، آن سبس کا بھار تفصیل وار ذکر درنے سے اور مضمون بڑھنے کے در سے یہاں بیان ہیں کیا جارہا ہے ۔

آخرکار گوتم اس فیصلے پر آئے که شرمی

जमाश्रत में सबसे बड़ा खतरा श्रात्मवाद से है. इतना त्याग श्रीर तप करके भी श्रात्मवाद के जाल में फंस जाने से श्रमन दुनिया के भगड़ों से छुटकार का रास्ता नहीं बता सकते. इसलिये श्रात्मवाद के मेल के श्रलावा कोई रास्ता होना चाहिये. दूसरी बात उनके मन में यह श्राई कि श्रमनों का सब तरह का उस्ल श्रीर नेक चलनी मुनासिब होने पर भी तप बेकार है.

गोतम के साथ पांच तपस्वी (साधू) थे. वे सममते थे कि गोतम किसी नये तरीके का पता लगावेंगे. 'लेकिन जब वह आत्मवाद का खतरा जाहिर करने लगे और जिस्म का तकलीक देने वाली इवादत छोड़कर जिस्म को कायम रखने बाली शिजा इस्तेमा करने लगे तब उन साधुत्रों को यक्कीन हो गया कि गोतम मजहबी मैयार से गिर गये और उनको छोड़कर वे काशी चले अध्ये, लेकिन गोतम ने सत्र का दामन नहीं छोड़ा, लगन की राह पर उन्होंने अपना क्रदम आगे बढाया. आखिरकार आजकल जिसे बुद्ध गया कहते हैं, उस जगह एक पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर वैशाखी पृश्चिमा की रात में गोतम ने अपना नया रास्ता श्रक्तयार किया. उनमें से पहली मंजिल जिस्मानी ऐश श्राराम का फुना होना है. इस मंजिल में गुमराह होने से दुनिया का बहुत बड़ा हिस्सा श्रापस में लड़ता, कटता श्रीर तकलीक उठाता है. इसलिये यह छाड़ देने के काबिल है. यह छोड़कर जो सूफी हो जाते हैं, वे इवाइत में लग कर कई तरह से जिस्मानी ईजाएं बर्दारत करते हैं, जिससे कोई मवलब हासिल नहीं होता. इसलिये इस किस्म की इवादत भी बेकार है. यह दो आखिरी मंजिलें छोड़कर बीच का रास्ता चार आर्थ सत्यों: (अस्लियतों) का है.

पहला आयं सत्य यह है कि दुनिया पैदाइश, बुढ़ापा, मौत, तकलीक से और न मिल सकने वाली चीज की डम्मीद में दुख डठा रही है. इसकी बजह सिर्फ आदमी की प्यास है. प्यास से ही सारी तकलीफ पैदा होती है, यह दूसरा आर्य सत्य है. इस प्यास के छोड़ने से ही तकलीक से निजात मिल सकती है, (ऐशपरस्ती या तप से छुटकारा नहीं मिलता) यह तीसरा आय सत्य है. इस प्यास के मिटाने के लिये सा बरताब होना चाहिये, यह चौथा आर्य सत्य है, जिसे अध्टांगिक मार्ग बताता है. वह अष्टांगिक मार्ग यह है—

सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाचा, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक्स्युति और सम्यक् समाधि

इस रास्ते का मतलब यह है कि आद्मी आद्मी के साथ जिस्म, जबान और दिल से बक्त के मुताबिक बरताब कर अपनी प्यास को मिटावे. इसी रास्ते से आद्मी आव्मी में, खान्दान جماعت میں سب سے ہوا خطرہ آنمواں سے ہے۔ اِتنا تھاگ اور نہا کرے بھی آنمواں کے جال میں پبلس جائے سے شرمن دنیا کے جبکورں سے چھٹکارے کا راستہ نہیں بنا سکتے ۔ اِس لئے آنمواں کے میل کے عارہ کوئی راستہ مونا چاہئے ۔ دوسری بات اُن کے میں میں یہ آئی که شرمانوں کا سب طرح کا اُصرال اور قیک چلنی مناسب عربے پر بھی تپ بیکار ہے ۔

گونم کے ساتھ بانچ تیسوی ( سادھو ) تھے . وقد سمنجھتے تھے ك كونم كسى نئه طريقه كا يته لكاوينكه . ايكن جب وه أنموان لا خطره ظاهر کرنے لکے اور جسم کو تعلیف دینے والی عبادت چهوزکر جسم کو قایم رکھنے والی عذا استعمال کولے لگے تب أن سادهوؤں کو یقین هوگیا که گوتم مذهبی میمار سے گرگئے اور ان کو چھوڑکر رے کاشی چلے آئے ۔ لیکن گرتم نے صبر کا داس نہیں چھوڑا ، اکن کی راہ پر اُنھوں نے اپنا قدم آگے برتھایا . آخرکار آجمل جسم بدھ گیا کہتم میں' اُس جکه ایک پیپل کے ریج کے نیجے بیٹھکر ویشاکھی پورنیما کی رأت میں گوتم نے اپنا نيا راسته اختيار كيا . أن مين سے پہلى منزل جسمانى عيش آرام كا دنا بعونا هـ ، أس منزل مين كمراه بعول سه دنها كا بهت بَا حصم آيس مين ارتاء كلت أور تكليف أثباتا هي أس لله یہ چھوڑ دینے کے قابل ہے ۔ یہ چھوڑکر جو صوفی ہرجاتے میں' رے عبادت میں لگ کر نئی طرح سے جسمانی ایڈائیں برداشت الرَّرِ عهر الجس سے كوئى مطالب حاصل نهين هوتا ، أِس لله اس قسم کی عبادت بھی بیکار ہے ، یہ دو آخری منزلیں چھرزکر بني كا رأسته چار آريه ستيوس ( اصليتوس ) كا هـ .

پہلا آرید ستیت یہ ہے کہ دنیا پیدائش' برتھاپا' موت' تعلیف اور نہ مل سکنے والی چیز نی آمید میں دنج آٹھا رھی ہے ۔ اِس کی وجهت صرف آدمی کی پیاس ہے ۔ پیاس سے عی ساری ملیف پیدا ھوتی ہے' یہ دوسوا آرید ستید ہے ۔ اِس پیاس کے چھرزنے سے ھی تعلیف سے نجات مل سنتی ہے' ( عیش پرستی سے یا تپ سے چھٹکارا نہیں طتا ) یہ تیسرا آرید ستید ہے ۔ اِس بیاس کے مثانے کے لئے کیسا برتاؤ ھونا چاھیئے' یہ چوتھا آرید ستید ہے ؛ جسے ائتانکک مارگ بتاتا ہے ۔ وہ اشتانکک مارگ یہ ہے۔

سیک دوشتی سمیک سلکلپ سمیک واچا سمیک کرمانت سمیک آجیو سمیک ویابام سمیک اِسموتی اور سمیک سمادهی .

اِس راستے کا مطلب یہ ہے کہ آدمی آدمی کے سانھ جسم' زبان اور دل سے وقت کے مطابق برناؤ کو اپنی پیاس کومتارہے ، اِسی راستے سے آدمی آدمی میں' خاندان

#### हिन्द्रस्तान की कल्बर पर बौद्ध मजहब की छाप

خاندان میں اور ملک ملک میں جو جھکڑے 'آتھتے میں' وے سب مث سکتے میں ۔ صوف شاکیوں اور کولیوں کا می الہیں ساری دنیا کے لئے اِس راستے کو ڈھونڈھ نکالنے سے گوتم کا دل کتنا زرشن ہوا' اِس کا محض اندازہ می لگایا جا سکتا ہے'۔ یہیں سے اُن کو بدھ ( گیائی ) کے نام سے نامزد کرتے میں ۔

هنستان کی کاهور پر بوده مذهب کی چهاپ

खान्दान में भीर मुल्क मुल्क में जो मगदे बठते हैं, वे सब मिट सकते हैं. सिर्फ शाक्यों भीर कोलियों का ही नहीं, सारी दुनियां के लिये इस रास्ते को ढूँढ निकालने से गौतम का दिल कितना रोशन हुआ, इसका महज अन्दाजा ही लगाया जा सकता है. यहीं से उनके पैरोकार उनका बुद्ध (क्वानी) के नाम से नामजद करते हैं.

گوتم بدھ تو ھو گئے' لیکن آن کا نیا رأستا سننے والا تھا کون ہ جس میں درج کا کچھ بھی رشتہ نہیں ہے اور تپ (گہری عبادت) کی کھلم کھلا متخالفت کی جاتی ہے' وہ رأسته سن کو کوئی بھی صوفی بوکھلا جانا ۔ اِس لئے ایک ھی اُمید ھی کہ شاید جو پانچ سادھو گوتم کے ساتھ رھتے تھے' وے گوتم بھ کا یہ نیا راستہ سمجھ سکیں ۔ اِس لئے بدہ نے مکدھ دیھی میں رہنے والے سارے سادھوؤں کو چھوڑ کو کڑی گرمی کے دنوس میں نغکے پاؤں گیا سے کاشی تک کوچ کیا اور بہت متحلت سے این بانچ سادھوؤں کو سمجھایا ،

गोतम बुद्ध तो हो गये, लेकिन उनका नया रास्ता सुनने बाला था कीन ? जिसमें रूह का कुछ भी रिश्ता नहीं है और तप (गहरी इबादत) की खुल्लम खुल्ला मुखालिफत की जाती है, वह रास्ता सुनकर कोई भी सूफी बीखला जाता. इसिलये एक ही उम्मीद थी कि शायद जो पांच साधू गोतम के साथ रहते थे, वह गोतम बुद्ध का यह नया रास्ता समम्भ सकें, इसिलये बुद्ध ने मगध देश में रहने वाले सारे साधुआं को छोड़कर कड़ी गरमी के दिनों में नंगे पांच गया से काशी तक कृच किया और बहुत मेहनत से उन पाँच साधुओं को समकाया.

استے کے پتہ لگانے میں بدھ کو بہت تعلیف پرداشت کرنی پڑی ، کرنی پڑی ، کرنی پڑی ، کرنی پڑی ، ایر معجهالے میں بھی کانی کوشش کرنی پڑی ، ایکن اِس کے یڑھئے میں زیادہ وقت نہیں لگا ، دوسرے سادھرؤں کے گرولا بہت پرائے تھے اور اُن گروھوں کے نیتا بھی بدھ سے بہت بدھ تھے ، بدھ سب میں کم عمر تھے ، بھر بھی ن کے اِس نئے راستے کا اثر عام لوگوں پر جلد ھی پڑا ، بدھ کی ندگی میں ھی اُس کی بڑی شہرت ھوئی اور مدھیم دیش ندگی میں ھی اُس کی بڑی شہرت ھوئی اور مدھیم دیش (وندھیم عمالیم پنجاب اور بنگال کے بیچ کے دیش ) میں بھے کے طبقے کے لوگوں نے اُن کے سنگھ کے لیے بہت سے وعاد نموائے ،

इस रास्ते के पता लगाने में बुद्ध को बहुत तकलीफ़ वर्दाश्त करनी पड़ी, और समफाने में भी काकी कोशिश करनी पड़ी. लेकिन इसके बढ़ने में ज्यादा बक़्त नहीं लगा. दूसरे साधुओं के गिरोह बहुत पुराने थे और उन गिरोहों के नेता भी बुद्ध से बहुत बुद्धे थे. बुद्ध सब में कम उन्न थे. किर भी उनके इस नये रास्ते का असर आम लोगों पर जल्द ही पड़ा. बुद्ध की जिन्दगी में ही उसकी बड़ी शोहरत हुई और मध्य देश (विध्य, हिमालय, पंजाब और बंगाज के बीच के देश) में बीच के तबक़े के लोगों ने उनके संघ के लिये बहुत से बिहार बनवाये.

> آجکل ایسی ایک مائی هوئی بات هے که برده دهرم سانکھیم تترگیاں سے نظلا لیکی یہ بہت غلط ہے ، سانکھیوں کا الموگیاں بدھ کے وقت میں بنیادی طریقے سے موجود تھا ۔ اُس کا اگر بدھ پر کچھ اثر پرا ہو تو وہ یہی ہے که سانکھ کے معرفت ذکر کی هوئی آنما میں بدھ کو کچھ بھی مطلب شہیں دکھائی یہا ، بلکھ بدھ کی یہ یکی رائے ہو گئی ته اِس طرح کی آتما کو مالها فقصان به هم يده پرنسي همعصو جماعتكا در يوا هو تو وه باشرو ناتھ کے آوپر بیان کام ہوائے چار اصوابی والی جماعت کا فی موسکتا ہے ، بدھ کے اشاانک راستے کو انہیں اصوارس کی لی ہوموتروں سمجہلا چاہئے ، لیکن اِس کے ساتھ جین صوفی جو عبادت کا ابنا خاص طریقه شامل کر دیتے تھے اس کی بدھ لے صاف صاف مطالفت کی . اُسی وقت میں جین اُتما کی ملیت بھی ماننے لکے تھے ۔ اُس کو بھی بدھ نے منظور نہیں لیا . بدھ کے ونت میں جو بہت سے مشہور سنکے نیے اُن میں یک جینوں کو چھور کر بانی سب سکھ کنچھ صدیوں میں ھی ہٹ گئے ،

आजकल ऐसी एक मानी हुई बात है कि बौद्ध धर्म सांख्य तत्वज्ञान से निकला, लेकिन यह बहुत रालत है. सांख्यों का तत्वज्ञान बुद्ध के वक्त में बुनियादी तरीक़े से मीजूद था. उसका अगर बुद्ध पर कुछ श्रसर पड़ा हो तो वह यही है कि सांख्य के माफ्तेत जिक्र की हुई आत्मा में बुद्ध का कुछ भी मतलब नहीं दिखाई दिया. बल्क बुद्ध की यह पक्की राय हो गई कि इस तरह की आत्मा को मानना तुकसानदृह है. बुद्ध पर किसी हमश्रसर जमाश्रत का श्रसर पड़ा हो तो वह पार्श्वनाथ के ऊपर बयान किये हुए चार उसलों वाली जमाश्रत का ही हो सकता है. बुद्ध के श्रष्टांगिक रास्ते को उन्हीं उसलों की बढ़ोत्तरी सममना चाहिये. लेकिन इसके साथ जैन सुकी जो इबादत का अपना खास तरीका शामिल कर देते थे, उसकी बुद्ध ने साफ साक मुखालिफत की. इसी वक्त में जैन आत्मा की असलियत भी मानने लगे थे. उसको भी बुद्ध ने मंजूर नहीं किया. बुद्ध के वक्त में जो बहुत से मशहूर संघ ये उनमें एक जैनों को छोड़कर बाक्री सब सङ्घ कुछ सदियों में ही मिट गये.

هماری رائے میں جین سنا کے بچے رمنے کی خاص وجہہ

हमारी राय में जैन सङ्घ के बच रहने की खास वजह

डनका चातुरयाम धर्म है, न कि उनके तरीके की इवादत और रूहानी ताल्लुक !

#### अशोक और वीद्व धर्म

हालांकि बौद्ध सङ्घ का आम लोगों पर काफी असर था, फिर भी सम्राट अशांक का जोर अगर नहीं मिलता तो बौद्ध धर्म का भारत में और भारत के बाहर इतना फैलाव न हो सकता.

जैनों का कहना है कि चन्द्रगुप्त मौर्य जैन मत का था और यह ठीक भी हो सकता है. मगर चन्द्रगुप्त ने यहों को बन्द करने की कोशिश नहीं की. उसने खुद यहा नहीं किये और बाह्यनों को इस बारे में बढ़ावा नहीं दिया. इसी बजह से बाह्यन तबक के बंध लिखने वालों ने उसे शुद्ध खान्दान से कहा होगा. उसका लड़का बिन्दुसार किस मजहब का था, इसका पता नहीं लगता. वह किसी भी मजहब का रहा हो, उसने अपने राज का बन्दोबस्त करने के अलावा और कुछ किया हो, ऐसा नहीं जान पड़ता. उसका बेटा बशोक जरूर अमन संस्कृति का—और उसमें भी प्यादा से ज्यादा बौद्ध धर्म का—पूरा हामी बना.

ताजपोशी के बाद आठवें या नवें साल अशोक ने कलिंग देश पर चढ़ाई की. यहाँ एक लाख आदमी मारे गये और ढेढ़ लाख आदमी पकड़ कर लाये गये. इससे कलिंग देश में बड़ा हाहाकार मचा और अशोक के दिल पर उसका जबदंस्त असर पड़ा. वह जितना ही क्रांतिल था उतनी ही रहमदिल बना. उस बक्त जो अमन पंथ मौजूद थे, उनमें से बौद्ध पंथ उसे खासकर अच्छा लगा और वह बुद्ध का पूरा शागिदं बना. बौद्ध धर्म के फैज़ाब के लिये उसने जो कोशिश की बह मशहूर ही है. मगर वह किसी तरह भी कट्टर नहीं था. बौद्ध तबके की हालांकि उसने सब तरह से मदद की, जो भी वह इसका उथाल रखता था कि दूसरे अमन गिरोहों का गुजर अच्छी तरह होता रहे. इतना ही नहीं, उसने इसका भी जहां तक सुमकिन हो सकता था यह बन्दोबस्त केया कि अमन गिरोह आपस में लड़कर बेजा वक्त जाया र करें.

सातवें शिला लेख में वह कहता है—"सब जगहों पर अब पार्षड (अमन गिरोही) रहें, वजह यह कि वे उसूल और ज्याल की पाक्षीजगी की उवाहिश रखते हैं...... बहुत दान मं करके भी जिस आदमी में खुद पर काबू, उयालात की कीजगी, शुक्रगुजारी और पक्की भक्ति नहीं, वह सचमुच लेच है." इसके बाद बारहवें शिला लेख में अशोक कहता —"देवताओं का प्यारा राजा सब तरह के अमनों की पार्षडियों की), साधुओं की और गृहस्थों की दान बर्म से तीर दूसरे कई तरह से पूजा करता है. मगर देवताओं का प्यारा

آن کا چترریام دھرم ہے، نے که آن کے طریقے کی عبادت اور رحانی تعلق !

ادرك أور يوده دهرم

حالاتک بوده سلک کا عام لوگوں پر کانی اثر تھا پھر یعی سرات اشوک کا زور اگر نہیں ملتا تو بودھ دھرم کا بھارت میں ار بہارت کے باھر اِثنا پھیلاؤ تھ ھوسکتا ۔

جھنوں کا کہنا ہے کہ چندرگیت موریہ جین ست کا تھا اور یہ تھیک بھی ہوسکتا ہے ۔ مگر چنردگیت نے یکھوں کو بند کوئے کی کوشھ نہیں کئے اور براهمنوں کی کوشھ نہیں کئے اور براهمنوں کو اِس بارے میں برحاوا نہیں دیا ، اِسی وجہ سے براهمن طبقے کے گرفتھ لکھنے والوں نے اُس شودر خاندان سے کہا ہوگا ۔ اُس کا لڑکا بندوسار کس مذہب کا تھا اُس کا یتھ نہیں لگتا ، وہ کسی علوہ اُرر کچھ کیا ہو اُس نے اپنے راج کا بندوبست کرنے کے علوہ اُرر کچھ کیا ہو اُس نہیں جان پڑتا ، اس کا بیتا اشوک غرور شرمی سنسکرتی کا اُرا اُس میں بھی زیادہ سے زیادہ بردہ دھرم کا جہرا حاسی بنا ،

تاجهوشی کے بعد آئھویں یا نویں سال اشوک نے کلنگ دیش پر چڑھائی کی ۔ یہاں ایک لائم آدمی مارے گئے اور ذیرہ لائم آدمی پکڑ کر لائے گئے ۔ اس سے کلنگ دیش میں پڑا مام محیا اور اشوک کے دال پر اُس کا زبردست اثر پڑا ، رہ جتنا ھی قانل تھا آتنا ھی رحادل بنا ، اُس وقت جو شرمی پنتھ موجود تھے' اُن میں سے بودھ پنتھ اُسے خاصکر اُچھا اُکا اور وہ بدھ کا پورا شاگرد بنا ، بودھ دھرم کے پھیلاؤ کے لئے اُس نے جو کوشھی کی وہ مشہور ھی ھے ، مگر وہ کسی طرح سے اُس نے جو کوشھی کی وہ مشہور ھی ھے ، مگر وہ کسی طرح سے مدد کی' تو بھی وہ اِس کا خیال رکھتا تھا کہ دوسرے شرمی مدد کی' تو بھی وہ اِس کا خیال رکھتا تھا کہ دوسرے شرمی اس کا بھی جہاں تک ممکن ھوسکتا نیا یہ بندوبست کیا کہ شرمی گروہ آپس میں لوگر بیجا وقت ضائع تھ کویں .

ساتویں شلا لیکھ میں وہ کہتا ہے۔ "سب جگہوں پر سب پاشند (شرمی گووھی ) رہیں وجہ یہ کہ وہ اصول اور خیال کی پاکیزگی کی خواھھی رکھتے ھیں..... بہت دان دعوم کرکے بھی جس آدمی میں خود پر قابو خیالات کی باکیزگی شکرگذاری اور پکی بیکتی نہیں وہ سے میے نہیے ہے۔ "اس کے بعد بارھویں شلا لیکھ میں اشرک کھتا ہے۔ "دیوتاوں کی بیارا راجا سب طرح کے شرمنوں کی ( پاشندیس کی ) سادھوی کی اور گرھستوں کی دان دھوم سے اور دوسرے کئی طرح سے پوچا کرتا ہے۔ مگر دھوتاؤں کا پھارا دوسرے کئی طرح سے پوچا کرتا ہے۔ مگر دھوتاؤں کا پھارا

ن اور بوجا کو آتنی اهمیت نهیں دیتا' جتنا سب باشاتیوں ساروردھی کو . ساروردھی کی کئی قسمیں ھیں۔ اُسکا خاص بھائیت ہے اور دوسرے کے باشنت کی بورائی نہ ھوئے دے' یعلی اُگر کوئی ہے اور دوسرے کے باشنت کی برائی نہ ھوئے دے' یعلی اُگر کوئی ہگڑے کی رجہ آن ھی بڑے تو اُسے اهمیت ته دے ، دوسرے کے شنت کا خیال رکھنا کئی طرح سے مناسب ہے ایسا کرنے سے خود یہ پاشنت کی یقینی طور سے ترقی کرتا ہے اور دوسرے کے باشنت بھی احسان کرتا ہے ..... آپس کا دھم ایک دوسرا سنے اور بھی احسان کرتا ہے ..... آپس کا دھم ایک دوسرا سنے اور کی دوسرے کی سیوا کرے' اسی بئے ایکتا اچھی ، سب باشنت کے دوسروں کی بھلائی کرنے والے ھوں' بھی چھڑ دیوتاؤں ، عزیز ہے ..... اس کے لئے دھرم مہاماتروں کو ( اور دوسروں کو ) ترر کیا ہے .

اِس شال ایکھ سے داھائی دیتا ہے کہ جتابے بھی اہنسک خصب تھے اُن سب کے ساتھ اُشرک برابری کا برتاؤ کرتا تھا ۔ نا ھی نہیں' اُس نے اُس کے ائبے بھی بہت کوشش کی که اہندی اور روح کی پا برزگی کا راستہ دکھادیں ۔ ویدک تہذیب اہندی اور روح کی پا برزگی کا راستہ دکھادیں ۔ ویدک تہذیب نی بنیاد ہے بکیه یاگ ۔ اُن کی متعالفت اُشوک نے پہلے ھی نا اُر اُس نے عام لوگوں کو اُول درجہ دیا ہے۔ نالا لیکھ میں کی ہے؛ اور اُس نے عام لوگوں کو اُول درجہ دیا ہے۔ نالیجہ یہ کہ اُشوک نے راج میں ھی نہیں' اُس کے آس پلس بھی ورھ سنسکرتی اُس میں سے بھی ورھ سنسکرتی اس میں سے بھی ورھ سنسکرتی اس میں میں کو ورھ سنسکرتی اس میں میں کی ورھ سنسکرتی۔ اُس میں کی میں نہیں ، نہیں ، نہیں ، اُس میں کی میں بینیں ، نہیں ، ن

#### ودھ سنسکرتی کی تنزلی

بودھ شرمنوں کو راجاوں کی مدد ملی اسی میں اُن کی غزال كا بيج تها . أن كے بڑے بڑے سنكها رام ( منه ) راجاؤں فی مدد کے بغیر چل نہوں سکے . یہ کام عام جنتا کی طافت کے اهر بھی تھا ، صرف امهر اور راجاؤں کی مدد سے ھی یہ منكها رأم چلے. نتيجه يه هوا كه مهايان والس كو أرنجے طبقوں كو بورد الله والم كرنتهول كو لكهذا يرا . أن كرنتهكارول في عام لوكول ی زبان کو چهورار اونجے طبقے میں قدر کی جانے والی سنسمرت بان كو قبول كيا . إس سے عام جنتا كا رشته أن سے قوت كيا . نصاف، گرامر، ادب رغیره مضمونس پر بوده گرنتهکارون نے چھ سے آچھے مضمون لکھے ۔ لیکن عام اوگ أن گرنتورں كو معجهنے کے ناقابل تھے آور اُن کے لئے یہ گرنتھ کام کے تھ تھے۔ تنا می نہیں' سادعوؤں کے متبوں کو جو بڑی بڑی جاگیویں المي تهدن اس سے ان ميں رهنے والم دوسرے لوگوں كو حسد مولے اگا ، جیسے آجال کے زمیندار الگ الگ طرح سے کسائیں سے لکان لیا۔ میں' اُسی طرح بردھ سادھو بھی کسانوں پر ظام ارتر تهي يه ماننا ثبرت س خالي فهين هي .

दान और पूजा को इतनी अहमियत नहीं देता, जितना सब पापंडियों की सारवृद्धि को. सारवृद्धि की कई किस्में हैं इसका खास सिद्धान्त है खामोशी. मिसाल के तीर पर ख़द पापंड की भरमार न करे और दूसरे के पापंड की बुराई न होने दे, यानी अगर कोई मगड़े की वजह आन ही पड़े, तो उसे अहमियत न दे. दूसरे के पापंड का स्थाल रखना कई तरह से मुनासिब है. ऐसा करने से ख़ुद के पापंड की यक्तीनी तौर से तरक्की करता है और दूसरे के पापंड पर अहसान करता है...... आपस का धर्म एक दूसरा मुने और एक दूसरे की सेवा करे, इसीलिये एकता अच्छी. सब पापंड अच्छे और दूसरों की भलाई करने वाले हों, यही चीज देवताओं को अजीज है..... इसके लिये धर्म महामात्रों को (और दूसरों को) मुकरेर किया है.

इस शिला लेख से दिखाई देता है कि जितने भी श्राहंसक मजहब थे उन सबके साथ अशोक बराबरी का बर्ताव करता था, इतना ही नहीं, उसने इसके लिये भी बहुत काशिश की कि इन मजहबों में मगड़ा न हो कर एकता बढ़े और यह लोगों को पाबन्दी और रूह की पाकीजगी का रास्ता दिखा दें. वैदिक तहजीब की बुनियाद है यह याहा. उनकी मुखालिकत अशोक ने पहले ही शिला लेख में की है, और उसने आम लोगों को अध्यल दर्जा दिया है. नतीजा यह कि अशोक के राज में ही नहीं, उसके आस पास के राज्यों में भी अगर अमन संस्कृति—उसमें से भी बौद्ध संस्कृति—बहुत जोर से फैती हो, तो उसमें कुछ ताडजुव नहीं.

बौद्ध संस्कृति की तनुज्जली

बौद्ध श्रमनों को राजाश्रों की मदद मिली, इसी में उनकी तनुष्यली का बीज था. उनके बड़े बड़े संघाराम (मठ) राजाश्रों की भदद के बरौर चल नहीं सके. यह काम आम जनता की ताक्रत के बाहर भी था. सिर्फ अमीर और राजाओं की मदद से ही यह संघाराम चले. नतीजा यह हुआ कि महायान वालों को ऊँचे तबकों को ऋजीज लगने वाले प्रन्थों को लिखना पड़ा. उन प्रन्थकारों ने श्राम लोगों की जवान को छोडकर ऊँचे तबके में क़दर की जाने वाली संस्कृत जवान को कुबूल किया. इससे श्राम जनता का रिश्ता उनसे टूट गया. इन्साफ, ब्रामर, श्रदब बरारा मज्रमूनों पर बौद्ध प्रनथकारों ने अच्छे से अच्छे मजमून लिखे. लेकिन श्राम लोग इन प्रन्थों का समक्ते के नाकाबिल थे श्रीर उनके लिये यह मन्थ काम के न थे. इतना ही नहीं, साधुत्रों के मठों को जो बड़ी बड़ी जागीरें मिली थीं इससे उनमें रहने बाले दुसरे लोगों को इसद होने लगा. जैसे आजकल के जमींदार अलग अलग तरह से किसानों से लगान लेते हैं, उसी तरह बौद्ध साधू भी किसानों पर जुल्म करते थे, यह मानना सुबृत से खाली नहीं है.

ऐसी हालत में उन मठों के मालिक बीद्ध और जैन संघों में से आजकल के फैसिएम की तरह का एक हिंसावादी शैन गिरांह पैदा हुआ, जिसका नाम है पाशुपत. उन्हीं पाशुपतों में से अघारी जमाश्रत की तरह के बड़े बेरहम और जालिम शैन गिरांह की पैदाइश हुई; और उन लोगों ने तलवार, औरत और शराब के जरिये या तो बौद्ध और जैन अमनों को बरबाद कर दिया या अपने में मिलाने के लिये मजबूर किया.

उत्तर में शशांक जैसे और दिक्खन में सुन्दर पांड्य जैसे राजाओं ने बौद्धों और जैनों पर सातवीं सदी में जो स्नौफ़नाक जुल्म किये, एसका जिक्र तवारीख में हैं. शशांक ने साजिश करके राज्यवधंन का करल करवाया और बुद्ध गया के सारे विहारों को लूटकर उन्हें तोड़ हाला. बाधि वृक्ष को जड़ से उखाड़ कर जला दिया और दिक्खन में सुन्दर पांड्य ने उसी सदी में जैन साधुओं पर कई किस्म के बड़े जुल्म किये. उनके सर काल्हू में डालकर पिरवाये. उसके इन सारे जुल्मों के नमूने आज भी अर्काट के तिरु-वत्तूर मन्दिर की दीवारों पर खुदे हुए हैं. इस तरफ शैव राजाओं, कापालिकादि शैव साधुआं और उन लागों के मददगार बाह्मनें की कोशिश से बौद्ध और जैन धर्म करीब करीब बर्बाद ही हो गये.

इन जुल्मों से शैव साधुत्रों के मठ, बौद्धों के बिहार छौर उन जैनों के जो उपाश्रय (ख़नक़ाह) बच रहे थे, मुसलमानों के हमले से वह सब क़रीब क़रीब बबाद हो गये. बचे खुचे बाद्ध श्रमनों ने तिच्चत वरीरा मुल्कों में पनाह ली. जैन साधू श्राने उसूलों के पाबन्द होन की वजह से हिन्दुस्तान के बाहर न जा सके. जो जैन श्रीर शैव सन्यासी बचे वे यहाँ ही छिप कर रहने लगे. श्रागे चलकर इन साधुश्रों का कुछ उरूज भी हुश्रा. लेकिन वह इतना कमजोर रहा कि वह कुछ मजहबी तरक़की का काम नहीं कर सके.

बौद्ध संस्कृति की देन

करीव पर्चास साल पहले हमारे देश के बड़े बड़े पंडतों को भी बौद्ध मजहब के बारे में साफ साफ जानकारी नहीं थी. पुराण पढ़ने वाले बाह्मण सममते थे कि विष्णु ने राक्षसों को बुरे रास्ते पर लगाकर बबाद करने के लिये बुद्ध का अवतार लिया. पंडित लाग मन्थों में बौद्धों की बुराई करते थे. शंकराचार्य का विशिष्टाद्धीत वादियों और माधव गिराहों ने प्रच्छन्न बौद्ध कहा, यह भी लोग जानते थे. लेकिन बुद्ध कीन १ और उनके मजहब का प्रचार कैसे हुआ और शंकराचार्य की मजहबी किताबों पर उसका असर इतना कसे पड़ा, जिससे उनको प्रच्छन्न बौद्ध कहने लगे १ इनमें से किसी बात को भी कोई पंडित साक साफ नहीं जानता था. जिस तरह तारीकी में कोई बीज उसके खिलाफ ایسی حالت میں آن متھرں کے مالک ہودھ اور جھن ۔ نتھرں میں سے آجکل کے فیسزم کی طرح کا ایک ھاساوادی شیر گروہ پیدا ہوا' جس کا نام ہے پاشویت ۔ اِنھیں پاشویتوں میں سے اگھرری جماعت کی طرح کے برے بیرحم اور طالم شھو گروہ کی بیدانھی ہوئی اور اُن لوگرں نے تلوار' عورت اور شراب کے ذریعہ یا تو بودھ اُور جھن شرمنوں کو برباد کردیا یا اپنے معبور کیا ۔

آثر میں ششانک جیسے اور دکھی میں سندر پانڈیہ جیسے راجاؤں نے بودھوں اور جینیوں پر سانویں صدی میں جو حونناک ظام نئے' اُس کا ذکر تواریخ میں ہے ۔ ششانک نے سازش کرکے راجوردھی کا قتل کروایا اور بدھ گیا کے سارے بھاروں کو لوت کو آنھیں تور ڈالا ، بودھی ورکش کو جر سے اُنھاز نو جلادیا اور دکھی میں سندرپانڈیت نے اُسی صدی میں جھی سادوں پر کئی قسم کے بڑے ظام کئے ، اُن کے سر کواھو میں ذائکر پروائے ، اُس کے اِن سارے ظلموں کے نمونے آج بھی ارکات نے ترواور مندر کی دیواروں پر کھدے بھوئے میں . اِس طون شیو راجاؤں' کا یا مکادی شیو سادیوں اور اُن لوگوں کے مددگار براہمؤں کی کوشش سے بودھ اور جینی دھرم قریب قریب برباد ھی ھوگئے ،

ان ظلموں سے شیو سادھؤں کے مقہ' بودسوں کے وہار آور آن جدندوں کے جو آپاشرئے (خفقاہ) بچے رہے تھے' مسلمانوں کے حملے سے وہ سب قریب قریب برباد ہوگئے۔ بچے کہجے بودہ شرصنوں نے تبت وغیرہ ملکوں میں پناہ لی ۔ جین سادھو' اپنے آصولوں کے پابند ہوئے کی وجہ شے ہندستان کے باعر نہ جاسکے ۔ جو جین آور شیو سنیاسی بچے' وے یہاں بھی چہپکر جاسکے ۔ جو جین آور شیو سنیاسی بچے' وے یہاں بھی چہپکر بفنے لگے ، آگے چلکر اِن سادھوؤں کا نجھ عروج بھی ہوا ۔ لیکن بفنا کمزور رہا کہ وہ کچھ مذھبی ترفی کا کم نہیں کرسکے ، ہ

#### بردھ سنسکرتی کی دین

قریب پنچاس سال پہلے عمارے دیش کے بڑے بڑے پندتوں کو بھی بودھ مذھب کے بارے میں صاف صاف جانکاری نہیں تھی ۔ پران پڑھنے والے براھمن سمجھتے تھے که وشنوئے رائششوں او برے راستے پر لگائر برباد کرنے کے لئے بدھ کا اوتار لیا ۔ پندت لوگ گرنتیوں میں بودھوں کی بوائی کرتے تھے۔ شاکراچاریہ کو وشیشتادویت وادیوں اور سادھو گروھوں نے پرچھن بودھ کہا کہ بھی لوگ جانتے تھے ، لیکن بدھ کون آ اور اُن کے مذھب کے برچار کیسے ہوا اور شاکراچاریہ وغیرہ کی مذھبی کتابوں پر سے کیسے پڑا ہسسے اُن کو پرچھن بودھ کہنے کے آن میں سے کسی بات کو بھی کوئی پلات صاف اِنتا اِنتا ہے۔ اِس طرح تاریکی میں کوئی چیز اُس کے خانف اِنتا میں جانتا تھا، جس طرح تاریکی میں کوئیچیز اُس کے خانف

दिखलाई पदती है, उसी तरह से उस तारीक जमाने में बीद मजहब भी खिलाफ दिखलाई देता था. पूना के एक मशहूर पंडित ने नागानन्द नाटक लिखा. इसके नान्दी श्लोक में जो "मारवधू (मार की श्त्रियां)" लक्ष्य है, उसने उसको नहीं सममा. सभी हाथ की लिखी नक्षलों में यही लक्ष्य था; तो भी उसने उसे बदलकर "वारवधू" कर दिया. मारे यहाँ के दिग्ग पंडितों को भी बीद धर्म के बारे में श्ती जानकारी न थी.

मरारबी पंडितों को भी बौध मजहब के बारे में बहुत हम जानकारी थी. वे जानते थे कि तिब्बत, ब्रह्मा, चीन ाग़ैरा मुल्कों में बौद्ध मजहब राइज है; पर यह नहीं जानते में कि इस धर्म का बसीला श्रीर फैलाव भारतवर्ष में ी हुआ था और भारती साधुत्रों ने ही ग़ैर मुल्कों में जाकर स मजहब को फैलाया. जब पहले पहल अंग्रेज आलिमों । एलोरा की तरह की कारीगरियों की जगहों का देखा, तब उन लोगों ने अन्दाजा किया कि यह कारीगरियाँ भारतीयों ही हो ही नहीं सकतीं. उन्होंने यह अन्दाजा किया कि उन्हीं हे बराबर किसी मोहज्जब क्रीम ने भारत में आकर इन हारीगरियों की शुरूबात की होगी. घीरे घीरे पच्छिमी पंडितों ही कोशिश से, जिनमें पच्छिमी मिशनरियों की भी शिरकत थी, भारतीयों को **बीद्ध मजहब के बारे** में कुछ जानकारी होते लगी. फिर भी खाम जनता एलोरा या अजंता की हारीगरियों का बौद्धों से रिश्ता न जान सकी, और सारे भारती अदब पर बौद्ध मजहब का जो असर पड़ा है, उसकी भला उन्हें कैसे जानकारी हो सकती थी ?

वेद, श्राक्षण और आरएयकों को छोड़कर ऐसा कोई मज़हबी या दूसरा पुराना प्रत्थ नहीं है, जिस पर बौद्ध प्रत्थों का असर न पड़ा हो. इतना ही कहना काफी है कि जो वेदानत अदब सबसे ऊँचा समका जाता है, उसका निचोड़ फना और बक्ता से ही लिया गया है और इसी वजह से शंकरा-चार्य प्रच्छन बौद्ध कहलाये. दस्तकारियों के बारे में तो कुछ कहने की ज़रूरत ही नहीं है. जो कुछ अच्छी से अच्छी कारीगरी आजकल हासिल है, वह सब बौद्ध कारीगरों की ही है. बौद्धों के बाद जैनों और शैत्र साधुओं ने भी उनकी नक़ल की पर बौद्ध कारीगरी की बराबरी में वे न आ सके.

जोपान, चीन, तिब्बत, सयाम, सिंहल बरौरा मुल्कों में भारत के बारे में जो इतनी इज्जत का इजहार होता है वह किस की देन हैं ? उन मुल्कों के जिन लोगों ने भारत नहीं देखा है, वे भारत को ही नहीं बल्कि भारत के बाशिन्दों को भी इज्जत की निगाह से देखते हैं. पिछ्झमी कोगों की तरफ हमारे बाप दादे अगर हथियारों से इन मुल्कों पर कतह पाते तो उनसे इज्जत की जगह पर आज हम नकरत ही पाते. हमारे बुजुर्ग बौद्ध संतों ने उन मुल्कों पर जो دکھائی پرتی ہے' اُسی طرح سے اُس تاریک زمائے میں بردہ مذہب بھی خلاف دکھائی دیتا تھا ۔ پوئٹ کے ایک مشہور بندرت نے ناگنند ناائک لکھا ۔ اِس کے نائدی اشاوک میں جو ''مارود و ( مارکی اِستریاں )'' لفظ ہے' اُس نے اُس کو نہیں محجھا ۔ سبھی ہانھ کی لکھی نقلوں میں یہی لفظ تھا؛ تو بھی اُس نے اُس بدل کر ''وارودھو'' کردیا ۔ همارے یہاں کے دگیج پندتوں کو بھی بودھ دھرم کے بارے میں انغی جانکاری تھ تھی۔

مغربی پنڌتوں کو بھی بودھ منھب کے بارہ میں بہت کم جانکاری تھی، وے جانتے تھے کہ نبت' برطما' چین وغیرہ ملکوں میں بودھ منھب رائیج ہے' پر یہ نہیں جانتے تھے کہ اِس دھرم کا وسیلہ اور پھیلائر بھارت ورش میں ھی ھوا تھا اور بھارتی سادہ وں نے ھی غیر ملکوں میں جاکر اِس منھب کو پھیلیا، جب پہلے پہل انگریز عالموں نے ایلورا کی طرح کی کاریگریوں کی جگہوں کو دیکھا' تب اُن لوگوں نے اندازہ کیا کہ یہ کاریگریوں بھارتیوں کی ھو ھی نہیں سکتیں۔ اُنھوں نے یہ اندازہ کیا کہ یہ کاریگریوں اُنھیں کے برابر کس مہذب قوم نے بھارت میں اُدر اُن کاریگریوں کی شروءات کی ھوگی، دھیرے دھیرے دھیرے پچھمی پنذتوں کی گوشھی سے' جن میں پچھمی مشنریوں کی بھی شرخت نھی' کوشھی سے' جن میں پچھمی مشنریوں کی بھی شرخت نھی' بھارتیوں کہ بودھ مذہب کے بارے میں دچھ جانکاری ھونے بھارتیوں کہ بودھ مذہب کے بارے میں دچھ جانکاری ھونے سے رشتھ نہ جان سکی اور سارے بھارتی ادب پر بودھ مذہب کا جو اثر یوا ہے' اُس کی بھا اُنھیں کیسے جانکاری ھو سکتی

وید' براسی اور آرنیموں کو چهرز کرئی ایسا کوئی مذهبی یا دوسرا پرانا گرنته نهیں ها' جس پر بوده گرنتهوں کا اثر نه پڑا هو ۔ اِبنا هی کهنا کائی شے که جو ویدانت ادب سب سے ارنبچا سبجها جاتا ہے' اُس کا نبچوز فنا اور بقا سے هی لیا گیا ہے اور اِسی وجهه سے شفراچاریه پرچهن بوده نهائئے . دستکاریوں کے بارے میں تو کچھ کہنے کی ضوورت هی نهیں ہے، چو کچھ اچھی سے اچھی کاریکری اُجکل حاصل ہے' وہ سب بوده کاریکروں کی هی هی هی دیورس اور شیو سادهؤں نے بھی اُن هی فقل کی پر بوده کاریکری کی برابری میں وے نه آسے ۔

جاپاں' چبن' تبت' سیام' سنکلیل رغیرہ ملکوں میں بھارت کے بارے میں جو اتنی عزت کا اظہار ہوتا ہے وہ کس کی دین ہے ؟ اُن ملکوں کے جن لوگوں نے بھارت نہیں دیکھا ہے' وے بھارت کو بھی عزت کی نگاہ سے دیکہتے ہیں ۔ پنچھمی لوگوں کی طرف ممارے باپ دادے اگر هتھیاروں سے اُن ملکوں پر فتم پاتے تو اُن سے عزت کی جگہ پر آج ہم نفرت ہی یاتے ۔ ہمارے بزرگ بودھ سنتوں نے اُن ملکوں پر جو

मजहबी फतह पाई है, वह हमारे लिये जेवर के बराबर है, लेकिन श्रक्तसोस की बात है कि हमारे श्रालिमों को भी बौद्ध मजहब की श्रभी बहुत ही कम जानकारी है.

बौद्ध मजहब की जानकारी के बिना हमारी पुरानी तबारी ल और कारीगरी की जानकारी हो ही नहीं सकती. इतना ही नहीं, बीच के जमाने में जा साधु सन्त हुए, उनकी कहावतों में भरी हुई रहमदिली, नेकचलनी, अच्छी सोहबत बग़ैरा सभी वालें कहाँ से आई ? इन सबों का जिरया बौद्ध धमें ही है. बौद्ध धमें के साधुओं और उग्देश देने बालों ने जनता की जिन्दगी में इखलाक का जो बीज बोया, वह बबाद नहीं हुआ. खिलाफ हालतों में भी उसकी कुछ कुछ पाबन्दी इन वैद्याव साधू संतों ने की है.

महात्मा गांधीजी ने जो अहिंसा का इन्कलाब शुरू किया और आम जनता ने एक जवान से उसकी जो ताई द की, उसका भी बीज इसी बौद्ध और कुछ कुछ जैन संस्कृति में है. सब लांग जानते हैं कि महात्मा गांधी पर श्रीमद रामचन्द्र नामी एक जैनी आलिम का बहुत असर पड़ा. एक तो काठियावाड़ में वे वैष्णुव खान्दान में पैदा हुए और दूसरे वहाँ जैनों की मजहबी जमाअत भी काकी तादाद में मौजूद है. अगर अहिंसा का बीज भारत में नहीं होता तो बहुत से हिन्दू समाज को महात्मा जी का सत्यामह पसन्द न होता. इसलिये आज आम जनता की नज्ज पहचानने और भारतवर्ष की तहजीब के फिर से उस्क पर आने के लिये बौद्ध संस्कृति की जानकारी होना बहुत ही जरूरी है.

، ذنہی فاتح پاٹی ہے' وہ ہمارے لئے زیور کے برابر ہے' لیکن انسوس کی بات ہے کہ ہمارے عالمیں کو بھی بودھ مذھب کی ابھی بہرت ہی کم جالکاری ہے ،

بورھ مذھب کی جانگاری کے بنا ھماری پرائی تواریخ اور اریکری کی جانگاری ھو ھی نہیں سکتی ، اِتنا ھی نہیں' بیچ کے زمانے میں جو سادھوسنت ھوئے' اِن کی کہارتوں میں بھری ھرئی رحمدلی' نیک چلنی' اچھی صحبت وغیرہ سببی بانیں ہوں ہے آئیں ہ اِن سببی کا ذریعہ بردھ دعرم ھی ہے ، بودھ دعرم کے سادھوں اور آپدیش دینے والوں نے جنتا کی وزدگی میں اخلاق کا جو بیج بویا' وہ برباد نہیں ھوا ، خلاف حالمیں میں اخلاق کا جو بیج بویا' وہ برباد نہیں ھوا ، خلاف حالمیں میں بھی آس کی کچھ کچھ پابندی اِن ویشنو سادھو سنتوں نے

مہاتما کاندھی جی نے جو اهنسا کا انقلاب شروع کیا اور عام جبتا نے ایک زبان نے اِس کی جو تائید کی اُس کا بھی بھیج اِسی بودھ اور کنچھ کچھ جین سنسکرتی میں ہے ۔ سب لوگ جانتے میں کہ مہاسا کاندھی پر شریدد رام چندر نامی ایک جینی عام کا بہت ازر پڑا ۔ ایک تو کانھیاواز میں وے دیشنو خاندان میں پیدا ہوئہ اور دوسرے وہاں جینیوں نی منعبی جماعت بھی کانی تعداد میں موجود ہے ، زگر اعنسا کا بھیج بہارت میں نہیں ہوتا تو بہت سے مقدو سماج کو مہانما جی کا ستیاگرہ پسند نہ ہوتا ، اِس لیے آج عام جنتا کی نبش بہتیائی اور بھارت ورش کی قبذیب کے پھر سے عروج پر آلے کے بہر ساسکرتی کی جانکاری ہوتا بہت ھی ضروری ہے ،

सब के साथ भलाई करो, श्रगर तुम्हारे साथ कोई बुराई करता है तो उसकी जिम्मेवारी उस पर है, तुम उसकी देखा देखी श्रपने दिल को ख़राब करके फ़र्ज से न हटो.

—संत वाणी.

سب کے ساتھ بھلائی کرر کار تمھاے ساتھ کوئی، برائی کرتا ہے نہ آئس کی زممراری آئس بر ہے تم آئس کی دیکھا دیکھی اپنے دل کو خراب کرکے فرض سے لئے مقو ،

-سنتواني .

मुहम्मद साहब ने कहा.—"वह आदमी हम में से नहीं है जो छोटों पर दया नहीं करता, जो बड़ों का आदर नहीं करता, जो दूसरों को इनसाक करने कं लिये नहीं कहता, और जो लोगों को बुराई से नहीं बचाता."

--इंडन अब्बास, तिरमिजी,

पैराम्बर ने मेरे दादा अबु मूसा को और मुआज को दोनों को यमन भेजा, तो उनसे कहा कि:—''लोगों के लिये आसानो पैदा करना, उनके लिये कोई मुश्किल खड़ी न करना, उनके दिलों को खुश रखना, उनमें एक दूसरे से नकरतें पैदा न करना, मिलकर काम करना और आपस में कभी मगड़ा न करना."

-श्रवु बरदा, बुखारी: मुसलिम.

मुह्म्मद साहब ने कहा कि:—''लाझो, पियो और दूसरों को सौरात दो और कपड़े पहनो, लेकिन फिजूल सरची न करो और न दिखावा या घमंड करो."

-- इन्त अमरू विन अल्बास, बुखारी: नसाई.

मुहम्मद साहब ने कहा कि:—''सफेद कपड़े पहनो, क्योंकि वही तुम्हारे लिये सबसे अच्छे हैं; और सफेद कपड़ों में ही अपने मुद्दें का दफ्न करा."

-- इन्न अन्यास, अबुदाऊदः तिर्मिजी.

मुहम्मद साहब ने कहा कि:—"जो आदमी भी किसी चीज का इजारेदार बन जाता है वह गुनाह करता है."

- मेमार, मुसलिम. श्रवुदाऊद: तिर्मिजी.

अनस का कहना है कि:—"मुहम्मद साहब ने अपने पास कभी कोई चीज अगले दिन के लिये बचा कर नहीं रखी."

—अनस, तिरमिजी.

محمد ماحب نے کہا: ۔۔۔ وہ آدمی ہم میں سے نہیں ہے ہو چھوٹیں پر دیا نہیں کرتا' جو بروں کا آدر نہیں کرتا' جو بوسروں کو انصاف کرنے کے لئے نہیں کہنا اور جو لوگیں کو رائے سے نہیں بچانا ۔''

--ابن عباس ترمذی .

پھنمبر نے سھرے دادا اہو صوسی کو اور معان کو دونوں کو من بھیجا کو اُن سے کہاکہ:۔۔۔''لوگوں کے لئے آساسی پھدا کرنا' اُن کے داہر او حوس رکھنا' اُن کے داہر او حوس رکھنا' اِن کے داہر او حوس رکھنا اور میں ایک دوسرے سے قارت پیدا تم درنا' ملکر کام کرنا اور ہس میں کبھی جھکڑا دم کرنا ۔''

- أبو بردة بخارى: مسلم .

محدد صاحب نے کہا کہ ۔ ''کھاؤ' پیڈو اور دوسرے کو خیرات و اور کیڑے پہنو' لیکن نفول خرچی نه کرو ته دکھاوا یا گھمنڌ رو '''

- أبن عمرو بن ألعاص بخارى: لساعى .

محمد صاحب نے کہا کہ: - سنید کیڑے بہنوا کیونکہ وہی بہارے لئے سب سے اچھے ھیں؛ اور سنید کیڑوں میں ھی اپنے ردوں کو دان کرو ۔''

-این عباس ابوداؤد: ترمذی .

محمد صاحب نے کہ نہ:۔۔۔ 'جو آدسی بھی کسی چیز کا عارہ دار بن جاتا ہے وہ گناہ کرنا ہے ۔''

سسمعمار عسلم: أبوداؤد: ترمذي .

انعص کا کہنا ہے کہ:۔۔۔''محدد صاحب نے اپنے پاس کہمی تی چیز اگلے دی کے لئے بچا کر نہیں رکھی .''

ــانعص ترمذي .

मुह्म्मद साहब ने कहा कि:—"अगर मेरे पास ओहद पहाड़ के बराबर सोना हो तो मुक्ते खुशी इस में होगी कि मैं तीन लगातार रातों तक उसका कोई भी हिस्सा अपने पास न रहने दूँ; सिवाय किसी ऐसे हिस्से के जो मैंने अपना कार्जा अदा करने के लिये रख लिया हो."

--- अबु हुरैरा, बुखारी.

अब हुरैरा का कहना है कि:—" मुहम्मद साहब इस दुनिया से चल बसे लेकिन उन्हों ने कभी पेट भर जी की रोटी भी नहीं खाई."

—शब् हुरैरा, बुखारी.

आयशा का बयान है कि:—"मुहम्मद साहव के बीवी बच्चों को, मुहम्मद साहब के मरने के दिन तक, कभी दो दिन लगातार जो की रोटी पेट भर नहीं मिली, कभी कभी महीनों गुजर जाते थे और घर में चूल्हा न जलता था, वे दिन हम केवल खजूर खाकर और पानी पीकर गुजार देते थे."

—श्रायशा. बुखारी: ग्रुसलिम: तिरमिजी.

ख़लीफ़ा उमर का राज जब दूर दूर के मुलकों तक फैल खुका था और उन सब मुलकों में लोग जूब खुशहाल थे, तो इस ख़ुशहाली का 'जिक करते हुए खलीफ़ा उमर ने एक दिन कहा कि:—''मैंने कभी कभी पैराम्बर को दिन दिन भर भूखा रहकर गुजारते देखा है क्योंकि उनके पास कोई चीज खाने के लिये नहीं थी."

-- नूमान बिन बशीर, मुसलिम.

इब्न ससऊद का कहना है कि:—''मुहम्मद साहब चटाई पर सो रहे थे! जब वे डठे तो उनके बदन पर चटाई के निशान थे. यह देखकर मैंने उनसे कहा,—'ऐ खुदा के रसूल! आप इजाजत दें तो हम एक नरम बिस्तर आपके लिये बिछादें! मुहम्मद साहब ने जवाब दिया,—'मुमे इस दुनिया के आराम से क्या लेना है. मेरा रिश्ता इसके साथ ऐसा ही है जैसा एक घुड़सवार का जो थोड़ी देर के लिये किसी पेड़ के साए में खड़ा हो जाता है, वहां कुछ देर आराम करता है और फिर वहाँ से चल देता है!,"

-- इन्न मसऊद्, तिरमिजीः इन्न माजहः श्रहमद्.

محدد صلحب نے کہا کہ:۔۔۔ واکر میرے پاس عدد پہار کے برابر سونا ہو تو مجھے خوشی اِسی میں ہوگی کہ میں تھن کار راتوں تک اُس کا کوئی بھی حصہ اپنے پاس نہ رہنے دوں؛ سوائے کسی ایسے حصے کے جو مینے اپنا قرضہ ادا کرنے کے لئے نے لیا ہو ۔''

أبو هريرة بتجاري .

اہر هريرة کا کہنا ہے کہ:۔۔۔ "سحمد صاحب اِس دنيا سے چل ہسے ليكن اُنھوں نے كبھى پہت بهر جو كى روئى بهى نہيں اُنائى ."

—أبو هريره' بضاري .

عائشہ کا بیاں ہے کہ:

انوا محمد صاحب کے بیری بچوں اوا محمد صاحب کے بیری بچوں اوا محمد صاحب کے مرنے کے دن تک کبھی دو دن اکاتار جو ایری بیٹ بھر اور گی پیٹ بھر نہیں ملی کبھی کبھی مہینوں گذر جاتے تھے اور گھر میں چولہا نہ جاتا تھا وہ دن ہم کیول کہجور کہا کر اور پانی پی کر گذار دیتے تھے ۔''

- عائشه بخارى: مسلم: قرصنى ،

خلیفت عمر کا راج آپ دور دور کے ملکوں تک پھیل چکا تھا اور آن سب ملکوں میں لوگ خوب خوشحال تھے' تو اِس خوشحالی کا ذکر کرتے ہوئے خلیت عمر نے ایک دی کھا کہ:—''مینے کبھی کبھی پینمبر کو دی دی بھر بھوکھا رہ کر گذارتے دیکھا ہے کیونکت آن کے پاس کوئی چیز کھانے کے لئے نہیں نھی ہے۔''

-تعمان بن بشير، مسلم،

ابن مسمون کا کہنا ہے کہ: --محصد صاحب چتائی پر سو رقے تھے اجب وے آئے تو ان کے بدن پر چتائی کے نشان تھے ،
یہ دیکھکر میں نے آن سے کہا۔ الے خدا کے رسول ! آپ اجازت دیں تو ہم ایک نوم بستر آپ کے لئے بچھادیں ! محصد صاحب نے جواب دیا ا۔ مجھے اس دنیا کے آرام سے کیا لینا ہے ،
میرا رشتہ اس کے ساتھ ایسا ہی ہے جیسا ایک گھرز سوار کا جو نهری دیر کے لئے کسی پھڑ کے سایہ میں کھڑا ہوجاتا ہے وہاں کچھ دیر آرام کرتا ہے اور پھر وہاں سے چل دیتا ہے!

سابن مسعود ترمذی : ابن ملجه : احمد .

#### मुहम्मद् साह्व के कुछ उपदेश

हजरत आयशा का कहना है कि:—"मुहम्मद साहब जब किसी आदमी की कोई बुराई सुनते तो वह कभी यह न कहते कि 'ऐसे आदमी की क्या हालत होगी' ? इसकी जगह ऐसे मौक्रों पर वह हमेशा यह कहते:— जो कीई इस तरह की बात कहता है उसकी क्या हालत होगी ?"

--आयशा, चबुदाऊद.

जाबिर का कहना है कि: —"मुहन्मद साहब जब कभी सफ्र में होते तो खुद हमेशा सब के पीछे रहते. वह कमजोरों की खबरगीरी करते, उन्हें अपने पीछे बैठा लेते और उनके तिये अस्लाह से दुआ करते रहते."

—जाबिर, श्रुबदाऊद.

ग्रहम्मद साह्ब जब मदीने आए तो बहां के कुछ लोग खजूर के दरखतों की कलमें काट काट कर लगा रहे थे. ग्रहम्मद साहब ने पूछा:—"तुम लोग यह क्या कर रहे हो ?" उन्होंने जवाब दिया:—"हम हमेशा से यही करते आए हैं." मुहम्मद साहब ने कहा:—"शायद जियादा अच्छा हो अगर तुम इन दरखतों को न काटो छाँटो." उन लोगों ने दरखतों को वैसे ही छोड़ दिया. इस पर उस साल दरखतों में फल बहुत कम आए. मुहम्मद साहब को जब इसकी सूचना मिली तो उन्हों ने कहा कि:—"मैं केवल एक आदमी हूँ. जब मैं दीन के मामले में तुमसे कोई बात कहूँ तो उसे मान लो और जब मैं किसी और बात पर अपनी राय जाहिर कहाँ तो याद रखों कि मैं तुम्हारी ही तरह केवल एक आदमी हूँ."

—रकी बिन ख्दीज, मुसलिम.

श्वलखुद्री का बयान है कि:—"मुहम्मद् साहब परदे में रहने बाली एक कुँवारी लड़की से भी जियादा शरमील थे, जब कभी वह कोई ऐसी चीज देखते थे जो उन्हें पसन्द न होती थी तो हमें इसका पता उनके चेहरे से लगता था."

—श्रलखुदरो, बुखारीः मुसलिम.

हजरत अली का कहना है:—मुहम्मद साहव के आखरी शब्द यह थे:—"अल्लाह से दुआ माँगो ! तुम्हारे पास जो कुछ माल असवाब है उसके लिये अल्लाह से डरो'."

---अली, अबुदाऊद.

- अनुवादकः श्री मुजीब रिजवी.

محمد ملحب کے کچے ابدیش

حضرت عائشه کا کہنا ہے که دس"سحمد صاحب جب کسی آدمی کی کوئی برائی سنتے تھے تہ وہ کبھی یه نه کہتے که ایسے آدمی کی کیا حالت ہوگی ؟ ایس کی چکه ایسے موقعوں یو وہ هدیشه یه کہتے : -- نجو کوئی اِس طرح کی بات کہتا ہے آس کی کیا حالت ہوگی ؟ ''

-عاتشه ابرداؤد .

جاہر کا کہنا ہے کہ :۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ صاحب جب کبھی سفر میں ہونے ہون ہمیشہ سب کے پہچے رہتے ، وہ کمزوروں کی خبرگیری کرتے '' اُنھیں اپنے پہچے بیتہالیتے اور اُن کے لئے الله سے دعا کرتے رہتے ۔''

-- جابر' ابرداؤد .

محمد صاحب جب مدینے آئے تو وہاں کے کچم لوگ کھجور کے درختوں کی قلمیں دُت کات کرھے رہو ؟ " اُنہوں نے صحمد صاحب نے پوچها :--تم لوگ یہ کیا کرھے رہو ؟ " اُنہوں نے جواب دیا :--"ہم ہمیشہ سے یہی کرتے آئے ہیں ۔" محمد صاحب نے کہا :--"شاید زیادہ اچها ہو اگر تم اِن درختوں کو فیا ہی چھور دیا ۔ فہ کائو چھائلو ،" اُن لوگوں نے درختوں کو ویسا ہی چھور دیا ۔ اِس پر اُس سال درختیں میں پہل بہت کم آئے . محمد صاحب کر جب اِس کی سوچنا ملی تو اُنہوں نے کہا کہ : -- صاحب کو جب اِس کی سوچنا ملی تو اُنہوں نے کہا کہ : -- درس کیول ایک آدمی ہوں ، جب میں دین کے معاملہ میں نم سے کوئی بات کہوں تو آسے مان لو اور جب میں کسی اور بیت پر اپنی رائے ظاہر کروں تو یاد رکھو کہ میں تمہاری ہی طرح کیول آیک آدمی ہوں ۔"

-رفيع بن خديج مسلم .

التخودری کا بھان ہے کہ ۔۔۔''محمد صاحب پردہ میں رہنے والی ایک کنواری لوکی سے بھی زیادہ شرمیئے تھے' جب کبھی وہ کوئی ایسی چدز دیکھتے تھے جو اُنھیں پسند نہ ہوتی تھی تو ھمیں اِس کا پتہ اُن کے چہرے سے لکتا تھا ۔''

-الخودري، بخاري : مسلم .

حضرت على كا كهنا هے: --محصد صاحب كے آخرى شبد يع تهے: --"الله سے دعا مامكو إ تمهار باس جو كچه مال أسباب هے اس كے لئے الله سے درو ."

-على ابوداؤد .

انروادک: شری مجهب رضوی .

मई '56

( 271 )

مئی 56'

हाक्टर भगवानदास

داکتر بهکوان داس

बनारस का शहर, इतिहास की निगाह से, इस धरती का सबसे पुराना नगर है जो अभी तक मौजूद है. इस की शुरूआत कव और कैसे हुई इस बात का पता पुराने से पुराने जमाने के धुँघले इतिहास से भी ठीक ठीक नहीं चलता. जिस जमाने में वेदों और उपनिषदों की श्चना हो रही थी उस जमाने में बनारस के राजा अजात शत्र सच्चे स्रोजियों को यहाँ पर आत्मविद्या का उपदेश दियाँ करते थे, यहीं पर वह राजा प्रतर्दन राज करते थे जो बहुत बड़े योधा भी थे और जिन्होंने बहुत से बेद मंत्रों की रचना भी की, यहीं के एक राजा महाभारत की लड़ाई में युधिष्ठिर और कृष्ण की तरफ से लड़े थे. गीता में उनका जिक आता है, पर नाम नहीं दिया गया. यहीं पर राजा दिवोदास ने अपने शिष्य सुश्रतु को 'आयुर्वेद' नाम का वह जबर्दस्त ध्रंथ दिया जो आज तक वैद्यक के बड़े प्रंथों में गिना जाता है. यह वह जमाना था, जबकि पुराण लिखे जा रहे थे. यहीं पर, कलियुग के शुरू में, यानी कहा जाता है लगभग पाँच हजार बरस हुए वेदों के सन्पादक और महाभारत, पुराखों भीर अझ सूत्रों के संप्रह कर्ता न्यास अपने बहुत से चेलों को लेकर आए, और यहीं उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम दिन विताए. यहीं पर ईसा से नी सी बरस पहले जैनियों के तेईसवें यानी आखिरी से एक पहले के तीर्थंकर पार्श्वनाथ पैदा हुए थे. यहीं पर लगभग पच्चीस सौ बरस हुए बुद्ध ने धर्म सुधार और द्या धर्म के प्रचार का अपना अद्भुत मिशन शुरू किया था. यहीं पर बाद की सदियों में शंकर. रामानुज, बल्लभ, चैतन्य और दूसरे बढ़े बढ़े आचार्य और सुधारकों ने आकर प्राचीन धर्म प्रंथों का अपना नया भाष्य यामी नई तावीलें विद्वानों के सामने रखकर उनकी तसदीक की. यहीं पर कबीर ने पुरानी सचाइयों को नए शब्दों में बयान किया. कबीर की भाषा जनता की भाषा है और साथ ही उसमें आत्म विद्या के रहस्य भी छिपे हुए हैं. उन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों को दीन धर्म के रालत और विगदे हुए रूप से आगाह और पाक किया, उन्हें सुधारा, उनमें मेल मुहब्बत पैदा की, उन्हें हठ धर्मियों और पाखन्डों से बचाया और निजात का रास्ता बताया. यहीं पर तुलसीदास ने हिन्दी में वह रामायण लिखी जिसे पिछले तीन सौ बरस से लाखों हिन्दी भाषी भारतवासी 'वेद' की तरह मानते

بنارس کا شہر اِتہاس کی نگاہ سے' اِس دھرتی کا سب سے برانا نکو ہے جو ابھی تک موجود ہے . اِس کی شروعات کب ارر کیسے هوای اِس بات کا پته پرائے سے پرائے زمائے کے دھندھلے اِہاس سے بھی ٹھیک ٹھیک نہیں چلتا، جس زمانے میں ویدوں اور آینشدوں کی رچنا ہو رھی تھی اُس زمانے میں بنارس کے اجا اجاتشترو سچے کھوجیوں کو بہاں پر آئم ردیا کا اُپدیش دیا کرتے تھے ، یہوں پر وہ راجا پراتردین راج کرتے تھے جو بہت ہتے یودھا بھی تھے اور جنہوں نے بہت سے وید منتروں کی رچنا ہی کی۔ یہیں کے ایک راجا مہابھارت کی لزائی میں یدہشر اور دہشن کی طرف سے اوے تھے ، گیدا میں ان کا ذور آما شے ور قام نہیں دیا گیا ۔ بہمی پر راجا دیو داس نے اپنے ششیہ سوشروتو کو آیوروید کا وہ زبردست گرنتھ دیا جو آج نک ریدیک کے بڑے سے بڑے گرنتھوں میں گنا جاتا ہے ۔ یہ و زمانہ تھا جب پران لھے جارہے تھے ، بہیں پر' کلیگ کے شروع موں' یعنی کہا چاما ھے لگ بھگ پانچ ھزار برس ھوئے ویدوں کے سنھادک اور مہابھارت ورائوں اور برتم سوتروں کے سنکرہ کرنا ویاس اپنے بہت سے چیلوں کو لیکر آئے اور یہوں انہوں نے اپنے جدوں کے التم دن بتائے ، یہیں پر عیسی سے نوسو برس پہلے جینیوں کے نیٹیسویں یعلی آخری سے ایک پہلے کے نیرتھنکر داشرو ناتھ پھدا عرائے تھے ، یہیں پر لگ بھا پچیس سو برس هوالم بدء نے دعرم سدھار اور دیا دعرم کے عرچار کا آپنا ادبھوت مشن شروع دیا تھا ، یہیں پر بعد کی صدیوں میں شنعر المائی بلیھ چیتنیم اور دوسرے بڑے بڑے آچاریہ اور سدھارکوں نے آکر پاچدی دهرم گرنتهوں کا اپنا نیا بهاشیه یعنی نکی تعویلیس ودرانیں کے سامنے رکھر اُن کی تصدیق کی ، یہوں پر کبیر نے پرائی سچانهیں کو نئے شیدرں میں بیان کیا ، کبیر کی بھاشا جنتا کی بھاشا ہے اور ساتھ ھی آس میں آنم ودیا کے رهسیه چیپے هوئے هیں . اُنهرں نے هندؤں اُور سلمانوں دونیں کو دین دھرم کے غلط اور بکڑے ہوئے روپ سے آگاہ اور پاک کیا' أسهيل سدهارا أن ميل ميل محبت بددا دي أنهيل هت دهرميون اور پاكهندون سے بحجايا أور نجات كا راسكه بتايا . يهين ير السيداس نے هندي ميں وہ راماين لئهي جسم بعدالے تين سر برس سے الکھوں هندی بهاشی بھارت واسی 'وید' کی طرح اللے

रहे हैं. बनारस (वाराणसी या काशी), बावजूद बहुत कुछ पतन, गिरावट और तरह तरह की बुराइयों के, अनन्त काल से भारत की धार्मिक राजधानी खौर संस्कृत विद्या का सब से बड़ा केन्द्र रहा है और अभी तक है. बनारस में सन् 1791 ई॰ में कीन्स क लिज क्रायम हुआ. उस कालिज के साथ एक स्कूल भी था. उस स्कूल की मैट्टीकुलेशन क्लास में सन् 1880 ई० में एक लड़का पढ़ता था. वह लड़का उस समय अपनी उमर के बारहवें साल में था. उसके साथ कुछ द्रघटनाएं हुई'. उसे अपनी दादी से बहुत प्यार था. दादी भी उसे बहुत प्यार करती थी. उसी साल उसने अपनी दादी को मरते हुए देखा. वह चिता तक अरथी के साथ गया. रास्ते भर वह खब रोता रहा. वह बेहद हैरान था कि इस सब जीने और मरने का मतलब क्या है. इसके बाद उसे इधर उधर से कुछ चीजें पढने को मिलीं, उनमें लिखा था कि कुछ सन्त, महात्मा, रिषि और योगी ऐसे भी होते हैं जिन्हें इन अलौकिक चीजों की जानकारी होती है, वह जिन्दगी और मौत के छिपे हुए राजों को जानते हैं. कुछ नेकदिल सन्यासियों और रूहानी लोगों से उस लड़के की कभी कभी बात चीत भी हुई, उसके शुरू बचपन में एक पंडित रोज शाम को उसके घर आकर घर के लागों को धर्म की किताबें पढ़कर सुनाया और समकाया करते थे. लड़के ने उस जमाने में अपनी दादी के साथ बैठकर वालमीकि रामायण, व्यास की महाभारत और कई पुराण सने थे. उसने बड़े शौक़ के साथ उन किताबों की कहानियों को उन दिनों याद कर लिया था. उन कहानियों के ब्रन्दर जो किलासकी भरी हुई थी वह या तो उस बच्चे के सर के ऊपर से यूँ ही निकल जाती थी या अगर कोई श्रसर इस पर रह जाता था तो इस तरह का कि जिसका उसे ख़द पता न था. उस बारह बरस के लड़के ने जितना कुछ पद या सुन रखा था उसे वह बहुत ही कम या केवल एक सरसरी तौर पर सममता था. फिर भी अब उसके कुछ साप हप संस्कार जागने लगे. उसके छिपे हए क़दरती रमानों में श्रंकुर फूटने लगे. श्रपने हम-उम्र दूसरे लड़कों की तरह वह खेलता कूदता, तमाशे देखता, सैर करता और कभी पढ़ता या स्कूल जाता, लेकिन इन सब हालतों के अंदर उसके लड़कपन के दिमारा में ऋब यह एक अजीब विचार बार बार आने लगा कि इस दुनिया की यह सब जिंदगी कुछ बेकार सी चीज है. इसके दिल में सृष्टि के रहस्य (राज ) को सममते के लिये एक धड़कन सी होने लगी. वह किसी एक अच्छी चीज की खोज में था, पर अपनी इस इच्छा को खुद भी पूरी तरह न सममता था. उसकी यह लालसा ऐसी ही थी जैसी पतंगे को तारे के लिये, या रात को सुबह के लिये. उसका दिल किसी ऐसी चीज के

رهے هيں۔ بنارس ( وارانسي يا كاشي )، باوجود بهت جج یتن گراوت اور طوح طوح کی برانموں کے اندت ال سے بھارت کے دھاریک اجدھائی اور سلسکرت ودیا کا سب سے ہوا کیندر رہا ہے اور ایھی تک ہے بنارس میں سن 1791عے میں دونس کالیم فایم ہوا ۔ اُس کالیم کے ساتھ ایک اسکول بھی ها , اس استول كي ميتريكوايشن كالس مين سن 1880ع بیس ایک اوکا یوهتا تها ، وه اوکا أس سم اینی عمر کے ارهویں سال میں نیا ۔ اُس کے ساتھ کچھ درگیتنائیں هوئیں ۔ سے اپنی دادی سے بہت پیار تھا . دادی بھی آسے بہت پیار رتی تھی ، اُسی سال اُس نے اپنی دادی کو مرتے ہوئد دیکیا ، ہ جتا تک اربھی کے ساتھ گیا ، راستے بھر وہ خوب رونا رھا ، ا يحد حيران تها كه إس سب جهند اور مرف كا مطلب كيا لے . اِس کے بعد اُسے اِدھر اُدھر سے کچھ چدزیں پڑھنے کو ملیں. بي مين انها تها كه انته سنت مهانما ارشي أور يوكي ايسم بهي عرتے هیں جنهیں اِن الونک چیزوں کی جانکاری هوتی هے، ، ازدگی اور موت کے چنھے ہوئے رازوں کو جانتے میں ، کچھ لیک دل سنیاسهوں اور روحانی لوگوں سے اُس لڑکے کی کبھی بھی بات چیت بھی عرثی ۔ اُس کے شروع بچھی میں ایک لمذبت روز شام کو اُس کے گہر آکر گھر کے اوگوں کو دھرم کی تماہیں یونفکر سنایا اور سمجھایا کرتے تھے ، لڑکے نے اُس زمالے سیر آیلے دادی کے ساتھ بیقیکر والمیکی راماین ویاس کی بهابهارت اور اللي يرأن سنے تھے ، أس نے برے شرق كے ساتھ ن کتابرں کی کہانیوں کو اُن دنوں یادئر لیا تھا ، اُن کہانیوں کے اندر جو طلسفی بھری ہوئی تھی وہ یا تو اُس بجے کے سر کے اوپر سے بوں بھی نکل جانی تھی یا اگر کوئی اثر اُس پر رہ داما تها تو اس طرح کا که جس کا آس خود پته نه تها ۔ اُس ارہ برس کے لڑکے نے جتما کنچھ روھ یا سن رکھا نھا اُسے وہ بہت ی کم یا کیول ایک سرسری طور پر هی سمنجهتا تها . پهر بهی ب اُس کے دندہ سوال شوئے سنسکار جاگنے لکے ، اُس کے چھپے وأنه قدرتي رجيدانون مين أنكور يهوتني لكه . أيني هم عمر دوسوت رکوں کی طرح وہ دہیلتا کودنا' تماشے دیکھتا' سیر کرنا اور کبھی وها یا اسکول جاماً لیکن ان سب حالتوں کے اندر أس کے ونہوں کے دماغ میں اب یہ ایک مجیب وچار بار بار آنے لگا » اِسَ دنيا دَى يه سب زندگي كنچه بيكار سي چيز هي أس عے دل میں سرشقی کے رهسیة ( راز ) کو سمجھنے کے لئے ایک بهرئن سی هولے الی. وہ کسی ایک آچری چیو کی کھوج میں تھا؟ ر اینی اِس اِچها کو خود بھی پرری طرح نہ سمجهتا تھا . س کی یہ لالسا ایسی هی تهی جیسی پتنگے کو تارے کے لئے *ا* ا رات کو صدیم کے الم . اُس کا دل کسی ایسی چیز کے

लिये बेक्रगर था जो हमारी इस सख दुख की दुनिया से ऊपर हा. इस जीवन के दुख ददों के बारे में कई गरह के सवाल उसके दिल में पैदा हुए, ज्यों ज्यों वह बड़ा होता गया यह सवाल और गहरे होते चले गए. जब वह कालिज में पढ़ने लगा तब भी इस तरह के सवाल उसके अंदर उठते रहे, धीरे धीरे ये सवाल एक खास शब्ल लेने लगे. उस लड़के के दिल में हर वक्त यह जानने की इच्छा जोर पकड़ने लगी कि हमारे श्रंदर, बाहर श्रीर चारों तरफ यह दुख दर्द 'क्यां' हैं और इनका इलाज 'कैसं' और 'क्या' हो सकता है ? इन्हीं सवालों के अधीन और बहुत से अनिगनत सवाल उसके दिन में पैदा होने और उसे दिक करने लगे. ये सब सवाल अन्त में इसी एक सवाल से सम्बन्ध रखते थे. कि दुनिया के सब दुखों की जड़ क्या है श्रीर उनका इलाज क्या है श्रीर यह दुनिया श्रीर यह सारी सुध्टि जिस में अनन्त पेच दूर पेच हैं, जिनके ऊपर और जिनके अन्दर यह सब दुख और दुराई जारों के साथ छाई हुई है, क्यों है, कैसे है, ब्यौर कहां से ब्याई ?

इम किसी भी चीज के किसी एक हिस्से को उस समय तक पूरी तरह और ठीक ठीक नहीं समभ सकते और न उससे काम ले सकते हैं जब तक उसके बाक़ी सब हिस्सों के साथ उस हिस्से के सम्बन्ध को न जान लें. सब हिस्से मिलकर पूरी चीज या पूरी इकाई जनते हैं. उस पूरी इकाई के अन्दर हर हिस्से की अपनी जगह है. हर हिस्सा बाक़ी हिस्सों के साथ या तो मिलकर काम करता है, या उनके मातहत काम करता है, श्रीर या उनके ऊपर रहकर उन्हें चलाता श्रीर चलने में मदद देता है. अलग अलग हिस्सों में कहीं कार्य श्रीर कारण यानी इल्लत श्रीर मालूल का सम्बन्ध होता है श्रीर कहीं किया श्रीर प्रतिक्रिया यानी श्रमल श्रीर रहे श्रमल का. जब तक हम उन सब सम्बन्धों का एक मोटे तार पर न समभ लें तब तक हम किसी पक हिस्से या एक चीज को ठीक ठीक नहीं समक सकते. दूसरे शब्दों में किसी पूरी चीज को या उसके किसी हिस्से की, जैसे आदमी का अरिसमाज की, समाज की और इस सारे विश्व को, विंड को श्रीर ब्रह्माएड को, किसी महदूद चीज का और ला-महदूद का हम केवल तभी समक सकते हैं श्रीर तभी उसका ठीक ठीक व्यवहार कर सकते हैं जब हम इन सब सम्बन्धों को सममलें श्रीर बार बार उन पर ध्यान देते रहें. महाभारत के अन्दर जिस समय अज्नेन विषाद में ड्वा हुआ, निराश, रंज और राम से घवराया हुआ, द्या से भर जाता है, श्रीर अपने समे (रश्तेदारों श्रीर चचेरे श्रीर ममेरे भाइयों को मारने के विचार से कांप उठता है. ता उसके मन को फिर से स्थिर करने के जिये. उसके दिल श्रीर दिवारा को ठीक करने के लिये, उसे

ائے بیقوار تھا جو ھماری اِس سکھ دکھ کی دنیا سے اُوپر ھو۔ اُس کے جدوں کے دکھ دردوں کے بارہ میں کئی طرح کے سوال اُس کے دل میں پیدا ھوئے ۔ جھوں جیوں وہ ہزا ھوتا کھا یہ سوال اِر گہرے ھوتے چلے گئے ۔ جب وہ کالیم میں پڑھنے لگا تب بھی اِس طرح کے سوال اُس کے اندر اُنھتے رہے دھھوے دھھوے دھیوے یہ سوال ایک خاص شکل لیانے لگے ۔ اُس لڑکے کے دل میں ھو رہت یہ جاننے کی اُچھا زور پکڑنے لگی کہ ھمارے اندر باھر اور رہت یہ دکھ درد 'کھوں' ھیں اور اِن کا عقبے 'کیسے' اور خاروں طرف یہ دکھ درد 'کھوں' ھیں اور اِن کا عقبے 'کیسے' اور سب سوال اُنت میں اِسی ایک سوال سے سمبندھ رکھتے تھے کہ دنیا کے سب دکھوں کی جڑ کیا ہے اور اُن کا علی کیا ہے اور یہ خور کیا ہے اور اُن کا علی کیا ہے اور یہ سب دکھوں کی جڑ کیا ہے اور اُن کا علی کیا ہے اور یہ سب دکھوں کی جڑ کیا ہے اور اُن کا علی کیا ہے اور یہ خور ور چن کے اندر یہ سب دکھ اور برائی زوروں کے دنیا چیائی ھوئی ہوں کی اندر یہ سب دکھ اور برائی زوروں کے سانے چہائی ھوئی ہوں کی سے ہو اور کہاں سے آئی ہ

ھم کسی بھی چیز کے کسی ایک حصے کو اُس سمے تک بوری طرح آور ٹھیک ٹھیک نہیں سمجھ سکتے اور نہ اُس سے کام لے سکتے ھیں جب تک اُس کے باقی سب حصوں کے ساتھ أس حصے كے سبدندھ كو نه جان ليں . سب حصے ملا دورى چیز یا یوری اکائی ہذتے میں ، اُس یوری اِکائی کے اندر هر حصه کی اپلی جکه هے . هر حصه باذی حصوں کے سانه یا تو ملعر کام کرتا ہے ؛ یا اُن کے مانتحت کام کرتا ہے ؛ اور یا ان کے أوير ولا كر أنهين جلاتا أور جلاله مين مدد دينا هي. أنك الك حصوں میں کہیں کاریم اور کارن یعلی علت اور معلول کا سمیندھ هوتا هے اور کھیں کریا اُور پرتیکریا یعنی عمل اور رد عمل کا . جب تک م أن سب سمباده وس كو ايك مولم طور ير ثه سمجه ليس تب تك هم كسى ايك حصم يا ايك چيز كو ئهیک تهیک نہیں سمجھ سکتے ، دوسر م شبدوں سیں کسی پرری چیز کو یا اُس کے کسی حصے کو جیسے آدمی کو اور سماج کو سماج کو اور اِس سارے وشو کو پند کو اور برهماند کوا کسی محدود چیز کو اور المحدود کوا هم کیول تبهی سمجه سکتے میں اور تبھی اُس کا ٹھیک ٹھیک ویوعار درسکتے میں جب مم اِن سب سبندھیں کو سمجھ لیں اور ہار بار آن پر دھیاں دیتے رھیں ۔ مہابھارت کے اندر جس سے ارد بن وشاد مين دويا هوا دراهن رنج اور عم سے گيبرايا هوا دیا سے بهرجاتا هے اور اپنے سکے رشتهداروں اور چچیدے اور مميرے بھائھوں کے مرنے کے وچار سے کانب اُٹھتا ہے، ر أس كے من كو يهر سے اِستهر كرانے كے لانه أس کے دل اور دماغ کو تبیک کرنے کے اٹمہ' اُسے

विश्वास दिलाने के लिये, उसके इरादे को पक्का करने के लिये, उसे यह बताने के लिये कि अपने पापी रिश्तेदारों से लड़ना उस का धर्म था, उस नाजुक समय में जबकि होनों तरफ हथियारवन्द फीजें एक दूसरे पर बार करने के लिये आमने सामने तैयार खड़ी हुई थीं और लड़ाई शुरू होने में केवल एक पल भर की देर मालूम होती थी, उस समय हत्या ने एक दो घंटे के अन्दर, जिनमें अर्जुन के दिल की हालत और आस पास के बायु मंडल की हालत बराबर नाजुक और डराबनी होती चली जा रही थी, लगभग छै सौ श्लोकों के अन्दर इस सारे जीवन का अर्थ और विश्व की पूरी योजना अर्जुन को सममाई.

उस लड़के ने कालिज में साइकालाजी यानी मनोविज्ञान र्श्यक्स यानी नीतिविज्ञान और मैटाफिजिक्स यानी फिला-सकी के विषय लिये. वह समभना चाहता था कि आदमी के श्रन्दर की सोचने समभाने की ताक्रत, उसके भाव यानी जजबात और उसके सकल्प यानी इरादे क्या चीज हैं १ नकी और बदी क्या है ? इस दुर्निया की और जिन्दगी की श्रसलीयत क्या है १ वरौरा वरौरा. वह साचता रहता था. जां लोग उससे हमद्दी रखते थे उनके साथ बात चीत करता रहता था और इन विषयों पर जितना कुछ पढ़ सकता था पढ़ता रहता था. वह अधिकतर अंभेजी और संस्कृत की किता में पढ़ता था. यह दोनों भाषाएं उसके लिये नई थीं. इससे उसकी मुश्किल और बढ गई. लेकिन इस मुश्किल से अन्त में उसे फायदा ही पहुँचा. पुराने संस्कृत शब्द अब पुराने और बेमानी हाते जा रहे थे. समय की आवश्यकता यह थी कि उन पुराने शब्दों में जो अनमोल विचार भरे हुए थे उनका नए (सरे से अर्थ किया जाने ऋौर उन्हें नया जामा पहनाया जावे. आजकल के मानव जीवन और आजकज की सभ्यता से लेकर नए ढंग और नए शब्दों में उन क़ीमती विचारों को नए सिरै से प्रगट किया जावे. नए ख्याल के लाग तब ही उन्हें समक्त सकते थे. पुराने लिवास में नए ख्याल बालों का बह या दो बेजान और बेमानी दिखाई देंगे और या अनोखे और अजीव मालुम होंगे. केवल इसी तरह वे पुराने विचार पुरानी और नई पीढ़ी के लागों की, पूरव और पच्छिम को, पुराने और आजकल के जीवन को धौर पुराने विचारों और आजकल के विचारों को मिलाने में मदद दे सकते थे. इस तरह फ़िलासकी जैसे मजमून को श्रंप्रेजी श्रीर संस्कृत इन दो भाषाश्रों में पढ़ने से उस लड़के को बहुत कायदा हुआ.

यह दुनिया 'क्यों' और 'कैसे' बनाई गई इस बात को सममने की जबरदस्त लालसा उस लड़के में एक रोग की तरह बदने लगी. एक तरह का 'दिमारी बुखार', एक तरह का 'सुन्दर जुनून' रहने लगा, "अगर मैं जिन्दगी की जब. بھواسی دلانے کے لئے' آس کے ارادے کو چکا کونے کے لئے' اُسے کا ہمانے کے لئے' کہ اپنے باہی رشکدداروں سے لڑنا اُس کا بھرم تھا' اُس نازک سمے میں جب که درنہوں طرف متیارہلد فوجیں ایک دوسرے پر وار کرنے کے لئے آمنے سامنے تیار کھڑی ھوئی تھیں اور لڑائی شروع ھوئے میں لیول ایک پل بھر کی دیر معلوم ھوتی تھی' اُس سے لوشن نے ایک در گھنٹے کے اندر' جن میں ارجن کے دل نی حالت اور آس پاس کے وابو منذل کی حالت برابر نازک اور تروانی ھوتی چلی جا رھی تھی' لگ بیگ چھ سو شاوئیں کے اندر اِس سارے چھون کا ارتھ اور وشو کی پورس یو جنا ارجن کے اندر اِس سارے چھون کا ارتھ اور وشو کی پورس یو جنا ارجن کے سمتھائیں ،

آس لڑکے لے کالبے میں سائکالاجی یعنی منہوگیان اینهکس بعامی ٹیتی وگیاں اور میتافزنس یعلی فالسفی کے وشائے الله . وہ سمجھنا چاھتا تہا کہ آدمی کے اندر کے سرچنے سمجھنے کی طافت 'اس کے بہای یعنی جذبات اور اُس کے سنکلپ یعنی ارادے کیا چوز ھیں ؟ ندی اور بدی کیا ہے ؟ اِس دنیا کی اور زندگی کی اصلیت کیا کے ? وغیرہ وغیرہ . وہ سوچکا رهتا تها جو لرگ أس سے هدر دي ركہتے تھے أن كے سانھ بات چيت كرتا رهمًا تها اور ابن وشهول در جملًا كنچه يره سكن تها دوهمًا رهمًا تها . الا المعكد الكاريوي اور سنسكرت كي كتابين يوهنا نها . يه دولون بوه گئی لیکن اِس مشکل سه انت میں اُس فایدہ هی بہرنجا، پرائے سنسکرت شبد اب پانے اور بے معلی هوتے جا رہے تھے . سمے کی آوشهکتا یه تھی که أن پرالے شبدوں سیں جو المول وچار بھرے مود م اس کا نئے سرے سے ارتھ کیا جارے اور انہیں نیا جامہ بہایا جارے، آجکل کے مانو جدون اور آجکل ئى سبهتا سے ليكر نئے تعنگ أور نئے شيدوں ميں أن فيمنى بچاروں کو نئے سرے سے درگث لیا جاوے ، نئے حیال کے وگ تب هی انهیں سمنجه سکتے تھے ، پرائے لباس میں نیاء خیال والوں کو وہ یا تو بےجان اور بے معنی دکھائی دینکے آور یا نهام اور عجوب معلوم هونكه . كيول إسى طرح وم برالح وچار وائنی اور نشی پیزهی کے لوگوں کو پورب اور پچھم کو پرانے ور آجال کے جھوں کو اور پرانے وچاروں اور آجال کے وچاروں و ملائے میں مددے سکتے تھے اُس طرح طلسفی جیسے سفمون و العربوى أور سنسترت إن دو بهاشاؤن مين پرهام م أس و کے کو بہت فایدہ ہوا .

یه دنیا 'کیوں' اور کیسے' بنائی گئی اِس بات کو سمجھنے ی زبردست لالسا اُس لڑکے میں ایک روگ کی طرح زهنے لئی اُسے ایک طرح کا 'دماغی، بخار' ایک طرح ا 'سادر جنوں' رهنے لگا۔ ''اگر میں زندگی کی جڑ' And the state of t

उसकी श्रसिलयत श्रीर उसके श्रर्थ को नहीं समक सकता तो मेरे जिन्दा रहने से ही क्या कायदा!" जानते बूकते या छिप दवे सन् 1887 तक उस लड़के के दिमारा की यही हालत थी. सन् 1.87 में उसे किसी तरह से कुछ तसल्ली मिली. सृष्टि के श्राखरी 'क्यों' श्रीर 'कैस' का एक जवाब उसके मन के श्रन्दर पैदा हुश्रा. उस जवाब के श्रन्दर श्रीर श्रमतित मातहत सवालां के जवाब भी श्रागए. उसका दिमारी बुखार उतर गया. श्रिष्ठ पितत्र यानी पाक जिन्दगी बसर करने की इच्छा श्रब उसमें जोर करने लगी, वह इच्छा श्राज तक बनी है, श्रीर बदिक स्मती से श्राज तक पूरी न हा सकी. लेकिन श्रगरचे उसके जीवन की सतह शान्त नहीं है श्रीर शायद नहीं हो सकती, किर भी श्रमने श्रन्दर उसका मन एक हद तक शान्त है.

वही लड़का, बही नौजवान इस लेख का लेखक है. बह धीरज और सब के साथ अपने इस पुराने जरजर शरीर को त्यागने का इन्तजार कर रहा है, वह सबका भला चाहता है, और पूरे दिल से यह दुआ करता है कि दूसरों के दिलों को उससे अधिक शान्ति भिले जितनी उसे मिली है, या हर एक को उतनी शान्ति तो हासिल हो जावे जितनी उसे खुद हासिल है.

इस मक्रसद को पूरा करने के लिये, जिसके लिये वह दुआ मांगता रहता है, एक नाचीज कोशिश के तौर पर, श्रपने श्रन्दर की लालसा से, श्रीर कुछ नेक दोस्तों के कहने पर भी उसने श्रंत्रेजी में बहुत सी छोटी बड़ी किताबें लिखकर शाए की हैं, तीन कितावें और कुछ पैन्सलेट हिन्दी में लिखे हैं. उसने एक किताब संस्कृत कविता में भी लिखी है, ऐसे संस्कृत दानों की सेवा के लिए जो श्राजकल के नए विचारों में भी दिलचस्पी रखते हों. गीता में लिखा है कि:-- "जब पुराने जिस्म कमज़ार श्रीर बेकार हो जाते हैं, तो आत्मा यानी रूह उन्हें फेंककर नए जिस्स धारण कर लेती है, ठीक उसी तरह जिस तरह आदमी पुराने कपड़ों को फेंककर नए कपड़े पहन लेता है." इसी तरह पुरानी ग़ैरफानी सचाइयों को जिन शब्दों में कभी पहले जाहिर किया जा चुका है, वह शब्द जब फीके पड़ जाते हैं या काम में श्राते श्राते घिस जाते हैं तो नए शब्दों श्रीर नई भाषात्रों में जाहिर करना होता है, ताकि नए जीवन के साथ उनका सम्बन्ध चमक सके.

इस सिलसिले के आगे के लेखों को सममने के लिए पढ़ने वालों को तैयार कर देने की गरज से लेखक यहां अपने कुछ विश्वास दे देना चाहता है.

(1) वह मानता है कि अनिगनत और वेश्रन्त आस्माएं यानी रूहें मौजूद हैं. اس کی اصلیت اور اُس کے ارتب کو نہیں سمجھ سکتا تو میرے زندہ رہتے ہوجہتے یا چھٹے دیے سن 1887 نک اُس لڑکے کے دماغ کی یہی حالت تھی. سن 1887 میں آسے کسی طرح سے کچھ تسلی ملی ، سرشتی کے آخری 'نیوں' اور 'نیسے' کا ایک جواب اُس کے من کے اندر پیدا عوا . اُس جواب کے اندر اور نینت ماحت سوالوں کے جواب بھی آگئے ، اُس کا دماعی بخار آتر گیا . ادھک پونو یعنی پاک زندگی بسر درنے کی بخار آتر گیا . ادھک پونو یعنی پاک زندگی بسر درنے کی اچھا آبے بک بنی ہے' اور بدسمتی سے آبے نک پوری ته ھو سکی ، لیکن اگرچہ اُس کے جیوں کی سطح شانت بھی ہے اور شاید نہیں ھو سکتی' پھر جیوں کی سطح شانت بھی ہے اور شاید نہیں ھو سکتی' پھر جیوں کی سطح شانت بھی ہے اور شاید نہیں ھو سکتی' پھر جیوں کی سطح شانت بھی ہو شانت ہے ۔

وهی لرکا' وهی نوجوان اس لیکھ کا لیکھک ہے ، اس سمے ( 1956 ) اس کی عمر 70 سال کی ہے ، وہ دهیرے اور صبو نے ساتھ اپنے اِس پرائے جرجر شریر دو نیاگئے کا انتظار در رہا ہے ، وہ سب کا بھلا چاہتا ہے' اور پورے دل سے یہ دعا کرنا ہے کہ دوسروں کے دلوں کو آس سے ادھک شانتی ملے جتابی آسے ملی ہے' یا هر ایک دو آتنی شانتی تو حاصل هو هی جارے جتابی اسے خود حاصل هو هی جارے جتابی اسے خود حاصل هو .

اِس مقصد کو پورا کرنے کے لئے' جس کے لئے وہ دعا مانکنا هنا هے' ایک ناچوز کرشش کے طور پر' اپنے اندر کی لالسا سے' اُر دخچہ نیک دوستوں کے نہنے پر بھی' اُس نے انکریزی میں بہت سی چھوٹی بری نگابیں لکہ فر شائع کی ھیں ، تین لابیں اور کچھ پیمفلت ھندی میں لئے ھیں ، اُس نے ایک بنب سنسکرت کویتا میں بھی لکھی ہے' ایسے سنسکرت دانوں میں میوا کے لئے جو اُجکل کے نئے وچاروں میں بنی داچسہ سور پیدے ھوں ، گیتا میں لبھا ہے ن :—''جب پرانے جسم شورور ور نےکڑر ہو جاتے ھیں نو ادما یعنی روح اُنھیں پھینک کر نئے برانے کپڑوں کو پھید ۔ کر نئے نہزے پین افقا ہے '' اِسی طرح آدی رانی غیروائی سخچانیوں نو جن شہدرس میں نبھی پہلے ظاہر کیا جا ہی میں جاتے ھیں نو نئے شہدرس اور نئی بھالئوں میں ظاہر کیا جا ہیں ہوا ہے' وہ شہد جب پھیکے پر جاتے ھیں یا کام میں اُنے اُتے ہیں جاتے ھیں نو نئے شہدوں اور نئی بھالئوں میں ظاہر درنا ہیں جاتے ھیں نو نئے شہدوں اور نئی بھالئوں میں ظاہر درنا ہیں جاتے ھیں نو نئے شہدوں اور نئی بھالئوں میں ظاہر درنا ہیں جاتے ھیں نو نئے شہدوں اور نئی بھالئوں میں ظاہر درنا ہو

اِس سلسلے کے آگے کے لیکھوں کو سمجھنے کے لئے پڑھنے والوں بنار کر دینے کی غرض سے لیکھک یہاں آینے نجھ وشواس دے بنا چاھٹا ہے۔۔۔۔

(1) ولا مانتا هے که انکنت اور پرانت اُتمائیں یعنی روحیں وجود هیں .

#### चात्म विद्या (इस्मे रहानी)-चाप बीती

- (2) वह मानता है कि इन सब रूहों की उन्नति और अवनित होती रहती है. दरजे बदरजे इनके जड़ शरीर यानी माही जिस्म बनते और बिगड़ते रहते हैं. इनके आस पास के वायु मंडल भी बनते और बिगड़ते रहते हैं, और ये रूहें किर फिर जन्म लेती रहती हैं.
- (3) वह मानता है कि हर कह हर तरह के नए नए तजरबों में से निकलती रहती है, कभी नेकी कभी बदी, कभी सुख कभी दुख, कभी उजाला कभी अधेरा. यह सब तजरबे अनन्त समय (जमान), अनन्त जगह (मकान) और अनन्त गित (हरकत) के अन्दर बराबर एक दूसरे को रह करते, ठीक करते और एक दूसरे में समतोल (तवाजुन) पैदा करते रहते हैं.
- (4) बह मानता है कि देश, काल श्रीर गति यानी मकान, जमान श्रीर हरकत के चक्र बराबर चलते रहते हैं श्रीर उनकी तेजी, उनकी मियाद श्रीर उनका फैलाब बराबर एक तरतीब के साथ बदलता रहता है. इसी उतार श्रीर चढ़ाब पर दुनिया की उन्नति (तरक्षकी) श्रीर श्रवनति (तनष्जुली) निर्भर है.
- (5) बह मानता है कि हर तरह के देश, काल और गित से उपर, सदा पूर्ण, सब जगह मौजूद, और सब को अपने अन्दर लिए हुए, एक 'विश्वाःसा' यानी 'रूहे कुल' है जो चेतन ही चेतन है, अनन्त और सदा एकरस है, जो ला महदूद है, किसी पर निर्भर नहीं, कोई जिसका सानी नहीं, एक, अपने में ही पूरा, लेकिन फिर भी जिसके अन्दर सब अनिगनत अलग अलग रूहें शामिल हैं, जिसमें कभी कोई तबदीली नहीं होती पर सृष्टि की सब पल पल की तबदीलियाँ उसी के अन्दर हैं, सब रूहें और सब जिस्म और सारी सृष्टि उसी में, उसी से और उसी के अन्दर है.

लेखक ने अपने इन अजीब विश्वासों को, जो उपर से देखने में एक दूसरे के खिलाफ मालून होते हैं, अपनी कई किताकों में साफ करने की कोशिश की है, और जहाँ तक उसकी कमजार शक्तियों के लिये सम्भव है वह इन्हें इस सिलसिले के अगले लेखों में भी साफ करने की कोशिश करेगा.

### أتم وديا (علم ، وهاني) ــ أب بيتي

- (2) وہ مانتا ہے کہ اِن سب روحوں کی اُننتی اور اونتی نی رھتی ہے ، درجہ بدرجہ اُن کے جز شریر یعلی مادی سم بنتے اور بگڑتے رھتے ھیں ، اِن کے اُس پاس کے وابو نل بھی بنتے اور بگڑتے رھتے ھیں ' اور یہ پھر جام لیتی رھتی ن
- (8) وہ مانتا ہےکہ عر روح عر طرح کے آئے نئے تجربوں میں نکلکی رھتی ہے' کبھی نیکی کبھی بدی' کبھی سکھ کبھی دکھ' الجالا کبھی اندعیرا ، یہ سب تجربے اندت سمے ( زمان ) ست جکہہ ( مکان ) اور اندت گئی ( حرکت ) کے اندر برابر سوسرے کورد کرتے' ٹھیک کرتے اور ایک دوسرے میں تمول ( توازن ) پیدا کرتے رہتے ہیں ،
- (4) ود سانتا ہے که دیش کال اور گئی یعنی مکلی و اور مرکت یعنی مکلی و اور مرکت کے چمر برابر چاتے رہتے ہیں اور اُن کی تھزی کی مرکت کی میعاد اور اُن کا پہیلاءِ برابر ایک ترتیب کے ساتھ بدلتا کی میعاد اور اُن کا پہیلاءِ برابر ایک ترتیب کے ساتھ بدلتا کی اُنتی ( ترقی ) اور تمیل کی اُنتی ( ترقی ) اور تمیل کی اُنتی ( تربیر ہے ،
- (آ) وہ مانتا ہے کہ ہر طرح کے دیھی' کال اور گتی سے ر' سدا پورن' سب جگیء موجود اور سب کو اپنے اندر لئے انکہ وشواندا' یعنی 'روح کل' ہے جوچیتن ہی چیتن ہے' سا اور سدا ایک رس ہے' جو لا متحدود ہے' کسی پر نربهر بن کوئی جس کا ثانی نہوں' ایک' اپنے ہی میں پورا' بن پهر بھی جس کے اندر سب انکنت الگ الگ روحین بن پهر بھی جس میں کبھی کوئی تبدیلی نہوں ہوتی پر بن هیں' جس میں کبھی کوئی تبدیلی نہوں ہوتی پر شب بن ایل کی نبدیلیاں اسی کے اندر ھیں' سب عیں اور سب جسم اور ساری سرشتی اس میں' اس سے اس کے اندر ھیں' اس میں' اس سے اس کے اندر ھیں' کی اندر ہیں' کی میں اور ساری سرشتی اس میں' اس سے اس کے اندر ہیں۔

لیکیک لے اپنے اِن عجیب وشواسوں کو جو اُرپر سے دیکھا میں ا عدوسرے کے خلاف معلوم ہوتے ہیں اپنی کئی کتابوں میں اس کرنے کی کوشھی کی ھے اور جہاں تک اس کی کمزور تیوں کے لئے سمبھو ھے وہ انہیں اِس ساسلے کے اگلے ایکھوں میں ماف کرنے کی کوشش کریگا ۔

### 

#### पिंडत सुन्द्रलाल

پنڌت س**ن**در لال

वीन से धाने वाले पत्र पत्रिकाओं और खासकर वहाँ के सरकारी पत्र पत्रिकाओं में इस तरह के लेख बराबर निकलते रहते हैं. निनसे पता चलता है कि नए चीन की सरकार वहां के हजारों बरस के पुराने इलाज के तरीके का और पुरानी दवाओं को किस तरह बढ़ावा दे रही है. हमें दुख है कि राजकुमारी अमृतकौर ने चीन से लौटकर पुरानी चीनी वैधक विद्या और चीनी सरकार के उसकी तरफ रख की बाबत जो कुछ सूचना अपने देश और सरकार को दी वह बिल्कुल गलत है. हमारी राय है कि भारत सरकार की तरफ से देश के कुछ तजरबेकार वैद्यां और हकीमों का एक डेलीगेशन चीन जाना चाहिये जिसमें कुछ निष्पक्ष उदार हृद्य अँगरेजी पढ़े डाक्टर भी हों, जो चीन जाकर इन सब बातों का अच्छी तरह अध्ययन करें और लौटकर अपने देश वासियों और सरकार को रिपोर्ट और सलाह दें.

हम अप्रैल 1956 के "चाइना रीकन्सट्रक्टस" से श्री चु शि-चिंग के एक इसी विषय के लेख से कुछ बातें उन्हीं के शब्दों में नीचे दे रहे हैं, जिससे यह पता चलता है कि पुराने तरीक़े से वहां के बीमारों का इलाज किस कामयाबी हे साथ किया जाता है और किस प्रकार मरते हुओं को भी चा लिया जाता है.

'एनसेकेलाइटिस' एक वीमारी का नाम है जिसमें देमारा के अन्दर सूजन आ जाती है, बीमार का जोर का दुकार हां जाता है, चकर आते हैं, के आती है और एक रह की बेहोशी छा जाती है.

पेकिंग के बचां के अस्पताल में पिछले साल एक साल जी उमर से लंकर चौद्द साल की उमर तक के बचांस बे इस बीमारी से अच्छे हांकर अपने घरों का वापिस । गए. वह सब बिलकुल तन्दुक्स्त हा गए और फिर । स्कूल, नरसरी आदि जाने लगे. इन बचीस चीनी बच्चों मेडिकल साइन्स का इतिहास बदल दिया, क्योंकि आजल के योरप के डाक्टर अधिकतर इस बीमारी को लाजाज सममते थे और उनके इलाज से बहुत कम लोग चते थे.

इन सब बच्चों की जान चीन के पुराने इलाज के रीक्के से बची. चीन के पुराने वैदा या हकीम सैकड़ों वरस

چین سے آنے والے پتر پتریکاؤں اور خاص کو وہاں کے سرکاری پتر پتویکاؤں میں اِس طرح کے لیکھ ہرابر تکاتیے رہتے ہیں جن سے پتہ چلتا ہے کہ نئے چین کی مرکار رہاں کے ہزاروں ہوس کے پرائے علاج کے طریقے کو اور پرانی دراؤں کو کس طرح ہرھاوا دے رہی ہے . ہمیں دکھ ہے کہ زاچکہ اری امرت کور نے چین سے اوت کر پرانی چینی ویدیک ودیا اور چینی سرکار کے اُس کی طرف رخ کی باہت جو کچھ سوچنا اپنے دیش اور سرکار کو دی وہ بالکل غلط ہے . ہماری رائے ہے کہ بھارت سرکار کی طرف سے دیھی کے کچھ تجرب کار ویدیوں اور حکیموں کا ایک ذیلیگیشن دیھی کے کچھ تجرب کار ویدیوں اور حکیموں کا ایک ذیلیگیشن جین جاتا چاہئے جس میں کچھ نشپکھی اور ہودئے انگریزی پڑھے ڈاکٹر بھی ہوں' جو چین جاکر اِن سب باتوں کا اچھی طرح آددھیں کویں اور لوت کر اپنے دیھی واسیوں اور سرکار کو رپورٹ اور صلاح دیں ،

هم اپریل 1956 کے ''چائنا ریکٹسنرکٹس'' سے شری چوشی ینگ کے ایک اِسی وشئے کے ایکھ سے کچھ باتیں اُنھیں کے شہروں میں نیچے دے رہے ھیں' جس سے یہ پته چلتا ہے که پرانے طریقے سے وہاں کے بیماروں کا علاج کس کامیابی کے ساتھ کیا جاتا ہے اور کس پرکار مرتے ہوؤں کو بھی بنچا لیا جاتا ہے .

'انسفیانٹس' ایک بیماری کا نام ہے جس میں دساغہ کے اندر سوجن آجانی ہے' بیمار کو زور کا بخار ہو جاتا ہے' چکر آتے ہیں' تے آتی ہے اور ایک طرح کی بھارشی سی چیا جاتے ہے۔

پیکنگ کےبچوں کے اسپتال میں پچہلے سال ایک سال کی عمر سے لیکر چوں قسال کی عمر سک کے بتیس بچے اِس بیماری سے اچھے ھو کر اپنے اپنے گھروں کو واپس آگیے ، وہ سب بالکل تندرست ھو گئے اور پھر سے اِسکول ' نرسری آدی جانے لگے ، اِن بتیس چیای بچوں نے میڈیکل سائنس کا اِنہاس بدل دیا کیونکہ آجکل کے یورپ کے قائم ادعکتر اِس بیماری کو لا عظم سحجہتے تھے اور اِن کے علم سے برت کم لوگ بچتے تھے ،

اِن سب بچوں کی جان چین کے پرانے علی کے طریقہ سے بچی ، چین کے پرانے وید یا حکیم سیکورں برس से इस तरह का इलाज करते आ रहे हैं. हाल में नई चीनी सरकार ने इस पुराने इलाज के तरीक़े को नए साइन्सी ढंग से आजमा कर देखा. सरकार की आशा स पहले दो साल के अन्दर एक साल की उमर से लेकर इकसठ साल की उमर तक के चन्वन बीमारों पर यह तरीका आजमाया गया. चन्वन रोगियों में से इक्यावन बिलकुल अन्छे हो गए, और जो तीन अन्छे नहीं हो सके वह वह थे जिनका रोग इलाज ग्रुक होने से पहले बहुत बद चुका था. जो इक्यावन अन्छे हो गए उनमें से किसी में रोग का या किसी दवा का कोई बुरा असर बाक़ी नहीं रहा.

इस पर चीन की मिनिस्ट्री आफ हेल्थ ने देश भर के अन्दर सब नए चीनी डाक्टरों से यह सिकारिश की कि इस बीमारी का इलाज सब जगह इसी पुराने तरीक्षे से किया जाने. नए चीन के वह सब डाक्टर जो आजकल के पिछझमी इलाज के तरीक्षों को सीखे हुए हैं अब और बीमारियों में भी इलाज के उन पुराने चीनी तरीक्षों की खोज कर रहे हैं और उन्हें सीख रहे हैं जो चीन में सैकड़ों बरस से चले आ रहे हैं. इस विषय पर सितम्बर सन् 19:5 के 'चाइना रीकन्सट्रक्ट्स" में डाक्टर ली लाव का एक लेख "दि स्टोरी आफ चाइनीज मेडिसन" के नाम से निकल चुका है.

यह बीमारी अधिकतर पन्दरह बरस से कम उमर के बच्चों का होती है. इसका खास असर दिमारा और नरवस सिसटम यानी नसों पर होता है. आजकल के डाक्टर इसे लगभग लाइलाज अमफते हैं. दूसरे देशों में इस रोग के जा थोड़े से रोगी बच जाते हैं उनमें से भी अधिकतर कम या ज्यादा गूँगे या बहरे हो जाते हैं, उनपर लक्षवे का असर आ जाता है और दिमारा पर भी बुरा असर बाक़ी रह जाता है 'पेनिसिलीन' 'स्ट्रैपटांमाईसीन' और 'औरियोमाईसीन' जैसी दबाओं का या 'सलका' दवाओं का, 'लैसमा' और 'सीरमिथरेपि' का इस बीमारी पर कोई असर नहीं होता.

योरप वालों को इस बीमारी का पता लगभग तीस बरस हुए चला. लेकिन चीन की दो हज़ार साल पहले की किताबों में इसकी श्रलामतें दी हुई हैं. जो इज़ाज आजकल चीन में इस का किया जाता है वह तीन सौ बरस पहले की लिखी हुई एक किताब से लिया गया है. उसमें इस रोग का कारण गरमी बताई गई है.

पेकिंग के बच्चों के अस्पताल में इसके चौंतीस बीमारों में से बत्तीस बिलकुत अच्छे हो गए. इलाज करने वाले चीनी वैद्य का नाम चियांग चीन-म्रान (Dr. Chian Chien-an) है. डाक्टर चियांग तीस साल से पुराने سے اِس طرح کاعلاج کرتے آرہے ھیں۔ حال میں نئی چینی سبکار لے اِس پر لئے علاج کے طریقے کو نئی سائنسی نھاگ سے آزما کو دیکھا۔ سرکار آکستو آکھاں سے بہلے دو سال کے آندر ایک سال کی عدر سے لیکر آکستو سال کی عمر نک کے چون بیماروں پر یہ طریقہ آزمایا گیا ۔ چون درگیرں میں سے ادیاری بالکل آچھے ھو گئے اور جو تین آچھے نہیں ھواسکہ وہ وہ تھے جن کا روگ علاج شروع ھوئے سے پہلے آچھے نہیں ھواسکہ وہ وہ اکیاری آچھے ھو گئے اُن میں سے کسی میں روگ کا یا کسی دوا کا کوئی ہرا اثر ہاتی نہیں رھا .

اِس پر چدن کی منسائری آف هیاتھ نے دیش بھر کے آندر سب نئے چینی قائاروں سے یہ سفارش کی که اِس بھماری کا علیے سب جابمہ اِسی پرائے طریقے سے کیا جارہ ، نئے چدن کے وہ سب قائلر جو آجال کے پنچھمی علیے کے طریقوں کو سیاس هوئے هیں آب اور بیماریوں میں بھی علیے کے اُن پرائے چیلی طریقرں کی کھرے کر رہے هیں اور اُنھیں سیاس رہئے ہی سبجو چین میں سیاروں برس سے چلے آرھے هیں ، اِس رشئے ہر ستمبر سن میں سیاروں پرس سے چلے آرھے هیں ، اِس رشئے ہر ستمبر سن میں اُنگر لی تاؤ کا ایک لیا ہی اِستردی آف چائیا ریکنسائر شس'' میں قائلر لی تاؤ کا ایک لیا ہے ،

یه بیماری آده تر یدره برس سے کم عمر کے بیچوں کو هوتی هے ۔ اِس کا خاص اثر دماغ اور نررس سسٹم یعنی نسوں پر هوتا هے . آجنل کے ذائر اِسے لگ بیگ لا علاج سمجھتے هیں ، دوسرے دیشوں میں اِس روگ کے جو تھوڑے سے روگی بچ جاتے عیں اُن میں سے بھی ادم تحر کم یا زیادہ گونگے یا بھرے هو جاتے هیں اُن پر لقرے کا ثر آ جانا هے اور دماغ پر بھی برا اثر بادی رہ جانا هے، 'پنسلین' اسٹیھٹو مائیسن' اور 'اوریو مائیسن' جیسی دراؤں کا یا 'سلما' دراؤں کا' 'لیسما' اور 'سفرم بھریھی کا اِس دراؤں کا تر نہیں ہونا ،

یورپ والوں کو اِس بیماری کا پتھ لگ بھگ تیس بوس ھوٹے چلار لیکن چین کی دو ھزار سال پہلے کی کتابوں میں اِس کی علمتیں دی ھوئی عیں، جو علاج اُجئل چین میں اِس کا کیا جاتا ہے وہ تین سو بوس پہلے کی لبھی ھوئی ایک ختاب سے لیا گیا ہے ۔ اُس دیں اِس روگ کا کارن گرمی بتانی گئی ہے ۔

ریکنگ کے بحوں کے اسپتال میں اِس کے چونتیس بیماروں میں سے بتیس بالکل اچھے ہوگئے، علیے کر والے چینی وید کا نام نے چیانگ چین۔ آن Dr. Chiang) کے قائر چیانگ نیس سال سے پرائے बीनी तरीक़े से रोगियों का इताज करते आ रहे हैं. उनके बाप दादा भी यहीं काम करते थे. उन्हीं से उन्हों ने पुरानी चीनी वैद्यक विद्या को सीखा है. चीन की 'चाइनीज मेडिकल एसोसिएशन' के मेम्बर पहले केश्ल योरोपियन ढंग के डाक्टर ही हो सकते थे. अब पुराने ढक्क के वैद्य भी उसके मेम्बर हो सकते हैं. डाक्टर चियांग उस के एक प्रतिष्ठित मेम्बर हैं. वह बहुत से योरोपियन ढंग से सीखे हुए डाक्टरों को पुरानी चीनी वैद्यक शिद्या सिखाते हैं.

वियाँग-कोई-रोक की हुकूमत के दिनों में नए ढंग के खाक्टर पुरानी वैद्यक को "रोर साइन्सी" कहकर उससे नफ्रत किया करते थे. नए चीन में बह हालत बिलकुल बदल गई. कोमिनताँग के शासन में पुराने चीनी वैद्य या हकीम नए अस्पतालों में नहीं घुस सकते थे. पर जनता ने उनके इलाज को जारी रखा और करोड़ों लोग उससे फायदा उठाते रहे. अब नई सरकार में उस पुरानी। विद्या की क़दर बहुत बढ़ गई.

हाक्टर चियाँग को जब पेकिंग के बच्चों के अस्पताल में लाया गया तो उन्हों ने अपने ही पुराने ढंग से रोगियों को देखना शुरू किया. उन्हों ने उनके साँस को देखा, उनकी नक्ज देखी, उनकी जवान देखी और उनके चेहरे की हालत देखी. हर रोगी की हालत के अनुसार उन्हें अलग अलग दवाएं दीं.

उन्होंने एक चार बरस की लड़की पाओं को देखा जिसे किसी पच्छिमी डाक्टर ने 'पेनिसिलीन' के इनजेक्शन दे रखे थे और 'एसिवरिन' जैसी द्वाएं खिला रखी थीं और फिर यह कह दिया था कि वह दो एक दिन से अधिक नहीं बच सकती. डाक्टर चियांग ने जब उसे देखा तो उसे एक सी साढ़े चार दरने का बुखार था और उसके सर पर बरफ़ की टोपी रखी हुई थी. डाक्टर चियांग ने पहले वह दोपी उतार कर फेंक दी, यह कहकर कि इस तरह जल्दी से बुखार नहीं उतारना चाहिये, इससे अन्त में नुक्रसान होता है. उन्हों ने पसीना आने की दवा देना भी ग्रलत बताया, यह कहकर कि पसीना आने की दवा देना 'ऐसा ही है जैसा खली में से तेल निचोड़ने की कोशिश करना, इससे रोगी और कमजोर हो जाता है." डाक्टर चियाँग षियादा गरम दवात्रों के भी खिलाफ हैं जैसे 'कोरामाइन'. बह इस रोग के लिये रोगी के आराम करने पर बहुत जोर देते हैं.

पहले इस रोग के रोगियों को दूध, खंडे, धौर दूसरी ताकत की चीजें खोन को दी जाती थीं. डाक्टर चियांग ने कहा कि "बुखार में इस तरह की चीजें देना और कोयले डालकर आग बुकाने की कोशिश करना है." उन्हों ने इन چینی طریقہ سے روگیوں کا علاج کرتے آرھے ھیں ۔ آن باب دادا بھی یہی کلم کرتے تھے ، آنھیں سے آنھوں نے پرآئی چینی ویدیک ودیا کو سیکھا ھے ، چھن کی اچائینز میڈیکل ایسویسٹیشن کے میمبر پہلے کیول یورپھن ڈیسٹ کے قائلر ھی ھو سکتے تھے ، آپ پرائے تعنگ کے برد بھی اُس کے میمبر ھو سکتے ھیں ۔ قائلر چیانگ اُس کے ایک پرنشتیس میمبر ھیں ۔ وہ بہت سے یوروپین تھنگ سے سیکے ھیا دیا سکواتے ھیں ۔

چھانگ کائی شھک کی حکومت کے دنوں میں نئے تھنگ کے دائر پرانی ویدیک کو ''غیر سائنسی'' کے کر اُس سے نفرت کیا کرتے تھے ، نئے چھن میں والا حالت بالکل بدل گئی، کومنتائگ کے شاسن میں پرائے چینی وید یا حکیم نئے اسپتالوں میں نہیں گبس سکتے تھے ، پو جنتا نے اُن کے علیج کو جاری رکھا اور 'ردروں لوگ اُس سے فایدہ اُتھاتے رہے ، اب نئی سرکار میں اُس برانی ویا کی قدر بہت بڑھ گئی ،

ڈائٹر چیانگ کو جب پھکنگ کے بچوں کے اسپتال میں لایا گیا تو آئیوں نے اپنے ھی پرانے دھنگ سے روگیوں کو دیکھا اُ اُن کی نبض شروع کیا ۔ آئیوں نے آن کے سانس کو دیکھا اُن کی نبض دیکھی اُن کی زبان دیکھی اُور اُن کے چورے کی حالت دیکھی میں ۔ میر روگی کی حالت کے انوسار آئیوں انگ الگ دوائیں دیں ۔

انہوں نے ایک چار ہوس کی ارتی پاؤ کو دیکھا جسے کسی یچھیں ڈاٹر نے 'پینسلیں' کے انجیکشن دے رکھ تھے اور 'ایسورین' جیسی دوائیں کھلا رکھی تھیں اور پھر یہ کو دیا تھا کہ وہ دو ایک دن سے ادھک نہیں بچ سکتی ۔ ڈائٹر چیانگ نے وہ دو ایک دن سے ادھک نہیں بچ سکتی ۔ ڈائٹر چیانگ نے جب اسے دیکھا تو اُسے ایکسو ساڑھے چار درجے کا بخار تھا اور اس کے سر پر برف کی ٹوبی رکھی ہوئی تھی ۔ ڈاکٹر چیانگ نے پہلے وہ اوپی ادارکر پھیلک دی' یہ کو کو ایس طرح خادی سے بخار نہیں ادارئا چاھئے' اِس سے انت میں نقصان مونا ھے ۔ انہوں نے پسینہ آنے کی درا دینا بھی غلط بتایا' یہ مونا شے ، انہوں نے پسینہ آنے کی درا دینا بھی غلط بتایا' یہ سے نیل نچورنے کی کوشش کرنا' اس سے روگی اور کورو ھو جانا سے نیل نچورنے کی کوشش کرنا' اس سے روگی اور کورو ھو جانا ہے ۔'' ڈاٹر چیانگ ویان کورومائیں ۔' رہ اِس روگ کو نئے درگی کے آرام کرنے پر جیسے 'کورومائیں ۔' رہ اِس روگ کے نئے درگی کے آرام کرنے پر جیسے 'کورومائیں ۔' رہ اِس روگ کے نئے درگی کے آرام کرنے پر

بہلے اِس روگ کے روگیوں کو دودھ' اُنڈے' اور دوسوی طابت کی چیزیں کیانے کو دی جاتی تبھی ۔ ڈائٹر چیانگ لے لہا کد "بخار میں اِس طرح کی چیزیں دینا اور کوئلے ڈالکو آگ بجہانے کی کوشھی کرنا تھے،'' اُنھوں نے اِن

) जगह चावल का पतला मांड और फलों का रस देना ह किया.

इलाज के लिये उन्हों ने कई पुरानी द्वाओं का कादा ह्वा कर रागियों को दिया. इनमें एक खास द्वा जिपसम ypsum) थी जो बुख़ार उतारने के लिये दी गई. पहले न ही रोगियों का बुखार दो दरजे नीचे उतर आया और त दिन के अन्दर विलक्कल उतर गया और नारमल हो था.

अलग अलग रोगियों पर डाक्टर वियांग ने जिपसम अलावा तीस और दवाओं का उपयोग किया, जो सब त की जड़ी बृटियां थीं. कुछ दवाएं बारह सिंघे के सींघ भी तैयार की गई थीं. उन्हों ने काफूर, और सुक्क स्त्री) का भी इस्तेमाल किया. है दिन के अन्दर सब ती अच्छे हो गए.

चीनी सरकार ने, जैसा उत्पर लिखा जा चुका है, सारे के डाक्टरों को इस पुराने तरीक़े को काम में लाने की दायत की है. उन्हों ने अपने ऐलान में नए ढंग के डाक्टरों कहा है कि:—"किसी चीज की बाबत शक करना जायज सकता है और साइन्स में जरूरी भी हो सकता है, किन सक्वी घटनाओं से इन्कार करना विलक्कत दूसरी त है. जबतक आपको शक रहे आप देखते भालते रहिये. इन्स की उन्नति का यही तरीक़ा है. सच्ची घटनाओं से कार करना साइन्स के साथ दुश्मनी करना है."

इसमें कोई सन्देह नहीं कि चीनी इलाज के इस पुराने ीक़े ने हमेशा के लिये बहुत से रोगियों की जानें बचा लीं. ोन के साइन्सदां अब उन सब दवाओं के तजरबे कर के ब रहे हैं.

हमारी हार्दिक अभिलाषा है कि किसी दिन हमारे देश मरकार भी वैद्यक और यूनानी जैसे देशी इलाज के तिकों और होमियोंपेथी और कुद्रती इलाज जैसे दूसरे ग्योगी तरीकों की सच्ची कदर करना सीखे, देश की रोड़ों सरीब जनता की तन्दु रुस्ती की रज्ञा कर सके और ए के अरबों रुपेये विदेशी दवाओं और मंहगी, राजत और निकर दवाओं में हर साल बरबाद होने से बना सके. کی جکه چارل کا پکلا مانت اور پهارس کا رس دینا شروع کیا .

علاج کے نائم انہوں نے کئی پرانی دواؤں کا کارہا پہواکر روگیوں کو دیا ، ان میں ایک خاص دوا جیسم (Gypsum) تھی جو بخار اتارنے کے لئم دی گئی ۔ پہلے دیں جی روگیوں کا بخار دو درجے نیجے آتر آیا اور تین دن کے اندر بالکل آتر گیا اور نارمل ہوگیا ۔

الگ الگ روگیوں پر تاکثر چھانگ نے جھسم کے علوہ تیس' اور دواؤں کا اپیوگ کیا جو سب چون کی جوی ہوئیاں نہیں ، کچھ دوائوں بارہسنکھ کے سینگ سے بھی تیار کی گئیں تھیں ۔ انہوں نے کانور' اور مشک (کستوری) کا بھی استمال کیا ، چہ دن کے اندر سب روگی اچھ ھوگئے ،

چینی سرکار نے کی جیسا اوپر لکھا جا چکا ہے سارے دیش کے دائٹررں کو اِس پرانے طریقے کو کلم میں لانے کی هدایت کی ہے ۔ انہوں نے اپنے اعلان میں نئے تھنگ کے دائٹروںسے کہا ہے کہ :— دائس چیز کی بابت شک کرنا جائز هوسکتا ہے اور سائنس میں ضروری بھی هوسکتا ہے کا دیکن سچی گیٹناؤں سے اِنکار کرنا بالکل دوسری بات ہے ۔ جب تک آپ کو شک رہے آپ دیکھتے بھالتے رہئے ۔ سائنس کی اُننٹی کا یہی طریقہ ہے ۔ سچی گھندوں سے اِنکار کرنا سائنس کی ساتھ دشمنی کرنا ہے ۔ اُ

اِس میں کوئی سندی نہیں نه چینی علاج کے اِس پرائے طریقہ نے همیشه کے لئے بہت سے روگیوں کی جائیں بچالیں . چین کے سائلسداں اُن سب دواؤںکے نجرہے کرکے دیکھ رکھیں۔

هماری هاردک أبهيلاشا هے که کسی دن همارے ديھی کی سرکار بهی ويديک أور يونائی جيسے ديشی علاج کے طريقوں أور هومهوپيٽنی أور قدرتی علاج جيسے دوسرے ايفوگی طريق کی سجی قدر کرنا سيتھے' ديھی کی کروؤوں غريب جنتا کی تندرستی کی رکشا کرسکے أور ديھی کے أوبوں روپئے وديشي دواؤں أور مهنکی' غلط أور هانيكر دواؤں ميں هر سال برباد هونے سے بحجا سكے.



## महात्मा बुद्ध की याद में

# ہا بدھ کی یاں میں

24 मई सन् 1956 को बैसाख महीने की पूनो के दिन, जिसे पुद्ध पूनों भी कहा जाता है, न सिर्क हिन्दुस्तान ने ध्रीर न सिर्क पशिया ने बल्कि सारी तहजीवयाफ़ता दुनिया ने, महात्मा बुद्ध की ढाई हजारवीं जयन्ती बड़ी धूम धाम के साथ मनाई. हिन्दुस्तान में तो उन सब पाक मुकामों पर, जहाँ की घूल को महात्मा बुद्ध ने अपने पाक क़दमों से खूकर श्रहमियत दी थी, जशन मनाये गये. बौद्ध तीर्थ स्थानों ने नई सदकों, नई इमारतों, नए बाग़ों, रोशनी की क़तारों, सरायों श्रीर घरमशालों. स्टेशनों श्रीर डाकलानों से सजधन कर एक नया जामा पहन लियाथा. लुन्बिनी के क्रीव जेतबन में जहाँ महात्मा बुद्ध की पैदाइश हुई, मन को हरने वाला एक नया याग बनाया गया. सारनाथ, जहाँ कि महात्मा बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था, एक लुभावना बाग्न बनाया गया जिसमें हिरनों के मुन्ड दूर दूर से लाकर छोड़े गये. बौद्ध गया, जहाँ महात्मा बुद्ध ने तपस्या की थी श्रीर ग्वालिन सुजाता की दी हुई खीर खाने के बाद ज्ञान प्राप्त किया था, बदल कर विस्कुल एक नया शहर ही बन गया श्रीर कुशी-नगरा, जहाँ भगवान बुद्ध ने अपनी देह की छाड़कर आज सं ढाई हजार बरस पहले निर्वाण प्राप्त किया था, उसे भी इजारों यात्रियों के लिये सुविधाजनक बनाया गया और इस काम में भारत की सरकार ने दरियादिली के साथ पचासों लाख रुपये खर्च किये. 23 मई को नई दिल्ली में बिदेशी द्तावासों की पुरी में, जिसे चाणक्य पुरी भी कहा जाता है राष्ट्रपति भवन के पीछे इस मौक़े की यादगार में पन्छित नेहरू ने एक नये स्मारक की वुनियाद डाली. सम्राट अशोक ने इसी प्रकार महात्मा बुद्ध की याद को ताजा किया था. आज ह्जारों बरस बाद महात्मा बुद्ध की याद को फिर ताजा किया जा रहा है. इसलिये कि दुनिया आज एक ऐसे मुकाम पर पहुँच गई है कि उसे बर्बादी से बचने के लिये ऐटन बम श्रीर हाईड्रांजन बम से श्रपनी हिफाजत करने के लिये सिवाय महोत्मा बुद्ध के बताए हुए रास्ते के और कोई दूसरा

24 مٹی سن 1956 کو بیساکھ مہینے کی پوٹو کے دن' جسے بدھ پونو بھی کہا جاتا ھے تع صرف ھندستان نے اور تع مرف ایشیا نے بلته ساری تهذیب یانته دنیا نے مهاتما بدھ کی دَمانی عزارویں جینتی ہوی دھوم دھام کے ساتھ منائی ، ھندستان میں تو اُن سب یاک مقاموں یو جہاں کی دعول کو مہاتما ہدھ نے اپنے پاک قدموں سے چھو کر أهميت دى تھى، جشن منائے گئے ،بودہ تیرتہ استہالوں نے نئی سرکوں نئی عمارتوں نئے بانوں' روشلی کی قطاروں' سرایوں اور دھرم شانوں' اِستیشنوں اور داکشانیں سے سبج دھیے کر ایک نیا جامہ یہی لیا تھا ، امالی کے قریب جیتبی میں جہاں ، ہاتما بدھ کی پیدائش ھوئی من کِ هرنے والد ایک نها باغ بنایا گیا . سارٹاته کچهاں که مهاتما بدھ نے اپنا پہلا ایدیھی دیا تھا' ایک لبھاونا باغ بنایا گیا جس میں مرنوں کے جہند دور دور سے لاکر چھوڑے گئے۔ ہونے گیا' جہاں مہاتما بدھ نے تیسیا کی نہی اور گوالی سوجانا کی دی ہوئی نھیر کھانے کے بعد گیاں پراپت کیا تھا' بدل کر بالعل ایک نیا شہر ھی بن کیا اور کوشی نکر جہاں بھکوآن بدھ نے اپنی دیہ کو چھور کر آج سے تھائی ہزار برس پیلے دروان پرایت کیا بھا آسے بھی مواروں یاتریوں کے اللہ سویدھاجنک بنایا گیا اور اِس کام میں بھارت کی سرکار نے دریادالی کے ساتھ پنچاسوں الکھ رریگہ خرب کا . 23 متی کو نئی دلی میں ودیشی درتا ولسوں کی پرری میں جسے چانعیہ پوری بھی کہا جانا ہے الشقر پتی البرن کے پینچھ اِس موقع کی یادگار میں پندت نہرو نے ایک نئے اسمارک کی بنیان آزالی . سمرات اشوک نے اِسی پرکار مهاتما بدھ کی یاں کو داری کھا تھا . آج ھزاروں برس بعد مهاتما بدھ کی یاں کو پھر تازہ کیا جا رہا ہے آس لئے که دنیا آج ایک ایسے مقام پر یہونچ گئی ہے که آس بربادی سے بھیلم کے لله ایتم ہم اور ھائیقروجن ہم سے اپنی حفاظت کرنے کے اللہ سوائے مہاتما بدھ کے بتائے ہوئے راستے کے آور کوئی دوسرا

रास्ता नहीं है. महात्मा बुद्ध के बुनियादी उपदेश जिन्हें पंचरीत कहा जाता है. आज नये रूप रंग के साथ दुनिया के सामने परिायाई मुल्कों की तरफ से पेश किये जा रहे हैं. आज दुनिया का हर सममदार इन्सान मन ही मन इसकी अहमियत को खूब समम रहा है.

#### युद्ध की तालीम

महात्मा बुद्ध का जन्म हजरत ईसा से 623 वर्ष पहले का बताया जाता है. जिस तेजी के साथ बौद्ध मजहब पूरे दक्किन एशिया, पूरबी एशिया और मध्य एशिया को फतह करके एक बार शान्ति के साथ पच्छिम की आर तमाम हमी साम्राज्य में फैल गया, दुनिया के किसी दूसरे मजहब के इतिहास में इसकी मिसाल नहीं मिलती. भारत, चीन श्रीर जापान के बीच उन दिनों काफी आमद रक्त थी, इसलिये यह भी नामुमकिन है कि बाजाब्ता बौद्ध प्रचारकों, कश्यप मातंग बरौरा के चीन पहुँचने से सिद्यों पहले यानी खुद बुद्ध ही की जिन्दगी में बुद्ध के उपदेशों की खुबर और उनकी गूँज चीन तक न पहुँची. चीन में उस जमाने में लाखां-को श्रीर कुक्-क-स्त्रे के मत बौद्ध मजहब के उसूलों के साथ बिस्कुले मिल जुल गये, यहाँ तक कि हर चीनी अपने का बौद्ध मजहब और ताओ भजहब का मानने वाला और कुङ्ग कू-त्जे यानी कनम्यूसियस का पैरोकार तीनों एक ही साथ सममता और यही कहता रहा है.

वैदिक साहित्य में उपनिषदों का जन्म महात्मा बुद्ध से पहले हो चुका था. उपनिषदों के लिखने वाले दुनिया को बता चुके थे कि तमाम अलग अलग दंवी देवताओं या उनके तख़ युल के पीछे असली परमात्मा एक है, वही सब के घट में मीजूद है और निजात का रास्ता किसी तरह के यक्ष, कर्मकाएड या कहियों का पालन करने में नहीं है बल्कि अपनी इन्द्रयों को जीतने, नश्सकुशी करने और खुदी को मिटाकर अल्लाह के वजूद में अपने वजूद को मिटा देना ही निजात, मुक्ति या निर्वाण है. लेकिन महात्मा बुद्ध के वक्त तक भारतवासी इस सच्चाई को भूल चुके थे. वर्ण व्यवस्था, जित पांत, छुआछूत, कर्म काएड और जानवरों की कुर्वानी का जोर था. सदाबार को उनके मुकाबिले में कम अहमियत दी जाती थी. महात्मा बुद्ध ने जमाने की हालत को देखते हुए उपदेश दिया—

"सच्चे सुख, ज्ञान और निजात का रास्ता अपनी नप्रसों यानी इन्द्रयों के पीछे दौड़ना नहीं, न अपनी वासनाओं को पूरा करने में है, न जिस्म को शैर जरूरी तकलीफ देने में है, निजात का सच्चा रास्ता इन दोनों के बीच से है. इस रास्ते पर चलने के लिये नीचे लिखी सच्चाइयों को समम लेना चाहिये. जन्म, बुदापा, बीमारी और मीत, प्यारों का वियोग और दुनियाबी तकलीफों, इन सब से इन्सान को दुख होता رأساته نہوں ہے مہانیا بدھ کے بنیادی اُپدیش' جتھیں 'پنچ شیل' کہا جاتا ہے' آج نئے روپ رنگ کے ساتھ دائیا کے سامنے آیشائی ملکوں کی طرف سے پیش کئے جا رہے ھیں۔ آج دائیا کا ھو سنجھدار انسان من ھی من آس کی اھیس کو خوب سنجھ رھا ہے ۔

#### بدھ کی تعلیم

مہانما ہدھ کا جنم حضرت عیسی سے 623 ورش پہلے کا ایکا جاتا ہے ۔ جس توزی کے ساتھ ہودھ منعب پورے دائیں ایشیا، پورسی ایشیا اور مدھیہ ایشا کو فاتم کو کے ایک بار شائمتی کے ساتھ پچھم کی اُور تمام رومی سامراجیہ میں پھیل گیا، دتیا کے کسی دوسوے منعب کے انہاس میں اِس کی مثال ٹیھن ملتی ، بھارت، چین اور جاپان کے بھیج اُن دائوں کافی اُمد رفت تھی، اِس ئے یہ بھی ناممان ہے کہ باظ بطہ بودھ پرچارکوں مشہ سے مانمگ وغیرہ کے چین پہونچھنے سے صدیوں پہلے یعنی خود بدھ ھی کی زندگی میں بدھ کے آپدیشوں کی خبر اور آن کی گونیج چین تک نه پہونچی ، چین میں اُس زمانے میں الله تزے اور فونگ فرتزے کے مت بودھ مذھب کے امواوں کے ساتھ بالکل مل جل گئے، یہاں تک که ھو چینی اپنے اور نونگ فو تزے کو بودھ مذھب کے اور نونگ فو تزے اور فونگ فارندی کی ساتھ سمجھیا اور یہی کہنا یعنی کندیوسیس کا پھروکار تیڈوں ایک ساتھ سمجھیا اور یہی کہنا یعنی کندیوسیس کا پھروکار تیڈوں ایک ساتھ سمجھیا اور یہی کہنا

ویدک سامتیم میں اپشندوں کا جنم مہاتما بدھ سے پہلے ھو چکا تیا . اہشندوں کے انہینے وائے دنیا کو بتا چکے تیے تم تمام الگ دیوی دیوناؤں یا اُن کے تخیل کے پیچھے اُصلی پرماتما ایک ہے وھی سب کے گھت میں موجود ہے اور نجات کا راسته کسی طرح کے بگیم کرمکانڈ یا روزھدوں کا یالی کرنے میں نہیں کے بلکت اپنی اندریوں کو جیتنے نفس کشی کرنے اُور خودی کو مما کو الله کے وجود میں اپنے وجود کو مما دیفا ھی نجات مملی یا نروان ہے ۔ لیکن مہاتما بدھ کے وقت ذک بہارت واسی ایس سچائی کو بھول چکے تھے ، ورن ویوستھا جات پافت وابی کے مقابلے میں کم اُھمیت دی جاتی نھی ، مہاتما بدھ کو اِن کے مقابلے میں کم اُھمیت دی جاتی نھی ، مہاتما بدھ کے وابدی کی حالت کو دیکھتے ھوئے اُپدیھی دیا ۔

"سچے سمه گیاں اور نجات کا راسته اپنی نفسوں یعنی الدریوں کے پیچھے،دوڑنا نہیں' نم اپنی واسناؤں کو پورا کرنے میں ھا نم دعم کو غیر ضووری تاکیف دینے میں ھا نجات کا سچا راستم ان دونوں کے پیچ سے ھا اس راستے پر چلنے کے لئے نیچے نمی سچانیوں کو سمجھ لینا چامئے ۔ جنم' برمانا میں اور موت' پیاروں کا لینا چامئے اور دنیاوی تاکیفوں' اِن سب سے انسان کو دکھ ھوتا

दे इस दुख का बुनियादी सबब ख्वाहिश यानी रुष्णा है इसों से जीव को बार बार जन्म लेना पढ़ता है. इसमें मोगों की छ्वाहिश यानी नप्रसपरस्ती, निजात की छ्वाहिश यानी जमत परस्ती और आत्म सुख की ख्वाहिश यानी खुद परस्ती में ही सब किस्म की ख्वाहिशें शामिल हैं. यह ख्वाहिशें जीव के लिये रोग की तरह हैं. जीव की वजह से ही यह ख्वाहिशों पेदा होती हैं. ख्वाहिशों के जीतने का मतलब है सब दुखों से निजात पाना. ख्वाहिशों के जीतने के लिये अठपहलू रास्ते यानी अष्टांगिक मार्ग पर चलना जरूरी है. यह अठपहलू रास्त सतह का है.

- (1) सम्यक दृष्टि—यानी दुख, उसके बुनियादी सवब और उसके दूर करने के तरीक्षों को ठीक ठीक समक लेना.
- (२) सम्यक् संकल्प—यानी इस बात का ऋहद करना कि मैं बेलौसी के साथ किसी की हिंसा न करते हुए और किसी से नकरत न करते हुए सब काम करूँगा.
- (3) सम्यक् वचन—यानी भूठ न बोलना, किसी की बुराई न करना, सख्त अल्फ़ाज मुँह से न निकालना और किजूल बात न करना.
- (4) सम्यक् कर्मान्त—यानी किसी भी जानदार की हिंसा न करना. बिना दी हुई चीज न लेना और व्यभिचार न करना.
- (ं)) सम्यक आजीव—यानी जरियेमाश (आजीविका) के ग़लत रास्तों को छोड़ कर सच्ची और ईमान्दारी की राजी से जिन्दगी विताना.
- (6) सम्यक् व्यायाम—यानी बुरे कामों के न करने भौर नेक कामों के करने के लिये पुख्ता इरादा करना, भभ्यास करना भौर उसके लिये चित्त को वश में करना.
- (7) सम्यक्रमृति—यानी इस बात को ध्यान में रखना कि टट्टी पेशाब्, बुढ़ापा और मौत जिस्म के साथ लगे हुए हैं, इसिचये मोह और दुख को छोड़कर, लेकिन हमेशा कारगर रह कर, दुनिया में विचरना.
- (8) सम्यक् समाज—यानी ध्यान और विश्व की एका-मता जिसमें पहले वितर्क, विचार, प्रेम, सुख और एकामता यह पांचों बातें रहती हैं. धीरे धीरे वितर्क और विचार का अन्त हो जाता है, फिर प्रीति का लोप हो जाता है और आसीर में सुख भी सायब हो जाता है और बच जाती है एकामता."

यह चठपहलू रास्ता ही महास्मा बुद्ध के उपदेशों का सार है- هے، اِس دی کا بنیادی سبب خواهش یعنی ترشنا هے، اِس میں اِسی سے جیو کو بار بار جنم لینا پرتا هے، اِس میں پہرگی کی خواهش یعنی نفس پرستی انجات کی خواهش یعنی خودیور کی میں هی سب قسم کی خواهشیں شامل هیں ، یه خواهشیں جیو کی وجه سے خواهشیں جیو کی اور آنم سکے دی خواهشیں جیو کی وجه سے خواهشیں جیو کی وجه سے می یہ خواهشیں بیدا هوتی هیں ، خواهشیں کو جیتنے کا مطلب هے سب دیور سے نجات پانا ، خواهشیں کر جیتنے کا لئے آئے پہلو راستے یعنی اشقانک مارک پر چلدا ضروری هے ، بی اور استے اس طرح کا ہے۔

- (1) سمیک درشتی-بعنی دی، اس کے بنیادی سبب ارر ان کے دور کرنے کے طریقوں کو تھیک تھیک سمجھ لینا ۔
- (2) سمیک سفلپ سیعنی اس بات کا عہد کرنا کہ میں ہلوئی کے ساتھ کسی فی هذا اللہ کرتے ہوئے اور کسی سے نفرت نه درتے هوئے سب کام کرونگا .
- (3) سبیک وچی-یعنی جهوت نه بولنا کسی کی براثی نه کرنا سخت الفاظ منه سه نه نکالنا اور نفول بات نه کرنا .
- (4) سمیک کرمانت سیعنی کسی بهی جاندار کی عنسا نه کرنا . بنا دی هوئی چیز نه لینا اور وبهچار نه کرنا .
- (5) سمیک آجهرسیعلی ذریعه معاش ( آجهریکا ) کے فلما راستوں کو چهروکر سچی اور ایمانداری کی روزی سے زندگی بتانا .
- (6) سمیک ریایام—یعنی برے کامرں کے تھ کرلے اُور نیک کاموں کے کرلے کے اُلے پیکتہ اِرادہ کرفا صحبت طرفا ا انبیاس کرنا اور اُس کے لئے چت کو وش میں کرنا ،
- (7) سبیک اسمرتی--یعنی اِس بات کو دهیان میں رکھا که ثقی پیشاب برهایا اور موت جسم کے سابه نگے هوائے هیں ایس لئے موہ اور دکه کو چهور کرا لیکن همیشه کارگر رہ کرا دیا میں وچرنا .
- (8) سمیک سماج —یعنی دههان اور چت کی ایکاگرتا جس میں پہلے وترک وچار پریم کی اور ایکاگرتا یہ پانچوں باتیں رهتی هیں . دهیرے دهیرے وترک اور وچار کا انت هوجاتا هے پور پریتی کا لوپ هوجاتا هے اور آخر میں سکھ بھی غایب هوجاتا هے اور بچ جاتی هے ایکاگرتا .

۔ یہ اله پہنو راسته هی مہانما بدھ کے اُپدیشوں کا سار هے . 11 11 11 11

सबके साथ षहिंसा धीर कट्टर दुश्मनों तक को माक रता धीर सब की तरक दोस्ती का भाव रखना बीद जहब का खास उस्त है. मई धीर धीरत दोनों को बुद जात का हक़दार मानते थे. दोनों को दुनिया को तर्क करने, व्याहा रहने धीर यकसां मजहब का प्रचार करने का क़दार मानते थे. जात पांत, छुआ छूत, ऊँच नीच के स्थाल वे सस्त मुखालिक थे. वे इन्सान और इन्सान के बीच रावरी के कायल थे. उनका कहना था कि इन्सान अपनी स्ती के राज को कम से कम इतना समझले कि दुनियावी इन्दगी धीर उसकी आसाइशों की मुनासिब से ज्यादा मित न धाँके धीर इस तरह से जिन्दगी बिताए कि जिस ज्यादा से ज्यादा इन्सानों को ज्यादा से ज्यादा मुख तिर कम से कम दुख हासिल हो. वे कहते थे कि नक्स रस्ती, दुई धीर खुदी इन तीनों से ऊपर उठकर बेग़ी(रयत सिल करने का नाम ही निर्वाग्य है.

बुद्ध के उपदेशों का लुब्बे लुबाब बनकी इस गाथा में तेजूद है—

"कोई पाप न करना, सब की अलाई करना और अपने ल को पाक साफ रखना, यही बौद्धों की हिदायत है. सब गैद्ध प्रहस्थों को अहिंसा, चोरी न करना, सच्चाई, सदाचार, रहेजगारी और नशीली चीजों का सेवन न करना," इन ंच बातों का अहद लेना पड़ता था.

धम्मपद में लिखा है -- "अगर कोई शखस बेबक्कि से री बुराई करे तो मैं बदते में अपनी मोहब्बत से उसे नेढाल करदूँगा. जितना जितना बह मेरी बुराई करेगा तना उतना ही मैं उसकी भलाई कहाँगा."

यह है भगवान बुद्ध की शिक्षा का निचोड़ जिसपर लकर इन्सानी क्रीम को अपनी रुहानी, जिस्मानी और माग्री मुसीबतों से निजात मिल सकती है.

24.5.56

—विश्वमभरनाथ पांडे

سب کے ساتھ اھنسا اور کار دشمنوں تک کو معاف کونا اور سب کی طرف دوستی کا بھاؤ رکھنا بودھ مذھب کا خاص اصول ہے ۔ مرد اور عورت دونوں کو نجات کا حقدار مائتے تھے ۔ دونوں کو دنیا کو ترک کرنے کی پیاھا رہنے اور یکساں مذھب کا پرچار کرنے کا حقدار مائتے تھے ۔ جات پائت کوچواچھوت کونچ لیچ کے خیال کے وہ سخت مطالف تھے ، وہ انسان اور انسان کے بیچ برابری کے قابل تھے ، اُن کا کہنا تھا کہ انسان اپنی ھستی کے راز کو کم سے کم اننا سمجھ لے کہ دنیاری وندگی اور اس کی آسایشوں کی مقاسب سے زیادہ تھیت تے آئیکے اور اس طرح سے زیادہ سکھ اور کم سے کم دکھ جس سے دیادہ انسانوں کو زیادہ سے زیادہ سکھ اور کم سے کم دکھ حاصل ھو ۔ وہ کہتے تھا کہ نفس پرستی دوئی اور خودی اِن حاصل ھو ۔ وہ کہتے تھا کہ نفس پرستی دوئی اور خودی اِن خودی اِن

بدھ کے اُپدیشوں کا لبالیاب اُن کی اِس کانیا میں موجود ---

"كوئى پاپ نه كرنا" سب كى بهائى كرنا أور أين دل كو ياك ماف ركهنا يهى بدهوں كى هدايت هـ سب بوده كرهستوں كو أهنسا" چورى نه كرنا" سچائى" سداچار" برهيزكرى أور نشيلى چيزوں كا سيوں نه كرنا" إن پانچ باتوں كا عهد لينا پرتا تها .

دھم پد میں لکھا ھے۔۔۔<sup>وو</sup>اگر کوئی شخص بیوتونی سے میری برائی کرے تو میں بدلے میں اپنی محب*ت سے اِسے ن*تھال کردونگا ، جننا جننا ھی وہ میری برائی کریگا اُننا اُننا ھی میں اُس کی بھائی کرونگا ،''

یم هے بهکواں بده کی شکشا کا تحورز جس پر چلکر انسانی قوم کو اپنی روحانی' جسمانی اور دمانی مصهبگری سے تجات مل سکتی هے. 700 PAGES, 82 !LLUSTRATIONS 2 COLOURED MAPS

#### "CHINA TODAY"

PRICE

Rs. 7. 8. 0

A vivid narration of the glorieus and wounderful achievements of New Chius... A picture of Chius which is both convincing and authentic... the best book that has come out so far on New Chius in the English language ... the most objective in approach and comprehensive in treatment.

—National Herald, Lucknow.

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserves to be widely known

—Leader, Allahabad.

Encelopædic...characterized by acute observation of detail as well as by..instinctive grasp of the fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China.

— Blitz, Bombay

A mine of information which gives a picture of China as nothing else dose...the best guide to New. China...Those who would like to understand what is happeing in New China can do not better than to study it.

—Bharat Jyoti, Bombay

The wealth of information it gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs.

—Indian Express, Madras

China Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of men and matter... brings to the lighty mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations for a tomorrow which is theirs.

—Vigil, Delhi.

# 

سانسكونك سأعتيه

कारत मोइम्मद भीर इसलाम

वर्ष-परिवत सुन्दरकाल, मूल्य-तीन रुपया संस्थान के प्रेम्प्यर के सम्बन्ध में भारतीय भाषाओं में इस से सुन्दर कोई दूखरी पुस्तक नहीं

इज़रत ईसा और ईसाई धर्म बैसक पन्डित सुन्दरलाल, मूल्य डेढ़ रुपया महात्मा जरथुस्त्र और ईरानी संस्कृति क्रेसक-विश्वनभरनाथ पांडे, श्रीमत-दो रुपया यहूदी धर्भ और सामी संस्कृति

नेसक-विश्वमभरनाथ पांडे, क्रीमत-दो रूपया प्राचीन मिस्र की सभ्यता और संस्कृति लेखक-विश्वनभरनाथ पांडे, क्रीमत-दी रुक्या

रुमेर बाबुल और असुरिया की प्राचीन संस्कृति

शेखक-विश्वन्भरनाथ पांडे, क्रीमत-दो करवा **प्राचीन यूनानी सभ्यता ऋँ।र संस्कृति** 

लेखक-विश्वमभरनाथ पांडे, कीमत-दो रुपया

गंगा से गोमती तक

( प्रगतिशील कहानी संप्रह )

लेखक-श्री मुजीब रिजवी, कीमत-दो रुपया

आग और आंस्

( भावपूर्न सामाजिक कहानियाँ )

तेसक शक्टर अस्तर हुसेन रावपुरी, क्रीमस—डेढ़ रुपया

कुरान और धार्मिक मतभेद

तेसक-मौलाना अबुलकलाभ आजाद, क्रीमत-बेद रुपया

संकार

( प्रगतिशील कविताओं का संप्रह )

केसक-रघुवति सहाय किराक्त, क्रीमत-तीन रुपया

मिलने का पता

कंदन्यां कलचर सोसायटी हैं। कलचर सोसायटी

145 सुद्रीगंज, इलाहाबाद ماأما أولا 145

حضوت متعمد أور إسلام

الهاك سينتات سندر لل ، موله ستين رويه

الله كے يعنسر كے سبندہ ميں بھارتيہ بھاعاؤں ميں اِس سے سندر کوئی دوسری پستک تهیں،

محضوت عیسی اور عیسائی دهرم الهیک سینت سندر ال مولیه مولیه دربه

اتها زر تهستر اور ایرانی سنسکرتی لهنهك - وشرسهر ناته ياندني تست-در رويه

والحين مصر كى سبهيتا اور سنسكرتى

سپر ابایل اور اسوریا عی براچین سنسکرتی ليكهك-رشومبهر ثاته يائذے أ قيمت دو رويه

نوا چین بونانی سبعیدا اور سنسکرتی اینک سرورویه اینک سرورویه

گنگا سے گومتی تک

( پرگنی شیل کہائی سناوہ ) لیکیک شری مجیب رضوی تیست در رویه

أك اود انسو

( بهاوپررن سماجک کهانیان )

ك - قاكر اختر حسين رائه يورى ويت - ديره رويه

قرآن اور دهارمک مع بهید نهک سرانا ابرکلم آزاد، قست تیوه روید

حهنكار

( پرگتیشیل کویتاؤں کا سنکوہ )

ليكهك سرگهويتي سهائه فراق الله قيست ستين رويه

ملنے کا پند

# कारक कर इस

कलचर पर हर तरह की किताबें मिलने का पक बड़ी केन्द्र—पाठक हिन्दीं, उर्दू, बोंग्रेज़ीं की अपनी मन-पसन्द किताबों के बिये हमें लिखें।

> हमारी नई किताबें महात्मा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी और छंदू में) लेखक—गान्धीवाद के माने जाने बिद्वान: श्री मंजर अली सोख्ता सके 225, क्रीमत दो क्रया

गान्धी बावा

( क्रुबों के लिये बहुत दिलचस्य किताब ) लेखिका—क़ुद्सिया जैदी भूमिका—पन्डित जबाहरलाल नेहरू मोटा काराज, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तमवीरें दाम दो रुपया

> पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी कितायें गीता श्रीर क़ुरान 275 सके, दाम ढाई रुपया

हिन्दू मुस्तिम एकता 100 सके, दाम नारह आने

महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक

• क्रीमत बारह आने

पंजाब इमें क्या सिखाता है कीमत चार वानें वंगाल कोर उससे सबक्र कीमत वो वाने

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 सुद्धोगंज इसाहाबाद

کلچر پر هر طرح کی کتابیں ملنے کا ایک برا کیندر باتھک هندی انگریزی کی من پسند کتابوں کے لئے همیں لکھیں .

هاری نئی کتابیں

مهاتها گافدهی کی وصیع (هندی اور آردو میں)
لیمهک-گادهی واد کے مانے جائے ودوان: شری منظر علی سوخته صنحے 225 نیست دو رویه

-:0:-

كندهي بابا

(بچوں کے لئے بہت داچسپ کتاب)
لیکھکا—قدسیہ زیدی
بھوہکا—پنڌت جواهر الل فہرو
موٹا کافذ' موٹا ٹائپ' بہت سی رٹکیں تصویریں
دام دو ررپیہ
۔:::-:

پندت سندرال جی کی لئھی <sup>کتابیں</sup> اور قران

275 منحم دام تعانى رويه

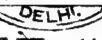
هندو مسلم ایکتا 100 منحه دام باره آنے

پنجاب همیں کیا سکھاتا <u>ھے</u> . تست چار آنے

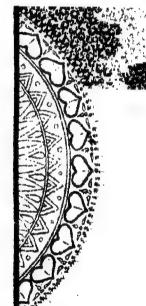
بنگال اور اس سے سبق

هندستانی تلچر سوسائتی

و115 متمي كنبج الماران



इस नम्बर के ख़ास लेख اِس نبور کے خاص لبکھ इसलाम के बुनियादी उसल إسام كے بانيانى أمول -भई मंजरमती सोस्ता سيهائي مغطر على سوخاته हह वा भारमा जब वाक्रिय होने सगती है कुम के स्थाप क्र धी। क्र धी। -डाक्टर भगवानवास दो समंदरों का संगम चीर सचाई का ४ डीक्न भी न्यान ४ अ -डाक्टर ताराचन्त् बाबा अनुलक्षक دادا ابوالشل —पंडित सुन्दरज्ञाल مسينتس سندر ال नागा क्रीम और भारत تاكا قهم أور بهارت



इसके अखावा

—पंडित सुन्दरलात

سينتب سلار ال

देस विदेस के गसलों पर इमारी खब में जकरी सम्पादकी नोट دیس بدیس کے مثلیں پر هناری رأثہ میں فروری سیادکی ٹوف

मानी कलचर सोसाइटी, इसाहाबाद 🎇 अंग उं



# NAVA HIM

Monthly Journal of the Hindustani Culture Sacisty.

#### Editorial Board

Dr. Tara Chand M.A., D. Phil. (Oxon)

Mahatma Bhagwan Din

Dr. Syed Mahmud, M.A., Ph.D., Bar-at-Law

Pandit Sundarlal

Bishambhar Nath Pande

#### Editor-in-Charge

Bishambhar Nath Pande

#### Asst. Editors

Suresh Ramabhai Mujib Rizvi

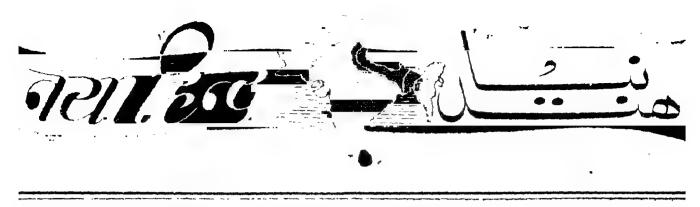
## **Annual Subscription**

Inland Rs. 6/Foreign Rs. 10/Single Copy As. /10/- only

Can be had from -

# Manager, NAYA HIND

145. MUTTHIGANJ. ALLAHABAD-3.



نمبر नम्बर 6 جلد जिल्द 21

जून 1956 क्र

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी डांग्य अध्य डांग्य अध्य अध्य अध्य अध्य १४५ मुट्टीगंज, इलाहाबाद

# জ্ন 1956 ু-

| मया किस मे   |  | सप          | صفحته آ | کیا کس سے  |
|--|--|-------------|---------|--|
| 1. इसलाम के बुनियादी उर<br>भाई मंजरब्बली साल्ता  |  | 287         |         | <ol> <li>اسلام کے بنہادی آمول</li> <li>الی ماظر علی سوخته</li> </ol>   |
| 2. रूह या आत्मा जब बालिग़ होने लगती है   |  |             |         | 2. روح يا أتما جب بالغ هوني لكتي هي  |
| —डाक्टर भगवानदास   | ***  | 303         |         |  |
| 3. दो समंदरों का सङ्गम और सचाई का प्रकाश   |  |             |         | <ol> <li>دو سمندرون کا سنکم اور سچائی کا پرکاش</li> </ol>  |
| डाक्टर ताराचन्द  | ***  | 312         | • • -   | دَائِدُر تارأ چند  |
| <sup>4</sup> . दादा अबुलफ़ज़ल  |  |             |         | 4. دادا ابوالنقل   |
| —पंडित सुन्दरलाल   | 000  | 317         | •••     | - پنڌڪ سادر ال   |
| <ol> <li>नागा क्रीम और भारत</li> </ol>   |  |             | ^       | چ. ثاگا قوم أور بهارت  |
| —पंडत सुन्द्रलाल   | ***  | 325         | •••     | پنڌت سندر ال   |
| 6. ग्रहम्मद साहब को कुछ ह  | दीसे ं   |             |         | 6. محمد ماحب کی کچم حدیثیں   |
| — अनुवादक: श्री मुजीव  | रिजवी  | <b>33</b> 5 | •••     | سانوادک : شری مجیب رضوی  |
| <ol> <li>हमारी राय—</li> </ol>   | ****   | 338         | • • •   | 7. همایی رائی—   |
| विनोबा जी घौर भार<br>बी. जी. खेर घौर दूस<br>बनारस की जगह 'वार<br>(जन्त्री); 'नया हिन्द<br>मेमियों से—सुन्दरलाल | ति पंच वर्षी योजनाः<br> ग्रासी'; चीनी पंचांग<br> ' के गाहकों श्रीर |             |         | ونوباجی اور بهارت کی راجدهانی شری بی جی می دوسری شری بی جی که که درشی یوچنا ؛ بنارس نی جگه رارانسی ؛ چینی پنچانگ ( چنتری )؛ انها هند کے گلهکیس اور پریمیوں سے سندر لال . |

## भाई मंजरञ्जली सोखता

بهائي منظر على سوخته

मैं भारत बासियों भीर खासकर मुसलमानों का ध्यान इस नाजुक और खतरनाक स्थिति की तरफ दिलाना चाहता हुँ जो पिच्छमी सभ्यता अपने साथ लाई है, और जिसने इन्सानी दुनिया पर एक गहरा असर डाल रक्खा है. इस पच्छिमी सभ्यता ने एक खास बात यह की है कि इसने उस मेल और बैठ बिठाव को जो धर्म मजहब ने आदमी की ह्मानी और मादी, लौकिक और पारलौकिक जिंदगी के बोच कायम कर रखा था, उलट दिया है. इस सभ्यता ने ईश्वर में विश्वास की जगह नास्तिकता को, रुहानियत की जगह दौलत परस्ती को, सचाई की जगह पालिसी यानी हिकमते अमली को, सेवा और त्याग की जगह अमीराना ऐशो इशरत को. नैतिक यानी इखलाक़ी ताक़तों की जगह हैवानी और शैतानी शक्तियों को दे दी है. पच्छमी सभ्यता सब लोगों से कहती है कि अपनी जिंदगी की जरूरतों को बढ़ाओ और उन्हें पूरा करने में श्रपनी सारी ताक़त लगा दो. यह सभ्यता सार मानव समाज की भलाई की जगह अलग अलग लोगों के सामने अपने अपने देशों, राष्ट्रों और जमाश्रतों की भलाई और तरक्की का आदर्श रखती है. किसी तरह की भी निस्वार्थ सेवा या कुर्वानी में उसे विश्वास ही नहीं. अपने लक्ष तक पहुँचने के लिए मार काट, हिंसा और जुल्म जबर-दस्ती को वह जायज तरीका मानती है. वह साफ कहती है कि अपने सक्तसद को पूरा करने के लिए नेक और बद, श्रच्छी और बुरी, हर तरह की राह अख्तियार की जा सकती है.

जो जो आफतें इस समय दुनिया पर आ रही हैं उन सबका केवल एक कारण यह है कि दुनिया के लोगों ने अपने धार्मिक और मजहबी रास्ते छोड़कर पच्छिमी सभ्यता का रास्ता अखितयार कर लिया है. जब तक दुनिया के लोग हक्रपरस्ती यानी सचाई और नेकी की सीधी राह अखितयार न करेंगे, यह आए दिन की आफतें उनपर आती रहेंगी, और हम उन पुरानी क्रीमों की तरह ही हलाक हो जाएँगे जो पिछले जमानों में अपने बुरे कामों के कारण तबाह और बरबाद हो चुकी हैं.

में सासकर मुसलमानों का ज्यान उन उस्लों की तरफ दिलाना चाहता हूँ जिन पर क़ुरान ने मनुष्य के रूहानी, समाजी, आर्थिक और राजकाजी जीवन को क़ायम करना

مين بهارت وأسيول أور خاصكر مسلماتون كا دهيان أس نازک اور خطرناک اِستهتی کی طرف دلانا چاهنا هوں جو پچھمی سبھا اپنے ساتھ لائی ہے؛ اور جس نے انسانی دنھا پر ایک گہرا اثر ڈال رکھا ہے ۔ اِس پچھمی سبھتا نے ایک خاص دات يه كي هه كه اِس في أس ميل اور بيته بيتهاؤ كو جو دهرم مذھب نے آدمی کی روحانی اور مادی اودک اور دارلوکک زندگی کے بیج قایم کر رکھا تھا اُلت دیا ہے ۔ اِس سبھتا نے ایشور میں رشواش کی جکہت ناستعتا کو روحانیت کی جکہت دولت يرستى كوا سچائىكى جكهة باليسى يعنى حكمت عملى كوا سيوأ اور تیاک کی جکهه امیرانه عیش و عشرت کو نیتک یعنی اخلاقی طافتیں کی جگہت حیرائی اور شیطانی شکتیوں کو دے دی هے . بحیهمی سبهتا سب اوکس سے کہتی هے که اپنی ولدگی کی ضرورترں کو بڑھاؤ اور اُنھیں پورا کرنے میں اپنی ساری طانت الله دو . يه سبهما سارت مانو سماج كي بهالتي كي جكهه الگ الگ لوگیں کے سامنے اپنے اپنے دیشوں المقروں اور جماعتوں کی بہلائی اور ترقی کا آدرش رکھتی ہے ۔ کسی طرح كي بهي نسوارته سيوا يا فربائي مهن أسے وشواس هي تمهن . الله لکش نک بہوانچے کے لئے مار کاف منسا اور ظلم زبردستی كو ولا جابز طريقه مانتي هي ولا صاف كهاي هي كه أيني مقصد کو پورا کرنے کے اللہ نیک اور ید' اچھی اور بری' هر طرح کی راہ اخترار کی جا سکتی ہے .

جو جو آفتیں اِس سمے دنیا پر آرھی ھیں اُن سپ کا کیول ایک کارن یہ فے که دنیا کے لوگوں نے اپنے دھارمک اور مذہبی راستے چپور کر پیچھبی سبھتا کا راسته اختیار کر ایا ہے ۔ جب نک دنیا کے لوگ حتی پرستی یعنی سبھائی اور نیمی کی سدھی راہ اختیار نہ کرینکے' یہ آئے دن کی آفتیں اُن پر آئی رھیاگی' اور ھم اُن پرائی قوموں کی طرح ھی ھلاک ھو جائیں گے جو پیچیلے زمانوں میں اپنے برے کاموں کے کارن نباہ اور برباد ھو چمی ھیں ۔

میں خاصکر مسلمانی کا دھیان اُن اُمولی کی طرف داندا چاھتا عوں جن پر قرآن نے منشیع کے روحانی' سماجی' اُرتھک اور راجکاچی جھون کو قایم کونا

बाहा है. मुक्ते दुख है कि पढ़े लिखे मुसलमान भी इन्हें बहुत कम समक्षते हैं. इसलिए मैं उन्हें विस्तार के साथ बयान कर देना चाहता हूँ. मैं दिखाना चाहता हूँ कि क़ुरान ने अपने उन बुनियादी उसलों में सच्ची लोकशाही (जमहूरियत) को कितनी ऊँची जगह दी है और आजादी, बराधरी और भाईचारे के सुनहरे उसलों को किस पैमाने पर आदमी की जिंदगी की बुनियाद ठहराया है.

### इसलाम के रूहानी उसल

कुरान 'तौहीद' यानी एक अल्लाह के होने को दुनिया की सबसे बड़ी सचाई बताता है. वह आदमी की जिंदगी के हर पहलू की बुनियाद इसी सचाई पर क़ायम करता है. क़ुरान का कहना है कि जब कुल सृष्टि का ईश्वर एक है तो लाजभी तौर पर कुल मानव समाज भी उसी ईश्वर की एकता का एक रूप है. आदमी अपनी अकल और अपनी आध्यात्मिक (रूहानी) शांक्तयों से इस सच्चाई को अच्छी तरह समम सकता है. इस्रालए आदमी का सबसे पहला कर्ज यह है कि ईश्वर की एकता को अपने धर्म ईमानकी बुनियाद बनाए और अपने उस मालिक के सामने, जिसने उसे पैदा किया और दुनिया की नियामतें दीं, सर मुकाए. आदमी के रूहानी जीवन का यही सबसे पहला उसूल है.

तौहीद से आगे बद्कर क़ुरान ने दां तरह के कर्ज हर आदमी के सामने रक्खे है—एक जिन्हें वह 'हक़ूक अल्लाह' कहता है यनी ईश्वर की तरफ आदमी के फर्ज और दूसरे जिन्हें वह 'हक़ूक उलअवाद' कहता है यानी आदमी की तरफ आदमी के फर्ज हक़ूक अल्लाह में नमाज, रोजा, हज्ज और जकात जैसी चीजें शामिल हैं, जिन्हें हर आदमी देश काल के अनुसार अपने ढंग से अदा कर सकता है. क़ुरान ने इन्हें हर आदमी के लिए फर्ज बताया है. यह इवादत यानी ईश्वर पूजा है. इनसे आदमी में रूहानी शक्ति आती है.

'हक्कूक श्रन्ताह' के साथ ही क़ुरान ने 'हक्कूक उलश्रवाद' यानी हर श्रादमी के दूसरे श्रादमियों की तरफ फ़ज़ों पर भी जार दिया है श्रीर साफ़ कहा है कि श्रगर हक्कूक श्रन्ताह के पूरा करने में किसी तरह की कमी रह जाय ता खुदा माफ़ कर सकता है, लेकिन श्रगर हक्कू क टलश्रवाद के पूरा करने में जर्रा बराबर भी कमी रह जाय ता खुदा उसे हरगिज माफ़ न करेगा. ऐसे श्रादमी को इस दुनिया में श्रीर दूसरी दुनिया में, दोनों में, खिसारा यानी घाटा उठाना पढ़ेगा.

यहां तक क़ुरान का पहला बुनियादी उसूल हुन्ना.

हुरान का दूसरा उसूल यह है कि इक्कूक अल्लाह यानी नमाज, रोजा, जकात और इन्ज आदमी का रूहानी जिंदगी और अंदर के जीवन से संबंध रखते हैं. इसलिए इन्हें ईमान (श्रद्धा) ख़लूसे कल्व (शुद्ध हृदय) और बेरारजी (निस्वार्थता) چلفا ہے۔ مجھے دکھ ہے کہ پڑھ لکھے مسلمان بھی اِنھیں و متار اُنھیں و متار کم سمجھتے ہیں۔ اِس لئے میں اُنھیں و متار کے سانہ بیان کو دینا چادتا ہیں۔ میں دکھانا چادتا ہوں کہ فرائن 1 اپنے اُن بنیادی اُصواوں میں سچی لوک شاھی ( جمہوریت ) کو کتنی اُونچی جکھت دی ہے اور آزادی اُرابری اور بھائی چارے کے سنہرے اُصولوں کو کس پیمانے پر اردی کی زندگی کی بنیان تھہرایا ہے ۔

# اسلم کے روحانی آصول

قرآن 'توحید' یعنی ایک الله کے هوتے کو دنیا تی سب سے بتوی سچائی بتاتا ہے ۔ وہ آدمی کی زندگی کے هر پہلو کی بنیاد اِسی سچائی پر قایم کرتا ہے ۔ قرآن کا کہنا ہے که جب نل سرشتی کا ایشور ایک ہے تو ازمی طور پر کل مائو سماج بھی اُسی ایشور کی ایکتا کا ایک روپ ہے ۔ آدمی اپنی عقل اور اپنی آدهیاتنک ( روحانی ) شکتیوں سے اِس سچائی کو اچھی طبح سمجھ سکتا ہے ۔ اِس لله آدمی کا سب سے پہھ فرض یه هے نه ایشور کی ایکتا کو اپنے دعوم آیمان کی بنیاد بنائے اور اپنے شے نه ایشور کی ایکتا کو اپنے دعوم آیمان کی بنیاد بنائے اور اپنے نماس ماک کے سامنے' جس نے آسے پیدا کیا اور دنیا کی نعمتیں دیں' سر جہکائے ، آدمی کے ورحانی جدون کا یہی سب سے پہلا اصول ہے ۔

ترحید سے آگے بڑھکر فرآن نے دو طرح کے فرض ھر آسی کے سامنے رہے ھیں۔ ایک جبھیں وہ 'حقوق الله' کہنا ہے یعنی ابشور کی طرف آدمی کے فرض' اور دوسرے جبھیں وہ 'حقوق المباد' کہنا ہے یعنی آدمی کی طرف آدمی کے فرض ۔ حقوق الله میں نماز' روزہ' حجے اور ذ؟ قبیسی چیزیں شامل سین جبھیں ھر آدمی دیھی کال کے انوسار اپنے تعنی سامل سے ادا کر سکتا ہے ۔ قرآن نے اِنھیں ھر آدمی کے الله فرض بتایا ہے ۔ یہ عبادت یعنی ایشور پوجا ہے ۔ اِن سے آدمی میں ررحنی شکتی انہی ہے۔

'حقوق الله' کے ساتھ ھی فرآن نے 'حقوق العباد' یعنی عو آدمی کے دوسوے آدمیوں کی طرف فرضوں پر بھی زور دیا ہے اور صاف کہا ہے کہ اگر حقوق الله کے پورا کرنے میں کسی طرح کی کمی رہ جائے تو خدا معاف کر سکتا ہے' لیکن اگر حقوق العباد کے پورا کرنے میں ذرہ برابر بھی کمی رہ جائے تو خدا اُسے هرگز معف نم کریگا ۔ ایسے آدمی کو اِس دنیا میں اور دوسری دنیا میں' دونوں میں' خسارہ یعنی گھاتا اُٹھانا پریگا ۔

يهال نک قرآن کا پهلا بنيادي أصول هوا .

قرآن کا درسرا آصول یہ ہے که حقوق الله یعنی نماز ررزہ کو ذکاۃ اور حج آدمی کی ورحانی زندگی اور اندر کے جیوں سے سبندھ رکھتے ھیں۔ اِس اللہ اِنھیں ایمان (شردھا ) خلوص قلب (شدھ ھردئے) اور بے غرضی (نسوارتھتا)

के साथ पूरा करना चाहिए, यानी इनके पूरा करने में अपने लिये कोई निजी या दुनयवी फायदा, यहाँ तक कि जनत की इच्छा भी निगाह में नहीं होनी चाहिए. ये केवल अल्लाह के निकट आने के लिए और रूहानी शक्ति हासिल करने के लिए हैं ताकि आदमी दीन की सीधी राह पर चल सके. अगर इनमें कोई भी खुद्रारजी आयेंगी तो इनकी असली शरज जाती रहेगी और ये वेकार हो जायेंगे

क़ुरान का तीसरा बुनियादी उसूल यह है कि हर आदमी का चाहिये कि उसे जो कुछ रूहानी और नैतिक शक्ति ईश्वर की तरफ अपने फ़र्जों को अदा करने से हासिल हो, उस सारी शक्ति को दुनिया के लोगों की तरफ अपने फ्जों को पूरा करने में निस्वार्थता के साथ लगा है.

मैं कुरान के इन तीन बुनियादी उसूलों की तरफ खासकर मुसलमानों का ध्यान दिलाना चाहता हूँ. मैं उन्हें यह भी याद दिलाना चाहता हूँ कि एक खुदा की इवादत के अलावा क्रत्र-परस्ती, पीर-परस्ती और तरह तरह की औहाम-परस्ती यानी अंच विश्वास क़ुरान की आयतों के । खलाफ हैं जिनसे सबको बचना चाहिए.

# इसलाम के समाजी उद्भल

आदमी की समाजी जिन्दगी का पहला फर्ज करान में शरीबों, लाचारों, दर्दमन्दों और पीड़ितों से हमदर्दी और उनकी मदद करना बताया गया है. क़ुरान ने आदमी की समाजी जिन्दगी की बुनियाद ईश्वर की एकता और इन्सानी भाइचारे पर रखी है. उसने साफ साफ कहा है कि इन्सानी भाइचारे के उसके दायरे में कुल मानव जाति, कुल इन्सान, शामिल हैं, और हर आदमी को हमेशा सब की यानी कुल इन्सानी क्रीम की भलाई, बेहतरी और बहबुदी का मकसद अपने सामने रखना चाहिये. करान का कहना है कि सारा मानव समाज एक कुदुम्ब है. क़ुरान की कई आयतों में निवयों और पैराम्बरों को भी 'भाई' के शब्द से पुकारा गया है. मुहम्मद साहब हर समय की नमाज के वाद श्राम तौर पर यह कहा करते थे- 'मैं गवाही देता हूँ कि दुनिया के सब आदमी एक दूसरे के भाई भाई हैं." ये शब्द इतनी गहराई और भावुकता के साथ उनके गले से निकलते थे कि उनकी श्राँखों से टप टप श्रांसू गिरने लगते

इससे अधिक स्पष्ट और जारदार शब्दों में मानव एकता और मानव जाति के एक कुटुम्ब होने को बयान नहीं किया जा सकता. कुरान की यह तालीम और इसलाम के पैगम्बर की यह मिसाल उन सारे रिवाजों और कायदे कान्नों को, और उन सब कीमी, मुस्की, नसली और मजहबी गिरोह बन्दियों को एक दम गलत और नाजायज کے ساتھ پورا کرنا چاھئے' یعنی اِن کے پورا کرنے میں اُپنے لگے کوئی نجی یا دنیہی نایدہ' یہاں تک کہ جنت کی اِچھا بھی نگاہ میں نہیں ھوئی چاہئے۔ اور ررحائی شہیں ھوئی چاہئے کے لئے اور ررحائی شکتی حاصل کرنے کے لئے ھیں تاکہ آدمی دین نی سیدھی راد پر چل سکے ، اگر اُن میں دوئی بھی خود غرض آئیگی تو اِن کی اصلی غرض جانی رهیکی اور یہ بھکار ھو جائینگے ،

قران کا تیسرا بنیادی آصول یہ فےکہ ہر آدمی کو چاہئیہ کہ اسے جو کچھ روحانی اور نیٹک شکتی ایشور کی طرف اپنے فرضوں کو ادا کرنے سے حاصل ہو' آس ساری شکتی کہ دنیا کے لوگوں کی طرف اپنے فرضوں کو پورا کرنے میں نسوارتہتا کے ساتھ لگا دے ۔

میں قرآن کے اِن تین بنیادی اُصواوں کی طرف خاصکر مسلمائوں کا دھیان دلانا چاھتا ھوں ، میں اُٹھیں یہ بھی یاد دلانا چاھتا ھوں کہ ایک خداکی عبادت کے علاوہ قبر پرستی' پھر پرستی اور طرح طرح کی آرھام پرستی یعنی اُندہ وشواس قرآن کی آیتوں کے خلاف ھیں جن سے سب کو بچنا چاھئے ،

# اسلام کے سماجی اُصول

آدمی کی سماجی زندگی کا پہلا فرض قرآن میں غریبوں لاچاروں' دردمادوں اور پھڑتوں سے معدددی اور ان کی مدد کونا بتایا گیا ہے ۔ قرآن نے آدمی کی سماجی زندگی کی بلایاد ایشور کی ایکتا اور انسانی بھائی چارے پر رکھی ہے ۔ اُس نے صاف کہا ہے کہ انسانی بھائی چارے کے اُس کے دایرے میں کل مانو جاتی' کل اِنسانی تھائی جارے کے اُس کے دایرے میں کل مانو جاتی' کل اِنسان شامل سیس' اور ہر آدمی کو همیشتہسبکی یعنی کل اِنسانی قوم کی بھلائی' بہتری اور ہر آدمی کو کامقصد اپنے سامنے رکھنا چاہئے۔ قرآن کا کہنا ہے کہ سارا مانوساج ایک کقمب ہے ۔ قرآن کی گئی آیتوں میں نبیوں اور پیغموروں کو بھی 'بھائی' کے شد سے پکارا گیا ہے ۔ منحمد صاحب عور سمے کو بھی 'بھائی' کے شد سے آدمی ایک دوسرے کے بھائی بھائی میں نہیں ۔'' یہ شبد اِننی گہرائی اُور بھاوکتا کے ساتھ اُن کے گلے سے میں ۔'' یہ شبد اِننی گہرائی اُور بھاوکتا کے ساتھ اُن کے گلے سے فیس ۔'' یہ شبد اِننی گہرائی اُور بھاوکتا کے ساتھ اُن کے گلے سے فیس ۔'' یہ شبد اِننی گہرائی اُور بھاوکتا کے ساتھ اُن کے گلے سے فیس ۔'' یہ شبد اِننی گہرائی اُور بھاوکتا کے ساتھ اُن کے گلے سے فیک آن کی اُنکھوں سے آپ آپ آپ آئیسو گرنے لگتے نہے ۔

اس سے ادھک اسیشٹ اور زوردار شدوں میں مانو ایکتا اور مانو جاتی کے ایک کقمب ہونے کو بیان تہیں کیا جا سکتا ، قرآن کی یہ تعایم اور اسلام کے پیغمبر کی یہ مقال ان سارے رواجوں اور داعدے قانونوں کو' اور آن سب قومی' ملکی' نسلی اور مذھبی گروہ ہدیوں کو ایکدم غلط اور فاجایز

کر دیتی ہے جو ایک آدمی کو دوسرے آدمی سے الگ کرتی میں' اور ماتو ساچ کے جدون میں بھید بھاؤ اور جھاڑے پیدا کرتی ھیں ، آجال کے زمانے کی سب دابندیاں' چاہے وہ کسی بھی رنگ روپ میں ھوں' قران اور اِسلام کی نگاہ میں جھوٹی میں .

آچکل سب الگ الگ مذهبوں کے اوگوں نے اپنے اپنے کو الگ الگ الگ الگ الگ کو پنجروں میں بند کو رکھا ہے ۔ یہ بات اِسلام کی تعلیم کے بالکل خلاف ہے ۔ پر خود اِسلام کے مائنے والوں نے بھی اپنے آپ کو اُسی طرح کے ایک لوھ کے پنجورے میں بند کو رکھا ہے ۔ اِس پنجورے کو وہ 'اخوت اِسلامی' یعنی 'اِسلامی بہائی چارا' کہتے میں ، اِس اِسلامی بھائی چارے کے اندز بھی اُنھوں نے پھر اِس طرح کی رواجی اور سماجی دلبلایاں پیدا اُنھوں نے پھر اِس طرح کی رواجی اور سماجی دلبلایاں پیدا رہا ہیں وہ میں وراجی اور سماجی دلبلایاں پیدا دیا ۔ میری وہ مرازتها ہے کہ بھارت کے مسلمان اپنے مہان اور شاندار مذہب کے اِس پہلو کی طرف دھیاں دیں اور قرآن اور رسول کی تعلیم کو سامنے رکھکو اُن سب بھیدوں اور دلبندیوں لور رسول کی تعلیم کو سامنے رکھکو اُن سب بھیدوں اور دلبندیوں نوی جو بھائی میں فرق کرتی ھیں اور ایک دوسرے سے نہینچاتائی پیدا کرتی ھیں' قرآن کی آگیاں کے خات بسجہ کر نہیدچاتائی پیدا کرتی ھیں' قرآن کی آگیاں کے خات بسجہ کردی مثا دینے کی کوشھی کریں ۔

المارے آئے دین کے جیون میں ایک آدمی کو درسرے آدمی کے ساتھ جس آصول پر برت گو کرنا چاہئے آسے قرآن اعدل عدلی یعنی انصاف کا آصول بتانا ہے ، اِس آصول سے برتھتر ایک درسرے کے ساتھ برابری پیدا کرنے والا کوئی درسرا آصول نہیں ہرسکتا ، قرآن نے اِس آصول کی کانی تشریع ( ویا پہنا ) بھی کی ہے ، سب سے پہلے آس نے کسی بھی آدمی کے لئے کسی بھی غیر ضروری خیز کو اپنے ایف میں رکھنا غاط اور تباجار فرار دیا ہے . قرآن کی چینی دایل یہ ہے کہ اِس طرح کی سرمایاداری کی وجہ سے اسلی دیوں کو اپنے پاس اوشیکتا سے ادھک مال اور دھن جمع کرلینے سے درسرے حقداروں اور ضرورتمادوں کا حتی مارا جمع کرلینے سے درسرے حقداروں اور ضرورتمادوں کا حتی مارا

قرآن نے غور ضروری سونے اور چاندی کو اپنے پاس رکھنا گناہ بتایا ہے، اور کہا ہے کہ جو کوئی غیر ضروری سرنا اور چاندی اپنے پاس رکھیگا، کرموں کا پہل ملنے کے دن اُس کی چہانی، اُس کی ہدتیں اُس کی ہدتیں اُس کی ہدتی اُس کی ہدتی اُس کی ہدتی اُس کے اور جاندی کو کرم کرکے اُس سے داغی جائینگی، اور اُس سے کہا جائیگا کہ اپنی اُس سرمایتداری کا مزہ چکھو ، قرآن نے یہ سب اِس لئے نہیں کہا کہ وہ لوگوں سے دنیا چھرڑنے یا سادھو بھراگی بنیر دنیا کے سکھوں سے دنیا چھرڑنے یا سادھو بھراگی بنیر دنیا کے سکھوں سے الگ رہنے کے لئے کہتا ہے۔ بتران کی اِس تعلیم کی بنیاد اپنے پڑوسٹوں اور دوسرے اِنسانوں کے حقوں اور اُن کی ضوورتوں کو پورا کرنے پر

कर देती है जो एक आदमी को दूसरे आदमी से अलग करती हैं, श्रीर मानव समाज के जीवन में भेद भाव श्रीर मगड़े पैदा करती हैं. श्राजकल के जमाने की सब दल-बन्दियां, चाहे वह किसी भी रंग रूप में हों, क़ुरान श्रीर इसलाम की निगाह में मूठी हैं.

श्राजवल सब श्रलग श्रलग मजहबों के लोगों ने श्रपने श्रमने को अलग अलग लोहे के पिंजरों में बन्द कर रखा है. यह बात इसलाम की तालीम के बिल्कल खिलाफ है. पर ख़ुद इसलाम के मानने वालों ने भी अपने आपको उसी तरह के एक लोहे के पिंजरे में बंद कर रक्खा है. इस पिंजरे को वह 'ब्रख्नवते इसलामी' यानी 'इसलामी भाईचारा' कहते हैं. इस इसलाभी भाईचारे के अंदर भी उन्होंने फिर इस तरह की रिवाजी श्रीर समाजी दलबंदियाँ पैदा कर ली हैं जिनको मिटाना करान श्रीर पैराम्बरे इसलाम का खास मिशन था. मेरी विनम्न प्रार्थना है कि भारत के मुसलमान अपने महान और शानदार मजहब के इस पहलू की तरफ ध्यान दें श्रीर क़ुरान श्रीर रसूल की तालीम को सामने रखकर उन सब भेदों और दलबंदियों को, जो भाई भाई में करक करती हैं और एक दूसरे से खींचातानी पैदा करती हैं, क़ुरान की आज्ञा के खिलाफ समभकर एकदम मिटा देने की कंशिश करें.

हमारे आये दिन के जीवन में एक आदमी को दूसरे आदमी के साथ जिस उसूल पर वरताव करना चाहिए उसे कुरान, 'अदल' यानी इंसाफ का उसूल बताता है. इस उसूल से बढ़कर एक दूसरे के साथ बराबरी पैदा करने वाला काई दूसरा उसूल नहीं हो सकता. क़ुरान ने इस उसूल की काकी तशरीह (व्याख्या) भी की है. सबसे पहले उसने किसी भी आदमी के लिए किसी भी रीर जरूरी चीज को अपने कब्जे में रखना गलत और नाजायज करार दिया है. क़ुरान की खुली दलील यह है कि इस तरह की सरमायादारी की वजह से, यानी कुछ लोगों के अपने पास आवश्यकता से अधिक माल और धन जमा कर लेने से, दूसरे हक़दारों और जरूरत-मंदों का हक़ मारा जाता है.

कुरान ने ग़ैर जरूरी साने श्रीर चांदी को श्रपने पास रखना गुनाह बताया है, श्रीर कहा है कि जो कोई ग़ैर जरूरी साना श्रीर चांदी श्रपने पास रवखेगा, कमों का फल मिलने के दिन उसकी छाती, उसकी हिंदु याँ श्रीर उसकी पीठ उसी साने श्रीर चांदी को गरम करके उससे दागी जायँगी श्रीर उससे कहा जायगा कि श्रपनी उस सरमाया-दारी का मजा चखा. कुरान ने यह सब इसलिए नहीं कहा कि वह लोगों से दुनिया छोड़ने या साधू बैरागी बनकर दुनिया के सुखों से श्रलग रहने के लिए कहता है. कुरान की । तालीम की बुनियाद श्रपने पड़ोंसियों श्रीर दूसरे इन्सानों के हकों श्रीर उनकी जरूरतों को पूरा करने पर है. सब खुदा के बन्दे हैं. सब बराबर हैं. सब आदमी हैं. सब की जरूरतें एक बराबर पूरी होनी चाहिएं. इसिंहए जो कोई अपनी जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल करता है या जमा रखता है वह दूसरों को उनके जायज इक्तों यानी मानव अधिकारों से महरूम (वंचित) कर देता है. वह ख़ुदा की खन नियामतों पर जालिमाना क्रव्जा करता है जो सब के लिए एकसी हैं. ऐसा करना साफ जुल्म है और श्रद्त और इंसाफ के खिलाफ है.

इन उसूलों की बुनियाद केवल दूसरी दुनिया की भलाई पर ही नहीं है, बल्कि इस दुनिया और इस जिन्दगी के सच्चे फायदे पर भी है. इन उसूलों का सबंध इन्सानी बराबरी, भाईचारे और सच्ची जमहूरियत यानी लोक-शाही से है, इसके पीछे जो आदमी की रूहानी भलाई का ख्याल है वह एक अलग चीज है. जाहिर है कि पूंती-वाद, सरमायादारी या केपिटलियम का इससे आधक कड़ा विरोध नहीं हो सकता. कुरान ने सूद कमाना, जुआ खेलना और सरमाया जमा करना, इन सब का हराम वताकर हर तरह की सरमायादारी का मानव समाज के जीवन से हमेशा है लिये खात्मा कर दिया. उसने सरमायादारी के कायम होने की संभावना का ही मिटा दिया. अगर आज मानव समाजने क़रान फेइन सुनहरे उसूलों पर अमल किया हाता तो इर तरह की सरमायादारा दु।नया से मिट चुकी हाती और वह शहनशाहियत (साम्राज्यवाद) जा डमाकसी यानी जमहूरियत का मूठा जामा पहन कर दुनिया पर राज कर रही है या राज करने की कोशिश कर रही है पैदा ही न हो पाती. हर धर्म ने यही तालीम दी है, लेकिन इसलाम ने उसी समय इन उसूलों क ऊपर एक बहुत बड़ा राज क्तायम करके भी दिखा दिया था.

यह बात भी याद रखनी चाहिए कि क़ुरान ने यह सब उसूल कंवल खास लोगों, मोमिनों, आविदों या खुदा के कास बंदों के लिए ही नहीं रक्खे, उनके लिए अलग दर्ज बदर्जे खास नियम और कानून हैं. यह उसूल, जिनकी हमने चर्चा की है, सब आदिमयों के लिए हैं. इनके खिलाफ

चलना खुदा के हुकुम का ताड़ना है. आज जो हम बहुत से नाम के मुसलमानों का इन उसूलों के खिलाक चलते हुए देखते हैं, उसका कारण यह है कि उनका जीवन क़ुरान के उसूलों पर क़ायम नहीं है, बल्कि उन उसूलों की रालत तावीलों यानी मूठी व्याख्याओं पर कायम है. मिसाल के तौर पर क़ुरान में खुदा ने अपने बंदों को यह इजाजत दी है कि वह दुनिया की अच्छी अच्छी चीजों और इलाल नियामतों से फायदा उठाएँ. कुरान में लिखा है कि ''इमने तुम पर यह चीजें हराम नहीं की हैं'. इस आयत की रालत ताबील (मूठी व्याख्या) करके लागों ने अपने लिए सारी दुनिया परस्ती और ऐश इशरत

ھے سب خدا کے بندے میں سب برابر میں۔ سب آدمی هیں ۔ سب کی ضرورتیں ایک پراہر پوری عولى چاهئيں . اِس لئے جو كوئى آپنى ضرورت سے زيادة استسال کرتا ہے یا جسم رکھتا ہے وا دوسروں کو اُن کے جایو حقول يعلى مائو أدهيكارول سے محدوم ( ونجت ) كرديتا هـ وة خداً كى أن نعمتوں پر ظالمانه قبضه كرنا في جو سب كے لئے ایکسی هیں . ایسا کرنا ماف ظلم ہے اور عدل اور اِنصاف کے خلف ہے .

اِن اُصواوں کی بنیاد کیول دوسری دنیا کی بھائی پر ھی نہیں ھے' المکم اِس دنیا اور اِس زندگی کے سجے فایدے پر بھی ہے ۔ اِن أُمواول كا سمبندھ اِنساني برابري' بھائي چارہ اور سچی جمہوریت یعنی لوک شاعی سے کے ، اِس کے پیچھے جو آدمی کی روحانی بهائی کا خیال هے وہ ایک الگ چیز هے . ظاهر هے كه بونجى وات سرمايتدارى يا كيويتنزم كا اِس سے ادھک ہڑا ورودھ نہیں هوسکتا ۔ فرآن نے سود کمانا جوا کھیلنا اور سرمایه جمع درنا این سب کو حرام بقاکر عار طرح کی سرمایتداری کا مانو سماج کے جیوں سے همیشہ کے لئے خاتمہ کردیا . اُس نے سرمایتداری کے فایم ہوئے کی سمبھاؤنا کو می ممّا دیا . اگر آج مانو سماج نے قرآن کے اِن سنہرے اُصولوں پر عمل کیا هونا نو هو طرح کی سرمایتداری دنیا سے ست چکی هوتی اور وه شهنشاهیت ( سامراجیهوان ) جو تیموکریسی یعنی جمهوریت کا جهودًا جامه پهن؟ر دانیا پر رأب کررهی هے یا رأب کرنے کی کوشش کررھی ہے پیدا ھی تع عربانی ، ہو دھرم نے بھی تعلیم دی ہے' لیکن اِسلام نے آسی سمہ اِن اُصواوں کے اُوپر ایک بہت بزا راج فایم درکے بھی دکھا دیا تھا۔

یہ بات بھی یاد رکھنی چاہئے کہ قرآن نے یہ سب اُصول کیول خاص لوگوں، مومنوں، عاہدوں یا خدا کے خاص ہندوں کے لئے هی نهیں رکھے' أن کے لئے الگ درجه بدرجه خاص نیم اور دانوں هیں. یہ اصول عنکی هم لے چرچا کی هے سب أدميوں كے اللہ هيں . إن كے خالف چلنا خدا كے حكم كو توزنا

آج جو هم بہت سے نام کے مسلمانوں کو اِن اصولوں نے خلاف چلتے دیکہتے عیں' اُس کا کارن یہ ھے کہ اُن کا جدرن قرآن کے اصواوں پر قایم نہیں تے ' بلکہ اُن اصوار کی غلط تاريلوں يعنى جهوئى وياكهياؤں پر قايم هے . مثال طور پر قرأن میں کوا نے اپنے بندوں کو یہ اِجازت دی ہے که وہ دنیا کی اچھی اچمی چیزوں اور حلال نعمتیں سے فایدہ اُٹھائیں ، قرآن میں لعها هے که ''هم نے تم پر یه چیزیں حرام نہیں کی هين " إس أيت كي غلط تاويل (جهرتي ويافهها) كركي لوگوں نے آپنے لئے ساری دنیا پرستی آور عیص عشرت

کو جایو کرلیا ہے، لوگ یہ نہیں دیمیتے کہ کسی خاص چیز کا جایز ہونا یا اُس کے اِستعمال کی اِجازت ہونا اُن اصولوں کو رد نہیں کردیتا جو اُس اِستعمال کے لئے ۔ قرآن نے قایم کئے ہیں، اِن اُصولوں کو ہم اُوپر بیان کرچکے ہیں ، جو بات عدل اور اِنصاف کے خلاف ہے، جو مانو اِیکتا یعلی اِنسانی بھائیچارے کے خلاف ہے اور اِس بارے میں قرآن کی کہلی ہدایتوں سے ڈکرانی ہے، وہ بالکل غلط اور بہنیاد ہے ،

میں خاصکو مسلمانوں سے بڑی نمرتا کے ساتھ یہ کہنا چاھٹا ھوں کہ وہ دوسرے اِنسانوں کی طرف اپنے فرضوں کو پورا کرنے میں قرآن کی کہلی ھدایتوں پر چلیں اور ناسمجھ یا خود غرض لوگوں کی تاویلوں کے چکر میں نہ پڑیں ۔ اُن کے ایسا کرنے سے دیھی اور مانو سماج کا بھلا تو ھوگا ھی خود مسلمانوں کا بھی اِس دنیا اور دوسری دنیا دونوں میں بھا اور مسلمانوں کے میں خوداری اور اپنے اوپر بھروسہ اور اپنے سب پڑوسیوں کے ساتھ پریم اور محبت پیدا ھوگی اور دنیا میں سچا اِنسانی بہائی چارا یعنی اخوت اِنسانی اور سچی دیموکریسی یعنی چارا یعنی اخوت اِنسانی اور سچی دیموکریسی یعنی جمہوریت قایم کرنے کا سہرا اُنھوں کے سر بندھیگا ۔

# اسلم کے آرتھک یعنی مالی اُصول

آدسی میں دوسرے جائداروں سے زیادہ جو سمجہ اور لیکی اور بدی کی تعیز اور ایک روحانی پھلس ہے اس کی بنا پر فرآن میں آدمی کو 'اشرف المخلوقات' یعنی اور 'سب پرانیوں سے بچھکر کہا ہے' اور آسے یہ اجازت دی ہے کہ وہ خدا کی دی ہوئی سب نعمتوں سے اپنی ضرورت کے انوسار خود فایدہ اُقہائے اور دوسروں کو فایدہ پہونچائے ۔ آرتھک زندگی میں بھی قرآن نے آدمی کے سامنے وہی عدل اور اِنصاف کا آصول رکھا ہے جو سیاجی زندگی میں ۔ اِس کے بعد قرآن نے اِنسان کو اشرف المخلوقات ہونے کی حیثیت سے زمین پر اپنا خلیفہ یعنی اشرف المخلوقات ہونے کی حیثیت سے زمین پر اپنا خلیفہ یعنی انیب قرار کیا ہے اور اُس کا یہ فرض بتایا ہے کہ وہ خدا کی سب نعمتوں کو سب جانداروں میں اُن کی ضرورت کے مطابق سب نعمتوں کو سب جانداروں میں اُن کی ضرورت کے مطابق میں

مطلب ہے ہے کہ خدا سازی سرشتی کا بنانے والا عی نہیں بلکہ اُس کا مالک بھی ہے اور اِس مالک کی حیثیت سے اُس نے آسمی کو اپنا خلیفہ بنایا ہے ، خلیفہ ہوئے کا یہ مطلب نہیں ہے که آدمی کو خدا کا خلیفہ بنائے کے ساتھ ساتھ چاھے رہے ۔ آدمی کو خدا کا خلیفہ بنائے کے ساتھ ساتھ قرآن میں سب آدمیس اور سب جانداروں کے حق اور اُن کے فرض طے کردئے گئے میں ، اگر آدمی خدا کے بنائے ہوئے ان اُصواوں اور سب کے اُدھیکاروں کے خلاف بنائے ہوئے ان اُصواوں اور سب کے اُدھیکاروں کے خلاف

को जायज कर लिया है. लोग यह नहीं देखते कि किसी खास चीज का जायज होना या उसके इस्तेमाल की इजाजत होना उन उस्लों को रह नहीं कर देता जो उस इस्तेमाल के लिए क़ुरान ने क़ायम किए हैं. इन उस्लों को हम ऊपर बयान कर चुके हैं. जो बात अदल और इंसाफ़ के ख़िलाफ़ है, जो मानव एकता यानी इंसानी माईचारे के खिलाफ़ है और इस बारे में क़ुरान की खुला हिदायतों से टकराती है, वह बिस्कुल रालत और बे-बुनियाद है.

में खासकर मुसलमानों से बड़ी नम्नता के साथ यह कहना चाहता हूँ कि वह दूसरे इन्सानों की तरक अपने फर्जों को पूरा करने में क़ुरान की खुली हिदायतों पर चलें और नासमक या .खुदरारज लोगों की तावीलों के चक्कर में न पड़ें. उनके ऐसा करने से देश और मानव समाज का मला तो होगा ही, खुद मुसललानों का भी इस दुनिया और दूसरी दुनिया दोनों में भला होगा और मुसलमानों में खुद्दारी, और अपने ऊपर भरोसा और अपने सब पड़ां-सियों के साथ प्रेम और मुहच्चत पैदा हागी, और दुनिया में सच्चा इन्सानी भाईचारा यानी अख़बते इन्सानी और सच्ची डेमोक्रेसी यानी जमहूरियत कायम करने का सेहरा उन्हीं के सर वॅथेगा.

# इसलाम के आर्थिक यानी माली उसल

बादमी में दूसरे जान्दारों से ज्यादा जो समक और नेकी और बदी की तमीज और एक रुहानी प्यास है जसकी बिना पर कुरान में आदमी का 'अशरफ उल मख़लू कात' यानी और 'सब प्राणियों से बढ़कर' कहा है, और उसे यह इजाजत दी है कि वह खुदा की दी हुई सब नियामतों से अपनी जरूरत के अनुसार खुद फायदा उठाए और दूसरों को फायदा पहुँचाए. आर्थिक जिंदगी में भी कुरान में आदमी के सामने वही अदल और इन्साफ का उस्ता रवला है जो समाजी जिंदगी में. इसके बाद कुरान ने इंसान को अशरफ उल मख़लूकात होन की है सियत से जमीन पर अपना ख़लीफा यानी नायब करार किया है और उसका यह फर्ज बताया है कि वह ख़ुदा की सब नियामतों को सब जानदारों में उनकी जरूरत के मुताबिक ठीक ठीक तक सीम करें. यही उसके ख़तीका होने का मतलब है.

मतलब यह है कि खुदा सारी सृष्टि का बनाने बाला ही नहीं बल्कि उसका मालिक भी है और इस मालिक की हैसि-यत से उसने आदमी को अपना ख़लीफा बनाया है. ख़लीफा होने का यह मतलब नहीं है कि आदमी जो चाहे करे और जिस तरह चाहे रहे. आदमी को ख़ुदा का ख़लाफा बनाने के साथ साथ क़ुरान में सब आदमियों और सब जानदारों के हुक और उनके फर्ज तय कर दिए गए हैं. अगर आदमी ख़ुदा के बताए हुए उन उस्लों और सबके अधिकारों के जिलाफ

जाता है तो वह इस दुनिया में और दूसरी दुनिया में ख़ुदा के सामने जवाबदेह होगा. अदिमी के ख़ुदा का ख़िलीफा होने का यह विचार केवल इसलाम ही मं नहीं सब घमों में किसी न किसी रूप में मौजूद है, और हर मज़हब में उसके लिए उसल और क्रायदे बने हुए हैं. हर आदमी बिना अपना मज़हब बदले इन बुनियादी और क़्दरती उसलों पर चल सकता है.

अगर हम केवल इस बात को अच्छी तरह समक लें कि खुदा एक है और वही सबका बनाने वाला और सब का मालिक है तो इसी एक उसूल के आधार पर सब तरह की फिरकेवारियत, साम्प्रदायिकता और धार्मिक हलबन्दियों का कात्मा हो जाना चाहिये. हर आदमी इस जमीन के ऊपर ख़ुदा का ख़लीका यानी नायब है, इस उसूल को सामने रखकर हम केवल मुसलिम, हिन्दू, ईसाई ही नहीं, सारी इन्सानी विरादरी को एक माईचार में बाँघ सकते हैं. जो आदमी ख़ुदा के भेजे हुए अदल और इन्साफ के कानून के अनुसार जिन्दगी बसर करता है और सबके साथ मिलकर सबकी जफ़रतों को देखते हुए दुनिया की चीजों का इस्तेमाल करता है वही सचमुच ख़ुदा का ख़लीका कहलाने का हक़दार है, चाहे वो मुसलिम हा, हिन्दू हो या ईसाई हो, और जो कोई इसके ख़िलाफ अमल करता है वह ख़ुदा का वागी है.

जब सब आदमी भाई भाई हैं ता लाजिमी तौर पर दुनिया की सब नियामतों में सबका बराधर का हिस्सा है. इसलिए करानी जिन्दगी में ग़रीब और अमीर का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता. जो आधिक असमता आज दुनिया में फैली हुई है, पच्छिम के कुछ लोग और उनके कुछ हिमायती उसकी जिम्मेवारी खुदा के ख्याल और मजहब के प्रचार पर डालते हैं. यह बहुत बड़ा मूठ, अन्याय और बाहतान है. जो ऊँच नीच और गरीव श्रमीर का करक इस समय दुनिया में है उसका कारण धर्मों के उसूल नहीं हैं. कारण यह है कि उन धर्मी के मानने वालों ने अपने अपने धर्मी के सच्चे उसलों से श्रलग हटकर श्रपनी समाजी और श्रार्थिक जिन्दगी में स्वार्थ, .खुद्ग़रजी और दुनिया परस्ती के ग़लत इसलों पर चलना शुरु कर दिया. वे दुनिया-परस्ती के जाल में फँस गए और इसी को श्रमली मजहब समक बैठे. श्रमली मजहब सब आद्मियों को भाई भाई सममना और उनमें इन्साफ और बराबरी का बर्ताव करना है. इससे समाजी 🤊 श्रीर श्रार्थिक ख़ुशहाली पैदा हुए बग़ैर नहीं रह सकती थी. लेकिन श्रलग श्रलग धर्मों के मानने वाले दीन धर्म के इस असली पहलू का न समम सके. इसीलिए विश्वमी सुधारकों ने जैसे सोशलिस्ट, डेमोक्रेट्स और कम्यूनिस्ट सबने, धर्म मजहब का विरोध करना शुरु कर दिया. सच यह है कि जो ऊँचे समाजी उसूल और श्रार्थिक सुधार

جاتا ہے تو وہ اِس دنیا میں اور دوسری دنیا میں خدا کے سامنے جوابدہ ہوتا ۔ آدمی کے خدا کا خلینہ موں مونے کا یہ وہنے کی دورموں میں کسی نہ کسی روپ میں موجود ہے اور ہو مذہب میں اُس کے لئے اُصول اور قاعدے بنے ہوئے ہیں ۔ ہر آدمی بنا اپنا مذہب بداے اِن بنیادی اور قدرتی اُصراب پر چل سکتا ہے ۔

اگر هم کهول اِس بات کو اچهی طرح سمجه لیس که خدا ایک هے اور وهیسب کا بنانے والا اور سب کا مالک هے تو اِسی ایک اُصول کے آدهار پر سب طرح کی فرقہ واریت سامپردایکتا اور دهارمک دابندیوں کا خاتمہ هو جانا چاهئے ، هر آدمی اِس اُمول کو زمین کے اُرپر خدا کا خلیفہ یعنی نایب هے اِس اُمول کو سامنے رکھ کر هم کیول مسلم' هندو' عیسائی هی نہیں' ساری اِنسانی برادری کو ایک بھائی چارے میں بانده سکتے هیں ، جو اُدمی خدا کے بھرجے هوئے عدل اور انصاف کے قانوں کے انوساز زندگی بسر کرنا هے اور سب کے ساتھ ملکر سب کی ضوررتیں کو دیکھتے شوئے دنیا کی چیزوں کا استعمال کرتا ہے وهی ضوررتیں کو دیکھتے شوئے دنیا کی چیزوں کا استعمال کرتا ہے وهی شخدو هو یا عیسائی هو' اُور جو کوئی اِس کے خلاف عمل کرنا هے هندو هو یا عیسائی هو' اُور جو کوئی اِس کے خلاف عمل کرنا هے

جب سب آدمی بهائی یهائی هیس تو لارمی طور بر دِنها كى سب تعمتون مين سب كا برابر كا حديد هم . إس الله فرآني زندگی میں غریب اور امیر کا کوئی سرال سی پیدا نہیں سوتا . جو ارتبک اسمنا آب دنیا میں بھیلی موئی گئ پچنم کے کچھ لوگ اور اُن کے نچھ حمایتی اُس تی ساری زمرواری خدا کے خيال اور مذهب ك برچار ير دالتم سين ، يه بهت برا جهوت، انیانے اور بہتان ہے . جو اُونیج نبیج اور غریب امیر کا فرق اِس سمے دنیا میں ہے اُس کا کارن دغرموں کے اُصول نہیں عدی ۔ کارں یہ ہے کہ اُن دھرموں کے مانیفے والوں نے اپنے اپنے دھرموں کے ستھے اُصواوں الک ھٹکر اینی سماجی اور اُرتھک زندگی میں سوارتھ خود غرض اور دنیا پرستی کے غلط اُصولوں پر چلنا شہرع کر دیا ، وے دنیا برستی کے جال میں پہنس گئے اور إسى كو اصلى مذهب سمجه بينه . اصلى مذهب سب أنعون كو بهائي بهائي سمجهدا اور أن مين اصاف اور برابري كا برتاؤ کرنا ہے۔ اِس سے سماجی اور آرتیک خوشحالی پیدا ہوئے بنیور نہیں رہ سعتی تھی . لیکن الگ الک دعرموں کے مانلم والم دین دهرم کے اِس اصلی بہار کو نه سمجه سکے . اِس للے پنچمم کے سدھاراؤں نے جیسے سوشلسٹ دیموکویٹس اور کمیونسٹ سب لے دعرم منشب کا وروسه کرنا شروع کر دیا۔ سبج یه ه که جو اولیچ سماجی أصول اور أرتهک سدهار

इन सब सुधार आन्दोलनों के सामने हैं उनमें और मजहब की सच्ची तालीम में जर्रा बराबर भी फरक नहीं है. बिन्क ये सब तहरीकें उसी मजहबी तालीम का धुँधला सा अक्स हैं. दुनिया के धमों के मानने वाले अगर आज भी अपने अपने धमों के असली उसूलों पर अमल करने लगें ता आज भी इन पिच्छमी आन्दोलनों का जो गलत और नास्तिकता का पहलू है उसे मिटाया जा सकता है.

फिजूल और बेजा खर्ज करने वालों को क़ुरान 'अख्वातुरशयातीन' यानी शैतानों के भाई बंद कहता है. यानी
कुरान शहनशाहियत की शानो शोकत को ही नहीं, छोटी
से छोटी फिजूल ख्र्ची का भी गुनाह बताता है. इसके
विरुद्ध सब पिच्छमी सुधार आन्दोलनों की बुनियाद दर
पर्दा शहनशाहियत पर क़ायम है. यह सब तहरीकें, सारी
शिक्त और सारे धन दौलत को छोटे छोटे गिरोहों, खान्दानों
या थोड़े से आदमियों में लाकर जमा कर देती हैं. इनसे
समाज के ऊपर वाले कोगों के ख्र्च बेहद बढ़ जाते हैं
और सारा धन दौलत थाड़े से हाथों में जमा हो जाता है.
उन बड़े बड़े संगठनों का जादू, जिन्होंने इन पिच्छमी
आन्दोलनों को अपने दायरे में रखा है, सच्चे मजहब के
उस्लों के बरौर और शिना उनकी मदद के दूट नहीं सकता
और न सच्ची इन्सानी बिरादरी क़ायम हो सकती है.

कुरान हर ऐसे पेशे को बुरा कहता है श्रीर लोगों को उससे हटाता है जिसमें बिना महनत किए धन कमाया जा सके, कुरान की बुनियादी तालीम यह है कि हर श्रादमी को खुद अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए और जहाँ तक मुमिकन हो दूसरों पर श्रपना कोई बोम्म नहीं डॉलना चाहिए, तािक दूसरों की मेहनत से कोई नाजायज फायदा न उठा सके और इन्सानी समाज का किसी तरह का नुक्रसान न पहुंचे. हम यहाँ इस विचार के विस्तार में जाना नहीं चाहते. केवल इतना कह देना काकी है कि श्रगर हम श्रदल और इन्साफ़ को श्राप दिन के जीवन में श्रपने सामने रक्खें श्रीर उस पर श्रमल करें तो हम कुरान की श्राझाओं पर श्रासानी से श्रमल कर सकते हैं.

खासकर मुसलमानों का ध्यान हम कुरान की उस खास खाझा की तरफ दिलाना चाहते हैं जिसमें आदमी को "कसबे तय्यव" की तालीम दी गई है. इसके लफ्जी मानी पाक रोजगार हैं. कुरान में यह फिक़रा भी बार बार खाता है कि—". खुदा के फ़जल की तलाश करो." यहाँ खुदा के फ़जल से यही कसबे तय्यव यानी कसबे हलाल मुराद है. हर धर्म की किताव में और हर ऋषि, तीर्थं कर या पैगम्बर की तालीम में कसबे तय्यव की महानता बयान की गई है. महात्मा बुद्ध ने इसे अपने "आठ रास्तों" में "सम्यक आजीविका" यानी नेक रोजी का नाम दिया है.

ان سب سدھار آندوللوں کے ساملے ھیں آن میں اور مذھبکی سچی تعلیم میں ذرہ برأبر بھی درق نہیں ہے، بلکہ یہ سب محریکیں اُسی مذھبی تعلیم کا دھدھلا سے عکس ھیں ۔ دنیا کے دھوموں کے اصلی دھوموں کے اصلی اُسے علی کرنے لکیں تو آج بھی اُسے اُنے دھوموں کے اصلی اصولوں پر عمل کرنے لکیں تو آج بھی اِن پچھبی آندولئوں کا جو علط اور ناستکتا کا پہاو ہے اُسے متایا جا سکتا ہے ۔

نفول اور بینجا خوچ کرلے والوں قرآن 'اخوان الشیاطین' یعلی شیطانس کے بھائی بند کہتا ہے ، یعلی قرآن شہنشاھیت کی شان و شوکت کو ھی نہیں' چھوٹی سے چھوٹی نفول خوچی کو بھی گفاۃ بتاتا ہے ، اِس کے ورودھ سب پنجھی سدھار آندولئرں کی بنیاد در پردۃ شہنشاھیت پر قایم ہے ، یہ سب تتحریکیں' ساری شکتی اور سارے دھن دولت کو چھوٹی جھوٹے گروھوں' خاندائوں یا تھوڑے سے آدمیوں میں اور جمع کر دیتی ھیں ، اِن سے مماج کے آرپر والے لوگوں کے خوچ بےحد بڑھ جاتے ھیں اور سارا دھن دولت تھوڑے سے ھاتھوں میں جبع بڑھ جاتے ھیں اور سارا دھن دولت تھوڑے سے ھاتھوں میں جبع ہو جاتا ہے ، اُن بڑے بڑے ساکٹھنوں کا جادو جنھوں نے اِن بخچیمی آندوالموں کو اپنے دایرے میں رکھا ہے' سنچے مذھب کے اُصواوں کے بغیر اور بنا اُن کی صدد کے ٹوت نہیں سکتا اور نہ سنچی انسانی برادری قایم ھو سکتی ہے .

قرآن هر ایسے پیشےکو برا کہنا ہے اور لوگوں کو اُس سے متانا ہے جس میں بنا محتنت کیئے دھن کمایا جا سکے ، قرآن کی بنیادی تعلیم یہ ہے کہ هر آدمی کو خود اپنے پیروں پر کھڑا هونا چاھئے اور جہاں تک ممکن هو دوسروں پر اپنا کوئی بوجھ نہیں دالنا چاھئے تاکہ دوسروں کی محنت سے کوئی ناجایز فایدہ نه آئے اسکے اور انسانی سماج تو کسی طرح کا نقصان نہ پہونچے ، هم یہاں اِس وچار کے وستار میں جانا نہیں چاھتے ، کیول اتنا کہہ دینا کابی ہے کہ اگر هم عدل اور انسانی کو آے دی کے جیوں میں اپنے سامنے رکھیں اور اِس پر عمل کویں تو هم قرآن جیوں میں اپنے سامنے رکھیں اور اِس پر عمل کویں تو هم قرآن کی آگیاؤں پر آسانی سے عمل کو سکتے ھیں ،

خاصکر مسلمائوں کا دیھیاں ہم قرآن کی اُس خاص آگیاں کی طرف دلانا چاھتے ہیں جس میں آدمے کو ''کسب طیب'' کی تعلیم دی گئی ہے ۔ اِس کے انظی منھی پاک روزگار ہیں ۔ درآن میں یہ نقرہ بھی برابر آنا ہے کم۔''خدا کے نفل کی '' نشر کرر ۔ آ' خدا کے قفل سے یہی کسب طیب یعنی کسب حلال مراد ہے ۔ ہر دھرم کی کتاب میں اور ہر رشی' کسب حلال مراد ہے ۔ ہر دھرم کی کتاب میں اور ہر رشی' تیرتھنکر یا پہنمبر کی تعلیم میں کسب طیب کی مہانتا تیان کی گئی ہے ۔ مہاتما بدھ نے اِسے اُننے آٹھ راستوں'' میں ایسے کی مہانتا میں دیسے اُننے آٹھ راستوں''

उसूल यह है कि दुनिया के सब पेशों में वे पेशे ही ऊँचे और अच्छे हैं जिनमें आदमी खुद अपने हाथ की मेहनत से रोजी, कमाता है. इसलाम के पैराम्बर 'मुहम्मद साहब ते. उनके चारों 'पहले खलीफाओं ने, 'और मुहम्मद साहब के साथियों ने सबने अपनी जिन्दगी में इस उसूल का बहुत बड़ी जगह दी और इस पर पूरी तरह 'अमल किया. मुहम्मद साहब ने इस उसूल पर इतना जोर दिया कि उनकी एक ह्वीस है कि—''अपने हाथ की' मेहनत , से रोजी कमानेवाला ही अस्लाह का प्यारा हो सकता है."।

में फिर खासकर मुसलमानों का ध्यान उनके मजहब के इस जबरदःत पहलु की तरफ दिलाना चाहता हूँ. हमें यह भी याद रखना चाहिए कि दुनिया के धर्मों और खासकर इसलाम की कसबे तथ्यव की ताक्षीम और करोड़ों गुसलमानों के इस पर अमल करने ने ही आज इस उसूल को दुनिया के आर्थिक जीवन का सबसे प्यारा, सबसे माना हुआ और सबसे बड़ा उस्तूल बना रक्खा है. धर्मों की इस तालीम का ही नतीजा है कि आज हर देश की सरकार वड़े जारों के साथ इस उसल को अपने देश के जीवन में चलाने की कोशिश कर रही है. रूस और चीन की सरक रों ने तो इस उसल को अपने विधान (दस्तूर) में मरक्रजी जगह दी है, यानी यही वो घुरी है जिसके चारों तरफ उन देशों का सारा आर्थिक जीवन घूमता है. इसलिए मुसलमानों का यह पाक कर्ज है कि वह किसी क़ौम या मुल्क को इस मैं। न में अपने से आरो न निकल जाने दें. उन्हें जस्दी से जरूदी (ऐसा प्रोप्राम बनाना चाहिए कि जिससे हर मुसलमान और हर श्राइमी को कसवे तथ्यव के उसूल को सामने रखकर अपनी राजी कमाने का मौका मिले. अगर केवल यही बात पृरे दिल से कर दी जाने तो इस देश का सारा आर्थिक जीवन नए सिरे से तामीर हा सकता है और यह मुल्क ग्रेरों की आर्थिक लूट से बचकर बेहद फल फूल सकता है.

# इसलाम के राजकाजी उद्धल

यही जुनियादी उसल करान की राजनैतिक या राज-काजी तालीम का है. कुरान की तालीम है कि हर आदमी को हर समय अपने सामने यह विचार रखना चाहिए कि वह एक मुश्तरका खान्दान यानी एक बड़े मिले जुले कुटुम्ब का एक मेम्बर है. दुनिया के सब आदमियों के साथ उसका ज्यवहार और उसके भाष दो सगे भाइयों के आपसी प्रेम और सहयोग का नम्ना होने चाहिए. यदि एक बार हम इस विचार को अपने दिल में जगह दे दें तो कुरान की सारी तालीम पर अमल करना बहुत आसान हा जाता है और अपने की आयतों के पूरे पूरे मानी हमारे दिल में जम जाते हैं. तब हम यह साफ देखने लगते हैं कि वह सारी أصرل يه هے كه دنيا كے سب پيشوں ميں وہ پيشه هى أونهي اور اچه هوں جن ميں أدمى خود اپنے هاته كى محات سے روزى كمانا هے ، إسلام كے پيغمبر محمد صاحب نے أن كے چاروں يہلے خليفاؤں نے اور محمد صاحب كے ساتهوں نے سب لے اپنى زندگى ميں اِس أصول كو بہت برى جكهه دى اور اِس پر پورى طرح عمل كيا ، محدد صاحب لے اِس أصول پر اِنغا زور ديا كه أن كى ايك حديث هے كيا اُس أحول پر اِنغا زور ديا كه أن كى ايك حديث هے كيا اُس أحول پر اِنغا زور ديا كه أن كى ايك حديث هے كيا اُس على محدد هے الله كا بهارا هو سكتا هے ."

میں بھر خاصکر مسلمانیں کا دعیان أن كے مذهب كے أس زېردست پېلو کې طرف دالانا چاعتا هون . همين يه يوي ياد رئینا چاہئے که دلیا کے دهرس اور خاصکر اسلم کی کسب طهب کے تعلیم اور کروزوں مسلمانیوں کے آس پر عمل کرنے نے ھی آج اِس اُصول كر وزيا كر أرتهك جيون كا سب سيهاراسب سيمانا هوا آور سب سے ہوا اُصول بنا رکھا ہے، دعوموں کی اِس تعلیمکا علی تعیجہ کے که آج مر دیش کی سرکار ہوے زوروں کے ساتھ اِس اُصول کو اپنے دیش کے جیرن میں چالے کی کوشش کر رھی ہے ، روس اور چین کی سرکاروں نے تو اِس اُصول کو اپنے ودھان ( دستور ) میں مرکزی جکہ دی تھ یعلی یہی وہ دعوری تے جس کے چاروں طرف أن ديشول كا ساراً أرتبك جدون قهوستا هي. إس الله مسلمانون کا یہ یاک فرض فے که وہ کسی قوم یا ملک کو اِس میدان میں اپنے سے آکے نہ نال جائے دیں ۔ آنہیں جادی سے جادی أيساً يروكوام بنانا جاهلي كه جس سے هر مسلمان أور هر أدمي کو کسب طیب کے اُصول کو سامنے رکھ کو اینی روزی تمانے گا مرقع ملے ، اگر کھول یہی بات ہورے دال سے در دسی جارے تو اِس د على كا سارا أرتهك جدون نئه سوے سے نعمیر مو سكتا ہے اور یہ ملک عیروں کی آرتیک لوٹ سے بیم کر بےحد پھل پھول سکتا ہے۔

# اسلام کے راجکاجی اُصول

یہی ینیادی اُصول قرآن کی راجنیتک یا راجکاجی تعلیم کا ھے ، قرآن کی تعلیم ھے کہ ھر آدسی کو ھر سمے اپنے سامیاج یہ وچار رکہنا چاہئے کہ وہ ایک مشترکہ خاندان یعنی ایک بڑے ملے جلے نقمب کا ایک میمبر ھے ، دنیا کے سب آدمیوں کے ساتھ آس کا ریوھار اور اُس کے بائر دو ساتے بھائیوں کے آپسی پریم اور سہووگ کا نمونہ ھونے چاسیئس ، یعنی ایک بار عم اِس وچار کو اپنے دال میں جاہت دیدیں تو قرآن کی ساری تعالم پر عمل کرفا بہت آسان ھو جاتا ھے اور قرآن کی آیکوں کے پورے پورے معنی عمانے دی بہت میں جم جاتے ھیں ، تب ھم یہ صاف دیکھنے لگتے ھیں کہ وہ ساری دابندیاں اور گروہ بندیاں جو آج مانو سماج کو

. . .

बड़े से बड़े नुक्रस।न पहुंचा रही हैं और दुनिया में तरह तरह के आर्थिक और राजकाजी तुकान पैदा कर रही हैं केवल इस सचाई को सुना देने का नतीजा हैं. अगर हम सारं मानव समाज का एक कुटुम्ब मान लें और इ सानी भाई चारे के उसूल की मान ले ने फिर नौकर या मालिक. हाकिम या महकूम हर आदमी इस दुनिया में सुद का नायब है श्रीर हर आदभी का पैदाइशी हक है कि वर खदुदारी, खुद-मुख्तारी श्रीर खद ऐतमादी यानी श्रात्म सम्मान, स्वार्धानता श्रीर स्वावलम्बन की जिंदगी बसर करे. इस विचार के एक बार दिल में बैठ जाने के बाद किसी तरह की ऊँच नीच या श्रमीरी रारीची का बर्दाश्त करना श्रादमी के लिए असंभग हो जाता है. उसमें फिर यह नैतिक और आध्मिक बल आ जाता है कि वह अपने सब भाइयों यानी सब इन्सानों के इकों की हिफाजत करं और जा लोग दूसरों से उनके हक छीनते हैं उनके .जुल्म का डटकर मुक्ताबला करे. फिर कोई बाहरी या मादी शक्ति आदमी की इस आजादी और उसकी इस रूहानी शांक पर राजवा नहीं पा सकती.

जहाँ तक मजहब का राजकाज से संबंध है कुरान ने बहुत साक साक शब्दों में "लाइकराहा फिदीन" का उसूल हमारे सामने रख दिया है. इस आयत के लक्ष्मी मानी यह हैं कि दीन धर्म के मामले में किसी के साथ भी किसी तरह की जबरदस्ती नही होनी चाहिए, यह साफ और सुनहरा उसूल हर आदमी को, चाहे बढ़ किसी मजहब का हो, अपने मजहबी फूर्ज पूरा करने की पूरी आजादी देता है, और उसकी इस आजादी में किसी तरह की दखलश्रंदाजी का भा जुल्म ठहराता है. कुरान के मुताबिक जो कोई आदमी भी, चाहे वह किसी भी मजहब का हो, दूसरों के साथ इस तरह का जुल्म करता है उसके खिलाक जेहाद करना हर आदमी का फूर्ड है. खुदा का खर्लाफा हाने के नाते हर श्रादमी अपने भगवात से सीधा संबंध रखने का हक रखता है. उसे अधिकार है कि अपने बनान वाल की पृजा, बन्दगी या स्तुति के लिये जो राह चाहे ऋखतियार करे. उसकी इस आजादी में दखन देना जुल्म और गुनाह है. नैतिक, धार्निक श्रीर श्राध्यात्मक स्वतंत्रता की इससे ऊँची कल्पना नहीं की जा सकती.

इसका यह मतलब नहीं कि ज़ुरान सब धर्मी और मजहबों की हर चीज का ठीक मानता है. कुरान 'ईमान' श्रीर 'इज़हाद' यानी श्राम्तिकता श्रीर नास्तिकता, नेकी श्रीर बदी, भलाई श्रीर द्याई में साफ कर्क करता है. उसका यह भी दावा है कि ज़ुदा ने हर देश में, श्रीर हर क्रीम में पैगम्बर भेजे हैं श्रीर हर जमाने में श्रीर हर मुल्क में पाक कितावें भी भेजी हैं कि दुनिया के लोग उनकी मदद से ठीक रास्ते की समक सकें श्रीर उस पर चल सकें. برت سے برت نفصان چہونچا رھی ھیں اور دنیا میں طرح کے آرتھک اور راجکاجی طوفان پیدا کو رھی ھیں کیول اس سیچائی کو بھا دینے کا نتیجہ ھیں۔ اگو ھم سارے مانو سماج کو ایک نتیب مان لیں اور انسانی بھائی چارے کے اصول کو مان لیں تو پھر نوکر یا مالک حاکم یا محکوم ھر آدمی اس دنیا میں خدا کا نایب ہے اور ھز آدمی کا پیدایشی حتی اس دنیا میں خدا کا نایب ہے اور ھز آدمی کا پیدایشی حتی سواد ہنتا اور سواؤلمبن کی زندگی بسر کرے۔ اِس وچار کے ایکبار دال میں بیٹھ جانے کے بعد کسی طرح کی اُونچ نیچ یا ایکبار دال میں بیٹھ جانے کے بعد کسی طرح کی اُونچ نیچ یا امیری غریبی کو برداشت کرنا آدمی کے لئے اسمبھر ہو جانا ہے۔ ایس میں پھر یہ نیتک اور آتمک بل آ جانا ہے کہ وہ اپنے سب ایسانوں کے حقوں کی حفاظت کرے اور جو لوگ دوسرں سے اُن کے حقوں کی حفاظت کرے اور جو لوگ دوسرں سے اُن کے حق چہیلتے ھیں اُن کے ظلم کا ذب کو مقابلہ کرے ، پھر کوئی باھری یا مادی شکتی آدمی کی اِس روحائی شکتی پر غلبہ نہیں پا سکتی ،

جہاں نک مذهب کا راجکاج سے سمبندھ اللے قرآن نے بہت صاف شبدوں میں "الا اکراهانی الدین" کا اُصول همارے سامنے رکھ دیا ہے . اِس آیت کے لفظی معالی یہ عیس که دین دعرم کے معاملے میں کسی کے ساتھ بھی نسی طرح کی زبردستی نهين هونه چاهئي. يه صاف اور سعورا أصول هر آدمي كو چاه وہ کسی مذهب کا هو اپنے مذهبی فرض پورا کرلے کی پوری آزادی دیتا ہے اور اس کی اِس اُزادی میں سی طرح کی دخل اندازی کو بھی ظلم ٹھھراتا ہے . قرآن کے مطابق جو کوئی آرمی بھی' چاھے وہ کسی بھی مذعب کا عو' درسروں کے ساتھ اِس طرح کا ظام کرتا ہے اُس کے خلاف جہاد کرنا عر آدمی کا فرض کھے . خدا کا خلیفہ مونے کے ناتے ہو آدمی اپنے بھٹوان سے سیدھا سبندھ رکھنے کا حق رکھنا فی اُسے ادھیکار کے که اپنے بقانے والم کی پوجا اُ بندگی یا آسترتی کے لئے جو راہ چاہے اختیار كرم ، أس كي إس أزادي مين دخل دينا ظم أور كناة هـ .. نيتك دهارمك أور أدههانمك سوتنترتا كي إس س أونجي كلهنا نہیں کی جا سکتی .

اِس کا یہ مطاب نہیں کہ قرآن سب دھرموں اور مذہوں کی ھر چدر کو تھیک مانتا ھے ۔ قرآن ایمان' اور الحاد یعنی آستکتا اور ناستکتا' نیکی اور بدی' بھائی اور برائی میں صاف فرق کوتا ھے ۔ اُس کا یہ بھی دء علی ھے کہ خدا نے ھر دیھی میں اور ھر قرم میں پیغمبر بھرجے عیں اور ھر زمانے میں اور ھر ملک میں پاک نتابیں بھی بھیجی ھیں کہ دنیا کے لوگ اُن کی مدد سے تھیک راستے کو سمجھ سکیں اور اُس پر چل سکیں ۔

.कुरान का यह भी कहना है कि ख़ुदा ने सारी दुनिया के लिए हमेशा दीन धर्म की एक ही सीधी राह बताई है और हर पीराम्बर ने और हर धार्मिक पुस्तक ने उसी सीधी राह की तालीम दी है. दुनिया की किसी दूसरी पाक किताब में इस बुनियादी सचाई को इतने साफ साफ और इतने बार बार बयान नहीं किया गया जितना .कुरान में. कुरान ने आदमी से यह भी कहा है कि सब धार्मिक किताबों और सब रसूलों को मानो और रसूलों रसूलों में किसी तरह का फर्क ना करो. यहाँ तक कि जो लोग दुनिया भर के सब रसूलों को नहीं मानते या उनमें किसी तरह का फर्क करते हैं उन्हें कुरान ने "काकेरूने हक्का" यानी "सच्चे काकिर" कहा है. .कुरान का मजहब इस निगाह से सब मजहबों को अपने अन्दर लिये हुए और एक व्यापक यानी आलमगीर मजहब है.

इसी असल बुनियाद की वजह से .कुरान ने हरेक की कामिल मजहबी आजादी दी है और मजहब के मामले में किसी का किसी के साथ किसी तरह की भी जबरदस्ती करने की इजाजत नहीं दी. .कुरान की जिस आयत 'लाइकराहा फिदीन' की हमने ऊपर चर्चा की है उसकी ज्याख्या करते हुए मौलाना अबुलकलाम आजाद ने जिल्ला है:—

"इस असले आजम (बड़ी बुनियादी बात) का ऐलान कि दीन और अक्रायद (विश्वास) के मामले में किसी किस्म का जब व इस्तकराह (जबरद्स्ती) जायज नहीं, क्योंकि दीन की राह दिल के ऐतक़ाद श्रीर यक़ीन की राह है और ऐतक्षाद (विश्वास), दावत व मवाजत (उपदेश) पैदा कर सकते हैं न कि जब व तशहद (यानी विश्वास प्रेम के साथ सममाने बुमाने से हो सकता है, जबरदस्ती करने सं नहीं हो सकता)." इसके अलावा मजहबी गिराहबंदी या किरक्रेबन्दी, चाह वा किसी भी रूप में हो, सच्चे मजहब के बिलकल खिलाफ चीज है. जब सारी सुध्य का रचनेवाला श्रीर मालिक एक है श्रीर उसने सारे मानव समाज के सामने धर्म या हिदायत की एक ही सीधी राह पेश की है तो मजहब में अलग अलग गिरोहबंदियों का होना उस अल्लाह की वहदत यानी उसकी एकता श्रीर उसके मालिक होने से इनकार करना है. देश और काल के अनुसार या अपनी अपनी तबियत के अनुसार पूजा बन्दगी के तरीक़ों का अलग श्रलग होना दूसरी बात है, और .कुरान इसमें श्रादमी को परी आजादी देता है.

.कुरान ने नेकी की राह के साथ साथ बदी की राह यानी गुमराही को भी तय करके अपने मतलब को और साफ कर दिया है. कुरान कहता है कि हर मजहब और हर धर्म में बातिलपरस्त यानी भूठे, गुशस्क्रि यानी एक قرآن کا یہ بھی کہنا ہے کہ خدا نے ساری دنیا کے لئے همیشہ دین دورم کی ایک ہی سیدهی راہ بتائی ہے اور ہو پیغمبو نے اور ہو دہارمک پستک نے اُسی سیدهی راہ کی تعلیم دی ہے ۔ دنیا کی کسی دوسری باک کتاب میں اِس بنیادی سچائی کو اِتنے ماف ماف اور اِتنے بار بار بیان نہیں کیا گیا چتنا قرآن میں ، فرآن نے آدمی سے یہ بھی کہا ہے کہ سب دھارمک کتابوں اور سب رسواں کو مانو اور رسواں رسولیں میں کسی طرح کا فرق نہ کرو . یہاں نک که جو لوگ دنیا بھر کے سب رسولیں کو نہیں مانتے یا اُن میں کسی طرح کا فرق نہیں مانتے یا اُن میں کسی طرح کا فرق نہیں مانتے یا اُن میں کسی طرح کا فرق نہیں مانتے یا اُن میں کسی طرح کا فرق نہیں مانتے یا اُن میں کسی طرح کا فرق نہیں ہوگئی اُنہیں قرآن کا مذہب اِس نگاہ سے سب مذہبوں کو اُننے اُندر لئے ہوئے اور ایک وبایک یعنی عالمایو مذہب ہے ۔

اِسَى اصلَ بنیاد کی وجہہ سے قرآن نے مر ایک کو کامل مذھبی آرادی دی ہے اور مذھب کے معاملہ میں کسی کو کسی کے ساتھ کسی طرح کی یہی زبردسٹی کرنے کی اجازت تہیں دی۔ قرآن کی جس آیت 'لااکراها نی الدین' کی هم نے اُرپر چرچا کی ہے اُس کی ویاکھیا کرتے ہوئے مولانا ابوالکلم آزاد نے لعا ہے :۔۔۔

راس أمل أعظم ( برى بنيادي بات ) كا إعلان كه دين اور عقاید ( وشواس ) کے معاملہ میں کسی فسم کا جبر و اِستکراۃ ( زبردستی ) جایز نہیں کیونک دین کی راہ دل کے اعتقاد اور يقين كي راه ه اور اعتقاد ( وشواس ) دعوت و موازت (أبديهن) يبدأ كرسكت عين ته كه جبر وتشدد (يعني وشواس یریم کے سان سمنجیانے بنجہائے سے نفرسکتا ہے وہردستی کرنے سے نہین عوسکتا )۔ ' اِس کے علامہ مذعبی گرودبندی یا فرقتهادی کے چاہے وہ کسی بینی روپ میں بهو سنچے - فیعب کے بالال حلف چيز هے . جب ساري سرشتي کا رچنے والا اور مالک ایک ہے اور اُس نے سارے مالو سمانے کے سامنے دھوم یا هدارت کی ایک نقی سیدقی راه پیش کی می مو مذهب میں الك الك كرودبنديون كا ندونا أس الله كي وحدت يعني أس کی ایکتا اور اس کے مالک ہونے سے اِنکار کرنا ہے . دیکس اور کال کے اُنوسار یا اپنی ابنی طبیعت کی آنوسار پوجا بندگی کے طریقوں کا انگ انگ عونا دوسری بات کے اور قرآن اِس میں أدمى كو يوسى أزادي دينا هي.

قرآن نے نیکی کی راہ کے سانھ ساتھ بدی کی راہ ہوں کی اور راہ یعنی گراھی کو بھی طے کرکے اپنے مطلب کو اور ھو صاف دودیا تھے قرآن کہتا تھے کہ بھر منیت اور ھو دعرم میں باطال پرست یعنی جھوٹے مشرق یعنی ایک

الله کے نسوا دوسروں کو پوجلے والے ملتحد يعلق ناستک منسد یمای جهاوالو اور بدکار لوگ بهی هوتی هیں جو سرکشی کرتے هیں أور أینی غلط چال سے باز نهیں آتے ، اسی لئے اُنہیں طرح طرح کی مصربتیں جھیلنی پرتی هيں . قرآن مانو سماہے کو دو حصوں میں بانقتا ہے ایک موسی اور نیک لوگ اور دوسرے منکر اور جهکزا کرنے والے اور ساری دنیا کے موماوں یعنی آیمان والوں اور نیک کام کرنے والوں کو جو دبن دهرم کی سیدهی رأه پر چلتے هیں ورآن یا اِجازت ديمًا هم كه وم ايني ايني دين بر قايم رهيس اور أس كي روشلي ميس مالی ٔ راجکاچی اور سماجی دلبندیس کو چهرزکر ایک عالمگه یعنی ویاپک اخرت اِنسانی یعنی اِنسانی بھائی چارے کی صورت اختیار کریں ، محمد ماحب لے قرآن کے اِس شاندار آدرهی کو عملی جامه پہنائے کے ائے ایک خاص قدم أثهایا . أنهوس لے ایران مصر اور روم کے بادشاهوں کو خط بھیج کر دعوت دمی که جب هم سب ایک خدا کے ماننے والے هیں اور أس کے بنائے ہوئے بنیادی ٹینک أصولوں کو تھیک مانتے ہیں تو کیوں ٹھ ھم سب ملکر تمام دنیا کے آدمیوں کو ایک بھائی چارے کے ساتھے میں تھالنے کی کوشش کریں، اُس اجائی چارے کے بنيادي أصول تين أور صرف تين بتائم كَيْم الك يه كه حدا ايك ھے، دوسرے یہ کہ ہر آدمی زمین پر خدا کا نایب عے اور تیسرے یہ کہ ہر آدمی کے دوسرے آدمیس کی طرف کچے فرغی هيل جنهيل احفوق العباد عها جانا هے أور جن كا يوزا درنا سبكے لئے ضروری ہے .

ظاهر هے که اِنسانی بھائیچارے میں عندو' عیسائی' مسلمان کسی بھی مذہبی گروہ بندی کی گنتجایش نہیں ہے . اِس طرح کا اِنسائی بھائی چارا اُن دھار، ک نحریکوں سے بھی پیدا نہیں هوسکتا جو آج هم اِسلامی عندوئی یا عیسوی مذهبی نحریکوں کی شکل میں چلانے کی کوشش کو رہے نیں ، اِسی گروہ بندی اور کھینچادائی کا نتیجہ ہے کہ هر مذهب کے لوگ اور خاصكو إسلام كے مانئے والے اول تو خود اپنے مذهب والوں بر اور یهر دوسرے مذاب والوں پر دین کے معاملے میں جبر و زبردستی كو جايز هي نهين بلنه لازمي مانته هين ، اِسي كو وه اصلي دین اور نجات کے لئے ضروری بتاتے میں ، اِن لوگوں کا یہ غط اور دردناک برتاؤ هی دنیا مهن ساری کهینچاتانی اور مذهبی نفرت اور ایک دوسرے سے اوائی جھکڑے کی جر ھے ۔ اِس سے أج دنها كو برّے برّے نقصان پہونچ رفے هيں ، مذهب كى اصلیت سے غیرجانکاری اور غاط فہمی ھی اِنسانی بھائی چارے کی تعمدر میں سب سے بڑی رکارے ہے . میں سب دھرم مذھبوں کے سننے والوں سے کو دینا چاھتا ھوں

अल्लाह के सिवा दूसरों को पूजने वाले, मुलहिद यानी नास्तिक, मुक्तसिद् यानी भगड़ीलू और बद्कार लोग भी होते हैं जो सरकशी करते हैं और अपनी ग़लत चाल से बाज नहीं आते, इसीलिए उन्हें तरह तरह की मुसीबतें मेलनी पड़ती हैं. .कुरान मानव समाज को दो हिस्सों में बाँटता है, एक मामिन और नेक लोग और दूसरे मुनकिर और कगड़ा करने वाले, श्रीर सारी दुनिया के मोमिनों यानी ईमान वालों श्रीर नेक काम करने बालों को, जो दीन धर्म की सीधी राइ पर चलते हैं, .कुरान यह इजाजत देता है कि वे अपने अपने दीन पर कायम रहें और उसकी रोशनी में माली, राजकाजी और समाजी दलबंदियों को छोड़कर एक श्रालमगीर यानी व्यापक 'अख्वते इन्सानी' यानी इन्सानी माई चारे की सूरत अखितयार करें. मुहम्मद साहब ने .कुरात के इस शानदार आदर्श को अमली जामा पहनाने कं लिए एक खास क़द्म उठाया. उन्होंने इंरान, मिस्र और रं।म के बादशाहों को ख़त भेज कर दावत दी कि जब हम सब एक, खुदा के मानने वाले हैं और उसके बनाए हुए बुनियादी नैतिक उसूलों का ठीक मानते हैं ता क्यों न हम सब मिलकर तमाम दुनिया के श्रादमियों को एक भाईचारे के सांचे में ढालने की कोशिश करें. उस 'भाईचारं' के बुनियादी उसूल तीन झौर सिर्फ तीन बताए गए—एक यह कि ख़ुदा एक है, दृसरे यह कि हर आदमी ज़मीन पर .खदा का नायब है और नीसरे यह कि हर आदमी के दूसरे आदिमयों की तरक कुछ कर्ज हैं जिन्हें 'हकूक उल श्रवाद' कहा जाता है श्रीर जिनका पूरा करना सब के लिए चहरी है.

जाहिर है कि इन्सानी भाईचारे में हिन्दू, ईसाई, मुसलमान किसी भी मजहबी गिराहवंदी की गुंजायश नहीं है. इस तरह का इन्सानी भाईचारा उन धार्मिक तहरीकों से भी पैदा नहीं हो सकता जो आज हम इसलामी, हिन्दुई या ईसवी मजहबी तहरीकों की शकल में चलाने की काशिश कर रहे हैं. इसी गिरोहबंदी और खीचातानी का नतीजा है कि हर मजहब के लाग श्रीर खासकर इसलाम के मानने बाले अञ्बल ता खुद अपने मजहब बालों पर श्रीर फिर दूसरे मजहव वाला पर दीन के मामले में जब व जवरदस्ती को जायज ही नहीं बल्कि लाजिमी मानते हैं. इसी को वह श्रमली दीन श्रौर निजात के लिये ज रूरी वताते हैं. इन लागों का वह'रालत ऋौर ददेनाक बरताव ही दुनिया में सारी खींचातानी और मजहबी नफरत और एक दूसरे से लड़ाई कगड़े की जड़ है. इससे आज दुनिया को बड़े बड़े नुक्रसान पहुंच रहे हैं. मजहब की असलियत से ग़ैर जानकारी और गलतफहमी ही इन्सानी भाईचारे की तामीर में सबसे बड़ी रुकाबट है. में सब धर्म मजहबों के मानने वालों से कह देना चाहता हूँ

के जब तक उनकी यह रालतकहमी दूर नहीं होती और वे अपने अपने धर्मों की सच्ची तालीम पर नहीं चलते तब तक मुक्कों और क्रीमों के पुरचे पुरचे होते रहेंगे और राजकाजी और नैतिक त्कान हमारी समाजी जिंदगी की बुनियादों को हिलाते रहेंगे, और हमें पिन्छमी क्रीमों का शिकार बनाते रहेंगे. इन बुनियादी उस्लों को क्रायम करने कं बाद . कुरान ने सच्चे माईचारे, सच्ची डेमोक्रेसी यानी जमहूरियत और हुकूमते इलाही यानी रामराज क्रायम करना हर आदमी का पहला कर्जा बताया है, और उसके तरीके भी बता दिये हैं.

# हुकुमते इलाही

हुकूमते इलाही का पहला उसूल यह है कि उसमें समाज के सबसे नीचे के लोगों, गरीकों, लाचारों, दर्दमदों और पीड़ितों के दुख द्दें दूर करने की सबसे जियादह कोशिश की जाती है. खलीफा उमर की हुकूमत इसकी सबसे अच्छी मिसाल थी. ऐसी हुकूमत में मानव समाज के वह सब रीत रिवाज और कायदे कानून, जिनके कारण समाज के कुछ लोगों में गरीबी घर कर जाती है, लाचारी और दर्दमन्दी बढ़ती है और कुछ लोग दूसरों पर जुल्म कर सकते हैं, वह सब मन्सूख और रह कर दिये जाते हैं. जुल्म का इससे बढ़कर सबूत नहीं हो सकता कि दुनिया में कुछ लोग दौलत-मन्द हों और कुछ गरीब, नादार और लाचार. कुछ जालिम हों और कुछ द्देंमन्द और मजलुम. यही वह ऊँच नीच है जो इन्सानी बराबरी और भाइंच रे को खत्म कर देती है. कुरान के अनुसार यह अल्लाह के हुकुम की सब से बड़ी नाफ्रमानी है.

क़ुरान का गरीबों, लाचारों श्रीर दर्मनदों की तरफ़ इतना ध्यान देना सारे मानव समाज को इन्सानी बरावरी के सांचे में ढाल देता है.

साथ ही क़ुरान बड़े, छाटे, बतवान और कमजोर तन्तु-रुस्त और बामार के उस फरक पर भी पूरा ध्यान देता है जिसका होना हर मिले जुले छुटुम्ब के अन्दर लाजिमी है. माँ और बच्चे, बाप और बटे, पानी और पत्नी में फरक होता ही है, सीखने सिखाने की यांग्यता भी किसी में कब, किसी में जियादा. किसी भी छुटुम्ब के सब आदमी एक बराबर नहीं कमा सकते, न सब एक सी मेहनत कर सकते हैं. जाहिर है कि हरेक अपनी शक्ति और काबलीयत के अनुसार मेहनत या काम करंगा, और हरेक पर उसकी ज़रुरत के अनुसार खर्च किया जावेगा. अक्सर काम न कर सकने वाले बीमार या अपाहिज या बच्चे पर ज्यादा और महनत करने वाले तन्दु हरूस आदमी पर कम खर्च होता है. आज کہ جب تک آن کی یہ غلطنہمی دور ٹہیں ہوتی اور رہے اپنے اپنے دعرموں کی سپی تعلیم پر نہیں چاتے اور رہے اپنے اپنے دعرموں کی سپی تعلیم پر نہیں چاتے اور راجکلجی اور نبیتک طوفان ہماری سماجی زندگی کی بنیادوں کو ملاتے رہینکے اور ہمیں پیچیمی قوموں کا کار بناتے رہینکے ان بنیادی اصراوں کو قایم کرنے کے بعد قرآن نے شکار بناتے رہینکے ان بنیادی اصراوں کو قایم کرنے کے بعد قرآن نے سپیے بہائی چارے سپی درموکریسی یعنی جمہوریت اور حکومت البی یعنی جمہوریت اور حکومت البی یعنی رام راج فایم کونا متر آدمی کا پہلا فرض بنایا ہے اور

# حكومت إلمى

حکومت الهی کا پہلا اُصول یہ ہے که اُس میں سالے کے سب سے نیجے کے لوگوں' غریبوں' لاچاروں' دردسندوں اور پیرتوں کے دی درد دور کرنے کی سب سے زیادہ کوشش کی جاتی ہے ۔ خلیفہ عمر کی حکومت اس کی سب سے اچھی مثال تھی ۔ ایسی حکومت میں مانو سالے کے وہ سب ریت روائے اور فاعدے قانون جن کے کارن سالے کے کچھ لوگوں میں غریبی گھر کر جاتی ہے' لاچاری اور دردسندی بڑھتی ہے اور کچھ غریبی گھر کر جاتی ہے' لاچاری اور دردست منسوخ اور رد کر دئیے جاتے ہیں ، ظام کا اِس سے بڑھکر ثبوت نہیں ہوسکا که دئیا میں کچھ لوگ درائمدن ہوں اور کچھ غریب' نادار اور فائی میں کچھ اوگ درائمدن ہوں اور کچھ غریب' نادار اور لاچار ، کچھ ظالم ہوں اور کچھ دردسند اور مظام ، یہی رہ اُونے نیچ ہے جو اِنسانی ہراہری اور بھائی چارے کو ختم کر اور میکی ہے ۔ فران کے آنوسار یہ الله کے حکم کی سب سے بڑی دیتی ہے ۔

قرآن کا غویبوں' لاچاروں اور دردمندوں کی طرف اِننا دینا سارے مانو ساج کو اِنسانی برابری کے سانچے میں تھال دیا گے .

ساته هی ترآن برے' چهو بی بلوان اور کمزور' تندرست اور بهمار کے اس فرق پر بھی بورا دعیان دیتا ہے جس کا عرفا عر الے جلے کئمب کے اندر الزمی ہے ، ماں اور بھی باپ اور بیٹی' پتی اور پتنی میں فرق ہونا ہے ہے' سمانی نے سکانے کی بوگتا بھی کسی میں کم اور کسی میں زیادہ ، کسی بھی کٹمب کے سب ادمی ایک برابر نہیں کما سکتے' نہ سب ایکسی محتنت کوسکتے ہیں۔ طاهر ہے کہ ہر ایک اپنی شکتی اور فابلیت کے آنرسار محتنص یا کم کریگا' اور ہر ایک پر آس کی ضرورت کے آنرسار خرج کیا جاویگا ، اکثر کام نہ کرسکنے والے بیمار یا ایاھمے یا بھے پر زیادہ اور محتنت کرنے والے تندرست آدمی پر کم خرج ہونا ہے ، آج

दुनिया भर में कम्युनिषम ने इसी को अपना आर्थिक उसूल और अपना सबसे बड़ा नारा बना रखा है.

कम्युनिस्ट विचारकों ने अभी तक यह नहीं सोचा कि
जब तक आम लोगों को दो बातों पर विश्वास न होगा, एक
यह कि खुदा है और एक और केवल एक है और दूसरे यह
कि सब आदमी भाई भाई हैं, तब तक दुनिया के आम लोगों
को इस जीवन के बाद के एक स्थाई या अमर जीवन में
विश्वास न होगा तब तक आम लोगों से इन्साफ, त्याग और
निस्त्वार्थना की आला करना भी रालत है. जीवन के सुखों
को आम आदमी तब ही दूसरों के लिये त्याग सकता है
जब उसे बाद के किसी जीवन में बदले की आशा हो.

दुनिया की हुकूमतों के सामने आज सबसे बड़ा मसला यही है कि हर आदमी दूसरे आदिमयों को नेकी और सदाचार के उसलों पर कैसे चला सकता है और यह कैसे कर सकता है कि हर आदमी सब की भलाई के रास्ते पर ही चले. यह काम किसी तरह की जोर जबरदस्ती से नहीं हो सकता. क़रान का कहना है कि एक कुटुम्ब के अन्दर हिन्सा और जबरदस्ती से काम लेना मानवता को ठेस पहुँचाना है और उसे मिटाना है. इसीलिये क़ुरान ने आइसी के राजकाजी जीवन के लिये भी हिन्सा श्रीर जबरदस्ती की जगह भाईचार, परस्पर सहयोग श्रीर प्रेम ही की तालीम ही है. करान का दावा है कि हमारे आए दिन के जीवन में भाई भाई का सा सम्बन्ध और सहयोग आदमी में सच्चे भाईचारे और सच्ची जमहरियत (लोक शाही) की ब्रुनियाद डालता है, और यह लांकशाही ऐसी गहरी श्रीर मजबूत होती है कि जितनी हिन्सा श्रीर जबरदस्ती से दुनिया पर लादी हुई कोई लोकशाही नहीं हो सकती. क़ुरान का कहना है कि परस्पर प्रेम श्रीर सहयोग श्रादमी में वह भाव श्रीर जिन्मेवारी पैदा करते हैं जो हिन्सा और डर पैदा नहीं कर सकते.

परन्तु आदमी के अन्दर प्रेम और परस्पर सहयांग की इस भावना का पैदा हाना भी इतना आसान नहीं है. इसके लिये क़ुरान ने "जेहादे अकबर" का तरीका बताया है. 'जेहादे अकबर' का अर्थ है 'सबसे बड़ा जेहाद.' इसका मतलब है .खुद अपनी आत्मा यानी अपने नक्स पर विजय प्राप्त करना, अपने अन्दर को जीतना. इसके लिये सब से पहली जरूरत है दिल की सफाई. क्योंकि जब तक हर आदमी अपने दिल को अपने भाई की तरफ से कोध (गुस्सा), नफ्रत, ईच्यां, द्वेष, अविश्वास, इसद वरीरा से पाक साफ न कर लेगा, तब तक वह उसे अपने बराबर का अनुभव नहीं कर सकेगा, और उससे दूसरे का नुक़सान और तकलीफ पहुंचती ही रहेगी. इसलिये आदमी को इन्सानी बराबरी के

دنیا بھر میں کمیونوم نے اِسی کو اُپنا آرتھک آصول اور اُپنا سب سے بڑا نعرہ بنا رکیا ہے ۔

کمیونسٹ وچارکوں نے آبھی تک یہ نہیں سوچا کہ جب
تک عام لوگوں کو دو باتوں پر وشواس تھ ہوگا' ایک یہ کہ خدا
یے اور ایک اور کیول ایک ہے اور دوسرے یہ کہ سب آدمی
بھائی بھائی ھیں' تب تک دنیا کے عام لیگ اُوپر کے اُصول کو
سوتیکار نہیں کرسکتے ، جب تک 'وگوں کو اِس جیوں کے بعد
کے ایک استھائی یا امر جیوں میں وشواس نہ ہوگا تب تک
عام لوگوں سے اِنصاف' تیاگ اور نسوارتیتا کی آشا کرنا بھی
علم لوگوں سے اِنصاف' تیاگ اور نسوارتیتا کی آشا کرنا بھی
علم ہے جیوں کے سکھوں کو عام آدسی تب ھی دوسروں کے لئے
نیاگ سکتا ہے جب اُسے بعد کے کسی جیوں میں بدلہ کی
آشا ھو ۔

دنیا کی حکومتوں کے سامنے آج سب سے بڑا مسالم یہی ہے کہ ہر آدسی دوسرے آدمیوں کو نیکی اور سداچار کے اصواوں پر كيسم چالسكتا هے أور يه كيسم كرسكتا كه هر آدمي سب كي بهالئي کے راستے پر ھی چلے ، یہ کام کسی طرح کی زور زبردستی سے نہیں ہوسکتا ، قرآن کا کہنا ہے تھ ایک کٹیپ کے اندر هنسا ارر زبردستی سے کام لینا مائوتا کو تھیس بہونجانا کے اور آسے مُمَّاناً أُهُم إِلَى لاللهِ قَرْآن لَهُ أَدْمَى كَم رَاجِكَاجِي جِين كَم اله بھی هنسا اور زبردستی که جکه بھائی چارے پرسور سھیوگ اور بريم هي دي تعاليم دي هي . قرآن كا دعويل هي كه همار م آئم دن کے جیروں میں بہائی بھائی کا سمبندہ اور سہورگ آسی میں سجے بھائی چارے اور سچی جمہوریت (لوک شاھی) کی بنیاد دالتا هے اور یه لوک شاهی ایسی گهری اور مضروط هوتی هے که جننی منسا اور زبردستی سے دنیا بر لادی هوئی کوئی لوک شاهی تیهی هوسکتی . حوآن کا دینا کے که پرسهر پریم اور سهیوگ آدسی میں وہ بھاؤ اور وہ زماواری پیدا کرتے تھیں جو سنسا اور در بیدا نهین کرسکتے .

پرنتر آدمی کے اندر پریم اور پرسپر سپیوگ کی اِس بهاؤنا اپیدا بھی اِننا آسان نہیں ہے ۔ اِس کے اُنے قران نے ''جہاد اہر'' کا طریقہ بتایا ہے ۔ 'جہاد ائبر' کا اربہ ہے تسب سے بڑا جہاد ۔' اِس کا مطلب ہے خود اپنی آسا یعنی اپنے نفس پر رجائے پراپت کرنا' اپنے اندر کو جیتنا ۔ اِس کے ائے سب سے بہلی ضرورت ہے دل کی صفائی ۔ کیونکہ جب تک عر آدمی اپنے دل کو اپنے بہائی کی طرف سے کرودھ ( غصہ )' نفرت' اپنے دل کو اپنے بہائی کی طرف سے کرودھ ( غصہ )' نفرت' ایرشیا' دویش' اوشواس' حسد وغیرہ سے پاک صاف تعق کرلیگا' نب تک وہ اسے اپنے برابر کا اتوبھو نہیں کرسکیگا' اور اُس سے دوسرے کو نقصان اور تکلیف پھوندچتی ھی اُدمی کو اِنسانی برابری کے رہیگی ، اِس اِنے آدمی کو اِنسانی برابری کے

क्सूल से भी आगे बद्कर दूसरों की जरूरतों को अपनी जरूरतों पर तरजीह देनी होगी, उसे दूसरों के लिये त्याग और क़ुरवानी करनी होगी. तब ही वह धरती पर खुदा का ख़लीफ़ा यानी नायब बन सकेगा. इसीलिये क़ुरान कहता है कि इन्साफ़ करो, श्रहसान करो, त्याग यानी ईसार करो. क़ुरान में बराबर आता है कि "अल्लाह उन्हीं को प्यार करता है जो दूसरों पर श्रहसान करते हैं."

इन अर्थों में खुदा का ख़्लीफा बनने की कोशिश को ही क़ुरान ने 'जेहाद अकबर' यानी बड़ा जेहाद कहा है. इसी को 'सीधा रास्ता बताया है.

इसमें सन्देह नहीं कि क़रान ने आत्म रक्षा यानी अपने बचाव के लिये हिन्सा की यानी तलवार उठाने की भी इजाजत दी है. लेकिन इसे 'जेडादे श्रसरार' यानी छोटा जेडाद कहा है. लगभग सब धर्मों ने राजकाज में तलवार के इस्तेमाल की इजाजत दी है, लेकिन केवल जवाबी तौर पर, और वह भी इसलिये कि देश और काल के हालात के अनुसार अभी हिंसा को मनुष्य जीवन से बिल्कुल बाहर नहीं किया जा सकता था. साथ ही हर धर्म ने हिंसा को केवल आत्म रक्षा के लिये जायज ठहराया है, और हिंसा श्रीर तलवार के इस्तेमाल के खत्म करने के लिये दरजे व दरजे रास्ते और राहें बताई हैं. पर कड़ी से कड़ी हिदायतों के होते हुए भी किसी भजहब के मानने वाल दिसा का कवल जवाबी उपाया तक यानी श्रात्म रक्षा तक सीभित न रख सके. इन लीगों न चुँ कि 'जेहाद अकवर' का तरक काई ध्यान नहीं दिया, इसी लिये ये सब दुनिया की हिस्स और लीम के जाल में फस गए. जेहादे असरार को ही सबने जहादे अकबर समभ लिया. और अपने बचाव का हद से बढ़कर उसे द्वानया की ताक्रत श्रीर ऐश श्राराम के सामान हासिल करन का जरिया बना लिया. इस जबरदस्त भूल ने श्रादमी की सारी ह्महानी यानी आध्यात्मक और इकलाको यानी नेतिक शक्तियाँ की मिटा डाला. इसी के नतीजे की शकल में इन्सानी साम्राज्यवाद यौर पूंजीवाद यानी शहन-शाहियत और सरमायेदारी के जाल में फंस गई, यहां तक कि उसमें रहानी और इखलाका शक्तियों के पैदा होने के सारे दरवाजे ही बन्द हा गए. नतीजा यह हुआ कि हम यह दुनिया श्रीर वह दुनिया दोनों की खी बैठे. दुनिया से हमारा मान और इक्षवाल दोनों उठ गए. आज पश्चिम की नास्ति-कता श्रीर वहां का साम्राज्यवाद हम पर हावी है श्रीर उस की सारी शक्ति हमारी रही सही ब्रानयादों का खाद डालने में लगी हुई है. अगर मजहबी दुनिया अब भी नहीं जागती श्रीर उन रास्तों को ऋख्तियार नहीं करती, जो उसकी पाक किताबों स्पीर निवयों ने बताए हैं, ता उसे अपनी इस ग्रजती के नतीजे भगतने पड़ेंगे, उस पर नई नई मुसीबतें उतरेंगी

آمول سے بھی آگے برَّ مکر دوسروں کی ضرورتوں کو اپنی ضرورتوں پر توجدے دینی موگی' آسے دوسروں کے لئے تیاگ اور قربانی کرنی موگی ، تب بھی وہ دھرتی پر خدا کا خایفہ یعنی' نایب بن سکیکا ، اِس نئے قرآن کہنا ہے کہ اِنصاف کرو' احسان کرو' تیاگ یعلی ایثار کرو ، قرآن میں ہرابر آتا ہے که اُلاء اُنہیں کو پیار فرتا ہے جو دوسروں پر احسان کرتے میں ،''

اِن ارتهوں میں خدا کا خلیفہ بننے کی کوشش کو می قرآن نے اجہاد انبر' یعنی بڑا جہاد کہا ہے ۔ اِسی کو اسیدھا راسته' بتایا ہے ۔

اِس میں سلدیہ نہدں که قرآن نے آنم رکشا یعنی اپنے بچاؤ کے لئے هنسا کی یعنی تلوار أنهائے کی بھی اِجازت دی ہے۔ ليكن إس 'جهاد أصفر' يعني جهونًا جهاد كها هي لك بهك سب دھرورں نے راجکام میں نلوار کے اِستعمال کی اِجارت دی ھے الیمن کیول جوابی طور پر' اور وہ بھی اِس لیے که دیھی اور کل کے حالت کے اسوسار أبهى هنسا دو منشه، جيبن سے بالنل یاهر قبهیر کها چاسکدا تها. ساده دی نفر دهرم <u>ن</u>اهاسا دو کیول آدم رکشا کے لئے جابئ تھورایا ہے؛ اور عدسہ اور بالوار نے اِستعمال کے ختم کرنے نے لئے درجہ بدرجہ راستے اور راسیس بتائی سیں ۔ پر دری سے کڑی مدایتوں کے ہوتے مونے می کسی مذھب کے صافقه واله نعنسا دو اهول جرابي أيايون بد يعقى أنم ركشا بك سیمت نه راید مید این اودول نے چودیم "بجهاد ادبر" دی طرف کوئی دھیان نہیں دیا اِس لئے یہ سب دنیا دی حرص اور لوبھ کے جال میں یہس گے . جم د اصغر کو سی سب نے جہاد ادبر سمجه ليا اور ينے بحور کی حد سے برم در اسدسیا ہے طابت اور درهس ارام کے سامان حاصال درنے کا ذریعد بما لیا ، اِس زبردست بھول نے ادمی نی ساری روحاسی یعنی آدسی تمک اور احالفی یعدی نهاک شامدون دو صدا دالا. اِسی نے مندبجے دی شال مدن أنساني دنيا سامراجيه واد اور يونبجي واد يعني شهشاهيمت اور سرمایدداری نے جال میں پہنس کئی یہاں دے دہ اُس میں روحائی اور احلائی شکتیوں کے پیدا ہولے کے سارے دروازم هي بند عو گاء، نتيجه به هوا كه عم يه دنيا اور وه دنيا دونوں کو ہو بداھے ، دنیا سے همارا مان اور اندال دونوں أَتْهِ تُكُم . أَج يَحِهم كي ناستكنا أور وهان كا سامواجيه وأن هم ير حاری هے اور اس کی ساری شکتی هماری رهی سهی بنیادوں کو کھرد ڈالنے میں لکی ہوئی ہے ۔ اگر مذہبی دنیا اب بھی نهيں جاکتی اور أن رأستوں كو اختيار نهيں قرتی جو اس کی یاک کتابوں آور نبیوں فے بتائے عیں تو اُسے اینی اِس فلطی کے نتیجے بھکٹنے پریدائے' اُس پرنٹی نئی مصیبتی انرینکی

اور سرمایه داری اور ناستکتا کا طوفان کیول اُسی کا نهین سارے مانو سنسار اور مانو جاتی کا خانمه کر دیگا .

میں مسلمانیں کا دھیاں اُن کے مذہب کے اِسسب سے بڑے بهلو كي طرف دلانا چاهنا هن كه "ترحيد" يعلى ألله كا أيك هرنا الخرس؛ يعنى انساني بهائي چارا اور آدمي كا خدا كا اخلیفه ا هونا یه تینوں اُصول ایک دوسرے کے ستھ جرے هوات هين انهين ايك دوسرے سے الگ نهيں كيا جا سكتا اين میں ویسا هی سبنده هے جیسا روح أور جسم میں یا مالس ارر هدى ميں ، ايشور كى ايكتا إن مهن كيندرية اور باتى دودون کی روح هے . یدی اِن تینوں اُصولوں کو سلملے رکھ کر هم مالو ساج کا سنکٹین نے کریں تو ہےانت آبادھاپی پھل جاتی ہے هماری ساری شکتهال بکهر جاتی ههن اور هماری روحالی جسمائی اور دوسری طاقتیں الگ الگ کو جانے لکتی عیں . ایشور کی ایکتا سے اِنگار کرنے کے بعد کوئی ثاتا اِیسا باقی شہدی رہ جاتا جو ایک آدمی کو دوسرے آدمی کے ساتھ پریم اور سهیوگ کی ونجیروں میں جار سامے اور سارے مانو سماے کو ایک بھائی جارے میں لا سکے ، هم اِس کے خالف نلسنیانہ بحدوں کے طوفان اُٹھا سکتے میں' پر یہ ایک سبچی اِتہاسی ( تاریخی ) گھٹنا ہے که منشیه جھوں سے پهوت اور آبادهایی کو مقانی اور سب کو ایک دور میں باقدهاند میں جتنا زبردست حصہ ایک خدا ایک ایشور کے وچار نے لیا ھے آتنا آج نک کسی دوسرے وچار نے نہیں لیا ، آدسی کو حبرانیت سے نکال کر اُسے آدمی بنائے میں بھی جو کام آیک ایشور کے وچار نے کیا ہے وہ کسی دوسرے وچار نے نہیں کیا۔ مانو رکاس میں انسانی بھائی چارے کی سیزھی کا یہی آخری زینم هے . ادھک پیچھے نه جاکر هم کیول پچھلے تین چار سو ہوس کے اِتہاس در هی ایک نگاہ تالیں تو هم دیکھینگے کہ جس جس درم تک کدندی اور ناستکنا ترحید (ایکیشور واد) اور ا سائی بھائی چارے کے خیالیں کو لوگیں کے دلوں اور دمانوں سے مقالے میں کامیاب عوثی اُسی درجہ تک مانو سماج میں بهرت آیادهایی اور حهوانیت بجدی چلی کئی تعرول اور مہایدھوں کے نئے نئے طونان آتے گئے۔ نتیجہ یہ ہوا کہ سویم أدمى كے اندر كى حيوانيت أور شيطانيت سارے مانو سماج پر حاری هو گئی۔ آج یه حیرانی اور شیطانی شکتیاں جر بربادی کر رهی هیں اُس کی دوسری مثل مانو اِتهاس میں نہیں مل سعتی . یہاں تک کی آج دنیا کے کوئے کوئے سے به تراونی آواز آرهی هے که مانو سبهدیا مانو جهرن اور آدمی کے رجوں کا خدا ھی حافظ ھے ۔

ناسکتا اور لامذیبی کی اِس بازه نے دھوم مذھیوں

श्रीर सरमायेदारी श्रोर नास्तिकता का तूफान केवल उसी का नहीं, सारे मानव संसार श्रीर मानव जाति का खात्मा कर देगा.

मैं मुसलमानों का ध्यान उनके मजहब के इस सबसे बढ़े पहलु की तरफ दिलाना चाहता हूँ कि 'तौहीद' यानी अल्लाह का एक होना, 'अख्यत' यानी इन्सानी भाईचारा और आदमी का खदा का 'खलीफा' होना, ये तीनों उसूल एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं, इन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता. इनमें वैसाही संबंध है जैसा रूह और जिस्म में या मांस और हड़ी में. ईश्वर की एकता इनमें केन्द्रीय और बाक़ी दोनों की रूह है. यदि इन तीनों उसलों को सामने रखकर हम मानव समाज का संगठन न करें तो बेझन्त आपाधापी फैल जाती है, हमारी सारी राक्तियां बिखर जाती हैं, और हमारी रूहानी, जिस्मानी और दूसरी ताकरों अलग अलग को जाने लगती हैं. ईश्वर की एकता से इनकार फरने के बाद कोई नाता ऐसा बाक़ी नहीं रह जाता जो एक आदमी को दूसरे आदमी के साथ प्रेम और सह-1 योग की जंजीरों में जकड़ सके; खौर सारे मानव समाज को एक भाईचारे में ला सके. हम इसके ख़िलाफ फ्लसफ़ियाना बहसों के तूफ़ान उठा सकते हैं, पर यह एक सच्ची इति-हासी (तारीखी) घटना है कि मनुष्य जीवन से फूट श्रौर आपाधापी को मिटाने श्रीर सबको एक डोर में बाँधने में बितना जबरदस्त हिस्सा एक खुदा, एक ईश्वर के विचार ने लिया है इतना आज तक किसी दूसरे विचार ने नहीं लिया. घादमी को हैवानियत से निकाल कर उसे आदमी बनाने में भी जो काम एक ईश्वर के विचार ने किया है वह किसी दसरे विचार ने नहीं किया. मानव विकास में इन्सानी भाई-चारे की सीढ़ी का यही आखिरी जीना है. अधिक पीछे न जाकर हम केवल पिछले तीन चार सौ बरस के इतिहास पर ही एक निगाह डालें तो हम देखेंगे कि जिस जिस दरजे तक लामजहबी श्रीर नास्तिकता तौहीद (एकेश्वर वाद) और इन्सानी भाईचारे के ख्यालों को लोगों के दिलों और दिमारों से मिटाने में कामयाष हुई उसी दरजे तक मानव समाज में फुट, श्रापाधापी श्रीर हैवानियत बढ़ती चली गई. टकरों और महा युद्धों के नए नए तुफ़ान श्राते गए. नतीजा यह हुआ कि स्वयं आदमी के अन्दर की हैवानियत श्रीर शैतानियत सारे मानव समाज पर हावी हो गई. आज यह हैवानी श्रोर शैतानी शक्तियां जो बरबादी कर रही हैं उसकी दूसरी मिसाल मानव इतिहास में नहीं मिल सकती. यहां एक कि आज दुनिया के काने काने से यह हरावनी आवाज आ रही है कि मानव सभ्यता. मानव जीवन श्रीर श्रादमी के वजूद का खुदा ही हाफिज है.

नास्तिकता श्रीर लामजहबी की इस बाद ने धर्म मजहबाँ

के मानने वालों के सामने जिन्दगी और मौत का सवाल पैदा कर दिया है. या तो हम हाथ पर हाथ घरे इस बाद के हाथों अपनी सारी सध्यता और मजहब का मिटाना चुप चाप देखा करें और या अपनी समाजी, रूहानी माली और इसलाक़ी जिन्दगी को पच्छिम की गलामी से आजाद कराने के लिये कमर कसके खड़े हो जायें. इसकी तच्यारी का पहला क़दम यह है कि हम दुनिया-परस्ती और पेश-परस्ती के उस जाल को तोड़ दें जिसमें पच्छिम की ला-मजहब और पेशपरस्त सभ्यता ने हमें फांस लिया है, और फिर अपने धर्म मजहब की तालीम पर सच्चे दिल से अमल करना शुरू करदें. यदि हम ऐसा करेंगे ता ईश्वर अल्लाह इमारा साथ देगा और फिर दुनिया की कोई शक्ति हमारे रास्ते में बाधा नहीं बन सकती.

हमें यह जानना चाहिये कि पच्छिमी सभ्यता का जहर अभी तक पूरवी देशों के ऊपर के और बीच के लोगों तक ही पहुंचा है. वह अभी तक छन छन कर आम जनता तक बहुत ही कम पहुंच पाया है. हमारे नीचे के और बहुत दरजे तक बीच के लोगों के दिलों पर ईश्वर में विश्वास धीर मजहब की हिदायतों का काकी गहरा असर मौजद है. यदि पक बार पच्छमी सभ्यता की नास्तिकता और लामजहबी-यत का सच्चा रूप पूरबी देशों की जनता के सामने आ जाये और उसके असर को मिटाने के लिये उन्हें संगठित कर दिया जाय तो एक बहुत बड़ा इनक्ष्लाब जंल्दी से जल्दी पैदा हो सकता है जो दुनिया को बरबादी से बचा सकता है, हम धर्म मजहब के मानने वालों सं प्रार्थना करते हैं कि बह इस तरफ ध्यान दें और अपने धर्म को और दुनिया की इन दिन दिन बढ़ते हुए खतरों से बचाएं.

इस लेख में मैंने मुसलमानों की तरफ ख़ास ध्यान दिया है, उनके सामने इस समय तीन ही रास्ते हैं, या तो यह कि वह इसलाम से मुनकिर होकर न केवल आर्थिक यानी माली श्रीर राजकाजी मामलों में ही बल्कि मजहबी और ईमानी मामलों में भी सोशलइडम और कम्युनिडम के पैरो बन जायें, या यह कि वह एक खुदा में एतक़ाद, इनसानी भाईचारे श्रीर श्रादमी के खुदा का ख़्लीफा होने के पूरे मतलब को ईमान के साथ पूरा करें और अपने देश चौर अपनी तहजीब को पच्छमी विचारों की गुलामी से छड़ावें. या तीसरा तरीक़ा यह है कि अपनी आजकल की मसीबतों में गिरफ्तार रह कर कभी मायूसी के दिन गुजारें भीर कभी अक्सरीयत (बहुमत) और अक्रलियत (अल्पमत) का रोना रो रो कर पुराने फिरक्रेवाराना तुकान खड़े करें श्रीर फिर छन्हीं का शिकार हो जायें. इन तीन के अलावा कोई और चौथा रास्ता उनके सामने नहीं है,

کے مالنے والی کے سامنے زندگی اور موت کا سوال بیدا کر دیا ہے یا تو هم هاتھ پر هاتھ دهرے اِس بازد کے هاتھوں اینی ساری سبھا ابر مذهب كا مقفا چپ چاپ ديكها كريس أور يا ايغي سماجي، روحائے ؛ مالی اور اخلامی زندگی کو یعجم کی غلامی سے آزاد کوالے کے اللہ کمرکس کے ا<del>ہر</del>ے ہو جائیں ، اِس کی تھاری کا بہلا قدم یہ ہے که هم دنیا برستی اور عیش پرستی کے اُس جال کو تور دیں جس میں پنچھم کی لا مذہب اور عیص پرست، سبہتا نے عمیں بھائس لیا ہے؛ اور بھر اپنے دھرم مذھب کی تعلیم پر سجے دل سے عمل کرنا شروع کو دیں ، یدی هم أیسا كرينكم تو أيشور الله همارا ساته ديكا أور يهر دنها كي كوئي شكتي همارے راستے دوں بادعا فہیں ہی سکتی ۔

همیں یہ جاننا چاھئے که پچھمی سبھیتا کا زهر ابھی تک پورہی دیشوں کے اور بیچ کے اوگوں نک ھی پہونچا ھے ، وہ ابھی نک چھن چھن در عام جنتا تک بہت ھی کم یہونیے رایا ہے . همارے نیجے کے اور بہت درجے تک بیچ کے اوگوں کے داوں پر ایشور میں وشواسی اور مذہب کی ہدایتوں كا كاني كهرا الر موجود هي يدي ايكبار ينجهني سبهيتا كي ناستکتا اور لامذهبیت کا سنچا روپ دوربی دیشرس کی جنتا کے ساملے آجائے اور اُس کے اثر کو مقالے کے لئے اُنھیں سنکتہت کردیا جائے نہ ایک بہت ہڑا اِنفلاب جادی سے جادی بیدا موسكتا هے جو دليا كو بريادي سے بحجا سكتا هے ، هم دهرم مذهب کے ماننے والوں سے پرارنهنا کرتے هیں که وہ اِس طرف دهیان دیں اور اپنے دعوم کو اور دنیا کو اِن دین دی برهیتم هوئے خطرول سے بنجالیں .

اس ایکھ میں میں نے مسلمانیں کی طرف خاص دھیان دیا هے أن كے سامنے اِس ، مئے تين هي راستے هيں' يا تو يه كه وه اسلام سے ماکر ہوکر نے کیول آرتیک بعنی مانی اور راجکاجی معاملین میں بھی بلکہ مذہبی اور ایمانی معاملین میں بھی سوشازم اور کمهونزم کے بھرو سی جائیں کیا یہ که وہ ایک خدا میں اعتقاد انسانی بھائی چارے اور آدمی کے خدا کا خلیفه ھونے کے یورے مطلب کو ایمان کے ساتھ یورا کریں اور اپنے دیھی اور اپنی تهذیب کو پنچهمی وچاروں کی علامی سے چھڑاویں . یا تیسراً طریقه یه ه که اپنی آجال کی اصیبترس میں گرفتار رہکر کبھی مایوسی کے دن گذاریں اور کبھی انثریت ( بھومت ) اور اقلیت ( السست ) کا رونا رو روکر یرانی فرقهوارانه طوفان کھڑے کریں اور یہر اُنھیں کا شکار ہوجائیں ، اِن تین کے عادہ کوئی اور چوتھا راسته أن كے سامنے نہيں ھے .

( <u>301</u> )

मेरी प्रार्थना है कि इस देश के मुसलमान क़ुरान की सच्ची रांशनी, सच्ची जमहूरियत (हेमोक्रेसी) श्रीर सच्ची ह्यूमते इलाई। (रामराज) कायम करने का श्रपना समाजी श्रीर राजकाजी मकसद बनायें. इस के लिये वह काकी समाजी, राजगारी, माला श्रीर इख़्लाकी प्राप्ताम बना सकते हैं. श्रीर फिर उन्हें चाहिये कि वह उन प्राप्तामां को पूरा करने में दिलो जान से लग जायें.

में भारत के मुसलमानों को सलाह देता हूँ कि वह इस आन्दोलन में शामिल होने के लिये अपने हिन्दू भाइयों और दूसरे भारत बासियों को भी दावत दें और उन्हें यह यक्तीन दिलाएं कि अक्सरीयत और अक्तलीयत यानी बहु-मत और अल्प मत और फिरकेवाराना भगड़ों और मजहबी दुश्मनियों की सच्ची लोकशाही में कोई जगह नहीं है. अगर हिन्दू मुसलमान और सब मिलकर इन लोहे की दीवारों को तोड़ने की कोशिश करेंगे तो नामुमिकन है कि यह ठहर सकें. इनके मिटजाने के बाद ही वह समाज कायम हो सकता है जिसे हम सच्ची जमहूरियत, लोक-शाही, हकूमते इलाही या राम राज कह सकें.

जाहिर है कि अगर इस तरह की लोकशाही भारत में कायम हो जाये तो पाकिस्तान उसके असर से बाहर नहीं रह सकता. यही एक रास्ता है जिससे वह घात जो अंगरेजी पालिसी ने हम पर लगाए हैं भर सकते हैं. वह दो भाई जो एक दूसरे के खिलाक जंग के मोरचे बनाए हुए हैं किर से गले मिल सकते हैं.

अगर ऐसा हो जाय तो इस देश के जीवन में एक बहुत बड़ा इनक्ष्लाब पैदा हो सकता है, फटे हुए दिल मिल सकते हैं और बिछड़े हुए भाई इस तरह से फिर एक हो सकते हैं कि दुनिया के लिये एक नमूना हो जायें. مهری پرارتبانا هے که اِس دیش کے مسلمان قرآن کی سچی روشنی' سچی جمہوریت ( دیموکریسی ) اور سنچی حکومت اِلهی (حرام راج ) قایم کرنے کو اپنا سماجی اور راجکاجی مقصد بنائیں ، اِس کے لئے وہ کافی سماجی' روزگاری' مالی اور اخلافی پروگرام بناسکتے هیں ، ارر پهر آنهیں چاهئے که وہ اُن پروگراموں کو پورا کرنے میں دل و جان سے لگ جاویں ،

میں بھارت کے مسلمانوں کو صلاح دیتا ھوں کہ وہ اِس آندوان میں شامل ھونے کے لئے اپنے ھندو بھائیس اور دوسرے بھارت واسیوں کو بھی دعوت دیں اور اُنھیں یہ یقین دلائیں که اکثریت اور اقلیت یعلی بہوست اور الپست اور فرقہوارانہ جھکوں اور مذھبی دشمنیوں کی سچی لوک شاھی میں کوئی جائم نہیں ھے ، اگر ھندو مسلمان اور سب ملکر ان لوھ کی دیواروں کو توڑنے کی کوشش کوینکے تو نامیکن ہے کہ یہ تپہر سیس ما کی دیواروں کو توڑنے کی کوشش کوینکے تو نامیکن ہے کہ یہ بھیر میں وہ سماج تایم ھوسکتا ہے جسے ھم سچی جمہوریت کو اوک شاھی کی حکومت اِلہی یا جسے ھم سچی جمہوریت کوک شاھی حکومت اِلہی یا

ظاهر هے که اگر اِس طرح کی اوک شاعی بهارت میں قایم هوجائے تو پاکستان اُس کے اثر سے باهر نبیس رہ سکتا ، یہی ایک راسته هے جس سے وہ گہاڑ جو انکریزی پالیسی نے هم پر اٹائے هیں بهرسکتے هیں ، وہ دو بہائی جو ایک دوسرے کے خلف جنگ کے مورچے بنائے هوئے هیں پهر سے گلے ولسکتے هیں ،

اگر ایسا هوجائے تو اِس دیش کے جیری میں ایک بہت ہوا انقلاب پیدا هوسکتا ہے، پہتے هوئے دل مل سکتے هیں اور بچہڑے هوئے بہائی اِس طاح سے پھر ایک هوسکتے هیں که دنیا کے لئے ایک نمونه هوجائیں ،

शास्त्र की बातें यदि भूल जायें तो फिर याद कर ली जा सकती हैं परन्तु सदाचार से एक बार भी भ्रष्ट हो जाने पर सँभलना मुश्किल होता है.

—सन्त वाणी

شاستر کی بانیں یدی بھرل جائیں تو پھر یاد کرلی جا سکتی ھیں پرنتو سداچار سے ایک بار بھی بھرشت ھے ۔ ھو جانے پر سنبھلنا مشکل ھوتا ھے ۔

-سنت وأنى

# रह या आतमा जब वालिग़ होने लगती है عب بالغ هرنے لکتی هے

### डाक्टर भगवानदास

लगभग हर आदमी की आत्मा को एक खास उमर में पहुँचकर, जब आत्मा बालिस होने लगती है, एक तरह का रुहानी बखार शुरू हो जाता है जिसकी चरचा में इससे पहले के लेख में कर चुका हूँ. यह ठीक उसी तरह होता है जिस तरह एक खास उमर में शरीर के बालिरा होने की खास अलामतें दिखाई देने लगती हैं. कभी कभी यह दोनों तरह की अलामतें एक ही उमर में साथ साथ भी देखने को मिलती हैं. आदमी के दिल पर इस रूहानी बुखार का खास असर यह होता है कि इस नाशमान यानी फानी श्रोर निराशा, दुख दर्द श्रीर मौत वाली दुनिया की तरफ़ से एक तरह का वैराग्य, नफ़रत और असंताप पैदा हो जाता है. आदमी की संकल्प शक्ति यानी क्रूबते इरादी पर उसका असर यह होता है कि आठ दिन के जीवन के मामूली काम उसे निरर्थ क मालूम होने लगते हैं. उस का जी उनसे फिरने लगता है. ऐसे उस समय में अलग अलग आदिमियों में अलग अलग चार सुरतें पैदा होती हैं. पहती सूरत में अगर आदमी का दिमारा और उसकी सुक बूम्म काफी जागी हुई नहीं होती और वैराग्य बढ़ जाता है और गहरा हो जाता है, तो कभी कभी आदमी में पागलपन के चिन्ह दिखाई देने लगते हैं. इस तरह के पागल-पन को आजकत के पश्चिमी डाक्टर और मनोविज्ञान के जानने बाले 'डिमेंटिया त्रिकोक्स (Dementia Precox) या 'पेरेनोइया' कहते हैं. दूसरी सूरत में अगर सूक बुक जाग चुकी होती है पर अभी बहुत अच्छी नहीं जागी होती और चीजों की जड़ में जाने, उनके कारणां का सममने का मादा श्रमी कम हाता है, जैसा कि श्रत्मिक विकास की शुरू की हालतों में अक्सर होता है, और निराशा अधिक जोर करती है श्रीर उससे श्रादमी में गुस्सा पैदा होने लगता है तो कभी कभी खास सूरतों में आदमी ऐसे मौके पर आत्म-हत्या भी कर बैठता है. तीसरी सूरत यह होती है कि वैराग्य यानी दुनिया से दिल का हटना और जिज्ञासा यानी तलाशे हक दोनों कमजोर होती हैं तो यह हालत थोड़े दिनों रह कर अपने आप मिट जाती है और आदमी दुनिया के दूसरे मामूजी आदमियों की तरह चुपचाप इन्सानी जिन्दगी के रोज-मर्रा के मामूली कामों में लग जाता है. अधिकतर आदिमयों की यही हालत होती है. चौथी सूरत में अगर जिज्ञासा

# دانقر يهكوان داس

لگ بھگ ہر آدسی کی آنما کو ایک خاص عمر میں پہوئیے کو' جب آنما بالغ هونے لکتی هے' ایک طرح کا روحائی بخار شروع هو جانا هے جس کی چرچا میں اِس سے پہلے کے لیکھ میں کر چکا ہوں یہ تھیک اسی طرب ہوتا ہے جس طرح أیک خاص عمر میں شریر کے بالغ ہونے کی خاص علامتیں ایک هی عمر میں سانه سانهه سانهیهی دیکھئے کو طلقی هیں. آدمی کے دل پر اِس روحائی بندار کا خاص اثر یه هوتا هے که اِس ناشمان يعنى فائمي أور تواشا كالهدور أور موت والي دنيا كي طرف سه ایک طرح کا ویراگی، نفرت اور استترش بیدا هو جاتا هے ، آدمی کی سنکلب شکتی بعنی قوت ارادی یو اُس کا اثر یہ ہوتا ہے که آئم دین کے جدوں کے معمولی کام اُسے نورتهک معلوم عونے لکتے هين. أس كا جي أن سے يهرنے لكتا هے، أيسے أس سمتّم مين الگ الک آدمیوں میں الک الک چار صورتیں پیدا ہوتی عیں۔ پہلی صورت میں اگر آدمی کا دماغ اور اُس کی سوجھ بوجھ کانی جاگی هرئی نهیں هوتی اور ویراگیه برت جانا هے اور گهرا هو جاتا ها تو کبھی کبھی آدمی میں پاکلین کے چنھ دکھائی دینے لکتے ھیں . اِس طرح کے پاگاہن کو آجال کے پنچمی قائدر اور منووگیاں کے جاننے والے دیمینڈیا پریموکس ( Dementia Precox ) يا أيهرونوأيا كهاتم هيل ، دوسري صورت ميل أكر سوجه بوجه جاک چکی هوتی هے پر ابھی بہت اچھی نہیں جاگی هوتی اور چیہوں کی جو میں جائے اُن کے کارنوں کو سمنجھنے کا مادہ اہبی کم مونا ہے؛ جیسا که آسک وکلس کی شروع کی حالتیں میں اکثر مودا ہے؛ اور دراشا ادھک زور کرتی ہے اور اس سے آدمی میں غصہ بیدا هونے اکتا کے نو کبھی کبھی خاص صورتوں میں آدمی ایسے موقع پر آتم عتما بھی کر بیٹھتا ہے ۔ تیسری صورت یه هرائی هے که ریراگیه یعنی دنیا سے دل کا مثنا اور جکیاسا یعنی ملا حق درنوں کمزور عرقی هیں تو یه حالت تهورے دنوں رہ کو اپنے آپ مٹ جاتی ہے آور آدمی دنیا کے دوسرے معمولی آدموں کی طرح چپ چاپ انسانی زندگی کے روزمرہ کے معمولی کامرں میں لگ جانا ہے ، اُدعکتر آدمیوں کی یہی حالت هونی ہے، چوتھی صورت میں اگر جکیاسا

पाबरदस्त होती है, बार बार आदमी को दिक करती है और दव नहीं पाती, अगर जीवन के अन्यायों, बुराइयों और वैइंसाफियों के खिलाफ वह गुस्सा और वह विद्रोह जो इस जिज्ञासा को जन्म देता है दूसरे आद्मियों के साथ सहानुभूति श्रीर द्या का रूप ले लेता है, यानी आदमी का दिल केवल अपने दुखों के कारण नहीं बलिक सबके, मनुष्य मात्र के या प्राणी मात्र के, दुखों के कारण दुनिया से फिरता है तो धीरे धीरे आदमी जिन्दगों के मानी को समकते लगता है. उसके सामने जीवन की एक पूरी फिलासोफी आने लगती है. वह यह जानने लगता है कि मैं कौन हूँ, मैं क्या हूँ, मैं कहाँ से आया हूँ, किथर जा रहा हूँ, क्यों जा रहा हूँ; यह सब दूसरी आत्माएँ कीन हैं, क्या हैं, कहाँ से किधर और क्यों जा रही हैं, यह दिखाई देने वाली दुनिया श्रीर इसका लगातार चक्र क्या है, क्यों है और कैसे चल रहा है, जीवन का निकास कहाँ से है, क्यों है, जीवन का अर्थ क्या है, जीवन का लक्ष्य यानी मक्तसद् क्या है, श्रौर जीवन के सब दुख सुख किस लिए हैं ? यह चौथी हालत तब पैदा होती है जब मनुष्य की आत्मा एक खास दर्जे तक तरक्षकी कर चुकी होती है श्रीर एक खास मुकाम पर पहुँच चुकी होती है. जल्दी या देर में सब रूहें उस मुक्राम पर पहुँचती हैं. यह वह मुक्ताम है जहां पर आदमी अपने स्वार्थ यानी अपनी छोटी ख़ुदी से ऊपर उठकर समक बूक कर परोपकार यानी सबके भले की तरफ मुड़ने लगता है श्रीर फिर लौटकर जीवन का चक्र पूरा करके परम आत्मा यानी रूहे इल में अपने को क्षीन यानी फना कर देने की तरफ बढ़ता ₹.

मैंने अपनी हिन्दी किताब "समन्वय" के आखिरी अध्याय में और अपनी कई अंग्रेजी किताबों, जैसे "दि साइंस आफ पीस " 'भिस्टिक एक्सपीरियेन्सेज" टेल्स फ़ाम योगवसिष्ठ" बरीरह में आत्मा की इस हालत को बिस्तार के साथ बयान किया है.

जिस बीमारी 'डिमेंटिया प्रीकोक्स की मैंने ऊपर चर्चा की है वह अकसर उन नौजवानों को होती है जिन में यह जिज्ञासा अधिक छाटी उमर में और समय से पहले जाग उठती है. कभी कभी यह हालत जियादा बड़ी उमर में भी होती है. नौजवानों को यह अकसर पन्द्रह साल की उमर से लेकर इक्कीस साल की उमर तक होती है जबकि आत्मा और शरीर में नई शक्ति आती है और दोनों एक दूसरे के साथ एक तरह का सममौता करने की कोशिश करते हैं.

आजकल पिन्छम में जिन्दगी की लगातार कशमकश और भाग विलास के जीवन से थकान और तरह तरह زبردست هوتی هے؛ بار بار آدمی کو دق کرتی هے اور دب نهیں یاتی اگر جهرس کے انہاؤں اور انہاں اور رانصانهوں کے خلف وہ غصہ اور ودروہ جو اس جلیا سا کو جنم دیتا ہے دوسرے آدمیوں کے ساته سهانوبهرتی اور دیا کا روپ لے لیتا هے یعنی آدمی کا دل کیول اینے دکھوں کے کارن ٹہیں بلکہ سب کے منشیہ ماتر کے یا یرانی مانر کے کورن کے کارن دنیا سے پھرتا ہے تو دھیرے دھیرے آدمی زندگی کے معنی کو سنجھنے لگا ہے۔ اُس کے سامنے جیوں کی ایک پوزی فالسفی آلے اکتی ہے ، وہ یہ جاتئے الكتا هے كم ميں كوں هوں' ميں كيا هوں' ميں نہاں سے آيا هوں' ندهر جا رها هرن کهرن جا رها هون یه سب دوسری آنمائین کوں هیں کیا هیں کہاںسے کدھر اور کیوں جارهی هیں کے دکھائی دینے والی دنیا اور اِس کا لگانار چکر کیا هے کیوں هے اور کیسے چل رہا ہے؛ جیوں کا نکلس کہاں سے ہے؛ کیوں ہے؛ جیوں کا ارتم کیا ھے جیوں کا اعشیت یعلی مقصد کیا ہے' اور جنوں کے سب دکھ سکو کس لئے میں ، یہ چوتھی حالت تب پیدا موتی ہے جب منشیه کی آنما ایک خاص درجے نک ترقی کر چکی هوتی هے اور ایک خاص مقام پر پہونیے چکی ہوتی ہے . جادی یا دبر مين سب روهين أس مقام ير يهونجيتي عون . يه ولا مقام هـ جہاں پر آدمی اپنے سوارتھ یعنی اپنی چھوٹی خودی سے أوپر أثيكر سمجه بهجه كر درويكار يعنى سب كے بيلے كى طرف مرتے لکتا ہے اور پھر لوٹ کر جدون کا چکر پورا کر کے پرم آتما یعنی ررح کل میں اپنے کو لین یعنی ننا کر دینے کی طرف بڑھتا ہے ۔

مینے اپنی هندی کتاب ''سمنویئے'' کے آخری ادهیایہ میں اور اپنی کئی انہ بنی کتابوں' جیسے ''دی سائنس آف بیس'' ''مسٹک ایکسپیراینسپز'' ''آئیلس فرام یوگ وسٹٹو'' وفیرہ میں آنما کی اس حالت کو رسٹار کے ساتھ بیاں کیا ہے ۔

جس بیماری 'تیمینتیا پریکوکس' کی میں نے اُرپر چرچا
کی ہے وہ انثر اُن نوجوانوں کو ھوتی ہے جی میں یہ جکیاسا
اُدھک چھوٹی عمر میں اور سے سے پہلے جاگ اُٹھتی ہے ۔ کبھی
کبھی یہ حالت زیادہ ہتی عمر میں بھی ھوتی ہے ۔ نوجوانوں
کو یہ اکثر پندرہ سال کی عمو سے لیکر اکیس سال کی عمر تک
ھوتی ہے جبکہ آتما اور شریر میں نئی شکتی آتی ہے اور دونوں
ایک دوسرے کے ساتھ ایک طرح کا سمجھوتہ کرنے کی کوشش
کرتے ھیں ۔

آجکل پنچھم میں زندگی کی لگاتار کشمکش اور بھرگ رالس کے جیرن سے تھکان اور طرح طرح

روح يا أنما جب بالغ هول التلى في

के विचारों की टक्करों के कारण कुछ लोगों में यह जलामतें जूब बढ़ जाती हैं. यूग्प में इसपर तरह तरह का बहुत सा साहित्य भी निकल रहा है.

जो आदमी कामयाबी के साथ इस तजरबे में से निकल आता है उसके शरीर और उसकी आत्मा दोनों में क़ुद्रती तौर पर बल आ जाता है. उसकी सूफ बूफ, उसके भाव (जजबात), उसकी संकल्प शक्ति सब बढ़ जाती हैं और इस दुनिया के जिस्मानी और कहानी दोनों तरह के फर्जों को वह दयादा अच्छी तरह पूरा करने लगता है.

वैराग्य (दुनिया से दिल का फिरना) भौर उसके नतीजे

बादमी जब इस दुनिया की जिन्द्गी से थकने लगता है, या उसका दिल फिरने लगता है, या उसमें दुनिया से नकरत पैदा होने लगती है, यानी जब उसमें वैराग्य पैदा होने लगता है, तो उसकी कई सूरतें हो सकती हैं. पहली सरत में यह वैराग्य महज अंधेपन, जहालत और काहिली से पैदा होता है. इस तरह का वैराग्य 'तामस वैराग्य' कह-लाता है. दूसरी सूरत में यही वैराग्य काम, क्रोध, ख़ुदी, अहंकार और बेचैनी से पैदा होता है. ऐसी सूरत में वह 'राजस वैराग्य' कहलाता है. इसी तरह के रालत वैराग्य से आदमी कभी कभी आत्मघात यानी खुदकुशी भी कर बैठता है. उसकी दुखी आत्मा को जिस जिस्म के जरिए से दुख पहुँचता है उसे वह खत्म कर देता है. वह यह भूल जाता है कि दुख की जड़ जिस्म नहीं हैं. दुख की जड़ उसके श्रंदर की श्रविद्या यानी नादानी है, उसके मूठे खयाल हैं, ग़लत विश्वास या अकीरे हैं. दुख या नलेश की जड़ उसके अंदर है, बाहर नहीं हैं. इसी अन्दर की जड़ ने ही अपने को जाहिर करने के लिए बाहर के जिस्म की भी रूप दिया है. इस बाहर के रूप को मिटा देने से अंदर की जड़ नहीं जाग सकती और जब तक आत्मा उस अन्दर की जड़ को नहीं सममे और पहचाने और उसका इलाज नहीं करे वह अन्दर की जड़ बार बार इस तरह के नए नए जिस्स बनाती रहेगी.

लेकिन तीसरी सूरत में अगर वैराग्य यानी दुनिया से दिल का फिरना 'सात्विक' है यानी साच सममकर है और सब के भले की इच्छा उसमें शामिल है तो उसके साथ दुनिया के दुखों का कारण और उसका इलाज ढूँढने की एक जबरदस्त जिक्कासा यानी तलाश होती है. उसके साथ वह विवेक होता है जो नित्य और अनित्य यानी गैरफानी और फानी, सत्य और असत्य यानी हक और बातिल में तमीज कर सकता है. उसी के साथ आदमी में वह नेकियां जागती हैं जिन्हें ईसाई धर्म में 'सात अमर नेकियां'—श्रद्धा (ईमान), आशा (उम्मीद), द्या, न्याय, सममदारी, परहेजगारी और

کے وچاروں کی ٹادوں کے کاون کچھ لوگوں میں یہ علامتیں خوب ہود جاتی ہیں ۔ یورپ میں اِس پر طرح طرح کا بہت سا سامتیہ بھی نکل رہا ہے ۔

جو آدمی کامیابی کے ساتھ اِس تعجریے میں سے نکل آتا ہے اُس کے شریر اور اُس کی آسا دونوں میں قدرتی طور پر بل اُجاتا ہے، اُس کی سوجھ بوجھ' اُس کے بیاؤ ( جذبات )' اُس کی سنکلپ شکتی سب بڑھ جاتی ھیں اور اِس دانھا کے جسمانی اُور روحانی دونوں طرح کے فرضوں کو وہ زیادہ اُچھی طرح پورا کرنے لکتا ہے .

# ویراگیت ( دنیا سے دل کا پھرنا ) اور اُس کے نترجے

آدمی جب اِس دلیا کی زندگی سے تھنے لکتا ہے یا اُس كا دل يهرني لكنا هـ؛ يا أس مين دنيا سے نفرت پيدا هونے لكتى ها يعلى جب أس مين ويراكيه يهدا هوني لكنا ها تو أس كي کئی صورتهن هوسکتی هین. پہلی صورت مهن یه ریراگیه منعض اندھیں جہالت اور کلفلی سے بیدا ہوتا ہے ، اِس طوح کا ويراكيه أتاه س ويراكيه كهلانا هـ، دوسري صورت مين يه ويراكيه كلم كروده خودي الهنكار اور بينچيني سے بيدا هوتا هے . ايسي صورت میں وہ اراجس ویراکیه کہلانا هے. اِسی طرح کے غلط وبراکیت سے آدمی کبھی کبھی آنمگھات یعنی خودکشی بھی کر ہیٹہتا ہے۔ اُس کی دکھی آنیا کو جس جسم کے ڈریعہ سے دکھ پہرنچتا ہے اُسے وہ ختم کردیتا ہے، وہ یہ بھرل جاتا ہے که دکھ کی جو جسم نہیں ہے . دکھ کی جو اُس کے اندر کی اودیا یمنی نادانی هے' اس کے جهرائه خیال هیں' غلط وشواس یا عقیدے نیں ، دکھ یا کلیس کی جز اُس کے اندر ہے اُ ہلمر مهيں هے . اِس اندر كى جر نے هى أينے كو ظهر كرنے كے للم ہاءر کے جسم کو بھی روپ دیا ھے . اِس باھر کے روپ کو مقا دینے سے اندر کی جو نہیں جاک سکتی اُور جب نک آنما اُس اندر کی جو کو نہیں سمجھ اُور پہچانے اُور اُس کا عالج المهين كورم ولا اندر كي جر بار بار اس طرح كے دام فائم جسم بناتی رهینگی .

لهكن تيسرى صورت ميں اگر ويراگهة يعنى دنها سے دل كا بهرنا 'سانوک' هے يعنى سوچ سمجهمر هے اور سب كے بيلے كى الجها أس ميں شا، ل هے تو أس كے ساتھ دنها كے دكهوں كا كارن اور أس كا علاج دّهوندنے كى ايك زبردست جكياسا يعلى تلاش موتى هے أس كے سانه ولا وريك هوتا هے جو نتهة اور انتهة يعنى حتى اور انتهة يعنى حتى اور انتهة يعنى حتى اور انتها ميں تميز كرسكتا هے اسى كے ساتھ آدمى ميں ولا تيكياں باطل ميں تميز كرسكتا هے اسى كے ساتھ آدمى ميں ولا تيكياں جاكتى هيں جنهيں عيسائى دهرم ميں 'سات امر تيكياں' شادرنان)' أشا (أميد) ديا' نيائے' سمجهداری' پرهيزگارى اور شردها (ايمان)' أشا (أميد) ديا' نيائے' سمجهداری' پرهيزگارى اور

धीरज-कहा गया है. इन्हीं को वेदानत में 'उन्नति के बै रास्ते' कहा गया है. वेदान्त में इनके नाम शम, दम, अपरित, तितीक्षा, श्रद्धा और समाधान हैं. बात वही है, केवल शब्द अलग अलग हैं. यह छै या सात नेकियां उन बुराइयों की दुश्मन हैं जिन्हें वेदान्त में 'शहरिपु' यानी 'छै दुश्मन' कहा गया है. यह है हैं-काम, कांध, लोभ, मोह, मद और मत्सर (इसद). इन्जील में इन्हीं को 'सात मुहलिक गुनाह' कहकर बयान किया गया है. बात वही है. इसके साथ साथ इस तीसरी सूरत में आदमी में नजात यानी मुक्ति की जबरदस्त इच्छा होती है. यह इच्छा केवल अपने ही लिये नहीं होती सब के लिये होती है. आद्मी की आत्मा चाहती है कि दुनिया की सब आत्माएं दुख और मौत के डर से छूट जावें. यह बर ही सब दुखों की जड़ है. इस जिज्ञासा की हालत में आदमी अपने अन्दर एक बेहतमीनानी पाता है, वह समकता है कि वह किसी ग़ैर यानी अपने से बाहर की किसी चीज के सहारे जी रहा है. उसे अपने अमर यानी रीरफानी होने में शक होता है. जब आदमी के अन्दर यह हालत होती है यानी इस तरह का 'सात्विक वैराग्य' जोर करता है तब धीरे धीरे आदमी की अन्दर की आंखें खलती हैं. उसे आत्म बोध होता है, सच्ची विद्या, प्रज्ञान, यानी मार्फत इसमें जागती है. वह देखता है कि एक ही आत्मा, एक ही रुहेकुत सब जगह और सबके अन्दर रमी हुई है. बही है, और सब घोला है, गैरियत का मिट जाना ही सक्वे ज्ञान का डासिल होना है. यही इल्मेरुहानी है. तब आदमी इस शुद्ध चेतनता की दुनिया के वजूद को महसूस करता है जिसके अन्दर यह सारी जड़ यानी माही दुनिया समाई हुई है. उसे अपने अमर होने का विश्वास हो जाता है. वह भारमा को भारम निर्भर यानी रानी पाता है, सबके अन्दर एक ही आत्मा देखने लगता है. इस मुकाम पर पहुँचकर अविज्ञा यानी जहालत का नाश हो जाता है. तब आदमी इस धोखे से ऊपर उठ जाता है कि मैं केवल एक मिट्टी का लोंदा या हाइ, मांस, जुन का यह नाशमान शरीर हूँ, खदी या आहंकार जाता रहता है. यह मुकाम भी एक तरह की श्वात्महत्या यानी खद्कुशी का मुकाम है. लेकिन जो आपा या जो .खुदी इस जगह पर पहुँचकर भरती है वह अपनी छोटी मूटी .खुदी है, वह भेद भाव या अहंकार है जो विद्या यानी सच्चे झान के सामने नहीं उहर सकता. तब बादमी सममता है कि उसके सारे दुखों की जढ़ यही सादी या ऋहं कार था, यह ऊपर का शरीर दुखों की जढ़ नहीं है. इसी हालत को 'दिन्य दर्शन' कहते हैं. तब आदमी देखता है कि सब जीव-आत्माओं के अन्दर एक ही आत्मा है. वही परम-आत्मा यानी रूहेकुल है, वही मैं हूँ, वही सब हैं. इसे 'झभेद भाव' कहते हैं. इस हालत को पहुँचने

دميرم سكها گيا ه . إنهين كو ريدانت مين التعي کے چھ راستے کہا گیا ہے۔ ویدانت میں اِن کے نام شم دم البرتي و تتهكشا شردها أور سمادهان هين. بات وهيه فيرل عبد الک انگ میں ۔ یہ چھ یا سات نیکیاں اُن برائیوں کی دشمن هين جنهين ويدانت مين اشتربوا بعلى الجه دشمن كها كها هم يه چه ههى -- كام كروده لوبه موه مد أور مسر (حسد). اِنجيل مين اِنهين او 'سات مهلک گناه' کهام بیان کیا گیا ہے ، بات وعی ہے ۔ اِس کے ساتھ سانھ اُس تیسری مرت میں آدمی میں نجات یعنی معنی کی زبردست اچھا ھوتی ھے ، یہ اِچھا کیول اُپنے ہی لئے نہیں ہوتی سب کے لئے مرتی ہے. آدمی کی آتما چاہتی ہے که دنیا کی سب آنمائیں دکھ اور موت کے قر سے چھوٹ جاویں ، یہ قر ھی سب دکھوں كي جر هـ. إس جكياسا كي حالت مين أدمي أيني أندر ايك مِ اطميناني ياتا هـ؛ وه سمجها ف كه وه كسى غير يعلى أين سه باهر کی چین کے سہارے جی رها ہے . أے اپنے امر يعني غير فائی مولے میں شک موتا ہے ، جب آدمی کے احر یہ حالت هوتی هے یعنی اِس طرح کا اساتوک ویراکیم، زور کرتا هے تب دهیرے دهیرے آدمی کی اندر کی آنکہیں کیائی هیں . اسے أَمْم بُودِه هوتاً هَا سَدِي وديا بركيان على معرفت أس مهن جاگئی ہے ، ولا دیکھتا ہے کہ آیک ھی آسا<sup>،</sup> ایک ھی روح کل سب جکہ اور سب کے اندر رمی ہوئی ہے ، وھی ہے، اور سب دهوكا هي . غيريت كا مث جانا هي سجع كيان كا حاصل هونا ھے. یہی علم روحانی ھے، تب آدمی اس شدھ چیتنا کی دنیا کے وجود کو محسوس کرتا ہے جس کے اندر یہ ساری جو يعنى مادى دنيا سمائي هوئي ه . أسه ايني امر هول كا وشواس هوجاتا هے ، وہ أتما كو أنم نويور يعنى غنى بادا هے؛ سب كے أسر ایک هی آسا دیمهنے لکنا هے اِس مقام پر پهرنیم در ارکیا يعلى جَهالت كا ناش هوجانا هي . تب أدمي إس دهوج سے أوير أيَّه جانا هي كه مين كيول أيك مقي كا لونداً يا عاراً مادس" خون كا يه ناشدان شرير هون . خودي يا أملكار جانا رهنا هي . يه مقام بهي أيك طرح كي أمهتيا يعني خودكشي كا مقام هه . ليكن جو آيا يا جو حودي اِس جاء پر پهونچار مرتى هے ولا أبنى چهرتى جهرتى حردى كئ وة بهدد بهاؤ يا أهنكار ه جو ودیا یعنی سجے گیاں کے سامنے نہیں ٹھھر سکتا، تب آدمی سمجہتا ہے کہ اُس کے سارے داہرں کی جر یہی خودی یا اھنکار تھا یہ اُور کا شریر دکھرں کی جز نہوں ہے ، اِسی حالت نو دريه دردن كهتم هيل . تب أدمى ديهما ھے کہ سب جہراتماؤں کے اندر ایک ھی آنما ھے. وہ پرم آتما یعنی روح کل ہے وہی میں ہوں وہی سب هيل أيس البهد بهاؤ كهتم هيل أس حالت كو بهوندونم

روح يا أننا جب أبالغ هولے لكتي هے

का नाम ही मोश्च है. यहां पहुँचकर हर तरह का हर खीर दुख इमेशा के ज़िये जाता रहता है. क्लेश मिट जाता है. इसीलिये इसे 'निर्वाण' भी कहते हैं. मैं मैं हूँ और तुम तुम हो, मैं तुम से अलग हूँ, मेरा हित, मेरी इच्छाएं, मेरा जीवन, मेरी भलाई तुम्हारे और और सब के हितों, इच्छाओं, जीवन और भलाई से अलग है. यह सब रालत फहिमयां तब मिट जाती हैं. आत्मा एक नये तरह के आनन्द से भर जाती है. जिस में उसे सब दूसरों के साथ एकता, कैवल्य और बहदत महसूस होती है. सब एक हैं. सब मैं हूँ, सब मुम से हैं. मैं ही विश्व हूँ. सब मुम में हैं और मैं सब में हूँ, कोई रीर है ही नहीं. अहमेवसर्वः.

इंगलैंग्ड के मशहूर कवि शैले ने कहा है :--

"बादलों को, इन्द्र धनुष को और फूलों को मैं ही अलीकिक रंग देता हूँ,

"चाँद का गोला और चमकते हुए तारे, अनन्त आकाश के अन्दर मेरी ही शक्ति से चमक रहे हैं,

"मैंने ही उन्हें यह सुन्दर लिबास पहनाया है,

"जमीन पर जितने दिये जल रहे हैं और आसमान पर जितनी रोशनियां चमक रही हैं,

"सब एक ही शक्ति के अंग हैं और वह शक्ति मेरी शक्ति है,

"मैं वह आंख हूँ जिसके जरिये से विश्व अपने को देखता है और अपने ईश्वरीय होने को पहचानता है.

"सारे राग रागनियां, सारे बाजे, स्नारी कविता, सब पेशीनगोइयाँ, सब द्वाएं, मेरी ही हैं.

"कला और प्रकृति की सारी रोशनी मैं ही हूँ. "सब विजय और सारी तारीक का हक़दार "मेरा ही गीत है."

योगवसिष्ठ में लिखा है :--

"यह सब समुद्र श्रीर पहाड़ श्रीर यह सब ब्रह्मांड (यानी श्रासमान के गांले), इस तरतीब में सजे हुए, यह सब केवल मेरे श्रन्त:करण यानी मेरी जमीर के टुकड़े हैं जो बाहर दिखाई दे रहे हैं. यह सब मेरे बेश्चन्त बजूद के अन्दर हैं."

ईरानी सूकी कहता है :-

"बजूद के इस समन्दर में एक ही मोती है और वह मोती है खुद-रानासी यानी अपने को पहचानना. हम सब अपने ही चारों तरफ हवा के बवंडर या पानी के मंबर की सरह चक्कर खाते रहते हैं." کا فام هی موکش هے یہاں پہونچکر هر طرح کا تر اور دکم همیشتہ کے لئے جانا رهنا هے کلیش مت جانا تھی کہتے هیں . میں میں هر اور تم تم هو میں تم سے الگ هر میرا هت میری اچھائیں میرا جیری میری بھائی تمہارے اور اور سب میری اچھائیں جیوان اور بھائی سے الگ هی یہ سب کے هنری اچھائی تب الگ هی یہ سب غلط فہمیاں تب اش جاتی هیں . انما ایک فئی طرح کے اللہ سے بھر جاتی هی جس میں آسے سب دوسروں کے ساتم ایکا کیولیہ اور وحدت محسوس هوتی هے . سب ایک هیں . ایکا کیولیہ اور وحدت محسوس هوتی هے . سب ایک هیں . ایکا کیولیہ اور وحدت محسوس هوتی هے . سب ایک هیں . سب میں هی وشو هوں . سب میں هی وشو هوں . سب میں هیں ور وہ هی سب میں اور میں سب میں هر کوئی غور هے هی سب مجم میں هیں اور میں سب میں هر کوئی غور هے هی

اِنگلینڈ کے مشہور کوی شیلے نے کہا ہے:۔۔۔ ''بادلوں دو' اندردھنھی کو اُرر پھولوں کو میں ہی الوکک رنگ دیتا ھیں'

"چاند کا گولا اور چمکتے ہوئے تاریے' اللات آکاش کے اندر میری ہی شکتی سے چمک رہے ہیں'

''میں نے ھی اُنھیں یہ سند لبلس پہنایا ہے ، ''زمین پر جننے دیئے جل رہے سیں اور اُسمان پر جتنی روشنیاں چمک رھی ھیں'

''سب ایک هی شکتی کے انگ هیں اور وہ شکتی میری شکتی میری شکتی هے'

المیں وہ آنکہ موں جس کے ذریعہ سے وشو آپنے کو دیکھنا ہے اور اپنے ایشوریہ مونے کو بہنچانتا ہے .

"سارے راگ راگنیاں سارے باچے ساری کویتا سب پیشینگوئیاں سب دوائیں ، یری هی هیں .

الله اور پرکرتی کی ساری روشنی میں هی هوں -

وسب وجئے اور ساری معریف کا حقدار

"ميرا شيگيت هے."

يوك واستة مين المها هے:

'نیم سبسمندر آور پہار اور یہ سب برهماند ( یعنی آسمان کے گولے )' اِس ترتیب میں سجے هوئے هیں' یه سب کیول میرے انتمکون یعنی میری ضمیر کے تُکرَے هیں جو باهر دکیائی دیے رقے هیں ، یه سب میرے بےانت رجود کے اندر هیں ."

ایرائی صوفی کہتا ہے:--

''وجوں کے اِس سمندر میں ایک هی موتی هے اُور وہ موتی هے اُور وہ موتی هے اُور وہ موتی هے اُور وہ موتی هے خودشناسی یعنی اُپنے کو پہنچائنا ، هم سب اُپنے هی چاروں طوف هوا کے بوئڈر یا پائی کے بهنور کی طوح چوکو کہاتے رہتے هیں ۔''

शत के एक हिन्दुस्तानी कवि ने कहा है:—
"तुही है मतत्वे जुमला तालिब,
"तुही है मकसूरे जुमला बालम,
"तुमी से नगमा है बुलबुलों में.
"तुमी से खुशबू गुलाब में है."

व्यक्तिवाद (इनफ़रादियत) और समाजवाद (सोशल-इज़्म) के रूहानी पहल्व.

यह अभेद बुद्धि यानी यगानगत और बहद्दत का ख्याल दुनिया के लिये कितनी बढ़ी बरकत हो सकता है इसका अन्दाजा हर चलता फिरता आदमी इस बात से सगा सकता है कि इसके ठीक ख़िलाक जो भेद भाव यानी हुई और रौरियत का ख्याल, अपने और पराए का खयाल, इस समय दुनिया में बढ़ता जा रहा है उसके नतीजे इन्सानी समाज के लिये कितने हरावने और कितने भयंकर दिखाई दे रहे हैं:-- अलग भलग नसलें, अलग अलग राष्ट्र, अलग अलग जमाधतें, अलग अलग पार्टियां, अलग अलग धर्म और सम्प्रदायें, काले और गोरे अलग अलग, यहां तक कि मर्द और औरत अलग अलग, और इससे भी बढ़कर जवान और बुढ़े अलग अलग, हालांकि खुली बाँखों से दिखाई देता है कि वही आदमी जो आज जवान है कल पूढ़ा हो जाता है. इन भेद भावों से जो नतीजे पैदा हाते हैं बह न्यापारी लड़ाइयों, तरह तरह के हथियारों की लड़ाइयों, महामारियों, वबात्रों, समाजी उथल पुथल, बेकारी, बेरोजगारी, अकाल और करोड़ों इन्सानों को चौबीस घन्टे में एक बार भी पेट भर खाना न मिल सकने की सूरतों में हमें दिखाई दे रहे हैं. इतिहास के लगभग हर युग में और हर जमाने में दुनिया के लोग इन मुसीबतों में मुबतिला रहे हैं, कभी कुछ कम और कभी कुछ क्यादा. बीसवीं सदी के शुरू से आदमी की यह सब मुसीबतें और भी अधिक बढ़ी हुई मालूम हो रही हैं. इसका कारण यह भी है कि आने जाने के साधनों के अधिक बढ़ जाने और आदमी के दिमारा के ज्यादा तेज हो जाने के कारण आदमी की खुदी और उसका अहंकार और भी बढ़ गए हैं, आज चारों तरफ व्यक्तिवाद यानी इनफरादियत का बोल बाला दिखाई देता है.

यह भी क़ुद्रत का एक अजीब खेल है. इससे मालूम होता है कि दुई या ग़ैरियत आदमी के अन्दर कितनी घुसी हुई है. चाहिये यह था कि आने जाने के साधनों के बढ़ने के साथ साथ दुनिया की क़ौमें एक दूसरे के और निकट حال کے یک هادستانی کہی نے کہا ہے:۔۔
''تو هی ہے مطارب جمله طالب'
''تو هی ہے مقصود جمله عالم'
''تجھی سے نعمہ ہے بلبلوں میں'
''نجھی سے نعمہ ہے بلبلوں میں'
''نجھی سے خوشبو گلاب میں ہے۔''

# ریکتی واد ( اِنفرادیت ) اور سماج واد ( سرشلزم ) کے روحانی پہلو

یہ اُبھید بدھی یعنی یکانکت اور وحدت کا خیال دنیا کے لٹے كتني يجي بركت هوسكتا هي إس كا أندأزه هر جلتا يهرتا أدم إس بات سے لگا سکتا ہے کہ اِس کے تھیک خالف جو بھید بھاؤ یعنی دوئي أور غيريت كا خيال ايني أور يرائم كا خيال إس سم دنیا میں بڑھتا جا رہا اُس کے نتیجے اِنسانیسیاج کے لئے کتنے قرارنے اور کتنے بھینمر دنھائیدے رہے میں: الگ آلک نسلیں الك الك راشترا الك الك جماعتين الك الك يارتيان ا الک انگ دهرم اور سمهردانیم، کالے اور کورے الک الک، یہاں تک کہ مرد اور عورت الگ الگ' اور اِس سے بھی ہوھمر جوان اور بورهے الگ الگ، حالانکه کیلی آنکھوں سے دکھائی دينا هے كه وهي أدمي جو آج جوان هے كل بورها هوجنا هے . اِن بهيد بهاؤن سے جو نتيجے پيدا هوتے «بهن وه وياپاري لوائيون" طرح طرح کے ھتھاروں کی لزائھوں' مہاماریوں' وہاؤں' سماجی أتهل پتهل ٔ بهکاری ٔ بهروزگاری اکال اور کروژوں اِنسانس کو چوبیس گھنٹے میں ایکبار بھی بیت بهر کھانا نہ مل سکنے کی صورتین میں عمیں دکھائی دے رہے میں، اِتہاس کے لگ بھگ ھر یک میں اور ھر زمانے میں دنیا کے اوگ اِن مصیبتوں میں مبتلا رہے ھیں' کبھی کچھ کم اُور کبھی کچھ زیادہ ، بیسویں صدی کے شروع سے آدسی کی یہ سب مصیبتیں اور بھی ادھک برهی هرئی معلوم هو رهی ههی. اِس کا کارن یه بهی هے که آلے جالے کے سادھنیں کے ادھک بڑھ جانے اور آدمی کے دماغ کے زیادہ تدر موجائے کے کارن آدمی کی خودی اور اُس کا اهنگار اور بھی برَه کُلَّه هیں . آج چاروں طرف ویکٹی واد یعنی انفرادیت کا بول بالا دكهائي ديتا هـ .

یہ بھی قدرت کا ایک عجهب کھیل ہے ۔ اِس سے معلوم ہوتا ہے کہ دوئی یا غیریت آدمی کے اندر کتلی گھسی ہوئی ہے ۔ چاہئے کے سادھنوں کے بڑھتے کے ساتھ ساتھ دنیا کی قومیں ایک دوسرے کے اور قعت

मतलूबे जुमला तालिब = सब खोजियों के खोज की बीज; मक्रसूदे जुमला आलम = सारी दुनिया का लक्ष्य; नरामा = राग.

مطلوب جمله طانب سسب کهوجوں کے کهوج کی چیز؛ مقصود جمله عالم = ساری دنیا کا تعشیم؛ نیمه = راگ .

ررے یا آئما جب بالغ ہوئے لکٹی ہے

आवीं, एक प्रेम होर में बंध सकतीं. उनमें एक दूसरे से एकता और बहदत का क्याल बहता. यही 'कम्युनिक्म' का मतलब है. 'कामनवेल्ध' का कोई खड्डा अर्थ हो सकता है तो वह भी यही है. सच्चा और खड्डा 'समाज बाद' भी यही है. लेकिन इसके खिलाफ हुआ यह कि व्यक्ति बाद और खला मलग राष्ट्र बाद और खिल क दहा, जिस से एक दूसरे में अविश्वास, हर और नकरत और अधिक भयंकर जंगों की सम्भावना भी बढ़ी.

साइन्स आदमी को रुहेकुल की एक बहुत बड़ी देन है. साइन्स की इस अद्भुत और अनोखी एलति से और नई नई ईजादों से होना यह चाहिये था कि सब आदिमयों की जिन्दगी जियादा खशहाल, जियादा माला माल और जियादा भरपूर दिखाई देती. इसके बजाय हुआ यह कि साइंस स्पीर उसकी ईजारें शैतानियत की गुलाम बनकर साम्राज्यवाद, युद्धवाद और धन लोलुपता के नारकीय मत-नवोंको पूरा करने के लिए भीजारों का काम दे रही हैं. अमेजी की एक कहाबत है कि 'आदमी तजवीज करता है और ईश्वर फैसला करता है.' आज हो यह रहा है कि ईश्वर तजवीज करता है स्त्रीर शैतान कैसला करता है ! यही कारण है कि फरिश्तों का उस्ताद (शैतान) सारी बुराइयों की जद हो जाता है. देवता भीर दैत्य एक दूसरे के सीतेले भाई हैं. माजूम होता है कि दुनिया के इस नाटक की, इस लीला को, पूरा करने के लिए स्वार्थ और परमार्थ, खुदी और खुदा, फरिश्ते और शैतान, देवता और राक्षस दानों की एक बराबर जरूरत होती है.

दूसरों के दुखों को अपना दुख सममना, उसके साथ इमद्दी, सहानुभूति, अनुकंपा या द्या महसूस करना, धनके साथ अपनापन अनुभव करना, किसी को रौर न सममना, यह सममना कि मेरा जीवन या मेरा नका नुक-सान किसी दूसरे के जीवन या किसी दूसरे के नके नुक्रसान से अलग नहीं है, हम सब एक दूसरे में बँधे हुए हैं, हरेक की भलाई में सबकी भलाई है, इरेक की बुराई में सबकी बुराई, यह बात आदमी के अंदर पहले एक क़ुद्रती ढग से इसके दिल से पैदा हाती है और फिर धीरे धीरे वह इसे जानने लगता है और उसके सब काम इसी के रंग में रंग जाते हैं. यही है सबके अंदर एक आत्मा यानी एक बिश्व भारमा को भन्नभव करना. इसी विश्वात्मा के चारों तरफ सारा जीवन, सारा जगत, एक एक एटम, एक एक चाँद और तारा, हमारे फेफड़ों के अंदर का सांस, हमारे रगों के अंदर का खून और क़दरत के सारे जहूर साक घूमते हुए, चक्कर लगाते हुए दिखाई देते हैं. दुनिया की सारी दुई, सारी रीरियत, सारे विरोध और मुखालकत यहाँ आकर मिट जाते हैं. सब एक हो जाते हैं, सब अपने हो जाते हैं, इसी का नाम सालिक वैरान्य है, यानी दुनिया के जुल्मों,

آتیں' ایک پریم تور میں بادھ سکتیں ۔ اُن میں ایک دوسرے سے ایکنا اور وحدت کا خیال بڑھتا ۔ یہی 'کمیونوم' کا مطلب ہے ۔ 'کامنوبلتہ' کا کوئی (چہا ارتہ ہو سکتا ہے تو وہ بھی یہی ہے ۔ سچا اور اچہا 'سماےواد' بھی یہی ہے ۔ لیکن اِس کے خلاف ہوا یہ که ویکتی واد اور انگ انگ راشتر واد اور ادھک بڑھا' جس سے ایک دوسرے میں اوشواس' تر اور تغرت اور ادھک بھیلکر جلکوں کی سمبھاؤنا بھی بڑھی .

سائلس آدمی کو روح کل کی ایک بہت ہوی دین ہے .
سائلس کی اِس ادببت اور انوکھی اُنتٹی سے اور نئی نئی
ایجادوں سے ھونا پہ چاھئے تھا که سب آدمیوں کی وتدگی
زیادہ خوشحال ویادہ سالا سال اور زیادہ بھرپور دکھائی دیئی ویادہ خوشحال ویادہ سائنس اور اُس کی ایجادیں شیطانیت
کی غلم بن کر سامراجیتواں بدھ واد اور دھی لواپتا کے دارکیت
مطابوں کو پورا کرنے کے لئے اوزاروں کا کام دے رھی ھیں ،
انگریزی کی ایک، کہاوت ہے کہ 'آدمی تجویز کرتا ہے اور ایشور نجویز کرتا ہے اور ایشور شیطان نیصلہ کرتا ہے اور ایشور شیطان نیصلہ کرتا ہے ! یہی کاری ہے کہ فرشتری کا اُستاد شیطان نیصلہ کرتا ہے ! یہی کاری ہے کہ فرشتری کا اُستاد دیتھا ایک دوسرے کے سونیلے بھائی ھیں ، معلوم ھونا ہے کہ دیتھا ایک دوسرے کے سونیلے بھائی ھیں ، معلوم ھونا ہے کہ دیتھا کو اِس ناتک کو اِس لیلا کو پررا کرنے کے لئے سورانھ اور دیتھا کو اِس ناتک کو اِس لیلا کو پررا کرنے کے لئے سورانھ اور دونوں کی ایک برا رو ضورت ھوتی ہے ۔

دوسروں کے دکھرں کو اپنا دکھ سمجھنا' اُن کے ساتھ همدردی' سهانوبهوتی الوکمها یا دیا محسوس کرنا اُن کے ساتھ اپناہی انوبھو كرنا كسي كو غير نه سمجهنا يه سمجهنا كه ميرا جيرن يا ميرا نغم انگ نہیں ہے، هم نقصان کسی دوسرے کے جیرن یا کسی دوسرے کے تنعرنقصان معسب ایک درسرے میں بندھ ہوئے ہیں ایک کی بیلانی مرس سبکی بهائی هے هر آیک کی برائی میں سب کی برائی ہے، یہ بات آدمی کے اندر پہلے ایک درتی دھنگ سے اس کے دل سے پیدا ہؤتی ہے اور بھر دھیرے دعورے وہ اِسے جالئے لکتا ہے اور اُس کے سب کام اِسی کے رنگ میں رنگ جاتے مهن، یہی ہے سبکے اندر ایک آنما یعلی ایک وشوآنما کو انوبھو کرنا ، اِسی وشواتما کے چاروں طرف سارا جیووں ' سارا جات ایک ایک ایٹم' ایک ایک جاند اور تارا' همارے بیپورس کے اندر کی سائس' ہمارے رگوں کے اندر کا خون اُور قدرت کے سارے ظهرر صاف گهرمتم هرئه' چکر لگاتے هوئے دکھائی دیتے هیں ۔ دنیا کی ساری درئی' ساری غیریت' سارنے ورودھ اور متخالفت یہاں أكر مع جانے هيں . سب ايك هو جاتے هيں سب اينے هو جاتے میں ایسی کا نام ساتوک ریراگید هے یعنی دنیا کے ظلموں

(309)

अन्यायों, ऊँच नीच और दुखों से दिल का फिरना, और अपने अंदर यह विश्वास पैदा होना कि मैं इस दुनिया को ठीक करने के लिए ही पैदा हुआ हूँ. इस तरह के विचार और विश्वास के सामने दुनिया का कोई अन्याय नहीं ठहर सकता. इसी का नाम आत्म-प्रकाश या आत्म-बोध यानी रूह का अपने को पहचानना है. एक में पैदा होकर यह रोशनी सबको रोशन करती रहती है. यही दुनिया की सब धार्मिक किताबों का सार है.

कहा जा सकता है कि आदमी के दिल और दिमारा में इतने बढ़े परिवर्तन की जरूरत क्या है, जीवन के सवालों को हल करने के लिए इसकी जरूरत क्या है ? बात यह है कि कोई बच्चा जब तक कम से कम थोड़ी देर के लिए अपने खिलीनों से हटकर किताब या तख्ती की तरक नहीं सुदेगा तब तक वह श्र, श्रा, इ, ई नहीं सीख सकता. जब तक हम भीर सब चीजों की तरक से अपनी निगाह को हटा कर सूरज की तरफ इस नहीं करेंगे सूरज भी हमें दिखाई नहीं दे सकता.इस दुनिया के धन दौलत को चिपटे रह कर हम ईश्वर का दीदार हासिल नहीं कर सकते. जब तक हमारा दिल और हमारी आँखें इस असार संसार पर लगी हुई हैं, तब तक इम अपने दिलों के अंदर बैठे हुए इस अनंत अस्तित्व, उस बजूदे कुल को कैसे देख सकते हैं ? हमारे दिल अगर इस दुनिया की चीजों की तरफ लगे हुए हैं तो हमें सच मुच आत्मा की दुनिया की चीजें नहीं दिखाई दे सकतीं. जब बक हम अपनी पूरी शक्ति से, अपने पूरे दिल और दिमारा से अनंत की खोज नहीं करेंगे हम अनंत को नहीं पा सकते. परमञ्चारमा को अपने अंदर बैठाने के लिए हमें अपनी छोटी आत्मा, अपनी खुदी को बाहर निकालना होगा. इजरत ईसा ने कहा है.-- "सत्य यानी हक को देखने के लिए तुम्हें उसी तरह की जिन्दगी बसर करनी होगी. अगर तुम कामिल होना चाहते हो और अनंत जीवन प्राप्त करना चाहते हो तो तुम्हारे पास जो कुछ हो सब दे डालो, जो कुछ है वह रारीबों चौर नादारों में तकसीम कर दो श्रीर मेरे पीछे चले आश्रो."

बुद्ध के दिल में जब तलाशे हक का यह जनून जागा, यह इंश्वरी उन्माद पैदा हुआ ता वो रात के अँधियारे में अपनी बीवी, अपने बच्चे और शाही महल को छोड़कर अपने पिता की राजधानी किपलबस्तु के फाटक से बाहर निकल गए और निकलते समय मुड़कर पीछे की तरफ देखकर अपना दाहिना हाथ उठाकर उन्हों ने गंभीरता के साथ प्रतिक्वा की—"जब तक मैं अपने जैसे दूसरे दुखियों की मदद के लिए जिंदगी और मीत के रहस्य को नहीं जान लूंगा और उस पर काबू हासिल नहीं कर लूंगा तब तक मैं इस फाटक के अंदर लीट कर नहीं आऊँगा." बुद्ध ने उस रहस्य को पा लिया और जो लोग उसे जानने की इच्छा रखते थे उन सबको सिखाया. वह रहस्य (राज) यही अमर

انیایوں' اُرنیج نیپے اور دکھیں سے دل کا پھرنا' اور اپنے اندر یہ وشواس پیدا ہونا کہ میں اِس دنیا کو ٹھیک کرنے کے لئے ہی پیدا ہوا ہوں ۔ اِس طرح کے وچار اور وشواس کے سامنے دنیا کا کوئی انیائے نہیں ٹھیر سکتا ۔ اِسی کا نام آتم پرکاش یا آتم بودہ یمنی روح کا اپنے کو بہتھاننا ہے ۔ ایک میں پیدا ہو کو یہ دوشنی سب کو روشن کرتی رہتی ہے ۔ یہی دنیا کی سب دھارمک کتابوں کا سار ہے .

کہا جا سکتا ہے کہ آدمی کے دل اور دماغ میں اِتنے بڑے پریورتی کی کیا ضرورت ہے، جیرن کے سوالوں کو حل کرنے کے لئے اِس کی ضرورت کیا ہے ؟ بات یہ ہے که کوئی بحجہ جب تک کم سے کم تهوری دیر کے لئے اپنے کھلونوں سے هد کر کتاب يا تنفتلي كي أطرف نهين مريكا تب تك وه أن أنا إنا أي نهين سیکھ سکتا ۔ جب تک ہم اور سب چیزوں کی طرف سے اپنی نگاہ کو علما کو سورے کی طرف رہے تہدی کر ینکے سورے بھی همیں دامائی نہیں دے سکتا ایس دنیا کے دعن دولت کو چھٹے رہ کر هم ایشور کا دیدار حاصل نهیں کر سکتے جب تک همارا دا ، أور هما مي آلكهون إس أسار سنسار ير لكي هوئي هين تب تك هم اپنے دلوں کے آندر بیٹھے ہوئے اُس انتت استتو اُس وجود كلُ كُو كيسية ديكه سكته هيں ﴿ هما عدال أكر اِس دنها كي چیزوں کی طرف لکے دوئے هیں تو همیں سپے میے آنما کی دنیا کی چیزیں نہیں دکھائی دے سکتیں ، جب تک هم اپنی پوری شکتی سے اپنے پورے دال اور دماغ سے انفت کی کھوج نہیں کرینکے ہم انفت کو نہیں یا سکتے ۔ پرماتما کو اپنے اندر بیٹھانے کے لئے ہمیں اپنی چھوڈں أتما ايني خودي فو بالعر فكالنا هوكا . حضرت عيسي في کہا ہے: -- "استیم یعنی حق کو دیکھنے کے لئے تمیوں أسى طرح کی زندگی بسر کرنی موگی ، اگر تم کامل هونا چھتے هو آور اننت جهون يرأبت كرنا چاهة، هو تو تمهار، ياس جو كچه ه سب در قالو جو کچھ کے وہ غربیوں اور فاداروں میں تقسیم کر در اور میرے بیجے چلے آؤ "

برھ کے رہا میں جب تلاص حق کا یہ جنہیں جاگا یہ ایشہریہ آنسان پیدا ہوا تو وہ رات کے اندھیارے میں اپنی بیدی اپنے بچے اور شاھی محتا کو چھوڑ کو اپنے پتا کی راجدھانی کیلوستو کے پھاٹک سے باہر نکل گئے اور نکلتے سے مر کو پیچے کی طرف دیکھ کو اپنا داھنا ھاتھ آتھا کو آنھوں نے گمبھوتا کے ساتھ پرنگیاں کی۔ "جب میں اپنے جیسےدوسرے دکھیوں کی مدد کے لئے زندگی اور موسے کے رهسیه کو نہیں جان لونگا اور آس پر قابو حاصل نہیں کو لونگا قب تک میں اِس پھاٹک کے اندر لونگاکو نہیں آؤنگا ۔" بیدھ نے اُس رہسیه کو یا ایھا اور جو لوگ آسے جانانے کی اچھا رہتے آس میں کو سمھایا ۔ وہ رہسیه (راز) یہی امر

स्वाई है कि सारे दुखों की जब हमारे अपने अंदर है. वह जब इमारी खुदी है, हमारा घहंकार है. वह अब यह वासना या रालत इच्छा है कि मैं अपना प्रालग व्यक्तित्व, अपना अलग वजूद क्रायम रक्खं. दुख की जब यह रालत विश्वास है कि मेरा यह हाड़ मांस का शरीर ही मेरा आपा है. इसी का नाम ऋहंता या ममता है. यह एक रौर कानी सच्चाई है कि हमारे सब दुखों का कारण हम खुद हैं, कोई दसरा नहीं, कोई दूसरा हमें मजबूर नहीं कर सकता, कोई दसरा है ही नहीं, काई अगा, कोई पेटम, हमारी कोई वृत्ति या विचार, हमारे इस देह और इस वित्त के अंदर की कोई चीज ऐसी नहीं है जिसे हम अपना सममते हों और जो तरह तरह के, जगह जगह के और युग युग के अनिगनत शरीरों और अनगिनत दिमारों का जुज या खंग न रह चुकी हो, और जो आयंदा भी वैसे ही अनिगनत रूपें, अनिगनत शरीरों ओर अनगिनत दिमार्गा, रूहों, स्थानों और जमानों में न रहे. इसलिए दुनिया के सब नाम, रूप, सब विचार, सब भाव और सब तजरबे, सब सुख दुख, सब दिसारा और सब शरीर एक ही व्यापक आलमगीर आत्मा से संबंध रखते हैं, सब उसी एक का जहर हैं, और उसी के अंदर यह सब इस तरह रहते और चलते फिरते हैं जैसे एक समंदर के अंदर तरह तरह के बुलबुले, काग, भवर और लहरें.

سنجائی ہے کہ سارے دکھوں کی جج همارے اپنے آئرو ہے یہ جر هماري خودي ها، همارا أهنكار ها ولا جر يه ولسنا يا غلط إجها هے كه سيس أبنا الك ويكتتو أبنا الك وجود قايم ركهور .. دام کے جو یہ غلط وشواس ہے کہ میرا یہ ھار مائس کا شرید هي ميراً أيا هـ البي كا ثام أهمتا يا صمتا هـ يه أيك غير فاني سنجائے کے کہ همارے سب دکھوں کا کارن هم خود هوں کوئے دوسرا نهدن کوئی دوسوا هدین مجبور نهین کر سکتا کوئی دوسوا هی هے كوئي نهين، أنو' كوئي اليتم' هماري كوئي ورتى يا وچار' هماريم إس دبہہ اور اِس جسکے اندر کوئی چیز ایسی نہیں ہے جسے مر اینا سمجیتے موں اور جو طرح طرح کے جگہد جگہد کے اور یک یک کے اثابت شریروں اور انکنت دمانوں کا جز یا انگ نہ رہا چکی ہو' اور جو آبندہ بھی ویسے سی انگنت رویوں انكلت شريرون أور انكت دماغون روحون استهائين اور زمانوں میں تہ رہے ، اِس لیّے دنیا کے سب نام ووپ سب وچار سب بھاؤ اور سبب تعوی ہے حسب سکھ دکھا سب دماغ اور سب شرير ايك على ويايك عالمكهر أتما سے سمبدد ه رکھتے ھیں اسب اُسی ایک کا ظہور ھیں، اور اُسی کے اندر یہ سب اِس طرح رہتے اور چاتے بھرتے ہیں ج**یسے ای**ک سمندر کے اندر طرح طرح کے بلبلے عہاک بہنور اور لہریں ۔

700 PAGES, 82 ILLUSTRATIONS 2 COLOURED MAPS

## "CHINA TODAY"

PRICE

BY PANDIT SUNDARLAL

Rs. 7. 8. 0

A vivid narration of the glorious and wounderful achievements of New Chins... A picture of China which is both convincing and authentic... the best book that has come out so far on New China in the English language... the most objective in approach and comprehensive in treatment.

—National Herald, Lucknow.

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserves to be widely known

—Leader, Allahabad.

Encolopsedic...characterized by scute observation of details well as by. instinctive grasp of the fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New Chins.

—Blitz, Bombay

A mine of information which gives a picture of China as nothing else dose...the best guide to New. China...Those who would like to understand what is happeing in New China can do not better than to study it.

—Bharat Jyoti, Bombay

The wealth of information it gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs.

—Indian Express, Madras

China Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarial's) shrewd understanding of men and matter... brings to the lighty mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations for a tomorrow which is theirs.

—Vigil, Delhi.

# दो समंदरों का संगम और सचाई का प्रकाश

# دو سیندروں کا سنگم اور سیجائی کا پرکاش

साक्टर ताराचंद

ةاكثر تارا چند

داراشکولا کو بھارت کے ویدالت اور اِسلام کے صوفی مت دونوں سے گہرا پریم تھا۔ ستیہ کی تھرج کا مادہ آسے اپنے پوروجوں سے وراثت میں ملا تھا ، سب دھرموں کو جانئے اور سمجھنے کی اِچہا اُس میں ٹھیک ریسی ھی تھی جیسی اُس کے پردادا سنوات اکبر میں. پر ایک بہت ہوا فرق یه تها که سموات اكبر ألهره تها أور داراشكوه هندو دهارمك ساهتيه أور مسلم ممار*مک* ساهتیه درنون کا پیرا ردوان تها . صرفی کتابون کو اُس نے خوب یوھ رکھا تھا ، بڑے بڑے مسامان سنتیں اور صوفیوں کی اُس نے جیرنیاں لکھی تھیں اور پنچاس آینشدوں کا اُس نے سلسكرت سے فارسى ميں أفواد كيا تھا . إس طرح صوني مت اور ویدانت کی تلفا وہ خوب کرسکتا تھا ۔ اِس وشئے پر اُس لے المجمع البحويي" فام كي أيك كتاب لكهي ، مجمع البحرين كي معلى هين ادو سمندرون كا سنكم ؛ يه أموليه كرنته دونين دھرموں کی سجائی کے بارے میں داراشکوہ کی کھرے کا نتیجہ هے ، وہ ایس نتیجے یر بہونیجا تھا که هندو دهرم اور اِسلام دونوں لا سار ایک هی هے اور دونوں بنیاداً ایک هیں ۔ اپنے اِس سدھانت کو ٹاپت کرنے کے لئے داراشکوہ نے ویدانت کے گرنتھوں اور صوفی ست کی کتابوں کے اُصولوں کو اِس یستک میں وستار کے ساتھ بدان کیا ہے . اس بستک کو پر عکر کوئی اِنصاف بسند أدمى إس بات سے إنكار نهيں كرسكتا كه داراشكوة كو اپنى بات ثابت کرنے میں یورو کامیابی ملی ہے ،

ادهیاتم ودیا (عام روحائی) ایک گهرے اور اندهیوت مسئور کی طرح هے، آسسمندر کی سطح پر طونائوں اندهیوں چاند کی کشش اور اِس برهمانت کی دوسری شکتیوں کے اثر سے طرح طرح کی شکلیں بنتی اور پل پل پر بدلتی اور بکرتی رعتی هیں ایکن آن الگ الگ شکاوں کے نیچے گهرائی میں اُور کی جھاگ آگانے والی ابلاوں سے دورا شانت جل دھارائیں ایک دوسرے میں ملتی اور ایک هرتی رهتی هیں، ادهیاتم ودیا یک درسوے میں ملتی اور ایک هرتی رهتی هیں، ادهیاتم ودیا علی ردحاتی علم ایک ویاپک اور عالمگیر چیز هے، اِس ودیا کے جانبے والے نه کسی ایک زمانے کے هوتے هیں اور نه کسی ایک دیھی کے به دیھی اور کال سے آریر سب دیشوں اور سب زمانوں کے ایک

दारा शिकोह को भारत के वेदांत और इसलाग के सूफी मत दोनों से गहरा प्रेम था. सत्य की खोज का मादा उसे अपने पूर्वजों से विरासत में मिला था. सब धर्मों को जानने भीर सममने की इच्छा उसमें ठीक वैसी ही थी जैसी उसके परदादा सम्राट अकबर में. पर एक बहुत बड़ा फर्क़ यह था कि सम्राट अकदर अनपढ़ था और दारा शिकोह हिन्दू धार्मिक सहित्य और मुसलिम धार्मिक साहित्य दोनों का पूरा विद्वान था. सफी किताबों को उसने खब पढ रक्खा था. बड़े बड़े मुलसमान संतों श्रीर सुकियों की उसने जीवनियाँ लिखी थीं भीर पचास उपनिषदों का उसने संस्कृत से फारसी में धनु-बाद किया था. इस तरह सूकी मत और वेदान्त की तुलना वह खुब कर सकता था. इस विषय पर उसने ''मजमाडल बहरैन" नाम की एक किताब लिखी. मजमाउल बहरैन के मानी हैं 'दो समंद्रों का संगम.' यह अमूल्य मन्थ दोनों धर्मों की सचाई के बारे में दारा शिकोह की खोज का नतीजा है. वह इस नतीजेपर पहुँचा था कि हिन्दू धर्म और इसलाम बोनों को सार एक ही है श्रीर दोनों बुनियादन एक हैं. अपने इस सिद्धान्त की साथित करने के लिए दारा शिकोह ने बेदांत के प्रयों और सूकी मत की किताबों के उसूलों को इस पुस्तक में विस्तार के साथ बयान किया है. इस पुस्तक को पढकर कोई इंसाफ-पसंद आदमी इस बात से इंकार नहीं कर सकता कि दारा शिकोह को अपनी बात साबित करने में परी कामयाबी मिली है.

अध्यातम विद्या (इल्मे कहानी) एक गहरे और अधेरे समंदर की तरह है. उस समंदर की सतह पर तूफानों, आँधियों, चांद की कशिश और इस ब्रह्मांड की दूसरी शक्तियों के असर से तरह तरह की शकलें बनती और पल पल पर बद्लती और बिगड़ती रहती हैं. लेकिन उन अलग अलग शकलों के नीचे गहराई में ऊपर को माग उगलने वाली लहरों से दूर, शांत जल धाराएँ एक दूसरे में, मिलती और एक होती रहती हैं. अध्यात्म विद्या थानी रुहानी इस्म एक व्यायक और आलमगीर चीज है. इस विद्या के जानने वाले न किसी एक जमाने के होते हैं और न किसी एक देश के. वह देश और काल से अपर सब देशों और तब जमानों के एक

ہرابر هرتے هيں اِس طرح کی مهان أتماثيں سب ديهون اور سب زمالون مين پيدا عولي رهي هين . جن لوگوں نے اِس ردیا کا ابھاس کیا ہے اُنھیں اپنے اندر ایک ایسی حالت انوبهو هونے لکئی ہے جس میں وہ ایک ایسی دوسری دنیا میں پہرنے جاتے ہیں جہاں دیھی اور کالکا کوئی اُرتو نہیں وره جانا اور ایک ایسی انرورچنیه یعلی ناقابل بهان روشلی؛ ایک الوک جیرتی پرمآلد اور گیری شانتی آنهیں اپنے اندر انوبھو ھونے لکتی ھے، پر جب آدمی اُس الوکک تجربے کو اِس دنیا کے شہدوں میں بھان کرنے کی کوشھی کرتا ہے تو آسے خاص طرح کی برببهاشائیں یا اِستالحیں کم میں اللی پڑتی ہیں، اِس دنیا کی طرح هی سوچنا پرتا هے اور جن لوگوں سے وہ ہات کرتا ہے آن کی بولی میں آن کی سنجے کے انوسار بوللا بہتا ہے اسے ادمعتر مثالیں دے دیمر أيما بعنی تشبيع أور استعاروں کی یعنی رویک بھاشا بولنی پرتی ہے . اس طرح کے تعوریوں دو کیول ترک یعنی منطق کے قاعدوں سے نہیں سمنجها جاسکتا ، اُس کے لئے دوسری طرح کے سوچنے کی ضرورت پڑتی ھے ، جو وچار اِس طرح پیدا ھوتے ھیں وھی بوھکر پھر ایک درشن شاء تر یا فلسفت کا روپ لے لیتے هیں .

اِس طرح کے روحانی تجربوں کو طرح طرح کی الت کلاوں میں بھی ظاہر کیا جاتا ہے، کیونکد آدمی کے سب تجربے آخر ایک دوسرے کے ساتھ سدندہ رکھتے ہیں ، گانا، بجانا، کویٹا چیرکلا مورتی کا اور ٹرمان کا یعنی علم تعمیر، اِن سب کے ذریع اُن تجربوں کو ظاہر کیا جاتا ہے، اِن کلاوں میں سب سے بری کا جمہوں کا ہے۔ اُنھیاتم ودیا کا سب سابرا اثر آدمی کے جھون پر پرتا ہے ، اُدھیاتم ودیا آدمی کے سارے چرتر یعنی کیریکٹر کو پر پرتا ہے ، اُدھیاتم ودیا آدمی کے سارے چرتر یعنی کیریکٹر کو دے دیتی ہے اور اس کی سلملپ شمتی یعنی قوت اِرادی کو مضبوط اور مالا مال کردیتی ہے ،

دوسری طرف اِس طرح کے جنہوں کے ساتھ نئی طرح کے خطرے بھی چاتے ھیں ، اِس راستے پر چانے کے لئے اِنلے کوے تھیوں کو پالن کرنا پڑنا ہے کہ سب آدمی اُنہیں نہیں نبالا لیتے میں ، وجہ لائے اندر کی کمزوری کے کارن آسان راستے نکال لیتے میں ، وجہ گاتے بجاتے ھیں' شرابیں اور طرح طرح کے نشے کام میں لاتے ھیں ، اس سے اُن کے دمانیں کی اُلیسی حالت ھوجانی ہے کہ اُنہیں تھوڑی تھوڑی دیر کے لئے یہ ایسی حالت ھوجانی ہے کہ اُنہیں تھوڑی تھوڑی دیر کے لئے یہ اُلیسی حالت ھوجانی ہے کہ اُنہیں تھوڑی تھوڑی دیر کے لئے یہ اُلیسی دھوگ ) ھوٹے لگتا ہے کہ وہ اِس دنیا کے دکھوں سے چھوٹ گئے ، اصلیت میں اُن کی اِندریوں کی شکتی تھیلی چھوٹ گئے ، اصلیت میں اُن کی اِندریوں کی شکتی تھیلی چھوٹ گئے ، اصلیت میں اُن کی اِندریوں کی شکتی تھیلی چھوٹ گئے ، اصلیت میں اُن کی اِندریوں کی شکتی تھیلی چھوٹ گئے ، اصلیت میں اُن کی اِندریوں کی شکتی تھیلی چھوٹ گئے کہیں اُوندیجے مقام پر پہونچ گئے. کسی دیش یا ساج کا جب پہتی ہوئے لگتاھے تو بہت سے اواب جیوں کی کھور آؤمایشوں سے بچھیے

बराबर होते हैं. इस तरह की महान आत्माएँ सब देशों भीर सब जमानों में पैदा होती रही हैं. जिन लोगों ने इस विशा का अभ्यास किया है उन्हें अपने अंदर एक ऐसी हालत अनुभव होने लगती है जिसमें वह एक ऐसी दूसरी दुनिया में पहुँच जाते हैं जहाँ देश और काल का कोई अर्थ नहीं रह जाता और सब ऐसी अनिर्वचनीय यानी नाकाबिले वयान रोशनी, एक अलौकिक ज्योति, परम आनंद और गहरी शांति उन्हें अपने अन्दर अनुभव होने लगती है. पर जब आदमी उस अलौकिक तजरवे को इस दुनिया के शब्दों में बयान करने की कोशिश करता है तो उसे खास तरह की परिभाषाएँ या इस्तलाहें काम में लानी पढ़ती हैं, इस दुनिया की तरह ही सोचना पड़ता है और जिन लोगों से वह बात करता है उनकी बोली में उनकी समम के अनुसार बोजना पड़ता है. उसे अधिकतर मिसालें दे देकर उपमा यानी तश-बीह और इस्तवारों की यानी रूपक भाषा बोलनी पढ़ती है. इस तरह के तज़रबों को केवल तर्क यानी मंतक के कायदों से नहीं समका जा सकता. उसके लिए दूसरी तरह के सोचने की जरूरत पड़ती है. जो विचार इस तरह पैदा होते हैं वही बढ़कर फिर एक दर्शन शास्त्र या फ्लसके का रूप ले लेते हैं.

इस तरह के रूहानी तजुरबों को तरह तरह की लित कलाओं में भी जाहिर किया जाता है, क्योंकि 'आदमी के सब तजरबे आखिर एक दूसरे के साथ संबंध रखते हैं. गाना, बजाना, किवता, चित्रकला, मूर्ति कला और निर्माण कला यानी इस्मे तामीर इन सबके जिरये इन तजरबों को जाहिर किया जाता है. इन कलाओं में सबसे बड़ी कला जीवन कला है. अध्यात्म विद्या का सबसे बड़ा असर आदमी के जीवन पर पड़ता है. अध्यात्म विद्या आइमी के सारे चरित्र यानी कैरेक्टर को रूप दे देती है और उसकी संकल्प शक्ति यानी कूवते इरादी को मजबूत और माला माल कर देती है.

दूसरी तरक इस तरह के जीवन के साथ कई तरह के खतरें भी चलते हैं, इस रास्ते पर चलने के लिए इतने कड़े नियमों को पालन करना पड़ता है कि सब आदमी उन्हें नहीं निबाह सकते. कुछ लोग अपने अंदर की कमजोरी के कारण आसान रास्ते निकाल लेते हैं. वे गाते बजाते हैं. नाचते हैं, रारावें और तरह तरह के नशे काम में लगते हैं. इससे उनके दिमारों की ऐसी हालत हो जाती है कि उन्धें थोड़ी थोड़ी देर के लिए यह आभास (घांसा) होने लगता है कि वो इस दुनिया के दुखों से छूट गए. असलियत में उनकी इंद्रियों की शक्ति ढीली पड़ जाती है और वो समकते यह हैं कि वो शराल यानी योगाभ्यास के किसी ऊँचे मुक़ाम पर पहुँच गए. किसी देश या समाज का जब पतन होने लगता है तो बहुत से लोग जीवन की कठोर आजमाइशों से बचने

STATE OF STATE

है लिए तसन्वुफ, बेदांत, शराल या योग का इस तरह का सहारा दूँद लेते हैं. यह सच्चा रुहानी जीवन नहीं, एसकी मही नक़ल होती है.

दाराशिकोह का जमाना इस देश में बढ़ा नाजुक जमाना था. सम्राट शाहजहाँ की शानो शौकत खतम हो रही थी. हिन्दुस्तानी समाज के भंदर की वो समस्याएँ और वो दुशिकतों जो अभी तक हल नहीं हो पाई थीं देश के जीवन पर अपना खुरा असर डाल रही थीं. अकबर ने मेल मिलाप का जो आदोलन शुरू किया था उसका जोर घट गया था. इस आंदोलन को फिर से जिंदा करने और जिंदा रखने के लिए जबरदस्त कोशिश की जरूरत थी. दारा शिकोह इस जरूरत को सममता था. उसने इस गुशकिल को हल करने की कोशिश की, लेकिन वह नेक विद्वान और पंडित था इह न समाज सुघारक था और न राज नीतिक. विद्वानों में. कई तरह की कमी रह जाती है.

साइन्सी खोज और आलोचना के आजकल के तरीक़े नि इस समय तक एशिया में नहीं फैल पाए थे. योरप में कि इसी जमाने में कैफलर, गेलीलियो और न्यूटन जैसे गाइंसदामों और 'डेकार्ट, हौब्स और स्पाइनोजा जैसे फ़िला-ग्रेफरों की बदौलत एक बहुत बड़ा दिमारी इन्क़लाब पैदा हो हा था. दारा शिकोह अपने देश और अपने जमाने के विवारों भीर जहरतों में इतना डूबा हुआ था कि दश न शास्त्र के नियादी इस्तों को कसीटी पर कसने या आदमी के अंदर स तरह के तजरबों को साइंसी ढंग से परखने की उसे न स्माक्ती थी. पिछल में बरट्रेंड रसल ने इसी तरह के कहानी जरबों का तर्क के उस्तों से चलकर अर्थ करने की कोशिश की. विलियम जेम्स ने अलग अलग धर्मों के तरह तरह के स तरह है तजुरबों की खोज करके इनका मुक़ाबिला किया. तरा शिकोह इस तरह की छान बीन में न पड़ सकता था.

दारा शिकोह के सामने सवाल विलक्जल दूसरे ढंग का था.
सने महसूस कर लिया था कि आदमी और समाज दोनों
लिए इस बात की जरूरत है कि कोई ऐसी शिक्त हो जो
निया की मामूली जरूरतों और आए दिन की छोटी मोटी
च्छाओं और प्रवृत्तियों से आदमी को ऊपर उठा सके और
इन्द्रिश का कोई जियादा टिकाऊ और शैर फानी मकसद
सके सामने रख सकें. उसने यह देख लिया था कि आदमी
कतना जितना अपनी इस छोटी खुदी से ऊपर उठ सकता
उतना उतना ही दूसरों के साथ अपनेपन का मान उसमें
दता जाता है. उतना उतना ही आदमी और समाज दोनों
बल आता जाता है. दारा शिकोह ने समक लिया था कि
गार हम अपनी इस छोटी और भूटी खुदी को जीत लें तो
माज के अन्दर तरह तरह के विचार और रीत रिवाज
ाहमी के अन्दर की छिपी हुई अनन्त शिक्तयों को जगाने

کے لئے تصرف ویدانت شنل یا یوک کا اِس طرح کا سہاراً تھونتھ لیتے میں . یہ سچا روحانی جیوں نہیں اُسکی بهدی نیل هونی هے .

داراشکوه کا زمانه اِس دیش میں برّا نازک زمانه تها .

سمرات شاهجهاں کی شان و شوکت ختم هورهی تهی . هندستانی
سماج کے اندر کی وه سمسیائیں اور وہ مشکلیں جو اُبھی تک
حل نہیں هویائی نهیں دیش کے جیون پر اپنا برا اثر دال
رهی تهیں . اکبر نے میل ملاپ کا جو آندولن شروع کیا تها اُس
کا زور گھٹ گیا تھا . اُس آندولن کو پھر سے زندہ کرنے اور زدہ
رکھنے کے لئے زبردست کوشش کی ضرورت تھی . داراشکوہ اِس
ضرورت کو سمجھتا تھا ، اُس نے اِس مشکل کو حل کرنے کی
کوشش کی الیکن وہ لیک ودوان اور پندت تھا ، وہ نه سماج
سدهارک تها اور نه راجنینکیه ، ودوانوں میں نائی طرح کی

سائنسی که چ اور آلوچنا کے آجکل کے طریقے بھی آس سے تک ایشیا میں نہیں پھیل پائے تھے ، یورپ میں ٹھیک اسی زمانے میں کیفلر گیلھلیو اور نمیوئن جھسے ساننسانس اور نمیائٹ کے دوست ایک بدولت ایک بہت ہوت ہوا دمانی انقتاب پیدا ھو رھا تھا ، دارا شکوہ اپنے دیمی اور اپنے زمانے کے وچاروں اور ضرورتیں میں اِنفا ڈرہا ھوا تھا کہ درشن شاستر کے بنیادی اُصولوں کو کسوئی پو کسنے یا آدمی کے اندر اِس طرح کے تجربوں کو سائنسی تھنگ سے پرکہنے کی اُسے نہ سوجھ سکتی تھی ، پچھم میں برقرینقرسل نے اِسی طرح کے روحانی تجربوں کا ترک کے اُصوابی سے چاکم کے اُس طرح کے روحانی تجربوں کا ترک کے اُصوابی سے چاکم کے طرح طرح کے اِس طرح کے تجربوں کی کھوج کر کے اُن کا مقابلہ کیا ۔ دارا شکوہ اِس طرح کی چھان بین میں نہ پرتیا میں اُنہ پرتے کی کھوج کر کے اُن کا مقابلہ کیا ۔ دارا شکوہ اِس طرح کی چھان بین میں نہ پرتے میں کا تھا۔

وارا شکوة کے سامنے سوال بالکل دوسرے دھنگ کا تھا، اُس اے محسوس کر لیا تھا کہ آدمی اور ساج دونوں کے لئے اِس بات کی ضرورت ہے کہ کرئی ایسی شکتی ہو جو دنیا کی معمولی ضرورتہ اور آئے دن کی چھوٹی موٹی اِچھاؤں اور فرورتیوں سے اُدمی کو اُورر آئھ سکے اور زندگی کا کوئی زیادہ نکاؤ اور غیر فاتی مقصد اُس کے سامنے رکھ سکے، اُس نے یہ دیکھ لیے نہا کد آدمی جتنا چتنا اپنی اِس چھوٹی خودی سے اُورر آٹھ سکتا ہے آئنا آتنا ھی دوسروں کے ساتھ اُنے پن کا بھاؤ اُس میں بڑھتا جاتا ہے۔ اُننا اُننا عی آدمی اور سماج دونوں میں بل آنا جاتا ہے۔ دارا شکوہ اُننا عی آدم اور سماج کے اندر طرحطرح کے وچار اور ریت رواج کو جیت لیں تو سماج کے اندر طرحطرح کے وچار اور ریت رواج اُدمی کے اندر کی چھی دوئی انفت شکتیوں کو جگانے

# यो समेदरों का संगम और सचाई का प्रकाश

में बहुत बड़ी मदद देते हैं, हकावट नहीं होते. यही सच्ची रुहानियत का रास्ता है.

दारा शिकोह जानता था कि हिन्तुस्तान के अन्दर
मुसलमानों के जीवन को तसन्तुफ ने एक नई राह दिखा
दी थी और एक नए अथों में उनके जीवन को माला माल
कर दिया था. वो यह भी जानता था कि ठीक इसी तरह
वेदांत ने हिन्दू समाज के अन्दर लोगों पर गहरा असर डाला
था और अच्छे से अच्छे फूल खिलाए थे. मुसलमानों को
इमाम राजाली के फलसके और मुईनडईनि चिश्ती के जीवन
के बहुत बड़ी प्रेरणा मिली थी. हिन्दुओं को शंकर और
रामानुज, कबीर और चैतन्य के उपदेशों से नई रोशनी और
नया जीवन मिला है. अब सवाल केवल यह था कि क्या
इन दोनों विशाल समंदरों को मिलाया जा सकता है १ अगर
मिलाया जा सके तो मिली जुली हिन्दुस्तानी कलचर के लिए
पक्की से पक्की रुहानी बुनियाद मिल सकती है और इस देश
में एक सुन्दर मिले जुले समाज की रचना की जा सकती है.

दारा शिकोह ने इन सवालों का जवाब अपनी दोनों किताबों, "मजमउल बहरैन" और ''रिसालए हक्तनुमा" में दिया है. इन दोनों नामों के अलग अलग मानी हैं दोनों समंदरों का संगम" और "सचाई के प्रकाश पर निबंध."

'मजमाउल बहरैन' की दारा शिकांह ने एक भूमिका लिखी है. उसमें उसने लिखा है कि:—

''पहले मैंने सब असलियतों की असलियत जानना चाहा. मैंने सुकियों के सच्चे मजहब के रहस्यों (राजों) श्रीर बरिकियों को जानने की कोशिश की इस अनमाल चीज को हासिल करने के बाद मैंने यह मालूम करने की कोशिश की कि हिन्द्रश्तान के उन मवहिद्दों (एकेश्वर वादियों) खोजियों और उस्तादों का उसूल क्या था जिन्हों ने गहरी तपस्या करके, ध्यान लगाकर, मनन यानी ग़ौरो रोज करके श्रीर गहरी समाधि में जाकर ईश्वर श्रल्बाह का दीदार हासिल किया था. हिन्दू आचार्थी और साधु संतों से मैं बार बार मिला और उनसे खूब बात चीत की. मैंने देखा कि शब्दों के छोटे मोटे फरक को छोड़कर उनमें कंई बुनियादी फरक नहीं था. केवल कोई अपनी खोज और अपने ज्ञान को एक तरह के शब्दों में बयान करता था और कोई दसरी तरह के शब्दों में. इसके बाद मैंने वेदांत के पंडितों और संत महात्मात्रों श्रीर इसलाम के सुकियों दोनों के विचारों को एक जगह करके देखा. उनमें से उन सब बातों को जमा किया जो सवाई के खोजियों के लिए जरूरी और कारामद हैं. इस तरह यह किताब तैयार हो गई. यह किताब दोनों तरफ के हक़शनास लागों यानी सचाई को जानने वालों के विचारों और उपदेशों का संप्रह है. इसलिए मैंने इसका नाम · \*मजम**उल बहरैन''रक्सा है**.''

# دو سمندرول کا سنام أور سنجائي کا پرکاهي

میں بہت ہری میں دیتے ہیں؛ روکارت تہیں ہوتے ، یہی سچی رختانیت کا راستہ ہے ،

دارا شکوہ جائٹا تھا کہ ھندستان کے اندر مسلمانوں کے جیوں کو تصوف نے ایک نئی راہ دکھا دی تھی اور ایک نئے لرتھوں میں آن کے جیوں کو مالا مال کر دیا تھا، وہ یہ بھی جانتا تھا کہ ٹھیک اِسی طرح ویدانت نے هندو سماج کے اندر لوگوں پر گہرا اثر دالا تھا اور اچھ سے اچھے پھرل کھائے تھے، مسلمانوں کو امام غوالی کے فلسفے اور معین الدین چشتی کے جیون سے بھت بڑی پربرفا ملی نھی، ھندؤں کو شکفر اور رامانیے' کیور اور چیتلاء کے آپدیشوں سے فئی روشنی اور نیا جیون ۱۹ ھے۔ اب سوال کیول یہ تھا کہ کیا اِن دونوں وشال سمندوں کو مالیا جا سکتا ہے سکا جی دوسانی بنیاد مل سکتی ہے اور اِس دیش میں ایک سلدر پھے سماے کی رچنا کی جا سکتی ہے۔

دارا شعوہ نے اِن سوالوں کا جواب اُپنی دونوں کتابوں اور مجسم البحرین '' اور ''رسالۂ حق نما'' میں دیا ہے اِن دونوں سمندروں کا دونوں سمندروں کا سنکم'' اُور ''سجائی کے ایک معنی میں ''دونوں سمندروں کا سنکم'' اُور ''سجائی کے پرکاھی پرنبندھ ۔''

"مجمع ابتحرین کی دارا شکوہ نے ایک بھومیکا انہی ہے ۔ اُس میں اُس نے انہا ہے کہ:---

"بہلے مینے سب اصلیتوں کی اصلیت جاننا چاھا مینے صوفهوں کے سچے مذھب کے رھسیوں ( رازوں ) اور ہاریکھوں کو جانلے کی کوشش کی ، اِس انسول چیز کو حاصل کرنے کے ہمد مینے یہ معلوم کرنے کی کوشش کی که هندستان کے اُن موحدون ( ایکیشور وادیون ) کهوجیون اور استادون کا اصول کیا نہا جنہوں نے گہری تیسیا کر کے ' دھیان لگا کر منی یعنی فور وخارض کو کے اور گہری سمادھی سین جا کر ایشور الله کا دیدار حاصل کیا تھا ۔ عندو آچاریوں اور سادھو سفتوں سے میں ہار بار 18 اور آن سے خوب بات چیت کی مینے دیکھا کہ شہدوں کے چھٹے موقے نرق کو چھڑز کر اُن میں کوئی بنیادی فرق نہیں تھا . کیول کوئی اپنی کھرے اور اپنے گیاں کر ایک طرح کے شیدوں میں بیان درتا تھا اور کوئی دوسری طرح کے شبدوں میں، اِس کے بعد مینے ویدانت کے پندتوں اور سنت مہاتماؤں اور اسلم کے صوفاوں دونوں کے وچاروں کو ایک جاتم کر کے دیکھا۔ أن ميں سے أن سب بانوں كو جمع كيا جو سچائى كے كهوجيوں کے لئے ضروری اور کارآمد هیں۔ اِس طرح یہ کتاب تیار هو گئی .. یہ کتاب دونوں طرف کے حق شناس لوگوں یعنی سیجائی کو جاننے والوں کے وچاروں اور آپدیشوں کا سنکوہ ہے۔ اِس لئے مینے إس كا نام " مجع البصرين" ركها هـ "

दारा शिकोह की इन दोनों किताबों में यह सावित किया गया है कि यह सुष्टि कव और कैसे बनी, आदमी कब, कैसे और क्यों पैदा किया गया, आदमी के जीवन का लक्ष्य क्या है, पुरुष और प्रकृति में क्या संबंध है ? इन सब बातों पर हिन्दू फ़िलसकी और मुसलिम किलासकी दोनों एक ही बात कहती हैं और दोनों परमानंन्द तक पहुँचने का एक ही रास्ता, एक ही तरह के नियम और एक ही तरह की रियाजन तपस्यात्रादि को बताती हैं. दोनों राहें एक हैं. इस रास्ते पर चार खास मुकाम हैं जहां पहुंचकर बात्मा यानी रूड् को खास खास तरह के मानसिक यानी दिमारी, हार्दिक यानी अजवाती भीर शारीरिक यानी जिस्मानी तजरबे होते हैं. यही असतू से सत् की तरफ यानी बातिल से इक की तरफ, चौंधेरे से डजाले की तरफ और फानी जिंदगी से ग़ैर कासी जिन्दगी की तरफ रूह की यात्रा है. यही रास्ता इसमास के सुफ़ियों और दरवेशों ने सिखाया है और इसी की तालीम हिन्दू संतों और शृषियों ने दी है. क़ुरान और चपनिषद दोनों इसी बात की तसदीक करते हैं.

× × ×

[बा० ताराचंद ने भारत के राजदूत की हैसियत से तेहरान में रहकर अपने सरकारी फ़र्ज की अदायगी के साथ साथ दारा शिकोह की इन दोनों अमूल्य पुस्तकों, "मजमा- चल बहरैन" और "रिसालए हक़नुमा" का फारसी से अंग्रेजी में अनुवाद किया है जो जल्दी ही प्रकाशित होने बाला है—सुन्दरलाल ]

دارا شکوہ کی اِن دونوں کتابوں میں یہ ثابت کیا گیا ہے که یہ سرشقی کب اور کیسے بنی' آدمی کپ' کیسے اور کیوں پیدا کیا گیا آدمی کے جیوں کا لکشید کیا ہے' پرش آور پرکرتی میں کیا سمبندہ ہے ہے اِن سب باتوں پر هند فلاسفی اور مسلم فلسفی دونوں ایک هی بات کپتی هیں اور دونوں پرمانند نک بہونچنے کا ایک هی راسته' ایک هی طرح کے نیم اور ایک هی طرح کی ریاضت تہسیا آدی کو بتاتی هیں دونوں راهیں ایک هیں ایک هیں اور خاص مقام هیں جہاں پہونچ کی آتا یعنی درج کو خاص خاص طرح کے مائسگ کی سانی' هاردک یعنی جذباتی اور شاربوک یعنی یعنی دمانی' هاردک یعنی جذباتی اور شاربوک یعنی یعنی باطل سے حق کی طرف' اندهبرے سے آجائے کی عرف یعنی بادل سے حق کی طرف' اندهبرے سے آجائے کی عارف اور فانی زندگی کی طرف دوے کی باترا ہے ۔ یہی راسته اِسلام کے صونیوں آور درویشوں نے سامایا یاترا ہے ۔ یہی راسته اِسلام کے صونیوں آور درویشوں نے سامایا اور آسین کی تعلیم هندو سنتوں اور رشیوں نے دی ہے ۔ قرآن

× × ×

[ دَاكُتُو تَاراً چَلْد نَے بھارت كے رأج دوت كى حيثيت سے طہران ميں رہ كو اپنے سركارى فرض كى ادايكى كے سانھ ساتھ دارا شكوة كى إن دونون امولية پستكوں' 'مجمع البحريں'' اور رسانة حق نما'' كا فارسى سے الكريزى مهى أنواد كيا هے جو جلدى هى پركاشت هونے والا هے ـ سسندر لال .]

श्वन्त पा सकती नहीं है भेद तेरी जात का,
फिक को सूमी न कोई शै दुखाओं के सिवा.
भानने वाले तेरे दुनिया में हैं लाखों मगर,
जानने वाला तेरा कोई नहीं तेरे सिवा.

--- उमर खैयाम.

عقل پا سکتی نہیں ہے بھید تھری ذات کا فی سکتی نہیں ہے بھید تھری ذات کا فکر کو سوجھی نہ کہئی شے دعاؤں کے سوا مانانے والے نرے دنیا میں میں لاکھوں سکو؛ جاننے والا ترا کوئی نہیں تیرے سوا م

سعمر خهام.

# دادا ابوألفضل

## पंडित सुन्दरलाल

"नया हिन्द" के पढ़ने वालों में शायद काई विरते ही होंगे जो यह समभा गये हों कि इस नोट में किसकी चरचा है. देश में कुछ इने गिने लोग ही उन्हें आनते होंगे.

मिरजा अबुलफ्जल, जिन्हें हम ठीक चालीस बरस से 'दादा' कहा करते थे, पूरबी बंगाल के एक मुसलमान आलिम घराने में पैदा हुए थे. बचपन में बंगला पढ़ी, बंस्कृत पढ़ी, फारसी पढ़ी, अरबी पढ़ी, अंगरेजी पढ़ी और बाद में यूरप जाकर वहां की बहुत सी जवानें सीखीं. कमकत्ता युनिविस टी के वह एम० ए० थे, और यूरप की बन युनिविस टी के पी० एच० डी०. बंगाल में पैदा होकर भी उन्होंने अपनी जिन्दगी का अधिकतर भाग देश और दुनिया के दूसरे हिस्सों में ही गुजारा.

बंगला उनकी मान भाषा थी. संस्कृत के वह पूरे पंडित थे. रामायण, महाभारत और लगभग सब हिन्दू पुराण और स्मृतियां उन्होंने मूल संस्कृत में पढ़ी थीं, और मरते दम तक उन पर हावी थे. चारों वेदों का उनका किया हुआ मूल संस्कृत से बंगला में अनुवाद हमने उनके पास रखा हुआ देखा है. शायद वह कभी किशित न हो पाया. अपनी बात चीत में — और वह बात चीत भी बहुत कम करते थे — जब कभी वह वेदों, पुराणों, स्मृतियों या किसी शास्त्र का हवाला देते थे तो मालूम होता था कि उनका दिमारा किसी आदमी का दिमारा नहीं बल्कि आसा चलता किरता पुस्तकालय है.

अरबी भाषा के वह समन्दर थे. उनका क़ुरान का अंगरेजी अनुवाद कई एडीशनों में निकल चुका है. दूसरे महायुद्ध से पहले यूरप में खासकर जरमनी में उनके अनुवाद की बहुत बड़ी क़्दर थी. उनका क़ुरान का उद्ध अनुवाद भी हमने छपा हुआ देखा है.

कुरान के तरजुमें के अलावा उन्होंने खासकर अंगरेजी में और भी बहुत सी किताबें लिखीं, जिनमें कुछ के नाम वे हैं :—'लाइफ आफ मुहम्मद; 'सेइ'म्स आफ मुहम्मद'; 'ऐन अपालोजी फार मुहम्मद, 'विहाइन्ड दि वेल' (जो दुनिया में औरतों की हालत और समस्या पर एक खास किताब है); 'हिन्दूइज्म एंड इसलाम' 'कुश्चेनिटी एंड इसलाम' 'जुढाइज्म एंड इसलाम' 'बुद्धिइज्म एंड इसलाम. يندت سندر لال

''نیا ھند'' کے پڑھنے والوں میں شاید کوئی برلے ھی ھونگے جو یہ سمجھ گئے ھوں کہ اِس نوٹ میں کس کی چرچا ھے ۔ دیھی بھر میں کچھ اِلے گئے لوگ ھی اُنہیں جانتے ھونگے۔

مرزا ابوالنفل؛ جلهیں هم تهیک پالیس برس سے ادان کہا کہتے تھے، پوربی بنکال کے ایک مسلمان عالم گھرائے میں پیدا هوئے تھے، بچھن میں بنکلا پڑھی؛ سلسکرت پڑھی؛ نارسی پڑھی؛ عربی پڑھی؛ ادعر میں یورپ جاکر رهاں کی بہت سی زبانیں سکمیں ا کلکته یونیورستی کے وہ ایم الے ، تھے؛ اور یورپ کی برن یونیورستی کے بی ۔ ایچ ، تبی ، بنگال میں پیدا هوکر بھی انہوں نے اپنی زندگی کا ادھکٹر یہائ دیس اور دنیا کے دوسرے حصوں میں هی گذارا ،

بنکلا أن کی ماتر بهاشا تھی ۔ سنسکرت کے وہ بورے پنتت تھے ۔ رامابین مهابھارت اور لگ یهگ سب هندو پران اور اسمرتیاں آنھوں نے مول سنسکرت میں پرتھی تھیں، اور مرتے دم سنسکرت سے بنکلا میں انواد هم نے آن کے پاس رکھا ہوا دیکھا سنسکرت سے بنکلا میں انواد هم نے آن کے پاس رکھا ہوا دیکھا ہے ۔ شاید وہ کبھی پرکاشت نہ هو پایا ، اپنی بات چیت میں — اور وہ بات چیت بھی بہت کم کرتے تھے سے بیلی وہدوں پرانوں اسمرتھوں یا کسی شاستر کا حوالہ دیتے تھے تو ویدوں کو برتا بھا کہ آن کا دماغ نہیں بلکہ معلوم هوتا نها کہ آن کا دماغ کسی آدمی کا دماغ نہیں بلکہ خاصہ چلتا بھرتا بستکالیہ ھے ،

عربی بھاشا کے وہ سمندر تھے ۔ اُن کا ذرآن کا انگریزی انواد کئی اِیڈیشارں میں نکل چکا ھے ، درسرے مہایدہ سے پہلے یورپ میں خاصکر جرمنی میں اُن کے انواد کی بہت ہتی قدر تھی۔ اُن کا قرآن کا اُردو انواد بھی ھم نے چہا ھوا دیکھا ھے۔

قرآن کے ترجمے کے علاوہ آنہوں نے خاصہ انکریزی میں اور بھی بہت سی کتابیں انہیں' جن میں سے کچھ کے نام یہ ھیں: ۔۔'لیف آف محمد'؛ 'این ایالہجی نار محمد'؛ بہائنڈ دی ویل' (جو دنیا میں عورتوں کی حالت اور سمسیا پر ایک خاص کتاب ہے)؛ 'هندوازم اینڈ اِسلام'؛ 'کوشچینٹی اِینڈ اِسلام'؛ 'جوڈاازم اِینڈ اِسلام'؛ 'کوشچینٹی اِینڈ اِسلام'؛ 'جوڈاازم اِینڈ اِسلام؛ 'بدھزم اِینڈ اِسلام'؛

इन पिछली चार किताबों में उन्होंने बहुत से हवाले देकर इसलाम के साथ दूसरे धर्मों की समानता दिखाई है; 'ग्ररीबुल क़ुरान' यानी क़ुरान के अरबी शब्दों की एक डिक्शनरी; बरौरा बग़ैरा. उनकी सारी किताबें, जिनमें से केवल कुछ के नाम हमने यहां दिये हैं, बड़े ऊँचे पाए की किताबें हैं.

संस्कृत, धरबी, फारसी के खलावा वह ही हू यानी इबरानी; जरमन, फ़ेच यूयानी, लातीनी वरोरह के मी पूरे पंडित थे.

मिरजा अबुल फ़जाल किसी एक अलग धर्म मजहब या सामप्रदाय के पिंजरे के अन्दर बन्द न थे. वह सच्चे और ऊँचे से ऊँचे मानी में 'सर्व धर्म समभावी" यानी सब धर्मों को एक निगाह से देखने वाले, सबकी एक बराबर इन्ज़्त करने वाले और बहदते अदियान के कायल थे. ऊँचे से ऊँचे मानी में सच्चे धर्मात्मा या कम से कम धर्मात्मा होने की निरन्तर कोशिश करने वाले वह हर तरह के रीत रिवाज, कर्म कांड और शरक और मिन-हाज से बल्लियों उपर थे.

डाक्टर मिरजा अबुल कजाल हमारे गुरु थे. कुरान,
मुहम्मद साहब और इसलाम के बाबत हमने जो कुछ
पढ़ा और सीखा सब उन्हीं से पढ़ा और सीखा. हमने
उनसे और भी बहुत कुछ सीखा. वह हमसे कई साल
बढ़े थे. वह अपने सगे छाटे भाई की तरह हमसे प्यार करते
थे हम उन्हें स्नेह और आदर के साथ 'दादा' कहा करते
थे और उन्हें अपना रूहानी गुरु मानते थे. सात मई
1986 को हैदरा बाद (दिक्खन) में दादा अबुल कजाल का
शारीरान्त हो गया.

हैदराबाद के भाई हसनउद्दीन अहमद ने हमें दादा अबुलफ़जल के शरीरान्त की ख़बर दी. जिस ख़त में उन्होंने हमें यह सूचना दी उसमें उन्होंने भावुकता के साथ और उतनी ही सचाई के साथ लिखा है—'मुफ़े आपको यह बतलाने की जरूरत नहीं है कि आपके दादा कितने बड़े आदमी थे. हम तो बड़े आदमी का लक्ष्या अक्सर इस्तेम ल करते हैं और ख़सूसन इन्तक़ाल के बाद तो कराख दिली से यह ख़िताब दे देते हैं. लेकिन जब मैं मिरजा साहब के लिये यह लक्ष्य इस्तेमाल कर रहा हूँ तो आम इस्तेमाल से इसका मक्ष्ट्रम (मतलब) बिलकुल मुखतिलिक है."

पूछा जा सकता है कि मिर्जा अबुल फजल ने लिखने पहने के अलावा जिन्दगी में और क्या कुछ किया ? हमें इस सम्बन्ध में केवल थोड़ा मा ही हाल मालूम है. उनकी जिन्दगी अदन के ब्रिटिश मैजिस्ट्रेट की हैसियत से शुरू हुई. बेह हजार रुपया तंखाह, रुतवा, दवदवा और जिन्दगी की ان پچھلی چار کتابوں میں آنھوں نے بہت سے حوالے دیکر اِسلام کے ساتھ دوسرے دھرہوں کی سمانتا دکھائی ہے؛ 
'نریبالقرآن' بعنی قرآن کے عربی شبدوں کی ایک ڈشاوی' وغیرہ وغیرہ ، اُن کی ساری کتابیں' جن میں سے کیول کچھ کے نام ھرنے یہاں دیئے ھیں' بڑے اُرتچے پایہ کی کتابیں ھیں م

سفسکرت عربی فارسی کے علوہ ولا هیبرو یعلی عبرانی ، جرمن فرینج ، یونائی الطینی وغیرہ کے بھی پورے بلتت تھ ،

مرزا ابوألففل کسی ایک الگ دهرم مذهب یا سمهردائد کے پلتجرب کے اندر بلاد نه تھے ۔ وه سچے اور أولنچے سے أولنچے معلی میں "سرودهرم سمبهاوی" یعنی سب دهرموں کو ایک نگاه سے دیکھنے والے سب کی ایک برابر عزت کولے والے اور وهدت ادیان کے قابل تھے ۔ أولنچے سے أولنچے معنی میں ستچے دهرماتما یا کم سے کم دهرماتما هونے کی ترتیز کوشش کوئے والے وہ هو طرح کے ریتروائے کومکانت اور شرع اور منہاج سے بلیوں أوپو قع .

قائقر مرزا ابوالنفل همارے گرو تھے ۔ قوآن' محمد صاحب اور اِسلام کی بابت هم نے جو کچھ پڑھا اور سیکھا سب اُنھیں سے پڑھا اور سیکھا ۔ ھم نے اُن سے اور بھی بہت کچھ سیکھا ۔ وہ هم سے نئی سال بڑے تھے ، وہ اُننے سکے چھوٹے بھائی کی طرح هم سے پیار کرتے تھے ، هم اُنھیں سنیھ اور اُندر کے سابھ دادا کو آدر کے سابھ دادا کو کیدرآباد ( دکھن ) میں دادا ابوالنفل کا شریوآنت ہوگیا ،

حیدابان کے بھائی حسن الدین احمد نے همیں دادا ابوالفضل کے شریرآنت کی خبر دی ۔ جس خط میں آنہیں نے همیں به سوچنا دی اس میں آنہوں نے بھاوکتا کے ساتھ اور آنئی هی سچائی کے ساتھ لکھا ہے۔ 'مجھے آپ نو یہ بالانے کی ضرورت نہیں ہے کہ دادا کتابے بڑے آدمی کا لفظ آئر استعمال کرتے هیں اور خصوصاً اِنتقال کے بعد تو فرائع دلی سے یہ خطاب دے دیتے هیں ، لیکن جب میں مرزاصاحب کے لئے یہ لفظ استعمال کر رہا ہوں تو عام اِستعمال سے اِس کا کے لئے یہ لفظ استعمال کر رہا ہوں تو عام اِستعمال سے اِس کا منہوم ( مطاب ) بالکل مختف ہے ،''

پوچها جاسکتا ہے کہ مزأ أبولنفل نے لکھنے پرھنے کے علاوہ زندگی میں اور کھا کچھ کیا ؟ ھندن اِس سنبلدھ میں کیول تھوڑا سا ھی حال معارم ہے ۔ اُن کی زندگی عدن کے برتھی میںجسٹریٹ کی حیثیت سے شروع ھوئی ، دیرہ ھزار زریعہ تنخواہ رتبہ دیرہ اور زندگی کی

ामाम बासाइरों. मगर जिस बीब की दादा को सबसे ब्यादा इसरत थी-यानी आजाद ख्याली और रहानी सकून-इह उन्हें हासिल न था. नतीजा यह हुआ कि आला अफसरों के साथ मगड़े हये और मिरजा साहब ने नौकरी से इस्तीफा दे दिया. एसके बाद वे लकदीप, मालदीप के नवाब के यहाँ प्राइमिमिनिस्टर हो गये. नवाब साहब का मंत्रेष रेजीडेंट के साथ जो रवैया था वह मिरजा साहब को निहायत हतक-छामेज मालुम हुआ, प्राइममिनिस्टर की सियत से उनके अमल से अंग्रेज रेजीडेंट के साथ कजिये ग्रुक्त हो गये. नतीजा यह हुआ कि उन्होंने प्राइमिमिनिस्टरी से भी स्तीफा दे दिया. इस बार उन्हें बंगाल में सेंद्रल जेल की प्रपरिनटेंबेंटी का कास मिला, मगर अंमेज इन्सपेक्टर जनरल आफ प्रीजोन्स से उनकी 6 महीने भी न पढ़ी. नतीजा यह हुचा कि उस 800 रुपया माहवार की नौकरी से भी उन्होंने इस तरह हाथ खींच लिया मानो अचकन पर पड़ी हुई गर्द माद दी हो. उसके बाद वह बड़ीदा में सुपरिनटेंडेट आफ गेस्ट आफ्रिसेज हो गये. साल भर उन्होंने सुकून से नौकरी **डी, मगर कुछ मामलों को लेकर भारत सरकार के डाइरेक्टर** अनरत आफ पोस्ट आफिसेज से उनकी खटपट हो गई. बढ़ीदा सरकार इस मामले में मुक गई, मगर दादा के लिये बह इन्जत बाबरूका सवाल था और जब स्तीफा देकर घर नीटे तो उनके दिल में तसल्ली और ओठों पर मुस्कराइट थी. इस बार मिरजा साहब ने दूसरे सीरो की तलाश की. बे कारमीर में बारिकयालाजिकल दिपार्टमेंट के सुपरिनटेंडेंट हो गये. कारमीर में सुस्तान जैनुलबाबदीन ने जिस मिली ज़ुली करवर की नीव डाली उसके मुतारिलक मिरजा साह्य ने काफी दिलचरप आरकियालाजिकल खोजें कीं. जितने दिनों वह वहाँ रहे काश्मीर के पुरातत्व विभाग को उन्होंने मालामाल करने की कोशिश की, मगर इस बात को लेकर बन्हें सख्त तकलीफ हुई कि बावजूद बनकी मर्जी के खिलाफ छछ पुरानी मिली हुई चीजें काश्मीर में न रखकर ब्रिटिश म्युजियम लन्दन भेज दी गई. मिरजा साहब ने उदास होकर वहां से भी स्तीका पेश कर दिया श्रीर तब रोजी की तलाश छन्हें इलाहाबाद खींच ले आई. वे इलाहाबाद म्यु-निसिपैलिटी में पहले टैक्स सुपरिनटेंबेंट और फिर एज्केशन सुपरिनटें डेंट हुये. वक्त के साथ साथ जिन्दगी में लोगा की तन्साहों में इजाफा होता है मगर दादा के साथ बात दसरी थी. उन्होंने डेढ़ हजार महीना रुपये के साथ नौकरी शुरू की और पचास साल की उम्र में उनकी तन्खाह घटते घटते इलाहाबाद म्युनिसिपैलिटी में ढ़ाई सी हप्या महीने रह गई. षद्वैसियत एज्केशन सुपरिनटेंडेंट के उन्होंने प्रयाग महिला विद्यापीठ की बुनियाद डाली जो अब काफी बड़ी संस्था की शक्त में मौजूद है. वह जरमनी में लड़िकर्यी की संस्थाएं जिस शकल में चलती हैं उससे मिलती जुलती शकल में इस संस्था को चलाना चाहते

عمام آساتشیں ، ممر جس چیز کی دادا کو سب سے زیاده فرورت تبی سیمنی آزاد خیالی اور روهانی سکون وه أنهين حامل نه تها . نتيجه يه هوا كه اعلى أنسرون کے ساتھ جیکڑے ہوئے اور مہزا عادب نے نوکری سے اِستھفیل دے دیا ۔ اُس کے بعد وے لکدویپ مالدویپ کے نواب کے عہاں پرائم منستر ہو گئے . نواب صاحب کا انکونو ریزیڈنٹ کے ساتھ جو رويد نها ولا مرزا صاحب كو نهايت هتك أمهز معلوم هوأ . ورائم منستر کی حدثیت سے اُن کے عمل سے انگریز رمزیدنت کے سانھ قضنیء شروع هوگئے ، نايجة يه هوا كه أنهوں نے پرائم مستری سے بھی استدفئ دے دیا . اِس بار اُنہوں بنگال موں سلقرل جیل کی سپرنٹینڈینڈی کا کام ملا' مکر انکریز انسپکلار جِنْرُل آف برہزنس سے أن كي چه مهينے بهي نه پٽي، نتيجه ية هُوا كه اس 800 رويع ماهوار كي توكري سے يهي أنهيں لے إس طرح هاته كهينج لها مانو أچكن بر برق هرأي گرد جهاز دی ہو . اِس کے بعد وہ برودہ میں سپرنٹینڈیٹ آف یوسٹ آنسیو هر گئے سال بھر آنھوں نے سکون سے نوکری کی مگر کنچہ معاملوں کو ایکر بھارت سرکار کے قائیریکٹر جدرل آف پوست أنسيز سے أن ذي كيت يك هو كئي . يرودة سركار إس معاملة میں جھک گئے محر دادا کے لئے وہ عزت آبرو کا سوال تھا اور جب استیقی دیعر گهر لوئد تو أن كے دل میں تسلی اور ھونٹھوں پر مسکراھٹ تھی ، اِس بار مرزا صاحب نے دوسرے صیعے کی نقص کی . وے کا شمیر میں آرکیالجیمل دیارسات کے سیرٹینڈینٹ ہو گئے ، کاشمیر میں سلطان زین ااءابدین نے جس ملی جلی کلچر کی نیو قالی اِس کے متعلق مرزا صاحب نے كاني دلنجسب أرئيالجيال كهوجيس كيس، جننه دنوس وه وهاں رہے کاشمیر کے درانتو وبھاک کو مالا مال کرنے کی کوشھی كى، مكر إس بات كو ليمر أنهين سخت تعليف هوئي كه باوجرد ان کی مرضی کے خلاف کچھ پرانی ملی موٹی چیزیں کاشمیر میں نه رکه کو برقش میہزیم لندن بهیم دی گئیں . مرزا صاحب لے اُداس مو کر وهاں سے بھی اِستیفی پیش کر دیا اور تب روزى كى تلاش أنهين إله أباد كهينج اء أئى . و ع العاباد ميونسهلتي ميں بہلے تعيس سورنقنيديدك اور بهر ايجوركيشور سيرللدنينت هوأي ، وقت كي ساته ساته زندگي ميں لوگول كي تلخوراهوں میں اضافه هوتا هے مكر دادا كے ساتھ بات دوسرى تھی ۔ اُنہوں نے دیڑھ ہزار مہینہ روپھے کے ساتھ نوکری شروع کی ادر بحياس سال كي عمر مين أن كي تنخواه كتبت كتبت العاباد ميونسييلقي مين صاف تعالى سو رويد مهينه ره گئي . بحيثيت ایجوکیشن سورنتندنات کے اُنھوں نے پریاک مہدا ودیابیہ کی بنیاد دالی جو آب کافی بڑی سنستها کی شکل مهن سوجود ھے جرمنی میں لوکیوں کی سنستھائیں جس شکل میں چلتی هين أس سے ملتی جلتی شکل ميں ولا اِس سنستها کو چلاناچاهتے

थे, मगर म्युनिसिपैलटी में भला इतने यह आलिम और माज़ाद ख्याल आफीसर की गुंजाइश कैसे हो सकती थी ? नतीजा यह हुआ कि वहां की नौकरी से भी उन्होंने स्तीफ़ा दे दिया और आखिर में सन् 1936 में उन्हें हिन्दुस्तानी अकेडेमी में सौ रुपये महीने की प्रूफ़ रीढरी करनी पड़ी. मगर न उन्हें पंद्रह सौ रुपये की नौकरी का घमंड था और न सौ रुपये पाने का ग्रम. उनमें सख्ती इतनी थी कि कौलाद भी उनके सामने पानी हो जाय, मगर नरमी इतनी थी कि मक्खन भी उन्हें देखकर शर्मा जाय.

दादा मिली जुली हिस्दुस्तानी कल्चर के जबर्दस्त हामी थे. जैसा हमने उत्पर लिखा है कि एक तरफ वे वेदों और षपनिषदों और संस्कृत भाषा के महान पंडित थे तो दूसरी तरफ .कुरान मजीव, हदीसों और अरबी भाषा के ज्बर्दस्त मालिम. भला ऐसे आदमी की निगाहों में मजहबी फर्क कैसे रह सकते हैं ? वे कृष्ण को भी पैराम्बर मानते थे और चनकी शिक्ताओं को बहदतुल बजूद का हामी सममते थे, तो दूसरी और रसूल अल्लाह के पैरो. दोनों की यादगार में उन्होंने अपने बेटे का नाम कृष्ण मोहम्मद रखा. वह ज्माना फिर्क्वाबाराना तहरीक का जमाना था, इस पर बड़ी चैमीगोई और कानाफूसी हुई, फिर सस्त नुक्ताचीनी होने लगी. इस्लामिया और कुश्चियन कालिज के अधिकारियों ने नाम की वजह से लड़के को भरती करने से इन्कार कर दिया. मिरजा साहब ने सब बदाशत किया मगर सच्ची एकता का हामी कैसे अपने उसूलों से इट सकता था १ भरी जवानी में जब इस लड़के का इन्तकाल हुआ तो मिरजा साहब को बड़ा सखत सदमा पहुँचा, मगर दूसरी मुसीबतों की तरह इसे भी उन्होंने बद्दित किया.

मिरजा साहब के पास कभी कभी रायलटी का थोड़ा बहुत रुपया आ जाता था, मगर उनका बायां हाथ लेने में संकोच करता तो दायां हाथ इतना शाह-खर्च था कि बड़ी से बड़ी रक्षम चार दिन में लुट जाती. यतीमों, बेवाओं, धौर जरूरतमन्दों की फेहरिस्त वह लेकर बैठ जाते और सारी रक्षम साफ होजाती. जब उनसे पूछा जाता कि—

'दादा, सारी रक्तम आपने खर्च कर दी ?'' तो जवाब देते---

"भई ! हम तो अल्लाह वाले हैं और अल्लाह वाले पैसे जुगाड़ कर नहीं रखते. दूसरे दिन के लिये पैसे बचाकर रखने का मतलब है उस पाक परवर्दिगार की तरफ अपने ऐतकाद की कभी." और दादा ने इस उसूल का सारी जिन्दगी पालन किया.

.कुरान शरीफ़ के सम्पादन में उन्होंने बड़ी मेहनत की. नई बात उन्होंने यह की कि कलाम मजीद की आयतें बक्कत के लिहाज से जिस तरतीब से उतर्री उसी तरतीब تھے' مگر میونسپیلٹی میں بھلا اِقلے بڑے عالم اور آزاد خیال آنیسو کی گنجایش کیسے هو سکتی تھی لا شیجہ یہ ہدا کہ وهاں کی نوکری سے بھی آنہوں نے اِستینی دے دیا اُرَرَ آخر میں سن 1925 میں آنہیں هدستائی اکیدس میں سو روپیء مینی کوئی پڑی . مگر نے آنہیں پندرہ سو روپیء کی نوکری کا گھنڈ تھا اور نہ سو روپیء پائے کا غم ، اُن میں سختی اِتنی تھی که نواند بھی اُن کے سامنے پائی هو جائے' مگر نومی اِتنی تھی که مکھی بھی آنہیں دیکھ کو شرما جائے .

دادا ملی جلی هندستانی کلچر کے زبردست حامی تھے . جهسا هم نے آویر لعها هے که ایک طرف وے ویدوں اور آیاشدوں ارر سنسکرت بھاتھا کے مہاں بندت تھے۔ تو دوسرمی طرف قرآن مجدد کدیاتوں اور عربی بھاشا کے زبردست عالم ، بھا ایسے آدسی کی لگاهوں میں مذہبی ذی کیسے را سکتے هیں ؟ وہ كرشىكو بهى يهندبر مانته ته اور أن كى شكشاؤىكو وحدة الوجود لا حامی سنجهتے تھے' تو دوسری أور رسول الله كے بهرو. دونیں کی یادگار میں اُنہیں نے اپنے بیٹے کا غام کرشن محمد رقها ، ولا زمانه فرقهوارانه تصریک کا زمانه نها . أس در بری چهم گوئی اور کانایهرسی هوئی، پهر سخت نعتهچینی هوله لکی . اِسلامیه اور کرشچین کالبح کے اُدھیکاریوں نے نام کی وجه سے لوکے کو بھرتی کرنے سے اِنگار کردیا ، مرزا صاحب نے سب برداشت کیا مکر سچی ایکتا کا حاسی که سے اپنے اصولوں سے هد سكتا تها 9 بهرى جوائى ميں جب اس لوكے كا اِنتقال هوا تو مرزا صاحب کو برا سخت صدمه یهونیها مکر دوسری مصیبتون کی طرح اسے بھی انھوں نے برداشت کیا ،

مرزا صاحب کے پاس کبھی کبھی رأیلتی کا تھوڑا بہت رویعه آجاتا تھا' مگر اُن کا بایاں ہاتھ لینے میں سنکوچ کرتا تو دایاں ہاتھ اِن اُن کا بایاں ہاتھ کرتے ہیں منکوچ کرتا تو دایاں ہاتھ اِن اُن کہ بڑی سے بڑی رفم چار دن میں لگ جاتی ، یتیموں' بھواؤں اُور ضرورتمندوں کی فہرست وہ لیکر بیتے جاتے اور ساری رقم صاف ہوجاتی ، جب اُن سے پوچھا جاتا کہ۔۔

" دادا ٔ ساری رقم آپنے خرچ کردی ؟ " تو جواب دیتے —

"بہٹی! هم تو الله والے هیں اور الله والے پیسے جگارکر نہیں رکھتے ، دوسرے دن کے لئے پیسے بچاکر رکھتے کا مطلب ہے اس پاک پروردگار کی طرف اپنے اعتقاد کی کمی ." اور دادا نے اِس اُصول کا ساری زندگی پالن کیا .

قرآن شریف کے سپادن میں اُنہوں نے بڑی محمنت کی۔ نئی بات اُنہوں نے یہ کی که کلم مجید کی آاتیں وقت کے لحاظ سے جس ترتیب سے اُتریں اُسی ترتیب से उन्होंने हालात और बाक्ने आत की रोशनी में उनका खिलसिला बनाया. यह उस सिलसिले के खिलाफ था जो कलाम मजीव की आयतों का राइज सिलसिला है. इस पर मिरजा साहब की बेहद नुक्ताचीनी हुई, मगर बोरप और अमरीका वरीरा में मिरजा साहब के इस सिलसिले को बेहद पसन्द किया गया.

उनके होमियोपैथिक डाक्टर बनने की भी एक कहानी है. पंडित मोतीलाल नेहरू की जब बेकाम किताबें नीलाम हुई तो मिरजा साहब ने उनकी होमियोपैथी की किताबों का पूरा सैट साढ़े सात सी रुपये में ख़रीब लिया. आलिम तो बे ही, जो पढ़ना गुरू किया तो होमियोपैथी के इल्म की तह तक पहुँच गये. मौक्रा मिला तो तकरीहन हैदाबाद में होमियोपैथिक इलाज गुरू कर दिया. लोगों ने पूछा कि—

"वेद और क़ुरान पर भाष्य लिखना बन्द करके अब आपने दोसियोपैथी शुरू कर दी" ? तो बोले—

"इस मुल्क में इतनी गरीबी है कि लोगों के पास इलाज तक के लिये पैसे नहीं हैं. डाक्टरों की बेहद कमी है. मैंने सोचा चलो इसी बहाने लोगों की खिद्मत का मौक्रा मिले."

तीन चार महीने के अन्दर ही हैदराबाद में उनके इलाज की धूम मच गई. एक खानदानी नवाब साहब, जो असें से बीमार थे और अपने इलाज के सिलसिले में वियमा, बर्लिन और लन्दन की खाक छान आये थे, दोसों की सलाह मानकर मिरजा साहब के दबाखाने में हाजिर हुए. अल्लाह की कुदरत कि महीने भर में ही चंगे हो गये. जो काम वियमा के बड़े बड़े डाक्टर न कर सके वह मिरजा साहब के होमियोपेथी इलाज ने कर दिखाया. अच्छे होने के बाद एक दिन नवाब साहब चाँदी के थाल में पाँच हजार रुपये रखकर मिरजा साहब की जिदमत में हाजिर हुए. मिरजा साहब यह देखकर इतना घबराये माना बहुत बड़ी मुनीबत पेश आ गई हो. बड़ी आर्ज मिन्नत के बाद कुल एक रुपया फीस इ.बूल की.

मिरजा साहब में यह खूबी थी कि जिस काम को हाथ लगाते उसे खूबी से करते, मानो वही उनकी जिन्दगी का मक्रसद है. जमाने ने जब उनका इम्तहान लेना शुरू किया और इतना मुकाया कि वे पूफ्रीडर हो गये तब भी उनकी यह केफ़ियत थी कि दस-दस कम्पोजीटर कम्पोज करते थे और वह अकेले पूफ् देखते थे—पहला, दूसरा और फ़ाइनल—मगर कम्पोजीटर उन्हें हरा न पाते थे. वह अक्सर कहा करते थे कि "जो काम भी करो, खुरा होकर करो और उसके लिये अस्लाह का शुक्रिया अदा करा." सन् 1933 में कांग्रेस की 'कानपुर दंगा जाँच कमेटी' की रिपोट छापने के लिये कोई प्रेस बाला राजी न हुआ. जब्ती के क़ाबिल किताब

سے آنہوں نے حالات اور واقعات کی روشنی میں آن کا سلسله بنایا ،
یہ آس سلسلے کے خلاف تیا جو کلم متعید کی آئیتیں کا رائیج
سلسله ہے اِس پر مرزا صاحب کی بےحد تعتدچینی ہوئی' مکر
بہرپ اور امریکہ وغیرہ میں مرزا صاحب کے اِس سلسلے کو
بہرپ اور امریکہ وغیرہ میں مرزا صاحب کے اِس سلسلے کو
بہدت بسند کیا گیا ،

أن كے هومهوپيتهك ذاكتر بننه كى بهى ايك كہائى هـ . هنت مرتى الل تهرو كى جب يكام كتابهن تيلام هوئهن تو مرؤا صاحب نے أن كى هومهوپيتهى كى كتابون كا پورا سيت ساره سات سو رويئم ميں خويد لها . عالم تو تهم هـ ، جو پرهنا شروع كيا تو هومهوپيتهى كے علم كى ته تك پہوئىج گئم . موقع ملا او تفريحاً حيدرآباد مهى هومهوپيتهك علاج شروع كرديا ، لوگون نے بوجها كه—

"وید اور قرآن پر بهاشیه لکهنا بند کرنے آب آپنے هومیوپهتهی شروع کردی ۹ تو بولے--

''اِس ملک میں اِنٹی غریبی ہے کہ لوگوں کے پاس علاج ایک کے لٹے پیسے نہیں ہیں ، ڈاکٹروں کی پرحد لمی ہے ، میں نے سوچا چاو اِسی بہانے لوگیںکی خدمت کا موتع ملے ،''

تین چار مہیلے کے اندر ھی حیدرآباد بھر میں اُن کے علاج
کی دھوم میچ گئی ، ایک خاندانی تواب صاحب' جو عرصہ سے
بھار تھے اور اپنے علاج کے سلسلے میں وئیلا' بران اور للدن کی
خاک چہاں آئے تھے' دوستوں کی صلاح مان کر مرزا صاحب کے
دواخانہ میں حاضر ہوئے ، اللہ کی قدرت کہ مہیلے بھر میں ھی
چلکے ہوگئے ، جو کام وئیلا کے بڑے بڑے ڈائقر نہ کرسکے وہ مرزا
ماحب کے ہومیوریتھی علاج نے کر دیجایا ، اچھے ہوئے کے بعد
ایک میں قواب صاحب چاندی کے تھال میں پانچ ہزار روہائے
ریمکر مرزا صاحب کی خدمت میں حاضر ہوئے ، مرزا صاحب
یہ دیمکر اِتنا گہرائے مانو بہت بڑی مصیب یہ بھی آگئی ہو ،
بچی آرزومنت کے بعد کل ایک رویہ نہس قبول کی ،

مرزا صاحب میں یہ خوبی نبی کہ جس کام کو ہاتھ گاتے اس خوبی سے کرتے امانو وہی اُن کی زندگی کا مقصد ہے ، زمانے نبے جب اُن کا استحان لینا شروع کیا اور اِننا جہکایا که وحد پررف ریڈر ہوگئے نب ببی اُن کی یہ کیفیت تبی نه حس دس کمپرزیٹر کمپرز کرتے تبے اور وہ ائیلے پروف دیکھتے تبے سپہلا دوسرا اور نائنل سمئر کمپرزیٹر انبیں ہوا نہ پاتے تبے ، وہ اکثر دیا کرتے تبے که "جو کام ببی کرو خوش ہوکر کو اور اس کے نئے اللہ کا شکویہ اُنا دورا"۔ سن 1933 میں دنگریس کی 'کانپور دنگا جانے کمیٹی نئی رپورٹ چہانے کے دائریس کی 'کانپور دنگا جانے کمیٹی نئی رپورٹ چہانے کے دائل کااب

A Company of the second

کو بھا کہی چھاپتا ؟ دادا سے چرچا ھوئی' نورا تھار ھوگئے .
جو تھوڑی بہت پولجی تھی اُس سے ایک 'ماروا' نامکا پریس کھولا اور چھپائی شروع کردی ، راتوں دی اُس موثی پولس سراغ تک نه پاسکی ، جس دی ولا کتاب تھار ھوئی پولس سراغ تک نه پاسکی ، جس دی ولا کتاب تھار ھوئی اُسی دی اُس کی قریب تیزہ ھزار کابیاں ریاوے پارسل گھروں اور پوسف آنسوں میں ضبط کرلی گئیں ، مرزا صاحب کے پریس فیط کولیا گیا ، پرئی پارلیامینٹ میں اِس پر سوال کئے گئے مگر کوئی نتیجہ نه نکا ، پنے کی ھزاروں روہ نے کی پوتجی کھوکو بھی مرزا صاحب کو کوئی انسوس نه تھا بلکہ وے خوش تھے کھوکو بھی مرزا صاحب کو کوئی انسوس نه تھا بلکہ وے خوش تھے کہ اُس کے چند پیسوں کا مناسب اِستعمال ھوا ،

پی، ٹی، آئی کی رپررت کے مطابق چورا نوے برس کی عمو میں اُن کا انتقال ہوا ، آخری وقت تک اُن کی آنکیں' کان دانت اور دساغ صحیح صحیح کام کر رہے تھے ، نه گان کی آنکیں کی جیوتی کم ہوئی' نه ایک بھی دانت ہا کی آنکیں کی جیوتی کم ہوئی' نه ایک بھی دانت کو سو جاتا ہوں اور تین بچے سریرے اُنھ جاتا ہوں' پرانایام کرتا ہوں اور کیائے میں جس چیز نے مجھے بےحد فایدہ پہونچایا ہوں اور کیائے میں جس چیز نے مجھے بےحد فایدہ پہونچایا کہ ہیں اور شربت، مختلف طرح سے میئے بیل کو کہا کو دیکیا ہے اور میں یہ دعوی کے ساتھ کہہ سکتا ہوں نه میحت کے لئے اِس بہترین کوئی دوسری چیز نہیں ،

دادا ابولنفل سچے ارتبوں میں پہکر تھے ، سنا ہے مشہور امریکی فلانسر 'تهورو' بھی پہکر تھا' مکر دادا ابوالفال پھکروں کے سردار تھے ،

ایک طرف و ایک معمولی لوکی سے بھی زیادہ شرمیلے اور حد درجے کے کمگو تھے ، درسری طرف و اپنے کچھ آصولوں کے اتنے یک تھے کہ اِس پکے پن کی وجہہ سے ھی وہ کبھی دیر تک ایک جکہہ لہیں تکے ، اخر بڑھایے میں وہ حیدرآباد میں ھومھو پہتھک پریکٹس کرتے تھے اور بہت نامی ھومھوبیٹھ تھے ، سرسوتی کی شورع سے اُن پر ایار کریاتھی' پر آسی درجے نک لکشمی اُن سے ھیشہ ناراض رهیں ،

دادا ابوالنفل کے چرتر' اُن کے کیریکٹر' کو سمجھنے کے لئے اُن کے جیوں کی کچھ خاص خاص گھتناؤں پر نگاہ ڈالنا ضروری ہے ۔ ہم کیرا تین گھتنائیں نیچے دیتے میں:—

(1) پہلی گیٹنا پہلے مہایدہ کے دنوں کی ہے، مرزا ابولشل کا قرآن کا اسکریزی ترجمہ یورپ میں بہت مقبول ہو چکا تھا ۔ کئی ایڈیشن نکل چکے تھے ۔ صورت کے ایک پرکشک نے آن سے چھاپنے کا حق لے رکھا تھا ۔ پنچیس پرکشک نے آن سے چھاپنے کا حق لے رکھا تھا ۔ پنچیس

को भला कीन छापता ? दादा से चर्चा हुई, कीरन तैयार हो गये. जो थोड़ी बहुत पूँजी थी उससे एक 'मिनरवा' नाम का प्रेस खोला और छपाई छुरू करदी. रालाँ दिन उस मोटी रिपोर्ट को एक महीने में छाप कर उन्होंने तैयार कर दिया. पुलिस सुरारा तक न पा सकी. जिस दिन वह किताब तैयार हुई उसी दिन उसकी करीब देव हजार कापियां रेलवे पारसल घरों और पोस्ट अफ़िसों में जन्त करली गई. मिरजा साहब के मेस पर सरकारी वाला डाल दिया गया, और आखीर में प्रेस कव कर लिया गया. बिटिश पालियामेंट में इसपर सवाल किये गये सगर कोई नतीजा न निकला. पल्ले की हजारों रुपये की पूँजी खोकर भी मिरजा साहब को कोई अफ़सोस न था बल्कि वे खुश थे कि उनके चन्द पैसों का मुनासिब इस्तेमाल हुआ.

पी. टी. आई. की रिपोर्ट के मुताबिक चौरानवे बरस की एम में उनका इन्तकाल हुआ. आख़िरी बक्त तक उनकी आँखें, कान, दान्त और दिमारा सही सही काम कर रहे थे. न उनकी आंखों की ज्योति कम हुई, न एक भी दांत हिला. पूछने पर वह अक्सर कहा करते थे कि "मैं नौ बजे रात को सो जाता हूँ और तीन बजे संबरे उठ जाता हूँ, प्राणायाम करता हूँ और खाने में जिस चीज से मुक्ते बेहद फायदा पहुँचाया वह है—बेल, कच्चा बेल, भुना हुआ बेल, उबला हुआ बेल, पक्ते बेल का गूदा, उसका रस और शरबत. मुख्यिकिफ, तरह से मैंने बेल को खाकर देखा है और मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि सेहत के लिये इससे बेहतरीन कोई इसरी चीज नहीं."

दादा अञ्चलफ्जल सच्चे अर्थों में फक्कड़ थे. सुना है महाहूर अमरीकन पलास्फ्र 'थोरो' भी फक्कड़ था, मगर दादा अञ्चलफ्जल फक्कों के सरदार थे.

एक तरफ वह एक मामूली लड़की से भी जियादा शर-मीले और हद दरजे के कमगो थे. दूसरी तरफ वह अपने कुछ उस्लों के इतने पक्के थे कि इस पक्केपन की वजह से ही वह कभी देर तक एक जगह नहीं टिके. आखिर खुढ़ापे में वह हैदराबाद में होमियोपैथिक प्रैक्टिस करते थे और बहुत नामी होस्योपैथ थे. सरस्वती की शुरू से उनपर अपार कुपा थी, पर इसी दरजे तक लक्ष्मी उनसे हमेशा नाराज रहीं.

दादा अबुलफ्जल के चरित्र, उनके कैरेक्टर, को सममने के लिये उनकी जीवन की कुछ खास खास घटनाओं पर निमाह डालना जरूरी है. इस केवल तीन घटनाएँ नीचे देते हैं:—

(1) पहली घटना पहले महायुद्ध के दिनों की है. सिरका सबुलफ्जल का क़ुरान का अंग्रेजी तरजुमा यूरप में बहुत मक्क्ष्यल हो चुका था. कई एडीरान निकल चुके थे. सूरत के एक प्रकाशक ने चनसे छापने का हक ले रखा था. पच्चीस

( \$29 )

फ़ीसदी रायलटी तय थी. मामला तय होते बक्त मिरज़ा साहब ने अपनी जरूरत के अनुसार प्रकाशक से सात छी हपया पेशगी के लियेथे. होते होते रायलटी के बसीस हजार बपये मिरजा साहब के प्रकाशक की तरफ निकले. उन दिनों इलाहाबाद में मिरजा साहब को पैसे का कष्ट था. मिरजा साहब के दोस्तों ने उन पर बहुत जोर दिया कि वह अपने मकाशक की रुपये के लिये लिखें. वह बार बार इनकार करते रहे, इस दलील पर कि रुपया भेजना प्रकाशक का काम है. किसी तरह प्रकाशक को लिखा गया, जबाब नदारद. अदा-क्षप्त जाने के लिये मिरजा साहब से कहा गया. उनके लिये यस असम्भव था. नौबत यहां तक पहुंची कि बजाय मिरजा साहब को बत्तीस हजार देने के प्रकाशक ने उन पर सात सी इपये की सूरत में नालिश करदी. अदालत से नोटिस आयी कि आकर पैरवी करो नहीं तो एक तरफा डिगरी हो जायगी. मिरजा ने अदालत जाने से इनकार किया. सात सौ की यकतरफा डिगरी हो गई, इलाहाबाद क़रकी आई. मिरजा की एक भैंस और टाइपराइटर नीलाम हो गए. इंसी इंसी सब बरदाश्त कर लिया पर मिरजा अपने बत्तीस हजार के लिये घदालत नहीं गए.

- (2) दूसरी घटना इसके कुछ बाद की है. आर्थिक कध्यों के कारण भिरजा साहब ने इलाहाबाद म्युनिसिपैलिटी में टैक्स सपरिन्टेन्डेन्ट की नौकरी कर ली थी. पंडित जवाहर लाल नेहरू उन दिनों म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन थे. कायदा था कि जिस पर टैक्स वाजिब होजाय उसे नोटिस जाय श्रीर अगर वह खास तारीख तक टैक्स की रक्तम जमान करदे तो पानी काट दिया जाय. इलाहाबाद के तीन खास आदमी इस क्रायदे की जद में आगए,-एक पंडित मोती-लाल नेहरू, दूसरे इलाहाबाद हाई कोटें के चीफ जसटिस सर त्रिमवृह मीयर्स साहब श्रीर तीसरे श्रंत्रेज सुपरिन्टेन्डेन्ट प्रलीस, जाहिर है तीनों ने यह समक लिया होगा कि न्युनि-सिपैलिटी से कोई आएगा और खुद सलाम करके टेक्स की रक्तम ले आयगा. मिरजा यह कहां करने कराने वाले बे १ तीनों का पानी काट दिया गया, खास कर पंडित मोती लाल नेहरू के पानी कटने पर खासी चर्चा हुई. मिरजा इस्तीफा देने को तय्यार हा गये पर अपने उसूल पर इटे रहे. जब तक रक्षम उनके दक्तर में जमा नहीं हो गई पानी दोबारा जारी नहीं किया गया.
- (3) तीसरी घटना इससे भी अधिक महत्व की है. खास खास मुसलमान आलिमों के लिये कुछ मुसलिम रियासतों से वजीके बँधे हुए थे. कुछ दोस्तों की कोशिश से मिरजा साहब के लिये भी ढाई सी रुपये माहबार भाषाल से जीर चारसी रुपये माहबार हैदराबाद से बँध गए. इतने में गाँधी जी का असहयोग आन्दोलन ग्रुह्स हो गया. मिरजा

المعدى رايلتي طه تهي معامله طه هوتي وقت مرزأ صاحب لے آیئی ضروت کے انوسار پرکاشک سے سات سو رویقہ يبشكي له لله تهي هوتے هوتے رأيلتي كے بتيس هؤأر رویٹے مرزا صاحب کے برکاشک کی طرف نکلے۔ اُن دنين إلدآباد مين مرزأ صاهب كويهس كاكشت تها مرزأ ماهب کے دوستیں نے اُن پر بہت زور دیا که وہ اپنے پرکاشک کو رویٹے کے لئے نمیں ۔ وہ بار بار اِنکار کرتے رھے اُس دلیل پر که رویه بهیجنا برکاشک کا کام ہے ۔ کسی طرح برکاشک کو لکھا گیا ۔ جواب قراره وعدالت جانے کے لئے مرزا ماهب سه کها گها . اُن کے لئے یہ اسمبھو تھا ، نوبت یہاں تک پیونچی که بحواثے مرو! ماهب کو بتیس هزار دینے کے پرکاشک نے آن پر سات سو رویلے کی صورت میں تالص کر دیں . عدالت سے تواس آیا که اُکو پیروی درو نهیں تو یک طرفه تکری هو جائیکی ، مرزا لے عدالت جائے سے إنكار كيا ، سات سو كى يك طرفة دكرى هو گئی ، اِلله آباد قرقی آئی ، مرزا کی ایک بهینس اور ثایپ رائتر لیالم هو گئے ، هنسی هنسی سب برداشت کر ایا پر مرزأ اپنے بتیس ہزار کے لئے عدالت نہیں گئے۔

(2) دوسرى گهذنا إس كے كتي بعد كى هے، أرتبك كشارى کے کارن مرزا صاحب نے اِلعالیات میونسہائی میں ٹیکس سهرنتیندنت کی نوکری کر لی تهی ، پادے جواهر لال نهرو آن دئوں مهونسهالئی کے چهرمین تھ ، قاعد، تھا که جس پر ويكس واجب هرجائه أسع نولس جائه أور أكر ولا خاص الريخ تک ٹیکس کی رقم جمع نه کو دے تو پائی کاف دیا جائے ، إله الهاد كي تين خاص أدمى إس قاعده كي زد مين آكثه --ایک پندت مرتی الل تهرو دوسرے اِله آباد هائی کورے کے چیف جسمس سر گرمود مینرس صاحب اور تیسرے انگویؤ سیرنٹینڈینٹ یولس ، ظاہر ہے تینوں نے یہ سنجم لیا ہوگا کہ میونسپنقی سے کوئی آئیکا اور خود سلم کر کے ٹیکس کی رقم لے جائيكا، مرزا يه كيال كرلي كواني واله تعد ? تينوس كا پائي لات ديا گیا خامکر بندے موتی لال نہرو کے بائی کٹنے پر خاصی چرچا هوئي . مرزا استيني دينه كو تيار هو كانه ير ايني أمول يو دائه رھے . جب تک رقم أن كے دفتر ميں جمع فهيں هوگئي پائي دوباره جاري نهين کيا گيا .

(3) تیسری گیگنا اِس سے بھی اُدھک مہتو کی ہے ۔ خاص خاص مسلمان عالموں کے لئے کچے مسلم ریاستوں سے وظیفے بلدھ ھوئے نہے کچھ دوستوں کی کوشھ سے مرزا صاحب کے لئے بھی تھائی سو روپئے ماھوار حیدرآباد سے بندھ کئے ۔ اِنغے میں گاندھی جی کا اسہبوگ آندولن شروع ھو گیا۔ مرزا

साहब ने नवाव भोपाल और निजाम हैदराबाद दोनों की शिक्षा कि चँ कि मुल्क ने अंग्रेज सरकार से असहयोग शुरू कर दिया है इसलिये आप कोभी वाजिब है कि आप भी इस असहयोग में शामिल हो जांय और अवेज सरकार की इसकी इसला दे दें, और अगर आप ऐसा नहीं करते तो आप से बजीफा लेना मेरे लिए नाजायज है. इस पर भी भोपाल और दैदराबाद से मामूल के मुताबिक रुपये आए और मिरचा साहब ने वापिस कर दिये सोलह साल तक वजीके बन्द रहे. इस बीच मिरजा साहब की आर्थिक कठिनाइयाँ दिन दिन बद्ती गई, सन् 1935 के लग भग बनके कुछ बोस्तों ने निजा न सरकार से कोशिश की कि बजीफा फिर जारी हो जाय, निजाम सरकार ने जवाब दिया कि मिरजा अपने सन् 1919 के ख़त को वापिस लेलें तो वजीफ़ा फिर से जारी कर दिया जायगा. मिरजा तैयार न हुए. इस पर निजास साहब यहां तक राजी हो गए कि अगर मिरजा खुद बनके सामने आकर महज जवानी यह कह दें कि उनका सन् 1919 बाला खत रह सममा जाय तो इन सोलह बरस की पूरी राहम भी जो सत्तर हजार से ऊपर होती थी छ हैं दे वी जायगी और बाइन्दा के लिये भी चार सी रुपये माहबार जारी हो जांयगे. दादा अबुलफजल के दोस्तों ने, जिनमें हम भी शामिल थे, बहुतेरा समकाया पर दादा इसके लिये राजी न हुए. उनकी दलील यही थी कि-"वह स्त देश की आवाज पर लिखा गया था, वह वापिस नहीं हो सकता." इमें खूब बाद है कि उन दिनों दादा अबुल-फजन की आर्थिक कठिनाइयां किस हद को पहुँची हुई थीं. इनकी एक ज़ड़की उन दिनों तपदिक से बीमार थी और बावा के पास इसके इलाज और खराक के लिये पैसे नहीं बे. पर असल असल था !

ماحب نے نواب بھویال اور نظام حیدرآباد دونوں کو لتها که چېنکه ملک نے انکریز سرکار سے اسههرگ شروع کو دیا ہے اِس لٹے آپ کو یعی اِس اسپیوگ میں شامل هو جائين اور انكريز سركار كو اِس كي اطلاع دے ديں' اور اگر أب إيسا نهيس كرتي تو أب سه وظياته لينا مير، لله ناجايز في . اِس پر بھی بھویال اور حددرآباد سے معمول کے مطابق رویاء آئے اور مروا صاحب نے وایس کر دیٹے ، سواء سال تک وظیفه بند رہے اس بیچ مرزا ماحب کی آرتیک کٹینائیاں دن دن برهنی عمیں سن 1985 کے لگ بھگ أن كے كچه دوستوں نے نظام سرکار سے کوشھ کی وظیفہ پھر جاری ہوجائے ، نظام سرکار لے جراب دیا که مرزا اپنے سی 1919 کے خط کو واپس لے لیں تو وظیفتم بهر سے جاری کر دیا۔ جائیکا ، مرزأ تیار ته هوئے ، اِس ير تظام صاحب يهال تك راضي هوكله كه اكر مرزا خود أن كے ساملن آکر محض زبانی یه کهه دین که أن کا سن 1919 والا خما رن سمجها جائے تو اِن سوله برس کی پوری رقم بھی جوستر ھزار سے آوپر ھوتی تھی آنھیں دے دی جائیکی اور آئندہ کے لئے چار سو رویه، ماهوار جاری هو جائینکی، دادا ابرانفل کو درستس نے جن میں هم يهی شامل ته بهتيرا سنجهايا پر دادا اس کے لئے راضی نا موٹے . اُن کی دلیل یہی تھی کا--"رود خط دیھی کی آواز پر لکھا گیا تھا' وہ واپس نہیں ہو سعة ، " هميل خوب يان ه كه أن دنس داداً ابوالضل كي آرتهک کاهنائیاں کس حد کو پہوئنچی هوئی تهیں ، أن کی ایک اوئی اُن دنوں تپدی سے بیمار تھی اور دادا کے پاس أس كے علم اور خوراك كے لله يدسه نهدن تھ پر اصل اصول تها لي

हाथ से अफ़सोस ! दौरे जिन्हगी जाता रहा, भीत के हाथों न जाने खून कितनों का हुआ. कोई जाकर फिर नहीं लौटा कि लाता कुछ खबर, याँ से जाने वालों का अन्जाम आखिर क्या हुआ.

--- उमर खैयाम.

ھاتھ سے انسرس! دور زندگی جاتا رھا' موت کے ھاتھوں تھ جانے خوں کتنوں کا ھوا۔ کوئی جاکر پھر نہیں لوٹا که لانا کچھ خبر یلی سے جانے والوں کا انجام آخر کیا ھوا۔

**ب**وں 6ؤ'

سعبر خيام.

জুন 'ঠু6 ( 324 )

पंडित सुन्द्रलाल

پندت سندر لال

ناكا قوم

مين آگئي .

### नागा क्रीम

मारत की उत्तर पूरवी सीमा पर आसाम के पास चार स्वाधीन देशों की सरहदें मिलती हैं—भारत, पाकिस्तान, बरमा और जीन. देश की रक्षा के विचार से वह जगह ख़ास मार्के की है, इलाका अधिकतर पहाड़ी है, उसमें बड़े बड़े जंगल हैं जिनमें दूसरे जानवरों के अलावा हाथियों के मुंड के मुंड फिरते रहते हैं. इसी पहाड़ी इलाक़ में नागा कीम बसी हुई है. उनकी बहुत सी बस्तियां और गांव दूर दूर तक फैले हुए हैं. यह एक लगातार सिलसिलेवार इलाक़ है, पर हाल में जब बरमा हिन्दुस्तान से अलग किया गया तो नागा इलाक़ का एक हिस्सा बरमा में आ गया और दूसरा हिस्सा हिन्दुस्तान में रहा. इस तरह अपनी मरजी के खिलाफ नागा कीम दो दुकड़ों में कट कर दो अलग अलग हुकुमतों में आ गई.

जब से भारत आजाद हुआ है तब से नागा लोगों के साथ भारत सरकार के कुछ न कुछ भगड़े बराबर चलते रहते हैं. इस समय ये भगड़े एक हद पर पहुँचे हुए हैं. अखबारों में रोज नागा लोगों की ''बग़ाबत'' श्रीर भार-तीय कीजों द्वारा उनके दबाए जाने की खबरें श्राती रहती हैं.

धभी कुछ साल हुए अपनी चीन यात्रा के बाद हमें भी इस इलाक़े में जाने का मौका मिला, काहिमा में और कई जगह इस नागा गांवों में गए. इसने नागा लोगों और उनके सरदारों से बातें कीं, उनके स्कूल देखे. उनका खाना पीना, रहन सहन देखा. कोहिमा के नागा स्कूल में हमने भाषण भी दिया. वहां के भारतीय अफसरों से भी हमने उस इलाक़े के हालात मालूम किए. अपने ठहरने की जगह पर इसने बहुत से नागा नेताओं और दूसरे नागा लोगों से दिल खोल कर बातें कीं.

नागा क़ौम एक बहुत पुरानी क़ौम है जो आस पास की सभ्य क़ौमों में अपने को कभी पूरी तरह मिला नहीं पाई. उनके अपने रीति रिवाज हैं, अपनी बोली है, अपना पहनावा है, अपने पुराने ढंग के धार्भिक विचार हैं. उन्हें 'जंगली' या 'असभ्य' कहना केवल उन्हों अर्थी में ठीक हो सकता है जिन अर्थों में योरप के अधिकतर लोग लगभग सब अकरीक़ा और एशिया निवासियों को अभी तक जंगली और असभ्य कहते आए हैं. بھارت کی اُتر پورٹی سیما پر آسام کے پاس چار سوادھیں دیشوں کی سرحدیں ملتی ھیں۔ بھارت پائستان ہرما اُور چین ، دیش کی رکشا کے وچار سے وہ جگہ خاص معرکے کی ھا علقہ اُدھکٹر پہاڑی ھا اُس میں بڑے بڑے جنگل ھیں جن میں دوسرے جانوروں کے علاوہ ھانھیوں کے جھلڈ کے جھلڈ پھرتے رہتے ھیں ، اِسی پہاڑی علاقہ میں ناکا قرم بسی ھوئی ھے ، اُن کی بہت سی بستیاں اور کاؤں دور دور تک پویلے ھوئے ھیں یہ ایک لگاتار سلسلےوار علاقہ ھے، پر حال میں جب برما میں علیہ ایک کیا گیا تو ناکا علاقے کا ایک حصہ برما میں میں۔

جب سے بھارت آزاد ہوا ہے تب سے ناکا اوگوں کے ساتھ بھارت سرکار کے کنچھ نامہ کچھ جھگڑے برابر چلتے رہتے ہیں ۔ اِس سمے یہ جھگڑے ایک حد پر پہوننچے ہوئے ہیں ، اخباروں میں روز ناکا لوگوں کی ''بغارت'' اور بھارتیہ فوجوں دوارا اُن کے دہائے جانے کی خبریں آئی رہتی ہیں ،

آگها أور دوسوا حصه هندستان مين رها . إس طرح أيني مرضى

کے خلاف ٹاکا قرم دو ڈیمروں میں کٹکر در الگ الگ حکومتوں

ابھی کچھ سال ھوئے اپنی چین یاترا کے بعد ھمیں بھی اِس علاقے میں جانے کا موقع ملا۔ کوھیما میں اور نئی جکہ ھم ناگا گاؤں میں کئے ۔ ھم نے ناگا لوگوں اور اُن کے سوداوں سے باتیں کیں' اُن کے اِستول دیکھے ۔ اُن کا کھانا پینا' رھی سھی دیکھا ۔ کوھیما کے ناگا اِستول میں ھم نے بھائیں بھی دیا ۔ وھاں کے بھارتیہ انسروں سے بھی ھم نے اِس علانے کے حالات معلوم دئے ۔ کے بھارتیہ انسروں سے بھی ھم نے اِس علانے کے حالات معلوم دئے ۔ اُن تھھرنے کی جکہ پر ھم نے بہت سے ناگا نیتاؤں اور دوسرے اپنے تھھرنے کی جکہ پر ھم نے بہت سے ناگا نیتاؤں اور دوسرے ناگا لیتاؤں اور دوسرے ناگا لیتاؤں اور دوسرے ناگا لیتاؤں اور دوسرے

ناٹا قوم ایک بہت پرانی قوم ہے جو آس پلس کی سبھیہ قوموں میں اپنے کو کبھی پوری طرح ملا نہیں پائی ، اُن کے اپنے ریاترواج ھیں' اپنی بولی ہے' اپنا پہناوا ہے' اپنے پرانے تعنگ کے دھار کک وچار ھیں ۔ اُنھیں 'جنگلی' یا 'اسبھیہ' کہنا کیول اُنھیں ارتھوں میں ٹھیک ھوسکتا ہے جن ارتھوں میں یورپ کے اُنھیں اُرتھوں میں ٹھیک سب افریقہ اور ایشیا نواسیوں کو ابھی تک جنگلی اور اسبھیہ کہتے آنے ھیں ۔

मालूम होता है पिछले दो हजार साल में भारत के शासकों ने कभी भी नागा क़ौम को अपनाने, उनकी श्रार्थिक हालत को सुधारने या उनमें तालीम फैलाने की श्रार श्रधिक ध्यान नहीं दिया. श्रंगरेजी जमाने में सब से पहले यह काम योरप और अमरीका के ईसाई पाद्रियों को सुमा, इसमें कोई शक नहीं कि अधिकतर ईसाई पाद-रियों ने उस इलाके में बहुत अच्छा काम किया. लगभग 40 कीसदी नागा ईसाई हैं. आज नागा लोगों में तालीम का थोड़ा बहुत प्रचार है. उनमें बहुत से प्रेज़ुपट हैं. हमने बहुत से नागा मेजुएटोंसि बातें की हैं. आज नागा क्रीम एक काकी संगठित यानी मुनज्जम क्रीम है, उनमें आजादी से काफी प्रेम है. वह बहादुर हैं. उनमें त्याग का मादा है. वे बहुत बढ़े मेहमान नवाज हैं, सीधे सरल और सच्चे हैं. राजकाज और हुकूमतों के उसूलों को भी वे काकी समऋते हैं. उनमें कई ऐसे गुर्ण हैं जो अधिक सभ्य सममे जाने वाले आस पास के खौर लोगों में नहीं मिलते. मसजन हमने वहां की अदाल-तों के हिन्दुस्तानी अफसरों से मालूम किया कि किसी नागा के बयान के खिलाफ कभी गवाही नहीं ली जाती, क्योंकि कोई नागा कभी भूठ नहीं बोलता. अगर काई नागा किसी का सिर काट के आएगा तो जहां भी जरूरत पड़ेगी वह साफ साफ कह देगा कि उसने ऐसा किया श्रीर श्रपने वैसा करने का कारण भी बता देगा.

इसमें भी काई शक नहीं कि नागा लोगों को तालीम देने छीर कपर उठाने में सबसे बड़ा दिस्सा ईसाई पादरियों ने ही लिया है, फिर भी ईसाई नागों छीर ग़ैर ईसाई नागों में हमने बहुत अच्छा च्यवहार पाया. ईसाई होजाने के कारण उन्होंने अपनी क्षीम के बुनियादी गुण मिटने नहीं विये.

#### नागा और अंगरेज

हांगरेजी जमाने में श्रांगरेजों ने नागा लोगों को एक अधूरी आजादी दे रखी थी. श्रंगरेज हाकिम नागा लोगों के रीति रिवाजों, उनकी अपनी पंचायतों में किसी तरह का दखल नहीं देते थे. उनके आपसी मगड़ों में उनकी पंचायतों के फैसले होते थे. श्रंगरेजों की वहां छाविनयां थीं और यही उस देश को अपनी तरफ मिलाए रखने से उनकी खास रारज थी. फिर भी श्रंगरेजों की उस अधूरी गुलामी से अपने को आजाद करने की नागा बराबर कोशिश करते रहे. लड़ाइयां भी होती रहीं. श्रंगरेजों के लिए वह इलाका एक तरह से 'वफर' इलाका था, यानी पेसा सरहदी इलाका जिससे किसी पास के आजाद देश के साथ लड़ाई खिड़ने पर फायदा उठाया जा सके. दूसरे महायुद्ध के आजीर में कोहिमा और इमफल की लड़ाइयां दुनिया भर में प्रसिद्ध हो चुकी हैं. उनका हाल भी हमने वहां खुब सुना. पर वह

معلوم هوتا هے بعجیلے دو هؤار سال میں بھارت کے شاسکوں نے کیمی بھی ناکا قوم کو اینانے ' أن كى آرتهك حالت كو سدهارنے یا أن میں تعلیم پیدائے كى أور ادھك دعیان تہيں دیا . انگریزی زمالے میں سب سے پہلے یہ کام یبرپ اور امریک کے عیسائی پادریوں کو سوجھا ، اِس میں کوئی شک ٹیس که المعتر عيسائي پادريس نے اِس علاقے ميں بہت اچها كام كيا . لک بیک 40 نیصدی ناکا عیسائی هیں . آج ناکا لوگوں میں نعلیم کا تهروا بہت پرچار ہے ۔ اُن میں بہت سے گریجوئیٹ هیں . هم نے بہت سے دکا گریجوئیٹرں سے باتیں کی هیں . آج الله قوم ایک کافی سنکتهت یعلی منظم قوم هے . أن میں أزادی سه كافي پريم هـ . وه بهادر هول . أن مول تياك كا مادة هـ . وے بہت برے مہمان نواز هيں . سيدهے سرل اور سجے هيں . الجكلي اور حكومت كے أصوابل كو بھى وسے كافي سمجھتے هيں . أن میں نئی ایسے کی هیں جو ادمک سبهیه سنجھے جانے وآلے اُس پاس کے اور لوگوں میں نہیں ملتے ، مثلاً هم نے وهاں کی عدالتوں کے ہند، تائی انسروں سے معلوم کیا کہ کسی تاکا کے یمان کے خلاف کبھی گوانعی نہیں لی جاتی کیونک کوئی ناکا کبھی جهرت نہوں ہوالتا . اگر کوئی نہ کا کسی کا سو کات کے آبیکا دو جہاں بئی فرررت پڑیکی وہ ماف ماف کو دیکا کہ اُس نے ایسا کیا اور اپنے ویسا کرلے کا کارن بھی بتا دیگا .

اس میں ہی کوئی شک نہیں که نکا لوگوں کو تعلیم دینے اور اور اٹیانے میں سب سے براحصہ عیسائی پادریوں نے ھی لیا ہے۔ پہر بھی عیسائی ناگوں اور غیر عیسائی ناگوں میں ھم نے بہت اچھا رپومار پایا ۔ عیسائی ھوجانے کے کارن اُنہوں نے اپنی قوم کے بنیادی گی مثنے نہیں دیٹے ۔

#### ناكا أور انكريز

الکریزی زمانے میں انگریزرں نے ناکا لوگرں کو ایک ادھوری آزادی دسے رکھی تھی ، انگریز حاکم ناکا لوگرں کے ریسترواجوں اس کی اپنی پنچایتوں میں کسی طرح کا دخل نہیں دیتے تھے ، اُن کے آپسی جھکڑرں میں اُن کی پنچایتوں کے فیصلے آخری فیصلے ھوتے تھے ، انکریزرں کی وھاں چھاؤٹھاں تھیں اُور یہی اُس دیش کو اُپنی طرف مائے رکھنے سے آن کی خاص غرض تھی ، پھر بھی انکریزرں کی اُس ادھوری نائی سے اپنے غرض تھی ، پھر بھی انکریزرں کی اُس ادھوری نائی سے اپنے کو آزاد کرنے کی ناکا برایر کوشش کرتے رہے ۔ لڑائیاں بھی ھوتی رھیں ، انکریزرں کے لئے وہ تالقہ ایک طرح سے بفر 'فائدہ تھا ' یعلی ایسا سرحدی عالقہ جس سے کسی پاس کے آزاد دیش کے ساتھ لڑائی چھڑنے پر فایدہ آفیایا جاسکے ، دوسرے مہایدھ کے کے ساتھ لڑائی چھڑنے پر فایدہ آفیایا جاسکے ، دوسرے مہایدھ کے قبیر میں کوھیما اور اِمھل کی لڑانیاں دنیا بھر میں پرسدھ قبیر میں کوھیما اور اِمھل کی لڑانیاں دنیا بھر میں پرسدھ قبیر میں گوسی میں ، آن کا خال بھی ھم نے وھاں خوب سنا ۔ پر وہ

एक दूसरी लम्बी कहानी है. उन लड़ाइयों का दाल वहां के लोगों से सुनकर नागा लोगों के साथ हमारा प्रेम और हमारे दिल में उनके लिए आदर बढ़ा.

#### भारत वासियों से असन्तीष

भारत के आजाद हो जाने पर यह आशा की जाती थी कि भारत वासियों और नागा लोंगों में प्रेम बढ़ेगा जिससे दोनों को लाभ होगा; पर हुआ इसका ठीक उलटा. इमने इसका कारण जानने की भी कोशिश की. दो कारण हमें साफ दिखाई दिये.

पहला और बड़ा कारण यह था कि भारत की आज़ादी से पहले अधिकतर अंगरेज अफसर ही उस इलाक़े में जाया करते थे, हिन्दुस्तानी बहुत कम जाते थे, जो जाते थे वह भी एक मातहत रूप में. नागा लोग लगभग सब मांसाहारी हैं. उनका देश एक ठंडा देश है. केवल खेती की पैदाबार से शायद उनका काम भी आसानी से नहीं चल सकता, मांस खाने में वे एक जानवर और दूसरे जानवर में किसी तरह का फ्राफ़ भी नहीं करते. उनके लिए गाय और सूअर बरावर हैं. नागा लोग बहुत होशियार शिकारी होते हैं. सर्दियों भर खाने के लिए वे सैकड़ों मन जंगली जानवरों का गोशत सुखा सुखा कर और नमक लगा कर अपने घरों में रख केते हैं.

नागा आम तौर पर ताड़ी या शराब का भी इस्तेमाल करते हैं, सोम की पत्ती, जिसका वेदों में जिक आता है, हमने पहले पहल नागा इलाक़े में ही देखी. नागा लोग सोम रस खूब पीते हैं, वे बहुत मजबूत होते हैं. जिस्मानी मेहनत जितनी वे कर सकते हैं आम तौर पर भारत के दूसरे हिस्से के लोग नहीं कर सकते.

जबतक श्रंगरेज हाकिम वहां जाते रहे खान पान श्रादि की इन आदतों के कारण नागाओं में और उनमें खासी बनती रही. कम से कम इस मामले में दोनों में से किसी को दसरे से नफरत का कोई कारण न था. पर हमारी आजादी के बाद जब हिन्दू या मुसलमान हाकिम उस इलाक़े में जाने लगे तो एक नई बात पैदा हुई. हिन्दू अफ़सरों ने नागा लोगों से इसलिए घृगा दिखाना शुरू किया गूँकि नागा गो मांस खाते थे. नागा हाई स्कूल के हिन्दू अध्यापक इसी कारण नागा बच्चों को अपनी सुराही को हाथ नहीं लगाने देते थे. नागा घरों में जाना या दनके हाथ का भाजन स्वीकार करना तो हिन्दुओं के लिए कहां सम्भव या ? अपनी नफरत छिपाने की न उनमें तमीज थी श्रीर न इच्छा. इसी तरह मुसलमान अकसर उनसे इसलिए नफ्रत करते थे कि ने सूचर का मांस खा लेते थे, नतीजा क़द्रती था कि नफरतें बढती और चमकती चली गई. यह था भारत वासियों और मागा लोगों में रौरियत के बढ़ने का सबसे पहला कारण.

ایک دوسری لمبی کہائی ہے ۔ اُن لڑائیوں کا حال وہاں کے لوگوں سے سنکو ناکا لوگوں کے ساتھ عمارا پریم اور عمارے دل میں اُن کے لئے اُدر بڑھا ۔

#### بهارت واسيوں سے استوش

بھارت کے آراد هوجائے پر یہ آشا کی جانی تھی که بھارت واسھیں اور ناکا لرگوں میں پریم بڑھیکا جس سے دوٹوں کو لابھ ہوگا' پر هوا اِس کا کارن جانئے کی بھی کوشش کی ۔ دو کارن عمیں صاف دکھائی دیٹی ۔

پہلا اور ہزا کابی یہ تھا کہ بھارت کی آزادی سے پہلے ادھکتر الکریز انسر ھی اُس علانے مهں جایا کرتے تھے' ھلاستانی بہت کم جاتے تھے' جو جاتے تھے وہ بھی ایک ماتحت روپ میں ، نگا لوگ اگ اگ بیگ سب مانساھاری ھیں ، اُن کا دیش ایک تھنڈا دیش ھے ، کیول کھیتی کی پیداوار سے شاید اُن کا کام بھی آسائی سے نہیں چل سکتا، مائس کیائے میں وے ایک جانور اور دوسرے جانور میں کسی طرح کا فرق بھی نہیں کرتے ، اُن کے لئے گائے اور سور برابر ھیں ، ناکا لوگ بہت ہوشیار شکاری ھوتے ھیں ، سردیوں بھر کھائے کے لئے وے سیکڑوں میں جنگای جانوروں کا گوشت سکھا سکھائو اور نمک لگانو آپنے میں رکھ لیتے ھیں ،

ناکا عامطور پر نازی یا شراب کا بھی اِستعمال کرتے ھیں۔
سوم کی پتی' جس کا ویدوں میں ذکر آتا ہے' ھم نے پہلے پہل
قاکا علامے میں ھی دیکھی ، ناکا لوگ سوم رس خوب پھتے ھیں۔
وے بہت مضبوط ھوتے ھیں ، جسمانی متصات جتنی وے
کوسکتے ھیں عامطور پر بھارت کے دوسرے حصوں کے اوگ نبھیں
کوسکتے ھیں عامطور پر بھارت کے دوسرے حصوں کے اوگ نبھیں

جب تک انگریز حاکم وهاں جاتے رہے کہاں پان آدی کی اِن عادنوں کے کارن ناگراں میں اور اُن میں خاصی بنتی رہی واسے کم سے کم اِس معامله ویں دونوں میں سے کسی کو دوسرے سے نفرت کا کرئی کارن نہ تھا ۔ پر شماری آرادی کے بعد جب هندو یا مسلمان حاکم اُس علائے میں جائے لیے تو ایک نئی بات پیدا ہرئی ۔ هندو اسروں نے ذکا لوگوں سے اِس لئے گھرنا دکھانا شروع کیا چونکہ ناگا کو مانس کہاتے تھے ۔ ناگا ھائی دیات نہیں اگانے دیتے تھے ۔ ناگا گھروں میں جانا یا اُن کے اسکول کے هندو ادھیاک اِسی کارن ناگا بچوں کو اپنی صراحی کو هاتو نہیں اگانے دیتے تھے ۔ ناگا گھروں میں جانا یا اُن کے اپنی نفرت چہوانے کی نہ اُن میں تمیز تھی اور نہ اِچھا ۔ اپنی طرح مسلمان ادسر اُن سے اِس لئے غرت کرتے تھے کہ وے اسی طرح مسلمان ادسر اُن سے اِس لئے غرت کرتے تھے کہ وے اور چمکتی چلی گئیں ۔ یہ تھا بھارت واسھوں اور ناگا لوگوں میں غیریت کے بڑھنے کا سب سے پہلا کارن ۔

दसरा कारण जो इसी से सम्बन्ध रखता है यह था कि कुछ विदेशी खासकर अमरीकी पादरियों ने, जो शायद श्रपने यहां की सरकार के छिपे दबे एजेन्ट भी थे. इस हालत से बेजा फायदा बठाने की कोशिश की. उन्होंने नागा लोगों को समकाया कि तुम्हारी कभी भी इन हिन्द और मुखल-मानों से नहीं बन सकती, जबिक हम श्रीर तुम इन मामलों में विलकुल एक हैं और अच्छी तरह मिल कर रह सकते है. हमारे वहां जाने से थाड़े ही निदों पहले इस तरह की अमरीकी खाजिशें हद को पहुँच चुकी थीं. हमने अमरीकी पादरियों से भी बातें कीं. बात ऋद्रती थी. जहां घा बहोगा वहीं सक्खी बैठेगी.

हम खुद शुद्ध निरामिष भोजी हैं. नागा इलाके में भी हम शुद्ध निरामिष भोजी रहे. लेकिन हमने उनसे परहेज की जगह प्रेम बरता, उनके उन्हीं मांस खाने वाले हाथों से हमने उनसे पानी लेकर पिया और उनके घर के बने हुए खाने, जो हम खा सकते थे, उनसे लेकर खाए, नागा लोगों **भीर उनके ईस**ई प्रेज़ुएटों ने हमारे ठहरने के\_स्थान पर श्रा **ब्याकर ब्यांस बहा बहाकर हमसे कहा है कि अगर उनके** साथ इस तरह का बरताब किया जाता तो नागा इलाक़े को अलग करने की तहरीक कभी भी पैदा नहीं हो सकती थी. वहां से आकर आसाम के और दिल्ली के जिन हाकि-मों से हमें मिलने का मौका मिला उन्हें हमने यह सलाह दी कि हमारी राय में कोई ऐसा हिन्दू या मुसलमान, फौजी या शहरी अफसर या अध्याप ह इस इलाक़े में नहीं भेजा जाना चाहिए जो हुआ छत बरतता हो या जो भले, नेक और बहादुर नागा लोगों को हिन्दू धर्म या 'इसलाम में लाने के चकर में हो. पर जाहिर है कि हमारी आवाज नक्कार-खाने में तूती की आवाज थी, या ऊपर के हाकिम ख़द अपने नीचे वालों को क़ाबू में रखने में नाकाम रहे.

भारत से जो श्रफसर उस अभागे इलाक़े में जाते रहे हैं इनमें से बहुत सों की योग्यता और सहाचार के खिलाफ भी काफी बार्ते सनने में आई है.

नागा इलाके का स्वाधीनता आन्दोलन बदता जा रहा है. उस ज्ञान्दोलन की बाबत तरह तरह की राज़त फहिमयां देश भर में फैली हुई हैं श्रीर राज श्रखवारों में निकलती रहती हैं. असलीयत कम सामने आ पाती है. हाल में "टाइम्स आफ इंडिया" के 13 मई के अंक में श्री हरीश चन्दोला का एक लेख निकला है जिससे नागा इलाक़े के श्रमली हालात पर काफी रोशनी पड़ती है.

#### हिन्दू साम्प्रदायिकता

श्री चन्दोला के अनुसार भी एक बड़ा कारण इस मंगड़े के बढ़ने का बहुत से हिन्दू अफ्सरों और हिन्दू अध्यापकों में हिन्द्रत्व की बेजा भावना थी. वे ईसाई धर्म को एक विदेशी

دوسرا کابن جو اِسی سے سمبندھ رکھتا ہے یہ تھا کم کھے وديشي خاصكر أمريكي يادريون لي جو شايد أينے يہاں كي سركار ك جهيد دير أيجينت بهي تيك إس حالت سه برجا نايده أَنْها لِي كُوشِهِ كَي أَنْهِن لِي ثَامًا لَوْكُون كُو سَنَجَايَا كُمُ قمهاری کبھی بھی اِن هندو اور مسلمانوں سے نہیں بن سکتی، جبعه هم أور تم إن معاملون مين ايك هين أور أجهى طرح مل کر رہ سکتے ھیں ، ھمارے وھاں جائے سے تھوڑے ھی دنوں پہلے اِس طرح کی امریکی سازشیں حد کو پہونیج چکی تھیں . هم نے امریکی ہلاریوں سے بھی ہاتھی کیں ، بات فدرتی تھی ، جهال گهاؤ هوکا وهيل مکهي ديٽه يکي .

هم خود شده نرامش بهوجی هیں ، ناکا علاقہ میں بھی هم شدہ نرامعں بھوجی رہے ۔ (یکن هم نے اُن سے پرهیز کی جگہہ پریم برتا ۔ اُن کے اِنھیں مائس کھانے والے ھانوں سے هم نے اُن سے یائی لیکر بیا اور اُن کے گھر کے بنے ہوئے کھانے' جو ہم کھا سكتے تھے؛ أن سے ليكر كھائے ، أناكا لوگوں أور أن كے عيسائي گریجوئیڈوں نے همارے تھہرنے کے استہان پر آ آ کر آنسو بہا بہا كر هم سے ديا هے كه اكر أن كے ساتھ إس طرح كا برتاؤ كيا جانا تو ناکا علاقے کو لگ کرنے کی تعدریک کبھی بھی پیدا نہیں ہو سکتی تھی ، وهاں سے اگر اسام کے اور دلی کے جن حکموں سے ھیوں ملنے کا موقع ملا اُنہوں ہم نے یہ صلاح دی که ہماری رائے مين كوئى أيسا هندو يا مسلمان ووجي يا شهرى افسريا اده یایک اس علانے میں نہیں بہیجا جانا چامئے جو چھواچھوت بوتنا هو یا جو بهوای نیک اور بهادر زناکا نوگوں کو هندو دهرم یا اسلام میں لانے کے چکر میں هو ، پر ظاهر هے که هماری أواز انقار خانے میں طوطی کی آواز تھی یا آوپر کے حاکم خود آیے نیسے والوں کو قابو میں رہنے میں ناکام رہے ۔

بھارت سے جو افسر اُس ابھاکے علانے میں جاتے رہے میں اُن مھی سے بہت سوں کی ہوگیتا اور سداچار کے حالات بھی اکافی باتين سننے میں ائی هیں ،

ناكا علاقه كا سوادهينال أحدولن برَعاا جا رعا هـ. أس أندولن کی بابت طرح درے کی فاط فہمیاں دیس بھر میں پیھلی موئی هیں اور روز احباروں میں نکلتی رعتی هیں، اصلیت کم سامنے آیاتی ہے ، حال میں ''ٹائمس آف اِنڈیا'' نے 13 مئی کے انک میں شری هریش چندولا کا آیک لیکھ نکلا ھے جس سے ناکا علاتے کے اصلی حالات پر کانی روشنی پرتی ہے .

#### هدو سامهردایکتا

شری چندولا کے انوسار بھی ایک بڑا کارن اِس جاڑے کے ہوھنے کا بہت سے هندو انسروں اور هندو ادعیابکوں میں عندتو کی پیجا بهاؤنا نهی و دم عیسائی دهرم کو ایک ودیشی

taryon and the second

चर्म और सब ईसाइयों को रौर सममते थे और 'हिन्दुस्तान हिन्दुओं का' के संकीण विचार में कम या अधिक रंगे हुए थे. हमें इसका खुद काफी तजरवा है. हमें मालूम है कि गोआ के मामले को अधिक पेचीदा बनाने में भी कुछ संकीण विचार भारत वासियों की इस भावना ने बहुत बड़ा हिस्सा लिया है. हमें इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस समय इस देश का सब से बड़ा रोग, जिसने कशभीर में, नागा इलाक़े में, गोखा में और जगह जगह कठिनाइयां पैदा की हैं और करता रहता है, साम्प्रदायिकता का रोग है. महात्मा गाँधी के बिलदान के बाद भी देश इस रोग से पूरी तरह छुटकारा नहीं पा सका.

#### सन् 1948 का समभौता

नागा लोग ग्रुरू में भारत से अलग होना नहीं चाहते थे. जितना नागा इलाका इस समय भारत के अन्दर है वह तीन दुकड़ों में बँटा हुआ है-तिरप और खेनसांग की बिबीजनें जो उचर पूर्व सरहदी एजेंसी में शामिल है और नागा पहाड़ी जिला जो आसाम में शामिल है. सन् 1948 में आसाम के गवनेंर सर अकबर हैद्री और नागा नेशनल काउन्सिल के बीच एक ससमीता हो गया था जिसपर दोनों तरफ के दस्तखत हो गए थे. समभौता यह था कि इन तीनों नागा इलाक्नों को मिलाकर एक कर दिया जाए श्रीर उस पूरी नागा रियासत को ठीक वही अधिकार दे दिए जायें जो पास की मनीपुर श्रीर त्रिपुरा रियासतों को मिले हुए हैं. नागा लोग इस शर्त पर खुशी से इंडियन यूनियन में रहने को तैयार थे लेकिन सममीते के थांड़े दिनों बाद ही कुछ सोचकर घासाम सरकार श्रीर दिल्ली सरकार दोनों ने उसे मानने से इनकार कर दिया. श्री हरीश चंदाला का कहना है कि इस बाजाब्ता समभौते को तोड़ने का कोई कारण नहीं बताया गया.

#### भारत का विधान और नागा

इससे नागा लोगों में बेऐतबारी और बद्दिली का फैलना कुद्रती था. वे फिर भी धीरज के साथ भारत के नये विधान का इन्तज़र करते रहे. सन् 1950 के नये विधान ने उन की रही सही आशाओं पर भी पानी फेर दिया. तीनों नागा इलाक़े एक दूसरे से अलग रखे गए, उन्हें मिलाने के बजाय नागा पहाड़ी जिले की एक जिला काउन्सिल बना दी गई जिसके सिपुद उस जिले का शासन कर दिया गया. इस जिला काउन्सिल के मेम्बर जुनने का अधिकार नागाओं को दिया गया. लेकिन नागा लोग अपने देश का प्रबन्ध सिद्यों से एक अजीव ढंग से करते आए हैं. उनका सारा शासन गांव पंचायतें के आधार पर है. हर गांव में उनकी अलग अलग पंचायतें हैं; हर पंचायत अपने इलाक़े का पूरा शासन

دھوم اور سب عیسائیوں کو غیر سمجھیتے تھے اور 'ھندستان 
ھندوں کا' کے سنعیوں رچار میں کم یا آدھک رنام ھوئے تھے ۔
ھمیں اِس کا خود کانی تجزیہ ہے ۔ ھمیں معلوم ہے تھ گوآ کے 
معاملے کو ادھک پیچیدہ بنائے میں بھی کچھ سنکیوں وچار 
بھارت راسیس کی اِس بھاؤنا نے بہت بڑا حصہ لیا ہے ۔ ھمیں 
اِس میں کوئی سندیہہ نہیں کہ اِس سمئے اِس دیش کا سب 
سے بڑا روگ' جس نے کشمیر میں' ناکا علاقے میں' گوآ میں 
اور جگہہ جگہہ کالمنائیاں پیدا کی ھیں اور کوتا رھتا ہے سامیودایکتا 
کا روگ سے بوری طرح چھاگارا نہیں یا سکا ،

#### سن 1948 كا سىجهوتە

ناگا لوگ شروع میں بھارت سے انگ ھونا نہیں چاھتے تھے ، چتن ناگا علاقہ اِس سمئے بھارت کے اندرہے وہ تین تکروں میں بنتا ھوا ہے۔ بھر جدی ایجینسی میں شامل ھیں اور ناگا پہاڑی ضلع جو آدا پوروی میں شامل ہے ، سی 1948 میں آسام کے گوئر سر انہر حدری اور ناگا نیشائل کاؤنسل کے بیچ ایک سمجھوته ہو گیا تیا جس پو دونوں طرف کے دستخط ہوگئے تھے ، سمجھوته یہ گیا تیا تیا کہ اِن تینوں ناگا علاقوں کو ملا کو ایک کو دیا جائے اور اُس پرری ناگا ریاست کو تھایک وھی اندیکار دے دائے جائیں جو پاس پرری ناگا ریاست کو تھایک وہی اندیک کو ملے ھوئے ھیں ، قاگا لوگ ایس شرط پر خوشی سے اِنڈین یونین میں رھنے کو تھار تھے لیکن ایس شرط پر خوشی سے اِنڈین یونین میں رھنے کو تھار تھے لیکن کرنی سرکار دونوں نے آسے ماننے سے اِنکار کر دیا ، شری ھریش دئی بیٹی سرکار دونوں نے آسے ماننے سے اِنکار کر دیا ، شری ھریش دنیں بتایا گیا ،

#### بهارت کا ودهان اور ناکا

اِس سے ناکا لوگوں میں بے اعتباری اور بددای کا پھیلنا قدرتی اللہ اور میں بے اعتباری اور بددای کا پھیلنا قدرتی سے ، وہ پور بھی دھیرج کے سانھ نئے ودھاں کا انتظار کرتے رہے ، سن 1950 کے نئے ودھاں نے اُن کی رھی سپی آشاؤں پر بھی پانی پہیر دیا ۔ تینوں ف کا علائے ایک دوسرے سے الگ رکھے گئے ، اُنہیں ملانے کے بجائے ناکا پہاڑی ضلع کی ایک ضلع کاؤنسل بنا دی گئی جس کے سپرد اُس ضلع کا شاس کو دیا گیا ، اِس ضلع کا شاس کو دیا گیا ، اِس ضلع کا شاس کو دیا گیا ، اِس کائی کے مسر چننے کا ادھیکار فاکاؤں کو دیا گیا ۔ لیکن ناکا لوگ اپنے دیش کا پرہندہ صدیوں سے ایک عجیب تھنگ سے کرتے آئے ھیں ۔ اُن کا سارا شاسی گؤن پنجایتوں کے آدعار پر شے ، ھر گانی میں اُن کی الگ پنجایتوں کے آدعار پر شے ، ھر گانی میں اُن کی الگ

سَفِقتم في يه سب ينجايتين بهت بريم كي ساته ملكر رهتي أور كلم كرتى هين ليكن كوئى أيك مركزى طاقت إن سب پر حکم چلانے والی وعال کبھی نہیں رھی ، ناکا لوگوں کو للة يه يسلد في أور ثنه إس كي فرورت معلوم هوتي هي. دوسري پرائی قرموں کی طرح وے شعتی و ادھیکار کو ایک آدم یا ساستھا کے هاته میں دینا نہیں چاهنے اسے بائث کر اور بھیلا کر رکھنا پسان کرتے میں . سچی لوک شاهی ( دیمُو کُریسی ) کے یه چهر زیاده نودیک معارم هوتی هے . نئی ضاح کاؤنسل اُنهیں اینی اِن ینجایتوں کے ادھیکاروں پر بہت ہڑا حملہ داہائی دی ۔ قدرتی طور پر ناکا نوم کے سب لوگرں نے ضام کاؤنسل کے جناء کا بانکات کیا . ظاهر هے که هم نے ان کے ائے ودهان بنانے سے پہلے اُنھیں پریم اور سہائوبھوتی کے ساتھ سمجھنے کی کوشش فہیں کی . أن كے چناؤں كے بانكات كو هم نے بھارت كے سانھ "ابغارت" سمجها ، اینی أوچتا کے جهوتے گهملت میں هم لے أن کے آنتوک شاسی اور ریت رواجوں میں بھی بیجا دخل دینا شروع كيا ، نفرت أور أوشواس برتعمًا چا كيا ، أخر ناكا لوكون له طے کو لیا کہ سوائے ایک انگ سوادھیں ریاست کے اور کسی طرح رے اپنے سیکورں برس کے وچاروں ریت رواجوں اور اپنی كلحير كو فايم نهيس رام سكته .

قاگا لوگ اِس پر بھی یہی چاہتے رہے کہ وے شانتی کے ساتھ بات چیت کر کے سب معاملوں کو طے کر لیں ،

اُٹھوں نے بار بار چاھا کہ اُٹھیں اُپنے وچار بھارت سرکار کے سامنے رکھنے کا موتح دیا جارے کو اُن کی سنائی تھ ھو سکی ۔

#### شری جواهر لال نهرو کی کو هیما یانوا

ناگا لوگوں نے سوچا کہ اگر پردھان منتری شری بجواھر لال نہرو ایکبار اُن کی بات سن لیں تو اُن کے سب دکھ دور ھو جائیں، مارچ سن 1953 میں جواھر لال جیکے اُس علانے میں جانے کی خبر پہلی ، ناگا لوگ بہت خوش تھے ، اُنھوں لے اِسے اپنے لئے برا موتم سمجھا ، 31 مارچ کو جواھر لال جی کوھیما پہونچنے والے تھے ، ناگا نشنل کاؤنسل نے اِس خبر کو اپنے ایک ایک گئن تک پہونچا دیا ، دور دور کے گؤن سے لگ ایک ایک گئن تک پہونچا دیا ، دور دور کے گؤن سے لگ سفر کر کے بھارت کے پردھان منتری کا سواکت کرنے کے اُئے کوھیما میں جمع ھوئے ، وے سب اپنے اچھے سے اچھے لبلس میں تھے ، میں جمع ھوئے ، وے سب اپنے اچھے سے اچھے لبلس میں تھے ، سادی دستکاریوں کی اِس طرح کی سندر چھؤیں تھیں جو وہ جواھر لال جی کو بھیلت کرنا چاھتے تھے ، تطار بائدھ' خوشی سے بھرے ھوئے وے سرک کے دونوں طرف کھڑے تھے ، تطار بائدھ' خوشی سے بھرے ھوئے وے سرک کے دونوں طرف کھڑے تھے ، لگ بھگ یہ سب بھرے ھوئے وے سرک کے دونوں طرف کھڑے تھے ، لگ بھگ یہ سب بھرے ھوئے وے سرک کے دونوں طرف کھڑے تھے ، لگ بھگ یہ سب بھرے ھوئے وے سرک کے دونوں طرف کھڑے تھے ، لگ بھگ یہ سب بھرے ھوئے وے سرک کے دونوں طرف کھڑے تھے ، لگ بھگ یہ سب بھرے ھوئے وے سرک کے دونوں طرف کھڑے تھے ، لگ بھگ یہ سب بھرے ھوئے وے سرک کے دونوں طرف کھڑے تھے ، لگ بھگ یہ سب بھرے ھوئے وہ سرک کے دونوں طرف کھڑے تھے ، تھوالہ لال جی کو اپنے اپنے گوئی یا برادری کے حکومی سے دوراہ والے جی کو اپنے اپنے گؤئن یا برادری کے حکومیا تھے ، وے جواھر لال جی کو اپنے اپنے گئن یا برادری کے حکومیا تھے ، وے جواھر لال جی کو اپنے

पकाती है. ये सब पंचायतें बहुत प्रेम के साथ मिलकर रहती भीर काम करती हैं, लेकिन कोई एक मरकजी ताकत इन सब पर हुक्स चलाने बाली बहाँ कभी नहीं रही नागा लोगों को न यह पसन्द है और न इस की जरूरत मालूम होती है. दूसरी पुरानी क्रौमों की तरह वे शक्ति या अधिकार को एक आदमी या संस्था के हाथ में है देना नहीं चाहते, उसे घाँटकर चीर फैलाकर रखना पसन्द करते हैं. सच्ची लोकशाही (डेमोक्रेसी) के यह चीज जियादह नजदीक मालूम होती है. नई जिला काउन्सिल उन्हें अपनी इन पंचायतों के अधिकारों पर बहुत बड़ा हम-ला दिखाई दी. क्रदरती ती रपर नागा क्रीम के सब लोगों ने जिला काउन्सिल के चुनाव का बायकाट किया. जाहिर है कि हमने उनके लिए विधान बनाने से पहले उन्हें प्रेम और सहात्रभृति के साथ सममने की कोशिश नहीं की. उनके चनाव के बायकाट को हमने भारत के साथ "बरावत" सममा, अपनी उच्चता के भूठे घमन्ड में हमने उनके भान्तरिक शासन भीर रीति रिवाजों में भी बेजा दखल देना श्रुक्त किया. नफरत चौर अविश्वास बदता चला गया. आखिर नागा लोगों ने तय कर लिया कि सिवाय एक अलग स्वाधीन रियासत के और किसी तरह ने अपने सैकड़ों बरस के विचारों, रीत रिवाजों और अपनी कलचर को क्रायम नहीं रख सकते.

नागा लोग इसपर भी यही चाहते रहे कि वे शान्ति के

साथ बातु जीत करके सब मामलों को तय क्र लें.

डन्होंने बार बार चाहा कि उन्हें अपने विचार भारत सरकार के सामने रखने का मौक्रा दिया जाने, पर उनकी सुनाई न हो सकी.

#### भी जवाहरलाल नहरू की कोहिमा यात्रा

नागा लोगों ने सोचा कि ऋगर प्रधान मंत्री श्री जवाहर लाल नहरू एक बार उनकी बात सुन लें तो उनके सब दुख इर हो जायें. मार्च सन् 1953 में जवाहर लाल जी के उस इलाक़े में जाने की खबर फैली, नागा लोग बहुत खुश थे. उन्होंने इसे अपने लिए बहुत बढ़ा मौक़ा सममा. 31 मार्च को जवाहरलाल जी काहिमा पहुँचने वाले थे. नागा नेशनल काउन्सिल ने इस खबर को अपने एक एक गांव तक पहुंचा दिया. दूर दूर के गांव से लगभग चौदह हजार नागा कई कई दिन तक पहाड़ों चीर जंगलों का सफर करके भारत के प्रधान मंत्री का स्वागत करने के लिए कोहिमा में जमा हए. बे सब अपने अच्छे से अच्छे लिबास में थे. हरेक के हाथों में उनके जंगलों, खेतों और सीधी सादी दस्तकारियों की इस तरह की सुन्दर चीजें थीं जो वह जवाहरलाल जी को भेंट करना चाहते थे. क़तार बांधे, ख़ुशी से भरे हुए वे सहक के दोनों तरफ खड़े थे. लगभग यह सब अपने अपने गांव या बिर।इरी के मुखिया थे. वे जवाहरलाख जी को अपने

. बेहमान के रूप में देखते थे और नागा कीम के लोग बड़े जबरदस्त मेहमान-नवाज मशहर हैं.

पर जबाइरलाल जी कें पूर्व चने के चन्द मिनट पहले नागा पहादी जिले के डिप्टी कमिश्नर ने छन सब नागा कोंगों को यह नोटिस दिया कि श्री जबाहरलाल नहरू न आप लोगों का कोई मान-पत्र लेंगे और न आप की कोई मेंट स्वीकार करेंगे.

नागा क्रौम श्रीरं उनके मुखियों के दिलों को इससे बहुत बडी चोट लगी.

ठीक इस समय जब जबाहरलाल जी बरमा के प्रधान मत्री युन्त के साथ मंच पर चढ़ रहे थे, चौदह हजार नागा निराश और दुखी अपने अपने घरों को बापिस जा रहे थे. कहते हैं जबाहरलाल जी ने उन्हें लौट आने के लिए कहा. पर चाद न वे जवाहरलाल जी की बात समभ सकते थे भीर न जवाहरलाल जी उनकी. यह भी कहा जाता है कि जवाहरलाल जी इस घटना के जिए वहां के अफसरों पर बिगड़े. लेकिन अफसरों ने इसके बाद ही नागा लोगों से उनके इस तरह चले जाने का बदला लेने की पूरी कोशिश की. बजाय इसके कि नागा लोनों के दुखे हुए दिलों का वसल्ली दी जाती. इलाक़े भर में अंधा धँध गिरफतारियां और घरों की तलाशियां शरू हो गईं. जिन नागाओं को हथियारों के लाइसेंस मिले हुए थे उनके भी हथियार छीन लिए गए. रालतकहमी श्रीर दुश्मनी बढ़ती चत्री गई. पर किसी ने इसकी जड़ में जान की और जलमों पर मरहम लगाने की कोशिश नहीं की.

15 अगस्त सन् 1953 को सब सरकारी स्कूलों की राष्ट्रीय मंडा फहराने का हुक्म दिया गया. नागा पहाड़ी जिले में दो हाई-स्कूल हैं, एक कोहिमा में, दूसरा माको-कचुँग में. इन दोनों स्कूलों में उस दिन कुछ लड़ के रोर हाजिर थे. उनकी इस रौर हाजिरी को भी 'बराावत' मान लिया गया. दोनों स्कूल बन्द कर दिए गए. सब नागा विद्यार्थी आवारा फिरने लगे. उस साल नवम्बर तक वे स्कूज न खुल पाए. मजबूर होकर नागा लोगों ने अपने बच्चों के लिए उन्हीं दो शहरों में दो प्राइवेट हाई स्कूल खोल दिये.

मार्च सन् 1953 में आसाम सरकार ने मोकाक चुँग इलाक़े को बागी इलाक़ा (Disturbed area) ऐलान कर दिया. नहां के हाई स्कूल पर फीज ने क़ब्जा कर लिया, जो प्राइवेट स्कूल वहां नागाओं ने खोला था वह भी जबरदस्ती बन्द कर दिया गया.

नागा नेताश्रों ने फिर एकबार प्रार्थना की कि उन्हें प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू से मिलने का मौका दिया जाय ताकि वे अपने दिल की बात उनसे कह सकें. दिल्ली में मुलाकात के लिए तारील मुक्तर्रर हो गई. नागा नेरानल काडन्सिल के नाम दिल्ली से नागा नेताओं को दिल्ली مہمان کے روپ میں دیکھتے تھے اور ناکا قوم کے لوگ بڑے زبرنیست مہمان نواز مشہور ھیں .

پر جواهر لال جی کے پہونچنے کے چند منٹ پہلے ناکا پہاڑی فلع کے ڈیٹی کیشنر نے اُن سب ناکا لوگوں کو یہ نوٹس دیا کہ شری جواهر لال نہرو نہ آپ لوگوں کا کوئی مان پتر لینکے اور نہ آپ کی کوئی بھینٹ سویکار کرینگے .

ناگا قوم اور آن کے مکھوں کے داوں کو اِس سے بہت بڑی ۔ چوٹ لکی ،

15 اگست مین 1953 کو سب سرکاری اِسکولوں کو راشتریه جهندا پههرانے کا حکم دیا کیا ، ناکا پهاری ضلع میں دو هائی اِسکول هیں' ایک کوهیما میں' دوسرا موٹو کنچنگ میں ، اِن دوئوں اِسکولی میں اُس دی کنچه لوکے غیر حاضر تھے ، اُن کی اِس غیر حاضری کو بھی 'بناوت' مان لیا گیا ، دوئوں اِسکول بند کردئے گئے ، سب ناکا ودیارتھی آوارہ پھرنے لگه ، اُس سال نومیر نک وے اِسکول نه فیل پائے ، منجبور هوکر ناکا ارکوں نے نومیر نی ور پرائیویٹ هائی اسکول کھول دیئے ،

ماریج سن 1953 میں آسام سرکار نے مواکیچونگ علقے کو باغی عابت (Disturbed area) اعلن کردیا ۔ وہاں کے ہائی اِسکرل پر فوج نے قبضت کرلیا ، جو پراٹھویٹ اِسکول وہاں فاٹھوں نے کہولا تیا وہ بھی زبردستی بلد کردیا گیا ۔

ناکا لیتاوں نے پہر ایکبار پرارتہنا کی که اُنھیں پردھاں منتری جواہر لال نہرو سے مائے کا موقع دیا جانے تاکه وے اُنے دل کی بات اُن سے کہ سکیں ۔ دلی میں ملادات کے لئے تاریخ مقرر عوگئی۔ ناکا نیشال کاؤنسل کے نام دلی سے ناکا نیتاوں کو دلی मुक्ताने के लिए कोहिमा तार भेजा गया. श्री चन्दोला का कहना है कि आसाम में न जाने किसने उस तार को द्वाए रखा और वह तार ठीक उस तारीख को कोहिमा में नागा नेताओं को दिया गया जो तारीख दिल्ली में उनकी मुलाकात के लिए तय थी. मुलाकात न हो सकी. नागा नेताओं ने फिर तीसरी बार मुलाकात के लिए कोशिश की. कहा जाता है कि इस बार आसाम के गवरनर ने उनकी प्रार्थना बीच ही में नामंजूर करदी.

#### भी पनत और भी देवर

सितम्बर सन् 1955 में होम मिनिस्टर श्री गोबिन्द बस्तभ पन्त कोहिमा पहुँचे. नागा नेरानल काउन्सिल के नेताओं ने बनसे मिलना बाहा. पर उन्हें मौका नहीं दिया गया.

26 नवम्बर सन् 1955 को कांग्रेस प्रेसीडेंट श्री ढेवर को हिमा पहुंखे. नागा नेताओं ने उनसे मिलकर अपनी कहानी कहना चाहा. लगभग पांच सौ नागा सरदार एक दिन पहले की हिमा में जमा होगए. उन्हों ने श्री ढेवर को हेने के लिए एक प्रस्ताव भी तैयार कर लिया. जिस तरह जवाहरलाल जी के जाने पर हुआ था उसी तरह इस मौके पर भी यह पांच सौ नागा सरदार अपने अपने हाथों में भेंट का सामान लिए हुए अपने अतिथि के स्वागत के लिए सदक के दोनों तरफ जमा थे. फिर वहीं श्री ढेवर के आने से चंद मिनट पहले सुपरिन्टेंडेंट पुलिस ने उनके पास पहुंच कर उनसे कहा कि अगर आप लोग दस मिनट के अन्दर यहां से न चले जायेंगे तो आप को जवरदस्ती यहां से हटा दिया जायगा. नागा सरदार दूसरी बार दुखी और निराश अपने अगने घरों को चले गये. श्री ढेवर से भी उनकी मुला-कात न हो सकी.

जो प्रस्ताव नागा नेताओं ने श्री ढेबर के लिए एक दिन पहले तैयार किया था उसमें लिखो था कि—"नागा लोगों की जितनी समस्याएं हैं उन सबका इल हमें आपस में बात चीत करके ही निकाल लेना चाहिए." नागा लोग लड़ना नहीं चाहते थे. पर इस घटना के बाद बात चीत का दरवाजा किर बन्द कर दिया गया. इस बार बार के अपमान ने बहुत सों के दिलों को तोड़ दिया.

#### दमन और विकास साथ साथ

इस तरह नागाओं में श्रसन्तोष बढ़ता चला गया. सरकार ने इस श्रसन्तोष को द्वाने के लिये एक तरफ नागा लोगों के खिलाफ शिक्त का उपयोग जायज करार दिया. जगह जगह कीजें मेजी जाने लगीं श्रीर दूसरी तरफ नागा इलाके में उस इलाके की 'उन्न त' श्रीर 'विकास' की खोटी मोटी योजनाएं ग्रुह्म करदी. नागा नेता श्रीर उनके श्रादमी न पहली चीज की कद्द कर सके श्रीर न दूसरी की. गिरफ्तारियों से बचने के بلانے کے اللہ کوھیما تار بھیجا گیا شرق چندولا کا کہنا ہے کہ آسام میں جانے کس نے آس تار کو دیائے رکھا اور وہ تنر ٹھیگ آس تاریخ کو کوھیما میں ناڈ نیتاؤں کو دیا گیا جو تاریخ دلی میں آن کی ملانات کے لئے طے تھی ، ملانات نے هوسکی ، ناکا نیتاؤں نے پھر تیسری بار ملانات کے لئے کوشش کی ، کہا جاتا ہے کہ اِس بار آسام کے گورنو نے آن کی پرارتھنا بھیے ھی میں نامنظور کردی ،

#### شرى بلت أور شرى دهيبر

ستمبر سن 1955 میں ہوم منسٹر شری گوبندہلبھ پنت کوھیما بہونچے ، ناکا نیشنل کاؤنسل کے نیتاؤں نے اُن سے ملنا چاھا ، یر اُنہیں موقع نہیں دیا گیا ،

26 نومبر سن 1955 کو کانگریس پرسیدینٹ شری تعیبر کوهیما پہونچے . قاکا نیکاؤں نے اُن سے ماکر اپنی کہائی کہنا چاھا ، لگ بیگ پانچ سو فاکا سردار ایک دن پہلے کوهیما میں جمع ہوگئے ، اُنھبر نے شری تھیبر کو دینے کے ائم اُیک پرسکاؤ بھی تیار کرلیا ، جس طرح جواھر لال جی کے جانے پر ہوا تیا اُسی طرح اِس موقع پر بھی یہ پانچ سو ناکا سردار اپنے اپنے ہاتھ ہوئے اپنے اُنٹھی کے سواگت کے لئے سوک کے درنوں طرف جمع تھے ، پھر وھی شری تھیبر کے آئے سے چند منت پہلے سهرنتیفتینت پولس نے شری تھیبر کے آئے سے چند منت پہلے سهرنتیفتینت پولس نے اُن کے پاس پہونیم کر اُن سے کہا کہ اگر آپ لوگ دیس منت کے اندر یہاں سے نہ چلے جائینگے تو آپ کو زبردستی یہاں سے ماا دیا جائیگا ، ناکا سردار درسری ار دکھی اور نراش آپ اپنے گھروں دیا جائیگا ، ناکا سردار درسری ار دکھی اور نراش آپ نے میں دیا دیا جائیگا ، ناکا سردار درسری ار دکھی اور نراش آپ نے میں دیا جائیگا ، ناکا سردار درسری ار دکھی اور نراش آپ نے میں دیا جائیگا ، ناکا سردار درسری ار دکھی اور نراش آپ نے میں دیا جائیگا ، ناکا سردار درسری ار دکھی اور نراش آپ نے میں دیا جائیگا ، ناکا سردار درسری بار دکھی اور نراش آپ نے میں دیا جائیگا ، ناکا سردار درسری بار دکھی اور نراش آپ نے میں دیا جائیگا ، ناکا سردار درسری بار دکھی اور نراش آپ نے میں دیا جائیگا ، ناکا سردار درسری بار دکھی اور نراش آپ نے میں دیا جائیگا ، ناکا سردار درسری بار دکھی اور نراش آپ نے میں دیا جائیگا ، ناکا سردار درسری بار دکھی اور نراش آپ نے میں دیا جائیگا ، ناکا سردار درسری بار دیا ہے دیا جائیگا ، ناکا سردار درسری بار دیا ہے د

جو پرستاؤ ناگا نیتاؤں لے شری تعدیر کے لئے آپک دن پہلے تیار کیا تھا اس میں لکھا تھا کی۔ ان کا لوگوں کی جتنی سسیائیں ھیں ان سب کا حل ھمیں آپس میں بات چیت کرکے ھی نکال لینا چاھئے ۔'' ناگا لوگ لوثا نہ ن چاھئے تھے ، پر اِس گھٹنا کے بعد بات چیت کا دروازہ پھر بند کردیا گیا ، اِس بار بار کے اِیان لے بہتسوں کے دلوں کو توڑ دیا ،

#### ن اور وکاس ساته ساته

اِس طرح ناگؤں میں استرش برمتا چلا گیا . سرکار نے اس استرش کو دبانے کے لئے آیک طرف ناگا لوگوں کے خلاف شکتی کا اُپھوٹ جایز قرار دیا . جکه جکه فرجیں بھیجی جانے لکیں اور دوسری طرف ناکا علانے میں اُس علاقے کی بانتی' ارر 'وکاس' کی چھوٹی موٹی یوجنائیں شروع کردیں . ناکا ٹیتا اور اُن کے اُدمی نه پہلی چھز کی قدر کرستے اور نه دوسری کی ، گرفتاریوں سے بھچنے کے کرستے اور نه دوسری کی ، گرفتاریوں سے بھچنے کے

लिए उनके नेता जगह जगह छि गते फिरते थे. उन्होंने आम तौर पर इन योजनात्रों के साथ श्रसऱ्योग किया. बन्द्कों के साये में उन्नति की योजनाए जारी रखी गईं. कुछ नागा लागों ने भारत की फीजों का मुकाबला करना भी शुरू कर दिया. मोकोकचुंग का इलाका भी बाती करार दे दिया गया. वहां का स्कूल भी बंद कर दिया गया और वहां भी स्कूल की इमारत पर कौज का क्रब्जा हो गया.

श्री चन्दोला के अनुसार सन् 1956 के शुरू में नागा नेशनल काउन्सिल किंकत्तेव्य विमूद् मालूम होती थी. अचा-नक उनके एक बहुत बड़े नेता (Sakhri, सखरी को कोई कहीं उड़ा ले गया. कुछ दिन बाद मालम हुआ कि सखरी को किसी ने सार डाला.

#### सरकार पश्च

श्री चन्दोला के लेख के चार दिन बाद 'नागा समस्या' पर 'एक सम्बाद दाता' का एक छोटा सा लेख निकला जो सरकारी बयान नहीं है, परन्तु उनके लेख के जवाब में सरकार पक्ष से लिखा हुआ मालूम हाता है. उस लेख में नागा लोगों की ''बहादुरी, ईमानदारी, सबाई'' वरौरा की तारीफ की गई है और उनकी कमी यह बताई गई है कि वह जल्दी से शक और अविश्वास का शिकार हो जाते हैं. यह भी साना गया है कि सरकार श्राजादी के बाद नागा लागों से जैसा चाहिये था मेल मिलाप पैदा नहीं कर सकी. नागा नेशनल काउन्सिल के प्रधान श्री किजो पर यह इलजाम लगाया गया है कि उन्होंने सरकार के खिलाफ अपने लोगों में ग़लत फहमियां फेलाई. यह भी कहा गया है कि श्री जवाहरलाल नेहरू तीन बार श्री फिजों से मिले. कहा गया है कि नागा नेता ऊपर से ऋहिंसा और शान्ति की नीति का ऐलान करते हैं और अन्दर अन्दर उन नागाओं के खिलाफ मार काट श्रीर लुट मार की तज्ञवीजें करते रहते हैं जा श्रपने नेताश्रों की पालिसी से इत्तफाक नहीं करते. कहा गया है कि भारत की भीजें केवल वफादार और अमन पसन्द नागाओं की रक्षा के लिये वहां गई हैं. अन्त में यह भी साक कह दिया गया है कि जब तक नागा नेता इस तरह की मार काट और मकम्मल आजादी की बात करना बन्द नहीं करदेंगे सरकार इनसे कोई बात करने को तय्यार नहीं है.

इस दूसरे लेख को पढ़ने के बाद भी बात वहीं की वहीं रहती है. श्री चन्दोला की किसी भी कास बात को, जिन में से कुछ इमने ऊपर दी हैं, इस लेख में ग़लत नहीं बताया गया.

इसमें सन्देह नहीं फ़ौजी निगाह से अन्त में भारत सरकार ही जोतेगी. लेकिन श्राम नागा लोगों के दिलों में जो असन्तोष, अविश्वास और बद् दिली घर कर चुकी है वह इस तरह नहीं निकल सकती.

لئے أن كے نيئا جكه جكه چبهتے يورتے تھے . انهوں نے عام طور پر اِن پوجناؤں کے ساتھ اسپیوگ کیا ۔ بلدوتوں کے سائے میں اننٹی کی برجنائیں جاری رکھی گئیں ۔ کچھ ناکا لوگوں لے بھارت کی فوجین کا مقابله کرنا یهی شروع کردیا ، موکوکنچونگ کا علاقه بھی باغی قرار دیم دیا گیا ۔ وهاں کا اِسکول بھی بند کردیا گھا اور وھاں بھی اِسکول کی عدارت پر نوبے کا قبضه ھوگیا ۔

شری چلدولا کے انوسار س 1956 کے شروع میں ناکا نيهال كؤنسل كنعرتويعوموره معلهم هوتى تهي اچانك ان کے ایک بہت ہوے نیتا ساہری ( Sakhri ) کو کوئی کیس اُڑا لے گیا ، کچھ دین بعد معاوم هوا که سکھری کو کسی نے

#### سركار يعص

شرمی چندولا کے لیکھ کے چار دین بعد 'ناکا سمسیا' پر آیک اسموان داتاً کا ایک چهوٹا سا ایکھ فکلا جو سرکاری بھارے نہیں علم هوتا هے اس لیکھ میں ناکا لوگوں کی ''بہادری' ایمانداری سچائی'' وغیرہ کی تعریف کی گئی ہے اور اُن کی کمی یہ عَالَى كُلُي فَ لَهُ وَهُ جُلِدِي سَهُ شُكَ أُورُ أُوشُواسَ كَا شَكَارُ هُو ھاتے ھیں ، ید بھی مانا گیا ہے که سرکار آزادی کے بعد اناکا وگرن سے جیسا جامئے تھا میل ملاپ بیدا نہیں کر سکی ، ناکا مشلل کاؤنسل کے پردھان شری فوزر پر یہ الزام لکایا کیا ہے که نھوں لے سرکار کے خالف اپنے لوگوں میں غاط فہمیاں پھیائیں . ہ بھی کیا گیا ہے که شری جواهر لال تهرو تین بار شری نیزو سے لم. كيا كيا ه كه ناكانيتا أوير سه أهنسا أور شانتي كي نبتي كا أعلن لرتے میں اور اندر اندر أن ناكاؤں كے خلاف مار كات آور لوت بار کی تجویزیں کرتے رہتے ہیں جو اپنے نیتاؤں کی پالیسی سے تناق نہیں کرتے ، کہا گیا ہے که بھارت کی فوجیں کیول وفادار ورامن یسند ناکاؤں کی ردشا کے لئے وعال کئیں میں انت س يه بهي صاف كهه ديا گيا هے كه جب تك ناكا نيتا إسطرم لی مار کاف اور امکمل آزدی ، کی بات کرنا بند نہیں کر دینکہ سرکار أن سے كوئى بات كر نےكو تيلر نہيں ھے .

اس درسرے لیک کو پڑھئے کے بعد بھی بات وہیں کی وہیں رهای هے . شري چندولا کی کسی بھی خاص بات کو' جن ميں ع کنچ هم نے آرپر دی هیں' اِس لیکھ میں غاط نہیں بتایا

اِس میں سلدیہ، نہیں فوجی نگاہ سے انت میں بیارت سرکار ھی جھتیکی ایکن عام ناکا لوگوں کے دانوں میں جو استرهن ارشواس اور بددلی گهر کر چکی هے وہ اِس طرح نهیں نکل سکتی .

(833)

and the second of the second

#### असली इलाज

श्री हरीश चंदांला का कहना है कि नागा क़ीम के लोग और उनके नेता अब भी बात चीत और समफ़ौते से सारा मामला तय करने के लिए तैयार हैं. उन्हें 'स्वाधीन राज्य' की हठ नहीं है. अगर और बातें मिल बैठकर तय हो जायं तो वे अब भी भारतीय यूनियन में रहने के लिए तय्यार हैं. पर आज की हालत में पहले उनसे ''मुकम्मल आजादी'' की बात झोड़ देने के लिये जिद करना और उसके बाद बात चीत के लिये राजी होना हमें किसी तरह ठीक नहीं जंचता. इस तरह के मामलों में दुनिया की सरकारों का 'आन' यानी 'प्रैस्टीज का जयाल दुनिया के लिये बहुत सी मुसीबतें पैदा करता रहा है.

इस सारे मामले में भारत सरकार हे ऊपर के इन्न जिम्मेदार लोगों, खासकर श्री जबाहरलाल नेहरू, की नागा लोगों की तरफ शुभेच्छा में किसी का शक नहीं हो सकता. हम सममते हैं कि नागा लोगों में भी बहुत कम होंगे जिन्हें पंडित जबाहरलाल जैसों की नियत पर शक हो। लेकिन इस नेक नियती और शुभेच्छा के बावजूद इसमें भीशक नहीं कि नागा इलाक़े में हमारे कारनामों और दुनिया के इन्छ दूसरे इलाक़ों में साम्राज्यवादियों के कारनामों में बहुत अधिक फरक नहीं दिखाई देता. देश को उमत करने और विकसित करने की योजनाएँ भी दोनों में एकसी मिलती हैं.बन्दूक़ों की छाया में विकास योजनाएँ किसी देश को पनपने में मदद नहीं दे सकतीं. हम यह नहीं कहते कि नागा-ओं से रालतियां नहीं हुई, पर कुल मामले को पूरी तरह देखते हुए हमें नागा इलाक़ों में अपने कारनामों पर लज्जा आ रही है.

भारत की जनता सौर सरकार दोनों महात्मा गाँधी की द्वाई देते हैं. दोनों युद्ध श्रीर हथियारों के खिलाफ दुनिया भर को उपदेश देते हैं, दोनों सचाई के साथ दुनिया में अमन 'क़ायम रखने की काशिशों में पूरी पूरी मदद दे रहे हैं. नागा इलाक़े का मामला एक शुद्ध घरेल मामला है, कोई बाहर का हमला भी नहीं. जरूरत इस बात की है कि कम से कम नागा इलाक़े में हम गाँधी जी के उन उसलों पर अमल करके दिखादें जिन पर हम दुनिया से अमल कराना चाहते हैं. भारत को हिम्मत के साथ पहले अपनी तरफ से वहां की सारी फ़ौजी कार्रवाई बन्द कर देनी चाहिये. सब के लिये आम माफियों का ऐलान हो जाना चाहिये. फिर मिल बैठकर बातें होनी चाहियें. हमें इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि सच्ची क्षमा, इन्सानी इमद्दी, सच्चे प्रेम और परस्पर सममाते के साथ उस इलाके की इस वक्त की सारी समस्याएँ खुबसूरती के साथ इल की जा सकती हैं.

مشری هریش چندولا کا کہنا ہے کہ ناکا تہم کے لوگ اور اُن کے نیننا آب بھی بات چیت اور سنجھوتے سے سارا معاملہ ہے کوئے کے لئے تیار هیں ۔ آنہیں 'سوادهیں راجیہ' کی هٹ نہیں ہے ۔ اگر اور بانیں مل بیٹھکر طے هر چائیں تو رے آب بھی میں پہلے آن سے ''مکمل آزادی'' کی بات چھوت دینے کے لئے میں پہلے آن سے ''مکمل آزادی'' کی بات چھوت دینے کے لئے میں طرح ٹھیک نہیں جنچتا ، اِس طرح کے معاملوں میں دنیا کی سرکاروں کا 'آن' یعلی پریسائیج کا خیال دیاہے کے لئے دنیا کی سرکاروں کا 'آن' یعلی پریسائیج کا خیال دیاہے کے لئے دیاہ سی مصیبتیں پیدا کوتا رہا ہے ۔

اِس سرے معاملہ میں بھارت سرکار کے اُرپر کے کچھ زمعدار لوگوں خاصکر شربی جواهر الل نہرو کی قاکا لوگوں کی طرف شوبھنچھا میں کسی کو شک نہیں ھو سکتا ۔ ھم سمجھتے ھیں که اناکا اوگوں میں بھی بہت کم ھونکہ جنھیں پنتت جواهر الل جیسوں کی نیت پر شک ھو ۔ لیکن اِس ایک نیتی اور شوبھنچا کے بارجود اِس میں بھی شک نہیں که ناکا علاقے میں ھمارے کارناموں اور دنیا کے کچھ دوسرے علاقوں میں سامراجھعوادیوں کے کارناموں میں بہت ادھک فرق نییں سامراجھعوادیوں کے کارناموں میں بہت ادھک فرق نییں دکھائی دیتا ۔ دیش کو اُنفت کرنے اور وکست کرنے کی پوچنائیں دیش دونوں میں ایکسی ملتی ھیں ، بندوقوں کی چھایا میں وکاس پوچنائیں کسی دبھی کو پنینے میں مدد نہیں دے سکتیں ، ھم یہ نہیں کہتے که ناگؤں سے غلطیاں نہیں ھوئیں اُنے کارناموں یو لچا آرھی ھے ۔

بھارت کی جلتا اور سرکار دونوں مہانما کاندھی کی دوھائی دیتے ھیں ، دونوں یدھ اور ھتیاروں کے خالف دنیا بھر کو اپدیش دیتے ھیں ، دونوں سچائی کے ساتے دنیا بھر کو اپدیش دیتے ھیں ، دونوں سچائی کے دیے رہے ھیں ، ناٹا علاتے کا معاملہ ایک شدھ گھریلو معاملہ ہے، کوئی باھر کا حملہ بھی تہیں ، فرورت اِس بات کی ہے که کم سے کم ناٹا علاتے میں هم گاندھی جی کے اُن اُصواری پر عمل کر کے دکیا دیں جن پر هم دنیا سے عمل کوانا چاھتے ھیں ، بھارت کو ھمت کے ساتے پہلے اپنی طرف سے وھاں کی ساری نوجی کو ھمت کے ساتے پہلے اپنی طرف سے وھاں کی ساری نوجی طوبانا چاھیئے ، پھر مل بیٹھکر باتیں ھونی چاھیں ، ھمیں اِس ھوبانا چاھیئے ، پھر مل بیٹھکر باتیں ھونی چاھیں ، ھمیں اِس سیچے پریم اور پرسپر سمنجھوتے کے ساتے اُس علانے کی اِس وقت کی ساری سمسیائیں خوبصورتی کے ساتے اُس علانے کی اِس وقت کی ساری سمسیائیں خوبصورتی کے ساتے اُس علانے کی اِس وقت کی ساری سمسیائیں خوبصورتی کے ساتے حل کی جاسکتی

-سندر الل ،

#### (मिरजा श्रञ्जलफ़्जल के अंग्रेजी संग्रह "से इंग्स आफ़ दी श्रीकेट मुहम्मद" से )

सुहम्मद साहब ने कहा:—''जो आदमी जब कभी नेक काम करता है तो उसे खुशी होती है, और जब कोई बुरा काम करता है तो उसे दुख होता है, वही 'मामिन' क्ष यानी ईमान बाला है."

-इन्ने डमर, तिरमिजी

शुह्नमद् साह्य ने कहा:—"मोमिन कभी अच्छी बातें धुनने से नहीं बकता जब तक कि वा जन्नत में न चला जाय."

अबु सईद, तिरमिजी.

सुहम्मद साहब ने कहा:—"मोमिन बनना यानी ढोंग करना नहीं जानता, वह सबका भला करने की कोशिश करता है; इसके खिलाफ बुरा भावमी चालाक यानी ढोंगी भीर बुजदिल होता है."

भवु हुरैरा, भवु दाऊदः तिरमजी.

सुहस्मद साहब ने कहा:—''ईमान की निगाह से सबसे पक्का मोमिन वो है जो दूसरों के साथ बरताव करने में सब से अच्छा है.''

अबू हुरैरा, अबु दाऊदः दारीमी.

सुहस्मद साहब ने कहा:— "समसुच मोमिन केवल दूसरों के साथ अच्छा बरताव करके उस आदमी के दुर्जे को हासिल कर लेता है जो रात भर खड़ा होकर नमाज पहता रहता है और दिन भर रोजा रखता है."

—श्रायशा, अबु दाउद.

मुह्म्मद साहब ने कहा:—"क्रयामत के दिन एक मोमिन की तराजू के पलड़े में सबसे बजनदार चीज दूसरों

% 'मोमिन' का राज्यार्थ 'ईमान वाला' है. मोमिन उन लोगों को कहा जाता है जो मुहम्मद साहब पर 'ईमान' लाए, इस तरह मोमिन के आम माने 'मुसलिम' हुए— एडीटर. ( مرزا ابوالففل کے انگریزی سلکرہ "سیٹنکس آف دی یرونیٹ محصد" سے )

محمد صاهب لے کہا :۔۔'جو آدمی جب کبھی کوئی لیک کام کوتا ہے تو اسے خوشی هوتی هے' اور جب کوئی ہوا کام کوتا ہے تو اسے دکھ هوتا هے' وهی'موسی' \* مغی اِیمان والا هے''

ــابن عمر ، ترمذی .

محمد صاحب نے کہا :—''مومن کبھی اُچھی ہاتیں سنلے سے نہیں تھکتا جب تک کہ ولا جنت میں نہ چلا جائے ،''

-- ابو سعید کترمذیی .

محدد صاحب نے کہا: ۔۔ وقمومن بننا یعنی تعونگ کرنا نہیں جانتا وہ سب کا بہلا کرنے کی کوشص کرتا ہے؛ اِس کے خلاف برا آدمی چالاک یعنی تعونکی اور بزدل عوتا ہے ،''

-ابوهريره ابوداؤد يرمذي .

محمد صاحب نے کہا :—''ایمان کی نگاہ سے سب سے پکا مرمن ولا ہے جو دوسروں کے ساتھ ہرتاؤ کرنے میں سب سے اچھا ھے ،''

سابو هريره أبوداؤد : داريمي .

محمد صاحب نے کہا: — ووسی می مومن کھول دوسووں ساتھ اچھا برناؤ کرکے اس آدمی کے درجہ کو حاصل کرلیتا ہے جو رات بھر کھڑا ھوکر نماز پڑھٹا رستا ہے اور دین بھر روزہ رکھتا ہے ۔''

-عانشة ابوداؤد .

محمد ماهب نے کہا:۔۔۔"نیاست کے دن ایک مومن کی ترازو کے پلڑے میں سب سے رزندار چھز دوسروں

جمرمن کا شبدارته 'ایمان والا' هے . مرمن أن لوگوں كو كها جاتا هے جو محمد صاحب پر 'ایمان' لاء . اِس طرح مومن كے عام معنى 'مسلم' عودُ ــــــايدَ يتر .

के साथ उसका अच्छा बरताव होगा; और सचमुच अल्लाह वेशरम आदमी के साथ और उसके साथ जो दूसरों के साथ गुस्ताजी से पेश आता है दुशमनी रखता है."

अबू द्रदा, तिरमिजी: अबू दाऊद.

गुहम्मद् साहब ने कहा:—''मोमिन किसी दूसरे की बुराई नहीं करता, न किसी को को सता है, न कोई गंदा काम करता है, और न किसी के साथ गुस्ताखी से पेश आता है."

—इब्ने मसूद, तिरमिजी. बेहक्री.

मुह्म्मद साह्ब ने कहा:—''किसी मोमिन के छांद्र कभी ये दो चीजं एक साथ नहीं होतीं—कंजूसपन और बद इखलाक़ी (अशिष्टता)."

-अबू सईद, तिरमिजी.

युह्न्मद साहब ने कहा:—"मोमिन की मिसाल एक पेसे हरे भरे पेड़ से दी जा सकती है जिसके पत्ते कभी नहीं कड़ते और न जिसका साया कभी खतम होता है."

-इन्ने चमर, बुखारी: मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"एक मोमिन की मिसाल एक दूसरें के साथ प्रेम करने, एक दूसरें पर दया करने श्रीर हमदर्श करने में बैसी ही है जैसे एक जिस्म की मिसाल श्रगर जिस्म के किसी हिस्से में कोई तकलीफ़ होती है तो सारा जिस्म रात मर जाग कर दसका साथ देता है श्रीर सारे जिस्म को बुखार हो जाता है."

-- नुमान बिन बशीर, बुखारी: मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"मोमिन नाज की खड़ी हुई बालों की तरह होता है. हवा और आँधी उसे बार बार मुकाती रहती हैं, इसी तरह मोमिन के ऊपर श्राजमाइशें बार बार आती रहती हैं. इसके ख़िज़ाफ़ मुनाफ़िक यानी होंगी आदमी सर्व के उस पेड़ की तरह होता है जो उस वक्त तक नहीं मुकता जबतक उसे गिरा न दिया जाय."

— अबु हुरैरा, बुखारी: तिरमिजी, काब बिन मालिक, सुसलिम.

मुहस्मद् साहव ने कहा:—"मोमिन दोस्ती का घर होता है, और जो आदमी दूसरों को दोस्त नहीं बनाता न दूसरे उसे दोस्त बनाते हैं वह आदमी विलक्कल निकम्मा है." —अबृ हुरैरा, श्रहमदः बेहकी. کے ساتھ اس کا اچھا برتاؤ ہوگا؛ اور سپے مپے الله بےشرم آدمی کے ساتھ اور اس کے ساتھ جو دوسروں کے ساتھ گستانخی سے پیش آق ہے دشملی رکھتا ہے ۔''

-ابودرده ، ترمنى : ابوداؤد .

محمد صاحب نے کہا :۔۔۔ المومن کسی دوسرے کی برائی نہیں کرتا ہے کہا :۔۔ المومن کندہ کم کرتا ہے اور نہیں کرتا ہے اور نہیں کہا کہ کہا ہے کہا ہے۔ المومن کے ساتھ گستانمی سے پیش آتا ہے ۔''

-- این مسعود ٔ ترمذی : بیهقی .

محمد صاحب نے کہا: —''کسی مرمن کے اندر کبھی یہ دو چھڑیں ایک سانھ نہیں ہوتیں —کنجوس پن اور بد آخلانی ( اشفتتا ) ''

--- ابو سعین ترمنی .

محدد صاحب نے کہا :۔۔ وموس کی مثال ایک آیسے هرے بھرے پہر سے دی جاسکتی ہے جس کے پتے کبھی نہوں جھرتے اور نہ جس کا سایہ کبھی ختم ہوتا ہے ."

-ابن عمر بخارى : مسلم .

محمد صاحب نے کہا: —''ایک موسی کی مثال ایک دوسرے پر دیا کرنے اور ممدردی کرنے میں ویسی ھی جیسے ایک جسم کی مثال ۔ همدردی کرنے میں ویسی ھی جیسے ایک جسم کی مثال ۔ اگر جسم کے کسی حصه میں کوئی تکلیف ہوتی ہے تو سارا جسم کو اور سارے جسم کو بخار ہو جات ہے ۔''

--نعمان بن بشير عنداري: مسام .

محمد صاحب نے کہا:—''مومن ناج کی گھڑی ھوئی بالوں
کی طرح ھرنا ہے ، ھوا اور آندھی آھ بار بار جیکانی رھتی
ھے ، اِسی طرح مومن کے اُوپر آزمائشیں بار بار آنی ،ھتی
ھیں ، اِس کے خلاف منانق یعلی تھونگی آدمی سرو کے اُس
پیر کی طرح ھرنا ہے جو اُس رقت تک نہیں جھکتا جب تک
اُس گرا نہ دیا جائے ۔''

- أبو هريرة بخارى: ترمذى؛ كعب بن مالك مسلم .

منعمد صاحب نے کہا:—"مرسی درستی کا گھر ہوتا ہے؛ اور جو آدمی دوسروں کو درست نہیں بناتا نے دوسرے آسے درست بنانے میں وہ آدمی بالکل نکما ہے۔"

-ابو هريرة احمد: بيهقى ـ

#### मुहन्मद साहब की कुछ हदीसे

मुहम्मद साहब से पूछा गया:—"आप उस आदमी की बाबत क्या सोचते हैं तो कोई नेक काम करता है और लोग उसके लिए उसकी तारीफ करते हैं और उससे प्यार करते हैं ?" मुहम्मद साहब ने जवाब दिया:—"मोमिन की यही सबसे पहली पहचान है."

- अबू जर, मुसलिम.

पैराम्बर से पूछा गया:— "सबसे अच्छा आदमी कौन है ?" पैराम्बर ने जवाब दिया:— "सबसे अच्छा आदमी बो मोमिन है जो अपनी जान और अपने माल से अल्लाह की राह में जेहाद (नेकी करने की कोशिश) करता है." पैराम्बर से फिर पूछा गया— "उससे अतरकर सबसे अच्छा आदमी कौन है ?" पैराम्बर ने जवाब दिया:— "वो आदमी जा किसी पहादी गुफा में पड़ा रहता है, अछाह से उरता है और किसीदूसरे के साथ बुराई करने से अपने को बचाए रखता है."

> —श्रबू सईद, बुखारीः मुसलिमः श्रबू दाऊदः तिरमिषीः नमाई.

सुद्दमद साहब ने कहा:—"किसी मोमिन के लिए यह जायक नहीं है कि वा किसी दूसरे मोमिन को तीन दिन से जियादा अपने से अलग किए रहे, और अगर तीन दिन निकल जावें तो उसे चाहिए कि उस दूसरे आदमी से जाकर मिले और उसे सलाम करे, फिर अगर दूसरा भी प्रेम से जवाब दे तो अल्लाह की तरफ से दोनों को सवाब मिलेगा, लेकिन अगर दूसरा प्रेम से जवाब न दे तो वो पाप का भागी होगा; वह आदमी जो तीन दिन से जियादा, अपने भाई से बिगाइ रखता है दूसरी दुनिया में दाज्य की आग में जायगा."

मुह्म्मद् साह्ब ने कहा:—"कोई आदमी व्यभिचार नहीं करता जो व्यभिचार भी करे और मोमिन भी हो, कोई आदमी चोरी नहीं करता जो बोरी भी करे और मोमिन भी हो, कोई आदमी कोई नशे की चीज नहीं पीता जो नशा भी पिये और मोमिन भी हो, कोई आदमी डाका नहीं डालता जिसे लाग डाका डालते देखें और वह डाका भी डाले और मोमिन भी हो, और कोई दूसरे को धोखा नहीं दे सकता जो दूसरे को धोखा भी दे और मोमिन भी हो, इसलिए ख़बर-हार रहो, खबरदार.!"

—अबू हुरैरा, बुखारी: मुसलिम.

—श्रनुवादकः श्री मुजीब रिजवी.

#### محدد مادب کی کچے حدیثین

محمد صاهب سے پوچھا گیا۔۔۔"آپ اُس آدمی کی باہت کیا سوچتے میں جو کرئی نیک کام کرتا ہے اور لوگ اُس کے لئے اُس کی تعریف کرتے میں آ " محمد اُس سے پیار کرتے میں آ " محمد صاهب نے جواب دیا:۔۔۔"مومن کی یہی سب سے پہلی پہچان ہے ۔"

ـــاپوزر' مسلم .

پینمر سے پوچھا گیا۔۔۔''سب سے اچھا آدمی کون ہے '' " پھنمر نے جواب دیا:۔۔''سب سے اچھا آدمی وہ مومن ہے جو اپنی جان اور اپنے مال سے الله فی راہ میں جہان ( نیکی کرنے کی کوشش ) کرتا ہے۔'' پہنمبر سے پھر پوچھا گیا۔۔''اس سے آدکو سب سے اچھا آدمی کون ہے '' " پہنمبر نے جواب دیا:۔۔''وہ آدمی جو کسی پہاڑی گربھا میں پڑا رہنا ہے' المه سے قرتا ہے اور کسی دوسوے کے ساتھ ہوائی کرنے سے اپنے کو بھیائے رکھتا ہے۔''

- ابو سعيدا بخارى: مسلم: أبوداؤد: ترمذى: تساعى .

محمد صاحب نے کہا: —''نسی مرمن کے لئے یہ جایز نہیں ہے کہ وہ کسی دوسرے مہمن کو نین دن سے زیادہ اپنے سے آلگ کئے رہے' اور تین دن ناکی جاریں تو آسے چاہئے کہ آس دوسرے آسی سے جاکر ملے آور آسے سلام کرے' پھر اگر دوسرا بھی پریم سے جواب دے تو اللہ کی طرف سے دونوں کو ثواب ملیکا' لیکن اگر دوسرا پریم سے جواب نہ دے تو وہ پاپ کا بھاگی ہوگا؛ وہ آدمی جو تین دن سے زیادہ اپنے بھائی سے بگاڑ رکھتا ہے دوسری دینے دن کی آگ میں جائیگا ہا''

--- ايو هربرة ايوداود .

محمد صاحب نے کہا:—"کوئی آدمی وبیجوار نہیں کوتا جو وبیجوار بھی کرے اور موس بھی ھو؛ کوئی آدمی چوری نہیں کرتا نہیں کرتا جو وبیح کرتے اور موس بھی ھو؛ کوئی آدمی کوئی آدمی نہیں کوئی نشے کی چوز نہیں پیتا جو نشہ بھی پدئے اور موس بھی ھو؛ کوئی آدمی ذاکہ نہیں ڈالتا جسے اوگ ڈاکہ ڈائے دیکھیں اور وہ ڈاکہ بھی ڈالے اور موس بھی ھو؛ اور کوئی دوسرے کو دھوکا نہیں دے اور موس بھی ھو؛ ایس لئے خبردا، رھو؛ خبردار !"

- أبو هريرة بضارى: مسلم .

--انوادك: شرى مجيب رضوى .



### विनोबा जी भीर भारत की राजधानी

विनोबा जी की बातें हमेशा बढ़े मार्के की होती हैं. देश के सब भला चाहने वालों का फर्ज है कि उनकी बातों को ज्यान से सुनें, पढ़ें और उन पर गम्भीरता से विचार करें.

हाल में उन्होंने कहा है कि संस्कृति या क्लचर की निगाह से दिल्ली अजाद, भारत की राजधानी नहीं हो सकती. इसका एक कारण समाचार पत्रों के अनुसार उन्होंने यह भी बताया है कि दिल्ली में शराब की नदियां बहती हैं. हमें भी इन सात बरस के अन्दर दिल्ली आने और रहने का काफी मौका मिला है. विनोवा जी की बात में बहुत कुछ सवाई है, अखबारों के अन्दर आँकड़े भी निकल चुके हैं कि हाल में दिल्ली में शराब की खपत कितनी अधिक बढी है. पर शायद शराब की खपत भी इतनी बड़ी बात नहीं है. हमने पच्छिम की बहुत सी राजधानियों को देखा है. हमें यह कहते दुख होता है कि दिल्ली पच्छिम की कुछ राज-घानियों की नक़ल नहीं, भोंडी नक़ल है. इन ची जों की तफसील में जाना किसी के लिये भी रुचिकर नहीं हो सकता. हम में से एक की कमजोरी सब की कमजोरी है. पर इसमें सन्देह नहीं कि कलचर या संस्कृति की निगाह से जीवन का जो भावर्श भाज की दिल्ली देश के सामने रख रही है बह सारे देश को ऊपर उठाने के बजाय नीचे घसीट रहा है. जब हम दिल्ली की बात करते हैं तो हमारा मतलब नई दिल्ली से है, पुरानी दिल्ली से नहीं. पुरानी दिल्ली अब भी नई दिले से इन बातों में कहीं बेहतर है.

गाँधी जी भी देश के आजाद होने के बाद यह नहीं बाहते थे कि आजाद भारत की राजधानी दिल्ली रहे. अंगरेजों के बनवाप हुए सेक्रेटेरिएट, पार्लीमेन्ट हाउस और बाइसरीगल पैलेस इन सब को वह विश्विचालयों, कालिजों, अस्पतालों और कोड़ीखानों के लिये दे देना चाहते थे. आजाद भारत की राजधानी वह शहर से दूर गांवों के बाताबरया में चाहते थे, जहां बिजली भी हो, जहरत के

## ونوباجی اور بھارت کی راجدهانی

وٹوہاچی کی باتیں همیشه بڑے معرکے کی هوتی هیں ه دیعی کے سب بیلا چاهنے والوں کا فرض هے که آن کی باتیں کو دهیان سے سنیں پڑھیں اور آن پر گمبیرتا سے وچار کریں ۔

حال میں آنہوں نے کہا ہے کہ سنسکرتی یا کلمچر کی نگاہ سے دلی آزاد بھارت کی راجدھائی نہیں ھوسکتی ۔ اِس کا ایک کارن سماچاریٹروں کے آنوسار آنھوں نے یہ بھے بتایا ہے که دلے میں شراب کی ندیاں بہتی ھیں ، ھمیں بھی اِن سات ہرس کے اندر دلی آئے اور رہنے کا کائی موقع ملا ہے۔ وانوہاجی كى بات ميں بہت كچھ سچائى فى اخباروں كے الدر أنكرے ہے نعل چکے میں که حال میں دای میں شراب کی کھیت کتنی ادھک بڑھی ہے ۔ پر شاہد شراب کی کبیت بھی اِتنی ہوی بات نہیں ہے۔ هم نے پچیم کی بہت سی راجدهانیوں كو ديكها هي هدين يه كهتر دكه هوتا هي كه دلى بحجم كي كحجه راجدهانيس كى نقل نهين، بهوندى نقل هـ . آك چهزول كى تفصیل میں جانا کسی کے لئے بھی روچیکر نہیں ہوسکتا ۔ ہم میں سے ایک کی کیزوری سب کی کیزوری ہے ، پر آس میں سندیم نمیں که کلچر یا سلسکرتی کی نگاہ سے جدوں کا جو آدرهی أے كى دلى ديش كے سامنے ركھ رهى ف ولا سارے ديش كو أورر أنّهانے كے بجائے لينچے كسيت رها ق. جب هم دلى كى ہات کرتے میں تو مبارا مطلب نئی دئی سے مے پرانی دلی سے قیدں . یرانی دلی اب ہی نئی دلی سے اِن باتیں میں کہیں بہتر ہے.

کاسمی جی بھی دیش کے آزاد ہونے کے بعد یہ نہیں چاہتے تھے که آزاد بھارت کی راجدھائی دلی رہے ۔ انگریزوں کے بہدائی ہوئے کے بدر یہ انگریزوں کے بنوائے ہوئے سیکریتھریت' پارلیمینت ہاؤس اور وائسریکل پیلیس اِن سب کو وہ وشودیالیوں' کالحوں' لمیتالوں اور کرتھی خانوں کے لئے دے دینا چاہتے تھے ۔ آزاد بھارت کی راجدھانی وہ شہر سے دور گؤں کے واتاوری میں چاہتے تھے' جہاں بجئی بھی ہو' ضوورت کے

अनुसार टेलीफोन और मोटरकार भी हों, पर जहां देश के शासक और फ़ानून बनाने बाले सादा, सरल और सच्चा जीवन बिता सकें, और जहां से नैतिक यानी इसलाक़ी लहरें सारे देश में फैलकर सारे देश को ऊँचा घठा सकें. विनोबा जी की खावाच में हमें बिलकुल गाँधीजी की खावाच सुनाई दे रही है. हम उनसे पूरी तरह सहमत हैं. पर अभी तो देश इसके ठीक छलटे रास्ते पर दुलकता चला जा रहा है.

शायद सब काम एक साथ नहीं हो सकते, भीर भादमी तजरबे से ही सीखता है. भारत की सच्ची आत्मा के जागने में अभी कुछ और देर मालूम होती है. पर वह दिन आएगा इसमें हमें कोई सन्देह नहीं. जब वह दिन आएगा तब ही भारत सच गुच अपर चठ सकेगा और दुनिया के सामने एक नया आदर्श पेश कर सकेगा.

26-5-56.

— सुन्दरलाल

## श्री बी. जी. खेर झौर दूसरी पंच वर्षी योजना

बाजाद भारत की पहली पंच वर्षी योजना खतम हो चुकी, दूसरी पंच वर्षी योजना की आजकल सब तरक चर-चा है. मालुम होता है जहां तक पढ़े जिले लोगों और खास कर राजकाजी नेताओं का सम्बन्ध है उनमें अधिकतर के दिमारा कम या जियादा उसी तरह चलते हैं जिस तरह इन योजनात्रों के तैयार करने वालों के दिमारा. इनमें बहुत थों दें जो किसी दूसरी तरह साचते हैं. यह भी जाहिर है कि जहां तक गाँधी जी के विचारों का सम्बन्ध है यह दोनों योजनाएं गाँधी जी के विचारों भौर आदशों से कोई मेल नहीं रखतीं. इन मामलों में गाँधी जी का दिमारा और योजना बनाने वालों के दिमारा बिलकुल दें। तरह चलते हैं. गाँधी जी की निगाह थी अधिकतर गात्रों की तरफ और रारीबों. किसानों, मजदूरों श्रीर दस्तकारों की तरफ. योजना बनाने बालों की निगाह है अधिकतर बढ़े बड़े शहरों, ऊँची ऊँची **ब्रहारियों और करोड़पितयों और ब्रह्मपितयों की तरफ. यह** भी मानना पद्ता है कि इस तरह के मामलों में गाँधी जी के विचारों से सहमत पढ़े लिखे लोग कम हैं, और जो हैं भी उनकी आवाज बहुत कम सुनाई पढ़ती है. जहां तक करोड़ों आम जनता का सम्बन्ध है वह बेचारे अन्त्रल तो इन योजनाओं को समक्त नहीं पाते और फिर यदि इन योज-नाओं के दावों की अपनी हालत से तुलना करते हैं तो मन ही मन में दैरान भीर चुप होकर रह जाते हैं.

آئوسار ٹیلیفوں اور موٹرکاریں بھی ہوں' پر جہاں دیھی کے شاسک اور قائوں بنائے والے سادہ' سرل اور سعها جھوں بناسیس' اور جہاں سے نینک یعنی اخلاقی لہریں سارے دیش میں پھیل کو سارے دیش کو اُرنتها اُٹیا سکیں ، ونوبلجی کی آواز سنائی دے کی آواز سنائی دے رھی ہے کی آواز سنائی دے رھی ہے ، ہم اُن سے پوری طرح سہمت ھیں ، پر اُبھی تو دیش اُس کے تھیک اللے راستے پر تھلکتا چلا جا رھا ہے ،

شاید سب کام آیک اته نہوں هوسکتے اور آدمی تجویہ سے هی سیکیا ہے ۔ بھارت کی سچی آنا کے جاگئے میں ایمی کچھ اور دیر معلوم هوتی ہے ۔ پر وہ دن آئیکا اِس میں همیں کوئی سندیم نہیں ، جب وہ دن آئیکا تب هی بھارت سے مے لویر آئم سکیکا اور دنیا کے سامنے آیک نما آدرهی پیش کرسکیگا۔ گویر آئم سکیکا اور دنیا کے سامنے آیک نما آدرهی پیش کرسکیگا۔

## هری بی . جی . کهیر اور دوسری پنیج ورشی یوجنا

آزاں بھارت کی پہلی ینج ورشی یوجنا ختم ہوچکی ا دوسری پنچ ورشی یوجنا کی آجکل سب طرف چرچا ہے ، معلم ماوتاً هے جہاں تک پڑھے لکھے اوگس اور خامکر راجکاجی نیدوں کا سبندھ ہے ان میں ادھکٹر کے دماغ کم یا زیادہ اسی طرے چلتے میں جس طرح اِن یوجناؤں کے تیار کرنے والوں کے دماغ . اين ميں بهت تهرزه هيں جو کسي دوسري طرح سبچتے هيں ، يه بھي ظاهر هے كه جہاں تك كاندهي جي كے مچاروں کا سمبندھ ہے یہ دوارس یرجنائیں کا دعی جی کے وچاروں اور آدرشوں سے کوئی میل نہیں رکھتیں . اِن معاملوں میں کاندھی جی کا دماغ اور یوجنا بنانے والی کے دماغ بالکل ھو طرح چلتے عیں . گاندعی جی کی نگاہ تھی ادھکتر گاؤں کی طرف آور غریبوں' کسانوں' مزدوروں اور دستکاروں کی طرف ، یوجدا بنانے والوں کی نگاہ ہے ادھکتر بڑے بڑے شہروں' اولچی اونچی اثاریس اور کروربتیوں اور آرب یتیوں کی طرف، یہ بھی مائنا پونا ہے که اِس طرح کے معاملوں میں گاندھی جی کے وچاروں سے سہمت پڑھے لکھے لوگ کم هیں اور جو هیں بھی الى كى أُواز بهت كم سذائي يزتى هي . جهان تك كررزون عام جنتا کا سبنده هے وہ بینچارے اول تو ان پوجنازں کو سمج نہیں یاتے اور پھر یدی ان بوجنازں کے دعوں کی اپنی حالت سے تلنا کرتے میں تو من می میں حدران آبر جب موکو ره جاتے میں .

1. 4. . . . . . . . .

पेसी हालत में अगर कहीं कोई आवाज भी सचाई के लिये उठती हुई दिखाई देती है तो उस आवाज से, चाहे वह नक्कारखाने में तूती की आवाज ही क्यों न हो, हमें और हमारे जैसों को आत्मिक सन्तोष मिलता है.

हाल में इसी तरह की आवाज दूसरी पंच वर्षी योजना के बारे में श्री बी. जी. खेर की सुनाई दी है. श्री बी. जी. खेर ने बम्बई में समाचार पत्रों के प्रतिनिधियों से कहा है कि:—''जहां तक गांवों के अन्दर बेकारी और बेरोजगरी का सम्बन्ध है यह योजना बिलकुल निराशा जनक है.'' उन्होंने बताया कि:—''बम्बई की सबरबन डिस्ट्रिक्ट विलेज इन्डस्ट्रीज एसोसिएशन (अतराफ जिला प्रामाद्योग सभा) ने गाँव के लोगों की बेकारी और बेरोजगारी को कम करने के लिये दस 'परिश्रमालय' खोलने का और पाँच हजार अम्बर बरके चलवाने का कैसला किया है, और इस काम में जनता से सहयोग की प्रार्थना की है."

श्री बी. जी. खेर के यह 'परिश्रमालय' विलक्कल गाँधी जी के विचार की चीज हैं. जहां तक हमने सुना है इन्हें 'परिश्रमालय' नाम विनोबा जी ने दिया है.

श्री बी. जी. खेर ने बताया कि सरकारी प्लैनिंग कमीशन के अनुसार इस समय तिरपन लाख बेकार मजदूर भारत में हैं और अगले पाँच बरस के अन्दर इनमें एक करोड़ और बढ़ जाएंगे जिनमें नव्वे लाख गाँव वाले होंगे. श्री बी. जी. खेर इन सरकारी आँकड़ों को ठीक नहीं मानते. उनका कहना है कि इनमें गाँव के वह करोड़ों लोग शामिल नहीं हैं जो कुछ काम तो करते हैं पर जिनका बहुत सा समय बेकार जाता है, चूँ कि उनके पास और काम करने को नहीं है. उनके सैकड़ों छोटे माटे घरेलू धन्दे हमारे रालत आर्थिक विचारों और आदशों की वजह से ठप हा गए और होते जा रहे हैं. श्री बी. जी. खेर के अनुसार इस तरह के अधवेकार लोगों की गिनती प्लैनिंग कमीशन के बताए हुए आँकड़ों से कहीं अधिक है. पिछले सात बरस के अन्दर हमारी "योजनाएं" चलती जाती हैं और वेकारी बढ़ती जाती है.

श्री बी. जी. खेर का कहना है कि कमीशन ही के अनुसार कम से कम पचास लाख आदमियों को इन दूसरे पाँच बरस में भी काम नहीं दिया जा सकेगा, हमारे भविष्य के लिये यह "बड़े दुख की बात" है.

श्री बी. जी. खेर का कहना है कि:—''आर्थिक विकास बानी माली तरक्षकी की गरज थी पूरे समाज की मलाई बौर अधिक से अधिक लोगों को पूरे काम का दिया जाता. इस कसीटी पर अगर हम कसकर देखें तो हमें अपनी इस दसरी पंच वर्षी योजना को नाकाकी मानना पढ़ेगा." ایسی حالت میں اگر کہیں کوئی آواز بھی سچائی کے آئے اٹھٹی ہوئی دکھائی دیتی ہے تو اس آواز سے چاھے وہ نقارخانے میں طرطی کی آواز ھی کیوں نہ ہو میں اور عمارے جیسوں کو آئیک سنتوش ملت ہے۔

حال میں اِسی طرح کی آواز دوسری پنچ ورشی یوجنا کے بارے میں شری بی ، جی ، کھور کی سنائی دی ہے ، شری بی ، جی ، کھور کی سنائی دی ہے ، شری بی ، جی ، کھور نے بمبئی میں سماچارپتروں کے پرتیندیدیوں سے کیا ہے کہ :۔ ''تھوں نے بتایا کا سمبندہ ہے یہ پوجنا بالکل نواشاجنک ہے ،'' اُتھوں نے بتایا کہ ہے۔''بہبئی کی سبوبی دسترکت ولیج اُندستریز ایسوسٹیشن ( اطراف ضلع گرامودیوگ سبھا ) لے گاؤں کے لوگوں کی بھکاری اُور بھروزگاری کو کم کوئے کے نام دیس 'پریشرمالیہ' کھوانے کا اور بھروزگاری کو کم کوئے کے نام دیس 'پریشرمالیہ' کھوانے کا اور اِس کام میں پانچ ھزار امہر چوخے چلوائے کا نیصلہ کیا ہے' اور اِس کام میں چنتا سے سہیوگ کی پرارتہنا کی ہے ،''

شروں ہی، جی. کھور کے یہ 'پریثر میالیہ' بالکل کاندھی جی کے وچار کی چوڑ ھیں ، جہاں تک ھم نے سفا ہے اِنھیں 'پریشرمالیہ' نام ونوبا جی نے دیا ہے .

شرو ہی، جی، کھیر کا کہنا ہے کہ کمیشن ھی کے افوسار کم سے کم پچاس لاکم آدمیوں کو اِن دوسرے پائیج برس میں بھی کام فہیں دیا جا سکیگا' ھمارے بھوشیہ کے لیٹے یہ ''یڑے دکھ کی بات'' ہے ۔

شری بی، جی، کهیر کا کهنا هے که: — (درآرتیک وکلس یعنی مالی ترقی کی غرض تبی پورے سماج کی بھائی اور ادعک سے ادھک لوگوں کو پورے کم کا دیا جانا ، اِس کسوئی پر اگر هم کس کر دیکھیں تو همیں آپنی اِس دوسری پنچ ورشی یوجنا کو ناکانی مائنا پریکا، "

श्री बी. जी. खेर ने यह भी बताया कि कुल भारत खादी और प्राप्त चयोग बोर्ड ने सरकार को एक पूरा कार्य-कम बनाकर दिया था जिसके अनुसार जगह जगह हाथ का सूत इस तरह का तैयार कराया जा सकता है कि जिस से इन पाँच बरस के अन्दर हमारी बढी हुई जरूरत का परा कपड़ा भी बन सके और जो हमारे सब हाथ करघों पर अच्छी तरह काम दे सके. उस कार्यक्रम के अनुसार सवा दो करोड़ अम्बर चरले जगह जगह चलवा देने की पहरत है. जिन से पचास लाख मन से ऊपर सत तैयार हो सकता है. जगर एस कार्यक्रम को कामयाबी के साथ चलाया जा सकता वो देवल उस से ही खतीस लाख कातने बालों को, सादे बारह लाख बुनकरों और उनके शागिरदों को, तीस हजार बढ़े यों को और लगभग बीस हजार और लोगों को काम मिल सकता था. भी बी. जी. खेर का कहना है कि अम्बर चरखे के जरिये गाँव के पचास लाख आह-मियों को आसानी से काम दिया जा सकता है. लेकिन सादी का काम करने वालों और उस तरह की संस्थाओं को जबरदस्त निराशा हुई जब भारत सरकार ने इस कार्य-क्रम को नामनजूर कर दिया. आगे भी सरकार इसे कभी परी वरह मानेगी इसकी आशा कम है.

इम श्री बी. जी. खेर के इन विचारों से पूरी तरह सहमत हैं. हमारी यह पंच वर्षी योजनाएं बड़े लोगों और पूँजीपतियों की योजनाएं हैं. इनसे देश का कुल धन भी बढ़ सकता है, पर मुठ्ठी भर ऊपर के लोगों के लिये, आम जनता के लिये नहीं. जहां तक हमारे लाखों छोटे बड़े गावों की करोड़ों जनता का सम्बन्ध है यह योजनाएं श्राधिक से अधिक ऐसी ही हैं जैसे किसी कमजोर, बीमार और भूखी स्त्री को पाडडर और लिपस्टिक के सहारे तन्दुकस्त दिखाने की कोशिश की जाय.

समाचार पत्रों में इस योजना पर काफी बहस हो रही है. हम उन चीजों को दुहराना नहीं चाहते. हमारी राय साफ़ है कि जिस योजना में भारत जैसे देश की रारीब जनता पर सोच सोच कर अरबों रुपए के नए टैक्स लगाने पढ़ें, जिस नमक की बाबत गाँधी जी अंगरेज सरकार से यह माँग करते थे कि उसपर कोई टैक्स नहीं होना चाहिये, उस पर भी टैक्स लगाना पड़े, जिसमें अरबों की कभी को पूरा करने के लिये हमें देश देश में जाकर कर्जा लेने की कोशिश करनी पड़े, और जिसमें फिर भी अरबों ही का फरफ आमदनी और खर्च में दिखाई दे जिससे अरबों और खरबों ही के चमदे के न सही काराज के दुकदे उड़ा उदा कर काम निकालना पड़े, वह योजना कम से कम भारत जैसे देश के लिये दिवालियेपन की योजना और घर फूँक तमाशा है. इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि अगर हम गाँधी जी के बताए रास्ते पर चलें तो हमें एक पैसा भी बाहर से شرق ہے . جے . کبیر نے یہ بھی بتایا که کل بھارت کیادی اور گرام اُدیوک بورد نے سرکار کو ایک چورا کاریه کرم بنا کر دیا نھا جس کے انہسار جکیم جکیم ہاتھ کا سرت اِس طرح کا تیار كرايا جا سكنا هے كه جس سے إن يانچ برس كے أندر هماري بوهی هوئی ضرورت کا پورا کیوا بھی بن سکے اور جو همارے سب هانه کرگهرس در اچهی طرح کام دے سکے ، اُس کاریه کرم کے انوسار سوا دو کورو امبر چرخے جکہتہ جکہتہ چلوا دیاہے کی فرورت هے، جن سے پنچاس لائم من سے اُریر سوت تیار ہو سکتا ھے . اگر اُس کاریہ کرم کو کامیابی کے ساتھ چالیا جا سکتا تو کیرل أس سے می چهترس لائو کانانہ والوں کو ساڑھے بارہ لائو بلکروں اور اُن کے شاکردوں کو' نیس ہزار بونھوں کو اور لگ بھگ پیس هزار اور لوگوں کو کام مل سکتا تھا ، شرمی ہی، جی، کبیر لا کہنا ہے کہ امبر چرخہ کے ذرعہ گاؤں کے پیچاس لاکہ آدمیوں کو آسائی سے کام دیا جا سکتا ہے . لیکن کھادسی کا کام کرنے والیں اور آس طرح کی سلستهاؤں کو ویردست فراشا هوئی جب بھارت سرکار نے اِس کاریعکوم کو نامنظور کر دیا ۔ آگے بھی سرکار اسے کبھی پوری طرح مانیکی اِس کی اُشا کم هے .

ھم شری ہی، جی، کہیر کے اِن وچاروں سے پوری طرح سمیت ھیں ، ھماری یہ پنچ ورشی یوجنائیں ہڑے لوگوں اور پولجی پتیوں کی یوجنائیں ھیں ، اِن سے دیش کا کل دھن بھی ہڑھ سکتا ہے، پر ماہی بھر اُوپر کے لوگوں کے لئے، عام جنتا کے لئے نہیں ، جہاں تک ھمارے لاکھوں چھوٹے بڑے گاؤں کی کررزوں جنتا کا سمبندھ ہے یہ یوجنائیں اُدھک سے اُدھ کے ایسی می میورڈ بیمار اور بھوکی اِستری کو پاؤتر اور نہولی اِستری کو پاؤتر اور نہاستہ کی کوشش کی جائے ۔

ساچار پتروں میں اِس یوجنا پر کانی بحث ہو رہی ہے .

ہم اُن چیزوں کو دوھرانا نہیں چاھتے ، ھماری وائے صاف ہے که جس یوجنا میں بھارت جیسے دیش کی غریب جنتا پر سوپ سوچ کو اربوں رویئے کے نئے ٹیکس لگانے پریں' جس نمک کی بات گاندہ ی جی انگریز سرکار سے یہ مانگ کرتے تھے که اُس پر کوئی ٹیکس لگانا پرو کوئی ٹیکس لگانا پرو کوئی ٹیکس لگانا پرو جس میں ادیوں کی کمی کو پیرا کرنے کے لئے ھمیں دیھی دیھی میں جاکر قرضہ لینے کی کوشش کرنی پرتے' اور دیھی میں بجاکر قرضہ لینے کی کوشش کرنی پرتے' اور دیھی میں اربوں ہی کا فرق آمدنی اور خوچ میں دکھائی دیے' جس سے اربوں اور کھربوں ھی کے چمزے کے نہ سے کہ سے کہ نہ بیارت جیسے دیھی کے لئے دیوائیئے پی کوچنا کم سے کم بہارت جیسے دیھی کے لئے دیوائیئے پی کوچنا کم سے کم بہارت جیسے دیھی کے لئے دیوائیئے پی کوچنا کم سے کم بہارت جیسے دیھی کے لئے دیوائیئے پی کوچنا کم سے کم بہارت جیسے دیھی کے لئے دیوائیئے پی کوپی سندیہا نہیں کہ اگر ھم گاندھی تماشہ ھے اور گھر پہانک جیست بھی باھر سے تماشہ ھے اور گھر کاندھی تماشہ ھے اور کیوپی سندیہا نہیں کوپی باھر سے تماشہ ھے کے بتیئے راساتے پر چادی تو ھمیں ایک پیست بھی باھر سے تماشہ ھے کے بتیئے راساتے پر چادی تو ھمیں ایک پیست بھی باھر سے تماشہ ھے کے بتیئے راساتے پر چادی تو ھمیں ایک پیست بھی باھر سے تماشہ کے بتیئے راساتے پر چادی تو ھمیں ایک پیست بھی باھر سے کے بتیئے راساتے پر چادی تو ھمیں ایک پیست بھی باھر سے

कर्ज या दान लेने की जरूरत नहीं है, पर इस समय तो यहां शाबाज सच मुच नक्षकारलाने में तृती की शाबाज है.

श्री बी. जी. खेर जो कुछ कोशिश खुद कर रहे हैं उसे हम दिल से सराहते हैं और उसमें उन्हें पूरी सफलता चाहते हैं.

26, 5, 56

—सुन्द्रलाल

#### 'बन।रस' को जगह 'वार।णसी'

हमारे प्रदेश उत्तर प्रदेश में बनारस का नाम बदल कर बाराण्सी रखा जाना एक दरजे तक हंसी की और अप्रा-फुतिक यानी खिलाक क़ुद्रत बात है. दुनिया में सब जगह दुनिया के लाखों शब्दों श्रीर खास कर नामों को अनता का गला उसी तरह रगड़ रगड़ कर गोल, सरल और सुन्दर बनाता रहता है जिस तरह गंगा का पानी उस पानी में पड़ी हुई पथरियों को. राब्द सब अन्त में रूढ़ि ही होते हैं. यौगिक शब्दों के दुकड़े या निकास भी अधिकतर स्वयं रूढ़ि होते हैं.

हमें इस से अधिक हंसी की इस समय एक और घटना याद आ रही है. दो चार बरस पहले की बात है. दिल्लो में हमारं घर पर आर्थ समाज के मशहूर वेदवेत्ता पंढित विश्व बन्धु जी बैठे हुए थे. कुछ श्रीर सज्जन भी बैठे थे. तत्सम, सद्भ की बात चल पड़ी. कुझ सउजन 'मूल शब्द' पर जाने की बात करने लगे. पंडित विश्व बन्धु जो कुछ देर से चुप बैठे सुन रहे थे. आखिर वह गम्भीरता के साथ बोले-"भाई ! मूल की तरफ ही जान्नोंगे तो बड़ी कठिनाई पड़ जायगी. बेदों के अनुसार सब भाषाओं का निकास दो आवाओं से है- बन्दर की 'वि' और कुत्ते की 'भौं'. मूल तो यही दो हैं." हम उनके येशब्द याद से लिख रहे हैं. पर आशय यही था. उनके इस कहने पर सब हंस पड़े और बात खतम हो गई.

गंगा अपना काम बन्द नहीं कर सकती. पोती फिर से दादी नहीं हो सकती. न सहारनपुर फिर से 'शाह हारूनपुर' हो सकता है श्रीर न 'बनारस' फिर से 'बाराग्रसी'. जनता बहुत दिनों बहुकाई भी नहीं जा सकती. जनता के जिस गले ने पहले वाराणसी का बनारस बनाया था वह और कुछ समय बाद नए वाराणसी को 'बन्सी' या कुछ और बनाकर रहेगा. पर कुछ दिनों की मुसीबत जरूर है.

सबसे अधिक दुख की बात यह है कि इस देश में उन्हे से उने स्थानों पर अभी तक इस तरह के लोग मौजूद हैं जो कुछ ऐतिहासिक भ्रान्तियों, साम्प्रदायिक भावनामों भीर किसी भी भाषा के पाक या नापाक होने के हानिकर अंध विश्वासों से ऊपर नहीं उठ पाते. ग़ैरियत और नफरत के दैत्यों ने हमारे दिलों पर काकी सिक्का जमा रखा है. प्रेम के ' قرض یا دان لینے کی ضرورت نہیں ہے ، پر اِس سے تو یہاں اُواز سے مچ نقار خانے میں طوطی کی آواز ہے .

. شرمی ہی، جی، کہیر جو کچھ کوشش خود کر وقے میں أس مين أنهين يوري سهلتا جامتے میں ،

سسادر ال

26 .5 .56

## 'بنارس' كى جگهه 'وارانسي'

همارے پردیک آتر پردیک میں بنارس کا نام بداکر رارانسی رکها جانا ایک درچ تک هاسی کی اور اپراکرتک یعلی خالف قدرت بات ھے دایا میں سب جانبه دنیا کے انہیں شہدیں أور خاص كر ناموں كو جنتا كا كا أسى طرح ركز ركز كر كول؛ سرل أور سلدر بناتا رهنا هے جس مارح گنکا کا پاتی أس يائی میں پڑی ہوائی پتھریوں کو ، شبد سپ انت میں روزھی ھی ھوتے ھیں . یوگک شہدرں کے تعربے یا نکاس بھی ادھعتر سویم روزهی هوتے هیں .

همیں اِس سے ادھک مذسی کی اِس سمے ایک اور گیٹنا یاں آرھی ہے ، دو چار برس پہلے کی بات ہے دلی میں همارے گھر پر آرید سماہ کے مشہور وید ریدا پندت وشوہندھو جی بیٹھے هولُه ته . کچه أور سجن بهی بیله ته ، تلم تدیهو كي بات چل ہوی ، کچھ سبس امول شبد اور جانے کی بات ارنے لاے ، یندت رشوبندهو جی کچے دیر سے چپ بیٹھے سن رقے تھے . آخر وہ گیبھیرتا کے ساتھ بولے---''بھائی! مول کی طرف می جاء کے تو ہڑی کامنائی پر جائیکی ، ریدوں کے انوسار سب بھاشاوں کا فکلس دو آوآزوں سے ھے۔بندر کی 'چی' اور کتے ہی الهرن ، مول تو يهى دواهين ، " هم أن كے يه شيد ياد سے له رہے میں ، یر آشیئے یہی تھا ، اُن کے اِس کہلے پر هم سب هنس يوء أور بات ختم هوگئي .

گنگا اینا کام بند نهیں کر سمنی ، پوتی پهر سے دانس شهیں هو سکتی . نا سهاری پور پهر سے 'شاہ هاروں پور' هو سکتا هے اور ته ابنارس ، يهر سه ارآرانسي ، جنتا بهت دا بن بهكائي بهي نهيس جاسمتی ، جلتا کے جس گلے لے پہلے وارانسی کا بنارس بنایا تها را اور کیچ سبے بعد نیا وارانسی کو ابنسی یا کیچ اور بنا کر رهیا . پر کعیم دنرن کی مصببت ضرور هے .

سب سے ادھک داہ کی بات یہ ہے که اِس دہش میں اولجے سے اولجے استہانوں پر ابھی تک اِس طرح کے لوگ موجود هيل جو کچه ايتهاسک بهرانتيس سامهردايک بهاوتاول اور کسی بھی بھاشا کے پاک یا ناپاک ھرانے کے ھانیکر اُندہ وشواسوں سے اورر نہیں آئه پاتے ، غیریت اور نفوس کے دیتیں نے همارے دارس پر کافی سکه جما رکھا ہے ، یویم کے

(342)

ديوتا كو رهال بيتهنم كي جكهه دكيائي لهيل ديتي . دليا كدهو

वेवता को वहां बैठने की जगह दिखाई नहीं देती. दुनिया कियर जा रही है ? इस किथर जा रहे हैं ? इसारे दिख और दिसाग्र अभी बहुत झोटे हैं.

26-5-56

—सुन्दरलाल

جا رهي هے ؟ هم كهر جارهے هيں ؟ همارے دال اور دماغ ابهى بہت چهوئے هيں .

--سندر لال .

26.5.56

### चीनी पंचांग (जन्त्री)

तीन इजार बरस से चीन में दिनों, महीनों और बरसों के हिसाब लगाने का एक खास तरीका चला आता था. सन् 1949 में जब नई सरकार उस देश में कायम हुई तो उसने उस पुराने पंचांग को जतम करके नया योरोपीय या ईसाई पंचांग देश भर में चालू कर दिया. नई सरकार ने यह बात केवल सब की आसानी के लिए की है, क्योंकि लगभग सारी बाक़ी दुनिया में भी आज यही ईसाई पंचांग चलता है और दुनिया को एक करने में इससे बहुत बड़ी मदद मिल सकती है.

पुराने चीनी पंचांग में बहुत से गुण भी थे. इसलिए देश की जनता में वह अभी तक एक दर्जे तक चालू है, खास-कर किसानों को उससे बड़ी मदद मिलती है, ठीक उसी तरह जिस तरह हिन्दुस्तान के पुराने महीनों से भारत के किसानों को मिलती है.

चीन के पुराने पंचांग में साल का पहला दिन देश भर के लोग एक बहुत बढ़ा त्योहार मनाते थे. नई सरकार ने उस त्योहार को कायम रक्का है. अब वा उसे 'बसंत का त्याहार' (स्प्रिंग फेस्टिवल) कहते हैं. पुराने हिसाब से इस साल बह 12 फ्रबरी सन् 1956 को पड़ा था.

नई चीनी सरकार चार राष्ट्रीय त्योहार मानती है—एक यही बसंत का दिन, दूसरा पहली जनवरी नए साल का दिन, तीसरा पहली मई दुनियां भर के मजदूरों का दिन और चौथा पहली अक्तूबर यानी चीन का राष्ट्रीय दिन. बसंत को मनाने के लिए तीन दिन की छुट्टी रहती है.

चीनी लोग तारीख लिखने के लिए हम से ठीक उलटा तरीक़ा काम में लाते हैं. वह पहले सन् लिखते हैं, फिर महीना और आखीर में तारीख, जैसे क्रिसमसंखे यानी बढ़े दिन को हम लिखेंगे 25-12-56 तो वो लिखेंगे 56-12-25.

चीन का पुराना पंचांग भारत के पुराने पंचांग की तरह घरती के चारों तरफ चांद की गित और सूरज के चारों तरफ घरती की गित दोनों के मेल से बना हुआ था. जितनी देर में चांद घरती के चारों तरफ एक चक्कर पूरा कर लेता है वह हुआ एक महीना. यह समय ठीक 29 दिन 12 घंटे 44 मिनट और 3 सेकंड होता है. जितनी देर में घरती

## چینی پنچانگ (جنتری)

تھن ہزار ہرس سے چین میں دنوں' مہینوں اور ہرسوں کے حساب لگانے کا ایک خاص طریقہ چلا آتا نہا۔ سن 1949 میں جب نئی سرکار اُس دیھی میں قایم ہوئی تو اُس نے اُس پرانے پنچانگ کو ختم کر کے نیا یوروپیم یا عیسائی پنچانگ دیھی بھر میں چااو کو دیا ، نئی سرکار نے یہ بات کیول سب کی آمانی کے لئے کی ہے' کیونکم لگ بھگ ساری باقی دنیا میں بھی آج یہی عیسائی پنچانگ چلتا ہے اور دنیا کو ایک کرنے میں اِس سے بہت بڑی صدد مل سکتی ہے ،

پرالے چینی پنچانگ میں بہت سے گن بھی تھے ۔ اِس لئے دیھی کی جنتا میں وہ ابھی تک ایک درجہ تک چالو ہے، خاصکر کسائیں کو اُس سے بڑی مدد ملتی ہے، تھیک آسی طرح جس طرح هندستان کے پرائے مہینیں سے بھارت کے کسائیں کو ملتی ہے ۔

چین کے پرانے پنچانگ میں سال کا پہلا میں دیش بھر کے لوگ ایک بہت ہڑا تیہھار مائتے تھے ، نگی سرکار نے اُس تیہھار کو قایم رکھا ہے ، اب وہ اُسے بسنت کا تیہھار' (اِسپرنگ فیسٹیول) کہتے ہیں ، پرانے حساب سے اِس سال وہ 12 فروری سن 1956 کو پڑا تھا ،

نئی چینی سرکار چار رائد تربی تیوهار سانتی هـایک یهی بسات کا دن دوسرا پهای جنوری نئے سال کا دن نیسرا پهلی مئی دنیا بهر کے مزدوروں کا دن اور چرتها پهلی اکتوبر یعنی چین کا رائدرید دن. بسنت کو ماننے کے اللہ تدن دن کی چهتی رهتی هے .

چینی اوگ تاریخ المہنے کے اللہ ام سے تھیک اُلٹا طریقہ کام میں لائے ہیں، وہ پہلے سن لکیتے الدین کہر مہیں تاریخ کی جیسے کرسمس تالے یعنی ہڑے دیں کو ہم المهینکے . 25. 12. 56 د

جین کا برانا پنچانگ بھارت کے پرائے پنچانگ کی طوح دعوتی کے چاروں طرف چاند کی گئی اور سورج کے چاروں طرف دھرتی کی گئی اور سورج کے چاروں طرف دھرتی کی گئی دونوں کے میل سے بنا ھوا نہا ۔ جتنی دیر میں چاند دھرتی کے چاروں طرف ایک چکو پورا کو لیتا ہے وہ ھوا ایک مہینہ ۔ یہ سیے تہیک 29 دیں 12 گہنٹے ہے وہ ھوا ایک مہینہ ۔ یہ سیے تہیک 29 دیں دیر میں دھرتی

सूरज के चारों तर्फ एक चक्कर पूरा कर लेती है वह हुआ एक साल. यह समय होता है 360 दिन 5 घंटे 48 मिनट और 46 सेकंड. जितनी देर में घरती अपनी धुरी के चारों तरफ एक चक्कर पूरा कर लेती है वह होता है एक दिन रात.

इस तरह चांद के 12 महीनों में श्रीर सूरज के एक साल में कुछ थोड़ा सा फुरक पढ़ जाता है.

दुनिया के कुछ पंचांग ऐसे हैं जैसे आजकल का हिजरी पंचांग जिनमें इस फरफ़ को पूरा कर लेने की कोशिश नहीं की जाती. इसीलिए इसलाम के त्यौहार जो हिजरी सन से गिने जाते हैं सदा एक ही मौसम में नहीं एड़ते. रमजान कभी गरमी में तो कभी सरदी में और कभी बरसात में आता है. मौसम से उसका कोई संबंध नहीं रहता.

भारत के हिन्दू विद्वानों ने इस कभी को पूरा करने के लिए लगभग हर चौथे साल लोंद के महीने का रिवाज डाला. लगभग हर 97 वर्ष के बाद वा एक महीना कम भी कर लेते हैं. दिसाब मामूली आदमी के लिए जरा कठिन हो जाता है, पर इस तरह भारत के पंचांग में चांद के महीनों और सूरज के बरसों में हिसाब ठीक बैठा लिया गया है. चित हमेशा गरमियों मे ही होगा और बारिश हमेशा सावन भादों में. हर साल पूरा साल है.

ईसाई पंचांग में भी महीनों के दिन घटा बढ़ाकर इस कमी को पूरा कर लिया गया है. ईसाई पंचांग जो आज दुनिया भर में चलता है खासा ठीक पंचांग है. यह कहने की जकरत नहीं कि मौसम सूरज के चारों तरफ घरती के घूमने से पैदा होते और बदलते रहते हैं. पर ईसाई महीनों का चांद की गति के साथ अब कोई संबंध नहीं रहा.

पुराने चीन के विद्वानों ने भारत के विद्वानों की तरह चांद के महीनों और सूरज के साल को मिलाने का अपना ही ढग निकाल लिया था. हर उन्नीस बरस में उन्होंने सात लोंद के महीने जोड़ दिए. इस तरह महीने चांद के हिसाब से गिनते हुए भी हर उनीस साल के अदर उनका एक औसत साल ठीक उतना ही हो जाता है जितना एक सौर यानी शम्सी साल.

चीन में यह तरीक़ा ईसा से कम से कम 600 साल पहले से चला आता था. यूनान में यही तरीक़ा चीन के 170 बरस बाद जारी हुआ.

पुराने चीनियों ने 12 महीनों के भी अलग अलग नाम रख दिये थे और चीबीस पखारों के भी अलग अलग नाम रख रखे थे. यह 24 नाम अभी तक चलते हैं और ठीक किसानों की जरूरत के अनुसार हैं. इनके नाम बड़े मनो-रंजक हैं. ये चौबीस नाम एक दूसरे के बाद यह हैं— سورج کے چاروں طرف ایک چکر پررا کر لیتی ہے وہ ہوا ایک سال۔ یہ سمے ہوتا ہے 365 دن 6 گھنٹے 48 منصاور 46 میکنڈ۔ چکر چٹلی دیر میں دھرتی اپلی دھوری کے چاروں طرف ایک چکر پروا کرلیتی ہے وہ ہوتا ہے ایک دن رات ۔

اِس طرح چاند کے 12 مہینیں میں اور سورج کے ایک، سال میں کچھ تھوڑا سا فرق پڑ جانا ہے .

دنیا کے کچھ پنچانگ ایسے میں جیسے آجال کا محری پنچانگ جس میں اِس فرق کو پررا کرلینے کی کوشش نہیں کی جاتی ، اس لئے اِسلام کے تیرهار جو هجری سن سے گئے جاتے میں سدا ایک عی موسم میں نہیں پرتے ، رمان کبھی گرمی میں نو کبھی سردی میں او کبھی برسات میں آنا ہے . موسم سے اُس کا کرئی سمبندہ نہیں رہنا ،

بھارت کے ھندو ودرانوں نے اِس کمی کو پورا کرنے کے لئے لگ بھگ ھر چوتھ سال لوند کے مہینے کا رواج ذالا لگ بھگ ھر 17 ورض کے بعد وہ ایک مہینہ کم بھی کرلیتے ھیں۔ حساب معمولی آدمی کے لئے ذرا کتیں ھوجانا ہے، پر اِس طرح بھارت کے ینچانگ میں چاند کے مہینوں اور سورج کے برسوں میں حساب ٹھیک بھتھا لیا گیا ہے۔ چیت ھمیشہ گرمیوں میں ھی ھوٹا اور بارش ھمیشہ سارن بھادوں میں، ھر سال بورا سال ہے۔

عیسائی پنچانگ میں بھی مہینوں کے دی گیٹا بڑھائر اِس کسی کو پور کرلیا گیا ہے ، عیسائی پنچانگ جو آج دنیا بھر میں چلتا ہے خاصہ ٹھیک پنچانگ ہے ، یہ کہنے کی ضوررت نہیں ہے کہ موسم سورے کے چاروں طرف دھرتی کے گھوہتے سے پیدا ہوتے اور بدائے رہتے ھیں ، پر عیسائی مہینوں کا چاند کی گئی کے ساتھ اُب کوئی سمبندہ نہیں رہا ،

پرائے۔ چین کے ودرانوں نے بھارت کے ودرانوں کی طرح چاند کے مہیلوں اور سورج کے مال کو ملانے کا اپنا ھی دھدک نکال لھا تھا ۔ ھر انیس برس میں اُنھرں نے سات لوند کے مہینے جوڑ دیئے ، اِس طرح مہیدے چاند کے حساب سے گنتے ہوئے بھی ھر اُنیس سال کے اندر اُن کا ایک اُرسط سال توہیک اُرتا ھی ھوجانا ہے جددا ایک سرر یعنی شمسی سال ،

چین میں یہ طریقہ عیسی سے کم سے کم 600 سال پہلے سے چین ایم 170 میں بعد جیاں میں اپھی طریقہ چین کے 170 برس بعد جاری ہوا۔

پرانے چینین نے 12 مہینوں کے بھی الگ الگ نام رکھدیئے تھے اور چوبیس پکھواروں کے بھی الگ الگ نام رکھ رکھے تھے . یہ 24 نام ابھی تک چلتے ھیں اور ٹھیک دسانوں کی ضرورت کے آنوسار ھیں ، اِن کے نام بوے منورنجیک ھیں ۔ یہ چوبیس نام ایک دوسرے کے بعد یہ ھیں۔

(1) बसंत शुरू, (2) बसंत की फुहार, (3) कीड़ों का जागना, (4) बसंत के दिन रात बराबर, (5) साफ और रौशन, (6) बाने की बारिश, (7) गरमी शुरू, (8) दाने का बनना, (9) बाल में दाना, (10) गरमी का बड़ा दिन, (11) इलकी गरमी, (12) बड़ी गरमी, (13) पतमाड़ शुरू, (14) गरमी का दूटना, (16) सफेद ओस, (16) पतमाड़ के दिन रात बराबर, (17) ठंडी ओस, (18) कोहरा, (19) जाड़ा शुरू, (20) इलकी बरफ, (21) मारी बरफ, (22) सर्दी का छोटा दिन, (23) इलकी सर्दी, (24) तेज सर्दी.

आहर है देश भर के किसानों को अपने काम में इन नामों से बहुत बड़ी मदद भिलती थी और अब भी मिलती है. चीन में इस तरह की कहावतें गॉव गाँव में बेहद मशहूर हैं जैसे:—"साफ और रीशन में चाबल बोखो," 'दाने की बारिश में रोपा लगाओ" बरीरह बरीरह.

इस पुराने चीनी पंचांग में एक बहुत बड़ी कमी यह थी कि ईसाई या विक्रमी संवत की तरह इसमें कोई एक पुराना सन नहीं था. हर चीनी सम्राट के गई। पर बैठने के समय नया सन चल पड़ता था. इससे लम्बा या सिंद्यों का हिसाब लगाने में जरा देर लगती थी.

एक दिसाव चीन में साठ साठ बरस के एक एक युग का भी चलता था, वह और भी पेनीदा मालूम होता है.

पुराने चीन में सात दिन के सप्ताह या है पते का रिवाज नहीं था. अब वो चल पड़ा है.

नए चीन ने अब वो सब पेचीदिगयाँ खतम करहीं. अब बहाँ हर इतवार को छुट्टी होती है और वही ईसवी सन् बरता जाता है जो लगभग बाक़ी सब दुनिया में बरता जाता है. दुनिया भर की पहली मई उनकी भी पहली मई है.

दुनिया को एक करने के लिए यह एक खासा अच्छा कर्म है. और नए चीन के खुले दिमारा और मानव एकता में विश्वास का सूचक है, चीन के किसान पुराने पखवारों के नामों से फायदा उठाते हैं और उठाते रहेंगे.

24-6-56

—सुन्द्रलाल

## 'नया हिन्द' के गाहकों और प्रेमियों से

'नया हिन्द' जुलाई सन् 1946 में निकलना ग्रुरू हुन्मा था. उसे इस शकल में निकलते हुए ठीक दस बरस हो चुके.

महात्मा गाँधी हिन्दुस्तानी को इस देश की राष्ट्र भाषा की जगह देना चाहते थे. हिन्दुस्तानी से उनका मतलब वह साढ़ी बोली थी जो उत्तर भारत के बहुत से हिस्सों में हिन्दू, मुसलमान और सब लोग आम तीर पर बोलते और

(1) وسلسشروع (2) بسلت کی پهرهارا (3) کیورس کا جاگلاا (4) بسلست کے دیں رات برابرا (5) مانت اور روشن (6) دالے کی بارھی (7) گرمی شروع (8) دالے کا بللا (9) بال میں دانت (10) گرمی کا برا دین (11) هلکی گرمی (12) بری گرمی (13) گرمی کا ترتالا (15) بری گرمی (15) گرمی کا ترتالا (15) سنید آرس (16) پستجهر کے دیں رات برابرا (17) تینتی آرس (18) کبرا (19) جازا شروع (20) هلکی برن آرس (23) بیاری برن (23) سردی کا چیرا دین (23) هلکی سردی (23) بیاری برن (24) تیز سردی .

ظاهر ہے دیک یہر کے نسائیں کو اپنے کام میں اِن ناموں ے بہت ہوی مدد ملتی تھی اور آب بھی ملتی ہے، چین میں اِس طرح کی کہارئیں گاؤں گاؤں میں بیتحد مشہور ھیں جسے در اور روشن میں چاول ہوڑ انا ' دالے کی ہارش میں رویا نگاؤ'' رغیرہ رغیرہ رغیرہ ۔

اِس پرآنے چینی پنچانگ میں ایک بہت ہوی کئی یہ نبی کہ عیسائی یا وٹرمی سنوت کی طرح اُس میں کوئی ایک پرانا سن نہیں تیا ۔ ہر چینی سرات کے گئی پر بیٹینے کے سمے نیا سن چل پڑنا تیا ، اِس سے لیا یا صدیوں کا حساب لٹانے میں ذرا دیر لگئی تھی .

ایک حساب چین میں ساتھ ساتھ برس کے ایک ایک یگ کا یہی چلتا تھا' وہ اور بھی پہنچیدہ معلوم ہوتا ہے .

پرائے چین میں سات دن کے سپتاھ یا هفتے کا رواج نہیں تھا ۔ اب وہ چل ہوا ہے .

الله چهن في ولا سب پهچهدگیاں ختم کردیں ، آب وهاں هر آتوار کو چهتی هوتی هے اور وهی عیسوی سن برتا جاتا هے جو لگ بهگ باقی سب دنیا میں برتا جاتا هے ، دنیا بهر کی پهلی مثی اُن ئی بھی پہلی مثی هے .

دلیا کو ایک کرنے کے لئے یہ خاصہ اچھا قدم ہے' اور نئے چان کے کیلے دماغ اور مانو ایکٹا میں وشواس کا سوچک ہے' چین کے کسان پرائے پکھواروں کے تاموں سے فایدہ آٹھاتے میں اور آٹھاتے رمینگے۔

--سندر لال .

24.6.

## 'نیا ہند' کے گاھکرں اور پریمیوں سے

''ٹیا ہند'' جولائی سن 1946 میں نکلنا شروع ہوا تیا ۔ آھے اِس شکل میں نکلتے ہوئے ٹیبک دس برس ہوچکے ہ

مہانما گاندھی ھندستانی کو اِس دیش کی راشتر بھاشا کی جکه دینا چاھتے تھے، ھندستانی سے اُن کا مطلب وہ نیزی ہوای تھی جو اُتر بھارت کے بہت سے حصوں میں ھندو' مسلمان اور سب لوگ عام طور پر بولتے اور अमकते हैं, और जो देश के दूसरे अधिकतर हिस्सों में भी आसानी से समकी जाती है. हमारी यह बोल चाल की जवान हमारी बंदकिस्मती से साहित्य के मैदान में पहुँच कर दो शकतों में वंट गई, जिससे देश, उसकी एकता और उसके भले को का ती जुकसान पहुँचा और पहुँच रहा है.

महात्मा गाँधी खर् और हिन्दी की इन दोनों घाराओं को मिलाकर फिर से एक कर देना चाहते थे और उसे 'हिन्दुस्तानी' ही नाम देना चाहते थे. बोल चाल की भाषा और शाहित्य की भाषा के दो खलग खलग नाम होते भी नहीं. बोल चाल की एक बुनियादी भाषा के दो खलग अलग साहित्यक (अदबी) कर और दो खलग खलग साहित्यक नाम हमारे देश की ही एक खनोखी उपज हैं, जो हमारी तंग निगाह और छोटे दिखों का सबूत हैं.

गाँधी जी की यह भी राय थी कि यह मिली जुली राष्ट्र भाषा नागरी और दर्दू दोनों लिपियों में लिखी जावे. आगे खलकर कभी देश वासियों का इन दोनों लिपियों में से किसी एक को था किसी तीसरी लिपि को अपनी राष्ट्र लिपि चुन सेना वह भविष्य पर झोड़ देना चाहते थे.

हम बिश्वास है कि नई दिल्ली के अन्दर देश के चुने हुए नुमाइन्दों ने भाषा के मामले में अगर गाँधी जी की सलाह को माना होता तो आज उन बहुत सी बद गुमानियों, रालव कहियों और मुसीबतों से देश बच गया होता जिन में हम इस समय फंसे हुए हैं और फंसते जा रहे हैं, पर यह नं हो सका!

भाषा के मामले में हमें आज भी गाँधी जी की बात पर खतना ही पक्का विश्वास है जितना आज से दस बरस पहले था. हमें पूरा विश्वास है कि हिन्दी के नाम से जो बनाबटी, समम्म में न आने वाली, बेमहावरा, रूखी और ग़लत जवान आज इस देश में चलाने की कोशिश की जा रही है वह बहुत दिनों नहीं चल सकती. हमें यह भी विश्वास है कि हिन्दी और उर्दू की अलग अलग धाराएं इस देश में बहुत दिनों नहीं वह सकतीं. हमें यह भी विश्वास है कि हमारी आगे की राष्ट्र भाषा यानी दिल्ली सरकार की भाषा और अदेश प्रदेश के बीच के काम की भाषा वही मिली जुली भाषा होगी जिसे गाँधी जी हिन्दुस्तानी, कहना चाहते थे. देश का अगर पनपना है तो नफ़रतों, तंग निगाहों और अध विश्वास की शांकियां देर तक प्रेम, चदारता और समम्बदारो की शांकियों को दबाकर नहीं रख सकतीं. पर अभी रोग कुछ जोर पर है.

'तथा हिन्द' मह।त्मा गाँधी की उसी आवाज को जिन्दा रकते की एक कोशिश है. سنجھتے ھیں' اور جو دیش کے دوسرے آدھک تر خصوں میں بھی اُسائی سے سمجھی جاتی ہے ۔ ھماری یہ بول چال کی زبانی ھماری بدقستی سے ساھتیہ کے میدان میں پہنچ کر دو شکٹوں میں بنت گئی جس سے دیش' اُس کی ایکنا اور اُس کے بیلے کو کانی نقصان پہلچا اور پہنچ ما ہے ۔

مهاتما کائی هی آردو اور هندی کی اِن دونوں دهاراؤں کو مطافر پهر سے ایک کردینا چاهتے تھے اور آسے 'هندستانی' هی نام دینا چاهتے تھے اور اس اهتیه کی بهاشا کے دو انگ نام هوتے بهی نهیں ، بول چال کی ایک بنیادی بهاشا کے دو انگ الگ ساهتیک ( آدبی ) روپ اور دو اگ انگ ساهتیک نام همارے دیش کی هی ایک آنوکهی آپیم انگ ساهتیک نام همارے دیش کی هی ایک آنوکهی آپیم هیں' جو هماری تنگ نکاد اور چهوتے داوں کا ثبوت هیں ،

گاندھی جی کی یہ یہی رائے تھی کہ ملی جلی راشقر بھاشا ناگری اور اردو دونوں لہیوں میں لکھی جاوے ، آگے چلکو کبھی دیھیواسیوں کا اِن دونوں لیمیں میں سے کسی ایک کو یہ کسی تیسری اپنی کو اپنی راشقر لپی چن لینا وہ بھوشمہ پر چھوڑ دینا چاھاتے تھے ،

ھمیں وشواس ہے کہ نئی دلی کے اندر دیش کے چنے موٹے نمائندوں نے بھاٹا کے معاملے میں اگر گاندھی جی کی صلح کو مانا عونا تو آج آن بہت سی بدگمانیوں علم اس سے اور مصیبتوں سے دیش بہے گیا ہوتا جن میں ہم اِس سے بہتے ہوئے میں ، پر یہ نے موسکا اِ

بہاشا کے معاملے میں ہمیں آج ہی گاسھی جی کی بات
پر آئلا ہی پکا رشواس ہے ، جتلا آج سے دس برس پہلے تھا ،
ہمیں پہرا رشواس ہے کہ ہلدی نے نام سے جو بناوٹی سبجه
میں نے آنے والی پرستاورہ وکھی اور غلط زبان آج اِس دیس
میں چلانے نی کوشش کی جارہی ہے وہ بہت دنوں نہیں
میں چلانے نی کوشش کی جارہی ہے وہ بہت دنوں نہیں
چل سکتی ، ہمیں یہ بھی وشواس ہے کہ ہندی اور اُردر کی
الگ انگ دھارائیں اِس دیش میں بہت دنوں نہیں به
سکتیں ، همیں یہ بھی وشواس ہے کہ هماری آئے کی راشتر
بہاشا یعنی دلی سرکار کی بھاشا اور پردیش پردیش کے بیچ کے
بہاشا یعنی دلی سرکار کی بھاشا اور پردیش پردیش کے بیچ کے
مندستانی کہنا چاہتے تھے ، دیش کو اگر پنینا ہے تو نفرنہ و
تنگ نگامرں اور آندہ وشواس کی شکتیاں دیو تک پریم اُدارتا اور سمجھداری کی شکتیوں کو دیا نہیں رکھ سکتیں ،
اُدارتا اور سمجھداری کی شکتیوں کو دیا نہیں رکھ سکتیں ،

النيا هدا مهانما كالدهيكي أسى آولز كو زنده ركينه كي أيك كوشش ه.

इन हालात में कुदरती था कि 'नया हिन्द' के गाहकों की तादाद कम हो. जो देशवासी भाषा के सवाल पर हमसे सहमत हैं उनमें भी बहुत से हिन्दी पढ़ने वाले 'नया हिन्द' इसलिये नहीं खरीदते कि उनके उयाल में उर्दू वाला आधा हिस्सा उनके लिये फजूल जाता है. उसी तरह बहुत से उरदू पढ़ने वाले हिन्दी हिस्से को अपने लिये फजूल समक कर 'नया हिन्द' के गाहक नहीं बनते. जो थोड़े से भेमी इन हालतों में भी बराबर 'नया हिन्द' के गाहक बने हुए हैं हमारा दिल उनके लिये प्रेम और इतक्रता से मरा हुआ है, पर इन हालतों में 'नया हिन्द' का घाटे पर चलना स्वामाविक था.

माहातमा गाँधी की जिन्दगी में उनके बलिदान से एक दो महीने पहले ही यह संकट हमारे सामने आ चुका था. इन्छ मित्रों की राय हुई कि 'नया हिन्द' को हिन्दी में अलग और उर्दू में अलग निकाला जाने, भाषा एक रहे. इससे गहाकों की तादाद बढ़ जाने की आशा थी और हो सकता था कि हमें घाटा न भरना पड़ता. इनने अपने इस संकट को गाँधी जी के सामने रखा और उनकी राय चाही. उन्हों ने इन्छ सोचकर हमें जो जवाब दिया वह यह था—''जब तक निकाल सको इसी शकल में निकालो."

'नया हिन्द' ने अब तक गाँधी जी की उस राय पर असल किया है और कर रहा है.

पर संकट ज्यों का त्यों हमारे सामने है घाटा कब तक और कहां से भरा जावे ?

हमारे सामने अब कई रास्ते हैं:

एक यह कि 'नया हिन्द' को बन्द कर दिया जावे.

'तया हिन्द' की बात को छोड़ कर महात्मा गाँधी की एक धाम राय यह भी थी कि जो समाचारपत्र अपने गाहकों के चन्दे से नहीं चल सकता उसे बन्द हो जाना चाहिये. गाँधी जी के अपने पत्र धब तक सब बन्द हो जुके.

दूसरा यह है कि हिन्दी और उर्दू को अलग अलग निकालकर गाहक बढ़ाने और घाटा पूरा करने की कोशिश की जावे. भाषा एक ही रहे पर निकर्ले दोनों अलग अलग.

तीसरा यह कि 'नया हिन्द' का हर गाहक और हर प्रेमी उसके अधिक से अधिक नए गाहक बनाने की कोशिश करें और इस तरह साल हैं महीने के अन्दर उसे अपने पैरों पर खड़ा कर दिया जावे.

'नया हिन्द' के प्रेमी अगर चाहें और जी से कोशिश करें तो हो सकता है कि यह बात असम्भव न हो.

इम इस सारी स्थिति पर विचार कर रहे हैं. कैसला करने से पहले इम चाहते हैं कि 'नया हिन्द' के गाहकों ابن عاقت میں قدرتی تھا کہ "تیاهند" کے گاهکری کی تعداد کم هو ، جو دیھی واسی بھاشا کے سوال پر هم سے سهمت هیں آئی میں بھی بہت سے هندی پڑھنے والے "نیاهند" اِس للّہ نہیں خریدتے که اُن کے خیال میں اُردو والا اُدها حصه اُن کے لله فغول جاتا ہے ، اُمی طرح بہت سے اُردو پڑھنے والے هندی حصے کو آئی لله نفیول سمجوء و تیاهند" کے گامک قبیل بنتے، جو تھڑے سے پریمی اِن حالتوں میں بھی بوابر "نیاهند" کے گامک بنے هوئے هیں همارا دل اُن کے لله پریم اور کوتکیتا سے بھرا هوا ہے ، پر هیں میں انیاهند" کا گھاتے پر چانا سوابهارک تھا ،

مهاتما کائدھی کی زئدگی میں اُن کے بلعدان سے ایک دو مهینے پہلے ھی یہ سائمت ھمارے سامنے آچکا تھا ۔ کچھ متروں کی رائے ھوئی کم 'نیاھند' کو ھندی میں الگ اور اُردو میں الگ نکلا جارے' بہاشا ایک رھے ، اِس سے کاعکوں کی تعداد ہوھ جانے کی آشا تھی اور ھو سکتا تھا کہ ھمیں گھاٹا تم بھرنا پوتا ، ھم نے اپنے اِس سندت کو کاندھی جی کے سامنے رکھا اور اُن کی رائے چاھی ۔ اُنھوں نے کچھ سرچ کر ھمیں جو جواب دیا ور یہ نہا:۔''جب تک نکال سکو اِسی شکل میں نکانو ۔''

'بہا مند' نے آپ نک کاندہیجی کی آس رائے پر عمل کیا ہے اور کو رما ہے ۔

پر سننٹ جهرس اللہ تهوں همارے سامنے هے ، کھاٹا کپ تک أور کہاں سے بھرا جارے 8

> همارے سامنے آب کئی رأستے هیں: آیک یه که نهاهای کو بلد کردیا جارے ،

انیاهند؛ کی بات کو چهور کر؛ مهادما کاندهی کی آیک عام رائے یہ بھی تھی که جو سماچار ہتر آپنے گلفتوں کے چندے سے تہیں چل سکتا آسے بند هو جاتا چاهئے ۔ کاندهی جی کے آپنے یتر آپ تک سب بند هوچکے ۔

درسرا یہ بھا نہ هندی اور آردو کو آنگ آنگ نکال کو للمک پڑھانے اور گھاٹا پیرا کرنے کی کوشش کی جارے ، بھاشا آیک ہی رہے پر تعلیں درنوں الگ آنگ ،

ٹیسرا یہ که 'نیاهند' کا هر کامک اور هر پریسی آس کے احمک سے ادمک نئے کامک بنانے کی کوشش کرے اور اِس طرح سال چھ مہینے کے اندر آسے اپنے پیروں پر کھڑا کر دیا جارے ،

'نیامند' کے پریس اگر چاہیں اور جی سے کشش کریں تو ہو ۔ تو هو سکتا هے که یه بات اُسببور نه هو ۔

ھم اِس ساری اِستہتی پر رچار کر رہے ھیں ، نیصلہ کرتے سے پہلے ھم چاھتے میں که نیاھند کے گلعکرں चौर मे मियों की, जिन्हें हम 'नया हिन्द' के इंदुन्नी मानते हैं, राय मालुम करलें, और जहां तक हो सके उसी के अनुसार जलें. इसलिये हम 'नया हिन्द' के हर गाहक और हर में मी से प्रार्थना करते हैं कि वह जहां तक हो सके जल्दी हमें अपनी ठीक ठीक राय लिख कर मेज दें. हो सकता है कि किसी गाहक या किसी मेमी को कोई और रास्ता भी सूम जाय. लेकिन हम यह बात साफ कर देना जरूरी सममते हैं कि जो माई या बहन हमें 'नया हिन्द' को इसी रूप में जारी रखने की सलाह देंगे उनका पवित्र कर्तन्य हो जायगा कि फिर वह 'नया हिन्द' के गाहक बढ़ाने में अपना समय सगाकर हमें पूरी पूरी मदद दें.

इम फिर कहते हैं कि जरा सी कोशिश से यह असन्भव

पर इम अपने इर कुटुम्बी की आजार और साफ साफ राय जानना चाहते हैं. हमें जवाब का इन्तजार रहेगा.

145. मुद्दीगंज, इलाहाबाद.

30-6-56.

- सन्दरलाल.

اور پریدیوں کی جنیدں هم انیاهاد کی کتبی ماتی هیں رائے معاہم کو لیں اور جہاں تک دو سکے اُسی کے انوسار چلیں ۔ اِس لئے ہم انیاهاد کی ہو کی اور مر پریمی سے پرارتیا کرتے هیں که وہ جہاں تک هو سکے جادی همیں اپنی ٹیک ٹیک ٹیک رائے لکه کو بیعی دیں ۔ هو سکتا ہے کسی کاهک یا کسی پریمی کو کوئی اور راسته بهی سوجه جائے . لیکن هم یه بات صاف کو دینا فرروی سمجھتے هیں که جو بھائی یا بہی همیں انیاهاد کو اِسی روپ میں جاری راہانے کی صاح دینکے اُن کا پوتر کوتوبه هو جائے گا کہ بھی ویری مدد دیں ،

هم پهر کېټه هين که ډراسی کوشهن سه په اسمبهو تېين

پر هم اپنے هر کتمبی کی آزاد اور صاف صاف رائے جانا چاهتے عیں همیں جواب کا انتظار رہے گا .

145 منهى كابح العآباد .

- سندر لال .

30, 6, 56,

है चड़ी भर का तमाशा जबिक दुनिया की फिज़ा, रखो ग्रम इतने वठाने से है फिर क्या फायदा. सोंप कर क़िस्मत को सब कुछ खुश रहो हर हाल में, मिट नहीं सकता किसी सूरत मुक़द्द का लिखा.

- इसर खैंयाम.

ھے گہری بھر کا تماشہ جب که دنیا کی نفا' رئیج و غم اِتِنے أَتَهائے سے هے پھر کھا فائدہ' سرنپکر قسمت کو سب کچھ خوش رھو ھر حال میں' مٹ نہیں سکتا کسی صورت مقدر کا لکھا .

سعمر خيام .

سائينې کې بارونه

DESCRIPTION OF THE REAL PROPERTY.

विक परिवास ग्रुन्यसाल, मृत्य-रीन सक्या क्षांक है निम्मर के सम्बन्ध में आरतीय भाषाओं में इस से सन्दर कोई बुसरी पुस्तक नहीं

इतरत ईसा और ईसाई धर्म बेसक पन्डित सुन्दरलाल, मूल्य-डेद रुपया महात्मा जरधुस्त्र और ईरानी संस्कृति लेखक-विश्वनभरनाथ पांडे, क्रीमत—दो रुपया यहूदी धर्म श्रीर सामी संस्कृति लेखक-विश्वम्भरनाथ पांडे, क्रीमत-दो रूपया प्राचीन मिस्र की सभ्यता और संस्कृति **लेखक—विश्वन्भरनाथ पांडे,** क्रीमत—क्षे रूपया मेर बाबुब भौर भसुरिया की प्राचीन संस्कृति लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, क्रीसत—दो हरया प्राचीन यूनानी सभ्यता ऋ र संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, क्रीमत—दा रुपया गंगा से गोमती तक

( प्रगतिशील कहानी संप्रह ) लेखक—श्री मुजीब रिजवी, कीमत-दो रुपया

आग और आँस्

( भावपूर्न सामाजिक कहानियाँ )

सक-डाक्टर अस्तर हुसेन रायपुरी, क्रीमत-डेढ़ रुपया

.कुरान और धार्मिक मतभेद

व्यक-भीताना अयुलकलाम आजाद, क्रीमत —हेद रुपया

भंकार

(मगतिशील कविताओं का संप्रह) विसक रचुपति सहाय किराक, क्रीमत - तीन रुपया حفوت محمل أور إسلم

پنتانت سادر قل موقعه الدي دريمه و المنظو كا سنبلده مين بهاريه بهاهاي مين إس العا سنقدر كوئى دوسرى يستك تهين

مفرد عیسی اور عیسائی دهرم میسینت سامر ال مراید دربه

اتی زر تهستر اور ایرانی سنسکرتی نیک سرشهار ناه پاندی سنسدر رویه

میودی دهرم اور سامی سنسکوتی آیمک رشومبور ناته بانته

بير بابل اور أسوريا كي براچين سنسكرتي ليكهك سوشومبهر ثاته ياثرت فيست در رربيه

واچیبی بونانی سبعیدا اور سنسکرتی لیکک روبه

گنگاسے گومتی تک ( پرگٹی شیل کہانی سن<sup>ہ</sup>رہ) لی*نھی*۔شری مجیب رموی' تیست

**اک** اور انسو

( بهاوپورن سمآجک کهانیال ) المحك حاكثر أخار حسين رائع پورى ويست - تيزه رويه

قرأن اور دهارمک مع بهید پنیک سوال ابرالم آزاد نست قبرته رویه

جهنگار ( پرگنیشهل کویتاؤں کا سنگرہ ) 

मिखने का पता

कंदनां कलचर सोसायटी जैंग करा उंप

145 मटोगंब इवाहाबाद مراط الما 145

# हिन्द घर अ

कलचर पर हर तरह की कितावें मिसने 🚉 अध्या अध्या का एक बड़ी केन्द्र—पाठक हिन्दीं, उर्दू. अंग्रेजीं की अपनी मन-पत्नेन्द किताबों के लिये हमें लिखें।

हमारी नई किताबें

महात्मा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी और उद् में ) लेखक-गान्धीबाद के माने जाने विद्यान : श्री मंजर चली सोस्ता सके 225, क्रीमत दो रुपया

गान्धी वाबा

( बच्चों के लिये बहुत दिलचस्प किताब ) लेखिका-कुवसिया जैवी , मूमिका-पन्डित जबाहरलाल नेहरू मोटा काराज, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसवीरे दाम दो रुपया -:0:-

पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी किताबें अगीता और क्रुरान

275 सके, दाम ढाई रुपया

हिन्दू मुसलिम एकता

100 सके, दाम बारह आनं

महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक्र

क्रीमत बारह थान

पंजाब इमें क्या सिखाता है

क्रीमत चार आने

बंगाल और उससे सबक्र

क्रीमत वो आने

ताना कलचर सोसायटी

145 मुद्रोगंज इलाहाबाद

يك برا كيندر\_\_ياتهك هندي و' انگریزی کی من پسند کتابوں کے همين لكهيل.

هاری نئی کتابیل

مهاتها کاندهی کی وصبت

(عندی اور آردو میں) کھکنے۔ گاریمی وال کے مالے جائے وبوان: شوى منظر على سوخته . ملحے 225 تیت در روید

كندهي بابا

(بحوں کے لئے بہت داموسپ کتاب) ليكهكا-قىسية زيدى بهرمكاسسيندت جوأهر لال نهرو

موقا كافل موقا قائب ، بهت سى رنكين تصويرين

دأم دو رويية

ینڈٹ سندرلال جی کی لکھی کتابیں

ليتا ارد فوان

ويهم دام تعالى رويه

هندو مسام أيكتا

100 صفحے دام بارہ آنے

ہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق قيست باره أنے

بنجاب همیں کیا سکھانا ھے

بنگال اور أس سے سبق ست دوانے

هندستاني كليهر سوسائتي

115 مقي كليم العادي

Printed and Published by Surenh Ramabhai, at the Naga Mind Press, 145, Mathigani, Mind Press, 145, Mathigani, Allahabad.